कादम्बरी

पूर्वभागः

महाकवि-श्रीबाणभट्टविरचितः

श्रीयुक्तगङ्गाधरविद्यालङ्कारभट्टाचार्य्यात्मजेन
शब्दाचार्य्य-पुराणशास्त्र-सांख्यरत्न
व्याकरणतीर्थ-काव्यतीर्थ
स्मृतितीर्थ-
मन्त्रोपदेशक-

श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीश-भट्टाचार्य्येण
प्रणीतया कल्पलताभिधानया टीकया
वङ्गानुवादेन च समेतः।

नकीपुर-हरिचरणचतुष्पाठीतस्तेनैव
प्रकाशितश्च।

मूल्यं ५) राजतमुद्रापञ्चकम्।

कादम्बरी

पूर्वभागः

महाकवि-श्रीबाणभट्टविरचितः ।

श्रीयुक्तगङ्गाधरविद्यालङ्कारभट्टाचार्य्यात्मजेन
शब्दाचार्य्य-पुराणशास्त्रि-सांख्यरत्न-
व्याकरणतीर्थ-काव्यतीर्थ-
स्मृतितीर्थ-
महोपदेशक-
श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीश-भट्टाचार्य्येण
प्रणीतया कल्पलताभिधानया टीकया
वङ्गानुवादेन च समेतः ।

नवीपुर-हरिचरणचतुष्पाठीतस्तेनैव
प्रकाशितश्च ।

१८३८ शकाब्द
प्रथमदि

मूल्यं ५ राजतमुद्रापञ्चकम्

Printed by
Jogesh Chandra Adhikary
At the
METCALFE PRESS
[illegible]

धर्म्मो नयश्च विनयश्च

विचारणञ्च

रूपं शुभञ्च चरितञ्च

मनस्विता च।

सम्मेलनेन सदसीव

सदा सदस्या

यस्मिन् गुणा: समुदिता

मुदिता इवासन् ॥

तस्य

खुलनाजिलाधीन-नकीपुरस्थ-भूस्वामिन:

राय ⁄ हरिचरणचतुर्धुरीणरायबाहादुरस्य

पवित्रनामोद्देशे

समर्पितेयम्।

तत्स्मृतिसक्तस-

श्रीहरिदासदेवशर्म्मणा

বিজ্ঞাপনম্।

অধুনা কিল করুণাময়পরমেশ্বরস্য প্রসাদাৎ কাদম্বরীমুদ্রণং পরিসমাপ্তম্। অত্র কিল বিভিন্নদেশীয়ং পুস্তকত্রয়মালোক্য সমীচীনতয়া সম্মতঃ পাঠো মূলে সন্নিবেশিতঃ। পাঠান্তরাণি পুনরধস্তাদ্বিন্যস্তানি। সমালোচনা তু টীকায়ামেব কিয়তী যথাস্থানং প্রতিপাদিতেতি ন পৃথক্ সঙ্কলিতা। সংশোধনায় যত্নেঽপি বিশেষযত্নে মুদ্রাকরপ্রমাদস্য সর্বথা দুর্নিবারতয়া ক্বচিৎ ক্বচিৎ কিঞ্চিদশুদ্ধং পরিলক্ষ্যতে। কাগজ ইত্যস্য প্রায়েণ ত্রিগুণাধিকমূল্যতয়া মূল্যাতিরেকসম্ভবেঽপি পাঠার্থিনাং সুবিধাবিধানায় প্রচলিতনিয়মাপেক্ষয়া নিতান্তমেব ন্যূনং মূল্যং কল্পিতম্। যদীদানীং শিক্ষার্থিনঃ শিক্ষয়িতারশ্চ পুস্তকমিদমুপকারায় মন্যমানা গৃহ্ণন্তি, তদৈব মে বাস্তবিকপ্রাণান্তপরিশ্রমঃ প্রচুরতরার্থব্যয়শ্চ সফলৌ ভবিতেতি।

বিনীত-শ্রীহরিদাসশর্ম্মণঃ।

বঙ্গানুবাদ সম্বন্ধে বিশেষ বক্তব্য।

যে কোন অনুবাদকেই তিন ভাগে বিভক্ত করা যায়, যথা,—উপাখ্যানানুবাদ, ভাবানুবাদ ও ভাষানুবাদ। তাহার মধ্যে অনুবাদক সম্পূর্ণ স্বাধীনভাবে চলিতে পারেন বলিয়া উপাখ্যানানুবাদ সর্ব্বাপেক্ষা সহজ; কিন্তু তাহাতে মূল বুঝিবার পক্ষে বিশেষ কোন উপকার হয় না। মূলের ভাব নিয়া চলিতে হয় বলিয়া ভাবানুবাদ উপাখ্যানানুবাদ অপেক্ষা কঠিন; তবে তাহাতে মূল বুঝিবার পক্ষে কিছু সুবিধা হয়। আর ভাষানুবাদ করা বড়ই কঠিন; কারণ—ইহাতে অনুবাদককে মূলের ভাব ও ভাষা এই উভয়েরই সম্পূর্ণ অধীন হইয়া চলিতে হয়; অথচ সেই ভাষানুবাদই মূল বুঝিবার পক্ষে অত্যন্ত উপযোগী। কিন্তু কাদম্বরীর সেই ভাষানুবাদ করা যে কি কঠিন ব্যাপার, তাহা বিবেচক অনায়াসেই বুঝিতে পারেন—এই জন্যই আমার কয়েকটি বন্ধু কাদম্বরীর ভাষানুবাদ করিতে নিষেধ করিয়াছিলেন; আমি কিন্তু অদম্য উদ্যমের বশবর্ত্তী হইয়া তাহাতে সে সঙ্কল্প হইতে বিরত হই নাই; তবে যেখানে উপায়ান্তর নাই, সেখানে ভাবানুবাদই করা হইয়াছে। কিন্তু এই অনুবাদে যে কত দূর কৃতকার্য্য হইয়াছি, তাহা পাঠকগণ বিবেচনা করিবেন। তবে বিশেষ বক্তব্য এই যে,—একানুপূর্ব্বীক-বাচক-বাচ্যস্বরূপ সামান্য ধর্ম্ম লইয়া গ্রন্থকার পূর্ণোপমা সাজাইয়া বাহবা লইলেন; টীকাকার উভয় পক্ষেরই বিশদ ব্যাখ্যা করিয়া প্রশংসাভাজন হইলেন; কিন্তু যত বিপদ ভাষানুবাদকের; কারণ—"পুরমেতজ্জাতং সকলকলং সম্প্রতি সুধাংশুবিম্বমিব" এখানে 'এই বাড়ীটি এখন চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় কোলাহলে পরিপূর্ণ হইয়াছে' এইরূপ অনুবাদ করিলে যেমন সাদৃশ্য থাকে না, তেমন অনুবাদও অসম্পূর্ণ রহিয়া যায়; সুতরাং বাধ্য হইয়াই এইরূপ অনুবাদ করিতে হইবে যে, 'এখন চন্দ্রমণ্ডলটি যেমন সকল-কলা-সমন্বিত এই বাড়ীটিও তেমন কোলাহলে পরিপূর্ণ হইয়াছে।' সুতরাং সাদৃশ্য রহিল না বলিয়া অনুবাদককে অবশ্যই সাধারণে উপহাস করিতে পারে; কিন্তু বিবেচক পাঠক উপহাস করিবেন না—এ আশা খুব করা যায়; কারণ—ঐরূপ স্থলে উপায়ান্তর নাই বলিয়া অনুবাদে সাদৃশ্য না থাকা ক্ষমার যোগ্য। কাদম্বরীতে এরূপ পূর্ণোপমা অনেকই আছে, সুতরাং তাহার ভাষানুবাদও ঐরূপই হইয়াছে; তাই এই বিষয়ের অবতারণা করা হইল।

सूचीपत्रम् ।

अथ बाणभट्टस्य संक्षिप्तजीवनचरितम् *

समयनिरूपणञ्च।

आसीत् पुरा कान्यकुब्जप्रदेशे शोणनदस्य पश्चिमे भागे प्रीतिकूटनामा ग्रामः। तत्र वात्स्यगोत्रसम्भवः परमवेदविद्वैदिकक्रियानिपुणश्च कुबेरनामा कश्चित् पण्डितप्रवरो बभूव। तस्य पुत्रः पाशुपतः † तदात्मजश्चार्थपतिस्तस्य चैकादश ‡ पुत्रा आसन्, तेषामष्टमश्चित्रभानुस्तु राज्यदेव्यभिधानायां भार्य्यायामस्माकं महाकविमुकुटमणिं बाणं नाम पुत्रं लेभे। बाणस्य तु शैशव एव राज्यदेवी परलोकं गता। अथ चित्रभानुरेव तं बाणं मातृवत् परिपोषयन् यथाविधि संस्कृत्य तस्य चतुर्दशवर्षे वयसि लोकान्तरमगमत्। ततस्तु यौवनस्वभावसुलभदोषेण साहचर्य्यदोषेण च दूषितो बाण ईशानप्रभृतिभिः प्रियसहचरैः स्वदेशान्निर्गतो विविधान् देशान् पर्य्यटन् अनेकैर्नृपतिभिर्बहुभिश्चोपाध्यायैः सह साक्षात् कुर्वन् विविधं ज्ञानमुपार्ज्य पुनः स्वदेशमागतः। अथ कदाचित् कान्यकुब्जेश्वरो हर्षवर्द्धनो दूतमुखेन बाणमाहूतवान्। उपस्थिते च बाणे राजा दुर्जनेभ्यः श्रुततद्दुश्चरितः "महाभुजङ्गः § खल्वयमागतः" इति कश्चन सदस्यं प्रत्यभिदधौ। तेन चापमानमात्मनो मन्यमानो बाणः "निजविचारेण निर्णीयतां सर्वम्" इत्यभिधायावतस्थे। परन्तु सभासद्भिः सुधीभिः सह शास्त्रतर्के तं महाविचक्षणतया परिचिन्वानो राजा स्वसभायां प्रधानोपाध्यायपदमध्यारोपयामास। तस्य च सभायां सूर्य्यशतकरचयिता मयूरभट्टो मातङ्गदिवाकरनामापरश्च कविरासीत्। अथ कदाचिद्बन्धुभिरनुरुद्धो बाणो हर्षचरितं नाम हर्षवर्द्धनस्य जीवनचरितं प्रणीय दृश्यमानांशान्तं कादम्बरीपूर्वभागं प्रणयन्नेव परलोकं गतः। अथ तु बाणनन्दनो भूषणभट्टो नाम कादम्बर्य्याः परभागं प्रणीतवान्।

हर्षवर्द्धनस्तु ६०६ खृष्टाब्दमारभ्य ६४८ खृष्टाब्दपर्य्यन्तं कान्यकुब्जराज्यं शशास; ¶ सुतरां खृष्टीयषष्ठशताब्दीशेषभागात्तदीयसप्तमशताब्दीपूर्वार्द्धपर्य्यन्तो बाणभट्टस्यावस्थितिसमयो निर्णीयत इति।

---

* हर्षचरितस्यानुक्रमणिकायामिदं दृश्यते।

† बाणस्तु कादम्बर्य्यां निजवंशवर्णने नामेदं नाभिहितवान्।

‡ "सोऽजनयद् भृगुं हंसं शुचिं कविं महीदत्तं धर्मं जातवेदसं चित्रभानुं त्र्यक्षं अहिदत्तं विश्वरूपं चेत्येकादश रुद्रानिव सोमामृतरसशीकरच्छुरितमुखान् पवित्रान् पुत्रान्।" हर्षचरितम्।

§ भुजङ्गः पिङ्गः पारदारिक इति यावत्।

¶ चीनदेशीयपरिव्राजकस्य हियुयेनसाङ्गस्य भारतपरिभ्रमणवृत्तान्तादिदं लभ्यते। अत्र त्वपराण्यपि सन्ति युक्तिप्रमाणानि।

अथ बाणभट्टस्य वंशावली ।

ब्रह्मा
- पुलहः
  - वात्स्यः — 'स्वयं वात्स्यस्तु पुलहात्' ब्रह्मवैवर्त-पुराणम् । 'वात्स्यानन्तरं बहूनामेव पुरुषाणां नामानि न लभ्यन्ते ।
    - कुबेरः
      - अच्युतः
      - ईशानः
      - हरः
      - पाशुपतः
        - अर्थपतिः
          - भृगुः
          - हंसः
          - शुचिः
          - कविः
          - महीदत्तः
          - धर्मः
          - जातवेदाः
          - चित्रभानुः
            - बाणभट्टः (अस्य माता राज्यदेवी)
              - भूषणभट्टः *
          - त्र्यक्षः
          - अहिदत्तः
          - विश्वरूपः

---

* केषाञ्चिन्मते 'भूषणबाणः' अपरेषां मते 'पुलिन्दः' तदन्येषाञ्च मते 'पुलिनः' इति बाणभट्ट-तनयस्य चत्वारि नामानि परिलक्ष्यन्ते ।

अथ कादम्बरीकथासंक्षेपः ।

आसीत् किल विदिशाभिधानायां राजधान्यामशेषगुणाकरो राजा शूद्रको नाम। तस्यैकदा सभामण्डपगतं परमरूपवती प्रतीहारी कस्याश्चिच्चण्डालदारिकाया आगमनं न्यवेदयत्। अथ राजादेशेन प्रतीहारी प्रवेशिता सा केनचिद्वृद्धेन शिशुना च सममागत्य राजानं प्रणनाम। वृद्धस्तु पञ्जरगतं वैशम्पायननामानं शुकमेकमवस्थाप्य विहृत्य च तदीयगुणावलीमपससार। अपसृते च तस्मिन् वैशम्पायनो दक्षिणं चरणमुत्तोल्य

"स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्त्ति हृदयशोकाग्नेः। चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।"

इत्युक्त्वा राजानं संवर्द्धयामास। राजा तु सह सदस्यैर्निरतिशयं विस्मयमापन्नः शुकमन्तःपुरं प्रवेशयितुमादिश्योदतिष्ठत्। कृतस्नानाह्निकभोजनश्च बृहस्पतिकल्पेन कुमारपालितनाम्ना मन्त्रिवरेण सह सुखोपविष्टस्तं शुकमानाय्य तदीयं सर्ववृत्तान्तमभिधातुमनुरुरोध। अथासौ कथयामास—"अस्ति विन्ध्याटवी नाम काचिदरण्यानी। तत्रैकस्मिन् विशाले शाल्मलीवृक्षे मां प्रसूय परलोकं गतायां मे जनन्यां जराजीर्णो जनको मामपालयत्। कदाचित्तु मातङ्गनामनि शबरसेनापतौ प्रस्थिते तत्सेनान्तर्गतः कश्चिद्वृद्धशबरस्तं शाल्मलीतरुमारुह्य पक्षपुटेन मामाच्छादयन्तं पितरं मे गतासुं विधाय शुष्कपर्णपुञ्जोपरि समपातयत्। अहन्तु भाग्यवशाज्जीवितो जलमन्विष्यन् चलितो मुनिकुमारेणासाधारणमहिम्ना हारीतनाम्ना स्वपितुर्महर्षेर्जाबालेराश्रममुपनीतः। स तु महर्षिर्मामवलोक्य हसन् पृष्टश्च मुनिभिः कृतकृत्यो रात्रौ सविस्तरमुवाच। (कथामुखम्)।

"आसीदवन्तीदेशे राजधान्यामुज्जयिन्यां महाराजाधिराजस्तारापीडो नाम। तस्य महिषी विलासवती, सर्वगुणाकरो मन्त्री शुकनासस्तस्य च पत्नी मनोरमा नामाभूत्। चिरमनपत्यताविषण्णायां विलासवत्यां विविधं व्रतमाचरन्त्यां कदाचित् राजा तस्या मुखे प्रविशन्तं चन्द्रं स्वप्ने ददर्श। शुकनासोऽपि स्वप्ने केनचिद्विप्रेण निहितं मनोरमायाः क्रोडे पुण्डरीकमेकमद्राक्षीत्। अथ विलासवती चन्द्रापीडं नाम पुत्रं सुषाव, मनोरमापि वैशम्पायनं नाम। तौ च कुमारौ परस्परपरमसौहार्दसम्पन्नौ राज्ञो यत्नेन सकलविद्यापारमुपगतौ। ततस्तु चन्द्रापीडो राजादेशाद्बलाहकनाम्ना सेनापतिना समुपनीतमिन्द्रायुधनामानमश्ववरमधिरुह्य विद्यालयात् राजधानीमाजगाम। जनकजनन्यादिसन्दर्शनानन्दितो मृगयां विधायागतः पत्रलेखाप्राप्तिमुदितः शुकनासेन विविधमुपदिष्टो राज्ञा च यौवराज्येऽभिषिक्तो दिग्विजयाय प्रतस्थे। वत्सरत्रयेण सर्वा दिशो विदिशश्च विजित्य हेमकूटधाम्नां किरातानामावासभूमिं विश्रामहेतोरधितिष्ठन् कदाचिदेकाकी चन्द्रापीड इन्द्रायुधमारुह्य मृगयानिर्गतः किन्नरमिथुनमालोक्य तद्ग्रहणायानुधावन् पञ्चदश योजनानि ययौ। तस्मिंश्च किन्नरमिथुने सन्निहितमुत्तुङ्गशैलशृङ्गमारूढे नितान्तनिर्वेदमापन्नः परिश्रान्तः पिपासातुरश्च जलमन्विष्यन् विशालमनोहरमच्छोदं नाम सरो दृष्टवान्। कृतावगाहनपानश्च तत्तीरे विश्राम्यन् वीणानिनादसमेतं मधुरं गानमाकर्ण्य तदनुसृत्य गतः परमसुन्दरीं योगिनीं शिवान्तिकगतामालोकयत्। ततश्च लब्धातिथिसत्कारेण तेन स्पृष्टा सा समभाषत—"अरिष्टातनयो गन्धर्वराजो हंसो मे जनकः, सोममयूखसम्भवकुलजाता गौरीदेवी च जननी, नाम च मे महाश्वेतेति। एकदा तु समतीतशैशवा स्वल्पकमेवास्मिन्नेव सरसि स्नातुमागता कुतोऽप्यलौकिकं सौरभमाघ्राय तदभिलक्ष्य गच्छन्ती केनचिदन्येन कुमारेण सहितं द्वितीयमिव मन्मथं मुनिकुमारमेकमालोक्य 'कोऽयं युवा, किमभिधाना चेयं कुसुममञ्जरी' इति द्वितीयं कुमारमपृच्छम्। स पुनरवादीत्—"दिव्यस्य महर्षेः श्वेतकेतोर्निरुपमरूपमोहितायाः श्रियो देव्या जातोऽयं तस्यैव महर्षेः पालितपुत्रः, पुण्डरीकजाततया पुण्डरीक

इत्यस्य नाम। इयन्तु पारिजातकुसुममञ्जरी नन्दनवन-देवतया सादरमुपहृता। सोऽपि कुमार,—"वयस्य! किमनेन प्रश्नपरिश्रमेण, यदि रोचते गृह्यतामियं" इत्युक्त्वा तां मञ्जरीं मम कर्णे निवेशयन् पतितामपि हस्ता दक्षमालिकां नाज्ञासीत्। अहन्तु तां मालामादाय प्र.स्थिता। अत्रान्तरे द्वितीयेन तु कुमारेण तं खलु मन्मथ विकारमवलोक्य तिरस्क्रियमाणः स कुमारः समुपेत्य मालां ययाचे। अहन्तु स्वकीयमेव स्थूलमुक्तामयं हारं स्वकण्ठादुन्मुच्य तस्मै दत्त्वा तां पुनः स्फटिकजपमालां कण्ठे निधाय कृतस्नाना जनन्या सह स्वगृहमागच्छम्। अथ मुहूर्त्तानन्तरं परिचारिका मे तरलिका नाम समागत्य तेन कुमारेण कृतं मत्परिचयादिप्रश्नवृत्तान्तमज्ञापयत्, अददाच्च पत्रमेकं, तत्र चेयमार्य्या लिखितासीत्—

'दूरं मुक्तालतया विससितया विप्रलोभ्यमानो मे। हंस इव दर्शिताशो मानसजन्मा त्वयानीत.।'

दिवावसाने तु कपिञ्जल. समागत्य समुत्कण्ठितहृदयां मां तस्य कुमारस्य मन्मथव्यथामावेदयन् मम मातरमागच्छन्तीमवेत्य त्वरितं प्रातिष्ठत। जनन्यान्तु समागत्य प्रस्थितायां, अतीतायाञ्च सन्ध्यायां, उदिते चन्द्रमसि, निभृतमहं तरलिकाद्वितीया तमभिसरन्ती कपिञ्जलविलापमाकर्णयन्ती द्रुतमुपेत्य मन्दभाग्या तं खलु कुमारमुपरतमद्राक्षम्। अत्रान्तरे चन्द्रमण्डलादवतीर्य्य कश्चन महापुरुषः—"वत्से। महाश्वेते। न त्वया जीवनं परिहार्य्यम्, पुनरप्यनेन सह ते भविष्यति समागमः" इत्यभिधाय तं मृतमुत्क्षिप्य गगनमुदतिष्ठत्। रोषपरवशः कपिञ्जलोऽपि सपरिकरस्तमन्वधावत्। अहन्तु विस्मिता च विषण्णा च संसारस्य क्षणभङ्गुरता मालोकयन्ती व्रतमिदमवलम्बितवती" इति।

अथ "सा तरलिका क्व गता" इति चन्द्रापीडेन पृष्टा सा पुनरवादीत्"मदिरादेव्या जाता गन्धर्वराजस्य चित्ररथस्य कन्या कादम्बरी नाम द्वितीयमिव मे हृदयम्। सा च महार्त्तया "सशोकायां महाश्वेतायां नाहमात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि' इति प्रतिजज्ञे। गन्धर्वराजानुरोधेन तु कादम्बर्य्याः पाणिग्रहणे सम्मति-साधनाय तरलिकामहमद्यैव प्रेषितवतीति।

अथ परेद्युः प्रभात एव तरलिकया सह केयूरको नाम कश्चित् कादम्बरीभृत्यः समागत्य तस्याः पाणिग्रहणा-सम्मतिं न्यवेदयत। ततो भृशमनुरुन्धत्या महाश्वेतया सह चन्द्रापीडो गन्धर्वराजधानीमुपेत्य असामान्यरूप लावण्यवतीं कादम्बरीं पश्यन्नमुह्यत। कादम्बर्य्यपि तथैव परिमुह्यन्ती यथावसरं दुकूलयुगलं शेषनामानमेक-ममूल्यं हारञ्च चन्द्रापीडायोपजहार। स तु कादम्बर्य्या भावविमोहितस्तदीयहृदयेन सह अच्छोदसरस्तीर मागत्य स्वकीयमेवागतं स्कन्धावारमालोक्य प्रविश्य च वैशम्पायनाय सर्वं न्यवेदयत्। अथ परेद्युः प्रभाते केयूरकेण समुपेत्य कादम्बरीदशां वर्ण्यमाना सहैव चन्द्रापीडः पत्रलेखामादाय गत्वा हिमगृहगतां कामाकुलां कादम्बरीं पश्यन् व्यङ्ग्यार्थपूर्णं ललितमालापं विधाय, तदनुरोधेन पत्रलेखां तत्रैवावस्थाप्य स्कन्धावारमागतः प्राप्य च पितुः पत्रम्, पत्रलेखामादाय गन्तुं सेनापतिपुत्रं मेघनादनामानं स्थापयित्वा उज्जयिनीमयासीत्। कतिपयदिनानन्तरन्तु मेघनादेन सह पत्रलेखा गत्वा चन्द्रापीडाय कादम्बर्य्या अत्रस्थासुक्तिं विज्ञप्तिञ्च न्यवेदयदिति। (पूर्वभागः)।

सेयं कादम्बरीकथा बाणभट्टेन कथासरित्सागरीनषष्टितमतरङ्गगतं मकरन्दिकोपाख्यानमेव क्वचित् किञ्चिद्विकलीकृत्य पात्राणां नामान्तराणि च विधाय विरचिता। भूषणभट्टेन तूत्तरार्द्धे वृत्तान्तवैषम्यमपि किञ्चित् प्रतिपादितमिति प्रतीयते। तथा च

कथासरित्सागरगतनामानि।	कादम्बरीगतनामानि
काञ्चनपुरी	विदिशा।
सुमनाः	शूद्रकः।
मुक्तालता	चाण्डालदारिका।
शास्त्रगञ्जः (शुकः)	वैशम्पायनः।
हिमालयपादे रोहितकतरुः	विन्ध्याटव्यां शाल्मलीतरुः।
मरीचिः	हारीतः।
पौलस्त्यः	जाबालिः।
रत्नाकरं पुरं	उज्जयिनी नगरी।
ज्योतिष्प्रभः	तारापीडः।
हर्षवती	विलासवती।
सोमप्रभः	चन्द्रापीडः।
प्रभाकरः	शुकनासः।
प्रियङ्करः	वैशम्पायनः।
आशुश्रवाः (उच्चैःश्रवसः पुत्रः)	इन्द्रायुधः।
पद्मकूटः	हंसः।
हेमप्रभा	गौरी।
मनोरथप्रभा	महाश्वेता।
दीधितिमान्	श्वेतकेतुः।
रश्मिवान्	पुण्डरीकः।
सिंहविक्रमः (विद्याधरराजः)	चित्ररथः (गन्धर्वराजः)
मकरन्दिका	कादम्बरी।
देवजयः	केयूरकः।
सिंहविक्रमः शुकोऽभूत्	पुण्डरीको मध्ये वैशम्पायनः परञ्च तदाख्य एव शुकोऽभूत्।
रश्मिवान् सुमना अभूत्	चन्द्रापीडः शूद्रकोऽभूत्।

अथ स्वरूप-नायकादिनिरूपणम् ।

कादम्बरी नामेदं कथाकाव्यम् । यथा साहित्यदर्पणे—

"कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्म्मितम् ।
क्वचिदत्र भवेदार्य्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके ॥
आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्त्तनम् ॥"

अत्र मुक्तकादीनि चतुर्विधान्येव गद्यानि सन्ति, किन्तु उत्कलिकाप्रायमेव गद्यं बहुलम् । तथा च तत्रैव—

"वृत्तबन्धोज्झितं गद्यं, मुक्तकं वृत्तगन्धि च । भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकञ्च चतुर्विधम् ॥
आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुतं परम् । अन्यद्दीर्घसमासाढ्यं तूर्य्यञ्चाल्पसमासकम् ॥"

अनुकूलो धीरोदात्तलक्षणश्चन्द्रापीडो नायकः । यथा—

"अनुकूल एकनिरतः ।"
"अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः ।
स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रतः कथितः ।"

कादम्बरी तु कन्या परकीया मुग्धा नायिका । यथा—

"कन्या त्वजातोपयमा सलज्जा नवयौवना ।"
"परकीया द्विधा प्रोक्ता परोढ़ा कन्यका तथा ।"
प्रथमावतीर्णयौवनमदनविकारा रतौ वामा ।
कथिता मृदुश्च माने समधिकलज्जावती मुग्धा ॥'
परिणयात् परन्तु (उत्तरार्द्धे) स्वकीया मध्या च मन्तव्या ।

विप्रलम्भशृङ्गारः प्रधानरसस्तत्र च पूर्वार्द्धे उत्तरार्द्धस्य कियदंशे च पूर्वरागरूपः, उत्तरार्द्धशेषे तु करुणरूपः । सम्भोगशृङ्गारोऽपि क्वचिद्दृश्यते ।

"यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ ।"
"श्रवणाद्दर्शनाद्वापि मिथःसंरूढरागयोः ।
दशाविशेषो योऽप्राप्तौ पूर्वरागः स उच्यते ॥"
"यूनोरेकतरस्मिन् गतवति लोकान्तरं पुनर्लभ्ये ।
विमनायते यदैकस्तदा भवेत् करुणविप्रलम्भाख्यः ॥"

करुणहास्यादयोऽन्येऽपि रसाः सन्ति ।

बाहुल्येन माधुर्य्यं गुणः । यथा—

"चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्य्यमुच्यते । सम्भोगे करुणे विप्रलम्भे शान्तेऽधिकं क्रमात् ।"

प्रसादगुणोऽपि न विरलः ।

अतिरेकेण पाञ्चाली रीतिः। तथा च—

"वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः। समस्तपञ्चषपदो बन्धः पाञ्चालिका मता॥"

अन्या अपि रीतयोऽल्पाधिक्यभावेन परिलक्ष्यन्ते।

तदयं संग्रहश्लोकः—

चन्द्रापीडोऽनुकूलः सकलगुणधरो नायकोऽस्मिन्नुदात्तः
नेत्री कन्यान्यदीया मृदुललिततनुर्मुग्धकादम्बरी च।
पाञ्चाली नाम रीति र्विलसति बहुला विप्रलम्भो रसोऽङ्गी
माधुर्य्याख्यो गुणो वा कविमुकुटमणेः काव्ययोरम्यमेतत्॥

---

१ जून सन् १९२८ से सुशीला ने आरंभ की।

कादम्बरी।

पूर्वभागे।

मङ्गलाचरणं।

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः ॥ १ ॥

नमो गणेशाय।

शिरसि सशशिगङ्गा चित्रभानुश्च भालु,
वपुषि दधदनन्तः सागराल्लामनुल्लाम् ।
उरसि च जगदम्बालम्बते सन्ततं यं
मनसि चिरमुदीयाद्वः शिवः श्रीशिवः सः ॥ १ ॥

ज्योतिरिङ्गणरुचा परिमोहात् यामिनीविकसनं प्रचिकीर्षुः ।
भेलयाऽस्मि जलधिञ्च तितीर्षुः देवदेव ! भव मेऽद्य सहायः ॥ २ ॥

कादम्बरीरसनिपाननितान्तमत्तो जानाति कोऽपि न जनो गुणदोषवार्त्ताम् ।
तस्मात्तदीयविवृतावपि दोषशङ्की श्रीमानिह प्रयतते हरिदासशर्म्मा ॥ ३ ॥

मूलानुरक्ता सरला मृगाढा सपल्लवा कल्पलताऽभिधाना ।
मदन्मनोनन्दनसम्भवेयं टीका प्रदेयान्निखिलार्थितार्थम् ॥ ४ ॥

अथ तत्रभवान् महाकविर्बाणभट्टः प्रारिप्सितपरिसमाप्तये "मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात् फलदर्शनात् श्रुतितश्च" इति साङ्ख्यसूत्रादिबोधितकर्त्तव्यताकतया जगत्कारणस्य सगुणब्रह्मणो नमस्कारं कुरुते—

रजोजुष इति । प्रजायन्त इति व्युत्पत्त्या प्रजापदमत्र जन्यपदार्थमात्रोपलक्षणं । तथा च प्रजानां जगतां जन्मनि उत्पत्तिकाले रजोजुषे रजोगुणावलम्बिने चतुराननमूर्त्तये, स्थितौ प्रजानां परिपालनसमये

যিনি জগতের উৎপত্তির বেলায় রজোগুণাবলম্বী ব্রহ্মা, পরিপালনের সময় সত্ত্বগুণাধিষ্ঠিত বিষ্ণু, আবার প্রলয়কালে তমোগুণশালী রুদ্র, সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ বেদময় মায়াশালী সেই পরব্রহ্মকে নমস্কার করি ॥ ১ ॥

जयन्ति बाणासुरमौलिलालिता दशास्यचूड़ामणिचक्रचुम्बिनः ।
सुरासुराधीशशिखान्तशायिनो भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांशवः ॥ २ ॥

सत्त्ववृत्तये सत्त्वगुणाधिष्ठिताय विष्णुस्वरूपाय, तथा प्रलये प्रजानां विनाशकाले तमःस्पृशे तमोगुणभाजि रुद्ररूपाय, सर्गस्थितिनाशहेतवे जगतां सृष्टिरक्षासंहारकारणीभूताय, त्रयीमयाय ऋग्यजुःसामरूपाय, त्रिगुणात्मने त्रिगुणं माया आत्मनि यस्य तस्मै मायाशालिने, अजाय नित्याय परब्रह्मणे नम इति वाचनिकनमस्कारः ।

अत्र रजोजुषे सर्गहेतवे, सत्त्ववृत्तये स्थितिहेतवे, तमःस्पृशे नाशहेतवे इति यथासंख्येनान्वयसम्भवाद् यथासंख्यमलङ्कारः ।

पद्येष्वेतेषु वंशस्थविलं वृत्तं "वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ" इति लक्षणात् ।

रजोगुणादीनां लक्षणमुक्तं सांख्यकारिकायां

"सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलञ्च रजः ।
गुरुवरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ॥"

ब्रह्मणः सर्गादिहेतुत्वे प्रमाणन्तु "जन्माद्यस्य यत" इति वेदान्तसूत्रं, "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्म" इति श्रुतिः, "ब्रह्मत्वे सृजते लोकान् विष्णुत्वे पालयत्यपि । रुद्रत्वे संहरत्येव तिस्रोऽवस्थाः स्वयम्भुवः ।" इति स्मृतिश्च ।

हेतुत्वञ्चास्य निमित्तत्वमुपादानत्वञ्चावगन्तव्यं । तथा च वेदान्तसूत्रं "प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात्" । "प्रकृतिश्च उपादानकारणञ्च ब्रह्माभ्युपगन्तव्यं निमित्तकारणञ्च" इति शाङ्करभाष्यञ्च ।

"चत्वारि शृङ्गास्त्रयोऽस्य पादा" इत्यादिश्रुतेः "वेद एव परं ब्रह्म" इत्यादिस्मृतेश्च ब्रह्मणस्त्रयीमयत्वं, "अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः । अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः ।" इति श्रुतेः "मायान्तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनन्तु महेश्वरं । अस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत् ॥" इति सांख्यप्रवचनभाष्यधृतस्मृतेश्च मायाधिष्ठानकाले ब्रह्मणस्त्रिगुणात्मकत्वमवगन्तव्यमिति संक्षेपः ॥१॥

"ज्ञानञ्च शङ्करादिच्छे"दिति स्मृतेश्चिकीर्षितकाव्यकरणोपयोगिज्ञानलाभाय चरणरेणूत्कर्षप्रतिपादनव्याजेन शङ्करं स्मरति जयन्तीति । बाणासुरस्य बाणनाम्नो महाशैवस्य असुरस्य मौलिना मुकुटेन लालिताः नमस्कारकाले आदरेण गृहीताः, दशास्यचूड़ामणीनां रावणकिरीटरत्नानां चक्रं समूहं चुम्बन्ति प्रणामकाले स्पृशन्ति ये ते । सुरासुराधीशानां देवासुरपतीनां शिखान्तेषु चूड़ाग्रभागेषु शयितुं प्रणतिकाले स्थातुं शीलं येषां ते, तथा भवच्छिदः पुनर्जन्मनिवर्त्तकाः मोक्षोपयोगिज्ञानजननद्वारा संसारक्लेशनिवर्त्तका इत्यर्थः, त्र्यम्बकस्य त्रिलोचनस्य शिवस्य पादपांशवः चरणधूलयो जयन्ति सर्वोत्कर्षेण वर्त्तन्ते । "जेस्तुवन्तस्तिवन्ति" इति वचनात् लट् । उत्कर्षप्रतिपादनेन नमस्कार आक्षिप्यते ।

अत्र उत्कर्षप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बाणासुरमौलिलालनादिकारणचतुष्टयोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः, वृत्त्यनुप्रासश्चेत्यनयोः संसृष्टिः ॥ २ ॥

অসুররাজ বাণকর্ত্তৃক আদরে মস্তকে পরিগৃহীত, রাক্ষসরাজ রাবণের মুকুটমণিসংস্পর্শী, দেবাধিপতি ও অসুরাধিপতিগণের কেশকলাপবর্ত্তী এবং সংসারযন্ত্রণাবিনাশী মহাদেবের চরণধূলির জয় হউক ॥ २ ॥

जयत्युपेन्द्रः स चकार दूरतो बिभित्सया यः क्षणलब्ध (१) लक्ष्यया (२) ।
दृशैव कोपारुणया रिपोरुरः स्वयं भयाद्भिन्नमिवास्रपाटलम् ॥ ३ ॥

नमामि भर्वो(३)श्चरणाम्बुजद्वयं सशेखरैर्मौखरिभिः कृतार्चनम् ।
समस्तसामन्तकिरीटवेदिका-विटङ्कपीठोल्लुठितारुणाङ्गुलि ॥ ४ ॥

इष्टदेवतास्मरणात् सम्पूर्णफललाभाभिलाषेण नरसिंहमूर्त्तिं विष्णुं स्मरति, जयतीति । स प्रसिद्धः अनुजत्वेन इन्द्रमुपगत इत्युपेन्द्रो नरसिंहमूर्त्तिर्विष्णुः जयति सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् । यः बिभित्सया भेत्तुं विदारयितुं इच्छया दूरतः क्षणं लब्धं लक्ष्यं विषयः तदीयोरःस्थलं यया तया क्षणं तद्वक्षःस्थलं पश्यन्त्या इत्यर्थः, कोपारुणया क्रोधेन रक्तवर्णया दृशैव चक्षुषैव न तु नखद्वारा विदारणेनेत्यर्थः, रिपोः शत्रोः हिरण्यकशिपोः उरो वक्षःस्थलं भयात् स्वयं भिन्नमिव नरसिंहभयात् आत्मना विदीर्णमिव अस्रपाटलं स्वकीयरक्तनयनकिरणपातेन रुधिरवत् श्वेतरक्तं चकार । एतेन बाणभट्टो नरसिंहोपासक आसीदिति प्रतीयते ।

अत्र भयात् स्वयं भिन्नमिवेति वाच्या भावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षा, हिरण्यकशिपुवक्षसः स्वकीयश्यामगुणत्यागात् पाटलगुणग्रहणेन तद्गुणालङ्कारो लुप्तोपमा च, इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः । स इति तच्छब्दस्य प्रसिद्धपरामर्शित्वात् यच्छब्दस्य चोत्तरवाक्यगतत्वेन तत्तच्छब्दानपेक्षणात् "आत्मा जानाति, यत् पाप" मित्यादि दर्पणोदाहृतवत् न वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः ॥ ३ ॥

"आदौ गुरुं नमस्कृत्य" इति स्मरणाद् गुरुं नमस्कुरुते नमामीति । शेखरैः शिरोमाल्यैः "शिखा स्वापीडशेखरौ" इति सशेखरास्तैः, मुखरस्य वेदपाठेन शब्दायमानस्य भाव इति मौखरं तदेषामस्तीति मौखरिणः तैः वेदध्वनिकारिभिः शिष्यैः । केचित्तु सशेखरैः सकिरीटैः मौखरिभिः क्षत्रियविशेषैरिति व्याचक्षुः कृता अर्चना पूजा यस्य तत् । समस्तानां सामन्तानां अधिकृतानां राज्ञां, किरीटान्येव वेदिकाः परिष्कृतभूमयः तासु यानि विटङ्कपीठानि कपोतपालिकास्थलानि मध्यगतोन्नतदेशा इत्यर्थः, तेषु उल्लुठिताः प्रणामकाले संसक्ताः, अरुणाः किरीटमणिकिरणसम्पर्कात् स्वभावाच्च रक्तवर्णा अङ्गुलयो यस्य तत् । भर्वोः भर्वुनामकस्य गुरोश्चरणाम्बुजद्वयं नमामि । एतेनास्य नित्याध्यापकत्वं सार्वभौममन्त्रित्वञ्च सूचितम् ।

अत्र परितः समानतासूचनाय किरीटेषु वेदिकात्वारोप इति यथाकथञ्चित् निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः । पूजोपयोगिपुष्पसंग्रहद्योतनार्थं सशेखरैरित्युक्तमिति नापुष्टार्थत्वदोषः । विटङ्कपदञ्च स्वल्पदेशत्वप्रतिपादनप्रयोजनाय किरीटमध्यगतोन्नतदेशार्थे लक्षणया प्रयुक्तमिति न नेयार्थतादोषोऽपि । "कपोतपालिकायान्तु विटङ्कं पुंनपुंसक" मित्यमरः । ४ ।

জগৎপ্রসিদ্ধ নরসিংহমূর্ত্তি নারায়ণের জয় হউক ; যিনি বিদারণ করিবার ইচ্ছায় দূর হইতে ক্ষণকাল অবলোকনকারী এবং ক্রোধে রক্তবর্ণ নিজনয়নদ্বারাই হিরণ্যকশিপুর বক্ষঃস্থলকে ভয়বশতঃ আপনা হইতে বিদীর্ণের ন্যায় রুধিরতুল্য পাটলবর্ণ করিয়াছিলেন ॥ ৩ ॥

মস্তকে পুষ্পমাল্যধারী ও সর্ব্বদা বেদধ্বনিকারী শিষ্যগণ যাহার পূজা করে এবং সকল সামন্তরাজগণের কিরীটবেদিকার উন্নতস্থানসংস্পর্শে যাহার অঙ্গুলিসমূহ রক্তবর্ণ হইয়া থাকে, 'ভর্বু' নামক গুরুদেবের সেই চরণকমলযুগলকে নমস্কার করি ॥ ৪ ॥

---

(१)…लब्ध… । (२) ..लक्ष्यया । (३) भत्सोः, भर्त्सोः ।

सज्जनदुर्जनयोः स्तुतिनिन्दे।

अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते।
विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुःसहं सन्निहित सदा मुखे॥ ५ ॥
कटु क्वणन्तो मलदायकाः खला स्तुदन्त्यलं बन्धनशृङ्खला इव।
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव॥ ६ ॥
सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्न दुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्।
तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्म्मलम्॥ ७ ॥

अकारणेति। अकारणं आविष्कृतेन उद्भावितेन वैरेण निन्दादिभिः शत्रुतया दारुणात् भीषणप्रकृतेः असज्जनात् कस्य जनस्य भयं न जायते अपितु सर्व्वस्यैव जायत इत्यर्थः। महाहेर्महासर्पस्य विषमिव यस्य असज्जनस्य मुखे वदने सुदुःसहं अतीवकष्टेन सहनीयं दुर्वचः कटुवाक्यं सदा सन्निहितं आसन्नं उपस्थितं वर्त्तते। अतएव ममापि चिकीर्षितकाव्यनिन्दावादसम्भावनया असज्जनाद्भयमस्तीति भावः।

अत्र प्रथमार्द्धे अर्थापत्तिः द्वितीयार्द्धे चोपमा, अनयोः परस्परनैरपेक्ष्यात् संसृष्टिरलङ्कारः॥ ५ ॥

कटिृति। कटु श्रुतिदुःखावहं यथा स्यात्तथा क्वणन्तः ध्वनन्तः शब्दायमानाश्च मलदायका दोषाविष्कारिणः स्वसंलग्नस्थाने मलजनकाश्च खला दुर्जनाः, बन्धनशृङ्खला इव अलं अत्यर्थं तुदन्ति मनो बन्धनस्थानञ्च व्यथयन्ति। तु किन्तु सन्तः सज्जनाः, मणिनूपुरा इव पदे पदे स्थाने स्थाने सर्व्वत्रैवेत्यर्थः प्रतिपदक्षेपे च साधुध्वनिभिः सन्तोषकरवाक्यैः श्रुतिमधुरशब्दैश्च मनो हरन्ति आकर्षन्ति। सुतरां ममापि प्रारिप्सितकाव्यस्य निन्दया दुर्जनान्मनोवेदना, प्रशंसया च सज्जनान्मनःसन्तोषः सम्भाव्यत इति भावः।

अत्र पूर्णोपमयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिरलङ्कारः।

"शृङ्खला पुंस्कटीवस्त्रबन्धे च निगडे त्रिषु।" इति मेदिनी॥ ६ ॥

सुभाषितमिति। हारि मनोहरं सुभाषितं प्रशस्तवाक्यं सत्काव्यादि कर्तृ, अर्करिपोः राहोः अमृतं पीयूषमिव दुर्जनस्य खलस्य गलात् कण्ठात् अधो न विशति प्रवेशं न लभते। यथा राहुर्गलादधःस्थानाभावात् कवलीकृतस्यापि चन्द्रस्यामृतं निगिरितुं नार्हति, तथा दुर्जनोऽपि सहृदयत्वाभावात् यत्नेनाध्याप्यमानमपि

বিনা কারণে যে, শত্রুতা প্রকাশ করে এবং ভয়ঙ্কর সর্পের মুখে বিষের ন্যায় যাহার মুখে সর্ব্বদা নিতান্ত অসহ্য দুর্ব্বাক্য উপস্থিত থাকে এইরূপ ভীষণস্বভাব দুর্জ্জন হইতে কাহার ভয় না জন্মে ॥ ৫ ॥

কটুভাষী এবং দোষোদ্ভাবনকারী দুর্জ্জনগণ, রুক্ষশব্দকারী ও মলজনক বন্ধনশৃঙ্খলের ন্যায় অত্যন্ত বেদনা জন্মায়। কিন্তু মণিময় নূপুর যেমন প্রতিপদক্ষেপে শ্রুতিমধুরশব্দে চিত্ত আকর্ষণ করে, তেমন সাধুগণ সর্ব্বত্রই মধুর বাক্যে চিত্ত আকর্ষণ করেন ॥ ৬ ॥

চন্দ্রের অমৃত যেমন রাহুর গলার নীচে প্রবেশ করে না, সেইরূপ মনোহর বাক্য দুর্জ্জনের

कथाप्रशंसा।

स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्।
रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता कथा जनस्याभिनवा वधूरिव ॥ ৮ ॥

सत्काव्यादिकं नावबुध्यत इति सरलार्थः। किन्तु सज्जनो गुणग्राही जनः हरिर्विष्णुः अतिनिर्म्मलं महार्घं कौस्तुभमणिमिव तदेव हारि सुभाषितं हृदयेन धत्ते धारयति। सुतरां ममाप्येतत् काव्यं दुर्जनो नावबुध्यमानः परिहरेत् गुणग्राही तु साकल्येन बुध्यमानो नितरामाद्रियेतेति भावः।

अत्राप्युपमयोः पूर्ववत् संसृष्टिरलङ्कारः ॥ ৭ ॥

स्फुरदिति। स्फुरतः प्रकाशमानस्य स्पष्टं प्रतीयमानस्य कलालापस्य नृत्यगीतादिकलाविद्यासम्बन्धिनो वाक्यस्य विलासेन विन्यासेन कोमला मृदुला, युद्धवर्णनादिवदनुद्धतेत्यर्थः, पक्षान्तरे तु स्फुरन्तौ प्रकाशमानौ यौ कलालापविलासौ मधुरालापविभ्रमौ ताभ्यां कोमला मनोहरा। तथा रसेन शृङ्गारादिना स्वप्रतिपाद्यशृङ्गारादिरसैक्येनेत्यर्थः शय्यां गुम्फं ग्रथनं अवान्तरकथानां स्वप्रासङ्गिकतया संयोगमिति यावत् स्वयं अभ्युपागता आत्मना प्राप्ता, अन्यत्र तु रसेन सुरतानुरागेण स्वयं आत्मनैव शय्यां शयनीयं अभ्युपागता उपस्थिता, अभिनवा अपूर्वा कथा तदाख्यः प्रबन्धः, अभिनवा वधूरिव तरुणी भार्य्येव जनस्य हृदि चित्ते कौतुकेन अधिकं बहुलीभूतं रागं श्रवणस्य सुरतस्य च अनुरागं करोति जनयति। सुतरामियमपीदृश्येव मत्प्रणीता कादम्बरीकथा लोकस्य श्रवणानुरागं जनयिष्यतीति भावः।

अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। रसेन इत्युक्तावपि न रसस्य स्वशब्दोक्तिदोषः, स्वरूपेणानुभूयमानस्यैव रसस्य तत्तच्छब्देनाभिधाने तद्दोषाङ्गीकारात्, अत्र तु स्वरूपेणानुभूयमानत्वाभावात्, अन्यथा "शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः" इत्यमरोक्त्यादावपि तद्दोषप्रसङ्गात्।

"कोमलं मृदुसुन्दरे" इति विश्वः। 'शय्या तल्पे शब्दगुम्फे" इत्यनेकार्थः। अस्यानुरूपः श्लोको यथा—"दर्शयन्ती मुखे खेदं प्रस्खलन्ती पदे पदे। कथञ्चिन्नीयते शय्यां कथा नववधूरिव ॥ ৮ ॥

কণ্ঠের নীচে প্রবেশ করে না। কিন্তু নারায়ণ, যেমন অতিনির্ম্মল কৌস্তুভমণি হৃদয়ে ধারণ করেন, গুণগ্রাহী সজ্জন, সেইরূপ মনোহর বাক্য হৃদয়ে ধারণ করেন ॥ ৭ ॥

সুস্পষ্ট মধুরালাপে ও হাবভাবে নিতান্ত মনোহরা এবং অনুরাগবশতঃ আপনা হইতেই শয্যায় উপস্থিতা যুবতি বধূর ন্যায়, সুগমকলাবিদ্যাসম্বন্ধীয় বাক্যবিন্যাসে সুশ্রাব্য এবং শৃঙ্গারাদি কোন একটী রসের অনুসরণ করায় অবান্তর কথার সহিত সুশ্লিষ্ট কথাকাব্য, লোকের হৃদয়ে কৌতুকবশতঃ সমধিক অনুরাগ জন্মাইয়া থাকে ॥ ৮ ॥

हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः।
निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव ॥ ९ ॥

कविवंशवर्णनं।

बभूव वात्स्यायनवंशसम्भवो द्विजो जगद्गीतगुणोऽग्रणीः सताम्।
अनेकगुप्तार्चितपादपङ्कजः कुबेरनामांश इव स्वयम्भुवः ॥ १० ॥

हरन्तीति। उज्ज्वलाः स्पष्टाः दीपकोपमा दीपकालङ्कारोपमालङ्कारा येषु तैः, नवैरपूर्वैः पदार्थैः शब्दानामभिधेयैः, उपपादिता विरचिताः, निरन्तरेण अविरतेन प्रायेण सर्व्वत्रैव स्थितेन श्लेषेण श्लेषालङ्कारेण घनाः सुगाढ़ा दुरवगाह्याः, सुजातयः सुन्दरजातीयाः, कथाः तदाख्याः प्रबन्धाः, उज्ज्वला दीपकाः प्रदीपाः, उपमा उपमानानि येषां तैः, उज्ज्वलप्रदीपतुल्यैरित्यर्थः नवैर्नूतनैः पदार्थैः उपादेयपदार्थभूतैः, चम्पककुड्मलैश्चम्पकमुकुलैः, उपपादिता ग्रथिताः, निरन्तरश्लेषेण अव्यवधानसंयोगेन घना निविड़ाः, तथा शोभना जातयो जातिकुसुमानि यासु ताः, महास्रजो महामाला इव कं जनं न हरन्ति, नाकर्षन्ति अपि तु सर्व्वमेवेत्यर्थः। सुतरां ममाप्येषा कथा सर्व्वमेव जनमाकर्षेदिति भावः।

अत्रार्थापत्तिपूर्णोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करोऽलङ्कारः। विकासोन्मुखतया विशेषसौन्दर्य्यप्रतिपादनाय कुड्मलग्रहणं ॥ ९ ॥

बभूवेति। वत्सस्यापत्यमिति वात्स्यः सः अयनं गोत्रप्रवर्त्तकतया आश्रयो यस्य स तादृशो यो वंशस्तत्र सम्भव उत्पन्नः। जगता जगज्जनेन गीताः कीर्त्तिताः गुणाः विद्याविनयादयो यस्य सः। सतां साधूनां अग्रणीः अग्रेसरः श्रेष्ठः। अनेकैर्बहुभिः गुप्तैर्वैश्यैः अर्च्चिते पूजिते पादपङ्कजे चरणकमलद्वयं यस्य सः। तथा स्वयम्भुवो ब्रह्मणः अंशः अंशावतार इव कुबेरनामा द्विजो ब्राह्मणो बभूव।

अत्र स्वयम्भुवोंऽश इवेति वाच्या भावाभिमानिनी द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। "शर्म्मा देवश्च विप्रस्य वर्म्मान्तं क्षत्रियस्य च। गुप्तदासात्मकं नाम प्रशस्तं वैश्यशूद्रयोः।" इति वचनात् गुप्तपदेन वैश्यग्रहणं ॥ १० ॥

সহজবোধ্য দীপক ও উপমালঙ্কারসম্পন্ন, অপূর্ব্ব পদার্থের সমাবেশে বিরচিত এবং অবিরত শ্লেষালঙ্কারে কিঞ্চিৎ দুর্বোধ্য সুন্দর কথাকাব্য, উজ্জ্বল প্রদীপের তুল্য, নূতন উপাদেয় বস্তু চম্পককুসুমকলিকাদ্বারা গ্রথিত, জাতীকুসুমসম্পন্ন এবং পরস্পর ঘনসন্নিবিষ্ট মহামালার ন্যায় কোন ব্যক্তিকে আকর্ষণ না করে ॥ ৯ ॥

ব্রহ্মার অংশাবতারের ন্যায় বাৎস্যগোত্রে কুবেরনামে এক ব্রাহ্মণ জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন; তিনি সাধুগণের অগ্রগণ্য ছিলেন, জগতের লোক তাঁহার গুণগান করিত এবং অনেক বৈশ্য তাঁহার চরণকমলের সেবা করিত ॥ ১০ ॥

उवास यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे सदा पुरोडाशपवित्रिताधरे ।
सरस्वती सोमकषायितोदरे समस्तशास्त्रस्मृतिवन्धुरे मुखे ॥ ११ ॥
जगुर्गृहेऽ (१) भ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः ससारिकैः पञ्जरवर्त्तिभिः शुकैः ।
निगृह्यमाणा बटवः पदे पदे यजूंषि सामानि च यस्य शङ्किताः ॥ १२ ॥

उवासेति । श्रुतिभिर्वेदैः वेदपाठरित्यर्थः शान्तं विनष्टं कल्मषं पापं यस्य तस्मिन् नित्यवेदपाठेन वाचनिकपापहीन इत्यर्थः । पुरोडाशेन अग्निहोत्रादौ हुतशेषेण हविषा पवित्रितौ भक्षणकाले संयोगेन पवित्रीकृतौ अधरौ ओष्ठौ यस्य तस्मिन् । सोमेन सोमरसेन यज्ञे सोमरसपानेन कषायितं सुरभीकृतं उदरं अभ्यन्तरं यस्य तस्मिन् । तथा समस्ता याः शास्त्रस्मृतयः व्यासादिप्रणीतब्रह्मसूत्रादीनि शास्त्राणि मन्वादिप्रणीतधर्म्मसंहिताश्च स्मृतयः, ताभि स्तत्पाठैरित्यर्थः वन्धुरं रम्यं तस्मिन् । यस्य कुवेरस्य मुखे वदने सरस्वती वाग्देवी सदा उवास वसति स्म । एतेनास्य नित्यवेदपाठित्वं नियतयाज्ञिकत्वं सर्व्वशास्त्रज्ञत्वञ्च प्रत्यायितम् ।

"पुरोडाशो हविर्भेदे ..हुतशेषे च कीर्त्तित" इति विश्व. । "वन्धुरं मुकुटे...त्रिषु स्याद्रम्यनम्रयोः" इति मेदिनी ।

पुरोडाशेति "मन्त्रे श्वेतवहुक्थशंसपुरोडाशावयजिभ्यो विन्" इति निपातः । पवित्रौ कृताविति पवित्रितौ, कषायं कृतमिति कषायितं उभयत्रापि करोत्यर्थेनन्तात् कर्म्मणि क्तः । स्मृतीनां शास्त्रान्तर्गतत्वेऽपि तासां धर्म्मप्रतिपादकतया प्राधान्यसूचनार्थं पृथक् स्मृतिपदमुपात्तं गोवृषन्यायात् ॥ ११ ॥

जगुरिति । यस्य कुवेरस्य गृहे बटवो ब्राह्मणबालकाः, अभ्यस्तं अनेकशः श्रवणान्मुखस्थीकृतं समस्तं सकलं वाङ्मयं शास्त्रं यै स्तैः, पञ्जरवर्त्तिभिः, सारिकाभिः सहेति ससारिकैः शुकैः कीरपक्षिभिः पदे पदे प्रतिपदोच्चारणे निगृह्यमाणाः 'युष्माभिरशुद्धं पठितं, इदन्तु एतादृक्' इत्थं पराभूयमानाः, अतएव शङ्किताः पुनरपि शुककर्तृकदोषोद्भावनशङ्कान्विताः सन्तः, यजूंषि यजुर्व्वेदान् सामानि सामवेदांश्च जगुः पठितवन्तः । एतेन तस्य चिरतरप्रचुरशिष्याध्यापकत्वं सूचितम् ।

अत्र ससारिकैः शुकैस्तथा निग्रहासम्बन्धेऽपि तत् सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः ॥ १२ ॥

বাগ্‌দেবী সর্ব্বদা যাহার মুখে বাস করিতেন, এবং বেদপাঠে যাহার মুখের বাচনিক পাপ বিনষ্ট হইয়াছিল, যজ্ঞের অবশিষ্ট দ্রব্যভক্ষণে ওষ্ঠযুগল পবিত্র করিয়াছিল, যজ্ঞকালে সোমরস পান করায় মুখমধ্য সৌরভ সম্পন্ন হইত, আর যাহার মুখখানি সকলশাস্ত্র উচ্চারণ করিবার কালে সুন্দর দেখাইত ॥ ১১ ॥

অনবরত শ্রবণ করায় সকল শাস্ত্র যাহাদের মুখস্থ হইয়াছিল, এই জাতীয় পঞ্জরস্থিত শুক ও সারিকাগণকর্ত্তৃক পদে পদে পরাস্ত হইয়া ব্রাহ্মণবালকগণ, আশঙ্কিত চিত্তে যাহার গৃহে যজুর্ব্বেদ ও সামবেদ পাঠ করিত ॥ ১২ ॥

---

(१) यद्वा··· ।

हिरण्यगर्भो भुवनाण्डकादिव क्षपाकरः क्षीरमहार्णवादिव ।
अभूत् सुपर्णो विनतोदरादिव द्विजन्मनामर्थपतिः पतिस्ततः ॥ १३ ॥
विवृण्वतो यस्य विसारि वाङ्मयं दिने दिने शिष्यगणा नवा नवाः ।
उषस्सु लग्नाः श्रवणेऽधिकां श्रियं प्रचक्रिरे चन्दनपल्लवा इव ॥ १४ ॥
विधानसम्पादितदानशोभितैः स्फुरन्महावीरसनाथमूर्त्तिभिः ।
मखैरसंख्यैरजयत् सुरालयं सुखेन यो यूपकरैर्गजैरिव ॥ १५ ॥

हिरण्येति। भुवनाण्डकात् ब्रह्माण्डात् द्विजन्मनां पतिः ब्राह्मणानामधिपतिः हिरण्यगर्भो ब्रह्मा इव, क्षीरमहार्णवात् द्विजन्मनां पति र्द्विजराजः क्षपाकरश्चन्द्र इव, विनतायास्तदाख्यायाः कश्यपभार्य्याया उदरात् द्विजन्मनां पतिः पक्षिश्रेष्ठः सुपर्णो गरुड़ इव, ततः कुवेरात् द्विजन्मनां पतिः ब्राह्मणश्रेष्ठः अर्थपतिः अर्थपतिनामा कश्चिदभूत्। ब्रह्मतुलनया वेदपारदर्शित्वं चन्द्रसाम्येन सर्व्वाह्लादकत्वं गरुड़साद्दश्येन च नारायणपरायणत्वं सूचितम्।

अत्र मालोपमाऽलङ्कारः। ब्रह्माण्डतो ब्रह्मण उत्पत्तौ प्रमाणं यथा मनुः "तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशु-समप्रभं। तस्मिन् जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्व्वलोकपितामहः।" १३ ॥

विवृण्वत इति। दिने दिने प्रत्यहं उषस्सु प्रभातकालेषु नवा नवा नूतना नूतनाः शिष्यगणाः चन्दनपल्लवाः चन्दनतरुकिसलयानि इव श्रवणे शास्त्रार्थाकर्णने रमणीनां कर्णे च लग्ना आसक्ताः सन्तः, विसारि विशालं वाङ्मयं शास्त्रं विवृण्वतः विवरणेनार्थं प्रकाशयतः अध्यापयत इत्यर्थः यस्य अर्थपतेः अधिकां श्रियं शोभां प्रचक्रिरे। श्लेषोपमालङ्कारः ॥ १४ ॥

विधानेति। यः अर्थपतिः, विधानेन वेदविध्यनुसारेण सम्पादितं कृतं यद्दानं धनवितरणं तेन शोभितैः, अन्यत्र तु विधानेन भक्ष्याकवलेन सम्पादितं जनितं यद्दानं मदजलं तेन शोभितैः। स्फुरन्तः प्रज्वलन्तो ये महावीरा होमाग्नयः तैः सनाथाः सहिताः मूर्त्तयः स्वरूपाणि येषां तैः, अन्यत्र तु स्फुरन्तः समरोत्साहेन स्पन्दमानाः ये महावीरा महायोद्धारः तैः सनाथा आरोहणेन संयुक्ता मूर्त्तयः शरीराणि येषां तैः।

ভুবনকোষ হইতে ব্রহ্মার ন্যায়, ক্ষীরোদসমুদ্র হইতে চন্দ্রের ন্যায় এবং বিনতার উদর হইতে গরুড়ের ন্যায় সেই কুবের হইতে ব্রাহ্মণশ্রেষ্ঠ অর্থপতি জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন ॥ ১৩ ॥

কর্ণস্থিত চন্দনপল্লব রমণীগণের যেমন শোভাসম্পাদন করে, তেমন প্রতিদিন প্রভাতকালে নূতন নূতন ছাত্রগণ, শাস্ত্রার্থ শ্রবণে আসক্ত হইয়া বিস্তৃত শাস্ত্রসমূহের অধ্যাপনায় ব্যাপৃত যে অর্থপতির বিশেষ শোভাসম্পাদন করিত ॥ ১৪ ॥

যথাবিধি ধনবিতরণে পরিশোভিত, প্রজ্বলিতহোমাগ্নিসম্পন্ন এবং যূপ বিশিষ্ট (খাদ্য দান করায় মদজল নিঃসৃত হইয়া যাহাদের শোভা জন্মায়, সমরোৎসাহে স্ফূর্ত্তিমান্ মহাবীরগণ যাহাদের উপরে আরোহণ করেন এবং যূপকাঠের ন্যায় যাহাদের শুঁড়, সেইরূপ) হস্তিতুল্য অসংখ্য যজ্ঞদ্বারা যিনি অনায়াসে স্বর্গলোক আয়ত্ত করিয়াছিলেন ॥ ১৫ ॥

स चित्रभानुं तनयं महात्मनां सुतोत्तमानां श्रुतिशास्त्रशालिनाम् ।
अवाप मध्ये स्फटिकोपलामलं क्रमेण कैलासमिव क्षमाभृताम् ॥ १६ ॥
महात्मनो यस्य सुदूरनिर्गताः कलङ्कमुक्तेन्दुकलामलत्विषः ।
द्विषन्मनः प्राविविशुः कृतान्तरा गुणा नृसिंहस्य नखाङ्कुरा इव ॥ १७ ॥

यूपान् पशुबन्धनस्तम्भान् कुर्वन्ति प्रयोजनवशात् सम्पादयन्तीति यूपकरास्तैः, अन्यत्र तु यूपा इव कराः शुण्डा येषां तैः । गजैर्हस्तिभिरिव अध्वरैः मखैर्यज्ञैः सुखेन अनायासेन सुरालयं स्वर्गं अजयत् आयत्तीकृतवान् । स्वर्गकामनया कृतैः बहुभिर्यज्ञैरक्लेशेन स्वर्गलाभमवश्यम्भाविनमकरोदिति सरलार्थः ।

अत्र पूर्णोपमानुप्राणिता समासोक्तिः कार्य्येण गजसैन्यैः परनगरविजयिनः कस्यचिन्नरपते र्व्यवहार-समारोपात् ।

"विधानं हस्तिकवलः" इति वैजयन्ती । "होमाग्निस्तु महाज्वालो महावीरः प्रवर्गवत् ।' इति भाव-चन्द्रादिधृतः कोषः ॥ १५ ॥

स इति । सः अर्थपतिः, क्रमेण पुत्राणामुत्पत्तिक्रमेण, क्षमाभृतां गिरीणां मध्ये स्फटिकोपलैः स्फटिक-मणिभिः अमलं निर्म्मलं धवलं कैलासमिव क्षमाभृतां क्षमागुणान्वितानां महात्मनां महाबुद्धीनां श्रुतिशास्त्रशालिनां वेदशास्त्रज्ञानां सुतोत्तमानां उत्कृष्टपुत्राणां मध्ये चित्रभानुं नाम तनयं पुत्रं अवाप लेभे ।

<u>पूर्णोपमाऽलङ्कारः</u> ।

अर्थपतेर्भृगुप्रभृतय एकादश पुत्रास्तन्मध्ये चित्रभानुरष्टमः । तथा च हर्षचरिते "सोऽजनयद्भृगुं हंसं शुचिं कविं महीदत्तं धर्म्मं जातवेदसं चित्रभानुं त्र्यक्षं अहिदत्तं विश्वरूपञ्चेत्येकादश रुद्रानिव सोमामृतरस-शीकरच्छुरितमुखान् पवित्रान् पुत्रान् ।" ॥ १६ ॥

महेति । सुदूरनिर्गता बहुदूरदेशव्यापिनः, अन्यत्र तु आधिक्येनाङ्गुल्यग्राद्बहिर्भूताः । कलङ्केन हरिणलाञ्छनेन मुक्ता रहिता या इन्दुकला चन्द्रलेखा तद्वत् अमला त्विट् द्युतिर्येषां ते । इदमुभयत्रापि समानं । तथा कृतं स्वमाहात्म्यादिस्थितं अन्तरं प्रवेशावकाशो यैस्ते, अन्यत्र तु कृतं अन्तरं भेदो विदारणं यैस्ते । यस्य महात्मनः चित्रभानोर्गुणा दयादाक्षिण्यविद्यादयः, नृसिंहस्य नरसिंहमूर्त्तिधारिणो नारायणस्य नखाङ्कुरा अङ्कुरवद्वर्द्धन्तो नखरा इव द्विषतां शत्रूणां मनोऽपि अन्यत्र तु द्विषतः प्रचोर्हिरण्य-कशिपोः, मनो हृदयं वक्षश्च प्राविविशुः प्रविशन्ति स्म । यस्य गुणाः शत्रूणामपि हृदयग्राहिण आसन् तन्माहात्म्यं किंनाम वक्तव्यमिति भावः ।

अत्र <u>पूर्णोपमालङ्कारः</u> । तथा द्विषन्मन इत्यत्र अपिशब्दो वक्तव्यः किन्तु नोक्त इति वाच्यानभिधानदोषः, स तु 'द्विषन्मनोऽपि प्रगताः कृतान्तराः' इति पाठेन समाधेयः ॥ १७ ॥

সেই অর্থপতি, পর্ব্বতগণের মধ্যে স্ফটিকমণি-নির্ম্মল কৈলাস পর্ব্বতের ন্যায়, মহাবুদ্ধিমান্, ক্ষমাশীল ও বেদশাস্ত্রজ্ঞ উৎকৃষ্ট পুত্রগণের মধ্যে চিত্রভানুনামে পুত্র লাভ করিয়াছিলেন ॥ ১৬ ॥

যে মহাত্মার বহুদূরগামী ও নিষ্কলঙ্ক চন্দ্রকলার ন্যায় নির্ম্মলকান্তিশালী, গুণগ্রাম,

दिग्भामलीकालकभङ्गतां गत स्त्रयीवधूकर्णतमालपल्लवः ।
चकार यस्याध्वरधूमसञ्चयो मलीमसः शुक्लतरं निजं यशः ॥ १८ ॥
सरस्वतीपाणि-सरोजसम्पुट-प्रमृष्टहोमश्रमशीकराम्भसः ।
यशोंऽशुशुक्लीकृतसप्तविष्टपा-स्ततः सुतो बाण इति व्यजायत ॥१९॥

दिग्भामिति। दिग्भां प्राच्यादीनां वधूरूपाणामिति तात्पर्य्यं, अलीकेषु ललाटेषु ये अलकाश्चूर्णकुन्तला स्तेषां भङ्गतां रचनाविशेषरूपत्वं गतः प्राप्तः। त्रयी ऋग्यजुःसामवेदानां त्रयमेव वधूः तस्याः कर्णे तमालपल्लवः तमालतरुकिसलयस्वरूपः। उभयत्रापि स्वभावकृष्णवर्णत्वादिति भावः। मलीमसः स्वभावमलिनः यस्य चित्रभानोः, अध्वरधूमसञ्चयः यज्ञाग्निधूमसमूहः निजं स्वकीयं यशः स्वभावशुक्लां सुख्यातिं शुक्लतरं अतिशयेन शुक्लं चकार। विद्याविनयादिगुणग्रामजनिता सुख्यातिः नियतयज्ञानुष्ठानात् धर्म्माचारपरायणतया अपि प्रकाशेन बहुलीबभूवेति सरलार्थः ।

अत्र अध्वरधूमसञ्चये केशरचनाविशेषत्वारोपः शाब्दः, दिक्षु वधूत्वारोपस्तु आर्थ इत्येकदेशविवर्त्ति रूपकं त्रय्यां वधूत्वारोपः धूमसञ्चये तमालपल्लवत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकं तथा मलीमसो धूमसञ्चयो यशः शुक्लतरं चकारेति कारणगुणविरुद्धकार्य्यगुणोत्पत्तेर्विषमालङ्कारस्य, इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः ।

"अलीकमप्रिये भाले वितथे—" इति हैमः ॥ १८ ॥

सरस्वतीति। सरस्वत्या वाग्देव्या पाणिसरोजसम्पुटेन करकमलयुगलेन प्रमृष्टानि प्रोञ्छितानि होमश्रमस्य होमकर्म्मायासस्य शीकराम्भांसि बिन्दुभूतजलानि स्वेदजलबिन्दवो यस्य तस्मात्। तथा यशसः सुख्यातेः अंशुभिः किरणैः शुक्लीकृतानि सप्त विष्टपानि भूरादीनि सप्त भुवनानि येन तस्मात्। ततश्चित्रभानोः बाण इति प्रसिद्धः बाणनामा सुतः पुत्रः व्यजायत अभवत्।

अत्र सरस्वत्याः पाणिपद्मद्वयेन घर्म्मवारिबिन्दूनां प्रमार्जनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरेकातिशयोक्तिः, तथा यशोंऽशुभिः, सप्तभुवनानां शुक्लीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेर्द्वितीया चातिशयोक्तिरित्यनयोर्मिथो नैरपेक्ष्यात् संसृष्टिः ।

"विष्टपं भुवनं जगत् ।" इत्यमरः ॥ १९ ॥

নিজমাহাত্ম্যে প্রবেশপথ পাইয়া অঙ্কুশ তুল্য বিদারণকারী নরসিংহের নখসমূহের ন্যায় শত্রুর হৃদয়েও প্রবেশ করিয়াছিল ॥ ১৭ ॥

যাঁহার যজ্ঞীয় অগ্নির মলিন ধূমসমূহ, দিগ্‌বধূগণের ললাটদেশে কেশরচনাস্বরূপ এবং বেদ-বধূর কর্ণে তমালপল্লবস্বরূপ হইয়া স্বকীয় যশকে সমধিক শুভ্রবর্ণ করিয়াছিল ॥ ১৮ ॥

সরস্বতীদেবী স্বকীয় পাণিকমলে যাঁহার হোমপরিশ্রম-জনিত ঘর্ম্মজলবিন্দুসকল মুছিয়া দিতেন এবং যাঁহার যশের কিরণ সপ্ত ভুবনকে শুক্লবর্ণ করিয়াছিল, সেই চিত্রভানু হইতে 'বাণ' নামে একটি পুত্র জন্মিয়াছিল ॥১৯॥

द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया ।
अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा ॥ २० ॥

द्विजेनेति। तेन द्विजेन विप्रेण बाणेन, अक्षतं अविनष्टं कण्ठकौण्ठ्यं वाग्विन्यासे कण्ठस्य मान्द्यं बालस्वभावसुलभवाग्वैकल्यं यस्यां तया, महान् यो मनोमोहः बालत्वेन चित्तविकलता तेन मलीमसा मलिना अप्रशस्ता अतएव अन्धा सदसन्निरूपणाक्षमा तया। तथा अलब्धेन अप्राप्तेन वैदग्ध्यविलासेन पाण्डित्य-चातुर्य्येण कारणेन, मुग्धा मूढ़ा तया पाण्डित्यचातुर्य्याभावेन नितान्तसरलयेत्यर्थः, धिया बुद्ध्या इयं कादम्बरीरूपा, निन्द्यत्वे द्वयीं अतिक्रान्ता इत्यतिद्वयी निकृष्टत्वे अद्वितीया, गूढ़ोऽर्थस्तु उत्कृष्टत्वे अद्वितीया कथा कथाख्यः काव्यविशेषः, निबद्धा ग्रथिता विरचिता। अपरिणतबुद्धिसमये खल्वियं विरचितेति तात्पर्य्यं, तेन बालचापल्यजनितदोषः सुधीभिर्मार्ज्जनीय इति भावः।

अत्र प्रथमपादे छेकानुप्रासः अन्येषु तु वृत्त्यनुप्रास इत्युभयोः संसृष्टिः ॥ २० ॥

যাহাতে কণ্ঠের জড়তা বিলুপ্ত হয় না এবং মনের নিতান্ত চঞ্চলতা বশতঃ যে বুদ্ধি মলিন ও সদসদ্বিবেচনাহীন, আর পাণ্ডিত্যচাতুর্য্য লাভ না করায় যে বুদ্ধি নিতান্ত সরল; ব্রাহ্মণ বাণভট্ট সেই বুদ্ধি অনুসারে এই অদ্বিতীয় কথাকাব্য রচনা করিয়াছেন ॥২০॥

कादम्बरी ।

कथामुखं

शूद्रकवर्णनं ।

आसीदशेष-नरपति-शिरः-समभ्यर्च्चित-शासनः पाकशासन इवापरः (क) चतुरुदधि-माला-मेखलाया भुवो भर्त्ता (ख) प्रतापानुरागावनत-समस्त सामन्त-

---

(क) अथेदानीं कथामारभते आसीदित्यादिना। आसीदिति क्रियापदस्य 'राजा शूद्रको नाम' इति वक्ष्यमाणकर्त्तृपदेनान्वयः। अशेषैः सकलैः नरपतिभिः भूपतिभिः कर्त्तृभिः, शिरोभिर्मस्तकैः करणैः, समभ्यर्च्चितं सम्मानेन गृहीतं शासनं आदेशो यस्य सः, अतएव अपरो देवराजादन्यो द्वितीयः पाकशासन इन्द्र इव। पाकं नामासुरं शासितवान् दमितवानिति पाकशासनः।

अत्र भावाभिमानिनी वाच्या द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः शासनपदावृत्तेर्यमकञ्च इत्यनयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। न च शासनपदावृत्तेर्लाटानुप्रास इति वाच्यं शब्दार्थैकत्वे केवलतात्पर्य्यतो भेद एव तदङ्गीकारात्, अत्र तु शब्दार्थस्यापि भेदात्।

(ख) चतुरिति। चतुर्णां भूमण्डलस्य चतसृषु दिक्षु स्थितानां उदधीनां सागराणां माला पङ्क्तिरेव मेखला काञ्ची यस्याः तस्याः, भुवो वसुधायाः भर्त्ता पतिः।

अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां पृथिवीशूद्रकयोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कार एव मलेकदेश-विवर्त्ति रूपकं, तत्कारणन्तु साहित्यदर्पणे समासोक्तिप्रस्तावे समनुसन्धेयम्।

দ্বিতীয় ইন্দ্রের ন্যায় শূদ্রকনামে এক রাজা ছিলেন। সমস্ত রাজগণ তাঁহার আদেশ সগৌরবে শিরোধার্য্য করিতেন। তিনি চারিটি সমুদ্র (মালারূপ মেখলা)-পরিবেষ্টিত সমগ্র ভূমণ্ডলের অধীশ্বর ছিলেন, অধীনস্থ সকল রাজগণ তাঁহার প্রভাবে ও স্নেহে বশীভূত থাকিতেন; তিনি সম্রাটের যোগ্য সকল লক্ষণ-সম্পন্ন ছিলেন, চক্রপাণি বিষ্ণুর ন্যায় তাঁহার করকমলেও শঙ্খ-চক্র-

चक्रः (ग) चक्रवर्त्तिलक्षणोपेतः (घ) चक्रधर इव करकमलोपलक्ष्यमाण-शङ्ख-चक्र-लाञ्छनः (ङ) हर इव जितमन्मथः (च) गुह इवाप्रतिहतशक्तिः, (छ) कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः (ज) जलधिरिव लक्ष्मी-प्रसूतिः (झ) गङ्गाप्रवाह इव भगीरथपथप्रवृत्तः (ञ) रविरिव प्रतिदिव-

---

(ग) प्रतापेति। प्रतापानुरागाभ्यां कोषदण्डजतेजोवात्सल्याभ्यां अवनतं वशीभूतं समस्तं सकलं सामन्तचक्रं अधिकृतराजसमूहो यस्य। एतेन न केवलं तस्य प्रजामण्डलं प्रभाववशादवशीभूतमासीत् किन्तु तदीयवात्सल्यवशादपीति सूचितम्।

(घ) चक्रेति। चक्रवर्त्तिलक्षणैः सार्व्वभौमचिह्नैः करतलरक्तिमादिभिः उपेतो विशिष्टः। तथा च सामुद्रके—

"अतिरक्तः करो यस्य ग्रथिताङ्गुलिको मृदुः। चापाङ्कुशाङ्कितः सोऽपि चक्रवर्त्ती भवेद्ध्रुवं॥"

(ङ) चक्रेति। चक्रधरश्चक्रपाणिर्विष्णुरिव करकमले पाणिपद्मतले उपलक्ष्यमाणं दृश्यमानं शङ्खचक्र-लाञ्छनं शङ्खचक्राकृतिरेखारूपं चिह्नं, अन्यत्र तु वास्तविकशङ्खचक्ररूपं चिह्नं यस्य सः।

अत्र पूर्णोपमालङ्कारः, चक्रशब्दस्यासकृत्पाठाद्वृत्त्यनुप्रासश्चेत्यनयोः संसृष्टिः।

(च) हर इति। हरः शिव इव जितमन्मथः पराभूतमदनः। ललाटलोचनवह्निना भस्मीकरणात्, राजपक्षे तु समधिकरूपवत्त्वादिति भावः। पूर्णोपमा।

(छ) गुह इति। गुहः कार्त्तिकेय इव अप्रतिहता केनापि न विफलीकृता शक्तिः प्रभावोत्साह-मन्त्रजं सामर्थ्यं अस्त्रविशेषश्च यस्य सः। पूर्णोपमा।

(ज) कमलेति। कमलं नारायणनाभिपद्मं योनिरुत्पत्तिस्थानं यस्य स कमलयोनि र्ब्रह्मा इव, विगतः पराजयेन विनष्टः मानो गर्वो यस्य तद्विमानं तादृशं कृतं राजहंसानां श्रेष्ठनृपतीनां मण्डलं समूहो येन सः, ब्रह्मपक्षे तु विमानीकृतं गगने वाहनीकृतं राजहंसमण्डलं पक्षिविशेषसमूहो येन सः। पूर्णोपमा।

राजानो हंसा इवेति राजहंसाः "उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे" इति कर्म्मधारयः। "स्युत्तर-पदे व्याघ्रेत्याद्यमरप्रामाण्यात्तस्य श्रेष्ठराजवाचकत्वम्। "व्योमयानं विमानोऽस्त्री" इत्यमरः।

(झ) जलधिरिति। जलधिः समुद्र इव लक्ष्म्याः लक्ष्मीदेव्याः धनसम्पत्तेश्च प्रसूतिरुत्पत्तिस्थानं। एकत्र देवासुरैर्मन्थनात् अन्यत्र नीतिकौशलादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) गङ्गेति। गङ्गायाः प्रवाह ओघ इव भगीरथस्य तदाख्यस्य सूर्य्यवंशीयनृपतिविशेषस्य पथि

চিহ্ন দেখা যাইত; তিনি শিবের তুল্য মদনবিজয়ী ও কার্ত্তিকেয়ের ন্যায় অপ্রতিহতশক্তি ছিলেন; তিনি রাজহংসবাহন ব্রহ্মার ন্যায় প্রভাবশালী ছিলেন এবং বিপক্ষ রাজগণকে পরাজয় করিয়া অভিমানহীন করিয়াছিলেন। সমুদ্র যেমন লক্ষ্মীদেবীর উৎপত্তিস্থান, শূদ্রকও তেমন ধন-সম্পত্তির উৎপত্তিস্থান ছিলেন। গঙ্গার প্রবাহ যেরূপ ভগীরথের রথচক্রপথে প্রবাহিত হইয়াছিল,

सोपजायमानोदयः (१) (ट) मेरुरिव सकलोपजीव्यमान-(२) पादच्छायः (ठ) (३) दिग्गज इवानवरतप्रवृत्त दानार्द्रीकृतकरः (ड) कर्त्ता महाश्चर्य्याणाम्, आहर्त्ता क्रतूनाम्, आदर्शः सर्व्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनं गुणानाम्, आगमः काव्यामृतरसानाम्, (ढ) उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, (ण)

रथचक्रक्षतमार्गे सदाचारपद्धतौ च प्रवृत्तः प्रचलितः। गङ्गा हि हिमालयान्निपत्य मर्त्त्यमण्डले भगीरथरथचक्रक्षतपथे प्रसरन्ती कपिलाभिशापभस्मीभूतान् सगरसुतानुद्धारयितुं पातालं प्रविवेशेति; राजा च भगीरथः परमसदाचारवानासीदिति च पौराणिकी वार्त्ता। पूर्णोपमा।

(ट) रविरिति। रविः सूर्य्य इव प्रतिदिवसं उपजायमान उत्पद्यमानः, उदय उदयाचलसम्बन्धः अभ्युदयश्च यस्य सः। पूर्णोपमा।

(ठ) मेरुरिति। मेरुः सुमेरुपर्व्वत इव सकलैर्देवैर्जनैश्च उपजीव्यमाना आश्रीयमाणा पादानां प्रत्यन्तपर्व्वतानां छाया अनातपभागः, पादयोश्छाया चरणकान्तिरक्षा च यस्य सः। "एकविंशत्यमी स्वर्गा निर्म्मिता मेरुमूर्द्धनि" इत्यादित्यपुराणात् सुमेरुसन्निहितपर्वतानां छायासु देवा विचरन्तीति पुराणप्रवादः। पूर्णोपमा।

(ड) दिगिति। दिग्गज ऐरावतादिको दिङ्नाग इव अनवरतप्रवृत्तेन सर्वदा जातेन दानेन मदजलेन धनादिदानजलेन च आर्द्रीकृतः स्तिमितः करः शुण्डा पाणिश्च यस्य सः। पूर्णोपमा।

(ढ) कर्त्तेति। महाश्चर्य्याणां प्रबलशत्रुविजयादिविस्मयावहव्यापाराणां कर्त्ता निर्वाहकः। क्रतूनां यज्ञानां आहर्त्ता अनुष्ठाता। सर्वशास्त्राणां वेदादीनां आदर्शो दर्पणः। यथा दर्पणे प्रतिविम्बितपदार्था: परिलक्ष्यन्ते तथा तस्मिन्नपि सर्वाणि शास्त्राण्यभ्यासवशाल्लोकैः परिलक्ष्यन्ते स्मेति भावः। कलानां नृत्यगीतादिचतुःषष्टिकलाविद्यानां उत्पत्तिः शिक्षादानादुद्भवस्थानं। गुणानां दयादाक्षिण्यादीनां कुलभवनं कुलक्रमागताश्रयस्थानं तत्रैव तेषां चिरावस्थानादिति भावः। काव्यानां ये अमृतरसाः पीयूषसदृशशृङ्गारादिरसास्तेषां आगम उत्पत्तिस्थानं। महाकवित्वेनोत्कृष्टकाव्यनिर्म्माणादिति भावः।

अत्र एकस्य राज्ञोविषयभेदेनानेकधोल्लेखादुल्लेखालङ्कारः।

(ण) उदयेति। मित्रमण्डलं सुहृत्समूह एव मित्रमण्डलं सूर्य्यमण्डलं तस्य, उदयशैलः पूर्वपर्वतः

মহারাজ শূদ্রকও সেইরূপ ভগীরথের আচরিত ধর্ম্মপথে চলিতেন। সূর্য্যের যেমন প্রতিদিন উদয় হয়, শূদ্রকেরও তেমন প্রতিদিন অভ্যুদয় হইত। দেবগণ যেরূপ সুমেরুর নিকটবর্ত্তী অন্যান্য পর্ব্বতের ছায়া আশ্রয় করেন, প্রজাগণ সেইরূপ শূদ্রকের চরণের ছায়া আশ্রয় করিয়াছিল। দিগ্‌হস্তীর শুণ্ড যেমন কপোলনিঃসৃত মদজলে সর্ব্বদা আর্দ্র থাকে, শূদ্রকের হস্তও তেমন সর্ব্বদা দানজলে

---

(१)...पचीयमानोदयः। (२) सकलभुवनो, सकलभुवनतलो...। (३) बृहस्पतिरिव सकलशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः इत्यधिकः पाठः क्वचित्।

उत्पातकेतुरहितजनस्य, (त) प्रवर्त्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्, (थ) प्रत्यादेशो धनुष्मताम्, (द) धौरेयः साहसिकानाम्, अग्रणीर्विदग्धानाम्, वैनतेय इव विनतानन्दजननः, वैण्य (१) इव चापकोटि-समुत्सारितसकलाराति-(२) कुलाचलो राजा शूद्रको नाम। (ध)

सूर्य्यो यथा पूर्वपर्वते उदयं लभते तथा सुहृत्समूहस्तस्मिन्नाश्रिते सत्युन्नतिं लेभे इति भावः।

अत्र श्लेषेण सुहृत्समूहे सूर्य्यमण्डलत्वारोपो राजन्युदयपर्वतत्वारोपे निमित्तमिति श्लिष्टपरम्परितरूपकमलङ्कारः।

(त) उत्पातेति। अहितजनस्य शत्रुलोकस्य, उत्पातकेतुः विनाशसूचको धूमकेतुः। तदाविर्भाव एव तेषां विनाशारम्भादिति भावः।

अत्र राजनि केवलोत्पातकेतुत्वारोपात् निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(थ) प्रवर्त्तयितेति। गोष्ठीबन्धानां सभास्थापनानां प्रवर्त्तयिता निष्पादयिता। स्थाने स्थाने सत्सभास्थापक इत्यर्थः। रसिकानां रसज्ञजनानां आश्रयः अवलम्बनं।

(द) प्रत्यादेश इति। धनुष्मतां प्रशस्तधनुर्द्धराणां प्रत्यादेशो निराकृतिः निराकरणकारणमित्यर्थः।

अत्र प्रत्यादेशरूपकार्य्यस्य तत्कारणेन सहाभेदेनाभिधानात् हेतुर्नामालङ्कारः।

(ध) धौरेय इति। साहसिकानां समरादौ हठकारिणां धौरेयः धुरन्धरः प्रधानः। विदग्धानां चतुराणां अग्रणीरग्रगण्यः। वैनतेयो गरुड़ इव विनतानां वशीभूतानां जनानां विनतायाश्च आनन्दजननः सद्व्यवहारेण प्रीतिकरः। वैण्यो वेणराजपुत्रः पृथुरिव चापकोट्या कोटीसंख्यकधनुर्भिः असंख्यधनुर्द्धरसैन्यैरित्यर्थः। अन्यत्र तु कार्म्मुकाग्रभागेन समुत्सारिताः उत्सादिताः स्थानान्तरं नीताश्च सकलारातयः समस्तशत्रवः कुलाचलाः महेन्द्रादयः कुलपर्वता इव येन सः।

अनयोः पूर्णोपमालङ्कारः।

आर्द्र थाकित। तिनि, महाविस्मयकर कार्य्य ओ यज्ञानुष्ठान करितेन एवं सकल शास्त्रेर आदर्श, नृत्यगीतादि कलाविद्यार शिक्षादाता, सर्व्वदा दयादाक्षिण्यप्रभृति गुणेर आधार ओ अमृत तुल्य काव्यरसेर उत्पत्तिस्थान छिलेन। उदयाचल येमन सूर्य्येर उदयस्थान, तिनिओ तेमन सुहृद्गणेर उन्नतिस्थान एवं शत्रुदिगेर धूमकेतुस्वरूप छिलेन, देशे ओ नगरे सभा स्थापन करियाछिलेन, आर तिनि रसिक लोकेर आश्रय, धनुर्द्धरदिगेर प्रतिरोधक, साहसिकदिगेर मध्ये प्रधान ओ चतुरगणेर अग्रगण्य छिलेन एवं गरुड़ येमन निजमाता विनतार आनन्दजनक, तिनिओ तेमन वशतापन्न लोकेर आनन्दजनक छिलेन। आर राजा पृथु येमन धनुर अग्रभागद्वारा महेन्द्रप्रभृति कुलपर्व्वतगणके अपसारित करियाछिलेन, तिनिओ तेमन असंख्य धनुर्द्धर सैन्यद्वारा सकल शत्रुगणके उत्सन्न करियाछिलेन।

(१) वैण्यः, पृथुः,...। (२) समुत्सारितारातिः...।

नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनरसिंह-(१) रूपाडम्बरं एकविक्रमाक्रान्तसकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितभुवनत्रयं (२) जहासेव (३) वासुदेवम्। (न)

अतिचिरकाललग्नमतिक्रान्तकुनृपतिसहस्रसम्पर्ककलङ्कमिव क्षालयन्ती यस्य विमले (४) कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मीः (५)। (प)

पृथिवीसमतलीकरणप्रवृत्तो राजा पृथुर्धनुरग्रभागेन कुलपर्वतानपसारयामासेति विष्णुपुराणवार्त्ता। कुलपर्वता यथा—

"महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः। विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः॥"

(न) नाम्नेति। यः शूद्रकः, नाम्नैव स्वनामाकर्णनमात्रेणैव निर्भिन्नं भयोत्पादनेन विदारितं अरातीनां हृदयं येन सः। विरचितः हिरण्यकशिपुवक्षोविदारणाय विहितः नरसिंहरूपस्य नरसिंहरूपधारणस्य आडम्बरो दृढव्यापारो येन तं। एकविक्रमेण एकमात्रपराक्रमेण आक्रान्तं आयत्तीकृतं सकलभुवनतलं येन सः। विक्रमत्रयेण पादन्यासत्रयेण आयासितं खिन्नं कृतं भुवनत्रयं येन तं तादृशं वासुदेवं नारायणं जहासेव उपहसितवानिव। तथा च शूद्रकः स्वनामश्रावणमात्रद्वारेणैव वैरिणां हृदयं विदारितवान्, नारायणस्तु केवलहिरण्यकशिपुहृदयविदारणाय नृसिंहमूर्त्तिधारणाडम्बरं कृतवान्, तथा शूद्रकेन अनायासेन एकविक्रमेणैव चतुर्दशभुवनान्याक्रान्तानि, नारायणेन तु त्रिभिरेव विक्रमैः केवलानि त्रीण्येव भुवनान्याक्रान्तानि सुतरां शूद्रककृतो नारायणोपहासो युज्यत एवेति भावः।

अत्रोपमानादुपमेयस्याधिक्यवर्णनात् व्यतिरेकालङ्कारः, क्रियोत्प्रेक्षा च, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(प) अतीति। अतिचिरकालादवधि लग्नं आत्मनि संयुक्तः, अतिक्रान्तं अतीतं यत् कुनृपतिसहस्रं कदर्य्यराजसमूहः तस्य सम्पर्केण संसर्गेण यः कलङ्को दूषितचिह्नं पापञ्च तं, क्षालयन्तीव प्रक्षालनेन दूरीकुर्व्वतीव यस्य शूद्रकस्य विमले निर्म्मले, कृपाणधारा खड्गस्य निशिताग्र एव जलं तस्मिन्। अपरोऽपि देहलग्नं पङ्कादिकं जलेन क्षालयति। असिबलेनैव शूद्रको राजलक्ष्मीमायत्तीकृतवानिति भावः।

अत्र क्षालयन्तीवेति क्रियोत्प्रेक्षा, कृपाणधाराजल इति निरङ्गं केवलरूपकञ्च अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

যিনি কেবল নামদ্বারাই, ভয়োৎপাদন পূর্ব্বক শত্রুগণের হৃদয় বিদারণ করিয়া এবং একমাত্র বিক্রমে সমগ্র ভূমণ্ডল আয়ত্ত করিয়া, হিরণ্যকশিপুর হৃদয় বিদারণের জন্য নরসিংহমূর্ত্তি ধারণের আড়ম্বরকারী ও তিনবিক্রমে (পাদক্ষেপে) ত্রিভুবনের আয়াসজনক নারায়ণকে যেন উপহাস করিয়াছিলেন।

পূর্ব্বে যে সকল দুর্বৃত্ত রাজা রাজত্ব করিয়া গিয়াছেন, তাঁহাদের সংসর্গে বহুকাল হইতে আপনাতে যে কলঙ্ক লাগিয়াছিল, রাজলক্ষ্মী যেন সেই কলঙ্ক প্রক্ষালন করিবার জন্য রাজা শূদ্রকের তরবারির ধারা-জলে চিরকাল অবস্থান-করিয়াছিলেন।

---

(१) नारसिंह···। (२) आयासितं आयासितात्मानं। (३) हसति स्म। (४) क्वचित् 'विमले' इति पाठो नास्ति। (५) लक्ष्मीः।

यस्य मनसि धर्म्मेण, कोपे यमेन, प्रसादे धनदेन, प्रतापे वह्निना, भुजे भुवा, दृशि श्रिया, वाचि सरस्वत्या, मुखे शशिना, बले मरुता, प्रज्ञायां सुरगुरुणा, रूपे मनसिजेन, तेजसि सवित्रा च वसता सर्वदेवमयस्य प्रकटितविश्वरूपाकृतेरनुकरोति भगवतो नारायणस्य। (फ)

यस्य च मदकल-करि-कुम्भपीठी-पाटनमाचरता (१) लग्न-स्थूलमुक्ताफलेन दृढ़-मुष्टि-निष्पीड़न-निष्ठ्यूत-धाराजलविन्दु-(२) दन्तुरेणेव कृपाणेनाकृष्यमाणा सुभटोरःकपाट-घटित (३) कवच-सहस्रान्धकार-मध्यवर्त्तिनी करि-कर-(४) तट-

---

(फ) यस्येति। किञ्चेति चार्थः। यः शूद्रक इति वक्ष्यमाणाया अनुकरोतीति क्रियायाः कर्त्ता। मनसीत्यादीनि सप्तम्यन्तपदानि वसतेत्यस्य अधिकरणवाचकानि। धर्म्मेणेत्यादीनि च करणतृतीयान्तपदानि वसतेत्यस्य कर्त्तृविशेषणानि। प्रसादे अनुग्रहे धनदेन कुवेरेण। भुवा पृथिव्या। दृशि चक्षुषि श्रिया लक्ष्म्या। मरुता वायुना। प्रज्ञायां बुद्धौ सुरगुरुणा वृहस्पतिना। मनसिजेन कामेन। सवित्रा सूर्य्येण। प्रकटिता प्रकाशिता विश्वरूपाकृतिः "पश्यामि देवांस्तव देव! देहे" इत्यादिगीतोक्ता विश्वरूपमूर्त्तिर्येन तस्य। "कृञः प्रतियत्न इत्यनेन कृञः कर्म्मणि षष्ठीति" भानुचन्द्रः। शेषे षष्ठीति श्रीपतिः। अनुकरोतीति "प्रयोगतश्चे"त्यतीते वर्त्तमाना। अत्रार्थोपमालङ्कारः।

(ब) यस्येति। यस्य शूद्रकस्य समीपमित्यन्वयः। मदकलानां मदमत्तानां करिणां हस्तिनां यानि कुम्भपीठानि मस्तककुम्भदेशाः तेषां पाटनं विदारणं आचरता विदधता, अतएव लग्नानि संसक्तानि स्थूलानि वृहन्ति मुक्ताफलानि मौक्तिकानि यस्मिन् तेन, दृढमुष्टिना यत् निष्पीड़नं धारणं तेन निष्ठ्यूता इव निःसृता इव धारा निर्म्मिता एव जलविन्दवः वा, रक्तश्रेणी तैः दन्तुरेण असमानेन उन्नतावनतेन कृपाणेन असिना, आकृष्यमाणेव, तथा सुभटानां प्रशस्तयोद्धॄणां उरांसि वक्षांसि कपाटा इव तेषु घटितानि संयोजितानि कवचसहस्राणि लौहवर्म्मसमूहा अन्धकारा इव तेषां मध्यवर्त्तिनी अन्तर्गता, राजलक्ष्मीः विपक्षराजश्रीः, करिणां करतटेभ्यः गण्डमूलदेशेभ्यः गलितानि निर्गतानि यानि मदजलानि तेषां आसारेण धारासम्पातेन दुर्द्दिनं मेघजनितान्धकारो यासु तासु, गाढान्धकारतासूचनायैतदुक्तं, समराः संग्रामा निशा इव तासु, अभिसारिका

(ক) চিত্তে ধর্ম্ম, ক্রোধে যম, অনুগ্রহে কুবের, প্রতাপে অগ্নি, বাহুতে পৃথিবী, নয়নে লক্ষ্মী, বাক্যে সরস্বতী, মুখে চন্দ্র, বলে বায়ু, বুদ্ধিতে বৃহস্পতি, রূপে কামদেব এবং তেজে সূর্য্য বাস করায়, যে শূদ্রক রাজা সর্ব্বদেবময় বিশ্বরূপধারী ভগবান্ নারায়ণের অনুকরণ করিয়াছিলেন।

(খ) মহারাজ শূদ্রক সমরে উপস্থিত হইয়া তরবারির আঘাতে বিপক্ষদিগের মদমত্ত হস্তিসমূহের কুম্ভ বিদারণ করিতেন, তাহাতে বড় বড় মুক্তা তরবারিতে লাগিয়া থাকিত, তখন দৃঢ়মুষ্টিতে নিষ্পীড়ন করায় যেন ধাররূপ জলবিন্দু নির্গত হইয়া তরবারিখানাকে উঁচু নীচু

---

(१) आचरतः, विदधतः। (२)—निपीडनात् निष्ठ्यूतजलः...। (३)...विघटित...। (४)...करट...।

गलित-मदजलासार-दुर्दिनाखभिसारिकेव रूमरनिशासु समीपमसकृदाजगाम (१) राजलक्ष्मीः। (ब)

यस्य च हृदयस्थितानपि पतीन् दिधक्षुरिव (२) प्रतापानलो वियोगिनीनामपि रिपुसुन्दरीणामन्तर्जनितदाहो (३) दिवानिशं जज्वाल। (भ)

यस्मिंश्च राजनि जितजगति परिपालयति (४) महीं चित्रकर्म्मसु वर्णसङ्कराः, रतेषु केशग्रहाः, काव्येषु दृढ़बन्धाः, शास्त्रेषु चिन्ताः, स्वप्नेषु

इत्यसङ्केता नाधिकेव यस्य शूद्रकस्य समीपं असकृत् युद्धस्य बहुत्वात् वारंवारं आजगाम वशवर्त्तिनी बभूवेत्यर्थः।

अत्र आलक्ष्यमाणेवेति क्रियोत्प्रेक्षा, उरःकपाटेति कवचसहस्रान्धकारेति च लुप्तोपमाद्वयं अभिसारिकेवेत्युपमा च, एतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

"अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा। स्वयं वाभिसरत्येषा धीरैरुक्ताभिसारिका। इति साहित्यदर्पणः। "दुर्दिनं जलदध्वान्त" मिति रत्नकोषः।

(भ) यस्येति। यस्य च शूद्रकस्य, प्रतापः कोषदण्डजं तेज एव अनलो वह्निः, वियोगिनीनामपि समरे पूर्व्वमेव पतिव्यापादनात् विरहिणीनामपि पतिविनाशशङ्कया संयोगिनीनां का कथेति भावः, रिपुसुन्दरीणां वैरिवधूनां अन्तर्जनितः मनस्युत्पादितो दाहो येन सः, हृदयस्थितानपि अर्थात्तासां रिपुसुन्दरीणां सततभावनया चित्तगतानपि पतीन् दिधक्षुरिव दग्धुमिच्छुरिव सन्। एतेन महाप्रतापशालित्वं सूचितम्।

अत्र प्रतापानल इति निरङ्गं केवलरूपकं दिधक्षुरिवेति क्रियोत्प्रेक्षा च अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(म) यस्मिन्निति। चित्रकर्म्मसु आलेख्यनिर्म्माणेषु वर्णानां नीलपीतादीनां सङ्कराः मिश्रणानि, न तु प्रजासु च ब्राह्मणादिभ्यः अन्यजातीनामुत्पत्तिरूपा वर्णसङ्कराः, व्यभिचाराभावात्। प्रजापालनासक्तिरिति यथाक्रमेण सर्व्वत्रान्वयः। रतेषु मैथुनेषु केशग्रहाः सुविधाविधानाय केशाकर्षणानि, न तु समरेषु, तदभावात्। काव्येषु दृढबन्धाः समासबाहुल्यादिना शब्दानां प्रगाढ़योजनानि, न तु कारागारेषु दृढ़बन्धाः, अपराधाभावात्। शास्त्रेषु चिन्ताः, न तु उदरान्नादिषु, समृद्धिपूर्णत्वात्। स्वप्नेषु विप्रलम्भाः इष्टपदार्थानां सहसान्तर्धानात् प्रतारणाः, न तु अन्यसमयेषु, सर्व्वत्र वास्तविकव्यवहारात्। छत्रेषु आतपत्रेषु कनकदण्डाः स्वर्णयष्टयः, न तु

করিয়াছে বলিয়া বোধ হইত; এদিকে মহাযোদ্ধাদিগের কপাটের ন্যায় বিস্তীর্ণ বক্ষঃস্থলে লৌহবর্ম্মগুলি অন্ধকারের ন্যায় প্রতীতি হইত, আর হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নির্গত মদজলবৃষ্টিতে গাঢ় অন্ধকার হইত, তাহাতে সমরাঙ্গন রাত্রির ন্যায় হইয়া পড়িত, তখন অভিসারিকা নায়িকার মত বিপক্ষের রাজলক্ষ্মী, যেন সেই তরবারিকর্তৃক আকৃষ্ট হইয়া রাজা শূদ্রকের নিকট বার বার উপস্থিত হইতেন।

(ভ) যে রাজা শূদ্রকের প্রতাপানল, বিরহিণী শত্রুবনিতাদিগেরও হৃদয়ে সন্তাপ জন্মাইয়া তাহাদের হৃদয়স্থিত পতিদিগকেও যেন দগ্ধ করিতে ইচ্ছা করিয়া দিবারাত্রি জ্বলিতে থাকিত।

---

(१) सकृदगात्। (२) धक्षुरिव। (३)···दाही। (४) पालयति।

विप्रलम्भाः, छत्रेषु कनकदण्डाः, ध्वजेषु प्रकम्पाः, गीतेषु रागविलसितानि, करिषु मदविकाराः, चापेषु गुणच्छेदाः, गवाक्षेषु जालमार्गाः, शशिकृपाण-कवचेषु कलङ्काः, रतिकलहेषु दूतसम्प्रेषणानि, (१) सार्य्यक्षेषु शून्यगृहाः प्रजानामासन्। (म)

लोकेषु कनकदण्डा अर्थदण्डाः, अपराधाभावात्। ध्वजेषु पताकासु प्रकम्पाः चाञ्चल्यानि, न तु लोकचित्तेषु भयाभावात्। "ध्वजं चिह्ने पताकायां ध्वजः शौण्डिकशेफसोः। खट्वाङ्गे च..." इति विश्वः। गीतेषु रागविलसितानि वसन्तादिरागव्यवहाराः, न तु लोकेषु रागविलसितानि, मात्सर्य्याचरणानि, सर्वेषामेव नितान्तसच्चरित्रत्वात्। 'रागः क्लेशादिके रक्ते मात्सर्य्ये लोहितादिषु।" इति त्रिकाण्डशेषः। करिषु हस्तिषु मदविकाराः तेजोजनितविकृतयः, न तु जनेषु मदविकारा अहङ्कारकृतस्वभाववैषम्यानि, तदभावात्। चापेषु गुणच्छेदाः धनुःसु मौर्वीकर्त्तनानि, न तु लोकेषु गुणच्छेदा दयाविनयादिगुणविलोपाः, तादृश-गुणानां सर्वदा सद्भावात्। गवाक्षेषु वातायनेषु जालमार्गाः वायुप्रवेशाय क्षुद्र-क्षुद्र-पथाः, न तु लोकेषु जालमार्गाः कूटकल्पनापद्धतयः, सर्वेषामेव सत्स्वभावत्वात्। शशिनि कलङ्कः स्वाभाविकः, कृपाणकवचयोस्तु बहुकालव्यवहाराभावे मालिन्यरूपौ कलङ्कौ, न तु लोकचरित्रेषु कलङ्का अपवादाः, सच्चरित्रत्वात्। रति-कलहेषु रमणविषयकविवादेषु दूतसम्प्रेषणानि, न तु समरेषु, तदभावात्। सार्य्यक्षेषु गुटिकाक्षेत्रेषु शून्य-गृहा गुटिकाशून्यकोष्ठानि, न तु ग्रामेषु जनशून्यगृहाः, सर्वविधोत्पीडनाभावादिति भावः।

अत्र चतुर्द्दशानां श्लेषानुप्राणितार्थपरिसंख्यालङ्काराणां परस्परनैरपेक्ष्यात् संसृष्टिः।

(ম) সে রাজা ভূমণ্ডল জয় করিয়া পরিপালন করিতে লাগিলে প্রজাদিগের চিত্র-কার্য্যেই বর্ণসঙ্কর (নীলপীতাদিবর্ণের সংমিশ্রণ) ছিল, কিন্তু সমাজে বর্ণসঙ্কর ছিল না; সম্ভোগের বেলায়ই কেশধারণ ছিল, কিন্তু যুদ্ধে কেশাকর্ষণ ছিল না; কাব্যেতেই দৃঢ় বন্ধন (প্রগাঢ় রচনা) ছিল, কিন্তু কারাগারে দৃঢ়-বন্ধন ছিল না; শাস্ত্রেই চিন্তা ছিল, কিন্তু উদরান্নপ্রভৃতির চিন্তা ছিল না; স্বপ্নের বেলায়ই প্রতারণা হইত, কিন্তু অন্য সময়ে নহে; ছত্রেই সুবর্ণদণ্ড ছিল, কিন্তু কাহারও অর্থ-দণ্ড ছিল না; পতাকা কম্পিত হইত, কিন্তু লোকের মন কম্পিত হইত না; গানেই বসন্তপ্রভৃতি রাগ ব্যবহার হইত, কিন্তু কাহারও প্রতি কেহ রাগ (বিদ্বেষাচরণ) করিত না; হস্তীতেই মদ-বিকার ছিল, কিন্তু কাহারও চিত্তে ছিল না; ধনুতেই গুণচ্ছেদ হইত, কিন্তু লোকের দয়া-দাক্ষিণ্য প্রভৃতি গুণের লোপ হইত না; বাতায়নেই জালরন্ধ্র ছিল, কিন্তু অন্যত্র জালরন্ধ্র (প্রতারণা-পদ্ধতি) ছিল না; চন্দ্র, তরবারি ও লৌহবর্ম্মেই কলঙ্ক ছিল, কিন্তু কাহারও চরিত্রে কলঙ্ক ছিল না, দম্পতীর প্রণয়-কলহেই দূত পাঠান হইত, কিন্তু যুদ্ধের জন্য দূত পাঠান হইত না; আর দাবা পাশাপ্রভৃতির কোঠেই শূন্যগৃহ থাকিত, কিন্তু গ্রামে শূন্যগৃহ থাকিত না।

---

(१) दूतप्रेषणानि।

यस्य च परलोकाद्भयम्, अन्तःपुरिकालकेषु भङ्गः, नूपुरेषु मुखरता, विवाहेषु करपीड़नम्, अनवरतमखाग्निधूमेनाश्रुपातः, तुरगेषु (१) कशाभिघातः, मकरध्वजे चापध्वनिरभूत् (२)। (य)

तस्य च राज्ञः कलिकालभय-पुञ्जीभूत-कृतयुगानुकारिणी (३) त्रिभुवन-प्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा मज्जन्मालवविलासिनीकुचतटास्फालन-जर्जरितोर्म्मि-मालया जलावगाहनावतारित (४)-जयकुञ्जरकुम्भ-सिन्दूर-सन्ध्यायमान-सलिलया

(य) यस्य चेति। यस्य च शूद्रकस्य परलोकात् जन्मान्तरात् भयं, न तु शत्रुतः, तस्मादात्मनः प्रबलत्वात्। अभूदिति वक्ष्यमाणक्रियया सर्व्वत्रान्वयः। अन्तःपुरिकाणां अन्तःपुरवासिनीनां स्त्रीणां अलकेषु चूर्ण-कुन्तलेषु भङ्गो वक्रता, न तु युद्धेषु भङ्गः पराजयः, दुर्द्धर्षसैन्यशालित्वात्। नूपुरेषु मुखरता शब्दायमानता, न तु जनेषु मुखरता वाचालता सर्व्वेषामेव प्रियभाषित्वात्। विवाहेषु करपीड़नं पाणिग्रहणं न तु लोकेषु करो राजग्राह्यद्रव्यं तेन पीड़नं तद्दानाय यातनाकरणं लोकानां सम्पन्नत्वेन यथासमय एव तत्प्रदानात् राज्ञश्च अवस्थानुसारेण व्यवस्थापनात्। अनवरतेन अविरतेन मखाग्निधूमेन यज्ञवह्निधूमेन अश्रुपातः नयन-जलनिःसरणं न तु शोकादिना, अकालमरणाद्यभावात्। तुरगेषु अश्वेषु कशाभिघातः न तु चौरादिषु तदभावात्। मकरध्वजे मदने चापध्वनिः लोकमनोमोहनाय धनुष्टङ्कारः, न तु सैन्यगणे, प्रायेण युद्धाभावादिति भावः।

अत्रापि समेवार्थैः परिसंख्यालङ्काराः, किञ्च मकरध्वजे चापध्वनिरित्यत्र मकरध्वजचापध्वनेरसम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्त्या रतिशयोक्तिरित्येतेषां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(र) तस्येति। तस्य च राज्ञः शूद्रकस्य विदिशाभिधाना राजधान्यासीदिति सम्बन्धः। कलीत्यादि प्रथमान्तं विदिशाया विशेषणं, तृतीयान्तत्रयञ्च वेत्रवत्या विशेषणं। कलिकालभयेन कलियुगस्यपापभयेन पुञ्जीभूतं अवयवसङ्कोचेन सङ्कुचितमिव यत् कृतयुगं सत्ययुगं तदनुकर्त्तुं शीलं यस्याः सा। एतेन महापुण्यभूमित्वं सूचितं। त्रिभुवनस्य त्रिजगतः प्रसवभूमिरिव उत्पत्तिस्थानमिव विस्तीर्णा विशाला। मज्जन्तीनां स्नानाय अवगाहमानानां मालवविलासिनीनां मालवदेशीयरमणीनां कुचतटास्फालनेन गुरुतरस्तनास्फोलनेन जर्जरिता चूर्णिता ऊर्म्मिमाला तरङ्गावली यस्यास्तया। जलावगाहनाय अवतारितानां रक्षकैः प्रवेशितानां

(য) যে রাজার রাজ্যে কেবল পরলোক হইতেই ভয়, অন্তঃপুরবাসিনী রমণীগণের কেশকলাপেই বক্রতা, নূপুরেই মুখরতা, বিবাহেই করপীড়ন, অবিরত যজ্ঞাগ্নিধুমদ্বারাই অশ্রুপাত, অশ্বেতেই কশাঘাত এবং কামদেবেরই কার্ম্মুকধ্বনি হইত।

(র) কলিযুগের ভয়ে সঙ্কুচিত সত্যযুগের অনুকারিণী এবং ত্রিভুবনের প্রসবকারিণী ভূমির ন্যায় বিস্তৃত বিদিশানামে নগরী, সেই মহারাজ শূদ্রকের রাজধানী ছিল; তাহার চতুর্দ্দিকে বেত্রবতী নদী প্রবাহিত হইত; অবগাহনের সময় মালবদেশীয় রমণীগণের স্তনতটের আস্ফালনে

(१) तुरङ्गेषु। (२) उदभूत्। (३) अनुकारिणी। (४)...भायात, भागत...।

उन्मद-कलहंस-कुल-कोलाहल-मुखरित(१)-कूलया वेत्रवत्या(२)परिगता विदिशा-(३)-भिधाना नगरी राजधान्यासीत्। (२)

स तस्याञ्च विजिताशेष-(४) भुवनमण्डलतया विगतराज्यचिन्ताभारनिर्वृतः, द्वीपान्तरागतानेक-भूमिपाल-मौलिमाला-लालित-चरणयुगलो, वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्, अमरगुरुमपि प्रज्ञयोपहसद्भिरनेककुलक्रमागतैरसकृदा-लोचित-नीतिशास्त्र-निर्मल-मनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः, समानवयोविद्यालङ्कारैरनेकमूर्द्धाभिषिक्तपार्थिवकुलोद्गतैरखिल-कलाकलापालो-चन-कठोरमतिभिरतिप्रगल्भैः कालविद्भिः प्रेमानुरक्तहृदयैरग्राम्यपरिहासकुशलै-रिङ्गिताकारवेदिभिः काव्य-नाटकाख्यानकाख्यायिकालेख्यव्याख्यानादिक्रिया-

---

जयकुञ्जराणां विपक्षविजयहेतुभूतहस्तिनां कुम्भसिन्दूरैः मस्तकार्पितसिन्दूरैः सन्ध्यायमानानि सन्ध्यावदारक्तिलोहितीभूतानि सलिलानि जलानि यस्याः तया। उन्मदानां अतीवामोदितानां कलहंसानां कुलस्य समूहस्य कोलाहलेन अस्फुटरवेण मुखरितं शब्दायमानीकृतं कूलं पुलिनं यस्याः तया। वेत्रवत्या तदाख्यया नद्या परिगता परिवेष्टिता।

अत्र प्रथमे विशेषणे पुञ्जीभूतत्वोत्प्रेक्षा आर्थी उपमा च, द्वितीये द्रव्योत्प्रेक्षा, कुचतटास्फालनेन जर्जरितत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, सन्ध्यायमानेति अङ्गतोपमा चेत्येतेषां मिथो नैर-पेक्ष्यात् संसृष्टिः।

(ख) स इति। स राजा तस्यां विदिशायां सुखमतिचिरमुवासेत्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि राज-विशेषणानि, तृतीयान्तपदानि च अमात्यानां राजपुत्राणाञ्च विशेषणानि। विगतो यो राज्यचिन्ताभार तेन निर्वृतः सुखचित्तः। द्वीपान्तरेभ्य आगतानां अनेकभूमिपालानां बहुतरनृपतीनां मौलिमालया शिरःश्रेण्या लालितं आदरेण संस्पृष्टं चरणयुगलं यस्य सः। वलयं कटकमिव लीलया अनायासेन। प्रज्ञया बुद्ध्या अमरगुरुं हसद्भिः। अनेककुलक्रमागतैः वंशपरम्परया अमात्यपदारूढैः। असकृदालोचितैः बहुवारानुशी-लितैः नीतिशास्त्रैः निर्मलानि मनांसि येषां तैः। अलुब्धैः लोभरहितैः, अन्यथा उत्कोचग्रहणादिना

বেত্রবতীর তরঙ্গশ্রেণী চূর্ণ হইয়া যাইত; রক্ষকগণ স্নান করাইবার জন্য হস্তিগণকে নামাইয়া দিলে তাহাদের মস্তকের সিন্দুর ছড়াইয়া পড়ায় বেত্রবতীর জল, সন্ধ্যাকালের ন্যায় রক্তবর্ণ হইত আর নিতান্ত আমোদিত কলহংসগণের কোলাহলে পুলিনভাগ মুখরিত হইত।

(খ) সমগ্র ভূমণ্ডল আয়ত্ত থাকাবশতঃ রাজ্যচিন্তার ভার দূরীভূত হওয়ায় মহারাজ শূদ্রক, সুস্থচিত্ত হইয়া নিজভুজে বলয়ের ন্যায় অনায়াসে জগতের ভার বহন করত, সেই বিদিশা রাজধানীতে বহুকাল যাবৎ সুখে বাস করিয়াছিলেন। সেই সময়ে অন্যান্য দ্বীপ হইতে আগত অনেক রাজা, মস্তক দ্বারা আদরে তাঁহার চরণ স্পর্শ করিতেন; বুদ্ধিবলে বৃহস্পতির তুল্য, অনবরত নীতিশাস্ত্রপর্য্যালোচনায় নির্ম্মলচেতা, লোভশূন্য, অনুরক্ত ও সকল কার্য্যে সতর্ক—

---

(১) মুখরীকৃত। (২) বেত্রবত্যা নদ্যা, বেত্রবত্যা। (৩) নদ্বিলা…। (৪) স তস্যামবজিতাশেষ:…।

निपुणैरति-कठिन-पीवर-स्कन्धोरु बाहुभिरसकृदवदलितसमद-रिपु-गज-घटा-पीठ-बन्धैः केशरि-किशोरकैरिव, विक्रमैकरसैरपि विनयव्यवहारिभिरात्मनः प्रति-बिम्बैरिव राजपुत्रैः सह रममाणः प्रथमे वयसि सुखमतिचिरमुवास। (ल)

तस्य चातिविजिगीषुतया महासत्त्वतया च तृणमिव लघुवृत्ति स्त्रैणमा-कलयतः प्रथमे वयसि वर्त्तमानस्यापि रूपवतोऽपि (१) सन्तानार्थिभिरमा-त्यैरपेक्षितस्यापि सुरतसुखस्योपरि द्वेष इवासीत्। (व)

राज्ञः क्षतिमपि कुर्य्युरिति भावः। स्निग्धैरनुरक्तैः, प्रबुद्धैः जागरितैः कार्य्येषु सतर्कैः। अनेकेषां मूर्द्धाभिषिक्तानां ब्राह्मणेभ्यः क्षत्रियासु जाता मूर्द्धाभिषिक्ता स्तेषां, पार्थिवानां राज्ञाञ्च कुलेभ्य उद्गता उत्पन्ना स्तैः; अखिलानां सर्व्वासां कलानां नृत्यगीतादिकलाविद्यानां कलापस्य समूहस्य आलोचनेन अनुशीलनेन कठोराः परिणता मतयो बुद्धयो येषां तैः। अतिप्रगल्भैः नितान्तचतुरैः, कालविद्भिः अवसरज्ञैः। अग्राम्येषु अनश्लीलेषु परिहासेषु कुशलै र्निपुणैः। इङ्गितं चित्तगतभावः, आकारः भ्रू-नेत्रादिसङ्कोचादिरूपो भङ्गीविशेषः तौ विदन्तीति तैः। काव्यं पद्यमयमहावाक्यं रसात्मकं वाक्यं वा, नाटकं रूपकविशेषः, आख्यानकानि चूर्णकानि, आख्यायिका गद्यकाव्यविशेषः, आलेख्यं चित्रनिर्म्माणं, व्याख्यानं अर्थविशदीकरणं तदादयो याः क्रिया स्तासु निपुणै र्दक्षैः। अतिकठिना नितान्तदृढाः पीवराः स्थूलाश्च स्कन्धोरुबाहवो येषां तैः। असकृत् अवदलिता विमर्द्दिताः समदानां मत्तानां रिपुगजघटानां विपक्षहस्तिसमूहानां पीठबन्धाः पृष्ठस्थितासनानि यै स्तैः। केशरिकिशोरैः सिंहशिशुभिरिव, विक्रमे महासामर्थ्ये एको मुख्यः रस आसक्ति र्येषां ते स्तथाविधैरपि। आत्मनः स्वस्य प्रतिबिम्बै रिव एतेनातिसादृश्यं सूचितम्।

अत्र वलयमिवेत्युपमा, अमरगुरुमपि प्रज्ञयोपहसद्भिरित्यनेनाप्यार्थोपमा आक्षिप्यते, केशरिकिशोरकैरिव इत्युपमा प्रतिबिम्बै रिवेत्युपमा च, इत्थं तेषां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(व) तस्येति। अतिविजिगीषुतया वीरत्वे परमोत्कर्षलाभेच्छया, महासत्त्वतया नितान्ताध्यवसाय-शालितया च। लघ्वी विशेषोन्नतिसाधकत्वाभावात् तुच्छा वृत्ति र्गृहकर्म्मवेशविन्यासादिव्यवहारो यस्य तत्, असारमित्यर्थः, स्त्रैणं स्त्रीसमूहं आकलयतो निर्द्धारयतः। प्रथमे वयसि वर्त्तमानस्यापि नवयुवकस्यापि,

---

এইরূপ কুলক্রমাগত মন্ত্রিগণ তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া থাকিতেন। আর মূর্দ্ধাভিষিক্ত ও রাজবংশে উৎপন্ন, সমস্ত কলাবিদ্যার আলোচনায় পরিপক্ববুদ্ধি, সুচতুর, অবসরজ্ঞ, প্রণয়ানুরক্ত, অশ্লীলতাশূন্যপরিহাসে নিপুণ, অভিপ্রায় ও অঙ্গভঙ্গিবিশেষজ্ঞ, কাব্য, নাটক, আখ্যানক, আখ্যায়িকা, চিত্রবিদ্যা ও ব্যাখ্যাপ্রভৃতি কার্য্যে নিপুণ, কঠিন ও স্থূল স্কন্ধ, উরু ও বাহুশালী, বহুযুদ্ধে বিপক্ষদিগের মত্তহস্তিবিজয়ী, সিংহশাবকের ন্যায় মহাপরাক্রমশালী অথচ বিনয়ব্যবহারী এবং সমবয়স্ক, সমান বিদ্বান্ ও সমান ভূষণে ভূষিত, আপনার প্রতিবিম্বতুল্য রাজপুত্রগণের সহিত মহারাজ শূদ্রক, প্রথম বয়সে আমোদপ্রমোদ করিতেন।

(ব) অতিশয় বিজিগীষু ও নিতান্ত অধ্যবসায়শীল বলিয়া মহারাজ শূদ্রক, স্ত্রীদিগকে

---

(१) वर्त्तमानस्यातिरूपवतोऽपि।

सत्यपि रूपविलासोपहसित-रतिविभ्रमे लावण्यवति विनयवत्यन्वयवति (१) हृदयहारिणि चावरोधजने, स कदाचिदनवरतदोलायमान-रत्नवलयो घर्घरिकास्फालन-प्रकम्पमान-झणझणायमान-मणिकर्णपूरः स्वयमारब्धमृदङ्ग-वाद्यः सङ्गीतकप्रसङ्गेन, कदाचिदविरल-विमुक्त-शरासार-शून्यीकृतकाननो मृगयाव्यापारेण, कदाचिदाबद्ध-विदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचि-च्छास्त्रालापेन, कदाचिदाख्यानकाख्यायिकेतिहास-पुराणाकर्णनेन, कदाचिदा-

रूपवतोऽपि परमसुन्दरस्यापि, तस्य शूद्रकस्य। अपेक्षितस्य आकाङ्क्षितस्यापि। द्वेष इवासीत्। एतेन तस्य सुरतसुखे स्वतो निवृत्तिरासीदिति सूचितम्।

अत्र द्वेषकारणाभावेऽपि तदुत्पत्तेः किं विभावना, किंवा सत्स्वपि सुरतकारणेषु यौवनादिषु तदनुत्पत्तेर्विशेषोक्तिरित्युभयोः सन्देहसङ्करः, स पुनस्तृणमिवेत्युपमया च सङ्कीर्य्यते।

(२) सुरतसुखविद्वेषं प्रदर्शयितुमन्यविधकार्य्यासक्तिं दर्शयति सत्यपीति। रूपं सौन्दर्य्यं विलासो भ्रूनेत्रादिक्रियाविशेषः, ताभ्यां उपहसितो न्यूनतया निन्दितः, रतेर्मदनवनितायाः विभ्रमो विलासो येन तस्मिन्। विनयवति पत्यावागते आसनत्यागादिना नम्रताशालिनि, अन्वयो वंशोऽस्त्यस्मिन्नस्तीति तस्मिन्, प्रशंसायां वतुः सद्वंशजात इत्यर्थः, हृदयहारिणि मनोहरे अवरोधजने भार्य्यावर्गे सत्यपि। स शूद्रकः दिवसमनैषीदिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। प्रथमान्तानि शूद्रकविशेषणानि, तृतीयान्तानि दिवसनयनक्रियाकरणानि। अनवरतं दोलायमाने वादने करकम्पनात् स्पन्दमाने रत्नवलये करद्वयस्थितं रत्नमयकटकयुगलं यस्य सः, तथा घर्घरिकाया वाद्यविशेषस्य वीणायाः आस्फालनेन पाणिना ताड़नेन यः प्रकम्पो देहकम्पनान्मस्तककम्पनं तेन झणझणायमानौ 'झण झण' इत्यं शब्दं कुर्वाणौ मणिकर्णपूरौ मणिमयकर्णालङ्कारौ यस्य सः। अविरलं घनं यथा स्यात्तथा विमुक्तानां निक्षिप्तानां शराणां बाणानां आसारेण धारासम्पातेन शून्यीकृतं हिंस्रपशुरहितीकृतं काननं वनं येन सः। आबद्धं विहितं विदग्धमण्डलं पण्डितसभा येन सः। आलेख्यविनोदेन चित्रनिर्म्माण-तद्दर्शनामोदेन।

তৃণের ন্যায় অসার মনে করিতেন; আর নব যুবক এবং পরম সুন্দর হইলেও এবং তাঁহার সন্তানার্থী মন্ত্রীদিগের ইচ্ছা সত্ত্বেও স্ত্রীসম্ভোগসুখের উপর তাঁহার যেন বিদ্বেষ ছিল।

(খ) রূপ ও ভাবভঙ্গীতে কামভার্য্যা রতি হইতেও উৎকৃষ্ট, লাবণ্য ও বিনয়সম্পন্ন, সদ্বংশজাত ও মনোহর—এইরূপ রমণীগণ থাকিলেও, মহারাজ শূদ্রক, কখনও দিনের বেলায় আপনিই মৃদঙ্গ বাজাইতে আরম্ভ করিয়া সঙ্গীত-চর্চ্চায় সময় অতিবাহিত করিতেন; তখন তাঁহার হস্তদ্বয়ের রত্নময় বলয়যুগল আন্দোলিত হইতে থাকিত; বীণা বাজাইবার সময় মস্তক কম্পিত করায় মণিময় কর্ণালঙ্কার ঝণ ঝণ করিয়া উঠিত; কখনও অনবরত বাণবৃষ্টিতে বনভূমি হিংস্রজন্তু-শূন্য করিয়া সময়ক্ষেপ করিতেন; কোন সময়ে পণ্ডিতসভা আহ্বান করিয়া কাব্য ও প্রবন্ধ রচনায় কাল কাটাইতেন; কখনও শাস্ত্রালাপে, কোন সময়ে ছোট গল্প, বাসবদত্তা

(१) अन्वयवत्यभिजनवति।

वीणाविनोदेन, कदाचित् वीणया, कदाचिद्दर्शनागत-मुनिजन-चरणशुश्रूषया, कदाचिदक्षरच्युतक-मात्राच्युतक-बिन्दुमती-गूढ़चतुर्थपाद-प्रहेलिका-प्रदानादिभिः, वनिता-सम्भोगसुख-पराङ्मुखः सुहृत्परिवृतो दिवसमनैषीत् (१)। (ग)

यथैव च दिवसमेवमारब्ध-विविध-क्रीड़ा-परिहास-चतुरैः (२) सुहृद्भिरुपेतो निशामनैषीत्। (घ)

वीणया वीणावाद्यश्रवणेन। अक्षरस्य वर्णस्य च्युतं च्युतिर्यत्र तदक्षरच्युतकं काव्यं। यथा—"कुर्व्वन् दिवाकराश्लेषं दधच्चरणडम्बरम्। देव! यौष्माकसेनायाः करेणुः प्रसरत्यसौ।" इत्यत्र करेणुपदस्य ककारच्युतौ रेणुप्रतीतिः। मात्राच्युतकं काव्यं यथा—"मूलस्थितिमधः कुर्व्वन् पात्रैर्जुष्टो गताम्बरैः। विटः शैत्यः कुलीनस्य तिष्ठतः पथिकस्य सः।" अत्र विटपदस्य इकारमात्राच्युतौ वटतरुप्रतीतिः। पद्यवर्णसंख्यया केवलबिन्दुनिवेशनेन तत्तद्वर्णोपलब्धि र्बिन्दुमती। यथा—ि ० ० ० ० ि ० ० ो ०़ : : ि ० ० । ० ० ु ० ु : ० । । ० ० ो : । ० : ० । ० ० ि ० ० ु ० : ० । ० ि ० : ० ॅ।" एतत्पद्यं यथा माघे—"विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा। अनीत्वा पङ्कतां धूलि मुदकं नावतिष्ठते।" यत्र प्रथमद्वितीयतृतीयपादेषु चतुर्थपादस्य वर्णा गुप्ताः तिष्ठन्ति स गूढ़चतुर्थपादः। श्लोको यथा—"न मज्जति क्वचिद्दोषे प्रीणाति जगती मनः। य एकः स परं श्रीमान् चिरं जयति सज्जनः।" अत्र 'चिरं जयति सज्जनः' इति चतुर्थपादः प्रथमपादत्रयेषु गुप्तः। विदग्धसुखमण्डने प्रहेलिकालक्षणं यथा—"व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्। यत्र बाह्यान्तरावर्थौ कथ्येते सा प्रहेलिका।" सा च द्विविधा शाब्दी आर्थी च। तत्र शाब्दी यथा—

"सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्तरक्ताप्यसितैव नित्यम्।
यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती का नाम कान्तेति निवेदयाशु॥"

अत्र 'सारिका' इत्युत्तरम्। आर्थी यथा—

"नरनारीसमुत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता। अमुखी कुरुते शब्दं जातमात्रा विनश्यति।' अत्र 'छोटिका' इत्युत्तरम्। तस्याः प्रहेलिकायाः प्रदानादिभि र्जिज्ञासाप्रभृतिभिः।

(घ) यथैवेति। यथैव दिवसमनैषीत् एवं तथा, निशामप्यनैषीदित्यन्वयः। आरब्धेषु प्रवर्त्तितेषु विविधेषु नानाप्रकारेषु क्रीड़ापरिहासेषु खेलोपहासेषु चतुरैर्दक्षैः। अतएव सुरतसुखस्योपरि नैव इत्यासीदिति भावः।

প্রভৃতি বিস্তৃত কথা, ইতিহাস ও পুরাণ-শ্রবণে, কখনও চিত্রনির্ম্মাণ ও চিত্রদর্শনের আমোদে, কখনও বীণা-শ্রবণে, কখনও সাক্ষাৎ করিবার জন্য উপস্থিত মুনিগণের পদসেবায়, কখনও বা অক্ষরচ্যুতক, মাত্রাচ্যুতক বিন্দুমতী ও গূঢ়চতুর্থপাদের আলোচনায় এবং প্রহেলিকা জিজ্ঞাসা করিয়া, স্ত্রীসম্ভোগসুখ হইতে নিবৃত্ত হইয়া সুহৃৎসমূহে পরিবৃত থাকিয়া দিনের বেলা সময় অতিবাহিত করিতেন।

(ঘ) মহারাজ শূদ্রক যে ভাবে দিন অতিবাহিত করিতেন, সেই ভাবে নানাবিধ খেলা ও পরিহাসে নিপুণ সুহৃদ্গণের সহিত মিলিত হইয়া রাত্রি অতিবাহিত করিতেন।

---

(१) अनयत्। (२) चतुरः।

एकदा तु नातिदूरोदिते नव-नलिन-दल-सम्पुट-भिदि किञ्चिन्मुक्त-(१) पाटलिम्नि भगवति मरीचि-(२) मालिनि, राजानमास्थानमण्डपगतमङ्गना-जनविरुद्धेन वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयकेण सन्निहितविषधरेव चन्दनलता भीषणरमणीयाकृतिः, अविरलचन्दनानुलेपन-(३) धवलित-स्तनतटा उन्मज्जदैरा-वतकुम्भमण्डलेव मन्दाकिनी, चूडामणिसंक्रान्तप्रतिबिम्बच्छलेन (४) राजाज्ञेव मूर्त्तिमती राजभिः शिरोभिरुह्यमाना, शरदिव कलहंसधवलाम्बरा,

(स) एकदेति। एकदा प्रतीहारी द्वारे नियुक्ता स्त्री समुपसृत्य आस्थानमण्डपगतं सभागृहस्थितं राजानं सविनयमब्रवीदित्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि प्रतीहारीविशेषणानि। नवनलिनदलानां नूतनपद्मपत्राणां सम्पुटं सङ्कोचभावं भिनत्ति दूरीकरोति पद्ममुकुलं प्रकाशयतीत्यर्थः यः स तस्मिन्, किञ्चिन्मुक्तः किञ्चिद्दूरोदयात् ईषत् परित्यक्तः पाटलिमा श्वेतरक्तता येन तस्मिन्, भगवति माहात्म्यशालिनि, मरीचिमालाऽस्यास्तीति तस्मिन् सूर्य्ये नातिदूरोदिते गगनस्य किञ्चिद्दूरोदिते सति। अङ्गनाजनविरुद्धेन समरोपकरणत्वात् स्त्रीलोकव्यवहार-प्रतिकूलेन। कौक्षेयकेण असिना। अयन्तु भीषणत्वे हेतुः। सन्निहितः पार्श्वस्थितः विषधरः सर्पो यस्याः सा चन्दनलतेव, भीषणा च स्वभावतो रमणीया च आकृतिर्यस्याः सा। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

अविरलस्य घनस्य चन्दनस्यानुलेपनेन धवलितं शुभ्रीकृतं स्तनतटं यस्याः सा, अतएव उन्मज्जत् जलप्रवेशे प्रवर्त्तमानं ऐरावतस्य श्वेतवर्णस्येन्द्रहस्तिनः कुम्भमण्डलं मस्तकस्थमांसपिण्डौ यस्यां सा, मन्दाकिनी श्वेतजला स्वर्गगङ्गेव। अत्रोपमालङ्कारः।

चूडामणिषु उपस्थितनृपतीनां किरीटरत्नेषु संक्रान्तं पतितं यत् प्रतिबिम्बं प्रतीहार्य्याः प्रतिमूर्त्तिः तस्य छलेन, राजभिरुपस्थितसामन्तनृपतिभिः, शिरोभिरुह्यमाना मस्तकैर्द्ध्रियमाणा मूर्त्तिमती, राज्ञः शूद्रकस्य आज्ञेव। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः।

कलहंसवत् धवलं अम्बरं आकाशं यस्या सा, अन्यत्र अम्बरं वसनं यस्याः सा। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(স) এক দিন, নূতন কমলকলিকা-প্রকাশকারী ভগবান্ সূর্য্যদেব, কিয়ৎপরিমাণে পাটল-বর্ণ পরিত্যাগ করিয়া আকাশের কিছু দূরে উঠিলে, প্রতীহারী আসিয়া সভামণ্ডপস্থিত রাজা শূদ্রকের নিকট উপস্থিত হইল; তখন স্ত্রীলোকবিরুদ্ধ তরবারি তাহার বামপার্শ্বে ঝুলান থাকায় তাহাকে বিষধরধারিণী চন্দনলতার ন্যায় ভীষণ ও রমণীয়মূর্ত্তি দেখা যাইতেছিল; ঘন চন্দনের অনুলেপনে তাহার স্তনদেশ শুভ্রবর্ণ ছিল, সুতরাং ঐরাবত হস্তীর কুম্ভমণ্ডল জলে নিমগ্ন হইতে লাগিলে মন্দাকিনীর ন্যায় সে শোভা পাইতেছিল; উপস্থিত রাজগণের মুকুট-মণিতে প্রতীহারীর প্রতিমূর্ত্তি পতিত হইয়াছিল, সুতরাং সেই ছলে রাজগণ, যেন মূর্ত্তিমতী রাজাজ্ঞা মস্তকে বহন করিতেছিলেন; শরৎকাল যেমন কলহংসতুল্য নির্ম্মল আকাশদ্বারা পরি-

(१) उन्मुक्त…। (२) सहस्रमरीचि…। (३) मलयजानुलेपन, चन्दनानुलेप…।
(४) चूडामणिप्रतिबिम्ब…।

जामदग्न्यपरशुधारेव वशीकृतसकलराजमण्डला, विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलता-वती, राज्याधिदेवतेव विग्रहिणी, प्रतीहारी समुपसृत्य (१) क्षितितल-निहित-जानु-करकमला (२) सविनयमब्रवीत्—(ख)

—"देव ! द्वारस्थिता (३) सुरलोकमारोहतस्त्रिशङ्कोरिव कुपितशतमख-हुङ्कार-निपातिता (४) राजलक्ष्मीर्दक्षिणापथादागता चण्डाल-(५) कन्यका (६) पञ्जरस्थं शुकमादाय देवं विज्ञापयति—'सकल-भुवनतल-सर्वरत्नाना (७) मुदधिरिवैकभाजनं देवः, विहङ्गमश्चायमाश्चर्य्यभूतो (८) निखिल-भुवनतल-

---

जामदग्न्यस्य परशुरामस्य परशुधारेव कुठारनिशिताग्र इव, वशीकृतं आयत्तीकृतं अन्यत्र दर्शनेनाकृष्टं सकलं राजमण्डलं यया सा। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

वेत्रलतावती वेतसवल्लीयुक्ता, अन्यत्र वेत्रहस्ता। अत्रापि पूर्णोपमा।

विग्रहिणी मूर्त्तिमती राज्याधिदेवतेव। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

क्षितितले निहिते स्थापिते जानू, करकमले यया सा।

(ख) देवेति। सुरलोकं स्वर्गं। त्रिशङ्कोः सूर्य्यवंशीयराजविशेषस्य। कुपितस्य शतमखस्य इन्द्रस्य हुङ्कारेण निषेधव्यञ्जकध्वनिना निपातिता अधःक्षिप्ता राजलक्ष्मीरिव। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः।

देवः स्वामी भवान्, प्रमाणं कर्त्तव्याकर्त्तव्यनिर्द्धारणकर्त्तेत्यर्थः। विरराम प्रतीहारीत्यन्वयः।

पुरा त्रिशङ्कुर्नाम कश्चन सूर्य्यवंशीयो राजा यज्ञविशेषेण सशरीरः स्वर्गं यियासुः कुलगुरुणा वशिष्ठेन प्रत्याख्यातः। परन्तु तस्य पुत्रानुपगतस्तैरभिशप्तः "यतस्त्वं गुरुं विहायास्मानुपगतस्ततस्त्वं चण्डालो भवेति।"

শোভিত হয়, প্রতীহারীও তেমন কলহংসের ন্যায় শ্বেতবসনদ্বারা শোভা পাইতেছিল ; পরশুরামের কুঠারের ধার যেমন ভয় জন্মাইয়া সমস্ত রাজগণকে বশীভূত করিয়াছিল, প্রতীহারীও তেমন কটাক্ষপাতে সভাস্থ রাজগণকে বশীভূত করিয়াছিল ; বিন্ধ্যকাননে যেমন বেত থাকে, তেমন প্রতীহারীর হাতেও একখানা বেত ছিল ; তখন প্রতীহারীকে মূর্ত্তিমতী রাজ্যের অধিষ্ঠাত্রী দেবীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। সেই প্রতীহারী, জানুযুগল ও করকমলদ্বয় ভূতলে সংস্থাপিত করিয়া সবিনয়ে বলিল—

—"দেব ! কুপিত দেবরাজের হুঙ্কারে অধঃপাতিতা, স্বর্গারোহণকারী রাজা ত্রিশঙ্কুর রাজলক্ষ্মীর ন্যায়, দাক্ষিণাত্য হইতে আগতা কোন চণ্ডালকন্যা পঞ্জরমধ্যে একটি শুক পক্ষী লইয়া দ্বারদেশে উপস্থিত হইয়া আপনাকে জানাইতেছে—'মহারাজ, সমুদ্রের ন্যায় সমগ্র ভূমণ্ডলের সমস্ত রত্নের একমাত্র আধার ; এই আশ্চর্য্য পাখীটিও সমস্ত জগতের মধ্যে

---

(१) समुपासृत्य। (२)…कमलं। (३) द्वारि स्थिता। (४) निपतिता। (५) चाण्डाल।
(६) काचित्। (७)…सर्वरत्नानां। (८) आश्चर्य्यभूतनिखिल…।

रत्नमिति मत्वा देवपादमूलमेन-(१) मादायागताहमिच्छामि देवदर्शनसुखमनुभवितुं, इति। एतदाकर्ण्य देवः प्रमाणमित्युक्त्वा विरराम। (ङ)

उपजातकुतूहलस्तु राजा समीपवर्त्तिनां राज्ञामवलोक्य (२) मुखानि "को दोषः, प्रवेश्यताम्" इत्यादिदेश। (च)

अथ प्रतीहारी नरपतिकथना-(३) नन्तरमुत्थाय तां मातङ्गकुमारीं प्रावेशयत्। (क)

प्रविश्य च सा नरपतिसहस्र-मध्यवर्त्तिनमशनिभय-पुञ्जित-कुलशैलमध्यगतमिव कनकशिखरिणम्, (ख) अनेक-रत्नाभरण-किरण-जालकान्तरितावयव-

---

ततस्तेन विश्वामित्रमुद्दिश्य स्वाभिप्राये विज्ञापिते विश्वामित्रो यज्ञं विधाय स्वर्गमारोढुं तमुपदिदेश। त्रिशङ्कुस्तु यज्ञं विधाय स्वर्गमारोहन् गुरुत्यागात्तत्पुत्राणामभिशापेन चाण्डालभावापन्नत्वादयाज्यत्वाच्च देवराजेनाधःपातित इति रामायणवार्त्ता।

(च) उपजातेति। राज्ञां मुखावलोकनन्तु चाण्डालत्वेन तत्प्रवेशे तेषां वैमत्यमस्ति न वेत्यवगमार्थं, सति तु वैमत्ये नयनेङ्गितेनापि तत्प्रतिषेधसम्भवादिति भावः।

(क) अथेति। मातङ्गकुमारीं चाण्डालकन्याम्।

(ख) प्रविश्येति। सा चाण्डालकन्या प्रविश्य राजानमद्राक्षीदिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत्र सर्वाणि द्वितीयान्तपदानि राजविशेषणानि। अशनिभयेन इन्द्रवज्राघातात् पक्षच्छेदनभयेन पुञ्जितानां एकत्र मिलितानां कुलशैलानां पूर्वोक्तानां कुलपर्वतानां मध्यगतं कनकशिखरिणं सुमेरुपर्वतमिव। उपमा।

पुरा पक्षवन्तः पर्वताः पक्षिण इव देशाद्देशान्तरमुड्डीय पतन्तः जनस्थानं चूर्णयामासुः। ततः सुरपतिरशनिना तेषां पक्षान् छेत्तुमारेभे, ते च तदा आत्मरक्षोपायोद्भावनाय एकत्र समवेता आसन्निति रामायणम्।

রত্নস্বরূপ—ইহা মনে করিয়া ইহাকে লইয়া মহারাজের চরণ-সমীপে উপস্থিত হইয়াছি, এখন মহারাজের দর্শন সুখ অনুভব করিতে ইচ্ছা করি।' ইহা শুনিয়া আপনি যাহা আদেশ করেন" এই কথা বলিয়া প্রতীহারী বিরত হইল।

(ক্ষ) প্রতীহারীর বাক্যে রাজার কৌতুক জন্মিয়াছিল; সুতরাং তিনি নিকটবর্ত্তী রাজগণের মুখাবলোকন করিয়া প্রতীহারীকে আদেশ করিলেন, "দোষ কি, প্রবেশ করাও।"

(ক) তদনন্তর প্রতীহারী, রাজার আদেশের পর উঠিয়া সেই চাণ্ডালকন্যাকে প্রবেশ করাইল।

(খ) সেই চাণ্ডালকন্যা প্রবেশ করিয়া দেখিল যে, রাজা, চন্দ্রকান্ত-মণিনির্ম্মিত একখানি পর্য্যঙ্কের উপর উপবেশন করিয়া আছেন; বজ্রভয়ে একত্র সমবেত কুলপর্ব্বতগণের মধ্যবর্ত্তী সুমেরুর ন্যায় তিনি সামন্তরাজগণের মধ্যে অবস্থান করিতেছিলেন; নানাবিধ রত্নময় আভরণের

---

(१)…मूलमादाय…। (२) आलोक्य। (३)…वचना…।

মিন্দ্রায়ুধ-সহস্র-সংচ্ছাদিতাষ্টদিগ্বিভাগমিব জলধরদিবসম্, (১) (গ) অব-লম্বিত-(২) স্থূলমুক্তাকলাপস্য কনকশৃঙ্খলা-নিয়মিত-মণিদণ্ডিকাচতুষ্টয়স্য গগন-সিন্ধু-ফেনপটলপাণ্ডুরস্য (৩) নাতিমহতো দুকূলবিতানস্যাধস্তাদিন্দু-কান্তমণি-(৪) পর্য্যঙ্কিকানিষণ্ণম্, (ঘ) উদ্ধূয়মান-কনক (৫)-দণ্ড-চামর-কলাপম্, (ঙ) উন্ময়ূখ-মুখ-কান্তিনিচয়-পরাভব-(৬) প্রণতে শশিনীব স্ফটিকপাদপীঠে (৭) বিন্যস্তবামপাদম্, (চ) ইন্দ্রনীলমণি-কুট্টিম-প্রভা-

(গ) অনেকেতি। অনেকেষাং নানাবর্ণানাং রত্নাভরণানাং কিরণজালকেন রশ্মিসমূহেন অন্তরিতা আচ্ছাদিতা অবয়বা অঙ্গানি যস্য তং, অতএব ইন্দ্রায়ুধসহস্রেণ ইন্দ্রধনুঃসমূহেন সংচ্ছাদিতা আবৃতা অষ্টৌ দিগ্বিভাগা যত্র তং, জলধরদিবসং মেঘাচ্ছন্নদিনমিব স্থিতম্। এতেন শূদ্রকঃ শ্যামবর্ণ আসীদিতি প্রতীয়তে। উপমা।

(ঘ) অবেতি। অবলম্বিতাঃ শিল্পিভিরধোলম্বিতত্বেন যোজিতাঃ স্থূলানাং মুক্তানাং কলাপাঃ শ্রেণয়ো যস্মিন্ তস্য, এতানি ষষ্ঠ্যন্তানি বিতানবিশেষণানি। কনকশৃঙ্খলাভিঃ স্বর্ণনির্ম্মিতশৃঙ্খলাভিঃ, নিয়মিতং চতুর্ষু কোণেষু বদ্ধং মণিদণ্ডিকাচতুষ্টয়ং মণিময়ক্ষুদ্রযষ্টিচতুষ্টয়ং যস্য তস্য। গগনসিন্ধোর্মন্দাকিন্যাঃ, ফেনপটলবৎ ফেনসমূহবৎ পাণ্ডুরস্য শুভ্রবর্ণস্য। অত্র লুপ্তোপমা। নাতিমহতঃ কিঞ্চিন্মহতঃ স্থানপ্রমাণস্য, দুকূলবিতানস্য পট্টবসননির্ম্মিতচন্দ্রাতপস্য, অধস্তাৎ নিম্নদেশে, ইন্দুকান্তমণিপর্য্যঙ্কিকা চন্দ্রকান্তমণি-নির্ম্মিত-ক্ষুদ্রপর্য্যঙ্কঃ, তত্র নিষণ্ণং উপবিষ্টং।

(ঙ) উদ্ধূয়মানঃ কিঙ্করৈঃ সঞ্চাল্যমানঃ কনকদণ্ডঃ চামরকলাপো যস্য তম্।

(চ) উন্ময়ূখেতি। উদ্গতা ময়ূখাঃ কিরণা যস্য তাদৃশস্য মুখস্য যঃ কান্তিনিচয়ঃ শোভাসমূহঃ তেন যঃ পরাভবঃ পরাজয়ঃ তেন প্রণতে চরণতলে নম্রীভূতে, শশিনি চন্দ্র ইব। অত্র উৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

কিরণজালে তাঁহার সমস্ত অঙ্গ আবৃত ছিল, তাহাতে, বহুতর ইন্দ্রধনুতে অষ্টদিক্ আচ্ছাদিত হইলে মেঘাচ্ছন্ন দিবসের ন্যায় তাঁহাকে দেখা যাইতেছিল; মন্দাকিনীর ফেন-সমূহের ন্যায় শ্বেতবর্ণ অনতিবৃহৎ পট্টবসননির্ম্মিত একখানি চন্দ্রাতপ উপরে খাটান ছিল; তাহাতে বড় বড় মুক্তার মালা ঝুলান ছিল, এবং তাহার চারি কোণে চারিটি মণিময়দণ্ড স্বর্ণশৃঙ্খলে বদ্ধ ছিল; সুবর্ণময়-দণ্ড সম্পন্ন চামরসমূহ আন্দোলিত হইতেছিল; যে স্ফটিকময় পাদপীঠে মহারাজ শূদ্রক বামচরণ বিন্যস্ত করিয়াছিলেন, সেই স্ফটিকময় পাদপীঠখানাকে, মুখের ঊর্দ্ধগামী কান্তিসমূহে পরাজিত হইয়া চন্দ্র যেন চরণতলে প্রণত হইয়া রহিয়াছেন বলিয়া বোধ হইতেছিল; সে সময়ে তিনি চরণের নখসমূহের কিরণজালে শোভা পাইতেছিলেন, সেই কিরণগুলি নীলকান্তমণিনির্ম্মিত আসন-বেদিকার প্রভার সহিত মিশ্রিত হওয়ায় শ্যামবর্ণ হইয়াছিল, সুতরাং

(১) জলধরসময়দিবসং। (২) আলম্বিত...। (৩) পাণ্ডরস্য। (৪) ইন্দুকান্তপর্য্যঙ্কিকা...।
(৫) সুবর্ণদণ্ড...। (৬) উন্ময়ূখকান্তিনিচয়পরাভবপ্রণতে, উন্ময়ূখমুখবিজয়পরাভবপ্রণতে, উন্ময়ূখ-মুখকান্তিবিজিতে পরাভবপ্রণতে। (৭) স্ফাটিকে পাদপীঠে।

सम्पर्क-श्यामायमानैः प्रणत-रिपु-निश्वास-(१) मलिनीकृतैरिव चरण-नख-मयूखजालैरुपशोभमानम्, (छ) आसनोल्लसित पद्मराग-किरण-पाटलीकृतेनाचिर मृदित-(२) मधु-कैटभ-रुधिरारुणेन हरिमिवोरुयुगलेन विराजमानम्, (ज) अमृतफेन-धवले गोरोचना-लिखित-हंस-मिथुन-सनाथ-पर्य्यन्ते चामर-पवन-प्रनर्त्तितान्तदेशे (३) दुकूले वसानम्, (झ) अति-सुरभि-चन्दनानुलेपन-धवलितोरः-

---

(छ) इन्द्रेति। इन्द्रनीलमणीनां नीलकान्तमणीनां यः कुट्टिमः वेदिका, तस्य प्रभासम्पर्केण दीप्तिमिश्रणेन श्यामायमानैः श्यामवदाचरद्भिः श्यामीभूतैः। अत्र कथङ्गतोपमालङ्कारः। अतएव प्रणतानां पराजयेन वशीभूतानां रिपूणां निःश्वासैः मलिनीकृतानि, तैरिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते।

(ज) आसनोल्लसितेति। आसने उपवेशनस्थले उल्लसिताः स्फुरिता ये पद्मरागकिरणा लोहितमणिमयूखास्तैः पाटलीकृतेन रक्तीकृतेन, अतएव अचिरमृदितयोः सद्यश्छिन्नकण्ठयोः मधुकैटभयोः तदाख्ययोर्दैत्यविशेषयोः, रुधिरेण रक्तेन अरुणं रक्तवर्णं तेन, हरिं नारायणमिव। अत्रोपमालङ्कारः।

पुरा सागरशायिनो नारायणस्य कर्णमलसम्भूतौ मधुकैटभनामानौ दैत्यौ नारायणस्यैव नाभिसलिलोत्पन्नं ब्रह्माणं भक्षयितुमुद्यतौ बभूवतुः। ततः परित्राणार्थिना ब्रह्मणा स्तूयमानो नारायण उत्थाय ताभ्यां सह पञ्चवर्षसहस्राणि यावत् बाहुयुद्धं चकार। तेन च सन्तुष्यमाणौ दैत्यौ नारायणाय बलं [illegible] प्रकाशयामासतुः। नारायणस्तु तयोर्वधं ययाचे। तौ तु पृथिवीं जलप्लाविताम् अवलोक्य "यत्र पृथिवी जलप्लाविता न वर्त्तते तत्र आवां जहि" इत्यूचतुः। ततस्तु नारायणः पार्थिवांशसम्पन्ने स्वकीये ऊरौ संस्थाप्य तयोः शिरसी चक्रेण चिच्छेद। इति मार्कण्डेयपुराणवार्त्ताऽत्रानुसन्धेया।

(झ) अमृतेति। अमृतफेनवत् सुधाफेनवत् धवले शुभ्रवर्णे, गोरोचनया तदाख्यपदार्थेन लिखितानि चित्रितानि यानि हंसमिथुनानि बहूनि हंसयुगलानि तैः सनाथाः सहिताः पर्य्यन्ताः प्रान्तभागा ययोस्ते, तथा चामरयोः पवनेन वायुना प्रनर्त्तितौ सञ्चालितौ अन्तदेशौ प्रान्तभागौ ययोस्ते, दुकूले पट्टवसनद्वयं वसानं परिदधानम्। अत्र अमृतफेनधवले इति लुप्तोपमालङ्कारः।

(ञ) अतीति। अतिसुरभिणा परमसुगन्धेन चन्दनेन मलयजद्रवेण धवलितं शुभ्रीकृतं उरःस्थलं वक्षोदेशो यस्य तम्।

বশীভূত শত্রুগণের নিশ্বাসবায়ুতে সেগুলিকে যেন মলিন করিয়াছিল ; পূর্ব্বকালে সদ্যশ্ছিন্ন মধু ও কৈটভ দৈত্যের রুধিরে রক্তবর্ণ উরুযুগলদ্বারা নারায়ণ যেমন শোভা পাইয়াছিলেন, মহারাজ শূদ্রকও তেমন আসনস্থ পদ্মরাগমণির কিরণে রক্তবর্ণ উরুযুগলদ্বারা শোভা পাইতেছিলেন ; রাজা শূদ্রক অমৃত-ফেনের ন্যায় শুভ্রবর্ণ দু'খানা পট্টবস্ত্র পরিধান করিয়াছিলেন, তাহার প্রান্তভাগে গোরোচনা দ্বারা দুই দুইটি করিয়া হাঁস চিত্র করা ছিল, আর চামরের বায়ুতে তাহার অঞ্চলদেশ

---

(१)…निःश्वास…। (२)…मृत…। (३)…नर्त्तित…।

स्थलम्, (ञ) उपरि-विन्यस्त-कुङ्कुम-स्थासकम्, (ट) अन्तरान्तरानिपतित-(१) बालातपच्छेदमिव कैलासशिखरिणम्, (ठ) अपर-शशि-शङ्कया नक्षत्रमालयेव हारलतया कृतमुखपरिवेशम्, (२) (ड) अतिचपल-राज-(३) लक्ष्मी-बन्धन (४) निगड़-शङ्कामुपजनयतेन्द्रनील-केयूरयुगलेन मलयज-रस-गन्धलुब्धेन भुजङ्गद्वयेनेव वेष्टितबाहुयुगलम् (५) (ढ) ईषदालम्बि-(६) कर्णोत्पलम्, उन्नतघोणम् उत्फुल्ल-पुण्डरीक-लोचनम् (७) अमलकलधौत-पट्टायतं (८) अष्टमीचन्द्र-शकलाकारं

(ट) उपरीति। उपरि तच्चन्दनलेपोपरि विन्यस्तो दत्तः कुङ्कुमस्थासकः कुङ्कुमचर्च्चा पद्मदलवत् कुङ्कुमलेपो यस्य तम्। "चर्च्चा तु चार्च्चिक्यं स्थासकः" इत्यमरः।

(ठ) अतएवाह अन्तरेति। अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये निपतिता, बालातपच्छेदा नवोदितरविरश्मिखण्डा यस्य तं कैलासशिखरिणमिव स्थितं। अत्रोपमालङ्कारः।

(ड) अपरेति। अपरशशिशङ्कया 'अयं अपरः शशी' इति भ्रमेण आगतया नक्षत्रमालयेव हार-लतया लतावल्लम्बमानया मुक्तामालया कृतो मुखस्य परिवेशः परिधिः परिवेष्टनं यस्य तं। अत्र मुखे शशिभ्रमाद्-भ्रान्तिमानलङ्कार उत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, तेन च मुखस्य चन्द्रतुल्यत्वं हारलतायाश्च स्थूलोज्ज्वलत्वं सूचितमित्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ढ) अतीति। अतिचपलायाः नितान्तचञ्चलायाः राजलक्ष्म्याः बन्धनाय बन्धनेन स्थिरीकरणाय यो निगड़ः शृङ्खला तस्य शङ्का भ्रमं उपजनयता कुर्वता, इन्द्रनीलकेयूरयुगलेन नीलकान्तमणिखचिताङ्गदद्वयेन मलयजरसस्य चन्दनद्रवस्य गन्धेन सौरभेण लुब्धो लोभाकृष्टस्तेन भुजङ्गद्वयेन सर्पयुगलेनेव स्थितेन वेष्टितं बाहुयुगलं भुजद्वयं यस्य तम्। अत्र भ्रान्तिमदुत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) ईषदिति। ईषदालम्बिनी किञ्चिल्लम्बमाने कर्णोत्पले पद्माकारकर्णालङ्कारौ यस्य तम्। उन्नता घोणा नासिका यस्य तं। "घोणा नासा च नासिका" इत्यमरः। उत्फुल्लपुण्डरीकवत् विकसितश्वेतपद्म-वत् लोचने चक्षुषी यस्य तं। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अमलकलधौतपट्टवत् निर्म्मलस्वर्णफलकवत् आयतं विस्तृतं, अष्टमीचन्द्रस्य अष्टमीतिथावुदितचन्द्रस्य यत् शकलं खण्डं तस्य आकार इव आकारो यस्य तं,

কম্পিত হইতেছিল; অতি সুগন্ধ চন্দন লিপ্ত থাকায় বক্ষঃস্থল শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল; সেই চন্দনলেপের উপরে পদ্মের আকারে কুঙ্কুম লিপ্ত ছিল, তাহাতে নবোদিত সূর্য্যের কিরণসমূহ মধ্যে মধ্যে নিপতিত হইলে কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায় রাজাকে দেখা যাইতেছিল; অপর চন্দ্রের ভ্রমে উপস্থিত নক্ষত্রশ্রেণীর ন্যায় মুক্তামালাতে রাজার মুখমণ্ডল পরিবেষ্টিত ছিল; চন্দনসৌরভলোভে সমাগত সর্পদ্বয়ের ন্যায় অবস্থিত এবং নিতান্ত চঞ্চলা রাজলক্ষ্মীর বন্ধনশৃঙ্খলভ্রমজনক নীলকান্ত-মণিখচিত কেয়ূরযুগলে রাজার বাহুযুগল পরিবেষ্টিত ছিল; পদ্মাকারে নির্ম্মিত কর্ণালঙ্কার-যুগল রাজার কর্ণযুগলে কিয়ৎপরিমাণে আলম্বিত ছিল; রাজার নাসিকা উন্নত, নয়নযুগল বিকসিত শ্বেতপদ্মের ন্যায়, ললাটদেশ নির্ম্মল সুবর্ণফলকের ন্যায় বিস্তৃত, অষ্টমীর

(१) अन्तरानिपतित…। (२)…परिवेषं। (३)…राज्य…। (४)…बन्ध…। (५) बाहुशिखरं। (६) आलम्बित..। (७)…नेत्रं। (८)…पट्टायितम्।

अशेष-भुवन-राज्याभिषेक-सलिलपूतम् (१) ऊर्णासनाथं ललाटदेशमुद्वहन्तम्, (ण) आमोदित-मालतीकुसुम-शेखरं उषसि शिखर-पर्य्यस्त तारकापुञ्जमिव पश्चिमाचलम्, (त) आभरण-प्रभा-पिशङ्गिताङ्गतया (२) लग्न-हर-हुताशमिव मकरध्वजम् (थ) आसन्नवर्त्तिनीभिः सेवार्थमागताभिरिव (३) दिग्वधूभिर्वारविलासिनीभिः परिवृतम्, (द) अमल-मणिकुट्टिम-संक्रान्त-सकल-देह-(४) प्रतिबिम्बतया

अनयोरपि लुप्तोपमालङ्कारौ। अशेषभुवनराज्ये समस्तभूमण्डलराजत्वे योऽभिषेको मङ्गलस्नानं तेन पूतं पवित्रं। तथा ऊर्णा भ्रूयुगलमध्यवर्त्ती लोमावर्त्तः तया सनाथं सहितम्। "ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्त्ते मेषादीनाञ्च लोमनि।" इति हेमः। अत्र सामुद्रकं "भ्रूद्वयमध्ये मृणालतन्तुसूक्ष्मं शुभ्रायतमेकं प्रशस्तावर्त्तं महापुरुषलक्षणम्।"

(त) आमोदितेति। आमोदितानि सञ्जातामोदानि सुरभीणि यानि मालतीकुसुमानि तैः शेखरः शिरोभूषणं यस्य तं, अतएव उषसि अरुणोदयकाले शिखरे शृङ्गे पर्य्यस्तः पतित्वा समवेतः तारकापुञ्जः नक्षत्रराशिर्यस्य तं पश्चिमाचलं अस्ताद्रिं तमिव स्थितम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(थ) आभरणेति। आभरणप्रभया अलङ्कारकान्त्या पिशङ्गितानि पिङ्गलवर्णीकृतानि अङ्गानि यस्य तस्य भावस्तत्ता तया हेतुना, लग्नः संसक्तः हरहुताशः शिवस्य तृतीयनेत्रवह्निर्यस्मिन् तं तादृशं मकरध्वजं कामदेवमिव स्थितमित्युपमालङ्कारः।

(द) आसन्नेति। आसन्नवर्त्तिनीभिः निकटे विद्यमानाभिः, सेवार्थं परिचर्य्यार्थं आगताभिरुपस्थिताभिः, दिश एव वध्वस्ताभिरिव वारविलासिनीभिर्वेश्याभिः परिवृतं परिवेष्टितम्। अत्र रूपकोत्प्रेक्षयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करोऽलङ्कारः।

চন্দ্রখণ্ডের ন্যায় অর্দ্ধবর্ত্তুল, সমগ্রভূমণ্ডলরাজ্যের অভিষেক-জলে পরিপূত এবং ভ্রূযুগলের মধ্যবর্ত্তী বক্ররোমরাজিসংযুক্ত ছিল; সুগন্ধ মালতীকুসুমে চূড়াটি পরিবেষ্টিত ছিল, তাহাতে প্রভাতকালে উপরিভাগে নক্ষত্রসমূহ পতিত হইয়া পুঞ্জীভূত হইলে অস্তাচলের ন্যায় রাজাকে দেখা যাইতেছিল; সুবর্ণময় নানাবিধ আভরণের দীপ্তিতে রাজার সমস্ত অঙ্গ পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিল, সুতরাং মহাদেবের নয়নাগ্নিপরিবেষ্টিত কামদেবের ন্যায় তিনি দৃষ্টিগোচর হইতেছিলেন; পরিচর্য্যার নিমিত্ত উপস্থিত দিগ্বধূগণের ন্যায় বেশ্যাগণ নিকটবর্ত্তী হইয়া রাজাকে পরিবেষ্টন করিয়াছিল; নির্ম্মল মণিময় বদ্ধভূমিতে রাজার সমস্ত অঙ্গের প্রতিবিম্ব পতিত হইয়াছিল, অতএব বোধ হইতেছিল যেন, পতির প্রতি অনুরাগবশতঃ স্বয়ং পৃথিবীদেবী রাজাকে হৃদয়ে ধারণ

---

(१)...अभिषेकपूतं। (२)...अङ्गरागतया। (३) सेवासक्ताभिरिव। (४) ..संक्रान्तप्रतिबिम्बतया, संक्रान्तदेहप्रतिबिम्बतया।

पतिप्रेम्णा वसुन्धरया हृदयेनैवोह्यमानम्, (ध) अशेषजनभोग्यतामुपनीतयाप्य-साधारणया राजलक्ष्म्या समालिङ्गितम्, (१) (न) अपरिमित-परिवारजनमप्य-द्वितीयम् (प) अनन्त-गज-तुरग-साधनमपि खड्गमात्रसहायम्, (फ) एकदेशस्थित-मपि व्याप्तभुवनमण्डलम्, (ब) आसने स्थितमपि (२) धनुषि निषण्णम्, (भ) उत्सादिताशेषद्विषदिन्धनमपि (३) ज्वलत्प्रतापानलम्, (म) आयतलोचनमपि

(ध) अमलेति। अमलेषु निर्म्मलेषु मणिकुट्टिमेषु मणिमयवेदिकासु संक्रान्तं सञ्चरितं सकलदेहप्रतिबिम्बं यस्य तस्य भावः सा तया हेतुना, पतिप्रेम्णा तमेव भर्त्तारं प्रत्यनुरागेण वसुन्धरया पृथिव्या हृदयेन वक्षसा उह्यमानं धार्य्यमाणमिव स्थितम्। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) अशेषेति। अशेषजनानां सकललोकानां भोग्यतां दानादिना भोगयोग्यतां उपनीतयापि प्रापितयापि,असाधारणया साधारणभोग्यतारहितया इति विरोधः सर्व्वोत्कृष्टया इति तत्समाधानं, राजलक्ष्म्या समालिङ्गितं उपगूढम्।

(प) अपरेति। अपरिमिता असंख्याताः परिवारजनाः परिचारकलोका यस्य तं तथाभूतमपि अद्वितीयं द्वितीयजनरहितमिति विरोधः, स्वसमान-द्वितीयरहितमिति तत्परिहारः।

(फ) अनन्तेति। गजाश्च तुरगाश्च गजतुरगं समाहारद्वन्द्वः। अनन्तं असंख्यं गजतुरगं हस्त्यारोहिसैन्यं अश्वारोहिसैन्यं च साधनं उपकरणं सहायो यस्य तं तथोक्तमपि खड्गमात्रसहायमिति विरोधः, सर्वविधसैन्यैरपेक्षया केवलतरवारिसहायेनैव सर्वसमरविजयिनमिति तत्समाधानम्। "निर्व्वर्त्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधन"मित्यमरः।

(ब) एकेति। एकदेशे सभामण्डपादौ एकस्मिन् जनपदे वा स्थितमपि व्याप्तं स्पृष्टं भुवनमण्डलं येन तमिति विरोधः, व्याप्तं स्वतेजसा आक्रान्तं आयत्तीकृतं भुवनमण्डलं मर्त्यभुवनं येन तमिति तत्परिहारः।

(भ) आसन इति। आसने राजासने स्थितमुपविष्टमपि धनुषि कार्म्मुके निषण्णमुपविष्टमिति विरोधः, धनुषि विजयविश्वासिनमिति तत्समाधानम्।

(म) उत्सादितेति। उत्सादितानि दग्धानि अशेषाणि सकलानि द्विषन्तः शत्रव एव इन्धनानि काष्ठानि येन तं तादृशमपि, ज्वलन् प्रताप एवानलो यस्य तमिति काष्ठाभावे कथं ज्वलनमिति विरोधः, ज्वलन्

করিয়া রাখিয়াছেন; তিনি রাজলক্ষ্মীকে সাধারণের ভোগ্য করিয়া থাকিলেও অসাধারণ রাজলক্ষ্মী তাঁহাকে আলিঙ্গন করিতেছিল;—অসংখ্য পরিজনে পরিবৃত থাকিয়াও তিনি অদ্বিতীয়, বহুতর হস্তী ও অশ্বসৈন্য সহায় থাকিলেও যুদ্ধে কেবল তরবারি তাঁহার সহায় হইত, শূদ্রক একদেশস্থায়ী হইয়াও সমগ্রভূমণ্ডলব্যাপী ছিলেন, আসনে থাকিয়াও ধনুতে নির্ভর করিতেছিলেন, শত্রুরূপ কাষ্ঠসকল দগ্ধ হইলেও তাঁহার প্রতাপানল জ্বলিতেছিল; তিনি বিস্তৃতলোচন

---

(१) समालिङ्गितदेहं। (२) आसनगतं, आसनस्थितं। (३) उत्सादितद्विषदिन्धनमपि।

सूक्ष्मदर्शनम्, (१) महादोषमपि सकलगुणाधिष्ठानम्, कुपतिमपि कलत्रचय-वल्लभम् (२) अविरत-प्रवृत्त-दानमप्यमदम्, अतिशुद्ध-(३) स्वभावमपि कृष्ण-चरितम्, अकरमपि हस्तस्थित-सकल-भुवनतलं (४) राजानमद्राक्षीत्। (य)

आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्त-कुवलयदल-कोमलेन पाणिना जर्जरितमुखभागां वेणुलतामादाय नरपतिप्रबोधनार्थं (५) सकृत्

दीप्यमानः सर्वत्र प्रबलभावेनावतिष्ठमानः प्रतापानलो यस्येति तत्परिहारः। अत्र विपत्सु [illegible]पः प्रतापे अनलत्वारोपस्य हेतुरिति परम्परितरूपकसङ्कीर्णो विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(य) आयतेति। आयते दीर्घे लोचने यस्य तं तादृशमपि सूक्ष्मे क्षुद्रे दर्शने लोचने यस्य तमिति विरोधः, सूक्ष्मे अध्यात्मविषये दर्शनं ज्ञानं यस्य तमित्यविरोधः। "सूक्ष्मं स्यात् कैतवेऽध्यात्मे पुंस्यणौ त्रिषु चाल्पके।" "दर्शनं नयन-स्वप्न-बुद्धि-धर्मोपलब्धिषु।" इति च विश्वः। महान् दोषो यस्य तं तथाभूतमपि सकलानां गुणानां अधिष्ठानं आश्रयमिति विरोधः, महान्तौ दोषौ भुजौ यस्य तमिति समाधानं। "दोर्दोषा च भुजो बाहु" रिति धनञ्जयः। कुत्सितश्चासौ पतिश्चेति तं कुपतिमपि कलत्रचयवल्लभं स्त्रीगणप्रियमिति विरोधः, कुः पृथिवी तस्याः पतिमित्यविरोधः। "गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी"त्यमरः। अनवरतं प्रवृत्तं दानं मदजलं यस्य तं तादृशमपि अमदं मदजलरहितमिति हस्तिसारूप्ये विरोधः, अनवरतं प्रवृत्तं दानं याचकेभ्यो धनादि-वितरणं यस्य तं तथाभूतमपि अमदं अहङ्काररहितमिति तत्समाधानम्। अतिशुद्धो निर्मलः स्वभावः प्रकृतिर्यस्य तं तादृशमपि कृष्णचरितं मलिनस्वभावमिति विरोधः, कृष्णस्य यदुपतेश्चरितमिव चरितं यस्य तमित्यविरोधः। न विद्यते करो हस्तो यस्य तं अकरमपि हस्ते करे स्थितं शासनेनायत्तं सकलं भुवनतलं यस्य तमिति विरोधः, न विद्यते सार्वभौमत्वेन नास्ति, करः अन्यस्मै राजग्राह्यधनादिदानं यस्य तमिति तत्-परिहारः।

अत्र अशेषजनभोग्यतामित्यादिकेषु द्वादशसु स्थानेषु श्लेषेण विरोधसमाधानात् द्वादशैव विरोधाभासालङ्काराः।

(र) आलोक्येति। सा चण्डालकन्या, दूरस्थितैव चाण्डालजातेर्हि असम्भाष्यमेव दोषो [illegible]इति भावः, प्रचलितं पूर्वावस्थितिस्थानात् किञ्चित् प्रभ्रष्टं रत्नवलयं यस्य तेन, तथा रक्तः स्वभावलोहितः कुवलयदलवत् उत्पलपत्रवत् कोमलो मृदुलश्च तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। जर्जरितो जीर्णः मुखभागः अग्रदेशो यस्याः

হইয়াও সূক্ষ্মদর্শী ছিলেন, মহাদোষী (মহাবাহু) হইয়াও সকল গুণের আধার, কুপতি (পৃথিবীর রাজা) হইয়াও ভার্য্যাগণের প্রিয়, সর্ব্বদা দান করিয়াও নিরহঙ্কার এবং নিতান্ত নির্ম্মল-স্বভাব হইয়াও মলিনচরিত্র (কৃষ্ণের ন্যায় সচ্চরিত্র) ছিলেন, আর কর (খাজনা) না থাকিলেও সমগ্রভূমণ্ডল তাঁহার হস্তে অবস্থান করিতেছিল। (থ—য)

(র) চণ্ডালকন্যা রাজাকে দেখিয়া দূরে থাকিয়াই, সঞ্চলিত-রত্নবলয়ালঙ্কৃত, স্বভাবতঃ রক্তবর্ণ ও পদ্মপত্রের ন্যায় কোমল পাণিকমলে জীর্ণাগ্র একখানি বংশদণ্ড গ্রহণ করিয়া

---

(१) सूक्ष्मदर्शिनं। (२) कलत्रवल्लभं। (३) अत्यन्तशुद्ध...। (४) हस्तस्थितभुवनतलं।
(५)...प्रतिबोधनार्थं।

সভাকুট্টিমমাজঘান ; যেন সকলমিব তদ্ রাজকং (১) একপদে বনকরিযূথমিব তালশব্দেন তেন বেণুলতাধ্বনিনা (২) যুগপদাবলিতবদনমবনিপালমুখাদাকৃষ্য চক্ষুস্তদভিমুখমাসীৎ। (ক)

অবনিপতিস্তু 'দূরাদালোকয়' ইত্যভিধায় প্রতীহার্য্যা নির্দ্দিশ্যমানাং তাং বয়ঃপরিণামশুভ্র-(৩) শিরসা রক্ত-রাজীবেক্ষণাপাঙ্গেনানবরত-কৃত-ব্যায়ামতয়া

লতা বেণুলতা বংশযষ্টিং। নরপতেঃ শূদ্রকস্য প্রবোধনার্থং স্বকার্য্যং প্রত্যভিনিবেশকরণার্থং। সভাকুট্টিমে সভায়া বদ্ধভূমিং। যেন আঘাতেন। রাজ্ঞাং সমূহ ইতি রাজকং। একপদে তস্মিন্নেব ক্ষণে "তৎক্ষণৈকপদে তুল্যে" ইতি হলায়ুধঃ। তালশব্দেন কাংস্যকরতালধ্বনিনা বনকরিযূথমিব বন্যহস্তিসমূহ ইব। বেণুলতাধ্বনিনা বংশযষ্টিশব্দেন। আবলিতবদনং পরাবর্ত্তিতমুখং সৎ রাজকস্য বিশেষণমেতৎ। অবনিপালমুখাৎ শূদ্রক-বদনাৎ চক্ষুরাকৃষ্য তস্যাঃ চাণ্ডালকন্যায়া অভিমুখং সম্মুখং। সহসা শব্দবিশেষশ্রবণে তদাভিমুখ্যং লোকানাং স্বাভাবিকং। দ্বিতীয়বাক্যে উপমালঙ্কারঃ।

(খ) অবনীতি। অবনিপতিঃ শূদ্রকঃ অনিমিষলোচনঃ তাং চাণ্ডালকন্যাং দদর্শেতি বক্ষ্যমাণেনান্বয়ঃ। দূরাদালোকয় "হে চাণ্ডালকন্যে ! ত্বং দূরাদেব রাজানং পশ্য" রাজ্ঞ একান্ত-সমীপগমনমপরিচিতায়াস্তবানুচিত-মিতি ভাবঃ। ইত্যভিধায় উক্ত্বা বর্ত্তমানয়া প্রতীহার্য্যা পূর্ব্বোক্তয়া দ্বাররক্ষিণ্যা নির্দ্দিশ্যমানাং 'ইয়ং সা চাণ্ডাল-কন্যা' ইতি সভায়াং পরিচায্যমানাং। বয়ঃপরিণামেন বার্দ্ধক্যেন শুভ্রং পক্বকেশতয়া ধবলং শিরো মস্তকং যস্য তেন রক্তরাজীববৎ রক্তপদ্মবৎ ঈক্ষণাপাঙ্গৌ নেত্রপ্রান্তৌ যস্য তেন। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ। অনবরত-কৃতব্যায়াম-তয়া নিরন্তরবিহিতপরিশ্রমতয়া যৌবনস্য অপগমেঽপি অতীতত্বেঽপি অশিথিলা দৃঢ়াঃ শরীরস্য সন্ধয়ঃ

তাহা দ্বারা রাজার প্রবোধ জন্মাইবার জন্য সভাবেদিতে একবার আঘাত করিয়াছিল ; যাহাতে তৎক্ষণাৎ সেই সকল রাজগণ, করতালের শব্দে বন্য হস্তি-সমূহের ন্যায় সেই বংশযষ্টির শব্দে এক সময়েই মুখ ফিরাইয়া রাজার মুখ হইতে নয়ন আকর্ষণ করিয়া সেই চণ্ডালকন্যার অভিমুখ হইয়াছিলেন।

(খ) "হে চাণ্ডালকন্যে ! তুমি দূর হইতেই রাজাকে দর্শন কর" এই কথা বলিয়া প্রতীহারী তাহাকে রাজসভায় পরিচয় করাইয়া দিলে মহারাজ শূদ্রক অনিমেষ-লোচনে সেই চণ্ডালকন্যাকে দেখিতে লাগিলেন। একজন প্রাচীন পুরুষ সেই চণ্ডাল-কন্যার সম্মুখে অবস্থান করিতেছিল, বার্দ্ধক্যবশতঃ তাহার কেশকলাপ শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, নয়নের প্রান্তভাগ পদ্মের ন্যায় রক্তবর্ণ ছিল, সর্ব্বদা পরিশ্রম করায় যৌবন অতীত হইলেও শরীরের সন্ধিস্থানগুলি শিথিল হইয়াছিল না, এবং চণ্ডাল হইলেও তাহার আকৃতি নিতান্ত কঠিন ছিল না, পোষাক-পরিচ্ছদ সভ্যের মত ছিল এবং সে ধবলবর্ণ একখানি বসন পরিধান করিয়াছিল। আর সেই চাণ্ডাল-কন্যার পশ্চাদ্ভাগে একটি চণ্ডাল-বালক আসিতেছিল, তাহার কেশকলাপ ইতস্ততো বিক্ষিপ্ত

---

(১) রাজন্যকং। (২) ক্বচিৎ 'তেন বেণুলতাধ্বনিনা' ইতি পাঠো নাস্তি। (৩)...পাণ্ডুর...।

यौवनापगमेऽप्यशिथिल-शरीरसन्धिना सत्यपि मातङ्गत्वे नातिकर्कशाकृतिना अनुग्रहीतार्य्यवेशेन (१) शुभ्र-(२) वाससा पुरुषेणाधिष्ठितपुरोभागाम्, (ख) आकुलाकुल-काकपक्षधारिणा कनक-शलाका-निर्म्मितमप्यन्तर्गत-शुकप्रभा-श्यामायमानं मरकतमयमिव पञ्जरमुद्वहता चाण्डालदारकेणानुगम्यमानां, (ग) असुर-गृहीतामृतापहरण-कृत-कपट-पटु-विलासिनीवेशस्य (३) श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वतीं, (घ) सञ्चारिणीमिवेन्द्रनीलमणिपुत्तलिकाम्, (४) (ङ) आगुल्फावलम्बिना (५) नीलकञ्चुकेनाच्छन्नशरीराम्, उपरि-रक्तांशुक-विरचिताव-

संयोगस्थानानि यस्य तेन। निरन्तर-यथासम्भवशारीरिकपरिश्रमे यावज्जीवमेव शरीरं दृढं तिष्ठतीति सु प्रत्यक्षसिद्धम्। मातङ्गत्वे चाण्डालत्वे सत्यपि नातिनृशंसा नातिक्रूरा अभिख्या आकृतिर्यस्य तेन, अनुगृहीतार्य्यवेशेन परिगृहीतसभ्यवेशेन शुभ्रवाससा श्वेतवसनेन केनचित् पुरुषेण, अधिष्ठित आश्रितः पुरोभागः अग्रभागो यस्यास्ताम्।

(ख) आकुलेति। आकुलाकुलं एकान्ताकुलं इतस्ततो विक्षिप्तं काकपक्षं शिखण्डकं धारयितुं शीलं यस्य तेन। "काकपक्षः शिखण्डकः" इत्यमरः। कनकशलाकाभिः सुवर्णशलाकाभिर्निर्म्मित-मपि अन्तर्गतस्य मध्यवर्त्तिनः शुकस्य पक्षिणः प्रभया कान्त्या श्यामायमानं श्यामवर्णवदाचरत्, अतएव मरकतमयमिव मरकतमणिनिष्पन्नमिव पञ्जरं उद्वहता धारयता, केनचित् चाण्डालदारकेण चण्डालबाल-केन। अत्र काव्यलिङ्गोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ग) असुरेति। असुरैर्गृहीतस्य आयत्तीकृतस्य अमृतस्य पीयूषस्य अपहरणे कृतो विहितः कपट-च्छलपूर्णः पटुर्निपुणः विलासिनीवेशो मोहिनीवेशो येन तस्य भगवतो माहात्म्यवतो हरेर्नारायणस्य श्यामतया समानश्यामवर्णतया अनुकुर्वतीमिव स्थिताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। हरेरिति पूर्ववच्छेषे षष्ठी।

पुरा समुद्रमथनादुत्थितममृतमसुराः स्वीकृतवन्तः, भगवान्नारायणस्तु तदवलोक्य मोहिनीमूर्त्तिं धारयन् असुरान् वञ्चयन् देवेभ्यस्तदमृतं दत्तवानिति भागवतवार्त्ता।

(घ) सञ्चारिणीमिति। सञ्चारिणीं गमनशीलां इन्द्रनीलमणिपुत्तलिकां नीलकान्तमणि-निर्म्मित-पुत्तलिकामिव स्थिताम्। अत्र पुत्तलिकात्वजात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

ছিল এবং হাতে একখানি স্বর্ণশলাকা-নির্ম্মিত পিঞ্জর ছিল, তাহার মধ্যস্থিত শুক পক্ষীর দেহকান্তিতে সেই পিঞ্জরখানি শ্যামবর্ণের ন্যায় হওয়ায় যেন মরকতমণিনির্ম্মিত বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল।

সেই চণ্ডালকন্যা, স্বকীয় শ্যামলকান্তিদ্বারা, অসুরগণ-গৃহীত অমৃত হরণের নিমিত্ত মোহিনী-মূর্ত্তিধারী ভগবান্ নারায়ণের যেন অনুকরণ করিতেছিল; তাহাকে একটি গমনশীল নীলকান্ত-

(१)...वेषेण। (२)...धवल...। (३) कपटविलासिनी,...वेषस्य। (४)···पुत्रिकामिव
(५) गुल्फावलम्बिनील...।

गुण्ठनां नीलोत्पलस्थलीमिव निपतितसन्ध्यातपाम्, (ख) एक-कर्णामुक्त-(१) दन्तपत्र-प्रभा-धवलित-कपोल-मण्डलां उद्यदिन्दुबिम्ब-च्छुरित-(२) मुखीमिव विभावरीम्, (ग) आकपिल-गोरोचना-रचित तिलक-तृतीय-लोचनां ईशानुचरित-(३) किरात-वेशामिव भवानीम्, (घ) उरः-स्थल-निवास-संक्रान्त-नारायण-देहप्रभा-श्यामलि-

(क) आगुल्फेति। आगुल्फावलम्बिना गुल्फपर्य्यन्तपातिना नीलकञ्चुकेन नीलवर्णवारवाणेन आच्छन्नशरीरां आवृतगात्रीं, उपरि शिरसि रक्तांशुकेन रक्तवर्णवस्त्रेण विरचितं कृतं अवगुण्ठनं यया तां, अतएव निपतितः सन्ध्याकालीन आतपो रविकिरणो यस्यां तां नीलोत्पलानां कुवलयानां स्थलीं कृत्रिमां भूमिमिव। अत्रोपमालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ख) एकेति। एकस्मिन् कर्णे आमुक्तं परिहितं यत् दन्तपत्रं कर्णालङ्कारविशेषस्तस्य प्रभया धवलितं शुभ्रीकृतं कपोलमण्डलं गण्डबिम्बं यस्यास्तां, अतएव उद्यता उदयमानेन इन्दुबिम्बेन चन्द्रमण्डलेन छुरितं रञ्जितं मुखं आद्यभागो वदनञ्च यस्यास्तां तथोक्तां विभावरीं रात्रिमिव स्थिताम्। अत्रापि पूर्व्ववत् काव्यलिङ्गसङ्कीर्णोपमालङ्कारः।

(ग) आकपिलेति। आकपिलया ईषत्पिङ्गलया गोरोचनया तदाख्यद्रव्यविशेषेण रचितं कृतं तिलकं तृतीयलोचनमिव यया तां, अतएव ईशस्य महादेवस्य अनुचरिता पश्चाद्गता चासौ किरातवेशा व्याधरूपिणी चेति तां भवानीं पार्व्वतीमिव स्थितां महादेववदस्याः तृतीयचक्षुषस्यावस्थानादिति भावः। अत्राप्युपमालङ्कारः पूर्व्ववत् काव्यलिङ्गसङ्कीर्णः।

पुरा किलार्ज्जुने पाशुपतास्त्रलाभाय तपश्चरति सति वराहरूपेण तं हन्तुमिच्छया गच्छन्तं मूकदानवं निहन्तुं महादेवः किरातवेशेनागतवान् किरातवेशधारिणी पार्व्वत्यपि तं महादेवमनुगतवतीति महाभारतवार्त्ता।

(घ) उर इति। उरःस्थले वक्षसि निवासेनावस्थानेन संक्रान्ता संलग्ना या नारायणस्य देहप्रभा तया श्यामलितां श्यामवर्णीकृतां श्रियं लक्ष्मीमिव।

মণির পুত্তলিকার (পুতুলের) মত প্রতীতি হইতেছিল; আগুল্ফ-লম্বী নীলবর্ণ কঞ্চুকে (সাঁজোয়াতে) তাহার দেহ আবৃত এবং উপরিভাগে রক্তবস্ত্রের অবগুণ্ঠন ছিল, তাহাতে সন্ধ্যাকালে সূর্য্যের কিরণ পতিত হইলে নীলোৎপলময় ভূমির ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল; এক কর্ণে সংলগ্ন হস্তিদন্তনির্ম্মিত আভরণের কিরণে তাহার গণ্ডস্থল শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, সুতরাং উদয়মান চন্দ্রমণ্ডল-রঞ্জিত রাত্রির ন্যায় সে শোভা পাইতেছিল; সে পিঙ্গলবর্ণ গোরোচনা দ্বারা তৃতীয় নয়নের ন্যায় ললাটদেশে তিলক চিত্রিত করিয়াছিল, তাহাতে শিবের অনুগামিনী কিরাতবেশধারিণী ভবানীর ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল; নারায়ণের বক্ষঃস্থলে বাস করায়

(१) अवसक्त, मुक्त…। (२) उद्यदिन्दुकिरणच्छुरित…। (३) ईशान-रचनानुरचित, ईशानु-रचित, ईशानाचरितानुरचित…।

तामिव श्रियम्, (ख) कुपित-हर-हुताशन-दह्यमान-मदन-धूम-मलिनीकृतामिव रतिम्, (ग) उन्मद-हलि-हलाकर्षण-भय-पलायितामिव (१) कालिन्दीम्, (२)(घ) अतिबहल-पिण्डालक्तक-रस-राग-पल्लवित-पादपङ्कजाम्, अचिर-मृदित-महिषासुर-रुधिर-रक्त-चरणामिव कात्यायनीम्, (ङ) आलोहिताङ्गुलि-प्रभा-पाटलित-

---

अत्र श्रियः स्वकीयशरीरकान्तिपरिव्याप्तेन नारायणस्य श्यामलगुणग्रहणात् तद्गुणालङ्कार उपमा च, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ख) कुपितेति। कुपितस्य धैर्यभङ्गकरणेन क्रुद्धस्य हरस्य शिवस्य हुताशनेन तृतीयनयनवह्निना दह्यमानस्य मदनस्य कामदेवस्य धूमेन मलिनीकृतां रतिं मदनभार्यामिव स्थिताम्। अत्र तादृशधूमेन मलिनीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरुपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

पुरा किल मदनो देवगणानुरोधेन पार्वतीसमक्षं सम्मोहनास्त्रेण शिवस्य धैर्यमपनयन् तत्तृतीयनयनवह्निना दग्ध इति शिवपुराणवार्त्ता।

(ग) उन्मदेति। उन्मदस्य मदमत्तस्य हलिनो बलरामस्य हलेन लाङ्गलेन यदाकर्षणं तद्भयेन पलायितामपसृतां कालिन्दीं यमुनामिव स्थितामित्युपमा।

पुरा सुरापानमत्तो बलरामो जलक्रीडार्थं यमुनामाजुहाव, यदा तु यमुना नागता तदा हलाग्रेण तामाचकर्ष, सा च पलायिता इति श्रीमद्भागवतम्।

(घ) अतीति। अतिबहलस्य अतिप्रचुरस्य पिण्डालक्तकरसस्य घनीभूतालक्तकद्रवस्य रागेण लौहित्येन पल्लविते नवपल्लववदाचरिते पादपङ्कजे यस्यास्ताम्, अतएव अचिरमृदितस्य सद्योनिष्पिष्टस्य महिषासुरस्य रुधिरेण शोणितेन रक्तौ लोहितवर्णौ चरणौ यस्यास्तां कात्यायनीं दुर्गामिव स्थिताम्।

अत्र पल्लवितरक्तपदयोरेकार्थत्वादापाततः पुनरुक्तत्वप्रतीतेः किमाकारभेदेन गत्या च पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कार उपमा च, अनयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

पुरा भगवती दुर्गा महिषरूपिणः तस्य मुखान्निष्क्रामन्तं महिषासुरमसिना चिच्छेद, इति मार्कण्डेयपुराणम्।

তাঁহার দেহের প্রভা সংলগ্ন হওয়াতে শ্যামলতাপ্রাপ্ত লক্ষ্মীর ন্যায়, কুপিত মহাদেবের তৃতীয় নয়নাগ্নিতে দহ্যমান কামদেবের ধূমে মলিনতাপ্রাপ্ত রতির ন্যায় এবং মদমত্ত বলরামের লাঙ্গল দ্বারা আকর্ষণ-ভয়ে পলায়িত যমুনার ন্যায় সেই চণ্ডাল কন্যাকে দেখা যাইতেছিল; অতিপ্রচুর ও ঘন অলক্তকরসের লৌহিত্যে তাঁহার চরণকমল নব পল্লবের ন্যায় রক্তবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে সেই চণ্ডালকন্যা, সদ্যোনিহত মহিষাসুরের রুধিরে রঞ্জিত-চরণা দুর্গার ন্যায় দৃষ্টিগোচর হইতেছিল; ঈষৎ রক্তবর্ণ চরণাঙ্গুলীর প্রভা, তাঁহার চরণের নখসমূহকে পাটলবর্ণ করিয়াছিল,

---

(१) ...हलाकर्षणभयपलायिता। (२) यमुनाम्।

नख-मयूखां अतिकठिन-मणिकुट्टिम-स्पर्शमसहमानां क्षितितले पल्लवभङ्गानिव निधाय सञ्चरन्तीम्, (ङ) आपिञ्जरेणोत्सर्पिणा नूपुरमणीनां प्रभाजालेन रञ्जित-(१) शरीरतया पावकेनेव भगवता रूपैक (२)-पक्षपातिना प्रजापतिम-प्रमाणीकुर्वता जातिसंशोधनार्थमालिङ्गितदेहाम्, (च) अनङ्ग-वारण-शिरोनक्षत्र-मालायमानेन रोमराजि-लतालवालकेन मेखलादाम्ना परिगतजघनस्थलाम् (३)

(ङ) आलोहितेति। आलोहितानां अतिरक्तवर्णानां अङ्गुलीनां प्रभाभिः कान्तिभिः पाटलिताः श्वेत-रक्तीकृता नखमयूखा यस्यास्तां, तथा अतिकठिनस्य मणिकुट्टिमस्य मणिमयबद्धभूमेः स्पर्शं असहमानां सुकोमलचरणत्वादिति भावः, अतएव क्षितितले पल्लवभङ्गान् किसलयखण्डान् निधायेव विन्यस्य विन्यस्येव सञ्चरन्तीं व्रजन्तीं तथा सति चरणवेदना न स्यादिति भावः।

अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा च तादृशनखमयूखानामेव पल्लवखण्डतुल्यताप्रतीतिरिति सूचितम्।

(च) आपिञ्जरेणेति। आपिञ्जरेण ईषत्पिङ्गलवर्णेन उत्सर्पिणा ऊर्ध्वगामिना नूपुरमणीनां प्रभाजालेन किरणसमूहेन रञ्जितशरीरतया हेतुना रूपैकपक्षपातिना केवलसौन्दर्य्यादरकारिणा, अतएव प्रजापतिं सृष्टि-कर्त्तारं ब्रह्माणं अप्रमाणीकुर्वता "त्वमिमामीदृशसुन्दरीं विधायापि अस्पृश्यां चण्डालजातिमेव कृतवान् तदहमिमां शोधयामि" इत्यमनियतकर्त्तृताकं विदधता, विधातृविहितस्यान्यथाविधानाभिलाषित्वादिति भावः, भगवता पावकेन अग्निदेवेन जातिसंशोधनार्थं चण्डालत्वेनाशुचेस्तस्याः शुचित्वजननार्थमित्यर्थः आलिङ्गित-देहामिव स्थितां। "सर्वमग्नौ प्रतप्तं शुध्येत" इति पैठीनसिवचनादिति भावः। ऊर्द्ध्वगामी नूपुरमणीनां किरणसमूहः शरीरपरिवेष्टनादग्निवत् प्रतीयते इति सरलार्थः।

अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च वह्नेरपि कामाविष्टहेतुभूततया परमसौन्दर्य्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(छ) अनङ्गेति। अनङ्गस्य मदनस्य यो वारणो हस्ती तस्य शिरसि या नक्षत्रमाला सप्तविंशतिसंख्यक मुक्ताग्रथितमाला तद्वदाचरता मदनसम्बन्धितया मदनोद्दीपकत्वादिति भावः। "सैव नक्षत्रमाला स्यात् सप्तविंशतिमौक्तिकैः।" इत्यमरः। रोमराजिः नाभिदेशात् सरलभावेनोर्द्ध्वगामिनी या लोमश्रेणी सैव लता तस्या आलवालं मूले जलदानाय स्वल्पजलाधारः, तत्स्वरूपेण मेखलादाम्ना काञ्चीगुणेन परिगतं परिवेष्टितं जघनस्थलं नितम्बदेशो यस्यास्ताम्।

আর নিতান্ত কোমল বলিয়া অত্যন্ত কঠিন মণিময় ভূমিতে পদক্ষেপ করিতে অসমর্থ হইয়া ভূতলে যেন নূতন পল্লবসমূহ বিন্যস্ত করিয়া করিয়া তাহার উপরে সে গমন করিতেছিল; নূপুরস্থ মণিসমূহের ঈষৎপিঙ্গলবর্ণ ও ঊর্দ্ধপ্রসারী কিরণজালে তাহার সমস্ত শরীর রঞ্জিত হইয়াছিল, সুতরাং একমাত্র রূপের পক্ষপাতী ভগবান্ অগ্নিদেব, যেন বিধাতাকে অগ্রাহ্য করিয়া তাহার চণ্ডালজাতি শোধনের নিমিত্ত সমস্ত দেহ আলিঙ্গন করিতেছিলেন; মদনহস্তীর মস্তকস্থিত মুক্তামালার ন্যায় এবং লোমশ্রেণীরূপ লতার আলবালস্বরূপ কাঞ্চীদামে তাহার নিতম্বস্থল

(১) प्रभाजालकेनानुरञ्जित...। (२) रूप एव पक्षपातिना। (३) रसनादाम्ना परिगतजघना।

(ছ) অতিস্থূল-মুক্তাফল-ঘটিতেন শুচিনা হারেণ গঙ্গাস্রোতসেব কালিন্দীশঙ্কয়া প্রাপ্তকণ্ঠগ্রহাম্, (জ) শরদমিব বিকসিত-পুণ্ডরীক-লোচনাম্, (ঝ) প্রাবৃষমিব ঘনকেশজালাম্, (ঞ) মলয়মেখলামিব চন্দনপল্লবাবতংসাম্, (ট) নক্ষত্রমালামিব চিত্র-শ্রবণাভরণ-ভূষিতাম্ (ঠ) শ্রিয়মিব হস্তস্থিত-

---

অত্র রোমরাজৌ লতাত্বারোপো মেখলাদাম্নি আলবালত্বারোপে নিমিত্তমিতি পরম্পরিতরূপকমলঙ্কারঃ কঞ্চুকগতোপময়া সঙ্কীর্য্যতে।

(জ) অতীতি। অতিস্থূলৈর্মুক্তাফলৈর্মৌক্তিকৈঃ ঘটিতেন নির্ম্মিতেন শুচিনা শুভ্রবর্ণেন হারেণ, কালিন্দীশঙ্কয়া যমুনাভ্রমেণ গঙ্গাস্রোতসেব, প্রাপ্তঃ কণ্ঠগ্রহো গলাবলম্বনং সমীপাশ্রয়শ্চ যস্যাস্তাম্।

অত্র চণ্ডালকন্যায়াং সমানশ্যামতয়া যমুনাভ্রমাদ্ ভ্রান্তিমানলঙ্কারঃ, হারে গঙ্গাপ্রবাহত্বোৎপ্রেক্ষণাদুৎপ্রেক্ষা চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ঝ) শরদমিতি। বিকসিতে বিস্ফারিতে পুণ্ডরীকে শ্বেতপদ্মযুগলমিব লোচনে চক্ষুষী যস্যাস্তাম্, অন্যত্র তু বিকসিতানি প্রস্ফুটিতানি পুণ্ডরীকাণি লোচনানীব যস্যাস্তাম্।
ইতঃপ্রভৃতি যত্নাধিপলক্ষ্মীমিবালকোদ্ভাসিনীমিত্যন্তং যাবৎ পূর্ণোপমালঙ্কারঃ। শ্লেষোপমেত্যন্যে।

(ঞ) প্রাবৃষমিতি। প্রাবৃষং বর্ষাকালমিব, ঘনং নিবিড়ং কেশজালং যস্যাস্তাং, প্রাবৃট্পক্ষে তু ঘনা মেঘাঃ কেশজালমিব যস্যাং তাম্।

(ট) মলয়েতি। মলয়স্য পর্ব্বতস্য মেখলাং নিতম্বভূমিমিব চন্দনপল্লবেন চন্দনপল্লব এব চ অবতংসঃ শিরোভূষণং যস্যাস্তাম্।

(ঠ) নক্ষত্রেতি। নক্ষত্রমালামিব তারকাশ্রেণীমিব চিত্রৈর্নানাবিধৈঃ শ্রবণাভরণৈঃ কর্ণালঙ্কারৈঃ ভূষিতামলঙ্কৃতাম্, পক্ষে চিত্রা-শ্রবণা-ভরণীনামকৈর্নক্ষত্রবিশেষৈর্ভূষিতাম্। শ্লেষাদৌ লিঙ্গব্যত্যয়েন যোজনা প্রাক্তনৈরপ্যঙ্গীকৃতা।

(ড) শ্রিয়মিতি। শ্রিয়ং লক্ষ্মীমিব হস্তে করতলে স্থিতেন কমলেন পদ্মচিহ্নেন পদ্মেন চ শোভা যস্যাস্তাম্।

পরিবেষ্টিত ছিল; বৃহৎ বৃহৎ মুক্তানির্ম্মিত শুভ্রবর্ণ একছড়া হার তাহার কণ্ঠদেশে লম্বিত ছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যেন, যমুনাভ্রমে গঙ্গাস্রোত আসিয়া উহার কণ্ঠাবলম্বন করিয়াছে; শরৎকালে যেমন তাহার নয়নের ন্যায় শ্বেতপদ্ম বিকসিত হয়, চণ্ডালকন্যারও তেমন শ্বেতপদ্মের ন্যায় নয়নযুগল বিস্ফারিত ছিল; বর্ষাকালে যেরূপ উপরিভাগে কেশকলাপের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ মেঘমালা উদিত হয়, চণ্ডালকন্যারও সেইরূপ মস্তকে নিবিড় কেশকলাপ ছিল; মলয়পর্ব্বতের মধ্যস্থানের যেমন চন্দনপল্লবই শিরোভূষণ, সেই চণ্ডালদারিকারও তেমন চন্দনপল্লবদ্বারা মস্তক-ভূষণ নির্ম্মিত হইয়াছিল; চিত্রা, শ্রবণা ও ভরণী নক্ষত্রে নক্ষত্রশ্রেণী যেরূপ অলঙ্কৃত হয়, চণ্ডালকন্যাও সেইরূপ বিচিত্র কর্ণালঙ্কারে অলঙ্কৃত ছিল; করতলে পদ্ম থাকায় লক্ষ্মীদেবী যেমন শোভা পাইয়া থাকেন, পাণিতলে পদ্মচিহ্ন থাকায় চণ্ডালনন্দিনীও তেমন শোভা পাইতে-

कमलशोभाम्, (ड) मूर्च्छामिव मनोहारिणीम् (१) (ढ) अरण्यभूमिमिव अक्षत-(२) रूपसम्पन्नाम्, (ण) दिव्ययोषितमिवाकुलीनाम् (त) निद्रामिव लोचनग्राहिणीम्, (थ) अरण्यकमलिनीमिव मातङ्गकुलदूषिताम्, (द) अमूर्त्तामिव स्पर्शवर्जिताम्, (ध) आलेख्यगतामिव दर्शनमात्रफलाम्, (न)

(ढ) मूर्च्छामिति। मूर्च्छां मोहमिव, मनोहारिणीं परमसुन्दरत्वात् चित्ताकर्षिणीं, पक्षे चैतन्यलोपकरणात् मनोवृत्तिनाशिनीम्।

(ण) अरण्येति। अरण्यभूमिं वनभुवमिव, अक्षतेन कन्यात्वात् केनाप्यसम्भुक्तेन रूपेण सौन्दर्य्येण सम्पन्नां युक्तां, अन्यत्र तु अक्षतरुभिर्विभीतकवृक्षैः उपसम्पन्नां युक्ताम्। "अक्षो विभीतको वृक्ष" इत्याद्यनेकार्थध्वनिमञ्जरी।

(त) दिव्येति। दिव्या स्वर्गीया या योषित् स्त्री तामिव, अकुलीनां चण्डालत्वादनुच्चकुलजातां, पक्षे कौ पृथिव्यां लीना स्थितेति कुलीना सा न भवतीत्यकुलीना तां, भूतलास्पर्शकारिणीमित्यर्थः। देवयोषितो हि भूतलं न स्पृशन्तीति पुराणप्रवादः।

(थ) निद्रामिति। निद्रामिव, लोचनग्राहिणीं परमसौन्दर्य्यात् कामिनां नयनाकर्षिणीं, अन्यत्र मुद्रणसम्पादनेन नयनवृत्तिरोधिनीम्।

(द) अरण्येति। अरण्यकमलिनीमिव वन्यपद्मिनीमिव, मातङ्गकुलेन चण्डालवंशेन सहोत्पत्तिकतयेत्यर्थः दूषितां निन्दितां, अन्यत्र मातङ्गकुलेन हस्तियूथेन दूषितां विमर्द्दिताम्। "मातङ्गः श्वपचे गजे" इति मेदिनी।

(ध) अमूर्त्तामिति। अमूर्त्तां मूर्त्तिरहितां बुद्धिमिव, स्पर्शवर्जितां देहसंयोगरहिताम् "दिवाकीर्त्तिमुदक्याञ्च पतितं सूतिकां तथा। शवं तत्स्पृष्टिनञ्चैव स्पृष्ट्वा स्नानेन शुध्यति।" इति मनुना चण्डालस्पर्शे स्नानविधानादिति भावः। अन्यत्र तु स्पर्शो वैशेषिकोक्तत्वगिन्द्रियग्राह्यो गुणविशेषस्तेन वर्जितां रहितां तन्मते बुद्धेरपि गुणत्वेन "गुणादिर्निर्गुणक्रिय" इति भाषापरिच्छेदादिति भावः।

(न) आलेख्येति। आलेख्यगतां चित्रस्थितां पुत्तलिकामिव, दर्शनमात्रं केवलावलोकनमेव न तु सम्भोगादिकं फलं यस्यास्ताम्, एकत्र चण्डालत्वेन तत्सम्भोगादिनिषेधात्, अन्यत्र तु मूर्त्त्यभावेन तत्सम्भोगाद्यसम्भवादिति भावः।

ছিল; আর সে মূর্চ্ছার ন্যায় মনোহারিণী ছিল; বনভূমিতে যেমন বিভীতকবৃক্ষ (বহেড়া গাছ) থাকে, তাহাতেও তেমন অক্ষত রূপসম্পৎ ছিল; স্বর্গবাসিনী রমণীর যেমন ভূতল স্পর্শ হয় না, চণ্ডালকুমারীরও তেমন সৎকুলে উৎপত্তি হয় নাই; নিদ্রা যেরূপ নয়নের বৃত্তি রোধ করে, সেও সেইরূপ নয়ন আকর্ষণ করিতেছিল; বনজাত পদ্মিনী যেমন হস্তিযূথের মর্দ্দনে দূষিত হয়, সেও তেমন চণ্ডালবংশে জন্মগ্রহণ করায় দূষিত ছিল; মূর্ত্তিহীন বুদ্ধির ন্যায় তাহার স্পর্শের সম্ভব ছিল না; চিত্রিত পুত্তলিকার ন্যায় তাহারও দর্শনমাত্রই ফল ছিল; চৈত্রমাসজাত

---

(१) मनोहराम्। (२) क्वचित् 'अक्षत'शब्दो नास्ति।

मधुमास-कुसुम-समृद्धिमिव अजातिम् (१) (प) अनङ्ग-कुसुम-चापलेखामिव मुष्टिग्राह्यमध्याम्, (फ) यक्षाधिपलक्ष्मीमिवालकोद्भासिनीम्, (ब) अचिरोपरूढ़-(२) यौवनाम्, अतिशयरूपाकृतिम्, अनिमिष-(३) लोचनो ददर्श। (भ)

दृष्ट्वा च तां (४) समुपजात-(५) विस्मयस्याभून्मनसि महीपतेः—'अहो! विधातुरस्थाने रूप (६)-निष्पादनप्रयत्नः। तथाहि, यदि नामेयमात्मरूपोप-

(प) मध्विति। मधुमासस्य चैत्रमासस्य कुसुमसमृद्धिं पुष्पसम्पदमिव, अजातिं मन्वादिपरिगणित-ब्राह्मणत्वादि-जातिरहिताम्, अन्यत्र जातीकुसुमरहिताम्, "ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः। चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पञ्चमः।" इति मनुना चण्डालादीनां जातिहीनत्वोक्तेः "न स्याज्जाती वसन्ते···" इतिसाहित्यदर्पणे कविसमयप्रसिद्धेश्चेति भावः।

(फ) अनङ्गेति। अनङ्गस्य मदनस्य कुसुमचापलेखां पुष्पधनुर्लतामिव, मुष्टिना ग्राह्यो ग्रहीतुं शक्यो मध्यः कटिदेशो मध्यभागश्च यस्यास्ताम्। एतेन कटिदेशस्य नितान्तकृशत्वमतिकोमलत्वञ्च व्यज्यते।

(ब) यक्षेति। यक्षाधिपस्य कुवेरस्य लक्ष्मीं सम्पदमिव, अलकैश्चूर्णकुन्तलैः उद्भासते शोभते, अलकायां तदाख्यायां नगर्याञ्च उद्भासते या ताम्।

(भ) अचिरेति। अचिरं उपरूढं जातं यौवनं यस्यास्ताम्। अतिशयेन वाहुल्येन रूपं सौन्दर्यं यस्याः सा तादृशी आकृतिर्यस्यास्ताम्।

अहो परमचमत्कारिण्यपि वर्णनीयमनुपयोगितया खल्वियं चण्डालकन्यकेव विरक्तिमावहतीति रसिकैरालोचनीयम्।

(म) दृष्ट्वेति। मनसि उक्तिरभूदित्यर्थः। तामेव मनोवृत्तिमाह अहो इति। अस्थाने अपात्रे। आत्मरूपेण स्वकीयसौन्दर्येण उपहसिता तिरस्कृता अशेषा समस्ता रूपसम्पत् सौन्दर्यसमृद्धिर्यया सा तथोक्ता, इयं कन्या। अपगते दूरीभूते स्पर्शसम्भोगसुखे यस्मात् तादृशे कुले चण्डालवंशे जन्म कृतं

কুসুম-সমূহের মধ্যে যেমন জাতীকুসুম থাকে না, তাহাতেও তেমন কোন জাতি ছিল না; কামদেবের পুষ্পময় ধনুর ন্যায় তাহারও মধ্যদেশ মুষ্টিতে গ্রহণ করা যাইত; কুবেরের সম্পত্তি যেমন অলকানগরীতে শোভিত, সেও তেমন কুন্তলকলাপে শোভিত ছিল; এবং সে নবযুবতী ও পরমরূপবতী ছিল। (প—ভ)

(ম) তাহাকে দেখিয়া রাজার বিস্ময় জন্মিল, এবং তিনি মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন; —'কি আশ্চর্য্য! বিধাতা অপাত্রে সৌন্দর্য্য নির্ম্মাণের যত্ন করিয়াছেন; কারণ, ইহার রূপের

(१) विजातिम्। (२) उपारूढ़···। (३) अनिमेष···।

(४) 'दृष्ट्वा च तां' इति पाठः क्वचिन्नास्ति।

(५) जात···। (६) सौन्दर्य्य···।

हसिताशेषरूपसम्पदुत्पादिता, किमर्थमपगत-स्पर्श-सम्भोग-सुखे कृतं कुले जन्म (१)। (म)

मन्ये च 'मातङ्ग-जाति-स्पर्शदोष-भयादस्पृशतेयमुत्पादिता (२) प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य। नहि (३) करतल-स्पर्श-क्लेशितानामवयवानामीदृशी भवति कान्तिः। (य)

सर्वथा धिग्विधातारं (४) असदृशसंयोगकारिणम्। अतिमनोहराकृति-(५) रपि क्रूरजातितया (६) येनेयमसुरश्रीरिव सतत-निन्दित-सुरता रमणीयाऽप्युद्वेजयति' इति। (र)

अस्या उत्पत्तिर्विहिता। तथा च यथा परमरूपसम्पद्विहिता तथा उच्चवंशे जन्मविधानमप्युचितमासीदिति भावः।

(य) मन्य इति। अस्पृशता अस्या देहस्पर्शमकुर्वता प्रजापतिना विधात्रा, इयं चण्डालकन्या, उत्पादिता मरीच्यादिदेवर्षिवत् केवलमनःसङ्कल्पेन निर्म्मिता, इत्यहं मन्य इत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः मन्य इति च तद्वाचकम्। अन्यथा स्पर्शे, इयमीदृशी, लावण्यस्य सौन्दर्य्यस्य, अक्लिष्टता अम्लानता कथं स्यात् कथमपि नेत्यर्थः। तदेव प्रतिपादयति नहीति। कान्तिः कमनीयता नहि भवति, आमृन्मय-पात्रादाविव क्षुण्णता स्यादिति भावः।

(र) सर्व्वथेति। असदृशयोस्त्वरभिन्नाधिकरणत्वेन परस्परविरुद्धयोश्चण्डालत्व-परमसौन्दर्य्ययोः संयोगं एकत्र समावेशं कर्त्तुं शीलं यस्य तं विधातारं अस्याः सृष्टिकर्त्तारं धिक् निन्दामि। येन असदृशसंयोगकरणेन हेतुना। असुरश्रीरिव दैत्यलक्ष्मीरिव, सततं निन्दितं शास्त्रकृद्भिर्विगर्हितं सुरतं आर्य्याणां रमणं यस्यां सा, असुरश्रीपक्षे तु सततं निन्दिता तिरस्कृता सुरता सुरसमूहो देवगणो यया सा। इयं चण्डालदारिका, रमणीया कोमलापि क्रूरजातितया नृशंसचण्डालजातित्वेन उद्वेजयति वैचित्र्यं जनयति। इति मद्भीपतेर्मनस्यभूदित्यन्वयः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

নিকট জগতের সমস্ত রূপসম্পদ্ তিরস্কৃত হইতেছে, সুতরাং বিধাতা যদি ইহাকে এইরূপ করিয়াই সৃষ্টি করিলেন, তবে স্পর্শ ও সম্ভোগ-সুখবর্জ্জিত চণ্ডালবংশে সৃষ্টি করিলেন কেন ?।

(য) আমি মনে করি—'বিধাতা চণ্ডালজাতির স্পর্শদোষের ভয়ে স্পর্শ না করিয়াই ইহাকে সৃষ্টি করিয়াছেন ; না হইলে ইহার লাবণ্যের এইরূপ অক্ষুণ্ণতা থাকিবে কেন ? কারণ, করস্পর্শ-পীড়িত অঙ্গসমূহের এই জাতীয় কমনীয়তা হয় না।

(র) আর, চণ্ডালজাতি ও পরমসৌন্দর্য্য—এই বিসদৃশ পদার্থদ্বয়ের একত্র সমাবেশকারী বিধাতাকে আমি সর্ব্বপ্রকারে নিন্দা করি ; যেহেতু, সর্ব্বদা দেবগণের নিন্দাকারিণী অসুরলক্ষ্মীর ন্যায় এই চণ্ডালকন্যা পরমসুন্দরী ও নিতান্ত কোমলাঙ্গী হইলেও চণ্ডালজাতি বলিয়া এবং ইহার সম্ভোগ সর্ব্বদা বিগর্হিত বলিয়া উদ্বেগ জন্মাইতেছে।

---

(१) अस्या जन्म। (२) मनसोत्पादिता। (३) तथाहि। (४) धिग् धिग्विधातारं। (५) मनोहरा।...
(६) क्रूरजातिका।

এবমাদি চিন্তয়ন্তমেব রাজানমীষদবগলিত-কর্ণপল্লবাবতংসা প্রগল্ভবনিতেব কন্যকা প্রণনাম। (ল)

কৃতপ্রণামায়াঞ্চ তস্যাং মণিকুট্টিমোপবিষ্টায়াং, স পুরুষস্তং বিহঙ্গমমাদায়(১) পঞ্জরগতমেব কিঞ্চিদুপসৃত্য রাজ্ঞে ন্যবেদয়দব্রবীচ্চ—(ব)

—"দেব! বিদিতসকলশাস্ত্রার্থঃ, রাজনীতিপ্রয়োগকুশলঃ, পুরাণেতিহাস-কথালাপনিপুণঃ, বেদিতা গীতশ্রুতীনাং, কাব্য-নাটকাখ্যানক (২)-প্রভৃতীনাম-পরিমিতানাং সুভাষিতানামধ্যেতা স্বয়ঞ্চ কর্ত্তা, পরিহাসালাপপেশলঃ, বীণা-বেণু-মুরজপ্রভৃতীনাং বাদ্যবিশেষাণামসমঃ শ্রোতা, নৃত্যপ্রয়োগদর্শননিপুণঃ, চিত্র-

---

"চাণ্ডালান্ত্যস্ত্রিয়ো গত্বা ভুক্ত্বা চ প্রতিগৃহ্য চ। পতত্যজ্ঞানতো বিপ্রো জ্ঞানাৎ সাম্যন্তু গচ্ছতি।" ইতি মনুবচনাৎ চণ্ডালীগমনং নিতান্তনিন্দিতমিতি বোধ্যম্।

(ল) এবমিতি। ঈষদল্পং অবগলিতৌ অধোলম্বিতৌ কর্ণয়োঃ পল্লবাবতংসৌ কিসলয়ালঙ্কারৌ যস্যাঃ সা, কন্যকা চণ্ডালকুমারী প্রগল্ভবনিতেব ধৃষ্টা নারীব তাদৃশসভায়ামপি লজ্জাসঙ্কোচাভাবাদিতি ভাবঃ। এবমাদি পূর্ব্বোক্তপ্রকারাদিকম্ চিন্তয়ন্তমেব রাজানং প্রণনাম।

(ব) কৃতেতি। তস্যাং চণ্ডালদারিকায়াং। সঃ অগ্রগামী বৃদ্ধঃ পুরুষঃ। পঞ্জরগতমেব তং বিহঙ্গমং শুকং। ন্যবেদয়দুপহৃতবান্।

(শ) দেবেতি। দেব! দেবতাসমানপ্রভাব! রাজন্! বিদিতসকলশাস্ত্রার্থ ইত্যাদীনি প্রথমান্তানি শুকস্য বিশেষণানি। পুরাণেতিহাসকথানামালাপেষু সম্যগ্ভাষণেষু নিপুণো দক্ষঃ। গীতং গানং শ্রুতয়ঃ স্বরারম্ভকাবয়বীভূতাঃ শব্দবিশেষা দ্বাবিংশতিপ্রকারাঃ, তাসাং বেদিতা জ্ঞাতা। তথা চ সঙ্গীতদামোদরে "নান্দী চালনিকা রসা চ সুমুখী চিত্রা বিচিত্রা ঘনা মাতঙ্গী সরসামৃতা মধুকরী মৈত্রী শিবা মাধবী। বালা শার্ঙ্গরবী কলা কলরবা মালা বিশালা জয়া মাত্রেতি শ্রুতয়ঃ পুরাণকবিভির্দ্বাবিংশতিঃ কীর্ত্তিতাঃ॥"

(ল) রাজা এই জাতীয় নানাপ্রকার চিন্তা করিতে লাগিলে নির্লজ্জ রমণীর ন্যায় চণ্ডালকন্যা আসিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিল, তখন তাহার কাণের পল্লব দু'টি নীচের দিকে কিছু ঝুলিয়া পড়িয়াছিল।

(ব) সে প্রণাম করিয়া মণিময় ভূমিতে উপবেশন করিলে, সেই প্রাচীন পুরুষ পঞ্জরস্থিত সেই শুকপক্ষীটিকে নিয়া কিছু অগ্রসর হইয়া রাজাকে উপহার দিল এবং বলিল—

(শ) "মহারাজ! এই শুকপক্ষীটি সমগ্র পৃথিবীর মধ্যে রত্নস্বরূপ; ইহার নাম বৈশম্পায়ন। এই শুক সমস্ত শাস্ত্রের প্রতিপাদ্য বিষয় অবগত আছে; রাজনীতি-প্রয়োগে দক্ষ, পুরাণ ও ইতিহাসের কথা বলিতে নিপুণ, গান ও শ্রুতি (শোরৎ) জানে, কাব্য, নাটক ও আখ্যায়িকা প্রভৃতি অপরিমিত মধুরভাষা পাঠ করিয়াছে, নিজেও সেই কাব্য প্রভৃতি রচনা

---

(১) বিহঙ্গমমাদায়, বিহঙ্গমং শুকমাদায়। (২)...নাটকাখ্যায়িকাখ্যানক...।

कर्म्मणि प्रवीणः, द्यूतव्यापारे प्रगल्भः, प्रणयकलह-कुपित-कामिनी-प्रसादनोपाय-चतुरः, गज-तुरग-पुरुष-स्त्री-लक्षणाभिज्ञः, सकलभूतल-रत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः। सर्व्वरत्नानाञ्च (१) उदधिरिव देवो भाजनमिति कृत्वैनमादायास्मत्-स्वामिदुहिता देवपादमूलमायाता ; तदयमात्मीयः (२) क्रियता''मित्युक्त्वा नरपतेः पुरो निधाय पञ्जरमसावपससार। (ग)

अपसृते च तस्मिन् स विहङ्गराजो (३) राजाभिमुखो भूत्वा समुन्नमय्य (४) दक्षिणं चरणमतिस्पष्ट-वर्ण-स्वर-संस्कारया (५) गिरा कृतजयशब्दो राजानमुद्दिश्यार्य्यामिमां पपाठ—(घ)

अपरिमितानामसंख्यानां सुभाषितानां मधुरवाक्यानां, अध्येता पठिता, कर्त्ता रचयिता। परिहासालापेषु पेशलो निपुणः। असमः निरुपमः अद्वितीयः, श्रोता श्रवणेन तारतम्य-गुण-दोषाणां निर्वाचक इत्यर्थः। नृत्यप्रयोगस्य दर्शने निपुणो दक्षः दर्शनेनोत्कर्षापकर्षविवेचकः। चित्रकर्म्मणि आलेख्यकार्य्ये प्रवीणः अभिज्ञः। प्रगल्भश्चतुरः। प्रणयकलहेः प्रेमविषयकविवादैः कुपितानां कामिनीनां प्रसादनोपायेषु सान्त्वनाहेतुभूतव्यापारेषु चतुरो निपुणः। उदधिः समुद्र इव देवो भवान् 'भाजनं' पात्रमाधारः, इति कृत्वा एतन्मनसि विचिन्त्य, अस्माकं स्वामिनो वक्ष्यमाणस्य भर्त्तुः दुहिता एषा कन्या, एनं शुकमादाय देवपादमूलं भवच्चरणसमीपं। तत्तस्मात् अयं शुकः आत्मीयो ग्रहणेन स्वस्वत्वास्पदीभूतः।

(घ) अपेति। तस्मिन् पुरुषे। समुन्नमय्य उत्तोल्य। प्राक्तन-ब्राह्मणपुण्डरीकजन्मीयसंस्कारानुवृत्तेः शुकस्यापि जयशब्दोच्चारणे दक्षिणचरणोत्तोलनं ब्राह्मणानामाशीर्वादादौ तथाचारादिति बोध्यम्। पक्षिणान्तु एकस्यैवाङ्गस्य करचरणोभयरूपत्वाच्चरणशब्दोक्तिश्च सङ्गच्छते। भानुचन्द्रस्तु ''शुकादीनां शब्दोच्चारणे तादृशी-

---

করিতে পারে, পরিহাসবাক্যে চতুর ; বীণা, বংশী ও মৃদঙ্গ প্রভৃতি বাদ্যবিশেষ শুনিয়া তাহার গুণ, দোষ ও তারতম্য নির্বাচন করিতে অদ্বিতীয় ; নৃত্য দর্শন করিয়া তাহার ভাল মন্দ বলিতে পারে ; চিত্র করিতে সুনিপুণ ; দ্যূতক্রীড়ায় সুচতুর ; প্রণয়বিবাদে কুপিত রমণীর সান্ত্বনার উপায় বেশ জানে এবং হস্তী, অশ্ব, পুরুষ ও স্ত্রীজাতির সমস্ত লক্ষণে অভিজ্ঞ। সমুদ্রের ন্যায় আপনিও সকল রত্নের আশ্রয়, এইরূপ মনে করিয়া আমাদের প্রভুকন্যা ইহাকে নিয়া আপনার চরণ-সমীপে আসিয়াছেন, সুতরাং আপনি ইহাকে গ্রহণ করুন।" এই কথা বলিয়া সেই প্রাচীন পুরুষ পিঞ্জরখানি রাজার সম্মুখে রাখিয়া সরিয়া গেল।

(ঘ) সে সরিয়া গেলে সেই পক্ষিশ্রেষ্ঠ শুক, রাজার অভিমুখ হইয়া দক্ষিণ চরণ উত্তোলন-পূর্ব্বক সুস্পষ্ট বর্ণ ও স্বরসংযুক্ত এবং ব্যাকরণ-শুদ্ধ ভাষাতে জয়শব্দ উচ্চারণ করিয়া রাজার উদ্দেশে এই আর্য্যাটি পাঠ করিল—

---

(१) सर्व्वरत्नानामुदधिरिव। (२) आत्मायत्तः। (३) तस्मिन् विहङ्गमराजः। (४) उन्नमय्य। (५)...वर्णसंस्कारया।

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्त्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥" (स)

राजा तु तां श्रुत्वा (१) सञ्जात-(२) विस्मयः स्वर्णमासनवर्त्तिनं अतिमहार्घ-हेमासनोपविष्टं (३) अमरगुरुमिवाशेषनीतिशास्त्रपारगं अतिवयस-(४) मग्रजन्मानमखिल मन्त्रिमण्डलप्रधान-(५) ममात्यं कुमारपालितनामानमब्रवीत्। (ह)

ऽयं जातिस्वभाव" इत्युक्तवान्। अतिस्पष्टा सुव्यक्ताः, वर्णा अक्षराणि, स्वर उदात्तादिः, संस्कारो व्याकरणशुद्धिश्च यस्यां तया, गिरा वाचा। आर्य्याम् आर्य्यानामकच्छन्दोबद्धं वाक्यम्।

(स) स्तनेति। अश्रुभिर्नेत्रजलैः स्नातं विहितस्नानं, हृदये पतिविनाशजनितः शोक एव अग्निः सन्तापकत्वात् तस्य समीपतरवर्त्ति नितान्तनिकटस्थायि तथा विमुक्तः परित्यक्त आहारो भोजनं येन तत् नियतोपवासीत्यर्थः, अथ च विगतो वैधव्यात् दूरं गतो मुक्ताहारो मौक्तिकमाला यस्मात् तत्, भवतो रिपुस्त्रीणां वैरिवनितानां स्तनयुगं कुचयुगलं कर्त्तृ, व्रतं चरतीव कमपि शास्त्रविहितं नियममनुतिष्ठतीव। अन्योऽपि व्रती विसन्ध्यं स्नाति, होमाग्नेरतिसन्निधाने तिष्ठति, यथाविधानमुपवासञ्च करोति।

अत्र हृदयशोकाग्नेरिति निरङ्गं केवलरूपकं, वाच्या भावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, किञ्च विमुक्ताहारमिति सभङ्गश्लेषश्चेति समुदाये संसृष्टिः।

"व्रतं शास्त्रविहितो नियम" इति दुर्गः। "सङ्कल्पविषयो व्रत" मिति स्मार्त्तः।

इयमार्य्या जातिः। यथा श्रुतबोधे—

"यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्य्या॥"

(ह) राजेति। अतिमहार्घं अतिमहामूल्यं तत् हेमासनं सुवर्णपीठं तत्रोपविष्टं आसीनं। अमरगुरुमिव बृहस्पतिमिव। अत्रोपमालङ्कारः। अतिरिक्तं वयो यस्य तं अतिवयसं वृद्धं अग्रजन्मानं ब्राह्मणं।

(স) "আপনার শত্রুস্ত্রীদিগের স্তনযুগল নয়নজলে স্নান করিয়া, হৃদয়স্থিত শোকাগ্নির অত্যন্ত নিকটে থাকিয়া এবং আহার (পক্ষান্তরে মুক্তার মালা) পরিত্যাগ করিয়া যেন কোন ব্রত আচরণ করিতেছে।"

(হ) সেই আর্য্যাটি শুনিয়া রাজার বিস্ময় জন্মিল এবং তিনি নিকটবর্ত্তী, অতিমহামূল্য সুবর্ণময় আসনে উপবিষ্ট, বৃহস্পতির ন্যায় সমস্ত নীতিশাস্ত্র-পারদর্শী, বৃদ্ধ, ব্রাহ্মণ ও সকল মন্ত্রিগণের মধ্যে প্রধান কুমারপালিতনামক মন্ত্রীকে বলিলেন—

---

(१) तामार्य्यां श्रुत्वा। (२) जात…। (३) महार्हासनोपविष्टं, अतिमहार्हहेमासनोपविष्टं।
(४) अतिपरिणतवयसम्। (५) अखिलमन्त्रिमण्डली प्रधानं।

"श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता ? । प्रथमं तावदिदमेव महद्-(१) दाश्चर्य्यम्, यदयमसङ्कीर्णवर्ण-प्रविभागामभिव्यक्त-मात्रानुस्वार-स्वर-संस्कारयोगां विशेष-युक्तां (२) अतिपरिस्फुटाक्षरां (३) गिर-मुदीरयति । तत्र पुनरपरम् (४) अभिमतविषये तिरश्चोऽपि मनुजस्येव संस्कार-वतो (५) बुद्धिपूर्वा प्रवृत्तिः । तथाहि, अनेन समुत्क्षिप्तदक्षिणचरणेनोच्चार्य्य जयशब्दमियमार्य्या मामुद्दिश्य परिस्फुटाक्षरं (६) गीता । प्रायेण हि पक्षिणः पशवश्च भयाहार-मैथुन-निद्रा-संज्ञामात्र-(७) वेदिनो भवन्ति । इदन्तु महच्चित्रम् ।" (च)

(च) श्रुतेति । श्रुतेति काकुः श्रुता किमित्यर्थः । विहङ्गमस्य पक्षिणः । अयं शुकः, असङ्कीर्णः परस्परवैलक्षण्येन श्रूयमाणः, वर्णानामक्षराणां प्रविभागः पार्थक्यं यस्यां ताम् । अभिव्यक्ताः स्पष्टं प्रतीयमानाः, मात्रा ह्रस्व दीर्घप्लुतरूपाः, अनुस्वारः प्रसिद्धः, स्वरः कण्ठध्वनिः, संस्कारो व्याकरणशुद्धिश्च एतेषां योगः सम्बन्धो यस्यां तां । विशेषेण साधारणतः केनचिदतिरिक्तेन वस्तुना श्लेषालङ्कारेणेत्यर्थः युक्तां सम्पन्नां, अतिपरिस्फुटाक्षरां नितान्तविस्पष्टवर्णां गिरं वाक्यं उदीरयति उच्चारयति । अत्र असङ्कीर्णवर्णप्रविभागामित्यनेन तालव्यशकार-दन्त्य-सकारादीनां उच्चारणवैषम्यमभिहितं, अतिपरिस्फुटाक्षरामित्यनेन तु सर्वविधवर्णानामेव स्पष्टोच्चारणं प्रतिपादितमिति न पुनरुक्ततादोषः । तत्रोच्चारणविषये अपरं अन्यदाश्चर्य्यमित्यर्थः । किन्तदित्याह अभीति । अभिमतविषये अभिप्रेतविषये तिरश्चोऽपि तिर्य्यग्जातेः पक्षिणोऽपि मनुजस्येव मनुष्यस्येव, संस्कारवती तत्तद्विषयानुभवजनितो भावनाख्यः संस्कारः तद्वती, बुद्धिपूर्वा बुद्धिप्रयुक्ता विवेचनपूर्विकेत्यर्थः प्रवृत्तिः कथनारम्भः । ननु भवता कथमित्थं ज्ञायत इत्याह तथाहीति । अनेन शुकेन । परिस्फुटाक्षरं यथा स्यात्तथा गीता उच्चारिता । तथा च आशीर्वादकाले ब्राह्मणानां दक्षिणहस्तोत्तोलनदर्शनात्तस्य भावनाख्य-संस्कारवशादनेनापि जयशब्दोच्चारणसमये दक्षिणचरणमुत्तोलितं, तथा 'राज्ञः स्तुतिवाद एव प्रथमः कार्य्य' इति बुद्धिप्रयुक्ता च सेयमार्य्या समुच्चारितेति महदाश्चर्य्यमेवेति भावः । भयं भीतिः आहारो भोजनं, मैथुनं स्त्रीसंसर्गः, निद्रा, प्रमीला, संज्ञा प्रवेशनिर्गमादौ सङ्केतः, नाम वा एतन्मात्रवेदिनः, केवलैतदवगन्तारः । इदन्तु तद्विलक्षणवेदित्वं महच्चित्रं अतीवाश्चर्य्यम् ।

(क) "আপনারা এই শুকপক্ষীর স্পষ্টরূপে বর্ণোচ্চারণ ও স্বরের মাধুর্য্য শুনিলেন কি ? প্রথমে ইহাই মহাশ্চর্য্য যে, এই পক্ষী সুস্পষ্ট অক্ষরে বাক্য উচ্চারণ করিয়াছে, তাহাতে তালব্য শকার ও দন্ত্য সকারপ্রভৃতি বিজাতীয় বর্ণের উচ্চারণ-বৈষম্য হইয়াছে এবং হ্রস্ব, দীর্ঘ ও প্লুতের বৈষম্য, অনুস্বার, স্বর ও ব্যাকরণশুদ্ধি সুস্পষ্ট লক্ষিত হইয়াছে। তাহাতে অপর আশ্চর্য্য এই যে, মনুষ্যের ন্যায় তির্য্যগ্‌জাতীয় পক্ষীরও অভিলষিত বিষয়ে মনের সংস্কার ও বিবেচনাপূর্ব্বক বলিতে আরম্ভ করা ; তাহার প্রমাণ, এই পক্ষী,

(१) महत्तरमाश्चर्य्यं, महाश्चर्य्यं । (२)...स्वरसंयोगविशेषयुक्तां, स्वरसंयोगां । (३) एष पाठः क्वचिन्नास्ति ।
(४) पुनर्यदियं । (५) संस्कारवतः । (६) परिस्फुटाक्षरां । (७)...निद्रामात्र... ।

ইত্যুক্তবতি ভূভুজি কুমারপালিতঃ কিঞ্চিৎস্মিতবদনো নৃপমবাদীৎ— "দেব! কিমত্র চিত্রম্ (১)। এতে হি শুকশারিকাপ্রভৃতয়ো বিহঙ্গ-(২) বিশেষা যথাশ্রুতাং (৩) বাচমুচ্চারয়ন্তীত্যধিগতমেব দেবেন। তত্রাপ্যন্যজন্মোপাত্ত-(৪) সংস্কারানুবন্ধেন বা পুরুষপ্রযত্নেন বা সংস্কারাতিশয় উপজায়ত ইতি নাতিচিত্রম্। অন্যচ্চ, (৫) এতেষামপি পুরা পুরুষাণামিবাতিপরিস্ফুটাক্ষরা (৬) বাগাসীৎ, অগ্নিশাপাত্ত্বস্ফুটালাপতা (৭) শুকানামুপজাতা, করিণাঞ্চ (৮) জিহ্বাপরিবৃত্তিঃ।" (ক)

(ক) ইতীতি। ভূভুজি রাজনি। কিঞ্চিদীষৎ স্মিতং হাস্যং যত্র তাদৃশং বদনং মুখং যস্য সঃ। অধিগতমেব জ্ঞাতমেব। অন্যজন্মনি পূর্বজন্মনি উপাত্তস্য গৃহীতস্য প্রাপ্তস্য সংস্কারস্য ভাবনাখ্যস্য অনুবন্ধেন ইহ জন্মনি অনুবৃত্ত্যা। পুরুষাণাং পরিপালকজনানাং প্রযত্নেন পাঠনাদিনা উদ্যোগেন সংস্কারাতিশয়ঃ শুকশারীপ্রভৃতীনাং ভাবনাখ্যসংস্কারাতিরিক্তঃ, উপজায়তে উৎপদ্যতে, ইতি হেতোঃ, নাতিচিত্রং অস্যৈতাদৃগুচ্চারণং ন অত্যাশ্চর্য্যং। অস্যাপি পূর্বজন্মোপাত্তসংস্কারানুবৃত্তিসম্ভবাৎ এতেষামুদ্যোগেন তাদৃশশিক্ষালাভসম্ভবাচ্চেতি ভাবঃ। অন্যচ্চ নাতিচিত্রত্বে কারণান্তরঞ্চ, এতেষামপি শুকাদীনাং। অতিপরিস্ফুটানি নিতান্ত-স্পষ্টানি অক্ষরাণি বর্ণা যস্যাং সা তাদৃশী বাক্ বাক্যং, তু কিন্তু। অস্ফুটালাপতা অস্পষ্টবাক্যতা। করিণাং হস্তিনাঞ্চ জিহ্বায়া রসনায়াঃ পরিবৃত্তিঃ বিপরীতভাবেনাবস্থিতিঃ উপজাতেত্যন্বয়ঃ। সুতরামস্য ভাগ্যবশাত্তচ্ছাপবিষয়তাতিক্রমেণ পরিস্ফুটালাপতা সম্ভবত্যেবেতি নাতিচিত্রমিতি ভাবঃ।

পুরা তারকাসুরপীড়িতা দেবা ব্রহ্মাণং শরণং গতাঃ। ব্রহ্মা তু তানাহ স্ম, কার্ত্তিকেয়ো নামাগ্নেঃ পুত্রো ভবিতা, স তারকাসুরং হনিষ্যতি, অতস্তমগ্নিমন্বিষ্য তৎপুত্রং যাচধ্বমিতি। দেবাস্তু অগ্নিমন্বিষ্যন্তঃ কুত্রাপ্যপ্রাপ্নুবন্তো মহান্তং করিণমেকং দৃষ্ট্বা পপ্রচ্ছুঃ কুত্রাগ্নিরিতি। স করী 'অশ্বত্থতরৌ বিলীনোঽগ্নি'রিত্যুবাচ। অথাগ্নির্নিষ্ক্রম্য "তব জিহ্বা প্রতীপা ভবিষ্যতী"তি তং করিণমভিশপ্য পুনঃ শমীমধ্যে নিলীনঃ, তদা

দক্ষিণ চরণ উত্তোলনপূর্ব্বক জয়শব্দ উচ্চারণ করিয়া আমার উদ্দেশে এই আর্য্যাটি অতিস্পষ্টাক্ষরে পাঠ করিয়াছে। প্রায়শই পক্ষী ও পশুগণ ভয়, আহার, স্ত্রীসংসর্গ, নিদ্রা ও পিঞ্জর প্রভৃতি হইতে নির্গম ও প্রবেশাদির সঙ্কেত মাত্র জানে। কিন্তু ইহার ঈদৃশ বাক্য উচ্চারণ অতীব আশ্চর্য্য।

রাজা এই কথা বলিলে কুমারপালিত ঈষৎ হাস্য করিয়া রাজাকে বলিলেন —"মহারাজ! এ বিষয়ে আশ্চর্য্য কি আছে? কারণ, এই সকল শুকশারিকাপ্রভৃতি পক্ষিবিশেষ যেমন শোনে, তেমন বাক্যই উচ্চারণ করিয়া থাকে, ইহা আপনি অবগতই আছেন। তাহাতেও আবার পূর্ব্বজন্মের সংস্কার অনুসারে কিংবা প্রতিপালকের চেষ্টায় ইহাদের সাতিশয় সংস্কার

(১) দেব! কিমত্র ইতিমাত্রঃ পাঠঃ ক্বচিৎ। (২) বিহঙ্গম···।
(৩) যথাশ্রুতং। (৪) তত্রাপ্যন্যান্যজন্ম...। (৫) অন্যৎ। (৬) অতিপরিস্ফুটাভিধানা।
(৭) অগ্নিশাপাদুপরি...। (৮) শারিকানাঞ্চ।

इत्येवमुच्चारयत्येव तस्मिन्नशिशिरकिरणमम्बरतलस्य मध्यमारूढ़मावेदयन्, नाड़िकाच्छेद-प्रहत-पटु-पटह-नादानुसारी मध्याह्नशङ्खध्वनिरुदतिष्ठत्। तमाकर्ण्य च समासन्नस्नानसमयो विसर्जितराजलोकः क्षितिपतिरास्थानमण्डपादुत्तस्थौ। (ख)

अथ चलति महीपतावन्योन्यमतिरभस-सञ्चलन-चालिताङ्गद-पत्रभङ्ग-मकर-कोटि-पाटितानेकपटानाम्, (१) आक्षेपदोलायमान-कण्ठदाम्नाम्, (२) अंस-

च देवैः पृष्टः शुकः 'शमीगर्भे निलीनो वह्नि'रित्यभिदधे। ततस्ततोऽपि वह्निर्निःसृत्य 'त्वं वाग्विहीनो भविष्यसि' इति शुकं शशाप। इति महाभारतीया वार्त्तात्रानुसन्धेया।

(ख) इत्येवमिति। तस्मिन् कुमारपालिते। अशिशिरकिरणं उष्णरश्मिं सूर्यं अम्बरतलस्य आकाशस्य मध्यमारूढ़ं मध्यस्थानगतं आवेदयन् विज्ञापयन्, तथा नाड़िकाच्छेदे सभाभङ्गमुहूर्त्तसमाप्तौ तत्काल इत्यर्थः प्रहतानां करतलादिना ताड़ितानां नानाविधयन्त्राणामित्यर्थः यः पटुः स्पष्टः पटहः वाद्यारम्भः तस्य नादानुसारी शब्दानुगामी, मध्याह्नसूचकः शङ्खध्वनिः मध्याह्नशङ्खध्वनिः। प्रतिदिनमेव तत्तत्समये तादृशध्वनिरभवदिति बोध्यम्। क्षितिपतिः शूद्रकः, आस्थानमण्डपात् सभागृहात्।

"अथ पटु...स्फुटे रोगविहीने च।" "पटहो वाद्य आरम्भे" इति च हेमः।

(ग) अथेति। महीपतौ राजनि शूद्रके चलति सभामण्डपात् गन्तुमारभमाणे सति उत्तिष्ठतां महीपतीनां सामन्तनरपतीनां अन्योन्यं परस्परं अतिमहान् सम्भ्रमः सम्मर्द्द आसीदित्यन्वयः। सर्वाणि षष्ठ्यन्तानि सामन्तमहीपतीनां विशेषणानि। अतिरभसेन नितान्तवेगेन यत् सञ्चलनं गमनं तेन चालितानां आन्दोलितानां

জন্মে, অতএব ইহাতে অত্যন্ত আশ্চর্য্যের বিষয় নাই। আরও দেখুন, পূর্ব্বকালে ইহাদেরও মনুষ্যের ন্যায় স্পষ্টাক্ষর বাক্য ছিল, কিন্তু অগ্নির অভিশাপে শুকপক্ষিগণের অস্পষ্টভাষিতা এবং হস্তিগণের জিহ্বার পরিবর্ত্তন হইয়াছে।

(খ) কুমারপালিত এইরূপ বলিবামাত্রই, 'সূর্য্য আকাশের মধ্যস্থানে উঠিয়াছেন', ইহা সাধারণকে জানাইয়া, সভাভঙ্গসময়ে বাদিত নানাবিধ বাদ্যযন্ত্রের সুস্পষ্ট বাদ্যারম্ভের সঙ্গে সঙ্গে (নহবৎ বাজনার সহিত) মধ্যাহ্নকালের শঙ্খধ্বনি উঠিল। তাহা শুনিয়া মহারাজ শূদ্রক, স্নানের সময় উপস্থিত হইয়াছে জানিয়া, সামন্তরাজগণকে বিদায় দিয়া সভামণ্ডপ হইতে উঠিলেন।

(গ) তদনন্তর মহারাজ শূদ্রক সভামণ্ডপ পরিত্যাগ করিয়া চলিলে, সামন্ত-রাজগণের উত্থানসময়ে পরস্পর অত্যন্ত সংঘর্ষ হইয়াছিল; অতিবেগে গমন করায় সঞ্চলিত কেয়ূর,

(१) पाटितांशुकपटानां, पाटितांशुकानां। (२) मालतीकण्ठदाम्नां।

স্থলোল্লসিত-(১) কুঙ্কুম-পটবাস-ধূলি-পিঞ্জরিত-দিশাম্, (২) আলোল মালতী-কুসুম-(৩) শেখরোৎপতদলি-কদম্বকানাম্, অর্দ্ধাবলম্বিভিঃ কর্ণোৎপলৈ-শ্চুম্ব্যমান-গণ্ডস্থলানাম্, গমন-প্রণাম-লালসানাম্, (৪) অহমহমিকয়া বক্ষঃস্থল-প্রেঙ্খোলিত-হারলতানাম্, উত্তিষ্ঠতামাসীদতিমহান্ (৫) সম্ভ্রমো মহীপতীনাম্। (গ)

ইতশ্চেতশ্চ নিষ্পতন্তীনাং স্কন্ধাবসক্ত (৬)-চামরাণাম্ চামরগ্রাহিণীনাং কমল-মধু-পান-মত্ত-(৭) জরৎ-কলহংস-নাদ-জর্জরেণ (৮) পদে পদে রণিত-

অঙ্গদানাং কেয়ূরাণাং পত্রভঙ্গানাং আভরণবিশেষাণাং মকরাণাং মকরাকৃতিকর্ণালঙ্কারাণাং কোটিভিঃ অগ্রভাগৈঃ পাটিতাশ্ছিন্নাঃ অনেকে পটা বসনানি যেষাং তেষাম্। আক্ষেপেণ সহসা দেহসঞ্চালনেন দোলায়মানানি প্রচলিতানি কণ্ঠদামানি কণ্ঠহারা যেষাং তেষাং। অংসস্থলেভ্যঃ স্কন্ধদেশেভ্যঃ উল্লসিতাভিরুত্থিতাভিঃ কুঙ্কুমানাং, পটবাসানাং সুগন্ধচূর্ণবিশেষাণাঞ্চ ধূলিভিঃ রেণুভিঃ পিঞ্জরিতাঃ পিঙ্গলবর্ণীকৃতা দিশো যৈঃ তেষাং। আলোলেভ্যো নিতান্ত-চলিতেভ্যঃ মালতীকুসুমানাং শেখরেভ্যঃ শিরোভূষণেভ্যঃ, উৎপতন্তি উড্ডয়মানানি অলিকদম্বকানি ভ্রমরসমূহা যেষাং তেষাং। অর্দ্ধাবলম্বিভিঃ কিঞ্চিদ্দুলিতৈরিত্যর্থঃ কর্ণোৎপলৈঃ চুম্ব্যমানানি শিরোনমনাৎ স্পৃশ্যমানানি গণ্ডস্থলানি যেষাং তেষাম্। গমনে রাজ্ঞঃ প্রস্থানকালে প্রণামায় নমস্কারায় লালসানাং নিতান্তাভিলাষুকাণাম্। অহমগ্রে অহমগ্রে ইত্যহমহমিকা ময়ূরব্যংসকাদিত্বাৎ সাধুঃ তয়া, বক্ষঃস্থলেষু প্রেঙ্খোলিতা আন্দোলিতা হারলতা যেষাং তেষাম্। "অহমহমিকা তু সা স্যাৎ যঃ পরস্পরং ভবত্যহঙ্কার" ইত্যমরঃ।

(ঘ) ইতশ্চেতি। তদাস্থানভবনং রাজ্ঞঃ সভাগৃহং সর্ব্বতঃ ক্ষুভিতমিব উদ্বেলিতমিব অভবদিতি বক্ষ্যমাণক্রিয়য়ান্বয়ঃ, তত্র তৃতীয়ান্তানি পদানি ক্ষুভিতমিত্যস্য করণানি, ষষ্ঠ্যন্তানি চ তত্তৎকরণসম্বন্ধিবোধকানি। ইতশ্চেতশ্চ সর্ব্বাসু দিক্ষু নিষ্পতন্তীনাং প্রচলন্তীনাং, স্কন্ধেষু অবসক্তানি স্থিতানি চামরাণি যাসাং তাসাং

বক্রপত্রাকৃতি আভরণ (বাজু বিজাটা) ও মকরাকৃতি কর্ণকুণ্ডলের অগ্রভাগে সংলগ্ন হইয়া অনেক বসন ছিন্ন হইয়াছিল; সহসা দেহ সঞ্চালন করায় অনেকের কণ্ঠমালা আন্দোলিত হইতেছিল; স্কন্ধ হইতে উত্থিত কুঙ্কুম ও সুগন্ধ চূর্ণদ্রব্যের রেণুতে দিক্‌সকল পিঙ্গলবর্ণ করিয়াছিল; মস্তকস্থিত কম্পিত মালতীকুসুমের মালা হইতে ভ্রমরগণ উড়িতেছিল; কর্ণের উৎপল ঈষৎ আন্দোলিত হইয়া গণ্ডস্থলে সংলগ্ন হইতেছিল; গমনসময়ে মহারাজকে নমস্কার করিতে অভিলাষী রাজগণের 'আমি অগ্রে আমি অগ্রে' এইরূপ ত্বরাবশতঃ হারসমূহ বক্ষঃস্থলে আন্দোলিত হইতেছিল।

(ঘ) চামরধারিণী রমণীগণ, স্কন্ধে চামর স্থাপন করিয়া ইতস্তত যাইতে লাগিল,

(১) স্থলোল্লাসিত। (২) ধূলিপটলপিঞ্জরিতদিশাং। (৩) মালতীপুষ্প...(৪) প্রসরণসদালালসানা।
(৫) আসীৎ সম্ভ্রমঃ। (৬) স্কন্ধদেশাবসক্ত...। (৭)...মদমত্ত...। (৮)...জর্জরিতেন।

मणीनां मणिनूपुराणां निनादेन, (ङ) वारविलासिनीजनस्य सञ्चरतो जघनस्थलास्फालन-(१) रणित-रत्नमालिकानां मेखलानां (२) मनोहारिणा झङ्कारेण (च) नूपुररवाकृष्टानाञ्च धवलितास्थानमण्डप-सोपानफलकानां भवनदीर्घिका-कलहंसकानां कोलाहलेन, (छ) रसनारसितोत्सुकानाञ्च (३) तारतर-विराविणा-मुल्लिख्यमान-कांस्य-(४) क्रेङ्कार-दीर्घेण गृहसारसानां कूजितेन, (ज) सरभस-प्रचलित-सामन्तशत-चरणतलाभिहतस्य चास्थानमण्डपस्य निर्घोषगम्भीरेण (५)

चामरग्राहिणीनां स्त्रीणां, कमलमधुपानेन पद्ममधुपानेन मत्ताः जरन्तो वृद्धा ये कलहंसास्तेषां नादवत् कण्ठ-ध्वनिवत् जर्जरेण असंसक्तेन सर्वदा पृथक् पृथक् श्रूयमाणेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। पदे पदे प्रतिपदक्षेपे रणिता शब्दिता मणयो येषु तादृशानां मणिनूपुराणां निनादेन शिञ्जितेन।

(ङ) वारेति। सञ्चरतो व्रजतः वारविलासिनीजनस्य वेश्याजनस्य, जघनस्थलानां नितम्बानां आस्फालनेन अत्यन्तोद्वेलनेन रणिता शब्दिता रत्नमालिका रत्नश्रेणी यासां तादृशीनां मेखलानां काञ्चीनां मनोहारिणा झङ्कारेण झन-झन-शब्देन।

(च) नूपुरेति। नूपुररवैराकृष्टानां समानीतानां, धवलितानि स्वस्व-शरीरकान्तिभिः शुभ्रवर्णीकृतानि आस्थानमण्डपस्य सभागृहस्य सोपानफलकानि सोपानावलयो यैस्तेषां भवनदीर्घिकाकलहंसकानां गृहसरसीस्थ-कादम्बानां कोलाहलेन कलकलेन।

(छ) रसनेति। रसनानां काञ्चीनां रसितैः शब्दितैः रवैः उत्सुकानां उत्कण्ठितानां, तारतरं अत्युच्चैः विरुवन्ति शब्दायन्ते ये तेषां, उल्लिख्यमानस्य घृष्यमाणस्य कांस्यस्य तैजसविशेषस्य क्रेङ्कारवत् 'क्रे' 'क्रे' इत्यव्यक्तशब्दवत् दीर्घेण महता, गृहसारसानां भवनस्थसारसपक्षिणां कूजितेन अव्यक्तशब्देन। लुप्तोपमा।

(ज) सरभसेति। सरभसं सवेगं प्रचलितस्य गन्तुं प्रवृत्तस्य सामन्तशतस्य बहुतराधिकृतनृपतीनां

তাহাদের প্রত্যেক পদক্ষেপে মণিময় নূপুরের শব্দ হইতেছিল, সেই শব্দসমূহ, পদ্মমধুপানে মত্ত বৃদ্ধ কলহংসগণের ধ্বনির ন্যায় পৃথক্ পৃথক্ ভাবে কর্ণগোচর হইতেছিল। (ঙ) গমনকালীন বেশ্যাগণের নিতম্বস্থলের আস্ফালনে শব্দায়মান রত্নময় কাঞ্চীর মনোহর 'ঝন ঝন' শব্দ হইতে লাগিল। (চ) রাজবাটীর সরোবরস্থ কলহংসগণ নূপুরের রবে আকৃষ্ট হইয়া সভাগৃহের সোপান-শ্রেণী শ্বেতবর্ণ করিয়া কোলাহল করিতেছিল। (ছ) স্বভাবত উচ্চশব্দকারী রাজবাটীর সারস-পক্ষিগণ মেখলার শব্দে উৎকণ্ঠিত হইয়া, ঘর্ষণকালীন কাঁসার শব্দের ন্যায় উচ্চস্বরে শব্দ করিতে লাগিল। (জ) বেগগামী সামন্তরাজগণের চরণের আঘাতে সভামণ্ডপ হইতে মেঘগর্জ্জনের ন্যায়

---

(१) जघनस्थलस्खलास्फालन...। (२) मणिमेखलानां। (३) ··उत्सुकितानाञ्च। (४)···कांस्य...।
(५) निर्घातगम्भीरेण, निर्घातनिर्घोषगम्भीरेण।

कम्पयतेव वसुमतीं ध्वनिना, (१) (ज) प्रतीहारिणाञ्च पुरः ससंभ्रममुत्सारित-जनानां (२) दण्डिनां समारब्धहेलमुच्चैरुच्चारयतामालोकयतालोकयतेति (३) तारतर-दीर्घेण (४) भवन-प्रासाद-कुञ्जेषूच्चरित-प्रतिशब्दतया (५) दीर्घतरता-(६)मुपगतेनालोकशब्देन, (झ) राज्ञाञ्च ससंभ्रमावर्जित-मौलि-लोल-चूड़ामणीनां प्रणमताममल-मणिशलाका-दन्तुराभिः किरीट-कोटिभिरुल्लिख्यमानस्य मणि-

---

चरणतलैः अभिहतस्य ताड़ितस्य, आस्थानमण्डपस्य सभागृहस्य, निर्घोषवत् मेघध्वनिवत् गम्भीरेण, वसुमतीं पृथिवीं कम्पयतेव ध्वनिना शब्देन। अत्र वाच्यक्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(झ) प्रतीति। दण्डिनां यष्टिग्राहिणां, पुरः राज्ञोऽग्रतः, ससम्भ्रमं सत्वरं समुत्सारिता दूरीकृता जना लोका यैस्तेषां, समारब्धा प्रवर्त्तिता हेला अवज्ञा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा "हेलावज्ञा-विलासयो"-रिति त्रिकाण्डशेषः, राजगमनपथरोधेनासावधानत्वादवज्ञेति भावः। आलोकयतालोकयत भूमण्डलेश्वरो गच्छतीति पश्यत पश्यत इति उच्चैरुच्चारयतां ब्रुवतां मार्गावरोधिनां सावधानताजननार्थमिदमुच्चैरुच्चारणमिति भावः। प्रतीहारिणां द्वारपालानाञ्च तारतरदीर्घेण अतीवायतेन, भवनस्य राजवाटस्य प्रासादानां देवगृहाणां राजगृहाणाञ्च कुञ्जेषु लताद्याच्छादितस्थानेषु उच्चरित उद्गतः प्रतिशब्दो यस्य स तथोक्तः तस्य भावस्तत्तया, दीर्घतरतां अतीवायतत्वं उपगतेन प्राप्तेन, आलोकस्य दर्शनवाचकपदस्य आलोकयतालोकयतेत्येवंरूपस्य शब्देन उच्चारणध्वनिना।

(ञ) राज्ञामिति। ससम्भ्रमं सत्वरं आवर्जितेषु प्रणामायावनमितेषु मौलिषु मूर्द्धसु लोला मौलि-कम्पनेन कम्पिताः चूड़ामणयः शिरोमणयो येषां तेषाम् "मौलिः किरीटे धम्मिल्ले चूड़ाकङ्केलिमूर्द्धसु।" इति हैमः। प्रणमतां शूद्रकाय नमस्कुर्वतां राज्ञाञ्च, अमला स्वच्छा या मणिशलाका रत्ननिर्म्मितशलाकास्ताभिः दन्तुरा विषमास्ताभिः, किरीटकोटिभिः मुकुटाग्रभागैः उल्लिख्यमानस्य घृष्यमाणस्य मणिकुट्टिमस्य मणिमय-बद्धभूमेः निस्वनेन शब्देन।

গম্ভীর শব্দ উত্থিত হইয়া পৃথিবীকে যেন কম্পিত করিতেছিল। (ঝ) যষ্টিধারী দৌবারিকগণ, রাজার সম্মুখ হইতে লোকদিগকে সত্বর অপসারিত করিতেছিল এবং অবজ্ঞার সহিত উচ্চৈঃস্বরে 'দেখ দেখ' এইরূপ বলিতেছিল, তাহাদের সেই উচ্চকণ্ঠধ্বনি, রাজবাটীর প্রাসাদসমূহের নিভৃতস্থানে উত্থিত প্রতিশব্দদ্বারা অত্যন্ত দীর্ঘরূপে পরিণত হইতেছিল। (ঞ) সামন্তরাজগণ, সম্ভ্রমের সহিত মস্তক অবনত করিয়া সম্রাট্ শূদ্রককে নমস্কার করিতেছিলেন, তখন তাঁহাদের চূড়ামণি-সমূহ কম্পিত হইতেছিল এবং নির্ম্মল মণিময় শলাকাতে বিষমীকৃত মুকুটাগ্রদেশের

---

(१) क्वचित् 'ध्वनिना' इति पाठो नास्ति। (२) प्रतिहाराणां, ससम्भ्रमजनानां,...जानपदानां।
(३) आलोकयन्त्विति। (४) तारदीर्घेण। (५)...प्रतिच्छन्दतया। (६) दीर्घतां।

कुट्टिमस्य निस्वनेन, (१) (ञ) प्रणामपर्य्यस्तानामतिकठिन-मणिकुट्टिम-निपतन-(२)-रणरणायितानाञ्च मणिकर्णपूराणां निनादेन, (ट) मङ्गलपाठकानाञ्च पुरोयायिनां जयजीवेति मङ्गलमधुरवचनानुयातेन (३) पठतां दिगन्तव्यापिना कलकलेन, (ठ) प्रचलित-जन-चरणघात-संक्षोभ-भयादपहाय (४) कुसुमप्रकर-मुत्पतताञ्च मधुलिहां झुङ्कृतेन, (ड) संक्षोभादतित्वरितपदप्रवृत्तै-(५) रवनि-पतिभिः केयूरकोटिताड़ितानां क्वणित-मुखर-रत्नदाम्नाञ्च मणिस्तम्भानां रणितेन सर्वतः क्षुभितमिव तदास्थानभवनमभवत्। (ढ)

अथ विसर्जितराजलोको "विश्रम्यता"मिति स्वयमेवाभिधाय तां चाण्डाल-(६)

(ट) प्रणामेति। प्रणामे नमस्कारकाले पर्य्यस्तानां पतितानां भूतललग्नानां अतिकठिने मणिकुट्टिमे निपतनेन रण-रणायितानां 'रण-रण' इति शब्दं कुर्वतां मणिकर्णपूराणां तेषां राज्ञामेव रत्नमयकर्णाभरणानां निनादेन शब्देन।

(ठ) मङ्गलेति। पुरोयायिनामग्रगामिनां पठतां कीर्त्तिगाथामुच्चारयतां मङ्गलपाठकानां वन्दिनाञ्च जय-जीवेति मङ्गलमधुरवचनेन अनुयातः अनुसृतस्तेन, दिगन्तव्यापिना दूरप्रसारिणेत्यर्थः कलकलेन कोलाहलेन।

(ड) प्रचलितेति। प्रचलितानां गन्तुमारभमाणानां जनानां चरणघातस्य बहुतरचरणानामित्यर्थः संक्षोभभयात् प्रहारत्रासात् कुसुमप्रकरं पुष्पसमूहं विहाय उत्पततां उड्डीनं कुर्वतां मधुलिहां भ्रमराणां झुङ्कृतेन शब्देन।

(ढ) संक्षोभादिति। संक्षोभात् सार्वभौमस्याभिवादनाय चित्तावेगवशात्, अतित्वरितपदेषु नितान्तसत्वर-पदक्षेपेषु प्रवृत्तैः कृतारम्भैः अवनिपतिभिः सामन्तैः कर्त्तृभिः केयूराणामङ्गदानां कोटिभिरग्रभागैः करणैः ताड़ितानामाहतानां, क्वणितेन तत्ताड़नशब्देन मुखराणि शब्दायमानानि रत्नदामानि रत्ननिर्म्मितवेष्टनशृङ्खला येषु तेषां मणिस्तम्भानां मणिमयस्थूणानां रणितेन शब्देन च, तदास्थानभवनं सभागृहं सर्वतः क्षुभितमुद्वेलित-मिव अभवदित्यन्वयः पूर्वमप्युक्तः।

(ण) अथेति। विसर्जिता मधुरवचनेनाभाष्य परित्यक्ता राजलोकाः सामन्ता येन स तथोक्तो नरपतिः

ঘর্ষণে মণিময় ভবনাঙ্গন হইতে শব্দ উত্থিত হইতেছিল। (ট) নমস্কারের সময় অত্যন্ত কঠিন মণিময় ভবনাঙ্গনে নিপতিত হইয়া সামন্তরাজগণের রত্নময় কর্ণাভরণ 'রণ রণ' শব্দ করিতেছিল। (ঠ) অগ্রগামী স্তুতিপাঠকগণ, রাজার কীর্ত্তিকলাপ উচ্চারণ করিয়া 'জয় হউক, দীর্ঘজীবী হউন' এইরূপ মঙ্গলকর মধুর বাক্যের সহিত দূরগামী কোলাহল করিতেছিল। (ড) স্বস্বগন্তব্যস্থানগামী জন-সমূহের চরণাঘাতের ভয়ে ভ্রমরগণ, কুসুমসমূহ পরিত্যাগপূর্ব্বক উড্ডীন হইয়া 'ভন ভন' শব্দ করিতেছিল। (ঢ) আর ব্যস্ততাবশতঃ দ্রুতগামী সামন্ত-রাজগণের কেয়ূরাগ্রের তাড়নে শব্দায়মান রত্নশৃঙ্খলা-বেষ্টিত মণিময় স্তম্ভসমূহের শব্দ হইতেছিল। নানাজাতীয় এই সকল শব্দে সেই সভামণ্ডপ যেন সর্ব্বতোভাবে উদ্বেলিত হইয়াছিল।

(ণ) তদনন্তর মহারাজ শূদ্রক, উপস্থিত সামন্তরাজগণকে মধুরালাপে বিদায় করিয়া

---

(१) स्वनेन, निःस्वनेन। (२) निपतित…। (३) मधुरवचनानुपातेन।

(४) संक्षोभाद्विहाय। (५) त्वरितपदं प्रवृत्तैः, त्वरितपदं प्रसृतैः। (६) चण्डाल ..।

कन्यकां, "वैशम्पायनः प्रवेश्यतामभ्यन्तरम्" (१) इति ताम्बूलकरङ्कवाहिनी-मादिश्य कतिपयाप्तराजपुत्रपरिवृतो नरपतिरभ्यन्तरं प्राविशत्। (ण)

अपनीताशेष-भूषणश्च दिवसकर इव विगलितकिरणजालः चन्द्रतारकाशून्य इव गगनाभोगः समुपाहृत-समुचित-व्यायामोपकरणां व्यायामभूमिमयासीत्। (त)

स तस्याञ्च समानवयोभिः सह राजपुत्रैः कृतमधुरव्यायामः, श्रमवशादुन्मि-षन्तीभिः कपोलयोरीषदवदलित-सिन्धुवार-(२) कुसुम-मञ्जरी-विभ्रमाभिः,

शूद्रकः, स्वयमेव तां चाण्डालकन्यकां विश्रम्यतां विश्रामः क्रियतामित्यभिधाय उक्त्वा, वैशम्पायनः स शुकः अभ्य-न्तरं गृहमध्यं प्रवेश्यतां नीयतामिति ताम्बूलकरङ्कवाहिनीं पर्णवीटिकाधारिणीं स्त्रियं आदिश्य, कतिपयै-रल्पसंख्यकैः, आप्तैर्विश्वस्तैः राजपुत्रैः परिवृतः परिवेष्टितः सन् अभ्यन्तरं भवनमध्यम्।

(त) अपेति। अपनीतानि देहात् विमुक्तानि अशेषाणि सकलानि भूषणानि आभरणानि येन सः, अतएव विगलितकिरणजालः सन्ध्याकाले विलुप्तरश्मिसमूहः दिवसकरः सूर्य्यं इव, स्वतस्तेजस्वित्वादिति भावः। तथा चन्द्रतारकाशून्यः गगनाभोगः नभोविस्तारः विस्तृताकाश इव विशालदेहत्वादिति भावः। समुपाहृतानि किङ्करैर्नीतानि समुचितानि योग्यानि व्यायामोपकरणानि परिश्रमकरणोपयोगिद्रव्याणि लौह-मुद्गरादीनि यस्यां ताम्। अत्रोपमालङ्कारयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

नायं स्वल्पिदानीन्तनो धनियुवेव केवलविलासपेशल आसीत्, येन प्रचुरतरमाहार्य्यमभ्यवहार्य्य-वातपीवर-शरीरो रात्रिन्दिवं निद्रामुपेयादिति।

(थ) स इति। तस्यां व्यायामभूमौ समानवयोभिः राजपुत्रैः सह कृतमधुरव्यायामः विहितसुदृश्य-परिश्रमः स राजा स्नानभूमिमगच्छदिति परेणान्वयः। अलक्ष्यमाणमूर्त्तिरितिराजविशेषणस्य 'स्वेदजल-कणिकासन्ततिभि'रिति करणपदं, अन्यानि तृतीयान्तपदानि च तस्योपमानवाचकानि। श्रमवशात् कपोलयोः गण्डयोः उन्मिषन्तीभिराविर्भवन्तीभिः। ईषदवदलितं किञ्चिदुद्भिन्नं प्रकाशितं यत् सिन्धुवारकुसुमं तस्य

নিজেই সেই চণ্ডালকন্যাকে বলিলেন, "তুমি এখন বিশ্রাম কর" এবং তাম্বূলকরঙ্কবাহিনীকে আদেশ করিলেন, "বৈশম্পায়নকে বাটীর মধ্যে লইয়া যাও"—তাহার পর স্বয়ং বাটীর মধ্যে প্রবেশ করিলেন।

(ত) প্রবেশপূর্ব্বক দেহ হইতে সমস্ত আভরণ উন্মোচন করিয়া সন্ধ্যাকালীন কিরণ-জালবিহীন সূর্য্যের ন্যায় এবং চন্দ্র ও নক্ষত্র-শূন্য আকাশের ন্যায় শূন্যদেহে ব্যায়ামস্থানে গমন করিলেন, সে স্থানে পরিচারকগণ পূর্ব্বেই ব্যায়ামোপযোগী লৌহমুদ্গর প্রভৃতি আনিয়া রাখিয়াছিল।

(থ) মহারাজ শূদ্রক সেই ব্যায়াম-ভূমিতে সমবয়স্ক রাজপুত্রগণের সহিত সুদৃশ্য ব্যায়াম করিলেন, সেই পরিশ্রমে তাঁহার কপোলযুগলে ঘর্ম্মবিন্দু নির্গত হইয়া ঈষৎ প্রস্ফুটিত সিন্ধুবার-

(१) अभ्यन्तरं स्नानपानाशनादिना च सुखितमेनं कारयेति, अभ्यन्तरमशनादिना चोपचर्य्यतां ताम्।

(२)...अवगलित-सितसिन्धुवार...।

उरसि निर्दयश्रम-(१) च्छिन्न-हार-विगलित-मुक्ताफल-प्रकरानुकारिणीभिः, ललाटपट्टकेऽष्टमी-चन्द्र-शकल-तलोल्लसदमृतविन्दु-विडम्बिनीभिः स्वेदजलकणिका-सन्ततिभिरलङ्क्रियमाणमूर्त्तिः, (थ) इतस्ततः स्नानोपकरण-सम्पादनसत्वरेण पुरःप्रधावता (२) परिजनेन (३) तत्कालं विरलजनेऽपि (४) राजकुले समुत्सारणाधिकारमुचितमाचरद्भि-(५) र्दण्डिभिरुपदिश्यमानमार्गः, (द) विततसितवितानाम्, अनेक-चारणगण-निवध्यमानमण्डलाम् (६) गन्धोदक-पूर्ण-कनक-

---

मञ्जर्या इव विभ्रमो विलासो यासां ताभि.। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। उरसि वक्षसि निर्दयश्रमेण कठिनपरिश्रमेण छिन्नो यो हारस्तस्मात् विगलितानां पतितानां मुक्ताफलानां प्रकरं समूहं अनुकर्त्तुं शीलं यासां ताभिः। अत्रार्थीयमुपमालङ्कारः। ललाटपट्टके भालस्थले, अष्टमीचन्द्रशकलतले अष्टमीतिथिसमुदितचन्द्रखण्डे उल्लसन्तो दीप्यमाना ये अमृतविन्दवस्तान् विडम्बयितुं अनुकर्त्तुं शीलं यासां ताभिः। अत्राप्यार्थीयमुपमा। अष्टमीपदं ललाटस्य अष्टमीचन्द्राकारताद्योतनार्थं। स्वेदजलकणिकासन्ततिभिः घर्म्मविन्दुश्रेणीभिः अलङ्क्रियमाणा मूर्त्तिः शरीरं यस्य सः।

(द) इतस्तत इति। स्नानोपकरणानां जलादीनां सम्पादने सत्वरेण त्वरान्वितेन, अतएव पुरःप्रधावता अग्रतो द्रुतं गच्छता, परिजनेन परिचारकलोकेन, उपदिश्यमानेत्यस्य कर्त्तृपदमेकमेतत्। तथा तत्कालं तस्मिन् मध्याह्नसमय इत्यर्थः, विरला अल्पा जना यत्र तादृशेऽपि, सुतरामुत्सारणाया अनावश्यकत्वेऽपीति भावः, राजकुले राजभवने, उचितं योग्यं स्वकर्त्तव्यं इत्यतः समुत्सारणाधिकारं जनसम्मर्द्दनिवारणकार्य्यं आचरद्भिः कुर्वद्भिः, दण्डिभिः यष्टिधारिभिः पुरुषैः, उपदिश्यमानः प्रदर्श्यमानः मार्गः स्नानभूमिगमनपथो यस्य सः। राजविशेषणमेतत्।

(ध) विततेति। द्वितीयान्तानि स्नानभूमिविशेषणानि। विततं उपरि विस्तीर्णं सितं शुभ्रं वितानं

কুসুমের (নিসিন্দাফুলের) মঞ্জরীর ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল ; বক্ষঃস্থলে ঘর্ম্মবিন্দু বহির্গত হইয়া, কঠিন পরিশ্রমে ছিন্ন হার হইতে বিগলিত মুক্তাসমূহের অনুকরণ করিতে লাগিল ; আর ললাটদেশে ঘর্ম্মবিন্দু নির্গত হইয়া, অষ্টমীর চন্দ্রখণ্ডের উপরিভাগস্থিত অমৃতবিন্দুসমূহের ন্যায় বিরাজ করিতেছিল ; তখন সেই ঘর্ম্মবিন্দুসমূহে তাঁহার দেহ অলঙ্কৃত হইয়াছিল।

(দ) এদিক্ ওদিক্ হইতে স্নানীয় দ্রব্য আনয়ন করিবার নিমিত্ত ত্বরান্বিত পরিজনগণ অগ্রে অগ্রে দ্রুত গমন করিয়া এবং সেই সময়ে রাজবাটীতে অল্প লোক থাকিলেও যষ্টিধারী পুরুষগণ নিজেদের কর্ত্তব্য বলিয়া জনসংঘর্ষনিবারণের ভাণ দেখাইয়া মহারাজকে স্নানস্থানে যাইবার পথ বলিয়া দিতেছিল।

(ধ) এই ভাবে মহারাজ স্নানস্থানে উপস্থিত হইলেন ; সে স্থানের উপরিভাগে শ্বেতবর্ণ চন্দ্রাতপ বিস্তৃত ছিল ; অনেক স্তুতিপাঠকগণ চতুর্দ্দিকে মণ্ডলাকারে দণ্ডায়মান ছিল ;

---

(१)...रतिश्रम, रतिविभ्रम...। (२) प्रधाविता।

(३) परिजनेनानुगम्यमानः। (४) विरलतरेऽपि। (५) समाचरद्भिः। (६) आवध्यमानमण्डलां।

मय-द्रोणी-(१) सनाथमध्याम्, उपस्थापित-स्फाटिक-स्नानपीठाम्, एकान्त-निहितैरतिसुरभिगन्धसलिलपूर्णैः परिमलावकृष्ट मधुकर-कुलान्धकारितमुखैरातप-भयान्नीलकर्पटावगुण्ठितमुखैरिव स्नानकलसैरुपशोभितां स्नानभूमिमगच्छत्। (ध)

अवतीर्णस्य च (२) जलद्रोणीं वारविलासिनी-कर-मृदित-सुगन्धामलक-लिप्तशिरसो राज्ञः समन्तात् समुपतस्थुरंशुक-निविड़-निबद्ध-(३) स्तनपरिकराः,

---

चन्द्रातपो यस्यां ताम्। अनेकैश्चारणगणैः कुशीलवैः स्तुतिपाठकैः निबध्यमानं क्रियमाणं मङ्गलं मङ्गला-कारिणवस्थानं यस्यां तां। गन्धोदकैः सुरभिसलिलैः पूर्णा कनकमयी सुवर्णनिर्म्मिता या द्रोणी वृहज्जल-पात्रविशेषः, तया सनाथः सहितो मध्यो मध्यस्थानं यस्यास्ताम्। उपस्थापितं निहितं स्फाटिकं स्फटिक-निर्म्मितं स्नानपीठं यस्यां ताम्। एकान्ते स्नानभूमेरेकस्मिन् पार्श्वे निहितैः स्थापितैः। एतानि तृतीयान्त-पदानि स्नानकलसैरित्यस्य विशेषणानि। अतिसुरभिः अतीवघ्राणतर्पणकारी गन्धो येषां तादृशैः सलिलैः पूर्णा भृतास्तैः, अतएव परिमलेन जलसौरभेण अवकृष्टं आकृष्टं यत् मधुकरकुलं भ्रमरसमूहः तेन अन्धकारि-तानि सञ्जातान्धकारीकृतानि मुखानि येषां तैः, अतएव आतपभयात् रविकिरणसन्तापभयात् नीलकर्पटैः कृष्णवर्णजीर्णवस्त्रखण्डैः, अवगुण्ठितानि आवृतानि मुखानि यैस्तैरिव स्थितैः। अत्र वाच्या भावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) अवेति। अवतीर्णस्य जलद्रोणीमध्ये प्रविष्टस्य, वारविलासिनीभिः गणिकाभिः करैर्हस्तैः मर्दितेन पिष्टेन सुगन्धेन सुरभिणा आमलकेन आमलकीफलविशेषेण लिप्तं शिरो यस्य तस्य, राज्ञः शूद्रकस्य, समन्तात् सर्वासु दिक्षु। अंशुकैः स्वस्वपरिहितवसनैः निविड़ं दृढ़ं यथा स्यात्तथा निबद्धा आस्फालननिवा-रणार्थं संयताः स्तनपरिकराः कुचाभोगा याभिस्ताः। इत्यादीनि प्रथमान्तानि वारयोषित इत्यस्य विशेषणानि। दूरे उपरिभागे समुत्सारितानि झणत्काराद्युपद्रवनिवारणार्थं उत्तोलितानि वलयानि यासां तास्तथोक्ता बाहुलता यासां ताः। समुत्क्षिप्तानि नयनगण्डोपरिपतननिवारणाय ऊर्द्धमुत्क्षिप्य बद्धानि कर्णा-

---

মধ্যস্থানে সুগন্ধ জলপূর্ণ সুবর্ণনির্ম্মিত একটা দ্রোণী (বড় গামলা) এবং স্ফটিকময় এক-খানা স্নানপীঠ সংস্থাপিত ছিল; একদিকে অতিসুগন্ধ জলপূর্ণ বহুতর কলস রাখিয়াছিল, সেই জলের সৌরভে ভ্রমরগণ আসিয়া সেই কলস-সমূহের মুখভাগ অন্ধকার করিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, কলসসমূহ রৌদ্রের ভয়ে নীলবস্ত্রে মুখ আচ্ছাদন করিয়া রাখিয়াছে।

(ন) মহারাজ সেই জলদ্রোণীমধ্যে প্রবেশ করিলে কতকগুলি বেশ্যা, স্বহস্ত-মর্দ্দিত সুগন্ধ আমলকী দ্বারা তাঁহার মস্তক লিপ্ত করিয়া দিল; এবং আর কতকগুলি বেশ্যা পরিধেয় বসন দ্বারা স্তনদেশ দৃঢ়ভাবে বন্ধন করিয়া, হস্তবলয় দূরে উৎক্ষিপ্ত করিয়া, কর্ণালঙ্কার উপরে উত্তোলন

---

(१) जलद्रोणी। (२) क्वचित् चकारो नास्ति। (३) अंशुकविनिबद्ध···।

दूरसमुत्सारित-वलय-बाहुलताः, समुत्क्षिप्तकर्णाभरणाः (१) कर्णोत्सङ्गोत्सारितालकाः, गृहीतजल-कलसाः स्नानार्थमभिषेकदेवता इव वारयोषितः। (न)

ताभिश्च समुन्नत-कुचकुम्भ-मण्डलाभिर्वारिमध्यप्रविष्टः करिणीभिरिव वनकरी परिवृतस्तत्क्षणं रराज राजा। (प)

द्रोणीसलिलादुत्थाय च स्नानपीठममलस्फटिकधवलं वरुण इव राजहंसमारुरोह। (फ)

भरणानि याभिस्ताः। कर्णोत्सङ्गात् श्रवणसमीपात् उत्सारिता नयनावरणनिवारणार्थं अपसार्य्य बद्धाः, अलकाश्चूर्णकुन्तला याभिस्ताः। अभिषेकदेवताः स्नानाधिष्ठात्र्यो देव्य इव, स्नानार्थं राज्ञः स्नानविधानार्थं उपतस्थुः उपस्थिता बभूवुः। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः, वाच्या चात्युत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(प) ताभिरिति। वारिमध्यप्रविष्टः जलद्रोणीमध्यगतो राजा शूद्रकः, समुन्नतं अतीवोच्चं कुचकुम्भमण्डलं यासां ताभिः, ताभिर्वाराङ्गनाभिः, करिणीभिर्वनकरीव परिवृतः परिवेष्टितः सन् तत्क्षणं तस्मिन् समये रराज। समुन्नतेति विशेषणं उन्नतकुम्भशालिनीनां करिणीनां साम्यप्रतिपादनार्थं। वनकरीति वनपदं तत्र लोकोपद्रवाभावेन परिवेष्टनसम्भवताप्रदर्शनार्थं लोकालये तु लोकोपद्रवेण तथात्वमसम्भवमिति बोध्यम्।

अत्रोपमालङ्कारः। तथा वनकरिणस्तथा शोभायाः सर्वदापि सम्भवात् वनकरी राजते, राजा तु रराज इति कालभेदात् "काप्यभिख्या तयोरासी"दित्यादिदर्पणोदाहृतवदुपमागतभग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'वनकरी यथा राजते तथा रराज' इति पाठेन समाधेयः।

(फ) द्रोणीति। अमलस्फटिकेन धवलं स्वच्छस्फटिकमयतया शुभ्रमित्यर्थः।

अत्राप्युपमालङ्कारः। तथा वरुणो राजहंसमारोहति राजा तु आरुरोह इति कालभेदात् पूर्ववद्भग्नप्रक्रमतादोषः, सोऽपि 'वरुणो यथा राजहंसमारोहति तथा राजा स्नानपीठमारुरोह' इति पाठेन समाधेयः।

করিয়া এবং আলুলায়িত কেশকলাপ কর্ণের নিকট হইতে অপসারিত করিয়া, জলপূর্ণ কলস গ্রহণপূর্ব্বক মহারাজকে স্নান করাইবার নিমিত্ত অভিষেক-দেবতার ন্যায় চতুর্দ্দিকে উপস্থিত হইল।

(প) উন্নত-কুচকুম্ভশালিনী বারাঙ্গনাগণ, জলদ্রোণীমধ্যপ্রবিষ্ট রাজাকে পরিবেষ্টন করিলে তখন তিনি হস্তিনীপরিবেষ্টিত বনহস্তীর ন্যায় শোভা পাইতেছিলেন।

(ফ) বরুণ যেমন জল হইতে উঠিয়া রাজহংসে আরোহণ করেন, রাজা শূদ্রকও তেমন জলদ্রোণী হইতে উঠিয়া নির্ম্মল ও শ্বেতবর্ণ স্ফটিকময় স্নানপীঠে আরোহণ করিলেন।

---

(१)···चरणाभरणाः

ततस्ताः काश्चि-(१)-न्मरकत-कलस-(२) प्रभाश्यामायमाना नलिन्य इव मूर्त्तिमत्यः पत्रपुटैः, (ब) काश्चिद्रजतकलसहस्ता रजन्य इव पूर्णचन्द्रमण्डल-विनिर्गतेन ज्योत्स्नाप्रवाहेण, (भ) काश्चित् कलसोत्क्षेप-श्रमस्वेदार्द्र-शरीरा जलदेवता इव स्फाटिकैः कलसैस्तीर्थजलेन, (म) काश्चिन्मलयसरित इव चन्दनरसमिश्रेण सलिलेन, (य) काश्चिदुत्क्षिप्त कलस-पार्श्व-विन्यस्त-हस्त-

---

(ब) तत इति। ता वाराङ्गना राजानमभिषिषिचुरित्यन्वयः। मरकतकलसानां हरिन्मणिमय-कुम्भानां प्रभाभिः श्यामायमाना अश्यामा अपि श्यामवदाचरन्त्यः, अतएव पत्रपुटैः मूर्त्तिमत्यो नलिन्यः पद्मिन्य इव तैः कलसैः राजानमभिषिषिचुः। वेश्यानलिनीनां मरकतकलसपत्रपुटानाञ्च श्यामत्वात् साम्यम्।

अत्र कलुप्तोपमा, वेश्यासु नलिनीत्वजात्युत्प्रेक्षा धर्माद्युत्प्रेक्षा च, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(भ) काश्चिदिति। रजतकलसहस्ता अतएव पूर्णचन्द्रमण्डलात् विनिर्गतेन ज्योत्स्नाप्रवाहेण रजन्यो रात्रय इव। वेश्यानां रात्रिभिः, रजतकलसस्य पूर्णचन्द्रेण, तत्कलसजलस्य च ज्योत्स्नाप्रवाहेण साम्यमभिप्रेतम्।

अत्रापि वेश्यासु रजनीत्वजात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) काश्चिदिति। कलसोत्क्षेपेण कुम्भोत्तोलनेन यः श्रम आयासस्तेन ये स्वेदा घर्म्मजलानि तैरार्द्राणि शरीराणि यासां ताः, अत एव जलदेवता इव, तासामपि जलादुत्थानेन जलबिन्दुव्याप्तशरीरत्वात् साम्यमिति भावः।

अत्रापि तासु गणिकासु जलदेवतात्वजात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) काश्चिदिति। मलयसरितो मलयपर्वतस्थनद्य इव चन्दनरसमिश्रजलधारणादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। केचित्त्वत्रापि मलयसरितां तदानीं स्नानकर्त्तृत्वासम्भवेन तदारोपणादुत्प्रेक्षैवेति वदन्ति।

(र) काश्चिदिति। उत्क्षिप्तानाम् उत्तोल्य कक्षं नीतानां कलसानां पार्श्वेषु मुखनिम्नदेशेषु विन्यस्ता

(ब) তদনন্তর সেই বারাঙ্গনাদিগের মধ্যে কতকগুলি, মকরতমণিময় কলসের প্রভায় প্রায় শ্যামবর্ণ হইয়া তাহার জলে রাজাকে স্নান করাইতে লাগিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, মূর্ত্তিমতী পদ্মিনীগণ পত্রপুট দ্বারা (পাতার ঠোঙা দিয়া) স্নান করাইতেছে। (ভ) কতকগুলি রূপার কলসের জলে স্নান করাইতে লাগিল, সুতরাং প্রতীতি হইতেছিল যেন, রাত্রিগণ পূর্ণচন্দ্রমণ্ডল হইতে নির্গত জ্যোৎস্নার স্রোতে স্নান করাইতেছে। (ম) কতকগুলি কলস উত্তোলনের পরিশ্রমে ঘর্ম্মাক্তকলেবর হইয়া স্নান করাইতে লাগিলে বোধ হইতেছিল যেন, জলদেবতারা স্ফটিকময় কলসে তীর্থ-জলদ্বারা স্নান করাইতেছেন। (য) কতকগুলি মলয়পর্ব্বতস্থিত নদীর ন্যায় চন্দন-মিশ্রিত

---

(१) काश्चन। (२) मरकतमकल···।

पल्लवाः प्रकीर्य्यमाण-नख-मयूखजालकाः प्रत्यङ्गुलि-विवर-विनिर्गत-(१) जल-धाराः सलिलयन्त्रदेवता इव, (र) काश्चिज्जाड्यमपनेतुमाक्षिप्तबालातपेनेव दिवसश्रिय इव कनककलसहस्ताः कुङ्कुमजलेन वाराङ्गनाः क्रमेण (२) राजान-मभिषिषिचुः। (ल)

अनन्तरमुदपादि च स्फोटयन्निव (३) श्रुतिपथमनेक-प्रहत-पटु-पटह-झल्लरी-मृदङ्ग-वेणु-वीणा-गीत-निनादानुगम्यमानो वन्दिवृन्द-कोलाहलाकुलो भुवन-(४) विवरव्यापी स्नानशङ्खानामापूर्य्यमाणानामतिमुखरो (५) ध्वनिः। (व)

उत्तानभावेन स्थापिताः हस्तपल्लवाः पाणिकिसलयानि याभिस्ताः, प्रकीर्य्यमाणानि इतस्ततो विक्षिप्यमाणानि नखानां मयूखजालानि किरणसमूहा यासां ताः, तथा प्रत्यङ्गुलिविवरेभ्यः सर्वासामङ्गुलीनामन्तरालदेशेभ्यः विनिर्गता जलधारा यासां ताः, अतएव सलिलयन्त्रदेवता जलयन्त्राधिष्ठात्र्यो देव्य इव राजानमभिषिषिचुः।

अत्र तादृशीषु वाराङ्गनासु सलिलयन्त्रदेवतात्वजात्युत्प्रेक्षणादुत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) काश्चिदिति। कनककलसा हस्तेषु यासां ताः, काश्चिद्वाराङ्गनाः, दिवसश्रिय इव दिनलक्ष्म्य इव, जाड्यं जलीयशैत्यगुणं अपनेतुं दूरीकर्त्तुं आक्षिप्त आनीतः बालातपः नवोदितरविकिरणो यस्मिन् तेनेव, रक्तवर्णं तथा कुङ्कुमजलसाम्यप्रतिपादनार्थमेतद्विशेषणमिति बोध्यम्। कुङ्कुमजलेन कुङ्कुममिश्रितवारिणा। क्रमेण क्रमशः, राजानं अभिषिषिचुः स्नपयामासुः।

अत्र आक्षिप्तबालातपेनेवेति क्रियोत्प्रेक्षा, दिवसश्रिय इवेति च जात्युत्प्रेक्षा, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(व) अनन्तरमिति। अनन्तरं स्नानशङ्खानां ध्वनिः उदपादि उत्पन्न इत्यन्वयः। श्रुतिपथं लोकानां कर्णविवरं स्फोटयन् विदारयन्निव, अनेकैर्जनैः प्रहता वादिता याः, पटवो वाद्यकरणसमर्थाः, पटहा दुन्दुभयः, झल्लर्य्यो वाद्यविशेषाः, मृदङ्गा मुरजाः, वेणवो वंश्यः, वीणाश्च तासां गीतानां मङ्गलगानानां च निनादैः शब्दैरनुगम्यमानः मिश्रितो भवन्नित्यर्थः, वन्दिवृन्दस्य स्तुतिपाठकसमूहस्य कोलाहलेन आकुलो

জলধারা স্নান করাইতে লাগিল। (র) কতকগুলি কক্ষদেশে কলস উত্তোলনপূর্ব্বক তাহার মুখে নীচের দিকে উত্তানভাবে (চিৎ করিয়া) পাণিপল্লব বিন্যস্ত করিয়া প্রত্যেক অঙ্গুলীর অন্তরাল হইতে নির্গত জলধারাদ্বারা জলযন্ত্র-দেবতার ন্যায় থাকিয়া মহারাজকে স্নান করাইতে লাগিল; তখন তাহাদের নখ হইতে কিরণসমূহ বহির্গত হইতেছিল। (ল) আর কতকগুলি বেশ্যা, সুবর্ণময় কলস হস্তে লইয়া, জলের শীতলতা দূর করিবার জন্য, যেন নবোদিত সূর্য্যের কিরণ আনিয়া যাহাতে মিশ্রিত করা হইয়াছে, এইরূপ কুঙ্কুম-জলের দ্বারা দিনলক্ষ্মীর ন্যায় ক্রমশঃ রাজাকে স্নান করাইতে লাগিল।

(ব) তাহার পর, মুখমারুত-পূর্ণ স্নানকালীয় শঙ্খধ্বনি উৎপন্ন হইল; তাহার সঙ্গে সঙ্গে অনেকলোককর্ত্তৃক বাদিত উৎকৃষ্ট দুন্দুভি, ঝাঁজ (বাজকাঁসী), মৃদঙ্গ, বংশী ও বীণার

---

(१) ...अवनिर्गत...। (२) यथायथं। (३) आस्फोटयन्निव। (४) भवन...। (५) सुखरः।

एवञ्च क्रमेण निर्वर्त्तिताभिषेको (१) विषधरनिर्मोकपरिलघुनी धवले परिधाय धौते वाससी (२) शरदम्बरैकदेश इव जलक्षालन-निर्मलतनुः (३) अतिधवल-जलधर-च्छेद-शुचिना दुकूलपटपल्लवेन तुहिनगिरिरिव गगनसरित्-स्रोतसा कृत-शिरोवेष्टनः सम्पादित-पितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्। (श)

ध्वानः, अतएव भुवनविवरव्यापी जगदन्तरालविसारी, अतिमुखरः अतीवतारतरः, आपूर्य्यमाणानां मुखमारुतै-र्भ्रियमाणानां, स्नानशङ्खानां स्नानसमयवादनेयशङ्खानां ध्वनिरुदपादि।

अत्र स्फुटयन्निवेति क्रियोत्प्रेक्षा, तथा भुवनविवरव्यापनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिश्च, अनयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) एवञ्चेति। किञ्चेति चार्थः। एवं क्रमेण अनया परिपाट्या, निर्वर्त्तिताभिषेकः कृतस्नानः देवगृहमगमदिति वक्ष्यमाणक्रियययाऽन्वयः। विषधरनिर्मोकवत् सर्पकञ्चुकवत् परिलघुनी अतीवसूक्ष्मे। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। धवले शुभ्रे धौते प्रक्षालिते वाससी वसनयुगलं अन्तरीयमुत्तरीयञ्च वस्त्रद्वयं परिधाय। वसनयुगलधारणं देवतापूजनाद्यर्थम्। यथा बृहन्नारदीये—"देवार्चाचमन-स्नान-व्रतश्राद्धक्रियासु च। न भवेन्मुक्तकेशश्च नैकवस्त्रधरस्तथा।" शरदम्बरैकदेश इव शरत्कालीयगगनैकपार्श्व इव जलक्षालनेन स्नानीय-जलद्वारा प्रक्षालनेन वृष्टिजलद्वारा प्रक्षालनेन च निर्म्मला तनुः शरीरं यस्य सः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। अतिधवलो यो जलधरच्छेदो मेघखण्डः तद्वत् शुचिः शुभ्रस्तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। दुकूलपटपल्लवेन क्षौमवसनविस्तारेण बृहत्क्षौमवस्त्रेणेत्यर्थः "पल्लवो विस्तरे षिड्गे किसले विटपे वने।" इति मेदिनी। गगनसरित्स्रोतसा मन्दाकिनीप्रवाहेण तुहिनगिरिर्हिमालय इव। अत्रोपमालङ्कारः। कृत-शिरोवेष्टनः विहितोष्णीषः। होमार्थमुष्णीषधारणम्। यथा स्मृतिः—

"उष्णीषेण विना राजन्! होमञ्चेत् कुरुते नरः। होतुश्चक्षुर्विनाशः स्यात् होता च विकलो भवेत्।"

सम्पादिता पितृजलक्रिया पितृतर्पणादिर्येन सः। "एवं स्नात्वा पितॄन् देवान् मनुष्यांस्तर्पयेन्नरः।" इति

শব্দ এবং মঙ্গলগানের শব্দ হইতে লাগিল, স্তুতিপাঠকগণের কোলাহল সেই সঙ্গে মিশিল; তাহাতে সেই শব্দ অতি বৃহৎ হইয়া, কর্ণবিবর যেন বিদীর্ণ করিয়া, জগতের আকাশমণ্ডল ব্যাপ্ত করিল।

(শ) এই ভাবে স্নানক্রিয়া সম্পাদন করিয়া মহারাজ শূদ্রক, জলপ্রক্ষালনে শরৎকালীয় আকাশের একদেশের ন্যায় নির্ম্মল-শরীর হইলেন এবং সর্পনির্ম্মোকের ন্যায় (সাপের খোলসের মত) সূক্ষ্ম ও ধবল বসনযুগল পরিধান করিয়া, অতিধবল মেঘখণ্ডের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ও বৃহৎ ক্ষৌমবস্ত্রে মস্তক বেষ্টন করিলেন; তাহাতে মন্দাকিনীর প্রবাহে পরিবেষ্টিতশৃঙ্গ হিমালয়ের

---

(१) निवर्त्तिताभिषेकः। (२) धौतवाससी। (३) जलाक्षालनविमलतनुः।

उपरचित-(१) पशुपतिपूजनश्च (२) निष्क्रम्य देवगृहान्निर्वर्त्तिताग्निकार्य्यो विलेपनभूमौ झङ्कारिभिरलिकदम्बकैरनुबध्यमानपरिमलेन मृगमद-कर्पूर-कुङ्कुम-वास-सुरभिणा चन्दनेनानुलिप्तसर्व्वाङ्गो विरचितामोदि-मालतीकुसुम-शेखरः कृतवस्त्रपरिवर्त्तः (३) रत्नकर्णपूरमात्राभरणः समुचितभोजनैः सह भूपतिभिराहारमभिमत-रसास्वाद-जातप्रीतिरवनिपो निर्वर्त्तयामास (४)। (ष)

गात्वङ्गादिति भावः। अभि सूर्य्याभिमुखः सन्, मन्त्रपूतेनेति मन्त्रपूतं तोयाञ्जलिमर्घ्यरूपं सूर्य्याय दत्वा प्रणम्येत्यर्थः। "यावन्न दीयते चार्घ्यं भास्कराय महात्मने। तावन्न पूजयेद्विष्णुं शङ्करं वा महेश्वरीम्।" इति ब्रह्मपुराणवचनेन शिवपूजनात् पूर्व्वं सूर्य्यार्घ्यदानविधानादिति भावः।

(ष) उपेति। उपरचितं कृतं पशुपतेः शिवस्य पूजनं येन सः। तथा च "वरं प्राणपरित्यागश्छेदनं शिरसोऽपि वा। नत्वनभ्यर्च्य भुञ्जीत भगवन्तं त्रिलोचनम्।" इति भविष्यपुराणवचनेन शिवपूजाया नित्यताभिधानादिति भावः। निर्वर्त्तिताग्निकार्य्यः विहिताग्निहोत्रहोमः। "यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुया"दिति श्रुतेरग्निहोत्रस्यापि नित्यत्वादित्यभिप्रायः। विलेपनभूमौ अङ्गरागस्थाने, झङ्कारिभिः 'झम्' इति शब्दं कुर्व्वद्भिः अलिकदम्बकैः भ्रमरसमूहैः अनुबध्यमानः अनुस्रियमाणः परिमलो विमर्द्दगन्धो यस्य तेन, मृगमदस्य कस्तूर्य्याः कर्पूरकुङ्कुमयोश्च वासेन गन्धेन सुरभिर्घ्राणतर्पणस्तेन। वास्यते विलासिभिरुपसेव्यत इति वासः सौरभम् "वास उपसेवाया"मिति चौरादिकाद्वासधातोः कर्म्मण्यल्। विरचितो विहितः आमोदिभिः सुरभिभिः मालतीकुसुमैः शेखरः शिरोभूषणं येन सः। "यथावयो यथाकालं यथाप्राणं प्रसाधन"मित्याह्निकतत्त्वधृतवचनादिदमङ्गरागादिकमिति बोध्यं। कृतो वस्त्रयोः पूर्व्वधृतवसनयोः परिवर्त्तः परिवर्त्तनं येन सः विधृतापरवस्त्र इत्यर्थः। पूजावस्त्रस्य सर्व्वदा परिधानानौचित्यादिति भावः। रत्नकर्णपूरमात्रं केवलं रत्नमयं कुण्डलमेव आभरणं तत्कालीनभूषणं यस्य सः। भोजनविश्रामकाले बहुतराभरणधारणेनोपद्रवसम्भवादिति भावः। समुचितं योग्यं भोजनं एकपङ्क्तिभोजनं येषां तैः स्वसमानवंशसदाचारादिशालिभिरिति भावः। भूपतिभिरन्यै राजभिः सह, अभिमतरसानां अभिलषितमधुरादिरसानां आस्वादेन जाता प्रीतिर्यस्य सः, अवनिपो राजा शूद्रकः, आहारं भोजनं निर्वर्त्तयामास निष्पादयामास।

न्যায় তাঁহাকে দেখা যাইতে লাগিল। তাহার পর তিনি পিতৃতর্পণ করিয়া, সূর্য্যের অভিমুখ হইয়া, মন্ত্রপূত জলাঞ্জলিদ্বারা সূর্য্যকে অর্ঘ্যদান ও প্রণাম করিয়া দেবগৃহে গমন করিলেন।

(ষ) দেবগৃহে যাইয়া শিবপূজাসমাপনান্তে তথা হইতে নির্গত হইয়া হোমগৃহে নিত্যহোম সমাধানপূর্ব্বক অঙ্গরাগস্থানে যাইয়া কস্তূরী, কর্পূর ও কুঙ্কুমের সৌরভে পরম সুগন্ধি চন্দনদ্বারা সকল অঙ্গ লিপ্ত করিলেন; তখন ভ্রমরগণ সৌরভলোভে সেই চন্দনের অনুসরণ করিতেছিল। তাহার পর তিনি মস্তকে সুগন্ধি মালতীকুসুমের শেখর ধারণ ও বস্ত্রপরিবর্ত্তন করিয়া, অলঙ্কারের মধ্যে কেবল কর্ণকুণ্ডল ধারণ করিলেন; পরে পংক্তিভোজনযোগ্য রাজগণের সহিত অভিমত নানাবিধ রসের আস্বাদনে প্রীতিলাভ করত ভোজনকার্য্য সম্পন্ন করিলেন।

---

(१) उपचरित···। (२)...पूजश्च। (३) कृताम्बरपरीवर्त्तः। (४) निवर्त्तयामास।

परिपीतधूमवर्त्तिः (१) उपस्पृश्य च गृहीतताम्बूलस्तस्मात् प्रमृष्ट-मणि-कुट्टिमप्रदेशादुत्थाय नातिदूरवर्त्तिन्या ससम्भ्रम-प्रधावितया प्रतीहार्य्या प्रसारितं बाहुं (२) अवलम्ब्यानवरत-(३) वेत्रलताग्रहण-प्रसङ्गादतिजरठ-(४)किसलयानु-कारि-करतलं करेण (५) अभ्यन्तरसञ्चारसमुचितेन परिजनेनानुगम्यमानो-(स) धवलांशुक-(६) परिगतपर्य्यन्ततया स्फटिकमणिमय-(७) भित्ति-बद्ध-(८) मिवोप-लक्ष्यमाणम्, (ह) अतिसुरभिणा मृगनाभिपरिमलेना-(९) मोदिना चन्दन-वारिणा सिक्तशिशिरमणिभूमिम्, (क्ष) अविरलविप्रकीर्णेन विमल-मणिकुट्टिम-

---

(स) परीति। उपस्पृश्य आचम्य आस्थानमण्डपमयासीदित्यन्वयः। "उपस्पर्शस्त्वाचमन"मित्यमरः। "सुप्त्वा क्षुत्वा च भुक्त्वा च निष्ठीव्योक्त्वाऽनृतं वचः। पीत्वापोऽध्येष्यमाणश्च आचामेत् प्रयतोऽपि सन्।" इति नारदवचनेन भोजनानन्तरमाचमनविधानादिति भावः। परिपीता धूमवर्त्तिः अग्निसंयोगेन धूमसंयुक्तताम्र-कूटादिनिर्म्मितवर्त्तिर्येन सः अभ्यासवशादिति भावः। गृहीतताम्बूलः मुखाभ्यन्तरे धृतपर्णः। प्रमृष्टो जलादिना परिष्कृतो यो मणिकुट्टिमप्रदेशः मणिमयबद्धस्थानं तस्मात्। प्रसारितं विस्तारितं। अनवरतं यद् वेत्रलताग्रहणं वेत्रयष्टिधारणं तस्य प्रसङ्गादभ्यासात्, अतिजरठं नितान्तपरिणतं किसलयं पल्लवं अनुकर्त्तुं शीलं यस्य तत् तादृशं किञ्चित् कठिनमित्यर्थः करतलं पाणितलं यस्य तादृशं बाहुं भुजं अवलम्ब्य धृत्वा, अभ्यन्तरे वाटी-मध्ये सञ्चारे गमनागमनयोः समुचितेन योग्येन नितान्तविश्वस्तेन परिजनेन परिचारकलोकेन।

(ह) धवलांशुकैरिति। धवलांशुकैः शुभ्रवसनैः परिगताः परिवेष्टिताः पर्य्यन्ताः प्रान्तदेशा यस्य तस्य भाव-स्तया हेतुना, स्फटिकमणिमयी या भित्तिः कुड्यं तया बद्धं निर्म्मितमिव उपलक्ष्यमाणं दृश्यमानम्।

अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। इतः प्रभृति द्वितीयान्तानि पदानि आस्थानमण्डपमित्यस्य विशेषणानि।

(क्ष) अतीति। अतिसुरभिणा अतीवघ्राणतर्पणेन मृगनाभिपरिमलेन कस्तूरीगन्धेन कारणेन आमोदिना परमसुगन्धिना चन्दनवारिणा चन्दनमिश्रितजलेन, सिक्ता धौता अतएव शिशिरा शीतला मणिभूमिर्यत्र तम्।

(স) তদনন্তর রাজা আচমন করিয়া ধূমবর্ত্তি (চুরুট) পান ও তাম্বূল চর্ব্বণ করিয়া দণ্ডায়-মান হইলে নিকটবর্ত্তিনী প্রতীহারী সম্ভ্রমের সহিত দ্রুত আগমন করিয়া, সর্ব্বদা বেত্রযষ্টি ধারণ করায় কিঞ্চিৎকঠিন-পল্লবসদৃশ-পাণিতলসম্পন্ন হস্ত প্রসারণ করিয়া দিল; তখন তিনি সেই হস্ত ধারণপূর্ব্বক সেই মণিময় ভূমি হইতে সভামণ্ডপে গমন করিলেন; তখন বাটীর মধ্যে গমনাগমন-সমর্থ বিশ্বস্ত পরিজনগণ তাঁহার অনুগমন করিল।

(হ) সেই সভামণ্ডপের প্রান্তদেশ শ্বেতবর্ণবস্ত্রে পরিবেষ্টিত থাকায় সভামণ্ডপ যেন স্ফটিকময় ভিত্তিনির্ম্মিতের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ক্ষ) নাসিকার অত্যন্ত তৃপ্তিকারী কস্তূরীর সৌরভে পরম সুগন্ধি চন্দনজলে সেই সভামণ্ডপের মণিময়ভূমি সিক্ত হওয়ায় শীতল হইয়াছিল; (ক) আকাশে

---

(१) धूपवर्त्तिः, धूपधूमवर्त्तिः। (२) प्रसारितबाहुं। (३) क्वचित् 'अनवरत' इति नास्ति।

(४) प्रसङ्गातति, प्रसङ्गादतति...। (५) करतल-करेण।

(६) धवलांशुकजवनिकापरिगत...। (७) स्फटिकमय...। (८)...निबद्ध...। (९) परिगतेन।

गगनतल-तारागणेनेव (१) कुसुमोपहारेण निरन्तरनिचितम्, (क) उत्कीर्ण-शालभञ्जिकानिवहेन सन्निहितगृहदेवतेनेव (२) गन्धसलिल-क्षालितेन कलधौत-मयेन स्तम्भसञ्चयेन विराजमानम्, (ख) अतिबहलागुरु-धूप परिमलम्, (ग) अखिल-विगलित-(३) जलनिवह-धवल-जलधर-शकलानुकारिणा कुसुमामोद-वासित-प्रच्छदपटेन, पृष्ठोपधानाध्यासितशिरोभागेन (४) मणिमय-प्रतिपादुका-प्रतिष्ठितपादेन पार्श्वस्थ रत्नपादपीठेन (५) तुहिनगिरि-शिलातल-सदृशेन शयनेन (६) सनाथीकृतवेदिकं भुक्तास्थानमण्डपमयासीत्। (घ)

(क) अविरलेति। अविरलं घनं यथा स्यात्तथा विप्रकीर्णेन विक्षिप्तेन, तथा विमलं स्वच्छं मणि-कुट्टिमं मणिमयभूमिः गगनतलमिव तस्य तारागणेनेव नक्षत्रसमूहेनेव स्थितेन, कुसुमोपहारेण पुष्पसमूहेन निरन्तरनिचितं सर्वदा व्याप्तम्। अत्र लुप्तोपमोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ख) उत्कीर्णेति। उत्कीर्णाः खोदिताः शालभञ्जिकानिवहाः पुत्तलिकासमूहो यत्र तादृशेन, अत-एव सन्निहिता आसन्ना गृहदेवता गृहाधिष्ठात्री देवता यत्र तादृशेनेव स्थितेन, गन्धसलिलैः सुगन्धिजलैः क्षालितो धौतस्तेन, कलधौतमयेन रौप्यनिर्मितेन, स्तम्भानां सञ्चयेन समूहेन विराजमानं शोभमानम्। अत्र देवता-सन्निधानोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) अतीति। अतिबहलः नितान्तप्रचुरः अगुरुधूपयोः परिमलः सौरभं यत्र तं।

(घ) अखिलेति। अखिलं समस्तं यथा स्यात्तथा विगलितो निःसृतः जलनिवहो यस्मात् स तथोक्तः, अतएव धवलः श्वेतो यो जलधरो मेघः तस्य शकलं खण्डं अनुकर्तुं शीलं यस्य तेन। अत्रार्थीयमुपमा-लङ्कारः। इतः प्रभृति तृतीयान्तानि 'शयनेन' इत्यस्य विशेषणानि। कुसुमानां आमोदेन सौरभेण वासितः सुरभीकृतः प्रच्छदपट आस्तरणवसनं यस्य तेन। पृष्ठस्य पृष्ठसमस्य यदुपधानं उपबर्हः तेन अध्यासित आश्रितः शिरोभागो मस्तकस्थापनप्रदेशो यस्य तेन। मणिमयीषु मणिनिर्मितासु प्रतिपादुकासु आधार-

---

নক্ষত্রসমূহের ন্যায় নির্ম্মল মণিময়ভূমিতে কুসুমসমূহ ঘনঘনভাবে বিক্ষিপ্ত হইয়া সর্ব্বদা সেই সভামণ্ডপে ব্যাপ্ত থাকিত; (খ) সুগন্ধিজলপ্রক্ষালিত রৌপ্যনির্ম্মিত স্তম্ভসমূহের গাত্রে নানাবিধ পুত্তলিকা খোদিত ছিল, তাহাতে বোধ হইত যেন, গৃহদেবতাগণ উপস্থিত হইয়া রহিয়াছেন; এইরূপ স্তম্ভসমূহে সভামণ্ডপ শোভা পাইতেছিল; (গ) অগুরু ও ধূপের সৌরভ অতিপ্রচুরপরিমাণে নির্গত হইতেছিল। (ঘ) সভামণ্ডপের মধ্যস্থানে রত্নময় বেদিকাতে একখানি পর্য্যঙ্কের উপর হিমা-লয়ের প্রস্তরখণ্ডের ন্যায় শুভ্রবর্ণ শয্যা নির্ম্মিত ছিল, সমস্ত জল নিঃসৃত হওয়ায় শ্বেতবর্ণ মেঘ-খণ্ডের অনুকারী ও পুষ্পবাসিত আস্তরণবস্ত্র সেই শয্যার উপরে বিন্যস্ত ছিল; শিয়রের দিকে

---

(१) विमलमणिकुट्टिमं गगनतलं तारागणेनेव। (२)...दैवतेनेव। (३) परिगलित...।
(४)...शिरोधाना। (५)...रत्नपीठेन, रत्नमयपीठेन। (६) तुहिनशिलातलसदृशशयनेन।

तत्र च शयने निषण्णः (१) क्षितितलोपविष्टया शनैः शनैरुत्सङ्ग-निहितासिलतया खड्गवाहिन्या नव-नलिन-दल-कोमलेन करसम्पुटेन संवाह्यमान-चरणस्तत्कालोचितदर्शनैरवनिपतिभिरमात्यैर्मित्रैश्च सह तास्ताः कथाः कुर्वन् मुहूर्त्तमिवासाञ्चक्रे । (ङ)

ततो नातिदूरवर्त्तिनीं "अन्तःपुराद्वैशम्पायनमादायागच्छ" इति समुपजात-तद्वृत्तान्त-प्रश्न-कुतूहलो राजा प्रतीहारीमादिदेश । (च)

पीठेषु प्रतिष्ठिताः पादाः पर्य्यङ्कपादा यस्य तेन । पार्श्वस्थं रत्नपादपीठं यस्य तेन । तुहिनगिरेर्हिमालय-पर्वतस्य यत् शिलातलं हिमाच्छन्नतया शुभ्रः प्रस्तरः, तत्सदृशेन अतीवशुभ्रवर्णेनेत्यर्थः, शयनेन शय्यया, सनाथीकृता सहिता वेदिका यस्य तादृशं आस्थानमण्डपं सभागृहं । अत्र तुहिनगिरिशिलातलसदृशेनेत्यार्थीय-मुपमालङ्कारः ।

(ङ) तत्रेति । शयने शय्यायां निषण्ण उपविष्टः शूद्रकः । उत्सङ्गे क्रोड़े निहिता स्थापिता असिलता लतावत् सरलो लम्बमानश्च कृपाणो यया तया, खड्गवाहिन्या असिधारिण्या शरीररक्षिण्या कयाचित् स्त्रिया, नवनलिनदलवत् नूतनपद्मपत्रवत् कोमलेन मृदुलेन, करसम्पुटेन पाणियुगलेन शनैः शनैः संवाह्यमान-चरणः आमृश्यमाणपदयुगलः । तस्मिन् काले उचितं राज्ञा स्वयमेव निर्द्धारणात् योग्यं, दर्शनं साक्षात्कारो येषां तैः । तास्ताः पूर्व्वसूचिताः नानाविधा इति वा कथा आलापान् । मुहूर्त्तं कियन्तं कालं, आसाञ्चक्रे अवतस्थे । इवशब्दो वाक्यालङ्कारे । नवनलिनेत्यत्र लुप्तोपमालङ्कारः ।

(च) ततेति । समुपजातं तस्य शुकस्य वृत्तान्तप्रश्ने कुतूहलं यस्य सः । वैशम्पायनं तदाख्यं तं शुकम् ।

পট্টবসন-নির্ম্মিত বালিস ছিল ; সেই পর্য্যঙ্কের পাদসমূহ (পায়াগুলি) পাদুকাকৃতি মণিময় আধারের উপর সংস্থাপিত ছিল ; এবং তাহার পার্শ্বে রত্নময় একখানি পাদপীঠ স্থাপিত ছিল ।

(ঙ) রাজা সেই শয্যার উপরে উপবেশন করিলেন, তখন অসিধারী কোন স্ত্রীলোক আসিয়া ভূতলে উপবেশনপূর্ব্বক সেই অসিখানি ক্রোড়ে রাখিয়া, নূতন পদ্মপত্রের ন্যায় কোমল পাণিযুগলে রাজার চরণযুগল সংবাহন করিতে লাগিল । সেই সময়ে যাহাদের রাজদর্শন নির্দ্দিষ্ট ছিল, সেই সকল সামন্তরাজগণ, মন্ত্রিগণ ও মিত্রগণের সহিত নানাবিধ আলাপ করত রাজা কিয়ৎকাল অবস্থান করিলেন ।

(চ) তাহার পর সেই শুকপক্ষীর বৃত্তান্ত জানিবার নিমিত্ত কৌতূহল জন্মিলে রাজা অনতি-দূরবর্ত্তিনী প্রতীহারীকে আদেশ করিলেন,—"অন্তঃপুর হইতে বৈশম্পায়নকে নিয়া আইস ।"

---

(१) शयनतलनिषण्णः ।

सा क्षितितल-निहित-जानु-करतला "यथाज्ञापयति देवः" इति शिरसि कृत्वाज्ञां यथादिष्टमकरोत्। (छ)

अथ मुहूर्त्तादेव (१) वैशम्पायनः प्रतीहार्य्या गृहीतपञ्जरः कनकवेत्रलतावलम्बिना किञ्चिदवनत-(२)पूर्व्वकायेन सितकञ्चुकाच्छन्न-(३) वपुषा जराधवलित-मौलिना गद्गदस्वरेण मन्दमन्दसञ्चारिणा (४) विहङ्गजातिप्रीत्या जरत्कलहंसेनेव कञ्चुकिनानुगम्यमानो राजान्तिकमाजगाम। (ज)

क्षितितलनिहितकरतलस्तु (५) कञ्चुकी राजानं व्यज्ञापयत् (६) "देव! देव्यो विज्ञापयन्ति, देवादेशादेष वैशम्पायनः स्नातः कृताहारश्च देवपादमूलं

(छ) सेति। सा प्रतीहारी, क्षितितले निहिते स्थापिते जानू करतले च यया सा।

(ज) अथेति। गृहीतं पञ्जरं यस्य सः। कनकवेत्रलतावलम्बिना सुवर्णखचितवेत्रयष्टिधारिणा, किञ्चिदवनतः वार्द्धक्यवशादीषन्नम्रः पूर्व्वकायो नाभेरूर्द्ध्वदेशो यस्य तेन, सितकञ्चुकेन श्वेतकूर्पासकेन आच्छन्नं आवृतं वपुः शरीरं यस्य तेन, जरया वार्द्धक्येन धवलितः श्वेतीकृतः मौलिः केशपाशो यस्य तेन, गद्गदः अस्पष्टः स्वरः कण्ठध्वनिर्यस्य तेन। कञ्चुकिना "अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः। सर्व्वशास्त्रार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते।" इत्युक्तलक्षणेन। विहङ्गजातौ पक्षिजातौ या प्रीतिः प्रणयस्तेन स्वजातिप्रीत्येत्यर्थः जरत्कलहंसेनेव केनचित् वृद्धकादम्बेनेव अनुगम्यमानो वैशम्पायनः स शुकः। अत्रोपमालङ्कारः।

(झ) क्षितीति। देव्यो महिष्यः। देवस्य भवतः आदेशान्नियोगात्। तस्मिन् कञ्चुकिनि गते तस्मात् प्रस्थिते सति। अभ्यन्तरे अन्तःपुरे भवता अभिमतं आकाङ्क्षितं किञ्चित् अशनजातं

(ছ) প্রতীহারী জানুযুগল ও পাণিযুগল ভূতলে সংস্থাপন করিয়া বলিল,—"মহারাজ যে আদেশ করেন" এই কথা বলিয়া রাজার আজ্ঞা মস্তকে ধারণ করিয়া সেই আজ্ঞানুসারে কার্য্য করিল।

(জ) তদনন্তর প্রতীহারী মুহূর্ত্তমধ্যেই পঞ্জর ধারণ করিয়া বৈশম্পায়নকে রাজার নিকটে আনয়ন করিল; স্বজাতির প্রতি প্রণয়বশতঃ বৃদ্ধ কলহংসের ন্যায় মন্দমন্দগামী এক বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ সেই বৈশম্পায়নের পশ্চাৎ পশ্চাৎ আগমন করিলেন; তাঁহার হস্তে একখানি স্বর্ণখচিত বেত্রযষ্টি ছিল, বার্দ্ধক্যবশতঃ নাভির ঊর্দ্ধদেশ ঈষৎ অবনত হইয়াছিল, শ্বেতকঞ্চুকে (আলখেল্লায়) তাঁহার শরীর আবৃত ছিল, বার্দ্ধক্যনিবন্ধন কেশকলাপ শ্বেতবর্ণ এবং কণ্ঠস্বর অস্পষ্ট হইয়া গিয়াছিল।

(ঝ) সেই বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ ভূতলে করযুগল সংস্থাপনপূর্ব্বক রাজাকে জানাইলেন,—"মহারাজ! মহিষীগণ আপনাকে জানাইতেছেন যে, আপনার আদেশে বৈশম্পায়নকে স্নান ও আহার করান হইয়াছে এবং এখন প্রতীহারী আপনার চরণসমীপে উহাকে নিয়া গেল।" এই কথা

---

(१) मुहूर्त्तादिव। (२) आनत...। (३)...अवच्छन्न...। (४)...चारिणा। (५) विन्यस्तकर-तलस्तु, निहितकरस्तु। (६) व्यजिज्ञापयत्।

प्रतोहार्य्यानीतः” इत्यभिधाय गते च (१) तस्मिन् राजा वैशम्पायनमपृच्छत्—“कच्चित् (२) अभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किञ्चिदशनजातम्?” इति (ञ)

स प्रत्युवाच—“देव! किंवा नास्वादितम्। आमत्त-कोकिल-लोचनच्छवि-नीलपाटलः कषायमधुरः प्रकाममापीतो जम्बूफलरसः, (ञ) हरि-नखर-भिन्न-मत्त-मातङ्ग-कुम्भ-मुक्त-रक्ताद्र-मुक्ताफल-त्वींषि खण्डितानि दाड़िम-(३) बीजानि, (ट) नलिनीदल-हरिन्ति द्राक्षाफल-स्वादूनि च दलितानि (४) स्वेच्छया प्राचीनामलकीफलानि। (ठ) किंवा प्रलपितेन बहुना, सर्वमेव देवीभिः स्वयं करतलोपनीयमानममृतायते” इति। (ड)

आहार्य्यवस्तुसमूहः आस्वादितमिति काकुः भक्षितं किमित्यर्थः, इति कच्चित् वेदितुमिच्छामि। “कच्चित् कामप्रवेदने” इत्यमरः।

(ञ) स इति। स शुकः, प्रत्युवाच उत्तरं दत्तवान्। किंवा नास्वादितं भक्षितं अपि तु अस्मदास्वाद्यं सर्वमेवास्वादितमित्यर्थः। आमत्तस्य मधुपानमत्तस्य कोकिलस्य लोचनवत् नयनवत् छविर्द्युतिर्यस्य सः। नीलश्चासौ पाटलः श्वेतरक्तश्चेति नीलपाटलः “वर्णो वर्णेने”ति कर्म्मधारयः। कषायः कषायरसश्चासौ मधुरो मिष्टरसश्चेति कषायमधुरः, मधुरस्य विशेष्यत्वविवक्षया कर्म्मधारयः। प्रकामं पर्य्याप्तं यथा स्यात्तथा। अत्र आमत्तेत्यादौ लुप्तोपमालङ्कारः।

(ट) हरीति। हरेः सिंहस्य नखरैर्नखैः भिन्ना विदारिता ये मत्तमातङ्गानां मत्तहस्तिनां कुम्भा मस्तकस्था मांसपिण्डाः, तेभ्यो मुक्तानि वहिर्गतानि यानि रक्ताद्राणि रुधिरस्तिमितानि मुक्ताफलानि मौक्तिकानि तेषां त्विष इव त्विषः कान्तयो येषां तानि। दाड़िमबीजानि दाड़िम्बफलबीजानि खण्डितानि चञ्चुपुटेन खण्डयित्वा भक्षितानि। अत्रापि लुप्तोपमा।

(ठ) नलिनीति। नलिनीदलवत् पद्मिनीपत्रवत् हरिन्ति हरिद्वर्णानि, तथा द्राक्षाफलवत् स्वादूनि सुरसानि च प्राचीनामलकीफलानि चीरधात्रीफलानि, दलितानि चञ्चुपुटेनामर्द्य भक्षितानि। अत्र लुप्तोपमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ड) किंवेति। बहुना प्रलपितेन कथितेन किंवा फलं आनुपूर्व्वीवर्णनं निष्प्रयोजनमित्यर्थः।

বলিয়া ব্রাহ্মণ প্রস্থান করিলে রাজা বৈশম্পায়নকে জিজ্ঞাসা করিলেন,—“তুমি অন্তঃপুরমধ্যে অভিমত কিছু আহার্য্যবস্তু আহার করিয়াছ কি? ইহা আমি জানিতে ইচ্ছা করি।”

(ঞ) শুক উত্তর করিল,—“মহারাজ! কি আহার না করিয়াছি? মধুপানমত্ত কোকিলের নয়নের ন্যায় কান্তিসম্পন্ন, নীল ও পাটলবর্ণ এবং কষায় ও মধুর রসসমন্বিত জম্বুফলের রস যথেষ্ট পান করিয়াছি; (ট) সিংহকর্তৃক নখদ্বারা বিদারিত মত্ত হস্তীর কুম্ভ হইতে নির্গত রক্তাক্ত মুক্তার ন্যায় প্রভাবিশিষ্ট দাড়িম্বফলের বীজ (দানা) চঞ্চুপুট দ্বারা খণ্ডনপূর্ব্বক ভক্ষণ করিয়াছি; (ঠ) আর পদ্মপত্রের ন্যায় হরিদ্বর্ণ ও দ্রাক্ষাফলের ন্যায় সুস্বাদু

---

(১) অপগতে। (২) কচ্চিত্। (৩) দাড়িমী...। (৪) চূর্ণিতানি।

एवंवादिनो वचनमाक्षिप्य नरपतिरब्रवीत्—"आस्तां तावत् सर्व्वमेवेदम्, (१) अपनयतु नः कुतूहलम्, आवेदयतु भवानादितः प्रभृति कार्त्स्न्येनात्मनः, जन्म कस्मिन् देशे, भवान् कथं जातः, केन वा नाम कृतम्, का ते माता, कस्ते पिता,(२) कथं वेदानामागमः, कथं शास्त्राणां परिचयः, कुतः कलाः समासादिताः, (३) किं (४) जन्मान्तरानुस्मरणम्, उत वरप्रदानम्, अथवा विहगवेश-(५) धारी कश्चिच्छन्नो(६)निवससि, क्व पूर्वमुषितम्, कियद्वा वयः, कथं पञ्जरबन्धः, कथं चण्डाल-(७) हस्तगमनम्, इह वा कथमागमनम्?" (ढ)

देवीभिः राजभार्य्याभिः, स्वयमात्मभिर्न त्वन्यपरिचारिकादिभिरिति भावः। करतलैरुपनीयमानं मह्यं दीयमानं सर्व्वमेव वस्तु अमृतायते पीयूषवदाचरति सुरसत्वादिति भावः। अत्र क्यङ्गतोपमालङ्कारः। अमृतायत इत्यतीत-सामीप्ये वर्त्तमाना।

(ढ) एवमिति। आक्षिप्य असमाप्तावेव निवार्य्य। कार्त्स्न्येन साकल्येन। कार्त्स्न्येनेत्यत्र दुःश्रवत्वदोषः परुषवर्णमयत्वात्, साकल्येनेति पाठे तु तत्समाधानम्। नाम कृतं वैशम्पायनेति संज्ञा कृता। आगमः प्राप्तिर्ज्ञानलाभ इति यावत्। परिचयो विशेषज्ञानम्। कुतः कस्माज्जनात् कलाश्चतुःषष्टि-प्रकारा नृत्यगीतादिविद्याः समासादिता लब्धाः। किं कथं जन्मान्तरस्य जन्मान्तरवृत्तान्तस्य अनुस्मरणं स्मृतिः जन्मान्तरीयपुण्यबलात् किमिति भावः। एतच्च शुकस्य स्नानाहारसमये तत्रादेवावगतानां राज्ञीनां परिचारिकाणां वा सकाशात् शूद्रकेणावगतमिति मन्तव्यं अन्यथा शुकस्य जातिस्मरत्वज्ञानाभावे शूद्रकस्य तदुत्पत्ति-प्रश्नानुपपत्तिरिति ध्येयम्। उत अथवा वरप्रदानं कस्यचित् सिद्धमहापुरुषस्य वरदानेन एतज्जन्मान्तरानुस्मरणं लब्धमित्यर्थः। कश्चिन्महात्मा छन्नो गुप्तः सन्। उषितमवस्थितम्। पञ्जरबन्धः पञ्जरमध्ये तव बन्धनम्।

প্রাচীনামলকী (পানী আমলা) ইচ্ছানুসারে চর্বণ করিয়া ভক্ষণ করিয়াছি। (ড) অধিক বলায় প্রয়োজন নাই, দেবীগণের স্বহস্ত-প্রদত্ত সমস্ত বস্তুই আমার নিকট অমৃতের ন্যায় বোধ হইয়াছে।"

(ঢ) শুক এইরূপ বলিতে লাগিলে রাজা তাহার বাক্যে বাধা দিয়া বলিলেন,—"এই সমস্তই এখন থাক ; তুমি আমাদের কৌতুকের নিবৃত্তি কর ; প্রথম হইতে নিজের সমগ্র বৃত্তান্ত বল ; কোন্ দেশে তোমার জন্ম, তুমি কি ভাবে জন্মিয়াছ, তোমার 'বৈশম্পায়ন' নাম কে করিয়াছে, তোমার মাতা কে, পিতা কে, কি করিয়া তুমি বেদজ্ঞান লাভ করিয়াছ, অন্যান্য শাস্ত্রজ্ঞানই বা কি ভাবে লাভ করিয়াছ, জন্মান্তরীয় পুণ্যবলেই কি তোমার জন্মান্তরের বৃত্তান্ত স্মরণ হইয়াছে, কিংবা কোন মহাপুরুষের বরদানের প্রভাবে তোমার জন্মান্তরের বৃত্তান্ত স্মরণ করিবার ক্ষমতা জন্মিয়াছে, অথবা পক্ষিরূপে তুমি কোন মহাপুরুষ গুপ্তভাবে অবস্থান করিতেছ, পূর্ব্বে কোথায় ছিলে, তোমার বয়স কত, কিরূপে পিঞ্জরে আবদ্ধ হইলে, কি করিয়া চণ্ডালের হস্তগত হইয়াছ এবং এখানেই বা কি জন্য আসিয়াছ?"

---

(१) सर्व्वम्। (२) का माता, कः पिता। (३) आसादिताः। (४) किंवृत्तं।
(५) विहङ्गवेश...। (६) छद्म। (७) चाण्डाल...।

वैशम्पायनस्तु स्वयमुपजातकुतूहलेन सबहुमानमवनिपतिना पृष्टो मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरमब्रवीत्—"देव! महतीयं कथा, यदि कौतुक-(१) माकर्ण्यताम्। (ण)

अस्ति पूर्वापर-जलनिधि-वेलावलग्ना (२) मध्यदेशालङ्कारभूता मेखलेव भुवः, (त) वन-करिकुल-मदजल-सेक-संवर्द्धितैरतिविकच-धवल-कुसुम-निकरमत्युच्चतया तारा-(३) गणमिव शिखरदेशलग्न-(४) मुद्वहद्भिः पादपैरुपशोभिता, (थ) मदकल-कुररकुल-दश्यमान-मरीचपल्लवा, (द) करि-कलभ-कर-मृदित-तमाल-

(ण) वैशेति। सबहुमानं सादरं। स्वयं अवनिपतिनेत्यन्वयः। ध्यात्वा विचिन्त्य। एषा चिन्ता तु पूर्ववृत्तान्तावलीस्मरणार्थेति बोध्यम्। इवशब्दो वाक्यालङ्कारे। कथा वृत्तान्तः।

(त) अस्तीति। अस्ति विन्ध्याटवी नामेति बहुपरवर्त्तिना कर्त्तृपदेनान्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि विन्ध्याटवीविशेषणानि। पूर्वापरौ पूर्वपश्चिमदिग्वर्त्तिनौ यौ जलनिधी समुद्रौ तयोर्वेलयोस्तीरयोः अवलग्ना संयुक्ता, पूर्वसागरतीरादारभ्य पश्चिमसागरतीरपर्य्यन्तविस्तृतेत्यर्थः। तदानीं विन्ध्याटवी ईदृश्येवासीदिति बोध्यम्। दक्षिणोत्तरयोर्विन्ध्याचलहिमाचलयोः पूर्वपश्चिमयोश्च प्रयागकुरुक्षेत्रयोर्मध्यवर्त्ति स्थानं मध्यदेशस्तस्य अलङ्कारभूता नानाविधतरुलतासिंहव्याघ्रभादिपूर्णतया भूषणस्वरूपा, अतएव भुवः पृथिव्याः मेखला काञ्चीदामेव। अत्र मेखलात्वजात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। मध्यदेशमाह मनुः—

"हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि। प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्त्तितः।"

(थ) वनेति। वनकरिकुलस्य वन्यहस्तिसमूहस्य मदजलसेकेन दानवारिसेचनेन संवर्द्धितैः वृद्धिं प्रापितैः, तथा अत्युच्चतया शिखरदेशलग्नं शिरोभागसंयुक्तं तारागणं नक्षत्रसमूहमिव अतिविकचानां सम्पूर्णप्रस्फुटितानां कुसुमानां निकरं समूहं उद्वहद्भिः धारयद्भिः पादपैर्वृक्षैः उपशोभिता अलङ्कृता। अत्र शिखरदेशलग्नं तारागणमिवेति जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(द) मदेति। मदकलैर्मदमत्तैः कुररकुलैः उत्क्रोशपक्षिसमूहैः दश्यमानानि चञ्चुपुटेन दंष्ट्रा आस्वाद्यमानानि मरीचपल्लवानि यस्यां सा।

(ণ) রাজা কৌতুকবশতঃ আদরের সহিত এই সমস্ত বিষয় জিজ্ঞাসা করিলে বৈশম্পায়ন কিয়ৎকাল চিন্তা করিয়া আদরের সহিত বলিল,—"মহারাজ! এই বৃত্তান্ত অতিবৃহৎ, তথাপি যদি আপনার কৌতুক হইয়া থাকে, তবে শুনুন।

(ত) পূর্ব্বসাগরের তীর হইতে পশ্চিমসাগরের তীর পর্য্যন্ত বিস্তৃত, মধ্যদেশের অলঙ্কারস্বরূপ ও পৃথিবীর মেখলার ন্যায় বিন্ধ্যাটবী নামে প্রসিদ্ধ এক অরণ্য আছে; (থ) বন্য হস্তিসমূহের মদজলসেকে সংবর্দ্ধিত এবং অত্যন্ত উচ্চতানিবন্ধন মস্তকসংলগ্ন নক্ষত্রসমূহের ন্যায় প্রস্ফুটিত শ্বেতবর্ণ কুসুমসমূহধারী নানাবিধ বৃক্ষ সেই বনের শোভা জন্মাইতেছে; (দ) কোথাও মদমত্ত কুরুলপক্ষিগণ (বাজকুরাল) চঞ্চুদ্বারা মরীচের পল্লব দংশন করিতেছে; (ধ) কোথাও বা হস্তিশাবকগণ

(१) कौतूहलं। (२)…वेलावनलग्ना। (३) तारका…। (४)…प्रदेशसंलग्नं।

किसलयामोदिनी, (ध) मधुमदोपरक्त-केरली-कपोल-कोमल-च्छविना (१) सञ्चरद्वनदेवता-चरणालक्तक-रस-रञ्जितेनेव पल्लवचयेन संछादिता, (न) शुककुल-दलित-दाड़िमीफल-द्रवार्द्रीकृत-तलैरतिचपल-कपिकुल-(२) कम्पित-कम्पिल्ल-च्युत-पल्लव-फल-शकलैः (३) अनवरत-निपतित-कुसुम-रेणु-पांशुलैः पथिक-जन-रचित-लवङ्ग-पल्लव-संस्तरैः अतिकठोर-नारिकेल-केतकी-करीर-वकुल-परिगत-प्रान्तैः (४) ताम्बूलीलतावनद्ध-पूग-षण्ड-मण्डितैर्वनलक्ष्मी-वासभवनैरिव (५) विराजिता लतामण्डपैः, (प) उन्मद-मातङ्ग-कपोलस्थल-गलित-(६) सलिल-सिक्तैव

(ध) करीति। करिकलभानां हस्तिशावकानां करैः शुण्डाभिः, मर्दितैर्मर्द्दितैः तमालकिसलयैः तमालतरुपल्लवैः आमोदिनी निर्य्यासनिर्गमात् सौरभवती।

(न) मध्विति। मधुमदेन मद्यपानजनितमत्ततया उपरक्ता ईषल्लोहितवर्णा ये केरलीनां केरलदेशीयरमणीनां कपोला गण्डदेशास्तेषामिव कोमला मृदुला छविर्द्युतिर्यस्य तेन। सञ्चरन्तीनां भ्रमन्तीनां वनदेवतानां वनाधिष्ठातृदेवीनां चरणालक्तकरसैः पादस्थितलाक्षाद्रवैः रञ्जितेनेव रक्तवर्णीकृतेनेव पल्लवचयेन नवदलानां किसलयसमूहेन संछादिता आवृता। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(प) शुकेति। शुककुलेन कीरपक्षिसमूहेन दलितानां चञ्चुपुटेन खण्डितानां दाड़िमीफलानां द्रवैः रसैः आर्द्रीकृतानि क्लिन्नितानि तलानि निम्नवर्त्तिभूमयो येषां तैः। इतः प्रभृति तृतीयान्तानि वक्ष्यमाणस्य 'लतामण्डपै'रित्यस्य विशेषणानि। अतिचपलैर्नितान्तचञ्चलैः कपिकुलैर्वानरगणैः कम्पितेभ्यः सञ्चालितेभ्यः कम्पिल्लेभ्यस्तद्विशेषेभ्यः च्युतानि पतितानि पल्लवफलानां शकलानि खण्डानि येषु तैः। अनवरत-निपतितानां कुसुमानां रेणुभिः परागैः पांशुलाः सधूलीकास्तैः। पथिकजनैः रचिता उपवेशनार्थं निर्म्मिताः लवङ्गपल्लवानां

শুণ্ডদ্বারা তমালবৃক্ষের পল্লব ভঙ্গ করায় সৌরভ নির্গত হইতেছে; (ন) মদ্যপানে রক্তবর্ণ, কেরল-দেশীয় (আলেওয়ারের) কামিনীগণের গণ্ডস্থলের ন্যায় কোমল কান্তিসম্পন্ন পল্লবসমূহ, ইতস্ততো-ভ্রমণকারিণী বনদেবতাগণের চরণের অলক্তক-রসে যেন রঞ্জিত হইয়া কোথাও বনভূমি আচ্ছাদন করিয়া রহিয়াছে; (প) নানাবিধ লতা পরস্পর মিলিত হইয়া কোন কোন স্থানে মণ্ডপের আকার ধারণ করিয়া রহিয়াছে, শুকপক্ষিগণ চঞ্চুদ্বারা দাড়িম্বফলের বীজ (দানা) খণ্ডন করায় তাহার রসে সেই লতামণ্ডপের তলদেশ আর্দ্র হইতেছে; অত্যন্ত চঞ্চল বানরগণ কম্পিত করায় কমলাবৃক্ষ হইতে ফল ও পল্লব, সেই লতামণ্ডপের মধ্যে পতিত হইতেছে; অবিশ্রান্ত নিপতিত কুসুমসমূহের রেণুতে লতামণ্ডপগুলির তলদেশ ধূলিময় হইতেছে; নারিকেল, কেতকী (কেওয়া), করীর ও বকুলবৃক্ষ সেই লতামণ্ডপসমূহের চতুর্দ্দিক্ বেষ্টন করিয়া রহিয়াছে; তাম্বূললতাবেষ্টিত

---

(१)...कपोलच्छविना। (२) ...कपिकम्पित...। (३)...कल्लोल...शकलैः। (४)...केतकीपरिगतप्रान्तैः।
(५)...वासभुवनैरिव। (६)...मदज, मदजल...।

निरन्तर(१) मेलालतावनेन मदगन्धिनान्धकारिता, (फ) नख-मुख-लग्नेभ-कुम्भ-मुक्ताफल-लुब्धैः शबरसेनापतिभिरभिहन्यमानकेशरिशता (ब) प्रेताधिप-नगरीव सदा-सन्निहितमृत्यु-भीषणा महिषाधिष्ठिता च, (भ) समरोद्यतपताकि-नीव (२) बाणासनारोपित-शिलीमुखा विमुक्त-(३)सिंहनादा च, (म) कात्यायनीव

संसरा आसनानि येषु तैः। अतिकठोरा नितान्तकठिनाः परिणता इत्यर्थः ये नारिकेलाः स्वनामप्रसिद्धवृक्षाः, केतक्योऽपि तथा, करीराः पत्रविहीनाः सकण्टका वृक्षविशेषाः बकुलाश्च तैः परिगताः परिवेष्टिताः प्रान्ताः पर्य्यन्तदेशा येषां तैः, ताम्बूलीलताभिः अवनद्धं परिवेष्टितं यत् पूगषण्डं गुवाकवृक्षसमूहः तेन मण्डितैर्भूषितैः, अतएव वनलक्ष्म्याः काननश्रियः वासभवनैरिव वासगृहैरिव लतामण्डपैः मण्डपाकारधारिणीभिर्मिलितलताभिः विराजिता शोभिता। अत्र दाडिम्बफलद्रवेण तत्प्रदेशस्य आर्द्रीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, वनलक्ष्मीवासभवनैरिवेति जात्युत्प्रेक्षा च अनयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(फ) उन्मदेति। उन्मदानां मातङ्गानां हस्तिनां कपोलस्थलेभ्यो गण्डदेशेभ्यो गलितैः सलिलैः मदजलैः सिक्तेनेव सता, अतएव मदस्य गजदानजलस्य गन्ध इव गन्धो यस्मिन् तेन, एलालतानां वनेन निरन्तरं घनं यथा तथा अन्धकारिता आवृता। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) नखेति। नखमुखलग्नेषु सिंहानां नखराग्रस्थितेषु इभकुम्भमुक्ताफलेषु करिकुम्भसम्बन्धिमौक्तिकेषु लुब्धैर्लोलुपैः, शबरसेनापतिभिः व्याधसैन्याध्यक्षैः अभिहन्यमानं व्यापाद्यमानं केशरिशतं सिंहसमूहो यस्यां सा।

(भ) प्रेतेति। प्रेताधिपस्य यमस्य नगरीव संयमनी पुरीव, सदा सन्निहितेन अवस्थितेन मृत्युना यमेन, अन्यत्र हिंस्रजन्तुभिराक्रमणसम्भवान्मरणेन भीषणा भयानका, तथा महिषैर्वन्यगवलैः, अन्यत्र महिषेण यमवाहनी-भूतमहिषेण अधिष्ठिता आश्रिता। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(म) समरोद्यतेति। समराय युद्धाय उद्यता प्रवृत्ता या पताकिनी सेना सा इव, बाणासु नीलझिण्टीषु असनेषु पीतशालेषु च वृक्षेषु आरोपिताः कुसुमसौरभात् निवेशिताः शिलीमुखा भ्रमरा यया सा, अन्यत्र तु

গুবাকবৃক্ষ সকল, সেই লতামণ্ডপসমূহের শোভা বর্দ্ধন করিতেছে; সুতরাং বনলক্ষ্মীর বাসগৃহ-সমূহের ন্যায় অবস্থিত সেই লতামণ্ডপসমূহদ্বারা বিন্ধ্যাটবী সাতিশয় শোভা পাইতেছে। (ফ) মত্ত হস্তিগণের গণ্ডস্থল হইতে নির্গত মদজলে সিক্ত হইয়াই যেন এলাচীলতার বন, মদজলের ন্যায় সৌরভসম্পন্ন হইয়া কোন কোন স্থান ঘনভাবে আচ্ছাদন করিয়া রাখিয়াছে; (ব) ব্যাধসেনাপতি-গণ, সিংহদিগের নখ হইতে নির্গত গজমুক্তার লোভে বহুতর সিংহ বিনাশ করিতেছে; (ভ) আর সেই বিন্ধ্যাটবী যমপুরীর ন্যায় সর্ব্বদা মৃত্যু (মরণ ও যম) উপস্থিত থাকায় ভয়ঙ্কর ও মহিষের আশ্রয় হইয়া রহিয়াছে; (ম) সমরে প্রবৃত্ত সেনা যেমন ধনুতে বাণ আরোপণ করে এবং সিংহনাদ করে, বিন্ধ্যাটবীও তেমন নীলঝিণ্টী ও পিয়াশাল বৃক্ষে ভ্রমরসমূহ বসাইতেছে এবং সিংহের

---

(१) अनवरतं। (२)···सेनेव। (३) विविक्त···।

गैंडा या उसकी नाक का सींग

प्रचलित-खड्गभीषणा रक्तचन्दनालङ्कृता च, (य) कर्णीसुतकथेव सन्निहित-विपुलाचला शशोपगता च, (र) कल्पान्तप्रदोषसन्ध्येव प्रनृत्यन्नीलकण्ठा (१) पल्लवारुणा च, (ल) अमृतमथनवेलेव श्रीद्रुमोपशोभिता वारुणी-(२) परिगता च, (व) प्रावृडिव घनश्यामला अनेकशतह्रदालङ्कृता च, (श) चन्द्रमूर्त्तिरिव

बाणासनेषु धनुःषु आरोपिताः संस्थापिताः शिलीमुखाः शरा यया सा, तथा विमुक्ताः अबाधं प्रचरिताः सिंहानां केशरिणां नादा गर्जितानि यस्यां सा, पक्षे विमुक्तः वीरैः परित्यक्तः सिंहनादः चूत्कारा यस्यां सा। पूर्णोपमालङ्कारः।

(य) कात्यायनीति। कात्यायनी दुर्गेव, प्रचलितैरितस्ततः सञ्चरद्भिः खड्गैः गण्डकैः, प्रचलितेन प्रहाराय चञ्चलीभूतेन खड्गेन कृपाणेन च भीषणा, तथा रक्तचन्दनैस्तदाख्यवृक्षैः रक्तचन्दनानुलेपनेन च अलङ्कृता। पूर्णोपमा।

(र) कर्णीति। कर्णीसुतस्य चौर्य्यशास्त्रप्रवर्त्तकक्षत्रियविशेषस्य कथा उपाख्यानमिव, सन्निहिता आसन्ना विपुला विशाला अचलाः पर्वता यस्यां सा, पक्षे, सन्निहितौ उपस्थितौ विपुलाचलौ तदाख्यौ सखायौ यस्यां सा, तथा शशैर्मृगविशेषैः, पक्षे शशेन शशनाम्ना मन्त्रिणा उपगता विशिष्टा। तथा च बृहत्कथायां—"कर्णीसुतः करटकः स्तेयशास्त्रप्रवर्त्तकः। तस्य ख्यातौ सखायौ द्वौ विपुलाचलसंज्ञितौ। शशो मन्त्रिवरस्तस्य...।" पूर्णोपमा।

(ल) कल्पान्तेति। कल्पान्ते प्रलयकाले प्रदोषसन्ध्या सायंसन्ध्येव, प्रनृत्यन्तः मदेन नटन्तः नीलकण्ठा मयूरा यस्यां सा, अन्यत्र तु प्रनृत्यन् जगत्संहारामोदेन नटन् नीलकण्ठो रुद्रो यस्यां सा, पल्लवैः नानातरुलता-किसलयैः अरुणा उपरि रक्तवर्णा, पक्षे पल्लववदरुणा। पूर्णोपमा।।

(व) अमृतेति। अमृताय यन्मथनं क्षीरोदसागरस्य मन्थनं तस्य वेला समय इव, श्रीद्रुमैर्बिल्ववृक्षैः, श्रिया लक्ष्म्या, द्रुमेण कल्पद्रुमेण च उपशोभिता, वारुणीं पश्चिमां दिशं परिगता प्राप्ता भारतवर्षस्य पश्चिमप्रान्त-गामित्वात्, पक्षे वारुणीं सुरां परिगता प्राप्ता, तस्या अपि मथ्यमानसमुद्रोत्पन्नत्वात्। पूर्णोपमा।

(श) प्रावृडिति। प्रावृट् वर्षाकाल इव घना वृक्षादिभिर्निरन्तरा चासौ अतएव श्यामला श्यामवर्णा

গর্জ্জন সম্পন্ন হইতেছে ; (য) দুর্গাদেবী যেমন খড়্গাসঞ্চালনে ভীষণমূর্ত্তি ও রক্তচন্দনের অনুলেপনে অলঙ্কৃত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন গণ্ডারের সঞ্চারে ভীষণমূর্ত্তি ও রক্তচন্দনবৃক্ষে পরিশোভিত ; (র) রাজা কর্ণীসুতের উপাখ্যানে যেমন বিপুল ও অচলনামে তাঁহার দুই জন মিত্র ও শশনামে মন্ত্রী আছে, বিন্ধ্যাটবীতেও তেমন বিশাল পর্ব্বতসমূহ ও শশক আছে ; (ল) প্রলয়কালের সায়ংসন্ধ্যা যেমন রুদ্রমূর্ত্তি মহাদেবের নৃত্যবিশিষ্ট ও পল্লবের ন্যায় অরুণবর্ণ-সমন্বিত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন ময়ূরের নৃত্য-বিশিষ্ট ও পল্লবদ্বারা অরুণবর্ণ-সমন্বিত ; (ব) অমৃতের জন্য সমুদ্রমন্থনের সময়টি, যেমন লক্ষ্মী ও কল্পবৃক্ষে শোভিত এবং সুরাসম্পন্ন হইয়াছিল, বিন্ধ্যাটবীও তেমন শ্রীফলবৃক্ষে শোভিত এবং পশ্চিম-দিক্ প্রাপ্ত ; (শ) মেঘমালায় শ্যামবর্ণ ও বহুতর বিদ্যুতে পরিশোভিত বর্ষাকালের ন্যায় বিন্ধ্যাটবীও ঘন

---

(१) प्रनृत्तनीलकण्ठा। (२) वारुण ..।

सततमृक्षसार्थानुगता हरिणाध्यासिता च, (घ) राज्यस्थितिरिव चमरमृगबाल-व्यजनोपशोभिता समदगजघटापरिपालिता च, (ङ) गिरितनयेव स्थाणुसङ्गता मृगपतिसेविता च, (च) जानकीव प्रसूतकुशलवा निशाचरपरिगृहीता च, (छ) कामिनीव चन्दनमृगमद-परिमलवाहिनी रुचिरागुरु (१)-तिलकभूषिता

चेति सा, पक्षे घनैर्मेघैः श्यामला, तथा अनेकं शतं शतसंख्या येषां तैः ह्रदैर्गर्त्तैः, अनेकाभिः शतह्रदाभि-र्विद्युद्भिश्च अलङ्कृता। पूर्णोपमा।

(ग) चन्द्रेति। चन्द्रस्य मूर्त्तिस्तनुरिव सततं ऋक्षसार्थेन भल्लूकसमूहेन नक्षत्रसमूहेन च अनुगता व्याप्ता परिवेष्टिता च, तथा हरिणैर्मृगैः मृगचिह्नेन च अध्यासिता आश्रिता। पूर्णोपमा।

(घ) राज्येति। राज्यस्थितिः राज्यमर्य्यादा इव चमरमृगाणां बाला लोमान्येव व्यजनानि तैः, पक्षे चमरमृगाणां बालाश्चामराणि व्यजनानि तालवृन्तानि च तैरुपशोभिता, तथा समदाभिर्मत्ताभिः गजघटाभि-र्हस्तिसमूहैः परिपालिता परिवेष्टिता। एतदुभयत्रापि समानम्। पूर्णोपमा।

(ङ) गिरीति। गिरितनया पार्वतीव स्थाणुभिः शाखापत्रादिरहितवृक्षैः स्थाणुना शिवेन च सङ्गता मिलिता, तथा मृगपतिभिः सिंहैः मृगपतिना वाहनीभूतसिंहेन च सेविता आश्रिता वहनेन शुश्रूषिता च। पूर्णोपमा।

(च) जानकीति। जानकी सीतेव, प्रसूता उत्पादिताः कुशानां दर्भाणां लवा अङ्कुरा यया सा, निशाचरैः पेचकादिभिः प्राणिभिः परिगृहीता आश्रिता च, अन्यत्र तु प्रसूतौ गर्भान्मुक्तौ कुशलवौ तदाख्यौ पुत्रौ यया सा, निशाचरेण रावणेन परिगृहीता अपहृता च। पूर्णोपमा।

(छ) कामिनीति। कामिनी शृङ्गारनायिकेव, चन्दनानां तरूणां मृगमदानां कस्तूरीणाञ्च परिमलं सौरभं वहति आकरत्वादाश्रयत्वाच्च दधातीति सा, तथा रुचिराभ्यां सुन्दराभ्यां अगुरुतिलकाभ्यां सुगन्धिवृक्ष-विशेषपुष्पवृक्षविशेषाभ्यां भूषिता, अन्यत्र तु चन्दनानुलेपन-मृगमदानुलेपनाभ्यां परिमलं सौरभं वहतीति सा, तथा रुचिरागुरुणा मनोहरागुरुसौरभेण तिलकेन ललाटादौ सिन्दूरादिचित्रकेण च भूषिता। पूर्णोपमा।

ঘন বৃক্ষসমূহে শ্যামবর্ণ এবং অসংখ্য হ্রদে পরিশোভিত; (গ) চন্দ্র যেমন নক্ষত্রসমূহে পরিবেষ্টিত ও মৃগচিহ্নের আশ্রয়, বিন্ধ্যাটবীও তেমন ভল্লুকসমূহে পরিপূর্ণ ও হরিণগণের আশ্রয়; (ঘ) রাজমর্য্যাদা যেমন চামরব্যজনে পরিশোভিত ও মত্তহস্তিসমূহে পরিবেষ্টিত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন চমরনামক মৃগ-গণের লোমব্যজনে পরিশোভিত ও বন্য মত্তহস্তিসমূহে পরিবেষ্টিত; (ঙ) পার্ব্বতী যেমন মহাদেবের সহিত সম্মিলিত ও সিংহসেবিত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন শাখাপল্লবহীন বৃক্ষের সহিত সম্মিলিত ও সিংহসেবিত; (চ) সীতাদেবী যেমন কুশ ও লবের প্রসূতি এবং নিশাচর রাবণ কর্ত্তৃক পরিগৃহীত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন কুশাঙ্কুরের প্রসূতি ও নিশাচর পেচকপ্রভৃতি প্রাণিগণের পরিগৃহীত; (ছ) কামিনী যেমন চন্দন, কস্তূরী ও অগুরুর অনুলেপনে সৌরভশালিনী এবং মনোহর তিলক-ধারণে বিভূষিত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন চন্দনবৃক্ষ ও কস্তূরীর সৌরভশালিনী এবং মনোহর

---

(१) रुचिरागुरु...।

च, (क) सोत्कण्ठेव (१) विविधपल्लवानिलवीजिता समदना च, (ख) बालग्रीवेव व्याघ्रनखपङ्क्तिमण्डिता (२) गण्डकाभरणा च, (ग) पानभूमिरिव प्रकटित-मधुकोश-(३) शता प्रकीर्णविविधकुसुमा च, (घ) क्वचित् प्रलयवेलेव महावराह-दंष्ट्रा-समुत्खात-धरणीमण्डला, (ङ) क्वचिद्दशमुखनगरीव चटुल-वानरवृन्द-भज्यमान-तुङ्ग-(४) शालाकुला, (च) क्वचिदचिर-निर्वृत्त-विवाह-

(ख) सोत्कण्ठेति। सोत्कण्ठा नायकसङ्गमसमुत्सुका नायिकेव, विविधानां पल्लवानां अनिलैर्वायुभिः वीजिता स्वभावतः स्पृष्टा, सखीभिः कामसन्तापशान्तये च व्यजिता, मदनैः वृक्षविशेषैः मदनेन मन्मथेन च सह वर्त्तमानेति समदना। पूर्णोपमा।

(ग) बालेति। बालग्रीवा बालकस्य गलदेश इव, व्याघ्राणां नखपङ्क्तिभिः गमनकालोत्पन्ननखचिह्नश्रेणीभिर्मण्डिता भूषिता, गण्डकाः खड्गिनः आभरणानि यस्याः सा, अन्यत्र तु वास्तविकव्याघ्रनखपङ्क्तिभिर्मण्डिता, बालकानां ग्रीवासु दैवोत्पातविनाशाय व्याघ्रनखश्रेणिर्बध्यते इत्याचारः, गण्डको देशविशेषप्रसिद्धोऽलङ्कारविशेष आभरणं भूषणं यस्याः सा। पूर्णोपमा।

(घ) पानेति। पानभूमिर्मद्यपानस्थानमिव, प्रकटितमाविष्कृतं मधूनां पुष्परसानां कोशानां शताधाराणां शतं यस्यां सा, अन्यत्र तु प्रकटितं पानाय प्रकाशितं मधु मद्यं तत् कोशशतं मद्यपात्रसमूहश्च यस्यां सा, तथा प्रकीर्णानि विक्षिप्तानि विविधानि कुसुमानि यस्यां सा, इदमुभयत्रापि समानं। पूर्णोपमा।

(ङ) क्वचिदिति। क्वचित् कस्मिंश्चिद्देशे, एवं सर्वत्र। प्रलयवेलेव युगान्तसमय इव महावराहैः विशालशूकरैः दंष्ट्राभिर्दन्तैः समुत्खातं विदारितं धरणिमण्डलं भूतलदेशो यस्याः सा, अन्यत्र तु महावराहेण नारायणस्य तृतीयावतारेण दंष्ट्रया समुत्खातं जलादुद्धृतं धरणिमण्डलं समग्रभूमण्डलं यस्यां सा। पूर्णोपमा। प्रलयकाले हि भगवान्नारायणो वराहमूर्त्तिमवलम्ब्य जलमग्नां पृथिवीमुद्धृतवानिति बहुपुराणवार्त्ता।

(च) क्वचिदिति। दशमुखस्य रावणस्य नगरी पुरी लङ्केव, चटुलेन चञ्चलेन वानरवृन्देन भज्यमानैः तुङ्गशालैः उच्चसर्जवृक्षैः, पक्षे भज्यमानाभिः तुङ्गशालाभिः उच्चगृहैः आकुला व्याप्ता। पूर्णोपमा। रामरावणयोः समरसमये हि वानरनिकरेण लङ्काया गृहसमूहो भग्न आसीदिति रामायणवार्त्ता।

অগুরুবৃক্ষ ও তিলকবৃক্ষে পরিশোভিত ; (খ) নায়কের নিমিত্ত উৎকণ্ঠিতা কামাতুরা রমণীর শরীরে যেমন সখীগণকর্ত্তৃক নানাবিধ পল্লবের বায়ু সঞ্চালিত হয়, ময়নাবৃক্ষসমন্বিত বিন্ধ্যাটবীতেও তেমন স্বভাবতঃ নানাবিধ পল্লবের বায়ু সঞ্চালিত হইতেছে ; (গ) বালকের কণ্ঠস্থল যেমন ব্যাঘ্রের নখমালায় ও গণ্ডক (কোন কোন দেশের অলঙ্কারবিশেষের নাম গণ্ডক) আভরণে ভূষিত, বিন্ধ্যাটবীও তেমন ব্যাঘ্রের নখচিহ্নমালায় ও গণ্ডারগণে পরিশোভিত ; (ঘ) মদ্যপানের স্থানে যেমন মদ্য ও তাহার পানপাত্র বিন্যস্ত এবং নানাবিধ কুসুম বিক্ষিপ্ত থাকে, বিন্ধ্যাটবীতেও তেমন পুষ্পের মধু ও তাহার কোশ প্রকাশিত এবং নানাবিধ কুসুম বিক্ষিপ্ত আছে ; (ঙ) প্রলয়কালে আদিবরাহ (নারায়ণ) যেমন দন্তদ্বারা পৃথিবীমণ্ডল উত্তোলন করিয়াছিলেন, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থানেও তেমন বৃহৎ বৃহৎ বরাহগণ দন্তদ্বারা ভূতল বিদারণ করিয়া থাকে ; (চ) যুদ্ধের সময়ে

(१) सोत्कण्ठवनितेव। (२)···नखपङ्क्तिमण्डिता। (३) कोशकलशा। (४)...सर्ज···।

भूमिरिव हरित-कुश-समित्-कुसुम-शमी पलाश-शोभिता, (छ) क्वचिदुन्मत्त-(१) मृगपति-नाद-भीतेव कण्टकिता, (ज) क्वचिन्मत्तेव कोकिलकुल-कल (२) प्रलापिनी, (झ) क्वचिदुन्मत्तेव वायुवेग-कृत-तालशब्दा, (ञ) क्वचिद्विधवेव उन्मुक्ततालपत्रा, (ट) क्वचित् समरभूमिरिव शव-शत-निचिता, (ठ) क्वचिद्-

(छ) क्वचिदिति। अचिरनिर्वृत्तः सद्यःसम्पन्नो यो विवाहस्तस्य भूमिः स्थानमिव, हरितैः हरिद्वर्णैः, कुशैर्दर्भैः, समिद्भिर्यज्ञीयदारुभिः, कुसुमैः, पुष्पैः शमीपलाशैः शमीपत्रैश्च शोभिता। विवाहस्थानेऽप्येतान्युपयुज्यन्त इति पूर्णोपमा।

(ज) क्वचिदिति। उन्मत्तस्य उत्कटस्य मृगपतेः सिंहस्य नादाद्गर्ज्जनात् भीता रमणीव कण्टकिता सञ्जातकण्टका रोमाञ्चिता च। पूर्णोपमा।

(झ) क्वचिदिति। मत्ता मद्यपानजनितमत्तताविशिष्टा स्त्रीव, कोकिलकुलस्य कलप्रलापोऽव्यक्तमधुरध्वनिरस्या अस्तीति सा, पक्षे कोकिलकुलवत् कलं अव्यक्तमधुरं प्रलपितुं मत्ततावशादनर्थकं वक्तुं शीलं यस्याः सा। पूर्णोपमा।

(ञ) क्वचिदिति। उन्मत्ता उन्मादरोगग्रस्ता नारीव, वायुवेगेन कृताः तालानां तालवृक्षाणां शब्दा यस्यां सा, अन्यत्र तु रोगरूपवायुवेगेन कृताः तालशब्दाः करतलध्वनयो यया सा। पूर्णोपमा।

(ट) क्वचिदिति। विधवा पतिहीना रमणीव, उन्मुक्तानि प्रबलवायुवेगेन पातितानि तालानां तालवृक्षाणां पत्राणि यस्यां सा; पक्षे उन्मुक्तं वैधव्यात् परित्यक्तं तालपत्रं ताडङ्कः कर्णालङ्कारविशेषो यया सा। पूर्णोपमा।

(ठ) क्वचिदिति। समरभूमिरिव शवाणां मृतानां बाणानाञ्च शतेन समूहेन निचिता व्याप्ता। पूर्णोपमा।

লঙ্কানগরীতে যেমন চঞ্চল বানরগণ উচ্চ উচ্চ গৃহ সকল ভগ্ন করিয়াছিল, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থলেও তেমন চঞ্চল বানরগণ উচ্চ উচ্চ শাল-বৃক্ষ ভগ্ন করিয়া থাকে ; (ছ) অচির-নিষ্পন্ন বিবাহ-স্থানের ন্যায় বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থানে হরিদ্বর্ণ কুশ, সমিধ, কুসুম ও শমীপত্র শোভিত হইতেছে ; (জ) উন্মত্ত সিংহের গর্জনশ্রবণে ভয় বশতঃ রোমাঞ্চিতা রমণীর ন্যায় কোন কোন স্থলে বিন্ধ্যাটবী কণ্টকাকীর্ণ হইয়া থাকে ; (ঝ) সুরাপানমত্ত রমণী যেমন কোকিলের ন্যায় অস্পষ্ট অথচ মধুর প্রলাপ করিয়া থাকে, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন অংশেও তেমন কোকিলগণের অব্যক্ত মধুর রব হইয়া থাকে ; (ঞ) উন্মত্তা স্ত্রী যেমন বায়ুর বেগে করতলের শব্দ করে, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থানেও তেমন তালবৃক্ষ বায়ুর বেগে শব্দ করিয়া থাকে ; (ট) বিধবা স্ত্রী যেমন কর্ণালঙ্কার (তালপত্র, তাড়ঙ্ক কানতড়কা) পরিত্যাগ করে, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থলেও

(१) उद्‌ग…। (२)…कुलप्रलापिनी।

মরপতি-তনুরিব নেত্রসহস্র-সঙ্কুলা, (ড) ক্বচিন্নারায়ণমূর্ত্তিরিব তমালনীলা, (ঢ) ক্বচিত্ পার্থরথপতাকেব বানরাক্রান্তা, (১) (ণ) ক্বচিদবনিপতিদ্বারভূমিরিব বেত্রলতাশতদুষ্প্রবেশা, (ত) ক্বচিদ্বিরাটনগরীব কীচকশতাবৃতা (২) (থ) ক্বচিদম্বরশ্রীরিব ব্যাধানুগম্যমান-তরল-তারক-মৃগা, (দ)

(ড) ক্বচিদিতি। অমরপতেরিন্দ্রস্য তনুঃ শরীরমিব নেত্রাণাং মূলানাং চক্ষুষাঞ্চ সহস্রৈণ সঙ্কুলা ব্যাপ্তা। পূর্ণোপমা। "নেত্রং মন্থগুণে বস্ত্রভেদে মূলে দ্রুমস্য চ।" ইত্যাদি মেদিনী।

(ঢ) ক্বচিদিতি। তমালৈস্তদাখ্যতরুভির্নীলা, তমালবন্নীলা চ। পূর্ণোপমা।

(ণ) ক্বচিদিতি। পার্থরথপতাকেব অর্জ্জুনস্য রথস্য বৈজয়ন্তীব বানরৈঃ কপিভিঃ, বানরেণ হনুমতা চ আক্রান্তা আশ্রিতা। পূর্ণোপমা।

(ত) ক্বচিদিতি। বেত্রলতানাং বেতসবল্লীনাং দ্বারপালহস্তগতবেত্রযষ্টীনাঞ্চ শতেন সমূহেন দুষ্প্রবেশা দুর্গমা। পূর্ণোপমা।

(থ) ক্বচিদিতি। বিরাটস্য মত্স্যরাজস্য নগরী রাজধানীব কীচকশতেন রন্ধ্রেষু বায়ুপ্রবেশেন শব্দায়মানবংশসমূহেন বিরাটশ্যালকেন শতসংখ্যক-কীচকগণেন চ আবৃতা ব্যাপ্তা। পূর্ণোপমা। "বেণবঃ কীচকাস্তে স্যুর্যে স্বনন্ত্যনিলোদ্ধতাঃ" ইত্যমরঃ।

(দ) ক্বচিদিতি। অম্বরশ্রীঃ আকাশলক্ষ্মীরিব, ব্যাধৈঃ কিরাতৈঃ অনুগম্যমানাঃ, অতএব তরলা ভয়েন চঞ্চলাস্তারকা নেত্রকনীনিকা যেষাং তে তরলতারকাশ্চঞ্চলনেত্রাঃ মৃগা হরিণা যস্যাং সা, পক্ষে ব্যাধেন ব্যাধরূপিণা মহাদেবেন অনুগম্যমানং অতএব তরলং ভয়েন চঞ্চলং তারকমৃগং মৃগশিরোনক্ষত্রং যস্যাং সা। পূর্ণোপমা। পরপক্ষে সমাসবিধেরনিত্যতয়া তারকশব্দস্য পূর্বনিপাতঃ।

পুরা কিল ব্রহ্মা নিজকন্যাং পরমরূপবতীং সন্ধ্যামবলোক্য কামাতুরস্তামন্বধাবত্, সন্ধ্যা তু মৃগীরূপমবলম্ব্য পলায়মানা শিবং শরণং যযৌ, ব্রহ্মাপি মৃগো ভূত্বা তামনুযযৌ, শিবস্তু তদবলোক্য ব্রহ্মণঃ শিরশ্ছেদনায় পিনাকধনুষা শরং চিক্ষেপ, তদা তু ব্রহ্মা লজ্জিতো ভীতশ্চ সন্ মৃগশিরোনক্ষত্রং প্রবিবেশ, মহাদেবস্য শরোঽপি আর্দ্রানক্ষত্ররূপেণ তত্পশ্চাত্ স্থিত ইতি শিবপুরাণবার্ত্তা।

তেমন বায়ুর বেগে তালবৃক্ষ পত্র পরিত্যাগ করিতেছে; (ঠ) যুদ্ধস্থান যেমন বাণে পরিব্যাপ্ত থাকে, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থানও তেমন শরবনে ব্যাপ্ত আছে; (ড) দেবরাজের দেহ যেমন সহস্র-নেত্র-সমন্বিত, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন অংশও তেমন সহস্র-বৃক্ষমূল-সমন্বিত; (ঢ) নারায়ণের দেহ যেমন তমালতরুর ন্যায় নীলবর্ণ, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থানও তেমন তমালতরুতে নীলবর্ণ; (ণ) অর্জ্জুনের রথপতাকাতে যেমন হনূমান্ অবস্থান করিত, বিন্ধ্যাটবীর অংশবিশেষেও তেমন বানরগণ অবস্থান করিতেছে; (ত) বহুতর বেত্রযষ্টি থাকায় রাজার দ্বারদেশের ন্যায়, বিন্ধ্যাটবীর অংশবিশেষেও বহুতর বেতস থাকায় প্রবেশ করা দুষ্কর; (থ) বিরাট রাজার রাজধানীতে যেমন শতসংখ্যক কীচক ছিল, বিন্ধ্যাটবীর অংশবিশেষেও তেমন সচ্ছিদ্র বংশসমূহ আছে; (দ) পূর্ব্বকালে

(১) কপ্যাক্রান্তা। (২) কীচকাবৃতা, কীচকাকুলা।

ক্বচিদ্‌গৃহীতব্রতেব দর্ভ-চীর-জটা-বল্কল-ধারিণী, (ধ) অপরিমিত-বহুলপত্র-সঞ্চয়াঽপি সপ্তপর্ণভূষিতা, ক্রূরসত্ত্বাপি মুনিজনসেবিতা, পুষ্পবত্যপি পবিত্রা বিন্ধ্যাটবী নাম। (ন)

তস্যাঞ্চ দণ্ডকারণ্যান্তঃপাতি (প) সকলভুবনবিখ্যাতং (১) উৎপত্তি-ক্ষেত্রমিব ভগবতো ধর্ম্মস্য, (ফ) সুরপতি-প্রার্থনা-পীত-সকল-সাগর-

---

(ধ) ক্বচিদিতি। গৃহীতব্রতেব ব্রতধারিণী রমণীব, দর্ভান্ কুশান্ চীরান্ তৃণবিশেষান্ জটা মূলং বল্কলঞ্চ ধারয়িতুং শীলং যস্যাঃ সা, অন্যত্র তু দর্ভং কুশং চীরং জীর্ণবস্ত্রখণ্ডং জটাং সংযতকেশং বল্কলঞ্চ পরিধেয়ং ধারয়িতুং শীলং যস্যাঃ সা। পূর্ণোপমা। "মূলে লগ্নকচে জটা" ইত্যমরঃ।

(ন) অপরীতি। অপরিমিতঃ সংখ্যাতীতঃ বহুলপত্রাণাং নানাবিধপর্ণানাং সঞ্চয়ঃ সমূহো যস্যাং সা তথাবিধাপি, সপ্তভিঃ পর্ণৈর্ভূষিতেতি বিরোধঃ, সপ্তপর্ণনামকবৃক্ষৈর্ভূষিতেতি তৎসমাধানং। অতএবাত্র বিরোধালঙ্কারঃ। ক্রূরসত্ত্বাপি খলস্বভাবাপি মুনিজনসেবিতেতি বিরোধঃ, ক্রূরাণি হিংস্রাণি সত্ত্বানি ব্যাঘ্রাদিজন্তবো যস্যাং সা ইতি তৎসমাধানমিতি বিরোধালঙ্কারঃ। তথা পুষ্পবতী রজস্বলাপি পবিত্রেতি বিরোধঃ, পুষ্পাণি কুসুমানি অস্যাঃ সন্তীতি তৎপরিহার ইতি বিরোধালঙ্কারঃ।

(প) তস্যামিতি। তস্যাং বিন্ধ্যাটব্যাং অগস্ত্যস্য আশ্রমপদমাসীদিতি বক্ষ্যমাণেনান্বয়ঃ। অত্র প্রথমান্ত-পদানি আশ্রমপদস্য বিশেষণানি। দণ্ডকারণ্যস্য অন্তঃপাতি মধ্যবর্ত্তি। অত্রায়মিতিহাসঃ—

দণ্ডকো নাম কশ্চন সূর্য্যবংশীয়ো রাজা গুরোঃ শুক্রাচার্য্যস্য কন্যামরজাং নাম বলেন ধর্ষিতবান্, শুক্রাচার্য্যস্তু তদাকর্ণ্য নিতরামমর্ষিতস্তং রাজানং শশাপ—'ত্বং মরিষ্যসি, রাজ্যঞ্চেদমদ্যপ্রভৃতি সপ্তাহমধ্যে মহারণ্যতয়া পরিণতং ভবিষ্যতীতি' তচ্চ বিন্ধ্যাচলসানুদেশস্থং রাজ্যং দণ্ডকারণ্যং নামাভূদিতি রামায়ণম্।

(ফ) সকলেতি। সকলেষু ভুবনেষু বিখ্যাতং প্রসিদ্ধং। ভগবতো ধর্ম্মস্য মাহাত্ম্যবতঃ পুণ্যস্য উৎপত্তি-ক্ষেত্রমিব জন্মস্থানমিব, তত্র সর্ব্ববিধপুণ্যোৎপত্তেরিতি ভাবঃ। অত্র ভাবাভিমানিনী বাচ্যা জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ব) সুরেতি। সুরপতেরিন্দ্রস্য প্রার্থনয়া পীতানি সকলানাং সাগরাণাং সলিলানি যেন তস্য। ইতঃ প্রভৃতিষষ্ঠ্যন্তপদান্যগস্ত্যস্য বিশেষণানি।

ব্যাধরূপী মহাদেবের অনুসরণে ব্রহ্মা যেমন ভয়বশতঃ চঞ্চলভাবে আকাশে মৃগশিরানক্ষত্র-রূপে অবস্থান করিয়াছিলেন, বিন্ধ্যাটবীর স্থানবিশেষেও তেমন হরিণগণ ব্যাধের অনুসরণে ভয়ে চঞ্চলনেত্র হইয়া অবস্থান করে; (ধ) কোন ব্রতধারিণী রমণী যেমন কুশ, জীর্ণবস্ত্র, জটা ও বল্কল ধারণ করে, বিন্ধ্যাটবীর কোন কোন স্থানও তেমন কুশ, অন্যান্য তৃণ, বৃক্ষের মূল ও বৃক্ষের বল্কল ধারণ করিতেছে; (ন) বিন্ধ্যারণ্য, অসংখ্য নানাবিধ পত্র-সমূহ-সমন্বিত হইয়াও সপ্তপর্ণ (বৃক্ষে) শোভিত; হিংস্রজন্তু-সমাকীর্ণ হইয়াও মুনিগণ-সেবিত আর পুষ্পবান্ হইয়াও (পুষ্প—কুসুম ও নারী-রজঃ) পবিত্র।

(প) সেই বিন্ধ্যাটবীর অন্তর্গত দণ্ডকারণ্যের মধ্যে (ফ) সমগ্র জগতে বিখ্যাত ও ভগবান্ ধর্ম্মের উৎপত্তিস্থানের ন্যায় মহর্ষি অগস্ত্যের আশ্রম ছিল। (ব) যে অগস্ত্য, ইন্দ্রের প্রার্থনা

---

(১) ভুবনখ্যাতং, ভুবনতলখ্যাতং।

सलिलस्य (१) (व) मेरुमत्सरादम्बरतल (२)-प्रसारित-शिरः-(३) सहस्रेण दिवस-कर-रथ-गमन-पथमपनेतुमभ्युद्यतेन अवगणित-सकलसुर-(४) वचसा विन्ध्यगिरिणाऽप्यनुल्लङ्घिताज्ञस्य, (भ) जठरानल-जीर्ण-वातापिदानवस्य, (म) सुरासुर-मुकुट-मकरपत्र-(५) कोटि-चुम्बित-चरण-रजसो दक्षिणाशा-वधू-मुख-(६) विशेषकस्य, (य)

पुरा कालेयनामानः केचन दानवा दिवसे सागरसलिले प्रच्छन्नाः सन्तो रात्रावाविर्भवन्तो भुवं स्वर्गञ्च निरन्तरं पीडयामासुः, सुतरां वधाय तान् निष्काशयितुमिच्छुना सुरपतिना प्रार्थितो भगवानगस्त्यः समस्तसागर-जलानि पपाविति महाभारतवार्त्ता ।

(भ) मेर्व्विति । मेरोः सुमेरुपर्व्वतस्य मत्सरात् उन्नतिविषयकविद्वेषात् अम्बरतले आकाशे प्रसारितं विस्तारितं शिरःसहस्रं शृङ्गसमूहो येन तेन, दिवसकरस्य सूर्य्यस्य रथस्य गमनपथं अपनेतुं अवरोद्धुं अभ्युद्यतेन प्रवृत्तेन, तथा अवगणितानि अवज्ञातानि सकलानां सुराणां देवानां वचांसि सूर्य्यस्य गमनपथ-रोधनिषेधकवचनानि येन तेन विन्ध्यगिरिणाऽपि अनुल्लङ्घिता अनतिक्रान्ता परिपालिता आज्ञा आदेशो यस्य तस्य ।

पुरा किल सुमेरुं प्रदक्षिणीकृत्य प्रतिदिनं सूर्य्यो भ्रमतीति विलोक्य विन्ध्याचल आत्मानमपि तथैव कर्त्तुं सूर्य्यमनुरुन्धन् सूर्य्येण प्रत्याख्यातः क्रोधेन तन्मार्गमवरोद्धुं वर्द्धमानो देवैर्निषिद्धोऽपि भृशं ववृधे ; तदा तु देवानामनुरोधेन सपत्नीके भगवत्यगस्त्ये तत्रोपस्थिते विन्ध्याचलः शिरोऽवनमय्य तं प्रणनाम, अगस्त्यस्तु "वत्स ! यावदहं पुनरागच्छामि तावत्त्वमीदृगेवावनतशिरास्तिष्ठ" इत्यभिधाय दक्षिणस्यां गतो नाद्यापि निवर्त्तते, विन्ध्याचलोऽपि तदादेशादद्यापि तथैवास्ते, इति स्कन्दपुराणकाशीखण्डवार्त्ता ।

(म) जठरेति । जठरानलेन उदरवह्निना जीर्णः परिपाकं नीतो वातापिदानवो येन तस्य । अत्राय-मितिहासः—

पुरा किल इल्वलवातापिनामानौ भ्रातरौ दैत्यविशेषौ बभूवतुः । तयोरिल्वलो ब्राह्मणरूपमास्थाय मेष-रूपधारिणं वातापिं निहत्य तन्मांसं पक्त्वा समागतान् ब्राह्मणान् भोजयामास, भुक्तवत्सु च ब्राह्मणेषु "वातापे ! निष्क्रम" इतील्वलेनाहूतो देववरप्रभावेण वातापिस्तेषामुदराणि भित्त्वा निष्क्रमति स्म, परञ्च तौ तेषां धनान्यपहृतवन्तौ । देवैरित्थमवलोक्य प्रतीकाराय प्रार्थितो भगवानगस्त्यस्तथैव तन्मांसमभ्य-वहार्य्य जीर्णमकरोदिति महाभारतवार्त्ता ।

(य) सुरेति । सुरासुराणां देवदानवानां मुकुटेषु किरीटेषु यानि मकरपत्राणि स्वर्णनिर्म्मिता मकरा-कारपत्राः तेषां कोटिभिरग्रभागैश्चुम्बितानि स्पृष्टानि चरणरजांसि पदधूलयो यस्य तस्य, सुरासुरवन्दितचरण-

---

অনুসারে সকল সমুদ্রের জল পান করিয়াছিলেন, (ভ) এবং বিন্ধ্যপর্ব্বত, সুমেরু পর্ব্বতের প্রতি বিদ্বেষবশতঃ আকাশে অসংখ্য শৃঙ্গ বিস্তারপূর্ব্বক দেবগণের বাক্যে অবহেলা করিয়া, সূর্য্যের গমন-পথ অবরোধ করিতে উদ্যত হইয়াছিল, কিন্তু যে অগস্ত্যের আদেশ লঙ্ঘন করে নাই ; (ম) যে অগস্ত্য জঠরানলে বাতাপি দানবকে জীর্ণ করিয়াছিলেন, (য) দেবগণ ও অসুরগণ স্বকীয় মুকুট-

---

(१)…जलस्य । (२) गगनतल… । (३)…शिखर… । (४) सुरसमूह… । (५)…मुकुटतटघटित-मरकतमयपत्रभङ्गकोटि… । (६) दक्षिणामुखविशेषकस्य ।

सुरलोकादेकहुङ्कारनिपातित-(१) नहुष-प्रकटप्रभावस्य भगवतो महामुनेरगस्त्यस्य (र) भार्य्यया लोपामुद्रया (२) स्वयमुपरचितालवालकैः करपुट-सलिल-सेक-संवर्द्धितैः सुतनिर्विशेषैरुपशोभितं पादपैः, (ल) तत्पुत्रेण च गृहीत-व्रतेनाषाढ़िना (३) पवित्र-भस्म-विरचित-त्रिपुण्ड्रकाभरणेन कुशचीवर-(४) वाससा मौञ्ज-(५) मेखलाकलितमध्येन गृहीतःहरित-पर्णपुटेन (६) प्रत्युटज-मटता भिक्षां दृढ़दस्युनाम्ना पवित्रीकृतम्, (व) अतिप्रभूतेध्माहरणाच्च यस्येध्म-

स्येत्यर्थः। दक्षिणा आशा दिगेव वधूर्नारी तस्या मुखे विशेषकस्य तिलकस्वरूपस्य। अत्र दक्षिणाशायां वधूत्वारोपोऽगस्त्ये तिलकत्वारोपस्य हेतुरिति परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(र) सुरेति। सुरलोकात् स्वर्गात् एकहुङ्कारेण हुङ्कृतिमात्रेण निपातिते प्रभ्रंशिते नहुषे प्रकटो व्यक्तः प्रभावो माहात्म्यं यस्य तस्य।

पुरा किल वृत्रवधेन ब्रह्महत्यापापशालिनि देवेन्द्रे मानससरोवरे तिष्ठति देवैः स्वर्गमराजकमवलोक्य चन्द्रवंशीयो राजा नहुषः स्वस्वतेजोभिर्विवर्द्ध्य स्वर्गराज्ये प्रतिष्ठापितः। स कदाचिदिन्द्राणीं कामयमानस्तयाऽभिहितः "राजन्। यदि भवान् महर्षिभिरूढां शिबिकामारुह्य मन्मन्दिरमागन्तुमर्हसि तदा भवन्तमहं भजामि" इति। नहुषस्तु तदेवाङ्गीकृत्य भृगुप्रभृतीन् देवर्षीन् वाहकतया नियोज्य शिबिकामारूढस्तामिन्द्राणीं प्रति गच्छन् द्रुतं गन्तुमग्रगामिनं भृगुं शिरसि पदेन 'सर्प सर्प' इति ब्रुवन्नताड़यत्, अत्रान्तरे भृगोर्जटासु लीनो भगवानगस्त्यस्तत्पदेनाहतः शशाप "त्वं सर्पः सन् पतितो भव" इति, तेन च नहुषः सर्पः सन् हिमाचलगुहायामपतदिति महाभारतवृत्तान्तः।

(ल) भार्य्ययेति। उपरचितानि निर्म्मितानि आलवालानि मूलजलाधारा येषां तैः, करपुटेन स्वहस्त-युगलेन य सलिलसेको जलसेचनं तेन संवर्द्धितैः, सुतनिर्विशेषैः पुत्रतुल्यैः पादपैर्वृक्षैरुपशोभितं तदाश्रमपदम्।

(व) तदिति। तस्य अगस्त्यस्य पुत्रेण, गृहीतव्रतेन ब्रह्मचर्य्यव्रतधारिणा, आषाढ़ः पलाशदण्डोऽस्यास्तीति तेन "आषाढो व्रतिनां दण्डे मासि मन्त्रयपर्वते।" इति विश्वः। "ब्राह्मणो वैल्वपालाशौ" इति मनुः। पवित्रेण भस्मना विरचितं कृतं त्रिपुण्ड्रकं तिरेखान्वितस्तिलकविशेष एव आभरणं येन तेन, "ब्राह्मणानां त्रिपुण्ड्रक"मिति स्मृतेः। कुशानां चीवरं कुशनिर्म्मितं चीरं वासो वसनं यस्य तेन, मौञ्ज्या मुञ्जनिर्म्मि-

यारा যে অগস্ত্যের চরণধুলি স্পর্শ করিয়া থাকেন আর যিনি দক্ষিণদিগ্‌বধূর ললাটের তিলক (র) এবং একমাত্র হুঙ্কারে নহুষ রাজাকে স্বর্গ হইতে নিপাতিত করিয়া নিজের মাহাত্ম্য প্রকাশ করিয়াছিলেন, (ল) সেই ভগবান্ মহর্ষি অগস্ত্যের ভার্য্যা লোপামুদ্রা, স্বয়ং আলবাল নির্ম্মাণ করিয়া স্বহস্তে জলসেচনপূর্ব্বক যাহাদিগকে পুত্রনির্ব্বিশেষে সংবর্দ্ধিত করিয়াছিলেন, সেই সকল নানাবিধ বৃক্ষে সেই আশ্রমটি পরিশোভিত ছিল। (ব) ব্রহ্মচর্য্যাবলম্বী ও পলাশদণ্ডধারী দৃঢ়দস্যু-

(१)…निपतित…। (२) तद्भार्य्यया लोपामुद्रया च। (३) आषाढ़िव्रतिना। (४)…चीर…। (५) मुञ्ज…। (६)…पत्रपुटेन।

वाह इति पिता द्वितीयं नाम चकार, (श) दिशि दिशि शुकहरितैश्च (१) कदलीवनैः श्यामलीकृत-परिसरं (ष) सरिता च कलसयोनि-परिपीत-सागर-मार्गानुगतयेव बद्धवेणिकया गोदावर्य्या (२) परिगतमाश्रमपदमासीत्। (स)

यत्र च दशरथवचनमनुपालयन्नुत्सृष्टराज्यो दशवदन-लक्ष्मी-विभ्रम-विरामो (३) रामो महामुनिमगस्त्यमनुचरन् सह सीतया लक्ष्मणोपरचित-

---

तया मेखलया कलितो बद्धः मध्यः कटिदेशो येन तेन, "मौञ्जी त्रिवृत् समा श्लक्ष्णा कार्य्या विप्रस्य मेखला।" इति मनूक्तेः। गृहीतं भिक्षान्नस्थापनार्थं धृतं हरितं हरिद्वर्णं पर्णपुटं पत्रनिर्म्मितपुटकं येन तेन, अभ्युटजं प्रतिपर्णशालं भिक्षां अटता भिक्षार्थं भ्रमता। भिक्षामिति "अकथितञ्चेति" द्वितीया। दृढ़दस्युरिति नाम यस्य तेन पवित्रीकृतं अवस्थानेन पूतम्।

(श) चतीति। पिता अगस्त्यः, अतिप्रभूतानां अतिप्रचुराणां इध्मानां काष्ठानां आहरणादानयनात्। इध्म वहतीति इध्मवाहः कर्म्मण्यण्।

(ष) दिशीति। शुकवत् कीरशरीरवत् हरितैर्हरिद्वर्णैः कदलीवनैः रम्भाकाननैः श्यामलीकृतः परिसरः प्रान्तभूमिर्यस्य तत्। अत्र शुकहरितैरिति लुप्तोपमालङ्कारः।

(स) सरितेति। कलसयोनिना अगस्त्येन परिपीतस्य पानेन मृतस्येति भावः, सागरस्य मार्गं पन्थानं अनुगतयेव अनुसृतयेव बद्धा धृता वेणिका जलप्रवाहो यया तया, बद्धा संस्काराकरणाग्रेन संयता वेणिका केशविन्यासविशेषो यया तया च, गोदावर्य्या सरिता नद्या परिगतं परिवेष्टितम्। अगस्त्येन परिपीततया मृतस्य सागरस्यानुगमनं सर्वदा वेणीबन्धनञ्च सत्या गोदावर्य्या कार्य्यमेवेति भावः। तथा च हारीतः— "न प्रोषिते तु संस्कुर्य्यान्न वेणीञ्च प्रमोचयेत्।" अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। समासोक्तिरलङ्कारो व्यज्यते।

(ह) यत्रेति। यत्र यस्मिन्नाश्रमे दशरथस्य वचनं वनगमनादेशं। दशवदनस्य रावणस्य या लक्ष्मीः राजश्रीस्तस्या विभ्रमस्य विलासस्य विरामोऽवसानं यस्मात् स तादृशो रामः। अनुचरन् शुश्रूषमाणः।

নামক অগস্ত্যের পুত্র, পবিত্র ভস্ম দ্বারা ললাটে ত্রিপুণ্ড্র নির্ম্মাণপূর্ব্বক, কুশময় কৌপীন ধারণ ও মুঞ্জনির্ম্মিত মেখলাদ্বারা কটিদেশ বন্ধন করিয়া হরিতবর্ণ পত্রপুটক (পাতার ঠোঙা) ধারণ-পূর্ব্বক, প্রত্যেক পর্ণশালাতে ভিক্ষার নিমিত্ত পর্য্যটন করত সেই আশ্রমকে পবিত্র করিয়া-ছিলেন ; (শ) দৃঢ়দস্যু, অতিপ্রচুর পরিমাণে কাষ্ঠ আহরণ করিতেন বলিয়া মহর্ষি অগস্ত্য, তাঁহার দ্বিতীয় নাম করিয়াছিলেন—'ইধ্মবাহ'। (ষ) শুকপক্ষীর ন্যায় হরিতবর্ণ কদলীবন সেই আশ্রমের সকলদিকের প্রান্তভাগ শ্যামবর্ণ করিয়াছিল। (স) ভগবান্ অগস্ত্য পান করায় বিনাশপ্রাপ্ত সাগরের পথ অনুসরণ করিয়াই যেন বেণীধারণপূর্ব্বক গোদাবরী নদী সেই আশ্রমকে পরিবেষ্টন করিয়া প্রবাহিত হইত।

(হ) রাবণ-রাজলক্ষ্মীর বিলাসশোভার অবসানকারী রামচন্দ্র, দশরথের বাক্য পালন করিবার জন্য রাজ্যপরিত্যাগপূর্ব্বক সীতার সহিত যে আশ্রমে আসিয়া মহর্ষি অগস্ত্যের পরি-

---

(१) शुकाङ्ग...। (२) कावेर्य्या। (३) विभ्रमरामो...।

রুচির-পর্ণশালঃ পঞ্চবট্যাং কঞ্চিৎ কালং সুখমুবাস। (ঙ) চিরশূন্যেঽপি যত্র শাখা-নিলীন-নিভৃত-পাণ্ডু-কপোতপঙ্‌ক্তয়ো লগ্ন-(১) তাপসাগ্নিহোত্র-ধূম-রাজয় ইব লক্ষ্যন্তে তরবঃ। (চ) বলিকর্ম্ম-কুসুমান্যুদ্ধরন্ত্যাঃ সীতায়াঃ কর-তলাদিব সংক্রান্তো যত্র রাগঃ স্ফুরতি লতাকিসলয়েষু। (ছ) যত্র চ পীতোদ্গীর্ণ-জলনিধি-জলমিব মুনিনা নিখিলমাশ্রমোপান্তবর্ত্তিষু বিভক্তং মহাহ্রদেষু। (জ) যত্র চ (২) দশরথ-সুত-নিশিত-শর-নিকর-নিপাত-নিহত-রজনীচর-বল-বহুল-

লক্ষ্মণেন উপরচিতা নির্ম্মিতা রুচিরা মনোহরা পর্ণশালা যস্য সঃ। অত্র বিরামো রাম ইতি যমকালঙ্কারঃ।

(ঙ) চিরেতি। চিরশূন্যে বহুকালান্মুনিজনরহিতে, যত্র আশ্রমে। শাখাসু নিলীনা অবস্থিতাঃ নিভৃতা নিঃশব্দাঃ পাণ্ডবঃ ধূসরবর্ণাঃ কপোতপঙ্‌ক্তয়ঃ পারাবতশ্রেণয়ো যেষু তে, অতএব লগ্নাঃ সংসক্তাঃ তাপসানাং তপস্বিনাং অগ্নিহোত্রস্য প্রাত্যহিকযজ্ঞবিশেষস্য ধূমরাজয়ঃ যেষু তে তাদৃশা ইব তরবঃ অদ্যাপি লক্ষ্যন্তে দৃশ্যন্তে। অত্র ধূমরাজীনাং লগ্নত্বস্যোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা পদার্থহেতুকং কাব্যলিঙ্গঞ্চ, অনয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(চ) বল্লীতি। বলিকর্ম্মণো দেবার্চ্চনকার্য্যস্য কুসুমানি পুষ্পাণি উদ্ধরন্ত্যাঃ অবচিন্বত্যাঃ সীতায়া জানক্যাঃ করতলাৎ পাণিতলাৎ লতাকিসলয়েষু বল্লীপল্লবেষু সংক্রান্তো লগ্ন ইব সন্ রাগো রক্তিমা স্ফুরতি প্রকাশতে। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ছ) যত্রেতি। যত্র চ আশ্রমে, মুনিনা অগস্ত্যেন আদৌ পীতং অনন্তরমুদ্গীর্ণং উত্তোলিতং নিখিলং সমস্তং জলনিধিজলং আশ্রমোপান্তবর্ত্তিষু মহাহ্রদেষু বিভক্তমিব বিভজ্য স্থাপিতমিব। অত্রাপি ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ, তেন চ হ্রদানামগাধজলশালিত্বং ব্যজ্যত ইত্যলঙ্কারেণ বস্তুধ্বনিঃ।

(জ) যত্র চেতি। দশরথসুতয়ো রামলক্ষ্মণয়োর্যে নিশিতাস্তীক্ষ্ণাঃ শরনিকরা বাণসমূহাস্তেষাং নিপাতেন আঘাতেন নিহতানি যানি রজনীচরবলানি রাক্ষসসৈন্যাঃ তেষাং বহুলরুধিরৈঃ প্রচুরশোণিতৈঃ সিক্তানি

চর্য্যা করত, পঞ্চবটীবনে লক্ষ্মণের নির্ম্মিত মনোহর পর্ণশালাতে কিয়ৎকাল সুখে বাস করিয়াছিলেন। (ঙ) মুনিজনবিহীন যে আশ্রমে ধূসরবর্ণ কপোতগণ, বৃক্ষসমূহের শাখাতে নিঃশব্দে অবস্থান করায় এখনও যেন তপস্বিগণের অগ্নিহোত্রযজ্ঞের ধূমসমূহ সংলগ্ন রহিয়াছে বলিয়া প্রতীতি হয়। (চ) যে আশ্রমে দেবতা-পূজার জন্য পুষ্পচয়নের সময়ে সীতার করতল হইতে রক্তিমা যেন লতাপল্লবসমূহে সংলগ্ন হইয়াছিল, তাহাই অদ্যাপি প্রকাশ পাইতেছে বলিয়া বোধ হয়, (ছ) এবং যে আশ্রমে, মহর্ষি অগস্ত্য সমস্ত সাগরের জল পান করিয়া পুনরায় উদ্গীরণপূর্ব্বক, আশ্রমের নিকটবর্ত্তী মহাহ্রদসমূহে যেন বিভক্ত করিয়া রাখিয়া দিয়াছেন বলিয়া বোধ হয়। (জ) যে আশ্রমে রাম ও লক্ষ্মণের তীক্ষ্ণ শরসমূহের আঘাতে নিহত রাক্ষসসৈন্যগণের রক্তে,

(১)...পঙ্‌ক্তয়োঽলগ্ন...। (২) যত্র।

रुधिर-सिक्त-मूलमद्यापि तद्रागाविद्ध-(१) निर्गत-पलाशमिवाभाति नवकिसलय-(२) मरण्यम्। (ग) अधुनापि यत्र जलधरसमये गम्भीर-(३) मभिनव-जलधर-निवह-निनादमाकर्ण्य भगवतो रामस्य त्रिभुवनविवरव्यापिनश्चापघोषस्य स्मरन्तो न गृह्णन्ति शष्प-कवलमजस्रमश्रुजल-लुलित-दीनदृष्टयो वीक्ष्य शून्या दश दिशो जराजर्ज्जरितविषाणकोटयो जानकीसंवर्द्धिता जीर्णमृगाः। (घ) यस्मिन्ननवरत-मृगया-निहत-शेष-(४)वन हरिण-प्रोत्साहित इव कृतसीताविप्रलम्भः कनकमृगो

मुक्तानि यस्य तत्, नवानि किसलयानि पल्लवानि यत्र तत् तादृशं अरण्यं कर्त्तृ, अद्यापि तेषां रुधिराणां रागेण लौहित्येन आविद्धानि युक्तानि सन्ति निर्गतानि पलाशानि पल्लवपत्राणि यस्मिन् तत् तादृशमिव आभाति दीप्यते। अत्र तद्रागाविद्धक्रियोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) अधुनापीति। जलधरसमये वर्षाकाले। अभिनवजलधराणां नूतन-मेघानां निवहस्य समूहस्य निनादं गर्ज्जनं। त्रिभुवनस्य विवरं अन्तरालं व्याप्नोति पूरयतीति स तस्य, चापघोषस्य कार्म्मुकशब्दस्य। "स्मृत्यर्थकर्म्मणीति" कर्म्मणि षष्ठी। स्मरन्तश्चिन्तयन्तः। दश दिशः शून्या रामलक्ष्मणसीतारहिताः, वीक्ष्य दृष्ट्वा, अश्रुजलैः तेषां शोकजनितनेत्रजलैः लुलिताः प्लाविताः, दीनाः कातराः दृष्टयो नेत्राणि येषां ते, तथा जरया वार्द्धक्येन जर्ज्जरिता जीर्णाः विषाणानां शृङ्गाणां कोटयः अग्रदेशा येषां ते, जानक्या सीतया संवर्द्धिताः तृणजलादिदानेन वृद्धिं प्रापिताः जीर्णमृगा वृद्धहरिणाः अधुनापि शष्पकवलं घासग्रासं न गृह्णन्ति तेषां शोकेनेति भावः। अत्र गम्भीरमेघगर्ज्जनश्रवणेन रामस्य चापध्वनिस्मृतेः स्मरणालङ्कारः, तथा शष्पकवलग्रहणसम्बन्धेऽपि तदसम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरित्यनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ङ) यस्मिन्निति। अनवरता अविश्रान्ता या मृगया पशुवधक्रिया तस्यां निहतेभ्यः रामेण विनाशितेभ्यः शेषा अवशिष्टा ये वनहरिणाः तैः प्रोत्साहित इव सीताप्रतारणापूर्व्वकरामापहरणे प्रकृष्टोत्साहीकृत इव कनकमृगः सुवर्णमयहरिणवेशधारी मारीचः, कृतः सीतायाः विप्रलम्भः प्रतारणा येन तादृशः सन् राघवं रामं। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

আশ্রম-বনস্থিত যে বৃক্ষসমূহের মূলদেশ সিক্ত হইয়াছিল, নবপল্লবসমন্বিত সেই বৃক্ষ-সমূহ হইতে অদ্যাপি যেন সেই রক্তে রঞ্জিত হইয়া পত্রসমূহ নির্গত হইতেছে। (ঘ) যে আশ্রমে সীতাদেবী তৃণ ও জলাদি প্রদান করিয়া যাহাদিগকে বর্দ্ধিত করিয়াছিলেন, বর্ত্তমান সময়ে বার্দ্ধক্যবশতঃ জীর্ণশৃঙ্গ সেই সকল বৃদ্ধ হরিণগণ বর্ষাকালে নূতন মেঘের গম্ভীর গর্জন শুনিয়া, ভগবান্ রামচন্দ্রের ভুবনব্যাপী কার্ম্মুকধ্বনি স্মরণ করত, সহসা দশ দিক্ শূন্য দেখিয়া, অবিরত অশ্রুজলপ্লাবিত-নেত্র হইয়া, এখনও ঘাসের গ্রাস গ্রহণ করে না। (ঙ) যে আশ্রমে রামচন্দ্র, সর্ব্বদা মৃগয়াব্যাপারে লিপ্ত থাকিয়া যে হরিণদিগকে বিনষ্ট করিয়াছিলেন, তাহাদের অবশিষ্ট হরিণগণকর্ত্তৃক উৎসাহিত হইয়াই যেন স্বর্ণমৃগ, (স্বর্ণমৃগরূপধারী মারীচ) সীতাকে প্রতারণা করিয়া রামচন্দ্রকে অতিদূরে নিয়া গিয়াছিল। (চ) যে আশ্রমে, সীতার বিরহদুঃখে

---

(१) तद्रागानुविद्ध...। (२)...किसलं। (३) गम्भीरतरं। (४)...निःशेष...

राघवमतिदूरं जहार (ङ)। यत्र मैथिलीवियोगदुःख-दुःखितौ दशवदन-विनाश-पिशुनौ (१) चन्द्रसूर्य्याविव कवन्धग्रस्तौ समं रामलक्ष्मणौ त्रिभुवनभयं महच्चक्रतुः (च)। अत्यायतश्च यस्मिन् दशरथसुत-शर-(२) निपातितौ योजन-बाहोर्बाहुरगस्त्यप्रसादनागत-(३)-नहुषाजगर-कायशङ्कामकरोदृषिजनस्य (छ)। जनकतनया च भर्त्रा विरहविनोदनार्थं-(४) उटजाभ्यन्तरलिखिता यत्र राम-निवास-दर्शनोत्सुका पुनरिव धरणीतलादुच्छ्वसन्ती (५) वनचरैरद्याप्या-लोक्यते (६)। (ज)

(च) यत्रेति। मैथिल्याः सीतायाः वियोगदुःखेन दुःखितौ, दशवदनस्य रावणस्य विनाशपिशुनौ ध्वंस-सूचकौ रामलक्ष्मणौ, चन्द्रसूर्य्याविव कवन्धेन दनुकवन्धेन राहुणा च, ग्रस्तौ धृतौ कवलीकृतौ च सन्तौ समं युगपत् त्रिभुवनस्य त्रिजगद्वासिनो जनस्य महत् भयं चक्रतुः जनितवन्तौ। अत्रोपमालङ्कारः।

(छ) अत्येति। दशरथसुतस्य रामस्य शरेण बाणेन निपातितश्छित्वा पातितः अत्यायतोऽतिदीर्घो योजनबाहोर्दनुकवन्धस्यैव बाहुर्भुजः, अगस्त्यस्य प्रसादनाय शिविकारोहणेन शचीं प्रति गमनसमये चरण-प्रहारकृतकोपोपशमाय आगत उपस्थितो यः नहुषाजगरः अजगररूपो नहुषः तस्य कायशङ्कां शरीरभ्रमं। अत्र दनुकवन्धबाहौ नहुषाजगरशरीरभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः। एषामुपाख्यानानि रामायणारण्यकाण्डे अनु-सन्धेयानि।

(ज) जनकेति। यत्राश्रमे, भर्त्रा पत्या रामेण, विरहविनोदनार्थं सीताया वियोगवेदनालघूकरणार्थं उटजाभ्यन्तरे पर्णशालामध्ये लिखिता चित्रिता, जनकतनया तत्प्रतिमूर्त्तिः, रामनिवासस्य रामावस्थानभूमि-दर्शनाय उत्सुका उत्कण्ठिता सती पुनर्धरणीतलात् पातालात् उच्छ्वसन्ती उत्तिष्ठन्तीव, अद्यापि अस्मिन्नपि समये। वनचरैः शवरैः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। प्रथमं सीताया मिथिलायां यज्ञभूमिकर्षणसमये धरणीतलादुत्थानं, परीक्षाप्रस्तावे च पातालप्रवेशः, ततश्चेदमुत्थानमिति पुनःशब्दाभिधानं सङ्गच्छते।

দুঃখিত হইয়া রাম ও লক্ষ্মণ, রাহুগ্রস্ত চন্দ্র ও সূর্য্যের ন্যায় দনুকবন্ধকর্ত্তৃক ধৃত হইয়া, রাবণের বিনাশ সূচনা করিয়া যুগপৎ ত্রিভুবনবাসী লোকদিগের অত্যন্ত ভয় জন্মাইয়াছিলেন। (ছ) যে আশ্রমে রামচন্দ্রের শরাঘাতে নিপাতিত, দনুকবন্ধের অতিদীর্ঘ বাহু, অগস্ত্যের ক্রোধ উপশমনের নিমিত্ত উপস্থিত অজগররূপধারী নহুষের শরীর বলিয়া মুনিগণের ভ্রম জন্মাইয়াছিল। (জ) আর যে আশ্রমে রামচন্দ্র সীতার বিরহদুঃখের উপশম করিবার নিমিত্ত, স্বকীয় পর্ণশালার মধ্যে সীতার মূর্ত্তি চিত্রিত করিয়াছিলেন, তাহা দেখিয়া বনচরগণ এখনও মনে করিয়া থাকে যে, সীতা-দেবী যেন রামচন্দ্রের বাসস্থান দেখিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া পুনরায় পাতাল হইতে উঠিতেছেন।

(१) रावणविनाशसूचकौ। (२)...बाण...। (३)...प्रसादनागत...। (४)...विनोदार्थं। (५) उच्छ्वसन्तीव। (६) उपलक्ष्यते।

तस्य चैवंविधस्य (१) सम्प्रत्यपि प्रकटोपलक्ष्यमाण-पूर्ववृत्तान्तस्यागस्त्याश्रमस्य नातिदूरे जलनिधि-पान-कुपित-वरुणोत्साहितेन (२) अगस्त्यमत्सरात्तदाश्रम-समीपवर्त्त्यपर इव वेधसा महाजलनिधिरुत्पादितः, (झ) प्रलयकाल-विघटिताष्ट-दिग्भाग-(३) सन्धिबन्धं गगनतलमिव भुवि निपतितम्, (ञ) आदिवराह-समुद्धृतधरामण्डल-स्थानमिव सलिल-पूरितम्, (ट) अनवरत-मज्जदुन्मद-शबर-कामिनी-कुचकलस-लुलित-जलम् (ठ) उत्फुल्ल-कुमुद-कुवलय-कह्लारम्, (ड)

(झ) तस्येति। प्रकटं उपलक्ष्यमाणा उत्तरूपेण स्पष्टमनुभूयमानाः पूर्ववृत्तान्ता यस्य तस्य। नातिदूरे पम्पाभिधानं सरो वर्त्तत इत्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तानि पम्पासरसो विशेषणानि। जलनिधीनां समुद्राणां पानेन कुपितो जलस्वामित्वात् क्रुद्धो यो वरुणस्तेन उत्साहितः अपरं महाजलनिधिमुत्पादयितुं दत्तोत्साहः तेन, वेधसा सृष्टिकर्त्रा, अगस्त्यमत्सरात् अगस्त्यं प्रति विद्वेषात् तस्यागस्त्यस्य आश्रम-समीपवर्त्ती, अपरो महाजलनिधिरिव उत्पादितः अतिविशालत्वादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) प्रलयेति। प्रलयकाले कल्पान्तसमये विघटिता विश्लिष्टाः स्खलिताः, अष्टानां दिग्भागानां सन्धिबन्धाः संयोजनबन्धनानि यस्य तत्, अतएव भुवि निपतितं गगनतलमिव स्थितं नितान्तनिर्म्मलत्वादति-विशालत्वाच्चेति भावः। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) आदीति। आदिवराहेण नारायणस्तृतीयावतारेण महावराहेण, समुद्धृतं समुत्तोलितं यत् धरा-मण्डलं पृथिवीमण्डलं तस्य स्थानं अवकाशः, सलिलपूरितमिव स्थितं अतिविशालत्वादित्यभिप्रायः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) अनेति। अनवरतं सर्व्वदा मज्जन्तीनामवगाहमानानां उन्मदानां यौवनगर्व्वितानां शबरकामिनीनां भिल्लस्त्रीणां कुचकलसैः लुलितानि आलोड़ितानि जलानि यस्य तत्। अत्र कुचाः कलसा इव कुचा एव वा कलसा इत्युभयविधसमासस्यापि सम्भवादुपमारूपकयोः सन्देहसङ्करोऽलङ्कारः।

(ड) उत्फुल्लेति। उत्फुल्लानि विकसितानि कुमुदानि श्वेतोत्पलानि कुवलयानि नीलोत्पलानि कह्लाराणि रक्तोत्पलानि च यस्मिन् तत्।

(ঝ) সে আশ্রম দেখিলে পূর্ব্ববর্ত্তী ঘটনাবলী স্পষ্টরূপে অনুভূত হয়, এতাদৃশ সেই অগস্ত্যাশ্রমের অনতিদূরে 'পম্পা' নামে এক সরোবর আছে; অগস্ত্য সমুদ্র পান করায় জলাধিপতি বরুণ তাঁহার প্রতি ক্রুদ্ধ হইয়া অপর একটি মহাসমুদ্র সৃষ্টি করিবার জন্য উৎসাহ দিলে বিধাতা, যেন অগস্ত্যের প্রতি বিদ্বেষবশতঃ তাঁহার আশ্রমের নিকটবর্ত্তী অপর একটি মহাসমুদ্র সৃষ্টি করিয়া রাখিয়াছেন বলিয়া প্রতীতি হয়; (ঞ) প্রলয়কালে সকল দিকের সন্ধিবন্ধন স্খলিত হওয়ায় ভূতলনিপতিত আকাশের ন্যায় পম্পাসরোবরকে দেখা যায়; (ট) পম্পাসরোবর দেখিলে বোধ হয় যেন, আদিবরাহ পৃথিবীমণ্ডল উত্তোলন করিয়া নিলে সেই স্থানটি জলদ্বারা পূর্ণ করিয়া রাখা হইয়াছে; (ঠ) অনবরত অবগাহনকারী যৌবনগর্ব্বিত ভিল-রমণীগণের কুচকুম্ভ, পম্পাসরোবরের জল আলোড়িত করিয়া থাকে; (ড) পম্পাসরোবরে শ্বেত,

(१) तस्य च सम्प्रत्यपि। (२)...वरुणप्रोत्साहितेन। (३)...विघटिताष्टदिग्विभाग...।

उन्निद्रारविन्द-मधुविन्दु-(१) बद्धचन्द्रकम्, (ढ) अलिकुल-पटलान्धकारित-सौगन्धिकम्, (ण) सारसित (२)-समद-सारसम्, (त) अम्बुरुह-मधुपान-मत्त-कलहंसकामिनी-कृत-कोलाहलम्, (थ) अनेक-जलचर-पतङ्गशत-(३) सञ्चलन-चलित-(४) वाचाल-वीचिमालम्, (द) अनिलोल्लासित (५)-कल्लोल-शिशिर-शीकरारब्ध-(६) दुर्द्दिनम्, (ध) अशङ्कितावतीर्णाभिरम्भः-(७) क्रीड़ारागिणीभिः

(ढ) उन्निद्रेति। उन्निद्राणां प्रस्फुटितानां अरविन्दानां पद्मानां मधुविन्दुभिः मकरन्दकणैः बद्धा जलोपरि कृताः चन्द्रकाः मयूरपिच्छस्थ-चन्द्राकृतिचिह्नविशेषा यस्मिन् तत्।

(ण) अलीति। अलिकुलानां भ्रमरगणानां पटलेन समूहेन अन्धकारितानि आच्छादितानि सौगन्धिकानि कह्लाराणि यस्मिन् तत्। अत्र एकेनैव वक्तव्यनिर्वाहे कुलपटलेति शब्दद्वयाभिधानादधिकपदतादोषः, स चैकतरस्य परित्यागेन परिहरणीयः।

(त) सारसितेति। आरसितेन सह वर्त्तमाना इति सारसिताः सशब्दाः समदा मत्ताः सारसा जलचरपक्षिविशेषा यस्मिन् तत्। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः।

(थ) अम्बुरुहेति। अम्बुरुहाणां पद्मानां मधुपानेन मत्ता याः कलहंसकामिन्यः कलहंस्यस्ताभिः कृतः कोलाहलः कलकलो यस्मिन् तत्।

(द) अनेकेति। अनेकस्य बहुतरस्य जलचराणां पतङ्गानां पक्षिणां शतस्य समूहस्य सञ्चलनेन चलिता, वाचाला शब्दायमाना च वीचिमाला तरङ्गश्रेणिर्यस्मिन् तत्। अत्र वाच वीचीति व्यञ्जनसङ्घस्य सकृत्साम्याच्छेकानुप्रासः।

(ध) अनिलेति। अनिलेन वायुना उल्लासिता उत्थापिता ये कल्लोला महातरङ्गाः तेषां शिशिरशीकरैः शीतलविन्दुभिः आरब्धं प्रवर्त्तितं दुर्द्दिनं मेघाच्छन्नदिनं वृष्टिदिनं यस्मिन् तत् वृष्टिवत्तेषामपि पतनादिति भावः। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(न) अशङ्कितेति। अशङ्कितं निर्जनतया निःशङ्कं यथा स्यात्तथा अवतीर्णाभिः प्रविष्टाभिः, अम्भः-

---

নীল ও রক্ত এই ত্রিবিধ উৎপলই প্রস্ফুটিত হইয়া থাকে; (ঢ) বিকসিত পদ্মের মধুবিন্দু জলের উপরে পতিত হইয়া ময়ূরপুচ্ছস্থ চন্দ্রাকৃতি চিহ্নের ন্যায় চিহ্ন জন্মায়, (ণ) ভ্রমরসমূহ সুগন্ধি রক্তোৎপলসমূহকে আচ্ছাদন করিয়া অবস্থান করে, (ত) সারসপক্ষিগণ আমোদে রব করে, (থ) কলহংসীগণ পদ্মমধুপানে মত্ত হইয়া কোলাহল করে, (দ) বহুতর জলচর পক্ষিসমূহের সঞ্চরণে তরঙ্গশ্রেণী উৎপন্ন হইয়া শব্দ করিয়া থাকে, (ধ) বায়ুর বেগে বড় বড় তরঙ্গ উঠিয়া থাকে, এবং তাহার শীতল জলবিন্দুসমূহ পতিত হইয়া বৃষ্টির দিন করিয়া ফেলে, (ন) জলক্রীড়ার অনুরাগিণী

---

(१)...मधुद्रव, मधुविन्दुनिष्यन्द...। (२) आरसित...। (३)...पतत्रिशत...। (४)...सञ्चलित...।
(५) अनिलोल्लसित ..। (६) कल्लोलशिशिरशीकरारब्ध...। (७) अम्भः।

স্নানসময়ে বনদেবতাভিঃ কেশপাশকুসুমৈঃ (১) সুরভীকৃতম্, (ন) একদেশাবতীর্ণ-মুনিজনাপূর্য্যমাণ-কমণ্ডলু-কল-জলধ্বনি-মনোহরম্, (প) উন্মিষ-(২) দুৎপল-বন-মধ্যচারিভিঃ সবর্ণতয়া রসিতানুমেয়ৈঃ কাদম্বকদম্বকৈ-(৩) রাসেবিতম্, (ফ) অভিষেকাবতীর্ণ-পুলিন্দরাজ-সুন্দরী-(৪) কুচ-চন্দনধূলি-ধবলিত-তরঙ্গম্, (৫) (ব) উপান্ত-জাত-কেতকী-(৬) রজঃপটল-বদ্ধ-কূল-পুলিনম্, (ভ) আসন্নাশ্রমাগত-

---

ক্রীড়ায়াং জলখেলায়াং রাগিণীভিঃ উৎকটেচ্ছাশালিনীভিঃ বনদেবতাভিঃ বনাধিষ্ঠাতৃদেবীভিঃ স্নানসময়ে কেশপাশানাং কুসুমৈঃ সুরভীকৃতং সুগন্ধীকৃতম্।

(প) একেতি। একদেশে একস্মিন্ পার্শ্বে অবতীর্ণৈঃ অন্তঃপ্রবিষ্টৈঃ মুনিজনৈঃ আপূর্য্যমাণা যে কমণ্ডলবঃ তেষাং কলৈরব্যক্তমধুরৈঃ জলধ্বনিভিঃ জলপূরণশব্দৈঃ মনোহরং সুন্দরম্।

(ফ) উন্মিষদিতি। উন্মিষতো বিকসতঃ উৎপলবনস্য শ্বেতোৎপলকাননস্য মধ্যে চরন্তীতি তৈঃ, অতএব সবর্ণতয়া শ্বেতোৎপলকাদম্বকদম্বকয়োঃ সমানবর্ণতয়া রসিতেন শব্দেন অনুমেয়ৈরনুমানগম্যৈঃ ন তু পৃথক্তয়া চাক্ষুষপ্রত্যক্ষযোগ্যৈরিতি ভাবঃ, কাদম্বকদম্বকৈঃ কলহংসগণৈঃ আসেবিতং আশ্রিতম্। অত্র রসিতানুমেয়ৈরিত্যনেন মীলিতালঙ্কারো ব্যজ্যত ইতি বস্তুনা অলঙ্কারধ্বনিঃ।

(ব) অভিষেকেতি। অভিষেকায় স্নানায় অবতীর্ণা জলমধ্যপ্রবিষ্টা যাঃ পুলিন্দরাজস্য কিরাতপতেঃ সুন্দর্য্যো রমণ্যঃ তাসাং যে কুচাঃ স্তনাঃ তেষাং চন্দনধূলিভিঃ লিপ্ত শুষ্ক-মলয়জরজোভিঃ ধবলিতাঃ শ্বেতবর্ণীকৃতাঃ তরঙ্গা যস্য তৎ। অত্র ধবলীকরণাসম্বন্ধেঽপি তৎসম্বন্ধোক্তেরতিশয়োক্তিরলঙ্কারঃ।

(ভ) উপান্তেতি। উপান্তে জলসমীপে জাতানাং উৎপন্নানাং কেতকীনাং কেতকীপুষ্পাণাং রজঃপটলৈঃ পরাগসমূহৈঃ বদ্ধং নির্ম্মিতং কূলে কূলসমীপে পুলিনং সৈকতং যস্য তৎ। অত্রাপি পূর্ব্ববদতিশয়োক্তিরলঙ্কারঃ।

(ম) আসন্নেতি। আসন্নেভ্যো নিকটবর্ত্তিভ্য আশ্রমেভ্য আগতৈস্তাপসৈস্তপস্বিভিঃ ক্ষালিতানাং ধৌতানাং

বনদেবীগণ স্নানের সময়ে নিঃশঙ্কচিত্তে জলমধ্যে প্রবেশ করিয়া কেশপাশস্থিত কুসুমসমূহে সরোবরের জল সৌরভময় করিয়া থাকেন, (প) মুনিগণ একদিকে জলমধ্যে প্রবেশ করিয়া জলদ্বারা কমণ্ডলু পূরণ করিতে লাগিলে তাহার অব্যক্ত মধুরশব্দে চিত্ত আকর্ষণ করে, (ফ) কলহংসগণ প্রস্ফুটিত কুমুদবনমধ্যে বিচরণ করে, কিন্তু সেই কলহংসগণের ও কুমুদবনের সমান শ্বেতবর্ণ বলিয়া কলহংসগণকে পৃথক্‌ভাবে প্রত্যক্ষ করিতে না পারিলেও রব শুনিয়া অনুমান করা যায়, (ব) কিরাতরাজের ভার্য্যাগণ স্নান করিবার জন্য জলমধ্যে প্রবেশ করিলে তাহাদের স্তনলিপ্ত চন্দনের ধূলি প্রসারিত হইয়া তরঙ্গশ্রেণীকে শ্বেতবর্ণ করিয়া থাকে, (ভ) জলের নিকটে উৎপন্ন কেতকীকুসুমের পরাগসমূহ জলে পতিত হইয়া তীরের নিকটে পুলিন (বালুকাময়, চড়া) বন্ধন করিয়া থাকে, (ম) নিকটবর্ত্তী আশ্রম হইতে তপস্বিগণ আসিয়া

---

(১) কেশকুসুমৈঃ। (২) উন্মিষিত...। (৩) কাদম্বৈঃ। (৪)...শবরী...। (৫)...ধবলিততলম্।
(৬) উপান্তকেতকী...।

तापस-क्षालितार्द्र-वल्कल-कषाय-पाटल-तट-जलम्, (म) उपतट-विटपि-(१) पल्लवपुटानिल-वीजितम्, (य) अविरल-तमाल-वीथिकान्धकारिताभिः (२) (र) वालिनिर्वासितेन सञ्चरता प्रतिदिनमृष्यमूकवासिना सुग्रीवेणावलुप्त-फल-लघु-(३) लताभिः (ल) उदवासि-तापसानां देवतार्चनोपयुक्त-कुसुमाभिः (व) उत्पल-

---

आर्द्राणां क्लिन्नानां सद्यश्छित्त्वा आनीतत्वेन निर्यासनिर्गमादिति भावः, वल्कलानां परिधेयतरुत्वचां कषायैर्निर्यासैः पाटलं श्वेतरक्तं तटजलं तीरसमीपजलं यस्य तत्, तीरसमीप एव क्षालनादिति भावः। "कषायः सुरभौ रसे" इति त्रिकाण्डशेषः।

(य) उपेति। उपतटे तटसमीपे ये विटपिनो वृक्षास्तेषां पल्लवपुटानां अनिलैर्वायुभिः वीजितं स्पर्शविशिष्टीकृतम्।

(र) अविरलेति। अविरला घना या तमालवीथिका तमालतरुश्रेणी तया अन्धकारिताभिः अन्धकारविशिष्टीकृताभिः। इतः प्रभृति तृतीयाबहुवचनान्तपदानि वनराजिभिरिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ल) वालिना वानरराजेन निर्वासितः राजधानीतो बहिष्कृतः तेन, प्रतिदिनं सञ्चरता समागच्छता, ऋष्यमूके पर्वते वसतीति तेन, सुग्रीवेण वालिभ्रात्रा अवलुप्तानि आहृतानि फलानि याभ्यः ताः, अतएव लघ्वः फलभारहीना लता यासु ताभिः।

पुरा किल मायावी नाम कश्चन दानवो वालिना सुग्रीवेण च सह युध्यमानस्तयोः प्रहारैश्च परमदुर्बलीभूतो विलमेकं प्राविशत्। वाली तु तत्रैव स्थातुं सुग्रीवमादिश्य स्वयं तं निहन्तुं तद्विलमेव प्रविष्टः। सुग्रीवस्तु वालिन उत्थाने विलम्बं विलमुखाच्च रुधिरमुद्गमनमवलोक्य 'वाली निहत' इति मन्यमानस्तद्विलमुखे वृहन्तं पाषाणैकं निधाय किष्किन्धायामागत्य वालिराज्यं जग्राह। अथ तु वाली मायाविनं निहत्यागत्य विलमुखे पाषाणमवलोक्य पदाघातेन तमपसार्य्य उत्थाय किष्किन्धामागत्य सुग्रीव-दुरभिसन्धिं बुध्यमानस्तं किष्किन्धातो निष्काशयामास। सुग्रीवस्तु गत्वा ऋष्यमूकपर्वते वसतिञ्चकारेति रामायणम्।

(व) उदेति। उदके वसन्तीत्युदवासिनस्ते ते तापसाश्चेति तेषां। "उदकस्योदः पेषवासवाहनादिषु" इति उदकशब्दस्योदादेशः। देवतार्चनेषु उपयुक्तानि यावन्ति आवश्यकानि तावन्तीत्यर्थः कुसुमानि यासु ताभिः।

বৃক্ষ হইতে সদ্য আনীত বল্কল প্রক্ষালন করেন, তখন সেই বল্কলের কষ নির্গত হইয়া তীরের নিকটবর্ত্তী জলকে পাটলবর্ণ করিয়া ফেলে; (য) তীরসমীপস্থ নানাবিধ বৃক্ষ-জাত পল্লবসমূহের বায়ু জলের উপর ব্যজন করে; (র) নিবিড় বনশ্রেণী পম্পাসরোবরের তীরদেশ অবরুদ্ধ করিয়া রহিয়াছে; ঘন ঘন তমালবৃক্ষগণ সেই তীরস্থ বনকে অন্ধকার করিয়া রাখিয়াছে; (ল) বানররাজ বালী কিষ্কিন্ধ্যা হইতে সুগ্রীবকে নির্ব্বাসিত করিলে সুগ্রীব ঋষ্যমূকপর্ব্বতে বাস করত প্রতিদিন এই বনে আসিয়া নানাবিধ ফল আহরণ করেন, তাহাতে লতাসকল ভারহীন হইয়া ঐ বনশ্রেণীতে অবস্থান করে; (ব) জলমধ্যে অবস্থানপূর্ব্বক তপস্যাকারী মুনিগণের দেবতা-

---

(१)...वृक्षपल्लवानिल...। (२)...वीथ्यन्धकारिताभिः। (३) परिलघु...।

जलचर-पतङ्ग-पक्षपुट-विगलित-जलबिन्दु-सेक-सुकुमार-किसलयाभिः (य) लता-मण्डपतल-शिखण्डि-मण्डलारब्ध-ताण्डवाभिः (र) अनेक-कुसुम-परिमल-वाहिनी-भिर्वनदेवताभिः श्वास-(१) वासिताभिरिव वनराजिभिरुपरुद्ध-(२) तीरम्, (ल) अपरसागरशङ्किभिः सलिलमादातुमवतीर्णैर्जलधरैरिव बहलपङ्कमलिनैर्वनकरि-भिरनवरतमापीयमानसलिलम्, (३) (ह) अगाधमनन्तमप्रतिमं (४) अपां निधानं पम्पाभिधानं पद्मसरः। (क्ष)

(य) उत्पतदिति। उत्पततां उड्डीय गच्छतां जलचराणां पतङ्गानां पक्षिणां पक्षपुटेभ्यो विगलितै-र्जलबिन्दुभिर्यः सेकः सेचनं तेन सुकुमाराणि विशेषकोमलानि किसलयानि पल्लवानि यासां ताभिः।

(र) लतेति। लतामण्डपतलेषु लतावृतस्थानमध्येषु शिखण्डिमण्डलेन मयूरसमूहेन आरब्धं प्रवर्त्तितं ताण्डवं नृत्यं यासु ताभिः। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(ल) अनेकेति। अनेकेषां नानाविधानां कुसुमानां परिमलान् सौरभाणि वहन्तीति तासद्यो‌ङ्काताभिः, अतएव वनदेवताभिः कर्त्रीभिः श्वासेन श्वासवायुना वासिताभिः सुरभीकृताभिरिव स्थिताभिः, तासां श्वासस्य सुरभित्वादिति भावः। वनराजिभिः वनश्रेणीभिः उपरुद्धानि व्याप्तानि तीराणि यस्य तत्, पम्पासरसो विशेषणमेतत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) अपरेति। 'अयं अपरः सागरः' इति शङ्कन्ते भ्रान्तिं कुर्वन्तीति तैः, जलधरैर्मेघैरिव। बहल-पङ्कैर्गात्रलग्नप्रचुरकर्द्दमैर्मलिनास्तैः। आपीयमानानि सलिलानि जलानि यस्य तत्। अत्र जलधरजाति-स्वरूपोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क्ष) अगाधमिति। अगाधं अतलस्पर्शं, अनन्तं शेषरहितं अतिवृहदित्यर्थः, अप्रतिमं उपमारहितं, अपां जलानां निधानं निधिस्वरूपं अनन्तजलशालित्वादिति भावः, पम्पा इत्यभिधानं नाम यस्य तत्, पद्मानामाश्रयभूतं सरः पद्मसरः। पूर्वमस्यैव पम्पासरसस्तीरजातत्वेन फलविशेषस्य 'पम्पा' 'पेंपे' इति वङ्ग-प्रचलितं नाम मन्यन्ते स्वानुमानमात्रनिर्णीयमानभुवनवृत्तान्ताः खल्विदानीन्तनाः केचन जनाः।

পূজাতে প্রয়োজনীয় সমস্ত কুসুমই ঐ বনশ্রেণীতে আছে; (শ) জলচর পক্ষিগণ উপর দিয়া উড়িয়া যাইবার সময় তাহাদের পাখা হইতে নির্গত জলবিন্দু পতিত হওয়ায় ঐ বনের পল্লবগুলি আরও কোমল হইয়া থাকে; (ষ) ঐ বনের লতামণ্ডপমধ্যে ময়ূরগণ নৃত্য করিয়া থাকে; (স) নানাজাতীয় পুষ্পের সৌরভ বহন করায় ঐ তীরস্থ বনশ্রেণী যেন বনদেবতাগণের শ্বাসবায়ুতে সৌরভময় হইয়াছে বলিয়া প্রতীতি হয়; (হ) অপর সমুদ্রভ্রমে জল গ্রহণ করিবার জন্য সরোবর-মধ্যে প্রবিষ্ট মেঘসমূহের ন্যায়, গাত্রে প্রচুর কর্দ্দম সংলগ্ন হওয়ায় মলিন-বর্ণ বন্য হস্তিসমূহ সর্ব্বদা সেই সরোবরের জল পান করে; (ক্ষ) আর পম্পাসরোবর অতলস্পর্শ, অতিবৃহৎ, তুলনারহিত, অক্ষয়জলসমন্বিত এবং পদ্মের আকরস্থান।

---

(১) বনদেবতানিঃশ্বাস, বনদেবতাভিঃ স্বশ্বাস:...। (২) রুদ্ধ...। (৩) আপীযমানম্।

(৪) অপ্রতিমং।

यत्र च विकच-कुवलय-प्रभा-श्यामायमान-पक्षपुटान्यद्यापि मूर्त्तिमद्रामशाप-ग्रस्तानीव मध्यचारिणामालोक्यन्ते (१) चक्रवाकनाम्नां (२) मिथुनानि। (क)

तस्यैव पद्मसरसः (३) पश्चिमे तीरे राघव-शर-प्रहार-जर्जरित-जीर्ण-तालतरु-षण्डस्य (४) च समीपे दिग्गज-करदण्डानुकारिणा जरदजगरेण सततमावेष्टित-मूलतया बद्धमहालवाल इव (ख) तुङ्ग-स्कन्धावलम्बिभिरनिलवेल्लितैरहिनिर्म्मोक-

---

(क) यत्रेति। यत्र पम्पासरसि। विकचानां विकसितानां कुवलयानां नीलोत्पलानां प्रभाभिः द्युतिभिः श्यामायमानानि समीपसञ्चरणात् श्यामलवदाचरन्ति पक्षपुटानि येषां तानि। मध्यचारिणां पम्पा-सरोवरमध्ये विचरणकारिणां चक्रवाकनाम्नां पक्षिणां मिथुनानि युगलानि, अद्यापि मूर्त्तिमता रामशापेन दाशरथेरभिसम्पातेन ग्रस्तानि गृहीतानीव आलोक्यन्ते तत्र स्थितैर्जनैरिति शेषः। श्यामायमानपक्षपुटत्वा-दिति भावः।

अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। "मालिन्यं व्योम्नि पापे" इति कविसमयप्रसिद्धिवशेन पापस्य मलिनतया वर्णनीयत्वात् शापस्य च पापजन्यतया तत्तुल्यतयैव वर्णनौचित्यात् श्यामायमानपक्षपुटतया रामशापग्रस्तानीवे-त्युत्प्रेक्षितमिति बोध्यम्।

पुरा किल पम्पासरसीतीरे सीतावियोगविकलं राममवलोक्य चक्रवाका हसन्ति स्म। रामस्तु तदव-लोक्य "ममेव युष्माकमपि यामिन्यां प्रियावियोगो भविष्यती"ति शशाप इत्याग्निवेश्यरामायणवार्त्ता।

(ख) तस्यैवेति। राघवस्य रामस्य शरप्रहारेण जर्जरितानां विदारितानां जीर्णानां पुरातनानां ताल-तरूणां तालवृक्षाणां षण्डस्य समूहस्य समीपे महान् जीर्णः शाल्मलीवृक्षोऽस्तीति वक्ष्यमाणेनान्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि शाल्मलीवृक्षस्य विशेषणानि। पुरा किल रामचन्द्रस्य वालिवधोपयोगि बलमस्ति नवेति परीक्षार्थं सुग्रीवेण प्रेरितो रामचन्द्र एकेनैव शरेण श्रेणीवद्धान् सप्त तालतरून् बिभेद इति रामायणम्। दिग्गजस्य करदण्डं शुण्डादण्डं अनुकर्त्तुं शीलं यस्य तेन, तद्वद्वृहतेत्यर्थः, जरन् वृद्धो योऽजगरस्तदाख्यो वृहत् सर्पस्तेन। बद्धं निर्म्मितं महत् आलवालं मूले जलरक्षणार्थखातस्य मृत्परिवेष्टनं यस्य स तादृश इव। अत्र दिग्गजेत्यत्र आर्थी समासगता लुप्तोपमा, आलवालबन्धनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा च अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ক) যে পম্পাসরোবরে প্রস্ফুটিত নীলোৎপলসমূহের প্রভাদ্বারা পক্ষপুট শ্যামবর্ণ হইয়া গেলে মধ্যবর্ত্তী চক্রবাক-নামক পক্ষিগণকে অদ্যাপি রামচন্দ্রের মূর্ত্তিমান্ অভিশাপগ্রস্তের ন্যায় দেখা যায়।

(খ) সেই পদ্মাকর পম্পাসরোবরের পশ্চিমতীরে, রামচন্দ্রের শরপ্রহারে জর্জ্জরিত পুরাতন তালবৃক্ষ সমূহের নিকটে পুরাতন বৃহৎ এক শাল্মলীবৃক্ষ আছে। দিক্‌হস্তীর শুণ্ডের ন্যায় বৃহৎ ও প্রাচীন এক অজগর সর্প সেই শাল্মলী বৃক্ষের মূলদেশ বেষ্টন করিয়া থাকায় যেন প্রকাণ্ড আলবাল নির্ম্মাণ করিয়া রাখা হইয়াছে বলিয়া প্রতীতি হয়; (গ) সর্পকঞ্চুক, (সাপের খোলস,

---

(१) मध्यचारिणालोक्यन्ते। (२) चक्रनाम्ना। (३) तस्यैवविधस्य सरसः। (४) तालतरुखण्डस्य।

धृतोत्तरीय इव (ग) दिक्चक्रवाल-परिमाणमिव गृह्णता भुवनान्तरालविप्रकीर्णेन शाखासञ्चयेन प्रलयकाल-ताण्डव-प्रसारित-भुजसहस्रमुडुपतिशेखर-(१) मिव विडम्बयितुमुद्यतः, (घ) पुराणतया पतनभयादिव गगनस्कन्ध-(२) लग्नः, (ङ) निखिल-शरीर-व्यापिनीभिरतिदूरोन्नताभिर्जीर्णतया शिराभिरिव परिगतो व्रततिभिः, (च) जरातिलकविन्दुभिरिव कण्टकै-(३) राचिततनुः, (छ) इतस्ततः

(ग) तुङ्गेति। तुङ्गं उच्चं स्कन्धं प्रकाण्डदेशं अंसदेशञ्च अवलम्बितुं आश्रित्य लम्बमानीभवितुं शीलं येषां तैः, अनिलवेल्लितैर्वायुकम्पितैः अहिनिर्म्मोकैः सर्पकञ्चुकैः धृतोत्तरीय इव गृहीतोत्तरीयवसन इव। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) दिगिति। दिक्चक्रवालस्य सकलदिङ्मण्डलस्य परिमाणं इयत्तापरिमितिं गृह्णतेव बुध्यमानेनेव अथवा कुर्वतेव, भुवनान्तराले जगन्मध्ये विप्रकीर्णः समन्ताद्विस्तारितस्तेन, शाखासञ्चयेन, प्रलयकाले यत् ताण्डवं उद्धतनृत्यं तत्र प्रसारितं समन्ताद्विस्तारितं भुजसहस्रं बहुतरबाहवो येन तं उडुपतिर्नक्षत्रेशश्चन्द्रः शेखरः शिरोभूषणं यस्य तं महादेवं विडम्बयितुं अनुकर्त्तुमुद्यतः प्रवृत्त इव। अत्र प्रथमा क्रियोत्प्रेक्षा, द्वितीया चार्थोपमा, तृतीयापि क्रियोत्प्रेक्षा, इत्थं तेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ङ) पुराणेति। पुराणतया प्राचीनतया। यथा कश्चित् प्राचीनो जनः पतनभयादपरस्य स्कन्धमवलम्ब्य तिष्ठति तद्वदिति भावः। अत एवात्र कार्य्येण शाल्मलीवृक्षे प्राचीनजनव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः हेतूत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(च) निखिलेति। अतिदूरोन्नताभिः अतिदूरोत्थिताभिः, वार्द्धक्ये नातिरिक्तमुद्गताभिश्च। जीर्णतया वार्द्धक्येन शिराभिर्धमनीभिरिव व्रततिभिर्लताभिः, परिगतः परिव्याप्तः। अत्र वृद्धकालोत्पन्नतदीयशिराभिरिवेति तात्पर्य्यादुत्प्रेक्षैवालङ्कारः। केचित्तु वृद्धकालोत्पन्नमानवीयशिराभिरिवेत्यर्थं मन्यमाना उपमामाचक्षते।

(छ) जरेति। जरायां वार्द्धक्ये ये तिलकविन्दवः सर्वदेहेषु जायमानाः कृष्णवर्णाश्चिह्नविशेषास्तैरिव कण्टकैः आचिता व्याप्ता तनुः शरीरं यस्य सः। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षैवालङ्कारः। उपमेति केचित्।

বা খোস) তাহার উচ্চ স্কন্ধদেশে লম্বিত থাকিয়া বায়ুবেগে সঞ্চালিত হওয়ায় সেই শাল্মলীবৃক্ষ যেন স্কন্ধে উত্তরীয় বসন ধারণ করিয়া রহিয়াছে বলিয়া বোধ হয়; (ঘ) শাখাসমূহ চতুর্দ্দিকে বিস্তীর্ণ হইয়া 'দিঙ্মণ্ডল কত দূর আছে' তাহার যেন পরিমাণ করিতেছে, তাহাতে সেই শাল্মলীবৃক্ষ, প্রলয়কালীন ভয়ঙ্কর নৃত্যের সময় চতুর্দ্দিকে অসংখ্য বাহুপ্রসারণকারী মহাদেবের যেন অনুকরণ করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছে বলিয়া বোধ হয়; (ঙ) আর প্রাচীন বলিয়া পতিত হইবার ভয়েই যেন সেই শাল্মলীবৃক্ষ আকাশের স্কন্ধদেশ অবলম্বন করিয়া রহিয়াছে; (চ) বার্দ্ধক্য-নিবন্ধন শিরাসমূহের ন্যায় অবস্থিত, সর্ব্বশরীরব্যাপী এবং অতিদূরে উত্থিত লতা সমূহ সেই শাল্মলীবৃক্ষকে বেষ্টন করিয়া রহিয়াছে; (ছ) বৃদ্ধকালে সর্ব্বশরীরে উৎপন্ন কৃষ্ণবর্ণ চিহ্নসকলের ন্যায় কণ্টক সমূহ তাহার সর্ব্বাঙ্গব্যাপী হইয়া রহিয়াছে; (জ) সমুদ্রের জল পান করিয়া

(१) उडुपतिशकलशेखरमिव। (२) पवनस्कन्ध,…वायुस्कन्ध…। (३) निजकण्टकैः।

परिपीतसागरसलिलै-(१) र्गगनागतैः पत्ररथैरिव शाखान्तरेषु (२) निलीयमानैः क्षणमम्बुभारालसैरार्द्रीकृतपल्लवैर्जलधरपटलैरप्यदृष्टशिखरः, (३) (ज) तुङ्गतया (४) नन्दनवनश्रियमिवावलोकयितुमभ्युद्यतः, (झ) समीप-(५) वर्त्तिनामुपरि सञ्चरतां गगनतल-(६) गमनखेदायासितानां रविरथतुरङ्गमाणां सृक्कपरिस्रुतैः फेनपटलैः सन्देहित-तूलराशिभिर्धवलीकृतशिखरशाखः, (ञ) वनगज-कपोल-कण्डूयन-लग्न-मद-(७) निलीन-मत्त-मधुकरमालेन लोहशृङ्खलाबन्धननिश्चलेनेव (८) कल्पस्थायिना मूलेन समुपेतः, (ट) कोटराभ्यन्तरनिविष्टैः स्फुरद्भिः (९)

(ज) इत इति। परिपीतानि सागराणां सलिलानि जलानि यैस्तैः, इतस्ततः समन्ततः, गगनागतैः आकाशमार्गेणोपस्थितैः, पत्ररथैः पक्षिभिरिव "पतत्पत्ररथाण्डजाः" इत्यमरः, शाखानां अन्तरेषु अभ्यन्तरेषु क्षणं निलीयमानैः प्रच्छन्नैः, अम्बुभारेण पीतजलभरेण अलसैर्मन्दगामिभिः, आर्द्रीकृतानि वृष्ट्या स्तिमितानि पल्लवानि अधःकिसलयानि यैस्तैः, जलधरपटलैः मेघवृन्दैरपि न दृष्टं अत्युच्चे स्थिततया नावलोकितं शिखरं शीर्षं यस्य सः। अत्र पत्ररथैरिवेत्युपमा, तथा जलधरपटलानां शिखरदर्शनसम्बन्धेऽपि तदसम्बन्धोक्त्यतिशयोक्तिश्चेत्यनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अतिशयोक्त्या चात्युच्चत्वं व्यज्यते इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(झ) तुङ्गेति। तुङ्गतया उच्चतया नन्दनवनश्रियं इन्द्रोपवनशोभाम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) समीपेति। गगनतले गमनेन यः खेदः परिश्रमस्तेन आयासितानां खिन्नानां रविरथतुरङ्गमाणां सूर्यरथनियुक्तघोटकानां सृक्कभ्यां ओष्ठप्रान्ताभ्यां परिस्रुतैर्गलितैः, सन्देहितः 'अयमेतद्व्रजातस्तूलराशिर्न वा' इत्यमात्मनि संशयविषयीकृतस्तूलराशिर्यैस्तैः, फेनपटलैः शुभ्रलालासमूहैः, धवलीकृताः शिखरशाखा अग्रवर्त्तिन्यः शाखा यस्य सः। अत्र तादृशफेनपटलैः शिखरशाखानां धवलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्त्यतिशयोक्तिरलङ्कारः। तेन चात्युच्चत्वं व्यज्यते इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ट) वनेति। वनगजानां कपोलयोः कण्डूयनेन लग्नेषु मदेषु दानजलेषु निलीना अवस्थिता मत्ता मधुपानमत्ता मधुकरमाला भ्रमरश्रेणिर्यस्मिन् तेन, अतएव लोहशृङ्खलया यद्बन्धनं तेन निश्चलं स्थिरं तेनेव

নানাদিক্ হইতে আকাশমার্গে উপস্থিত, পক্ষিগণের ন্যায় শাখাসমূহের অভ্যন্তরে ক্ষণকাল প্রচ্ছন্নভাবে অবস্থিত এবং জলভারে মন্দগামী মেঘসমূহও বৃষ্টির জলে নিম্নবর্ত্তী পল্লবসমূহকে আর্দ্র করিয়া থাকে, কিন্তু অগ্রভাগ দেখিতে পায় না ; (ঝ) সেই শাল্মলীবৃক্ষ অতিশয় উচ্চতানিবন্ধন যেন নন্দনকাননের শোভা দেখিবার জন্য উদ্যত হইয়াছে ; (ঞ) নিকটবর্ত্তী হইয়া উপরিভাগে বিচরণকারী এবং সর্ব্বদা আকাশগমনের পরিশ্রমে ক্লান্ত সূর্য্যরথনিযুক্ত ঘোটকগণের ওষ্ঠপ্রান্ত হইতে নির্গত ফেনসমূহ তুলরাশির সংশয় জন্মাইয়া সেই শাল্মলীবৃক্ষের উপরের শাখাসমূহকে শুভ্রবর্ণ করিয়া থাকে ; (ট) তাহার মূলদেশে গণ্ড-কণ্ডূয়নের সময় বন্য

---

(१)…जलैः। (२) शाखान्तरशिखरेषु। (३)…शिखरदेशः। (४) उत्तुङ्गतया। (५) समसमीप…। (६) अम्बरतल…। (७) मदसलिल…। (८) बन्धनिश्चलेनेव। (९) पतद्भिः।

সজীব ইব মধুকরপটলৈঃ, (ঠ) দুর্য্যোধন ইবোপলক্ষিত-শকুনিপক্ষপাতঃ, (ড) নলিননাভ ইব (১) বনমালোপগূঢ়ঃ, (ঢ) নবজলধরব্যূহ ইব নভসি দর্শিতোন্নতিঃ, (২) (ণ) অখিলভুবনতলাবলোকনপ্রাসাদ ইব বনদেবতানাম্, অধিপতিরিব দণ্ডকারণ্যস্য, নায়ক ইব সর্ব্ববনস্পতীনাম্, সখেব বিন্ধ্যস্য, শাখা-

---

রতা, কল্পস্থায়িনা প্রলয়কালপর্য্যন্তস্থায়িনা। অত্র পদার্থহেতুকং কাব্যলিঙ্গং গুণোৎপ্রেক্ষা চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ঠ) কোটরেতি। কোটরাভ্যন্তরে শাখাস্থবিবরমধ্যে নিবিষ্টৈরবস্থিতৈঃ স্ফুরদ্ভিঃ স্পন্দমানৈঃ মধুকরপটলৈর্ভ্রমরসমূহৈঃ সজীবঃ সজীবন ইব প্রাণবিশিষ্ট ইবেত্যর্থঃ অভ্যন্তরে প্রাণবদ্ভ্রমরাণামবিরতস্পন্দনাদিতি ভাবঃ। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ, তেন চ মধুকরপটলমেব জীবনমিতি নিরঙ্গকেবলরূপকালঙ্কারো ব্যজ্যত ইত্যলঙ্কারেণালঙ্কারধ্বনিঃ।

(ড) দুর্য্যোধন ইতি। দুর্য্যোধনো ধৃতরাষ্ট্রজ্যেষ্ঠপুত্র ইব, উপলক্ষিতো লোকৈর্দৃষ্টঃ শকুনীনাং পক্ষিণাং পক্ষৈঃ পতত্রৈঃ পাতঃ পতনং যত্র সঃ, অন্যত্র তু উপলক্ষিতো লোকৈর্দৃষ্টঃ শকুনৌ গান্ধাররাজে পক্ষপাতঃ প্রণয়ো যস্য সঃ। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ।

(ঢ) নলিনেতি। নলিনং পদ্মং নাভৌ যস্য স নারায়ণ ইব, বনমালয়া অরণ্যশ্রেণ্যা উপগূঢ়ঃ সংশ্লিষ্টঃ, পক্ষে "আজানুলম্বিনী মালা সর্ব্বর্ত্তুকুসুমোজ্জ্বলা। মধ্যে স্থূলকদম্বাঢ্যা বনমালেতি কীর্ত্তিতা।" ইতি শব্দমালাধৃতলক্ষণয়া স্রজা উপগূঢ় আলিঙ্গিতঃ। পূর্ণোপমা।

(ণ) নবেতি। নবজলধরব্যূহো নূতনমেঘসমূহ ইব, নভসি আকাশে দর্শিতা উন্নতিঃ উচ্চতা যেন সঃ, অন্যত্র তু নভসি শ্রাবণে মাসি দর্শিতা উন্নতির্বৃদ্ধির্যেন সঃ। পূর্ণোপমা।

(ত) অখিলেতি। অখিলভুবনতলানাং সর্ব্বজগতাং অবলোকনপ্রাসাদ ইব নিরীক্ষণায় রাজগৃহমিব অত্যুচ্চত্বাদিতি ভাবঃ। অধিপতিরিব প্রধানত্বাদিত্যাশয়ঃ। সর্ব্ববনস্পতীনাং সর্ব্ববিধবৃক্ষাণাং "বনস্পতির্দ্রুমাত্রে

হস্তিগণের মদজল সংলগ্ন হইয়া যায়, তাহার উপরে মত্ত ভ্রমরগণ উপবিষ্ট হইলে বোধ হয়, যেন লৌহশৃঙ্খলে বদ্ধ থাকায় মূলদেশ নিশ্চল হইয়া প্রলয়কাল পর্য্যন্ত থাকিবে; (ঠ) ভ্রমরসমূহ কোটরমধ্যে থাকিয়া বিচরণ করায় সেই শাল্মলীবৃক্ষকে সজীব বলিয়া প্রতীতি হয়; (ড) দুর্য্যোধনের যেমন শকুনির প্রতি পক্ষপাত দৃষ্ট হইত, সেই শাল্মলীবৃক্ষেও তেমন পক্ষিগণের পক্ষ-পাত (পক্ষদ্বারা অবতরণ) দৃষ্ট হয়; (ঢ) শাল্মলীবৃক্ষ নারায়ণের ন্যায় বনমালায় পরিবেষ্টিত; (ণ) মেঘসমূহ যেমন শ্রাবণ মাসে আপনাদের উন্নতি (বৃদ্ধি) দেখায়, শাল্মলীবৃক্ষও তেমন আকাশে নিজের উন্নতি (উচ্চতা) দেখাইয়া থাকে; (ত) সমগ্র ভূমণ্ডল নিরীক্ষণ করিবার জন্য বনদেবতাগণের অত্যুচ্চ প্রাসাদের (মনুমেণ্টের) ন্যায়, দণ্ডকারণ্যের অধিপতির ন্যায়, সকল

---

(১) পদ্মনাভ ইব। (২) [illegible]তোন্নতিঃ।

बाहुभिरुपगुह्येव (१) विन्ध्याटवीमवस्थितो (२) महान् जीर्णः शाल्मली-वृक्षः (त)।

तत्र च शाखाग्रेषु कोटरोदरेषु पल्लवान्तरेषु स्कन्धसन्धिषु जीर्णवल्कल-(३) विवरेषु च महावकाशतया विस्रब्धविरचितकुलायसहस्राणि दुरारोहतया विगलितविनाशभयानि (४) नानादेशसमागतानि शुकशकुनिकुलानि प्रतिवसन्ति स्म। (थ) यैः परिणामविरलदलसंहति-(५) रपि स वनस्पति-रविरलदलनिचयश्यामल (६) इवोपलक्ष्यते दिवानिशं निलीनैः। (द)

विनापुष्पफलद्रुमे" इति विश्वः, नायकः प्रभुरिव, अत्रापि प्रधानत्वादित्यभिप्रायः। विन्ध्यस्य पर्वतस्य सर्वत्र तत्समानतुङ्गत्वादिति भावः। एषु प्रत्येकं जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। शाखा एव बाहवस्तैः विन्ध्याटवीं उपगुह्येव आलिङ्ग्येव अवस्थितः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(थ) तत्रेति। कोटरोदरेषु गात्रस्थविवराभ्यन्तरेषु। स्कन्धसन्धिषु प्रकाण्डसंयोगस्थानेषु वृक्षतो वृहद्विटपानामुत्पत्तिदेशेष्वित्यर्थः। महान् अवकाशः अन्तर्विस्तारो येषां तेषां भावस्तया, विस्रब्धं सविश्वासं निःशङ्कं यथा स्यात्तथा विरचितं निर्मितं कुलायसहस्रं नीडसमूहो यैस्तानि। दुःखेन अत्यन्ततुङ्गत्वात् कष्टेन आरुह्यत इति दुरारोहस्तस्य भावस्तया, विगलितं चित्तात् विच्युतं विनाशभयं व्याधादिभ्यो मरणभयं येषां तानि। शुकाः कीराः शकुनयस्तद्भिन्नाः पक्षिणः तेषां कुलानि समूहाः।

(द) यैरिति। दिवानिशं निलीनैः सर्वदावस्थितैः यैः शुकशकुनिकुलैः, परिणामेन प्राचीनतया जीर्णतयेत्यर्थः विरला अल्पा दलसंहतिः पत्रसमूहो यस्मिन् स तादृशोऽपि तरुणतरुवन्नूतनपत्राणां घनभावेनोत्पत्त्यभावात् पुरातनपत्राणाञ्च क्रमशो ह्रासादिति भावः, स वनस्पतिः शाल्मलीवृक्षः, अविरलदलनिचयेन घनपत्रसमूहेन श्यामलः श्यामवर्ण इव उपलक्ष्यते लोकैर्दृश्यते, तत्र तत्रावस्थितानां शुकशकुनीनां पत्रवत् श्यामलत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

বৃক্ষের প্রভুর ন্যায় এবং বিন্ধ্যপর্ব্বতের সখার ন্যায় সেই শাল্মলীবৃক্ষ স্বকীয় শাখা-বাহুদ্বারা যেন বিন্ধ্যাটবীকে আলিঙ্গন করিয়া অবস্থান করিতেছে।

(থ) সেই শাল্মলীবৃক্ষে শাখার অগ্রে, কোটরের অভ্যন্তরে চতুর্দ্দিকের পল্লবের মধ্যে, বৃহৎ বৃহৎ শাখার সন্ধিস্থলে এবং জীর্ণবল্কলস্থ বিবরের মধ্যে বিস্তৃত স্থান থাকায় নিঃশঙ্কভাবে কুলায় (বাসা) নির্ম্মাণ করিয়া, নানা স্থান হইতে আগত শুক, শারিকা ও অন্যান্য পক্ষিগণ, তাহাতে অন্যের আরোহণ করা দুঃসাধ্য বলিয়া মরণ-ভয় পরিত্যাগপূর্ব্বক বাস করিত।

(দ) প্রাচীনতানিবন্ধন অল্প অল্প পত্র থাকিলেও, যে সকল পক্ষিগণের দিবারাত্রি অবস্থান করায় সেই বৃক্ষকে ঘন ঘন পত্রসমূহ দ্বারা শ্যামবর্ণের ন্যায় দেখা যাইত।

---

(१) उपगृह्येव, अवगुह्येव। (२) स्थितः। (३)...वल्क...। (४) विगतविनाशभयानि, विगतभयानि। (५) विरलसंहतिः, विरलदलसन्ततिः। (६) श्यामः।

ते च तस्मिन् वनस्पतावतिवाह्यातिवाह्य रजनीमात्मनीड़ेषु (१) प्रतिदिन-मुत्थायोत्थायाहारान्वेषणाय नभसि विरचितपङ्क्तयो मदकल-हलधर-हलमुखोत्-क्षेप-(२) विकीर्णबहुस्रोतसमम्बरतले कलिन्दकन्यामिव दर्शयन्तः, (ध) सुर-गजोन्मूलित-विगलदाकाशगङ्गा-कमलिनीशङ्कामुपजनयन्तः, (३) (न) दिवस-कर-रथ तुरग-प्रभानुलिप्तमिव गगनतलमुपपादयन्तः (४) (प) सञ्चारिणीमिव मरकतस्थलीं विडम्बयन्तः, (फ) शैवलपल्लवावलीमिवाम्बरसरसि प्रसारयन्तः,

---

(ध) त इति। ते शुकशकुनयः। विचरन्ति स्म इति परेणान्वयः। अत्र प्रथमान्तानि ते इति तच्छब्दोपस्थापितपक्षिणां विशेषणानि। आत्मनीड़ेषु स्वस्वकुलायेषु। नभसि आकाशे विरचितपङ्क्तयः निबद्ध-श्रेणयः। मदकलो मद्यपानमत्तो यो हलधरो बलरामस्तस्य हलमुखेन लाङ्गलाग्रभागेन य उत्क्षेप उपरि क्षेपणं तेन विकीर्णानि विच्छिन्नानि बहूनि स्रोतांसि यस्यास्तां, कलिन्दकन्यां यमुनामिव अम्बरतले आकाशे दर्शयन्तः प्रकटयन्तः। अत्र यमुनाद्रव्यस्वरूपोत्प्रेक्षालङ्कारः। अस्येतिहासस्तु पूर्वमुक्तः।

(न) सुरेति। सुरगजेन ऐरावतेन उन्मूलिता उत्पाटिता अतएव विगलन्ती निपतन्ती या आकाशगङ्गाया मन्दाकिन्याः कमलिनी पद्मिनी तस्याः शङ्कां आत्मसु परेषां भ्रमं उपजनयन्तः कुर्वन्तः समान-श्यामत्वादिति भावः। अतएवात्र भ्रान्तिमानलङ्कारः।

(प) दिवसेति। गगनतलमाकाशं, दिवसकरस्य सूर्य्यस्य ये रथतुरगाः हरिद्वर्णरथनियुक्तघोटकाः तेषां प्रभाभिः हरिद्वर्णाभिः कान्तिभिः अनुलिप्तं मण्डितमिव उपपादयन्तः कुर्वन्तः स्वप्रभाभिरिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) सञ्चेति। सञ्चारिणीं गमनशीलां मरकतस्थलीं नीलमणिभूमिं विडम्बयन्तः अनुकुर्वन्त इव, स्वेषामपि नीलत्वादिति भावः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) शैवलेति। अम्बरमाकाशमेव सरः निर्म्मलत्वाद्विस्तृतत्वाच्च सरोवरः तत्र शैवलपल्लवावलीं शैवाल-

---

(ধ) সেই সকল পক্ষিগণ প্রতিদিন সেই শাল্মলীবৃক্ষে নিজ নিজ বাসাতে থাকিয়া, রাত্রি অতিবাহিত করিয়া, প্রাতঃকালে উঠিয়া খাদ্যবস্তু অন্বেষণের নিমিত্ত আকাশে শ্রেণীবদ্ধভাবে বিচরণ করিত; তখন মদ্যপানমত্ত বলরামের লাঙ্গলদ্বারা আকর্ষণে বিকীর্ণপ্রবাহ যমুনার ন্যায় আকাশে সেই পক্ষিশ্রেণীকে দেখা যাইত; (ন) আর শ্রেণীবদ্ধ হইয়া আকাশে বিচরণকারী সেই পক্ষিগণ, ঐরাবতকর্ত্তৃক উন্মূলিত হইয়া পতনশীল আকাশগঙ্গাজাত পদ্মলতার ভ্রম জন্মাইত; (প) আপনাদের হরিদ্বর্ণ দেহকান্তি প্রকাশিত হওয়ায়, সূর্য্যের রথে নিযুক্ত অশ্বগণের প্রভাদ্বারাই যেন আকাশকে রঞ্জিত করিত; (ফ) গমনশীল মরকতভূমির অনুকরণ করিত;

---

(१) आत्मनो नीड़েषु। (२)...बलमदहलमुखाक्षेप..। (३) उत्पादयन्तः। (४) प्रदर्शयन्तः।

(ब) गगनविततैः (१) पक्षपुटैः कदलीदलैरिव दिनकर-खर-कर-निकर-(२) परिखेदितान्याशामुखानि वीजयन्तः, (भ) वियति विसारिणीं (३) शष्पवीथी-मिवारचयन्तः, (म) सेन्द्रायुधमिवान्तरिक्षमादधाना विचरन्ति स्म शुक-शकुनयः (४) (य)।

कृताहाराश्च पुनः प्रतिनिवृत्यात्मकुलायावस्थितेभ्यः शावकेभ्यो विविधान् फलरसान् कलममञ्जरी-(५)-विकारांश्च प्रहत-हरिण-रुधिरानुरक्त-शार्दूलनख-कोटिपाटलेन चञ्चुपुटेन दत्त्वा (६) अधरीकृत-सर्वस्नेहेनासाधारणेन गुरुणापत्य-प्रेम्णा तस्मिन्नेव (७) क्रोडान्तर्निहिततनयाः क्षपाः (८) क्षपयन्ति स्म। (र)

पल्लवश्रेणीं प्रसारयन्तो विस्तारयन्त इव आत्मना शैवालपल्लववत् हरिद्वर्णत्वात् क्षुद्र-क्षुद्रत्वाच्चेति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(भ) गगनेति। कदलीदलैरिव रम्भापत्रैरिव हरिद्वर्णत्वादिति भावः, गगनविततैः आकाशे प्रसारितैः पक्षपुटैः, दिनकरस्य सूर्य्यस्य यः खरकरनिकरः तीक्ष्णकिरणसमूहः तेन परिखेदितानि सन्तापितानि आशामुखानि दिङ्मुखानि वीजयन्तः स्वजातवायुस्पर्शविशिष्टानि कुर्वन्तः। अत्र उपमालङ्कारः।

(म) वियतीति। वियति गगने विसारिणीं दीर्घां शष्पवीथीं नूतनतृणश्रेणीं आरचयन्तो निर्म्मिमाणा इव तृणश्रेणीवत् स्वश्रेण्या अपि हरिद्वर्णत्वाद्दीर्घत्वाच्चेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) सेन्द्रेति। अन्तरिक्षमाकाशं सेन्द्रायुधं शक्रधनुःसहितमिव आदधानाः कुर्वाणाः, स्वश्रेण्या नानावर्णमयत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) कृतेति। कलमानां धान्यविशेषाणां मञ्जरीविकारान् मञ्जरीस्थित-तण्डुलरूपविकारान्। प्रहतस्य विनाशितस्य हरिणस्य मृगस्य रुधिरेण रक्तेन अनुरक्ता लोहितीकृता या शार्दूलनखकोटिः व्याघ्रनखराग्रभागः तद्वत् पाटलेन श्वेतरक्तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अधरीकृतः निम्नवर्त्तीकृतः खर्वीकृतः सर्वः स्नेहः सन्तानेतरगतसकलवात्सल्यं येन तेन, अतएव असाधारणेन अन्यस्नेहैरसमानेन गुरुणा महता अपत्यप्रेम्णा

(ব) আকাশ-সরোবরে যেন শৈবাল-(সেওলা) পল্লবশ্রেণী বিস্তারিত করিত; (ভ) কদলী-পত্রের ন্যায় আকাশে বিস্তৃত পক্ষপুটদ্বারা, সূর্য্যের প্রখর কিরণসমূহে সন্তাপিত দিক্ সকলের মুখে বায়ু সঞ্চালিত করিত; (ম) আকাশে বিস্তৃত নূতন তৃণশ্রেণী যেন নির্ম্মাণ করিত; (য) এবং আকাশকে যেন ইন্দ্রধনুসমন্বিত করিয়া চলিত।

(র) তাহারা, আহারসমাধানপূর্ব্বক পুনরায় প্রতিনিবৃত্ত হইয়া, নিহত হরিণের রুধিরে রঞ্জিত ব্যাঘ্রনখাগ্রের ন্যায় পাটলবর্ণ চঞ্চুপুটদ্বারা, নিজ নিজ বাসাতে অবস্থিত শাবকদিগকে নানাবিধ ফলের রস ও কলমধান্যের তণ্ডুল সমর্পণ করিয়া, অন্যান্য সকল স্নেহ অপেক্ষা প্রবল ও

---

(१) गगनायततैः। (२) दिनकरकरनिकर...। (३) विसारिणीं। (४) क्वचित् 'शुकशकुनय' इति पाठो नास्ति। (५) कलमफलविकारान्। (६) दत्त्वा दत्त्वा। (७) तस्मिन्नेव। (८) सुखं क्षपाः।

एकस्मिंश्च जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः (१) पश्चिमे वयसि वर्त्तमानस्य कथमपि पितुरहमेवैको (२) विधिवशात् सूनुरभवम्। (ल) अतिप्रबलया चाभिभूता ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्। अभिमतजायाविनाशदुःखितोऽपि खलु तातः सुतस्नेहादन्तर्निगृह्य (३) पटुप्रसरमपि शोक-(४) मेकाकी मत्संवर्द्धनपर एवाभवत् (व)। अतिपरिणतवयाश्च (५) कुशचीरानुकारिणीमल्पावशिष्ट-जीर्ण-पिच्छजाल-जर्जरां (६) अवस्रस्तांसदेशशिथिलां (७) अपगतोत्पतनसंस्कारां पक्षसन्ततिं (८) उद्वहन्, (श)

सन्तानवात्सल्येन, तस्मिन्नेव शाल्मलीवृक्षे, क्रोडानां उत्सङ्गानां अन्तर्निहिता मध्येषु स्थापिताः तनया अपत्यानि यैस्ते, शकुनयः खगा रात्रीः क्षपयन्ति स्म अतिवाहयन्ति स्म।

(ल) एकस्मिन्निति। जायया भार्य्यया। पश्चिमे परवर्त्तिनि वयसि वार्द्धक्ये इत्यर्थः। कथमपि महता क्लेशेन। विधिवशात् दैवाधीनत्वात्। सूनुः पुत्रः।

(व) अतीति। अन्तर्निगृह्य हृदयमध्ये अवरुध्य। पटुस्तीव्रः प्रसरो वेगो यस्य तं दारुणमपीत्यर्थः। मत्संवर्द्धनपर एव मम परिपोषणे यत्नवानेव।

(श) अतीति। अतिपरिणतं अतिवृद्धं वयो यस्य सः। कुशचीरानुकारिणीं कुशनिर्म्मित-जीर्ण-वस्त्रतुल्यां। अत्रार्थोपमा। अल्पं वार्द्धक्येन क्षरणात् स्तोकमात्रं अवशिष्टं यत् जीर्णपिच्छजालं विशीर्णबर्हसमूहः तेन जर्जरां विशीर्णां। अवस्रस्ते वार्द्धक्यादवनतिं भूते अंसदेशे स्कन्धस्थाने शिथिलां श्लथावयवसंयोगाम्। अपगतो विनष्टः उत्पतनसंस्कार उड्डयनशक्तिर्यस्यास्ताम्, पक्षसन्ततिं पतत्रसमूहं उद्वहन् धारयन्।

অতুলনীয় গুরুতর সন্তানস্নেহবশতঃ সন্তানদিগকে ক্রোড়ের মধ্যে রাখিয়া সেই শাল্মলীবৃক্ষেই রাত্রি অতিবাহিত করিত।

(ল) আমার বৃদ্ধ পিতা একটি জীর্ণকোটরে ভার্য্যার সহিত বাস করিতেন, অদৃষ্টবশতঃ অতিকষ্টে আমিই তাঁহাদের একমাত্র পুত্র জন্মিয়াছিলাম; (ব) আমারই জন্মকালীন অত্যন্ত প্রসববেদনায় আক্রান্ত হইয়া আমার জননী পরলোক গমন করিলেন। তখন আমার পিতা, মনোমত ভার্য্যার মরণে অত্যন্ত দুঃখিত হইয়াও পুত্রস্নেহবশতঃ সেই দারুণ শোক হৃদয়মধ্যে অবরুদ্ধ রাখিয়া একাকী আমার পরিপোষণেই যত্নবান্ হইলেন। (শ) আমার অতিবৃদ্ধ পিতার পক্ষদ্বয়, কুশনির্ম্মিত জীর্ণবস্ত্রের তুল্য হইয়া গিয়াছিল, লোমসকল জীর্ণ ও অল্পমাত্র অবশিষ্ট থাকায় পক্ষদ্বয় বিশীর্ণ হইয়াছিল এবং অবনত স্কন্ধদেশে শিথিল হইয়া পড়িয়াছিল,

---

(१) तत्र निवसतः। (२) अहमेकः। (३) अभ्यन्तरे निरुध्य। (४) शोकवेगं। (५) अतिपरिणततया च। (६) जर्जरीं। (७) स्रस्तांसदेशां। (८) पक्षसंहतिं।

उपारूढकम्पतया (१) सन्तापकारिणीमङ्गलग्नां जरामिव विधुन्वन्, (घ) अकठोर-शेफालिकाकुसुम-नाल-पिञ्जरेण कलममञ्जरी-दलन-सञ्जात-क्षीणोपान्त-लेखेन (२) स्फुटिताग्रकोटिना चञ्चुपुटेन (ङ) परनीडनिपतिताभ्यः (३) शालि-वल्लरीभ्यस्तण्डुलकणानादायादाय तरु-(४) मूलनिपतितानि च शुककुलावदलि-तानि फलशकलानि समाहृत्य परिभ्रमितुमशक्तो मह्यमदात् (५)। प्रतिदिवस-मात्मना च मदुपभुक्तशेषं (६) अकरोदशनम्। (च)

(घ) उपेति। उपारूढो वार्द्धक्येन स्वभावत एवोत्पन्नः कम्पः कम्पनं यत्र सा तथोक्ता तस्या भाव-स्तया, सन्तापकारिणीं दुःखोत्पादिकां इच्छानुसारेण सञ्चालयितुमशक्यत्वादिति भावः, अङ्गलग्नां देहस्थितां जरां वृद्धावस्थामिव विधुन्वन् तामिव पक्षसन्ततिं कम्पयन् सञ्चाल्य किञ्चिद्गच्छन्नित्यर्थः।। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) अकठोरेति। अकठोरस्य कोमलस्य शेफालिकाकुसुमस्य यत् नालं वृन्तं तद्वत् पिञ्जरेण पिङ्गलवर्णेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। कलममञ्जरीणां धान्यविशेषशिखानां दलनेन खण्डनेन सञ्जाता सञ्जाता क्षीणा चयं गता च उपान्तलेखा प्रान्तसमीपरेखा यस्य तेन। तथा स्फुटिता चयं गता अग्रकोटिः अग्रिमतीक्ष्णभागो यस्य तेन।

(च) परेति। परेषामन्येषां पक्षिणां नीडेभ्यो या निपतितास्ताभ्यः शालिवल्लरीभ्यः धान्यमञ्जरीभ्यः। शुककुलेन कीरसमूहेन अवदलितानि खण्डयित्वा भूतले पातितानि फलशकलानि फलखण्डानि। मह्यं मह्यमाहाराय अदात् भोक्तुमर्पितवान्। आत्मना च स्वयञ्च। मया उपभुक्तस्य खादितस्य शेषमवशिष्टं अशनं भोजनं अकरोत् मदुपभुक्तशेषं प्राप्य तेन अशनमकरोदित्यर्थः।

সুতরাং তাহাদ্বারা উড়িবার ক্ষমতা ছিল না; (ঘ) তথাপি তিনি, স্বভাবতই কম্প উৎপন্ন হওয়ায় ক্লেশদায়ক, দেহলগ্ন জরার ন্যায় সেই পক্ষযুগলকেই সঞ্চালন করিয়া সামান্য গমনাগমন করিতেন। (ঙ) তাঁহার চঞ্চুপুট, কোমল শেফালিকাকুসুমের বৃন্তের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ হইয়া গিয়াছিল, আর ধান্যমঞ্জরী খণ্ড করায় সেই চঞ্চুপুটের শেষভাগের রেখাগুলি, মসৃণ (পালিস) ও ক্ষীণ হইয়াছিল এবং তাহার অগ্রের তীক্ষ্ণভাগও ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়াছিল। (চ) তিনি অন্যত্র ভ্রমণ করিতে অসমর্থ বলিয়া সেই চঞ্চুপুটদ্বারা, অন্যপক্ষীর বাসা হইতে নিপতিত ধান্যের মঞ্জরী হইতে তণ্ডুলকণা আহরণ করিয়া এবং অন্য শুকপক্ষিগণ চঞ্চুদ্বারা খণ্ডন করিয়া যাহা বৃক্ষমূলে ফেলিয়া দিয়াছে, সেই সকল ফলখণ্ড আনয়ন করিয়া ভোজন করিবার নিমিত্ত আমাকে দিতেন আর প্রতিদিন আমার ভোজনাবশিষ্ট যাহা থাকিত, তাহাই নিজে ভোজন করিতেন।

---

(१)...कम्पतया च। (२) क्षीणोपान्तरेखेन। (३)...पतिताभ्यः।
(४) तरु...। (५) मह्यमाहारमदात्। (६) मदुपभुक्तशेषं।

एकदा तु प्रभातसन्ध्यारागलोहिते गगने च (१) कमलिनी-मधुरक्त-(२) पक्षसम्पुटे वृद्धहंस इव मन्दाकिनीपुलिनादपर-जलनिधि-तटमवतरति चन्द्रमसि, (क) परिणत-रङ्कु-रोम-पाण्डुनि व्रजति विशालतामाशाचक्रवाले, (ख) गज-रुधिर-रक्त-हरिसटा-लोहिनीभिः प्रतप्त-लाक्षिक-(३) तन्तु-पाटलाभिरायामिनीभिः अशिशिरकिरणदीधितिभिः पद्मरागशलाकासम्मार्जनीभिरिव (४) समुत्सार्यमाणे गगनकुट्टिमकुसुमप्रकरे तारागणे, (ग) सन्ध्यामुपासितुमुत्तराशा-

---

(घ) एकदेति। एकदा तु स्पष्टे जाते प्रत्यूषसि मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरदिति परेणान्वयः। प्रभातसन्ध्यारागेण प्रातःसन्ध्यारक्तिम्ना लोहिते रक्तवर्णे। इदन्तु गगने चन्द्रमसीत्युभयोरपि विशेषणं तदानीं तथैव सम्भवात्, तेन च गगने चेति चकारोपादानं। अतएव कमलिन्याः पद्मिन्याः मधुना रक्तवर्णमकरन्देन रक्तं रञ्जितं पक्षसम्पुटं पतत्रयुगलं यस्य तस्मिन्, वृद्धहंस इव प्राचीनकलहंस इव, मन्थरगतिशीलताय वृद्धपदं। चन्द्रमसि चन्द्रे मन्दाकिनीपुलिनात् आकाशगङ्गासैकतात् अपरजलनिधितटं पश्चिमसमुद्रतीरं अवतरति अवरोहति सति। अत्रोपमालङ्कारः।

(क) परिणतेति। परिणतस्य वृद्धस्य रङ्कोर्हरिणविशेषस्य रोमवत् लोमवत् पाण्डुनि पीतशुभ्रे "पाण्डुस्तु पीतभागार्द्धः केतकीधूलिसन्निभः।" इति शब्दार्णवः। परिणतपदं रङ्कोः परिणतावस्थायामेव तादृशपाण्डुरोमतासम्भवप्रदर्शनार्थम्। आशाचक्रवाले दिङ्मण्डले, विशालतां अन्धकारापगमाद्विस्तारं व्रजति गच्छति सति। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ख) गजेति। गजस्य स्वयं मारितस्य हस्तिनः रुधिरेण रक्तेन रक्ता लोहितवर्णा या हरिसटा सिंहजटा तद्वल्लोहिनीभिः रक्तवर्णाभिः। अत्र रुधिररक्तशब्दयोरर्थस्यापाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परत्रोक्तरूपभेदावगमात् भिन्नाकारशब्दगतत्वाच्च पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः लुप्तोपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। लोहिनीति "[illegible]लोहितेभ्यसो नः" इति तकारस्य नकारः। प्रतप्ता उष्णीकृता ये लाक्षिकतन्तवः लाक्षानिर्म्मितसूत्राणि तद्वत् पाटलाभिः श्वेतरक्ताभिः। अत्र लुप्तोपमा। आयामिनीभिर्दीर्घाभिः। अशिशिरकिरणस्य उष्णरश्मेः सूर्य्यस्य दीधितिभिः किरणैः, पद्मरागस्य मणेः याः शलाकास्ताभिर्निर्म्मिता याः सम्मार्जन्यस्ताभिरिव स्थिताभिः। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः। गगनमेव कुट्टिमं बद्धभूमिस्तस्य कुसुमप्रकरः पुष्पसमूहस्तस्मिन् तारागणे नक्षत्र-

---

(ঘ) একদিন প্রভাতকালে মৃগয়ার কোলাহল উঠিল। সেই সময়ে গগনতল ও চন্দ্রমণ্ডল সন্ধ্যারাগে রক্তবর্ণ হইয়াছিল; পদ্মমধুরঞ্জিত-পক্ষশালী বৃদ্ধ কলহংসের ন্যায় চন্দ্র, আকাশগঙ্গার পুলিন (চড়া) হইতে পশ্চিম সমুদ্রের তীরে অবতীর্ণ হইতেছিল; (ক) বৃদ্ধ রঙ্কুমৃগের লোমের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ দিঙ্মণ্ডল, অন্ধকার অপসৃত হওয়ায় বিস্তৃত হইতে লাগিল; (খ) হস্তীর রক্তে রঞ্জিত সিংহের জটার ন্যায় লোহিতবর্ণ অথবা উত্তপ্ত লাক্ষাসূত্রের ন্যায় পাটলবর্ণ সূর্য্যের কিরণ, পদ্মরাগমণির শলাকানির্ম্মিত সম্মার্জনীর ন্যায় আকাশরূপ ভূমি হইতে নক্ষত্ররূপ কুসুম-

---

(१) गगनतले, गगनतल...। (२) मध्वनुरक्त...। (३) आतप्तलाक्षिक, सन्तप्तलाक्ष, आतप्तलाक्षा...।
(४) सम्मार्जनीभिः समुत् ...।

वलम्बिनि मानससरस्तीरमिवावतरति सप्तर्षिमण्डले, (ग) तटगत-विघटित-(१) शुक्ति-सम्पुट-विप्रकीर्णमरुणकर-प्रेरणाधोगलितमुडुगणमिव मुक्ताफलनिकरमुद्वहति धवलितपुलिन-(२) मुदन्वति पूर्व्वेतरे, (घ) तुषारबिन्दुवर्षिणि विबुद्ध-शिखिकुले विजृम्भमाणकेशरिणि करिणी-कदम्बक प्रबोध्यमान-समदकारिणि (३) तपाजल-जड़-केसरं कुसुमनिकरमुदयगिरि-शिखरस्थितं (४) सवितारमिवोद्दिश्य पल्लवाञ्जलिभिः समुत्सृजति कानने, (ङ) रासभ-रोम-धूसरासु वनदेवताप्रासा-

---

समूहे समुत्सार्य्यमाणे दूरीक्रियमाणे सति। अत्र गगने कुट्टिमत्वारोपस्तारागणे कुसुमप्रकरत्वारोपस्य निमित्त-मिति परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(ग) सन्ध्यामिति। उत्तराशावलम्बिनि उत्तरदिगवस्थिते सप्तर्षिमण्डले नक्षत्रभूते मरीच्यादिदेवर्षिगणे सन्ध्यामुपासितुमिव प्रातःसन्ध्यां कर्त्तुमिव मानससरस्तीरं मानससरोवरतटं अवतरति अवरोहति सति। तदानीं सप्तर्षिमण्डलस्य उत्तरस्यामस्तगमनादियमुक्तिः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। मरीचिः, अत्रिः, अङ्गिराः, पुलस्त्यः, पुलहः, क्रतुः, प्रचेताः, भृगुः, वसिष्ठः, नारदश्चेति दश देवर्षयः सप्तर्षिपदवाच्याः, नित्यसमासत्वादेवावयवार्थनैरपेक्ष्येण विशेषार्थप्रतिपत्तिः कृष्णसर्पादिवत्। तथा च शब्दशक्तिप्रकाशिकायां जग-दीशतर्कालङ्काराः:—

"विभक्तिमात्रप्रक्षेपाक्षिप्तान्तर्गतनामसु। स्वार्थस्याबोधबोधाभ्यां नित्यानित्यौ समासकौ।"

(घ) तटेति। पूर्वेतरे उदन्वति पश्चिमे समुद्रे पूर्वः समुद्र इतरो यस्मात् स पूर्वेतरस्तस्मिन् बहु-व्रीहिसमासान्न सार्वनामिककार्य्यं। तटगतेषु तीरस्थितेषु विघटितेषु स्फुटितेषु प्रसारितभागद्वयेषु शुक्ति-सम्पुटेषु मुक्तास्फोटावरणेषु मध्ये विप्रकीर्णं असंसक्तभावेनावस्थितं, धवलितं स्वप्रभया शुभ्रीकृतं पुलिनं सैकतं येन तं, अरुणकरैः सूर्य्यरश्मिभिर्या प्रेरणा नोदनं तया अधोगलितं भूतलपतितं उडुगणं नक्षत्र-पुञ्जमिव मुक्ताफलनिकरं मौक्तिकसमूहं उद्वहति धारयति सति। अत्र जातिस्वरूपोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) तुषारेति। अत्र सप्तम्यन्तानि काननविशेषणानि। तुषारबिन्दून् रात्रिपतितशिशिरकणान् वर्षति पत्राग्रदेशेभ्यः पातयतीति तस्मिन्। विबुद्धं जागरितं शिखिकुलं मयूरसमूहो यत्र तस्मिन्।

সমূহকে অপসারিত করিতে লাগিল; (গ) উত্তরদিকে অবস্থিত সপ্তর্ষিমণ্ডল প্রাতঃসন্ধ্যা করিবার জন্যই যেন মানসরোবরের তীরে অবতরণ করিতে লাগিলেন; (ঘ) পশ্চিম সমুদ্রের তীরে শুক্তিকাপুটক উন্মীলিত হইলে (ঝিনুক দুইটার ভিতর ফাঁক হইলে) তাহার মধ্যবর্ত্তী মুক্তাসমূহ স্বকীয় কিরণে পুলিনদেশকে (বালির চড়াকে) শ্বেতবর্ণ করিয়া প্রকাশিত হইলে বোধ হইতে লাগিল, যেন সূর্য্যরশ্মির তাড়নায় নক্ষত্রপুঞ্জ ভূতলে পতিত হইয়াছে; (ঙ) বনমধ্যে বৃক্ষের পত্র হইতে শিশিরবিন্দু পতিত হইতে লাগিল, ময়ূরগণ জাগরিত হইল, সিংহগণ জাগিয়া

---

(१)...विघट्टित...। (२) ..पुलिनतटं, पुलिनतलं।
(३)...मानमदकारिणि स्पष्टं च जाते प्रभाते। (४) शिखरसवितारं।

दानां तरूणां शिखरेषु पारावतमालायमानासु धर्म्मपताकास्विव (१) समुन्मिषन्तीषु तपोवनाग्निहोत्रधूमलेखासु, (च) अवश्यायशीकरिणि लुलितकमलवने रति-(२) खिन्न-शवर-सीमन्तिनी-स्वेदजलकणा-(३) पहारिणि वनमहिष-रोमन्थ-फेनविन्दु वाहिनि चलित-पल्लव-लता-लास्योपदेश-व्यसनिनि विघटमान-कमल-षण्ड-(४) मधु-शीकरासार-वर्षिणि कुसुमामोदतर्पितालिजाले निशावसानजात-

---

विजृम्भमाणा अचिरनिद्राभङ्गेन जृम्भाकारिणः केशरिणः सिंहा यत्र तस्मिन्। करिणीकदम्बकेन हस्तिनीसमूहेन प्रबोध्यमानाः स्वैरविहारार्थं शुण्डाकर्षणेन जागर्य्यमाणाः समदा मदजलस्राविणः करिणो यत्र तस्मिन्, एवम्भूते कानने वने, अपायाः रात्रेः जातेन हिमसलिलेन जड़ाः स्तिमिताः केशराः किञ्जल्का यस्य तं, कुसुमनिकरं स्वजातपुष्पसमूहं उदयगिरिशिखरस्थितं उदयाचलशृङ्गे विद्यमानं सवितारं सूर्य्यं उद्दिश्येव अभिप्रेत्येव पल्लवान्येवाञ्जलयस्तैः समुत्सृजति प्रक्षिप्य ददति सति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, निरङ्गकेवलरूपकं, समानकार्य्येण कानने कुसुमार्घ्येण सूर्य्योपस्थानकर्त्तुः कस्यचिद्व्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(च) रासभेति। रासभरोमवत् गर्द्दभलोमवत्, धूसरासु धूम्रवर्णासु। वनदेवतानां प्रासादा उच्चत्वाद्विस्तृतत्वाच्च अट्टालिकारूपा ये तरवो वृक्षास्तेषां शिखरेषु अग्रदेशेषु पारावतमालावत् कपोतश्रेणीवत् आचरन्तीषु संसक्तास्विति पारावतमालायमानासु, तपोवनेषु यानि अग्निहोत्राणि "सायं प्रातर्जुहोति" इति श्रुतेर्मुनीनां अग्निहोत्रहोमास्तेषां धूमलेखासु धूमराजिषु, धर्म्मपताकास्विव धर्म्मोद्घोषणार्थवैजयन्तीष्विव समुन्मिषन्तीषु उद्गच्छन्तीषु सतीषु। अत्र लुप्तोपमा, निरङ्गकेवलरूपकं, क्यङ्गतोपमा, जातिस्वरूपोत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(छ) अवश्यायेति। अवश्यायशीकराः शिशिरविन्दवः अस्य सन्तीति तस्मिन्, इत्यादीनि सप्तम्यन्तानि मातरिश्वनि इति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। लुलितं कम्पितं कमलवनं पद्मवनं येन तस्मिन्, रतिखिन्नानां सुरतपरिश्रान्तानां शवरसीमन्तिनीनां भिल्लरमणीनां स्वेदजलकणान् घर्म्मवारिविन्दून् अपहरति स्वस्पर्शेन नाशयतीति तस्मिन् तथोक्ते। अनेन विशेषणत्रितयेन शैत्य-सौगन्ध्य-मान्द्यरूपगुणत्रितयशालित्वं वायोः सूचितम्। वनमहिषाणां रोमन्थेषु उद्गीर्य्य चर्व्वणेषु ये फेनविन्दवस्तान् वहतीति तस्मिन्। चलि-

---

হাই তুলিতে লাগিল, হস্তিনীগণ মদস্রাবী হস্তীদিগকে জাগাইতে লাগিল, নানাবিধ বৃক্ষগণ পল্লবরূপ অঞ্জলিদ্বারা উদয়াচলের উপরিভাগস্থিত সূর্য্যকে যেন উদ্দেশ করিয়া, রাত্রির শিশির-জলসিক্ত স্বকীয় কুসুমসমূহ নিক্ষেপ করিতে লাগিল; (চ) গর্দ্দভের লোমের ন্যায় ধূসরবর্ণ তপোবনস্থ অগ্নিহোত্রযাগের ধূমসমূহ, বনদেবতাগণের অট্টালিকাস্বরূপ উচ্চ বৃক্ষ-সমূহের উপরিভাগে কপোতগণের ন্যায় সংলগ্ন হইয়া ধর্ম্মপতাকার ন্যায় উর্দ্ধে উত্থিত হইতে লাগিল; (ছ) শিশিরবিন্দু বহন করিয়া, পদ্মবন কাঁপাইয়া, পরিশ্রান্ত শবররমণীগণের ঘর্ম্মবিন্দু বিলুপ্ত

---

(१) पताकासु। (२) रत...। (३)...स्वेदजलकणिका, स्वेदकणिका...। (४)...खण्ड।

जड़िम्नि मन्दमन्दसञ्चारिणि प्रवाति प्राभातिके मातरिश्वनि, (ञ) कमलवन-प्रबोध-(१) मङ्गलपाठकानां इभगण्डडिण्डिमानां मधुलिहां (२) कुमुदोदरेषु घटमान-(३) दलपुट-निरुद्ध-(४) पक्षसंहतीनामुच्चरत्सु हुङ्कारेषु, (५) (ट) प्रभात-शिशिर-मारुताहत-(६) सुप्तम-जतुरसाश्लिष्ट-पक्ष्ममालमिव (७) सशेषनिद्राजिह्मित-

---

सानां निम्नवेगेन कम्पितानां पल्लवानां लतानाञ्च यत् लास्यं चाञ्चल्यरूपं नृत्यं तस्य उपदेशे शिक्षादाने व्यसन-मासक्तिरस्यास्तीति तस्मिन् । विघटमानस्य विकसतः कमलषण्डस्य पद्मसमूहस्य मधुशीकराणां मकरन्दबिन्दूनां आसारं धारासम्पातं वर्षति क्षिपतीति तस्मिन् । कुसुमामोदेन पुष्पसौरभेण तर्पितं सन्तोषितं अलिजालं भ्रमरसमूहो येन तस्मिन् । निशावसाने रात्रिशेषे जातो जड़िमा जड़त्वं शिशिरजलसौरभवहनादिना भार-वत्त्वं यस्य तस्मिन्, अतएव मन्दमन्दसञ्चारिणि, प्राभातिके प्रातःकालीये मातरिश्वनि समीरणे प्रवाति प्रवहति सति[illegible]

(ञ) क[illegible]षष्ठ्यन्तानि मधुलिहां विशेषणानि । कमलवनस्य पद्मवनस्य प्रबोधे जागरणे विकासने म[illegible]णां स्तुतिपाठकरूपाणां कियतां मधुलिहां राज्ञां प्रबोध इव तदीयवन्दिनामिति भावः । इभगण्डेषु मदजलयुक्त[illegible]कपोलेषु डिण्डिमानां तदाख्यवाद्यविशेषरूपाणां कियतां मधुलिहां विषयविशेष-घोषणार्थं [illegible]यमानानां डिण्डिमानामिव भ्रमराणामपि गुञ्जनेन कुञ्जराणां जागरणादिघोषणादिति भावः । तथा कुमुदोदरेषु कैरवाभ्यन्तरेषु घटमानैः सूर्योदयारम्भात् सङ्कुचद्भिः दलपुटैः निरुद्धा आवद्धा पक्षसंहतिः पतत्त्रसमूहो येषां तादृशानाञ्च कियतां मधुलिहां भ्रमराणां हुङ्कारेषु अव्यक्तरवेषु उच्चरत्सु उत्तिष्ठत्सु सत्सु । अत्र भ्रमरेषु स्तुतिपाठकत्वारोपः शाब्दः, कमलवने राजत्वारोपस्तु आर्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्, इभगण्डेत्यत्र तु निरङ्गं केवलरूपकमित्यनयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः ।

(ट) प्रभातेति । ऊषरशय्यया क्षारमृत्तिकायां शयनेन धूसरा धूम्रवर्णा क्रोड़रोमराजयो येषां तादृ-शेषु वनमृगेषु, प्रभातशिशिरमारुतेन प्रातःकालीयशीतलवायुना आहतं ताड़ितं स्पृष्टमित्यर्थः, उत्तप्तेन वह्निना

করিয়া, বন্য মহিষগণের ফেনবিন্দু লইয়া, কম্পিত পল্লব ও লতাসমূহকে চাঞ্চল্যরূপ নৃত্য শিক্ষা দিয়া, প্রস্ফুটিত পদ্মসমূহের মধুবিন্দু বর্ষণ করিয়া, পুষ্পের সৌরভে ভ্রমরদিগকে সন্তুষ্ট করিয়া, মন্দমন্দসঞ্চারী প্রভাতকালের শীতল বায়ু বহিতে লাগিল; (ঞ) রাজগণের জাগরণের সময়ে বৈতালিকগণ যেমন মঙ্গলগান করে, তেমন কতকগুলি ভ্রমর সেই পদ্মবনবিকাসের সময়ে অব্যক্ত রব করিতে লাগিল; কতকগুলি ভ্রমর মদস্রাবী হস্তিসমূহের গণ্ডের উপরে বসিয়া 'গুন' 'গুন' ধ্বনি করিতে লাগিল; আর কতকগুলি ভ্রমর রাত্রিতে মধুলোভে প্রস্ফুটিত কৈরব-সমূহের অভ্যন্তরে (সাপলার ভিতরে) অবস্থান করিতেছিল, কিন্তু প্রভাতে সেই কৈরবসমূহের দল সকল সঙ্কুচিত হওয়ায় পক্ষ আবদ্ধ হইলে তাহারা সেই ভাবেই অব্যক্ত ধ্বনি করিতে লাগিল; (ট) ক্ষারমৃত্তিকায় শয়ন করায় বন্য হরিণগণের বক্ষঃস্থলের লোমসমূহ ধূসরবর্ণ হইয়াছিল,

---

(१) कमलप्रबोध... । (२) मधुलिहां पटलेषु । (३) विघटमान, घनघटमान... ।
(४) निबद्ध... । (५) झङ्कारेषु, टङ्कारेषु । (६) वायुाहतं । (७) पक्ष्मजालमिव ।

তারং (১) চক্ষুরুন্মীলয়ৎসু শনৈঃ শনৈরুদ্ধরমগ্যা-ধূসর-ক্রোড়-রোমরাজিষু বনমৃগীষু, (ঞ) ইতস্ততঃ সঞ্চরৎসু বনচরেষু, বিজৃম্ভমাণে শ্রোত্রহারিণি পম্পাসরঃকলহংসকোলাহলে, সমুল্লসতি নর্ত্তিতশিখণ্ডিমণ্ডলে (২) মনোহরে বনগজকর্ণতালশব্দে, (ট) ক্রমেণ চ গগনতল-(৩) মবতরতো দিবসকরবারণস্যাবচূল-(৪) চামরকলাপ ইবোপলক্ষ্যমাণে মঞ্জিষ্ঠারাগলোহিতে কিরণজালে, (ট) শনৈঃ

সন্নমেন অতুরসেন লাক্ষাদ্রবেণ আশ্লিষ্টা পরস্পরসংযোজকভাবেনালিঙ্গিতা পক্ষ্মমালা লোমপঙ্‌ক্তির্যস্য তদিব, নিদ্রাশেষবশেন সহসোন্মীলয়িতুমশক্যত্বাদুৎসন্নলাক্ষাদ্রবেণ পরস্পরগ্রথিতলোমপঙ্‌ক্তিকমিবানুভূয়মানমিতি ভাবঃ, সশেষয়া কিঞ্চিদবশিষ্টয়া নিদ্রয়া জিহ্মিতা কুটিলীকৃতা তারা কনীনিকা যস্য তৎ তাদৃশং চক্ষুঃ, শনৈঃ শনৈঃ উন্মীলয়ৎসু প্রসারয়ৎসু সৎসু। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ঞ) ইত ইতি। বনচরেষু অরণ্যচারিষু প্রাণিষু। শ্রোত্রহারিণি মধুরতয়া কর্ণাকর্ষিণি পম্পাসরসঃ কলহংসানাং কোলাহলে, বিজৃম্ভমাণে বর্দ্ধমানে সতি। নর্ত্তিতং নাটিতং শিখণ্ডিমণ্ডলং ময়ূরসমূহো যেন তস্মিন্, মনোহরে শ্রুতিমধুরে, বনগজানাং বন্যহস্তিনাং কর্ণয়োঃ শ্রোত্রয়োঃ তালবৎ করতলধ্বনিবৎ শব্দে নিনাদে সমুল্লসতি তেষাং জাগরণানন্তরমুত্থিতবতি সতি। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ। "তালঃ করতলধ্বনি"-রিত্যনেকার্থধ্বনিমঞ্জরী।

(ট) ক্রমেণেতি। গগনতলমবতরত আকাশমারোহতঃ, দিবসকরঃ সূর্য্যো বারণো হস্তীব তস্য, মঞ্জিষ্ঠা নামৌষধিবিশেষঃ তস্যা রাগবৎ রক্তিমবৎ লোহিতে রক্তবর্ণে, কিরণজালে রশ্মিসমূহে, অবনতা চূড়া অগ্রভাগো যস্য সঃ অবচূলো যশ্চামরকলাপশ্চামরসমূহস্তস্মিন্নিব উপলক্ষ্যমাণে দৃশ্যমানে সতি। উচ্চদেশমধিরোহতো গজস্য কর্ণসমীপলম্বিন্যধোমুখে চামরকলাপ ইব আকাশমধিরোহতঃ সূর্য্যস্যাধোমুখে কিরণজালে দৃশ্যমানে সতীতি সরলার্থঃ। অত্র চামরকলাপ ইবেত্যুপমানুসারাদ্দিবসকরবারণস্যেত্যত্রাপ্যুপমিতসমাসস্যৈবাশ্রয়ণীয়তয়া লুপ্তোপমা, মঞ্জিষ্ঠেত্যত্রাপি লুপ্তোপমা, অন্যা চোপমা ইত্যেতেষামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

প্রভাতকালের শীতল বায়ু তাহাদের নয়ন স্পর্শ করিতেছিল, তখনও নিদ্রা সম্পূর্ণ না হওয়ায় নয়নের তারা বক্র হইয়াছিল এবং নয়নের লোমগুলি যেন উত্তপ্ত লাক্ষারসে জড়িত হইয়া গিয়াছিল; (ঞ) অরণ্যচারী প্রাণিগণ ইতস্ততঃ বিচরণ করিতে লাগিল; পম্পাসরোবরস্থ কলহংসগণের শ্রুতিমধুর কোলাহল বৃদ্ধি পাইতে লাগিল; দুই করতলের শব্দের ন্যায় বন্যহস্তিগণের কর্ণের মনোহর শব্দ ময়ূরগণকে নৃত্য করাইয়া উত্থিত হইতে লাগিল; (ট) ক্রমে সূর্য্যদেব আকাশের দিকে উঠিতে লাগিলেন, তখন, কোন হস্তী উপস্থিত হইতে লাগিলে তাহার কর্ণের নিকটে বদ্ধ, অধোমুখ চামর যেরূপ দেখা যায়, সূর্য্যের মঞ্জিষ্ঠার ন্যায় রক্তবর্ণ

---

(১) জিহ্মতারং, জিহ্মিততারকং। (২) নর্ত্তিতশিখণ্ডিনি। (৩) গগনতলমার্গং, গগনমার্গং।
(৪) অবধূত...।

शनैरुदिते भगवति सवितरि, (ठ) पम्पासरःपर्य्यन्त-तरु-शिखर-सञ्चारिणि (१) अध्यासित-गिरि-शिखरे दिवसकरजन्मनि हृततारे पुनरिव कपीश्वरे वनमभिपतति बालातपे, (ड) स्पष्टे जाते प्रत्यूषसि, नचिरादिव दिवसाष्टमभाग-भाजि (२) स्पष्टभासि भास्वति भूते, (ढ) प्रयातेषु (३) यथाभिमतानि दिगन्तराणि शुककुलेषु, कुलाय-निलीन-निभृत-शुक-शावक-सनाथेऽपि निःशब्दतया शून्य इव तस्मिन् वनस्पतौ, (ण) स्वनीड़ावस्थित एव ताते, मयि च शैशवादसञ्जात-

---

(ठ) शनैरिति। भगवति माहात्म्यवति सवितरि सूर्य्ये।

(ड) पम्पेति। पम्पासरसः पर्य्यन्ततरूणां प्रान्तवर्त्तिवृक्षाणां शिखरेषु उपरिभागेषु सञ्चरतीति तस्मिन्, अध्यासितं प्रागाश्रितं गिरेरुदयाचलस्य किष्किन्ध्यापर्वतस्य च शिखरं शृङ्गं येन तस्मिन्, दिवसकरात् सूर्य्यात् जन्म यस्य तस्मिन्, हृता स्वतेजसा लोपं नीता अपहृता च तारा नक्षत्रं तारानाम्नी वानरी च येन तस्मिन्, बालातपे नूतनसूर्य्यालोके कपीश्वरे सुग्रीव इव पुनः वनं अभिपतति व्याप्नुवति अभिगच्छति च सति। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। सुग्रीवस्य सूर्य्याज्जन्मन उपाख्यानं रामायणेऽनुसन्धेयम्।

(ढ) स्पष्ट इति। प्रत्यूषसि प्रभाते स्पष्टे जाते व्यक्ते प्रादुर्भूते सति। भास्वति सूर्य्ये, नचिरादिव अविलम्बेनेव दिवसस्य अष्टमभागं प्राथमिकयामार्द्धं भजत इति तस्मिन्, निशावसानसमयादारभ्य पादोनदण्डचतुष्टयमतिक्रान्त इत्यर्थः, अतएव स्पष्टाः सर्वत्र व्यक्ता भासो दीप्तयो यस्य तादृशे, भूते जाते सति। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः, अविलम्बस्य सत्वरतया गुणपदार्थत्वात्।

(ण) प्रयातेष्विति। शुककुलेषु कीरगणेषु यथाभिमतानि दिगन्तराणि प्रयातेषु आहारार्थं गतेषु सत्सु। कुलायेषु नीड़ेषु निलीना लुक्कायिताः निभृता निःशब्दाः ये शुकशावकास्तैः सनाथेऽपि सहितेऽपि तस्मिन् वनस्पतौ शाल्मलीवृक्षे शून्य इव सर्वविधप्राणिरहित इव स्थिते सति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) स्वनीड़ेति। ताते मम जनके स्वनीड़ावस्थित एव निजकुलाये विद्यमान एव। शैशवाद्वेतोः

কিরণসমূহ সেইরূপ দেখা যাইতে লাগিল; (ঠ) ক্রমে ভগবান্ সূর্য্যদেব ধীরে ধীরে উদিত হইলেন; (ড) সূর্য্যপুত্র বানররাজ সুগ্রীব তারাকে গ্রহণ করিয়া কিষ্কিন্ধ্যাপর্ব্বতের শৃঙ্গে অবস্থানপূর্ব্বক, পম্পাসরোবরের প্রান্তবর্ত্তী বৃক্ষসমূহের উপরে বিচরণ করিয়া, যেরূপ নিকটবর্ত্তী বনমধ্যে ভ্রমণ করিয়াছিলেন, সেইরূপ সূর্য্যের নবীনালোক প্রথমে আকাশের নক্ষত্রসমূহকে বিলুপ্ত করিয়া, উদয়াচলের শৃঙ্গে প্রকাশিত হইয়া, পম্পাসরোবরের প্রান্তবর্ত্তী বৃক্ষসমূহের উপরে পতিত হইয়া, ক্রমে সমস্ত বন ব্যাপ্ত করিল; (ঢ) এই ভাবে প্রভাতকাল স্পষ্টরূপে প্রাদুর্ভূত হইল; সূর্য্য যেন অবিলম্বে দিবসের প্রথম যামার্দ্ধ অতিক্রম করিয়া সর্ব্বত্র স্পষ্টরূপে আলোক বিস্তার করিতে লাগিলেন; (ণ) শুকপক্ষিগণ আহারের নিমিত্ত অভিমত দিগ্‌দিগন্তরে চলিয়া

---

(१) सञ्चारिणा। (२) अष्टभागभाजि। (३) प्रयातेषु च।

वले समुद्भिद्यमानपक्षपुटे तात-(१) समीपवर्त्तिनि कोटरगते, (त) सहसैव तस्मिन् महावने संत्रासितसकलवनचरः सरभससमुत्पतत्-(२) पतत्रिपक्षपुटसन्ततः भीत-करिपोत-चीत्कारपीवरः प्रचलित-मत्तालिकुल-क्वणितमांसलः परिभ्रमदुद्-घोण-वन-वराह-रव-घर्घरः (३) गिरिगुहा-सुप्त-प्रबुद्ध-सिंहनादोपबृंहितः (४) (थ) कम्पयन्निव तरून् भगीरथावतार्य्यमाण-(५) गङ्गाप्रवाह-कलकल-बहलो भीत-वनदेवताकर्णितो मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्। (द)

असञ्जातमनुत्पन्नं बलं उड्डयनादिसामर्थ्यं यस्य तस्मिन्, तथा समुद्भिद्यमानं क्रमशः प्रकाशमानं उत्पद्यमानं पक्षपुटं पतत्रयुगलं यस्य तस्मिन् तादृशे मयि च, तातसमीपवर्त्तिनि सति कोटरगते निजनीडाधारवृक्ष-विवरस्थिते सति।

(थ) सहसैवेति। तस्मिन् महावने सहसैव मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरदिति वक्ष्यमाणेनान्वयः। अत्र प्रथमान्तानि तादृशध्वनेर्विशेषणानि। संत्रासिता भयं प्रापिताः सकला वनचरा वन्याः प्राणिनो येन सः। सरभसं भयेन सवेगं समुत्पततां उड्डयमानानां पतत्रिणां पक्षिणां पक्षपुटैः पतत्रयुगलध्वनिभिः सन्ततो विस्तारितः। भीतानां त्रस्तानां करिपोतानां हस्तिशावकानां चीत्कारैर्हृदार्त्तिव्यञ्जकशब्दैः पीवरः स्थूलो बहुलीकृत इत्यर्थः। प्रचलितस्य भयेन स्वस्वस्थानात् प्रस्थितस्य मत्तस्य मधुपानेन मत्तस्य अलिकुलस्य भ्रमरगणस्य क्वणितेन अव्यक्तरवेण मांसलः पुष्टः। परिभ्रमतां भयेन घूर्णमानानां उद्घोणानां उच्चनासिका-युक्तानां वनवराहाणां वन्यशूकराणां रवैरार्त्तध्वनिभिः घर्घरः "घर् घर्" इत्येवंध्वनिविशिष्टीकृतः। गिरि-गुहासु सुप्ता आदौ निद्रिताः अनन्तरं प्रबुद्धा मृगयाकोलाहलेन जागरिता ये सिंहास्तेषां नादेन गर्जनेन उपबृंहितो वर्द्धितः।

(द) कम्पयन्निति। भगीरथेन तदाख्येन केनचित् सूर्य्यवंशीयेन राज्ञा अवतार्य्यमाणो हिमालया-

---

গেল; শুকশাবকগণ নীরবে নিজ নিজ বাসাতে অবস্থান করিতে লাগিলেও কোনরূপ শব্দ ছিল না বলিয়া সেই শাল্মলীবৃক্ষ যেন শূন্য বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; (ত) আমার পিতা নিজ বাসাতেই অবস্থান করিতেছিলেন, আমিও পিতার নিকটে কোটরের ভিতরেই ছিলাম, অত্যন্ত শৈশবকাল বলিয়া আমার উড়িবার ক্ষমতা জন্মিয়াছিল না, কেবল পাখা উঠিতেছিল; (থ) তৎক্ষণাৎ সেই মহাবনমধ্যে মৃগয়ার কোলাহলশব্দ উঠিল; তাহাতে বনচর সকল প্রাণী ভীত হইল; ভয়বশতঃ বেগে উড্ডীন পক্ষিগণের পক্ষপুটের শব্দে, ভীত হস্তিশাবকগণের চীৎকারে, ভয়ে প্রচলিত মত্ত ভ্রমরগণের অব্যক্ত রবে, ইতস্ততো বিচরণকারী উচ্চনাসিকাসমন্বিত বন্যবরাহগণের 'ঘর্ ঘর্' শব্দে এবং গিরিগহ্বরে সুপ্তোত্থিত সিংহগণের ভীষণ গর্জ্জনে সেই কোলাহলধ্বনি আরও বর্দ্ধিত হইল।

(দ) ভগীরথকর্ত্তৃক হিমালয় হইতে ভূতলে আনয়নের সময়ে গঙ্গাস্রোতের কলকলের

---

(१) पितुः। (२) सरभससमुत्पतत्...। (३)...घर्घरकठोरः।

(४) नादबृंहितः। (५) ..आवतार्य्यमाण...।

आकर्ण्य च (१) तमहमश्रुतपूर्वमुपजात वेपथुरर्भकतया जर्ज्जरित-कर्ण-विवरो भयविह्वलः समीपवर्त्तिनः पितुः प्रतीकारबुद्ध्या जराशिथिलपक्षपुटान्तरम-विशम्। (ध)

अनन्तरञ्च “सरभसमितो गजयूथपति-लुलित-कमलिनी-परिमलः, इतः क्रोड़कुल-दश्यमान-भद्र-मुस्ता-रसामोदः, इतः करिकलभ-भज्यमान-शल्लकी-कषाय-गन्धः, (न) इतो निपतित शुष्कपत्र-मर्म्मरध्वनिः, इतो वन-महिष-विषाण-कोटि-

स्फुतलमानीयमानो यो गङ्गाप्रवाहस्तस्य कलकल इव बहलः परिपुष्टः, तथा भीताभिर्वनदेवताभिराकर्णितः श्रुतः। मृगया पशुहिंसा तदर्थः कोलाहलध्वनिरस्पष्टशब्दः उदचरदुदतिष्ठत्। अत्र कम्पयन्निवेति क्रियोत्प्रेक्षा, गङ्गाप्रवाहकलकलबहल इति लुप्तोपमा चानयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ध) आकर्ण्येति। अहं वैशम्पायनः। तं मृगयाकोलाहलध्वनिं। उपजातवेपथुः भयेनोत्पन्नकम्पः, अर्भकतया शिशुतया जर्ज्जरितकर्णविवरो विदीर्णकर्णरन्ध्रः। प्रतीकारबुद्ध्या भयनिवृत्त्युपायज्ञानेन। जरया वार्द्धक्येन शिथिलं श्लथं यत् पक्षपुटं पतत्रयुगलं तस्य अन्तरं मध्यम्।

(न) अनन्तरञ्चेति। पक्षपुटान्तरप्रवेशानन्तरञ्च कोलाहलमशृणवमिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। इदन्तया कोलाहलं विशेषयन्नाह सरभसमित्यादि। इतः अस्मिन् स्थाने, एवं सर्वत्र। सरभसं सवेगं गजयूथपतिभिः हस्तिगणश्रेष्ठैः लुलितानां मर्द्दितानां कमलिनीनां पद्मिनीनां परिमलः विमर्द्दगन्धः प्रसरतीति शेषः। अतएवात्र गजाः सन्तीति सम्भाव्यत इति भावः। क्रोड़कुलेन वराहसमूहेन दश्यमानानां दद्भिर्भुज्यमानानां भद्रमुस्तानां मुस्ताविशेषाणां रसस्य द्रवस्य आमोदः सौरभं। सुतरामत्र वराहाणामस्तित्व-सम्भावनेति भावः। करिकलभैः हस्तिशावकैः भज्यमानानां आमर्द्द्यमानानां शल्लकीनां हस्तिखाद्यवृक्षविशेषाणां कषायगन्धः निर्याससौरभं। अतएवात्र करिशावकानां स्थितिसम्भव इति भावः।

(प) इत इति। निपतितानां शुष्कपत्राणां मर्म्मरध्वनिः मर्म्मर इत्येवं शब्दः। सुतरामत्र कश्चित्

স্থায় বিশাল সেই কোলাহলধ্বনি বৃক্ষসমূহকে যেন কম্পিত করিতে লাগিল ; তখন বনদেবতাগণ ভীত হইয়া সেই কোলাহল শুনিতে লাগিলেন।

(ধ) আমি অশ্রুতপূর্ব্ব সেই কোলাহল শুনিয়া ভয়ে ব্যাকুল হইয়া পড়িলাম, আমার শরীর কাঁপিতে লাগিল এবং কর্ণবিবর যেন বিদীর্ণ হইয়া গেল। তখন প্রতীকারের আশায় নিকটবর্ত্তী পিতার বার্দ্ধক্যনিবন্ধন শিথিল পক্ষযুগলের অভ্যন্তরে প্রবেশ করিলাম।

(ন) তাহার পর “এই স্থানে গজেন্দ্রগণ পদ্মলতাসমূহকে মর্দ্দিত করিয়াছে, তাহার সৌরভ নির্গত হইতেছে ; এইখানে বরাহগণ মুস্তা (মুথা) তুলিয়া খাইয়াছে, তাহার গন্ধ বাহির হইতেছে ; এই স্থানে হস্তিশাবকগণ শল্লকীবৃক্ষ ভাঙ্গিয়াছে, তাহার নির্য্যাসের সৌরভ বহির্গত হইতেছে ; (প) এই স্থানে বৃক্ষ হইতে পতিত শুষ্কপত্রের মর্ম্মরশব্দ হইতেছে ; এইখানে বন্য

(१) आकर्ण्य तं।

कुलिश-भिद्यमान-वल्मीकधूलिः, इतो मृग-कदम्बकम्, इतो वनगजकुलम्, इतो वन-वराहयूथम्, (१) इतो वनमहिष-वृन्दम्, इतः शिखण्डि मण्डल-विरुतम्, इतः कपिञ्जल-कुल-कल-कूजितम्, इतः कुरर-कुल-क्वणितम्, इतो मृगपति-नख-भिद्यमानकुम्भ-कुञ्जर-रसितम्, (फ) इयमार्द्र-पङ्क-मलिना वराहपद्धतिः,(२) इयमभिनव-शष्पकवल-रस-श्यामला हरिण-रोमन्थ-फेन-संहतिः, इयमुन्मद-गन्धगज गण्डकण्डूयनपरिमल-निलीन (३) मुखर-मधुकर-विरुतिः, एषा निपतित रुधिरबिन्दु-सिक्त-

---

पशुर्विचरतीत्यनुमीयत इति भावः। वनमहिषाणां विषाणकोटयः शृङ्गाग्राणि कुलिशानि वज्राणीव अथवा विषाणकोटय एव कुलिशानि तैर्भिद्यमानानां विदार्य्यमाणानां वल्मीकानां उपदीकाकृतमृत्तिकास्तूपानां धूलिः प्रसरतीति शेषः। अतएवात्र महिषाः सन्तीति भावः। अत्रोपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। "वल्मीकः (पुं क्ली) उपदीकाकृतमृत्तिकास्तूपः।" इति शब्दकल्पद्रुमः। मृगकदम्बकं हरिणसमूहः। वनगजकुलं वन्यहस्तिगणः। शिखण्डिमण्डलस्य मयूरसमूहस्य विरुतं रवः। कपिञ्जलकुलस्य चातकपक्षिगणस्य कलकूजितं अव्यक्तमधुरध्वनिः। "कपिञ्जलः (पुं) चातकपक्षी" इति शब्दकल्पद्रुमः। कुररकुलस्य उत्क्रोशपक्षिगणस्य क्वणितं रवः। मृगपतीनां सिंहानां नखैर्भिद्यमाना विदार्य्यमाणाः कुम्भा मस्तकस्थकुम्भाकारमांसपिण्डानि येषां तादृशानां कुञ्जराणां हस्तिनां रसितं चीत्कारः।

(फ) इयमिति। इयं अनतिदूरे दृश्यमाना, एवं सर्वत्र। आर्द्रेण स्तिमितेन पङ्केन कर्द्दमेन वराहाणामिव देहेभ्यः पतितकर्द्दमेनेत्यर्थः, मलिना कृष्णवर्णा वराहपद्धतिः शूकराणां पन्थाः। अभिनवानामचिरोत्पन्नानां शष्पाणां तृणानां ये कवलाः ग्रासास्तेषां चर्व्यमाणबालतृणानामित्यर्थः, रसैर्निर्य्यासैः श्यामला श्यामवर्णा, हरिणानां रोमन्थस्य चर्वितचर्व्वणस्य फेनसंहतिः। उन्मदानां मदमत्तानां गन्धगजानां गन्धहस्तिनां हस्तिविशेषाणां गण्डकण्डूयनेन कपोलघर्षणेन ये परिमलाः सौरभाणि तेषु तत्परिमलयुक्तस्थानेष्वित्यर्थः। निलीनानामवस्थितानां मुखराणां शब्दायमानानां मधुकराणां भ्रमराणां विरुतिः शब्दितं। निपतितैः अश्वाक-

---

মহিষগণ বজ্রতুল্য শৃঙ্গদ্বারা বল্মীকমৃত্তিকা বিদারণ করায় তাহার ধূলি উড়িতেছে; এই দিকে হরিণগণ বিচরণ করিতেছে, এইখানে বন্যহস্তিগণ রহিয়াছে, এই স্থানে বন্য বরাহগণ ভ্রমণ করিতেছে, এই দিকে বনের মহিষসমূহ বিচরণ করিতেছে, এইখানে ময়ূরগণ রব করিতেছে, এই দিকে চাতকপক্ষিগণ অব্যক্ত মধুরধ্বনি করিতেছে, এই দিকে বাজকুরুল ডাকিতেছে, এই স্থানে সিংহসমূহ নখদ্বারা কুম্ভ বিদারণ করিলে হস্তিসমূহ চীৎকার করিতেছে; (ফ) এই, তরল কর্দ্দমসংযুক্ত বরাহদিগের পথ দেখা যাইতেছে; হরিণগণের চর্ব্বিত-চর্ব্বণের বেলায় মুখ হইতে নিপতিত এই সমস্ত ফেনসমূহ ভক্ষ্যমাণ নূতন তৃণের রসে শ্যামবর্ণ হইয়াছে; মত্ত হস্তিগণের কপোল-কণ্ডূয়নের সময় যে স্থানে মদসৌরভ লাগিয়াছিল, ভ্রমরগণ বৃক্ষের সেই স্থানে বসিয়া রব করিতেছে; এই রুরুহরিণের বিচরণপথ দেখা যাইতেছে, এই পথ রুধিরসিক্ত

---

(१) इतो वराहयूथं। (२) वराहकुलपद्धतिः। (३)...आलीन...।

शुष्कपत्र-पाटला रुरुपदवी, (फ) एतद्द्विरद-चरण-मृदित-विटप-पल्लव-पटलम्, एतत् खड्गिकुल-क्रीड़ितम्, (१) एष नख-कोटि-विलिखित-विकट-(२) पत्रलेखो रुधिर-पाटलः करिमौक्तिक-दन्तुरो (३) मृगपति मार्गः, (ब) एषा प्रत्यग्र-प्रसूत-वनमृगी-गर्भ-रुधिर-लोहिनी भूमिः, इयमटवी वेणिकानुकारिणी (४) पद्यचरस्य (५) यूथपतेर्मद-जल-मलिना, (भ) सञ्चार-वीथी-चमरीपङ्क्तिरियमनुगम्यताम्, उच्छुष्क-मृग-करीष-पांशुला त्वरिततरमध्यास्यतामियं वनस्थली, तरुशिखरमारुह्यताम्,

मल्लप्रहारेण गात्रात् च्युतैः रुधिरबिन्दुभिः सिक्तानि यानि शुष्कपत्राणि तैः पाटला श्वेतरक्तवर्णा रुरुपदवी मृगविशेषपथः।

(ब) एतदिति। द्विरदानां हस्तिनां चरणैः पादैः मृदितानां दलितानां विटपानां शाखानां पल्लवानाञ्च पटलं समूहः। सुतरामितोऽचिरादेव करिणो गता इति भावः। खड्गिकुलस्य गण्डकसमूहस्य क्रीड़ितं विहृतं मृत्तिकायां खेलाचिह्नं दृश्यत इत्यर्थः। अतएव गण्डकानामपीयं विहारभूमिरिति भावः। नखकोटिभिः नखराग्रैः नखाग्रस्थ तरुधिरैः विलिखिताः चित्रिताः विकटाः भयानकाः पत्रलेखाः पत्राकार-चिह्नानि यस्मिन् सः, रुधिरैर्निहतजन्तुरक्तैः पाटलः श्वेतरक्तः, तथा करिमौक्तिकैर्मारितगजमुक्ताभिः दन्तुरो विषम उच्चावच इति यावत् मृगपतेः सिंहस्य मार्गो विचरणपथः। सुतरामनेन पथा सिंहो गत इति भावः।

(भ) एषेति। प्रत्यग्रं नूतनं अचिरं प्रसूता प्रसूतवती या वनमृगी तस्या गर्भरुधिरेण उदर-रक्तेन लोहिनी रक्तवर्णा। प्रसूतेति आदिकर्म्मविवक्षया कर्त्तरि क्तः। वेणिकानुकारिणी केशवेणीसदृशी कुटिलेति तात्पर्य्यं, इयमटवी इदं वनं, पद्येण स्वयूथेन चरतीति तस्य, यूथपतेः करीन्द्रस्य मदजलेन मलिना श्यामला। अतएवात्र करिणो विचरन्तीति भावः।

(म) सञ्चारेति। इयमदूरे दृश्यमाना, सञ्चारवीथ्यां विचरणमार्गे चमरीपङ्क्तिः चमरमृगीश्रेणिः, अनुगम्यतां वधायानुस्रियताम्। उच्छुष्कैर्नितान्तशुष्कैः मृगकरीषैः हरिणगूथैः पांशुला सरजस्का इयं

শুষ্কপত্রে ব্যাপ্ত থাকায় পাটলবর্ণ হইয়াছে; (ব) হস্তিগণের চরণদলিত এই সকল শাখা ও পল্লব দেখা যাইতেছে; এই সকল গণ্ডারগণের খেলার চিহ্ন দেখা যাইতেছে; এই, সিংহের গমনাগমনের পথ, কারণ, নখের অগ্র হইতে নিঃসৃত রক্তদ্বারা ভয়ঙ্কর পত্রাকৃতি চিহ্ন সকল চিত্রিত রহিয়াছে, আর নিহত জন্তুর রক্তে পথটি পাটলবর্ণ ও গজমুক্তাতে সম-বিষম হইয়াছে (উঁচু-নীচু হইয়াছে); (ভ) এই স্থানে বন্য হরিণী নূতন প্রসব করিয়াছে, সুতরাং তাহার উদরের রক্তে স্থানটি রক্তবর্ণ হইয়াছে; কেশনির্ম্মিত বেণীর ন্যায় বক্র এই বনটি স্বদলের সহিত বিচরণকারী বৃহৎ হস্তীর মদজলে মলিন হইয়াছে; (ম) বিচরণের পথে এই চমরীহরিণীগণকে দেখা যাইতেছে, সুতরাং ইহাদের অনুসরণ কর; হরিণগণের অত্যন্ত শুষ্ক বিষ্ঠায় এই বনভূমি

(१) शिखण्डिकुलक्रीड़ितं। (२)...विकटविलिखितपत्रलेखः। (३) मौक्तिकदन्तुरः।
(४) वीथिकानुसारिणी। (५) एकचरस्य।

আলোক্যতাং দিগিয়ম্, আকর্ণ্যতাময়ং শব্দঃ, গৃহ্যতাং ধনুঃ, অবহিতৈঃ স্থীয়তাম্, বিমুচ্যন্তাং শ্বানঃ" ইত্যন্যোন্যমভিদধতো মৃগয়াসক্তস্য (১) মহতো জনসমূহস্য তরুগহনান্তরিত-বিগ্রহস্য ক্ষোভিতকাননং কোলাহলমশৃণবম্। (ম)

অথ নাতিচিরাদেবানুলেপনার্দ্র-মৃদঙ্গ-ধ্বনি-(২)ধীরেণ গিরি-বিবর-বিজৃম্ভিত-প্রতিনাদ-গভীরেণ (৩) শবর-শর-তাড়িতানাং (৪) কেশরিণাং নিনাদেন, (য) সংত্রস্ত-যূথ-মুক্তানামেকাকিনাঞ্চ সঞ্চরতামনবরত-করাস্ফোটমিশ্রেণ জলধর-

---

বনস্থলী ত্বরিততরং অধ্যাস্যতাং মৃগাণামন্বেষণায় আশ্রীয়তাং প্রবিশ্যতাং। তরোঃ শিখরমুপরিভাগঃ আরুহ্যতাং পশ্চিবধায়েতি ভাবঃ। ইয়ং দিক্ আলোক্যতাং, পশবঃ সন্তি ন বেতি জ্ঞানায়েত্যভিপ্রায়ঃ। অয়ং শব্দ আকর্ণ্যতাং, সুতরাং শব্দবেধিভির্গন্তব্যমিত্যাশয়ঃ। ধনুর্গৃহ্যতাং সত্বরমেব পশুহননার্থমিতি ভাবঃ। অবহিতৈঃ সাবধানৈঃ সদ্ভিঃ স্থীয়তাং, অন্যথা যদি সমীপাদেবাস্মতশরীরাঃ পশবঃ পলায়েরন্নিতি ভাবঃ। শ্বানঃ কুক্কুরাঃ বিমুচ্যন্তাং প্রস্থাপ্যন্তাং ইতস্ততঃ পশূনামন্বেষণায়েত্যভিপ্রায়ঃ। পোষিতকুক্কুরবিশেষা হি পশূনন্বিষ্য সঙ্কেতবিশেষেণ প্রভূন্ জ্ঞাপয়ন্তীতি প্রবাদঃ। ইত্যন্যোন্যমভিদধতঃ ইত্থং পরস্পরং ব্রুবতঃ, মৃগয়াসক্তস্য পশুহিংসাপ্রবৃত্তস্য, মহতো বিশালস্য বিস্তৃতস্থানব্যাপিন ইত্যর্থঃ। তরুগহনেন পাদপবনেন অন্তর্হিতা অন্তরিতাস্তিরোহিতা বিগ্রহাঃ শরীরাণি যস্য তস্য। ক্ষোভিতমুদ্বেলিতং কাননং বনং যেন তম্।

(য) অথেতি। নাতিচিরাদেব অনতিবিলম্বাদেব সর্ব্বতঃ প্রচলিতমিব তদরণ্যমভবদিতি পরেণান্বয়ঃ। অত্র তৃতীয়ান্তানি প্রচলিতমিতি ক্রিয়ায়াঃ করণানি। অনুলেপনেন মুখয়োর্দ্রবদ্রব্যবিশেষলেপনেন আর্দ্রঃ ক্লিন্নো যো মৃদঙ্গো মুরজঃ তস্য ধ্বনিবৎ ধীরেণ গম্ভীরেণ। গিরিবিবরেষু পর্ব্বতগুহাসু বিজৃম্ভিতেন প্রসৃতেন প্রতিনাদেন প্রতিধ্বনিনা গভীরো বিশালস্তেন। অত্র প্রথমবিশেষণে লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

(র) সংত্রস্তেতি। সংত্রস্তেন কিরাতাক্রমণাচ্চকিতেন যূথেন সজাতীয়গণেন মুক্তানাং পরিত্যক্তানাং, অতএব একাকিনামসহায়ানাং পৃথক্ পৃথগ্‌ভূতানাং সতামিত্যর্থঃ, সঞ্চরতাং বিচরতাং গজযূথপতীনাং, অনবরতো-

---

ধূলিময় হইয়াছে, অতএব অতি সত্বর প্রবেশ কর; এই বৃক্ষের উপরে আরোহণ কর, এই দিকে দৃষ্টিপাত কর, এই শব্দ শ্রবণ কর, শীঘ্র ধনুক গ্রহণ কর, সাবধানে অবস্থান কর, কুকুর ছাড়িয়া দাও", এইরূপে পরস্পর কথোপকথনকারী, মৃগয়ায় প্রবৃত্ত, বৃক্ষশ্রেণীর অন্তরালবর্ত্তী ও বিস্তৃত স্থানব্যাপী লোকসমূহের কোলাহল শুনিতে পাইলাম; সেই কোলাহলে বন উদ্বেলিত হইয়াছিল।

(য) তাহার পর অনতিবিলম্বেই সেই বন যেন সর্ব্বতোভাবে কম্পিত হইতে লাগিল; তাহার কারণ—সিংহসমূহ ব্যাধগণের শরপ্রহারে ব্যথিত হইয়া গর্জ্জন করিতে লাগিল, সেই গর্জ্জনধ্বনি, দুই দিকে তরলদ্রব্য লিপ্ত থাকায় আর্দ্র মৃদঙ্গধ্বনির ন্যায় গম্ভীর এবং পর্ব্বতগুহাব্যাপী প্রতিধ্বনিতে আরও বর্দ্ধিত হইয়াছিল। (র) ভয়চকিত নিজ দল হইতে পরিভ্রষ্ট হইয়া পৃথক্

---

(১)···প্রসক্তস্য। (২)...ধ্বান···। (৩) গম্ভীরেণ। (৪) ক্বচিৎ শবরপদং নাস্তি।

स्वसितानुकारिणा गजयूथपतीनां कण्ठगर्जितेन, (र) सरभस-सारमेय-विलुप्यमानावयवानामालोल-कातर-तरलतर-(१) तारकाणामेणकानाञ्च करुण कूजितेन, (ल) निहत-यूथपतीनां वियोगिनीनामनुगत-कलभानाञ्च स्थित्वा स्थित्वा समाकर्ण्य कलकलमुत्कर्णपल्लवानामितस्ततः परिभ्रमन्तीनां प्रत्यग्र-पतिविनाशशोकदीर्घेण करिणीनां चीत्कृतेन, (व) कतिपय-दिवस-प्रसूतानाञ्च खड्गिधेनुकानां त्रास-परिभ्रष्ट-पोतकान्वेषिणीनामुन्मुक्तकण्ठ-(२)मारसन्तीनामाक्रन्दि-

ऽविरतः यः कराम्फोटः शुण्डाघातः शुण्डाघातध्वनिरिति तात्पर्य्यं तेन मिश्रं मिलितं तेन, जलधरध्वसितानुकारिणा मेघगर्जनसदृशेन, कण्ठगर्जितेन कण्ठनिर्गतवृंहितध्वनिना। अत्रार्थी समासगता लुप्तोपमालङ्कारः।

(ल) सरभसेति। सरभसैः सवेगैः सारमेयैः कुक्कुरैः विलुप्यमानाः दशनैश्छिद्यमानाः अवयवा अङ्गानि येषां तेषां, अतएव आलोलाः अश्रुप्लुताः, कातरा दीना दारुणवेदनाव्यञ्जकाः, तरलतरा भयेनातीवचञ्चलाः, तारकाः कनीनिका येषां तेषां, एणकाना हरिणविशेषाणां करुणकूजितेन शोकव्यञ्जकशब्देन। एणकानामित्यनुकम्पाया कप्रत्ययः। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(व) निहतेति। निहतः किरातैर्व्यापादितः यूथपतिः सजातीयगणश्रेष्ठो हस्ती यासां, तासां अतएव वियोगिनीनां पतिविरहिणीनां, अनुगताः पश्चाद्गताः कलभाः शावका यासां तासां, स्थित्वा स्थित्वा यत्र कुत्रचित् अवस्थाय अवस्थाय कलकलं किरातानां कोलाहलं समाकर्ण्य उत्कर्णपल्लवानां उन्नमितपल्लवाकारकर्णानां इतस्ततः परिभ्रमन्तीनां करिणीनां, प्रत्यग्रेण नूतनेन पतिविनाशेन यः शोकस्तेन दीर्घं आयतं तेन चीत्कृतेन आर्त्तचीत्कारेण।

(श) कतीति। त्रासेन भयेन परिभ्रष्टान् यूथाद्विच्युतान् पोतकान् स्वस्वशावकान् अन्वेष्टुं शीलं यासां तासां, अतएव उन्मुक्तकण्ठं यथा स्यात्तथा आरसन्तीनां रुवतीनां खड्गिधेनुकानां पयस्विनीनां गण्डकस्त्रीणां, आक्रन्दितेन आर्त्तनादेन।

पृথক্ ভাবে বিচরণকারী গজেন্দ্রগণ মেঘের ন্যায় গম্ভীর গর্জ্জন করিতে লাগিল, সেই শব্দ তাহাদের অবিরত শুণ্ডাঘাতশব্দের সহিত মিলিত হইয়াছিল। (ল) বেগগামী কুক্কুরগণ দন্তদ্বারা শরীরের মাংসচ্ছেদন করিতে লাগিলে, 'এণ' হরিণগণ দারুণ বেদনাবশতঃ আর্ত্তনাদ করিতেছিল এবং তাহাদের নয়নের তারা অশ্রুপ্লাবিত, কাতর ও নিতান্ত চঞ্চল হইয়াছিল। ব্যাধগণ দলের প্রধান হস্তীকে বিনাশ করিলে বিরহিণী হস্তিনীগণ নানাস্থানে বিচরণ করত অভিনব পতিশোকে দীর্ঘ চীৎকার করিতে লাগিল এবং থাকিয়া থাকিয়া ব্যাধগণের কোলাহল শুনিয়া, পল্লবের ন্যায় বিস্তৃত কর্ণযুগল উত্তোলন করিতেছিল; তখন করিশাবকগণও তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিতেছিল। (শ) যাহারা অল্প দিনমাত্র প্রসব করিয়াছে, এইরূপ গণ্ডারস্ত্রীগণ, ভয়বশতঃ স্বদল হইতে নির্গত শাবকদিগকে অন্বেষণ করত উন্মুক্তকণ্ঠে আর্ত্তনাদ করিতে লাগিল।

(१) विलोल...तरलतारकाणां। (२)...कण्ठमतिकरुणं।

तेन, (य) तरुशिखरसमुत्पतितानामाकुलाकुलचारिणाञ्च पतत्रथानां कोला-हलेन, (१) (ष) कृपानुसारप्रधावितानाञ्च (२) मृगयूणां (३) युगपदतिरभस-पाद-पाताभिहतायां भुवः कम्पमिव जनयता चरणशब्देन, (स) कर्णान्ताकृष्ट-ज्यानाञ्च मदकल-कुरर-कामिनी-कण्ठ-कूजितकलेन शरनिकरवर्षिणां धनुषां निनादेन, (ह) पवनाहति-(४) क्वणित-धाराणामसीनाञ्च कठिन-महिष-स्कन्ध-पीठपातिनां (५) रणितेन, (क्ष) शुनाञ्च सरभस-विमुक्त-घर्घर-ध्वनीनां वनान्तर-व्यापिना ध्वानेन सर्वतः प्रचलितमिव तदरण्य-(६)मभवत्। (क)

(ष) तरुशिखरेति। तरूणां शिखरेभ्यः उपरिभागेभ्यः समुत्पतितानां उड्डीनानां, आकुलाकुलं आकुलप्रकारं भयव्याप्तं यथा स्यात्तथा चरन्तीति तेषां पतत्रथाणां पक्षिणां।

(स) कृपेति। कृपाणां मृगाणां "कृपं मृगेऽपि विज्ञेय"मिति हलायुधः, अनुसारेण अनुगमनेन गमनक्रमेण वा प्रधावितानां वेगगामिनां मृगयूणां किरातानां, युगपदेकदा अतिरभसेन महावेगेन ये पाद-पाताश्चरणन्यासास्तैः अभिहताया आहतायाः भुवः पृथिव्याः। वस्तुत एव कम्पजननादिव शब्दो वाक्यालङ्कारे।

(ह) कर्णेति। कर्णान्ते कर्णसमीपे आकृष्टा ज्या गुणा येषां तेषां, शरनिकरवर्षिणां धनुषां, मदकलानां मदमत्तानां कुररकामिनीनां उत्क्रोशपक्षिणीनां कण्ठकूजितवत् गलध्वनिवत् कलेन अव्यक्तमधुरेण निनादेन शब्देन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। कुररकामिनीति कामिनीपदं ध्वनेरव्यक्तमधुरताद्योतनार्थम्।

(क्ष) पवनेति। पवनस्य आहत्या वायोराघातेन क्वणिताः शब्दिता धारा निशितांशा येषां तेषां रणितेन शब्देन।

(क) शुनामिति। तथा सरभसं सवेगं विमुक्ताः परित्यक्ताः विहिता घर्घरध्वनयः 'घर् घर्' इत्येवं शब्दा यैस्तेषां शुनां कुक्कुराणाञ्च ध्वानेन शब्देन। प्रचलितमिव कम्पितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ষ) পক্ষিগণ বৃক্ষের উপরিভাগ হইতে উড্ডীন হইয়া সভয়ে বিচরণ করতঃ কোলাহল করিতে-ছিল। (স) ব্যাধগণ একদা মহাবেগে পদক্ষেপ করিয়া পশুদিগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হইয়াছিল, তাহাদের সেই পদাঘাতে ভূতল কম্পিত করিয়া শব্দ হইতেছিল। (হ) অপর ব্যাধগণ কর্ণপর্য্যন্ত গুণ আকর্ষণ করিয়া বাণক্ষেপ করিতেছিল, তাহাতে বাজকুরলপক্ষিণীগণের কণ্ঠধ্বনির ন্যায় সেই বাণবর্ষী ধনুকের শব্দ হইতেছিল। (ক্ষ) বায়ুর আঘাতে তরবারির ধার 'কন কন' করিয়া উঠিতেছিল এবং সেই তরবারিগুলি মহিষগণের কঠিন স্কন্ধদেশে পতিত হইতেছিল, তাহাতেও শব্দ হইতে লাগিল, (ক) এবং কুক্কুরগণ বেগে 'ঘর্ ঘর্' শব্দ করিতেছিল, সেই শব্দে অপর বনও ব্যাপ্ত হইতেছিল।

---

(१) निनादेन। (२)...प्रस्थितानाञ्च। (३) मृगयूथानां। (४) पवनाहत।...। (५)...पीठपाटितानां। (६) तदारण्यं।

अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् मृगयाकलकले, निर्वृष्ट-मूक-जलधर-वृन्दानुकारिणि मथनावसानोपशान्तवारिणि सागर इव स्तिमिततामुपगते (१) कानने, (२) मन्दीभूतभयोऽहम्-(३) मुपजात-कुतूहलः पितुरुत्सङ्गादीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य्य सन्त्रास-तरल-(४) तारकः शैशवात् किमिदमिति सञ्जातदिदृक्षः (५) तामेव दिशं चक्षुः प्राहिणवम्। (ख)

अभिमुखमापतच्च (६) तस्माद्वनान्तरादर्जुन-भुजदण्ड-सहस्र-विप्रकीर्णमिव नर्म्मदा-प्रवाहम्, अनिलचलितमिव (७) तमाल-काननम्, एकीभूतमिव काल-

(ख) अचिरादिति। प्रशान्ते विरते। निर्वृष्टं निःशेषेण कृतवर्षं अतएव मूकं नीरवं यत् जलधरवृन्दं मेघसमूहः तदनुकर्त्तुं शीलं यस्य तस्मिन् तादृशे कानने, मथनस्य देवासुरैर्मन्थनस्य अवसाने समाप्तौ उपशान्तं विरतं उद्वेलनहीनं वारि जलं यस्य तस्मिन् सागर इव स्तिमिततां निश्चलतां उपगते प्राप्ते सति। उत्सङ्गात् क्रोड़ात्। शिरोधरां ग्रीवां प्रसार्य्य कोटराद्वहिर्विस्तार्य्य, सन्त्रासेन आशङ्कया तरले चञ्चले तारके कनीनिकाद्वयं यस्य सः। सञ्जाता उत्पन्ना दिदृक्षा द्रष्टुमिच्छा यस्य सः। तामेव दिशं प्रति। प्राहिणवं प्रैरयम्। अत्र निर्वृष्टेत्यादावार्थी समासगता लुप्तोपमा, अन्या चोपमा, अनयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ग) अभीति। तस्माद्वनान्तरादभिमुखमापतत् शबरसैन्यमद्राक्षमिति वक्ष्यमाणेनान्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि शबरसैन्यविशेषणानि। वनान्तरात् अरण्यमध्यात्, आपतत् आगच्छत्। अर्जुनेति। अर्जुनेन कार्त्तवीर्य्येण भुजदण्डानां सहस्रेण सहस्रसंख्यकदण्डोपमबाहुभिः करणैः विप्रकीर्णं विक्षिप्तं नर्म्मदाया नद्याः प्रवाहं स्रोत इव। अविच्छिन्नश्रेणीकत्वादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

पुरा किल हैहयपतिः कार्त्तवीर्य्यः सहस्रबाहुभिर्नर्म्मदाप्रवाहं विक्षिप्य जलकेलिमकरोदिति रामायणवार्त्ता।

अनिलेति। अनिलेन वायुना चलितं प्रस्थितं उन्मूलितं सत् स्थानान्तरगमनशीलमित्यर्थः तमालतरूणां काननं वनमिव निविड़कृष्णवर्णत्वाद्दीर्घाकृतित्वाच्चेति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(খ) অচিরকালমধ্যে সেই মৃগয়ার কোলাহল নিবৃত্তি পাইলে এবং সম্পূর্ণ বৃষ্টি করায় নিঃশব্দ মেঘসমূহের ন্যায় অবস্থিত সেই মহাবন, দেব ও দানবগণের মন্থন সমাপ্ত হইলে উদ্বেলনবিহীন সমুদ্রের ন্যায় স্থিরতা প্রাপ্ত হইলে, আমার ভয় কমিয়া গেল, বিষয়টি জানিবার জন্য কৌতুক জন্মিল এবং শিশুতানিবন্ধন 'ব্যাপারটা কি' তাহা দেখিবারও ইচ্ছা হইল, আবার আশঙ্কায় নয়নের তারাও কাঁপিতেছিল; তখন আমি পিতার ক্রোড় হইতে অল্পমাত্র নির্গত হইয়া, কোটরে থাকিয়াই গলা বাহির করিয়া সেই দিকে দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলাম।

(গ) তাহার পরে দেখিলাম—সেই বনমধ্য হইতে কিরাতসৈন্যগণ আমাদের অভিমুখে আসিতেছে। রাজা কার্ত্তবীর্য্যার্জ্জুনকর্ত্তৃক সহস্রসংখ্যক বাহুদ্বারা সঞ্চালিত নর্ম্মদানদীর প্রবাহের

(१) उपागते। (२) तस्मिन् कानने। (३)...साध्वसोऽहं। (४)...तरलतर...।
(५) समुपजातविस्मयो दिदृक्षुः, समुपजातदिदृक्षः, उपजातदिदृक्षः।
(६) आपतितं, आपतन्तं। (७) अनिलबलचलितमिव, अनिलवशाच्चलितमिव।

रात्रीणां याम-संघातम्, अञ्जनशिला-स्तम्भ-सम्भारमिव क्षितिकम्प-विघूर्णितम्, अन्धकारपूरमिव (१) रविकिरणाकुलितम्, अन्तक-परिवारमिव परिभ्रमन्तम्, (ग) अवदारित-रसातलोद्गतमिव (२) दानवलोकम्, अशुभकर्म्म-समूहमिवैकत्र समागतम्, अनेक-(३) दण्डकारण्य-वासि-(४) मुनिजन-शाप-सार्थमिव सञ्चरन्तम्, अनवरत-शर-निकर-वर्षि-राम-निहत-खर दूषण-बलमिव तदपध्यानात् पिशाचता-

---

एकीति। कालरात्रीणां संहारनिशानां अतिगाढान्धकारतया निविड़कृष्णानामिति भावः। एकीभूतं एकत्र मिलितं यामसंघातं प्रहरसमूहमिव। अत्र द्रव्यस्वरूपोत्प्रेक्षालङ्कारः, घटाद्यवच्छेदकभेदेनाकाशभेदवत् क्रियाभेदेनैव कालस्य यामादिभेदाङ्गीकारात्, वस्तुतस्तु आकाशस्येव कालस्यैकत्वादिति केचित्। वस्तुतस्तु जात्युत्प्रेक्षैवेयमिति ध्येयम्।

अञ्जनेति। क्षितिकम्पेन भूमिकम्पेन विघूर्णितं चालितं, अञ्जनवत् कज्जलवत् कृष्णा इत्यर्थः ये शिलास्तम्भाः प्रस्तरनिर्म्मितस्थूणाः तेषां सम्भारं समूहमिव। अत्रोपमालङ्कारो लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते।

अन्धकारेति। रविकिरणैः आकुलितं सञ्चाल्य विक्षोभितं अन्धकाराणां पूरं प्रवाहमिव। अत्र जाति स्वरूपोत्प्रेक्षा। अन्धकारस्य द्रव्यत्वेन बहुत्वेन चान्धकारत्वस्य जातित्वात्। तथा चोक्तम्—

"तमस्तमालवर्णाभं चलतीति प्रतीयते। रूपवत्त्वात् क्रियावत्त्वात् द्रव्यन्तु दशमं तमः।"

आलोकसामान्याभावोऽन्धकार इति तु वैशेषिकादयः।

अन्तकेति। अन्तकपरिवारमिव यमस्य परिजनवर्गमिव गाढ़कृष्णवर्णत्वादिति भावः। अत्रापि जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) अवेति। अवदारितेन विदारितेन रसायास्तलेन भुवस्तलेन तत्पथेनेत्यर्थः उद्गतं पातालादुत्थितं दानवलोकं असुरजनमिव। अत्र जातिस्वरूपोत्प्रेक्षालङ्कारः।

अशुभेति। एकत्र समागतं मिलितं, अशुभकर्म्मणां पापकार्य्याणां समूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा।

अनेकेति। अनेकेषां दण्डकारण्यवासिनां मुनिजनानां शापसार्थं अभिसम्पातगणमिव। जात्युत्प्रेक्षा। "सार्थो वणिक्समूहे स्यादपि संघातमात्रके।" इति मेदिनी।

अनेति। अनवरतशरनिकरवर्षिणा रामेण निहतं यत् खरदूषणयो तदाख्ययो राक्षसयोः बलं सैन्यं

ন্যায়, বায়ুবেগে উন্মূলিত হইয়া চলিত তমালবনের ন্যায়, একত্র মিলিত কালরাত্রির প্রহরসমূহের ন্যায়, ভূমিকম্পে সঞ্চালিত কজ্জলতুল্য কৃষ্ণবর্ণ পাষাণস্তম্ভের ন্যায়, সূর্য্যকিরণ-তাড়িত অন্ধকারপ্রবাহের ন্যায়, বিচরণশীল যমের পরিবারবর্গের ন্যায়, (ঘ) ভূতল বিদারণ করিয়া পাতাল হইতে উত্থিত দানবগণের ন্যায়, একত্র সমবেত পাপকর্ম্মসমূহের ন্যায়, দণ্ডকারণ্যবাসী বহুসংখ্যক মুনিগণের বিচরণশীল অভিশাপসমূহের ন্যায়, রামচন্দ্রের অবিশ্রান্ত বাণবৃষ্টিতে নিহত হইয়া

---

(१)...पुञ्जमिव। (२)...तलोन्मग्नमिव। (३) अशेष...। (४)...वासिन...।

मुपगतम्, (१) कलिकाल-बन्धुवर्गमिव सङ्गतम्, (घ) अवगाह-प्रस्थित-(२)मिव वनमहिष-यूथम्, अचल-शिखर-स्थित-केसरि-(३) कराकृष्टि-पतन-शीर्णमिव (४) कालमेघ-(५) पटलम्, अखिलरूप-विनाशाय धूमकेतुजालमिव समुद्गतम्, अन्धकारिताशेषकाननम्, अनेक-सहस्रसंख्यम्, अतिभयजनकम्, (६) उत्पात-वेताल-व्रातमिव शवर-सैन्यमद्राक्षम्। (ङ)

मध्ये च तस्यातिमहतः (७) शवरसैन्यस्य प्रथमे वयसि वर्त्तमानं,

तदिव। तस्य रामस्य अपध्यानात् दुश्चिन्तनात् अनिष्टचिन्ताजनितप्रत्यवायात् पिशाचतां उपगतं प्राप्तं सत् उपस्थितमित्यर्थः। जात्युत्प्रेक्षा। एतेन सतामनिष्टचिन्तयाऽपि प्रत्यवायो भवतीति दर्शितम्।

कलीति। सङ्गतं एकत्र सम्मिलितं, कलिकालस्य बन्धुवर्गं सहृत्समूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा।

(ङ) अवेति। अवगाहाय मज्जनाय प्रस्थितं चलितं। जात्युत्प्रेक्षा।

अचलेति। अचलशिखरस्थितस्य पर्वतशृङ्गस्थितस्य केसरिणः सिंहस्य कराभ्यां हस्ताभ्यां या आकृष्टि-राकर्षणं तया यत् पतनं भूतले पातः तेन शीर्णं बहुखण्डीभूतं कालमेघपटलं कृष्णमेघसमूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा।

अखिलेति। अखिलानां सर्वेषां रूपाणां मृगाणां विनाशाय समुद्गतं उत्थितं धूमकेतूनां जालं समूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा। "रूपं मृगेऽपि विज्ञेय"मिति हलायुधः।

अन्धेति। अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं अशेषं काननं वनं येन तत्। अनेकानि सहस्राणि संख्या यस्य तत्। अतिभयजनकं अतिभयङ्करं। उत्पाताय अमङ्गलाय यो वेतालव्रातः भूताधिष्ठितशवसमूहस्तमिव। जात्युत्प्रेक्षा।

(च) मध्ये चेति। अतिमहतः अतिविशालस्य अतिविस्तृतस्य तस्य शवरसैन्यस्य मध्ये च मातङ्गक-नामानं शवरसेनापतिमपश्यमित्यग्रिमेणान्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि शवरसेनापतेर्विशेषणानि। प्रथमे वयसि

তাঁহারই অনিষ্ট-চিন্তার পাপে পুনরায় পিশাচ হইয়া উপস্থিত খর ও দূষণের সৈন্যগণের ন্যায়, একস্থানে মিলিত কলিযুগের বন্ধুবর্গের ন্যায়, (ঙ) পম্পাসরোবরে অবগাহনের জন্য প্রস্থিত বন্য মহিষগণের ন্যায়, পর্ব্বতশৃঙ্গস্থিত সিংহের হস্তদ্বারা আকর্ষণে পতিত হইয়া খণ্ডখণ্ডীভূত কৃষ্ণবর্ণ মেঘসমূহের ন্যায়, সমস্ত বন্য জন্তুর বিনাশসূচনার জন্য উত্থিত ধূমকেতুসমূহের ন্যায় এবং জগতের অমঙ্গলের জন্য উপস্থিত ভূতগণের ন্যায় অত্যন্ত ভয়ঙ্কর বহুসহস্র কিরাতসৈন্য সমগ্র বন অন্ধকার করিয়া আসিতেছিল।

(চ) অতি বিস্তৃত সেই শবরসৈন্যের মধ্যে তরুণবয়স্ক মাতঙ্গনামক সেনাপতিকে দেখিলাম। তাহার শরীর অত্যন্ত কঠিন বলিয়া লৌহনির্ম্মিতের ন্যায় বোধ হইতেছিল;

---

(१) उपागतं। (२) अवगाहोत्थितप्रस्थितमिव। (३) अचलशिखरस्थसिंह...। (४) विशीर्णमिव।
(५) कालाभ्र...। (६)...जननं। (७) तस्य महतः।

अतिकर्कशत्वादायसमयमिव (१) (च) एकलव्यमिव जन्मान्तरागतम्, (२) (छ) उद्भिद्यमान-श्मश्रुराजितया प्रथम-मदलेखा-मण्ड्यमान-गण्डभित्तिमिव गजयूथपति-कुमारम्, (ज) असित-कुवलय-श्यामलेन (३) देहप्रभा-प्रवाहेण कालिन्दीजलेनेव पूरयन्तमरण्यम् (४) (झ) आकुटिलाग्रेण स्कन्धावलम्बिना कुन्तल-भारेण केशरिणमिव गजमदमलिनीकृतेन केशरकलापेनोपेतम्, (ञ) आयतललाटं, (५) अतितुङ्ग-घोरघोणं, (६) (ट) उपनीतस्यैककर्णाभरणतां भुजगफणामणे (७)

वयोऽपेक्षया पूर्व्वे वयसि वर्त्तमानं विद्यमानं युवानमित्यर्थः। अतिकर्कशत्वात् नितान्तकठिनदेहत्वात् आयसमयमिव लौहनिर्म्मितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। "आयसं लौह"मिति भरतः।

(छ) एकेति। जन्मान्तरे अन्यस्मिन् जन्मनि परजन्मनि आगतमुपस्थितं एकलव्यं तदाख्यं शवरमिव धनुर्वेदविशारदत्वादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। पुरा खल्वेकलव्यो नाम कश्चन शवरो द्रोणप्रतिकृतिं निर्म्माय धनुर्वेदविद्यामुपलेभे, इति महाभारतवार्त्ता।

(ज) उद्भिद्यमानेति। उद्भिद्यमाना उत्पद्यमाना प्रकाशमाना श्मश्रुराजिः मुखलोमश्रेणिर्यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, प्रथमया नवीनया मदलेखया कृष्णवर्णदानजलरेखया मण्ड्यमाने भूष्यमाणे गण्डभित्ती कपोलदेशौ यस्य तं, गजयूथपतेः करीन्द्रस्य कुमारः शावकस्तमिव। उपमालङ्कारः।

(झ) असितेति। असितकुवलयवत् नीलोत्पलवत् श्यामलेन, देहस्य प्रभाप्रवाहेण कान्तिस्रोतसा कालिन्दीजलेनेव यमुनावारिणेव अरण्यं पूरयन्तं पूर्णं कुर्व्वन्तं। अत्र तादृशदेहप्रभाप्रवाहेण अरण्यपूरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, लुप्तोपमा, द्रव्योत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ञ) आकुटिलेति। गजमदमलिनीकृतेन केशरकलापेन जटासमूहेन उपेतं केशरिणं सिंहमिव आकुटिलाग्रेण ईषद्वक्राग्रेण स्कन्धावलम्बिना कुन्तलभारेण केशकलापेन उपेतं युक्तम्। उपमालङ्कारः।

(ट) आयतेति। आयतललाटं विशालभालदेशं। अतितुङ्गा अत्युच्चा घोरा विशालरन्ध्रतया भीषणा च घोणा नासिका यस्य तम्। "घोणा नासा च नासिकेत्यमरः।"

(ছ) ধনুর্ব্বেদে সুদক্ষ বলিয়া, একলব্য যেন জন্মান্তর পরিগ্রহ করিয়া আসিয়াছে—এইরূপ প্রতীতি হইতেছিল, (জ) মুখে অল্প অল্প শ্মশ্রু (দাড়ি) উঠিয়াছিল বলিয়া, নূতন মদজলরেখায় গণ্ডযুগল ভূষিত হইলে, প্রকাণ্ড হস্তিশাবকের ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল; (ঝ) নীলপদ্মের ন্যায় শ্যামবর্ণ দেহকান্তিতে সে যেন যমুনাজলদ্বারা বনভূমি পূর্ণ করিতেছিল; (ঞ) সিংহ যেমন হস্তীর মদজলে মলিনতাপ্রাপ্ত জটাসমূহ ধারণ করে, মাতঙ্গও তেমন ঈষৎ কুটিলাগ্র ও কৃষ্ণবর্ণ স্কন্ধলম্বিত কেশকলাপ ধারণ করিতেছিল; (ট) মাতঙ্গের ললাটদেশ বিস্তৃত এবং নাসিকা

---

(१) आयसमिव। (२) जन्मान्तरगतं। (३) श्यामेन। (४) पूरितारण्यं।
(५) आयतललाटभासिनम्। (६) तुङ्गघोरघोणम्। (७) भुजङ्गफणामणीः, भुजगफणामणीः।

रापाटलैरंशुभिरालोहितीकृतेन पर्णशयनाभ्यासाल्लग्न-पल्लवरागेणेव वामपार्श्वेन विराजमानम् (ठ) अचिर-हत-(१) गज-कपोल-गृहीतेन सप्तच्छद-परिमल-वाहिना कृष्णागुरु-(२) पङ्केनेव सुरभिणा मदेन कृताङ्गरागम्, (ड) उपरि तत्-(३)परिमलान्धेन परिभ्रमता (४) मायूर-पिच्छातपत्रानुकारिणा (५) मधुकर-कुलेन तमाल-पल्लवेनेव निवारितातपम्, (ढ) आलोलपल्लवव्याजेन (६) भुजबल-निर्जितया भयप्रयुक्तसेवया विन्ध्याटव्येव करतलेनापमृज्यमान-गण्ड-

(ठ) उपनीतस्येति। एकस्य कर्णस्य आभरणतां भूषणतां उपनीतस्य प्रापितस्य आभरणतया वामकर्णे दत्तस्येत्यर्थः भुजगस्य सर्पस्य फणामणेः फणास्थितमणेः आपाटलैः ईषच्छुक्लरक्तैः अंशुभिः किरणैः आलोहितीकृतेन ईषल्लोहितवर्णीकृतेन अतएव पर्णशयनस्य वृक्षपत्रेषु शयनस्य अभ्यासात् पौनःपुन्यात् लग्नः संसक्तः पल्लवानां रागो रक्तिमा यत्र तेनेव, शय्याभूतपर्णेषु पल्लवानामपि सत्त्वादिति भावः, वामपार्श्वेन विराजमानं शोभमानम्। अत्र पल्लवरागस्य लग्नक्रियोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) अचिरेति। अचिरहतस्य सद्योव्यापादितस्य गजस्य हस्तिनः कपोलाभ्यां गण्डद्वयात् गृहीतेन आनीतेन, सप्तच्छदस्य सप्तपर्णवृक्षस्य परिमलमिव परिमलं सौरभं वहतीति तेन, कृष्णस्य अगुरोस्तदाख्यसुगन्धिद्रव्यस्य पङ्केनेव द्रवेणेव सुरभिणा घ्राणतर्पणगन्धवता मदेन दानवारिणा कृतः अङ्गरागः अङ्गविलेपनं येन तम्। अत्र लुप्तोपमोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ढ) उपरीति। तेन गजमदसम्बन्धीयेन, परिमलेन सौरभेण, अन्धो विह्वलस्तेन, अतएव उपरि मस्तकोपरिभागे परिभ्रमता, मयूरस्येदमिति मायूरं यत् पिच्छं बर्हं तस्य आतपत्रं तन्निर्मितच्छत्रं अनुकरोतीति तेन, तमालस्य तरोः पल्लवेनेव स्थितेन मधुकरकुलेन भ्रमरसमूहेन निवारित आतपः सूर्यकिरणो यस्य तम्। अत्र प्रथमा आर्थी द्वितीया च श्रौती उपमा, तयोः पूर्ववत् संसृष्टिः।

(ण) आलोलेति। भुजबलेन मातङ्गस्यैव बाहुबलेन निर्जितया आयत्तीकृतया, अतएव भयेन प्रयुक्ता आरब्धा सेवा परिचर्या यया तया विन्ध्याटव्या कर्त्र्या, आलोलं वायुवेगेन सम्यक् चञ्चलं यत् पल्लवं

অত্যন্ত উন্নত ও ভয়ঙ্কর ছিল; (ঠ) তাহার বামকর্ণে অলঙ্কাররূপে একটি সর্পমণি সংযুক্ত ছিল, তাহার ঈষৎ রক্তবর্ণকিরণে বামপার্শ্বও ঈষৎ রক্তবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সর্ব্বদা বৃক্ষের পর্ণ ও পল্লবময়শয্যাতে শয়ন করায় পল্লবের রক্তিমা বামপার্শ্বে লাগিয়া রহিয়াছে; (ড) সদ্যোনিহত হস্তীর গণ্ডদ্বয় হইতে আনীত, সপ্তপর্ণবৃক্ষ ও কৃষ্ণাগুরুর ন্যায় সুগন্ধি মদজলদ্বারা সে অঙ্গরাগ করিয়াছিল; (ঢ) তমালপল্লবের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ভ্রমরগণ, সেই মদজলের সৌরভে বিহ্বল হইয়া মাতঙ্গের মস্তকের উপরে পরিভ্রমণ করত, ময়ূরপুচ্ছ-নির্ম্মিত ছত্রের অনুকরণ করিয়া তাহার রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল; (ণ) মাতঙ্গের বাহুবলে নির্জ্জিত

(१) अचिराहत...। (२) कृष्णागरु...। (३) पतत्...। (४) भ्रमता। (५) मायूरातपत्रानुकारिणा, मयूरपिच्छातपत्रानुकारिणा, मयूरपिच्छच्छत्रानुकारिणा। (६) आलोलकर्णपल्लवव्याजेन।

স্থল-স্বেদলেখম্, (১) (ণ) আপাটলয়া হরিণকুল-কাল-রাত্রি-(২) সন্ধ্যায়মানয়া শোণিতার্দ্রয়েব দৃষ্ট্যা রঞ্জয়ন্তমিবাশাবিভাগান্, (৩) (ত) আজানুলম্বিনা (৪) দিক্কুঞ্জর-(৫) কর-প্রমাণমিব গৃহীত্বা নির্ম্মিতেন চণ্ডিকা-রুধির-বলিপ্রদানার্থং-(৬) অসকৃন্নিশিতশস্ত্রোল্লেখ বিষমিত-শিখরেণ ভুজযুগলেনোপশোভিতম্, (থ) অন্তরান্তরালগ্না-(৭) শ্যান-হরিণ-রুধিরবিন্দুনা স্বেদজল-

---

তরুরাজেন স্বকীয়বৃক্ষজাতপল্লবকম্পনচ্ছলেনেত্যর্থঃ, করতলেন পাণিনেব, অপমৃজ্যমানা প্রোঞ্ছ্যমানা গণ্ডস্থলয়োঃ স্বেদলেখা ঘর্ম্মবিন্দুশ্রেণির্যস্য তম্। অত্র সাপহ্নবোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ণ) আপাটলয়েতি। আপাটলয়া আলোহিতয়া, অতএব হরিণকুলস্য মৃগসমূহস্য কালরাত্রেঃ সংহারনিশায়াঃ সন্ধ্যায়মানয়া অরুণকিরণরক্তীকৃতসন্ধ্যাবদাচরন্ত্যা তাদৃশদৃষ্টিপাতেনৈব নিরূপ্য হরিণসংহারাদিতি ভাবঃ, শোণিতার্দ্রয়েব রক্তস্তিমিতয়েব দৃষ্ট্যা চক্ষুষা আশাবিভাগান্ দিগ্বিভাগান্ রঞ্জয়ন্তং রক্তীকুর্ব্বন্তমিব স্থিতম্। অত্র ব্যঙ্গতোপমা তথা প্রথমা গুণোৎপ্রেক্ষা দ্বিতীয়া চ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা, এতেষামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ত) আজান্বিতি। আজানুলম্বিনা জানুপর্য্যন্তপাতিনা দীর্ঘতরেণ, দিক্কুঞ্জরস্য ঐরাবতাদ্যন্যতমদিগ্দন্তিনঃ করপ্রমাণং শুণ্ডাপরিমাণং গৃহীত্বেব নির্ম্মিতেন বিধাত্রা সৃষ্টেন দিগ্দন্তিশুণ্ডাদণ্ডতুল্যদৈর্ঘ্যেণেত্যর্থঃ। চণ্ডিকায়ৈ কালিকায়ৈ রুধিরবলেঃ রক্তোপহারস্য প্রদানার্থং পশুচ্ছেদনার্থমিতি তাৎপর্য্যং অসকৃৎ বারং বারং নিশিতস্য সুধারাজননায় পাষাণাদৌ শাণিতস্য শস্ত্রস্য খড়্গাদেঃ উল্লেখেন ঘর্ষণেন বিষমিতং বিষমীকৃতং ক্ষতবিক্ষতং শিখরং অগ্রভাগো যস্য তেন। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(থ) অন্তরেতি। অন্তরান্তরা মধ্যে মধ্যে লগ্নাঃ সংসক্তাঃ শ্যানা ঘনীভূতা হরিণরুধিরবিন্দবো যত্র তেন। স্বেদজলকণিকাভিঃ ঘর্ম্মবারিবিন্দুভিঃ চিতং ব্যাপ্তং তেন, অতএব গুঞ্জাফলৈর্মিশ্রাণি সংযুক্তানি তৈঃ, করিকুম্ভমুক্তাফলৈঃ, বিরচিতং কৃতং আভরণং যস্য তেনেব স্থিতেন। অত্র হরিণরক্তবিন্দবো গুঞ্জাফলতুল্যাঃ,

---

স্বয়ং বিন্ধ্যাটবী যেন ভয়বশতঃ তাহার পরিচর্য্যা করিতে প্রবৃত্ত হইয়া, বৃক্ষের পল্লবকম্পনচ্ছলে করতলদ্বারা তাহার গণ্ডস্থলের ঘর্ম্মবিন্দু সকল মুছিয়া দিতেছিল; (ণ) হরিণসমূহের সংহাররাত্রির সন্ধ্যাকালের ন্যায় আরক্তবর্ণ মাতঙ্গের নয়নযুগল যেন রক্তে আর্দ্র হইয়াছিল, আর তাহাদ্বারা সে যেন সমস্ত দিক্ রঞ্জিত করিতেছিল; (ত) বিধাতা, দিক্-হস্তীর শুণ্ডের প্রমাণ লইয়াই যেন মাতঙ্গের আজানুলম্বিত বাহুযুগল নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, এবং কালীর দ্বারে পশু-বলিদান করিবার জন্য অস্ত্র শাণিত করিবার সময়ে তাহার ঘর্ষণে সেই বাহুযুগলের অগ্রভাগ ক্ষত-বিক্ষত হইয়াছিল, সেই বাহুযুগলদ্বারা সে শোভা পাইতেছিল. (থ) বিন্ধ্যপর্ব্বতের প্রস্তরফলকের ন্যায় বিশাল বক্ষঃস্থলে বহুতর ঘর্ম্মবিন্দু বহির্গত হইয়াছিল, :এবং তাহার মধ্যে মধ্যে হরিণের গাঢ় রক্তবিন্দু সকল লাগিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, গুঞ্জাফল-(কুঁচ) মিশ্রিত

---

(১)...সলিললেখং। (২) মৃগকুলক্ষয়রাত্রি...। (৩) আশাবিভাগানাম্। (৪) আজানুলম্বেন।
(৫) বনকুঞ্জর, কুঞ্জর...। (৬)...প্রদানায়। (৭) অন্তরালগ্ন...।

कण्ठिका-(१) चितेन गुञ्जाफलमिश्रैः करिकुम्भमुक्ताफलैरिव विरचिताभरणेन विन्ध्य-शिलातल-विशालेन वक्षःस्थलेन (२) उद्भासमानम्, (द) अविरल-श्रमाभ्यासादुल्लिखितोदरम्, (३) (ध) इभ-मद-मलिनमालान-स्तम्भयुगलमुपहसन्तमिवोरुदण्डद्वयेन, (न) लाक्षा-लोहित-कौशेयपरिधानम्, (प) अकारणेऽपि क्रूर-जातितया (४) बद्धत्रिपताकोदग्र-भ्रूकुटीकराले (५) ललाटपट्टे (६) प्रबलभक्त्या-राधितया 'मत्परिग्रहोऽय'मिति कात्यायन्या त्रिशूलेनेवाङ्कितम्, (फ) उप-

---

घर्मबिन्दवस्य करिकुम्भमुक्ताफलतुल्या इत्युत्प्रेक्षा सङ्गच्छते। विन्ध्यस्य पर्वतस्य शिलातलवत् प्रस्तरपाषाणतलवत् विशालेन विस्तीर्णेन। उद्भासमानं दीप्यमानम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा लुप्तोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ध) अविरलेति। अविरलो दिवसे अविश्रान्तो यः श्रमस्तस्य अभ्यासात् पौनःपुन्यात् प्रत्यहमविश्रान्त परिश्रमात् उल्लिखितं कृशत्वेनोल्लेखयोग्यीकृतं कृशमित्यर्थः उदरं यस्य तम्।

(न) इभेति। ऊरुदण्डद्वयेन, इभमदेन हस्तिदानजलेन मलिनं कृष्णवर्णं आलानस्तम्भयुगलं गजबन्धनस्तम्भद्वयं उपहसन्तमिव विशालतया तिरस्कुर्वन्तमिव आलानस्तम्भयुगलादूरुयुगलस्य विशालत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, उपहसन्तमित्यनेनार्थोपमा चाक्षिप्यते तेन चोभयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। स्वभावकृष्णस्योरुदण्डद्वयस्य आलानस्तम्भेन सह तुल्यताप्रतिपादनार्थमिभमदमलिनमिति विशेषणम्।

(प) लाक्षेति। लाक्षया लोहितं रक्तीकृतं कौशेयं कृमिकोशोद्भवं पट्टवस्त्रं परिधानमधोवस्त्रं यस्य तम्।

(फ) अकेति। अकारणेऽपि क्रोधव्यञ्जकभ्रूकुटीकरणकारणाभावेऽपि क्रूरजातितया स्वभावत एव निष्ठुरजातित्वेन हेतुना, बद्धाः कृताः त्रिपताकाः पताकावत् तिस्रो रेखा यया तया, उदग्रया उन्नतया भ्रूकुट्या भ्रुवोः कौटिल्येन करालं भयङ्करं तस्मिन्, ललाटपट्टे पट्टवद्विस्तीर्णे भालदेशे, प्रबलभक्त्या अत्यन्तानुरक्त्या "सा भक्तिर्या परानुरक्तिरीश्वरे" इति शाण्डिल्यसूत्रात्, आराधितया उपासितया कात्यायन्या दुर्गया देव्या, 'अयं मातङ्गः मत्परिग्रहः मदीयः ममानुग्रहपात्र" इति कृत्वा त्रिशूलेन स्वकीयत्रिशूलायुध

গজমুক্তাদ্বারা বক্ষের আভরণ করা হইয়াছে, মাতঙ্গ সেই বক্ষদ্বারা দীপ্তি পাইতেছিল; (ধ) প্রতিদিন অবিশ্রান্ত পরিশ্রম করায় মাতঙ্গের উদর কৃশ হইয়াছিল; (ন) মাতঙ্গ স্বকীয় বিশাল উরুযুগলদ্বারা, মদজল লাগিয়া থাকায় মলিনবর্ণ হস্তীর বন্ধনস্তম্ভযুগলকে যেন উপহাস করিতেছিল; (প) আর সে লাক্ষারস-রঞ্জিত কৌশেয়বস্ত্র (রেশমী কাপড়) পরিধান করিয়াছিল; (ফ) ক্রোধসূচক ভ্রূকুটী করিবার কোন কারণ না থাকিলেও স্বভাবতঃ নিষ্ঠুরজাতি বলিয়া মাতঙ্গ, অত্যন্ত ভ্রূকুটী করিতেছিল, তখন তিনটি রেখা উৎপন্ন হইয়া তাহার ললাটদেশকে

---

(१)...कण्ठ...। (२) वक्षःस्थलेन। (३) उल्लिखिताम्बरं।
(४) क्रूरतया। (५) बद्धत्रिपताकाभ्रुकुटिकराले। (६) ललाटफलके।

जातपरिचयैरनुगच्छद्भिः (ब) श्रमवशाद्दूरविनिर्गताभिः (१) स्वभाव-पाटलतया शुष्काभिरपि हरिण-शोणितमिव क्षरन्तीभिर्जिह्वाभिरावेद्यमानखेदैः, (भ) विवृत-मुखतया स्पष्ट-दृष्ट-दन्तांशून् (२) दंष्ट्रान्तराल-(३) लग्न-केसरि-सटानिव (४) सृक्कभागानुद्वहद्भिः, (म) स्थूल-वराटक-मालिका-परिगत-कण्ठैर्महावराह-प्रहार-

---

अङ्कितं चिह्नितमिव, तथा च सति कात्यायन्यनुग्रहपात्रतया देवा अपि मातङ्गमाद्रियेरन्निति भावः। अन्योऽपि प्रभुः लोकेषु स्वकीयताज्ञापनार्थं स्वानुचरे स्वचिह्नं ददातीति द्रष्टव्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(ब) उपेति। अनुगम्यमानमिति वक्ष्यमाणाया विशेषणक्रियायाः श्वभिरिति कर्तृपदं वक्ष्यमाणं, तस्यैतानि पुंलिङ्गतृतीयान्तपदानि विशेषणानि। उपजातपरिचयैः एकत्र चिरतरावस्थानादिति भावः। अनु-गम्यमानमित्यनेनैव निर्वाहे पुनरनुगच्छद्भिरित्यभिधानेनार्थगतपुनरुक्ततादोषः, स चैतत्परिहारेणैव परिहरणीयः।

(भ) श्रमेति। श्रमवशात् अध्वगमनादिक्लान्तिवशात् दूरविनिर्गताभिः मुखादत्यन्तं बहिर्गताभिः, स्वभावपाटलतया निसर्गरक्ततया। क्षरन्तीभिरिव स्रवन्तीभिरिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आवेद्यमानः अन्येभ्यो ज्ञाप्यमानः खेदः परिश्रमो यैस्तैः।

(म) विवृतेति। विवृतमुखतया व्यात्ताननतया हेतुना, स्पष्टं व्यक्तं यथा तथा दृष्टा दन्तांशवो दन्तकिरणा येषु तान्, अतएव दंष्ट्राणां दन्तानां अन्तरालेषु मध्येषु लग्नाः संसक्ताः केशरिणां व्यापादित-सिंहानां सटा जटा येषु तानिव, सृक्कभागान् ओष्ठप्रान्तान् उद्वहद्भिः धारयद्भिः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) स्थूलेति। स्थूलानां पीनानां वराटकानां कपर्दकानां मालिकाभिर्माल्यैः परिगताः परि-वेष्टिताः कण्ठा ग्रीवा येषां तैः। महावराहाणां प्रहारेण दन्ताघातेन जर्जराः क्षतविक्षताङ्गास्तैः।

ভয়ঙ্কর করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, মাতঙ্গ অত্যন্ত ভক্তি সহকারে আরাধনা করায় স্বয়ং দুর্গাদেবী 'এই মাতঙ্গ আমার লোক' ইহা জানাইবার জন্য তাহার ললাটে ত্রিশূল-দ্বারা চিহ্ন অঙ্কিত করিয়া দিয়াছেন। (ব) চিরকালের পরিচিত কতকগুলি কুকুর মাতঙ্গের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতেছিল; (ভ) পরিশ্রমবশতঃ সেই কুকুরগুলির জিহ্বা, মুখ হইতে অনেক দূর বাহির হইয়াছিল, সেই জিহ্বাগুলি শুষ্ক থাকিলেও স্বভাবতঃ রক্তবর্ণ বলিয়া যেন, হরিণের রক্ত নিঃসরণ করিতেছিল, এবং তাহাদ্বারা সেই কুকুরগুলি নিজেদের পরিশ্রম জানাইতেছিল; (ম) কুকুরগুলির মুখ বিবৃত (হাঁ করা) থাকায় দন্তের কিরণসমূহ ওষ্ঠপ্রান্তে স্পষ্ট দেখা যাইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সিংহের জটাসমূহ দন্তের ভিতরে লাগিয়া রহিয়াছে; (য) বৃহৎ বৃহৎ কপর্দ্দকনির্ম্মিত মালাদ্বারা (কড়ির মালায়) কুকুরগণের গলদেশ পরিবেষ্টিত ছিল, আর প্রকাণ্ড শূকরগণের দন্ত-প্রহারে তাহাদের শরীর ক্ষত-বিক্ষত হইয়াছিল;

---

(१) दूरविनिर्गताभिः। (२)...दंष्ट्रांशून्। (३) दन्तान्तराल...। (४)...सटानिव।

अजर्रैः (य) अल्पकायैरपि महाशक्तित्वादनुपजात-केशरैरिव केशरिकिशोरकैः (र) मृगवधू-वैधव्य-दीक्षादान-(१) दक्षैरनेकवर्णैः श्वभिः, (ल) अतिप्रमाणाभिश्च केशरिणामभयप्रदान-याचनार्थमागताभिः सिंहीभिरिव कौलेयक-कुटुम्बिनीभिरनुगम्यमानम्, (व) कैश्चिद्गृहीत-(२) चमर-बाल-गजदन्तभारैः, (श) कैश्चिदच्छिद्र पर्ण-बद्ध-मधुपुटैः, (ष) कैश्चिन्मृगपतिभिरिव गज-(३) कुम्भ-मुक्ताफल-निकर-सनाथ-पाणिभिः (स) कैश्चिद्यातुधानैरिव गृहीतपिशितभारैः (४) (ह)

(र) अल्पेति। अल्पकायैरपि क्षुद्रदेहैरपि महाशक्तित्वात् तीव्रविक्रमशालित्वात् अनुपजातकेशरैः अनुत्पन्नजटैः केशरिकिशोरकैः सिंहशावकैरिव। अत्रोपमालङ्कारः।

(ल) मृगेति। मृगवधूनां हरिणीनां वैधव्यदीक्षादाने वैधव्यव्रतग्राहणे दक्षा निपुणास्तैः, हरिणसंहारे परमनिपुणैरित्यर्थः। श्वभिः कुक्कुरैः।

(व) अतीति। अतिप्रमाणाभिः विशालशरीराभिः, केशरिणां सिंहानां यदभयप्रदानं तस्य याचनार्थं मातङ्गसमीपे प्रार्थनार्थं। कौलेयककुटुम्बिनीभिः कुक्कुरवनिताभिः कुक्कुरीभिश्च अनुगम्यमानं। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(श) कैश्चिदिति। इतःप्रभृतीनि तृतीयान्तपदानि परिवृतमिति वक्ष्यमाणक्रियायाः कर्त्तृभूतस्य शबरवृन्दैरित्यस्य विशेषणानि। गृहीता धृताः चमराणां चमरमृगाणां बालाः पुच्छलोमानि गजदन्तानां भाराः समूहाश्च यैस्तैः।

(ष) कैश्चिदिति। अच्छिद्रपर्णैः छिद्ररहितवृक्षपत्रैः बद्धानि निर्म्मितानि मधुपुटानि मधुरक्षणार्थं सम्पुटकानि यैस्तैः, तद्ग्राहिभिरित्यर्थः।

(स) कैश्चिदिति। मृगपतिभिः सिंहैरिव गजकुम्भमुक्ताफलानां निकरेण समूहेन सनाथाः संयुक्ताः पाणयो येषां तैः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ह) कैश्चिदिति। यातुधानै राक्षसैरिव गृहीतौ धृतः पिशितभारो मांसभारो यैस्तैः। पूर्णोपमा।

(র) কুকুরগণের শরীর, অপেক্ষাকৃত ক্ষুদ্র হইলেও মহাবলবান্ বলিয়া তাহাদিগকে জটাবিহীন সিংহশাবকসমূহের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ল) আর সেই কুকুরগণ হরিণীদিগকে বৈধব্যব্রত গ্রহণ করাইতে দক্ষ ও নানাবর্ণ-বিশিষ্ট ছিল। (ব) মাতঙ্গের নিকটে সিংহদিগের অভয় প্রার্থনা করিবার নিমিত্ত আগত সিংহীগণের ন্যায় বৃহৎ বৃহৎ কতকগুলি কুকুরীও মাতঙ্গের অনুগমন করিতেছিল। (শ) অসংখ্য কিরাতসৈন্য মাতঙ্গকে পরিবেষ্টন করিয়া গমন করিতেছিল; তাহাদের মধ্যে কতকগুলি চমরমৃগের লোম ও হস্তিদন্ত লইয়া চলিতেছিল; (ষ) কতকগুলি, মধু রাখিবার জন্য ছিদ্রবিহীন পত্রদ্বারা নির্ম্মিত পুটক (ঠোঙা) লইয়া যাইতেছিল; (স) কতকগুলি, সিংহের ন্যায়, হস্তে বহুতর গজমুক্তা গ্রহণ করিয়া গমন করিতেছিল; (হ) কতকগুলি রাক্ষসের ন্যায় মাংসভার বহন করিয়া, (ক্ষ, কতকগুলি প্রমথগণের ন্যায় সিংহচর্ম্ম ধারণ করিয়া,

(१)...वैधव्यदानदक्षैः। (२) आगृहीत...। (३) विभिन्नगज...। (४)...पिशिताहारैः।

केचित्प्रमथैरिव वैयाघ्रकृत्तिधारिभिः, (अ) केचित् क्षपणकैरिव मयूर-पिच्छ-वाहिभिः, (१) (क) केचिच्छिशुभिरिव काकपक्षधरैः, (ख) केचित् कृष्ण-चरितमिव दर्शयद्भिः समुत्खात-विधृत-गजदन्तैः, (ग) केचिज्जलदागम-दिवसैरिव जलधरच्छाया-मलिनाम्बरैः, (२) (घ) अनेकवृत्तान्तैः शबरवृन्दैः परिवृतम्, (ङ) अरण्यमिव सखड्गधेनुकम्, (च) अभिनव-जलधरमिव मयूर-

---

(अ) केचिदिति। प्रमथैः शिवपारिषदैरिव, वैयाघ्रकृत्तिधारिभिः हस्ते परिधाने च सिंहचर्मग्राहिभिः। पूर्णोपमा। तथा प्रमथानां व्याघ्रचर्मधारित्वस्यैव प्रसिद्धत्वादत्र वैयाघ्रकृत्तिधारित्वाभिधानात् ख्यातिविरुद्धता-दोषः, स च व्याघ्रकृत्तिधारिभिरिति पाठेनैव समाधेयः।

(क) केचिदिति। क्षपणकैर्दिगम्बरैर्बौद्धसंन्यासिभिरिव, मयूराणां पिच्छानि पुच्छानि वहन्तीति तैः, बौद्धानां तद्धारणाचारात् किरातानान्तु तत्संग्रहाभिलाषादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ख) केचिदिति। शिशुभिर्बालकैरिव, काकानां वायसानां पक्षान् पतत्राणि, काकपक्षान् शिखण्डकांश्च धरन्तीति तैः। बाल्ये बालकानां शिखण्डकधारणाचारात् किरातानाञ्च तदानीं निहतकाकपक्षधारणात् साम्यं। पूर्णोपमा। "काकपक्षः शिखण्डकः" इत्यमरः।

(ग) केचिदिति। समुत्खाता आदावुत्पाटिताः विधृता अनन्तरञ्च गृहीताः गजदन्ता यैस्तैः, गजदन्तानुत्पाट्य गृहीतवद्भिरित्यर्थः, अतएव कृष्णचरितं देवकीनन्दनस्य व्यवहारं दर्शयद्भिरिव। सोऽपि खलमनाथ कंसादिष्टहस्तिपकप्रेरितं कुवलयापीड़नामानं हस्तिनं विजयमानस्तदीयदन्तमुत्पाट्य गृहीतवान् परञ्च तेनैव तं हस्तिनं हस्तिपकञ्च निजघानेति श्रीमद्भागवतवार्त्ता। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) केचिदिति। जलदागमदिवसैर्मेघोत्पत्तिसम्बन्धिदिनैरिव, जलधरच्छायावत् नूतनमेघकान्तिवत् मलिनानि अम्बराणि वसनानि येषां तैः, अन्यत्र तु जलधरच्छायया मलिनमम्बरमाकाशं येषु तैः। पूर्णोपमा।

(ङ) अनेकेति। अनेके नानाविधाः वृत्तान्ता व्यवहारा येषां तैः, शबरवृन्दैः किरातगणैः परिवृतं परिवेष्टितम्।

(च) अरण्यमिति। अरण्यमिव वनमिव, खड्गधेनुकया छुरिकया सहितं तं, अन्यत्र तु खड्गैर्गण्डकैः धेनुकाभिर्वन्यहस्तिनीभिश्च सहितं तत्। पूर्णोपमा। "छुरिका चासिधेनुका" "धेनुका तु करेणुश्च" इति चामरः।

(ক) কতকগুলি বৌদ্ধদিগের ন্যায় ময়ূরপুচ্ছ বহন করিয়া, (খ) আর কতকগুলি জুলপীধারী বালকগণের ন্যায় কাকের পক্ষ লইয়া যাইতেছিল; (গ) কতকগুলি সৈন্য হস্তীর দন্ত উৎপাটনপূর্ব্বক তাহা ধারণ করিয়া যেন কৃষ্ণের চরিত্র দেখাইয়া যাইতেছিল; (ঘ) আর কতকগুলি সৈন্য বর্ষার দিনে মেঘাচ্ছন্ন আকাশের ন্যায় মলিন বসন পরিধান করিয়া চলিয়াছিল; (ঙ) সেই কিরাতগণ সকলেই মাতঙ্গকে পরিবেষ্টনপূর্ব্বক নানাবিধ ভাবভঙ্গী করিয়া যাইতেছিল। (চ) অরণ্যে যেমন গণ্ডার ও হস্তিনী থাকে, মাতঙ্গের নিকটেও তেমন ছুরী ছিল; (ছ) নূতন মেঘ যেমন ময়ূরপুচ্ছের ন্যায় নানাবর্ণের ইন্দ্রধনু ধারণ করে, মাতঙ্গও তেমন ময়ূরপুচ্ছের ন্যায়

---

(१)...धारिभिः। (२)...मलिनैरम्बरैः।

पिच्छ-चित्र-चाप-धारिणम्, (छ) वक-राक्षसमिव गृहीतैकचक्रम्, (ज) अरुणानुजमिवोद्धृतानेक-महानाग-दशनम्, (झ) भीष्ममिव शिखण्डि-शत्रुम् (ञ) निदाघदिवसमिव सततविर्भूत-मृगतृष्णम्, (ट) विद्याधरमिव मानसवेगम्, (ठ)

(छ) अभीति। अभिनवजलधरं नूतनमेघमिव, मयूरपिच्छवत् चित्रं नानावर्णं चापं धनुः शक्र-धनुश्च धारयितुं शीलं यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ज) वकेति। वकराक्षसमिव, गृहीतं एकं चक्रं अस्त्रविशेषो येन तम्, पक्षे गृहीता निवासाया-वलम्बिता एकचक्रा तदाख्या पुरी येन तम्। पूर्णोपमा। पुरा किल वकनामा राक्षस एकचक्रायां पुरि नरसंहारेण महान्तमुपद्रवमकरोत्। किन्तु तत्प्रतीकाराक्षमस्तत्रत्यो राजा प्रत्यहमेकैकनरोपहारदाननियमं विधाय तं तस्मादनर्थान्निवर्त्तयामास; कदाचिद्दह्यमानजतुगृहतः पलायितानां युधिष्ठिरादीनामाश्रयदातु-र्ब्राह्मणस्य वारे समुपस्थिते तमेकान्तमाकुलमवलोक्य कुन्ती स्वकीयमेकं पुत्रं दातुमङ्गीकृत्य राक्षसोपहाराय भीमसेनं प्रेरयामास; भीमस्तु गत्वा वकराक्षसं निजघानेति महाभारतवार्त्ता।

(झ) अरुणेति। अरुणानुजं गरुडमिव, उद्धृता उत्पाटिताः महानागानां विशालहस्तिनां अन्यत्र तु बृहत्सर्पाणां दशना दन्ता येन तम्। अथवा गरुडपक्षे उद्धृतान् गर्त्तादुत्तोलितान् अनेकान् महानागान् बृहत्सर्पान् दशति चञ्चुपुटेन दष्ट्वा खादतीति तं। एतत्पक्षे "कृत्ययुटोऽन्यत्रापी"ति कर्त्तरि युट्। पूर्णोपमा।

(ञ) भीष्ममिति। भीष्मं गाङ्गेयमिव, शिखण्डिनां मयूराणां शत्रुं चिराय निहन्तारं, अन्यत्र तु शिखण्डिनस्तदाख्यस्य द्रुपदराजपुत्रस्य शत्रुं चिरवैरिणम्। पूर्णोपमा। पुरा किल भीष्मेनापहृता काशीराजकन्या अम्बालिका स्वपाणिग्रहणप्रत्याख्यानात् भीष्मवधार्थमेव प्राणान् परित्यज्य शिखण्डिनी नाम द्रुपदस्य कन्या भूत्वा परं यक्षस्य पुंस्त्वग्रहणेन शिखण्डीति नाम्ना ख्याता बभूव। विस्तरस्तु महाभारतेऽनुसन्धेयः।

(ट) निदाघेति। निदाघदिवसमिव ग्रीष्मदिनमिव, सततं आविर्भूता उत्पन्ना मृगेषु तद्वधेष्वित्यर्थः तृष्णा इच्छा यस्य तम्, अन्यत्र तु, सततमाविर्भूता मृगतृष्णा मरीचिका सूर्य्यकिरणेषु जलभ्रान्तिर्यत्र तम्। पूर्णोपमा।

(ठ) विद्येति। विद्याधरं देवयोनिविशेषमिव, मानेन बलगर्व्वेण सवेगं वेगवन्तं, अथवा मानसवत् मनोवत् वेगो यस्य तम्, पक्षान्तरे तु मानसे मानससरोवरे वेगः अवगाहनादिनिमित्तं वेगेन गमनं यस्य तम्। पूर्णोपमा। मानसवेगमिति पदावृत्तिभिया मानसवेगनामानं विद्याधरमिवेति व्याख्यान्तरमुपेक्षितम्।

নানাবর্ণ-রঞ্জিত একখানা ধনু ধারণ করিয়াছিল। (জ) একচক্রাপুরীস্থিত বকরাক্ষসের ন্যায় ভয়ঙ্কর সেই মাতঙ্গ একটি চক্র ধারণ করিয়াছিল, (ঝ) গরুড় যেমন অনেক সর্পের দন্ত উৎপাটন করিয়াছিল, মাতঙ্গও তেমন বহুতর হস্তীর দন্ত উৎপাটন করিয়াছিল; (ঞ) ভীষ্ম যেমন শিখণ্ডীর শত্রু ছিলেন, মাতঙ্গও তেমন ময়ূরের শত্রু ছিল; (ট) গ্রীষ্মের দিনে যেমন সর্ব্বদা মৃগতৃষ্ণা (সূর্য্যকিরণে জলভ্রম) উপস্থিত হয়, মাতঙ্গেরও তেমন সর্ব্বদা হরিণবধের ইচ্ছা উপস্থিত হইত; (ঠ) বিদ্যাধর যেমন মানসসরোবরে বেগে গমন করে, মাতঙ্গও তেমন বলগর্ব্বে

पराशरमिव (१) योजनगन्धानुसारिणम्, (ड) घटोत्कचमिव भीमरूप-धारिणम्, (ढ) अचलराज-कन्यका-केशपाशमिव नीलकण्ठ-चन्द्रकाभरणम्, (ण) हिरण्याक्ष-(२) दानवमिव महावराह-दंष्ट्रा-विभिन्न-वक्षःस्थलम्, (त) अतिरागिणमिव क्षत-बहु-बन्दि-(३) परिग्रहम्, (थ) पिशिताशनमिव रक्त-

---

(ड) परेति। पराशरं तदाख्यं मुनिमिव, योजनं योजनव्यापी गन्धोऽस्यास्तीति योजनगन्धः कस्तूरीमृगः अर्शआदित्वादच्, तमनुसरतीति तम्, पक्षे योजनगन्धां तदाख्यां दासकन्यामनुसरतीति तम्। कदाचित् पराशरः परमरूपवतीं सत्यवतीं नाम दासकन्यामवलोक्य मदनातुरस्तस्यां रेमे, इति महाभारतवार्त्ता। पूर्णोपमा।

(ढ) घटोत्कचमिति। हिडिम्बायां भीमसेनाज्जातो घटोत्कचस्तमिव, भीमं भयङ्करं, पक्षे "आत्मच्छायावद् सुत"मिति श्रुतेः भीमं भीमसेनसदृशं रूपं धारयितुं शीलं यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ण) अचलेति। अचलराजकन्यायाः पार्वत्याः केशपाशमिव, नीलकण्ठानां मयूराणां चन्द्रका मेचका एवाभरणानि भूषणानि यस्य तं, पक्षे नीलकण्ठस्य शिवस्य चन्द्र एव चन्द्रकः ललाटस्थो विधुरेव आभरणं यस्य तम्, तयोरर्द्धनारीरूपत्वादेकस्य शिरश्चन्द्रभूषणेनैवोभयोरपि शिरश्चन्द्रभूषणकत्वमिति भावः। पूर्णोपमा।

(त) हिरण्याक्षेति। हिरण्याक्षदानवं हिरण्यकशिपुभ्रातरमिव, महाशराहैः वृहत्शूकरैः दंष्ट्राभिर्दन्तैः करणैर्विभिन्नं विशेषेण क्षतं वक्षःस्थलं यस्य तम्, पक्षान्तरे तु महावराहेण नारायणस्य तृतीयावतारेण दंष्ट्रया विभिन्नं विदारितं वक्षःस्थलं यस्य तम्। पूर्णोपमा। पुरा किल भगवान्नारायणो वराहरूपं दधानः प्रलयजलधिमग्नं धरणीमण्डलमुद्धृत्य गिरिगुहायामवतिष्ठमानो मृगयार्थं गच्छता हिरण्याक्षेण दृष्टो गदया ताडितश्च, ततोऽसौ दंष्ट्रया हिरण्याक्षवक्षो विदार्य्य तं निहतवानिति हरिवंशवार्त्ता।

(थ) अतीति। अतिरागिणमिव एकान्तविषयासक्तं धनिनमिव, क्षतो बहूनां वन्दीनां प्रसभमपहृत-स्त्रीणां परिग्रहः भार्य्यात्वेन स्वीकारो येन तं, अन्यत्र तु क्षतो बहूनां वन्दिनां स्तुतिपाठकानां परिग्रहः संग्रहो येन तम्। पूर्णोपमा।

বেগে গমন করিতেছিল; (ড) পরাশরমুনি যেমন যোজনগন্ধানামে ধীবরকন্যার অনুসরণ করিয়াছিলেন, মাতঙ্গও তেমন কস্তূরীমৃগের অনুসরণ করিতেছিল; (ঢ) ঘটোৎকচ যেরূপ নিজপিতা ভীমের মত রূপ ধারণ করিয়াছিল, মাতঙ্গও সেইরূপ ভয়ঙ্কর রূপ ধারণ করিয়াছিল; (ণ) পার্ব্বতীর কেশকলাপ যেমন মহাদেবের মস্তকস্থিত চন্দ্রদ্বারা ভূষিত হইয়া থাকে, মাতঙ্গও তেমন ময়ূরপুচ্ছস্থ চন্দ্রাকৃতি চিহ্নদ্বারা ভূষিত হইয়াছিল, (ত) নারায়ণের তৃতীয় অবতার আদিবরাহ যেমন দন্তদ্বারা হিরণ্যাক্ষদানবের হৃদয় বিদারণ করিয়াছিল, বৃহৎ বৃহৎ বরাহ, দন্তদ্বারা মাতঙ্গেরও তেমন বক্ষোদেশ ক্ষত-বিক্ষত করিয়াছিল; (থ) অত্যন্ত বিষয়াসক্ত ধনী যেমন স্তুতিপাঠক লোক সংগ্রহ করে, মাতঙ্গও তেমন বলক্রমে আনীত পরস্ত্রীদিগকে

---

(१) पराशरमिव। (२) हिरण्याक्ष...। (३)...बन्दी...।

लुब्धकाम्, (द) गीतकला-विलास-(१) मिव निषादानुगतम्, (ध) अम्बिका-त्रिशूल-मिव महिष-रुधिरार्द्र-कायम्, (न) अभिनवयौवनमपि क्षपित-(२) बहु-वयसम्, (प) कृत-सारमेय-संग्रहमपि फलमूलाशिनं, (३) (फ) कृष्णमप्यसु-दर्शनं, (ब) स्वच्छन्दप्रचारमपि दुर्गैकशरणम्, (भ) क्षितिभृत्-पादानुवर्त्तिनमपि

(द) पिशितेति। पिशिताशनं मांसभोजिनं राक्षसमिव, रक्ता अनुरक्ता लुब्धा व्याधा यस्मिन् तम्, अन्यत्र तु रक्ते रुधिरे लुब्धकं सस्पृहम्। पूर्णोपमा।

(ध) गीतेति। गीतकलाविलासमिव गानविद्याव्यापारमिव, निषादैश्चाण्डालैः निषादेन तदाख्यस्वरभेदेन च अनुगतमनुसृतम्। पूर्णोपमा।

(न) अम्बिकेति। अम्बिकाया दुर्गायाः त्रिशूलं त्रिशूलास्त्रमिव, महिषाणां महिषासुरस्य च रुधिरेण आर्द्रः क्लिन्नः कायो देहो यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(प) अभीति। क्षपितानि अतिवाहितानि बहूनि वयांसि यौवनप्रौढ़ादीनि येन तमिति विरोधः, क्षपितानि नाशितानि बहूनि वयांसि पक्षिणो येन तमिति तत्परिहारः। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः। "खगबाल्यादिनोर्वयः" इत्यमरः।

(फ) कृतेति। कृतः साराणां धनानां मेयानां परिमातुं शक्यानां धान्यादीनाञ्च संग्रहो येन तं तथाभूतमपि फलमूलाशिनमिति विरोधः, कृतः सारमेयाणां कुक्कुराणां संग्रहो येन तमिति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(ब) कृष्णमिति। कृष्णं विष्णुमपि असुदर्शनं सुदर्शनचक्ररहितमिति विरोधः, कृष्णं कालवर्णं अतएव असुदर्शनं सुदृश्यतारहितमिति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(भ) स्वच्छन्देति। स्वच्छन्देन निजाभिप्रायेण स्वेच्छया प्रचारो विचरणं यस्य तं तादृशमपि दुर्गं

भार्य्यारূপে সংগ্রহ করিয়াছিল; (দ) রাক্ষস যেমন রুধিরের প্রতি অনুরক্ত থাকে, ব্যাধগণও তেমন মাতঙ্গের প্রতি অনুরক্ত ছিল; (ধ) নিষাদনামে স্বর যেমন গানের সঙ্গে সঙ্গে চলে, চণ্ডালগণও তেমন মাতঙ্গের সঙ্গে সঙ্গে চলিয়াছিল; (ন) দুর্গার ত্রিশূল যেমন মহিষাসুরের রুধিরে আর্দ্র হইয়াছিল, মাতঙ্গের শরীরও তেমন মহিষের রুধিরে আর্দ্র হইয়াছিল; (প) সে নবযুবা হইয়াও বহুতর বয়স অতিবাহিত করিয়াছিল (সমাধানপক্ষে—বহুতর পক্ষী বিনাশ করিয়াছিল); (ফ) ধনধান্য সংগ্রহ করিয়াও ফল-মূল ভক্ষণ করিত, (সমাধানপক্ষে-কতক-গুলি কুকুর রাখিয়াছিল ও ফলমূল ভক্ষণ করিত); (ব) সে কৃষ্ণ হইয়াও সুদর্শনচক্রবিহীন ছিল; (সমাধানপক্ষে—ঘোর কৃষ্ণবর্ণ বলিয়া সুদৃশ্য ছিল না); (ভ) সে ইচ্ছানুসারে চলিতে পারিয়াও একমাত্র দুর্গ আশ্রয় করিয়াছিল; (সমাধানপক্ষে—একমাত্র দুর্গাদেবীর শরণ লইয়া-

(१)...विन्यासमिव। (२) क्षयित...। (३) फलमूलाशनं, फलाशिनम्।

রাজ-সেবানভিজ্ঞম্, (ম) অপত্যমিব বিন্ধ্যাচলস্য, অংশাবতারমিব কৃতান্তস্য, সহোদরমিব পাপস্য, সারথিমিব (১) কলিকালস্য, ভীষণমপি মহাসত্ত্বতয়া গম্ভীরমিবোপলক্ষ্যমাণম, (য) অনভিভবনীয়াকৃতিং, (২) মাতঙ্গনামানং (৩) প্রবরসেনাপতিমপশ্যম্। অভিধানন্তু তস্য (৪) পশ্চাদহমশ্রৌষম্। (র)

আসীচ্চ মে মনসি—'অহো মোহপ্রায়মেষাং (৫) জীবিতং, সাধুজন-বিগর্হিতঞ্চ (৬) চরিতম্। তথাহি পুরুষ-পিশিতোপহারে ধর্ম্মবুদ্ধিঃ, আহারঃ সাধু-

---

দুর্গমং পুরং একং অদ্বিতীয়ং শরণং আশ্রয়ো যস্য তমিতি বিরোধঃ, দুর্গা দেবী একমদ্বিতীয়ং শরণং রক্ষিকা যস্য তমিতি তৎসমাধানম্। বিরোধাভাসঃ।

(ম) ক্ষিতীতি। ক্ষিতিভৃতো রাজ্ঞঃ পাদানুবর্ত্তিনমপি চরণসেবিনমপি রাজসেবানভিজ্ঞমিতি বিরোধঃ, ক্ষিতিভৃতঃ পর্ব্বতস্য পাদে প্রত্যন্তপর্ব্বতে অনুবর্ত্ততে অবতিষ্ঠত ইতি তমিতি তৎসমাধানম্। বিরোধাভাসোঽলঙ্কারঃ।

(য) অপত্যমিতি। বিন্ধ্যাচলস্য অপত্যং সন্তানমিব নিতান্তকঠিনাঙ্গত্বাৎ, কৃতান্তস্য যমস্য অংশাবতারমিব সর্ব্বদা প্রাণিসংহারাৎ, পাপস্য সহোদরমিব প্রাণিনামতীবযাতনাকারিত্বাৎ, কলিকালস্য সারথিমিব সততপাপার্জ্জনেন পরিচালকত্বাৎ। এষু প্রত্যেকং জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। ভীষণমপি তৃণক্ষেপাদি-তুচ্ছব্যবহারেণ ক্ষুদ্রপ্রাণিনাং ভয়জননাচ্চপলস্বভাবমপীত্যর্থঃ মহাসত্ত্বতয়া প্রবলাধ্যবসায়শীলতয়া গম্ভীরমিব ধীরমিব উপলক্ষ্যমাণং পরৈরবলোক্যমানম্। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(র) অনভীতি। অনভিভবনীয়াকৃতিং অপরাজয্যমূর্ত্তিং নিতান্তদৃঢ়তয়া দুর্দ্ধর্ষত্বাদিতি ভাবঃ। ননু দর্শনমাত্র এব কথং মাতঙ্গেতি নামজ্ঞানমিত্যাহ অভিধানন্ত্বিতি। অভিধানং নাম। অশ্রৌষমনুচরমুখাদিতি শেষঃ। সুতরামিদানীং মাতঙ্গনামানমিত্যুক্তৌ নানুপপত্তিরিতি ভাবঃ।

(ল) আসীদিতি। আসীৎ ঈদৃশী বৃত্তিরিতি শেষঃ। মোহপ্রায়ং অজ্ঞানবহুলম্। কদাচিচ্চণ্ডিকা-পূজাদৌ সাত্ত্বিকভাবেনাপি প্রবৃত্তিদর্শনেন কিঞ্চিজ্‌জ্ঞানসত্তানুমানাৎ প্রায়পদাভিধানম্। পুরুষপিশিতোপহারে

ছিল); (ম) রাজার চরণের অনুবর্ত্তী হইয়াও সে, রাজসেবা জানিত না, (সমাধানপক্ষে—সর্ব্বদা পর্ব্বতের পাদদেশে অবস্থান করায় অশিক্ষিত বলিয়া রাজসেবা জানিত না); (য) মাতঙ্গ, বিন্ধ্যাচলের যেন সন্তান, যমের যেন অংশাবতার, পাপের যেন সহোদর এবং কলিযুগের যেন সারথি ছিল; আর ভয়ঙ্কর চঞ্চলস্বভাব হইলেও অত্যন্ত অধ্যবসায়শীল বলিয়া তাহাকে ধীর-প্রকৃতির ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (র) এবং তাহার আকৃতিও অত্যন্ত দুর্দ্ধর্ষ ছিল। কিন্তু তাহার নাম আমি পরে শুনিয়াছিলাম।

(ল) তাহাদিগকে দেখিয়া আমার মনে হইতে লাগিল যে—'কি আশ্চর্য্য! ইহাদের জীবনে প্রচুরপরিমাণেই অজ্ঞান এবং চরিত্রও সাধুজননিন্দিত'; তাহার কারণ—কালীর

---

(১) সারমিব। (২) অনভিভবাকৃতিং। (৩) মাতঙ্গকনামানং। (৪) ক্বচিৎ 'তস্য' ইতি পদং নাস্তি। (৫) ঘোরপ্রায়ং, মোহপ্রাজ্যং, এতেষাং। (৬)...নির্বাহিতং।

জনবিগর্হিতো (১) মধুমাংসাদিঃ, শ্রমো মৃগয়া, শাস্ত্রং (২) শিবারুতম্, উপদেষ্টারঃ (৩) সদসতাং কৌশিকাঃ, প্রজ্ঞা শকুনিজ্ঞানম্, পরিচিতাঃ শ্বানঃ, রাজ্যং শূন্যাটবীষু, (৪) আপানকমুত্সবঃ, মিত্রাণি ক্রূরকর্ম্মসাধনানি ধনূংষি, (৫) সহায়া বিষদিগ্ধ-(৬) মুখা ভুজঙ্গা ইব (৭) সায়কাঃ, গীতমুত্সাদকারি (৮) মুগ্ধমৃগাণাম্, কলত্রাণি বন্দি-(৯) গৃহীতাঃ পরযোষিতঃ, ক্রূরাত্মভিঃ শার্দূলৈঃ

চণ্ডিকায়ৈ নরমাংসনিবেদনে ধর্ম্মবুদ্ধিঃ অয়ং ধর্ম্ম ইতি জ্ঞানং। বস্তুতস্তু "মা হিংস্যাৎ সর্ব্বা ভূতানী"তি শ্রুতের্নরবলিদানমধর্ম্ম এবেতি ভাবঃ। আক্রিয়ত ইত্যাহারঃ খাদ্যং। মধুমাংসাদিঃ মদ্যমাংসাদিঃ। আদিপদেন মত্স্যাদীনাং ভগবদ্গীতোক্ততামসাহার্য্যাণাং বা গ্রহণম্। তথা চ "মদ্যমদেয়মপেয়মনির্গ্রাহ্য"মিত্যুশনোবচনাৎ "যো যস্য মাংসমশ্নাতি স তন্মাংসাদ উচ্যতে। মত্স্যাদঃ সর্ব্বমাংসাদস্তস্মান্মত্স্যান্ বিবর্জ্জয়েৎ।" ইতি মনুবচনাচ্চ মদ্যমাংসাদ্যাহারঃ সাধুজনবিগর্হিত ইতি ভাবঃ। শ্রমো ব্যায়ামঃ মৃগয়া পশুহিংসা। হিংসাস্বভাবত্বাদেবাস্য নিন্দিতত্বমিতি ভাবঃ। শাস্ত্রং শাস্ত্রপাঠঃ শিবারুতং শৃগালধ্বনিঃ। শিবারুতেতরশাস্ত্রপাঠাভাবাৎ তস্য চামঙ্গলব্যঞ্জকত্বাদ্গর্হিতত্বমিতি ভাবঃ। অত্র শাস্ত্রপাঠে শিবারুতত্বারোপস্য প্রকৃতগর্হিতচরিত্রবর্ণনোপযোগিতয়া তুল্যাধিকরণঃ পরিণামালঙ্কারঃ। সদসতাং বিষয়াণাং উপদেষ্টার উপদেশকাঃ কৌশিকাঃ পেচকপক্ষিণঃ। নিদ্রিতবায়সান্ প্রতি পেচকানামাক্রমণদর্শনেনৈতেষামপি প্রায়েণ নিদ্রিতপশূন্ প্রত্যেবাক্রমণাদিতি ভাবঃ। প্রজ্ঞা জ্ঞানং শকুনিজ্ঞানং শাকুনশাস্ত্রীয়ক্রিয়দংশজ্ঞানং পক্ষিরবমাকর্ণ্য মৃগয়ায়া এব শুভাশুভনিরূপণমিত্যর্থঃ। তদতিরিক্তবিষয়ে প্রসারাভাবাদস্যা অপি গর্হিতত্বমিত্যাশয়ঃ। শ্বানঃ কুক্কুরাঃ। রাজ্যং রাজত্বং শূন্যাটবীষু মনুষ্যবিহীনারণ্যেষু। উত্সব আনন্দব্যাপারঃ, আপানকং মদ্যপানগোষ্ঠী। মিত্রাণি সখীনি, ক্রূরকর্ম্মসাধনানি হিংসাপ্রয়োজকানি ধনূংষি কার্ম্মুকাণি। সহায়াঃ সাহায্যকরাঃ, ভুজঙ্গাঃ সর্পা ইব বিষেণ দিগ্ধমুখা লিপ্তমুখাঃ সায়কাঃ শরাঃ। এতেষামাশয়াঃ সুগমাঃ সমুন্নেয়াঃ। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ। গীতং গানং মুগ্ধমৃগাণাং মূঢ়হরিণানাং উত্সাদকারি ধ্বংসসাধকম্ রবমাত্রমিত্যর্থঃ। যদা হি হরিণা এতেষাং গীতমাকর্ণ্য নিস্পন্দাস্তিষ্ঠন্তি তদৈবৈতে তান্ ব্যাপাদয়ন্তীতি গীতস্যৈব তেষাং ধ্বংস-

---

উদ্দেশে নর-মাংস নিবেদনকে ইহারা ধর্ম্ম বলিয়া জ্ঞান করে; সাধুজন-নিন্দিত মদ্যমাংসাদি ইহাদের খাদ্য; ব্যায়াম হইল পশুহিংসা করা, শাস্ত্রপাঠ হইল শৃগালের রব, সৎ ও অসৎ বিষয়ের উপদেশক হইল পেচকপক্ষী, জ্ঞান হইল পক্ষীর রব শুনিয়া মৃগয়ার শুভাশুভ নিরূপণ করা, পরিচিত হইল কুকুর, রাজত্ব হইল মনুষ্যবিহীন বনে, উৎসব হইল দশজনে মিলিয়া মদ্যপান করা, মিত্র হইল হিংসার সাধক ধনু, সহায় হইল সর্পের ন্যায় বিষযুক্তমুখ বাণ, গান হইল মূঢ় হরিণগণের ধ্বংসজনক একটা রব মাত্র, ভার্য্যা হইল বলক্রমে আনীত পরস্ত্রী, বাস হইল হিংস্রস্বভাব ব্যাঘ্রগণের সহিত, দেবতাপূজা হইল পশুরক্তদ্বারা, বলি-বৈশ্বদেব কর্ম্ম হইল মাংসদ্বারা,

---

(১)...নিন্দিতঃ, গর্হিতঃ। (২) শাস্ত্রে। (৩) সমুপদেষ্টারঃ। (৪) শূন্যাস্বটবীষু। (৫) মিত্রাণি ক্রূরকর্ম্মাণি, ধনং ধনূংষি। (৬)...দগ্ধ...। (৭) ভুজঙ্গমা ইব। (৮) উত্সাহকারি। (৯) বন্দী...।

सह संवासः, पशु-रुधिरेण (१) देवतार्च्चनम्, मांसेन बलिकर्म्म, चौर्य्येण जीवनम्, (२) भूषणानि भुजङ्ग-मणयः, (३) वनगज-(४) मदैरङ्गरागः, (ल) यस्मिन्नेव कानने निवसन्ति, तदेवोत्खातमूलमशेषतः कुर्वन्ति, (५)। (व)

इति चिन्तयत्येव मयि स शवर-सेनापतिरटवीपरिभ्रमण-समुद्भवं श्रम-(६) मपनिनीषुरागत्य तस्यैव शाल्मलीतरोरधश्छायाया-(७) मवतारित-कोदण्ड-स्त्वरित-परिजनोपनीत-पल्लवासने (८) समुपाविशत्। (श)

अन्यतमस्तु (९) शवरयुवा ससम्भ्रममवतीर्य्य तस्मात् करयुगल-परिक्षोभिताम्भसः सरसो वैदुर्य्यद्रवानुकारि प्रलय-दिवसकर-किरणोपतापादम्बरैकदेशमिव

साधकत्वाद्गर्हितत्वमित्यभिप्रायः। कलत्राणि भार्य्याः, वन्दिग्टहीताः बन्दीभावेन स्वीकृताः प्रसभमपहृताः परयोषितः। क्रूरात्मभिः हिंस्रस्वभावैः। बलिकर्म्म पञ्चमहायज्ञान्तर्गतभूतयज्ञः। चौर्य्येण चौर्य्यलब्धधनेन जीवनं जीविकानिर्वाहः। अङ्गरागोऽङ्गलेपनं। अतएव मोहप्रायमेषां जीवितं साधुजनविगर्हितञ्च चरितमिति भावः।

(व) यस्मिन्निति। अशेषतः समग्रम्। "सर्वविभक्तिभ्यस्तस् वक्तव्य" इति द्वितीयान्तात्तस्। अत एवामी नितान्तकृतघ्ना अपीति भावः।

(श) इतीति। अटवीपरिभ्रमणसमुद्भवं अरण्यपर्य्यटनजातं। अपनेतुं दूरीकर्त्तुमिच्छुरित्यपनिनीषुः। अवतारितं स्कन्धान्नामितं कोदण्डं धनुर्येन सः। त्वरितेन त्वरावता परिजनेन परिचारकेन उपनीतमानीतं यत् पल्लवासनं तस्मिन्।

(ष) अन्येति। ससम्भ्रमं सत्वरं अवतीर्य्य पम्पामिति शेषः। करयुगलेन परिक्षोभितं तृणाद्यपसारणार्थमालोडितं अम्भो जलं यस्य तस्मात्, सरसः पम्पासरोवरात् कमलिनीपत्रपुटेन अम्भो मृणालिकाश्च समुपाहरदित्यन्वयः। क्लीवलिङ्गद्वितीयान्तपदान्यम्भसो विशेषणानि। वैदूर्य्यस्य मणेर्द्रवं गलितभागं अनुकरोतीति तत्, उज्ज्वलत्वादिति भावः। प्रलये कल्पान्तकाले दिवसकरस्य प्रचण्डसूर्य्यस्य किरणैरुपतापात्

জীবিকানির্ব্বাহ হইল চৌর্য্যধনদ্বারা, অলঙ্কার হইল সর্পের মণি, আর অঙ্গরাগ হইল বন্য হস্তীর মদজল দ্বারা। (ব) ইহারা যে বনেই বাস করে, সেই বনেরই সমস্ত মূল উৎখাত করে।'

(শ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম, এই সময়েই সেই কিরাত-সেনাপতি মাতঙ্গ, বনপর্য্যটনের পরিশ্রম দূর করিবার জন্য আসিয়া সেই শাল্মলী বৃক্ষেরই নীচে ছায়াতে, স্কন্ধ হইতে ধনু নামাইয়া কোন পরিজন কর্ত্তৃক আনীত পল্লবাসনে উপবেশন করিল।

(ষ) তখন কোন তরুণবয়স্ক ব্যাধ সত্বর পম্পাসরোবরে নামিয়া হস্তযুগলদ্বারা জল আলোড়নপূর্ব্বক পদ্মপত্রের পুটকে (ঠোঙায়) করিয়া সেই সরোবর হইতে কতকটুকু জল আর

---

(१) पशुरुधिरेणैव। (२) जीवितं। (३) भुजङ्गफणामणयः। (४) वनकरिमदैः। (५) कुर्वते। (६) भ्रमणसमुद्भवश्रमं। (७) छायां। (८)...जनोपनीते पल्लवासने। (९) अन्यतरस्तु।

विलीनम्, इन्दुमण्डलादिव प्रस्यन्दितम्, द्रुत-(१) मिव मुक्ताफल-निकरम्, अत्यच्छतया-स्पर्शानुमेयं हिमजड़म्, (२) अरविन्दकोषरजः-कषायमम्भः कमलिनी-पत्रपुटेन, प्रत्यग्रोद्धृताश्च धौतपङ्कनिर्म्मला मृणालिकाः (३) समुपाहरत्। (व)

आपीत-सलिलश्च सेनापति-(४) स्ता मृणालिकाः शशिकला इव सैंहिकेयः क्रमेणादशत्। अपगतश्रमश्चोत्थाय परिपीताम्भसा सकलेन तेन शबर-सैन्येनानुगम्यमानः शनैः शनैरभिमतं दिगन्तरमयासीत्। (स)

एकतमस्तु (५) जरच्छबरस्तस्मात् पुलिन्दवृन्दादनासादित-हरिण-पिशितः

तीव्रसन्तापात् विलीनं द्रवीभूय पतितं अम्बरैकदेशं आकाशैकभागमिव। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। इन्दु-मण्डलात् चन्द्रविम्बात् प्रस्यन्दितं गलितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। द्रुतं गलितं मुक्ताफलानां मौक्तिकानां निकरं समूहमिव सर्वत्र नितान्तनिर्म्मलत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अत्यच्छतया नितान्तनिर्म्मलतया स्पर्शेन अनुमेयं जलतया अनुमानग्राह्यं आकाशतुल्यतया दर्शनायोग्यत्वादिति भावः। हिमजड़ं तुषारवत् शीतलम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अरविन्दकोषस्य पद्मकर्णिकाधारस्य रजसा परागेण कषायं कषायरसोपेतं अम्भो जलम्। प्रत्यग्रोद्धृताः नूतनोत्तोलिताः, धौतपङ्काः क्षालितकर्द्दमा अतएव निर्म्मलाः, मृणालिकाः क्षुद्रमृणालानि। "स्त्री स्यात् काचिन्मृणाल्यादि विवक्षापचये यदि।" इत्यमर-प्रामाण्यात् क्षुद्रार्थे स्त्रीत्वम्। समुपाहरत् मातङ्गाय दत्तवान्।

(स) आपीतेति। आपीतं सम्यक् पीतं सलिलं जलं येन सः। सिंहिकाया अपत्यमिति सैंहिकेयो राहुः, शशिकला इव ता मृणालिकाः क्रमेणादशत् दन्तैरचर्वयत्। अत्रोपमालङ्कारः। परिपीतमम्भो जलं येन तेन।

(ह) एकेति। जरच्छबरो वृद्धकिरातः। पुलिन्दवृन्दात् चाण्डालसमूहात् विच्छिन्नः सन्निति शेषः।

নূতন উত্তোলিত ও কর্দ্দম প্রক্ষালিত করায় নির্ম্মল কতকগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র মৃণাল আনিয়া মাতঙ্গকে অর্পণ করিল; সেই জলটুকু, উজ্জ্বল বলিয়া দ্রবীভূত বৈদূর্য্যমণির অনুকরণ করিতেছিল; আর তাহাকে, প্রলয়কালীন প্রচণ্ড সূর্য্যের উত্তাপে দ্রবীভূত হইয়া পতিত আকাশের এক পার্শ্বের ন্যায়, চন্দ্রমণ্ডল হইতে নিপতিতের ন্যায় এবং বিগলিত মুক্তাসমূহের ন্যায় বোধ হইতেছিল; আর নিতান্ত নির্ম্মল বলিয়া স্পর্শদ্বারাই তাহার অনুমান করা যাইত এবং সেই জলটুকু হিমের ন্যায় শীতল ও পদ্মকোষের ধূলিতে কষায়রসসম্পন্ন ছিল।

(স) কিরাত-সেনাপতি মাতঙ্গ জলপান করিয়া পরে রাহু যেমন চন্দ্রকলা গ্রাস করে, সেইরূপ সেই মৃণালগুলি ক্রমে ভক্ষণ করিল; এবং সৈন্যগণও জলপান করিল; তাহার পর পরিশ্রম দূরীভূত হইলে মাতঙ্গ, সেই সকল সৈন্যগণের সহিত অভিমত দেশান্তরে চলিয়া গেল।

(হ) কিন্তু রাক্ষসের ন্যায় অত্যন্ত বিকৃতদর্শন একজন বৃদ্ধ ব্যাধ, পূর্ব্বে হরিণের মাংস

---

(१) द्रुतमिव। (२) जलशिशिरं। (३)...निर्म्मलमृणालिकाः।
(४) शबरसेनापतिः। (५) एकतरस्तु।

पिशिताशन इवातिविकृतदर्शनः (१) पिशितार्थी तस्मिन्नेव तरुमूले (२) मुहूर्त्त-मिव व्यलम्बत। अन्तरिते च तस्मिन् (३) शवरसेनापतौ स जीर्णशवरः पिबन्नि-वास्माकमायूंषि रुधिरविन्दुपाटलया कपिल-भ्रूलता-(४) परिवेषभीषणया दृष्ट्या गणयन्निव शुककुल-कुलायस्थानानि (५) श्येन इव विहगामिषास्वाद-लालसः (६) सुचिर-(७) मारुरुक्षुस्तं वनस्पतिमामूलादपश्यत्। (च)

उत्क्रान्तमिव तस्मिन् क्षणे तदालोकन-भीतानां (८) शुककुलानामसुभिः। (छ) किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्; यतः स तमनेक-ताल-तुङ्गमभ्रङ्कष-शाखा-

अनासादितहरिणपिशितः अलब्धमृगमांसः। पिशितमश्नातीति पिशिताशनो राक्षस इव। पिशितार्थी मांसार्थी। मुहूर्त्तं कियन्तं कालमित्यर्थः व्यलम्बत विलम्बमकरोत्। इवशब्दो वाक्यालङ्कारे। अत्रोपमालङ्कारः। अन्तरिते तरुगहनेन व्यवधानादन्तर्हिते। जीर्णशवरो वृद्धकिरातः अस्माकमायूंषि जीवनकालान् पिबन्निव पानेन विलोपयन्निव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। रुधिरविन्दुभिः क्रोधेनोपागतरक्तकणैः पाटला श्वेतरक्ता तया, तथा कपिले पिङ्गलवर्णे ये भ्रूलते ताभ्यां परिवेषः परिधिः परिवेष्टनं तेन भीषणा तया, दृष्ट्या चक्षुषा, शुककुलस्य कीरसमूहस्य कुलायस्थानानि नीड़ाश्रयस्थानानि गणयन्निव इयत्तया तेषां संख्यानं कुर्वन्निव। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। श्येन इव मांसाशी पक्षिविशेष इव विहगानां पक्षिणां आमिषास्वादे मांसभक्षणे लालसो लोलुपः। अत्रोपमालङ्कारः। आरुरुक्षुरारोढुमिच्छुः, तं वनस्पतिं शाल्मलीवृक्षं, आमूलात् मूलादवधि, सुचिरमपश्यत्।

(च) उत्क्रान्तमिति। असुभिः प्राणैः उत्क्रान्तमिव उड्डीनमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) किमिवेति। अकरुणानां निर्दयानां जनानां किमिव दुष्करं किमपि नेत्यर्थः। अतएवा-र्थापत्तिरलङ्कारः। स जीर्णशवरः। अनेके ये ताला करतलध्वनयस्तद्वत्तुङ्गमुच्चं क्रमेणोर्द्धं क्रियमाणाः

না পাইয়া, মাংসের লোভে সেই কিরাতগণ হইতে বিচ্ছিন্ন হইয়া সেই শাল্মলীবৃক্ষের মূলে কিয়ৎকাল বিলম্ব করিল; তাহার পর কিরাতসেনাপতি অন্তর্হিত হইলে সেই বৃদ্ধ ব্যাধ আমাদের আয়ু যেন পান করতঃ, ক্রোধে রুধিরবিন্দু উপস্থিত হওয়ায় আরক্তবর্ণ এবং পিঙ্গলবর্ণ ভ্রূযুগলের পরিবেষ্টনে ভয়ঙ্কর দৃষ্টিদ্বারা, শুকপক্ষিগণের বাসাগুলি যেন গণনা করিয়া, শ্যেন-পক্ষীর ন্যায় পক্ষীর মাংসভক্ষণে অত্যন্ত অভিলাষী হইয়া, আরোহণ করিতে ইচ্ছা করিয়া অনেকক্ষণ যাবৎ সেই শাল্মলীবৃক্ষের মূল হইতে অগ্রপর্য্যন্ত দর্শন করিল।

(চ) সেই সময়ে তাহাকে দেখিয়া ভয়ে শুকপক্ষিগণের প্রাণ যেন উড়িয়া গেল।

(ছ) নির্দ্দয় ব্যক্তিদিগের জগতে দুষ্কর কি কার্য্য আছে? যে হেতু, উপরের দিকে পর

(१)...इव विकृतदर्शनः। (२) तरुमूले च तस्मिन्। (३) अन्तरिते च शवरसेनापतौ। (४) कपिलभ्रुवा परिवेष...। (५) शुककुलायस्थानानि। (६) विहङ्गामिष...विहगामिषस्वाद...। (७) सुरुचिरम्। (८) तदालोकभीतानां।

शिखरमपि सोपानैरिवायत्नेनैव पादपमारुह्य ताननुपजातोत्पतनशक्तीन् कांश्चिदल्पदिवस-जातान् गर्भच्छवि-पाटलान् शाल्मली-(१) कुसुमशङ्कामुपजनयत:, कांश्चिदुद्भिद्यमानपक्षतया नलिन-(२) संवर्त्तिकानुकारिण:, कांश्चिदर्कफलसदृशान्, कांश्चिल्लोहितायमान-चञ्चुकोटीन् ईषद्विघटित-दलपुट-पाटल-मुखानां कमल-मुकुलानां श्रियमुद्वहत: (३) कांश्चिदनवरत-शिर:कम्प-व्याजेन निवारयत इव (४) प्रतीकारासमर्थान्, एकैकश: (५) फलानीव तस्य वनस्पते: शाखासन्धिभ्य: (६)

करतलध्वनयो यावदूर्द्ध्वं यान्ति तावदुच्चमित्यर्थ:, अथवा परपरोपरिस्थापितानेकतालतरुसमानोच्चमित्यर्थ: अभ्रं मेघं कषन्ति विलिखन्तीति अभ्रङ्कषाणि "सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कष" इति खश्, शाखाशिखराणि विटपाग्राणि यस्य तम्, सोपानैरिव आरोहणैरिव "आरोहणं स्यात् सोपान"मित्यमर:। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:। गर्भस्य सद्योनिर्गतस्य भ्रूणस्य या छवि: कान्तिस्तया पाटलान् श्वेतरक्तवर्णान् अतएव शाल्मली-कुसुमस्य शङ्कां स्वेषु भ्रमं उपजनयत: कुर्वत:। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णो भ्रान्तिमानलङ्कार:। उद्भिद्यमानौ किञ्चित्प्रकाशमानौ पक्षौ येषां तेषां भावस्तया नलिनानां पद्मानां संवर्त्तिका नवदलानि "संवर्त्तिका नवदल"मित्यमर:, अनुकुर्वन्ति ये तान्। अत्रार्थी उपमालङ्कार:। अर्कफलसदृशान् अचिर-जाततया रक्तार्कफलतुल्यकान्तीन्। अत्राप्यार्थी उपमा। अलोहिता लोहिता भवन्तीति लोहितायमाना रक्तवर्णा: चञ्चूनां कोटय: अग्रभागा येषां तान्, अतएव ईषद्विघटितैरल्पविकसितै: दलपुटै: पुटकाकार-दलै: पाटलानि श्वेतरक्तानि मुखानि अग्रदेशा येषां तेषां कमलमुकुलानां प्रौढपद्मकलिकानां श्रियं शोभां उद्वहतो धारयत:। अत्र अन्येषां श्रियं कथमन्ये वहेयुरिति वस्तुसम्बन्धोऽसम्भवन् श्रियमिव श्रियमिति बिम्बप्रतिबिम्बभावं बोधयतीति निदर्शनालङ्कार:। अनवरतं य: शिर:कम्प: शिशुतया भयेन वा मस्तक-

পর অনেক করতলধ্বনি করিলে সেই ধ্বনি যত দূর ঊর্দ্ধে যায়, সেই শাল্মলীবৃক্ষ ততদূর উচ্চ ছিল এবং তাহার শাখাসমূহের অগ্রভাগ মেঘস্পর্শী ছিল; তথাপি সেই ব্যাধ সোপান-দ্বারাই যেন অনায়াসে সেই বৃক্ষে আরোহণ করিল; তাহার পর যাহাদের উড়িবার শক্তি জন্মিয়াছিল না, এইরূপ শুকশাবকদিগকে ফলের ন্যায় একটি একটি করিয়া সেই বৃক্ষের শাখার সন্ধিস্থান হইতে এবং কোটরের অভ্যন্তর হইতে ধরিতে লাগিল আর মারিয়া ভূতলে ফেলিয়া দিতে লাগিল। সেই শুকশাবকদিগের মধ্যে কতকগুলি, অল্পদিনজাত বলিয়া গর্ভাবস্থার শ্বেত ও রক্তবর্ণমিশ্রিত দেহকান্তিতে শাল্মলীকুসুমের ভ্রম জন্মাইতেছিল, কতকগুলি কেবল পক্ষ উঠিতেছিল বলিয়া, নূতন পত্র উঠিবার সময়ে পদ্মের অনুকরণ করিতেছিল; কতকগুলি রক্তবর্ণ আকন্দফলের ন্যায় ছিল; কতকগুলি কেবল চঞ্চুপুট রক্তবর্ণ থাকায় অল্পবিকসিত রক্তমুখ পদ্মকলিকার শোভা ধারণ করিতেছিল; আর কতক-

(१) शाल्मलि...। (२) नलिनी...। (३) उद्वहन्त:। (४) निवारयन्त इव।
(५) एकैकतया। (६) शाखान्तरेभ्यश्च।

कोटरान्तरेभ्यश्च (१) शुक-शावकानगृहीत्, अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितावपातयत्। (क)

तातस्तु तं महान्त-(२) मकाण्ड एव प्राणहरमप्रतीकारमुपप्लवमुपनतमवलोक्य (३) द्विगुणतरोपजात-वेपथुर्मरणभयादुद्भ्रान्त-तरल-तारकां (४) विषाद-शून्यामस्रुजल-प्लुतां दृशमितस्ततो दिक्षु विक्षिपन्, उच्छुष्क-तालुरात्म-प्रतीकाराक्षमः त्रास-स्रस्त-सन्धि-शिथिलेन पक्षपुटेनाच्छाद्य मां तत्कालोचितप्रतीकारं (५) मन्यमानः स्नेह-परवशो मद्रक्षणाकुलः (६) किंकर्त्तव्यता-विमूढ़ः (७) क्रोड़भागेन (८) मामवष्टभ्य तस्थौ। (ख)

विधूननं तस्य व्याजेन छलेन निवारयत इव आत्मविनाशं निषेधत इव। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। प्रतीकारासमर्थान् बालत्वेन पक्षपुटेन दंशनासम्भवात् उड्डयनशक्त्यभावाच्चेति भावः। फलानीवेत्युपमा। वनस्पतेः शाल्मलीवृक्षस्य। अपगतासून् विगतप्राणान्।

अत्र वाक्ये किमिव हि दुष्करमकरुणानामिति सामान्यस्य यतः स इत्यादिविशेषेण समर्थनादर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः प्रधानं, तत्सापेक्षतयोक्तानामन्येषामङ्गत्वमिति समुदाये सङ्करः।

(ख) तात इति। तातस्तु क्रोड़भागेन मामवष्टभ्य तस्थौ इत्यन्वयः। अकाण्ड एव अनवसर एव सहसैव। उपनतमुपस्थितं। उपप्लवं विपदं। वार्द्धक्येन स्वभावादेव यावान् वेपथुरासीत् तद्द्विगुणतर इत्यर्थः, उपजातो वेपथुः कम्पो यस्य सः। उद्भ्रान्ते घूर्णिते तरले विशिष्टेयोन्मीलनाद्भास्वरे दीप्तिमत्यौ "तरलो भास्वरे चले।" इत्यादि हेमः, तारके कनीनिकाद्वयं यस्यास्ताम्। विषादेन शून्यां लक्ष्यरहितां। अत्र विषादरहितामित्यर्थस्यापि प्रतीतेः सन्दिग्धतादोषः, स च विषादेन लक्ष्यशून्यामिति पाठेन समाधेयः। दृशं चक्षुः। त्रासेन भयेन स्रस्तैर्लुलितैः सन्धिभिरस्थिसंयोगस्थलैः शिथिलेन श्लथेन। मामाच्छाद्य अवस्थानमिति शेषः। मम रक्षणाय आकुलो व्यग्रः। क्रोड़भागेन उत्सङ्गदेशेन। अवष्टभ्य आश्रित्य आच्छाद्येत्यर्थः।

গুলি অনবরত মস্তককম্পনের ছলে সেই ব্যাধকে যেন বারণ করিতেছিল; কিন্তু সকলেই সেই বিপদের প্রতীকার করিতে অসমর্থ ছিল।

(খ) কিন্তু হঠাৎ সেই প্রাণনাশক প্রতীকারবিহীন উপস্থিত মহাবিপদ্ দর্শন করিয়া আমার পিতার পূর্ব্ব হইতে দ্বিগুণ কম্প উপস্থিত হইল; তাঁহার উজ্জ্বল নয়নের তারা ঘুরিতে লাগিল; বিষাদে দৃষ্টি লক্ষ্যহীন হইয়া পড়িল; অশ্রুজলে নয়ন প্লাবিত হইল; তখন তিনি চারিদিকে ইতস্ততো দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন; তাঁহার তালু শুকাইয়া গেল; তিনি নিজে প্রতীকার করিতে অসমর্থ হইয়া, ভয়বশতঃ সকল সন্ধিবন্ধন শিথিল হওয়ায় শিথিল পক্ষপুটদ্বারা 'আমাকে আচ্ছাদন করিয়া অবস্থান করাই সেই সময়ের উপযুক্ত

---

(१) क्वचिदयं पाठो नास्ति। (२) अतिमहान्तं। (३) आलोक्य। (४)...तरलतारकां..।
(५) तत्कालोचितं प्रतीकारं। (६) मद्रक्षाकुलः। (७)...कर्त्तव्यतामूढ़ः। (८) विभागेन।

असावपि पापः क्रमेण (१) शाखान्तरैः सञ्चरमाणः कोटरद्वारमागत्य जीर्णासित-भुजङ्ग-भोग-भीषणं प्रसार्य्य विविध-वन-वराह-वसा-विस्र-(२) गन्धि-करतलं अनवरत-कोदण्ड-गुणाकर्षण-व्रणाङ्कित-प्रकोष्ठं अन्तक-दण्डानुकारिणं वाम-बाहुमतिनृशंसो मुहुर्मुहुर्दत्तचञ्चु-प्रहारमुत्कूजन्तमाकृष्य (३) तातमपगतासु-(४) मकरोत्। (ग) मान्तु स्वल्पशरीरत्वात् (५) भयसम्पिण्डिताङ्गत्वात्

(ग) असाविति। पापः पापात्मा, अतिनृशंसः नितान्तक्रूरः, असावपि शरच्छवरः। सञ्चरमाण इति "समस्तृतीयया युक्त" इति चरधातोरात्मनेपदित्वादानश्। कोटरद्वारमस्मदीयमिति शेषः। जीर्णस्य जरतः असितस्य कृष्णवर्णस्य भुजङ्गस्य सर्पस्य भोगवत् देहवत् भीषणं भयङ्करं अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। "भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययो"रित्यमरः। विविधवनवराहाणां वसाभिः सद्योविनाशनात् मेदोभिस्तत्संयोगैरित्यर्थः विस्रगन्धि आमगन्धि करतलं पाणितलं यस्य तं। "विस्रं स्यादामगन्धि य"-दित्यमरः। अतएव विस्रपदेनैव आमगन्धिरूपार्थलाभेन पुनर्गन्धिपदोपादानादधिकपदतादोषः स च विस्र-करतलमिति पाठेनैव समाधेयः। अनवरतकोदण्डगुणाकर्षणेन यो व्रणः क्षतं तेन अङ्कितश्चिह्नितः प्रकोष्ठो मणिबन्धो यस्य तं। अन्तकदण्डानुकारिणं यमदण्डसदृशं। अत्रापि लुप्तोपमालङ्कारः। वामबाहुं प्रसार्य्य कोटरमध्ये विस्तार्य्य, दत्तश्चञ्चुप्रहारो येन तं उत्कूजन्तं उच्चैःस्वरेण रुवन्तं, तातं मत्पितरं आकृष्य आनीय अपगतासुं गतप्राणं अकरोत्।

(घ) मामिति। स्वल्पशरीरत्वात् क्षुद्रदेहत्वात्, भयसम्पिण्डिताङ्गत्वात् भयेन सङ्कुचितावयवत्वात्।

প্রতীকার' এইরূপ মনে করিয়া স্নেহবশতঃ আমার রক্ষার নিমিত্ত ব্যস্ত ও কিংকর্ত্তব্যবিমূঢ় হইয়া ক্রোড়দ্বারা আমাকে আচ্ছাদন করিয়া অবস্থান করিতে লাগিলেন।

(গ) অত্যন্তনৃশংস সেই পাপাত্মা ব্যাধও ক্রমশঃ এক শাখা হইতে অপর শাখায় বিচরণ করত আমাদের কোটরদ্বারে আসিয়া যমদণ্ডের তুল্য বামবাহু কোটরের মধ্যে বিস্তৃত করিয়া দিল; সেই বাহু, জীর্ণ ও কৃষ্ণবর্ণ সর্পের শরীরের ন্যায় ভয়ঙ্কর ছিল; তাহার পাণিতল, নানাবিধ বন্যশূকরের মেদসংযুক্ত থাকায় অপক্ক মাংসের গন্ধযুক্ত ছিল; আর অবিশ্রান্ত ধনুর গুণ আকর্ষণ করায় মণিবন্ধস্থান, ক্ষতচিহ্নিত ছিল; এ দিকে আমার পিতা উচ্চৈঃস্বরে রব করিতেছিলেন এবং মুহুর্মুহুঃ চঞ্চুদ্বারা সেই বাহুর উপরে আঘাত করিতেছিলেন, তখন সে তাঁহাকে আকর্ষণ করিয়া আনিয়া গতাসু করিল।

(ঘ) কিন্তু আমার শরীর অত্যন্ত ক্ষুদ্র ছিল, তাহাতে আবার ভয়ে সকল অঙ্গ সঙ্কুচিত হইয়া গিয়াছিল এবং আয়ুও কিছু অবশিষ্ট ছিল; সুতরাং আমি কোন প্রকারে পিতার পক্ষ-

---

(१) क्वचित् क्रमेणेति नास्ति। (२) विनिस्र...। (३) समाकृष्य। (४) गतासुं।
(५) स्वल्पत्वात्।

सावशेषत्वा-(१) दायुषः कथमपि तत्पक्ष-पुटान्तर-(२) गतं नालक्षयत्। उपरतञ्च त-(३) मवनितले शिथिलशिरोधरमधोमुखममुञ्चत्। (घ)

अहमपि तच्चरणान्तरे (४) निवेशितशिरोधरो निभृतमङ्क-निलीन-(५) स्तेनैव सहापतम्। आयुषोऽवशिष्टतया तु पवनवशात् पुञ्जितस्य (६) महतः शुष्क-पत्र-राशेरुपरि पतितमात्मानमपश्यम्। अङ्गानि येन मे नाशीर्य्यन्त (७)। (ङ)

यावच्चासौ तस्मात्तरुशिखरान्नावतरति तावदहमवशीर्ण-पर्ण-(८) सवर्णत्वाद-स्फुटोपलक्ष्यमाण-मूर्त्तिः पितरमुपरतमुत्सृज्य नृशंस इव प्राणपरित्यागयोग्येऽपि काले बालतया कालान्तरभुवः स्नेहरसस्यानभिज्ञो जन्मसहभुवा भयेनैव केवल-

---

नालक्षयत् नापश्यत्। उपरतं मृतं, अतएव शिथिला शिरोधरा ग्रीवा यस्य तं, तं तातं। अमुञ्चत् अत्यजत् स जीर्णशबर इत्युभयत्रापि शेषः।

(ङ) अहमिति। निवेशितशिरोधरः प्रवेशितग्रीवः, निभृतं निःशब्दं अङ्कनिलीनः क्रोड़े लुक्कायितः, तेनैव पित्रैव। पुञ्जितस्य सञ्जातपुञ्जस्य उपर्य्यधोभावापन्नस्य। शुष्कपत्राणां राशिः समूहस्य। आत्मानं स्वदेहम्। येन शुष्कपत्रराशेरुपरि पतनेन हेतुना, नाशीर्य्यन्त भग्नानि नाभवन्।

(च) यावदिति। असौ जीर्णशबरः। तावदहं तमालविटपिनो मूलदेशमविशमिति वक्ष्यमाण-क्रिययाऽन्वयः। अवशीर्णस्य सद्योनिपतितस्य अशुष्कस्य पर्णस्य वृक्षपत्रस्य सवर्णत्वात् समानहरिद्वर्णत्वात् अस्फुटोपलक्ष्यमाणमूर्त्तिः अस्पष्टदृश्यमानदेहः। नृशंस इव निष्ठुर इव तत्काले पितृपरित्यागादिति भावः।

পুটের অন্তর্গত ছিলাম বলিয়া সে আমাকে দেখিতে পাইয়াছিল না। পরে সে, আমার মৃত পিতাকে অধোমুখ করিয়া ভূতলে ফেলিয়া দিল, তখন তাঁহার গলদেশ শিথিল হইয়া পড়িয়াছিল।

(ঙ) আমিও তাঁহার চরণদ্বয়ের মধ্যে গলদেশ প্রবেশিত করিয়া নিঃশব্দে ক্রোড়মধ্যে লুক্কায়িত থাকিয়া তাঁহারই সহিত পতিত হইলাম। আয়ু অবশিষ্ট ছিল বলিয়া, বায়ুবেগে পুঞ্জীভূত কতকগুলি শুষ্কপত্রের উপরে আপনাকে পতিত দেখিলাম। যাহাতে আমার অঙ্গ সকল চূর্ণ হইয়া যায় নাই।

(চ) তাহার পর যে পর্য্যন্ত সেই ব্যাধ বৃক্ষের উপর হইতে অবতরণ না করিতেছিল, তাহার মধ্যেই আমি নৃশংসের ন্যায় মৃত পিতাকে পরিত্যাগ করিয়া, অপর পিতার ক্রোড়ের ন্যায় অনতি-দূরবর্ত্তী অতিবৃহৎ এক তমালবৃক্ষের মূলের ভিতরে প্রবেশ করিলাম। আমার শরীরের বর্ণ, বৃক্ষ হইতে সদ্যোনিপতিত পত্রের সমান ছিল বলিয়া কেহই আমাকে স্পষ্টরূপে দেখিতে পাইয়াছিল না। সেই-ই প্রাণ-পরিত্যাগের উপযুক্ত সময় হইলেও বালক বলিয়া, ভবিষ্যৎকালভাবী

---

(१) सवशेषत्वात्। (२) पक्षसम्पुटान्तरगतं। (३) एनं। (४) तच्चरणान्तराले।
(५) मङ्कदेशनिलीनः, अङ्कविलीनः। (६) अवशिष्टपुण्यतया तु पवनवशेन, पवनवशपुञ्जितस्य।
(७) नावाशीर्य्यन्त। (८)...पत्र...।

मभिभूयमानः किञ्चिदुपजाताभ्यां पक्षाभ्यामीषत्कृतावष्टम्भो (१) लुठन्नितस्ततः कृतान्त-मुख-कुहरादिव विनिर्गतमात्मानं मन्यमानः (च) नातिदूरवर्त्तिनः, शबर-सुन्दरी-कर्णपूर-रचनोपयुक्त-पल्लवस्य, सङ्कर्षण-पट-नील-च्छाययोपहसत इव गदा-धर-देह-च्छविं, (२) अच्छैः कालिन्दी-जल-च्छेदैरिव विरचितच्छदस्य, वनकरि-मदोपसिक्त-(३) किसलयस्य, विन्ध्याटवी-केशपाश-श्रियमुद्वहतः, (४) दिवाप्यन्ध-कारित-शाखान्तरस्य, अप्रविष्ट-सूर्य्य-किरणमतिगहनमपरस्येव पितुरुत्सङ्गमति-महतस्तमालविटपिनो मूलदेशमविशम्। (छ)

उपतरं मतं। प्राणपरित्यागयोग्येऽपीति तादृशस्नेहकारिपितृविरहादिति भावः। कालान्तरभुवः शैशवभिन्न-वयस्युत्पत्तियोग्यस्य। जन्मना सह भवतीति तेन जन्मसहभुवा आजन्मसिद्धेन। अभिभूयमान आयत्ती-क्रियमाणः। ईषत्कृतावष्टम्भः किञ्चिद्विहिताश्रयः भूतले अल्पमल्पं निर्भरं कृत्वेत्यर्थः, इतस्ततो लुठन् भूमौ निपतन्। कृतान्तमुखकुहरात् यमवदनविवरात् विनिर्गतमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) नातीति। शबरसुन्दरीणां कर्णपूररचनायां कर्णालङ्कारनिर्म्माणे उपयुक्ताः पल्लवा यस्य तस्य। सङ्कर्षणपटवत् बलरामवसनवत् नीलच्छायया नीलकान्त्या गदाधरदेहच्छविं कृष्णस्य देहकान्तिं उपहसत इव स्थितस्य। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। अच्छैः निर्म्मलैः कालिन्दीजलच्छेदैः यमुनाजलखण्डैरिव विरचिताश्छदाः पत्राणि यस्य तस्य उभयोरपि नीलत्वादिति भावः। अत्रापि जात्युत्-प्रेक्षावृत्त्यनुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। वनकरिमदैर्वन्यहस्तिदानजलैः उपसिक्तानि किसलयानि पल्ल-वानि यस्य तस्य। विन्ध्याटव्याः केशपाशश्रियं नीलत्वात् कुन्तलकलापशोभां उद्वहतो धारयतः। अत्र श्रिय-मिव श्रियमिति सादृश्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धा निदर्शनालङ्कारः। दिवापि दिनेऽपि अन्धकारितानि रविकरा-प्रवेशात् सञ्जातान्धकाराणि शाखान्तराणि शाखानामभ्यन्तरभागा यस्य तस्य, अतिमहतः तमालविटपिनः तमाल-वृक्षस्य, अपरस्य पितुरुत्सङ्गं क्रोड़मिव अभयदत्वात् पूर्णाच्छादकत्वाच्चेति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अतिगहनं दुष्प्रवेशम्।

স্নেহ যে কি পদার্থ, তাহা বুঝিতে পারিয়াছিলাম না, কেবল জন্মসময় হইতে উৎপন্ন ভয়ে অভি-ভূত হইতেছিলাম; আর অল্পমাত্র জাত পক্ষযুগলদ্বারা ভূতলে অল্প অল্প নির্ভর করিয়া ইতস্ততঃ লুণ্ঠিত হইতে হইতে চলিতেছিলাম, এবং যমের মুখবিবর হইতে যেন নির্গত হইয়াছি বলিয়া আপনাকে মনে করিতেছিলাম। (ছ) সেই তমালবৃক্ষের পল্লবগুলি শবর-রমণীগণের কর্ণাভরণ করিবার উপযুক্ত ছিল; সেই বৃক্ষ বলরামের বস্ত্রের ন্যায় স্বকীয় নীল-কান্তিদ্বারা কৃষ্ণের দেহশোভাকে যেন উপহাস করিতেছিল; যমুনার অল্প অল্প নির্ম্মল জলদ্বারা যেন তাহার পত্রসমূহ নির্ম্মাণ করা হইয়াছিল; বন্যহস্তীর মদজলে তাহার পল্লবগুলি সিক্ত

---

(१) ईषत्कृततमनावष्टम्भः। (२) नीलच्छायं, नीलदलच्छायया, नीलया छायया। गदाधरच्छविं।
(३)...मदसलिलैरिवोपसिक्त..., मदसलिलैरिव संसिक्त...। (४) उद्वहन्तः।

अवतीर्य्य च स तेन समयेन क्षितितल-विप्रकीर्णान् (१) संहृत्य तान् शुक-शिशूननेक-लता-पाश-संयतानाबध्य (२) पर्णपुटेऽतित्वरित-गमनः सेनापतिगतेनैव वर्त्मना तामेव (३) दिशमन्वगच्छत्। (ज)

मान्तु लब्ध-जीविताशं प्रत्यग्र-पितृमरण-शोक-शुष्क-हृदयं अतिदूरपाता-दायासित-शरीरं (४) सन्त्रास-जात-वेपथुं (५) सर्वाङ्गोपतापिनी बलवती पिपासा परवशमकरोत्। (झ)

अनया च काल-कलया सुदूरमतिक्रान्तः (६) स पापकृदिति परिकलय्य किञ्चिदुन्नमित-कन्धरो भय-चकितया दृशा दिशोऽवलोक्य (७) तृणेऽपि चलति

(ज) अवेति। स जीर्णशबरः। क्षितितले विप्रकीर्णान् इतस्ततो विक्षिप्तान् तान् शुकशिशून् संहृत्य एकस्थानस्थीकृत्य, अनेकैर्लतापाशैः संयतान् बद्धान् कृत्वेति शेषः। पर्णपुटे आबध्य आपूर्य्य।

(झ) मामिति। लब्धा जीविताशा येन तं तस्य व्याधस्यापसरणादिति भावः। प्रत्यग्रो नूतनो यः पितृमरणशोकस्तेन शुष्कं हृदयं यस्य तम्। अतिदूरपातात् अत्युच्चदेशतः पतनात् आयासितशरीरं सञ्जाता-यासकदेहं क्लान्तकायं, तथा सन्त्रासेन अतिभयेन जातो वेपथुः कम्पो यस्य तम्। सर्वाङ्गोपतापिनी सर्व-देहावसादकारिणीत्यर्थः। परवशं आयत्तम्।

(ञ) अनयेति। कालकलया समयांशेन। स पापकृत् जीर्णशबरः। परिकलय्य विविच्य।

ছিল; দিনের বেলাও তাহার শাখাসমূহের অভ্যন্তরদেশ অন্ধকার ছিল; আর মূলস্থিত যে বিবরে আমি প্রবেশ করিয়াছিলাম, তাহাতে সূর্য্যের কিরণ প্রবেশ করিত না এবং অন্যের প্রবেশ করা দুঃসাধ্য ছিল।

(জ) সেই বৃদ্ধ ব্যাধ শাল্মলীবৃক্ষ হইতে অবতরণ করিয়া সেই সময়েই ভূতলে ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত সেই শুকশাবকদিগকে একত্র করিয়া বহুতর লতাপাশে বন্ধনপূর্ব্বক এক পত্রপুটকে পূর্ণ করিয়া, যে পথে সেনাপতি গমন করিয়াছিল, সেই পথেই সেই দিকে অতিদ্রুতগতিতে চলিয়া গেল।

(ঝ) তখন আমার জীবনের আশা হইল; কিন্তু পিতার মৃত্যুতে নূতন শোকে হৃদয় শুকাইয়া গেল; অতিদূর হইতে পতিত হওয়ায় শরীর ক্লান্ত হইয়া পড়িয়াছিল, অত্যন্ত ভয়বশতঃ কাঁপিতেছিলাম, তখন আবার অত্যন্ত পিপাসা উপস্থিত হইয়া সকল অঙ্গ অবসন্ন করিয়া আমাকে অধীন করিয়া ফেলিল।

(ঞ) এই সময়টুকুর মধ্যেই সেই পাপাত্মা ব্যাধ অত্যন্ত দূরে গিয়াছে—ইহা বিবেচনা

---

(१) विकीर्णान्। (२) आविध्य। (३)...वर्त्मना दिशमगच्छत्। (४)...पातायासितशरीरं।
(५) सन्त्रासजाता सर्वाङ्गोप...। (६) आक्रान्तः। (७) विलोक्य।

পুনঃ প্রতিনিবৃত্ত ইতি তমেব পদে পদে পাপকারিণমুৎপ্রেক্ষমাণো নিষ্ক্রম্য তস্মাত্তমালতরু-মূলাৎ (১) সলিল-সমীপমুপসর্ত্তুং (২) প্রযত্নমকরবম্। (ঞ)

অজাতপক্ষতয়া চ (৩) নাতিস্থিরতর-চরণ-(৪) সঞ্চারস্য মুহুর্মুহুর্মুখেন পততো (৫) মুহুস্তির্য্যক্ নিপতন্তমাত্মানমেকয়া পক্ষপাল্যা সন্ধারয়তঃ ক্ষিতি-তল-সংসর্পণ-শ্রমাতুরস্য (৬) অনভ্যাসবশাদেকমপি দত্ত্বা পদমনবরতমুন্মুখস্য, স্থূলস্থূলং (৭) শ্বসতঃ (৮) ধূলি-ধূসরস্য সংসর্পতো মমাভূন্মনসি (৯) (ট) অতি-

---

কিঞ্চিদুন্নমিতা দিগ্দর্শনার্থমীষদুত্তোলিতা কন্ধরা গ্রীবা যেন সঃ। ইত্থা চক্ষুষা দিশোঽবলোক্য, স বা অপরো বা তাদৃশ আগচ্ছতি ন বেতি নিরূপণার্থমিতি ভাবঃ। চলতি কম্পমানে সতি পুনঃ প্রতিনিবৃত্তঃ তাদৃশদিগবলোকনান্নিবৃত্তঃ তদাগমনশঙ্কয়েতি ভাবঃ। ইতি ইত্থং। পাপকারিণং তমেব ব্যাধং পদে পদে উৎপ্রেক্ষমাণঃ আশঙ্কাবশাৎ স্থানে স্থানে পশ্যন্নিব। উপসর্ত্তুং গন্তুম্।

(ট) অজাতেতি। নাতিস্থিরতরঃ কিঞ্চিদস্থির ইত্যর্থঃ চরণসঞ্চারঃ পাদক্ষেপো যস্য তস্য। মুখেন বদনেন পূর্ব্বকায়েনেত্যর্থঃ পততা ভূমৌ লুঠতঃ। তির্য্যক্ পার্শ্বয়োরিত্যর্থঃ। পক্ষপাল্যা পক্ষপ্রান্তেন। "পালির্যূকাশ্রিপঙ্ক্তিষু। জাতশ্মশ্রুস্ত্রিয়াং প্রান্তে" ইত্যাদি হৈমঃ। ক্ষিতিতলে সংসর্পণেন গমনেন যঃ শ্রমঃ ক্লান্তিস্তেন আতুরস্য পীড়িতস্য। উন্মুখস্য ঊর্দ্ধবদনস্য। স্থূলস্থূলং দীর্ঘদীর্ঘং যথা স্যাত্তথা শ্বসতঃ শ্রমেণ শ্বাসং ত্যজতঃ। ধূলিভির্মুহুর্মুহুঃ পতনাৎ লগ্নৈর্ভূতলরজোভিঃ ধূসরস্য ধূম্রবর্ণস্য, সংসর্পতঃ জলসমীপং গচ্ছতো মম মনসি অভূৎ ইয়ং বৃত্তিরিতি শেষঃ।

করিয়া গলদেশ একটু উত্তোলন করিলাম এবং ভয়বশতঃ চকিতনয়নে চতুর্দ্দিক্ নিরীক্ষণ করিতে লাগিলাম, তখন একটি তৃণ কম্পিত হইলেও আবার নিবৃত্তি পাইতে লাগিলাম, এই ভাবে আশঙ্কাবশতঃ পদে পদে যেন সেই পাপাত্মাকে দেখিতে দেখিতে সেই তমালবৃক্ষের মূল হইতে নির্গত হইয়া জলের নিকটে যাইবার জন্য চেষ্টা করিলাম।

(ট) কিন্তু পক্ষ উৎপন্ন না হওয়ায় অস্থিরভাবে পদক্ষেপ হইতে লাগিল, বারংবার শরীরের সম্মুখভাগ ভূমিতে লুণ্ঠিত হইতেছিল, বারংবার পার্শ্বের দিকেও শরীর পড়িয়া যাইতেছিল; তখন পাখার প্রান্তভাগদ্বারা স্থির রাখিতেছিলাম, ভূতলে গমন করার পরিশ্রমে ক্লান্ত হইতেছিলাম, অনভ্যাসবশতঃ একটিবারমাত্র পদক্ষেপ করিয়াই বার বার মুখ উত্তোলন করিতেছিলাম, দীর্ঘ দীর্ঘ শ্বাস নির্গত হইতেছিল, ধূলিতে শরীর ধূসরবর্ণ হইয়া গিয়াছিল, এই ভাবে গমন করিতে করিতে আমার মনে হইল—

---

(১) তমালতরুতলমূলাৎ। (২) সর্ত্তুং। (৩) অনুপজাতপক্ষতয়া, অজাতপক্ষতয়া নাতি...।
(৪) নাতিস্থিরচরণ...। (৫) অধোমুখেনাপতঃ। (৬)...শ্রমাতুরস্য।
(৭) মুহুর্মুহুঃ স্থূলস্থূলং। (৮) নিঃশ্বসতঃ। (৯) মম সমভূন্মনসি।

काष्टासु दशास्वपि (१) जीवित-(२) निरपेक्षा न भवन्ति खलु जगति प्राणिनां (३) वृत्तयः (४)। नास्ति जीविताद्न्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम् (५)। एवमुपरतेऽपि (६) सुगृहीतनाम्नि ताते यदहमविकलेन्द्रियः पुनरेव प्राणिमि। धिङ्मामकरुणमतिनिष्ठुरमकृतज्ञम्। अहो सोढ़-(७) पितृमरण-दारुणं येन मया जीव्यते, उपकृतमपि नापेक्ष्यते (८)। (ठ) खलं हि खलु मे हृदयम्। अहं (९) हि लोकान्तरमुपगतायामम्बायां नियम्य

(ठ) किमभूदित्याह अतीति। अतिकष्टास्वपि नितान्तदुःखदायिकास्वपि दशासु अवस्थासु प्राणिनां वृत्तयो व्यवहाराः जीवितनिरपेक्षा जीवनापेक्षारहिता न भवन्ति, प्राणिनो हि शतमपि कष्टं सहन्तां तथापि जीवनसत्तां कामयन्त एवेति तात्पर्य्यम्। अतएव इह जगति सर्वजन्तूनां सर्वविधप्राणिनां जीविताद्न्यत् जीवनादितरत् अभिमततरं प्रियतमं वस्तु नास्ति। उक्तमर्थं समर्थयितुमाह एवमिति। यद् यस्मात्, सुगृहीतनाम्नि मत्प्रातःस्मरणीयनामके "स सुगृहीतनामा स्यात् यः प्रातरनुचिन्त्यते" इति विकाण्डशेषः, ताते पितरि एवमनेन प्रकारेण उपरतेऽपि मृतेऽपि पापात्मनः शवरस्य प्रहारेणापमृत्युं गतेऽपीत्यर्थः, अहं अविकलेन्द्रियः यथास्थितसर्वेन्द्रियः सुस्थचित्तो वा पुनरेव प्राणिमि जीवितुमिच्छामीत्यर्थः। अत्र विशेषेण सामान्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः। अकरुणं निर्दयं तादृशेऽपि काले पितरमपहाय स्वजीवनाय पलायनादिति भावः। अतिनिष्ठुरं निर्दयत्वादेवेति भावः। अकृतज्ञं तत्कृतोपकाराऽस्मरणादित्याशयः। अहो आश्चर्य्यं। येन मया, सोढ़ेन अविशेषक्लेशमनुभूतेन, पितृमरणशोकेन दारुणं भीषणं यथा स्यात्तथा जीव्यते प्राणा धार्य्यन्ते उपकृतमपि नापेक्ष्यते पितृकृतोपकारोऽपि न स्मर्य्यते, तं मां धिगिति पूर्वेणान्वयः।

(ड) अहमिति। हि निश्चितम्। खलं नीचाशयम्। अत्र हेतुमाह अहं हीति। हि यस्मात्।

(ঠ) 'জগতে অত্যন্ত কষ্টকর অবস্থা উপস্থিত হইলেও প্রাণিগণের ব্যবহার জীবননিরপেক্ষ হয় না (প্রাণিগণ জীবনের আশা ত্যাগ করিতে পারে না); সুতরাং বলিতে হইবে যে, এই জগতে সকলপ্রকার প্রাণীরই জীবন হইতে প্রিয়তম বস্তু আর নাই। যে হেতু, প্রাতঃস্মরণীয় পিতৃদেব এই ভাবে মৃত্যুমুখে পতিত হইলেও আমি সুস্থচিত্তে পুনরায় জীবিত থাকিতে ইচ্ছা করিতেছি। কি আশ্চর্য্য! আমি পিতৃমরণশোক সহ্য করিয়া ভয়ঙ্করভাবে জীবন ধারণ করিতেছি, তাঁহার উপকারও স্মরণ করিতেছি না; সুতরাং আমি নির্দ্দয়, অতিনিষ্ঠুর ও অকৃতজ্ঞ, অতএব আমাকে ধিক্। (ড) আমার হৃদয় নিশ্চয়ই নীচাশয়; যে হেতু, আমার জননী পরলোকগমন করিলে সেই শোকবেগ হৃদয়মধ্যে অবরুদ্ধ রাখিয়া আমার পিতা অতিপ্রাচীন

(१) अवस्थास्वपि। (२) स्वजीवित...। (३) सर्वप्राणिनां। (४) प्रवृत्तयः।
(५) सर्वजन्तूनामेव। (६) उपरतेऽपि। (७) अकृतज्ञं विसोढ़पितृ...।
(८) नापेक्षते। (९) मया।

शोकावेगमाप्रसव-दिवसात् परिणतवयसापि सता तातेन तैस्तैरुपायैः संवर्द्धन-क्लेशमतिमहान्तमपि स्नेहवशादगणयता यत् परिपालितः, तत्सर्वमेकपदे विस्मृतम्। (ड) अतिकृपणाः खल्वमी प्राणाः, यदुपकारिणमपि तातम-द्यातिगच्छन्तं (१) नानुगच्छन्ति। सर्वथा न कञ्चित् (२) न खलीकरोति जीवित-तृष्णा, यदीदृशावस्थ (३) मपि मामायासयति जलाभिलाषः (ढ)। मन्ये चागणित-पितृमरण-शोकस्य निष्ठुरतैव (४) केवलमियं मम सलिलपान-बुद्धिः। (ण)। अद्यापि दूरत एव सरः (५)। तथाहि जलदेवता-नूपुर-रवानु-

---

अम्बायां मम मातरि। नियम्य अन्तर्निरुध्य। आप्रसवदिवसात् मम जन्मदिनादवधि, परिणतवयसापि अतिवृद्धेनापि अतएव निखिलकार्य्यासमर्थेनेति भावः। तैस्तैरुपायैः पूर्वोक्तैः शुकभुक्तावशिष्टखाद्यसंग्रहादिभिः, संवर्द्धनक्लेशं मत्परिपोषणकष्टं अगणयता तुच्छं भावयता तातेन अहं यत् परिपालितः, एकपदे तत्-क्षणात् "तत्क्षणैकपदे तुल्ये" इति हलायुधः, तत्सर्वं विस्मृतं मयेति शेषः। तस्य प्रतीकाराकरणादन-नुगमनाच्चेति भावः।

(ढ) अतीति। अमी मदीयाः प्राणाः, अतिकृपणाः खलु नितान्तक्षुद्रा एव। यद् यस्मात्। अति-गच्छन्तं मामतिक्रम्य गच्छन्तम्। जीविततृष्णा जीवनाभिलाषः कञ्चित् कमपि जनं न खलीकरोति न नीचा-शयीकरोति, इति न, अपि तु सर्वथैव खलीकरोतीत्यर्थः। "सम्भाव्यमाननिषेधनिवर्त्तने नञ्द्वय"मिति वामनः। "खलं भूस्थानकल्केषु क्रूरे नीचेऽधमे खलः।" इति विश्वः। खलीकरोतीत्यभूततद्भावे च्विप्रत्ययः। यद् यस्मात्, जलाभिलाषः जलपिपासा, ईदृशावस्थमपि नितान्तशोकाकुलमपि मां आयासयति जलपानाय संप्रेष्य खेदयति। तथा च जीवनेच्छयैवेयं जलपानेच्छा, सा चेज्जीवनेच्छा नाभविष्यत्तदा पिपासयैवाहं मृतः पितरमन्वगमिष्यमिति जीवनेच्छैव मामिदानीं खलीकरोतीति भावः। अत्र विशेषेण सामान्यसमर्थनरूपो-ऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ण) मन्य इति। इयं मम सलिलपानबुद्धिर्जलपानेच्छेत्यर्थः निष्ठुरतैव निर्दयतैव निर्दयताप्रयुक्ते-

---

হইলেও স্নেহবশতঃ সেই জন্মদিন হইতে নানাবিধ দারুণ পরিপালনক্লেশ তুচ্ছ মনে করিয়া সেই সেই উপায়ে আমাকে যে পরিপালন করিয়াছিলেন, আমি সে সকল সহসাই বিস্মৃত হইয়াছি। (ঢ) আমার প্রাণও নিতান্ত নীচাশয়; কারণ—পিতা এত উপকার করিয়া অদ্য আমাকে অতিক্রম করিয়া চলিয়া গেলেন, কিন্তু প্রাণ তাঁহার অনুগমন করিতেছে না। জীবনের ইচ্ছাই প্রাণিগণকে সর্ব্বপ্রকারে নীচাশয় করিয়া থাকে; যে হেতু—আমি শোকে নিতান্ত আকুল হইলেও জলপানের ইচ্ছা আমাকে কষ্ট দিতেছে। (উপপত্তি টীকায় দ্রষ্টব্য) (ণ) আমি মনে করি—'পিতার মৃত্যুশোক গ্রাহ্য না করায় যে নির্দ্দয়তা জন্মিয়াছে, কেবল তাহাতেই আমার এই জলপানের ইচ্ছা হইয়াছে। (ত) এখনও দূরেই সরোবর রহিয়াছে; কারণ—জলদেবতার চরণনূপুরের শব্দের

---

(१) तातं क्वापि गच्छन्तमद्यापि, तातमद्य क्वापि यान्तम्। (२) कञ्चन।
(३) ईदृगवस्थं। (४) निष्ठुरतयैव। (५) दूर एव सरस्तीरम्।

বারি দূরেঽদ্যাপি কলহংস-বিরুতমেতৎ, (১) অস্ফুটানি শ্রূয়ন্তে সারস-রসিতানি, অয়ঞ্চ (২) বিপ্রকর্ষাদাশামুখ-বিসর্পণ-বিরলঃ সঞ্চরতি নলিনী-ষণ্ড-পরিমলঃ। (ত)। দিবসস্যেয়মতিকষ্টা চ দশা (৩) বর্ত্ততে। তথাহি রবিরম্বর-তল-মধ্যবর্ত্তী স্ফুরন্তমাতপমনবরতমনল-ধূলিনিকরমিব বিকিরতি করৈঃ, অধিকামুপজনয়তি তৃষম্ (৪)। (থ)। আতপ-সন্তপ্ত-(৫) পাংশু-পটল-দুর্গমা ভূমিঃ, (৬) অতিপ্রবল-পিপাসাবসন্নানি গন্তুমল্পমপি মে নালমঙ্গকানি, অপ্রভুরস্ম্যাত্মনঃ, সীদতি মে হৃদয়ম্, অন্ধকারতামুপযাতি চক্ষুঃ, অপি নাম খলো বিধিরনিচ্ছতোঽপি মে মরণমদ্যৈব (৭) উপপাদয়েৎ। (দ)

যেতি তাৎপর্য্যম্, অন্যথা শুষ্ককণ্ঠো মৃতঃ পিতরমনুগচ্ছেয়মিতি ভাবঃ। অত্র হেতুহেতুমতোর্নিষ্টষতা-সলিলপানবুদ্ধ্যোরভেদেনাভিধানাৎ হেতুর্নামালঙ্কারঃ।

(ত) অদ্যাপীতি। অদ্যাপি ইদানীমপীত্যর্থঃ। এতৎ শ্রূয়মাণং কলহংসানাং বিরুতং রবঃ। অস্ফুটানি অস্পষ্টানি, সারসানাং পক্ষিণাং রসিতানি কণ্ঠশব্দাঃ। বিপ্রকর্ষাৎ দূরত্বাৎ, আশামুখেষু নানাদিক্ষু বিসর্পণেন প্রসরণেন বিরলঃ অল্পীভূতঃ, নলিনীষণ্ডপরিমলঃ পদ্মিনীসমূহসৌরভম্।

(থ) দিবসস্যেতি। অতিকষ্টা নিতান্তদুঃখকরী, দশা অবস্থা মধ্যাহ্নকাল ইত্যর্থঃ। করৈঃ কিরণৈঃ। অনলধূলিনিকরমিব অগ্নিস্ফুলিঙ্গসমূহমিব স্ফুরন্তং প্রকাশমানং। অত্রোপমালঙ্কারঃ। তৃষং তৃষ্ণাং জলপিপাসাম্।

(দ) আতপেতি। আতপেন রবিকিরণেন সন্তপ্তৈঃ পাংশুপটলৈঃ ধূলিসমূহৈঃ দুর্গমা দুঃসঞ্চরা। অতিপ্রবলয়া পিপাসয়া জলতৃষ্ণয়া অবসন্নানি জড়ীভূতানি মে মম অঙ্গকানি ক্ষুদ্রাণ্যঙ্গানি, অল্পার্থে কপ্রত্যয়ঃ। অল্পমপি গন্তুং ন অলং ন সমর্থানি। আত্মনঃ দেহস্য অপ্রভুরসমর্থঃ যথেচ্ছং পরিচালনায়ামক্ষমোঽস্মি। সীদতি অবসন্নং ভবতি। অন্ধকারতা অন্ধজনকত্বং অথবা স্বার্থে তল্প্রত্যয়াদন্ধকারমিত্যর্থঃ। অপিশব্দঃ প্রশ্নে। নামশব্দঃ সম্ভাবনায়াং। খলঃ ক্রূরস্বভাবঃ।

তুল্য এই কলহংসগণের রব এখনও দূরে শুনা যাইতেছে, সারসপক্ষিগণের রবও অস্পষ্ট শুনিতেছি, এই পদ্মবনের সৌরভও, দূর বলিয়া এবং চতুর্দ্দিকে বিস্তৃত হইয়া পড়ায় ক্রমে অল্প অল্প হইয়া আসিতেছে। (থ) দিনেরও এই অবস্থাটা (মধ্যাহ্নসময়) অত্যন্ত কষ্টকর ; কারণ— সূর্য্য আকাশের মধ্যবর্ত্তী হইয়া কিরণজালে অবিশ্রান্ত অগ্নিস্ফুলিঙ্গসমূহের ন্যায় প্রখর রৌদ্র বিস্তার করিতেছে, এবং প্রাণিগণের অত্যন্ত পিপাসা জন্মাইতেছে। (দ) রৌদ্রের উত্তাপে উত্তপ্ত ধূলিসমূহে ভূতল দুর্গম হইয়াছে, অত্যন্ত প্রবল পিপাসায় আমার সকল অঙ্গ অবসন্ন হইয়াছে, সুতরাং অঙ্গও চলিতে পারিতেছে না, আমিও ইচ্ছানুসারে দেহসঞ্চালন করিতে পারিতেছি না,

---

(১) ক্বচিৎ 'এতৎ' ইতি নাস্তি। (২) 'অয়ঞ্চ' ইত্যপি ক্বচিন্নাস্তি। (৩) ইয়ং কষ্টা দশা, অতিকষ্টা দশাঃ। (৪) তৃষাং। (৫) আতপসম্পর্কসন্তপ্ত...। (৬) ভূঃ। (৭) অদ্য, অত্র।

इत्येवं (१) चिन्तयत्येव मयि तस्मात् सरसो नातिदूरवर्त्तिनि (२) तपोवने जावालिर्नाम महातपा मुनिः प्रतिवसति स्म (३)। तत्तनयश्च हारीतनामा मुनि-कुमारकः (४) सनत्कुमार इव सर्वविद्यावदातचेताः, समान-वयोभि-(५) रपरैस्तपोधन-कुमारकैरनुगम्यमानस्तेनैव पथा द्वितीय इव भगवान् विभावसुरतितेजस्वितया दुर्निरीक्ष्य-मूर्त्तिः, उद्यतो दिवसकर-मण्डलादिवोत्कीर्णः, तडिद्भिरिव विरचितावयवः, तप्त-कनक-द्रवेणेव बहिरुपलिप्त-मूर्त्तिः, (ध) आपिशङ्गा-(६) वदातया देह-प्रभया स्फुरन्त्या सबालातपमिव दिवसं सदावानलमिव

(ध) इत्येवमिति। हारीतनामा मुनिकुमारकस्तदैव कमलसरः स्नातुमुपागमदिति वक्ष्यमाण-क्रिययाऽन्वयः। मुनिश्चासौ कुमारकश्चेति कर्म्मधारयः, न तु मुनेः कुमारक इति षष्ठीतत्पुरुषः, तथात्वे तत्तनयश्च मुनिकुमारक इति हारीतस्य पित्रन्तरप्रतीतिकारित्वाविवक्षितमतिकारितादोषः स्यादिति ध्येयम्। सनत् सर्वदा कुमारः कौमारव्रतावलम्बी, अथवा सनतो ब्रह्मणः कुमार इति सनत्कुमारो ब्रह्मणः पुत्रः। तथा च हरिवंशे— "यथोत्पन्नस्तथैवाहं कुमार इति विद्धि माम्। तस्मात् सनत्कुमारेति नामैतन्मे प्रतिष्ठितम्।" सर्वविद्याभिरवदातं निर्म्मलं चेतो यस्य सः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। द्वितीयो भगवान् विभावसुर्वह्निरिवेति द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। उद्यत उदयमानात् दिवसकरमण्डलात् सूर्य्यमण्डलात् उत्कीर्ण इव टङ्केन निर्म्माय उद्धृत इव। तडिद्भिर्विद्युद्भिः विरचितावयवो निर्म्मिताङ्ग इव। तप्तकनकद्रवेण सन्तप्तसुवर्णरसेन बहिः मूर्त्तेरेव बहिः उपलिप्ता मूर्त्तिर्यस्य स इव। इमास्तिस्र एव क्रियोत्प्रेक्षाः।

(न) आपिशङ्गेति। स्फुरन्त्या प्रकाशमानया, आपिशङ्गा ईषत्पिङ्गलवर्णा चासौ अवदाता निर्म्मला

আমার হৃদয় অবসন্ন হইয়া পড়িয়াছে; চক্ষু অন্ধকার দেখিতেছে; তবে কি আমার অনিচ্ছা-সত্ত্বেও খলস্বভাব বিধাতা অদ্যই আমার মৃত্যু সম্পাদন করিবেন ?।

(ধ) আমি এইরূপ মনে মনে চিন্তা করিতেছিলাম, এই সময়েই—সেই সরোবরের অনতিদূরবর্ত্তী তপোবনে জাবালিনামে মহাতপস্বী এক মুনি বাস করিতেছিলেন, তাঁহার পুত্র, সকল বিদ্যা শিক্ষা করায় সনৎকুমারের ন্যায় বিশুদ্ধচেতা হারীতনামে মুনিকুমার, সমবয়স্ক অন্যান্য মুনিকুমারগণের সহিত সেই পদ্মপরিপূর্ণ পম্পাসরোবরে স্নান করিবার জন্য সেই পথেই উপস্থিত হইলেন। মহাতেজস্বী বলিয়া দ্বিতীয় অগ্নির ন্যায় সেই হারীতের আকৃতির প্রতি দৃষ্টিপাত করা দুষ্কর ছিল; তাঁহার আকৃতি যেন উদয়মান সূর্য্যমণ্ডল হইতে খোদিত করিয়া বাহির করা হইয়াছিল; বিদ্যুৎদ্বারা যেন সমস্ত অঙ্গ নির্ম্মাণ করা হইয়াছিল; আর অগ্নির উত্তাপে তরলীকৃত সুবর্ণদ্বারা যেন তাঁহার শরীরের বাহিরে লেপন করা হইয়াছিল। (ন) প্রকাশমান ঈষৎ পিঙ্গলবর্ণ অথচ নির্ম্মল দেহকান্তিদ্বারা তিনি যেন সেই সময়কে নূতন-রৌদ্র-সমন্বিতের ন্যায় এবং বনকে যেন দাবানলসংযুক্তের ন্যায় দর্শন করাইতেছিলেন।

(१) एवं। (२) अदूरवर्त्तिनि। (३) प्रतिवसति। (४) तापसकुमारकः। (५) सवयोभिः।
(६) पिशङ्गावदातया।

বনমুপদর্শয়ন্, (ন) উত্তপ্ত-লোহ-লোহিনীনামনেক-তীর্থাভিষেক-পূতানামংসস্থলাবলম্বিনীনাং জটানাং (১) নিকরেণোপেতঃ, (প) স্তম্ভিত-শিখা-কলাপঃ, খাণ্ডব-বন-দিধক্ষয়া কৃত-কপট-বটু-বেশ ইব (২) ভগবান্ পাবকঃ, (ফ) তপোবন-দেবতা-নূপুরানুকারিণা ধর্ম্মশাসন-কটকেনেব স্ফাটিকেনাক্ষবলয়েন দক্ষিণ-শ্রবণাবলম্বিনা (৩) বিরাজমানঃ, (ব) সকল-বিষয়োপভোগ-নিবৃত্ত্যর্থমুপপাদিতেন (৪) ললাটপট্টকে (৫) ত্রিসন্ধ্যেনেব ভস্ম-ত্রিপুণ্ড্রকেণালঙ্কৃতঃ, (ভ)

ষেতি তথা দীপ্তপ্রভয়া, দিবসং তত্সময়মিত্যর্থঃ সবালাতপমিব নূতনসূর্য্যালোকসহিতমিব, বনং তত্তরণ্যং সদাবানলমিব বনবহ্নিনা সহিতমিব, উপদর্শয়ন্ লোকানিতি শেষঃ। অথ গুণোৎপ্রেক্ষাদ্বয়ম্।

(প) উত্তপ্তেতি। উত্তপ্তলোহবৎ লোহিনীনাং, রক্তবর্ণানাং অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ। অনেকেষু তীর্থেষু গঙ্গাদিষু অভিষেকেণ স্নানেন পূতানাং পবিত্রীকৃতানাং, অংসস্থলাবলম্বিনীনাং স্কন্ধদেশলম্বমানানাং জটানাং নিকরেণ সমূহেন উপেতো বিশিষ্টঃ।

(ফ) স্তম্ভিতেতি। স্তম্ভিতো বদ্ধঃ শিখাকলাপো যেন সঃ। খাণ্ডবেতি। খাণ্ডববনস্য দিধক্ষয়া দগ্ধুমিচ্ছয়া, কৃতঃ কপটেন ছলেন বটুবেশো ব্রাহ্মণরূপং যেন সঃ, পাবকো বহ্নিরিব তেজস্বিমূর্ত্তিরিত্যর্থঃ। উপমালঙ্কারঃ। পুরা কিল শ্বেতকিনাম্নো মহীপতের্দ্বাদশবার্ষিকে যজ্ঞে সততহবির্ভক্ষণেন সঞ্জাতমন্দাগ্নি-রগ্নিস্তৎপ্রতিচিকীর্ষয়া ব্রহ্মোপদিষ্টেন বিবিধমহৌষধিপূর্ণং খাণ্ডববনমত্তুমিচ্ছন্ ব্রাহ্মণবেশেন কৃষ্ণার্জ্জুনয়োঃ সাহায্য-মবলম্ব্য তদ্বনং দদাহেতি মহাভারতবার্ত্তা।

(ব) তপোবনেতি। ধর্ম্মশাসনস্য গুরুকৃতধর্ম্মোপদেশস্য কটকং রক্ষার্থং মণ্ডলাকারাবস্থিতং সৈন্যং তেনেব। যথা রাজ্ঞো রক্ষণায় দুর্গাদিভির্মণ্ডলাকারৈঃ সৈন্যমবতিষ্ঠতে তথা দক্ষিণকর্ণে গুরুভিরুপদিষ্টস্য ধর্ম্মস্য রক্ষণায় সৈন্যেনেবাক্ষবলয়েনাবস্থিতমিতি ভাবঃ। "সেনায়ামপি কটক"মিতি হলায়ুধঃ। স্ফাটিকেন স্ফটিক-নির্ম্মিতেন দক্ষিণশ্রবণাবলম্বিনা দক্ষিণকর্ণবর্ত্তিনা, অক্ষবলয়েন বলয়াকারজপমালয়া। অত্রার্থোপমাজাত্যুৎ-প্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ভ) সকলেতি। সকলানাং বিষয়াণাং স্রক্চন্দনবনিতাদীনাং ভোগ্যবস্তূনাং উপভোগনিবৃত্ত্যর্থং উপপাদিতেন কৃতেন, ত্রয়াণাং সন্ধানাং শপথানাং সমাহার ইতি ত্রিসন্ধ্যং পাত্রাদিত্বাৎ ঙীপ্রত্যয়াভাবঃ তেনেব, 'নাহং

(প) প্রজ্বলিত লৌহের ন্যায় রক্তবর্ণ এবং বহুতর তীর্থস্নানে পবিত্র জটাসমূহ, তাঁহার স্কন্ধদেশে লম্বিত ছিল; (ফ) এবং শিখাসমূহ বদ্ধ ছিল, খাণ্ডববন দগ্ধ করিতে ইচ্ছা করিয়া ছলক্রমে ব্রাহ্মণবেশধারী ভগবান্ অগ্নির ন্যায় তাঁহার আকৃতি তেজঃপুঞ্জময় ছিল। (ব) তপোবনের অধিষ্ঠাত্রী দেবীর নূপুরের তুল্য স্ফটিকনির্ম্মিত জপমালা, ধর্ম্মোপদেশের রক্ষার নিমিত্ত মণ্ডলাকারে অবস্থিত সৈন্যগণের ন্যায় দক্ষিণ কর্ণে লম্বিত থাকায় তিনি শোভা পাইতেছিলেন। (ভ) সমস্ত ভোগ্য বস্তুর উপভোগ-নিবৃত্তির জন্য 'আমি ভোগ করিব না' এইরূপ তিনবার প্রতিজ্ঞার তিনটি

---

(১) জটাবলীনাং। (২)…পটুবেষ ইব। (৩)…অনুলম্বিনা, বিলম্বিনা। (৪) উৎপাদিতেন।
(৫) ললাটপট্টে।

গগন-গমনোন্মুখ-বলাকানুকারিণা স্বর্গ-মার্গমিব (১) দর্শয়তা সততমুদ্-গ্রীবেণ স্ফাটিক-মণি-(২) কমণ্ডলুনাধ্যাসিত-বাম-করতলঃ, (ম) স্কন্ধদেশা-বলম্বিনা কৃষ্ণাজিনেন নীল-পাণ্ডুভাসা তপস্তৃষ্ণানিপীতেনান্তর্নিষ্পতনা (৩) ধূম পটলেনেব পরীত-মূর্ত্তিঃ, (য) অভিনব-বিস-সূত্র-নির্ম্মিতেনেব পরিলঘুতয়া পবনলোলেন নির্ম্মাংস-বিরল-পার্শ্বাস্থিপঞ্জরমিব (৪) গণয়তা বামাংসাবলম্বিনা যজ্ঞোপবীতেনোল্লাসমানঃ, (র) দেবতার্চ্চনার্থমাকৃষ্টোত-বনলতা-কুসুম-পরিপূর্ণ-

---

ভোগং কুর্ব্বীয়, নাহং ভোগং কুর্ব্বীয়, নাহং ভোগং কুর্ব্বীয়' ইতি শপথত্রয়চিহ্নমেবেত্যর্থঃ। ললাটপট্টকে ভালফলকে, ভস্মনস্ত্রিপুণ্ড্রকং তির্য্যক্ রেখাত্রয়ং তেন। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ম) গগনেতি। গগনগমনায় উৎপতনায় উন্মুখী যা বলাকা বকস্তামনুকর্তুং শীলং যস্য তেন। স্বর্গস্য মার্গং গমনপথং দর্শয়তেব উদ্গ্রীবত্বাদিতি ভাবঃ। অধ্যাসিতং আশ্রিতং বামকরতলং যস্য সঃ। অত্রার্থো-পমাক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(য) স্কন্ধেতি। তপস্তৃষ্ণয়া তপো মে বর্দ্ধতামিত্যভিলাষেণ। নিপীতেন নিষেবিতেন, পুনরন্তর্নিষ্পততা উদরমধ্যান্নির্গচ্ছতা ধূমপটলেনেব ধূমসমূহেনেন স্থিতেন। নীলা অসিতা পাণ্ডুঃ সিতা চ ভা দ্যুতির্যস্য তেন, কৃষ্ণাজিনেন কৃষ্ণসারচর্ম্মণা পরীতমূর্ত্তিঃ পরিবেষ্টিতদেহঃ। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(র) অভীতি। অভিনবৈর্নূতনৈঃ বিসসূত্রৈর্মৃণালতন্তুভিঃ নির্ম্মিতেনেব বিহিতেনেব নিতান্তসূক্ষ্মত্বাদিতি ভাবঃ। পরিলঘুতয়া নিতান্তভারহীনতয়া পবনলোলেন বায়ুনা চলিতেন, অতএব নির্ম্মাংসং প্রায়শোপবাসাদি-বশাৎ মাংসরহিতং, সুতরাং বিরলং সান্তরং পৃথক্ পৃথগ্ভাবেনোপলক্ষ্যমাণং যৎ পার্শ্বাস্থিপঞ্জরং পার্শ্বাস্থিসমূহঃ, তৎ গণয়তা তৎ সংখ্যানং কুর্ব্বতেব, বামে অংসে স্কন্ধে অবলম্বতে উপর্য্যবতিষ্ঠত ইতি তেন, যজ্ঞোপবীতেন উল্লাসমানো দীপ্যমানঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োর্মিথো নিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ। যজ্ঞোপবীতিনো লক্ষণমাহ গোভিলঃ—"দক্ষিণং বাহুমুদ্ধৃত্য শিরোঽবধায় সব্যেংসে প্রতিষ্ঠাপয়তি দক্ষিণং কক্ষমবলম্বং ভবতীত্যেবং যজ্ঞোপবীতী ভবতি।"

চিহ্নের ন্যায় ললাটদেশে ভস্মদ্বারা অঙ্কিত ত্রিপুণ্ড্রকে তিনি অলঙ্কৃত ছিলেন। (ম) আকাশে উড্ডীন হইবার জন্য উন্মুখ বকপক্ষীর ন্যায় সর্ব্বদা উদ্গ্রীব স্ফটিকনির্ম্মিত একটি কমণ্ডলু তাঁহার বামহস্তে থাকিয়া যেন স্বর্গে যাইবার পথপ্রদর্শন করাইতেছিল। (য) নীল ও পাণ্ডুবর্ণ স্কন্ধদেশস্থিত একখানা কৃষ্ণসারের চর্ম্মে তাঁহার দেহ পরিবেষ্টিত ছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, তপস্যাবৃদ্ধির অভিলাষে তিনি যে ধূমসমূহ পান করিয়াছিলেন, তাহা উদরের অভ্যন্তর হইতে নির্গত হইয়া শরীর পরিবেষ্টন করিতেছে। (র) একটি যজ্ঞোপবীত, হারীতের বামস্কন্ধের উপরিভাগ হইতে লম্বিত ছিল, অত্যন্ত সূক্ষ্ম বলিয়া তাহা যেন নূতন মৃণাল-সূত্রদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল, আর নিতান্ত লঘু হাল্কা বলিয়া সেই যজ্ঞোপবীতটি বায়ুভরে কম্পিত হইতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যেন সেই যজ্ঞোপবীত,

---

(১)...অনুকারিস্বর্গমার্গমিব। (২) স্ফাটিক...। (৩) অন্তরপগচ্ছতা, অন্তর্নিষ্পতনা।
(৪) পার্শ্বপঞ্জরমিব।

पर्णपुट-सनाथ-शिखरेणाषाढ़दण्डेन व्यापृत-सव्येतर-पाणिः, (ख) विषाण-शिखरोत्खाता-(१) मुद्वहता स्नानमृदमुपजात-परिचयेन नीवारमुष्टि-संवर्द्धितेन कुश-कुसुम-लतायास्यमान-(२) लोल-दृष्टिना तपोवनमृगेणानुगम्यमानः, (३) (ग) विटप इव कोमल-वल्कलावृत-(४) शरीरः, गिरिरिव समेखलः, राहुरिवासकृदास्वादित-सोमः, पद्म-निकर इव दिवसकर-(५) मरीचिपः, नदी-तट-तरुरिव सतत-

---

(ख) देवतेति। देवतानामर्च्चनार्थं आगृहीतैः समन्तात् सञ्चितैः वनलतानां कुसुमैः परिपूर्णं भृतं यत् पर्णपुटं तेन सनाथं सहितं शिखरं उपरिदेशो यस्य तेन, आषाढ़दण्डेन पलाशवृक्षनिर्म्मितदण्डेन "पलाशो दण्ड आषाढ़" इत्यमरः। "ब्राह्मणो बैल्वपालाशौ" इति मनुवचनादिति भावः। व्यापृतो व्यासक्त आश्रितः सव्येतरो दक्षिणः पाणिर्यस्य सः।

(ग) विषाणेति। विषाणशिखरेण शृङ्गाग्रेण उत्खातामुद्धृतां स्नानमृदं हारीतस्यैव स्नानमृत्तिकां उद्वहता शृङ्गाग्रेणैव धारयता, उपजातः परिचयः अहिंसाकरत्वेन विशेषज्ञानं यस्य तेन, नीवारमुष्टिभिः मुष्टिपरिमितमुनिधान्यैः प्रत्यहं तदर्पणैरित्यर्थः संवर्द्धितः परितोषितस्तेन, कुशकुसुमलताभिः उभयपार्श्ववर्त्तिनीभिरित्यर्थः आयास्यमाने संस्पर्शात् क्लिश्यमाने अतएव लोले चञ्चले दृष्टी चक्षुषी यस्य तेन।

(घ) विटप इति। विटपो वृक्षशाखेव, कोमलेन कोमलत्वादेव परिधानयोग्येनेति भावः, अन्यत्र मूलादिदेशाप्युद्गतेन वल्कलेन त्वचा आवृतं शरीरं यस्य सः। इतः प्रभृति मधुकर इत्यन्तं यावत् सर्व्वत्र द्व्यर्थकारमते पूर्णोपमालङ्कारः। अपरेषां मते तु श्लेषोपमा। गिरिः पर्व्वत इव, मेखलया मुञ्जनिर्म्मितकटिसूत्रेण मध्यभागेन च सह वर्त्तत इति समेखलः। राहुः सैंहिकेय इव, असकृत् बहुवारान् आस्वादितः यज्ञकाले पीतः पूर्णिमासु यज्ञस्य सोमः सोमरसः चन्द्रश्च येन सः। पद्मनिकरो जलजसमूह इव, दिवस-

---

হারীতের মাংসহীন বিরল (ফাঁক্ ফাঁক্ করা) পার্শ্বাস্থিসমূহ গণনা করিতেছিল। (খ) হারীতের দক্ষিণ হস্তে একখানি পলাশের দণ্ড ছিল, তাহার উপরিভাগে, দেবতাপূজার জন্য সংগৃহীত বনলতার কুসুমসমূহে পরিপূর্ণ একটি পত্রপুটক (পাতার ঠোঙা) বদ্ধ ছিল। (গ) প্রতিদিন বহুবার মুষ্টিপরিমিত উড়ীধান্য দ্বারা যাহাকে সংবর্দ্ধিত করা হইয়াছিল, তাহাতেই পরিচিত সেই তপোবনের হরিণ হারীতের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতেছিল; সেই হরিণ, হারীতের স্নানের নিমিত্ত শৃঙ্গের অগ্রের দ্বারা উদ্ধৃত মৃত্তিকা বহন করিয়া নিয়া যাইতেছিল, আর পথের উভয় পার্শ্বের কুশ ও পুষ্পলতার সংস্পর্শে সেই হরিণের নেত্র, বেদনা পাইয়া চঞ্চল হইতেছিল। (ঘ) বৃক্ষের শাখার ন্যায় হারীতের শরীর কোমল বল্কলে আবৃত ছিল; পর্ব্বতের ন্যায় হারীতেরও মেখলা ছিল; রাহু যেমন অনেকবার চন্দ্র গ্রাস করিয়া থাকে, হারীতও তেমন অনেকবার সোমরস পান করিয়াছিলেন; পদ্মসমূহের ন্যায় হারীত পঞ্চাগ্নি-তপস্যার সময় সূর্য্যরশ্মি পান করিতেন; সর্ব্বদা স্রোতোজলের প্রক্ষালনে নদীতীরস্থ বৃক্ষ-

---

(१) विषाणोत्खाता। (२)...उपायस्यमान। (३) अनुयातः।
(४) वल्कावृत...। (५) दिनकर...।

जल-क्षालन-विमल (१) जटः, करि-कलभ (२) इव विकच-कुमुद-दल-शकल-सित-दशनः, द्रौणिरिव कृपानुगतः, नक्षत्रराशिरिव, चित्रमृग-कृत्तिकाश्लेषो-पशोभितः, घर्म्मकाल-दिवस इव क्षयित-दोषः, (३) जलधर-समय इव प्रशमित-रजःप्रसरः, वरुण इव कृतोदकवासः, हरिरिवापनीत-नरकभयः, प्रदोषारम्भ इव

करस्य सूर्य्यस्य मरीचीन् रश्मीन् पिबति "ग्रीष्मे पञ्चाग्निमध्यस्थो वर्षासु स्थण्डिलेशयः।" इति स्मृते-रेकत्र ऊर्द्धमुखः सन् वसते अन्यत्र पूर्णविकाशात् स्पृशतीति मरीचिपः। नदीतटतरुरिव सरित्तीरस्थवृक्ष इव सततजलक्षालनेन त्रिसन्ध्यमवगाहनेन विमला अरजस्का जटा लम्बकचा यस्य सः, पक्षे सततजलक्षालनेन सर्वदा स्रोतोजलप्रक्षालनेन विमला मृत्तिकाहीना जटा मूलं यस्य सः। "जटा लम्बकचे मूले प्लक्षमांसिकयो-र्जटी।" इति विश्वः। करिकलभो हस्तिशावक इव, विकचं प्रस्फुटितं यत् कुमुदं कैरवं तस्य दलशकल-वत् पत्रखण्डवत् सिताः शुभ्राः दशना दन्ता दन्तौ च यस्य सः। इदमुभयत्रापि समानम्। द्रोणस्यापत्यं पुमानिति द्रौणिरश्वत्थामा स इवः, कृपां दयां अनुगतः प्राप्तः सर्वत्र दयान्वित इत्यर्थः, पक्षे कृपेण कृपाचार्य्येण अनुगतः युद्धादावनुसृतः। नक्षत्राणां राशिः समूह इव, चित्रमृगस्य विचित्रहरिणस्य कृष्णसारस्य या कृत्तिका कृत्तिश्चर्म्म तस्य आश्लेषेण संयोगेन धारणेन उपशोभितः, पक्षे चित्रं चित्रा चतुर्दशं नक्षत्रं, मृगं मृगशिरः पञ्चमं नक्षत्रं, कृत्तिका तृतीयं नक्षत्रं, अश्लेषा नवमं नक्षत्रं, तैरुपशोभितः। घर्म्मकालस्य ग्रीष्मकालस्य दिवस इव, क्षयिताः सञ्जातक्षयाः दोषाः कामादयो यस्य सः, पक्षे क्षयिता सञ्जातक्षया दोषा रात्रिर्यस्य सः। "दोषा रात्रिमुखे रात्रावकानव्ययमप्यसौ।" इति विश्वः। जलधरसमयो वर्षाकाल इव, प्रशमितो योगाभ्यासेन निवारितो रजःप्रसरो रजोगुणव्यापारः कामादिर्येन सः, पक्षे प्रशमितो वृष्टिपातेन निवारितो रजःप्रसरो धूलिसमूहो येन तस्मिन् वा सः। वरुण इव कृत उदके जले वासोऽवस्थानं येन सः, एकत्र तपस्याविशेष-रूपत्वात् अन्यत्र जलदेवतात्वादिति भावः। "उदकस्योदः पेषवासे"त्यादिना उदादेशः। हरिः कृष्ण इव, अपनीतं दूरीकृतं नरकभयं निरयगमनभीतिः नरकासुरभीतिश्च येन सः, एकत्र सततंतपश्चरणात् अन्यत्र

মূল যেমন নির্ম্মল হয়, তিন বেলা অবগাহন করায় হারীতের জটাগুলিও তেমন নির্ম্মল হইয়াছিল; হস্তিশাবকের ন্যায় হারীতের দন্তগুলি, প্রস্ফুটিত কুমুদের (সাপলার) পত্রখণ্ডের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল; কৃপাচার্য্য যেরূপ সর্ব্বদা অশ্বত্থামার পশ্চাদ্ভাগে থাকিতেন, হারীতের চিত্তেও সেইরূপ সর্ব্বদা দয়া ছিল; নক্ষত্রসমূহ যেমন চিত্রা, মৃগশিরা, কৃত্তিকা ও অশ্লেষা নক্ষত্রদ্বারা শোভিত হয়, হারীতও তেমন বিচিত্র হরিণের চর্ম্ম ধারণ করায় শোভিত ছিলেন; গ্রীষ্মের দিনে যেমন রাত্রি ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়া যায়, হারীতেরও তেমন রাগদ্বেষাদি দোষ ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়াছিল; বর্ষাকাল যেমন বৃষ্টিদ্বারা ধূলিসমূহ প্রশমিত করে, হারীতও তেমন যোগাভ্যাসদ্বারা কামক্রোধাদি প্রশমিত করিয়াছিলেন; বরুণ যেমন জলে বাস করেন, তিনিও তেমন জলে বাস করিয়াছিলেন; কৃষ্ণ যেমন নরকাসুরকে বধ করিয়া তাহার ভয় নিবারণ করিয়াছিলেন, হারীতও তেমন সর্ব্বদা তপস্যা করিয়া নরকে যাইবার ভয় নিবারণ করিয়াছিলেন;

(१) विरल...। (२)...कलभः। (३) क्षपितवसुदोषः।

सन्ध्या-पिङ्गल-(१) तारकः, प्रभातकाल इव बालातप-कपिलः, रवि-रथ इव दृढ़-नियमिताक्षचक्रः, सुराजेव निगूढ़-मन्त्र-साधन-क्षपित-(२) विग्रहः, जलनिधिरिव (३) कराल-शङ्खमण्डलावर्त्त-नाभिगर्त्तः, (४) भगीरथ इव दृष्ट-गङ्गावतारः (५) मधुकर (६) इवासकृदनुभूत-पुष्कर-वनवासः, (घ) वनचरोऽपि कृत-महालय-

तत्रधादिति भावः। प्रदोषो रजनीमुखं तस्य आरम्भः प्राक्काल इव, सन्ध्यावत् पिङ्गली पिङ्गलवर्णौ तारके कनीनिके यस्य सः। महापुरुषलक्षणमेतत्। तथा च सामुद्रके—"क्षुद्रोऽपि चक्रवर्त्ती स्यात् पीततारकचक्षुषि।" पक्षे सन्ध्यया सन्ध्याकालवर्णेन पिङ्गलास्तारका नक्षत्राणि यत्र सः। प्रभातकाल इव, बालातपवत् नूतनसूर्य्यालोकवत् कपिलः पिङ्गलवर्णः, अन्यत्र तु बालातपेन कपिलः। रवेः सूर्य्यस्य रथ इव, दृढं यथा स्यात्तथा नियमितं व्यवस्थापितं निगृहीतं अक्षचक्रं इन्द्रियसमूहो येन सः, अन्यत्र तु दृढं नियमितानि बद्धानि अक्षो धुरौ मध्यदण्डो रथाङ्गानि च यत्र सः। शोभनो राजा इति सुराजा "न पूजनात्" इति "स्वतिभ्यां पूजायां प्राग्वहुव्रीहे"रिति अदन्ततानिषेधः, स्वकार्य्यदक्षो नृपतिः स इव, निगूढं गुप्तं यत् मन्त्रसाधनं इष्टदेवतामन्त्रोपासनं तेन क्षपितः श्रमोपवासादिबाहुल्यात् क्षीणीकृतः विग्रहः शरीरं येन सः, राजपक्षे तु निगूढेन गुप्तेन मन्त्रसाधनेन मन्त्रणाकरणेन क्षपितः प्रशमितो विग्रहो युद्धं येन सः। जलधिः समुद्र इव, करालो दन्तुर उन्नतावनतो यः शङ्खः तस्य मण्डलावर्त्तवत् मण्डलाकारभ्रमिवत् नाभिगर्त्तो यस्य सः, जलधिपक्षे तु करालशङ्खः वृहच्छङ्खः मण्डलावर्त्ता मण्डलाकारेण जलभ्रमिश्च नाभिगर्त्त इव यत्र सः। भगीरथ इव दृष्टो गङ्गाया अवतारोऽवतरणस्थानं हरिद्वारं स्वर्गान्निपतनञ्च येन सः। मधुकरो भ्रमर इव, असकृदनेकवारान् अनुभूतः तपस्यार्थं प्रत्यक्षीकृतः, पुष्करे तदाख्यतीर्थे वने महारण्ये च वासोऽवस्थानं येन सः, पक्षे मधुपानार्थमसकृदनुभूतः पुष्करवने पद्मवने वासो येन सः।

(घ) वनेति। वनचरोऽपि वनवासी सन्नपि, कृतो महालयेषु अट्टालिकासु प्रवेशो येन स इति

प्रदोषारम्भকালে নক্ষত্রসমূহ যেমন সন্ধ্যারাগে পিঙ্গলবর্ণ থাকে, তাঁহার নয়নের তারাযুগলও তেমন সন্ধ্যাকালের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ ছিল; প্রাতঃকাল যেমন নূতনরৌদ্রে পিঙ্গলবর্ণ হইয়া যায়, হারীতও তেমন স্বকীয়তেজে নূতন রৌদ্রের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিলেন; সূর্য্যের রথে যেমন অক্ষদণ্ড ও চক্র সকল দৃঢ়রূপে আবদ্ধ আছে, হারীতের ইন্দ্রিয় সমূহও তেমন দৃঢ়ভাবে আবদ্ধ (নিগৃহীত) ছিল; কার্য্যদক্ষ রাজা যেমন গুপ্তভাবে মন্ত্রণা করিয়া যুদ্ধের নিবৃত্তি করিয়া থাকেন, হারীতও তেমন গুপ্তভাবে ইষ্টমন্ত্রের উপাসনা করিয়া শরীর ক্ষয় করিয়াছিলেন; সমুদ্রে যেমন মনুষ্যের নাভিরন্ধ্রের ন্যায় বাহিরে মণ্ডলাকারে আবর্ত্ত (ঘোলা) এবং তাহার মধ্যে একটি বৃহৎ শঙ্খ থাকে, হারীতেরও তেমন অসমান শঙ্খপুচ্ছের ন্যায় ঘোলাকার নাভিগর্ত্ত ছিল; ভগীরথ যেমন ভূতলে গঙ্গার অবতরণ দেখিয়াছিলেন, হারীতও তেমন গঙ্গার অবতরণস্থান হরিদ্বার দেখিয়াছিলেন; ভ্রমর যেমন মধুপানের নিমিত্ত পদ্মবনে বাস করে, হারীতও তেমন তপস্যার নিমিত্ত পুষ্করতীর্থে ও মহারণ্যে বাস করিয়াছিলেন।

(१)...पिङ्गल...। (२)...क्षपित...। (३) जलनिधिरिव। (४)...आवर्त्तगर्त्तः।
(५) अवतारदृष्ट...। (६) भ्रमरः।

प्रवेशः, (ष) असंयतोऽपि मोक्षार्थी, (स) सामप्रयोगपरोऽपि सततावलम्बित-दण्डः, (ह) सुप्तोऽपि प्रबुद्धः, (क्ष) सन्निहित-नेत्रद्वयोऽपि परित्यक्त-वामलोचनस्तदेव कमलसरः सिस्नासुरुपागमत्। (क)

प्रायेणाकारण-मित्राण्यतिकरुणार्द्राणि च (१) सदा खलु भवन्ति सतां

विरोधः, अतो योगाभ्यासेन विहितः महालये परमात्मनि प्रवेशो ज्ञानगोचरता येन स इति तत्समाधानम्। अत्र प्रभृति सन्निहितेत्यादिवाक्यान्तं यावत् सर्वत्र श्लेषानुप्राणितो विरोधाभासोऽलङ्कारः। "महालयो विहारे स्यात् तीर्थे च परमात्मनि।" इति मेदिनी।

(स) असमिति। असंयतोऽपि अबद्धोऽपि मोक्षार्थीति, मोक्षस्य बन्धसापेक्षत्वात् बन्धाभावे च सतो मुक्तस्य मुक्त्यर्थितानुपपत्तेर्विरोधः, तत्समाधानपक्षे तु असंयतोऽपि तदानीं संयमरहितोऽपि मोक्षार्थी भाविनि काले संयमावलम्बनान्मुमुक्षुरित्यर्थः। धारणा ध्यानं समाधिरिति योगाङ्गत्रयस्यैव संयम इति संज्ञा। तथा च पातञ्जलसूत्राणि—'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा" "तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानं" "तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः" "त्रयमेकत्र संयमः" इति। संयमेन मोक्षलाभस्तु तत्रैवानुसन्धेय इति संक्षेपः।

(ह) सामेति। सामप्रयोगपरोऽपि सामाख्यप्रथमोपायानुष्ठानपरायणोऽपि सततमवलम्बितो दण्डश्चतुर्थोपायो येन स इति विरोधः, सामवेदोक्तानुष्ठानपरायणोऽपि सततावलम्बितयष्टिक इति तत्समाधानम्।

(क्ष) सुप्त इति। सुप्तो निद्रितोऽपि प्रबुद्धो जागरित इति विरोधः, सुप्तो निद्रितावस्थावद्बाह्यज्ञानरहितोऽपि प्रबुद्धः परमात्मविषयकप्रकृष्टज्ञानवानिति तत्समाधानम्। व्याख्यान्तराणि तु कष्टकल्पना-बलादनादेयानीति सुधीभिर्भाव्यम्।

(क) सन्नीति। सन्निहितं मुखे आसन्नं नेत्रद्वयं यस्य तादृशः सन्नपि, परित्यक्तं वामं सव्यं लोचनं नेत्रं येन स इति विरोधः, परित्यक्ता वामलोचना कामिनी तत्संसर्ग इत्यर्थः येन सः, ब्रह्मचारित्वादिति भावः। इति तत्समाधानम्। तदेव पम्पाभिधानं कमलसरः पद्ममयसरोवरं, सिस्नासुः स्नातुमिच्छुः सन् उपागमत् तत्रैवोपस्थितवान्।

(ষ) হারীত বনচর হইয়াও উৎকৃষ্ট অট্টালিকায় প্রবেশ করিয়াছিলেন; (বনে বাস করিয়া পরমাত্মাকে জ্ঞানগোচর করিয়াছিলেন;) (স) তিনি বদ্ধ না হইয়াও মুক্তির প্রার্থী ছিলেন; (তৎকালে সংযম না করিলেও পরবর্ত্তী কালে সংযম করিয়া মুক্তিলাভ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন;) (হ) হারীত সামপ্রয়োগে আসক্ত থাকিয়াও সর্ব্বদা দণ্ড প্রয়োগ করিতেন; (সামবেদোক্ত কার্য্যের অনুষ্ঠান করিতেন আর সর্ব্বদা যষ্টি ধারণ করিতেন;) (ক্ষ) তিনি নিদ্রিত হইয়াও জাগরিত ছিলেন; (নিদ্রিতের ন্যায় বাহ্যজ্ঞানরহিত ছিলেন এবং পরমাত্মাতে প্রকৃষ্ট জ্ঞানলাভ করিয়াছিলেন;) (ক) নিজমুখমণ্ডলে দুইটি নেত্র থাকিলেও হারীত, বামনেত্র ত্যাগ করিয়াছিলেন; (স্ত্রীসংসর্গ ত্যাগ করিয়াছিলেন)।

(খ) প্রায় সাধুজনের চিত্তই, বিনা কারণে সর্বদার জন্য পরের হিতৈষী এবং অত্যন্ত

---

(१) क्वचित् अकारो नास्ति।

-र्द्रेतांसि। यतः स मां तदवस्थमालोक्य समुपजातकरुणः (१) समीपवर्त्तिन-(२) ऋषि-कुमारकमन्यतममब्रवीत्—(ख) "अयं कथमपि शुक-शिशुरसञ्जात-पक्षपुट एव तरु-शिखरादस्मात् परिच्युतः। श्येन-मुख-परिभ्रष्टेन वाऽनेन भवितव्यम्। तथाह्यस्याल्पशेषं जीवितम्, (३) अयमामीलित-लोचनो मुहुर्मुहुरत्युल्वणं श्वसिति, (४) मुहुर्मुहुर्मुखेन पतति, मुहुर्मुहुश्चञ्चुपुटं विवृणोति, न शक्नोति शिरोधरां धारयितुं। तदेहि यावदेवायमसुभिर्न वियुज्यते (५) तावदेव गृहाणैनं (६) अवतारय सलिलसमीपम्" इत्यभिधाय तेन मां सरस्तीरमनाययत्। (ग)

उपसृत्य च जल-समीपमेकदेश-निहित-दण्ड-कमण्डलुरादाय स्वयं मां मुक्त-प्रयत्नं (७) उत्तानित-मुखं (८) अङ्गुल्या कतिचित् सलिल-विन्दूनपाययत्। (घ)

(ख) प्रायेणेति। स हारीतः। सा अवस्था विहतपूर्वा दशा यस्य तम्। अत्र विशेषेण सामान्य-समर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ग) अयमिति। कथमपि केनापि अनिर्द्दिष्टकारणेन। अस्मात् दृश्यमानात् तरुशिखरात् वृक्षा-ग्रात् परिच्युतो निपतितः। अस्य शुकशिशोः जीवितं आयुः, अल्पः शेषो यस्य तादृशं। आयुषोऽल्पशेषत्वे व्यञ्जकं प्रदर्शयति अयमिति। अयं शुकशिशुः। आमीलितलोचनः मुद्रितनयनः। अत्युल्वणं नितान्तदीर्घं यथा स्यात्तथा। मुखेन पूर्वकायेन। विवृणोति व्याददाति। शिरोधरां ग्रीवां। धारयितुं सरलभावेनेति शेषः, मस्तकमुत्तोलयितुं न शक्नोतीत्यर्थः। असुभिः प्राणैः। तेन समीपवर्त्तिना ऋषिकुमारेण प्रयोज्यकर्त्रा।

(घ) उपेति। एकस्मिन् देशे स्थाने निहितौ स्थापितौ दण्डकमण्डलू येन स तथोक्तो हारीतः स्वयं

দয়ার্দ্র হইয়া থাকে; যে হেতু, সেই অবস্থায় আমাকে দেখিয়া হারীতের দয়া জন্মিল, তিনি নিকটবর্ত্তী কোন ঋষিকুমারকে বলিলেন—(গ) "এই শুকশাবকটির পাখা উঠে নাই, এ, কোন কারণে এই বৃক্ষের উপর হইতে পড়িয়া গিয়াছে; অথবা এই শাবকটি শ্যেন পক্ষীর মুখ হইতে পতিত হইয়া থাকিবে। দেখ, ইহার আয়ু অল্পমাত্র অবশিষ্ট আছে; কারণ—এ, নয়ন মুদ্রিত করিয়া মুহুর্মুহুঃ অতিদীর্ঘ নিশ্বাস ত্যাগ করিতেছে, বার বার সম্মুখে পড়িয়া যাইতেছে, মুহুর্মুহুঃ চঞ্চুদ্বয় বিবৃত (হাঁ) করিতেছে, মস্তক উত্তোলন করিতে পারিতেছে না; অতএব আইস, যে পর্য্যন্ত ইহার প্রাণবিয়োগ না হয়, ইহার মধ্যে উহাকে ধর এবং জলের নিকট লইয়া যাও" এই কথা বলিয়া সেই ঋষিকুমারদ্বারা আমাকে সরোবরতীরে লইয়া গেলেন।

(ঘ) ঋষিকুমার হারীত জলের নিকট যাইয়া দণ্ড ও কমণ্ডলু এক দিকে রাখিয়া নিজেই নিশ্চেষ্টপ্রায় আমাকে ধরিয়া আমার মুখ উত্তোলন পূর্ব্বক অঙ্গুলীদ্বারা আমাকে কয়েক বিন্দু

(१)...हृदयः। (२) समीपतरवर्त्तिनं। (३) तथाहि अतिदवीयसया प्रपातस्याल्पशेषजीवितः। (४) निःश्वसिति। (५) विमुच्यते। (६) शनं। (७) आमुक्तप्रयत्नं। (८) उन्नमितमुखं, उत्तानितमन्मुखं।

अम्भःक्षोदकृतसेकञ्च समुपजात-प्रज्ञं (१) उपतट-प्ररूढ-नलिनी-पलाशस्य (२) जलशिशिरायां छायायां निधाय यथासमुचित-(३) मकरोत् स्नानविधिम्। (ङ) अभिषेकावसाने चानेकप्राणायामपूतोऽपि जपन्नघमर्षणानि (४) प्रत्यग्रभग्नै-रुन्मुखो रक्तारविन्दैर्नलिनीपत्र-पुटेन भगवते सवित्रे दत्त्वार्घ-(५) मुदतिष्ठत्। (च) आगृहीत-धौत-(६) धवल-वल्कलस्स सज्योत्स्न इव (७) सन्ध्यातपः करतल-निर्धू-

---

आदाय मां धृत्वा, मुक्तप्रयत्नः प्रयत्नः जलपाने प्रवृत्तिः मुखव्यादानादिचेष्टेत्यर्थः येन तं नितान्तावसन्नत्वादिति भावः। उत्तानितमुखं उत्तोलितवदनं मां।

(ङ) अम्भ इति। अम्भःक्षोदैः जलप्रदानकाले हारीतहस्तान्निपतितैर्जलविन्दुभिः कृतः सेको गात्रोपरि-सेचनं यस्य तं, अतएव समुपजाता प्रज्ञा प्रकृष्टचैतन्यं यस्य तं मां, उपतटे तटसमीपे प्ररूढा उत्पन्ना या नलिनी पद्मिनी तस्याः पलाशस्य पत्रस्य, जलेन जलसेकेन शिशिरा शीतला तस्यां। निधाय स्थापयित्वा। यथासमुचितं योग्यं अङ्गेषु मृत्तिकालेपनादिसहितमित्यर्थः।

(च) अभिषेकेति। अभिषेकावसाने च स्नानान्ते च, अनेकैः प्राणायामैः पूरककुम्भकरेचकात्मकै-र्वायुव्यापाररूपयोगाङ्गविशेषैः पूतोऽपि पवित्रोऽपि। अघं पापं मृष्यते प्रोञ्छ्यते नाश्यते एभिरिति तानि, "ऋतञ्च सत्यञ्चाभिद्धा"दित्यादीनि जलदेवतास्तुतिरूपाणि अघमर्षणानि सूक्तानि। उन्मुख ऊर्द्ध्ववदनः सूर्य्या-भिमुखः सन्नित्यर्थः। प्रत्यग्रभग्नैः नूतनोद्धृतैः रक्तारविन्दैः रक्तवर्णपद्मैः, नलिनीपत्रपुटेन रक्तारविन्दाधार-भूतेन पद्मपत्रपुटकेन। सवित्रे सूर्य्याय। प्राणायामाघमर्षणयोर्विशेषस्तु योगदर्शनयोगियाज्ञवल्क्यसंहितादावनु-सन्धेयः।

(छ) आगृहीतेति। आगृहीतं सम्यक्परिहितं धौतं प्रक्षालितं धवलं शुभ्रं वल्कलं येन सः। अतएव ज्योत्स्नया सहेति सज्योत्स्नः, सन्ध्यातपः सायंकालीनसूर्य्यालोक इव। अत्रोपमालङ्कारः। कर-तलाभ्यां निर्धूननेन आस्फालनेन विशदा निर्म्मलाः सटा जटा यस्य सः। प्रत्यग्रेण नवेन अचिरक्लृप्तेन

জল পান করাইলেন; (ঙ) তাঁহার অঙ্গুলীনিঃসৃত জলসেকে আমার সম্পূর্ণ চৈতন্য জন্মিল; তখন তিনি, তীরের নিকটে উৎপন্ন পদ্মপত্রের শীতল ছায়াতে আমাকে রাখিয়া যথোচিত স্নানক্রিয়া সম্পাদন করিলেন; স্নানের পরে, হারীত বহুতর প্রাণায়াম করায় পবিত্র হইলেও অঘমর্ষণসূক্ত জপ করিয়া সূর্য্যের অভিমুখ হইয়া, পদ্মপত্রে করিয়া নূতন উদ্ধৃত রক্তপদ্মদ্বারা ভগবান্ সূর্য্যদেবকে অর্ঘদান করিয়া তীরে উঠিলেন; (চ) তাহার পর, তিনি প্রক্ষালিত শুভ্রবর্ণ একখানি বল্কল পরিধান করিলেন; তাহাতে সন্ধ্যাকালে জ্যোৎস্নাসম্মিলিত সূর্য্যালোকের ন্যায় তাঁহাকে দেখা যাইতে লাগিল; পরে তিনি করযুগলের আস্ফালনে জটাগুলিকে নির্ম্মল

---

(१) उपजातनवीनप्राणं। (२) उपतटप्ररूढस्य नवनलिनीदलस्य। (३) समुचितं।
(४)...पूतो जपन् पवित्राण्यघमर्षणानि। (५) अर्घ्यं। (६) आगृहीतधवल...।
(७) सहज्योत्स्न इव।

नन-विग्रह-सटः(१) प्रत्यग्र-स्नानार्द्र-जटेन (२) सकलेन तेन मुनिकुमार-कदम्ब-केनानुगम्यमानो मां गृहीत्वा तपोवनाभिमुखं शनैः शनैरगच्छत् (३)। (छ)

अनतिदूरमिव गत्वा दिशि दिशि सदासन्निहित-कुसुमफलैः (४) ताल-तिलक-तमाल-(५) हिन्ताल-वकुल-बहुलैः, एला-लताकुलित-नारिकेल-कलापैः, आलोल-लोध्र-लवली-लवङ्ग-पल्लवैः, (६) उल्लस-(७) च्चूत-रेणु-पटलैः, अलि-कुल-झङ्कार-मुखर-सहकारैः, उन्मद-कोकिल-कुल-कलालाप-(८) कोलाहलिभिः,

---

स्नानेन आर्द्रा जलक्लिन्ना जटा यस्य तेन। मुनिकुमाराणां कदम्बकेन समूहेन, अनुगम्यमानो हारीतः। मां वैशम्पायनम्।

(ज) अनतीति। इवशब्दो वाक्यालङ्कारे। अनतिदूरं गत्वा अहं आश्रममपश्यमिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रियया अन्वयः। अत्र तृतीयान्तपुंलिङ्गपदानि 'वक्ष्यमाणस्य काननैरित्यस्य विशेषणानि। दिशि दिशि सर्वासु दिक्षु। सदा सन्निहितानि सततावस्थितानि यथासम्भवं कुसुमानि फलानि च येषु तैः। तालाः स्वनाम-ख्याताः, तिलकाः पुष्पवृक्षविशेषाः, तमाला अपि स्वनामख्याताः, हिन्तालाः फलवृक्षविशेषाः, वकुलाश्च बहुला अधिकसंख्यका येषु तैः। एलालताभिः आकुलिता व्याप्ता वेष्टिता नारिकेलानां वृक्षाणां कलापाः समूहा येषु तैः। आलोला वायुवेगेन कम्पिताः, लोध्राणां लवलीनां लवङ्गानाञ्च स्वनामख्यातानां पल्लवाः किसलयानि येषु तैः। उल्लसन्ति वायुवेगात् प्रसरन्ति चूतानां आम्रकुसुमानां रेणुपटलानि परागपुञ्जा येषु तैः। अलिकुलस्य भ्रमरसमूहस्य झङ्कारैः 'झम्' इत्याकारशब्दैः मुखराः शब्दायमानाः सहकारा अति-सुरभिचूता येषु तैः। "आम्रश्चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः।" इत्यमरः। अतएव पूर्वस्मिन् इति नार्थगतपुनरुक्ततादोषः। उन्मदस्य मदमत्तस्य कोकिलकुलस्य कलालापो मधुरास्फुटध्वनिरूपः कोलाहल एवा-

---

করিয়া, সত্ত স্নান করায় আর্দ্রজটাসমন্বিত সেই সকল মুনিকুমারগণের সহিত আমাকে লইয়া ধীরে ধীরে তপোবনের অভিমুখে গমন করিলেন।

(জ) আমি অনতিদূরে গমন করিয়া দ্বিতীয় ব্রহ্মলোকের ন্যায় অতি মনোহর একটি আশ্রম দর্শন করিলাম, সেই আশ্রমের সকল দিক্ বনে পরিবেষ্টিত ছিল, সেই বনে সর্ব্বদায় জন্যই নানাজাতীয় কুসুম ও ফল বিদ্যমান থাকিত; আর তাল, তিলক, তমাল, হেন্তাল ও বকুল—এই সকল বৃক্ষই অধিকসংখ্যক ছিল; এলাচীলতায় পরিবেষ্টিত বহুতর নারিকেলবৃক্ষ ছিল; লোধ, নোয়াড়ি (নোয়াইল) এবং লবঙ্গের পল্লবসমূহ বায়ুভরে কম্পিত হইতেছিল; বায়ুবেগে আম্রকুসুমের পরাগসমূহ বিকীর্ণ হইতেছিল; ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে পরমসুগন্ধি আম্রবৃক্ষ-সকল মুখরিত হইতেছিল; উন্মত্ত কোকিলগণ মধুর ও অস্পষ্ট কোলাহল করিতে-

---

(१)...निर्धूतविग्रहजटः। (२) कमण्डलुमापूर्य्य कमलकिञ्जल्कसुरभिणा शुचिना सरोवारिणा प्रत्यग्र-स्नानार्द्रजटेन। (३) शनैरगच्छत्। (४) कुसुमपटलैः। (५)...तिलकतालीतमाल...।
(६)...पुष्पैः। (७) उल्लसित...। (८)...कुलकलाप...।

उत्फुल्ल-केतकी-कुसुम-मञ्जरीरजः-(१) पुञ्ज-पिञ्जरैः, पूगीलता-दोलाधिरूढ-वन-देवतैः, तारकावर्ष-(२) मिवाधर्म्म-विनाश-पिशुनं कुसुम-निकरमनिल-चलितमन-वरतमतिधवलमुत्सृजद्भिः संसक्त-पादपैः काननैरुपगूढम्, (३) (ज) अचकित-प्रचलित-कृष्णसार-शत-शबलाभिः, उत्फुल्ल स्थल-कमलिनी-लोहिनीभिः, मारीच-मायामृगावलून-प्ररूढ़-वीरुद्दलाभिः, दाशरथि-चाप-कोटि-क्षत-कन्द-(४) गर्त्त-विषमित-तलाभिः, दण्डकारण्य-स्थलीभिरुपशोभित-प्रान्तम्, (झ) आगृहीत-

---

मस्तीति तैः। अत्र प्रशंसायां मत्वर्थीय इन्प्रत्ययः। किन्तु केवलबहुव्रीहिणा तदर्थस्याभिधातुमशक्यत्वात् "न कर्म्मधारयान्मत्वर्थीयो बहुव्रीहिश्चेदर्थप्रतिपत्तिकर" इति निषेधस्य नावसरः। उत्फुल्लानां विकसितानां केतकीकुसुमानां या मञ्जर्य्यस्तासां रजःपुञ्जैः परागराशिभिः पिञ्जराणि पिङ्गलवर्णानि तैः। पूगीनां क्षुद्र-गुवाकानां या लता लतावत् कृशत्वास्ता एव दोलाः स्थानविशेषे दोलावद्वक्रत्वं वक्रीभूतत्वादिति भावः, तासु अधिरूढ़ा वनदेवता वनाधिष्ठात्री देव्यो येषु तैः। क्षुद्रपरत्वादेव पूगीत्यस्य स्त्रीत्वं मृणाल्यादिवत्। अत्र वनदेवतानां तादृशदोलाधिरोहणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। अधर्म्मविनाशपिशुनं पाप-ध्वंससूचकं देवतापूजोपयोगित्वादिति भावः, अनिलचलितं वायुकम्पितं, अतिधवलं कुसुमनिकरं पुष्प-समूहं, तारकावर्षं नक्षत्रवृष्टिमिव अनवरतं उत्सृजद्भिः परित्यजद्भिः। अत्रोपमालङ्कारः। संसक्ताः परस्परं संलग्नाः पादपा वृक्षा येषु तैः, तादृशैः काननैर्वनैः, उपगूढ़ं आलिङ्गितं परिवेष्टितमित्यर्थः।

(झ) अचकितेति। एतानि तृतीयान्तस्त्रीलिङ्गपदानि दण्डकारण्यस्थलीभिरित्यस्य विशेषणानि। अच-कितानां हिंसाभावादत्रस्तानां प्रचलितानां विचरतां कृष्णसाराणां शतेन बाहुल्येन समूहेनेत्यर्थः शबला विचित्रा-स्ताभिः। उत्फुल्लाभिर्विकसिताभिः स्थलकमलिनीभिः लोहिन्यो रक्तवर्णास्ताभिः। मारीचो राक्षस एव मायामृगः तेन अवलूनानि आदौ भक्षणाय छिन्नानि पश्चात् प्ररूढ़ानि उत्पन्नानि वीरुधां लतानां दलानि पत्राणि यासु ताभिः। तथा दाशरथे रामस्य चापकोट्या धनुरग्रेण क्षतानि नष्टानि सुखेन विचरणार्थं

ছিল; প্রস্ফুটিত কেতকীকুসুমের পরাগসমূহে সেই বন পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিল; বনদেবতাগণ ক্ষুদ্র গুবাকবৃক্ষের দোলাতে আরোহণ করিয়াছিলেন; পাপবিনাশসূচক, অত্যন্ত শ্বেতবর্ণ ও বায়ুভরে কম্পিত পুষ্পসমূহ নক্ষত্রবৃষ্টির ন্যায় অবিশ্রান্ত পতিত হইতেছিল এবং সেই বনে বৃক্ষ-সমূহ পরস্পর সংলগ্ন ছিল।

(ঝ) আর দণ্ডকারণ্যের এক অংশ সেই আশ্রমের প্রান্তভাগ শোভিত করিয়াছিল; কৃষ্ণসারগণ নির্ভয়চিত্তে বিচরণ করত দণ্ডকারণ্যের সেই অংশটি বিচিত্র করিয়াছিল; প্রস্ফুটিত স্থলপদ্মে তাহা রক্তবর্ণ হইয়াছিল; মারীচরাক্ষস মায়ামৃগরূপ ধারণ করিয়া সেই বনের যে সকল লতার পত্র ভক্ষণ করিয়াছিল, সেই পত্রগুলি পুনরায় উৎপন্ন হইয়াছিল; রামচন্দ্র ধনুর অগ্রদ্বারা যে সকল মূল উত্তোলন করিয়াছিলেন, তখনও তাহার গর্তগুলি থাকিয়া সেই বনকে

---

(१)...केतकमञ्जरीरजः, केतकीरजः...। (२) तारकावृष्टिं। (३)...पादपैरुपगूढ़ं। (४)...कन्दर...।

समित्-कुश-कुसुम-मृद्भिः अध्ययन-मुखर-शिष्यानुगतैः सर्वतः प्रविशद्भिः (१) मुनिभिरशून्योपकण्ठम्, (ञ) उत्कण्ठित-(२) शिखण्डि-मण्डल-(३) श्रूयमाण-जल-कलस-पूरणध्वानम्, (ट) अनवरताज्याहुति-प्रीतैश्चित्रभानुभिः सशरीरमिव मुनिजनममरलोकं निनीषुभिः, उद्धूयमान-धूम-लेखाच्छलेनाबध्यमान-स्वर्ग-मार्ग-गमन-सोपान-सेतुमिवोपलक्ष्यमाणम्, (ठ) आसन्नवर्त्तिनीभिस्तपोधन-(४) सम्पर्कादिवापगत-कालुष्याभिः, तरङ्ग-परम्परा-संक्रान्त-रविबिम्ब-पङ्क्तिभिः,

---

उत्खातानि यानि कन्दानि तरुमूलानि तेषां गर्त्तैः विषमितानि उच्चावचीकृतानि तलानि उपरिभागा यासां ताभिः, वनकारणस्य स्थलीभिः स्थानविशेषैः।

(ञ) आगच्छद्भिरिति। आगच्छद्भिः पृथक् पृथक् कार्य्याय सम्यग् धृताः समित्कुशकुसुममृदः (मृत्तिकाः) यैस्तैः। अध्ययनेन वेदपाठेन मुखराः शब्दायमाना ये शिष्यास्तैरनुगतास्तैः। अशून्यः अविरहितः पूर्णः उपकण्ठः समीपदेशो यस्य तम्।

(ट) उत्कण्ठितेति। उत्कण्ठितेन कलसपूरणशब्दे मेघगर्जनभ्रमात् सञ्जातोत्कण्ठेन शिखण्डि-मण्डलेन मयूरसमूहेन श्रूयमाणः जलैः कलसपूरणस्य ध्वानः शब्दो यस्मिन् तम्।

(ठ) अनवरतेति। अनवरतं आज्यानां हविषां आहुतिभिः प्रक्षेपैः प्रीताः सन्तुष्टास्तैः, चित्रभानुभिः दक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयरूपैरग्निभिः। उद्धूयमाना वायुना कम्प्यमाना या धूमलेखा ऊर्द्ध्वगामिनी अविच्छिन्ना धूमधारा तस्याश्छलेन व्याजेन आबध्यमानो निर्म्मीयमानः स्वर्गमार्गगमनाय सोपानसेतुः सोपान-रूपा उभयलोकसंयोजिका आलिर्यत्र तमिव। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) आसन्नेति। तपोधनानां मुनीनां सम्पर्कात् संसर्गादिव अपगतं नष्टं कालुष्यं आविलता यासां ताभिः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। तरङ्गपरम्परायां वीचिश्रेण्यां संक्रान्ताः प्रतिफलिता रविबिम्ब-पङ्क्तयः सूर्य्यमण्डलश्रेणयो यासु ताभिः, अतएव तापसानां जाबालिप्रभृतीनां तपस्विनां दर्शनाय सञ्जाति-प्रणयेन साक्षात्काराय आगतया सप्तर्षिमालया मरीच्यादिदिव्यर्षिश्रेण्या विगाह्यमानाभिरवगाह्यमानाभिरिव

উচুনীচু করিয়াছিল; (ঞ) মুনিগণ সমিধ, কুশ, পুষ্প ও মৃত্তিকা গ্রহণ করিয়া সকল দিক্ হইতে প্রবেশ করত সেই আশ্রমের নিকটবর্ত্তী স্থান পূর্ণ করিতেছিলেন, তখন তাঁহাদের শিষ্যগণও বেদপাঠ করিতে করিতে তাঁহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রবেশ করিতেছিলেন; (ট) ময়ূর-গণ মেঘগর্জ্জনভ্রমে উৎকণ্ঠিত হইয়া জলদ্বারা কলস পরিপূর্ণ করিবার শব্দ শুনিতেছিল; (ঠ) অগ্নিদেব, অবিশ্রান্ত ঘৃতের আহুতিতে সন্তুষ্ট হইয়া, মুনিগণকে সশরীরেই স্বর্গে নিতে ইচ্ছা করিয়া, বায়ুভরে কম্পিত অবিচ্ছিন্ন ধূমধারার ছলে স্বর্গে যাইবার নিমিত্ত যেন মর্ত্ত্যলোক হইতে একটি সোপানময় সেতু নির্ম্মাণ করিতেছিলেন; (ড) নিকটবর্ত্তী কতকগুলি দীর্ঘিকা-দ্বারা সেই আশ্রমটি পরিবেষ্টিত ছিল; তপস্বিগণের সংসর্গেই যেন সেই দীর্ঘিকাসমূহ নির্ম্মল হইয়াছিল, সেই দীর্ঘিকাসমূহের প্রত্যেক তরঙ্গের উপরে সূর্য্যের প্রতিবিম্ব পতিত হইয়াছিল;

---

(१) प्रसरद्भिः। (२) उत्कण्ठ…। (३)…मण्डलीमण्डल…। (४) तपोवन…।

तापस-दर्शनागमन-सप्तर्षि-माला-विगाह्यमानाभिरिव, अतिविकच-(१) कुमुदवन-मृषिजनमुपासितुमवतीर्णं ग्रहगणमिव निशासूद्वहन्तीभिर्दीर्घिकाभिः परिवृतम्, (ड) अनिलावनमित-शिखराभिः (२) प्रणम्यमानमिव वनलताभिः, (ढ) अनवरत-मुक्त-कुसुमैरभ्यर्च्यमानमिव पादपैः, (ण) आबद्ध-पल्लवाञ्जलिभिः (३) उपास्यमानमिव विटपैः, (त) उटजाजिर-प्रकीर्ण-शुष्यच्छ्यामाकम्, (थ) उपसंगृहीतामलक-लवली-लवङ्ग-(४) कर्कन्धू-कदली-लकुच-चूत-पनस-(५) ताल-(६) फलम्, (द) अध्ययनमुखर-वटुजनम्, (ध) अनवरत-श्रवण-गृहीत-वषट्-

---

स्थिताभिः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। समानतेजस्वित्वात् रविविम्बानां सप्तर्षिमालासादृश्यं सूचितं। तथा निशासु रात्रिषु ऋषिजनं जावालिप्रभृतिमुनिगणं उपासितुं अवतीर्णं ग्रहगणं नक्षत्रसमूहमिव अतिविकचकुमुदवनं पूर्णप्रस्फुटितकैरववनं उद्वहन्तीभिः धारयन्तीभिः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) अनिलेति। अनिलेन वायुना अवनमितानि शिखराणि अग्रदेशा यासां ताभिः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) अनेति। अनवरतं मुक्तानि त्यक्तानि कुसुमानि यैस्तैः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) आबद्धेति। आबद्धा विरचिताः पल्लवा एवाञ्जलयो यैस्तैः, विटपैः शाखाभिः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(थ) उटजेति। उटजानां पर्णशालानां अजिरेषु अङ्गनेषु प्रकीर्णाः प्रसारिताः, अतएव शुष्यन्तः रवितापेन शुष्कतां प्राप्नुवन्तः श्यामाकास्तृणविशेषा यस्मिन् तं। एषां शोषणमुटजच्छदिषामाच्छादनार्थमिति बोध्यम्।

(द) उपेति। उपसंगृहीतानि तत्र तत्रानीतानि, आमलकं धात्री, लवली शन्दुः, लवङ्गं स्वनामख्यातं, कर्कन्धूर्बदरी, कदली रम्भा, लकुचं डहु, चूतमाम्रं, पनसं कण्टकी, तालश्च एतानि फलानि यस्मिन् तं। भोजनार्थमेषां संग्रहः।

(ध) अध्ययनेति। अध्ययनेन वेदपाठेन मुखराः शब्दायमानाः वटुजनाः ब्राह्मणबालका यस्मिन् सः।

সুতরাং বোধ হইতেছিল যেন, জাবালি প্রভৃতি তপস্বিগণের সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত আগত সপ্তর্ষিগণ অবগাহন করিতেছেন; মুনিগণের উপাসনার নিমিত্ত অবতীর্ণ নক্ষত্রসমূহের ন্যায় কুমুদ-(সাপলা) সমূহ রাত্রিতে সেই দীর্ঘিকাসমূহের মধ্যে সম্পূর্ণ প্রস্ফুটিত হইয়া থাকিত; (ঢ) বনের লতাসমূহ, বায়ুভরে মস্তক অবনত করিয়া যেন প্রণাম করিতেছিল; (ণ) বৃক্ষগণ অবিশ্রান্ত পুষ্প নিক্ষেপ করিয়া যেন পূজা করিতেছিল; (ত) বৃক্ষের শাখাসমূহ, পল্লবরূপ অঞ্জলি বন্ধন করিয়া যেন উপাসনা করিতেছিল; (থ) পর্ণশালার প্রাঙ্গণে প্রসারিত শ্যামাঘাস রৌদ্রে শুকাইতেছিল; (দ) আমলকী, নোয়াড়ি, (নোয়াইল) লবঙ্গ, কুল, (বয়ই) কলা, ডেহুয়া, (ডৌয়া) আম, কাঠাল ও তালফল সংগৃহীত

---

(१) विकच…। (२)…शिखाभिः। (३) —पल्लवपुटाञ्जलिभिः। (४)…लवलीकर्कन्धू…।
(५) चूततालफलं। (६) तालीफलं।

कार-वाचाल-शुककुलम्, (न) अनेक-सारिकोद्घुष्यमाण-सुब्रह्मण्यम् (प) अरण्य-कुक्कुटोपभुज्यमान-वैश्वदेव-बलिपिण्डम्, (फ) आसन्न-वापी-कलहंस-पोत-भुज्यमान-नीवारबलिम्, (ब) एणी-जिह्वा-पल्लवोपलिह्यमान-मुनिबालकम्, (भ) अग्निकार्य्यार्द्धदग्ध-सिमसिमायमान (१)-कुश-समित्-कुसुमम्, (म) उपल-भग्न-नारिकेल-(२) रस-स्निग्ध-शिलातलम्, (य) अचिर-मुषित-वल्कल-रस-पाटल-

---

(न) अनेति। अनवरतश्रवणेन सर्वदाकर्णनेन गृहीता: शिक्षिता: ये वषट्कारा हविर्दानमन्त्रा: तेषामुच्चारणैरित्यर्थ: वाचालं मुखरं शुककुलं यत्र तम्।

(प) अनेकेति। अनेकाभि: सारिकाभि: उद्घुष्यमाणं उच्चैरुच्चार्य्यमाणं सुब्रह्मण्यं वेदो यस्मिन् तम्, तासामपि तच्छ्रवणेन ग्रहणादिति भाव:।

(फ) अरण्येति। अरण्यकुक्कुटै: पक्षिविशेषै: उपभुज्यमाना: वैश्वदेवबलिपिण्डा: पञ्चमयामार्द्धदत्त-विश्वदेवोद्देश्यकान्नादयो यत्र तं। वैश्वदेवबलिदानमाह्निकतत्त्वेऽनुसन्धेयं।

(ब) आसन्नेति। आसन्नवापीनां सन्निहितदीर्घिकाणां ये कलहंसपोता: कादम्बशावका: तै:, भुज्यमाना: नीवाराणां मुनिधान्यानां बलय उपहारा यत्र तम्।

(भ) एणीति। एणीभिर्मृगीभि: जिह्वापल्लवै: विस्तृतीकृतरसनाभि: करणै: उपलिह्यमाना: आस्वाद्यमाना: स्पृश्यमाना इत्यर्थ: मुनिबालका यत्र तम्।

(म) अग्नीति। अग्निकार्य्ये होमे अर्द्धदग्धानि अतएव सिमसिमायमानानि 'सिम सिम' इत्येवं शब्दं कुर्वाणानि कुशसमित्कुसुमानि यत्र तम्।

(य) उपलेति। उपलै: पाषाणै: भग्नानि पाषाणान्तरेषु स्थापयित्वा मर्द्दितानि यानि नारिकेलानि फलानि तेषां रसैर्जलैर्निर्यासैर्वा स्निग्धानि सिक्तानि तैलाक्तीकृतानि वा शिलातलानि आस्तरणीभूतपाषाणा यत्र तम्।

(र) अचिरेति। अचिरमुषितानां वृक्षेभ्य: सद्योनिष्कासितानां वल्कलानां रसै: निर्यासै: पाटलं श्वेतरक्तवर्णं भूतलं यस्मिन् तम्।

ছিল; (ধ) ব্রাহ্মণবালকগণ বেদধ্বনি করিতেছিলেন; (ন) শুকপক্ষিগণ, অবিশ্রান্ত শ্রবণ করায় অভ্যস্ত আহুতির মন্ত্র সকল উচ্চারণ করিতেছিল; (প) বহুতর সারিকা উচ্চৈঃস্বরে বেদ পাঠ করিতেছিল; (ফ) বনকুক্কুটগুলি বৈশ্বদেবের অন্ন ভোজন করিতেছিল; (ব) সন্নিহিত-দীর্ঘিকা-স্থিত হংসশাবকগণ উড়ীধান্য ভোজন করিতেছিল; (ভ) হরিণীগণ জিহ্বাদ্বারা মুনিবালকদিগকে লেহন করিতেছিল; (ম) হোমকুণ্ডে নিক্ষিপ্ত অর্দ্ধদগ্ধ কুশ, সমিধ ও পুষ্প 'সিম সিম' শব্দ করিতেছিল; (য) পাষাণদ্বারা নারিকেল ভগ্ন করিলে তাহার জলে নীচের পাষাণ সিক্ত হইতেছিল; (র) বৃক্ষ হইতে সদ্য আনীত বল্কলের রসে ভূতল পাটলবর্ণ হইয়া

---

(१)...मिसमिसायमान...। (२)...नारिकेर...।

भूतलम्, (र) रक्तचन्दनोपलिप्तमादित्यमण्डल-निहित-करवीर-कुसुमम्, (ल) इतस्ततो विक्षिप्त-भस्मलेखालङ्कृत-मुनिजन-भोजन-भूमिभागम्, (१) (व) परिचित-शाखामृग-कराकृष्ट-यष्टि-(२) निष्काश्यमान-प्रवेश्यमान-जरदन्ध-तापसम्, (श) इभ-करभकार्द्धोपभुक्त-पतितैः सरस्वती-भुजलता-विगलितैः (३) शङ्खवलयैरिव मृणाल-शकलैः कल्माषितम्, (ष) ऋषिजनार्थमेणकैर्विषाण-शिखरोत्खन्यमान-विविध-कन्दमूलम्, (स) अम्बु-पूर्ण-पुष्कर-पुटैर्वनकरिभिरापूर्य्यमाण-विटपाल-

(ल) रक्तेति। रक्तचन्दनेन उपलिप्ते चित्रिते आदित्यमण्डले सूर्य्यविम्बे निहितं सूर्य्याय निवेद्य स्थापितं करवीरकुसुमं यत्र तम्।

(व) इत इति। इतस्ततो विक्षिप्ताभिर्विकीर्णाभिः भस्मनां लेखाभिः रेखाभिः अलङ्कृताः सीमाबद्धीकरणात् शोभिता मुनिजनानां भोजनभूमिभागा यत्र तम्। चरणस्पर्शादिनिवारणाय भस्मरेखाङ्कितत्वमिति बोध्यम्।

(श) परिचितेति। परिचितैः पूर्व्वावधिविश्वासस्वभावैः शाखामृगैर्वानरैः कराकृष्टयष्ट्या हस्ताकृष्टदण्डेन निष्काश्यमानाः केचिदुटजाद्बहिष्क्रियमाणाः, प्रवेश्यमानाः केचिदुटजमध्ये पूर्य्यमाणाश्च जरन्तो वृद्धाः अन्धाः तापसा यत्र तम्।

(ष) इभेति। इभकरभकैः करिशिशुभिः अर्द्धोपभुक्तैः पश्चात्पतितैः कथमपि तेषां वदनेभ्यो भ्रष्टैः, सरस्वत्या वाग्देव्या भुजलतायाः सकाशात् विगलितैः पतितैः शङ्खवलयैरिव स्थितैः मृणालशकलैर्विसखण्डैः कल्माषितं विचित्रीकृतम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च वाग्देव्याः सततावस्थानं व्यज्यते इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(स) ऋषीति। ऋषिजनार्थं मुनिजनभोजनार्थं एणकैर्मृगैः कर्त्तृभिः विषाणशिखरैः शृङ्गाग्रैः करणैः उत्खन्यमानानि उत्पाट्यमानानि विविधानि कन्दाः शालूकानि पद्मादीनां मूलानीत्यर्थः मूलानि मूलकादीनि च यत्र तम्।

(ह) अम्बुपूर्णेति। वनकरिभिः कर्त्तृभिः, अम्बुभिर्जलैः पूर्णानि यानि पुष्करपुटानि शुण्डाग्राणि

যাইতেছিল; (ল) ভূতলে রক্তচন্দনদ্বারা চিত্রিত সূর্য্যমণ্ডলের উপরে নিবেদিত করবীপুষ্প স্থাপিত ছিল; (ব) নানা দিকে ভস্মরেখাদ্বারা মুনিগণের ভোজনস্থান বিভক্ত করা ছিল; (শ) পরিচিত বানরগণ, হস্তদ্বারা যষ্টি আকর্ষণ করিয়া কোন কোন প্রাচীন অন্ধ তপস্বীকে গৃহ হইতে বাহির করিতেছিল, আবার কোন কোন প্রাচীন অন্ধ তপস্বীকে গৃহমধ্যে প্রবেশ করাইতেছিল; (ষ) হস্তিশাবকগণ অর্দ্ধাংশ ভোজন করিলে কোন কারণে তাহাদের মুখ হইতে নিপতিত মৃণালখণ্ড সকল, বাগ্দেবীর হস্ত হইতে স্খলিত শঙ্খবলয়ের ন্যায় থাকিয়া আশ্রমটিকে বিচিত্র করিয়াছিল; (স) মুনিগণের ভোজনের নিমিত্ত হরিণগণ শৃঙ্গের অগ্রদ্বারা নানাবিধ শালুক ও মূল উত্তোলন করিতেছিল; (হ) বন্য হস্তিগণ

(१)…लेखाङ्कित…भोजनभूमिपरिष्कारं। (२)…कराकृष्टिनिष्काश्यमान…। (३)…बाहुलताविभूषणैः।

वालकम्, (छ) ऋषि-कुमारकाक्रष्यमाण-वनवराह-दंष्ट्रान्तराल-लग्न-शालूकम्, (ज) उपजात-परिचयैः कलापिभिः पक्षपुट-पवन-सन्धुक्ष्यमाण-मुनिहोम-हुताशनम्, (क) आरब्धामृत-चरु-चारुगन्धम्, (ख) अर्द्धपक्व-पुरोडाश-पुण्य-परिमलामोदितम्, (१) (ग) अविच्छिन्नाज्यधारा-हुति-हुतभुग्हुङ्कार-(२) मुखरितम्, (घ) उपचर्य्यमाणातिथिवर्गम्, (ङ) पूज्यमान-पितृ-दैवतम्, (च) अर्च्यमान-(३) हरि-हर-

---

तैः करथैः, आपूर्य्यमाणानि भ्रियमाणानि, विटपानां छित्त्वा आनीय रोपितानां शाखानां, आलवालानि मूलजलधारणस्थानानि यत्र तम्। "पुष्करं पङ्कजे व्योम्नि पयः करिकराग्रयोः।" इत्यादि विश्वः।

(छ) ऋषीति। ऋषिकुमारकैः आक्रष्यमाणानि वनवराहाणां दंष्ट्रान्तराललग्नानि शालूकानि उत्पलानां कन्दा मूलानीति यावत् यत्र तम्। "शालूकमेषां कन्दः स्या"दित्यमरः।

(क) उपेति। उपजातपरिचयैः पूर्वत एव मुनीनामहिंस्रस्वभाववेदिभिरिति तात्पर्य्यम्। कलापिभिर्मयूरैः पक्षपटानां पवनेन वायुना सन्धुक्ष्यमाणाः सन्दीप्यमानाः होमहुताशना यत्र तम्। एभिर्विशेषणैराश्रमस्य परमशान्तत्वं सूचितम्।

(ख) आरब्धेति। आरब्धस्य पक्तुं प्रवर्त्तितस्य अमृतचरोः घृतसंयुक्तचरोः चारुर्मनोहरो गन्धो यत्र तम्।

(ग) अर्द्धेति। अर्द्धपक्वस्य पुरोडाशस्य हवनीयद्रव्यविशेषस्य पुण्यपरिमलेन पवित्रगन्धेन आमोदितं आनन्दितम्।

(घ) अवीति। अविच्छिन्नाया आज्यधाराया घृतधारायाः आहुत्या प्रक्षेपेण यो हुतभुजो वह्नेर्हुङ्कारः "हु" इति शब्दः तेन मुखरितं शब्दायमानीकृतम्। अत्र हुतभुग्हुङ्कार इति पदगतो दुःश्रवत्वदोषः, स च 'हव्यवाहन-हुङ्कार' इति पाठेन समाधेयः। नच 'हुतभुग्झङ्कार' इति पाठान्तरं निर्दोषमिति वाच्यं वह्नेर्झङ्कारानुत्पत्तेः।

(ङ) उपेति। उपचर्य्यमाणः सत्क्रियमाणः अतिथिवर्गो यत्र तम्।

(च) पूज्येति। पूज्यमानानि श्राद्धेन पञ्चोपचारादिना च तोष्यमाणानि पितरो दैवतानि देवाश्च यत्र तम्।

জলপূর্ণ শুণ্ডাগ্রদ্বারা, রোপিত শাখার (কলম গাছের) আলবাল পূরণ করিতেছিল; (ক) ঋষিকুমারগণ, বন্য শূকরগণের দন্তমধ্যে সংলগ্ন শালূক (পদ্মমূল) আকর্ষণ করিতেছিল; (ক) পরিচিত ময়ূরগণ পক্ষপুটের বায়ুদ্বারা মুনিগণের হোমাগ্নি প্রজ্বলিত করিয়া দিতেছিল; (খ) পচ্যমান ঘৃতাক্ত চরুর মনোহর গন্ধ বহির্গত হইতেছিল; (গ) অর্দ্ধপক্ক পুরোডাশের (যজ্ঞীয় পিটার) পবিত্র গন্ধে আমোদিত করিয়াছিল; (ঘ) অবিচ্ছিন্ন ঘৃতধারার আহুতিতে হোমাগ্নি হইতে 'হং' 'হং' শব্দ উঠিয়া আশ্রমটিকে মুখরিত করিয়াছিল; (ঙ) কেহ কেহ অতিথিদিগের সেবা করিতেছিলেন; (চ) কেহ পিতৃশ্রাদ্ধ, কেহ বা দেবতা-

---

(१)...पुष्पपरिमला, पुरोडाशपरिमला...। (२) ज्वयहुङ्कार..., झङ्कार...। (३) अभ्यर्च्यमान...।

पितामहम्, (छ) उपदिश्यमान-(१) श्राद्धकल्पम्, (ज) व्याख्यायमान-यज्ञविद्यम्, (झ) आलोच्यमान-धर्म्मशास्त्रम्, (ञ) पठ्यमान-(२) विविध-पुस्तकम्, (ट) विचार्य्यमाण-सकल-शास्त्रार्थम्, (ठ) आरभ्यमाण-पर्णशालम्, (ड) उपलिप्यमानाजिरम्, (ढ) उपमृज्यमानो-(३) टजाभ्यन्तरम्, (ण) आबध्यमान-ध्यानम्, (त) साध्यमान-मन्त्रम्, (थ) अभ्यस्यमान-योगम् (द) उपक्रियमाण-(४) वनदेवताबलिम्, (ध) निर्वर्त्त्यमान-मौञ्ज-(५) मेखलम्, (न) प्रक्षाल्यमान-(६)

(छ) अर्च्येति। अर्च्यमानः पूज्यमानः, हरिर्विष्णुः, हरः शिवः, पितामहो ब्रह्मा च यत्र तम्।

(ज) उपेति। उपदिश्यमानः अध्याप्यमानः श्राद्धकल्पो गोभिलादिप्रणीतः श्राद्धविधिर्यत्र तम्।

(झ) व्याख्ये ति। व्याख्यायमाना विव्रियमाणा यज्ञविद्या अश्वमेधादियज्ञविधायकशास्त्रं यत्र तम्।

(ञ) आलोच्येति। आलोच्यमानानि धर्म्मशास्त्राणि मन्वादिकृतसंहिता यत्र तम्।

(ट) पठ्येति। पठ्यमानानि विविधानि पुस्तकानि यत्र तम्।

(ठ) विचेति। विचार्य्यमाणा वितर्क्यमाणाः सकलशास्त्रार्था यत्र तम्।

(ड) आरभ्येति। आरभ्यमाणाः निर्म्मातुं प्रवर्त्त्यमानाः पर्णशाला यत्र तम्।

(ढ) उपेति। गोमयादिना उपलिप्यमानानि अजिराणि चत्वराणि यत्र तम्।

(ण) उपेति। उपमृज्यमानानि सम्मार्ज्जन्यादिना परिष्क्रियमाणानि उटजानां पर्णशालानां अभ्यन्तराणि यत्र तम्।

(त) आबध्येति। आबध्यमानं क्रियमाणं ध्यानं प्रत्ययैकतानता यस्मिन् तम्।

(थ) साध्येति। साध्यमानः पुरश्चरणेन सिद्धिं प्राप्यमानः मन्त्रो यत्र तम्।

(द) अभ्यस्येति। अभ्यस्यमानः असकृदनुष्ठीयमानः योगश्चित्तवृत्तिनिरोधो यत्र तम्।

(ध) उपेति। उपक्रियमाणा दीयमाना वनदेवताभ्यो बलयः पूजासामग्र्यो यत्र तम्।

(न) निर्वर्त्त्येति। निर्वर्त्त्यमाना निर्म्मीयमाना मौञ्जी मुञ्जोपादाना मेखला यत्र तम्।

পূজা করিতেছিলেন; (ছ) ভিন্ন ভিন্ন স্থানে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও শিবের পূজা হইতেছিল; (জ) কেহ শ্রাদ্ধশাস্ত্র পড়াইতেছিলেন; (ঝ) কেহ যজ্ঞশাস্ত্রের ব্যাখ্যা করিতেছিলেন; (ঞ) অনেকে ধর্ম্মশাস্ত্রের আলোচনা করিতেছিলেন; (ট) কোন স্থানে নানাবিধ পুস্তক পাঠ হইতেছিল; (ঠ) অনেকে সকল শাস্ত্রের অর্থ নিয়া বিচার করিতেছিলেন; (ড) কেহ পর্ণশালা নির্ম্মাণ করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন; (ঢ) কেহ উঠান লেপিতেছিলেন; (ণ) কেহ পর্ণশালার অভ্যন্তর পরিষ্কার করিতেছিলেন; (ত-থ-দ) কেহ ধ্যান, কেহ মন্ত্রসাধনা, কেহ বা যোগাভ্যাস করিতেছিলেন; (ধ) কেহ বনদেবতাদিগকে পূজার উপহার দিতেছিলেন; (ন) কেহ মুঞ্জদ্বারা মেখলা নির্ম্মাণ করিতেছিলেন; (প) কেহ বল্কল

---

(१) उद्दिश्यमान...। (२) वाच्यमान...। (३) अपमृज्यमान...।

(४) उपह्रियमाण...। (५) मुञ्ज...। (६) वाच्यमान...।

वल्कलम्, (प) उपसंगृह्यमाण-समिधम्, (फ) संस्क्रियमाण-(१) कृष्णाजिनम्, (ब) गृह्यमाण-(२) गवेधुकम्, (भ) शोष्यमाण-(३) पुष्कर-बीजम्, (म) ग्रथ्यमानाक्ष-मालम्, (य) गृह्यमाण-त्रिपुण्ड्रकं, (र) न्यस्यमान-वेत्रदण्डम् (४) (ल) आपूर्य्यमाण-कमण्डलुम्, (व) अदृष्टपूर्वं कलिकालस्य, अपरिचितमनृतस्य, अश्रुतपूर्वमनङ्गस्य, (श) अजयोनिमिव त्रिभुवन-वन्दितम्, (ष) असुरारि-

(प) प्रक्षेति। प्रक्षाल्यमानं जलेन शोध्यमानं वल्कलं यत्र तम्।

(फ) उपेति। उपसंगृह्यमाणा आह्रियमाणाः समिधो यत्र तम्।

(ब) संस्क्रेति। संस्क्रियमाणं पिच्छिकादिना परिष्क्रियमाणं कृष्णाजिनं कृष्णसारचर्म्म यत्र तम्।

(भ) गृह्येति। गृह्यमाणा आदीयमाना गवेधुका धान्यविशेषो यस्मिन् तम्।

(म) शोष्येति। शोष्यमाणानि आतपेन शुष्कतां नीयमानानि पुष्कराणां पद्मानां बीजानि यत्र तम्। जपमालानिर्म्माणार्थमेतदिति बोध्यम्।

(य) ग्रथ्येति। ग्रथ्यमाना अक्षमाला जपमाला यस्मिन् तम्।

(र) गृह्येति। गृह्यमाणं ललाटे धार्य्यमाणं त्रिपुण्ड्रकं तिलकविशेषो यत्र तम्।

(ल) न्यस्येति। न्यस्यमानो दूरादागत्य भूमौ स्थाप्यमानः वेत्रदण्डो यत्र तम्।

(व) आपूर्य्येति। आपूर्य्यमाणो जलैर्भ्रियमाणः कमण्डलुर्जलपात्रविशेषो यस्मिन् तं। एषु यथासम्भवं 'केनचित्' 'कैश्चित्' इति कर्त्तृपदं योजनीयम्।

(श) अदृष्टेति। न विद्यते दृष्टं दर्शनं पूर्वं यत्र तम्। भावे क्तः, एवमन्ययोरपि। पापाभावादिति भावः। अनृतस्य वितथस्य, न विद्यते परिचितं परिचयो यत्र तम्, सर्वदा सत्यव्यवहारादिति भावः। अनङ्गस्य कामस्य, न विद्यते श्रुतं श्रवणं पूर्वस्मिन् यस्य तम्, तत्कृतविकाराभावादिति भावः।

(ष) अजेति। अजयोनिं ब्रह्माणमिव त्रिभुवनवन्दितं त्रिजगत्पूजितम्, असाधारणपुण्यधामत्वात् प्रजापतितुल्येति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

প্রক্ষালন করিতেছিলেন; (ফ) কেহ সমিধ আহরণ করিতেছিলেন; (ব) কেহ কৃষ্ণসারের চর্ম্ম পরিষ্কার করিতেছিলেন; (ভ) কেহ গড়গড়ে ধান লইতেছিলেন; (ম) কেহ পদ্মের বীজ শুকাইতেছিলেন; (য) কেহ জপের মালা গাঁথিতেছিলেন; (র) কেহ ত্রিপুণ্ড্র ধারণ করিতেছিলেন; (ল) কেহ বেত্রযষ্টি রাখিতেছিলেন; (ব) কেহ কমণ্ডলুতে জল পূরণ করিতেছিলেন। (শ) কলিকাল সে আশ্রম দেখিয়াছিল না, মিথ্যার সেখানে পরিচয় ছিল না এবং কামদেব সে আশ্রমের সংবাদ শোনেন নাই; (ষ) আর ব্রহ্মার ন্যায় সেই

(१) उपसंक्रियमाण...। (२) निगृह्यमाण...। (३) पोष्यमाण...।

(४) त्रिदण्डकं, सन्नियम्यमानपरिव्राजकम्।

मिव प्रकटित-वराह-नरसिंहरूपम्, (१) (स) सांख्यमिव कपिलाधिष्ठितम्, (ह) मथुरोपवनमिव (२) बलावलीढ़-दर्पित-धेनुकम्, (क्ष) उदयनमिवानन्दित-वत्स-कुलम्, (क) किम्पुरुषाधिराज्यमिव मुनिजन-गृहीत-कलसा-(३) भिषिच्य-

(स) असुरेति। असुरारिं विष्णुमिव, प्रकटितानि व्यक्तीकृतानि वराहाः, नराः, सिंहाः, रूपाणि मृगाश्च येन तं तेषां तत्रावस्थानादिति भावः, पक्षे प्रकटिते प्रकाशिते वराहनरसिंहयोरवतारयो रूपे आकृती येन तम्। पूर्णोपमा। "रूपं मृगेऽपि विज्ञेय"मिति हलायुधः।

(ह) सांख्यमिति। सांख्यं दर्शनमिव, कपिलया स्वर्णवर्णया गवा, कपिलेन सांख्यप्रणेता मुनिविशेषेण च अधिष्ठितं आश्रितम्। पूर्णोपमा।

(क्ष) मथुरेति। मथुराया नगर्य्या उपवनमिव, बलावलीढ़ा दैहिकबलान्विता अतएव दर्पिताः सञ्जात-दर्पाः धेनवो नवप्रसूता गावो यस्मिन् तम्; अत्र "शेषाद्वा" इति कप्रत्ययः। अन्यत्र तु बलावलीढ़ो बलवान् दर्पितश्च धेनुको धेनुकनामासुरो यत्र तम्। पूर्णोपमा। धेनुकासुरः कृष्णेन हत इति भागवते द्रष्टव्यम्।

(क) उदेति। उदयनं तदाख्यं पाण्डववंशजातं कौशाम्बीराजमिव, आनन्दितं घासजलदानादिना सन्तोषितं वत्सकुलं गोवत्ससमूहो यस्मिन् तम्, पक्षे आनन्दितं सद्व्यवहारादिना परितोषितं वत्सकुलं वत्सदेशीयजनसमूहो येन तम्, तस्य वत्सदेशराजत्वात्। पूर्णोपमा। पुरा उदयनो नाम राजा न्यायमार्गेण परिपालयन् प्रजास्तोषयामासेति कथासरित्सागरवार्त्ता।

(ख) किम्पुरुषेति। किम्पुरुषाणां किन्नराणां अधिराज्यं राष्ट्रमिव, मुनिजनैर्गृहीता ये कलसा जलपूर्णकुम्भास्तैरभिषिच्यमाना द्रुमा वृक्षा यत्र तम्, अन्यत्र मुनिजनगृहीतकलसैः अभिषिच्यमानो राजेति अभि-षिच्यमानः द्रुमो नाम राजा यत्र तम्। पूर्णोपमा। पुरा किल मुनयः किन्नरराजं द्रुममभिषिषिचुरित्यपि कथासरित्सागरे द्रष्टव्यम्।

আশ্রম ত্রিজগতের পূজনীয় ছিল; (স) নারায়ণ যেমন বরাহ ও নরসিংহ অবতার ধারণ করিয়াছিলেন, সেই আশ্রমও তেমন বরাহ, মনুষ্য, সিংহ ও হরিণ—এই সকল ধারণ করিতেছিল; (হ) সাংখ্যদর্শন যেমন কপিলের আশ্রিত, সেই আশ্রমও তেমন কপিলাধেনুগণ-কর্তৃক আশ্রিত; (ক্ষ) মথুরা নগরীর উপবনে যেমন বলবান্ ও দর্পশালী ধেনুকাসুর ছিল, সেই আশ্রমেও তেমন বলবতী ও তেজস্বিনী ধেনুগণ ছিল; (ক) উদয়ন রাজা যেমন বৎসদেশীয় প্রজাগণকে আনন্দিত করিয়াছিলেন, সেই আশ্রমে মুনিগণও তেমন গোবৎস-দিগকে আনন্দিত করিতেছিলেন; (খ) কিন্নরদিগের রাজ্যে যেমন মুনিগণ জলপূর্ণ কলস ধারণ করিয়া দ্রুমনামে রাজাকে অভিষিক্ত করিয়াছিলেন, সেই আশ্রমেও তেমন মুনিগণ

(१)...नरहरिवराहरूपं। (२) मधुरोपवनमिव। (३)...जलकलशा...।

मान-द्रुमम्, (ख) निदाघसमयावसानमिव आसन्न-(१) जलप्रपातम्, (ग) जलधरसमयमिव वन-गहन-मध्य-सुख-सुप्त-हरिम्, (घ) हनूमन्तमिव (२) शिला-शकल-प्रहार-सञ्चूर्णिताक्षास्थि-(३) सञ्चयम्, (ङ) खाण्डव-विनाशोद्यतार्जुनमिव प्रारब्धाग्निकार्य्यम्, (च) सुरभि-विलेपनधरमपि सतताविर्भूत-(४)

(ग) निदाघेति। निदाघसमयावसानमिव ग्रीष्मकालशेषमिव, आसन्नौ निकटवर्त्तिनौ, जलं दीर्घिका-सलिलं प्रपातो निर्झरश्च तौ यस्य तत्, पक्षे आसन्नो निकटवर्त्ती जलप्रपातो वृष्टिजलपतनं यस्य तत्। पूर्णोपमा। "प्रपातो निर्झरेऽतटे" इति मेदिनी।

(घ) जलेति। जलधरसमयमिव वर्षाकालमिव, वने अरण्ये यद्गहनं गह्वरप्रदेशः तस्य मध्ये सुखेन उपद्रवाभावान्निश्चिन्तभावेन सुप्ता हरयः सिंहा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु वनस्य सागरजलस्य गहने गह्वरवद्-गभीरे मध्ये मध्यस्थाने सुखेन सुप्तो हरिर्नारायणो यस्मिन् तत्। "शेते विष्णुः सदाषाढ़े भाद्रे च परिवर्त्तते।" इत्यादिस्मृतेरिति भावः। अत्र वनगहनशब्दयोः पर्य्यायतया अर्थस्यापाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः पश्चात्तद्रूप-भेदावगमात् भिन्नाकारशब्दगतत्वाच्च पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः पूर्णोपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "वनं प्रस्रवणे गेहे प्रवासेऽम्भसि कानने" इति हेमः। "गहनं गह्वरे दुःखे वने" इति त्रिकाण्डशेषः।

(ङ) हनूमन्तमिति। हनूमन्तं अञ्जनापुत्रमिव, शिलाशकलस्य प्रस्तरखण्डस्य प्रहारेण सञ्चूर्णितः तैलनिर्म्माणार्थं पिष्टः अक्षाणां विभीतकफलानां अस्थिसञ्चयो मध्यवर्त्ती कठिनांशो यत्र तत्, अन्यत्र तु शिलाशकलप्रहारेण सञ्चूर्णितो भग्नः अक्षस्य अक्षनामकरावणपुत्रस्य अस्थिसञ्चयो येन तम्। पूर्णोपमा। "अक्षो विभीतको वृक्षः पाशकोऽक्षोऽक्षमिन्द्रियम्। अक्षो रावणिरित्युक्तः कल्यमक्षन्तु निस्तगम्।" इत्यनेकार्थध्वनिमञ्जरी। पुरा लङ्कादाहानन्तरं हनूमान् पाषाणप्रहारेण अक्षनामानं रावणपुत्रं निहतवानिति रामायणम्।

(च) खाण्डवेति। खाण्डवस्य तदाख्यवनस्य विनाशे दाहने उद्यतो योऽर्जुनस्तृतीयपाण्डवस्तमिव, प्रारब्धं उपक्रान्तं अग्निकार्य्यं होमो यत्र तत्, पक्षे प्रारब्धं दाहविघ्ननिवारणेनोपक्रान्तं अग्नेः कार्य्यं दग्धि-क्रिया येन तम्। पूर्णोपमा। अस्य वृत्तान्तः पूर्वमुक्तः।

জলপূর্ণ কলস ধারণ করিয়া বৃক্ষসমূহকে অভিষিক্ত করিতেছিলেন; (গ) গ্রীষ্মকালের শেষে যেমন বৃষ্টিপাত নিকটবর্ত্তী হয়, সেই আশ্রমেও তেমন দীর্ঘিকার ও প্রস্রবণের জল নিকটবর্ত্তী ছিল; (ঘ) বর্ষাকালে (আষাঢ়মাসে) নারায়ণ যেমন গভীর সাগরজলমধ্যে সুখে নিদ্রিত হন, সেই আশ্রমেও তেমন সিংহগণ বনের অন্তর্গত গহ্বরমধ্যে সুখে নিদ্রিত ছিল; (ঙ) হনূমান্ যেমন প্রস্তরখণ্ডের আঘাতে রাবণের পুত্র অক্ষকুমারের অস্থিসমূহ চূর্ণ করিয়াছিল, মুনিগণও তেমন তৈল-নির্ম্মাণের জন্য প্রস্তরখণ্ডের আঘাতে বহেড়ার বীজ সকল চূর্ণ করিতে-ছিলেন; (চ) খাণ্ডববন-দাহনে প্রবৃত্ত অর্জ্জুন যেমন অগ্নির কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলেন,

---

(१) प्रत्यासन्न…। (२) अनिलसुतमिव।
(३) शिलाशकलसञ्चूर्णिताक्षास्थि…। (४)…हव्यधूमगन्धं।

धूम-गन्धम्, (छ) मातङ्ग-कुलाध्यासितमपि पवित्रम्, (ज) उल्लसित-धूमकेतु-शत-(१)मपि प्रशान्तोपद्रवम्, (झ) परिपूर्ण-द्विजपति-मण्डल-सनाथमपि सदा-सन्निहित-तरु-गहनान्धकारम्, (ञ) अतिरमणीयमपरमिव ब्रह्मलोक-माश्रममपश्यम्। (ट)

यत्र च मलिनता हविर्धूमेषु न चरितेषु, मुखरागः शुकेषु न कोपेषु, तीक्ष्णता कुशाग्रेषु न स्वभावेषु, चञ्चलता कदली-दलेषु न मनःसु, चक्षूरागः

(छ) सुरभीति। सुरभि सुगन्धि विलेपनं अङ्गरागयोग्यं चन्दनादिकं धरतीति सः, तं तथोक्तमपि, सततमाविर्भूतो धूमगन्धो यस्मात्तमिति सौरभाविर्भावसम्भवे धूमगन्धाविर्भावाद्विरोधः, सुरभेर्गोः, विलिप्यतेऽनेनेति विलेपनं गोमयं यस्यां सा तादृशी धरा भूमिर्यत्र तं तथोक्तमिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधालङ्कारः। "सुरभिर्गवि च स्त्रिया"मित्यमरः।

(ज) मातङ्गेति। मातङ्गकुलेन चण्डालसमूहेन अध्यासितमाश्रितमपि पवित्रमिति विरोधः, मातङ्गकुलेन हस्तिसमूहेनेति तत्समाधानं। विरोधालङ्कारः। "मातङ्गः श्वपचे गजे" इति विश्वः।

(झ) उल्लसितेति। उल्लसितं उत्थितं धूमकेतुशतं यत्र तादृशमपि प्रशान्तोपद्रवमिति विरोधः, धूमकेतुशतं वह्निसमूहो यत्रेति तत्समाधानम्। विरोधालङ्कारः। "धूमकेतुः स्मृतो वह्नावुत्पातग्रहभेदयोः।" इति विश्वः।

(ञ) परीति। परिपूर्णेन द्विजपतिमण्डलेन चन्द्रमण्डलेन सनाथः सहितस्तं तादृशमपि, सदा सन्निहितः अवस्थितः तरुगहनेषु अन्धकारो यत्र तमिति विरोधः, परिपूर्णेन ज्ञानपूर्णेन द्विजपतिमण्डलेन ब्राह्मणश्रेष्ठगणेन सनाथस्तमिति तत्समाधानम्। विरोधालङ्कारः।

(ट) अतीति। अपरं ब्रह्मलोकमिवेति द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) यत्रेति। अपि चेति चार्थः। यत्र आश्रमे। चरितेषु जनानां चरित्रेषु, मलिनता हिंसा-पैशुन्यादिपापप्रवृत्तिः नासीदिति शेषः। एवमन्यत्रापि। मैत्र्यादिभावनया शुद्धचित्तत्वादिति भावः। इतः प्रभृति

सेই আশ্রমে মুনিগণও তেমন অগ্নিকার্য্য (হোম) আরম্ভ করিয়াছিলেন; (ছ) সেই আশ্রমে সুগন্ধিচন্দনপ্রভৃতি অনুলেপনদ্রব্য (সমাধানপক্ষে—গোময়লিপ্ত ভূমি) থাকিলেও সর্ব্বদাই ধূমের গন্ধ বাহির হইতেছিল; (জ) সেই আশ্রম চণ্ডালগণ কর্ত্তৃক (সমাধানপক্ষে—হস্তিসমূহকর্ত্তৃক) আশ্রিত হইলেও পবিত্র ছিল; (ঝ) বহুসংখ্যক ধূমকেতু (সমাধানপক্ষে—হোমের অগ্নি) উত্থিত হইলেও সে আশ্রমে উপদ্রব ছিল না; (ঞ) সম্পূর্ণ চন্দ্রমণ্ডল (সমাধানপক্ষে—জ্ঞানী ব্রাহ্মণশ্রেষ্ঠগণ) সংযুক্ত হইলেও সেই আশ্রমের বনমধ্যে সর্ব্বদা অন্ধকার ছিল; (ট) দ্বিতীয় ব্রহ্মলোকের ন্যায় অতি রমণীয় সেই আশ্রম দেখিলাম।

(ঠ) আর যে আশ্রমে হোমাগ্নির ধূমেই মলিনতা (ধূম্রবর্ণ) ছিল, কিন্তু কাহারও

(१)...शतश...।

कोकिलेषु न पर-कलत्रेषु, कण्ठग्रहः कमण्डलुषु न सुरतेषु, मेखलाबन्धो व्रतेषु नेर्ष्याकलहेषु, स्तनस्पर्शो होमधेनुषु न वनितासु, (१) पक्षपातः कृकवाकुषु (२) न विद्या-विवादेषु, भ्रान्तिरनलप्रदक्षिणेषु (३) न शास्त्रेषु, (४) वसु-सङ्कीर्त्तनं दिव्यकथासु न तृष्णासु, (५) गणना रुद्राक्ष-वलयेषु न शरीरेषु,

---

मुखभङ्गविकारो जरया न धनाभिमानेन इत्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये अप्रश्नेऽपि नञा अन्यनिरासात् श्लेष-सङ्कीर्णा शाब्दी परिसंख्यालङ्कारः। मुखरागो वदनस्य रक्तिमा। कोपेष्विति निमित्तसप्तमी तेन कोप-निमित्तको मुखरक्तिमा नासीदित्यर्थः कोपस्यैवाभावात्। कुशाग्रेषु तीक्ष्णता भेदनोपयोगिनी सूक्ष्मता, किन्तु स्वभावेषु तीक्ष्णता क्रूरता नासीत् निर्म्मलचित्तत्वात्। मनःसु चञ्चलता अधीरता न, उपद्रवाभावात्। कोकिलेषु चक्षूरागो नयनलौहित्यं, किन्तु परकलत्रेषु चक्षूरागो नयनासक्तिर्न, कामाभावात्। कमण्डलुषु कण्ठग्रहो गलधारणं, किन्तु सुरतेषु न, ऊर्द्ध्वरेतसां तदभावादिति भावः। व्रतेषु उपनयनादिनियमेषु मेखलाबन्धो मौञ्जीबन्धनं, किन्तु ईर्ष्याकलहेषु ईर्ष्यामूलकविवादेषु मेखलाबन्धः खड्गमुष्टिधारणं न, तेषा-मीर्ष्याया एवाभावात्। "मेखला मुष्टिदार्ढ्यार्थमुपर्य्यधो लौहबन्धः। इत्येके" इत्यमरटीकायां भरतः। होम-धेनुषु स्तनस्पर्शो दुग्धदोहनार्थः, किन्तु स वनितासु न, कामासक्त्यभावात्। कृकवाकुषु कुक्कुटपक्षिषु पक्षपातः पक्षाभ्यां पतनम्, किन्तु विद्याविवादेषु शास्त्रतर्केषु पक्षपातो मध्यस्थस्य वादिप्रतिवादिनोरेकतरसहायताकरणं न, तस्यान्याय्यत्वात्। अत्र पक्षिसामान्यस्यैव पक्षाभ्यां पतनसम्भवे केवलकृकवाकूपादानादविशेषे विशेषाख्यदोषः, स च 'पक्षिषु' इति पाठेन समाधेयः। अनलप्रदक्षिणेषु होमाग्निप्रदक्षिणकार्य्येषु भ्रान्तिः परिभ्रमणं, शास्त्रेषु न भ्रान्ति-र्धर्मो मिथ्याज्ञानम्, यथायथनिर्णयात्। दिव्यकथासु स्वर्गीयोपाख्यानकथनेषु वसूनां ध्रुवप्रभृतीनां देवविशेषाणां सङ्कीर्त्तनमुल्लेखः, किन्तु तृष्णास्वित्यपि निमित्तसप्तमी, तेन धनतृष्णानिमित्तको वसुनो धनस्य सङ्कीर्त्तनं न,

---

চরিত্রে মলিনতা (পরহিংসাপ্রভৃতি পাপবৃত্তি) ছিল না ; শুকপক্ষিগণেরই মুখ রক্তবর্ণ ছিল, কিন্তু ক্রোধে কাহারও মুখ রক্তবর্ণ হইত না ; কুশাগ্রেই তীক্ষ্ণতা ছিল, কিন্তু কাহারও স্বভাবে তীক্ষ্ণতা (ক্রূরতা) ছিল না ; কদলীপত্রেই চাঞ্চল্য ছিল, কিন্তু কাহারও মনে চাঞ্চল্য ছিল না ; কোকিলগণেরই চক্ষূরাগ (নয়ন রক্তবর্ণ) ছিল, কিন্তু পরস্ত্রীর প্রতি কাহারও চক্ষূরাগ (নয়ন আকর্ষণ) ছিল না ; কমণ্ডলুরই কণ্ঠধারণ ছিল, কিন্তু সম্ভোগের বেলায় কণ্ঠ-ধারণ ছিল না ; উপনয়নেই মেখলাবন্ধন (মৌঞ্জী ধারণ) ছিল, কিন্তু ঈর্ষ্যামূলক বিবাদে মেখলাবন্ধন (তরবারির মুষ্টিধারণ) ছিল না ; হোমধেনুরই স্তনস্পর্শ হইত, কিন্তু স্ত্রীর নহে ; কুক্কুটপক্ষিগণেরই পক্ষপাত (পক্ষদ্বারা ভূমিতে পতন) ছিল, কিন্তু শাস্ত্রীয় তর্কে পক্ষপাত ছিল না ; হোমাগ্নিপ্রদক্ষিণ করিবার সময়েই ভ্রান্তি (পরিভ্রমণ) ছিল, কিন্তু শাস্ত্রে ভ্রান্তি (ভ্রম) ছিল না ; স্বর্গের কোন উপাখ্যান বলিবার সময়েই বসুগণের (অষ্টবসুর) উল্লেখ হইত, কিন্তু ধনের লোভে বসুর (ধনের) উল্লেখ হইত না ; জপের সময় রুদ্রাক্ষমালাতেই গণনা

---

(१) कामिनीषु। (२) कुक्कुटेषु। (३)...प्रदक्षिणासु। (४) शास्त्रार्थेषु। (५) अभिलाषासु।

मुनि-बाल-नाशः क्रतु-दीक्षया न मृत्युना, रामानुरागो रामायणेन न यौवनेन, मुखभङ्ग-विकारो जरया न धनाभिमानेन। (ठ)

यत्र च महाभारते शकुनि-वधः, पुराणे वायु-प्रलपितम्, वयःपरिणामे (१) द्विज-पतनम्, उपवन-चन्दनेषु जाड्यम्, अग्नीनां भूतिमत्त्वम्, एणकानां गीत-

---

तेषां धनतृष्णाया एवाभावात्। रुद्राक्षाणां वलयेषु वलयीकृतमालासु गणना जपादौ संख्या, किन्तु शरीरेषु न गणना नादरः, तत्र तेषां निःस्पृहत्वात्। क्रतुदीक्षया यज्ञारम्भेण हेतुना मुनीनां बालनाशः केशादिच्छेदनं "केशवापः पूर्वेद्यु"रिति श्रुतेः, किन्तु मृत्युना मुनीनां बालनाशः शिशुध्वंसो न, तपःप्रभावेणाकालमृत्यु-विरहात्। रामायणेन रामायणे गुणग्रामश्रवणेन रामे दाशरथौ अनुरागो भक्तिः, किन्तु यौवनेन यौवनो-चितकामावेशेन रामायां रमण्यां अनुराग आसक्तिर्न, तपोमाहात्म्येन तेषां यौवनेऽपि कामावेशाभावात्। जरया वार्द्धक्येन मुखस्य भङ्गविकारश्चर्म्मादिशैथिल्यरूपा विकृतिः, किन्तु धनाभिमानेन मुखस्य भङ्गविकारः परेषु भ्रूकुट्यादिविकृतिर्न, तेषां धनाभिमानयोरुभयोरेवाभावात्।

(ड) यत्रेति। अत्रापि अपि चेति चार्थः। महाभारत एव शकुनेर्दुर्य्योधनमातुलस्य वधः सहदेवेन कृत्वा श्रूयते स्म, न तु यत्र कुत्रचित् स्थाने शकुनेः पक्षिणो वधो दृष्टः, तेषां हिंसाविरहात्। इतः प्रभृति 'मूलानामधोगति'रित्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये अप्रश्नेऽपि तात्पर्य्येणान्यनिरासात् श्लेषानुप्राणिता आर्थी परिसंख्यालङ्कारः। पुराणे पुराणशास्त्र एव वायोर्देवतायाः प्रलपितं प्रकर्षेणोक्तिर्वर्णनमिति यावत्, न तु कुत्रापि गृहे वायुना उन्मादरोगेण प्रलपितं कस्यापि अनर्थकं वच आसीत् तादृशरोगाभावात्। वयः-परिणामे वार्द्धक्य एव द्विजानां दन्तानां पतनं, न तु महापातकादौ सति द्विजानां विप्राणां पतनं पातित्यम्, तेषां पापस्यैवाभावात्। "दन्तविप्राण्डजा द्विजा" इत्यमरः। उपवनस्य चन्दनेषु तरुष्वेव जाड्यं शैत्यं, न तु जनेषु जाड्यं मूर्खता सर्वेषामेव पूर्णशिक्षालाभात्। अग्नीनामेव भूतिमत्त्वं भस्मवत्त्वं, न तु मुनीनां

(সংখ্যা) ছিল, কিন্তু শরীরের প্রতি গণনা (আদর) ছিল না; যজ্ঞ আরম্ভের সময়ই মুনিগণের বালনাশ (কেশচ্ছেদন) হইত, কিন্তু মৃত্যুদ্বারা বালনাশ (বালকবিনাশ) হইত না; রামায়ণ শুনিয়া রামের প্রতি অনুরাগ (ভক্তি) হইত, কিন্তু যৌবনবশতঃ রমণীর প্রতি অনুরাগ (আসক্তি) হইত না; বার্দ্ধক্যবশতই মুখের বিকৃতি হইত, কিন্তু ধনের অহঙ্কারে নহে।

(ড) এবং যে আশ্রমে মহাভারতেই শকুনিবধ (দুর্য্যোধনের মাতুলের বধ) শুনা যাইত, কিন্তু আশ্রমের কোন স্থানে শকুনিবধ (পক্ষিবিনাশ) দেখা যাইত না; পুরাণেই বায়ুপ্রলাপ (পবনদেবের প্রকৃষ্ট বর্ণনা) শুনা যাইত, কিন্তু কোন গৃহে কাহারও বায়ুপ্রলাপ (বায়ুরোগ-বশতঃ প্রলাপ) শুনা যাইত না; বৃদ্ধকালেই দ্বিজপতন (দন্তপতন) হইত, কিন্তু পাপে দ্বিজপতন (ব্রাহ্মণদিগের পাতিত্য) হইত না; উপবনের চন্দনতরুতেই জাড্য (শীতলতা)

---

(१) परिणामेन।

श्रवण-व्यसनम्, (१) शिखण्डिनां नृत्य-पक्षपातः, (२) भुजङ्गमानां (३) भोगः, कपीनां श्रीफलाभिलाषः, मूलानामधोगतिः। (ङ)

तस्य चैवंविधस्य मध्यभाग-(४) मलङ्कुर्वाणस्य, अलक्तकालोहित-(५) पल्लवस्य, मुनिजनालम्बित-(६) कृष्णाजिन-जल-करङ्क-(७) सनाथशाखस्य, तापस-

---

भूतिमत्त्वं धनसम्पत्त्वं, धनासंग्रहकारित्वात्। एणकानां हरिणानामिव गीतश्रवणे व्यसनं आसक्तिः, न तु मुनीनां, तेषां कुत्राप्यासक्त्यभावात्। शिखण्डिनां मयूराणामिव नृत्ये नर्त्तनकाले पक्षस्य पतत्रस्य पातः पतनं कस्यचित् स्खलनमित्यर्थः, न तु मुनीनां नृत्ये नृत्यदर्शने पक्षपातः स्पृहा, तेषां सर्व्वत्रैव निस्पृहत्वात्। भुजङ्गमानां सर्पाणामिव भोगः शरीरं, न तु मुनीनां भोगः स्रक्चन्दनवनितादिसम्भोगजनितं सुखं सम्भोगवर्ज्जनात्। "भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययो"रित्यमरः। कपीनां वानराणामिव श्रीफलाभिलाषः बिल्वफलेष्वभिरुचिः, न तु मुनीनां श्रीर्धनसम्पत्तिः सैव फलं काम्ययागादिफलं तत्राभिलाषः, तेषां मुमुक्षुतया फलानभिसंहितकर्म्मकारित्वात्। तथा मूलानां तरुलतादि-कन्दानामिव मूलकानामिव वा अधोगतिः, भूमेर्निम्नदिशि गमनं, न तु मुनीनामधोगतिर्नरकपतनम् निष्पापत्वात्।

अहो अतीवचमत्कारिणी खल्वियं श्लेषालङ्काररुचिरा परिसंख्यापरम्परा तरुणरमणीश्रेणीव परमां प्रीतिमावहति रसिकानाम्।

(ङ) तस्येति। तस्य चैवंविधस्य आश्रमस्य मध्यभागमलङ्कुर्वाणस्य रक्ताशोकतरोरधश्छायायामुपविष्टं भगवन्तं जावालिं मुनिमपश्यमिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययाऽन्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि जावालिमित्यस्य विशेषणानि। प्रथमतः षष्ठ्यन्तपदानि च रक्ताशोकतरोर्विशेषणानि। अलक्तकवत् आलोहितानि

ছিল, কিন্তু কোন মনুষ্যের জাড্য (মূর্খতা) ছিল না ; অগ্নিরই ভূতি (ভস্ম) ছিল, কিন্তু মুনিগণের ভূতি (সম্পদ্) ছিল না ; হরিণগণেরই গান শুনিতে আসক্তি ছিল, কিন্তু মুনিগণের নহে ; ময়ূরগণের নৃত্যের বেলায় পক্ষপাত (পাখা পড়িয়া যাওয়া) ছিল, কিন্তু মুনিগণের নৃত্যদর্শনে পক্ষপাত (অভিলাষ) ছিল না ; সর্পগণেরই ভোগ (শরীর) ছিল, কিন্তু মুনিগণের কোন ভোগ (সম্ভোগ) ছিল না ; বানরগণেরই শ্রীফলে (বিল্বফলে) অভিলাষ ছিল, কিন্তু মুনিগণের শ্রীফলে (ধনসম্পদ্রূপ কাম্যকর্ম্মের ফলে) অভিলাষ ছিল না ; এবং তরুলতা প্রভৃতির মূলেরই অধোগতি (নীচের দিকে গতি) হইত, কিন্তু মুনিগণের অধোগতি (নরকে গমন) হইত না।

(ঙ) এই প্রকার সেই আশ্রমের মধ্যস্থান অলঙ্কৃত করিয়া অনতিবৃহৎ একটি রক্ত অশোকবৃক্ষ ছিল ; তাহার পল্লবগুলি অলক্তকের ন্যায় ঈষৎ রক্তবর্ণ ছিল, মুনিগণ তাহার শাখাতে কৃষ্ণসারের চর্ম্ম এবং নারিকেলের করঙ্ক-(খোল) নির্ম্মিত জলপাত্র সকল ঝুলাইয়া

---

(१) गीतव्यसनम्। (२) शिखण्डिनीनां, गीतनृत्यपक्षपातः। (३) भुजगानां, भुजङ्गानां।
(४) मध्यभागमलङ्कुर्वाणं। (५) अलक्तलोहित...। (६)...अवलम्बित...। (७)...करक...।

কন্যকাভির্মূলভাগ-দত্ত-(১) পীত-পিষ্টাতকানেক-(২) পঞ্চাঙ্গুলস্য, হরিণ-শিশুভিঃ পরিপীয়মানালবাল-(৩) সলিলস্য, মুনিকুমারকাবদ্ধ-কুশচীরদাম্নঃ, হরিত-গোময়োপলেপন-(৪) বিবিক্ততলস্য, তৎক্ষণ-কৃত-(৫) কুসুমোপহার-রমণীয়স্য, নাতিমহতঃ পরিমণ্ডলতয়া বিস্তীর্ণাবকাশস্য রক্তাশোকতরোরধ-শ্ছায়ায়ামুপবিষ্টম্, (ঙ) অত্যুগ্রতপোভি-(৬) র্ভুবনমিব সাগরৈঃ কনক-গিরি-মিব কুলাচলৈঃ, (৭) ক্রতুমিব বৈতান-(৮) বহ্নিভিঃ, কল্পান্ত-দিবসমিব রবিভিঃ,

---

ঈষদ্রক্তানি পল্লবানি যস্য তস্য। মুনিজনৈঃ আলম্বিতা যে কৃষ্ণাজিনজলকরঙ্কাঃ কৃষ্ণসারচর্ম্মাণি জল-রক্ষণার্থকনারিকেলাস্থিনির্ম্মিতাঃ পাত্রবিশেষাশ্চ তৈঃ সনাথাঃ সহিতাঃ শাখা যস্য তস্য। "করঙ্কো মস্তকে শস্যে নারিকেলফলাস্থনি।" ইতি বিশ্বঃ। তাপসকন্যকাভিঃ মূলভাগে দত্তানি পীতপিষ্টাতকৈঃ হরিদ্রাবর্ণ-পটবাসচূর্ণৈঃ অনেকানি পঞ্চাঙ্গুলানি হস্তস্থপঞ্চাঙ্গুলচিহ্নানি যস্য তস্য। পরি সমন্তাৎ পীয়মানং আল-বালস্য সলিলং জলং যস্য তস্য। মুনিকুমারকৈঃ আবদ্ধানি কুশচীরাণাং দর্ভৈঃ করিষ্যমাণবসনানাং দামানি রজ্জবো যত্র তস্য। হরিতেন হরিদ্বর্ণেন অশুষ্কেণ গোময়েন যদুপলেপনং তেন বিবিক্তং পবিত্রং তলং যস্য তস্য। তস্মিন্নেব ক্ষণে কৃতেন কুসুমোপহারেণ পুষ্পনিক্ষেপেণ রমণীয়স্য সুন্দরস্য। পরিমণ্ডলতয়া গোলাকারতয়া হেতুনা বিস্তীর্ণঃ অবকাশো নিম্নবর্ত্তী ছায়াপ্রদেশো যস্য তস্য। রক্তানামশোকানাং কুসুমানাং তরুরিত্যর্থো ন তু রক্তো যঃ অশোকস্তরুরিতি, তস্যাপ্রসিদ্ধেঃ।

(ঘ) অত্যুগ্রেতি। অত্যুগ্রাণি তপাংসি যেষাং তৈরিতি, মহর্ষিভিরিত্যস্য বিশেষণম্। সাগরৈঃ সমুদ্রৈঃ ভুবনং জগদিব, কুলাচলৈঃ কুলপর্ব্বতৈঃ কনকগিরিং সুমেরুমিব, বিতানস্য যজ্ঞস্য ইমে ইতি বৈতানা যে বহ্নয়ো দক্ষিণাগ্নি-গার্হপত্যাহবনীয়নামানস্তৈঃ ক্রতুং যজ্ঞমিব, "বিতানো যজ্ঞ উল্লোচে" ইত্যাদি মেদিনী। রবিভির্দ্বাদশাদিত্যৈঃ কল্পান্তদিবসং প্রলয়বাসরমিব, তৎপূর্ব্বং তদানীঞ্চ দ্বাদশাদিত্যোদয়স্য পুরাণপ্রসিদ্ধত্বাৎ।

রাখিয়াছিলেন; তপস্বীদের কন্যারা তাহার মূলে হরিদ্রাবর্ণ আবীরদ্বারা হস্তের পঞ্চাঙ্গুলের অনেক চিত্র করিয়া রাখিয়াছিলেন; হরিণশাবকগণ চতুর্দিক্ হইতে তাহার আলবালের জল পান করিতেছিল; মুনিকুমারগণ কুশময় বস্ত্র নির্ম্মাণ করিবার জন্য তাহার রজ্জু নির্ম্মাণ করিয়া সেই বৃক্ষে বন্ধন করিয়া রাখিয়াছিলেন; হরিতবর্ণ গোময়দ্বারা লেপন করায় তাহার তল পবিত্র ছিল; সেই সময়েই নানাবিধ পুষ্প নিক্ষেপ করায় সেই বৃক্ষটি সুন্দর দেখাইতেছিল; আর গোলাকার বলিয়া তাহার তলের ছায়া বিস্তৃত ছিল; সেই বৃক্ষের তলে ছায়াতে উপবিষ্ট ভগবান্ মহর্ষি জাবালিকে দেখিলাম।

(ঙ) সমুদ্রগণে পরিবেষ্টিত ভূমণ্ডলের ন্যায়, কুলপর্ব্বতগণে পরিবেষ্টিত সুমেরুর ন্যায়, যজ্ঞীয়বহ্নিপরিবেষ্টিত যজ্ঞের ন্যায়, দ্বাদশ সূর্য্য-পরিবেষ্টিত প্রলয়দিবসের ন্যায় এবং প্রলয়-

---

(১)...কুমারিকাভিরালবালদত্ত...। (২)...পীতপিষ্ট...। (৩) পীয়মান...। (৪)...উপলিপ্ত...। (৫)...রচিত...। (৬) উগ্রতপোভিঃ। (৭) কুলপর্ব্বতৈঃ। (৮) বৈতানিক...।

कालमिव कल्पैः, समन्तान्महर्षिभिः परिवृतम्, (ण) उग्र-शाप-भीतयेव कम्पित-देहया (१) प्रणयिन्येव विहित-केशग्रहया क्रुद्धयेव कृत-भ्रूभङ्गया मत्तयेवा-कुलितगमनया प्रसाधितयेव प्रकटित-तिलकया जरया गृहीतव्रतयेव भस्म-धवलया धवलीकृत-विग्रहम्, (त) आयामिनीभिः पलित-पाण्डुराभिः तपोभि-(२) र्विजित्य मुनिजनमखिलं धर्मपताकाभिरिवोच्छ्रिताभिः (३) अमरलोकमारोढुं,

---

कल्पैः प्रलयैः कालं अखण्डं समयमिव, प्रलयानां पौर्वापर्य्येऽपि 'एकत्वतया मूलतः परिवृतस्त्व'मित्यादिवत् तैरखण्डकालस्य यथा कथञ्चित् परिवेष्टनमुपपद्यते। महर्षिभिः समन्तात् सर्वासु दिक्षु परिवृतं परिवेष्टितम्। अत्र मालोपमालङ्कारः।

(ण) उग्रेति। उग्रशापभीतया जाबालेरेव भयङ्कराभिसम्पाततस्तया स्त्रियेव, कम्पितो देहो यया, पक्षान्तरे यस्यास्तया। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। विशेषणमात्रोपादानाद्विशेष्यस्थानस्य नियततया स्त्रियेत्यनुक्ता-वपि न न्यूनपदतादोषः "अयमुदयति मुद्राभञ्जनः पद्मिनीना"मित्यमरकोषटीकायां रघुनाथोदाहृतवत्। केचिन्नूतनं त्वां वदन्ति, तन्मते स्त्रियेति नोपादानम्। एवमन्यत्रापि। प्रणयिन्या वल्लभयेव, विहितः केशग्रहः कुन्तलावलम्बनं यया तया, पक्वताविधानात् रतिकलहाक्रोशाश्चेति भावः। पूर्णोपमा। क्रुद्धया क्रोधाविष्टया स्त्रियेव, कृतः भ्रुवोर्भङ्गः शैथिल्यं भ्रुकुटी च यया तया। पूर्णोपमा। मत्तया मद्यपानमत्तया स्त्रियेव, आकुलितं स्खलितीकृतं गमनं यया, पक्षे यस्यास्तया। पूर्णोपमा। प्रसाधितया अलङ्कृतया स्त्रियेव, प्रकटितानि प्रकाशितानि तिलकानि शरीरे कृष्णवर्णचिह्नानि, ललाटे तिलकश्च यया तया। पूर्णोपमा। तथा गृहीतव्रतया धृतकिञ्चिन्नियमया स्त्रियेव भस्मवद्धवलया भस्मना धवलया च जरया वार्द्धक्येन। पूर्णोपमा। धवलीकृतविग्रहं शुक्लीकृतशरीरम्।

(थ) आयामीति। आयामिनीभिर्दीर्घाभिः, पलितेन वार्द्धक्यजनितशौक्ल्येन पाण्डुराभिः पाण्डुवर्णाभिः।

পরিবেষ্টিত অখণ্ড কালের ন্যায়, মহর্ষি জাবালি অন্যান্য মুনিগণে পরিবেষ্টিত ছিলেন। (ত) ভয়ানক অভিশাপের ভয়ে কোন স্ত্রীলোক যেমন নিজদেহ কম্পিত করে, জরাও তেমন তাঁহার দেহ কম্পিত করিতেছিল; প্রিয়তমা যেমন কেশগ্রহণ করে, জরাও তেমন তাঁহার কেশগ্রহণ করিয়াছিল (কেশ পাকাইয়াছিল); ক্রুদ্ধা রমণী যেমন ভ্রূভঙ্গ করে, জরাও তেমন তাঁহার ভ্রূভঙ্গ (ভ্রূযুগলকে শিথিল) করিয়াছিল; মদ্যপানে মত্তা রমণী যেমন স্খলিতভাবে গমন করে, (এখানে পা ফেলিতে ওখানে ফেলে), জরাও তেমন তাঁহার গতি স্খলিত করিয়াছিল; অলঙ্কৃতা রমণী যেমন ললাটে তিলকধারণ করে, জরাও তেমন তাঁহার শরীরে তিলের মত কাল কাল চিহ্ন করিয়াছিল; কোন ব্রতকারিণী স্ত্রী যেমন ভস্ম মাখিয়া শ্বেতবর্ণ হয়, জরাও তেমন ভস্মের ন্যায় শ্বেতবর্ণ হইয়াছিল; সেই জরা জাবালির শরীর শ্বেতবর্ণ করিয়াছিল। (থ) জাবালি, দীর্ঘ ও বার্দ্ধক্যবশতঃ পাণ্ডুবর্ণ জটা-সমূহ শোভা পাইতেছিলেন; সেইরূপ জটাসমূহ থাকায় প্রতীতি হইতেছিল যেন তপস্যা-

---

(१) उग्रशापकम्पितदेहया। (२) तपसा। (३) उपार्जिताभिः।

पुण्य-रज्जुभिरिवोपसंगृहीताभिः, अतिदूर-प्रवृद्धस्य तपस्तरोः कुसुम-मञ्जरीभिरिवोद्गताभिर्जटाभिरुपशोभमानम्, (थ) उपरचित-भस्म-त्रिपुण्ड्रकेण तिर्य्यक्-प्रवृत्त-गङ्गा-(१) स्रोतस्त्रयेण (२) हिमगिरि-शिलातलेनेव ललाटफलकेनोपेतम्, (३) (द) अधोमुख-चन्द्र-कलाकाराभ्यामवलम्बित-वलि-शिथिलाभ्यां भ्रूलताभ्यामवष्टभ्यमान-दृष्टिम्, (ध) अनवरत-मन्त्राभ्यास-(४) विवृताधर-पुटतया निष्पतद्भिरतिशुचिभिः सत्यप्ररोहैरिव स्वच्छेन्द्रिय-वृत्तिभिरिव विद्या-गुणैरिव (५) करुणारस-(६) प्रवाहैरिव दशन-मयूखैर्धवलित-पुरोभागम्, उद्दम-

---

उच्छ्रिताभिरुत्तोलिताभिः धर्म्मपताकाभिर्धर्म्मसूचकध्वजाञ्चलैरिव स्थिताभिः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अमरलोकं स्वर्गं। उपसंगृहीताभिरायोजिताभिः पुण्यरज्जुभिर्धर्म्ममयरश्मिभिरिव स्थिताभिः। अन्योऽपि वृक्षादिमुच्चदेशमारोढुं रज्जुमायोजयति। अत्रापि जात्युत्प्रेक्षा। अतिदूरप्रवृद्धस्य अतीववृद्धिं प्राप्तस्य तप एव तरुस्तस्मात् उद्गताभिरुत्थिताभिः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकजात्युत्प्रेक्षयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(द) उपेति। उपरचितानि भस्मत्रिपुण्ड्राणि भस्मना तिर्य्यक् तिस्रो रेखा यस्मिन् तेन, अतएव तिर्य्यक् प्रवृत्तं तिरश्चीनभावेन प्रचलितं गङ्गायाः स्रोतस्त्रयं यत्र तादृशेन, हिमगिरेः शिलातलेन प्रस्तरफलकेनेव ललाटफलकेन भालदेशेन उपेतं विशिष्टम्। अत्र तादृशशिलातलाप्रसिद्धेर्द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ध) अध इति। अधोमुखी या चन्द्रकला चन्द्ररेखा तस्या आकार इव आकारो ययोस्ताभ्यां, अवलम्बिता शिथिलतया निम्ने पतिता या वलिः शिथिलं चर्म्म "वलिश्चामरदण्डे च जरया श्लथचर्म्मणि" इत्यादि विश्वः; तया शिथिलाभ्यां शैथिल्यान्नयनोपरि पतिताभ्यामित्यर्थः, अतएव ताभ्यां भ्रूलताभ्यां अवष्टभ्यमाना आश्रीयमाणा कथञ्चिदवरुध्यमाना दृष्टिर्दर्शनशक्तिर्यस्य तम्। अत्रार्थी समासगतलुप्तोपमालङ्कारः।

(न) अनेति। अनवरतो यो मन्त्राभ्यासो मन्त्रजपपौनःपुन्यं तेन विवृतं व्यादत्तं अधरपुटं ओष्ठयुगलं यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, निष्पतद्भिर्निर्गच्छद्भिः, अतिशुचिभिः परमधवलैः, सत्यप्ररोहैरिव सत्यवाक्य-सत्यव्यवहारयो·

দ্বারা অন্যান্য মুনিগণকে পরাজিত করিয়া ধর্ম্মের পতাকা তুলিয়া দিয়াছেন, স্বর্গলোকে আরোহণ করিবার নিমিত্ত যেন ধর্ম্মময় রজ্জুসমূহ সংগ্রহ করা হইয়াছে এবং অত্যন্ত বৃদ্ধি-প্রাপ্ত তপস্যারূপ তরু হইতে যেন পুষ্পমঞ্জরী প্রাদুর্ভূত হইয়াছে। (দ) জাবালি, ললাটে ভস্মদ্বারা ত্রিপুণ্ড্র অঙ্কিত করিয়াছিলেন; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন হিমালয়ের কোন প্রস্তরফলকে গঙ্গার তিনটি স্রোত তির্য্যগ্‌ভাবে (তেরচা ভাবে) প্রবাহিত হইতেছে। (ধ) অধোমুখ চন্দ্ররেখার ন্যায় ভ্রূযুগল তাঁহার দৃষ্টি রোধ করিতেছিল, কারণ, সেই ভ্রূযুগলের শিথিল চর্ম্ম আসিয়া নয়নের উপর পতিত হইয়াছিল, (ন) অবিশ্রান্ত মন্ত্র জপ করায় ওষ্ঠযুগল বিবৃত (ফাঁক করা) হইতেছিল বলিয়া মুখ হইতে নির্গত অত্যন্ত শুভ্রবর্ণ

---

(१)… त्रिपथगा। (२)…त्रयेणेव …तलेन। (३)…पट्टेनोपेतं। (४)…मन्त्राक्षराभ्यास…। (५) क्वचिदयं पाठो नास्ति। (६) करुणरस…।

दमल-गङ्गा-प्रवाहमिव जह्नुम्, (न) अनवरत-(१) सोमोद्‌गार-सुगन्धि-निश्वासा-(२) वकृष्टैर्मूर्त्तिमद्भिरिव शापाक्षरैः (३) सदामुखभाग-सन्निहितैः परिस्फुरद्भिरलिभिरविरहितम्, अतिकृशतया निम्नतर-गण्डगर्त्तम् उन्नततर-(४) हनु-घोणं आकराल-तारकं अवशीर्य्यमाण-विरल-नयन-पक्ष्ममालं उद्‌गत-दीर्घरोम-रुद्ध-श्रवण-विवरं आनाभि-लम्बित-कूर्च्चकलाप-माननमादधानम्, (प) अतिचपलानामिन्द्रिया-

---

रङ्कुरैरिव, स्वच्छा निर्म्मलाः पापहीना या इन्द्रियवृत्तयः मनःप्रभृतीनामिन्द्रियाणां व्यापारास्ताभिरिव, विद्यागुणैर्ज्ञानधर्म्मैर्विनयादिभिरिव करुणारसप्रवाहैरिव दयारसस्रोतोभिरिव सर्व्वत्र निर्म्मलत्वादिति भावः, दशनमयूखैर्दन्तकिरणैः धवलितः श्वेतीकृतः पुरोभागः सम्मुखदेशो यस्य तं, अतएव उद्वमन् दक्षिणकर्णान्निर्गच्छन् अमलो गङ्गाप्रवाहो यस्मात्तं जह्नुं तदाख्यं मुनिमिव स्थितम्। अत्र वमतेरकर्म्मकत्वं विवक्षितं। अत्र चतस्र एव गुणोत्प्रेक्षा वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमुपमा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

पुरा किल हिमालयान्निर्गता गङ्गा यजमानस्य जह्नोर्यज्ञवाटं प्लावयन्ती क्रोधात्तेन निपीता पुनर्भगीरथप्रार्थनया कर्णरन्ध्राभ्निःसारिता, इति ब्रह्मपुराणवार्त्ता, अतएव जाह्नवीत्युच्यते।

(प) अनेति। इत्यादीन्याननविशेषणानि। अनवरतं यः सोमस्य निपीतसोमरसस्य उद्गारः तेन सुगन्धिना निश्वासेन वायुना अवकृष्टैराकृष्टैः मूर्त्तिमद्भिः शापाक्षरैरभिसम्पातवर्णैरिव। परिस्फुरद्भिर्विचरद्भिः, अलिभिर्भ्रमरैः अविरहितं अपरित्यक्तं। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। अतिकृशतया नितान्तक्षीणदेहतया निम्नतरौ अतीवगभीरौ गण्डगर्त्तौ गर्त्तीभूतौ गण्डौ यत्र तत्। उन्नततरा अत्युच्चाः हनू गण्डोपरिभागद्वयं घोणा नासिका च यस्मिन् तत्। नितान्तक्षीणदेहानामीदृगाननं भवतीति द्रष्टव्यम्। आकराले तेजस्वितया अतीवोग्रे तारके नयनताराद्वयं यत्र तत्। अवशीर्य्यमाणा क्षीयमाणा विरला अनिविड़ा नयनपक्ष्ममाला लोचनलोमश्रेणी यत्र तत्। उद्‌गतैरुत्पन्नैः दीर्घैः रोमभिः रुद्धे आवृते श्रवणविवरे कर्णरन्ध्रद्वयं यत्र तत्। आनाभिलम्बितो नाभिपर्य्यन्तपतितः कूर्च्चकलापः श्मश्रुराजिर्यत्र तत्। "कूर्च्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्ये श्मश्रुकैतवयोरपि।" इति त्रिकाण्डशेषः। तादृशमाननं मुखं आदधानं धारयन्तम्।

সত্যের অঙ্কুরের ন্যায়, নির্ম্মল ইন্দ্রিয়বৃত্তির ন্যায়, বিদ্যার গুণ বিনয়াদির ন্যায় এবং দয়ার স্রোতের ন্যায় দন্তরশ্মি তাঁহার সম্মুখভাগ শ্বেতবর্ণ করিয়াছিল, সুতরাং নির্ম্মল গঙ্গাপ্রবাহ-নিঃসারণকারী জহ্নুমুনির ন্যায় তাঁহাকে দেখা যাইতেছিল; (প) যজ্ঞে যে সোমরস পান করিয়াছিলেন, অবিশ্রান্ত তাহার উদ্গার (ঢেঁকুর) হওয়ায় সুগন্ধি নিশ্বাসবায়ুতে আকৃষ্ট হইয়া ভ্রমরগণ, অভিশাপের মূর্ত্তিমান্ অক্ষরের ন্যায় সর্ব্বদা মুখের নিকট থাকিয়া বিচরণ করিতেছিল; শরীর অতিশয় কৃশ বলিয়া গালের গর্ত্ত দুইটা গভীর এবং তাহার উপরের হাড় দু'খানা ও নাক খুব উঁচু ছিল, নয়নের তারা অত্যন্ত উগ্র এবং লোমগুলি জীর্ণ ও বিরল (খুব ফাঁক ফাঁক) ছিল, দীর্ঘ রোমরাজি উৎপন্ন হইয়া কর্ণবিবর আবৃত করিয়াছিল এবং শ্মশ্রুসমূহ (দাড়ী) নাভিপর্য্যন্ত পতিত হইয়াছিল, জাবালি এই ভাবের মুখমণ্ডল ধারণ

---

(১) অবিরত, অবিরল...। (২)...নিঃশ্বাসা...। (৩) মূর্ত্তিমদ্ভিঃ শাপাক্ষরৈরিব। (৪) সমুন্নত...।

श्वानां (१) अन्तःसंयमन-रज्जुभिरिवाततताभिः कण्ठनाड़ीभिर्निरन्तरावनद्ध-(२) कन्धरम्, समुन्नत-(३) विरलास्थि-पञ्जरम्, अंसालम्बित-धवल-(४) यज्ञोपवीतम्, अनिल-(५) वश-जनित-तनु-तरङ्ग-भङ्गं उत्प्लवमान-नवमृणालमिव (६) मन्दाकिनी-प्रवाहं अकलुषमङ्गमुद्वहन्तम्, (फ) अमल-स्फटिक-शकल-घटितमक्ष-(७) वलय-मत्युज्ज्वल-(८) स्थूल-मुक्ताफल-ग्रथितं सरस्वती-हारमिव चलदङ्गुलि-विवर-गत-

---

(फ) अन्तरिति। इतः प्रभृत्यङ्गविशेषणानि। इन्द्रियाण्येव अश्वाः विषयान् प्रति प्राणिनामाकर्षणा-दिति भावः, कठोपनिषच्च यथा—"इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।" तेषां अन्तर्मध्ये संयमन-रज्जुभिरिव बन्धनरश्मिभिरिव, आततताभिर्विस्तीर्णाभिः कण्ठनाड़ीभिर्गलदेशस्थशिराभिः निरन्तरं घनं यथा स्यात्तथा अवनद्धा सम्बद्धा कन्धरा ग्रीवा यस्य तत्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। समुन्नतं मांसादिक्षयात् समुन्नतवत् दृश्यमानं विरलं अघनं अस्थिपञ्जरं यस्य तत्। अंसे स्कन्धे आलम्बितं लम्बमानं धवलं यज्ञोपवीतं यस्य तत्। अतएव अनिलवशेन वायुवशेन जनितः तनूनां क्षुद्राणां तरङ्गाणां ऊर्म्मीणां भङ्गः कौटिल्यं वक्रता यस्मिन् तं, तथा उत्प्लवमानं जलोपरि सन्तिष्ठमानं नवं मृणालं यस्मिन् तं, मन्दाकिन्या गङ्गायाः प्रवाहमिव अकलुषं निर्म्मलं अङ्गं देहावयवं उद्वहन्तं धारयन्तम्। अत्र तादृश-कुटिलतनुतरङ्गसदृशं अस्थिपञ्जरं, जलोपरिप्लवमाननवमृणालसदृशञ्च यज्ञोपवीतमित्युपमालङ्कारः।

(ब) अमलेति। अत्युज्ज्वल-स्थूल-मुक्ताफलग्रथितं सरस्वत्या वाग्देव्याः हारं कण्ठमालामिव, चल-न्तीनां मालागुटिकाकर्षणेन चञ्चलीभूतानां अङ्गुलीनां विवरगतं रन्ध्रस्थितं, अमलैः स्वच्छैः स्फटिकानां शकलैः खण्डैः घटितं निर्म्मितं अक्षवलयं जपमालां आवर्त्तयन्तं क्रमेण संख्याविशेषपूरणात् भ्रमयन्तं, अतएव अनवरतं भ्रमितं प्रवहनामकवायुना घूर्णितं तारकाचक्रं नक्षत्रचक्रं यस्मिन् तादृशं अपरं द्वितीयं ध्रुवं तदाख्यं नक्षत्रविशेषमिव स्थितम्। यथा चिरस्थिरयोरुभयोर्ध्रुवनक्षत्रयोर्म्मध्यवर्त्ति नक्षत्रचक्रं प्रवहवायुना निरन्तरं घूर्ण्यते, तथा उपविष्टेन स्थिरतरेण मुनिना वामहस्ताग्रस्थापिता स्फटिकमाला जपसंख्यारक्षणाय निरन्तरमङ्गुलीभिः परिचालितेति सादृश्यम्। तथा च सूर्य्यसिद्धान्ते—

করিতেছিলেন ; (ফ) আর অত্যন্তচঞ্চল ইন্দ্রিয়রূপ অশ্বগণকে অভ্যন্তরে বন্ধন করিয়া রাখিবার রজ্জুর ন্যায় বিস্তৃত শিরাসমূহ তাঁহার গ্রীবাদেশ ঘনভাবে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল, পার্শ্বের বিরল অস্থিপঞ্জর উচু হইয়াছিল এবং শুভ্রবর্ণ একটি যজ্ঞোপবীত স্কন্ধদেশে লম্বমান ছিল ; সুতরাং বায়ুবেগে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র তরঙ্গগুলি বক্র হইয়া গেলে এবং জলের উপরে একটি নূতন মৃণাল ভাসিতে থাকিলে গঙ্গার প্রবাহ যেরূপ দেখা যায়, জাবালি সেইরূপ অঙ্গ বহন করিতে-ছিলেন। (ব) অতিশয় উজ্জ্বল ও বৃহৎ মুক্তাসমূহে গ্রথিত সরস্বতীর কণ্ঠহারের ন্যায়, নির্ম্মল স্ফটিকখণ্ডনির্ম্মিত জপমালা অঙ্গুলীর অন্তরালে রাখিয়া পরিবর্ত্তিত করিতেছিলেন,

---

(१) इन्द्रियाश्वा। (२)...संबद्ध...। (३) उन्नत...। (४) अवलम्बित, लम्बियज्ञो...।
(५) वायु। (६)...जलनवमृणालमिव। (७) घटिताक्ष...। (८) उज्ज्वल...।

मावर्त्तयन्तम्, अनवरत-भ्रमित-तारकाचक्रमपरमिव ध्रुवम्, (ब) उन्नमता (१) शिरा-जालकेन जरत्कल्पतरुमिव परिणत-लतासञ्चयेन निरन्तर-निचितम्, (भ) अमलेन (२) चन्द्रांशुभिरिवामृतफेनैरिव गुणसन्तान-तन्तुभिरिव निर्म्मितेन मानस-सरो-जल-क्षालन-(३) शुचिना दुकूल-वल्कलेन द्वितीयेनेव जराजालकेन संच्छादितम्, (म) आसन्नवर्त्तिना मन्दाकिनी-सलिल-पूर्णेन त्रिदण्डोपविष्टेन स्फाटिक-(४) कमण्डलुना विकच-पुण्डरीक-(५) राशिमिव राजहंसेनोपशोभमानम्, (य)

"भूचक्रं ध्रुवयोर्बद्धमाक्षिप्तं प्रवहानिलैः। पर्य्येत्यजस्रं तन्नद्धा ग्रहकक्षा यथाक्रमम्।"

अत्रोपमा पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं द्रव्योत्प्रेक्षा च इत्येतेषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिरलङ्कारः।

(भ) उन्नमतेति। परिणतानां पक्वानां लतानां सञ्चयेन समूहेन निरन्तरनिचितं घनभावेन व्याप्तं जरत्कल्पतरुमिव पुरातनकल्पवृक्षमिव, उन्नमता उपरि भासमानेन शिराणां जालकेन समूहेन निरन्तर-निचितम्। अत्रोपमालङ्कारः। मुनेः कल्पतरुवत् प्रार्थितफलदानयोग्यताज्ञापनाय कल्पतरुपदमिति न अविशेषे विशेषाख्यदोषः।

(म) अमलेनेति। अमलेन निर्म्मलेन, अतएव चन्द्रांशुभिरिव अमृतफेनैरिव तथा गुणानां दयाधर्म्मा-दीनां सन्तानाः समूहा एव तन्तवः सूत्राणि तैरिव निर्म्मितेन, मानससरसो जलेन यत् क्षालनं प्रक्षालनं तेन शुचि पवित्रं तेन, द्वितीयेन जराजालकेनेव धावल्याद्यैक्यसमूहेनेव, दुकूलवत् क्षौमवस्त्रवत् वल्कलं तेन, संच्छादितं आवृतमाभिनिविष्टदेशम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, द्वे क्रियोत्प्रेक्षे, एका च निरङ्ग-केवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा, अपरा द्रव्योत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) आसन्नेति। राजहंसेन विकचपुण्डरीकराशिमिव प्रस्फुटितश्वेतपद्मसमूहमिव त्रिदण्डोपविष्टेन त्रिपदिकोपरिस्थितेन। अत्रोपमालङ्कारः।

সুতরাং যাহাতে আবদ্ধ থাকিয়া নক্ষত্রচক্র অবিশ্রান্ত ঘূর্ণিত হইতেছে, দ্বিতীয় সেই ধ্রুবনক্ষত্রের ন্যায় জাবালিকে দেখা যাইতেছিল; (ভ) পুরাতন কল্পবৃক্ষ যেমন পরিপক্ব লতাসমূহে ঘনভাবে পরিবেষ্টিত থাকে, জাবালির শরীরও তেমন উচ্চ উচ্চ শিরাসমূহে ঘনভাবে পরিবেষ্টিত ছিল; (ম) মানসসরোবরের জলে প্রক্ষালন করায় পরম পবিত্র এবং ক্ষৌমবসনের ন্যায় নির্ম্মল একখানা বল্কল তিনি পরিধান করিয়াছিলেন, সেই বল্কলখানা যেন চন্দ্ররশ্মিদ্বারা, কিংবা অমৃতের ফেনদ্বারা, অথবা দয়াধর্ম্ম প্রভৃতি গুণসমূহরূপ সূত্রদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল, আর দ্বিতীয় বার্দ্ধক্যের ন্যায় সেখানা তাঁহার দেহে লাগিয়াছিল; (য) গঙ্গাজলে পরিপূর্ণ স্ফটিকনির্ম্মিত একটি কমণ্ডলু নিকটবর্ত্তী ত্রিপদিকার উপরে স্থাপিত ছিল, সুতরাং নিকটবর্ত্তী

(१) उन्नसता। (२) अमलैः। (३)...क्षालित...। (४)...स्फटिक...।
(५)...कमल...।

स्थैर्य्येणाचलानां गाम्भीर्य्येण सागराणां ( ) तेजसा सवितुः प्रशमेन तुषार-रश्मेः निर्म्मलतयाऽम्बरतलस्य संविभागमिव कुर्व्वाणम्, (र) वैनतेयमिव स्वप्रभावोपात्त-सकल-द्विजाधिपत्यम्, (२) (ल) कमलासनमिवाश्रमगुरुम्, (व) जरच्चन्दन-तरुमिव भुजङ्ग-(३) निर्म्मोक-धवल-जटाकुलम्, (श) प्रशस्त-वारणमिव (४) प्रलम्ब-कर्णवालम्, (५) (ष) बृहस्पतिमिवाजन्म-वर्द्धित-कचम्, (स) दिवस-

---

(र) स्थैर्य्येणेति। स्वकीयवस्तुनः परस्मै विभज्य प्रतिपादनं संविभागः, तं कुर्व्वाणमिव, तथा च स्थैर्य्यगाम्भीर्य्यादीनात्मगुणान् अचलादिभ्यो विभज्य दत्त्वेव विद्यमानमित्यर्थः, तादृशस्थैर्य्यादिमत्त्वादिति भावः। अत्र अचलानां स्थैर्य्यं कम्पराहित्यं मुनेः स्थैर्य्यन्तु मनःस्थिरता, सागराणां गाम्भीर्य्यमगाधता, मुनेर्गाम्भीर्य्यन्तु दुरवगाहस्वभावत्वं, सवितुस्तेजः प्रखरकिरणवत्त्वम् मुनेस्तेजस्तु तपःप्रभाववत्त्वं, तुषाररश्मेश्चन्द्रस्य प्रशमः सौम्यमूर्त्तिता मुनेः शमस्त्वन्तरिन्द्रियनिग्रहः, आकाशस्य निर्म्मलता स्वच्छता मुनेर्निर्म्मलता तु निष्पापत्वमिति भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अनेन धातुर्विभाग इत्यादिवत् स्थैर्य्येणेत्यादौ करणे तृतीया।

(ल) वैनेति। वैनतेयं गरुडमिव, स्वप्रभावेण निजमाहात्म्येन उपात्तमर्जितं सकलेषु द्विजेषु ब्राह्मणेषु पक्षिषु च आधिपत्यं प्रभुत्वं येन तम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(व) कमलेति। कमलासनं ब्रह्माणमिव, आश्रमस्य तत्तपोवनस्य ब्रह्मचर्य्यादीनां चतुर्णामाश्रमाणाञ्च गुरुमध्यापयितारं नियन्तारं च तम्। पूर्णोपमा। ब्रह्मा चाश्रमान् नियमितवानिति पुराणेषु द्रष्टव्यं।

(श) जरदिति। जरच्चन्दनतरुमिव पुरातनचन्दनवृक्षमिव, भुजङ्गनिर्म्मोकवत् सर्पकञ्चुकवत् धवला जटाः, पक्षे भुजङ्गनिर्म्मोका धवला जटा इव ताभिराकुलं व्याप्तम्। लुप्तोपमापूर्णोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। जीर्णचन्दनवृक्षेष्वेव सर्पाधिक्यसम्भवप्रदर्शनार्थं जरत्पदम्।

(ष) प्रशस्तेति। प्रशस्तवारणं महाहस्तिनमिव, प्रलम्बाः क्षौराभावाद्दीर्घाः कर्णवालाः कर्णलोमानि यस्य तं, पक्षे प्रलम्बाः लम्बमानाः कर्णौ वालाः पुच्छलोमानि च यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(स) बृहेति। आजन्मनो वर्द्धिताश्छेदाभावाद् वृद्धिं प्रापिताः कचाः केशाः, पुत्रश्चेत्यवर्द्धितः कचः कचनामा पुत्रश्च येन तम्। पूर्णोपमा।

(र) জাবালি, স্থৈর্য্যদ্বারা পর্ব্বতদিগকে, গম্ভীর্য্যদ্বারা সমুদ্রদিগকে, তেজদ্বারা সূর্য্যকে, শম-গুণদ্বারা চন্দ্রকে এবং নির্ম্মলতাদ্বারা আকাশকে যেন বিভক্ত করিয়া দিয়াছিলেন; (ল) গরুড় যেমন নিজের প্রভাবে সকল পক্ষিগণের আধিপত্য লাভ করিয়াছিলেন, জাবালিও তেমন নিজের প্রভাবে সকল ব্রাহ্মণগণের আধিপত্য লাভ করিয়াছিলেন; (ব) ব্রহ্মা যেমন ব্রহ্মচর্য্য প্রভৃতি আশ্রমচতুষ্টয়ের নিয়ন্তা, তিনিও তেমন সেই আশ্রমের নিয়ন্তা (বা অধ্যাপক) ছিলেন; (শ) পুরাতন চন্দনবৃক্ষ যেমন ধবল জটার ন্যায় সর্পকঞ্চুকে ব্যাপ্ত থাকে, তিনিও তেমন সর্পকঞ্চুকের ন্যায় ধবল জটাতে ব্যাপ্ত ছিলেন; (ষ) প্রকাণ্ড হস্তীর যেমন কর্ণযুগল ও

---

(१) क्वचित्: स्थैर्य्येण सागराणां गाम्भीर्य्येण च। (२) क्वचित् सकलपदं नास्ति। (३) भुजग…। (४)…वारणपतिमिव। (५) कर्णवालं।

मिवोद्यदर्क-बिम्ब-भास्वर-मुखम्, (ह) शरत्कालमिव क्षीणवर्षम्, (क्ष) शान्तनुमिव प्रियसत्यव्रतम्, (क) अम्बिका-करतलमिव रुद्राक्ष-ग्रहण-(१) निपुणम्, (ख) शिशिर समयसूर्य्यमिव कृतोत्तरासङ्गम्, (ग) वड़वानलमिव (२) सतत-(३)

(ह) दिवसमिति। दिवसं वासरमिव, उद्यदर्कबिम्बवत् उदयमानसूर्य्यमण्डलवत् भास्वरं दीप्तिमत् मुखं वदनं यस्य तं, पक्षे उद्यदर्कबिम्बेन भास्वरं मुखं आद्यभागो यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(क्ष) शरदिति। क्षीणानि वर्षाणि वयोवत्सरा यस्य तं, स्वल्पावशिष्टायुष्कमित्यर्थः, पक्षे क्षीणं स्वल्पीभूतं वर्षं वृष्टिर्यस्मिन् तम्। पूर्णोपमा।

(क) शान्तनुमिति। शान्तनुं तदाख्यं चन्द्रवंशीयं राजानमिव प्रियं अभीष्टं सत्यव्रतं सत्यवाक्य सत्यव्यवहाररूपो नियमो यस्य तम्, पक्षे प्रियः परमोत्कृष्टपुत्रत्वात् प्रीतिकरः सत्यव्रतो भीष्मो यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ख) अम्बिकेति। अम्बिकायाः पार्वत्याः करतलं पाणिमिव, रुद्राक्षस्य रुद्राक्षमालायाः ग्रहणे निपुणं दक्षं, पक्षे रुद्रस्य शिवस्य अक्षिणी चक्षुषी इति रुद्राक्षे तयोर्ग्रहणे कौतुकवशेन पिधाने निपुणम्। पूर्णोपमा।

(ग) शिशिरेति। शिशिरसमयस्य शीतकालस्य "तपस्तपस्यौ शैशिरावृतु"रिति श्रुतेः माघफाल्गुनमासयोरित्यर्थः सूर्य्यमिव, कृतः स्कन्धे अर्पितः उत्तरासङ्ग उत्तरीयवस्त्रं येन तं पक्षे कृत उत्तरस्या दिशः सङ्गः क्रमेण संसर्गो येन तम्, तदानीं रवेरुत्तरायणारम्भात्। पूर्णोपमा।

(घ) वड़वेति। सततं पयो दुग्धमात्रं जलञ्च भक्ष्यं खाद्यं शोषणीयञ्च यस्य तम्। पूर्णोपमा।

পুচ্ছের লোম বৃহৎ থাকে, জাবালিরও তেমন কর্ণের লোম বৃহৎ বৃহৎ ছিল; (স) বৃহস্পতি যেমন নিজপুত্র কচকে জন্ম হইতে বর্দ্ধিত করিয়াছিলেন, তিনিও তেমন জন্ম হইতে কেশ-কলাপ বর্দ্ধিত করিয়াছিলেন; (হ) দিনের প্রথম ভাগ যেমন উদয়মান সূর্য্যমণ্ডলদ্বারা দীপ্তিমান্ হয়, জাবালির মুখমণ্ডলও তেমন উদয়মান সূর্য্যমণ্ডলের ন্যায় দীপ্তিমান্ ছিল; (ক্ষ) শরৎকালে যেমন বৃষ্টি ক্ষয় প্রাপ্ত হয়, জাবালির বয়সের বৎসরও তেমন ক্ষয় প্রাপ্ত হইয়াছিল; (ক) ভীষ্ম যেমন পিতা শান্তনুর প্রিয় পাত্র ছিলেন, সত্যবাক্য ও সত্য-ব্যবহারের নিয়মও তেমন জাবালির প্রিয় ছিল; (খ) পার্ব্বতীর পাণিতল যেমন শিবের চক্ষু-ধারণে নিপুণ, জাবালিও তেমন রুদ্রাক্ষের মালাধারণে নিপুণ ছিলেন; (গ) মাঘমাসের সূর্য্য যেমন ক্রমে উত্তরদিকে পদার্পণ করেন, জাবালিও তেমন স্কন্ধে উত্তরীয়-বস্ত্র অর্পণ করিয়াছিলেন; (ঘ) বড়বানল যেমন সর্ব্বদা সমুদ্রের জল পান করে, জাবালিও তেমন

(१) रुद्राक्षवलयग्रहण...। (२) और्वानलमिव। (३) सलिल...।

पयोभक्षम्, (घ) शून्यनगरमिव दीनानाथ-विपन्न-शरणम्, (ङ) पशुपतिमिव भस्म-पाण्डुरोमाश्लिष्ट-शरीरम्, भगवन्तं जावालिमपश्यम्। (च)

अवलोक्य चाहमचिन्तयम्—'अहो प्रभावस्तपसाम्! इयमस्य शान्तापि मूर्त्तिरुत्तप्त-कनकावदाता परिस्फुरन्ती सौदामिनीव (१) चक्षुषः प्रतिहन्ति तेजांसि, सततमुदासीनापि महाप्रभावतया भयमिवोपजनयति प्रथमोपगतस्य। शुष्क नल-काशकुसुम-निपतितानल-चटुल-वृत्ति नित्यमसहिष्णु तपस्विनां प्रतनु-तपसा-(२) मपि तेजः प्रकृत्या दुःसहं (३) भवति, किमुत सकल-भुवन-वन्दित-(४)

(ङ) शून्येति। शून्यनगरमिव लोकरहितं नगरमिव, दीनानां दुर्गतानां अनाथानां रक्षकरहितानां विपन्नानां रोगार्त्तादीनाञ्च शरणं रक्षकं, पक्षे दीनानि सौन्दर्य्यरहितानि, अनाथानि निवासिजनहीनानि, विपन्नानि भग्नानि शरणानि गृहाणि यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा।

(च) पश्विति। पशुपतिं शिवमिव, भस्मवत् पाण्डुनि पक्वत्वात् श्वेतानि यानि रोमाणि भस्मना पाण्डु रोमाणि च तैराश्लिष्टं संसक्तं शरीरं यस्य तम्। भगवन्तं माहात्म्यवन्तम्। पूर्णोपमा।

(छ) अवेति। शान्तापि प्रसन्नापि। उत्तप्तकनकावदाता तप्तकाञ्चनवत् निर्म्मला परिस्फुरन्ती प्रकाशमाना सौदामिनी विद्युदिव। अत्रोपमालङ्कारः। उदासीनापि मध्यस्थापि अन्येषां भयजनने प्रयोजन-रहितापि इयं मूर्त्तिरित्यर्थः, प्रथमं उपगतस्य उपस्थितस्य मम भयमुपजनयतीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। शुष्केषु नलेषु स्वनामप्रसिद्धतृणविशेषेषु काशकुसुमेषु च निपतितो यः अनलो वह्निः तस्येव चटुला चञ्चला शीघ्रतरा वृत्तिः प्रसरणव्यापारो यस्य तत्, तथा नित्यं सर्वदा असहिष्णु परप्रभावमिति शेषः, प्रतनु अत्यल्पं तपो येषां तेषामपि तपस्विनां तेजः, प्रकृत्या स्वभावेन दुःसहं भवति अन्येषामिति शेषः। अत्र प्रथमविशेषणे

প্রত্যহ দুগ্ধমাত্রই পান করিতেন; (ঙ) জনশূন্য নগর যেমন সৌন্দর্য্যহীন ও মনুষ্যহীন ভগ্ন গৃহ সকলের আশ্রয়, জাবালিও তেমন দরিদ্র, অনাথ ও বিপন্ন লোকদিগের আশ্রয় (রক্ষক) ছিলেন; (চ) মহাদেবের শরীর যেমন ভস্মদ্বারা শ্বেতবর্ণ লোমসমূহে ব্যাপ্ত, জাবালির শরীরও তেমন ভস্মের ন্যায় শ্বেতবর্ণ লোমসমূহে ব্যাপ্ত ছিল।

(ছ) তাঁহাকে দেখিয়া আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম—'তপস্যার মাহাত্ম্য কি আশ্চর্য্য! কারণ, ইঁহার এই আকৃতি তপ্তকাঞ্চনের ন্যায় নির্ম্মল এবং শান্ত হইলেও দীপ্যমান বিদ্যুতের ন্যায় আমার নয়নের তেজ প্রতিহত করিতেছে, আর আমি এইমাত্র প্রথম আসিয়াছি, সুতরাং সর্ব্বদা পরের ভয়োৎপাদনে প্রয়োজন না থাকিলেও আমার যেন ভয় জন্মাইতেছে। শুষ্ক নল ও কাশপুষ্পের (কেশের ফুলের) উপর পতিত অগ্নি যেমন তৎক্ষণাৎ বিসৃত হইয়া পড়ে, সেইরূপ ত্বরিতগতি এবং সর্ব্বদা পরপ্রভাব অসহিষ্ণু সাধারণ তপস্বিগণের তেজও অন্যের পক্ষে স্বভাবতই দুঃসহ হইয়া থাকে, আর সমগ্র জগতের লোক যাঁহাদের

---

(१) सौदामिनीव। (२) मनुतपसा। (३) क्वचित् दुःसहमिति नास्ति। (४) भुवनतल…।

চরণানামনবরত-তপঃসলিল-ক্ষালিত-(১) মলানাং কর-কমল-তলামলকফলবদখিলং (২) জগদালোকয়তাং দিব্যেন চক্ষুষা ভগবতামেবংবিধানামঘক্ষয়কারিণাম্ (৩)। (জ) পুণ্যানি হি নামগ্রহণান্যপি মহামুনীনাম্, কিং পুনর্দর্শনানি। ধন্যমিদমাশ্রমপদমযমধিপতির্যত্র। অথবা ভুবনতলমেব ধন্যমখিলমনেনাধিষ্ঠিতমবনিতল-কমলযোনিনা। পুণ্যভাজঃ খল্বমী মুনয়ো যদহর্নিশমেনমপরমিব নলিনাসনমপগতান্যব্যাপারা মুখাবলোকন (৪) নিশ্চলদৃষ্টয়ঃ পুণ্যাঃ কথাঃ শৃণ্বন্ত পর্য্যুপাসতে। সরস্বত্যপি ধন্যা, যাঽস্য (৫) সততমতিপ্রসন্নে করুণাজলনিষ্যন্দিন্যগাধগাম্ভীর্য্যে রুচির দ্বিজপরিবারা (৬)

লুপ্তোপমালঙ্কারঃ। অনবরতং তপাংস্যেব সলিলানি জলানি তৈঃ ক্ষালিতানি ধৌতানি, মলানি পাপান্যেব মলানি কর্দ্দমাদীনি যৈস্তেষাং, অত্র শ্লিষ্টপরম্পরিতরূপকমলঙ্কারঃ। তথা দিব্যেন স্বর্গীয়েন চক্ষুষা জ্ঞাননয়নেনেত্যর্থঃ, করকমলতলামলকফলবৎ পাণিকমলতলস্থিতধাত্রীফলবৎ, অখিলং সর্ব্বং জগৎ আলোকয়তাং পশ্যতাং। অত্রোপমালঙ্কারঃ। এবংবিধানাং জাবালিতুল্যানাং অঘক্ষয়কারিণাং দর্শনমাত্রেণৈব পরেষাং পাপবিনাশকারিণাম্।

(জ) পুণ্যানীতি। পুণ্যানি পুণ্যজনকানি। নাম্না গ্রহণানি উচ্চারণানি। আশ্রমপদং আশ্রমরূপং স্থানম্। অবনিতলস্য মর্ত্ত্যলোকস্য কমলযোনির্ব্রহ্মা তৎস্বরূপ ইত্যর্থঃ, তেন। অত্র নিরঙ্গং কেবলরূপকমলঙ্কারঃ। নলিনাসনং ব্রহ্মাণং। অত্র দ্রব্যোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। অপগতা দূরীভূতা অন্যে ব্যাপারাঃ কার্য্যাণি যেষাং তে, তথা মুখাবলোকনে জাবালের্বদনদর্শনে নিশ্চলা দৃষ্টির্যেষাং তে। রুচিরা সুন্দরাঃ দ্বিজাঃ শিষ্যীভূতা ব্রাহ্মণাঃ পক্ষিণশ্চ পরিবারাঃ পরিজনা যস্যাঃ সা, যা সরস্বতী রাজহংসীব, মুখং কমলং পদ্মমিব তস্য সম্পর্কসুখং অনুভবন্তী সতী অতিপ্রসন্নে নিতান্তানুগ্রহকারিণি অতিশয়নির্ম্মলে চ, করুণা জলমিব করুণৈব চ জলমিতি করুণাজলং তস্য নিষ্যন্দিনি স্রাবিণি, অগাধং হৃদয়ান্তরস্থিতং অতলস্পর্শঞ্চ,

---

চরণ বন্দনা করে, অবিশ্রান্ত তপস্যার জলে যাঁহারা সমস্ত মল প্রক্ষালন করিয়াছেন, এবং যাঁহারা দিব্যচক্ষুর্দ্বারা করতলস্থিত আমলকীফলের ন্যায় সমগ্র জগৎ দর্শন করিতেছেন, এবং যাঁহারা দর্শনমাত্রেই লোকের পাপক্ষয় করিয়া থাকেন, এবংবিধ মাহাত্ম্যশালী সেই মহর্ষিদিগের তেজের কথা আর কি বলিবার আছে। (জ) মহর্ষিদিগের নামোচ্চারণও পুণ্য জন্মাইয়া থাকে, দর্শনের কথা আর বলিবার কি আছে ? এই আশ্রম ধন্য, যে স্থানে ইনিই অধিপতি। অথবা সমগ্র ভূমণ্ডলই ধন্য, যে হেতু, মর্ত্ত্যলোকের ব্রহ্মা এই মহর্ষি বাস করিতেছেন। এই সকল মুনিরাও পুণ্যবান্, যে হেতু, অন্য সকল কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া কেবল ইঁহার মুখ-নিরীক্ষণেই নিশ্চলনেত্র হইয়া নানাবিধ ধর্ম্মোপাখ্যান শ্রবণ করত, দিবারাত্র দ্বিতীয় ব্রহ্মার ন্যায় ইঁহার উপাসনা করিতেছেন। আর, সুন্দর পক্ষিগণে পরিবৃত হইয়া রাজহংসী যেমন পদ্মের

---

(১)...তপঃক্ষপিতমলানাং। (২) করতলামলকবৎ। (৩)...অঘক্ষয়কারণানি পুণ্যানি...।
(৪) মুখকমলাবলোকন...। (৫) যদস্মিন্, যাঽস্য তু। (৬) রুচিরদ্বিজকুলপরিষৎ, দ্বিজপরিবারে।

মুখকমল-সম্পর্ক-সুখ-(১) মনুভবন্তী নিবসতি রাজহংসীব (২) মানসে। (জ) চতুর্ম্মুখ-মুখকমলবাসিভিশ্চতুর্ব্বেদৈঃ (৩) সুচিরাদিব দ্বিতীয়মিদ-(৪) মাসাদিতং স্থানম্। (ঝ) এনমাসাদ্য শরৎকালমিব কলিকাল-জলধর-সময়-(৫) কলুষিতাঃ প্রসাদমুপগতাঃ পুনরপি জগতি সরিত ইব সর্ব্ববিদ্যাঃ। (ঞ) নিয়তমিহ সর্ব্বাত্মনা কৃতাবস্থিতিনা ভগবতা পরিভূত-কলিকাল-বিলসিতেন ধর্ম্মেণ ন স্মর্য্যতে কৃতযুগস্য। (ট) ধরণীতলমনেনাধিষ্ঠিতমালোক্য (৬)

গাম্ভীর্য্যং দুরবগাহস্বভাবত্বং গভীরতা চ যস্য তস্মিন্, অস্য জাবালেঃ মানসে মনসি মানসসরোবরে চ, সততং নিবসতি। অসাধারণপুণ্যৈর্নৈবেদৃশবাসস্থানস্য লভ্যত্বাৎ সা সরস্বত্যপি ধন্যেতি ভাবঃ। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ।

(ঝ) চতুরিতি। চতুর্ম্মুখস্য ব্রহ্মণঃ মুখকমলবাসিভিস্তৈঃ। ইদং এতৎ তপোবনরূপম্। আসাদিতং প্রাপ্তম্। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। তেন চ ব্রহ্মণো বদনস্য সমানা তপোবনস্য পবিত্রতা ব্যজ্যত ইত্যলঙ্কারেণ বস্তুধ্বনিঃ।

(ঞ) এনমিতি। কলিকালো জলধরসময়ো বর্ষাকাল ইব তেন কলুষিতাঃ স্বপ্রভাববশাৎ কুব্যাখ্যানাদিনা অননুষ্ঠানেন চ দূষিতাঃ, আবিলীকৃতাশ্চ সর্ব্ববিদ্যা অষ্টাদশপ্রকারা বেদাদিবিদ্যাঃ, সরিতো নদ্য ইব, শরৎকালমিব এনং জাবালিং আসাদ্য প্রাপ্য জগতি পুনরপি প্রসাদং সদ্ব্যাখ্যানাদিনা অনুষ্ঠানেন চ নির্দ্দোষত্বং নির্ম্মলত্বঞ্চ উপগতাঃ প্রাপ্তাঃ। অয়ং খলু যথার্থং সর্ব্বা এব বিদ্যা দধাতি তদুপদিষ্টানুষ্ঠানঞ্চ করোতীতি ভাবঃ। অত্র দ্বয়োরুপমযোরেকাশ্রয়ানুপ্রবেশরূপঃ সঙ্করঃ।

(ট) নিয়তমিতি। ইহ অস্মিন্নাশ্রমে সর্ব্বাত্মনা সর্ব্বপ্রযত্নেন কৃতাবস্থিতিনা ভগবতা ধর্ম্মেণ, পরিভূতং তিরস্কৃতং দূরীকৃতং কলিকালস্য বিলসিতং চেষ্টিতং যেন তাদৃশেন সতা, কৃতযুগস্য সত্যযুগস্য নিয়তং নিশ্চিতং ন স্মর্য্যতে, সত্যযুগীয়সর্ব্ববিধসদাচারাদিলাভাদিতি ভাবঃ। অত্র ধ্রুবাদিশব্দবৎ নিয়তশব্দস্য উৎপ্রেক্ষাবাচকত্বাদ্বাচ্যা ভাবাভিমানিনী ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। স্মর্য্যত ইত্যকর্ম্মকত্ববিবক্ষয়া ভাবে প্রত্যয়ঃ,

সংসর্গসুখ অনুভব করত, নিতান্তনির্ম্মল জলশালী ও অত্যন্ত গভীর মানসসরোবরে সর্ব্বদা বাস করে, সেইরূপ বিশুদ্ধ ব্রাহ্মণগণে পরিবৃত হইয়া যে সরস্বতী, ইঁহার মুখের সংসর্গসুখ অনুভব করত, অনুগ্রহ ও দয়ার আধার এবং অত্যন্ত গাম্ভীর্য্যসম্পন্ন ইঁহার চিত্তে সর্ব্বদা বাস করিতেছেন, সেই বাগ্দেবী সরস্বতীও ধন্য। চতুর্ম্মুখ ব্রহ্মার মুখকমলনিবাসী চতুর্ব্বেদ, যেন বহুকালের পর এই দ্বিতীয় স্থান লাভ করিয়াছে। (ঞ) বর্ষাকালে কলুষতাপ্রাপ্ত নদীগণ যেমন শরৎকাল পাইয়া পুনরায় নির্ম্মলতা প্রাপ্ত হয়, কলিকালের প্রভাবে দূষিত সমস্ত শাস্ত্রের বিদ্যাও তেমন ইঁহাকে পাইয়া পুনরায় জগতের মধ্যে নির্দ্দোষতা লাভ করিয়াছে। (ট) ভগবান্ ধর্ম্ম সকলপ্রকার যত্ন অবলম্বনপূর্ব্বক এই আশ্রমে অবস্থান করত কলিকালের প্রভাব দূরীভূত

(১) সম্পর্কমনুভবন্তী। (২) হংসীব। (৩) বেদৈঃ, শ্চতুর্ব্বেদৈঃ।
(৪) সুচিরাদিদং, সুচিরাদিবেদং। (৫) কলি-জলদ-সময়...। (৬) আলক্ষ্য, অবলোক্য।

न वहति नूनमिदानीं सप्तर्षि-मण्डल-(१) निवासाभिमानमम्बरतलम्। (ठ) अहो महासत्त्वेयं जरा, यास्य प्रलय-रवि-कर-निकर-(२) दुर्निरीक्ष्ये (३) रजनिकर-किरण-पाण्डु-शिरोरुहे जटाभारे (४) फेनपुञ्ज-धवला गङ्गेव पशुपतेः क्षीराहुतिरिव शिखाकलापे विभावसोर्निपतन्ती (५) न भीता। (ड) बहलाज्य-धूम-पटल-मलिनीकृताश्रमस्य (६) भगवतः प्रभावाद्भीतमिव (७) रवि-किरणजालमपि (८)

कृतयुगस्येति च सम्बन्ध एव षष्ठी, तेन नोक्तार्थता। तथा च कलापवृत्तौ दुर्गसिंहः—"कथं मातः स्मर्यते उक्तार्थत्वात्। मातुः स्मर्यत इति यदि सम्बन्धोऽत्र विवक्ष्यते।"

(ठ) धरणीति। अम्बरतलं आकाशतलं कर्तृ, अनेन जावालिना अधिष्ठितं धरणितलमालोक्य नूनं निश्चितं इदानीं सप्तर्षिमण्डलस्य निवासेन आत्मन्यधिष्ठानेन योऽभिमानोऽहङ्कारस्तं न वहति न दधाति, सप्तर्षिवज्जावालेरधिष्ठानेन धरणितलस्यापि स्वतुल्यत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्ववद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) अहो इति। अहो आश्चर्यं, इयं अस्य शरीरे दृश्यमाना, जरा वार्द्धक्यं, महासत्त्वा महाप्राणा अतीवबलवती। कथमेतन्निश्चीयत इत्याह यास्येत्यादि। फेनपुञ्जधवला या जरा, प्रलये यो रविकर-निकरस्तद्वत् दुर्निरीक्ष्ये महातेजस्वितया दुर्द्दर्शे, तथा रजनिकरस्य चन्द्रस्य किरणवत् पाण्डवः श्वेताः शिरोरुहाः केशा यस्मिन् तादृशे अस्य जावालेः जटानां भारे समूहे, पशुपतेः शिवस्य जटाभारे निपतन्ती फेनपुञ्जवत् धवला गङ्गा इव, तथा विभावसोर्वह्नेः शिखाकलापे ज्वालासमूहे निपतन्ती फेनपुञ्जधवला क्षीरस्य दुग्धस्य आहुतिरिव निपतन्ती उपसर्पितुं प्रवृत्ता सती न भीता। अत्र लुप्तोपमान्वितः द्वे चोपमे इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ढ) बहलेति। रवेः किरणानां जालं समूहः कर्तृ, बहलानां प्रचुराणां आज्यधूमानां हवि-र्धूमानां पटलैः समूहैः मलिनीकृत आश्रमो यस्य तस्य, भगवतो जावालेः प्रभावान्माहात्म्यात् भीतमिव सत् दूरतः एतत्तपोवनं परिहरति त्यजति, स्वविरोधिनः प्रबलान्धकारस्येव धूमराशेर्जनकतया मुनेरपि विरोधिपक्षान्तर्भावाद्भयेन तत्समीपपरित्यागो युज्यत एवेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

করিয়া নিশ্চয়ই আর সত্যযুগকে স্মরণ করিতেছেন না। (ঠ) ইনি ভূতলে বাস করিতেছেন, ইহা দেখিয়া আকাশ, আপনাতে সপ্তর্ষিগণের নিবাসবশতঃ অহঙ্কার আর এখন নিশ্চয়ই বহন করিতেছে না। (ড) কি আশ্চর্য্য! এই জরা যে অত্যন্তবলবতী দেখিতেছি; কারণ— ফেনপুঞ্জের ন্যায় ধবলবর্ণা গঙ্গা যেমন মহাদেবের জটাসমূহে পতিত হইতে ভীত হন নাই, এবং দুগ্ধের আহুতি যেমন অগ্নির শিখাসমূহে পতিত হইতে ভীত হয় না, সেইরূপ যে জরা, প্রলয়-কালীন সূর্য্যের কিরণসমূহের ন্যায় দুর্নিরীক্ষ্য এবং চন্দ্রের রশ্মিসমূহের ন্যায় শ্বেতবর্ণ কেশযুক্ত ইহাঁর জটাসমূহে উপস্থিত হইতে ভীত হয় নাই। (ঢ) ঘৃতের আহুতি পতিত হওয়ায়

---

(१) सप्तर्षिनिवासा...। (२)...रविरश्मि...। (३)...दुर्निरीक्ष्ये। (४) रजनिकरनिकरपाण्डुरे जटाभारे। (५) निपतन्ती। (६)...आश्रमपदस्य। (७)...भीतभीतमिव। (८)...जालकमपि।

दूरतः परिहरति तपोवनम्। (ढ) एते च पवन-लोल-पुञ्जीकृत-शिखाकलापा (१) रचिताञ्जलय इवात्र मन्त्रपूतानि हवींषि गृह्णन्ति (२) एतत् प्रीत्याशुशुक्षणयः। (ण) तरलित-दुकूल-वल्कलोऽयमाश्रमलता-कुसुम-सुरभि-परिमलो मन्दमन्दसञ्चारी (३) सशङ्क इवास्य समीपमुपसर्पति गन्धवाहः। (त) प्रायो महाभूतानामपि दुरभिभवानि भवन्ति तेजांसि (४)। सर्वतेजस्विनामयमग्रणीः। (थ) द्विसूर्य्यमिवाभाति जगदनेनाधिष्ठितं महात्मना। (द) निष्क-

(ण) एत इति। अत्र आश्रमे पवनेन वायुना लोलश्चञ्चलः पुञ्जीकृतश्च शिखाकलापो येषां ते, एते हूयमानाः, आशुशुक्षणयः दक्षिणाग्नि-गार्हपत्याहवनीयरूपा होमाग्नयश्च, रचिताञ्जलयः आहुतिग्रहणाय उत्तानीकृतयुक्तकरतलद्वया इव सन्तः, एतस्य मुनेः प्रीत्या प्रणयेन, मन्त्रपूतानि हवींषि घृतादीनि गृह्णन्ति। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) तरलितेति। तरलितं कम्पितं दुकूलवत् क्षौमवस्त्रवत् वल्कलं मुनिपरिहितत्वक् येन सः, आश्रमलताकुसुमानां सुरभिर्घ्राणतर्पणः परिमलो गन्धो यस्मिन् सः, मन्दमन्दसञ्चारी अयञ्च गन्धवाहो वायुः, सशङ्कः सातङ्क इव सन् अस्य मुनेः समीपमुपसर्पति उपगच्छति, परिहितवल्कलचालनेन नर्म्मसुहृद इव व्यवहारादात्मनोऽपराधाशङ्कया वायोः सशङ्कत्वं युज्यत एवेति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) प्राय इति। प्रायो बाहुल्येन महाभूतानामपि महाप्राणिनां केशरिकरिप्रभृतीनामपि तेजांसि प्रभावाः दुरभिभवानि दुरतिक्रमाणि भवन्ति, चकारः किन्त्वर्थे। अयं जावालिः सर्वतेजस्विनां अग्रणीः प्रधानः, सुतरामस्य प्रभावाभिभवासम्भवात् सूर्य्यादीनामुक्तरूपो व्यवहारो युज्यत एवेति भावः।

(द) द्विसूर्य्यमिति। अस्याप्यपरसूर्य्यतुल्यतेजस्वित्वादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

প্রচুর ধূমরাশি উত্থিত হইয়া আশ্রমটিকে মলিন করিয়াছে, তাহাতে বোধ হইতেছে যেন, সূর্য্যের রশ্মিসমূহও ভগবান্ জাবালির প্রভাবে ভীত হইয়া দূর হইতেই এই তপোবন পরিত্যাগ করিতেছে। (ণ) বায়ু, হোমাগ্নির শিখাসমূহ চালিত করিয়া, সম্মিলিত করিয়া দিতেছে, সুতরাং প্রতীতি হইতেছে যেন, হোমাগ্নি সকল মহর্ষির প্রতি প্রণয়বশতঃ দুই হাত পাতিয়া মন্ত্রপূত ঘৃতের আহুতি গ্রহণ করিতেছে। (ত) আশ্রমস্থ লতাসমূহের কুসুমসৌরভবাহী ও মন্দমন্দসঞ্চারী বায়ু, ক্ষৌমবসনের ন্যায় মহর্ষির পরিধানের বল্কল কম্পিত করিয়া যেন শঙ্কিতচিত্তে ইঁহার নিকটে উপস্থিত হইতেছে। (থ) কারণ—সিংহ ও হস্তিপ্রভৃতি মহাপ্রাণিদিগের তেজও অন্যের পক্ষে দুরতিক্রমণীয়, কিন্তু ইনি ত সকল তেজস্বিগণের মধ্যেই প্রধান। (দ) এই মহাত্মা অধিষ্ঠান করায় জগতে যেন, দুইটি সূর্য্য প্রকাশ পাইতেছে।

(१)...शिखाजटिलाः। (२) प्रतिगृह्णन्ति।
(३) मन्दमन्दचारी, मन्दसञ्चारी। (४) तेजांसि, यतः।

म्येव (१) क्षितिरेतदवष्टम्भात्। (ध) एष प्रवाहः * करुणारसस्य, † सन्तरणसेतुः संसार-सिन्धोः, आधारः क्षमाम्भसाम्, (२) परशुस्तृष्णालता गहनस्य, सागरः सन्तोषामृत-रसस्य, (३) उपदेष्टा सिद्धिमार्गस्य, अस्तगिरिरसद्ग्रहस्य, (४) मूलमुपशमतरोः, नाभिः (५) प्रज्ञा-चक्रस्य, प्रासादो (६) धर्म्मध्वजस्य, तीर्थं (७) सर्वविद्यावताराणाम्, वड़वानलो (८) लोभार्णवस्य, निकषोपलः शास्त्र-रत्नानाम्, दावानलो रागपल्लवस्य, महामन्त्रः (९) क्रोध-भुजङ्गस्य, (१०) दिवसकरो मोहान्धकारस्य, (न)

(ध) निष्कम्पेति। एतस्य मुनेरवष्टम्भादाश्रयादिव, निष्कम्पा निश्चला। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) एष इति। एष जावालिः, करुणा दयैव रसो जलं तस्य, प्रवाह ओघः, सदसन्निर्विशेषेण सर्वत्रैवाविच्छिन्नदयामत्त्वात्। इतः प्रभृति दिवसकरो मोहान्धकारस्य इत्यन्तं यावत् प्रायेण सर्वत्रैव परम्परितरूपकमलङ्कारः, किन्तु विषयभेदेनैकस्य मुनेरनेकधोल्लेखादुल्लेखालङ्कारस्य इत्युभयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। सन्तरणस्य उत्तरणस्य सेतुरालिः, उपदेशादिना मोक्षोपयोगिज्ञानजननद्वारा उत्तरणविधानात्। "संसारस्य मिथ्याधीप्रभवा वासना" इति प्रामाण्यवादे गदाधरः। "स्वादृष्टोपनिबद्धशरीरपरिग्रहः संसार" इति गोपीनाथः। अपकारिणः प्रत्यपकारसमर्थस्यापि ततो निवृत्तिः क्षमा। क्षमा एवाम्भांसि जलानि तेषामाधार आश्रयः सर्वत्रैव क्षमाविधानात्। तृष्णा विषयभोगलालसा एव लतास्तासां गहनस्य वनस्य परशुः कुठारः, उच्छेदकत्वात्। सन्तोष एव अमृतरसः सुधाद्रवस्तस्य सागरः, विशालाधारत्वात्। सिद्धिमार्गस्य मोक्षपथस्य उपदेष्टा अध्यात्मविषयोपदेशात्। असद्ग्रहो दुरभिसन्धिरेव असद्ग्रहः शनैश्चरादिपापग्रहस्तस्य अस्तगिरिरस्ताचलः, एतमासाद्यैव सर्वेषां दुरभिसन्धिविलोपात्। अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकम्। उपशमतरोः शान्तिवृक्षस्य मूलं ब्रध्नः कारणञ्च, उपदेशादिना शान्तिविधानात्। अत्रापि श्लिष्टपरम्परितरूपकम्। प्रज्ञा ज्ञानमेव चक्रं तस्य नाभिरालम्बनीभूतमध्यदेशः, एतमालम्ब्यैव सर्वेषां ज्ञानप्रसारात्। धर्म्म एव ध्वजः केतुस्तस्य प्रासादो राजगृहं अस्योपरि धर्म्मारोपणात्। सर्वविद्यासु ये अवतारा: प्रवेशास्तेषां तीर्थं घट्टः, घट्टमाश्रित्य जलेषु प्रवेशवत् एतमाश्रित्य शिष्याणां सर्वविद्यासु प्रवेशात्। अत्र मुनौ घट्टत्वारोपः शाब्दः सर्वविद्यासु जलत्वारोपस्त्वार्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्। लोभ एव अर्णवस्तस्य वड़वानलः परिशोषकत्वात्। शास्त्राण्येव रत्नानि तेषां निकषोपलः उत्कर्षापकर्षपरीक्षकपाषाणः, शिष्याणां शास्त्रज्ञानपरीक्षाकरणात्।

(ধ) ইনি আশ্রয় করিয়া রহিয়াছেন বলিয়াই যেন পৃথিবী নিশ্চল হইয়া রহিয়াছে। (ন) এই মহর্ষি করুণা-জলের প্রবাহ, সংসার-সাগর হইতে উত্তীর্ণ হইবার সেতু, ক্ষমারূপ জলের আধার, ভোগলালসারূপ লতাসমূহের কুঠার, সন্তোষরূপ সুধারসের সমুদ্র, মোক্ষপথের উপদেশক, দুরভিসন্ধিরূপ পাপগ্রহের অস্তাচল, শান্তিবৃক্ষের মূল, জ্ঞান-চক্রের আশ্রয়ীভূত মধ্যস্থান, ধর্ম্মময় ধ্বজের উচ্চ অট্টালিকা, সকল বিদ্যারূপ-জলের মধ্যে প্রবেশ করিবার ঘাট,

(१) निष्कम्पैव। * प्रभवः। † करुणरसस्य। (२) क्षपाम्भसाम्। (३) अमृतस्य। (४) असद्ग्रहकस्य। (५) नेमिः। (६) प्रासादः। (७) तीर्थः। (८) वाड़वानलः। (९) मन्त्रः। (१०) क्रोधभुजङ्गमस्य।

अर्गलबन्धो नरक-द्वाराणाम्, (१) कुलभवनमाचाराणाम्, आयतनं मङ्गलानाम्, (प) अभूमिर्मदविकाराणाम्, दर्शकः सत्पथानाम्, उत्पत्तिः साधुतायाः, नेमि-रुत्साह-चक्रस्य, आश्रयः सत्त्वस्य, प्रतिपक्षः कलिकालस्य, कोशस्तपसः, सखा सत्यस्य, क्षेत्रमार्जवस्य, प्रभवः (२) पुण्य-सञ्चयस्य, अदत्तावकाशो मत्सरस्य,

रागो विषयाभिलाष एव पल्लवस्तस्य दावानलो वनवह्निर्दाहकत्वात्। क्रोध एव भुजङ्गः सर्पस्तस्य महामन्त्रः, उपशमकारित्वात्। मोहोऽज्ञानमेवान्धकारस्तस्य दिवसकरः सूर्यः विनाशकत्वात्।

(प) अर्गलेति। अर्गलबन्धः कपाटबन्धकरणकीलकः, उपदेशादिना ज्ञानजननादिद्वारा एतद्बाधया नरकप्रवेशाभावात्। आचाराणां सदाचरणानां कुलभवनं चिरन्तनाश्रयगृहम्, यावज्जीवमेव सदाचारित्वात्। मङ्गलानां सर्वविधशुभानां आयतनं चैत्यं पवित्रस्थानमित्यर्थः, सर्वमङ्गललाभात्। अत्र वाक्यत्रये प्रत्येकगतनिरङ्ग-केवलरूपकसङ्कीर्णः पूर्ववदुक्तोऽलङ्कारः।

(फ) अभूमिरिति। मदविकाराणामभिमानरूपमानसिकविकृतीनां अभूमिरस्थानं अहङ्कारलेशेनापि रहित इत्यर्थः महायोगित्वात्। सत्पथानां उत्तमकर्म्ममार्गाणामित्यर्थः, अतएव उपदेष्टा सिद्धिमार्गस्येत्यनेन सहापौनरुक्त्यं मोक्षमार्गकर्म्ममार्गयोर्भेदात्, दर्शक उपदेष्टा सर्वज्ञत्वात् सर्वहितैषित्वाच्च। साधुतायाः सौजन्यस्य उत्पत्तिः उद्भवस्थानं अस्मादेव बहूनां सौजन्यशिक्षालाभात्। उत्साह उद्यम एव चक्रं तस्य नेमिः प्रान्तदेशो भूमिस्पर्शिभाग इत्यर्थः, रथचक्रस्य प्रान्तभागो यथा गन्तव्यपथस्य सर्वमंशं स्पृशति तथायमपि उत्साहस्य काष्ठा-प्राप्तावस्थया यावतः पदार्थान् परिच्छिनत्तीति भावः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। सत्त्वस्य केवलसत्त्वगुणस्य आश्रयः, रजस्तमसोः कार्याभ्यां दुःखमोहाभ्यामनभिभवात्। कलिकालस्य प्रतिपक्षो विरोधी तत्कार्य्यपाप-प्रतिबन्धकत्वात्। तपसः कोशः अवस्थानभाण्डम् तपःपरिपूर्णत्वात्। सत्यस्य सत्यव्यवहारस्य सखा, आमरणापरित्यागात्। आर्जवस्य सरलतायाः क्षेत्रं भूमिः सर्वत्रैव सरलतादर्शनात्। पुण्यसञ्चयस्य प्रभवत्यस्मादिति प्रभवः कारणं दर्शनोपदेशादिना सर्वेषामेव पुण्यजननात्। मत्सरस्य विद्वेषस्य न दत्तोऽवकाश आत्मन्यवस्थान-स्थानं येन सः, कुत्रापि विद्वेषाकरणात्। विपत्तेरातिः शत्रुः स्वप्रभावेण विनाशकत्वात्। परिभूतेरनादरस्य अवज्ञायाः अस्थानं अपात्रं, सर्वदोषहीनत्वात्। अभिमानस्य सर्वजनानामेव अहङ्कारस्य अननुकूलः अननुमन्ता वर्जनोपदेशात्। दैन्यस्य कार्पण्यस्य असम्मतः आश्रयणीयत्वेनानभिमतः कदाप्याश्रयणाभावात्। रोषस्य क्रोधस्य

লোভরূপ সমুদ্রের বড়বানল, শাস্ত্ররূপ রত্নসমূহের পরীক্ষক পাষাণ, বিষয়াসক্তিরূপ পল্লবের দাবানল, ক্রোধরূপ সর্পের উপশমকারী মহামন্ত্র, অজ্ঞানরূপ অন্ধকারের সূর্য্য, (প) নরকদ্বার-সমূহের কবাটবন্ধকরণের খিল, সদাচারের কৌলিক আশ্রয়-গৃহ, সকলপ্রকার মঙ্গলের আশ্রয়-স্থান, (ফ) এবং ইনি অহঙ্কারজনিত বিকারের আশ্রয় নহেন, সৎপথের প্রদর্শক, সৌজন্যের উৎপত্তিস্থান, উৎসাহচক্রের প্রান্তভাগ, সত্ত্বগুণের আধার, কলিকালের বিরোধী, তপস্যার কোশাগার, সত্যের সখা, সরলতার উৎপত্তিক্ষেত্র, পুণ্যসমূহের কারণ, বিদ্বেষের আশ্রয় নহেন,

(१) नरकपुरद्वाराणाम्। (२) प्रसवः, प्रभावः।

अरातिर्विपत्तेः, अस्थानं परिभूतेः, अननुकूलोऽभिमानस्य, असम्मतो दैन्यस्य, अनायत्तो रोषस्य, अनभिमुखः (१) सुखानाम्। (फ)

अस्य भगवतः प्रभावादेवोपशान्तवैर-(२) मपगतमत्सरं तपोवनम्। (ब)

अहो प्रभावो महात्मनाम्। अत्र हि शाश्वतिकमपहाय विरोधमुपशान्तान्तरात्मान-(३) स्तिर्य्यञ्चोऽपि तपोवन-वसति-सुखमनुभवन्ति। (भ) तथा हि एष विकचोत्पलवन-रचनानुकारिणमुत्पतच्चारुचन्द्रकशतं हरिण-लोचन-द्युति-शवलमभिनव-शाद्वलमिव विशति (४) शिखिनः कलापमातपाहतो (५)

अनायत्तोऽनधीनः, दुर्व्यवहारे प्रवर्त्तयितुमशक्यत्वात्। सुखानामैहिकानामित्यर्थः अनभिमुखः अनभिलाषीति तात्पर्य्यं तत्सामग्रीवर्ज्जनात्।

(ब) अस्येति। उपशान्तं विनष्टं वैरं परस्परशत्रुता यस्मिन् तत्, तथा अपगतो दूरीभूतो मत्सरः अन्यशुभद्वेषो यस्मात् तत्।

(भ) विस्मयापन्न आह अहो इति। शाश्वतिकं सदातनं। उपशान्ताः परस्परविद्वेषरहिताः अन्तरात्मानः अन्तःकरणानि येषां ते, तिर्य्यञ्चोऽपि पशुपक्षिप्रभृतयोऽपि।

(म) उक्तार्थे निदर्शनमाह तथाहीति। एष दृश्यमानः अहिः सर्पः, आतपेन रविकिरणेन आहतः पीड़ितः सन्, विकचानां प्रस्फुटितानां उत्पलानां नीलकमलानां वनस्य या रचना सृष्टिस्तामनुकर्त्तुं शीलं यस्य तम्, उत्पतदूर्द्धं गच्छत् चारु मनोहरं चन्द्रकाणां मेचकानां चन्द्राकारचिह्नानां शतं समूहो यस्मिन् तम्। अतएव हरिणानां तत्तत्तृणभक्षणप्रवृत्तानां मृगाणां यानि लोचनानि चक्षूंषि तेषां द्युतिभिः कान्तिभिः शवलं मिश्रितं अभिनवशाद्वलमिव नूतनहरितवहुलदेशमिव स्थितं शिखिनो मयूरस्य कलापं पिच्छं निःशङ्कं निर्भयं विशति छायालाभार्थं प्रविशति। सति विरोधे न खलु सर्पस्तिरश्चोर्मयूरस्य कलापं स्वयमाश्रयेदिति भावः। अत्र प्रथमा आर्थोपमा द्वितीया च श्रौतोपमा इत्यनयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

বিপদের শত্রু, কাহারও অবজ্ঞার পাত্র নহেন, কাহারও অভিমানের অনুকূল নহেন, ক্ষুদ্রতার আশ্রয় নহেন, ক্রোধের অধীন নহেন এবং ঐহিক সুখের অভিলাষী নহেন।

(ব) এই মহর্ষির প্রভাবেই এই তপোবনে প্রাণিগণের পরস্পর শত্রুতা ও বিদ্বেষ দূরীভূত হইয়াছে।

(ভ) এই সকল মহাত্মাদিগের প্রভাব কি আশ্চর্য্য; কারণ—এই স্থানে পশু-পক্ষিগণও চিরকালের পরস্পর শত্রুতা পরিত্যাগ করিয়া বিদ্বেষহীন চিত্তে তপোবন-বাসের সুখ অনুভব করিতেছে; (ম) তাহার প্রমাণ—এই—সর্প রৌদ্রের উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া, প্রস্ফুটিত নীলপদ্মবনের অনুকরণকারী, মনোহর চন্দ্রাকার চিহ্নে চিহ্নিত এবং তৃণভক্ষণের সময় হরিণগণের

---

(१) अवशो विषयाणां, क्वचिदीदृशः पाठः; अनवकाशो विषयाणां इत्यपि क्वचित् पाठः। (२) प्रभावादेव तदस्य प्रशान्तवैरम्। (३) उपशान्तात्मानः। (४) अधिवसति, आवसति। (५)...कलापमाहतः।

निःशङ्कमहिः। (म) अयमुत्सृज्य मातरमजात-केशरैः केशरि-शिशुभिः सहोपजात-परिचयः क्षरत्-(१) क्षीरधारं पिबति (२) कुरङ्ग-शावकः सिंहीस्तनम्। (य) एष मृणाल-कलापाशङ्किभिः (३) शशिकर-(४) धवलं सटाभारं (५) आमीलित-लोचनो बहु मन्यते द्विरद-कलभैराकृष्यमाणं मृगपतिः। (र) इदमिह कपि-कुलमपगत-चापलमुपनयति मुनि-कुमारकेभ्यः स्नातेभ्यः फलानि। (ल) एते च न निवारयन्ति मदान्धा अपि गण्डस्थलीभाञ्जि मदजल-पान-निश्चलानि मधुकर-कुलानि सञ्जात-दयाः कर्णतालैः करिणः। (व) किं बहुना, तापसाग्निहोत्र-धूमलेखाभि-

---

(य) अयमिति। अयं दृश्यमानः कुरङ्गशावको हरिणशिशुः, मातरं स्वजननीं हरिणीं उत्सृज्य विहाय। क्षरन्ती स्रवन्ती क्षीरधारा दुग्धधारा यस्मात्तम्। अत्रापि पूर्ववद्भावः।

(र) एष इति। आमीलितलोचनः जटाकर्षणेन सुखोदयान्मुद्रितनयनः, एष दृश्यमानः मृगपतिः सिंहः, मृणालकलापाशङ्किभिः जटासमूहे मृणालसमूहभ्रान्तिमद्भिः, द्विरदकलभैर्हस्तिशावकैः आकृष्यमाणं शशिकरवत् चन्द्रकिरणवत् धवलं सटाभारं स्वकीयजटासमूहं बहु मन्यते अल्पाल्पाकर्षणेन सुखोदयादाद्रियते। अत्र जटासमूहे मृणालसमूहभ्रमाद्भ्रान्तिमान्, शशिकरधवलमिति लुप्तोपमा, स्वभावोक्तिश्च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) इदमिति। अपगतचापलं महर्षिप्रभावाद्विनष्टचाञ्चल्यं इदं कपिकुलं कर्त्तृ। फलानि उपनयति भोजनायाहरति।

(व) एत इति। मदान्धा मदमत्ता अपि सञ्जातदया मधुकरकुलेषु उत्पन्नकृपाः, एते च करिणो हस्तिनः। गण्डस्थलीं भजन्ति इति तानि, मधुकरकुलानि भ्रमरगणान् कर्णतालैः प्रसृतकरतलाकारकर्णताडनैः न निवारयन्ति नापसारयन्ति, मुनिप्रभावेण तेषामपि कस्यापि सुखव्याघाताकरणादिति भावः।

নয়নকান্তি সমন্বিত নূতন তৃণময় ভূমিখণ্ডের ন্যায় উত্তোলিত ময়ূরপুচ্ছের তলে ছায়ালাভের নিমিত্ত নির্ভয়চিত্তে প্রবেশ করিতেছে। (য) অনুৎপন্নকেশর সিংহশিশুগণের সহিত পূর্ব্বেই পরিচিত এই হরিণশিশুটি, নিজের মাতাকে পরিত্যাগ করিয়া, দুগ্ধধারাক্ষরণকারী সিংহীর স্তন পান করিতেছে। (র) হস্তিশাবকগণ মৃণালসমূহ মনে করিয়া শুণ্ডদ্বারা, চন্দ্ররশ্মির ন্যায় শ্বেতবর্ণ সিংহের জটাসমূহ আকর্ষণ করিতেছে, আর পশুরাজ সিংহ তাহাতে নিতান্ত আরাম বোধ করায় নয়ন মুদ্রিত করিয়া মনে মনে সেই জটাসমূহকে আদর করিতেছে। (ল) এই বানরগণ স্বাভাবিক চপলতা পরিত্যাগ করিয়া, স্নান করিয়া উত্থিত মুনিকুমারদিগকে ভোজন করিবার নিমিত্ত ফল উপহার দিতেছে। (ব) আর মদান্ধ হইলেও দয়ালু এই সকল হস্তী, গণ্ডস্থলে উপবিষ্ট হইয়া মদজলপানে নিশ্চল ভ্রমরগণকে বিস্তৃত করতলের ন্যায় কর্ণের তাড়নে

---

(१) स्रवत्...। (२) आपिबति। (३) मृणालशङ्किभिः।
(४) शिशिरकर, शिशिरकलापकर...। (५) जटाभारं।

उत्सर्पन्तीभिरनिशमुपपादित-(१) कृष्णाजिनोत्तरासङ्ग-शोभाः (२) फलमूलभृतो वल्कलिनो निश्चेतनास्तरवोऽपि सनियमा इव लक्ष्यन्तेऽस्य भगवतः (३) किं पुनः सचेतनाः प्राणिनः।' (श)

इत्येवं चिन्तयन्तमेव मां तस्यैव रक्ताशोकतरोश्छायायां (४) एकदेशे स्थापयित्वा हारीतः पादावुपगृह्य कृताभिवादनः पितुरनतिसमीपवर्त्तिनि कुशासने समुपाविशत्। आलोक्य तु मां सर्व एव मुनयः (५) "कुतोऽयमासादितः शुकशिशुः" इति तमासीनमपृच्छन्। असौ तु तानब्रवीत्—"अयं मया स्नातुमितो गतेन कमलिनीसरस्तीर-तरु-नीड़-पतितः (६) शुकशिशुरातप-जनित-क्लान्ति-रुत्तप्त-पांशुपटल-मध्यगतो दूर-निपतन-(७) विह्वल-तनुरल्पावशेषायुरासादितः,

(श) किमिति। बहुना भाषितेन किं प्रयोजनमित्यर्थः। अनिशं निरन्तरं उत्सर्पन्तीभिरुत्तिष्ठन्तीभिः, तापसानां यान्यग्निहोत्राणि यागविशेषास्तेषां धूमलेखाभिः धूमराजिभिः, उपपादिता कृता कृष्णाजिनोत्तरा-सङ्गस्य कृष्णसारचर्म्मनिर्म्मितोत्तरीयस्य शोभा इव शोभा येषु ते, फलानि मूलानि च बिभ्रतीति ते, वल्कलिनो वल्कलवन्तः, निश्चेतनाः चैतन्यहीनाः, अस्य भगवतो जाबालेस्तरवोऽपि सनियमा व्रतिन इव लक्ष्यन्ते कृष्णाजिन-शोभादिधारणादिति भावः। अत्र लुप्तोपमागुणोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) इत्येवमिति। पादौ पितुर्जाबालेरिव चरणौ उपगृह्य धृत्वा कृताभिवादनः कृतनमस्कारः। आसादित आनीतः। कमलिनीसरसः पद्मसरोवरस्य पम्पायाः, तीरतरोः तटस्थितवृक्षस्य नीड़ात् कुलायात् पतितः। आतपेन रविकिरणेन जनिता क्लान्तिः शरीरार्त्तिर्यस्य सः। उत्तप्तस्य पांशुपटलस्य धूलिसमूहस्य

অপসারিত করিতেছে না। (শ) অধিক বলায় প্রয়োজন কি, তপস্বিগণের অগ্নিহোত্র যজ্ঞ হইতে সর্ব্বদা ধূমরাশি উঠিয়া যে সকল বৃক্ষের শাখাতে কৃষ্ণসারচর্ম্মের উত্তরীয়ের ন্যায় শোভা জন্মাইয়াছে, সেই সকল অচেতন, ফল-মূলধারী বল্কলবিশিষ্ট, মহর্ষি জাবালির আশ্রমস্থ বৃক্ষ ব্রতধারীর ন্যায় দৃষ্ট হইতেছে ; সচেতন প্রাণীর কথা আর কি বলিব।

(ষ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম, এই অবস্থায় হারীত আমাকে সেই রক্তাশোক-বৃক্ষের ছায়াতেই একদিকে রাখিয়া পিতার (জাবালির) চরণযুগলগ্রহণপূর্ব্বক অভিবাদন করিয়া তাঁহার অনতিনিকটবর্ত্তী কুশাসনে উপবেশন করিলেন। তাহা দেখিয়া মুনিরা সকলেই উপবিষ্ট হারীতকে জিজ্ঞাসা করিলেন,—"এই শুকশাবকটি কোথা হইতে আনিয়াছ ?।" তখন হারীত তাঁহাদিগকে বলিলেন,—"আমি এই স্থান হইতে স্নান করিতে যাইয়া দেখিলাম, এই শুকশাবকটি পদ্মসরোবর পম্পার তীরবর্ত্তী কোন বৃক্ষস্থিত বাসা হইতে উত্তপ্ত ধূলিরাশির মধ্যে পতিত হইয়াছে, রৌদ্রের উত্তাপে অত্যন্ত ক্লান্তি জন্মিয়াছে, দূর হইতে পতিত হওয়ায়

(१) उत्सर्पद्भिरुपपादित..., सर्पन्तीभिरहर्निशमुपपादित...। (२)...शोभनाः। (३) समीपवर्त्तिनोऽत्र।
(४) तस्यामेवाशोकतरोरधश्छायायां। (५) मां ते मुनयः सर्व एव।
(६)...शिशुरेव, सरस्तीर-तरुनीड़पतितः। (७) दूरनिपतित...।

तपस्वि-दुरारोहतया च तस्य वनस्पतेरेनं शक्यते स्वनीडमारोपयितुमिति जातदये-नानीतः। तद्यावदयमप्ररूढपक्षतिरक्षमोऽन्तरीक्ष-(१) मुत्पतितुं, तावदत्रैव कस्मिंश्चिदाश्रमतरुकोटरे मुनिकुमारकैरस्माभिश्चोपनीतेन नीवार-कण-निकरेण विविधफल-रसेन च (२) संवर्द्धमानो धारयतु जीवितम्। अनाथ-परिपालनं हि धर्मोऽस्मद्विधानाम् (३)। उद्भिन्न-पक्षतिस्तु गगनतल-सञ्चरण-(४) समर्थो यास्यति यत्रास्मै (५) रोचिष्यते। इहैव वोपजात-परिचयः (६) स्थास्यति।" (ष)

इत्येवमादिकमस्मत्संबद्धमालाप-(७) माकर्ण्य किञ्चिदुपजात-कुतूहलो भगवान् जाबालिरीषदावलित-कन्धरः पुण्यजलैः प्रक्षालयन्निव मामतिप्रशान्तया दृष्ट्या

मद्दिशि किंचित्परावर्तितग्रीवः

मध्यगतः, दूरान्निपतनेन विह्वला विकला तनुर्यस्य सः, अतएव अल्पं अवशेषं अवशिष्टं आयुर्यस्य सः। जाता दया यस्य तेन मया। अप्ररूढे अनुत्पन्ने पक्षती पक्षमूलद्वयं यस्य सः। उपनीतेन उपहृतेन दत्तेन, नीवाराणां मुनिधान्यानां ये कणास्तेषां निकरेण समूहेन। उद्भिन्ने प्रकाशिते पक्षती पक्षमूले यस्य सः। इहैव अत्रैव तपोवने। उपजातपरिचयः अस्माभिः सह जातपरिचयः।

(स) इत्येवमिति। ईषदावलितकन्धरः मद्दिशि किञ्चित्परावर्त्तितग्रीवः, पुण्यान्येव जलानि तैः, मां प्रक्षालयन्निव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अतिप्रशान्तया नितान्तप्रसन्नया, दृष्ट्या चक्षुषा। "दृक् दृष्टि"रित्यमरः। उपजातं प्रत्यभिज्ञानं प्रत्यभिज्ञा स एवायमित्याकारं ज्ञानं यस्य

শরীর একেবারে বিকল হইয়া পড়িয়াছে এবং আয়ুও অল্পমাত্র অবশিষ্ট আছে; তখন আমি ইহাকে গ্রহণ করিলাম, কিন্তু সেই বৃক্ষে আরোহণ করা তপস্বীর দুঃসাধ্য বলিয়া নিজের বাসাতে ইহাকে রাখিতে পারিলাম না, তখন আমার দয়া জন্মিল, তাই আমি ইহাকে নিয়া আসিয়াছি। অতএব যে পর্য্যন্ত পাখা না উঠায় এ, আকাশে উড়িতে না পারে, সেই পর্য্যন্ত এই স্থানেই আশ্রমস্থ কোন বৃক্ষের কোটরে থাকিয়া আমাদের ও অন্যান্য মুনিকুমারগণের প্রদত্ত উড়ী-তণ্ডুলের কণা ও নানাবিধ ফলের রস আহার করিয়া বৃদ্ধি লাভ করতঃ জীবন ধারণ করুক। কারণ—আমাদের ন্যায় লোকের পক্ষে নিরাশ্রয়দিগকে পরিপালন করাই ধর্ম্ম। কিন্তু পাখা উঠিলে আকাশে বিচরণ করিতে সমর্থ হইবে, তাহার পর যে স্থানে অভিরুচি হইবে, সেই স্থানেই যাইবে; অথবা আমাদের সহিত পরিচয় হইলে এই স্থানেই থাকিবে।"

(স) আমার সম্বন্ধে এইরূপ কথোপকথন শুনিয়া ভগবান্ জাবালির কৌতূহল জন্মিল, তিনি আমার দিকে গ্রীবাদেশ ঈষৎ পরিবর্ত্তিত করিয়া পুণ্যজলে যেন প্রক্ষালন করতঃ নিতান্ত প্রসন্ন দৃষ্টিতে আমাকে দেখিলেন, তাহাতে যেন বহুকালের পর তাঁহার প্রত্যভিজ্ঞা (এই সেই—

---

(१) अन्तरिक्षं। (२) फलरसेन। (३) अस्मद्विधानाम्। (४)…सञ्चलन…।
(५) यत्र चास्मै। (६) समुपजात…, उपजातविस्रम्भः। (७) अस्मत्सम्बद्धालापं।

दृष्ट्वा (१) सुचिरमुपजात-प्रत्यभिज्ञान (२) इव पुनः पुनर्विलोक्य "स्वस्यैवाविनयस्य फलमनेनानुभूयते" इत्यवोचत्। (घ)

स हि भगवान् कालत्रयदर्शी (३) तपः-प्रभावाद्दिव्येन चक्षुषा सर्वमेव कर-तल-गतमिव जगदवलोकयति, (४) वेत्ति च जन्मान्तराण्यप्यतीतानि (५), कथयत्यागामिनमप्यर्थम्, ईक्षण-गोचरगतानाञ्च प्राणिनामायुषः संख्या-(६) मावेदयति। (ङ)

ततः सर्वैव सा (७) तापस-परिषच्छ्रुत्वा विदित-तत्प्रभावा 'कीदृशोऽनेना-विनयः कृतः, किमर्थं वा कृतः, क्व वा कृतः, जन्मान्तरे वा कोऽयमासीत्' इति कुतूहलिन्यभवत्, असकृदुपयाचितवती च (८) तं भगवन्तम्,—"आवेदय प्रसीद

सः। "अनुभूतस्य पुनरनुभवः प्रत्यभिज्ञा" इत्याचार्य्याः। स्वस्यैव निजस्यैव अविनयस्य अशिष्टव्यवहारस्य। अनेन शुकशावकेन।

(ङ) ननु तदानीमेव प्रथममवलोकयतो मुनेः कथं प्रत्यभिज्ञोपजायत इत्याह स हीति। हि यस्मात्। कालत्रयदर्शी भूतभविष्यद्वर्त्तमानात्मककालत्रितयगतसर्ववृत्तान्ताभिज्ञः। करतलगतमिव पाणितल-स्थितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आगामिनमप्यर्थं भविष्यन्तमपि विषयम्। ईक्षणगोचरगतानां नयनविषयस्थितानां दृष्टमात्राणामित्यर्थः। आवेदयति ज्ञापयति।

(च) तत इति। तापसपरिषत् तपस्विसभा। युवद्वृद्धभेदेन सम्प्रदायभेदेन वा तापसपरिषदां बहु-त्वात् सर्वैवेत्युक्तिः सङ्गच्छते। विदितः अवगतः तस्य जावालेः प्रभावो माहात्म्यं यया सा। कुतूहलिनी

এইরূপ জ্ঞান) জন্মিল ; তাহার পর তিনি বারংবার আমার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া বলিলেন,—"এই শুকশাবক নিজেরই অন্যায় আচরণের ফল অনুভব করিতেছে।"

(ঙ) কারণ—সেই মহর্ষি, ত্রিকালজ্ঞ এবং তপস্যার প্রভাবে দিব্য চক্ষুর্দ্বারা সমস্ত জগৎই করতলগতের ন্যায় দেখিতে পান, লোকের পূর্ব্বজন্মের ঘটনাবলীও জানিতে পারেন, ভবিষ্যৎ বিষয়ও বলিতে পারেন এবং দর্শনমাত্রেই প্রাণিগণের আয়ুর সংখ্যাও জানাইতে পারেন।

(চ) তাহার পর সেই তপস্বিগণ সকলেই, জাবালির সেই কথা শুনিয়া, তাঁহার মাহাত্ম্য অবগত থাকায় মনে মনে কৌতুকাবিষ্ট হইলেন যে, 'এই শুকশাবক কীদৃশ অন্যায় আচরণ করিয়াছিল, কি জন্যই বা করিয়াছিল, কোথায়ই বা করিয়াছিল, জন্মান্তরেই বা এ, কে ছিল ?' তাহার পর তাঁহারা সেই ঘটনা বলিবার জন্য ভগবান্ জাবালিকে বার বার প্রার্থনা করিতে লাগিলেন,—"ভগবন্ ! আপনি প্রসন্ন হউন, আমাদের নিকট বলুন, যে এই শুকশাবক

(१) क्वचित् 'दृष्ट्वा' इति पदं नास्ति। (२) अभिजातप्रत्यभिज्ञः। (३) त्रिकालदर्शी।
(४) आलोकयति। (५) वेत्ति जन्मान्तराण्यतीतानि। (६) प्रमाणं।
(७) सर्वैव सा तापस…। (८) उपयाचितवती तं।

भगवन्! कीदृशस्याविनयस्य फलमनेनानुभूयते, कश्चायमासीज्जन्मान्तरे, विहगजातौ वा (१) कथमस्य सम्भवः, किमभिधानो वायम्, अपनयतु नः कुतूहलम् आश्चर्य्याणां हि सर्वेषां भगवान् प्रभवः।" (च)

इत्येवमुपयाचित-(२) स्तपोधनपरिषदा स महामुनिरवदत् (३)—"अतिमहदिदमाश्चर्य्यमाख्यातव्यम्, अल्पशेषमहः, प्रत्यासीदति च नः स्नानसमयः, भवतामप्यतिक्रामति देवार्च्चनवेला, (४) तदुत्तिष्ठन्तु भवन्तः, सर्वं एव तावदाचरन्तु यथोचितं दिवस-व्यापारम्, अपराह्णसमये भवतां पुनः कृत-फलमूलाशनानां विस्रब्धोपविष्टानामादितः प्रभृति सर्वमावेदयिष्यामः। (५) योऽयं यश्च कृतमनेनापरस्मिन् जन्मनि, इह लोके च यथास्य सम्भूतिः। अयश्च तावदपगत-क्लमः क्रियतामाहारेण। नियतमयमप्यात्मनो जन्मान्तरोदन्तं (६) स्वप्नोप-

---

ज्ञातुं मनसि कौतुकवती। असकृदुपयाचितवती तद्वृत्तान्ताभिधानाय वारं वारं प्रार्थितवती। विहगजातौ पक्षिजातौ। सम्भव उत्पत्तिः। किमभिधानः किंनामा, अयं शुकशावकः। आश्चर्य्याणां परोक्षविषयविज्ञप्तिरूपाणां। प्रभवः कारणम्।

(क) इत्येवमिति। अल्पः अंशः शेषः अवशिष्टो यस्य तत्, अहः एतद्दिनं। प्रत्यासीदति सन्निधत्ते। दिवसव्यापारं दिनकृत्यं। अपराह्णसमये गते इति शेषः, अतीतायां सायंसन्ध्यायामित्यर्थः। कृतं फलमूलानां अशनं भोजनं यैस्तेषां, विस्रब्धोपविष्टानां सुस्थभावेनोपविष्टानामित्यर्थः। सम्भूतिरुत्पत्तिः। आहारेण आहार्य्य-

---

কীদৃশ অন্যায় আচরণের ফল অনুভব করিতেছে, জন্মান্তরে এ, কে ছিল, পক্ষিজাতিতেই বা কি প্রকারে ইহার উৎপত্তি হইল, ইহার নাম কি, এই সকল বিষয় বলিয়া আপনি আমাদের কৌতুকনিবৃত্তি করুন, কারণ—আপনি সকলই আশ্চর্য্য বিষয় বলিয়া থাকেন।"

(ক) তপস্বিগণ এইরূপ প্রার্থনা করিলে সেই মহর্ষি বলিলেন,—অতি বৃহৎ ও আশ্চর্য্যই এই বৃত্তান্ত বলিতে হইবে, দিবসের অল্পমাত্রই অবশিষ্ট আছে, আমাদের স্নানের সময়ও উপস্থিত হইয়াছে, আপনাদেরও দেবতাপূজার সময় অতিবাহিত হইতেছে। অতএব আপনারা উঠুন, সকলেই যথোচিত দিনের কর্ত্তব্য কার্য্য সম্পন্ন করুন, সায়ংকাল অতীত হইলে আপনারা ফল-মূল ভোজন করিয়া পুনরায় সুস্থচিত্তে উপবেশন করিলে আমি প্রথম হইতেই সমস্ত বৃত্তান্ত বলিব। এই শুকশাবক পূর্ব্ব-জন্মে যে ছিল এবং যাহা করিয়াছিল এবং ইহলোকেও ইহার যে ভাবে উৎপত্তি হইয়াছে, (সেই সমস্ত বৃত্তান্তই বলিব)। তোমরা খাদ্যবস্তু প্রদান করিয়া ইহার ক্লান্তি দূর কর! আমি ইহার বৃত্তান্ত বলিতে লাগিলে এই শুকশাবকও স্বপ্নলব্ধের

---

(१) क्वचित् 'वा'-शब्दो नास्ति। (२) उपयाच्यमानः। (३) प्रत्यवदत्।
(४)...विधिवेला। (५) आवेदयिष्यामि।। (६) जन्मान्तरवृत्तं।

सर्व्वमिव मयि कथयति, सर्व्वमशेषतः स्मरिष्यति” इत्यभिदधदेवोत्थाय सह तैर्मुनिभिः (१) स्नानादिकमुचित-दिवस-व्यापारं (२) अकरोत्। (क)

अनेन च (३) समयेन परिणतो दिवसः। स्नानोत्थितेन मुनिजनेनार्घविधिमुपपादयता यः क्षितितले दत्तः (४) तमम्बर-तलगतः (५) साक्षादिव रक्त-चन्दनाङ्गरागं रविरुदवहत्। (ख) ऊर्द्ध्वमुखैरर्क-बिम्ब-विनिहित-(६) दृष्टिभिरुष्मपैस्तपोधनैरिव परिपीयमान-तेजःप्रसरो विरलातपस्तनिमानमभजत्। (ग) उद्यत्सप्तर्षि-सार्थ-स्पर्श-परिजिहीर्षयेव (७) संहृत-पादः पारावत-पाद-(८) पाटल-

वस्तुप्रदानेन। नियतं निश्चितं। जन्मान्तरोदन्तं अन्यजन्मनो वृत्तान्तं। अशेषतः प्रथमतः। इत्यभिदधदेव इत्थं ब्रुवन्नेव।

(ख) अनेनेति। अनेन समयेनेति तृतीयापवर्गे। परिणतः अवसानं गतः। अर्घविधिमुपपादयता सूर्य्याय अर्घदानं कुर्वता। यो रक्तचन्दनाङ्गराग इत्यर्थः। अम्बरतलगतो रविः साक्षात् तं रक्त-चन्दनाङ्गरागमिव रक्तचन्दनरूपमङ्गरागद्रव्यमिव उदवहत् वपुष्यधारयत्, तदानीं रवेरालोहितायमानत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) ऊर्द्ध्वेति। अर्कबिम्बे सूर्य्यमण्डले विनिहिताः स्थापिताः दृष्टयो यैस्तैः, उष्माणं उत्तापं पिबन्तीति तैः तन्नामकैः। परिपीयमानः तेजःप्रसरस्तेजःसमूहो यस्य सः तादृश इव सन्, विरलः अल्पो-न्नस्खलत्वादल्पीभूत आतपो यस्य स तथोक्तो रविः, तनोः क्षुद्रस्य भाव इति तनिमा तं पृथ्वादित्वादिमन्। अत्र पानोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) उद्यदिति। उद्यत उदयमानस्य सप्तर्षिसार्थस्य सप्तर्षिमण्डलस्य यः स्पर्शः पादेन संस्पर्शः, तस्य परिजिहीर्षयेव परिहर्त्तुं परित्यक्तुमिच्छयेव हेतुना, संहृतः सङ्कोचितः पादः किरणश्चरणश्च येन सः, जगत्पूजनीयानां सप्तर्षीणां चरणेन स्पर्शनस्य नितान्तानौचित्यादिति भावः, पारावतपादवत् कपोत-चरणवत् पाटलः श्वेतरक्तो रागः प्रभा यस्य सः, रविः अम्बरतलादाकाशात् अलम्बत अवातरत्। अत्र

তাঁর পূর্ব্ব-জন্মের সমস্ত বৃত্তান্তই প্রথম হইতে নিশ্চয় স্মরণ করিবে।” এই কথা বলিয়া মহর্ষি জাবালি সেই মুনিগণের সহিত উঠিয়া স্নানপ্রভৃতি দিনের কর্ত্তব্য কার্য্য করিতে লাগিলেন।

(খ) এই সময় দিন প্রায় শেষ হইয়া আসিল। মুনিগণ স্নান করিয়া উঠিয়া সূর্য্যার্ঘ দান করিবার সময়ে ভূতলে যে রক্তচন্দন দিয়াছিলেন, আকাশস্থিত সূর্য্য, যেন সাক্ষাৎ সেই রক্তচন্দনের অঙ্গরাগ শরীরে ধারণ করিতে লাগিলেন; (গ) এবং উষ্মপ ঋষিগণ ঊর্দ্ধমুখ হইয়া সূর্য্যমণ্ডলে দৃষ্টিস্থাপনপূর্ব্বক তেজ পান করিতেছিলেন বলিয়াই যেন অল্প রৌদ্র-সম্পন্ন সূর্য্য ক্রমে ক্ষুদ্র হইয়া যাইতে লাগিলেন; (ঘ) উদয়মান সপ্তর্ষিমণ্ডলের স্পর্শ-পরিত্যাগের

(१) सह मुनिभिः। (२) स्नानादिकमुचितं दिवसव्यापारं, स्नानादिकं दिवसव्यापारं।
(३) क्वचिच्चकारो नास्ति। (४) अधोदत्तः। (५) अम्बरतलं गतः, अस्ताचलगतः।
(६) निहित…। (७)…सार्थपरिजिहीर्षयेव। (८)…चरण…।

रागो रविरम्बरतलादलम्बत (१) (घ) आलोहितांशु-जालं जलशयन-मध्य-गतस्य (२) मधु-रिपो-(३) विगलन्मधुधारमिव नाभि-नलिनं (४) प्रतिमागतम-परार्णवे सूर्य्यमण्डलमलक्ष्यत (५)। (ङ)। विहाय धरातलं (६) उन्मुच्य च कमलिनी-वनानि शकुनय इव दिवसावसाने तरु-शिखरेषु (७) पर्वताग्रेषु च रवि-किरणाः स्थितिमकुर्वत। (च) आलग्न-लोहितातप-(८) च्छेदा मुनिभिरा-लम्बित-लोहित-वल्कला इवाश्रम-तरवः क्षणमदृश्यन्त (९) (छ)। अस्तमुप-

---

इत्युत्प्रेक्षा, किरणचरणयोर्भेदेऽपि पादशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः लुप्तोपमा च, इत्येतेषामङ्गाङ्गि-भावेन सङ्करः। तथा कपोतपादेन सह जगद्वन्द्यरविकान्तिसादृश्यकथनादुपमागतानौचित्यदोषः स च शुक-चञ्चुपाटलेत्यादिपाठेन समाधेयः।

(ङ) आलोहितेति। आलोहितं ईषद्रक्तवर्णं अंशुजालं किरणसमूहो यस्य तत्, विगलन्ती क्षरन्ती मधुधारा यस्मात् तत्, आलोहितविसारिकिरणजालस्य साम्यप्रतिपादनार्थं विशेषणमेतदिति बोध्यम्। प्रतिमागतं प्रतिबिम्बभावेन पतितं जलशयनमध्यगतस्य जलशय्यामध्यस्थितस्य मधुरिपोर्नारायणस्य नाभिनलिनं नाभिपद्ममिव अपरार्णवे पश्चिमसमुद्रे सूर्य्यमण्डलं रविबिम्बप्रतिबिम्बं अलक्ष्यत लोकैरदृश्यत। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) विहायेति। कमलिनीवनानि पद्मवनानि उन्मुच्य परित्यज्य, तेषां प्रियत्वेऽप्यस्तगमनकाले सर्वस्यैव परित्याज्यत्वादिति भावः। तथा च तादृशार्थप्रत्यायनार्थमेव विशेषादुक्तिरियमिति बोध्यम्। शकुनयः पक्षिण इव। स्थितिमवस्थानम्। अत्राप्युपमालङ्कारः।

(छ) आलग्नेति। आलग्नाः संसक्ताः लोहिता रक्तवर्णाः आतपच्छेदा आलोकखण्डा येषु ते तथोक्ताः, अतएव मुनिभिः आलम्बितानि उपरि स्थापितानि लोहितानि रक्तवर्णानि वल्कलानि येषु ते तादृशा इव। अत्र वल्कलालम्बनस्योत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

ইচ্ছাতেই যেন কিরণ (চরণ) সঙ্কুচিত করিয়া, কপোতের চরণের ন্যায় পাটলবর্ণ কান্তিসমন্বিত সূর্য্য, আকাশ হইতে অবতীর্ণ হইলেন। (ঙ) পূর্ব্বকালে ক্ষীরোদসাগরমধ্যে নারায়ণ শয়ন করিলে তাঁহার নাভি হইতে মধুধারাক্ষরণকারী রক্তবর্ণ যে পদ্ম উঠিয়াছিল, জলমধ্যে পতিত তাহার প্রতি-বিম্বের ন্যায়, পশ্চিমসমুদ্রে ঈষৎ রক্তবর্ণ কিরণজালসমন্বিত সূর্য্যমণ্ডলের প্রতিবিম্ব দেখা যাইতে লাগিল। (চ) দিনের সেই শেষ সময়ে পক্ষিগণের ন্যায় সূর্য্যের রশ্মিসমূহ, ভূতল ও পদ্মবন পরি-ত্যাগ করিয়া বৃক্ষ ও পর্ব্বতগণের উপরিভাগে অবস্থান করিতে লাগিল। (ছ) তখন আশ্রমস্থ বৃক্ষসমূহের উপরিভাগে রক্তবর্ণ সূর্য্যালোক পতিত হওয়ায় ক্ষণকাল দেখা যাইতে লাগিল যেন মুনিরা লোহিতবর্ণ বল্কল সকল ঝুলাইয়া রাখিয়াছেন। (জ) ভগবান্ সূর্য্য অস্তমিত হইলে

---

(१) अवालम्बत। (२) शयनगतस्य। (३) मधुभिदः। (४) इव नलिनं।
(५) आलक्ष्यत, अवैक्ष्यत, अदृश्यत। (६) धरणितलं, अम्बरतलं। (७) तपोवनतरुशिखरेषु।
(८) रक्तातपच्छेदाः, रक्तातपशकलच्छेदाः। (९) तरवः। अशोभन्त, अलक्ष्यन्त।

गते च भगवति सहस्र-दीधितावपरार्णव-तटात् (१) उल्लसन्ती (२) विद्रुम-लतेव पाटला (३) सन्ध्या समदृश्यत। (ज) यस्यामाबध्यमानध्यानं, एकदेश-दुह्यमान-होमधेनु-दुग्धधारा-ध्वनि-मनोहरं, (४) अग्नि-होत्र-वेदि-विप्रकीर्य्यमाण-हरित्-कुशम् (५) ऋषि-कुमारिकाभिरितस्ततो विक्षिप्यमाण-दिग्देवतार्च्चन-वलि-सिक्थ-कं (६) आश्रमपदमभवत्। (झ) क्वापि विहृत्य दिवावसाने (७) लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्त्तमाना सन्ध्या मुदितैस्तपोधनैरदृश्यत(८)। (ञ)

(ज) अस्तमिति। सहस्रदीधितौ सूर्य्ये। अपरार्णवतटात् पश्चिमसमुद्रतीरात् उल्लसन्ती उत्तिष्ठन्ती, विद्रुमलतेव लताकारेण तिर्य्यगवस्थिता प्रवालावलीव पाटला श्वेतरक्ता। अत्रोपमालङ्कारः।

(झ) यस्यामिति। यस्यां सन्ध्यायां आबध्यमानं सन्ध्यावन्दनव्याप्रियमाणैर्मुनिभिः क्रियमाणं ध्यानं परमेश्वरे प्रत्ययैकतानता यस्मिन् तत्, "अत्र प्रत्ययैकतानता ध्यान"मिति पातञ्जलसूत्रात्। एकदेशे आश्रमस्यैकपार्श्वे दुह्यमानानां होमधेनूनां या दुग्धधारास्तासां ध्वनिभिः शब्दैः मनोहरं सुन्दरं। अग्निहोत्राणां तदाख्ययागविशेषाणां वेदिषु परिष्कृतभूमिषु विप्रकीर्य्यमाणा होमीयास्तरणार्थं निक्षिप्यमाणाः हरितः पालाशवर्णाः कुशा यस्मिन् तत्। "सायं प्रातर्जुहोति" इति श्रुत्या तदानीं होमस्य विहितत्वादिति भावः। इतस्ततः सर्व्वासु दिक्षु, विक्षिप्यमाणाः स्थाप्यमानाः, दिग्देवतानां दिक्पालानां अर्च्चनाय पूजनाय वलिसिक्थाः उपहाररूपान्नानि यस्मिन् तत्। "सिक्थ ओदनसम्भवे।" इति विश्वः।

(ञ) क्वापीति। मुदितैर्ध्यानहृष्टैः तपोधनैर्मुनिभिः, क्वापि तृणमयक्षेत्रादौ अज्ञातदेशे च, विहृत्य पर्य्यटनं कृत्वा अवस्थाय च, दिवावसाने परिवर्त्तमाना प्रत्यागता, लोहिते रक्ते तारके कनीनिकाद्वयं यस्याः सा, अन्यत्र तु लोहितास्तदानीमपि रक्तरविकिरणसम्पर्कादृक्ताः तारका नक्षत्राणि यस्यां सा, कपिला स्वर्णवर्णा तपोवनधेनुरिव कपिला पिङ्गलवर्णा, सन्ध्या सायंकालः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

দেখা গেল, পশ্চিম সমুদ্রের তীর হইতে প্রবাললতার ন্যায় সন্ধ্যারাগ উঠিতেছে। (ঝ) যে সময়ে সন্ধ্যাবন্দনে ব্যাপৃত মুনিগণ ধ্যান করিতেছিলেন, আশ্রমের একদিকে হোমধেনু দোহন করিতে থাকায় দুগ্ধধারার শব্দে আশ্রমটি মনোহর হইয়াছিল; মুনিগণ হোম করিবার নিমিত্ত অগ্নিহোত্র যাগের বেদির উপরে হরিদ্বর্ণ কুশ আস্তরণ করিতেছিলেন, এবং ঋষিকন্যারা দিক্-পালগণের পূজার নিমিত্ত সকল দিকে পক্ব অন্ন রাখিতেছিলেন। (ঞ) ধ্যান করিয়া হৃষ্টচিত্তে অবস্থিত মুনিগণ দেখিতে লাগিলেন যে, কোন নূতন তৃণময় ক্ষেত্রে বিচরণ করিয়া, রক্তবর্ণ-নয়নতারা-সমন্বিত এবং স্বর্ণবর্ণ হোমধেনু যেমন দিবাবসানে প্রত্যাগমন করে, সেইরূপ দিনের বেলায় কোন অজ্ঞাত দেশে থাকিয়া, রক্তবর্ণ-নক্ষত্র-সমন্বিত এবং পিঙ্গলবর্ণ সন্ধ্যা,

(१) अपरार्णवतलात्। (२) उपसर्पन्ती। (३) आपाटला। (४)...धाराध्वनित-धन्यतराति-मनोहरं। (५) अग्निवेदिविकीर्य्यमाण...। (६) दैवतावलिसिक्थं।

(७) दिवसावसाने। (८) मुनिभिः।

अचिर-प्रोषिते च सवितरि शोक-विधुरा कमल-मुकुल-कमण्डलु-धारिणी हंस-सितदुकूल-परिधाना मृणाल-धवल-यज्ञोपवीतिनी (१) मधुकर-मण्डलाक्ष-वलयं (२) उद्वहन्ती कमलिनी दिनपति-(३) समागम-व्रतमिवाचरत्। (ट)। अपर-सागराम्भसि पतिते दिवसकरे (४) तत्पतन-वेगोत्थितं (५) अम्भः-शीकर-निकरमिव तारागणमम्बरं (६) आधारयत्। (ठ) अचिराच्च सिद्ध-कन्यका-विक्षिप्त-सन्ध्यार्च्चन-कुसुम-शबलमिव तारकितं (७) वियदराजत। (ड)। क्षणेन

(ट) अचिरेति। सवितरि सूर्य्ये तेजस्विनि नायके च अचिरप्रोषिते अस्तं गते मृते च, शोकेन विधुरा विह्वला, कमलमुकुलमेव कमण्डलुः कमलमुकुलमिव कमण्डलुश्च तं धारयतीति सा तथोक्ता, हंसा एव सितदुकूलं श्वेतवस्त्रं हंसवत् सितदुकूलञ्च परिधानमधोवस्त्रं यस्याः सा, विधवाया रक्तनीलादिवस्त्रधारण-निषेधादिति भावः। मृणालमेव धवलयज्ञोपवीतं मृणालवत् धवलयज्ञोपवीतञ्च अस्या अस्तीति सा। तथा मधुकरमण्डलं भ्रमरसमूह एव अक्षवलयं जपमाला, मधुकरमण्डलवत् अक्षवलयञ्च, तत् उद्वहन्ती धारयन्ती कमलिनी पद्मलता, पद्मिनीसञ्ज्ञकः स्त्रीविशेषश्च दिनपतेः सूर्य्यस्य पत्युश्च समागमाय पुनः सम्मेलनाय व्रतं आचरदिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां कमलिनीदिनपत्योर्नायिका-नायकव्यवहारसमा-रोपात् समासोक्तिश्च, इत्यनयोरङ्गाङ्गिभावानुप्रवेशरूपः सङ्करः। तथा शृङ्गेण साध्वी पद्मिनी स्त्रीवेत्युपमालङ्कारो व्यज्यते इति "हिमसुता-चन्द्ररुचिरः सपद्मकः" इत्यादिदर्पणोदाहृतवदलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

"न विधवा रक्तमाद्यात् परिधानं न पीतमासङ्गे"ति स्मृतेर्हंसमितेत्याद्युक्तं। तथा ब्रह्मवादिनीनां स्त्रीणामुपनयनविधानान्मृणालधवलयज्ञोपवीतिनीत्युक्तिः सङ्गच्छते। तथा च हारीतः—"द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्म-वादिन्यः सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे च भैक्षचर्य्येति।

(ठ) अपरेति। अम्बरं आकाशं कर्त्तृ, तस्य दिवसकरस्य पतनवेगेन उत्थितं उद्गतं अम्भःशीकर-निकरमिव जलविन्दुसमूहमिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षा।

(ड) अचिरादिति। तारका अस्य सञ्जाता इति तारकितं उदितनक्षत्रसमन्वितं वियत् आकाशं कर्त्तृ, सिद्धानां देवयोनिविशेषाणां याः कन्यकास्ताभिर्विक्षिप्तानि यानि सन्ध्यार्च्चनकुसुमानि सन्ध्याकालीय-

দিন অতীত হইলে পুনরায় প্রত্যাগমন করিতেছে। (ট) অল্প সময়মাত্র সূর্য্য অস্তমিত হইলে পদ্মিনী, তাঁহার শোকে অধীর হইয়া পদ্মকলিকারূপ কমণ্ডলু, হংসরূপ শ্বেতবস্ত্র, মৃণালরূপ ধবল যজ্ঞোপবীত এবং ভ্রমরগণরূপ জপের মালা ধারণ করিয়া পুনরায় সূর্য্যের সহিত সম্মিলিত হইবার জন্যই যেন কোন ব্রত আচরণ করিতে লাগিল। (ঠ) সূর্য্য পশ্চিম সমুদ্রের জলে পতিত হইলে আকাশ যেন, তাঁহারই পতনবেগে উত্থিত জলবিন্দুসমূহের ন্যায় নক্ষত্রসমূহ ধারণ করিল। (ড) অচিরকালমধ্যে নক্ষত্র উঠিল, তখন সিদ্ধকন্যারা সন্ধ্যাকালীয় পূজার

(१) यज्ञोपवीता। (२)...मालावलयं। (३) रवि···। (४) दिनकरे, दिवाकरे।
(५) दिवसकरे वेगोत्थितं पवनवेगोत्थितं पतङ्गवेगोत्थितं। (६) अम्बरतलं। (७) ससारं।

चोन्मुखेन मुनिजनेनोर्द्ध-विप्रकीर्णैः प्रणामाञ्जलि सलिलैः प्रक्षाल्यमान (१) इवागलद्खिलः सन्ध्यारागः। (ढ)

क्षयमुपगतायाञ्च (२) सन्ध्यायां तद्विनाश-दुःखिता कृष्णाजिनमिव विभावरी तिमिरोद्गममभिनवमवहत्। (ण)। अपहाय (३) मुनि-हृदयानि (४) सर्वमन्यदन्धकारतां तिमिरमनयत्। (त)। क्रमेण च रविरस्तं गत (५) इत्युदन्तमुपलभ्य जात-(६) वैराग्यो धौत-दुकूल-वल्कल-धवलाम्बरः सतारान्तः-

---

पूजापुष्पाणि तैः शवलं चित्रं नानावर्णमिव सत् अराजत। तादृशकुसुमानीव नभस्यदृश्यन्तेति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) क्षणेनेति। ऊर्द्धविप्रकीर्णैः ऊर्द्धदिशि निक्षिप्तैः, प्रणामाञ्जलिसलिलैः इष्टदेवतानमस्कारकालीनाञ्जलिपूर्णजलैः प्रक्षाल्यमान इव सन्। सन्ध्यारागः सन्ध्याकालीनो रक्तिमा, अगलत् प्राच्यवत। सन्ध्याकालोऽतीत इति तात्पर्य्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) क्षयमिति। तस्याः सन्ध्याया विनाशेन क्षयेण दुःखिता शोकातुरा विभावरी रात्रिः, कृष्णाजिनमिव कृष्णवर्णचर्म्मेव अभिनवं-तिमिरोद्गमं तमिस्रोदयं उत्पन्नमन्धकारराशिमित्यर्थः। बन्धुजनमरणे कृष्णचिह्नं धार्य्यत इत्याचारः। सख्यन्तरशोककातरा सखीवेति भावः। अत्र तद्विनाशदुःखितेव सतीति प्रतीतेर्भावाभिमानिनी प्रतीयमाना गुणोत्प्रेक्षा उपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) अपेति। तिमिरं अन्धकारः, मुनीनां हृदयानि अपहाय परित्यज्य तेषु सर्वदा ब्रह्मालोकस्य विद्यमानत्वादिति भावः। अन्यत् सर्वं वस्तु अन्धकारतां स्वावरणेन चाक्षुषप्रत्यक्षाविषयतामित्यर्थः। एतेन तदानीं कृष्णपक्षस्य प्रतिपत् द्वितीया वा आसीदिति प्रतीयते।

(थ) क्रमेणेति। रविः सूर्य्यः कश्चित् परमप्रियवयस्यः, अस्तं अस्ताचलं विनाशञ्च गत इति इत्यं उदन्तं वार्त्तां उपलभ्य ज्ञात्वा, जातं वैराग्यं सर्वविषयेषु वैतृष्ण्यं समैदैते वश्या नाहमेतेषां वश्य इति वशीकारसंज्ञा यस्य सः "दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्य"मिति पातञ्जलसूत्रात्, यद्वे

সময়ে যে পুষ্প নিক্ষেপ করিয়াছিল, তাহাতেই যেন বিচিত্র হইয়া আকাশ শোভা পাইতে লাগিল। (ঢ) ক্ষণকাল পরেই মুনিগণ ঊর্দ্ধমুখ হইয়া ইষ্টদেবতার নমস্কারের সময়ে অঞ্জলিপূর্ণ যে জল ঊর্দ্ধদিকে নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, তাহাতেই যেন প্রক্ষালিত হইয়া সন্ধ্যার সমস্ত রক্তিমা আকাশ হইতে পড়িয়া গেল।

(ণ) সন্ধ্যা অতীত হইলে রাত্রি, তাহার অদর্শনে দুঃখিত হইয়াই যেন কৃষ্ণবর্ণ চর্ম্মের ন্যায় নূতন অন্ধকার বহন করিতে লাগিল। (ত) সেই অন্ধকার, মুনিগণের হৃদয় ভিন্ন অন্য সকল পদার্থই আবরণ করিল। (থ) ক্রমে চন্দ্র উদিত হইলেন। তখন দেবর্ষি বশিষ্ঠাদির যে আশ্রমের প্রান্তভাগে অন্য অন্ধকারের ন্যায় তমালবৃক্ষের শ্রেণী আছে, এবং সাত জন ঋষি

---

(१) क्षाल्यमानः। (२) उपगतायां। (३) शापदग्धमिव भयाद्विहायेव। (४) मुनिजनहृदयानि।
(५) उपगतः, उपागतः। (६) समुत्पन्न...।

पुरः, पर्य्यन्त-स्थित-तनु-(१) तिमिर-तमाल-वन-(२) लेखं, सप्तर्षि-मण्डलाध्युषितं, अरुन्धती-सञ्चरण-पवित्रम्, (३) उपहिताषाढ़म्, आलक्ष्यमाणमूलम्, एकान्त-स्थित-चारु-तारकमृगं (४) अमरलोकाश्रममिव गगनतलं (५)- अमृत-दीधितिरध्य-तिष्ठत्। (थ)। चन्द्राभरणभूतस्तारका-कपाल-शकलालङ्कृतादम्बरतलात्

आत्तवैराग्य उत्पन्नविशिष्टरागः। धौतदुकूलवत् प्रक्षालितक्षौमवस्त्रवत् वल्कलमिव धवलं अम्बरं वस्त्रं यस्य सः, अन्यत्र तु धौतदुकूलवल्कलवत् धवलं स्वतेजसा श्वेतं अम्बरं आकाशं यस्य सः, तथा सतारं सज्योतिः अन्तःपुरं हृदयमध्यं यस्य सः ध्याननिष्ठ इत्यर्थः, पक्षे तारा अश्विन्यादीनि नक्षत्राण्येव अन्तःपुराणि अन्तःपुरस्थ-स्त्रियः, तैः सहेति सः। पर्य्यन्ते प्रान्तभागे स्थिता तनुतिमिरवत् अल्पान्धकारवत् तमालवनानां लेखा रेखा यस्मिन् तं, पक्षे पर्य्यन्ते स्थितं तनुतिमिरं स्वोदयाद्विरलान्धकारं तमालवनलेखेव यत्र तत्। सप्तानां ऋषीणां येषां केषाञ्चि-न्मुनीनां मण्डलेन गणेन अध्युषितं आश्रितं, पक्षे नक्षत्रात्मकमरीच्यादिसप्तर्षिगणेन अध्युषितं। अरुन्धत्या ८—
परमपतिव्रताया वशिष्ठपत्न्या अरुन्धतीनामकनक्षत्रविशेषस्य च सञ्चरणेन विचरणेन पवित्रम्। उपहिता मुनिभिः स्थापिताः आषाढ़ा दण्डा यस्मिन् तं, "आषाढ़ो व्रतिनां दण्डे मासि मलयपर्वते।" इति विश्वः, पक्षे उपहिते सन्निहिते आषाढ़े पूर्व्वाषाढ़ोत्तराषाढ़े नक्षत्रे यस्मिन् तत्। आलक्ष्यमाणानि दृश्यमानानि मूलानि मुनीनां खाद्यभूतमूलानि यत्र तं, अन्यत्र तु आलक्ष्यमाणं मूलं मूलाख्यनक्षत्रं यस्मिन् तत्। तथा चारू मनोहरे तारके कनीनिकाद्वयं येषां ते तथा, एकान्ते एकपार्श्वे स्थिताः चारुतारकाः मृगा हरिणा यस्मिन् तं, पक्षे एकान्ते स्थितः चारुतारकं सुन्दरनक्षत्रं मृगो मृगशिरा यस्मिन् तत्। "नक्षत्रे नेत्रमध्ये च तारकं तारकापि च।" इति वोपालितः। अमरलोके स्वर्गे य आश्रमो वशिष्ठादेस्तपोवनं तमिव। अमृतदीधि-तिश्चन्द्रः। प्राणोपमबन्धुजनमृत्युवार्त्तामुपेत्यापरो बन्धुजन इवेति भावः। अतएवात्र आश्रमेण सह गगनस्य सादृश्यं वाच्यं शोकाकुलबन्धुजनेन सह चन्द्रस्य सादृश्यन्तु गम्यमित्येकदेशविवर्त्त्युपमालङ्कारः श्लेषेण सङ्कीर्य्यते।

যাহাতে বাস করেন, আর সাধ্বী বশিষ্ঠপত্নী অরুন্ধতীর বিচরণে যে আশ্রম পবিত্র হইয়া থাকে এবং যে আশ্রমে পলাশের দণ্ড সকল স্থাপিত আছে, ভোজনের নিমিত্ত ফল-মূল দৃষ্টিগোচর হয়, এবং এক প্রান্তে মনোহর নয়নতারাসমন্বিত হরিণগণ বিচরণ করে; সেইরূপ আশ্রমে যেমন কোন প্রণয়ী ব্যক্তি, প্রিয়বয়স্যের মৃত্যুসংবাদ পাইয়া সকল বিষয়ে বৈরাগ্য উৎপন্ন হওয়ায় ধৌত ক্ষৌমবস্ত্রের ন্যায় শ্বেতবর্ণ বল্কল ধারণপূর্ব্বক ধ্যানস্থ হইয়া অবস্থান করে; সেইরূপ চন্দ্র, সূর্য্য অস্তমিত হইয়াছেন, এই বৃত্তান্ত জানিতে পারিয়া বিশেষ উদয়রাগে রঞ্জিত হইয়া তারারূপ স্ত্রীগণের সহিত আকাশে অবস্থান করিতে লাগিলেন; তখন আকাশ পরিষ্কৃত ক্ষৌমবস্ত্র ও বল্কলের ন্যায় ধবলবর্ণ হইল; তমালবৃক্ষশ্রেণীর ন্যায় অল্প অন্ধকার, একপ্রান্তে সরিয়া গেল; সপ্তর্ষিমণ্ডল (নক্ষত্র) উঠিল; অরুন্ধতীনক্ষত্রের উদয়ে আকাশ পবিত্র হইল; চন্দ্রের নিকটে পূর্ব্বাষাঢ়া ও উত্তরাষাঢ়ানক্ষত্র উঠিল; মূলানক্ষত্র দেখা যাইতে লাগিল, এবং

(१)...अन्तःपुरपर्य्यन्तस्थिततनुः...। (२)...वन...। (३)...पूतं। (४)...तारकाम्रगं। (५) गगनं।

त्र्यम्बकोत्तमाङ्गादिव गङ्गा सागरं (१) आपूरयन्ती हंस-धवला धरणीमपतज्ज्योत्स्ना। (द) हिमकर-सरसि विकच-पुण्डरीक-सिते चन्द्रिका-जलपान-लोभादवतीर्णो निश्चल-मूर्त्तिरमृतपङ्क-लग्न इवादृश्यत (२) हरिणः। (ध)। तिमिर-जलधर-समयापगमानन्तरं (३) अभिनव-सित-सिन्धुवार-(४) कुसुम-पाण्डुरैरर्णवागतैरगाह्यन्त (५) हंसैरिव कुमुद-सरांसि चन्द्रपादैः। (न) विगलित-

(द) चन्द्रेति। सागरं आपूरयन्ती स्वोदयेन स्वजलेन च समुद्रं परिपूर्णं कुर्वती, चन्द्रोदये समुद्रवृद्धेः प्रसिद्धत्वात्, गङ्गापक्षे तु आपूरयन्तीति भविष्यत्सामीप्ये वर्त्तमाना आपूरयिष्यन्तीत्यर्थः। हंसवद्धवला हंसैन धवला च, ज्योत्स्ना. चन्द्र एवाभरणं तद्बिभर्त्तीति तस्मात्, तारका नक्षत्राणि कपालशकलानीव नरशिरोऽस्थिखण्डानीव तैरलङ्कृतात्, अम्बरतलादाकाशात् त्र्यम्बकस्य शिवस्य उत्तमाङ्गान्मस्तकात् गङ्गा इव धरणीमपतत्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ध) हिमेति। विकचपुण्डरीकवत् प्रस्फुटश्वेतपद्मवत् सिते श्वेतवर्णे, तैः सिते च, हिमकरश्चन्द्र एव सरः सरोवरस्तस्मिन्, चन्द्रिका ज्योत्स्नैव जलं तस्य पानलोभात् अवतीर्णो मध्यगतः, हरिणश्चन्द्राङ्कगतश्चिह्नरूपी मृगः, अमृतं चन्द्रसुधैव पङ्कः कर्दमः तत्र लग्नो दृढसंसक्त इव सन् निश्चलमूर्त्तिः अचलाङ्गः लोकैरदृश्यत। अपरोऽपि हरिणः सरसि पानीयं पातुमवतीर्णः पङ्कलग्नो निश्चलस्तिष्ठति। अत्र चन्द्रिकायाः पानासम्भवात् अमृतस्य तरलतया तत्र तादृशलग्नत्वासम्भवाच्च स्वाङ्गरूपकमेवालङ्कारो न तु लुप्तोपमा, क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(न) तिमिरेति। अभिनवानि यानि सितानि श्वेतानि सिन्धुवारकुसुमानि निर्गुण्डीपुष्पाणि तद्वत् पाण्डुरैः, तथा अर्णवेभ्यः समुद्रेभ्यः आगतैः, पक्षे समुद्रानपि प्राप्तैः, हंसैरिव चन्द्रस्य पादैः किरणैः तिमिरमन्धकारो जलधरसमयो वर्षाकाल इव कृष्णत्वसाम्यात् तस्य अपगमानन्तरं निवृत्तेः परं कुमुदसरांसि कैरवमयाः सरोवरा अगाह्यन्त आलोड्यन्त अस्पृश्यन्त च। हंसा हि शरत्समये सागरादागत्य सरसि विचरन्तीति स्वभावः। अत्र लुप्तोपमायुगलसङ्कीर्णोपमालङ्कारः।

মনোহর মৃগশিরা নক্ষত্রও এক প্রান্তে উদয় পাইল। (দ) পূর্ব্বকালে সমুদ্রপূরণকারিণী এবং হংসগণের বিচরণে ধবলবর্ণা গঙ্গা যেমন চন্দ্রকলালঙ্কৃত ও নরকোপালশোভিত মহাদেবের মস্তক হইতে ভূতলে পতিত হইয়াছিলেন; তেমন সমুদ্রের পূর্ণতাকারিণী ও হংসের ন্যায় ধবলবর্ণা জ্যোৎস্না, চন্দ্র ও নক্ষত্রগণে পরিশোভিত আকাশ হইতে ভূতলে পতিত হইতে লাগিল। (ধ) প্রস্ফুটিত শ্বেতপদ্মের ন্যায় শ্বেতবর্ণ চন্দ্ররূপ সরোবরে জ্যোৎস্নারূপ জলপান করিবার লোভে অবতীর্ণ হইয়া একটি হরিণ, তাহার অমৃতরূপ কর্দ্দমে মগ্ন হইয়াই যেন নিশ্চলদেহ হইয়া রহিয়াছে বলিয়া দেখা যাইতে লাগিল। (ন) নূতন নিসিন্দাফুলের মত শ্বেতবর্ণ এবং সমুদ্র হইতে আগত হংসগণের ন্যায় চন্দ্রের কিরণসমূহ, বর্ষাকালের ন্যায় অন্ধকাররাশি দূরীভূত হইলে কুমুদ-(সাপলা) পরিপূর্ণ সরোবরসমূহে পতিত হইতে লাগিল।

(१) सागरान्। (२) आलक्ष्यत। (३) समयानन्तरं। (४)...सिन्दुवार...।
(५) अवागाह्यन्त, अमृश्यन्त।

सकलोदयरागं रजनिकर-बिम्बमम्बरापगावगाह-धौत-सिन्दूरमैरावत-कुम्भस्थल-मिव तत्क्षणमलक्ष्यत। (प)। शनैः शनैश्च दूरोदिते भगवति हिमसृति (१) सुधा-धूलि-पटलेनेव धवलीकृते चन्द्रातपेन (२) जगति, अवश्यायजलबिन्दु-(३) मन्दगतिषु विघटमान-कुमुद-वन-(४) कषाय-परिमलेषु समुपोढ़-निद्रा-भरालस-तारकैरन्योन्य-ग्रथित-पक्ष्मपुटैरारब्ध-रोमन्थ-मन्थर-मुखैः सुखासीनैराश्रममृगैर-भिनन्दितागमनेषु प्रवहत्सु (५) निशामुख-समीरणेषु, (६) अर्द्धयाममात्राव-खण्डितायां विभावर्य्यां, हारीतः कृताहारं मामादाय सर्वैस्तैः सह मुनिभिः (७)

(प) विगलितेति। विगलित क्रमेणोर्द्ध्वगमनादपसृत, उदयराग उदयकालीनो रक्तिमा यस्य तत्, रजनिकरबिम्बं चन्द्रमण्डलं अम्बरापगा आकाशनदी मन्दाकिनी अम्बररूपापगा च तस्या अवगाहेन मज्जनेन धौतं प्रक्षालित सिन्दूरं यस्य तत् तथोक्त, ऐरावतस्य श्वेतवर्णेन्द्रहस्तिन, कुम्भस्थलमिव तत्क्षणं लोकैरलक्ष्यत। अत्रोपमालङ्कार।

(फ) शनैरिति। एवम्भूतसमये हारीतः कृताहारं मामादाय पितुः जावालिमुपाचीति वक्ष्यमाणेनान्वय। कस्मिन्निति चार्थे। हिमसृति तुषारवर्षिणि चन्द्रे दूरोदिते सति। तथा जगति भुवने, सुधाया विलेपनद्रव्यविशेषस्य धूलिपटलेनेव रेणुसमूहेनेव चन्द्रस्य आतपेन आलोकेन धवलीकृते सति। अत्रोपमालङ्कार। अवश्यायजलबिन्दुभिः शिशिरजलबिन्दुवहनैरित्यर्थ मन्दा गतिर्येषां तेषु। इत्यादीनि सप्तम्यन्तपदानि वक्ष्यमाणनिशामुखसमीरणेष्वित्यस्य विशेषणानि। विघटमानस्य प्रस्फुटत, कुमुदवनस्य कषायः सुरभिः परिमलो विमर्द्दगन्धो येषु तादृशेषु। तथा समुपोढ़ेन उपस्थितेन निद्राभरेण निद्रातिशयेन अलसा निस्पन्दा तारकाः कनीनिका येषां तैः, अन्योन्यं परस्परं ग्रथितानि नयनमुद्रणात् दृढ़संलग्नानि पक्ष्मपुटानि नेत्रलोमानि येषां

(প) উদয়কালের সমস্ত রক্তিমা দূরীভূত হইলে চন্দ্রমণ্ডলটি, মন্দাকিনীর জলে অবগাহন করায় মস্তকের সিন্দুর প্রক্ষালিত হইয়া গেলে ঐরাবত হস্তীর কুম্ভস্থলের ন্যায় সেই সময়ে দেখা যাইতে লাগিল। (ফ) ভগবান্ চন্দ্র, ধীরে ধীরে আকাশের অনেক দূরে উঠিলেন; তখন সুধানামক বিলেপনদ্রব্যের চূর্ণসমূহের ন্যায় (সাদা পাউডারের মত) চন্দ্রের আলোক পৃথিবী-মণ্ডলকে ধবলবর্ণ করিল; প্রদোষসময়ের শীতল সমীরণ, শিশিরবিন্দু বহন করিয়া, বিকসিত কুমুদবনের সৌরভ লইয়া, মন্দগতিতে বহিতে লাগিল; তখন তপোবনের হরিণগণ, সুখে উপবিষ্ট হইয়া মনে মনে সেই বায়ুর আগমনের প্রশংসা করিতে লাগিল; কারণ— সেই বায়ুর সংস্পর্শে তাহাদের অত্যন্ত নিদ্রার আবেশ হওয়ায় নয়নের তারা নিস্পন্দ হইয়া আসিতেছিল; নয়ন মুদ্রিত করায় তাহার লোমগুলি পরস্পর সংলগ্ন হইতেছিল; এই অবস্থায়

(१) हिमततिसृति, हिमदीधिती। (२) क्वचित् 'चन्द्रातपेन' इति पाठो नास्ति।
(३)...बिन्दुपतनशीलेषु। (४) ..षण्ड...। (५) प्रवात्सु।
(६) समीरेषु। (७) तैर्महामुनिभिः।

उपसृत्य चन्द्रातपोद्भासिनि तपोवनैकदेशे वेत्रासने सुखोपविष्टं (१) अनतिदूर-वर्त्तिना जालपादनाम्ना शिष्येण दर्भ-पवित्र-धवित्र-पाणिना (२) मन्दमन्दं (३) उपवीज्यमानं पितरमवोचत् (४) (क) "तात ! (५) सकलेयमाश्चर्य-श्रवण-कुतूहलाकलित-हृदया (६) समुपस्थिता तापस-परिषदाबद्ध-मण्डला प्रतीक्षते (७) व्यपनीत-श्रमश्च कृतोऽयं पतत्रि-पोतः, तदावेद्यतां किमनेन कृतमन्यस्मिन् जन्मनि को वायमभूद्भविष्यति वेति" (८)। एवमुक्तस्तु (९) स महामुनिरग्रतः स्थितं

तैः, तथा आरब्धेषु पूर्वमुपक्रान्तेषु रोमन्थेषु उद्गीर्य्य चर्वितचर्वणेषु मन्थराणि निद्राविशवशादलसानि मुखानि येषां तैः स्थित्वा स्थित्वा रोमन्थं कुर्वाणैरित्यर्थः, सुखासीनैः सुखेनोपविष्टैः आश्रममृगैः, अभिनन्दितं स्पर्श-सुखोपलम्भात् प्रशंसितं आगमनं येषां तेषु, निशामुखसमीरणेषु प्रदोषवायुषु, प्रवहत्सु सञ्चलत्सु सत्सु। तथा विभावर्य्यां रात्रौ, अर्द्धयाममात्रेण अवच्छिन्नतायां न्यूनतां गतायां सत्यां दण्डचतुष्टये अतीत इत्यर्थः। चन्द्रस्य आतपेन आलोकेन ज्योत्स्नया उद्भासते विशेषेण दीप्यत इति तस्मिन्। वेत्रासने वेतसनिर्म्मितासने। दर्भवत् कुशवत् पवित्रं, धवित्रं मृगचर्म्मनिर्म्मितं व्यजनं पाणौ यस्य तेन।

(क) तातेति। आश्चर्य्यस्य वृत्तान्तस्य यत् श्रवणकुतूहलं तेन आकलितं व्याप्तं हृदयं यस्याः सा। आबद्धं विहितं मण्डलं वर्त्तुलाकारश्रेणीभावेनावस्थानं यया सा तादृशी सती प्रतीक्षते भवद्वाक्यारम्भमपेक्षते।

চর্ব্বিত চর্ব্বণ করিতে সেই হরিণগণের মুখ ক্রমে নিশ্চল হইয়া আসিল; এ দিকে হারীত আমাকে আহার করাইলেন, রাত্রির প্রথম যামার্দ্ধও (চারি দণ্ড) অতীত হইল; তখন হারীত আমাকে লইয়া সেই সকল মুনিগণের সহিত, পিতা জাবালির নিকট উপস্থিত হইলেন, তখন মহর্ষি জাবালি, চন্দ্রের আলোকে দীপ্যমান তপোবনের এক দিকে বেত্রাসনে সুখে উপবেশন করিয়াছিলেন, অনতিদূরবর্ত্তী জালপাদনামে একজন শিষ্য কুশের ন্যায় পবিত্র মৃগচর্ম্ম-নির্ম্মিত ব্যজন হস্তে করিয়া গুরুর প্রতি মন্দ মন্দ বায়ুসঞ্চালন করিতেছিলেন; এই অবস্থায় কুমার হারীত পিতাকে বলিলেন—(ক) "পিতঃ! এই সকল তপস্বিগণ আশ্চর্য্য বৃত্তান্ত শ্রবণ করিবার নিমিত্ত কৌতুকপূর্ণচিত্ত হইয়া উপস্থিত হইয়াছেন এবং মণ্ডলাকারে অবস্থানপূর্ব্বক আপনার কথারম্ভের প্রতীক্ষা করিতেছেন; এ দিকে এই পক্ষিশাবকটিকেও আহারাদি করাইয়া শ্রান্তিহীন করা হইয়াছে; অতএব অনুগ্রহপূর্ব্বক বলুন—এ, পূর্ব্বজন্মে কি করিয়াছিল এবং কি ছিল, পরেই বা কি হইবে?" হারীত এইরূপ বলিলে সেই মহর্ষি জাবালি, সম্মুখস্থিত আমার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া এবং মুনিগণ যে শ্রবণ করিবার নিমিত্ত

---

(१) वेत्रासनोपविष्टं। (२) नातिदूरवर्त्तिना ..पवित्रपाणिना। (३) मन्दं। (४) उवाच।
(५) हे तात ! । (६)...आकुलितहृदया। (७) प्रतीक्षते। (८) यदनेन कृतमपरस्मिन् जन्मनि कोऽयमभूद्भविष्यति वेति। (९) इत्येवमुक्तस्तु।

मामवलोक्य तांश्च सर्वानेकाग्रान् श्रवण-तत्परान् (१) मुनीन् बुद्ध्वा शनैः शनैरब्रवीत् (२)—"श्रूयतां यदि कुतूहलम् (३)।" (ब)

अयञ्च पतत्त्रिपोतः पक्षिशावकः, व्यपनीत आहारानुष्ठापनादिना दूरीकृतः श्रमः क्लान्तिर्यस्य सः। स महामुनिर्जावालिः।

भूयसीं दधदलङ्कृतिश्रियं कोमलध्वनिमनोहरं परम्।
भावभङ्गिमधुरं सुधाधरं पीयतां रसविदा कथामुखम्॥

इति श्रीहरिदासप्तिद्धान्तवागीशविरचितायां कादम्बरीटीकायां कल्पलतासमाख्यायां
पूर्वभागे कथामुखविवरणम्॥ ०॥

একাগ্রচিত্ত ও উৎসুক হইয়াছেন, তাহা বুঝিতে পারিয়া ধীরে ধীরে বলিলেন,—"শোন যদি তোমাদের কৌতূহল জন্মিয়া থাকে।"

---

(१) श्रवणपरान्। (२) शनैरब्रवीत्। (३) कौतूहलम्।

कादम्बरी।

अथ कथारम्भः।

उज्जयिनीवर्णना।

अस्ति सकल-त्रिभुवन-ललामभूता, प्रसव-भूमिरिव कृतयुगस्य, आत्मनिवासोचिता भगवता (१) महाकालाभिधानेन भुवनत्रय-सर्ग-स्थिति-संहार-कारिणा(२) प्रमथ-नाथेनापरेव (३) पृथिवी समुत्पादिता, (क) द्वितीय-पृथिवी-शङ्कया च जलनिधिनेव रसातल-गभीरेण (४) परिखा-(५) वलयेन परिवृता, (ख) पशु-

(क) अस्तीति। अवन्तीषु उज्जयिनी नाम नगरी अस्तीति बहुदूरवर्त्तिना कर्तृपदेनान्वयः। अत्र स्त्रियां प्रथमान्तपदानि उज्जयिनीत्यस्य विशेषणानि। सकले त्रिभुवने ललामभूता प्रधानस्वरूपा। "ललामवत् ललामाश्वे चिह्ने ध्वजपताकयोः। रम्ये प्रधाने भूषायां पुण्ड्रे पुच्छप्रभावयोः।" इति हैमः। कृतयुगस्य सत्ययुगस्य प्रसवभूमिरिव उत्पत्तिस्थानमिव पुण्यवद्धर्मवत्त्वादिति भावः। अत्र आत्युत्प्रेक्षालङ्कारः। महाकालाभिधानेन महाकालनाम्ना। तस्य च कालप्रियनाथ इति सुवर्णबिन्दुरिति च नामान्तरद्वयं उत्तररामचरितान्मालतीमाधवाच्च विज्ञायते। सर्गः सृष्टिः। प्रमथनाथेन गणाधीश्वरेण शिवेन, आत्मनिवासोचिता आयतत्वात् पूतत्वाच्च स्वावस्थानयोग्या इति कृत्वा उत्पादिता अपरा पृथिवीव। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) द्वितीयेति। द्वितीयायाः पृथिव्याः शङ्कया भ्रमेण च जलनिधिनेव समुद्रेणेव, रसातलं यावद्गभीरेण निम्नेन परिखावलयेन परिवृता परिवेष्टिता। अत्र आत्युत्प्रेक्षा, तथा रसातलं यावद्गभीरत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः तयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ক) অবন্তীদেশে, সমস্ত জগতের মধ্যে উৎকৃষ্ট এবং সত্যযুগের উৎপত্তিস্থানের ন্যায় উজ্জয়িনী নামে একটি নগরী আছে। সমগ্র জগতের সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ মহাকাল-নামধারী প্রমথাধিপতি ভগবান্ মহাদেব, আপনার বাসের উপযোগী করিয়া, দ্বিতীয় পৃথিবীর ন্যায় যেন সেই নগরটি সৃষ্টি করিয়াছিলেন। (খ) অত্যন্ত গভীর পরিখামণ্ডলে সেই নগরী পরিবেষ্টিত রহিয়াছে; তাহাতে বোধ হয় যেন, সেই নগরীকে দ্বিতীয় পৃথিবী মনে করিয়া

(१) क्वचित् 'भगवता' इति पदं नास्ति। (२)...कारिणा। (३)...नाथेनैवापरेव।
(४)...गम्भीरेण। (५) जलपरिखा...।

पति-निवास-प्रीत्या च गगन-परिसरोल्लेखि-(१) शिखरमालेन कैलास-गिरिणेव सुधासितेन प्राकार-मण्डलेन परिगता, (ग) प्रकट-शङ्ख-शुक्ति-मुक्ता-प्रवाल-मरकत-मणिराशिभिश्चामीकर-चूर्ण-सिकता-(२) निकर-निचितै-(३) रायामिभिरगस्त्य-परिपीत-सलिलैः सागरैरिव महाविपणिपथैरुपशोभिता, (घ) सुरासुर-सिद्ध-गन्धर्व-विद्याधरोरगाध्यासिताभिश्चित्रशालाभिरनवरतोत्सवावलोकन-(४) कुतूहलादम्बरतलादवतीर्णाभिर्दिव्यविमानपङ्क्तिभिरिवालङ्कृता, (ङ) मथनोद्धत-

(ग) पशुपतीति। पशुपतेर्महाकालाभिधानस्य शिवस्य निवासेनावस्थानेन या प्रीतिस्तयैवावस्थानविषये आमोदस्तेन, गगनपरिसरस्य आकाशपर्य्यन्तभुवः उल्लेखिनी घर्षणेनावदारिणी संस्पर्शिनीत्यर्थः शिखरमाला शृङ्गश्रेणिः उपरिभागश्रेणिश्च यस्य तेन, तथा सुधावत् सितेन सुधाभिश्चूर्णविलेपनैः सितेन शुभ्रेण च, कैलासगिरिणेव प्राकारमण्डलेन वप्रोपरि प्राचीरवलयेन, परिगता परिवेष्टिता। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) प्रकटेति। प्रकटाः प्रकाशिताः, शङ्खानां शुक्तीनां मुक्तानां प्रवालानां मरकतमणीनाञ्च राशयः पुञ्जा येषु तैः, चामीकरचूर्णान्येव चूर्णितसुवर्णरेणव एव सिकता वालुकाः तासां निकरेण समूहेन निचिताः शोभाविशेषसम्पादनाय समर्पणात् व्याप्तास्तैः, आयामिभिर्दीर्घैः, अतएव अगस्त्येन मुनिना परिपीतानि सलिलानि जलानि येषां तैः, सलिलशून्यतया प्रकटितनानाविधरत्नैरित्यर्थः सागरैरिव स्थितैः, महान्तो वृहन्तो ये विपणीनामापणश्रेण्याः पन्थानस्तैरुपशोभिता। अत्र लोकातिशयसम्पत्तिवर्णनादुदात्तालङ्कार उपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा तेषु तेष्वापणेषु शङ्खादीनां प्रकटत्वेऽपि तत्सन्निहितपथेषु तत्प्रकटत्वमुपचारात्।

(ङ) सुरेति। सुरैर्देवैः असुरैर्दैत्यदानवैः सिद्धैर्देवयोनिविशेषैः गन्धर्वैर्विद्याधरैः उरगैर्नागैश्च, चित्रशालापक्षे तत्तच्चित्रैः अध्यासिताभिराश्रिताभिः, चित्रशालाभिरालेख्यभवनैः, अनवरत अविश्रान्तो य उत्सवस्तस्यावलोकनकुतूहलाद्धेतोः, अम्बरतलादाकाशात् अवतीर्णाभिर्भूतलमागताभिः दिव्यविमानपङ्क्तिभिरिव स्वर्गीयव्योमयानश्रेणीभिरिव स्थिताभिरलङ्कृता। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

সমুদ্র আসিয়া পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছে। (গ) অত্যন্ত উচ্চ ও চূর্ণবিলেপনে শুভ্রবর্ণ প্রাচীরমণ্ডলেও সেই নগরী পরিবেষ্টিত হইয়াছে; তাহাতেও প্রতীতি হয় যে, 'স্বয়ং পশুপতি মহাকালরূপে এখানে বাস করিতেছেন', এই আমোদেই যেন গগনস্পর্শী শৃঙ্গমালাসমন্বিত কৈলাসপর্ব্বত আসিয়া পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছে; (ঘ) অগস্ত্য সমস্ত জল পান করিয়া ফেলিলে শুষ্ক সাগরসমূহের ন্যায় বহুদূরবিস্তৃত ও প্রকাণ্ড রথ্যাসমূহ সেই রাজধানীর শোভা জন্মাইতেছে, সুবর্ণ চূর্ণ করিয়া সেই বালুকারাশিদ্বারা সেই রথ্যাসমূহ নির্ম্মিত হইয়াছে এবং তাহার দুই দিকে সারি সারি দোকান; তাহাতে শঙ্খ, ঝিনুক, মুক্তা, প্রবাল ও মরকত প্রভৃতি রাশি রাশি মণি সাজান আছে; (ঙ) অবিশ্রান্ত উৎসব দর্শন করিবার নিমিত্ত

(১) গগনতলোল্লেখি…। (২)…বালুকা…। (৩)…রচিতৈঃ। (৪) অবিরতোৎসবপ্রমদাবলোকন…।

दुग्ध-धवलित-(१) मन्दर-द्युतिभिः कनकमयामल-कलश-शिखरैरनिल-दोलायित-सित-ध्वजैरुपरि-पतद्गगनगङ्गैरिव तुषार-गिरि-शिखरैरमरमन्दिरैर्विराजित-शृङ्गाटका, (च) सुधावेदिकोपशोभितोदपानैरनवरत-चलित-जल-घटी-यन्त्र-सिच्यमान-हरितोपवनान्धकारैः केतकी-धूलि-धूसरैरुपशल्यकैरुपशोभिता, (२) (छ) मद-मुखर-मधुकर-पटलान्धकारित-(३) निष्कुटा, (ज) स्फुरदुपवन-लता-

(च) मथनेति। मथने क्षीरोदसमुद्रमन्थनवेलायां उद्धतैर्मन्थनवेगेनोत्थितैः दुग्धैः क्षतसागरक्षीरपयोभिः धवलितः शुक्लीकृतः यो मन्दरः मन्थनदण्डीकृतो मन्दरपर्वतस्तस्य द्युतिरिव द्युतिः कान्तिर्येषां तैः, कनकमयाः सुवर्णनिर्मिताः अमलाः स्वच्छाः कलशाः शिखरेषु उपरिभागेषु येषां तैः, तथा अनिलेन वायुना दोलायिताः सञ्चालिताः सितध्वजाः शुक्लपताका येषु तैः, "चिह्नकेतुपताकासु खट्वाङ्गेऽपि ध्वजोऽस्त्रिया"मिति विश्वकोषः, उपरि पतन्ती गगनगङ्गा आकाशगङ्गा येषु तैः, तुषारगिरिशिखरैः हिमाद्रिशृङ्गैरिव, अमरमन्दिरैः उच्चैर्देवगृहैः, विराजितानि शोभितानि शृङ्गाटकानि चतुष्पथानि यस्यां सा "शृङ्गाटकचतुष्पथे" इत्यमरः। अत्र लुप्तोपमोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(छ) सुधेति। सुधावेदिकाभिः पिपासुजनोपवेशनार्थाभिः चूर्णलिप्तपरिष्कृतभूमिभिः उपशोभितानि उदपानानि कूपा येषु तैः, "पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानन्तु पुंसि वा।" इत्यमरः। अनवरतं चलितैः घूर्णितैः जलघटीयन्त्रैः जलकूपनिर्मितयन्त्रैः सिच्यमानानि यानि हरितानि हरिद्वर्णानि उपवनानि तान्येव निविडश्यामत्वादन्धकाराः येषु तैः, तथा केतकीनां कुसुमानां धूलिभिः परागैः धूसराणि धूम्रवर्णानि तैः, उपशल्यकैः ग्रामान्तैः उपशोभिता। "ग्रामान्त उपशल्यं स्या"दित्यमरः।

(ज) मदेति। मदेन मधुपानजनितमत्ततया मुखरं शब्दायमानं यत् मधुकरपटलं भ्रमरसमूहस्तेन अन्धकारिता अन्धकारविशिष्टीकृताः निष्कुटा भवनसमीपस्थोपवनानि यस्यां सा। एतेन नानाविधकुसुमशोभातिशयः सूचितः। "गृहारामास्तु निष्कुटाः" इत्यमरः।

কৌতুকবশতঃ আকাশ হইতে ভূতলে অবতীর্ণ দেবগণ প্রভৃতির স্বর্গীয় বিমানশ্রেণীর ন্যায় অসংখ্য চিত্রশালাতেও সেই রাজধানী অলঙ্কৃত হইয়াছে, কারণ—সেই চিত্রশালাসমূহের মধ্যে দেব, দানব, সিদ্ধ, গন্ধর্ব্ব, বিদ্যাধর ও নাগগণের নানাবিধ চিত্র রহিয়াছে; (চ) প্রত্যেক চতুষ্পথের (চৌমাথার) নিকটে অত্যন্ত উচ্চদেবতার মন্দির আছে; সেগুলি, ক্ষীরোদসাগর-মন্থনের সময় উদ্বেলিত দুগ্ধে ধবলীকৃত মন্দরপর্ব্বতের ন্যায় শুভ্রকান্তি এবং তাহার উপরে সুবর্ণ-ময় নির্ম্মল কলশ স্থাপিত আছে, বায়ুবেগে তাহার শ্বেতপতাকা সকল আন্দোলিত হইতে থাকে, তাহাতে উপরে আকাশগঙ্গা পতিত হইতে লাগিলে হিমালয়ের শৃঙ্গসকলের ন্যায় সেই দেব-মন্দিরগুলি দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে; (ছ) নগরের প্রান্তভাগ কেতকীকুসুমের রেণুতে ধূসরবর্ণ হইয়া যায় এবং সেই স্থানের উদ্যানসমূহ, অবিশ্রান্ত ঘূর্ণমান জলযন্ত্রের জলে সিক্ত হইতে

---

(१) ...दुग्धसिन्धुधवल...। (२) विभूषिता। (३)...कुलान्धकारित...।

कुसुम-परिमल-सुरभि-समीरणा, (झ) रणित-सौभाग्यघण्टैरालोलित-रक्तांशुकपताकैराबद्ध-रक्तचामरैर्विद्रुममयैः प्रतिभवनं (१) उच्छ्रितैर्मकराङ्कैः (२) मदन-यष्टिकेतुभिः (३) प्रकाशित-मकरध्वज-पूजा, (ञ) सतत-प्रवृत्ताध्ययन-ध्वनि-धौत-कल्मषा, (ट) स्तिमित-मुरज-रव-गम्भीर-गर्जितेषु सलिल-शीकरासार-रचित-(४) दुर्दिनेषु पर्यस्त-रवि-किरण-रचित-(५) सुर-चाप-चारुषु धारा-गृहेषु मत्त-मयूर-मण्डली-(६) मण्डलीकृत-शिखण्डैस्ताण्डवव्यसनिभिरारब्धमान-

(झ) स्फुरदिति। स्फुरन्तीनां वायुभरेण स्पन्दमानानां उपवनलतानां यानि कुसुमानि तेषां परिमलेन विमर्दगन्धेन सुरभिर्घ्राणतर्पणः समीरणो वायुर्यस्यां सा।

(ञ) रणितेति। रणिताः शब्दिताः सौभाग्यघण्टाः सौभाग्यसूचिका घण्टा येषु तैः, आलोलिता चञ्चल् रक्ता अंशुकपताका येषु तैः, आबद्धानि रक्तचामराणि येषु तैः, विद्रुममयैः प्रवालप्रचुरैः, मकराङ्कितैर्मदनस्य मकरध्वजत्वान्मकराकारपुत्तलकचिह्नितैः, प्रतिभवनं प्रत्येकवाटेषु उच्छ्रितैरुत्तोलितैः मदनयष्टिकेतुभिः मदन-दण्डनिर्मितकन्दर्पध्वजैः प्रकाशिता सूचिता मकरध्वजस्य कामस्य पूजा यस्यां सा, तत्पूजायां तादृग्ध्वजो-त्तोलनस्य आवश्यकत्वादिति भावः।

(ट) सततेति। सततप्रवृत्तैर्निरन्तरोत्थितैः अध्ययनध्वनिभिर्वेदपाठशब्दैः धौतमपसारितं कल्मषं पापं यस्याः सा।। एतेन सा नगरी न केवलं भोगविलासाश्रयः, अपि तु वेदादिशास्त्रानुशीलनस्थानमपीति सूचितम्।

(ठ) स्तिमितेति। स्तिमितः समन्ततो भित्तिनिरोधेन निश्चलः मुरजरवो मृदङ्गध्वनिः गम्भीरगर्जितं मन्द्रमेघस्तनितमिव येषु तेषु, सलिलशीकराणां जलयन्त्रनिःसृतजलबिन्दूनां आसारेण धारासम्पातेन रचितं कृतं दुर्दिनं मेघाच्छन्नदिनं येषु तेषु, तथा पर्यस्तैः काचकपाटादिषु निपतितैः रविकिरणैः रचितं कृतं

থাকে এবং সেখানে শুভ্রবর্ণ বেদিতে পরিবেষ্টিত বহুতর কূপ আছে; (জ) বাসভবনের নিকটে বহুতর উদ্যান আছে, ভ্রমরগণ মধুপানে মত্ত হইয়া 'গুন্ গুন্' রব করতঃ সেই উদ্যানসমূহ অন্ধকার করিয়া অবস্থান করে; (ঝ) উপবনের লতাগুলি বায়ুভরে দুলিতে থাকে, তখন কুসুমসৌরভে বায়ু বড়ই তৃপ্তিকর হয়; (ঞ) প্রত্যেক বাটীতে প্রবালমালাবেষ্টিত মকরচিহ্নে চিহ্নিত মদনধ্বজ উত্তোলিত হয়, বায়ুভরে তাহার ঘণ্টাগুলি শব্দ করে, রক্ত পতাকা দুলিতে থাকে এবং রক্ত চামর আন্দোলিত হয়, তাহাতে সেই সকল বাটীতে যে কামদেবের পূজা হইয়া গিয়াছে, তাহা সেই সকল ধ্বজগুলিই প্রকাশ করে; (ট) সর্ব্বদা বেদপাঠের শব্দে পাপ বিনষ্ট হইতেছে; (ঠ) জলযন্ত্রের গৃহমধ্যে মত্ত ময়ূরগণ পুচ্ছদেশ মণ্ডলাকার করিয়া, নৃত্য করিতে প্রবৃত্ত হইয়া কেকারবে (ময়ূরের শব্দের নাম—'কেকা') কোলাহল করিতেছে; কারণ—সেই জলযন্ত্রের গৃহমধ্যে গম্ভীর মেঘগর্জ্জনের ন্যায় মৃদঙ্গের শব্দ, ভিত্তির আবরণে

(१) प्रतिवर्त्म। (२) मकराङ्कैः। (३) सदनयष्टिकेतुभिः।
(४)...सारकरचित ..। (५)...दिवसकरकिरणसारकरचित...। (६) मत्तमयूरैः।

केकारव-कोलाहला, (ठ) विकच-कुवलय-कान्तै रुत्फुल्ल-कुमुद-(१) धवलोदरै-रनिमिष-दर्शन-रमणीयैराखण्डल-लोचनैरिव सहस्र-संख्यै रुद्भासिता सरोभिः, (ड) अविरल-कदली-वन-कलिताभिरमृतफेनपुञ्ज-पाण्डुराभिर्दिग्भि दिग्भि (२) दन्त-वलभिकाभिर्धवलीकृता, (ढ) यौवन-मदमत्त-मालवी-कुच-कलस-क्षुभित-सलिलया भगवतो महाकालस्य शिरसि सुर-सरितमालोक्य समुपजातेर्ष्ययेव

यत् सुरचापमिन्द्रधनुस्तेन चारुषु, धारागृहेषु जलयन्त्रभवनेषु, ताण्डवव्यसनिभिर्नृत्यासक्तैः अतएव मण्डली-कृतशिखण्डैर्मण्डलाकारीकृतपिच्छैः मत्तमयूरमण्डलैः, आवध्यमानः क्रियमाणः केकारवात्मकः कोलाहलो यस्यां सा। "केका वाणी मयूरस्य" इत्यमरः। अत्र स्तिमितेत्यादिविशेषणे लुप्तोपमा, तथा मण्डलैरित्यादौ स्वभावोक्तिः इत्युभयोः संसृष्टिः। तथा मुरजरवादौ मयूराणां मेघगर्जनादिभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(ठ) विकचेति। विकचैः प्रस्फुटैः कुवलयैर्नीलोत्पलैः कान्तानि सुन्दराणि तैः, अन्यत्र तु विकच-कुवलयवत् कान्तैः। उत्फुल्लैः कुमुदैः श्वेतोत्पलैः धवलानि उदराणि मध्यस्थानानि येषां तैः, पक्षे उत्-फुल्लकुमुदवत् धवलोदरैः। तथा अनिमिषाणां नानाविधमत्स्यानां दर्शनेन रमणीयैः, पक्षे अनिमिषं देवत्वा-न्निर्निमेषं यद्दर्शनं दृष्टिपातस्तेन रमणीयैः। आखण्डललोचनैः इन्द्रस्य चक्षुभिरिव सहस्रसंख्यैः सरोभिः सरोवरैः उद्भासिता शोभिता। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ड) अविरलेति। अविरला निविडा याः कदल्यः पताकास्तासां वनेन समूहेन कलिताभिराकीर्णाभिः, "कदली वैजयन्त्याञ्च रम्भायां हरिणान्तरे।" इत्यादि विश्वः। अमृतस्य सुधायाः फेनपुञ्जवत् पाण्डुराभिः शुभ्राभिः, दन्तवलभिकाभिः गजदन्तनिर्म्मितचन्द्रशालाभिः उपरिगतचन्द्रगृहैरित्यर्थः। "शुद्धान्ते वलभी चन्द्रशाली सौधोर्द्ध्ववेश्मनि।" इति रभसः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ढ) यौवनेति। यौवनमदमत्तानां मालवीनां तत्स्थानस्य मालवदेशान्तर्गतत्वात् मालवदेशीय-

---

আবদ্ধ হইয়া রহিয়াছে, জলযন্ত্র হইতে অবিশ্রান্ত জলবিন্দুবর্ষণে দুর্দ্দিন করিয়া তুলিতেছে, আর কাঠের কপাটের উপর সূর্য্যের কিরণ পতিত হইয়া ইন্দ্রধনুর ন্যায় শোভা করিতেছে; (ড) প্রস্ফুটিত নীলোৎপল সমূহের ন্যায় সুন্দর, বিকসিত কুমুদগণের ন্যায় শ্বেতবর্ণমধ্য এবং নির্নিমেষ দর্শনে বিশেষ মনোহর ইন্দ্রের সহস্রসংখ্যক নয়নের ন্যায় বহুতর সরোবর সেই রাজধানীর শোভা জন্মাইতেছে;—কারণ—সেই সরোবরগুলি প্রস্ফুটিত নীলোৎপলে সুন্দর দেখা যাইতেছে, শ্বেতোৎপল বিকসিত হইয়া সরোবরগুলির মধ্যস্থান শ্বেতবর্ণ করিয়াছে এবং নানাবিধ মৎস্য দর্শনে সেগুলিকে বিশেষ সুন্দর দেখা যাইতেছে; (ঢ) ঘন ঘন পতাকা-সংযুক্ত এবং অমৃতফেনপুঞ্জের ন্যায় শুভ্রবর্ণ হস্তিদন্তনির্ম্মিত চন্দ্রশালা (চিলে কোঠা) সেই রাজধানীর সকলদিক্ শুভ্রবর্ণ করিয়াছে; (ণ) উজ্জয়িনীকে পরিবেষ্টন করিয়া শিপ্রানদী প্রবাহিত হইতেছে; যৌবনগর্ব্বিত মালবদেশীয় রমণীগণ, অবগাহনের সময় কুচকলসের

---

(१)...कमल...। (२) दिग्भि।

सततावद्ध-(१) तरङ्गभ्रुकुटीलेखया खमिव क्षालयन्त्या शिप्रया परिक्षिप्ता, (ण) सकल-भुवन-ख्यात-यशसा (२) (त) हरजटा-चन्द्रेणेव कोटिसारेण (थ) मैनाकेनेवाविदित-पक्षपातेन (द) मन्दाकिनी-प्रवाहेणेव प्रकटित-कनक-पद्म-राशिना (ध) स्मृतिशास्त्रेणेव सभावसथ-कूप-प्रपा-राम-सुरसदन-सेतु-यन्त्र-प्रवर्त्तकेन (न)

रमणीनां कुचकलसैः क्षुभितमालोडितं सलिलं जलं यस्यास्तया, महाकालस्य तदाख्यस्य तत्रत्यशिवस्य। सुरसरितं गङ्गां। सततं आवद्धा कृता तरङ्गा एव भ्रुकुटीलेखा भ्रूभङ्गश्रेणिर्यया तया, खं आकाशं क्षालयन्त्येव स्थितया शिप्रया शिप्रानामिकया नद्या परिक्षिप्ता परिवेष्टिता। अत्र कार्य्येण शिप्रायां सपत्नीव्यवहारसमारोपात् रूपकगर्भा समासोक्तिरलङ्कारः क्रियोत्प्रेक्षा चाद्वयञ्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) सकलेति। सकलेषु भुवनेषु ख्यातं प्रथितं यशो यस्य तेन। इत्यतस्तृतीयान्तविशेषणानि वक्ष्यमाणस्य अधिष्ठितेतिक्रियाकर्तृभूतस्य विलासिजनेनेत्यस्य विशेषणानि।

(थ) हरेति। हरस्य शिवस्य जटायां यश्चन्द्रस्तेनेव, कोटिः कोटिसंख्यकं सारं धनं यस्य तेन, अन्यत्र तु कोटिरग्रभाग एव सारः स्थिरांशः अवशिष्टांशो वा यस्य तेन। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(द) मैनेति। मैनाकेन तदाख्येन हिमाचलपुत्रेण पर्वतविशेषेणेव, अविदितः अज्ञातः पक्षपातः वादिप्रतिवादिनोरेकतरपक्षग्रहणं येन तेन, अन्यत्र तु अविदितः अननुभूतः पक्षयोः पतत्रयोः पात इन्द्रकर्त्तृकच्छेदात् पतनं येन तेन। पूर्णोपमा। पुरा किल इन्द्रकर्त्तृकसकलाचलपक्षच्छेदकाले हिमाचलात्मजो मैनाकः पलायमानो जलनिधावमज्जदिति शिवपुराणवार्त्ता।

(ध) मन्देति। मन्दाकिन्याः स्वर्गगङ्गायाः प्रवाहेणेव, प्रकटितः प्रकाशितः कनकानां सुवर्णानां पद्मराशिः पद्मसंख्यकपुञ्जो येन तेन, एतेन तेषां गुप्तधनसंख्या इतोऽप्यधिकेति सूचितं। अन्यत्र तु प्रकटितः प्रस्फुटितः कनकपद्मराशिः स्वर्णमयकमलसमूहो यस्मिन् तेन। पूर्णोपमा।

(न) स्मृतीति। स्मृतिशास्त्रेणेव धर्म्मप्रतिपादकशास्त्रेणेव, सभा धर्म्मदेश्यायुन्नतिविधायिनी परिषत्,

আস্ফালনে সেই শিপ্রার জল আলোড়িত করিয়া থাকে; আর মাহাত্ম্যশালী তত্রত্য মহাকালরূপী মহাদেবের মস্তকে গঙ্গাকে দর্শন করিয়া ঈর্ষান্বিত হইয়াই যেন সেই শিপ্রানদী সর্ব্বদা তরঙ্গরূপ ভ্রূকুটি করিতেছে এবং উত্তালতরঙ্গমালায় আকাশ যেন প্রক্ষালন করিতেছে; (ত) উজ্জয়িনীতে বহুতর বিলাসী লোক বাস করে, তাহাদের যশ জগতের সর্ব্বত্র বিখ্যাত আছে; (থ) মহাদেবের জটাতে যেমন চন্দ্রের একটি কলা আছে, তাহাতেও তেমন কোটিসংখ্যক ধনসম্পত্তি আছে; (দ) মৈনাকপর্ব্বত যেমন ইন্দ্রকর্ত্তৃক পক্ষচ্ছেদন কাহাকে বলে তাহা জানে নাই, উজ্জয়িনীর অধিবাসিগণও তেমন বাদী বা প্রতিবাদীর পক্ষপাত কাহাকে বলে, তাহা জানে না; (ধ) মন্দাকিনীর প্রবাহে যেমন অসংখ্য স্বর্ণ-পদ্ম প্রকাশিত থাকে, তাহাদেরও তেমন পদ্মসংখ্যক (বহুকোটি) স্বর্ণ প্রকাশ্যভাবেই আছে; (ন) স্মৃতিশাস্ত্র, সভা, অনাথাশ্রম, কূপ, পানীয়শালা, উপবন, দেবালয়, সেতু ও

(१) सततं समावद्ध… (२) निखिलभुवनतलख्यातयशसा।

मन्दरेणेवोद्धृत-(१) समस्त-(२) सागर-रत्नसारेण (प) संगृहीत-गारुडेनापि भुजङ्ग-भीरुणा (३) (फ) खलोपजीविनाऽपि (४) प्रणयिजनोपजीव्यमानविभवेन (ब) वीरेणापि विनयवता (भ) प्रियंवदेनापि सत्यवादिना (म) अभिरूपेणापि

आवसथ: अनाथावास:, कूप: चुद्रजलाशय:, प्रपा पानीयशाला, आराम उपवनं, सुरसदनं देवगृहं, सेतु: कुल्यादिसन्तरणपथ:, यन्त्रं पथिकार्थं जलयन्त्रादि:, एतेषां प्रवर्त्तक: साधारणोपकारार्थं निर्माता, श्रुति-शास्त्रपक्षे विधायकं तेन। पूर्णोपमा।

(प) मन्दरेणेति। मन्दरेणेव तदाख्यपर्व्वतेनेव, उद्धृतं क्रयादिना संगृहीतं समस्तसागररत्नानां सारमुत्कृष्टांशो येन तेन, मन्दरपक्षे तु उद्धृतं मन्थनेनोत्तोलितं समस्तं सागररत्नानां चीरोदसमुद्रगतरत्नानां सारं अमृतं ऐरावताद्युत्कृष्टभागो येन तेन। पूर्णोपममा।

(फ) संगृहीतेति। संगृहीतं शिचितं गारुडं विषचिकित्साशास्त्रं येन तथाभूतेनापि भुजङ्गभीरुणा सर्पाद्भयशीलेनेति विरोध:, संगृहीतं क्रयादिना आनीतं गारुडं मरकतमणिर्येन तेन, भुजङ्ग-भीरुणा वेश्यासक्तजनसंसर्गाद्भयशीलेनेति तत्परिहार:। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कार:। "गारुडं स्वात्मरकते विषशास्त्रेऽपि गारुडम्।" "भुजङ्ग: षिङ्गसर्पयो:।" इति च विश्व:।

(ब) खलोपेति। खला दुर्जना उपजीविन आश्रयिणो यस्य तथाभूतेनापि, प्रणयिजनैर्विश्वस्तलोकै: सज्जनैरित्यर्थ: उपजीव्यमान आश्रीयमाणो विभवो धनसम्पत्तिर्यस्य तेनेति सज्जनदुर्जनयोरैकाश्रयासम्भवा-द्विरोध:, खलोपजीविना भूमिसम्पत्त्युपजीविनेति तत्समाधानं। विरोधाभास:। "खलं भूस्थानकल्कोषु नीच-क्रूराधमे त्रिषु।" इति मेदिनी।

(भ) वीरेणेति। वीरेणापि विनयवता नमनशीलेनेति विरोध:, शिक्षावतेति तत्समाधानं। विरोधाभास:। "विनय: शिक्षाप्रणत्यो"रिति हेम:।

(म) प्रियमिति। प्रियंवदेनापि सत्यवादिनेति सर्व्वत्र प्रियंवदत्वे मिथ्यावादस्यावश्यकत्वाद्विरोध:, मितभाषित्वात्तु तत्समाधानं। विरोधाभास:।

জলযন্ত্রাদির যেমন বিধি দিয়া থাকে, তাহারাও তেমন পরের উপকারের জন্য সেই সত্রাপ্রভৃতি করিয়া থাকে; (প) মন্দরপর্ব্বত যেমন সমুদ্রমন্থনের সময় সমুদ্রের সকল রত্নের সার অমৃত ও ঐরাবতহস্তিপ্রভৃতি উদ্ধৃত করিয়াছিল, তাহারাও তেমন সমস্ত সাগরের রত্ন-সমূহের সারভাগ ক্রয়াদিদ্বারা সংগ্রহ করিয়াছে; (ফ) তাহারা বিষচিকিৎসা জানিয়াও সর্পভীরু; (সমাধান—মরকতমণি সংগ্রহ করিয়াছে এবং বদমাইসকে ভয় করে;) (ব) দুর্জনদিগের আশ্রয়দাতা হইলেও, সজ্জনগণ তাহাদের সম্পত্তি ভোগ করে; (ভূমিসম্পত্তি তাহাদের জীবিকা, প্রণয়িজন তাহাদের সম্পত্তি ভোগ করে;) (ভ) তাহারা বীর হইয়াও অবনত; (বীর এবং শিক্ষিত;) (ম) প্রিয়ভাষী হইয়াও সত্যবাদী; (টীকা দ্রষ্টব্য) (য) রূপের

---

(১) উদ্ধৃত...। (২)...সমস্ত...। (৩) ভুজঙ্গভয়শীলেনাপি। (৪) খলোপজীবিনাপি।

स्वदारसन्तुष्टेन (य) अतिथिजनाभ्यागमार्थिनापि परप्रार्थनानभिज्ञेन, (र) कामार्थपरेणापि धर्म्मप्रधानेन, (ल) महासत्त्वेनापि परलोक-भीरुणा, (व) सकल-विज्ञान-विशेषविदा (१) वदान्येन (२) दक्षेण स्मितपूर्वाभिभाषिणा परि-हास-पेशलेन उज्ज्वल-वेशेन शिक्षिताशेषदेशभाषेण वक्रोक्ति-निपुणेन आख्या-यिकाख्यान-परिचय-चतुरेण सर्वलिपिज्ञेन महाभारत-पुराण-रामायणानुरागिणा बृहत्कथा-कुशलेन द्यूतादि-कला-कलाप-पारगेण श्रुतरागिणा सुभाषित-

(य) अभीति। अभि अभिमतं रूपं यस्य तेन रूपपक्षपातिनेत्यर्थः, तथापि स्वदारसन्तुष्टेनेति रूपपक्षपातित्वे स्वभार्य्यायां कुरूपायां परभार्य्यायान्तु सुरूपायां तत्प्रीतेरवश्यम्भावाद्विरोधः, अभिरूपेण पण्डितेनेति तत्परिहारः। विरोधाभासः। अभिरूपो बुधे रम्ये" इति मेदिनी।

(र) अतिथीति। अतिथिजनानां अभ्यागमार्थिनापि परप्रार्थनानभिज्ञेनेत्यतिथीनामपि परत्वाद्विरोधः, परेष्वर्थप्रार्थनानभिज्ञेनेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(ल) कामेति। कामो रतिः, अर्थो धनं तौ परावुत्तमौ प्रधानौ यस्य तथाभूतेनापि सता, धर्म्म एव प्रधानं यस्य तेनेति विरोधः, कामार्थव्यापृतेनापि धर्म्मः प्रधानं प्रधानभावेन सेवनीयो यस्य तेनेति तत्समाधानम्। विरोधाभासः। "दूरानात्मोत्तमा परा" इत्यमरः।

(व) महेति। महासत्त्वेनापि महाबलेनापि परलोकात् शत्रुजनात् भीरुणेति विरोधः, जन्मान्तर-भीरुणा जन्मान्तरेऽनिष्टजनकैहिकपापाचरणाद्भयशीलेनेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(श) सकलेति। सकलानां विज्ञानानां शिल्पशास्त्रादिज्ञानानां विशेषं तारतम्यं वेत्तीति तेन नाना-विधशिल्पशास्त्रगतोत्कर्षापकर्षविवेचनसमर्थेनेत्यर्थः, एतेन तस्यापि तदभिज्ञत्वं सूचितं। अथवा सकल-विज्ञानानि सकलविज्ञानविषयीभूतानि शिल्पानि शास्त्राणि च विशेषेण वेत्तीति तेन। "मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयो"रित्यमरः। वदान्येन दानशीलेन। दक्षेण सर्वकार्य्यनिपुणेन। परिहासपेशलेन नर्म्म-वचननिपुणेन। शिक्षिता अभ्यस्ताः अशेषाणां सर्वेषां देशानां भाषाः शौरसेन्यादयो येन तेन। वक्रोक्तौ "अन्यस्यान्यार्थकं वाक्य"मित्यादिदर्पणोक्तलक्षणायां कुटिलवाचि निपुणेन। आख्यायिकाख्यानयोर्गद्यकाव्य-विशेषचूर्णकयोः परिचये विशेषज्ञाने निपुणतरेण। सर्वलिपिज्ञेन सर्वप्रकाराक्षरपरिचयशालिना। रामायण-

পক্ষপাতী হইয়াও নিজভার্য্যাতেই সন্তুষ্ট (পণ্ডিত ও নিজভার্য্যাতেই সন্তুষ্ট); (র) অতিথির আগমন প্রার্থনা করিলেও পরের প্রার্থনা জানে না (অতিথির আগমন প্রার্থনা করে, কিন্তু পরের নিকট অর্থের প্রার্থনা জানে না); (ল) কাম ও অর্থকে প্রধান বলিয়া মনে করিলেও ধর্ম্মকে প্রধান বলিয়া মনে করে (কাম ও অর্থ সেবায় ব্যাপৃত থাকিয়াও প্রধানভাবে ধর্ম্মসেবাই করে); (ব) মহাবলবান্ হইয়াও শত্রুভীরু (মহাবলবান্ এবং পরজন্মে অনিষ্টের জনক পাপ হইতে ভয় করে); (শ) এবং তাহারা সকলপ্রকার শিল্প ও শাস্ত্র জানে, দানশীল, সকল কার্য্যে চতুর, ঈষৎ হাস্য করিয়া কথা বলে, পরিহাস করিতে নিপুণ, উজ্জ্বল বেশধারী,

(१)...विदा विद्यावदातेन दानशीलादीनेन। (२) वदान्येन इति क्वचिन्नास्ति।

व्यसनिना प्रशान्तेन (ग) सुरभिमास-मारुतेनेव सतत-दक्षिणेन (घ) हिम-गिरि-काननेनेवान्तःसरलेन (ङ) लक्ष्मणेनेव रामाराधन-निपुणेन (च) शत्रुघ्नेनेवाविष्कृत-भरत-परिचयेन (छ) दिवसेनेव मित्रानुवर्त्तिना (ज) बौद्धेनेव

महाभारतयोरितिहासत्वात् पृथगुक्तिः। बृहत्कथायां "भूतभाषामयीं प्राहुरद्भुतार्थां बृहत्कथा"मिति दण्ड्युक्तलक्षणायां कुशली निपुणस्तेन। द्यूतादिकलाकलापस्य द्यूतादिकलाविद्यासमूहस्य पारेण पारदर्शिना। श्रुतरागिणा शास्त्रज्ञानानुरागिणा। सुभाषितव्यसनिना मधुरवचनासक्तेन। प्रशान्तेन क्रोधरहितेन।

(ग) सुरभीति। सुरभिमासयोर्वसन्तमासयोश्चैत्रवैशाखयोः मारुतेन वायुनेव, सततदक्षिणेन निरन्तरोदारचरितेन वायुपक्षे सर्वदा दक्षिणदिश आगतेन। पूर्णोपमा।

(घ) हिमेति। हिमगिरेः काननेनेव, अन्तर्मध्ये सरलेन अवक्रेण कुटिलतारहितचित्तेन, तत्काननपक्षे तु अन्तर्मध्ये सरलाः सरलाख्यतरवो यस्य तेन। पूर्णोपमा।

(ङ) लक्ष्मणेनेति। लक्ष्मणेन सौमित्रिणेव, रामाया रमण्याः रामस्य च आराधने मनोऽनुवृत्त्या सन्तोषणे निपुणस्तेन। पूर्णोपमा।

(च) शत्रुघ्नेनेति। शत्रुघ्नेन द्वितीयेन सुमित्रापुत्रेणेव, आविष्कृतः अभिनयादिना प्रकटितः भरते भरतमुनिप्रणीते नाट्यशास्त्रे परिचयो विशेषज्ञानं येन तेन, अन्यत्र तु आविष्कृतः परिचर्य्यादिना प्रकटितः भरते कैकयीपुत्रे परिचय आत्मभक्तिपरिचयो येन तेन। पूर्णोपमा।

(छ) दिवसेनेति। दिवसेन दिनेनेव, मित्राणां सुहृदां अनुवर्त्तिना अनुकूलेन, दिवसपक्षे तु मित्रस्य सूर्य्यस्य अनुवर्त्तिना अनुगामिना सूर्य्यस्थितिपर्य्यन्तस्थायिनेत्यर्थः। पूर्णोपमा।

(ज) बौद्धेनेवेति। बौद्धेनेव बौद्धमतावलम्बिना सम्प्रदायविशेषेणेव, सर्वेषां विक्रेयवस्तूनां अस्तिवादे क्रेतुः प्रत्यानन्तरं अस्तित्वभाषणे शूरेण समर्थेन, सर्वप्रकारपण्यपूर्णापणत्वादिति भावः। पक्षान्तरे तु सर्वेषां भूतभौतिकानां वाह्यानां चित्तचैत्तानाञ्चाभ्यन्तराणां पदार्थानां अस्तिवादे अस्तित्वभाषणे शूरेण तदस्तित्वस्य युक्त्यादिना समर्थनात्प्रितान्तदक्षेण। तथा च शारीरकभाष्ये शङ्कराचार्य्याः—"बौद्धसिद्धान्ते एते

সকল দেশের ভাষা শিক্ষা করিয়াছে, বক্র কথা বলিতে নিপুণ, আখ্যায়িকা ও আখ্যান বেশ জানে, সকলপ্রকার লেখা চেনে, রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণ শাস্ত্রের অনুরাগী, বৃহৎ উপাখ্যান বলিতে নিপুণ, দ্যূতপ্রভৃতি সমস্ত কলাবিদ্যায় পারদর্শী, শাস্ত্রজ্ঞানের অনুরাগী, সর্ব্বদাই মধুর বাক্য বলিয়া থাকে; এবং শান্তচিত্ত; (গ) বসন্তকালের বায়ু যেমন সর্ব্বদা দক্ষিণদিক্ হইতে চলিতে থাকে, তাহারাও তেমন সর্ব্বদা উদারতা অবলম্বন করিয়া চলে; (ঘ) হিমালয় পর্ব্বতের বনে যেমন সরলনামে বৃক্ষ আছে, তাহাদের চিত্তেও তেমন সরলতা আছে; (ঙ) লক্ষ্মণ যেমন রামের সন্তোষবিধানে নিপুণ ছিলেন, তাহারাও তেমন রমণীর সন্তোষবিধানে নিপুণ; (চ) শত্রুঘ্ন যেমন ভরতের প্রতি ভক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন, তাহারাও তেমন ভরত-প্রণীত নাট্যশাস্ত্রে দক্ষতার পরিচয় দিয়া থাকে; (ছ) দিন যেমন সূর্য্যের অনুবর্ত্তী, তাহারাও তেমন সুহৃদের অনুবর্ত্তী; (জ) বৌদ্ধদিগের মধ্যে সর্ব্বাস্তিত্ববাদীরা যেমন সকল পদার্থেরই অস্তিত্ব স্বীকার করে; তাহাদের মধ্যে বাণিজ্যব্যবসায়ীরাও তেমন

सर्वास्तिवाद-(१) शूरेण (ख) सांख्यागमेनेव प्रधान-पुरुषोपेतेन (२) (ग) जिन-धर्म्मेणेव जीवानुकम्पिना (३) (घ) विलासिजनेनाधिष्ठिता, (ङ) सशैलेव प्रासादैः, सशाखानगरेव (४) महाभवनैः, सकल्पवृक्षेव सत्पुरुषैः, दर्शित-

त्रयो वादिनो भवन्ति। केचित् सर्वास्तित्ववादिनः, केचिद्विज्ञानास्तित्वमात्रवादिनः, अन्ये पुनः सर्वशून्यत्ववादिनः। तत्र ये सर्वास्तित्ववादिनो बाह्यमाभ्यन्तरञ्च वस्त्वभ्युपगच्छन्ति भूतं भौतिकं चित्तं चैत्तञ्चेति तांस्तावत् प्रति ब्रूमः।" पूर्णोपमालङ्कारः। अस्तीत्यव्ययं विद्यमानार्थे।

(ग) सांख्येति। सांख्यागमेन कापिलसांख्यशास्त्रेणेव, प्रधानपुरुषैः धनगुणादिसम्पन्नतया श्रेष्ठमानवैः उपेतेन युक्तेन, पक्षान्तरे तु प्रधानं सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्थारूपा प्रकृतिः, पुरुषो नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः प्रकृतिविकृतिविलक्षणश्चित्स्वरूपः ताभ्यामुपेतेन युक्तेन। तथा च सांख्यसूत्रं—"सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृति"रित्यादि। "न नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावस्य तद्योगस्तद्योगादृते।" सांख्यकारिका च—"न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।" पूर्णोपमा।

(घ) जिनेति। जिनधर्म्मेण आर्हतन्यायेनेव, जीवान् सर्वविधान् प्राणिनः अनुकम्पते दयत इति तेन। इदमुभयत्रापि समानं आर्हतानामहिंसावादित्वात्। सर्वदर्शनसंग्रहादावेतन्मतमनुसन्धेयम्। पूर्णोपमा। अहो! महत् प्रकटितमत्र दर्शनशास्त्रनैपुण्यं कविना।

(ङ) विलासीति। विलासिजनेन विलासवता लोकेन, अधिष्ठिता आश्रिता। विलासमाहोज्ज्वलनीलमणिः—"गतिस्थानासनादीनां मुखनेत्रादिकर्म्मणाम्। तात्कालिकन्तु वैशिष्ट्यं विलासः प्रियसङ्गजम्।"

(च) सशैलेति। प्रासादैर्देवभूभुजां वेश्मभिः सशैलेव सपर्वतेव, तेषामत्युच्चत्वादिति भावः। अत्र शैलसंयोगस्योत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च प्रासादा एव शैला इति रूपकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः। एवञ्च प्रासादैरिति प्रकृत्यादित्वात् करणे तृतीया। एवमन्यत्रापि। महाभवनैरतिबृहन्मन्दिरैः, शाखानगरमासन्नवर्त्ति क्षुद्रनगरं तत्सहितेव तेषां शाखानगरवदायतत्वादित्याशयः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च। सत्पुरुषैर्महापुरुषैः सकल्पवृक्षेव तद्वत्तेषामर्थिप्रार्थनापूरणादित्यभिप्रायः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च। चित्रभित्तिभिरालेख्यसमन्वितभित्तिभिः, दर्शितानि विश्वेषां जगतां सर्ववस्तूनां रूपाण्याकृतयो यया सेव, जगतां सर्वपदार्थानामिव तत्र चित्रितत्वादिति भावः। अत्र विश्वरूपप्रदर्शनक्रियोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा।

কেহ আসিয়া কোন বস্তু আছে কি না জিজ্ঞাসা করিলে, সকল বস্তুরই অস্তিত্ব স্বীকার করে; (গ) সাংখ্যশাস্ত্রে যেমন প্রকৃতি ও পুরুষ আছে, তাহাদের মধ্যেও তেমন প্রধান প্রধান মনুষ্য আছে; (ঘ) আর জৈনগণের ন্যায় তাহারা সকল প্রাণীর প্রতিই দয়ালু; (ঙ) তথায় বিলাসী জনগণ অধিষ্ঠান করে; (চ) সেই উজ্জয়িনী উচ্চ উচ্চ দেবমন্দিরে ও রাজভবনে যেন পর্ব্বতসমন্বিত, বৃহৎ বৃহৎ অট্টালিকা থাকায় যেন বহুতর উপনগরসংযুক্ত আর মহাপুরুষগণ অবস্থান করায় যেন কল্পবৃক্ষসম্পন্ন বলিয়া

---

(१) सर्वदा नास्तिवाद...। (२)...पुरुषगुणोपेतेन। (३) क्वचिदयं पाठो नास्ति। सर्वभूतानुकम्पिना।
(४) सशाखेव।

বিশ্বরূপেব চিত্রভিত্তিভিঃ, (চ) সন্ধ্যেব পদ্মরাগানুরাগিণী (১) (ছ) অমরাধিপ-মূর্ত্তিরিব মখশতানলধূম-পূতা, (জ) পশুপতি-লাস্যক্রীড়েব সুধাধবলাট্টহাসা, (ঝ) বৃদ্ধেব জাতরূপক্ষয়া, (ঞ) গরুড়মূর্ত্তিরিবাচ্যুতস্থিতি-রমণীয়া, (ট) প্রভাতবেলেব প্রবুদ্ধসর্ব্বলোকা, (ঠ) শবর-বসতিরিবাবলম্বিত-(২) চারুচামর-(৩)

(ছ) সন্ধ্যেতি। সন্ধ্যা সায়ংকাল ইব, পদ্মরাগৈর্য্যত্র তত্র সন্নিবেশিতৈস্তদাখ্যমণিভিঃ অনুরাগো রক্তিমা, পদ্মরাগবদনুরাগো রক্তিমা চ অস্যা অস্তীতি সা। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ।

(জ) অমরেতি। অমরাধিপস্য মূর্ত্তিরিন্দ্রস্য শরীরমিব, মখশতস্য বহুতরযজ্ঞস্য, শতসংখ্যকাশ্বমেধযজ্ঞানাঞ্চ অনলস্য বহ্নেঃ ধূমেন পূতা পবিত্রা। পূর্ণোপমা।

(ঝ) পশ্বিতি। পশুপতের্লাস্যক্রীড়েব শিবস্য নৃত্যখেলেব, সুধাভিঃ শুভ্রচূর্ণলেপনৈঃ ধবলানাং শুভ্রীভূতানাং অট্টানামট্টালিকানাং হাসঃ প্রকাশো যস্যাং সা, পক্ষান্তরে তু সুধাবদমৃতবৎ ধবলঃ অট্টহাসো মহাহাস্যং যস্যাং সা, হাসস্য ধবলতয়া বর্ণনীয়ত্বাৎ। পূর্ণোপমা।

(ঞ) বৃদ্ধেতি। বৃদ্ধা স্থবিরা স্ত্রীব, জাতরূপাণাং স্বর্ণানাং ক্ষয়া গৃহাণি যস্যাং সা, পক্ষান্তরে তু জাতো বার্দ্ধক্যাদুৎপন্নঃ রূপস্য সৌন্দর্য্যস্য ক্ষয়ো বিনাশো যস্যাঃ সা। পূর্ণোপমা। "নিলয়াপচয়ৌ ক্ষয়া"বিত্যমরঃ।

(ট) গরুড়েতি। গরুড়স্য মূর্ত্তিস্তনুরিব, অচ্যুতা দৃঢ়নির্ম্মাণাদস্খলিতা যা স্থিতিরবস্থানং তয়া রমণীয়া মনোহরা, পক্ষান্তরে তু অচ্যুতস্য বিষ্ণোঃ স্থিত্যা তদুপর্য্যবস্থানেন রমণীয়া। পূর্ণোপমা।

(ঠ) প্রভাতেতি। প্রভাতবেলেব প্রাতঃকাল ইব, প্রবুদ্ধাঃ প্রকৃষ্টজ্ঞানশালিনঃ জাগরিতাশ্চ সর্ব্বে লোকা জনা যস্যাং সা। পূর্ণোপমা।

(ড) শবরেতি। শবরবসতিঃ কিরাতবাসস্থানমিব, অবলম্বিতানি রজ্জুভিরালম্বিতানি চারুচামরাণি সুন্দরবালব্যজনানি যেষু তাদৃশা নাগদন্তা হস্তিদন্তা যেষু তে তথাবিধা ধবলা গৃহা যস্যাং সা। পক্ষে

বোধ হয়; আর ভিত্তিতে (দেওয়ালে) নানাবিধ অসংখ্য চিত্র থাকায় সেই নগরী যেন জগতের সকল পদার্থের রূপ দেখাইতেছে বলিয়া প্রতীতি হয়; (ছ) সন্ধ্যাকাল যেমন পদ্মরাগমণির ন্যায় রক্তবর্ণ, উজ্জয়িনীও তেমন বহুতর পদ্মরাগমণিখচিত থাকায় রক্তবর্ণ; (জ) ইন্দ্রের শরীর যেমন শত অশ্বমেধযজ্ঞের অগ্নির ধূমে পবিত্র হইয়াছিল, উজ্জয়িনীও তেমন বহুসংখ্যক যজ্ঞের অগ্নির ধূমে পবিত্র হইতেছে; (ঝ) শিবের নৃত্যরূপ খেলা যেমন অমৃতের ন্যায় ধবল অট্টহাস্যসমন্বিত, উজ্জয়িনীও তেমন চূর্ণলেপনে শুভ্রবর্ণ সুশোভিত বহুতর অট্টালিকাসমন্বিত; (ঞ) বৃদ্ধ স্ত্রীলোকের যেমন সৌন্দর্য্য বিনষ্ট হইতে দেখা যায়, উজ্জয়িনীতেও তেমন সুবর্ণময় বহুতর গৃহ দেখা যায়; (ট) গরুড়ের দেহ যেমন বিষ্ণুর অবস্থানে সুন্দর দেখায়, উজ্জয়িনীও তেমন স্থিরভাবে অবস্থান করায় সুন্দর দেখায়; (ঠ) প্রভাতকালে যেমন সকল লোক নিদ্রা হইতে জাগরিত হইয়া থাকে, উজ্জয়িনীতেও তেমন সকল লোক নানাবিষয়ে জ্ঞানী হইয়া থাকে; (ড) ব্যাধগণের বাসস্থানের গৃহগুলি যেমন মনোহর চামর ও হস্তিদন্তে পূর্ণ থাকায়

---

(১) পদ্মরাগারুণা। (২) আলম্বিত...। (৩) অবলম্বিতচামর...।

नागदन्त-धवल-गृहा, (ड) शेष-तनुरिव सदासन्न-वसुधाधरा, (ढ) जलधि-(१) मथनवेलेव महाघोष-पूरित-दिगन्तरा, (ण) प्रस्तुताभिषेक-भूमिरिव (२) सन्नि-हित-(३) कनकघट-(४) सहस्रा, (त) गौरीव महासिंहासनोचितमूर्त्तिः, (थ) अदितिरिव देवकुल-सहस्रसेव्या, (द) महावराह-लीलेव दर्शित-हिरण्याक्ष-

---

अवलम्बितैः तांस्तान् पशून् निहत्य संगृह्य स्थापितैः चारुचामरैः चमरमृगाणां सुन्दरलोमभिः, नागदन्तैर्हस्ति-दन्तैश्च धवलानि गृहाणि यस्यां सा। पूर्णोपमा।

(ढ) शेषेति। शेषस्य अनन्तनागस्य तनुः शरीरमिव, सदा आसन्नाः सन्निहिताः वसुधाधराः पर्वता यस्याः सा। पक्षे सदा सर्वदा आसन्नां उपरिस्थितां वसुधां धरतीति इति सा। पूर्णोपमा।

(ण) जलधीति। जलधिमथनवेलेव समुद्रमन्थनसमय इव, महाघोषैः विशालाभीरपल्लिभिः विशाल-मन्थनध्वनिभिश्च पूरितानि दिगन्तराणि यस्याः यस्याश्च सा। पूर्णोपमा।

(त) प्रस्तुतेति। प्रस्तुत आरब्धो योऽभिषेकः राजाभिषेकस्तस्य भूमिः स्थानमिव, सन्निहितं संस्थापितं कनकघटसहस्रं स्वर्णकलससमूहो यस्यां सा, एकत्र भवनद्वारतोरणस्तम्भमूलेषु मङ्गलार्थं, अन्यत्र स्नानीयजल-सम्भारार्थमिति भावः। पूर्णोपमा।

(थ) गौरीति। गौरी दुर्गेव, महासिंहासनैः विशालैः सिंहाकारासनैः उचिता स्वयोग्या परममनो-हरेत्यर्थः मूर्त्तिर्यस्याः सा:, पक्षे महासिंहरूपे आसने उचिता स्थितियोग्या मूर्त्तिर्यस्याः सा। पूर्णोपमा।

(द) अदितिरिति। अदितिर्देवमातेव, देवकुलसहस्रं देवालयसमूहः सेव्यं प्रदक्षिणकरणादिना सेव-नीयं यत्र सा, पक्षे देवकुलसहस्रेण देववंशसमूहेन सेव्या प्रसूतित्वात् सेवनीया। पूर्णोपमा।

(ध) महेति। महावराहस्य नारायणस्तृतीयावतारस्य लीला चेष्टेव, दर्शितः खेलाकाले जनैः प्रदर्शितः हिरण्याक्षाणां स्वर्णनिर्म्मितपाशकानां पातो निक्षेपो यस्यां सा, पक्षे दर्शितो हिरण्याक्षस्य तदाख्यस्य हिरण्य-

---

শুভ্রবর্ণ থাকে, উজ্জয়িনীতেও তেমন বহুতর শুভ্রবর্ণ গৃহ আছে, তাহার মধ্যে হস্তিদন্তে সুন্দর চামর সকল ঝুলান আছে; (ঢ) অনন্তনাগের শরীরে যেমন সর্ব্বদা পৃথিবী অবস্থিত, উজ্জয়িনীর নিকটেও তেমন সর্ব্বদা পর্ব্বত অবস্থিত; (ণ) সমুদ্রমন্থনের সময় যেমন মহাশব্দে সকল দিক্ পূর্ণ করিয়াছিল, গোপগণের পল্লী সকলও তেমন উজ্জয়িনীর সকল দিক্ পূর্ণ করিয়া রহিয়াছে; (ত) রাজার অভিষেকের স্থানে যেমন বহুতর সুবর্ণ-কলস সংস্থাপিত হয়, উজ্জয়িনীতেও তেমন প্রত্যেক গৃহের তোরণের মূলে সুবর্ণ-কলস সংস্থাপিত আছে; (থ) দুর্গার মূর্ত্তি যেমন নিজ বাহন মহাসিংহে উপবেশনের উপযুক্ত, উজ্জয়িনীও তেমন বৃহৎ সিংহাসনসমূহের উপযুক্ত; (দ) দেবগণ যেমন মাতা অদিতির সেবা করেন, উজ্জয়িনীর জনসমূহও তেমন দেবালয়ের সেবা করে; (ধ) নারায়ণ বরাহমূর্ত্তি ধারণ করিয়া যেমন হিরণ্যাক্ষদানবের বিনাশ

---

(१) जलनिधि...। (२)...भूमीरिव, वेलेव।
(३) सदासन्निहित...। (४)...घटक...।

पाता, (ध) आस्तीकतनुरिव (१) आनन्दित-भुजङ्गलोका (न) हरिवंशकथेव अनेक-बाल-क्रीड़ा-रमणीया, (प) प्रकटाङ्गनोपभोगाप्यखण्डित-चरिता, (फ) रक्तवर्णापि सुधाधवला, (ब) अवलम्बित-मुक्ता-कलापापि विहारभूषणा, (भ)

क[illegible]भ्रातुः पातो विनाशो यया सा। पूर्णोपमा। पुरा नारायणो वराहमूर्त्तिं परिगृह्य पृथिवीमुद्धृत्य, पश्चात् गिरिगुहागतं हिरण्याक्षं निहतवानिति भागवतवार्त्ता।

(न) आस्तीकेति। आस्तीकस्य तदाख्यस्य मुनेः तनुराकृतिरिव, आनन्दितः विलासोपयोगिप्रचुरतरगृहशालित्वात् परितोषितः भुजङ्गलोको विटजनो यया सा, पक्षे आनन्दितः जनमेजयस्य सर्पसत्रनिवारणात् परितोषितः भुजङ्गलोकः सर्पगणो यया सा। पूर्णोपमा। पुरा किल भगवानास्तीकः सकलसर्पकुलविनाशोद्यतं जनमेजयस्य सर्पसत्रं प्रार्थनया निवारयामासेति महाभारतवार्त्ता।

(प) हरीति। हरिवंशाख्या या कथा महाभारतशेषोपाख्यानं सेव, अनेकाभिर्विविधाभिः बालक्रीड़ाभिः तत्रत्यानां शिशूनां खेलाभिः यदुवंशीयबालकगणखेलाकथाभिश्च रमणीया। पूर्णोपमा।

(फ) प्रकटेति। प्रकटः दुश्चरितया ख्यातत्वेन लज्जासङ्कोचाद्यभावादभिव्यक्तः अङ्गनानामुपभोगो यत्र सा तादृश्यपि अखण्डितचरितेति विरोधः, प्रकटः सौरभनिर्गमादिना प्रत्यक्षः अङ्गनानामुपभोगः स्त्रीगणकर्त्तृककर्पूरताम्बूलादिसम्भोगो यस्यामिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(ब) रक्तेति। रक्तवर्णापि सुधावत् धवलेति विरोधः, रक्ताः सुखवासहेतुत्वादनुरक्ताः वर्णा ब्राह्मणादिजातयो यस्यां सेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(भ) अवेति। अवलम्बितो धृतः मुक्ताकलापो मुक्तामाला यया सापि, विगतो हारो मुक्तामाला येभ्यस्तानि विहाराणि भूषणानि यस्याः सेति विरोधः, विहारा बौद्धालया भूषणानि यस्याः सेति तत्समाधानम्। विरोधाभासः। "विहारो भ्रमणे स्कन्धे लीलायां सुगतालये।" इति मेदिनी।

দর্শন করাইয়াছিলেন, উজ্জয়িনীর লোকও তেমন খেলায় প্রবৃত্ত হইয়া সুবর্ণনির্ম্মিত পাশকের নিক্ষেপ দর্শন করাইয়া থাকে ; (ন) আস্তীকমুনি যেমন সর্পসত্র নিবারণ করিয়া সর্পগণকে আনন্দিত করিয়াছিলেন, উজ্জয়িনীও তেমন ভোগবিলাসের উপযুক্ত গৃহ ধারণ করিয়া ভোগীদিগকে আনন্দিত করিতেছে ; (প) হরিবংশোপাখ্যান যেমন নানাবিধ বালক্রীড়ার উপাখ্যানে মনোহর, উজ্জয়িনীও তেমন বালকগণের নানাবিধ খেলায় মনোহর ; (ফ) উজ্জয়িনীতে প্রকাশ্যভাবে স্ত্রীদিগের উপভোগ চলিতে থাকিলেও (স্ত্রীগণ প্রকাশ্যভাবে বিলাসসামগ্রী ভোগ করিতেছে এবং) কাহারও চরিত্র দূষিত নহে ; (ব) রক্তবর্ণ হইলেও (উজ্জয়িনীতে ব্রাহ্মণাদি সকল বর্ণ অনুরক্ত আছে এবং) উজ্জয়িনী অমৃতের ন্যায় ধবলবর্ণ ; (ভ) মুক্তার মালা ধারণ করিলেও উজ্জয়িনী, মুক্তামালাহীন অলঙ্কারে অলঙ্কৃত ; (বহুতর বৌদ্ধ আশ্রমে ভূষিত)

(१) जानुरिव।

बहुप्रकृतिरपि स्थिरा, (म) विजितामरलोक-द्युतिरवन्तीषूज्जयिनी नाम नगरी। (य)

यस्यामुत्तुङ्ग-सौधोत्सङ्ग-सङ्गीतसङ्गिनीनां (१) अङ्गनानामति-मधुरेण गीत-रवेणाकृष्यमाणाधोमुख-रथतुरङ्गः (२) पुरःपर्य्यस्त-(३) रथपताकापटः कृतमहा-काल-प्रणाम इव प्रतिदिनं लक्ष्यते गच्छन् (४) दिवसकरः। (र)

यस्याञ्च सन्ध्यारागारुणा इव सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु, प्रारब्ध-नीलकमलिनी-

---

(म) बह्विति। बह्वी नानाविधा प्रकृतिः स्वभावो यस्याः सापि स्थिरा स्थिरस्वभावेति विरोधः, बह्व्यः प्रकृतयः स्वाम्यादिराज्याङ्गानि पौरवर्गो वा यस्यां सेति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

(य) विजितेति। विजिता अमरलोकस्य स्वर्गस्य द्युतिः कान्तिर्यया सा। अवन्तीषु अवन्तीनामकदेशे "बहुत्ववदस्वादे"रित्यादिना बहुवचनम्। स्वकान्त्या स्वसम्पत्त्या वा उत्कर्षेण जयति सर्वा नगरीरित्युज्जयिनी। नगरीलक्षणमुक्तं रघुनाथेन—

"देवतायतनैश्चित्रैः प्रासादापणवेश्मभिः। नगरं दर्शयेद्विद्वान् राजमार्गैश्च शोभनैः॥"

(र) यस्यामिति। उत्तुङ्गानामत्युच्चानां सौधानां राजसदनानां उत्सङ्गे क्रोडे उपरितल इत्यर्थः सङ्गीतं नृत्यगीतवाद्यानि तत्सङ्गिनीनां तदासक्तानां, अङ्गनानां स्त्रीणां। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः। आकृष्यमाणा अतएव अधोमुखा रथतुरङ्गा रथनियुक्ताश्वा यस्य सः। तथा पुरःपर्य्यस्तः रथवेगाभावादग्रतः स्रस्तः रथपताकापटो यस्य सः। तेन च गललग्नीकृतवासा इवेति व्यज्यते। कृतः महाकालाय तदाख्यशिवाय प्रणामो येन स इव। गच्छन् उदयाचलादस्ताचलमिति शेषः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) यस्यामिति। रविगभस्तयः सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु पतिताः सन्तः सन्ध्यारागारुणा इव विराजन्त इत्यं सर्वत्रान्वयः। सिन्दूरमणिकुट्टिमेषु प्रवालमयभूमिषु, सन्ध्यारागेण सन्ध्याकालीनरक्तिम्ना अरुणा रक्तवर्णा इव तेषां रक्तवर्णत्वात्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। मरकतवेदिकासु पतिताः सन्तः, प्रारब्धं प्रवर्त्तितं

(ম) উজ্জয়িনী বহুপ্রকৃতি হইলেও (বহুসংখ্যক লোকের বাসস্থান এবং) স্থিরস্বভাব

(য) আর উজ্জয়িনী, নিজের শোভায় স্বর্গের শোভা জয় করিয়াছে।

(র) যে উজ্জয়িনীতে অত্যুচ্চ রাজভবনের উপরিতলে সঙ্গীতচর্চ্চায় প্রবৃত্ত রমণীগণের অতিমধুর গীতধ্বনিতে আকৃষ্ট হইয়া সূর্য্যের রথের অশ্বগণ অধোমুখ হইয়া অবস্থান করে, তাহাতে রথের বেগ না থাকায় তাহার পতাকা সম্মুখে ঝুলিতে থাকে, তখন সূর্য্য যেন মহাকালকে প্রণাম করিয়া যাইতেছেন বলিয়া লোকে প্রতিদিন দেখিয়া থাকে।

(ল) আর যে উজ্জয়িনীতে সূর্য্যের কিরণসমূহ প্রবালময় প্রাঙ্গণে পতিত হইয়া সন্ধ্যারাগে রঞ্জিত হইয়াই যেন দীপ্তি পাইতে থাকে, মরকতমণির বেদির উপরে পতিত হইলে বোধ হয় যেন নীলপদ্মসমূহমধ্যে মণ্ডলাকারে অবলুণ্ঠন আরম্ভ করিয়াছে; বৈদূর্য্যমণিময়

---

(१) उत्सङ्गीतसङ्गिनीनां, उत्सङ्गसङ्गिनीनां। (२) कृष्यमाणाधोमुखतुरङ्गः। (३) पुरपर्य्यस्त...।
(४) प्रतिदिवसमालक्ष्यते भगवान्...।

परिमण्डला (१) इव मरकत-वेदिकासु, गगनतल-प्रसृता (२) इव वैदूर्य्यमणि-भूमिषु, तिमिर-पटल-विघटनोद्यता इव कृष्णागुरु-धूम-(३) मण्डलेषु, अभिभूत-तारकापङ्क्तय इव मुक्ता-(४) प्रालम्बेषु, विकच-कमल-चुम्बिन इव नितम्बिनी-मुखेषु, प्रभात-चन्द्रिकामध्यपतिता इव स्फटिकभित्ति-(५) प्रभासु, गगनसिन्धु-तरङ्गावलम्बिन (६) इव सितपताकांशुकेषु, पल्लविता इव सूर्य्यकान्तोपलेषु, राहु-मुखकुहर-प्रविष्टा इवेन्द्रनीलवातायन-विवरेषु विराजन्ते रवि-गभस्तयः। (ल)

नीलकमलिनीषु नीलवर्णपद्मिनीषु परिमण्डलं मण्डलाकारेणावलुण्ठनं, येषां ते इव, मरकतवेदिकानां नीलवर्णत्वात्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा। वैदूर्य्यमणिभूमिषु पतिताः सन्तः, गगनतलप्रसृता इव आकाशे विस्तृता इव, वैदूर्य्यमणिभूमीनामत्यच्छत्वात्। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। कृष्णागुरुधूममण्डलेषु देवतापूजादौ दह्यमानकृष्णागुरुतः उत्थितधूमपुञ्जेषु पतिताः सन्तः, तिमिरपटलस्य अन्धकारसमूहस्य विघटने विनाशे उद्यता इव, तद्धूममण्डलानामन्धकारतुल्यकृष्णवर्णत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। मुक्ताप्रालम्बेषु लम्बमानमुक्ताकलापेषु पतिताः सन्तः, अभिभूता तिरस्कृता आच्छाद्यमानेत्यर्थः तारकापङ्क्तिः नक्षत्रश्रेणिर्यैस्ते इव, मुक्ताप्रालम्बानां तारकापङ्क्तितुल्यत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। नितम्बिनीमुखेषु रमणीनां वदनेषु पतिताः सन्तः विकचानि प्रस्फुटानि कमलानि पद्मानि चुम्बन्तीति ते इव, नितम्बिनीमुखानां विकचकमलतुल्यत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। स्फटिकभित्तिप्रभासु स्फटिकनिर्म्मितभित्तिद्युतिषु पतिताः सन्तः, प्रभातचन्द्रिकामध्यपतिता इव, तत्प्रभाणां प्रभातचन्द्रिकासमानत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। सितपताकांशुकेषु शुभ्रवैजयन्तीवसनेषु पतिताः सन्तः, गगनसिन्धुतरङ्गावलम्बिन आकाशगङ्गातरङ्गाश्रिता इव, सितपताकांशुकानां तरङ्गवत् पवनान्दोलितत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। सूर्य्यकान्तोपलेषु सूर्य्यकान्तमणिषु पतिताः सन्तः, पल्लविताः सञ्जातपल्लवाः विस्तृता इवेत्यर्थः सूर्य्यकरस्पर्शे सूर्य्यकान्तमणिभ्योऽपि तेजोनिर्गमात्। क्रियोत्प्रेक्षा। तथा इन्द्रनीलवातायनविवरेषु नीलकान्तमणिनिर्म्मितगवाक्षच्छिद्रेषु पतिताः सन्तः, राहोर्मुखकुहरे वदनविवरे प्रविष्टा इव, तेषामपि राहुमुखकुहरवत् सान्तरालत्वात् कृष्णवर्णत्वाच्च। क्रियोत्प्रेक्षा। रविगभस्तयः सूर्य्यकिरणाः।

ভূমিতে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন আকাশতলে বিচরণ করিতেছে; কৃষ্ণাগুরুর ধূমপুঞ্জে পতিত হইলে বোধ হয় যেন অন্ধকাররাশি বিনাশে উদ্যত হইয়াছে; মুক্তার ঝালরে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন নক্ষত্রশ্রেণীকে আবৃত করিতেছে; রমণীগণের মুখে পতিত হইলে বোধ হয় যেন প্রস্ফুটিত পদ্ম চুম্বন করিতেছে; স্ফটিকময় ভিত্তির (দেওয়ালের) প্রভামধ্যে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন প্রভাতকালের জ্যোৎস্নার মধ্যে পতিত হইয়াছে; শ্বেতবর্ণ পতাকার উপরে পতিত হইলে বোধ হয় যেন আকাশগঙ্গার তরঙ্গ আশ্রয় করিয়াছে; সূর্য্যকান্ত মণির উপরে পতিত হইলে প্রতীতি হয় যেন বিস্তার পাইতেছে আর নীলকান্তমণির গবাক্ষ-রন্ধ্রে পতিত হইলে বোধ হয় যেন রাহুর মুখবিবরে প্রবেশ করিয়াছে।

---

(१) प्रारब्धक्रम...। परिमलनी, परिमिलना, परिमलना, परिमला, परिमीलना...। (२) गगनपर्य्यन्ता।
(३) धूप...। (४) मुक्ताफल...। (५) स्फटिकमणि...। (६) तरङ्गसङ्गिनः।

यस्याश्चानुपजात-तिमिरत्वादविघटित-चक्रवाकमिथुना व्यर्थीकृत-(१) सुरत-प्रदीपाः सञ्जात-मदनानल-दिग्दाहा इव यान्ति कामिनीनां भूषण-प्रभाभिर्बाला-तपपिञ्जरा इव रजन्यः। (व)

याञ्च सन्निहित-विषमलोचनामनवरतमतिमधुरो रतिप्रलाप इव प्रसर्पन् (२) मुखरीकरोति मकरकेतु-दाह-हेतुभूतो भवन-कलहंस-कोलाहलः (३)। (श)

यस्याञ्च निशि निशि पवनविलोलैः (४) दुकूलपल्लवैरुल्लसद्भिर्मालवी-मुख-

---

(व) यस्याश्चेति। कामिनीनां भूषणप्रभाभिरलङ्कारदीप्तिभिः, अनुपजाततिमिरत्वादनुत्पन्नान्धकारत्वाद्धेतोः, अविघटितानि अवियोजितानि चक्रवाकानां मिथुनानि युगलानि याभिस्ताः। तथा च चक्रवाकदम्पत्यौ हि दिवा संयुज्यन्ते रात्रौ च वियुज्यन्ते, तदानीन्तु कामिनीनामलङ्कारप्रभाभिरन्धकाराभावात् दिवस एवायमिति भ्रमेण संयुक्ता एव तिष्ठन्तीति भावः। अतएवात्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते इति वस्तुनाऽलङ्कारध्वनिः। व्यर्थीकृता निष्प्रयोजनीकृताः सुरतप्रदीपा याभिस्ताः, तद्भूषणप्रभाभिरेवान्धकारापगमादिति भावः। रजन्यो रात्रयः। बालातपेन नवीनसूर्य्यालोकेन पिञ्जराः पिङ्गलवर्णा इव, तथा सञ्जातो मदनानलेन दिग्दाहो यासु ता इव च सत्यो यान्ति अतिक्रामन्ति। अत्र चक्रवाकमिथुनानां विघटनसम्बन्धेऽपि तदसम्बन्धोक्तेरेकातिशयोक्तिः, अपरा च सुरतप्रदीपानां व्यर्थीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, तथा सञ्जातेत्यादौ क्रियोत्प्रेक्षा, बालेत्यादौ च गुणोत्प्रेक्षा, इत्येषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) याञ्चेति। मकरकेतोर्मदनस्य दाह एव हरनयनवह्निना भस्मीकरणमेव हेतुर्भूतो यस्य सः, रतेर्मदनभार्य्यायाः प्रलाप आर्त्तनाद इव, मकरकेतुना यो दाहः कामकर्तृको जनानां सन्तापः तस्य हेतुभूतः हंसरवस्योद्दीपकत्वादिति भावः, अतिमधुरो भवनकलहंसकोलाहलः, अनवरतं प्रसर्पन् प्रसरन् सन्, सन्निहितो महाकालरूपेणावस्थितः विषमलोचनस्त्र्यम्बकः शिवो यस्यां तां, इदन्तु मकरकेतुदाहसम्भवताप्रदर्शनार्थमिति बोध्यं, याञ्चोज्जयिनीं मुखरीकरोति सशब्दीकरोति। अत्रोपमालङ्कारः।

(ष) यस्यामिति। दूरे अत्युच्चं प्रसारिता विस्तारिता उत्तोलिताः ध्वजाः केतुदण्डा एव भुजा यैस्ते,

---

(व) আর যে উজ্জয়িনীতে কামিনীগণের অলঙ্কারের আলোকে রাত্রিতেও অন্ধকার জন্মিতে পারে না, তাহাতে চক্রবাক ও চক্রবাকীগণ দিনের বেলা মনে করিয়া পরস্পর বিযুক্ত হয় না ;···এবং মদনাগ্নিতে যেন দিগ্দাহ হইতেছে বলিয়া বোধ হয় আর সূর্য্যের নবীন আলোকে পিঙ্গলবর্ণ হইয়াই যেন রাত্রি অতীত হইয়া যায়।

(শ) শিবের নয়নাগ্নিতে কামদেব দগ্ধ হইলে রতির বিলাপের ন্যায়, গৃহস্থিত কলহংসগণের অতিমধুর কোলাহল, অবিরত চতুর্দ্দিকে বিস্তৃত হইয়া, মহাকালরূপী শিবের আবাসভূমি যে উজ্জয়িনীকে মুখরিত করিতেছে।

(ষ) আর যে উজ্জয়িনীতে অত্যুচ্চ অট্টালিকাসমূহ, ধ্বজরূপ বাহু দূরে উত্তোলন করিয়া,

---

(१) प्रकटीकृत...। (२) प्रतिवासरं प्रसर्पन्। (३) भवनकुलहंसकुलकोलाहलः।
(४) पवनवशविलोलैः।

কমল-কান্তি-লজ্জিতস্যেন্দোঃ কলঙ্কমিবাপনয়ন্তো দূরপ্রসারিত-ধ্বজ-ভুজাঃ (১) প্রাসাদা লক্ষ্যন্তে। (ষ)

যস্যাঞ্চ সৌধ-শিখর-শায়িনীনাং (২) পশ্যন্ মুখানি পুরসুন্দরীণাং মদন-পরবশ ইব পতিতঃ প্রতিমাচ্ছলেন লুঠতি বহুল-চন্দন-জল-সেক-শিশিরেষু মণি-কুট্টিমেষু (৩) মৃগলাঞ্ছনঃ। (স)

যস্যাঞ্চ নিশাবসানে (৪) প্রবুদ্ধস্য তারতরমপি পঠতঃ পঞ্জরভাজঃ শুক-সারিকাসমূহস্যাভিভূত-গৃহসারস-স্বরামৃতেন (৫) বিস্তারিণা বিলাসিনী-ভূষণরবেণাবিভাব্যমানাঃ (৬) ব্যর্থীভবন্তি প্রভাত-মঙ্গলগীতয়ঃ। (হ)

প্রাসাদা রাজভবনানি, পবনবিলোলৈর্বায়ুচালিতৈঃ অতএবোল্লসদ্ভিরুত্তিষ্ঠদ্ভিঃ, দুকূলপল্লবৈঃ বিস্তৃতপতাকাপটৈঃ, মালবীনাং মালবদেশীয়রমণীনাং মুখকমলকান্তিভির্লজ্জিতস্য সকলঙ্কত্বাৎ সলজ্জীকৃতস্য ইন্দোশ্চন্দ্রস্য কলঙ্কং লজ্জাকারণীভূতং লাঞ্ছনং কালিমানঞ্চ অপনয়ন্তঃ প্রোঞ্ছন্ত ইব লক্ষ্যন্তে। সুহৃদা সুহৃদন্তরস্য মুখকালিম-প্রোঞ্ছনবদিতি ভাবঃ। অতএবাত্র কার্য্যেণ প্রাসাদেষু সুহৃদ্ব্যবহারসমারোপাৎ সমাসোক্তিরলঙ্কারঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়া সঙ্কীর্য্যতে। এতেন মালবীনাং মহাসৌন্দর্য্যং প্রাসাদানাঞ্চাত্যুন্নতত্বং ব্যজ্যতে।

(স) যস্যামিতি। মৃগলাঞ্ছনঃ শশাঙ্কঃ, সৌধশিখরশায়িনীনাং রাজসদনোপরিস্থায়িনীনাং পুর-সুন্দরীণাং নগররমণীনাং মুখানি পশ্যন্ মদনপরবশঃ কামায়ত্ত ইব সন্, বহুলানাং প্রচুরাণাং চন্দনজলানাং সেকেন শিশিরেষু শীতলেষু মণিকুট্টিমেষু তাসাং পুরসুন্দরীণামাশ্রয়ভূতেষু মণিময়চ্ছদিঃসু প্রতিমাচ্ছলেন প্রতিবিম্ব-ব্যাজেন পতিতো লুঠতি, তাসামনুনয়ার্থমিতি ভাবঃ। অত্রাপি কার্য্যেণ চন্দ্রে বিটকামুকব্যবহারসমারোপাৎ সমাসোক্তিরলঙ্কারো গুণোৎপ্রেক্ষাপহ্নুতিভ্যাং সঙ্কীর্য্যতে।

(হ) যস্যামিতি। প্রবুদ্ধস্য জাগরিতস্য। তারতরং উচ্চৈস্তরং যথা স্যাত্তথা। পঞ্জরভাজঃ পঞ্জরমধ্য-বর্ত্তিনঃ শুকসারিকাসমূহস্য প্রভাতমঙ্গলগীতয়ঃ, অভিভূতং উচ্চৈস্তয়া তিরস্কৃতং গৃহসারসানাং গৃহস্থিত-পক্ষিবিশেষাণাং স্বরামৃতং অমৃতবন্মধুরধ্বনির্যেন তেন, বিস্তারিণা মহতা বিলাসিনীনাং স্ত্রীণাং ভূষণরবেণ অল-

---

বায়ুভরে কম্পিত হইয়া উত্থিত পতাকাবসনদ্বারা, মালবদেশীয় রমণীগণের মুখপদ্মের সৌন্দর্য্য দেখিয়া লজ্জিত চন্দ্রের কলঙ্ক যেন মুছিয়া দিতেছে—এইরূপ প্রত্যেক রাত্রিতে দেখা যায়।

(স) এবং যে উজ্জয়িনীতে পুররমণীগণ অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিলে তাহাদের মুখ দর্শন করিয়া কামাতুর হইয়াই যেন চন্দ্র, প্রচুর চন্দনজলসেকে সুশীতল মণিময় ছাদে প্রতিবিম্বচ্ছলে পতিত হইয়া লুণ্ঠিত হইতে থাকে।

(হ) আর যে উজ্জয়িনীতে পঞ্জরস্থিত শুক ও সারিকাগণ রাত্রিশেষে জাগরিত হইয়া উচ্চৈঃস্বরে পাঠ করিতে থাকে আর প্রভাতকালের মঙ্গলগান করিতে থাকে ; কিন্তু গৃহস্থিত

---

(১)...ঊর্দ্ধ্বধ্বজভুজাঃ। (২) সৌধশিখরোৎসঙ্গশায়িনীনাং। (৩) ক্বচিদয়ং পাঠো নাস্তি।
(৪) নিশাবসান···। (৫)...সমূহস্য রবেণাভিভূতা গৃহসারসবিটকেন। (৬) অভিভাব্যমানাঃ।

यस्यामनिवृत्तिः (१) मणिदीपानाम्, (२) तरलता (३) हारलतानाम्, अस्थितिः सङ्गीत-मुरज-ध्वनीनाम्, द्वन्द्ववियोगश्चक्रनाम्नाम्, (४) वर्णपरीक्षा कनकानाम्, अस्थिरत्वं ध्वजानाम्, मित्रद्वेषः कुमुदानाम्, कोषगुप्तिरसीनाम्। (ख)

किं बहुना, यस्यां (५) सुरासुर-चूडा-मणि-मरीचि-चय-चुम्बित-(६) चरण-नख-मयूखो निशित-त्रिशूल-दारितान्धक-महासुरः, गौरी-नूपुर-कोटि-घृष्ट-शेखर-

हारशब्देन, अविभाव्यमाना विशेषेणाश्रूयमाणाः सम्मिलितत्वेन पृथक्तया अज्ञायमानाः सत्यः, अतएव व्यर्थीभवन्ति। अत्र तादृशभूषणरवैर्यं तद्गीतानां गोपनात्मीलितमलङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ख) यस्यामिति। मणिदीपानां अनिवृत्तिः स्वभावतो दीप्तिमत्त्वात् अनिर्वाणता, न तु लोकानामनिवृत्तिर्विषयादनुपरमः सर्वेषामिव वार्द्धक्ये तदुदयात्। हारलतानां मुक्तामालानां तरलता चञ्चलता, न तु नरनारीणां तरलता, विशेषशिक्षाशालितया परमगाम्भीर्य्यवत्त्वात्। सङ्गीतमुरजध्वनीनां सङ्गीतमृदङ्गयोः शब्दानां अस्थितिः तृतीयक्षणे अविद्यमानता, न तु लोकानामस्थितिः मर्य्यादाहीनता सर्वेषामेव तद्वत्त्वात्। चक्रनाम्नां चक्रवाकपक्षिणां द्वन्द्ववियोगः मिथुनविरहः रात्रौ दम्पतीविच्छेद इति यावत्, न तु जनानां मध्ये दम्पतीविच्छेदः सम्पन्निमत्तया विदेशगमनाभावात् तादृशधर्म्मवत्तया च विभिन्नकाले मृत्युविरहात्। कनकानां स्वर्णानां वर्णस्य रूपस्य परीक्षा वह्नितापादिना सदोषनिर्दोषताज्ञानं, न तु ब्राह्मणादीनां वर्णपरीक्षा जिज्ञासादिना विशिष्टजातिज्ञानं, साङ्कर्य्यदोषाभावात्। ध्वजानां पताकानां अस्थिरत्वं वायुवेगेन चञ्चलत्वं, न तु जनानामस्थिरत्वं अधीरत्वं तादृशोपद्रवाभावात्। कुमुदानां कैरवाणां मित्रद्वेषः सङ्कोचकारकत्वेन सूर्य्यं प्रति विद्वेषः, न तु जनानां मित्रद्वेषः सुहृत्सु विद्वेषः गुरुतरपापहेतुत्वात्। असीनां तरवारीणां कोषेषु चर्म्ममयावरणेषु गुप्तिः रक्षणं, न तु धनानां कोषेषु भाण्डारेषु गुप्तिर्गोपनं चौराद्यभावात्। सर्वत्र वर्त्तत इति शेषः। अत्र प्रत्येकवाक्ये यथासम्भवश्लेषसङ्कीर्णा आर्थी परिसङ्ख्यालङ्कारः।

(क) किमिति। बहुना जल्पितेन किमित्यर्थः; सुरासुराणां प्रणमतामिति भावः, चूडामणिमरीचिचयैः मस्तकस्थरत्नरश्मिसमूहैः चुम्बिताः संस्पृष्टाः चरणनखानां मयूखाः किरणा यस्य सः। निशितेन

সারসপক্ষিগণের মধুরধ্বনি নীচে ফেলিয়া রমণীগণের অলঙ্কারের শব্দ বিস্তৃতভাবে হইতে থাকে, তাহাতে সেই মঙ্গলগীত পৃথক্‌ভাবে শুনিতে না পাওয়ায় নিষ্ফল হইয়া যায়।

(খ) এবং যে উজ্জয়িনীনগরে মণিময় প্রদীপেরই অনিবৃত্তি, মুক্তামালারই চঞ্চলতা, সঙ্গীত ও মৃদঙ্গের শব্দেরই স্থিতিহীনতা, চক্রবাকপক্ষিগণের মধ্যেই দম্পতীবিচ্ছেদ, স্বর্ণেরই বর্ণপরীক্ষা, পতাকারই অস্থিরতা, কুমুদগণেরই মিত্রের (সূর্য্যের) প্রতি বিদ্বেষ এবং তরবারিসমূহেরই কোষমধ্যে স্থাপন হইয়া থাকে।

(ক) অধিক বলিবার প্রয়োজন নাই; নমস্কার করিবার সময়ে দেবদানবগণের

(१) अनिर्वृतिः। (२) मणिप्रदीपानां। (३) अन्तस्तरलता। (४) चक्रनाम्नः, चक्रवाकनाम्नाम्।
(५) प्रणाम। (६) मरीचिचुम्बित...।

चन्द्र-शकल:, (१) त्रिपुर-भस्म-रज:-कृताङ्गराग:, मकरध्वज-ध्वंस-विधुरया रत्या प्रसादयन्त्या प्रसारित-कर-युगल-(२) विगलित-वलय-निकरार्च्चित-चरण:, प्रलयानल-शिखाकलाप-कपिल-जटाभार-भ्रान्त-सुरसिन्धु:, (३) अन्धकारि:, (४) भगवान्, उत्सृष्ट-कैलास-वास-प्रीतिर्म्महाकालाभिधान: स्वयं प्रतिवसति (५)। (क)

त्रिशूलेन दारित: अन्धकोऽन्धकनामा महासुरो येन स:। गौर्य्या: प्रणयकुपिताया: पार्व्वत्या: नूपुरकोट्या पदाघातकाले मञ्जीराग्रदेशेन, घृष्टं विलिखितं शेखर: शिरोभूषणभूतं चन्द्रशकलं चन्द्रखण्डं यस्य स:। अत्रानेन विशेषणेन भगवतो न किमपि माहात्म्यं प्रकाशितमिति "सदा शिवं नौमि पिनाकपाणि"मिति दर्पणोदाहृतवदधिकपदतादोष:, स चैतत्परित्यागेनैव समाधेय:। त्रिपुरासुरस्य भस्मन: स्वयं कृतस्येति भाव:, रजसा रेणुना कृत: अङ्गराग: अङ्गलेपनं येन स:। मकरध्वजध्वंसेन कामदेवविनाशेन विधुरया तदीयशोकेन विह्वलया रत्या कामपत्न्या प्रसादयन्त्या अनुग्रहलाभाशया तमेव प्रसन्नीकुर्व्वत्या सत्या, प्रसारितात् चरणग्रहणाय विस्तारितात् करयुगलात् विगलितेन निपतितेन वलयनिकरेण गोलाकाराभरणसमूहेन अर्च्चितौ चरणौ यस्य स:। तथा प्रलयानलस्य प्रलयकालीनवह्ने: शिखाकलापवत् कपिले पिङ्गलवर्णे जटाभारे जटासमूहे भ्रान्ता पतित्वा घूर्णिता सुरसिन्धुर्गङ्गा यस्य स:। स्वयं भगवान् अन्धकारिर्म्महादेव:, उत्सृष्टा त्यक्ता कैलासवासस्य प्रीति: प्रमोदो येन स:, तथा महाकाल इत्यभिधानं नाम यस्य तादृशश्च सन् यस्यामुज्जयिन्यां प्रतिवसति। तथा च कथासरित्सागरे—

"यस्यां वसति विश्वेशो महाकालवपु: स्वयं। शिथिलीकृतकैलास-निवासव्यसनो हर:।"

एतेन कैलासादप्युत्कृष्टस्थानमुज्जयिनीति ध्वनितम्। तथात्र सुरासुरेत्यादिनैकेनैव विशेषणेनाभिप्रेतमाहात्म्यप्रकाशनिर्व्वाहे सत्यपि तदर्थं एव बहुतरविशेषणान्तरोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कार:, प्रलयानलेत्यादौ लुप्तोपमा च, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

চূড়ামণির কিরণসমূহে যাঁহার চরণনখের রশ্মিসমূহ সংস্পৃষ্ট হইয়া থাকে; যিনি নিশিত ত্রিশূলদ্বারা মহাবলবান্ অন্ধকাসুরকে বিদীর্ণ করিয়াছিলেন; প্রণয়কুপিতা পার্ব্বতী যখন মস্তকে পদাঘাত করেন, তখন তাঁহার চরণনূপুরের অগ্রভাগদ্বারা যাঁহার মস্তকালঙ্কার চন্দ্রখণ্ড, ঘর্ষণ প্রাপ্ত হইয়া থাকে; যিনি ত্রিপুরাসুরকে ভস্ম করিয়া সেই ভস্মরেণুদ্বারা অঙ্গরাগ করিয়াছিলেন; কামদেবকে দগ্ধ করিলে পর তাঁহার শোকে বিহ্বল হইয়া রতি, পুনরায় অনুগ্রহলাভের প্রত্যাশায় প্রসন্ন করিতে আরম্ভ করিয়া চরণধারণ করিবার নিমিত্ত করযুগল প্রসারিত করিলে তাহা হইতে বলয়সমূহ (চুড়ীগুলি) নিপতিত হইয়া যাঁহার চরণযুগলের অর্চ্চনা করিয়াছিল, এবং প্রলয়কালের অগ্নির শিখাসমূহের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ যাঁহার জটাসমূহে নিপতিত হইয়া গঙ্গা বহুকাল ভ্রমণ করিয়াছিলেন; স্বয়ং সেই ভগবান্

(१) चन्द्रशकलशेखर:। (२)...करयुग...। (३)...अमरसिन्धु:। (४) अन्धकाराति:।
(५) वसति।

तस्याञ्चैवंविधायां नगर्य्यां नल-(१) नहुष-ययाति-धुन्धुमार-भरत-भगीरथ-दशरथप्रतिमः, (२) भुजबलार्जित-(३) भूमण्डलः, फलित-शक्तित्रयः, मतिमान्, उत्साह-सम्पन्नः, नीतिशास्त्राखिन्न-बुद्धिः, अधीत-धर्म्मशास्त्रः, तृतीय इव तेजसा कान्त्या च सूर्य्याचन्द्रमसोः, अनेक-सप्ततन्तु-पूत-मूर्त्तिः, उपशमित-सकल-जगदुपप्लवः, (ख) विहाय कमल-वनानि, अविगणय्य (४) नारायण-वक्षःस्थल-वसति-सुखं, उत्फुल्लारविन्दहस्तया शूर-समागम-व्यसनिन्या (५) निर्व्याजमालिङ्गितो

अतो यदीयमुज्जयिनी वैद्युतशकट-जलयन्त्रादिविविधाश्चर्य्यशालिन्यभविष्यत् तदेदानीमस्मीं कलिकातानगरीमस्मारयिष्यत्।

(ख) तस्यामिति। तस्याञ्चैवंविधायां नगर्य्यां राजा तारापीडो नामाभूदिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि तारापीड इत्यस्य विशेषणानि। धुन्धुमारः कुवलाश्वः। नलादयः प्रतिमा उपमा यस्य सः। भुजबलेन अर्जितं आयत्तीकृतं भूमण्डलं येन सः। फलितं सफलं जातं शक्तित्रयं प्रभावोत्साहमन्त्रजातशक्तित्रयं यस्य सः, नैपुण्यवशाद्दृष्टवशाच्चेति भावः। मतिमान् बुद्धिमान्। नीतिशास्त्रेषु अखिन्ना अनवरतालोचनयाप्यश्रान्ता बुद्धिर्यस्य सः। सूर्य्य इव तेजस्वी चन्द्रमा इव च कान्तिमानित्यर्थः। तृतीय इवेति द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कार.। सप्तभिः सप्तप्रकारच्छन्दोबद्धमन्त्रैस्तन्यत इति सप्ततन्तुर्यज्ञः पृषोदरादित्वात् साधुः। अनेकैः सप्ततन्तुभि. पूता पवित्रा मूर्त्तिः शरीरं यस्य सः। उपशमिताः स्वचेष्टादैवार्च्चनादिना निवारिताः सकला जगतां उपप्लवा विपदो येन सः।

(ग) विहायेति। उत्फुल्लं विकसितं अरविन्दं पद्मं हस्ते यस्यास्तया, एतेन विलाससामग्र्यवत्त्वानुरागित्वञ्चेति ध्वन्यते। शूरसमागमे वीरपुरुषसंसर्गे व्यसनिन्या आसक्तिमत्या, लक्ष्म्या राजश्रिया निर्व्याज-

---

মহাদেব, কৈলাসধামে বাস করার আমোদ পরিত্যাগ করিয়া যে উজ্জয়িনীতে মহাকাল নাম ধারণ করিয়া বাস করিতেছেন।

(খ) এইরূপ সেই উজ্জয়িনী নগরীতে নল, নহুষ, যযাতি, ধুন্ধুমার, ভরত, ভগীরথ ও দশরথের তুল্য, বুদ্ধিমান্ ও উৎসাহশীল 'তারাপীড়' নামে এক রাজা ছিলেন; তিনি বাহুবলে সমগ্র ভূমণ্ডল আয়ত্ত করিয়াছিলেন; তাঁহার প্রভুশক্তি, উৎসাহশক্তি ও মন্ত্রশক্তি সর্ব্বত্রই সফল হইত; সর্ব্বদা নীতিশাস্ত্র পর্য্যালোচনা করাতেও তাঁহার বুদ্ধি ক্লান্ত হইত না; তিনি সমগ্র ধর্ম্মশাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াছিলেন এবং তেজ ও সৌন্দর্য্যে সূর্য্য ও চন্দ্রের যেন তৃতীয় ব্যক্তি ছিলেন; বহুতর যজ্ঞ অনুষ্ঠান করায় তাঁহার দেহ পবিত্র হইয়াছিল; তিনি নানাবিধ উপায়ে জগতের সমস্ত উপদ্রব নিবারণ করিয়াছিলেন; (গ) প্রস্ফুটিত-পদ্ম-হস্তা এবং বীরপুরুষের সংসর্গে অনুরাগিণী স্বয়ং রাজলক্ষ্মী, পদ্মবন পরিত্যাগ করিয়া এবং নারায়ণের বক্ষঃস্থলে বাস করার

---

(१) नृप-नल...। (२)...दशरथ-जनमेजयार्जुनप्रतिमः। (३)...उपार्जित...।

(४) अवगणय्य। (५)...एकव्यसनिन्या, शूरसमागमैकव्यसनिन्या।

लक्ष्मया, (ग) महामुनिजन-संसेवितस्य मधुसूदन-चरण इव सुर-सरित्-प्रवाहस्य प्रभवः सत्यस्य, (घ) शिशिरस्यापि रिपुजन-सन्तापकारिणः स्थिरस्याप्यविरतं (१) भ्रमतः, निर्म्मलस्यापि मलिनीकृतारातिवनिता-मुखकमल-द्युतेः, अतिधवलस्यापि सर्वजनरागकारिणः, सुधासूतेरिव जलनिधि-(२) रुद्भवो यशसः, (ङ)

मकपटमालिङ्गितः। एतेन कमलवनादपि नारायणादपि च सुखवसतिस्थानं राजेति व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः, तथा राज्ञोऽपि नितान्तविलासित्वं महावीरत्वञ्च ध्वन्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिश्च।

(घ) महेति। महामुनिजनैः संसेवितस्य व्यवहारेण धर्म्मार्जनार्थं अवगाहनेन धर्म्मार्जनार्थञ्च सततमाश्रितस्य, सुरसरित्प्रवाहस्य गङ्गास्रोतसः, मधुसूदनचरण इव विष्णोः पाद इव, सत्यस्य सत्यव्यवहारस्य, प्रभवत्यस्मादिति प्रभव उत्पत्तिस्थानम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ङ) शिशिरस्येति। शिशिरस्यापि शीतलस्यापि, रिपुजनस्य शत्रुलोकस्य विरहिलोकस्य च सन्तापकारिण इति विरोधः, ईर्ष्यया कामोद्दीपनया च चित्तक्षोभकरस्येति तत्समाधानं। स्थिरस्य निश्चलस्यापि अविरतं भ्रमत इति विरोधः, स्थिरस्य चिरस्थायिनः नित्याकाशस्थायिनश्च, अविरतं भ्रमतः लोकपरम्परया गीयमानत्वात् सर्वासु दिक्षु गच्छतः, सर्वदा राशिचक्रे घूर्णमानस्य चेति तत्परिहारः। निर्म्मलस्येत्यादौ विरोधः स्फुट एव, समाधानन्तु विद्वेषान्मदनवेदनावशाच्च मलिनीकृता अरातिवनितानां शत्रुस्त्रीणां विरहिस्त्रीणाञ्च मुखकमलद्युतिर्येनेति। अतिधवलस्यापि सर्वेषु जनेषु रागकारिणो रक्तिमविधायिन इति विरोधः, सर्वेषां जनानां रागकारिण आत्मन्यनुरागविधायिन इति समाधानम्। एवम्भूतस्य सुधासूतेः सुधाकरस्य चन्द्रस्य जलनिधिः समुद्र इव, एवम्भूतस्य यशसः, उद्भवत्यस्मादित्युद्भव आकरः। अत्र विरोधालङ्कारचतुष्टयसङ्कीर्णा पूर्णोपमालङ्कारः।

সুখ গণনা না করিয়া অকপটে তাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়াছিলেন ; (ঘ) বিষ্ণুর চরণ যেমন মহর্ষিসেবিত গঙ্গাপ্রবাহের উৎপত্তিস্থান, তিনিও তেমন মহর্ষিসেবিত সত্যের উৎপত্তিস্থান ছিলেন ; (ঙ) সমুদ্র যেমন চন্দ্রের আকর, তিনিও তেমন যশের আকর ছিলেন ; চন্দ্র যেমন শীতল হইয়া বিরহিগণের সন্তাপ জন্মান (কামোদ্দীপনানিবন্ধন চিত্তের ক্ষোভ জন্মান,) তাঁহার সেই যশও তেমন শীতল হইয়াও শত্রুদিগের সন্তাপ জন্মাইত ; (ঈর্ষ্যাবশতঃ চিত্তের ক্ষোভ জন্মাইত ;) চন্দ্র যেমন স্থির হইয়াও সর্ব্বদা ভ্রমণ করেন, (আকাশে স্থায়ী হইয়া রাশিচক্রের সঙ্গে সঙ্গে ভ্রমণ করেন,) তাঁহার যশও তেমন স্থির হইয়াও সর্ব্বদা ভ্রমণ করিত ; (চিরস্থায়ী হইয়া লোকমুখে চতুর্দ্দিকে চলিয়া যাইত ;) চন্দ্র যেমন নির্ম্মল হইয়াও বিরহিণী রমণীগণের বদনকমলের কান্তি মলিন করেন, (মদনবেদনা জন্মাইয়া মলিন করেন,) তাঁহার যশও তেমন নির্ম্মল হইয়াও শত্রুস্ত্রীদিগের মুখকমলের শোভা মলিন করিত ; (বিদ্বেষবশতঃ মলিন করিত ;) চন্দ্র যেমন অতিশয় ধবল হইয়াও সকল লোকের রক্তিমা (অনুরাগ) জন্মাইয়া থাকেন, তাঁহার যশও তেমন অতিশয়

---

(१) नित्यं। (२) सागरः।

पातालवदाश्रितो (१) निजपक्षक्षतिभीतैः (२) क्षितिभृतां कुलैः, (३) (च) ग्रहगण इव बुधानुगतः, (छ) मकरध्वज इवोत्सन्न-विग्रहः, (ज) दशरथ इव सुमित्रोपेतः (झ) पशुपतिरिव महासेनानुयातः, (ञ) भुजगराज इव क्षमाभरगुरुः, (ट) नर्म्मदा-प्रवाह इव महावंशप्रभवः, (ठ) अवतार इव धर्म्मस्य, प्रति-

---

(च) पातालवदिति। निजपक्षाणां आत्मीयजनानां स्वकीयपतत्राणाञ्च या क्षतिः विरुद्धतारापीडतो हानिः, इन्द्रेण च्छेदनञ्च ततो भीतैः क्षितिभृतां राज्ञां पर्वतानाञ्च कुलैः समूहैः पातालमिव पातालवत् आश्रितः तारापीडः। इन्द्रकर्त्तृकपक्षच्छेदभीतैः पर्वतगणैर्यथा पातालमाश्रितं तथा विरुद्धतारापीडकर्त्तृकस्वजनहानिभीतैः राजगणैः स आश्रित इति सरलार्थः। पूर्णोपमा।

(छ) ग्रहेति। ग्रहगण इव, बुधैः पण्डितैः, बुधेन सौम्येन चानुगतः। पूर्णोपमा।

(ज) मकरेति। मकरध्वजः कामदेव इव, उत्सन्नो विनष्टः विग्रहो युद्धं शरीरञ्च यस्य सः, एकत्र नीतिकौशलादन्यत्र हरनयनाग्निना दाहादिति भावः। पूर्णोपमा।

(झ) दशेति। दशरथो राजेव, सुमित्रैरुत्तमसुहृद्भिः, सुमित्रया लक्ष्मणजनन्या च उपेतो युक्तः। पूर्णोपमा।

(ञ) पश्विति। पशुपतिः शिव इव, महासेनया विशालसैन्येन, कार्त्तिकेयेन च अनुयातः अनुगतः। पूर्णोपमा।

(ट) भुजगेति। भुजगराजः अनन्तनाग इव, क्षमाभरेण क्षमागुणबाहुल्येन, धारणात् पृथिवीभारेण च गुरुर्गौरवान्वितः भारवांश्च। पूर्णोपमा।

(ठ) नर्म्मदेति। नर्म्मदाया नद्याः प्रवाह इव, महावंशात् प्रशस्तकुलात् विशालवेणुनिकरमध्याच्च प्रभवति उत्पद्यत इति सः। पूर्णोपमा। मेखलाचलस्थवेणुनिकरमध्यान्नर्म्मदाया उत्पत्तिरिति प्रवादः।

ধবল হইয়াও সকল লোকের রক্তিমা (অনুরাগ) জন্মাইত ; (চ) পর্ব্বতগণ যেমন ইন্দ্রকর্ত্তৃক আপনাদের পক্ষচ্ছেদনের ভয়ে পাতাল আশ্রয় করিয়াছিল, অন্যান্য রাজগণও তেমন নিজেদের ক্ষতির ভয়ে তারাপীড়কে আশ্রয় করিয়াছিলেন ; (ছ) বুধ যেমন অন্যান্য গ্রহগণের অনুগমন করেন, পণ্ডিতগণও তেমন তারাপীড়ের অনুগমন করিতেন ; (জ) কামদেবের যেমন দেহ নাই, তারাপীড়েরও তেমন যুদ্ধ ছিল না ; (ঝ) রাজা দশরথ যেমন সুমিত্রানামে ভার্য্যার সহিত সম্মিলিত ছিলেন, তারাপীড়ও তেমন উত্তম সুহৃদ্‌গণের সহিত সম্মিলিত ছিলেন ; (ঞ) কার্ত্তিক যেমন শিবের অনুগমন করেন, বিশাল সৈন্যমণ্ডলীও তেমন তারাপীড়ের অনুগমন করিত ; (ট) নাগরাজ অনন্ত যেমন পৃথিবী ধারণ করায় ভারবান্, তারাপীড়ও তেমন অতিশয় ক্ষমাগুণে গৌরবসম্পন্ন ছিলেন ; (ঠ) নর্ম্মদানদীর প্রবাহ যেমন বিশাল বংশসমূহ (বাঁশঝাড়) হইতে উৎপন্ন হইয়াছে, তারাপীড়ও তেমন উচ্চ কুল হইতে উৎপন্ন হইয়াছিলেন ;

---

(१) पाताल इव। (२) क्षितिभीतैः। (३) क्षितिभृत्कुटिलैः।

निधिरिव पुरुषोत्तमस्य, परिहृत-(१) प्रजापीडो राजा तारापीडो नामाभूत् (२)। (ड)

यस्तमः-प्रसर-मलिनवपुषा पापबहुलेन कलिकालेन चालितमामूलतो धर्म्मं दशाननेनेव कैलासमिव (३) पशुपतिरिवावष्टभ्य पुनरपि स्थिरीचकार (४)। (ढ)

यञ्च रति-प्रलाप-जनित-(५) दयार्द्र-हृदय-हर-निर्म्मितमपरमिव (६) मकरकेतुममंस्त लोकः। (ण)

(ड) धर्मेति। धर्मस्य धर्मराजस्य अवतार इव, रूपान्तरेणोत्पन्नः अंश इव, सर्वदा न्यायसत्यानुसरणादित्याशयः। पुरुषोत्तमस्य नारायणस्य प्रतिनिधिरिव साहश्यात् कार्य्यभारप्राप्त इव, सर्वदा जगत्परिपालनपरायणत्वादिति भावः। उभयत्रापि जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। परिहृता परित्यक्ता प्रजानां पीडा दुर्वहकरभारार्पणादिजनितयातना येन सः।

(ढ) य इति। पशुपतिर्महादेव इव यस्तारापीडः, दशाननेन रावणेनेव, तमसां तमोगुणानां प्रसरेण बाहुल्येन मलिनं वपुर्यस्य तेन, तथा पापमेव बहुलं अतिरिक्तं यस्मिन् तेन, कलिकालेन आमूलतः मूलादवधि चालितं स्वस्थानाद्भ्रंशयितुमुपक्रान्तं, कैलासं पर्वतमिव धर्म्मं, अवष्टभ्य सर्वतः श्रौतस्मार्त्तविधानप्रवर्त्तनेन पादाङ्गुष्ठनिर्भरेण च आश्रित्य, पुनरपि स्थिरीचकार निश्चलं कृतवान्। अत्र तिसृणामेवोपमानामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। पुरा किल परमशैवेन दशाननेन शिवार्च्चनाय प्रतिदिनं लङ्कातः कैलासागमनपरिश्रमं परिजिहीर्षुणा तमचलमुत्तोल्य लङ्कायां नीयमानं भगवान् महेश्वरश्चरणाङ्गुष्ठभरेण पुनरपि स्वस्थाने स्थापयामासेति रामायणवार्त्ता।

(ण) यमिति। रतेः कामभार्य्यायाः प्रलापेन कामदेवविनाशजनितशोकात् विलापेन, जनिता या दया तया आर्द्रं हृदयं यस्य तेन हरेण शिवेन निर्म्मितं अपरं मकरकेतुं कामदेवमिव यं तारापीडं अमंस्त मनसि चकार। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन चास्य परमसौन्दर्य्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ড) আর তিনি, ধর্ম্মের যেন অবতার এবং নারায়ণের যেন প্রতিনিধিস্বরূপ ছিলেন এবং প্রজাগণের কোনরূপ পীড়ন করিতেন না।

(ঢ) রাবণ কৈলাসপর্ব্বতকে মূল হইতে সঞ্চালিত করিলে মহাদেব চরণাঙ্গুষ্ঠের ভরে যেমন পুনরায় তাহাকে স্থির করিয়াছিলেন, সেইরূপ তমোগুণের বাহুল্যনিবন্ধন কৃষ্ণবর্ণ এবং অধিকপরিমাণে পাপশালী কলিকাল ধর্ম্মকে মূল হইতে সঞ্চালিত করিলে তারাপীড় শ্রুতি ও স্মৃতির বিধান প্রবর্ত্তিত করিয়া সেই ধর্ম্মকে পুনরায় স্থির করিয়াছিলেন।

(ণ) এবং মহাদেব রতির বিলাপে দয়ার্দ্রচিত্ত হইয়া আর একটি কামদেব যেন নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছেন বলিয়া যে তারাপীড়কে সকলে মনে করিত।

---

(१) परिहृत...। (२) तारापीडोऽभूत्, तारापीडोऽभवत्। (३) कैलासं। (४) चक्रे।
(५)...उपजनित। (६) अपरं।

यस्य जलनिधि-तरङ्ग-धौत-मेखलात् पत्रान्तर-(१) विचारि-तारागण-द्विगुणित-तट-तरु-कुसुम-प्रकरात् उद्यदिन्दु-विम्ब-विगलदमृत-विन्द्वासाराद्र्-(२) चन्दनात् अशिशिरकर-रथ-तुरङ्ग-(३) खुर-शिखरोल्लेख-खण्डितोल्लसल्लवङ्ग-(४) पल्लवात् ऐरावत-कर-(५) लून-शल्लकी-किसलयात् (६) आ शैलादुदयनाम्नः, (त) कपिवल-(७) विलुप्त-विरल-लवलीलता-फलात् उदधि-विनिर्गत-जलदेवताभिवन्द्य-मान-राघवपादात् अचल-पात-(८) दलित-शङ्खकुल-शकल-तारकित-शिलातलात्

(त) यश्चेति। अपि चेति चार्थः। पूर्वदिगवस्थितादुदयशैलात् दक्षिणदिगवस्थितात् सेतुबन्धात् पश्चिमदिगवस्थितान्मन्दराचलात् उत्तरदिगवस्थिताच्च गन्धमादनशैलादारभ्य अवनीपतयो राजानो यं प्रणेमुरिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत्र पञ्चम्यन्तपदानि तेषामचलानां विशेषणानि। तत्रादावुदयशैलविशेषणान्याह जलनिधीति। जलनिधेः पूर्वसागरस्य तरङ्गैर्धौता मेखला मध्यभागो यस्य तस्मात्। पत्रान्तरविचारिभिः अत्युच्चतया नक्षत्रमण्डलस्पर्शित्वात् पर्णमध्यसञ्चारिभिः, तारागणैर्नक्षत्रसमूहैः, द्विगुणितः कुसुमतुल्यवर्णत्वात् द्विगुणीकृतः तटतरूणां स्वोच्चदेशस्थवृक्षाणां कुसुमप्रकरो यस्य तस्मात्। उद्यत उदयमानात् इन्दुविम्बात् चन्द्रमण्डलात् विगलतां अमृतविन्दूनां आसारेण धारासम्पातेन आर्द्राश्चन्दना वृक्षा यस्मिन् तस्मात्। अशिशिरकरस्य सूर्य्यस्य ये रथतुरङ्गा रथनियुक्तघोटकास्तेषां खुरशिखरैः खुराग्रभागैर्य उल्लेखो घर्षणं तेन खण्डितानि छिन्नानि अतएव उल्लसन्ति स्फुरन्ति लवङ्गपल्लवानि यस्मिन् तस्मात्। ऐरावतस्य हस्तिनः करेण शुण्डया लूनानि छिन्नानि शल्लकीनां हस्तिखाद्यवृक्षविशेषाणां किसलयानि पल्लवानि यस्मिन् तस्मात्। उदयनाम्नः शैलात् आ आरभ्येत्यर्थः। अत्र पत्रान्तरेत्यादौ, उद्यदित्यादौ, अशिशिरेत्यादौ च विशेषणे प्रत्येकमसम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्तिरलङ्कारः, तेषाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(थ) सेतुबन्धं विशेषयन्नाह कपीति। कपिवलेन लङ्कागमनसमये वानरसैन्येन विलुप्तानि भक्षणाय छिन्नानि अतएव विरलानि अल्पीभूतानि लवलीलतानां फलानि यस्मिन् तस्मात्। उदधेः सागरात् विनिर्ग-

---

(ত) পূর্ব্বদিকে উদয়াচল হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে নমস্কার করিতেন। সমুদ্রের তরঙ্গে যে উদয়াচলের মধ্যস্থান ধৌত হইতেছে; যে উদয়াচলের উপরিস্থিত বৃক্ষসমূহের পত্রের অভ্যন্তরে বিচরণকারী নক্ষত্রসমূহে কুসুমসমূহকে যেন দ্বিগুণ করিয়াছে বলিয়া প্রতীতি হইয়া থাকে; উদয়মান চন্দ্রমণ্ডল হইতে নিঃসৃত অমৃতবিন্দুর বৃষ্টিতে যে উদয়াচলের চন্দনবৃক্ষ সকল আর্দ্র হইয়া যায়; সূর্য্যের রথে নিযুক্ত অশ্বগণের খুরের আঘাতে যে উদয়াচলের লবঙ্গপল্লবগুলি ছিন্ন হইয়া স্পন্দিত হইতে থাকে; এবং ঐরাবতহস্তী শুণ্ডদ্বারা যে উদয়াচলের শল্লকীবৃক্ষের পল্লবগুলি ছিন্ন করিয়া থাকে।

(থ) আর দক্ষিণদিকে সেতুবন্ধ হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে নমস্কার করিতেন। রামের সঙ্গে লঙ্কায় যাইবার সময়ে বানরসৈন্যগণ অধিকপরিমাণে

---

(१) पत्रान्तः...। (२) तुहिनार्द्र...। (३)...तुरग...। (४)...लवङ्ग...। (५)...करतल..., करतलरोध..., करतूलनशोध...। (६)...कवलात्। (७) कपिकुल...। (८) निपती...।

नल-करतलाकलित-शैल-सहस्र-सम्भूताद् सेतुबन्धात्, (थ) अच्छ-निर्झर-जल-धौत-तारका-सार्थात् अमृत-मथनोद्यत-वैकुण्ठ-केयूरपत्र-मकरकोटि-कषण-मसृणित-ग्रावणः सुरासुर-हेला-वलयित-(१) वासुकि-समाकर्षण-प्रारम्भ-चलित-(२) चरण-भर-दलित-नितम्बात् (३) अमृत-सीकर-सिक्तसानोरा मन्दराचलात् (४), (द)

तया उत्थितया जलदेवतया अभिवन्द्यमानाः पूज्यमानाः राघवस्य रामस्य पादाः चरणचिह्नानि यस्मिन् तस्मात्। अचलानां शैलानां पातेन निक्षेपेण सेतुबन्धनसमये पर्वतनिक्षेपाघातेनेत्यर्थः दलितानां भग्नानां शङ्खकुलानां शकलैः खण्डैः तारकितानि सञ्जाततारकाणि शिलातलानि यस्मिन् तस्मात्। नलस्य तदाख्यस्य विश्वकर्मपुत्रस्य वानरप्रधानस्य करतलेन आकलितेन संस्थापितेन शैलसहस्रेण पर्वतसमूहेन सम्भूतात् उत्पन्नात् सेतुबन्धात् आ आरभ्य। अत्र शङ्खकुलशकलतारकितेत्यनेन शङ्खखण्डा एव नक्षत्रश्रेणितया प्रतीयन्ते स्मेति तात्पर्य्याद्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

(द) मन्दराचलं विशेषयन्नाह अच्छेति। अच्छैर्निर्म्मलैः निर्झरजलैः धौतः प्रक्षालितः तारकाणां नक्षत्राणां सार्थः समूहो यस्मिन् तस्मात्, अत्युन्नतया नक्षत्रमण्डलस्पर्शित्वादिति भावः। अमृतमथने सागर-मन्थनपूर्व्वकामृतोत्तोलन इत्यर्थः, उद्यतस्य प्रवृत्तस्य वैकुण्ठस्य विष्णोः, केयूरपत्राणां पत्राकारबाहुभूषणविशेषाणां या मकरकोटयः मकराकाराग्रभागाः तेषां कषणेन घर्षणेन मसृणिताः स्निग्धीकृताः ग्रावाणः पाषाणा यस्य तस्मात्। सुरासुरैः हेलया वलयितो मण्डलीकृतो यो वासुकिरनन्तनागस्तस्य समाकर्षणप्रारम्भेण चलितानां चरणानां तेषामेव सुरासुराणां पादानां भरेण दलितो मर्द्दितो नितम्बो मध्यदेशो यस्य तस्मात्। अमृतस्य उत्तिष्ठन्त्याः सुधायाः, सीकरैर्विन्दुभिः सिक्ताः सानवः प्रस्थदेशा यस्य तस्मात्, मन्दराचलात् आ आरभ्य। पुरा किल नारायणेन कूर्म्मरूपेण पृष्ठे धृतं ऊर्द्ध्वे च विष्णुरूपेणैव बाहुभ्यामावेष्ट्य रक्षितं मन्दराचलं मन्थानदण्डं, वासुकिञ्च रज्जुं विधाय सुरासुराः सागरं मथितवन्त इति महाभारतवार्त्ता।

নিয়া গিয়াছিল বলিয়া যে সেতুবন্ধে লবলীফল (নোয়াড়ি, নোয়াইল) অঙ্গ হইয়া গিয়াছে ; জলদেবতাগণ সমুদ্র হইতে নির্গত হইয়া যে সেতুবন্ধস্থিত রামচন্দ্রের চরণচিহ্নগুলির পূজা করিয়া থাকে ; নিক্ষিপ্ত পর্ব্বতের আঘাতে চূর্ণিত শঙ্খসমূহের খণ্ডগুলি যে সেতুবন্ধের প্রস্তর সকলের উপরে নক্ষত্রপুঞ্জের ন্যায় প্রতীতি হইয়াছিল ; এবং বানরশ্রেষ্ঠ নলের হস্তনিক্ষিপ্ত পর্ব্বতসমূহে যে সেতুবন্ধ নির্ম্মিত হইয়াছিল। (দ) এবং পশ্চিমদিকে মন্দরপর্ব্বত হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে নমস্কার করিতেন। যে মন্দরপর্ব্বতের নির্ঝরজলে নক্ষত্ররাশি ধৌত হইয়াছিল ; অমৃতমন্থনে প্রবৃত্ত বিষ্ণুর কেয়ূরসমূহের মকরাকার অগ্রভাগের ঘর্ষণে যে মন্দরপর্ব্বতের পাষাণসমূহ মসৃণ (পালিস) হইয়াছিল ; দেব ও দানবগণ অবহেলায় মণ্ডলীকৃত বাসুকিনাগের আকর্ষণ আরম্ভ করিলে তাঁহাদের চঞ্চল চরণসমূহের ভরে যে মন্দরাচলের মধ্যদেশ মর্দ্দিত হইয়াছিল আর উত্থিত অমৃতবিন্দুসমূহে মন্দরাচলের অনেক

(१) सुरासुरावलयित...। (२)...आरम्भचलचरण..., ...चलावलितचरण...। (३) नितम्बकटकात्।
(४) मन्दरात्।

नर-नारायण-चरण-मुद्राङ्कित-वदरिकाश्रम-रमणीयात् कुवेर-पुर-सुन्दरी-भूषण-रव-मुखर-शिखरात् सप्तर्षि सन्ध्योपासना-पूत-प्रस्रवणाम्भसः वृकोदरोद्दलित-सौगन्धिक-षण्ड-सुगन्धि-मेखलात् (१) आ गन्धमादनात्, (ध) सेवाञ्जलि-कमल-मुकुल-दन्तुरैः (२) शिरोभिश्चरण-नख-मयूख-(३) ग्रथित-मुकुटपत्रलता-ग्रन्थयो भय-चकित-तरल-तारका-(४) दृशो भुजवल-विजिताः प्रणेमुरवनीपतयः (५)। (न)

(ध) गन्धमादनं विशेषयन्नाह नरेति। नरनारायणयोस्तदाख्ययोर्मुन्योः चरणमुद्राभिः पादन्यासचिह्नैः अङ्कितश्चिह्नितो यो वदरिकाश्रमस्तेन रमणीयात्। कुवेरपुरसुन्दरीणां अलकानगरीस्थरमणीनां भूषणरवैः मुखराणि सशब्दानि शिखराणि शृङ्गाणि यस्य तस्मात्। सप्तर्षीणां मरीच्यादीनां सन्ध्योपासनया पूतानि पवित्राणि प्रस्रवणाम्भांसि निर्झरजलानि यस्य तस्मात्। तथा वृकोदरेण भीमसेनेन उद्दलितं आमर्द्दितं यत् सौगन्धिकषण्डं कह्लारसमूहस्तेन सुगन्धिर्मेखला मध्यभागो यस्य तस्मात्। गन्धमादनात् आ आरभ्य। यदा तु द्यूतनिर्जिताः पाण्डवा द्वैतवनमध्यासीना आसन्, तदा द्रौपद्या अभिलाषात् भीमेन गन्धमादनाद्गन्धर्वान् विजित्य सौगन्धिकान्याहृतानीति महाभारतवार्त्ता।

अहो इत्थमनुपयोगिनी वर्णना खल्वलाबुलम्बितस्तनी वातपरिपीवरशरीरा प्रौढनारीव नितरां विरक्तिमावहति प्रकृतरसिकानाम्।

(न) अथावनीपतीन् विशेषयन्नाह सेवेति। सेवाञ्जलय एव आनुगत्यप्रदर्शनाय ललाटे करयुगलसंयोगा एव कमलमुकुलानि पद्मकलिका अथवा सेवाञ्जलयः कमलमुकुलानीव, तैर्दन्तुराणि विषमाणि तैः। अत्र साधकबाधकप्रमाणाभावादुपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। शिरोभिर्मस्तकैर्विशिष्टाः। चरणनखमयूखैस्तारापीडस्य पदनखरश्मिभिः ग्रथिता नमस्कारकाले संस्पृष्टाः मुकुटानां अवनीपतीनामेव किरीटानां पत्रलताग्रन्थयः पत्रलताकाररचितबन्धनानि येषां ते। भयेन चकिता अधीराः तरला भास्वराः, "तरलो भास्वरे

স্থান সিক্ত হইয়াছিল। (ধ) আবার উত্তরদিকে গন্ধমাদনপর্ব্বত হইতে আরম্ভ করিয়াও সমস্ত রাজগণ আসিয়া যে তারাপীড়কে প্রণাম করিতেন। যে গন্ধমাদনপর্ব্বত নর ও নারায়ণ ঋষির চরণচিহ্নে চিহ্নিত বদরিকাশ্রমদ্বারা মনোহর; আর কুবেরের রাজধানী অলকানগরীস্থিত রমণীগণের অলঙ্কারের শব্দে যাহার শৃঙ্গগুলি শব্দায়মান, এবং সপ্তর্ষিগণ সন্ধ্যোপাসনা করায় যাহার নির্ঝর-জল পবিত্র হইয়াছে আর ভীমসেনকর্ত্তৃক কহ্লারবন (সুঁদি সাপলার বন) দলিত হওয়ায় যাহার মধ্যভাগ সৌরভময় হইয়াছিল। (ন) নমস্কার করিবার সময়ে সেই সকল রাজগণ ললাটদেশে কমলকলিকার ন্যায় অঞ্জলিবন্ধন করিলে তাঁহাদের মস্তক উঁচু নীচু হইয়া যাইত, তারাপীড়ের চরণনখের কিরণে তাঁহাদের কিরীটের পত্রলতাগ্রন্থিগুলি সংস্পৃষ্ট হইত, আর ভয়ে উজ্জ্বল নয়নের তারাগুলি কাঁপিতে থাকিত; কারণ—তাঁহারা সকলেই তারাপীড়ের বাহুবলে নির্জ্জিত হইয়াছিলেন।

---

(१)...मेखलात्। (२) मुकुलैर्दन्तुरैः। (३)...मयूखाग्र..। (४)...तार...। (५) अवनिपाः।

येन चानेक-रत्नांशुजाल-(१) पल्लविते व्यालम्बिमुक्ताफलजालके (२) दिग्गजेनेव कल्पतरावाक्रान्ते सिंहासने भरेण शिलीमुखव्यतिकरकम्पिता लता इव नेमुरायामिन्यः सर्वा दिशः (३)। (प)

यस्मै च मन्येऽनन्यसाधारणशक्तिसम्पदे (४) सुरपतिरपि स्पृहयाञ्चकार। (फ)

यस्माच्च धवलीकृत-भुवनतलः सकल-लोक-हृदयानन्दकारी क्रौञ्चादिव हंसनिवहो निर्जगाम गुणगणः। (ब)

चक्षि" इत्यादि हेमः, तारका कनीनिका यासां तास्तथोक्ता इशश्चक्षूंषि येषां ते। भुजबलेन तारापीडस्यैव बाहुबलेन विजिता आयत्तीकृताः।

(प) येनेति। दिग्गजेन कल्पतराविव येन तारापीडेन, अनेकेषां रत्नानां खनिविष्टानां मणीनां अंशुजालैः किरणसमूहैः पल्लविते सर्वतः प्रसरणाद्विस्तारिते सञ्जातानेकरत्नांशुजालात्मककिसलये च, तथा व्यालम्बि लम्बमानं मुक्ताफलजालं मुक्तामाला यस्मिन् तादृशे सिंहासने आक्रान्ते आरूढे भूते च सति, भरेण तदीयभारेण, शिलीमुखानां तत्कल्पतरुत उड्डीय पततां भ्रमराणां वाणानाञ्च व्यतिकरेण सम्पर्केण कम्पिता लता इव तत्कल्पतरुसन्निहिता वल्लय इव, आयामिन्यो दीर्घाः सम्पूर्णा इत्यर्थः सर्वा दिशो नेमुः आयत्ता अवनताश्च बभूवुः। अत्र पूर्णोपमयोर्मिथः सापेक्षत्वात् सङ्करः।

(फ) यस्मा इति। सुरपतिरिन्द्रोऽपि, अनन्यसाधारणशक्तिसम्पदे यस्मै च तारापीडाय स्पृहयाञ्चकार तथाविधामात्मनः शक्तिसम्पदमभिलषितवानित्यर्थः। इत्यहं मन्य इति वाचकशब्दसद्भावादत्र वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) यस्मादिति। क्रौञ्चात् पर्वतात् हंसनिवह इव। गुणगणो दयादाक्षिण्यादिः। निर्जगाम तमनुचिकीर्षूणां जनानां हृदय इति शेषः। अत्रोपमालङ्कारः। पुरा किल भार्गवो भगवतो महेश्वरादनु-

---

(প) কোন দিগ্‌হস্তী কল্পবৃক্ষকে আক্রমণ করিলে তাহা হইতে ভ্রমরগণ যাইয়া বসিলে তাহাদের ভরে কম্পিত হইয়া নিকটবর্ত্তী লতাসমূহ যেমন অবনত হইয়া পড়ে; সেইরূপ, বহুতর রত্ন-কিরণে বিস্তৃত এবং লম্বমান মুক্তামালাসংযুক্ত সিংহাসনে মহারাজ তারাপীড় আরোহণ করিলে তাঁহার ভরে এবং বাণপ্রহারের ভয়ে কম্পিত হইয়া সকল দিক্ তাঁহার নিকট সম্পূর্ণরূপে অবনত হইয়াছিল।

(ফ) আমি মনে করি—স্বয়ং দেবরাজ ইন্দ্রও, তারাপীড়ের অসাধারণ শক্তি ও সম্পদ দেখিয়া তদনুরূপ শক্তি ও সম্পদ লাভ করিবার ইচ্ছা করিতেন।

(ব) পূর্ব্বকালে ক্রৌঞ্চপর্ব্বত হইতে হংসগণ যেমন নির্গত হইয়াছিল, সেইরূপ দয়াদাক্ষিণ্য

---

(१) अंशुकजाल, अंशुजाल...। (२)...मुक्ताजालकै। (३) सर्वदिशः। (४) मन्ये सुर...।

যস্য চামৃতামোদ-সুরভিপরিমলয়া মন্দরোদ্ধত-(১) বহুল-দুগ্ধসিন্ধু-ফেন-লেখয়েব ধবলীকৃতসুরাসুরলোকয়া দশসু দিক্ষু মুখরিত-ভুবনমভ্রম্যত (২) কীর্ত্ত্যা। (ভ) যস্য চাতিদুঃসহ-প্রতাপ-সন্তাপ-খিদ্যমানেব ক্ষণমপি ন মুমোচাতপত্রচ্ছায়াং (৩) রাজলক্ষ্মীঃ। (ম) তথা চ যস্য (৪) দিষ্টিবৃদ্ধিমিব শুশ্রাব, উপদেশমিব জগ্রাহ, মঙ্গলমিব (৫) বহু মেনে, মন্ত্রমিব জজাপ, আগমমিব (৬) ন বিসস্মার চরিতং জনঃ। (য)

বেদং শিক্ষমাণঃ কদাচিৎ কার্ত্তিকেয়েন স্পর্দ্ধমানঃ শরেণ ক্রৌঞ্চগিরিং বিদারয়ামাস, তদ্বিবরাচ্চ হংসা নির্গতা ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তবার্ত্তা।

(ভ) যস্যেতি। অমৃতামোদবৎ সুধাগন্ধবৎ মথনোত্থিতামৃতামোদেন চ সুরভির্ঘ্রাণতর্পণঃ পরিমলো গন্ধো যস্যাস্তয়া, তথা ধবলীকৃতাঃ সুরাসুরলোকাঃ জগদ্ব্যাপনাৎ দেবলোকদানবলোকাঃ মথনপ্রবৃত্তা দেবদানবাশ্চ যয়া তয়া। মন্দরেণ ঘূর্ণিতমন্দরাচলেন উদ্ধৃতা উত্তোলিতা বহুলা যা দুগ্ধসিন্ধোঃ ক্ষীরোদসাগরস্য ফেনলেখা তয়েব, যস্য কীর্ত্ত্যা, মুখরিতং স্বকীয়ালোচনাশব্দৈঃ আলোড়নশব্দৈশ্চ শব্দায়মানীকৃতং ভুবনং যস্মিন্ কর্ম্মণি তৎ যথা তথা দশসু দিক্ষু অভ্রম্যত। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ। "কীর্ত্ত্যাঃ সৌগন্ধ্যং বর্ণ্যতে" ইতি ভানুচন্দ্রধৃতাৎ অমৃতামোদেত্যাদুক্তঃ কীর্ত্তেঃ পরিমলঃ খ্যাতিবিরুদ্ধোঽপি গুণ এব। তথা চ দর্পণঃ— "কবীনাং সময়ে খ্যাতে গুণঃ খ্যাতবিরুদ্ধতা।" অভ্রম্যতেতি ভাবে লঙ্।

(ম) যস্যেতি। রাজলক্ষ্মীঃ, অতিদুঃসহঃ প্রতাপঃ কোষদণ্ডজাতং তেজ এব প্রতাপঃ সূর্য্যাদিতেজঃ তস্মাদ্ যঃ সন্তাপ উষ্ণতা তেন খিদ্যমানেব ক্লিশ্যমানেব সতী ক্ষণমপি যস্য আতপত্রচ্ছায়াং রাজচ্ছত্রস্য অনাতপতলস্থলং ন মুমোচ সূর্য্যাদিতাপতপ্তস্য ছায়াশ্রয়ণস্যাবশ্যকত্বাদিতি ভাবঃ। অত্র কোষদণ্ডজতেজঃ-সূর্য্যাদিতেজসোর্ভেদেঽপি শ্লেষেণাভেদাধ্যবসায়াদতিশয়োক্তিঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(য) তথাচেতি। তথাচ অপিচেত্যর্থঃ। জনো লোকঃ যস্য চরিতং শৌর্য্যদয়াদিকং দিষ্টিবৃদ্ধিমিব দৈবজ্ঞমুখাৎ স্বকীয়ভাগ্যোপচয়মিব লোকমুখাৎ শুশ্রাব, লালসয়া কৌতুকেন চ আয়ত্যাতিশয়সম্ভবাদিতি ভাবঃ।

প্রভৃতি গুণগ্রাম, সমগ্র জগৎ শুভ্রবর্ণ করিয়া এবং সকল লোকের চিত্তে আনন্দ জন্মাইয়া যে তারাপীড় হইতে নির্গত হইয়াছিল।

(ভ) আর, অমৃতসৌরভের ন্যায় নাসিকার তৃপ্তিজনক সৌরভসম্পন্ন, এবং মন্দরপর্ব্বতের আলোড়নে বহুপরিমাণে উত্থিত ক্ষীরোদসাগরের ফেনরাশির ন্যায় শুভ্রবর্ণ যাঁহার কীর্ত্তি, দেবলোক ও দানবলোককে শুভ্রবর্ণ করিয়া এবং ভুবনমণ্ডলকে নিজের আলোচনায় মুখরিত করিয়া দশ দিকে ভ্রমণ করিয়াছিল। (ম) এবং রাজলক্ষ্মী, যাঁহার অত্যন্ত দুঃসহ তেজের উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া ক্ষণকালের জন্যও রাজচ্ছত্রের ছায়া পরিত্যাগ করেন নাই। (য) আর লোকে যাঁহার চরিত্র, দৈবজ্ঞমুখে নিজের সৌভাগ্যবৃদ্ধির ন্যায় আগ্রহসহকারে

---

(১) মন্দরোদ্ধূত...। (২) অভ্রাম্যত। (৩) আতপত্রচ্ছায়া। (৪) অস্য।
(৫) বহুমঙ্গলমিব মেনে। (৬) আগমবচনমিব।

यस्मिंश्च राजनि गिरीणां विपक्षता, प्रत्ययानां परत्वम्, दर्पणानामभिमुखावस्थानम्, शूलपाणिप्रतिमानां दुर्गाश्लेषः, जलधराणां चापधारणम्, (१) प्रतीहाराणामसिधारणम्, तैक्ष्ण्यमसिधाराणाम्, (२) ध्वजानामुन्नतिः, धनुषामवनतिः,

---

गुरोरुपदेशमिव शशाक शिशिक्षे, उभयोरप्युन्नतिहेतुत्वादित्याशयः। मङ्गलमिव स्वकीयशुभोदयमिव बहु मेने आद्रियते स्म सुखहेतुत्वादित्यभिप्रायः। उपास्यमन्त्रमिव जजाप असकृदुच्चारयामास, तज्जपेन तदनुकरणस्य सुकरत्वात् मन्त्रपक्षे च इष्टसाधनत्वादिति भावः। आगमं अधीतवेदमिव न विसस्मार न विस्मृतवान्, एकत्र "मन्मोऽभ्रतौ" इत्यादिमनुवचनेन पापोदयादन्यत्र मनोहरत्वादिति आशयः। अत्र सर्वत्रोपमालङ्कारः।

(२) यस्मिन्निति। गिरीणां पर्वतानामेव विपक्षता इन्द्रेण च्छेदनात् पक्षराहित्यं, न तु लोकानां विपक्षता परस्परशत्रुता तत्कारणाभावात्। पृथिव्यामासीदिति वक्ष्यमाणक्रियया सर्वत्रान्वयः। इतः प्रभृति "मधुक्रीडासु मृत्युमदर्शनम्" इत्यन्तं यावत् सर्वत्र यथासम्भवं श्लेषसङ्कीर्णा आर्थी परिसंख्यालङ्कारः। प्रत्ययानां सुप्तिङादीनामेव परत्वं प्रातिपदिकादिप्रकृतेरुत्तरवर्त्तित्वं, न तु लोकानां परत्वं अनात्मीयत्वं सर्वदा सद्व्यवहारात्। दर्पणानां मुकुराणामेव अभिमुखावस्थानं सम्मुखेऽवस्थितिः, न तु लोकानां लोकान्तरस्य प्रहारार्थमभिमुखावस्थानं तादृशविद्वेषाभावात्। शूलपाणिप्रतिमानां मृत्तिकादिनिर्म्मितशिवप्रतिकृतीनामेव दुर्गाया दुर्गाप्रतिमाया आश्लेषः संयोगः, न तु लोकानां दुर्गेषु आश्लेषः आश्रयः, विपक्षाक्रमणाशङ्काया अभावात्। जलधराणां मेघानामेव चापधारणं इन्द्रधनुर्धारणं, न तु लोकानां चापधारणं धनुर्धारणं युद्धाभावात्। प्रतीहाराणां द्वारपालानामेव असिधारणं, न तु लोकानां लोकान्तरप्रहारार्थमसिधारणं शत्रुताया एवाभावात्। असिधाराणां तरवारिनिशिताग्रानामेव तैक्ष्ण्यं तीक्ष्णता, न तु लोकानां तैक्ष्ण्यं उग्रस्वभावत्वं सुशिक्षागुणेन सर्वेषामेव मधुरस्वभावत्वात्। ध्वजानां केतूनामेव उन्नतिरुत्थितिः, न तु

শুনিত, গুরুর উপদেশের ন্যায় শিক্ষা করিত, মঙ্গললাভের ন্যায় আদর করিত, ইষ্টমন্ত্রের ন্যায় জপ করিত এবং বেদের ন্যায় কখনও বিস্মৃত হইত না।

(২) আর যিনি রাজা হইলে পর পৃথিবীতে পর্ব্বতগণেরই বিপক্ষতা (পক্ষহীনতা) ছিল, কিন্তু লোকের মধ্যে বিপক্ষতা (পরস্পর শত্রুতা) ছিল না; সুপ্ ও তিঙ্ প্রভৃতি প্রত্যয়েরই পরত্ব (প্রকৃতির পরবর্ত্তিত্ব) ছিল, কিন্তু লোকের মধ্যে পরত্ব (পরস্পর অনাত্মীয়তা) ছিল না; দর্পণই অভিমুখে অবস্থান করিত, কিন্তু প্রহার করিবার জন্য এক ব্যক্তি অপর ব্যক্তির অভিমুখে অবস্থান করিত না; শিবের প্রতিমারই দুর্গাশ্লেষ (দুর্গা প্রতিমার সংযোগ) ছিল, কিন্তু লোকের দুর্গাশ্লেষ (দুর্গ আশ্রয়) ছিল না; মেঘেরই চাপধারণ (ইন্দ্রধনু ধারণ) ছিল, কিন্তু লোকের চাপধারণ (যুদ্ধের জন্য ধনুর্গ্রহণ) ছিল না; দ্বারপালগণেরই তরবারিধারণ ছিল, কিন্তু অপর লোকের ছিল না; তরবারির ধারেরই তীক্ষ্ণতা ছিল, কিন্তু কাহারও স্বভাবের তীক্ষ্ণতা ছিল না; ধ্বজদণ্ডেরই উন্নতি (উত্থান) ছিল, কিন্তু লোকের উন্নতি (ঔদ্ধত্য)

---

(१) पक्षाणां जलच्छित्त्यै, इति क्वचिदधिकः पाठः। (२) प्रतिहाराणामित्यादिः असिधाराणामित्यन्तः पाठः क्वचिन्नास्ति।

वंशानां शिलीमुखक्षतिः, (१) देवतानां यात्रा, कुसुमानां बन्धनस्थितिः, इन्द्रियाणां निग्रहः, वनकरिणां वारिप्रवेशः, व्रतिनामग्निधारणम्, (२) ग्रहाणां तुलारोहणम्, अगस्त्योदये विषशुद्धिः, केशनखानामायतिभङ्गः, जलधर-(३) दिवसानां मलिनाम्बरत्वम्, रत्नोपलानां भेदः, मुनीनां योगसाधनम् (४) कुमार-

लोकानां उन्नतिरौद्धत्यं गर्वोष्माभावात्। धनुषामेव अवनतिः शिक्षासमये गुणाकर्षणेनावनमनं, न तु लोकानामवनतिः अवस्थाह्रासः सर्वेषामेव महोद्यमेन धनाद्यर्जनात्। वंशानां वेणूनामेव शिलीमुखैः भ्रमरैः क्षतिर्विवरविधानेन हानिः, न तु लोकानां शिलीमुखैर्बाणैः क्षतिरवदारणं युद्धाभावात्। देवतानामेव यात्रा पूजायामुत्सवः, न तु सैन्यानां यात्रा युद्धार्थं गमनं विपक्षाभावात्। "यात्रोत्सवे गतौ वृत्तौ" इति हेमः। कुसुमानां पुष्पाणामेव बन्धनेषु वृन्तेषु स्थितिः, न तु लोकानां बन्धने बन्धनगृहे कारागारे स्थितिः, अपराधाभावात्। इन्द्रियाणां मनःप्रभृतीनामेव निग्रहो योगानुष्ठानेन दमनं, न तु लोकानां निग्रहो दमनं दुर्व्यवहाराभावात्। वनकरिणां वन्यहस्तिनामेव वारौ बन्धनस्थाने प्रवेशः शिक्षार्थं प्रवेशनम्, न तु लोकानां वारिणि जले प्रवेशः 'यद्यहं पापी स्यां तदा मग्नो भवेय'मिति शपथेनावतरणं पापाभावात्। "वारि ह्रीवेर-नीरयोः। वारिर्घटायां सरस्वत्यां गजबन्धनभुव्यपि।" इति हेमः। व्रतिनां अग्निहोत्रादिनियमवतामेव अग्निधारणं होमार्थमग्निग्रहणं, न तु लोकानां 'यद्यहं पापी स्यां तदाग्निना दग्धहस्तो भवेय'मिति शपथेनाग्निधारणं पापाभावात्। ग्रहाणां रव्यादीनामेव तुलारोहणं तुलाराशौ गमनं, न तु लोकानां 'यद्यहं पापी स्यां तदा नीचगामी भवेय'मिति शपथेन तुलादण्डारोहणं पापाभावात्। अगस्त्योदये सौरभाद्रमासशेषे अगस्त्यनक्षत्रोदय एव विषाणां जलानां शुद्धिर्निर्मलता, न तु पापोदयसंशये लोकानां विषेण 'यद्यहं पापी स्यां तदा विषपानेनाचेतनो भवेय'मिति शपथपूर्वकविषपानेन शुद्धिर्निष्पापतास्थापनं पापसंशयाभावात्। "विषन्तु गरले तोयेऽतिविषायाञ्च योषिति।" इति मेदिनी। केशनखानामेव आयतेर्दैर्घ्यताया भङ्गश्छेदेन विलोपः,

ছিল না, ধনুকেরই অবনতি (গুণাকর্ষণের সময় নমন) হইত, কিন্তু লোকের অবস্থার অবনতি হইত না ; বাঁশেরই শিলীমুখদ্বারা (ভ্রমরদ্বারা) ক্ষতি হইত, কিন্তু লোকের মধ্যে কাহারও শিলীমুখদ্বারা ক্ষতি (বাণদ্বারা বিদারণ) হইত না ; দেবগণেরই পূজাদি উপলক্ষে যাত্রা (উৎসব) হইত, কিন্তু যুদ্ধার্থ সৈন্যগণের যাত্রা (প্রস্থান) হইত না ; পুষ্পসমূহেরই বন্ধনে (বৃন্তে বোঁটায়) অবস্থান ছিল, কিন্তু লোকের বন্ধনে (কারাগারে) অবস্থান ছিল না ; ইন্দ্রিয়গণেরই দমন ছিল, কিন্তু লোকের দমন ছিল না ; বন্যহস্তিগণকেই বারিতে (বন্ধনস্থানে) প্রবেশ করান হইত, কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের জলপ্রবেশ হইত না ; ব্রতিগণেরই অগ্নিগ্রহণ ছিল, কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের অগ্নিগ্রহণ ছিল না ; গ্রহগণেরই তুলারোহণ (তুলারাশিতে গমন) ছিল, কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের তুলারোহণ (তুলাদণ্ডে আরোহণ) ছিল না ; অগস্ত্যনক্ষত্রের উদয়ে বিষশুদ্ধি (জলের নির্ম্মলতা) হইত,

(१) शिलीमुखमुखक्षतिः। (२) क्वचित्तु व्रतिनामग्निधाराधारणम् इति पाठः, क्वचिदेष पाठो नास्ति।
(३) जलद···। (४) योगधारणं।

स्तुतिषु तारकोद्धरणम्, उष्णरश्मेर्ग्रहणाशङ्का, (१) शशिनो ज्येष्ठातिक्रमः, महाभारते दुःशासनापराधाकर्णनम्, (२) वयःपरिणामे दण्ड-ग्रहणम्, असि-परिवारेषु

न तु लोकानामायतेरुत्तरकालस्य उत्तरकालवर्त्तिनः सुखस्य भङ्गो नाशः, शुभादृष्टवत्त्वात्। जलधरदिवसानां मेघाच्छन्नदिनानामेव मलिनाम्बरत्वं मेघावृतत्वात् मलिनाकाशत्वं, न तु लोकानां मलिनाम्बरत्वं मलिनवसनत्वं समृद्धिमत्तया सर्वदा सुपरिष्कृतपरिच्छदत्वात्। रत्नोपलानां मणीनामेव भेदो ग्रथनसूत्रप्रवेशाय विदारणं छिद्रकरणं, न तु लोकानां भेदो भेदनीतिप्रयोगः, शत्रुताऽभावेनावश्यकत्वाभावात्। मुनीनामेव योगसाधनं चित्तवृत्तिनिरोधानुष्ठानं, न तु लोकानां योगसाधनं लोकान्तरहत्यार्थं विस्रम्भघातकनियोजनम्, तादृशनृशंसव्यवहाराभावात्। "योगो विस्रम्भघातिनि" इत्यादि हेमः। कुमारस्तुतिषु कार्त्तिकेयस्तवेष्वेव तारकस्य तदाख्यस्य तेन निहतस्य असुरविशेषस्य उद्धरणमुदाहरणं, न तु दण्डेषु कस्यचिदपि तारकोद्धरणं नयनतारोत्पाटनं, तादृशापराधाभावात् दण्डयितुश्चानृशंसत्वात्। उष्णरश्मेः सूर्य्यस्यैव ग्रहणाशङ्का उपरागसम्भावना, न तु कस्यचिदपि जनस्य ग्रहणाशङ्का अपराधवशात् राजपुरुषैर्बलाद्धारणातङ्कः, अपराधाभावात्। शशिनश्चन्द्रस्यैव ज्येष्ठातिक्रमः ज्येष्ठानक्षत्रमुल्लङ्घ्य मूलादौ गमनं, न त्वपरस्य ज्येष्ठानां वयोवृद्धानां भ्रात्रादीनामतिक्रमः अवमानना, शिष्टत्वात्। महाभारते ग्रन्थ एव दुःशासनस्य दुर्य्योधनकनिष्ठभ्रातुः अपराधाकर्णनं द्रौपद्याः केशाम्बराकर्षणापराधश्रवणं, न त्वन्यत्र दुःशासनेन न्यायधर्म्मासङ्गततया दूषितशासनेन अपराधाकर्णनं राजपुरुषाणामपराधश्रवणं, राजानुशासनेन तेषां सर्व्वत्रैव सुशासनात्। वयःपरिणामे वार्द्धक्य एव दण्डग्रहणं अवलम्बनाय यष्टिधारणं, न त्वपराधे दण्डग्रहणं धनदानादिदण्डस्वीकारः, अपराधाभावात्। परिभ्रियन्ते आच्छाद्यन्ते

কিন্তু পাপের শপথপূর্ব্বক কোন লোকের বিষশুদ্ধি (বিষপান করিয়া নিষ্পাপতা প্রকাশ) হইত না; কেশ ও নখসমূহেরই আয়তিভঙ্গ (ছেদন করায় বৃদ্ধির ব্যাঘাত) হইত, কিন্তু লোকের আয়তি-ভঙ্গ (পরবর্ত্তিকালে সুখভোগের অভাব) হইত না ; মেঘাচ্ছন্ন দিনেই মলিনাম্বরত্ব (আকাশ মলিন) হইত, কিন্তু লোকের মলিনাম্বরত্ব (বস্ত্র মলিন) ছিল না ; মণিগণেরই ভেদ (ছিদ্র করা) হইত, কিন্তু লোকের মধ্যে ভেদ (পরস্পর মনোবাদ স্থাপন) হইত না ; মুনিগণেরই যোগসাধন (যোগাভ্যাস) ছিল, কিন্তু লোকের হত্যার নিমিত্ত যোগসাধন (গুপ্তঘাতক প্রেরণ) ছিল না ; কার্ত্তিকের স্তবের সময়েই তারকোদ্ধরণ (তারকাসুরের উল্লেখ) হইত, কিন্তু দণ্ডের সময় কাহারও তারকোদ্ধরণ (নয়নের তারা উৎপাটন) হইত না ; সূর্য্যেরই গ্রহণাশঙ্কা (রাহুকর্ত্তৃক গ্রহণের সম্ভাবনা) ছিল, কিন্তু লোকের গ্রহণাশঙ্কা (রাজানুচরকর্ত্তৃক বলক্রমে ধারণের আশঙ্কা) ছিল না ; চন্দ্রেরই জ্যেষ্ঠাতিক্রম (জ্যেষ্ঠানক্ষত্র অতিক্রম করিয়া যাওয়া) ছিল, কিন্তু কোন লোক কর্ত্তৃক জ্যেষ্ঠাতিক্রম (জ্যেষ্ঠভ্রাতাপ্রভৃতির অবমাননা) ছিল না ; মহাভারতেই দুঃশাসনের (দুর্য্যোধনের কনিষ্ঠ ভ্রাতার) অপরাধ শুনা যাইত, কিন্তু রাজ্যের মধ্যে কোন স্থানে রাজপুরুষদিগের দুঃশাসনের (অন্যায্য শাসনের) অপরাধ শুনা যাইত না ; বৃদ্ধকালেই দণ্ডগ্রহণ (যষ্টিধারণ) হইত, কিন্তু অপরাধের জন্য কাহারও

---

(१) ग्रहणशङ्का। (२) दुःशासनापराधः।

कलङ्कयोगः, (१) कामिनी-कुचपत्रभङ्गेषु वक्रता, (२) करिणां दान-विच्छित्तिः, अक्ष-क्रीड़ासु शून्यगृह-दर्शनम्, पृथिव्यामासीत्। (र)

तस्य च राज्ञः (३) निखिल-शास्त्र-कलावगाह-गम्भीरबुद्धिः, (४) आशैशवादुपारूढ़-निर्भर-प्रेमरसः, नीतिशास्त्र-प्रयोग-कुशलः, भुवनराज्यभारनौ-(५) कर्णधारः, महत्स्वपि कार्य्यसङ्कटेष्वविषन्नधीः, (ल) धाम धैर्य्यस्य, स्थानं स्थितेः,

एभिरिति परिवाराः करणे घञ्। असिपरिवारेषु तरवारीणां कोषेष्वेव कलङ्कयोगः परिष्कारणाभावेन मलचिह्नसम्पर्कः, न तु लोकानां परिवारेषु स्त्रीपुत्रादिपरिजनेषु कलङ्कयोगः अपवादसम्बन्धः, निर्दोषत्वात्। कामिनीनां कुचयोः पत्रभङ्गेषु पत्राकाररेखासु वक्रता कुटिलता, न तु लोकचित्तेषु वक्रता कुटिलता सर्वेषामेव सरलचित्तत्वात्। करिणां हस्तिनामेव दानैः स्वमदजलैः विच्छित्तिरङ्गरागः, न तु धनिनां दानविच्छित्तिः धनवितरणविच्छेदः, "अहरहर्दद्या"दिति श्रुतेस्तेषां प्रतिदिनमेव दानात्। अक्षक्रीड़ास्वेव शून्यगृहस्य गुटिकारहितकोष्ठस्य दर्शनं, न तु नगरग्रामेषु शून्यगृहस्य लोकरहितभवनस्य दर्शनं, सर्वविधोपद्रवाभावेन सर्वदैव लोकपूर्णत्वात्।

(ल) तस्येति। किञ्चेति चार्थः। शुकनासो नाम ब्राह्मणः तस्य राज्ञोऽमात्य आसीदिति वक्ष्यमाणक्रिययाऽन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि शुकनासस्य विशेषणानि। शास्त्राणि वेदादीनि च कला नृत्यगीतादिकलाविद्याश्च ताः। निखिलासु शास्त्रकलासु अवगाहेन प्रवेशेन लब्धशिक्षयेत्यर्थः गम्भीरा अगाधा बुद्धिर्यस्य सः। आशैशवात् उपारूढ़ो राजन्युत्पन्नः निर्भरः अतिमात्रः प्रेमरसः स्नेहानुरागो यस्य सः। भुवनराज्यस्य भारः शासनव्यापार एव नौर्नौका तस्याः कर्णधारो नाविकः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कार। कार्य्यसङ्कटेषु कर्त्तव्यकृच्छ्रेषु अविषन्ना अकुण्ठिता धीर्बुद्धिर्यस्य सः।

দণ্ডগ্রহণ (দণ্ড দিতে স্বীকার করিতে) হইত না; অসিপরিবারেই (তরবারির কোষেই) কলঙ্কযোগ (মলচিহ্নের সম্পর্ক) ছিল, কিন্তু লোকের স্ত্রীপুত্রাদি পরিজনবর্গের মধ্যে কলঙ্কযোগ (অপবাদের সম্পর্ক) ছিল না; রমণীগণের স্তনের উপর পত্রাকার রেখা তেই বক্রতা ছিল, কিন্তু লোকের চিত্তে বক্রতা (কুটিলতা) ছিল না; হস্তিগণেরই দানবিচ্ছিত্তি (স্বকীয় মদজলদ্বারা অঙ্গরাগ) হইত, কিন্তু ধনিগণের দানবিচ্ছিত্তি (ধনবিতরণের বিরাম) হইত না; আর অক্ষক্রীড়াতেই শূন্যগৃহ (গুটীশূন্য কোঠ) দেখা যাইত, কিন্তু নগরে বা গ্রামে শূন্যগৃহ (মানুষশূন্য ঘর) দেখা যাইত না।

(ল) শুকনাস নামে এক ব্রাহ্মণ সেই মহারাজ তারাপীড়ের মন্ত্রী ছিলেন। বেদাদি সকল শাস্ত্রে ও নৃত্যগীতাদি সকল কলাবিদ্যায় সম্পূর্ণ শিক্ষালাভ করায় তাঁহার বুদ্ধি অপরিসীম হইয়াছিল; বাল্যকাল হইতে রাজার উপরে তাঁহার অত্যন্ত প্রণয়ানুরাগ জন্মিয়াছিল; তিনি

(१) असिपरिवारेषु कुशलयोगः, असिधारासु कोषगुप्तिः। (२) कामिनीनां कुचभङ्गेन, कामिनीकुचभङ्गेन।
(३) तस्य राज्ञः। (४)...कलाकलापावगाहनगभीरबुद्धिः, निखिलशास्त्रकलापावगाहनगभीरबुद्धिः।
(५)...भारवाही...।

सिन्धुः (१) सत्यस्य, गुरुर्गुणानाम्, आचार्य्य आचाराणाम्, धाता धर्म्मस्य, (व) शेषाहिरिव सकलमही-(२) भारधारणक्षमः, (श) सलिलनिधिरिव महासत्त्व-निवासः, (ष) जरासन्ध इव घटित-(३) सन्धिविग्रहः, (स) त्र्यम्बक इव प्रसाधित-दुर्गः, (ह) युधिष्ठिर इव धर्म्मप्रभवः, (क्ष) सकल-वेद-वेदाङ्गवित्, अशेषराज्य-

(व) धामेति। धाम आश्रयः। स्थितेर्मर्य्यादायाः स्थानमाधारः। सिन्धुर्महाश्रयः। गुणानां दया-विनयादीनां गुरुः शिक्षयिता। आचाराणां शिष्टव्यवहाराणाम् आचार्य्य उपदेशकः। धाता धारयिता।

(श) शेषेति। शेषाहिरनन्तनाग इव, सकलाया मह्याः पृथिव्याः, भारः शासनव्यापारस्तस्य धारणे परिपालने, अन्यत्र तु भारो गुरुत्वरूपगुणविशेषस्तस्य धारणे वहने क्षमः समर्थः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ष) सलिलेति। सलिलनिधिः समुद्र इव, महासत्त्वस्य अत्यन्ताध्यवसायस्य महासत्त्वानां मकरादि-विशालजलजन्तूनाञ्च निवास आश्रयः। पूर्णोपमा।

(स) जरेति। जरासन्धः स्वनामख्यातो राजेव, घटितौ प्रयोजितौ, सामप्रयोगपूर्वकधनादिदानेन विपक्षस्य मित्रीकरणं सन्धिः, विग्रहो युद्धञ्च तौ येन सः, अन्यत्र तु घटितौ विहितः सन्धिरुभयखण्डयोः संयोगो यस्य स तादृशो विग्रहः शरीरं यस्य सः। पूर्णोपमा। पुरा किल बृहद्रथो नाम राजा पुत्रार्थ-माराधितेन मुनिना चण्डकौशिकेनार्पितमाम्रफलमेकं पत्नीभ्यां भोक्तुं ददौ, विभज्य च भुक्तवतीभ्याञ्च ताभ्यां कालान्तरे बालशरीरस्यैकैकखण्डं प्रसूतं, दृष्ट्वा च राजा दुःखितः श्मशाने न्यक्षिपत्, अथ जरा नाम श्मशान-वासिनी काचन राक्षसी यावदेव तत् खण्डद्वयं सन्दधौ तावदेव तं जीवितमवलोक्य बृहद्रथाय ददाविति महाभारतवार्त्ता। केचित्तु प्रकारान्तरमिदमुपाख्यानमाचक्षते।

(ह) त्र्यम्बक इति। त्र्यम्बकः शिव इव, प्रसाधितानि निष्पादितानि दुर्गाणि येन सः, पक्षे प्रसाधिता अलङ्कृता दुर्गा पार्वती येन सः। पूर्णोपमा।

(क्ष) युधीति। धर्म्माणां पुण्यानां प्रभवो यागादिना उत्पत्तिर्यस्मात् सः, पक्षे धर्म्मात् प्रभव उत्पत्ति-र्यस्य सः। पूर्णोपमा। युधिष्ठिरस्य धर्म्मादुत्पत्तिकथा महाभारतेऽनुसन्धेया।

নীতিশাস্ত্রে ও নীতিপরিচালনায় অত্যন্ত দক্ষ এবং জগতের রাজ্যশাসনকার্য্যরূপ নৌকার কর্ণধার ছিলেন; (ব) আর তিনি ধৈর্য্যের আধার, মর্য্যাদার আশ্রয়, সত্যের সাগর, গুণের শিক্ষক, সদাচারের উপদেশক এবং ধর্ম্মের আশ্রয় ছিলেন; (শ) অনন্তনাগ যেমন সমগ্র পৃথিবীর ভার বহন করিতে সমর্থ, তিনিও তেমন সমগ্র পৃথিবীর শাসনকার্য্যের পরিচালনায় সমর্থ ছিলেন; (ষ) সমুদ্র যেমন মকরপ্রভৃতি বৃহৎ জলজন্তুসমূহের আশ্রয়, তিনিও তেমন অত্যন্ত অধ্যবসায়ের আশ্রয় ছিলেন; (স) জরা নামে রাক্ষসী যেমন জরাসন্ধের শরীরের দুই খণ্ড সঙ্ঘটিত করিয়াছিল, তিনিও তেমন যথাস্থানে সন্ধি ও বিগ্রহ সঙ্ঘটিত করিতেন; (হ) মহাদেব যেমন দুর্গার ভূষণক্রিয়া সম্পাদন করিতেন, তিনিও তেমন নানা স্থানে দুর্গনির্ম্মাণক্রিয়া সম্পাদন করিতেন; (ক্ষ) যুধিষ্ঠির যেমন ধর্ম্মপ্রভব (ধর্ম্মরাজ হইতে উৎপন্ন) ছিলেন, তিনিও তেমন

---

(१) धीरः। (२) मह्या...। (३) सङ्घटित...। ... ...

मण्डलैकसारः, (१) (क) वृहस्पतिरिव सुनासीरस्य, कविरिव वृषपर्वणः, वशिष्ठ इव दशरथस्य, विश्वामित्र इव रामस्य, धौम्य इवाजातशत्रोः, दमनक इव भीमस्य, सुमतिरिव नलस्य, (२) सर्वकार्य्येष्वाहितमतिः (३) अमात्यो ब्राह्मणः शुकनासो नामासीत् (४)। (ख)

यो नरकासुर-शस्त्रप्रहार-भीषणे (५) भ्रमन्मन्दर-नितम्ब-निर्दय-(६) निष्पेष-कठिनांसपीठे नारायणवक्षःस्थलेऽपि स्थितामदुष्करलाभाममन्यत प्रज्ञावलेन लक्ष्मीम्। (ग)

(क) सकलेति। "शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चितिः। ज्योतिषामयनञ्चैव वेदाङ्गानि वदन्ति षट्।" अपीषि समस्ते राजमण्डले एकोऽद्वितीयः सारः श्रेष्ठः, सर्वगुणाकरत्वादिति भावः।

(ख) वृहेति। शोभनो नासीरो वीर इति सुनासीर इन्द्रस्तस्य। "वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः।" इत्यमरः। वृषपर्वणः स्वनामप्रसिद्धस्यासुरराजस्य, कविः शुक्राचार्य्य इव। अजातशत्रोर्युधिष्ठिरस्य। भीमस्य विदर्भाधिपतेर्दमयन्तीपितुः। आहितमतिः स्थापितबुद्धिः। शुकस्येव नासा नासिका यस्येति सः।

(ग) य इति। यः शुकनासः प्रज्ञावलेन बुद्धिसामर्थ्येन, नरकासुरस्य शस्त्रप्रहारेण भीषणे क्षतचिह्न-शालितया भयङ्करे, तथा भ्रमतः समुद्रमथनसमये घूर्णमानस्य मन्दरस्य पर्वतस्य यो नितम्बो मध्यदेशस्तस्य निर्दयनिष्पेषेण निष्ठुरघर्षणेन कठिने अंसपीठे पीठवद्विशालं स्कन्धद्वयं यस्य तादृशे, नारायणस्य वक्षःस्थले स्थितामपि लक्ष्मीं अदुष्करो लाभो यस्यास्तां सुलभामित्यर्थः अमन्यत। अत्र नरकासुरः शस्त्रप्रहारेणापि यां लब्धुं नाशक्नोत्, या च मन्दरनिष्पेषणेनापि न ययौ, तामपि लक्ष्मीमदुष्करलाभाममन्यत, इत्यर्थस्य प्रथमविशेषणद्वयेन सूचनान्नापुष्टार्थत्वदोषः। कृष्णेन भूमिपुत्रो नरकासुरो निहत इति हरिवंशवार्त्ता। समुद्रमथनवृत्तान्तस्तु प्रसिद्धः।

धर्म्मप्रभव (যাগাদিদ্বারা ধর্ম্মের উৎপাদক) ছিলেন। (ক) আর তিনি সকল বেদ ও বেদাঙ্গ জানিতেন এবং সমস্ত রাজ্যের মধ্যে অদ্বিতীয় প্রধান ব্যক্তি ছিলেন। (খ) বৃহস্পতি যেমন ইন্দ্রের, শুক্রাচার্য্য যেমন অসুররাজ বৃষপর্ব্বার, বশিষ্ঠ যেমন দশরথের, বিশ্বামিত্র যেমন রামচন্দ্রের, ধৌম্য যেমন যুধিষ্ঠিরের, দমনকমুনি যেমন ভীমরাজার, এবং সুমতি যেমন নলরাজার মন্ত্রী ছিলেন, শুকনাসও তেমনই তারাপীড়ের মন্ত্রী ছিলেন, আর তিনি সকল কার্য্যেই বুদ্ধি-প্রয়োগ (মনোনিবেশ) করিতেন।

(গ) নরকাসুরের অস্ত্রপ্রহারের ক্ষতচিহ্নে যে বক্ষঃস্থল ভয়ঙ্কর হইয়াছিল এবং সমুদ্র-মন্থনের সময় ঘূর্ণমান মন্দরপর্ব্বতের নিষ্ঠুর ঘর্ষণে যে বক্ষঃস্থলের নিকটবর্ত্তী স্কন্ধদ্বয় কঠিন হইয়াছিল, লক্ষ্মীদেবী নারায়ণের সেই বক্ষঃস্থলে বাস করিলেও যিনি বুদ্ধিবলে তাঁহাকে লাভ করাও দুষ্কর নহে বলিয়া মনে করিতেন।

---

(१)...मङ्गलैकसारः। (२) दमनक इव नलस्य। (३) अप्रतिहतमतिः।
(४) अभवत्। (५) शस्त्रभीषणे। (६)...मन्दरनिर्दय...।

यस्य समासाद्य (१) दर्शितानेकराज्यफला लतेव महापादपं (२) अनेक-प्रतानगहना विस्तारमुपययौ (३) प्रज्ञा। (घ)

यस्य चानेक-(४) चारपुरुष-सहस्र-सञ्चार-निचिते (५) चतुरुदधि-वलय-परिखा-(६) प्रमाणे धरणीतले (७) भवन इवाविदितमहरहः समुच्छ्वसितमपि राज्ञां नासीत्। (ङ)

स राजा बाल एव सुर-कुञ्जर-कर-पीवरेण राजलक्ष्मी-(८) लीलोपधानेन, सकल-जगदभय-प्रदान-प्रौढेन, रण-यज्ञ-दीर्घायूपेन, (९) स्फुरदसिलता-मरीचि-

(घ) यमिति। लता महापादपं विशालवृक्षमिव, प्रज्ञा बुद्धिः, यस्य शुकनासं समासाद्य प्राप्य, दर्शितानि अनेकानि राज्यानि नूतनानेकराज्यलाभा इत्यर्थः फलानीव यया सा। लतेवेत्युपमानुसारादुपमितसमास एव न्याय्यः। तथा अनेकैः प्रतानैः पल्लवैः गहना निविड़ा, बुद्धिपक्षे तु अनेकेषु विषयेषु प्रतानेन प्रसारेण गहना अपरैर्दुर्गमा, सती। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा पूर्णोपमालङ्कारः।

(ङ) यस्येति। अनेकस्य चारपुरुषाणां गुप्तचराणां सहस्रस्य सञ्चारेण विचरणेन निचिते व्याप्ते, चत्वारि उदधिवलयानि मण्डलीभूतसमुद्रा एव परिखास्ताभिः प्रमाणं परिमाणं यस्य तस्मिन् समस्त इत्यर्थः, धरणीतले भवन इव स्वगृह इव राज्ञामन्येषां नृपतीनां अहरहः समुच्छ्वसितमपि प्रतिदिनं निश्वासत्यागोऽपि यस्य च शुकनासस्य अविदितं अज्ञातं नासीत्। गुप्तचरैः सर्व्वमेव वृत्तान्तं शुकनासोऽवगतवानित्यर्थः। श्रौतोपमालङ्कारः।

(च) स इति। स राजा तारापीड़ः कर्त्तव्यविषमपरमपश्यदिति परेणान्वयः। सुरकुञ्जरस्य ऐरावतस्य करवत् शुण्डावत् पीवरेण स्थूलेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। राजलक्ष्म्याः लीलोपधानेन विलासोपवर्हस्वरूपेण।

(घ) এবং কোন লতা বৃহৎ একটি বৃক্ষ পাইয়া তাহার অবলম্বনে ফল জন্মাইয়া নূতন নূতন পল্লবে নিবিড় হইয়া যেমন ক্রমে বিস্তার লাভ করে, সেইরূপ বুদ্ধি, যে শুকনাসকে পাইয়া নূতন নূতন রাজ্যলাভ দর্শন করাইয়া এবং বহুতর বিষয়ে প্রবেশ করায় অন্যের দুর্জ্ঞেয় হইয়া ক্রমে বিস্তার লাভ করিয়াছিল।

(ঙ) আর নিজের গৃহে কোন ঘটনা ঘটিলে তাহা যেমন লোকের অজ্ঞাত থাকে না, সেইরূপ পরিখাস্বরূপ চারিটি সমুদ্র-পরিবেষ্টিত সমগ্র পৃথিবীতে বহুতর গুপ্তচর বিচরণ করায় অন্যান্য রাজগণের প্রতিদিন নিশ্বাসত্যাগও যে শুকনাসের অজ্ঞাত ছিল না।

(চ) সেই রাজা তারাপীড়, বালক অবস্থাতেই ঐরাবতহস্তীর শুণ্ডের ন্যায় স্থূল, রাজলক্ষ্মীর লীলোপধান-(সখের বালিস) স্বরূপ, সমগ্র জগতের অভয়দানে দক্ষ, যুদ্ধরূপ

(१) यस्यासाद्य। (२) पादपं। (३) उपाययौ। (४) यस्यानेक...।
(५)...परिचिते, विचिते। (६)...परिधिप्रमाणे, परिक्षेपप्रमाणे।
(७) धरणितले। (८) राज्यलक्ष्मी...। (९) सकलजगदभयदानयज्ञदीर्घायूपेन।

जाल-जटिलेन, निखिलाराति-कुल-प्रलयधूमकेतुना, बाहुदण्डेन (१) विजित्य सप्तद्वीपवलयां (२) वसुन्धरां तस्मिन् शुकनासनाम्नि मन्त्रिणि सुहृदीव राज्यभार-मारोप्य सुस्थिताः प्रजाः कृत्वा कर्त्तव्यशेषमपरमपश्यत् (३)। प्रशमिताशेष-विपक्षतया विगताशङ्कः शिथिलीकृत-वसुन्धराव्यापारः (४) प्रायशो यौवनसुख-मनुबभूव (५)। (घ)

तथाहि कदाचिदुल्लसत्कठोर-कपोल-पुलक-जर्जरित-कर्णपल्लवानां प्रणयि-

अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। सकलानां जगतां अभयप्रदाने शौण्डो मत्तस्तेन। "मत्ते शौण्डोत्कट-क्षीवा" इत्यमरः। रणो युद्धमेव यज्ञः क्षत्रियाणां धर्म्मजननादुत्सवरूपत्वाच्चेति भावः, तस्य दीक्षायामारम्भे यूपेन पशुबन्धनकाष्ठस्वरूपेण। अत्र रणे यज्ञत्वारोपो राजबाहौ यूपत्वारोपे निमित्तमित्यश्लिष्टशब्दनिबन्धनं परम्परितरूपकमलङ्कारः। स्फुरन्त्या दीप्यमानायाः असिलतायाः लतावल्लम्बमानतरवारेः मरीचिजालेन किरण-समूहेन जटिलो व्याप्तस्तेन। तथा निखिलस्य अरातिकुलस्य शत्रुगणस्य प्रलये विनाशे धूमकेतुना तत्-स्वरूपेण, अथवा धूमकेतुरिव तेन, विनाशसूचकेनेत्यर्थः। अत्र साधकबाधकप्रमाणाभावान्निरङ्गकेवलरूपक-लुप्तोपमयोः सन्देहसङ्करः। सप्त द्वीपवलयानि द्वीपमण्डलानि यस्यां ताम्। सुहृदीव सख्याविव। अतीव-विश्वस्ततया अतिशङ्काभावादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। प्रशमिताः शान्तिं प्रापिताः अशेषाः समस्ता विपक्षाः शत्रवो येन तस्य भावस्तया हेतुना, विगताशङ्को निरातङ्कः, तथा शिथिलीकृतो मन्दीकृतः वसुन्धरा-व्यापारः पृथिवीशासनकार्य्यं येन सः।

(घ) यौवनसुखानुभवप्रकारमेव दर्शयति तथाहीति। कदाचित् अनङ्गपरवशः कामाधीनः सन् राजा सुरतमातनोतीति परेणान्वयः। उल्लसद्भिः प्रकाशमानैः कठोरैर्बंधनयोग्यत्वात् परुषैः, कपोलयोर्गण्डयोः पुलकैः रोमाञ्चैः जर्जरितानि गण्डोपरि पतनात् जीर्णीकृतानि कर्णपल्लवानि यासां तासां, प्रणयिनीनां प्रियाणां चन्दनजलस्य छटाभिर्बिन्दुसमूहैरिव, स्मितं ईषत् हास्यं सुधा अमृतमिव स्मितमेव सुधेति वा, तस्याः छविभिः

यज्ञारম্ভের যূপকাষ্ঠস্বরূপ, দেদীপ্যমান তরবারির কিরণজালে ব্যাপ্ত এবং ধূমকেতুর ন্যায় সকল শত্রুগণের বিনাশসূচক বাহুদণ্ডদ্বারা সপ্তদ্বীপা পৃথিবী'ক জয় করিয়া সুহৃদের ন্যায় অত্যন্ত বিশ্বাসী সেই শুকনাসনামক মন্ত্রীর উপরে রাজ্যভার অর্পণ করিয়া প্রজাদিগকে সুস্থ করিয়া অপর কর্ত্তব্যের অবশিষ্ট দেখিয়াছিলেন। পরে পৃথিবীর শাসনকার্য্যে বিশেষ লিপ্ত না থাকিয়া এবং সকল শত্রুগণ শান্তভাব অবলম্বন করায় নিঃশঙ্কচিত্ত হইয়া প্রায়ই যৌবন-সুখ অনুভব করিতেছিলেন।

(ঘ) কখনও রাজা, চন্দনজল-বিন্দুসমূহের ন্যায় প্রণয়িনীগণের সুধাময় ঈষৎ হাস্যের শোভা-জলে অভিষিক্ত হইতে থাকিতেন, তখন সেই রমণীগণেরও গণ্ডের উপরে অত্যন্ত

(१) ...धूमकेतुदण्डेन बाहुना। (२) सकलद्वीपवलयां। (३) अपश्यन्।
(४) विगलिताशङ्कः। शिथिलितपृथ्वीव्यापारः, शिथिलितपृथिवीव्यापारः। (५) प्रायो यौवनसुखान्यनुबभूव।

नीनां चन्दन-जलच्छटाभिरिव स्मित-सुधाच्छविभिरभिषिच्यमान:, (छ) कर्णोत्पलैरिव लोचनांशुभिस्ताड्यमान:, (ज) कुङ्कुमधूलिभि-(१) रिवाभरणप्रभाभिराकुलीक्रियमाण-लोल-लोचन:, (झ) धवलांशुकैरिव कर-नख-(२) मयूख-जालकैराहन्यमान:, (ञ) चम्पक-कुसुम-दल-मालिकाभिरिव भुजलताभिराबध्यमान:, (ट) दष्टाधर-धूत-(३) करतल-चलन्मणिवलय-कलकल-(४) रमणीयम्, अतिरभस-(५) दलित-दन्त-पत्र-दन्तुर-(६) शयनम्, उत्क्षिप्त-चरणतल-(७) गलदलक्तक-रक्त-शेखरम्, सरभस-कच-ग्रह-चूर्णित-मणिकर्णपूरम्, उल्लसित-कुच-कृष्णागुरु-पङ्क-

---

कान्तिभि:, अभिषिच्यमान: स्नाप्यमान:, तच्छवीनां विशदत्वादिति भाव:। अत्रोपमालङ्कार:, लुप्तोपमानिरङ्गकेवलरूपकयो: सन्देहसङ्करश्च, तयोरपि मिथो निरपेक्षतया संसृष्टि:।

(ज) कर्णेति। ताड्यमान: प्रक्षिप्यमाण: तीव्रकटाक्षपातादिति भाव:। अत्रोपमालङ्कार:।

(झ) कुङ्कुमेति। आभरणप्रभाभिरलङ्कारद्युतिभि:, आकुलीक्रियमाणे व्याहन्यमाने अतएव लोले चञ्चले लोचने चक्षुषी यस्य स:। उपमा।

(ञ) धवलेति। धवलांशुकैरिव श्वेतवसनैरिव, करनखानां मयूखजालकै: किरणसमूहै:, आहन्यमान: प्रक्षिप्यमाण:, अत्यासन्नतया तीव्रपातित्वादिति भाव:। उपमा।

(ट) चम्पकेति। चम्पककुसुमानां दलमालिकाभिरिव कोमलत्वाद्दलश्रेणीभिरिव। आबध्यमान आश्लिष्यमाण:। उपमा।

(ठ) दष्टेति। दष्टेन दशनैर्व्यथितेन अधरेण हेतुना, धूतं निषेधसूचनाय कम्पितं यत् करतलं तस्मिन् चलतां चञ्चलीभूतानां मणिवलयानां कलकलेन मधुरास्फुटध्वनिनिवहेन रमणीयं मनोहरं। बध्यमानस्य सुरतमित्यस्य विशेषणमेतत्, एवमपराण्यपि। अतिरभसेन नितान्तवेगेन दलितै: खण्डितै: दन्तपत्रै: गजदन्तनिर्म्मितकर्णाभरणै: दन्तुरं विषमं शयनं शय्या यस्मिन् तत्। उत्क्षिप्ताभ्यां राज्ञो मस्तकं यावदुत्तोलिताभ्यां चरणतलाभ्यां रमण्या: पादतलाभ्यां गलता तरलत्वात् स्रवता अलक्तकेन लाक्षारसेन रक्तो लोहितीकृत: शेखरो राज्ञ: शिखा यस्मिन् तत्। सरभसं सवेगं य: कचग्रह: केशधारणं तेन

রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইয়া কর্ণের পল্লবগুলিকে জীর্ণ করিতে থাকিত; (জ) কোন কোন রমণী, তীব্র কটাক্ষ করিবার সময়ে কর্ণের নীলোৎপলের ন্যায় নয়ন-কিরণদ্বারা রাজাকে তাড়ন করিত; (ঝ) কুঙ্কুমের রেণুসমূহের ন্যায় কোন কোন রমণীর অলঙ্কারের কিরণে রাজার নয়নযুগল প্রতিহত হইয়া চঞ্চলভাব ধারণ করিত; (ঞ) শুভ্রবসনের ন্যায় কোন রমণীর হস্তস্থিত নখসমূহের কিরণপুঞ্জদ্বারা রাজা আহত হইতেন; (ট) কোন কোন রমণী চম্পক-পুষ্পের দলসমূহের ন্যায় কোমল বাহুলতাদ্বারা রাজাকে বন্ধন করিত; (ঠ) ... ...।

---

(१) कुङ्कुमपटवासधूलिभि:, कुङ्कुमवासधूलिभि:। (२) ...नखर...। (३) दष्टाधराधूतकरतल..., दष्टाधरकरतल...,। (४)...कलकलरव..., कलरव...,। (५) रतिरभस...।

(६)...दन्तुरित...। (७)...चरणगलत्...।

पत्रलताङ्कित-प्रच्छदपटम्, अच्छ-श्रमजल-(१) लुलित-गोरोचना-(२) तिलक-पत्रभङ्गम्, अनङ्ग-परवशः सुरतमाततान। (ठ)

कदाचिन्मकरकेतु-कनक-नाराच-परम्पराभिरिव कामिनी-करपुट-विनिर्गताभिः (३) कुङ्कुमजल-धाराभिः पिञ्जरीक्रियमाण-कायो लाक्षाजलच्छटा-प्रहार-पाटलीकृत-दुकूलो मृगमद-जलबिन्दु-शबल-चन्दन-स्थासकः कनकशृङ्गकोषैश्चिरं चिक्रीड। (ड)

कदाचित् कुच-चन्दन-चूर्ण-धवलितोर्म्मिमालम्, (४) चटुल-तुला-कोटि-वाचाल-चरणालक्तक-सिक्त-हंस-मिथुनम्, अलक-निपतित-कुसुमनिकर-शारम्, (५) प्लवमान-कर्णपूर-कुवलयदलम्, उन्नत-नितम्ब-संक्षोभ-(६) जर्जरित-तरङ्गम्,

चूर्णितं खण्डखण्डीकृतं मणिकर्णपूरं रत्नमयकर्णाभरणं यस्मिन् तत्। उल्लसितयोः राज्ञः करस्पर्शेन स्फुरितयोः कुचयोर्याः कृष्णागुरुपङ्कस्य गाढ़कृष्णागुरुद्रवस्य पत्रलतास्तन्मदाकारचिह्नानि ताभिरङ्कितश्चिह्नितः प्रच्छदपटः शय्याया आस्तरणवस्त्रं यस्मिन् तत्, रमण्या न्युब्जशयनादिति भावः। अच्छैर्निर्म्मलैः श्रमजलैर्घर्म्मबिन्दुभिः लुलिताः कथञ्चित् क्षालिताः गोरोचनायास्तिलकपत्रभङ्गा ललाटस्थतिलकपत्रभङ्गाकारचिह्नानि यस्मिन् तत्। आततान बाहुल्येन चकार।

(ड) कदाचिदिति। मकरकेतोर्मदनस्य कनकनाराचपरम्पराभिः सुवर्णमयहस्तशाणश्रेणीभिरिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। कस्याश्चित् कामिन्याः करपुटेन तत्प्रेरणयेत्यर्थः विनिर्गताभिस्तदीयशृङ्गकोषान्निःसृताभिः। पिञ्जरीक्रियमाणः पिङ्गलवर्णीक्रियमाणः कायः शरीरं यस्य सः। लाक्षाजलस्य छटाभिर्धाराभिः कस्याश्चित् कामिन्याः शृङ्गकोषान्निर्गताभिरिति भावः, प्रहारेण पाटलीकृतं आरक्तीकृतं दुकूलं वसनं यस्य सः। मृगमदजलबिन्दुभिः कस्याश्चित् कामिन्याः शृङ्गकोषान्निर्गताभिः कस्तूरीजलकणिकाभिः, शबलो विचित्रः, चन्दनस्थासकः चन्दनकृतचर्चा यस्य सः। "चर्चा तु चार्च्चिक्यं स्थासक" इत्यमरः। कनकशृङ्गकोषैः लम्बमानकोषाकारजलयन्त्रविशेषैः। "क्रीड़ाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री" इति यादवः। चिक्रीड़ क्रीड़ां कृतवान्।

(ढ) कदाचिदिति। सावरोधजनः प्रणयिनीजनसमेतो राजा जलक्रीड़या गृहदीर्घिकाणामम्भो जलं,

(ড) কোন সময়ে রাজা সোনার পিচকারী নিয়া প্রণয়িনীগণের সহিত বহু সময় খেলা করিতেন ; তখন কোন রমণীর হস্তের আকর্ষণে পিচকারী হইতে নির্গত, কামদেবের সুবর্ণময় বাণশ্রেণীর ন্যায় কুঙ্কুমের জলধারা পতিত হইয়া রাজার শরীর পিঙ্গলবর্ণ করিত ; কোন রমণীর পিচকারী হইতে নির্গত আল্তার জলের ধারা পতিত হইয়া রাজার বস্ত্র আরক্তবর্ণ করিত ; এবং কোন রমণীর পিচকারী হইতে নির্গত কস্তূরীর জলবিন্দু সকল পতিত হইয়া রাজার শরীরস্থিত চন্দনচিহ্নগুলিকে বিচিত্র করিত।

(ঢ) কোন সময়ে রাজা অন্তঃপুরবাসিনী প্রণয়িনীগণের সহিত জলক্রীড়া করিবার

(१) अश्रुजल...। (२)...रोचना...। (३)...विनिर्गताभिरिव।

(४) धवलोर्म्मिमालं। (५)...कुसुमसारम्, कुसुमनिकरसारम्। (६)...क्षोभ...।

उद्दलित-नाल-पर्य्यस्त-नलिन-निपतित-धूलि-पटलम्, अनवरत-कराास्फालन-(१) स्फुरत्-(२) फेनविन्दु-चन्द्रकितम्, सावरोधजनो जलक्रीड़या गृहदीर्घिकाणाम-भ्रमयकार। (ङ)

कदाचित् सङ्केत-वञ्चिताभिः प्रणयिनीभिराबद्ध-भङ्गुर-भ्रूकुटिभिः (३) आर-

---

ईदृशं चकार इत्यन्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि जलविशेषणानि। कुचयोश्चन्दनचूर्णैः धवलिता श्वेतीकृता ऊर्म्मिमाला तरङ्गश्रेणी यस्य तत्। चटुलाभ्यां चलिताभ्यां तुलाकोटिभ्यां नूपुराभ्यां वाचालयोर्मुखरयोः चरणयोः अलक्तकैर्लाक्षारसैः सिक्तं हंसमिथुनं नूपुररवाकृष्टौ हंसदम्पती यस्मिन् तत्। "तुलाकोटिर्मान-भेदेऽर्बुदे स्यान्नूपुरेऽपि च।" इति हेमः। अलकाम्बुर्णकुन्तलात् निपतितैः कुसुमनिकरैः शारं चित्रं नानावर्णं। प्लवमानानि उपरि सन्तरन्ति कर्णपूराणां आकण्ठमग्नललनाकर्णाभरणीभूतानां, कुवलयानां नीलोत्पलानां दलानि यस्मिन् तत्। उन्नतानां नितम्बानां संक्षोभेण आस्फालनेन जर्ज्जरिताश्चूर्णीकृतास्तरङ्गा यस्मिन् तत्। उद्दलितानि आमर्द्दितानि नालानि येषां तानि, अतएव पर्य्यस्तानि जलोपरि पतितानि यानि नलिनानि पद्मानि तेभ्यो निपतितं धूलिपटलं परागसमूहो यस्मिन् तत्। तथा अनवरतं करास्फालनेन जलसेचनाय तत्रैव हस्तान्दोलनेन स्फुरद्भिः प्रकाशमानैः फेनविन्दुभिः, सञ्जाताश्चन्द्रकाश्चन्द्राकारजलस्फोटा अस्येति तत्।

(च) कदाचिदिति। सङ्केते वञ्चिताभिः, 'ईदृशसमये तादृशस्थाने युष्मान् रमयिष्ये' इति निर्द्देशे कृते तासु तत्रागतासु राज्ञा तु नोपस्थितमिति तेन प्रतारिताभिरित्यर्थः, अतएव आबद्धाः कृताः भङ्गुराः कुटिलाः भ्रूकुटयो याभिस्ताभिः, आरणिताास्ताड़नाय करसञ्चालनात् शब्दिताः ये मणिपारिहार्य्या रत्नवलयानि "आवापकः

নিমিত্ত অন্তঃপুরের দীর্ঘিকার মধ্যে প্রবেশ করিতেন; তখন কোন রমণীর স্তনলিপ্ত শুষ্ক চন্দনের রেণুতে তরঙ্গশ্রেণী শ্বেতবর্ণ করিত; কোন রমণীর চঞ্চল নূপুরের রবে শব্দায়মান চরণ হইতে নিঃসৃত আল্‌তার রস, অনুসরণকারী হংসদম্পতীকে সিক্ত করিত; কোন সুন্দরীর স্খলিত কেশকলাপ হইতে কুসুমসমূহ নিপতিত হইয়া দীর্ঘিকার জল বিচিত্র করিত; কোন যুবতী জলমধ্যে আকণ্ঠ মগ্ন হইলে তাহার কর্ণাভরণ নীলোৎপলের দলগুলি জলের উপরে ভাসিতে থাকিত; কোন রমণীর উন্নত নিতম্বের আস্ফালনে তরঙ্গ সকল চূর্ণ হইয়া যাইত; কোন তরুণী পদ্মের নালগুলি ভাঙ্গিয়া ফেলিলে পদ্মগুলি জলের উপরে পতিত হইতে থাকিত; এবং কোন সুন্দরী রাজার শরীরে জলসেচন করিবার সময়ে অনবরত হস্ত আস্ফালন করায় ফেনবিন্দু সকল উৎপন্ন হইয়া জলের উপরে চন্দ্রের আকার ধারণ করিত।

(চ) কোন সময়ে রাজা সঙ্কেত করিয়া রাত্রিতে সে স্থানে না যাওয়ায় প্রতারিত প্রণয়িনী-গণ পরদিন কুটিল ভ্রূভঙ্গি করিয়া, বকুলকুসুমের মালা দ্বারা সেই অপরাধী রাজার চরণ বন্ধন

---

(१)...करतलास्फालन...। (२)...विस्फुरत्...।

(३) भ्रूकुटिभिः, भ्रुकुटिभिः, भ्रूकुटीभिः।

णित-मणिपारिहार्य्य-(१) मुखर-भुजलताभिर्वकुल-कुसुमावलीभिः संयत-चरणः (२) नख-किरण-विमिश्रैः कुसुम-दामभिः कृतापराधो दिवसमताड्यत। (ण)

कदाचिद्बकुलतरुरिव कामिनी-गण्डूष-(३) सीधु-धारा-स्वाद-(४) मुदितो विकाशमभजत। (त) कदाचिदशोक-पादप इव युवति-चरणतल-प्रहार-संक्रान्तालक्तकरसो (५) रागमुवाह। (थ) कदाचिन्मुषलायुध इव चन्दन-धवलः (६)

पारिहार्य्यः "कटको वलयोऽस्त्रिया"मित्यमरः, तैर्मुखराः शब्दायमानाः भुजलता यासां ताभिः, प्रणयिनीभिः भार्य्याभिः, वकुलकुसुमावलीभिः वकुलपुष्पमालाभिः करणैः, संयतचरणो बद्धपादः, कृतापराधः सङ्केतस्थानेऽनुपस्थितेरिति भावः, राजा, नखकिरणविमिश्रैः कुसुमदामभिरपरपुष्पमाल्यैः, दिवसं समस्तदिनं व्याप्य अताड्यत प्राह्रियत। दिवसमिति "अभिविधौ कालाध्वमाना"दिति द्वितीया।

(त) कदाचिदिति। कामिन्या गण्डूषसीधुधारायाः मुखपूर्णमद्यधारायाः स्वादेन पानास्वादेन मुदितो हृष्टः, विकाशं आनन्देन विस्फारितचित्तत्वं विकसनञ्च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। तथा ईदृग्वकुलतरुर्विकाशं भजते राजा तु विकाशमभजत, इति कालभेदात् "काप्यभिख्या तयोरासी"दित्यादिदर्पणोदाहृतवत्प्रक्रमतादोषः, स च 'यथा किल भजते वकुलतरुः कामिनीगण्डूषसीधुधारास्वादमुदितस्तथा विकाशमभजत कदाचित्' इति पाठेन समाधेयः। एवमेव 'कदाचिन्मधुकर इवे'त्यन्तं यावत् प्रसजन्नसौ दोषः परिहरणीयः। न चात्र "मद्यमदेयमपेयमनिर्ग्राह्य"मित्युशनोवचनादिना कथं राज्ञो मद्यास्वाद इति वाच्यं, "कामतोऽपि हि राजन्यो वैश्यो वापि कथञ्चन। मद्यं पीत्वाऽसुरासंज्ञं न किञ्चिद्दोषमर्हति॥" इति मनुवचनेन मद्यपदस्य सुरामद्यपरत्वात् अत्र सीधुपदस्य चेक्षुविकारवाचकत्वेन दोषाभावात्। एवमन्यत्रापि बोध्यम्।

(थ) कदाचिदिति। युवतिचरणतलप्रहारेण संक्रान्तस्तस्मात् स्वगात्रे सञ्चरितः अलक्तकरसो यस्य सः, रागं तास्वनुरागं लौहित्यञ्च। पूर्णोपमा। "पादाघातादशोकं विकसति वकुलं योषितामास्यमद्यै"रितिदर्पणकारिका उभयत्रैव प्रमाणम्।

করিয়া স্বকীয় নখের কিরণমিশ্রিত অপর পুষ্পমালাদ্বারা তাঁহাকে তাড়ন করিতে থাকিত; তখন রত্নময় বলয়ের শব্দে তাহাদের ভুজলতাও শব্দিত হইত।

(ত) বকুলবৃক্ষ যেমন কামিনীগণের মুখমদ্যের সংস্পর্শে স্বকীয় পুষ্পসমূহের বিকাশ লাভ করে, রাজাও তেমন কোন সময়ে কামিনীগণের মুখোচ্ছিষ্ট মদ্যপানে আনন্দিত হইয়া স্ফূর্ত্তি লাভ করিতেন। (থ) অশোকবৃক্ষ যেমন যুবতিগণের চরণপ্রহারে তরল আলতা সংলগ্ন হওয়ায় রক্তবর্ণ হয়, রাজাও তেমন কোন সময়ে যুবতিগণের চরণপ্রহারে গাত্রে তরল আলতা সংলগ্ন হইলে তাহাদের প্রতি আরও অনুরক্ত হইতেন। (দ) কখনও রাজা,

---

(१)...आरणितपारिहार्य्यै...। (२) वकुलकुसुमावलीसंयत...। (३) कामिनीनां गण्डूष...।
(४)...आस्वादन...। (५)...अलक्तको रागं...। (६) चन्दनधवलकाण्ड...।

कण्ठावसक्तोल्लसल्लोल-(१) कुसुममालः पानमसेवत। (द) कदाचिद्-गन्धगज इव मदरक्त-कपोल-दोलायमान-कर्णपल्लवो (२) मदकलः काननं विकच-वनलता-कुसुम-सुरभि-परिमलं जगाहे। (ध) कदाचित् क्वण-(३) न्मणिनूपुर-निनादानन्दित-मानसो हंस इव कमल-वनेषु रेमे। (न) कदाचिन्मृगपतिरिव स्कन्धावलम्बित-केशर-(४) मालः क्रीड़ा-पर्वतेषु विचचार। (प) कदाचिन्मधुकर

(द) कदाचिदिति। मुषलायुधो वलराम इव, चन्दनेन गात्रे चन्दनलेपनेन धवलः, कण्ठे अवसक्ता लग्ना उल्लसन्ती दीप्यमाना लोला चञ्चला कुसुममाला यस्य सः, पानं सीधुप्रभृतिमद्यपानं। पूर्णोपमा।

(ध) कदाचिदिति। गन्धप्रधानो गजः गन्धगजः। तल्लक्षणन्तु पालकाप्ये—"यस्य गन्धं समाघ्राय न तिष्ठन्ति प्रतिद्विपाः। तं गन्धहस्तिनं प्राहुर्नृपतेर्विजयावहम्।" मदेन मद्यपानजनितमत्ततया रक्तौ लोहितौ, पक्षे मदजलेन रञ्जितौ यौ कपोलौ गण्डौ तयोर्दोलायमानौ कर्णपल्लवौ कर्णाभरणीभूतपल्लवौ विस्तृतकर्णौ च यस्य सः। मदेन हर्षेण कलो मधुरास्फुटध्वनिर्यस्य सः, मदमत्तश्च। विकचैः प्रस्फुटितैः वनलतानां कुसुमैः सुरभिः परिमलो गन्धो यस्मिन् तत्। काननमुपवनं वनञ्च, जगाहे बभ्राम। पूर्णोपमा।

(न) कदाचिदिति। क्वणतां शब्दायमानानां सहचारिणीनां तरुणीनामिति भावः मणिनूपुराणां निनादेन आनन्दितं मानसं चित्तं यस्य सः। हंसपक्षेऽप्येवं, तस्यापि नूपुरनिनादेन हृष्टचित्ततायाः प्रसिद्धत्वात्। पूर्णोपमा।

(प) कदाचिदिति। मृगपतिः सिंह इव, स्कन्धे अवलम्बिता धृता केशरमाला वकुलकुसुममाला, जटाश्रेणी च येन सः। पूर्णोपमा।

(फ) कदाचिदिति। विजृम्भमाणैर्विकसद्भिः कुसुममुकुलैर्दन्तुराणि विषमाणि तेषु। पूर्णोपमा।

বলরামের ন্যায় চন্দনলেপনে শুভ্রবর্ণ হইয়া এবং কণ্ঠে মনোহর ও চঞ্চল কুসুমমালা ধারণ করিয়া প্রণয়িনীগণের সহিত মদ্য পান করিতেন। (ধ) মত্ত গন্ধহস্তী যেমন স্বকীয় মদজল-রঞ্জিত গণ্ডযুগলের উপরে বিস্তৃত কর্ণযুগল আন্দোলিত করিয়া প্রস্ফুটিত বনলতা-কুসুমের সৌরভসমন্বিত বনমধ্যে বিচরণ করে, রাজাও তেমন কোন সময়ে, মত্ততাবশতঃ আরক্তবর্ণ গণ্ডের উপরে কর্ণের পল্লব আন্দোলিত করিয়া এবং হর্ষবশতঃ মধুরধ্বনিসম্পন্ন হইয়া রমণীগণের সহিত বিকসিত বনলতা-কুসুমের সৌরভসমন্বিত উদ্যানে বিচরণ করিতেন। (ন) কোন সময়ে রাজা সহচারিণীগণের শব্দায়মান নূপুরের রবে আনন্দিতচিত্ত হইয়া হংসের ন্যায় পদ্মবনে ক্রীড়া করিতেন। (প) কোন সময়ে গলদেশে বকুলপুষ্পের মালা ধারণ করিয়া, স্কন্ধদেশে জটাসমূহধারী সিংহের ন্যায় ক্রীড়াপর্ব্বতে বিচরণ করিতেন। (ফ) কোন সময়ে পুষ্পের কলিকাসমূহ প্রস্ফুটিত হইতে থাকায় অসমানতাপ্রাপ্ত লতাগৃহে ভ্রমরের ন্যায় পরিভ্রমণ

---

(१) कण्ठावसक्तलोल..., कण्ठावसक्तसमुल्लसल्लोल...।

(२)...मानपल्लवः। (३) क्वणित...। (४) स्कन्धावलम्बिकेशर...।

इव विजृम्भमाण-कुसुम-मुकुल-दन्तुरेषु लताग्टहेषु बभ्राम। (फ) कदाचित् (१) नील-पट-विरचिता-वगुण्ठनो बहुलपक्ष-(२) प्रदोष-दत्त-सङ्केताः सुन्दरीरभिससार।(ब) कदाचिच्च विघटित-कनक-कपाट-(३) प्रकट-वातायनेष्वनवरत-दह्यमान-कृष्णागुरु-धूमरक्तैरिव पारावतैः(४) अध्यासित-(५) विटङ्केषु महाप्रासाद-(६) कुक्षिषु कतिपयाप्त-सुहृत्-परिवृतो वीणा-वेणु-मुरज-मनोहरमन्तःपुर-सङ्गीतकं ददर्श। (भ) किं बहुना, (७) यद्यदतिरमणीयमभिमतमविरुद्धमायत्यां (८) तदात्वे च तत्तदनाक्षिप्तचेताः परिसमाप्तत्वादन्येषां पृथिवीव्यापाराणां सिषेवे,

---

(ब) कदाचिदिति। नीलपटेन कृष्णवसनेन विरचितं कृतं अवगुण्ठनं मस्तकादधिगात्रावरणं येन सः, अन्यकर्तृकदर्शनाशङ्कयेति भावः। बहुलपक्षस्य कृष्णपक्षस्य प्रदोषे निशामुखे दत्तः सङ्केतः 'युष्मासु तत्रागतासु मया गत्वा रन्तव्य'मिति निर्द्देशो यासु ताः।

(भ) कदाचिदिति। अपि चेति चार्थः। विघटितैरुद्घाटितैः कनककपाटैः प्रकटानि प्रकाशितानि वातायनानि गवाक्षा येषां तेषु, अनवरतं दह्यमानानां सौरभार्थमिति भावः, कृष्णागुरूणां धूमैः रक्ता रञ्जितास्तैरिव धूम्रवर्णत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पारावतैः कपोतैः अध्यासितानि आश्रितानि विटङ्कानि कपोतपालिका येषु तेषु, महाप्रासादानां उत्तमराजगृहाणां कुक्षिषु मध्येषु कतिपयैः आप्तैर्विश्वस्तैः सुहृद्भिः परिवृतः, वीणावेणुमुरजैस्तेषां वाद्यैरित्यर्थः मनोहरं, अन्तःपुरस्य सङ्गीतकं स्त्रीणां नृत्यं गीतं वाद्यञ्च। तेषु च नृत्यस्यैव तत्र प्रधानत्वात् ददर्शेति दर्शनक्रियोपपद्यते। तथा चोक्तं—"नृत्यं गीतञ्च वाद्यञ्च त्रयं सङ्गीतमुच्यते।"

(म) किमिति। आयत्यां उत्तरकाले, तदात्वे तस्मिन् समये च "तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः।" इत्यमरः। अविरुद्धं परदाररमणजनगर्ह्यात्याचारादिविरुद्धरहितं। अन्येषां भोगविलासव्यतिरिक्तानां पृथिव्या व्यापाराणां शासनादीनां, परिसमाप्तत्वात् सुयोग्यमन्त्रिषु न्यस्ततया अवसितत्वात्,

---

করিতেন। (ব) কোন সময়ে নীলবর্ণবস্ত্রে সকল অঙ্গ আবৃত করিয়া কৃষ্ণপক্ষের প্রদোষকালে দত্তসঙ্কেত সুন্দরীগণের উদ্দেশে গমন করিতেন। (ভ) এবং কোন সময়ে কতিপয় বিশ্বস্ত সুহৃদ্গণে পরিবৃত হইয়া উৎকৃষ্ট অট্টালিকার মধ্যে থাকিয়া, অন্তঃপুরস্থ রমণীগণের বীণা, বংশী ও মৃদঙ্গবাদ্যে মনোহর নৃত্যগীতাদি সঙ্গীতব্যাপার দর্শন করিতেন; তখন সেই সকল অট্টালিকার সুবর্ণময় কপাটগুলি উদ্ঘাটিত করায় গবাক্ষসমূহ উন্মুক্ত থাকিত এবং অবিশ্রান্ত কৃষ্ণাগুরু দগ্ধ করায় তাহার ধূমে রঞ্জিত হইয়াই যেন পায়রাগুলি খোপের ভিতরে বসিয়া থাকিত। (ম) বহুতর বলিয়া কি হইবে, (এইমাত্রই বলিলে চলিতে পারে, যে,) জগতের

---

(१) अत्र कस्मिंश्चित् पुस्तके मृगयाविषयको विस्तृत एकः पाठो दृश्यते, स तु अप्राकरणिकतया नोद्धृतः।

(२) बहुलनिशाप्रदोष...। (३)...कनककपाटं। (४) पारापतैः। (५) अधिष्ठित...।

(६) प्रासाद...। (७) किञ्च बहुना। (८) अतिरमणीयमविरुद्धं आयत्यां।

न तु व्यसनितया (१)। (म) प्रमुदितप्रजस्य हि परिसमाप्त-सकल-महीप्रयोजनस्य (२) नरपतेर्विषयसम्भोग-(३) लीला-भूषणम्, इतरस्य तु विडम्बना। (य) प्रजानुरागहेतोरन्तरान्तरा (४) दर्शनं ददौ, सिंहासनञ्च निमित्तेष्वारुरोह। (र) शुकनासोऽपि महान्तं तं (५) राज्यभारमनायासेनैव प्रज्ञाबलेन बभार। (ल) यथैव राजा सर्वकार्य्याण्यकार्षीत् (६) तद्वदसावपि द्विगुणीकृत-प्रजानुरागो

अनाक्षिप्तचेतास्तैरनाकृष्टचित्तः सन् सिषेवे भेजे, तु किन्तु, व्यसनितया तत्र तदासक्तिमत्तया न। अत एवास्य भोगविलासो न दोषायेति भावः। कालिदासोऽप्याह स्म "असक्तः सुखमन्वभूत्।"

(य) प्रमुदितेति। हि तथाहि। प्रमुदिता यथायथशासनपालनादिना आनन्दिताः प्रजा येन तस्य, परिसमाप्तानि योग्यसचिवादौ न्यस्ततया अवसितानि सकलानि महीप्रयोजनानि पृथिव्यामावश्यकाः शासनपालनादिव्यापारा यस्य तस्य। विषयसम्भोगलीला स्रक्चन्दनवनितादिभोगविलासः भूषणं अलङ्कारस्वरूपा, तु किन्तु, इतरस्य तद्भिन्नस्य अपरिसमाप्तसकलमहीप्रयोजनस्य सुशासनाभावादशान्तिपूर्णराज्यस्य नरपतेरित्यर्थः, विषयसम्भोगलीला विडम्बना केवलात्मप्रतारणा, सततमेवोद्विग्नतया तादृक्सुखानुभवाभावादिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(र) प्रजेति। अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये, दर्शनं ददौ ताभ्यः प्रजाभ्य इति शेषः, अन्यथा स्वकीयसुखदुःखयोरौदासीन्यानुमानेन प्रजानां विरागः स्यादिति भावः। निमित्तेषु केषुचिद् गुरुशासनव्यापारेषु उपस्थितेषु।

(व) यथैवेति। असौ शुकनासोऽपि। द्विगुणीकृतः प्रजानामनुरागो येन सः।

মধ্যে যে যে বস্তু অতিশয় মনোহর, নিজের অভিমত এবং পরবর্ত্তী সময়েও সেই সময়ে কোন-রূপ অনিষ্টজনক নহে, সেই সমস্তই তিনি অনাসক্তচিত্তে সম্ভোগ করিয়াছিলেন, কিন্তু আসক্তিবশতঃ নহে; কারণ—সুযোগ্য মন্ত্রীর হস্তে সমস্ত রাজকার্য্য ন্যস্ত থাকায় পৃথিবীর শাসন-পালনাদি অন্য সকল কার্য্যই তাঁহার সমাপ্ত হইয়া গিয়াছিল। (য) এই জগতে, উপযুক্ত মন্ত্রিপ্রভৃতির উপরে সমস্ত ভার বিন্যস্ত থাকায় যাঁহার রাজ্যের রক্ষণাবেক্ষণাদি সকল কার্য্য পরিসমাপ্ত হইয়া গিয়াছে, সেইরূপ প্রজারঞ্জক রাজারই ভোগবিলাস অলঙ্কারস্বরূপ; আর যাহার রাজ্য সুশাসনের অভাবে অশান্তি-পরিপূর্ণ, তাঁহার ভোগবিলাস করা বিড়ম্বনা মাত্র। (র) রাজা, প্রজাবর্গের নিমিত্ত মধ্যে মধ্যে তাহাদিগকে দর্শন দিতেন এবং বিশেষ কোন কার্য্য উপস্থিত হইলে সিংহাসনেও আরোহণ করিতেন।

(ল) শুকনাসও বুদ্ধিবলে, গুরুতর সেই রাজ্যভার অনায়াসেই বহন করিতেছিলেন। (ব) রাজা যে ভাবে সকল কার্য্য করিতেন, শুকনাসও রাজা হইতে দ্বিগুণ প্রজাগণের

---

(१) अनित्यव्यसनितया। (२)...महीमण्डलप्रयोजनस्य। (३) विषयोपभोगलीला। (४)...ऽन्तरान्तरा।
(५) महान्तं राज्यभारं, महान्तमचिरं राज्यभारं। (६) कार्य्याण्यकार्षीत्। ...

राजकार्य्याणि चक्रे (१)। (व) तमपि आवलित-(२) चूड़ामणि-मरीचि-मञ्जरी-जालिभिर्मौलिभिरावर्जित-कुसुम-शेखर-च्युत-मधु-शीकर-सिक्त-नृप-सभं (३) दूरावनति-प्रेङ्खोलित-(४) मणि-कुण्डल-कोटि-संघट्टिताङ्गदं राजकमाननाम। (श) तस्मिन्नपि चलति (५) चलित-चटुल-तुरग-(६) बल-मुखर-खुर-रव-बधिरीकृत-भुवनान्तराला:, (७) बल-भर-प्रचल-(८) वसुधातल-दोलायमान-गिरय:, गलन्मदान्ध-गन्धगज-दान-धारान्धकारा:, संसर्पदतिबहल-धूलि-पटल-(९) धूसरित-सिन्धव:, प्रचलत्-पदातिबल-कलकल-स्फोटित-(१०) कर्णविवरा:, सरभसोद्-

---

(श) तमपीति। आवर्जितात् नमस्कारकाले शिरोनमनेन नमितात्, कुसुमशेखरात् पुष्पमयशिरोभूषणात् च्युतैर्गलितै: मधुशीकरैर्मकरन्दबिन्दुभि: सिक्ता नृपसभा येन तत्। तथा दूरादवनत्या पूर्वकायनमनेन प्रेङ्खोलितयोरान्दोलितयो: मणिकुण्डलयो रत्नमयकर्णकुण्डलयो: कोटिभ्यामग्रदेशाभ्यां संघट्टिते घृष्टे अङ्गदे केयूरयुगलं यस्य तत्। "स्तनादीनां द्वित्वविशिष्टा जाति"रिति वामनवचनात् मणिकुण्डलयोरित्यादौ वाक्ये द्विवचनमुपन्यस्तं। राजकं राज्ञां समूह: कर्तृ, समूहेऽकण्। आवलितं अवनतं चूड़ामणिमरीचिमञ्जरीणां शिर:स्थितरत्नकिरणाग्राणां जालं समूहं एषामस्तीति तै: मौलिभिर्मस्तकै:, तं शुकनासमपि आननाम।

(ष) तस्मिन्निति। तस्मिन् शुकनासेऽपि चलति कुत्रापि प्रतिष्ठमाने सति, दश दिश एवम्भूता बभुवुरित्यन्वय:। तथा च चलितस्य शुकनासेन सह प्रस्थितस्य चटुलस्य चञ्चलस्य तुरगबलस्य अश्वसैन्यस्य, मुखरा: शब्दायमाना: ये खुरा: तेषां रवै: शब्दै: बधिरीकृतं भुवनान्तरालं जगन्मध्यं यासु ता:। बलभरेण सहगामिसैन्यभारेण प्रचले कम्पिते वसुधातले भूतले दोलायमाना: कम्पमाना: गिरय: पर्वता यासु ता:। गलन्तीभि: क्षरन्तीभि: मदान्धानां गन्धगजानां पूर्वोक्तरूपाणां गन्धहस्तिनां दानधाराभिर्मदजलधाराभि: अन्धकारो यासु ता:। संसर्पता प्रसरता अतिबहलेन नितान्तप्रचुरेण धूलिपटलेन धूसरिता धूम्रवर्णीकृता: सिन्धवो नद्यो यासु ता:। प्रचलतां सह प्रतिष्ठमानानां पदातिबलानां कलकलै: कोलाहलै: स्फोटितानि विदारितानि कर्णविवराणि यासु ता:। सरभसं सवेगं उद्घुष्यमाणैर्जयशब्दै:, निर्न विद्यते अन्तरमवकाशो यासां ता:,

---

অনুরাগ জন্মাইয়া সেই ভাবেই রাজকার্য্য সম্পাদন করিতেন। (শ) অধীনস্থ রাজগণ মস্তকদ্বারা তাঁহাকেও (শুকনাসকেও) নমস্কার করিতেন, তখন তাঁহাদের চূড়ামণির কিরণজালের অগ্রভাগ অবনত হইত; মস্তক অবনত করায় পুষ্পময় শিরোভূষণ হইতে মধুবিন্দু সকল নিঃসৃত হইয়া রাজসভা সিক্ত করিত এবং দূর হইতে মস্তক অবনত করায় মণিময় কর্ণকুণ্ডলের অগ্রদেশদ্বারা বাহুস্থিত কেয়ূর সংঘর্ষিত হইত। (ষ) তিনিও কোন স্থানে প্রস্থান করিলে মদান্ধ গন্ধহস্তিদিগের মদধারা গলিত হইয়া দশদিক্ অন্ধকার করিত; সহগামী চপল অশ্বগণের শব্দায়মান খুরের ধ্বনিতে জগতের মধ্য বধির করিয়া ফেলিত; সৈন্যগণের পদভরে ভূমণ্ডল কম্পিত হইলে পর্ব্বতসমূহও কম্পিত হইতে

---

(१) चकार।(२) अलित...। (३)...सिक्तसभं। (४)...प्रेङ्खित...। (५) चलिते। (६) चटुलतुरङ्ग। (७)...भुवना:। (८) बलप्रचल...। (९)...अतिबहुल...। (१०)...। रवस्फोटित...

घुष्यमाण-जयशब्द-निरन्तरा:, (१) प्रोद्धूयमान-धवल चामर-सहस्र-संच्छादिता:, पुञ्जित-नरेन्द्रवृन्द-कनकदण्डातपत्र-संघट्ट-(२) नष्ट-दिवसा:, दश दिशो बभूवु:। (ष)

एवं तस्य मन्त्रि-विनिवेशित-राज्यभारस्य यौवन-सुखमनुभवत: कालो (३) जगाम। भूयसा च कालेनान्येषामपि जीवलोकसुखानां प्राय: सर्वेषामन्तं ययौ, एकन्तु सुत-मुख-(४) दर्शनसुखं न लेभे। तथा सम्भुज्यमानमपि (५) निष्फलपुष्पदर्शनं शरवणमिवान्त:पुरमभवत् (६)। (स) यथा यथा च यौवन-

---

तै: परिपूर्णा इत्यर्थ:। प्रोद्धूयमानेन सञ्चाल्यमानेन धवलचामराणां सहस्रेण समूहेन संच्छादिता:। तथा पुञ्जितस्य सञ्जातराशिभावस्य नरेन्द्रवृन्दस्य राजगणस्य यानि कनकदण्डातपत्राणि स्वर्णदण्डशालीनि छत्राणि तेषां संघट्टेन उपरि परस्परदृढ़संयोगेन नष्टस्तिरोभूत: दिवसो दिवसालोको यासु ता:। अत्र प्रत्येक-विशेषण एव असम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्तिरलङ्कार:।

(स) एवमिति। एवमनेन प्रकारेण। मन्त्रिणि विनिवेशित: सम्पूर्णभावेन विन्यस्तो राज्यभारो येन तस्य, तस्य राज्ञ:। अन्तं ययौ अनुभवेन पारं प्राप। तथा सम्भुज्यमानमपि तादृगुत्कटभावेन रम्यमाणमपि अन्त:पुरं अन्त:पुरस्थस्त्रीगण:, शरवणं बाणाख्यतृणवृन्दमिव, निर्न विद्यते फलं पुत्रजननरूपं प्रयोजनं शस्यञ्च यस्य तत् निष्फलं, पुष्पाणां रजसां कुसुमानाञ्च दर्शनं यस्मिन् तत् तादृशमभवत्। शरवणे यथा पुष्पोत्पत्ता-वपि फलं नोत्पद्यते, तथा तासु स्त्रीषु रजस्वलासु सतीष्वपि सम्भोगसुखप्रयोजनभूत: पुत्रो नोदपद्यतेति सरलार्थ:। अत्र पूर्णोपमालङ्कार:। शरवणमिति "प्रनिरन्त"रित्यादिना णत्वम्।

থাকিত; অতিরিক্ত ধূলিসমূহ উত্থিত হইয়া পথের নিকটবর্ত্তী নদীগুলিকে ধূম্রবর্ণ করিয়া ফেলিত; সহচর পদাতিসৈন্যগণের কোলাহলে কর্ণবিবর বিদীর্ণ করিত; বেগে জয়ধ্বনি ঘোষণা করায় দশদিক্ পূর্ণ হইয়া যাইত এবং অসংখ্য শ্বেত চামর আন্দোলন করায় দশদিক্ আচ্ছাদিত হইত আর রাজগণ পরস্পর সংলগ্ন হইয়া অত্যন্ত ঘনভাবে সুবর্ণময় দণ্ড-সমন্বিত অসংখ্য ছত্র ধারণ করিতেন, তাহাতে দিনের আলোক তিরোহিত হইয়া যাইত।

(স) মহারাজ তারাপীড় মন্ত্রীর উপরে রাজ্যভার সম্পূর্ণ বিন্যস্ত করিয়া এই ভাবে যৌবনসুখ অনুভব করিতে লাগিলেন, সময় চলিয়া যাইতে লাগিল, বহুকাল যাবৎ সেই সুখ অনুভব করায় সংসারের অন্যান্য প্রায় সকল সুখেরই পার পাইলেন; কিন্তু একমাত্র পুত্রমুখ-দর্শনসুখ লাভ করিতে পারিলেন না।... (হ) যেমন যেমন যৌবন অতীত হইতে

---

(१)...निर्भरा:। (२)...संघट्टन...। (३) कश्चित् काल:। (४) तनयमुख...; लोकमुख...। (५) उपभुज्यमानमपि। (६) अभूत्।

मतिचक्राम, तथा तथा विफल-(१) मनोरथस्यानपत्यता-जन्माऽवर्द्धतास्य (२) सन्तापः। विषयोपभोग-सुखेच्छाभिश्च मनो विजहे (३)। (ङ) नरपति-सहस्र-परिवृतमप्यसहायमिव, चक्षुष्मन्तमप्यन्धमिव, भुवनालम्बनमपि (४) निरालम्बनमिव (५) आत्मानं (६) अमन्यत। (च)

अथ तस्य (७) चन्द्रलेखेव हरजटा-कलापस्य, कौस्तुभ-प्रभेव कैटभारि-(८) वक्षःस्थलस्य, वनमालेव मुसलायुधस्य, वेलेव सागरस्य, मदलेखेव दिग्गजस्य, लतेव पादपस्य, (९) कुसुमोद्गतिरिव (१०) सुरभिमासस्य, चन्द्रिकेव चन्द्रमसः,

(ङ) यथेति। अनपत्यताया निःसन्तानतायाः सकाशात् जन्म यस्य सः। अस्य तारापीडस्य। विजहे परित्यजाते स्म।

(च) नरेति। असहायमिव "शून्यमपुत्रस्य गृह"मिति न्यायेन शून्यमयतादर्शनात्। अन्धमिव पुन्नामनरकत्राणोपायादर्शनात्। भुवनालम्बनमपि परिपालकतया जगदाश्रयमपि निरालम्बनं निराश्रयमिव, पिण्डोदकलाभासम्भवेन पतनसम्भवात्। अत्र प्रथमा अभावाभिमानिनी जात्युत्प्रेक्षा, द्वितीयाभावाभिमानिनी जात्युत्प्रेक्षा, तृतीयाप्यभावाभिमानिनी जात्युत्प्रेक्षा, तासाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(छ) अथेति। विलासवती नाम महिषी तस्य भूषणमभूदित्यन्वयः। हरजटाकलापस्य शम्भोर्जटा-समूहस्य, चन्द्रलेखेव शशिकलेव। कैटभारेर्विष्णोर्वक्षःस्थलस्य, कौस्तुभस्य मणेः प्रभा दीप्तिरिव। मुसला-युधस्य बलरामस्य वनमाला "आजानुलम्बिनी माला सर्वर्त्तुकुसुमोज्ज्वला। मध्ये स्थूलकदम्बाढ्या वनमालेति कीर्त्तिता।" इति शब्दमालोक्तलक्षणा मालेव। वेला तीरमिव। मदलेखा दानजलरेखेव। सुरभिमासस्य चैत्रस्य, कुसुमोन्नतिः पुष्पसमृद्धिरिव। मानसस्य तदाख्यसरोवरस्य। मलयस्य तदाख्यपर्वतस्य। शेषस्य

লাগিল, তেমন তেমন তাঁহার পুত্রের আশাও বিফল হইতে লাগিল; সন্তান না হওয়ায় মনের সন্তাপ বৃদ্ধি পাইতে লাগিল; ক্রমে বিষয়-সম্ভোগ-সুখের ইচ্ছা মনকে পরিত্যাগ করিল। (ঙ) তখন তিনি, অসংখ্য রাজগণে পরিবৃত হইলেও অসহায়ের ন্যায়, চক্ষুষ্মান্ হইলেও অন্ধের ন্যায় এবং জগতের আশ্রয় হইলেও নিরাশ্রয়ের ন্যায় আপনাকে মনে করিতে লাগিলেন।

(চ) চন্দ্রকলা যেমন মহাদেবের জটাসমূহের, কৌস্তুভমণির প্রভা যেমন নারায়ণের বক্ষঃস্থলের, বনমালা যেমন বলরামের তীর যেমন সমুদ্রের, মদজলের রেখা যেমন দিগ্-হস্তীর, লতা যেমন বৃক্ষের, পুষ্পসমৃদ্ধি যেমন চৈত্রমাসের, জ্যোৎস্না যেমন চন্দ্রের, পদ্মিনী যেমন সরোবরের, নক্ষত্রশ্রেণী যেমন আকাশের, হংসশ্রেণী যেমন মানসসরোবরের, চন্দনবন-

(१) निष्फल...। (२) सन्तानवर्द्धतास्य। (३) विजह्रे, विजगाहे।
(४) भुवनलम्बनं, भुवनावलम्बनं। (५) निरालम्बमिव। (६) आत्मानमनपत्यं। (७) अस्य।
(८) कैटभाराति...। (९) कल्पपादपस्य। (१०) पुष्पोद्गतिरिव, कुसुमोद्गतिरिव।

कमलिनीव सरसः, तारकापङ्क्तिरिव (१) नभसः, हंसमालेव मानसस्य, चन्दनवनराजिरिव मलयस्य, फणामणिशिखेव शेषस्य, भूषणमभूत् त्रिभुवन-विस्मयजननी जननीव वनिता-विभ्रमाणां सकलान्तःपुरप्रधानभूता महिषी विलासवती नाम। (क)

एकदा च स तदावासमुपगतः (२) तां चिन्ता-स्तिमित-दीन-दृष्टिना (३) शोक-मूकेन परिजनेन परिवृताम्, आरादवस्थितैश्च ध्यानानिमिषलोचनैः कञ्चुकिभिरुपास्यमानाम्, अनतिदूरवर्त्तिनीभिश्चान्तःपुरवृद्धाभिराश्वास्यमानाम्, अविरलाश्रुपातार्द्रीकृत-(४) दुकूलाम्, अनलङ्कृताम्, वामकरतल-विनिहित-मुखकमलाम्, असंयतालकाम्, सुनिविडपर्य्यङ्किकोपविष्टाम्, देवीं (५)

अनन्तनागस्य, फणायां यो मणिस्तस्य शिखा दीप्तिरिव। त्रिभुवनविस्मयजननी रूपलावण्यादिनेति भावः। वनिताविभ्रमाणां स्त्रीजातेर्विलासानां जननी प्रसूतिरिव, सर्वविधविभ्रमाकरत्वादिति भावः। सकलेषु अन्तः-पुरेषु अन्तःपुररमणीषु प्रधानभूता। अत्र मालोपमा जात्युत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। विलासो विभ्रमः अस्या अस्तीति प्रशंसायां मतुप्।

(ख) एकदेति। एकदा च स राजा तस्या विलासवत्या आवासं भवनमुपगतस्तां विलासवतीमैव-क्षत तां ददर्शेत्यन्वयः। चिन्तया किंकर्त्तव्यताभावनया स्तिमिता निश्चला दीना कातरा च दृष्टिर्यस्य तेन, शोकेन महिष्या विषादजनितेनेत्यर्थः मूको निःशब्दस्तेन। आरात् निकटे। ध्यानेन तत्काल-कर्त्तव्यता-भावनया अनिमिषे लोचने येषां तैः, कञ्चुकिभिः "अन्तःपुरचरो वृद्ध" इत्याद्युक्तलक्षणैः स्त्रौशिक्षकैः। अविरलेन घनेन अश्रुपातेन आर्द्रीकृतं दुकूलं वसनं यस्यास्ताम्। वामकरतले विनिहितं स्थापितं मुख-

শ্রেণী যেমন মলয়পর্ব্বতের এবং ফণাস্থিত মণির প্রভা যেমন অনন্তনাগের অলঙ্কারস্বরূপ, সেইরূপ নিরুপম সৌন্দর্য্যে ও ভাবভঙ্গীতে ত্রিজগতের বিস্ময়কারিণী এবং স্ত্রীজাতির সমগ্র বিলাসভঙ্গীর জননীর ন্যায় ও অন্তঃপুরস্থ সকল রমণীগণের মধ্যে প্রধান, 'বিলাসবতী' নামে মহিষী মহারাজ তারাপীড়েরও অলঙ্কারস্বরূপ ছিলেন।

(খ) একদা মহারাজ তারাপীড়, বিলাসবতীর গৃহে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন,—মহিষী বিলাসবতী বামহস্ততলে মুখকমল সংস্থাপনপূর্ব্বক দৃঢ় অথচ ক্ষুদ্র একখানি খাটের উপরে বসিয়া রহিয়াছেন, শরীরে কোন অলঙ্কার নাই, অবিরল ধারায় অশ্রুপাতে বসন আর্দ্র হইয়া গিয়াছে, অন্তঃপুরের বৃদ্ধ স্ত্রীলোকেরা কিছু দূরে থাকিয়া আশ্বাস দিতেছে, কঞ্চুকিগণ দুশ্চিন্তা-বশতঃ নির্নিমেষ-নয়নে নিকটে থাকিয়া সেবা করিতেছেন আর 'এখন কি করা উচিত'—

(१) तारापङ्क्तिरिव, तारकपङ्क्तिरिव। (२) तदावासगतः।
(३)...स्तिमितदृष्टिना। (४)...बिन्दुपातार्द्रीकृत...। (५) ददर्श।

ददर्श। (ख) कृताभ्युत्थानाञ्च (१) तां तस्यामेव पर्य्यङ्किकायामुपवेश्य स्वय-ञ्चोपविश्य (२) अविज्ञातवाष्पकारणो भीतभीत इव करतलेन विगतवाष्पाम्बुःकणौ कुर्वन् कपोलौ भूपालः (३) तामवादीत्। (ग)

"देवि! किमर्थमन्तर्गत-गुरुशोकभार-मन्थरमशब्दं रुद्यते वर्षन्ति हि मुक्ताफलजालकमिव वाष्पविन्दुनिकरमेतास्तव (४) पक्ष्मपङ्क्तयः। किमर्थञ्च कृशोदरि! नालङ्कृतासि?। बालातप इव रक्तारविन्दकोशयोः किमिति न पातितश्चरणयोरलक्तकरसः? (५)। कुसुमशर-सरः-कलहंसकौ कस्मात् पाद-पङ्कज-स्पर्शेन नानुगृह्णीतौ मणिनूपुरौ?। किंनिमित्तमयमपगत-(६) मेखला-कलाप-मूको मध्यभागः?। किमिति च हरिण इव हरिणलाञ्छने न

कमलं यथा ताम्। असंयता अबद्धा अतएव आकुला इतस्ततो विक्षिप्ताः अलकाः कुटिलकुन्तला यस्यास्ताम्। सुनिविड़ायां दृढ़ायां पर्य्यङ्किकायां क्षुद्रखट्टायां उपविष्टा ताम्। देवीं कृताभिषेकां भार्य्याम्।

(ग) कृतेति। कृताभ्युत्थानां राज्ञः सम्मानप्रदर्शनार्थमिति भावः। तां विलासवतीं। अविज्ञातं वाष्पस्य विलासवत्या अश्रुनिर्गमस्य कारणं येन सः, अतएव भीतभीत इव भूपालो राजा, करतलेन पाणिना कपोलौ विलासवत्या गण्डौ, विगता दूरीभूताः वाष्पाम्भसां अश्रुजलानां कणा विन्दवो याभ्यां तौ तादृशौ कुर्वन् तां विलासवतीम्।

(घ) देवीति। अन्तर्गतस्य चित्तस्थितस्य गुरोर्महतः शोकस्य भारेण मन्थरं मन्दं मन्दं, अशब्दं नीरवं यथा स्यात्तथा। पक्ष्मपङ्क्तयो नयनरोमश्रेणयः। मुक्ताफलजालकं मौक्तिकसमूहमिव स्थूलत्वा-दिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। रक्तारविन्दकोशयोः रक्तवर्णपद्मकलिकयोः, बालातपो नूतनसूर्य्यालोक इव। पातितः अर्पितः। उपमा। कुसुमशरो मदन एव सरो वापी तस्याः कलहंसकौ कादम्बस्वरूपौ उज्ज्वल-साधर्म्यादिति भावः, मणिनूपुरौ, पादावेव पङ्कजे तयोः स्पर्शेन कस्मात् न अनुगृह्णीतौ प्रसादपात्रीकृतौ। अत्राश्लिष्टशब्दनिबन्धनं परम्परितरूपकं, किञ्च पादपङ्कजेत्यनेन तेनैव सह समस्तवस्तुविषयं साङ्गरूपकञ्चेत्य-

---

এই ভাবনায় নিশ্চল ও কাতরনেত্র পরিজনবর্গ শোকে নীরব হইয়া চতুর্দ্দিক্ বেষ্টন করিয়া রহিয়াছে। (গ) রাণী রাজাকে দেখিয়া গাত্রোত্থান করিলেন, তখন রাজা রাণীকে সেই খাটের উপরেই বসাইয়া নিজেও তাহার এক পার্শ্বে উপবেশন করিয়া, রাণীর অশ্রুপাতের কারণ জানা না থাকায় ভীত-ভীত হইয়া করতলদ্বারা তাঁহার গণ্ডযুগলের অশ্রুবিন্দুসকল মুছিয়া দিয়া তাঁহাকে বলিতে লাগিলেন।

(ঘ) "মহিষি! গুরুতর মনের শোকে নীরবে অল্প অল্প রোদন করিতেছ কেন? তোমার নয়নের এই লোমগুলি মুক্তা-সমূহের ন্যায় অশ্রুবিন্দুসকল বহন করিতেছে। হে কৃশোদরি! অলঙ্কার ধারণ কর নাই কেন? দুটি রক্তবর্ণ পদ্মকলিকার উপরে নূতন রৌদ্রের

---

(१) कृतप्रत्युत्थाना, कृतप्रत्यभ्युत्थाना। (२) पर्य्यङ्किकायामुपविश्य। (३) भूमिपालः।
(४) नवायताः। (५) अयमलक्तकरसः। (६) किंनिमित्तमपगत...।

लिखितः (१) कृष्णागुरुपत्रभङ्गः (२) पयोधरभारे ?। केन कारणेन तन्वीयं हर-मुकुट-चन्द्रलेखेव गङ्गास्रोतसा न विभूषिता हारेण वरारोहे! (३) शिरोधरा ? (घ)। किं वृथा वहसि विलासिनि! स्रवदश्रुजल-लव-धौत-कुङ्कुम-पत्रलतं (४) कपोल-युगलम् ? (५) (ङ) इदञ्च कोमलाङ्गुलिदलनिकरं (६) रक्तोत्पलमिव करतलं किमिति कर्णपूरतामारोपितम् ? (च) इमाञ्च केन हेतुना मानिनि! धारयस्यनुपरचित-गोरोचना-

---

नयोरैकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। अयं मध्यभागः कटीदेशः, किंनिमित्तं अपगतेन दूरीभूतेन मेखलाकलापेन काञ्चीदामरूपालङ्कारेण मूको निःशब्दः। "कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतेऽपि च।" इति विश्वः। हरिणलाञ्छने चन्द्रे। पयोधरभारे विशालस्तनयुगले, कृष्णागुरुणा कृष्णवर्णगन्धद्रव्यविशेषेण पत्रभङ्गः पत्रभङ्गाकारतिलकविशेषः। लिखितश्चित्रितः। गौरतया वर्त्तुलतया च चन्द्रपयोधरयोः, कृष्णतया च हरिणागुरुपत्रभङ्गयोः सादृश्यं बोध्यम्। उपमा। वरानुत्तमपुरुषान् तेषां मनांसीत्यर्थः आरोहति या सा वरारोहा उत्तमाङ्गना। हे तन्वि कृशाङ्गि! हे वरारोहे! इयं शिरोधरा तव ग्रीवा, गङ्गास्रोतसा हरस्य शिवस्य यन्मुकुटं मुकुटीभूतो जटाजूटः तस्य चन्द्रलेखेव शशिकलेव न विभूषिता नालङ्कृता। उपमा।

(ङ) किमिति। स्रवद्भिः पतद्भिः अश्रुजललवैर्नयनजलविन्दुभिः, धौता प्रक्षालिता कुङ्कुमस्य पत्रलता तत्तदाकारचिह्नं यस्मिन् तत्। वृथा अनर्थकं किं कथं वहसि।

(च) इदमिति। कोमला मृदुला अङ्गुलयः दलनिकरः पत्रसमूह इव यत्र तत्, करतलं वामपाणितलं किमिति रक्तोत्पलमिव, कर्णपूरतां वामकर्णाभरणतां आरोपितं प्रापितं। वामकरतले वामभावेन मुखस्थापनादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारो लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते।

(छ) इमामिति। अनुपरचितं अनिर्म्मितं गोरोचनाविन्दुभिस्तिलकं यत्र तां, तथा असंस्कृता-

---

মত পা'দুখানিতে আলতা দেও নাই কেন? মদন-সরোবরের কলহংসযুগলস্বরূপ রত্নময় নূপুরযুগল চরণপঙ্কজ-স্পর্শে অনুগৃহীত কর নাই কেন? তোমার এই কটিদেশ কাঞ্চী ধারণ না করায় নীরব হইয়া রহিয়াছে কেন? কেনই বা চন্দ্রের উপরে হরিণচিহ্নের ন্যায় বিশাল স্তনযুগলের উপরে কৃষ্ণাগুরুদ্বারা পত্রভঙ্গ চিত্রিত কর নাই? হে কৃশাঙ্গি! হে বরবর্ণিনি! গঙ্গার স্রোতে মহাদেবের মুকুটস্থিত চন্দ্রকলার ন্যায় তোমার এই কণ্ঠদেশ মুক্তার হারে অলঙ্কৃত হয় নাই কেন? (ঙ) হে বিলাসিনি! কেন তুমি বৃথা রোদন করিতেছ? তোমার নয়ন হইতে অশ্রুবিন্দুসকল নির্গত হইয়া কপোলযুগলের কুঙ্কুমের পত্রলতাচিহ্নগুলি প্রক্ষালিত করিয়াছে। (চ) পদ্মের দলসমূহের ন্যায় কোমল অঙ্গুলি-সমন্বিত এই বাম করতল কি নিমিত্ত রক্তপদ্মের ন্যায় কর্ণের আভরণ করিয়াছ? (ছ) গোরোচনাবিন্দুদ্বারা ললাটে

---

(१) आलिखितः। (२) कृष्णागुरुपङ्कपत्रभङ्गः। (३) वरोरु!।
(४) धौतपत्रतलं। (५) कपोलयुगं। (६)...अङ्गुलिनिकरं।

बिन्दु-तिलकामसंस्कृतालकिनीमलिकलेखाम्? (१) (छ) अयञ्च ते (२) बहुलपक्षप्रदोष इव चन्द्रलेखा-विरहितः करोति मे दृष्टिखेदं (३) अतिबहुल-तिमिर-पटलान्धकारः कुसुमरहितः (४) केशपाशः। (ज) प्रसीद, निवेदय देवि! दुःख-निमित्तम्। एते हि पल्लवमिव सरागं मे हृदयं कम्पयन्ति तरलीकृतस्तनांशुकास्तवायता निःश्वासमारुताः (५)। (झ) कच्चित् मया-पराद्धम्? अन्येन वा केनचिदस्मदुपजीविना (६) परिजनेन?। अतिनिपुण-मपि (७) चिन्तयन् न पश्यामि खलु स्खलितमल्पमप्यात्मन-(८) स्त्वद्विषये। त्वदायत्तं हि मे जीवितं राज्यञ्च। (ञ) कथ्यतां सुन्दरि! शुचः कारणम्"

लेखादिसंस्काररहितौकृताः अलकाः कुटिलकुन्तला अस्याः सन्तीति ताम्। अलिकलेखा रेखाङ्कितभालस्थलं। "ललाटमलिकं" इत्यमरः।

(ज) अयमिति। चन्द्रलेखया शशिकलया विरहितः, अतएव अतिबहुलेन तिमिरपटलेन ध्वान्तचयेन अन्धकारो दृष्टिप्रसाररोधी, बहुलपक्षस्य कृष्णपक्षस्य प्रदोषो यामिनीमुखमिव, कुसुमरहितः अतएव अति-बहुलतिमिरपटलवत् अन्धकारः केवलकृष्णवर्ण इत्यर्थः, ते तव केशपाशः, मे मम दृष्टिखेदं नयनदुःखं करोति। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(झ) प्रसीदेति। तरलीकृतं चञ्चलीकृतं स्तनयोरंशुकं वसनं यैस्ते, आयता दीर्घाः, तव निःश्वास-मारुता निश्वासवायवः, पल्लवमिव, रागेण अनुरागेण रक्तिम्ना च सह विद्यमानमिति सरागं मे मम हृदयं कम्पयन्ति उद्वेजयन्ति सञ्चालयन्ति च। अत्रापि पूर्णोपमालङ्कारः।

(ञ) कच्चिदिति। कच्चिदित्यभीष्टप्रश्ने। आत्मनः स्वस्य। स्खलितमन्याय्याचरणम्।

তিলক নির্ম্মাণ কর নাই, আবার অপরিস্কৃত কেশকলাপ আসিয়া ললাটের উপর পড়িয়াছে, হে মানিনি! তুমি কি নিমিত্ত এইরূপ ললাট ধারণ করিতেছ? (জ) চন্দ্রকলা উদিত হয় নাই, তাহাতে গাঢ় অন্ধকারসমূহ দৃষ্টি রোধ করিতেছে—এইরূপ কৃষ্ণপক্ষের প্রদোষকাল যেমন নয়নের দুঃখ জন্মায়, সেইরূপ পুষ্পবিহীন, সুতরাং গাঢ় অন্ধকারের ন্যায় ঘোর কৃষ্ণবর্ণ তোমার এই কেশকলাপ আমার নয়নের দুঃখ জন্মাইতেছে। (ঝ) মহিষি! প্রসন্ন হও, দুঃখের কারণ প্রকাশ কর; সাধারণ বায়ু যেমন রক্তবর্ণ পল্লব কম্পিত করে, সেইরূপ তোমার এই দীর্ঘ নিশ্বাস, স্তনের বসন কম্পিত করিয়া আমার অনুরক্ত হৃদয়কে কম্পিত করিতেছে। (ঞ) আমি কি কোন অপরাধ করিয়াছি? কিংবা আমাদের আশ্রিত অন্য কোন পরিজন কোন অপরাধ করিয়াছে? আমি অতি নিপুণভাবে চিন্তা করিয়াও তোমার বিষয়ে নিজের অল্পও কোন অন্যায় আচরণ দেখিতেছি না; কারণ—আমার জীবন ও রাজ্য এই উভয়ই

(१)...तिलकां असंयमितालकिनीं ललाटलेखाम्। (२) क्वचित् 'ते' इति नास्ति। (३) दृष्टिवेदनां। (४)...अन्धकारः केशपाशः। (५) श्वासमरुतः। (६) अनुजीविना। (७) क्वचित् 'अपि' शब्दो नास्ति। (८) क्वचित् 'अल्प' शब्दोऽपि नास्ति।

ইত্যেবমভিধীয়মানাপি (১) বিলাসবতী (২) যদা ন কিঞ্চিৎ প্রতিবচনং প্রপেদে (৩) তদা বিদ্রুতবাষ্পহেতুমস্যাঃ পরিজনমপৃচ্ছৎ। (ট)

অথ তস্যাস্তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী সতত-প্রত্যাসন্না মকরিকা নাম রাজানমুবাচ। "দেব! কুতো দেবাদল্পমপি পরিস্খলিতম্? অভিমুখে চ দেবে কা শক্তিঃ পরিজনস্যান্যস্য বা কস্যচিদপরাদ্ধুম্? কিন্তু 'মহাগ্রহ-(৪) গৃহীতেব বিফল-নরেন্দ্র-(৫) সমাগমাস্মি' ইত্যয়মস্যা দেব্যাঃ সন্তাপঃ, সুমহাংশ্চ (৬) কালঃ সন্তপ্যমানায়াঃ। (ঠ) প্রথমমপি স্বামিনী (৭) দানবশ্রীরিব

(ট) কথ্যতামিতি। শুচঃ শোকস্য। প্রতিবচনমুত্তরং, প্রপেদে প্রাপ্ত দত্তবতীত্যর্থঃ। বিদ্রুতস্য বৃদ্ধিং প্রাপ্তস্য বাষ্পস্য অশ্রুণঃ হেতুং কারণং। পৃচ্ছতের্দ্বিকর্ম্মকত্বাদুভয়ত্রাপি কর্ম্মণি দ্বিতীয়া।

(ঠ) অথেতি। তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী পর্ণমঞ্জূষাধারিণী, সততপ্রত্যাসন্না সর্বদা নিকটচারিণী। দেবে রাজনি ভবতি অভিমুখে প্রসন্নে সতি। মহাগ্রহেণ পূতনাদিনা কেনচিদুৎকটভূতেন গৃহীতা অধিষ্ঠিতা নারীব, বিফলোঽপত্যজননাভাবান্নিষ্ফলঃ নরেন্দ্রস্য রাজ্ঞস্তারাপীড়স্য সমাগমো রতিসংসর্গো যস্যাঃ সা, পক্ষে বিফলো ভূতাপসারণস্যাশক্যত্বান্নিষ্ফলঃ, নরেন্দ্রস্য ভূতাপসারকচিকিৎসকস্য সমাগম উপস্থিতির্যস্যাঃ সা। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ। কেচিত্তু নারীত্যনুক্তত্বাদুৎপ্রেক্ষামাচক্ষতে। ইতি হেতৌঃ। সন্তপ্যমানায়া বিষীদন্ত্যাঃ, সুমহান্ অতিবহুলঃ কালো গত ইতি শেষঃ।

তোমার অধীন। (ট) অতএব সুন্দরি! তোমার শোকের কারণ বল।" রাজা এইরূপ বলিলেও বিলাসবতী যখন কোন উত্তর করিলেন না, তখন রাজা পরিজনদিগকে তাঁহার অতিরিক্ত অশ্রুপাতের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন।

(ঠ) তদনন্তর বিলাসবতীর তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী (সর্ব্বদা পানের ডাবি নিয়া যে বেড়ায়) ও সর্ব্বদা নিকটবর্ত্তিনী মকরিকা নামে কোন পরিচারিকা রাজাকে বলিল— "মহারাজ! আপনা হইতে অল্পও অন্যায় আচরণ হইবার সম্ভাবনা কি? আবার আপনি প্রসন্ন থাকিলে পরিজন বা অন্য কাহারও কোন অপরাধ করিবার কি শক্তি আছে? কিন্তু 'প্রবলভূতাবিষ্ট স্ত্রীলোকের পক্ষে ভূতচিকিৎসকের উপস্থিতি যেমন বিফল হইয়া যায়, আমার পক্ষেও তেমন রাজার সম্ভোগ বিফল হইয়া যাইতেছে'—ইহা ভাবিয়াই রাণীর এইরূপ সন্তাপ জন্মিয়াছে এবং এইরূপ সন্তাপ করিতে করিতেই অনেক সময় অতীত হইয়া থাকে। (ড) অসুরগণের লক্ষ্মী যেমন সর্ব্বদা দেবগণের নিন্দা করিয়া থাকে, রাণীও তেমন সর্ব্বদা সম্ভোগের নিন্দা করিয়া, ইহার পূর্ব্বেও পরিজনবর্গের অনুরোধে অতি কষ্টে শয়ন, উপবেশন, স্নান, ভোজন ও অলঙ্কারধারণ প্রভৃতি প্রাতিদিবসীয় আবশ্যককার্য্যে শোকের সহিতই যেন প্রবৃত্ত হইতেন;

(১) ক্বচিৎ অপিশব্দো ন দৃশ্যতে। (২) ক্বচিৎ বিলাসবতীতি ন বর্ত্ততে। (৩) প্রতিবচঃ প্রতিপেদে।
(৪) মহাগ্রাহ... (৫) বিফলরাজ...। (৬) মহাংশ্চ। (৭) স্বামিনঃ।

सततनिन्दितसुरता शयनासन-स्नान-(१) भोजन-भूषण-परिग्रहादिषु समुचितेष्वपि (२) दिवसव्यापारेषु कथं कथमपि परिजनप्रयत्नात् प्रवर्त्तमाना (३) सशोकेवासीत्, देवहृदय-पीड़ा-परिजिहीर्षया च न दर्शितवती विकारम्, (ड) अद्य तु चतुर्द्दशीति भगवन्तं महाकाल-(४) मर्च्चितुमितो गतया तत्र महाभारते वाच्यमाने श्रुतम्—"अपुत्राणां किल न सन्ति (५) लोकाः शुभाः, पुन्नाम्नो नरकात्त्रायत इति पुत्रः" इत्येतच्छ्रुत्वा भवनमागत्य परिजनेन सशिरःप्रणाम-मभ्यर्थ्यमानापि नाहारमभिनन्दति, न भूषणपरिग्रहमाचरति, नोत्तरं प्रति-

---

(ड) प्रथममिति। प्रथममपि इतः पूर्वमपि स्वामिनी इयं देवी, दानवश्रीरिव असुरलक्ष्मीरिव, सततं निन्दितं सन्तानाजननाद्विगर्हितं सुरतं स्वकीयराजसम्भोगो यया सा, पक्षे सततं निन्दिता विपक्षत्वाद्विगर्हिता सुरता देवसमूहो यया सा, तादृशी सती। दिवसव्यापारेषु प्रतिदिवसीयकार्य्येषु। कथं कथमपि अतिकष्टेनेत्यर्थः। देवस्य भवतः हृदयपीड़ायाः स्वकीयविषाददर्शनेन सम्भाव्यमानमनोदुःखस्य, परिजिहीर्षया परिहर्त्तुमिच्छया अनुत्पत्तीच्छयेत्यर्थः, विकारं इदानीन्तनमिव अश्रुपातादिकं न दर्शितवती।

(ढ) अद्येति। चतुर्दशी तिथिरिति हेतोः, "शिवस्योक्ता चतुर्दशी"ति स्मृतेः शिवार्च्चनायां चतुर्दश्याः प्रशस्तत्वादिति भावः। लोका लोकाख्यस्वर्गाः। तथा च महाभारतम्—

"पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते। अथ पुत्रस्य पौत्रेण ब्रध्नस्याप्नोति पिष्टपम्।"

"पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात्त्रायते पितरं सुतः। तस्मात् पुत्र इति ख्यातः स्वयमेव स्वयम्भुवा।"

शिरःप्रणामेण मस्तकावनमनेन सहेति सशिरःप्रणामं यथा तथा, अभ्यर्थ्यमानापि अनुरुध्यमानापि। अभिनन्दति आद्रियते। भूषणपरिग्रहं नाचरति अलङ्कारधारणं न करोति। उत्तरं न प्रतिपद्यते कथमीदृशं व्यवक्रियत

এবং পাছে আপনার মনেও দুঃখ উপস্থিত হয়—এই আশঙ্কায় সেই দুঃখের কোন লক্ষণ বাহিরে প্রকাশ করেন নাই; (ঢ) কিন্তু আজ চতুর্দ্দশী তিথি বলিয়া ভগবান্ মহাকালের পূজা করিবার নিমিত্ত এ স্থান হইতে গিয়াছিলেন, সেখানে মহাভারত পাঠ হইতেছিল, তাহাতে শুনিয়াছেন যে—'পুত্রহীন ব্যক্তিগণের মঙ্গলময় 'লোক' নামে স্বর্গ হয় না;' 'পুৎ' নামক নরক হইতে পিতা ও মাতাকে ত্রাণ করে বলিয়া তনয়ের নাম 'পুত্র' ইহা শুনিয়া গৃহে আসিলে পর পরিজনবর্গ মস্তক অবনত করিয়া অনুরোধ করিলেও ইনি আহার করিতে চান না, কোন অলঙ্কার ধারণও করিতেছেন না, 'কেন এমন করিতেছেন' ইহা জিজ্ঞাসা করিলেও কোন উত্তর দেন না, কেবল নিরন্তর অশ্রু বিসর্জ্জনপূর্ব্বক মলিনবদনে

---

(१) शयनस्नान, शयनासनस्नान...। (२) समुचितेषु दिवस...।

(३) प्रवर्त्तमाना। (४) अथ चतुर्दशी, अद्य चतुर्दशी, महाकालाभिधानं।

(५) अपुत्राणां न सन्ति, अपुत्राणां किल गतिर्नास्ति न वा सन्ति...।

पश्यति, केवलमविरलवाष्प-(१) दुर्द्दिनान्धकारितमुखी रोदिति। एतदाकर्ण्य देव: प्रमाणम्।" इत्यभिधाय (२) विरराम। (ढ)

विरतवचनायां (३) तस्यां भूमिपालस्तूष्णीं मुहूर्त्तमिव स्थित्वा दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य (४) निजगाद—"देवि! किमत्र क्रियतां दैवायत्ते वस्तुनि, अलमतिरुदितेन, (५) न वयमनुग्राह्या: (६) प्रायो देवतानाम्, आत्मज-परिष्वङ्गामृतास्वाद-सुखस्य नूनमभाजनमस्माकं हृदयम्, अन्यस्मिन् जन्मनि न कृतमवदातं कर्म्म, जन्मान्तरकृतं (७) हि कर्म्म फलमुपनयति पुरुषस्येह-जन्मनि, न हि शक्यं दैवमन्यथा कर्त्तुमभियुक्तेनापि। (ण) यावत्तु (८)

इति जिज्ञासायां कृतायामपि प्रतिवाक्यं न दत्ते। अविरलानां घनानां वाष्पाणां अश्रूणां दुर्द्दिनेन वृष्ट्या अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं मलिनमित्यर्थ: मुखं यस्या: सा। "घनान्धकारे वृष्टौ च दुर्द्दिनं कवयो विदु"-रिति साङ्ग:। देवो भवान् प्रमाणं कर्त्तव्यनिर्वाचक:।

(ण) विरतेति। तस्यां मकरिकायां। दैवायत्ते भाग्याधीने, वस्तुनि पुत्रलाभरूपविषये, क्रियतां मनुष्यमात्रेण त्वया मया वेति शेष:। राज्यलाभादावनुग्रहदर्शनात् प्राय:पदम्। नूनं निश्चितं। आत्मजस्य पुत्रस्य परिष्वङ्ग आलिङ्गनमेव अमृतं पीयूषं तस्य आस्वादेन अनुभवेन यत् सुखमानन्दस्तस्य, अभाजनमपात्रं अनधिकारीत्यर्थ:। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कार:। कथमेतदवगम्यत इत्याह अन्यस्मिन्निति। अन्यस्मिन् पूर्वस्मिन्। अवदातं निर्म्मलं कर्म्म पुत्रालिङ्गनानन्दजननोपयोगि पुण्यमित्यर्थ:। हि तथाहि। कर्म्म धर्म्माधर्म्म-रूपं कर्त्तृ। उपनयति उत्पादयति। "तत्र दैवमभिव्यक्तं पौरुषं पौर्वदैहिक"मिति वृहस्पतिवचनादिति भाव:। "अभिव्यक्तं फलजननायोन्मुखीभूत"मिति स्मार्त्त:। अभियुक्तेनापि महायोगिनापि। मादृशानु का कथेति भाव:।

রোদন করিতেছেন; ইহা শুনিয়া এখন আপনি যাহা নির্দ্দেশ করেন (তাহাই করা যাইবে)" এই কথা বলিয়া মকরিকা বিরত হইল।

(ণ) মকরিকা বিরত হইলে রাজা মৌনাবলম্বনপূর্ব্বক কিছু কাল থাকিয়া, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস পরিত্যাগ করিয়া কহিলেন—"দেবি! পুত্রলাভ করা দৈবের অধীন; সুতরাং সামান্য মনুষ্য হইয়া তুমি বা আমি এ বিষয়ে কি করিতে পারি? অতএব নিরন্তর রোদন করিও না; আমরা অনেক বিষয়েই দেবগণের অনুগ্রহের পাত্র নহি; আর আমাদের হৃদয়ও, পুত্রের আলিঙ্গনরূপ অমৃত-আস্বাদন-জনিত সুখের অধিকারী নহে; কারণ, আমরা পূর্ব্বজন্মে কোন ধর্ম্মকার্য্য করি নাই; পূর্ব্বজন্মে যে ধর্ম্ম বা অধর্ম্ম করা হইয়াছে, তাহাই মনুষ্যের ইহজন্মে অনুরূপ ফল জন্মাইয়া থাকে; মহাযোগী পুরুষও দৈবকে অন্যরূপ করিতে সমর্থ

---

(१)…वाष्पविन्दु…। (२) इत्येतदभिधाय। (३) विरतवचनायाञ्च। (४)नि:श्वस्य।
(५) अतिमात्रमलं रुदितेन। (६) वयमननुग्राह्या:। (७) जन्मान्तरविहितं। (८) यावत्।

मानुष्यके यावदुपपादयितुं तावत् सर्वमुपपाद्यताम्, अधिकां कुरु देवि! गुरुषु भक्तिम्, (१) द्विगुणामुपपादय देवतासु पूजाम्, (२) ऋषिजनसपर्य्यासु (३) दर्शितादरा भव, परं हि दैवतमृषयो यत्ननाराधिता यथासमीहितफलानामतिदुर्लभानामपि (४) वराणां दातारो भवन्ति। (त) श्रूयते (५) हि पुरा चण्डकौशिकप्रसादात् (६) मगधेषु (७) बृहद्रथो नाम राजा जनार्द्दनस्य जेतारं (८) अतुलभुजबलमप्रतिरथं (९) जरासन्धं नाम तनयं लेभे। (थ) दशरथश्च राजा परिणतवया अपि (१०) विभाण्डकमहामुनिसुतस्य ऋष्यशृङ्गस्य प्रसादात् नारायणभुजानिवाप्रतिहतान् उदधीनिवाक्षोभ्यानवाप चतुरः पुत्रान्। (द)

(त) यावदिति। मानुष्यके मनुष्यलोके, यावदुपपादयितुं कर्त्तुं शक्यं। उपपाद्यतां क्रियताम्। किं तदित्याह अधिकामित्यादि। उपपादय कुरु। ऋषिजनस्य सपर्य्यासु पूजासु। ननु मानुषमात्रस्य ऋषिजनस्य पूजासु कथमादरो दर्शनीय इत्याह परं हीति। हि यस्मात्। परं दैवतं उत्कृष्टदेवतास्वरूपाः। यथासमीहितं यथेष्टं फलं येषु तेषां।

(थ) उक्तमेवार्थं दृष्टान्तेन द्रढ़यति श्रूयत इति। चण्डकौशिकप्रसादात् विश्वामित्रानुग्रहात्। मगधेषु मगधनामकदेशे। "बहुत्वे"दित्यादिना बहुवचनम्। अप्रतिरथं प्रतिपक्षरहितं।

(द) दशेति। परिणतवया अपि वृद्धोऽपीत्यर्थः। विभाण्डकनामा यो महामुनिस्तस्य सुतस्तस्य। अप्रतिहतान् अन्यैरनिवारितान्। उदधीन् समुद्रानिव अक्षोभ्यान् अजेयान् अनुद्वेलनीयांश्च। पुत्रान् रामचन्द्रादीन्। अवाप लेभे। अत्र पूर्णोपमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिरलङ्कारः।

হ'ন না। (ত) দেবি! এই মনুষ্যলোকে যতদূর করিতে পারা যায়, পুত্রলাভের নিমিত্ত সে সমস্তই কর; গুরুজনের প্রতি অধিক ভক্তি কর; পূর্ব্বাপেক্ষা দ্বিগুণ দেবতাপূজা কর; মুনিগণের সেবাতে বিশেষরূপে আদরপ্রদর্শন কর; কারণ, মুনিগণ প্রধান দেবতাস্বরূপ; সুতরাং যত্নপূর্ব্বক তাঁহাদের আরাধনা করিলে তাঁহারা অভিলষিত-ফলজনক অতিদুর্লভ বরও দিয়া থাকেন। (থ) পুরাণ ও ইতিহাসে শুনা যায় যে, পূর্ব্বকালে বৃহদ্রথ নামে মগধদেশের রাজা, মহর্ষি বিশ্বামিত্রের অনুগ্রহে কৃষ্ণবিজয়ী, অতুলনীয়-বাহুবলসম্পন্ন এবং প্রতিদ্বন্দ্বিরহিত জরাসন্ধ নামে পুত্র লাভ করিয়াছিলেন। (দ) আর রাজা দশরথ বৃদ্ধ হইয়াও মহর্ষি বিভাণ্ডকের পুত্র ঋষ্যশৃঙ্গের অনুগ্রহে নারায়ণের বাহুর ন্যায় অপ্রতিহত-শক্তিসম্পন্ন এবং সমুদ্রের ন্যায় অক্ষোভণীয় (অজেয় এবং অনুদ্বেলনীয়) রামচন্দ্রপ্রভৃতি চারিটি পুত্র লাভ

---

(१) गुरुभक्तिं। (२) दैवतपूजां। (३)...परिचर्य्यासु। (४) दुर्लभानामपि।
(५) श्रूयन्ते। (६) कौशिकप्रभावात्, चण्डकौशिकप्रभावात्, चण्डकौशिकप्रसादप्रभावात्।
(७) मगधेशो...। (८) जनार्द्दनप्रतिमं। (९) अतुलबलपराक्रमं, अमरतुल्यभुजबलं।
(१०) परिणतवया विभा...।

अन्ये च राजर्षयस्तपोधनानाराध्य पुत्रदर्शनामृतस्वाद-(१) सुखभाजो बभूवुः। (ध) अमोघफला हि महामुनिसेवा भवति (२) (न) अहमपि खलु देवि ! (३) कदा समुपारूढगर्भभरालसामापाण्डुरमुखीं (४) आसन्न-पूर्णचन्द्रोदयामिव (५) पौर्णमासीनिशां देवीं द्रक्ष्यामि (६)। (प) कदा मे तनयजन्म-महोत्सवानन्द-निर्भरो हरिष्यति पूर्णपात्रं परिजनः। (फ) कदा हारिद्रवसनधारिणी सुत-सनाथोत्सङ्गा द्यौरिवोदित-(७) रविमण्डला सबाला-तपा मामानन्दयिष्यति देवी। (ब) कदा सर्वौषधि-पिञ्जर-(८) जटिलकेशो

(ध) अन्य इति। अन्ये दिलीपादयः। पुत्रदर्शनमेव अमृतं तस्य स्वादेन अनुभवेन सुखं भजन्ते ये ते तथोक्ताः। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(न) अमोघेति। हि यस्मात्। अमोघफला अव्यर्थफला।

(प) अहमिति। समुपारूढस्य उत्पन्नस्य गर्भस्य भरेण भारेण अलसां सर्वकार्य्येषु मन्दां, आपाण्डुरं गर्भधारणस्वभावात् चन्द्रोदयाच्च ईषत् पाण्डुवर्णं मुखं वदनं प्रथमभागश्च यस्यास्ताम्, अतएव आसन्नः समीपवर्त्ती पूर्णचन्द्रस्य उदयो यस्यास्तां, पौर्णमासीनिशामिव देवीं भवतीम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(फ) कदेति। तनयजन्ममहोत्सवेन आनन्दनिर्भरः आमोदातिशयो यस्य सः, परिजनः, मे मम पूर्ण-पात्रं पूर्णानकं शरीरधृतं वस्त्रमाल्यादिकमिति यावत् हरिष्यति बलान्नेष्यति। "वर्द्धापकं यदानन्दा-दलङ्कारादिकं पुनः। आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकञ्च तत्।" इति हारावली।

(ब) कदेति। हरिद्रया रक्तमिति हारिद्रं तादृशं वसनं धारयति परिदधाति या सा, तथा सुतेन पुत्रेण सनाथः सहितः उत्सङ्गः क्रोडो यस्याः सा, देवी भवती, उदितं रविमण्डलं सूर्य्यबिम्बं यस्यां सा, अतएव सबालातपा नवीनसूर्य्यालोकसहिता द्यौराकाशमिव। अत्र रविमण्डलेन सह नवजाततया ताम्रवर्णस्य शिशोः, बालातपेन सह बालकप्रभाभासितहारिद्रवसनस्य, दिवा च सह देव्याः सादृश्यं बोध्यमित्युपमालङ्कारः।

করিয়াছিলেন। (ধ) দিলীপপ্রভৃতি অন্যান্য রাজর্ষিগণও মহর্ষিদিগের আরাধনা করিয়া পুত্রদর্শনরূপ অমৃত আস্বাদনের সুখভাগী হইয়া গিয়াছেন; (ন) কারণ, মহর্ষিগণের আরাধনার ফল অব্যর্থ হইয়া থাকে। (প) দেবি! আমিও, পূর্ণচন্দ্রের উদয় নিকটবর্তী হইলে পূর্ণিমার রাত্রির ন্যায় ঈষৎ পাণ্ডুবর্ণ-বদন এবং উৎপন্ন গর্ভের ভারে অলস-দেহ—এই অবস্থায় তোমাকে কবে দেখিতে পাইব? (ফ) পুত্রজন্মের মহোৎসবে আনন্দে মত্ত হইয়া পরিজনবর্গ কবে আমার গাত্র হইতে বস্ত্র ও মাল্যপ্রভৃতি বলপূর্ব্বক অপহরণ করিবে? (ব) উদিত সূর্য্যমণ্ডলসমন্বিত এবং নূতন-রৌদ্র-সংযুক্ত আকাশের ন্যায় কবে তুমি হরিদ্রা-

---

(१)...आस्वाद...। (२) महामुनिजनसेवाः, भवन्ति। (३) क्वचित् 'देवि !' इति नास्ति।
(४) आपाण्डुमुखीं। (५) आसन्नचन्द्रोदयामिव। (६) प्रद्रक्ष्यामि। (७) उद्यत...।
(८) पिञ्जरित...।

निहित-रक्षाघृतबिन्दुनि तालुनि विन्यस्त-(१) गौरसर्षपोन्मिश्र-भूतिलेखः (२) गोरोचनाचित्रित-(३) कण्ठसूत्रग्रन्थिः उत्तानशयो दशनशून्य-स्मिताननः पुत्रको जनयिष्यति मे हृदयाह्लादम्। (भ) कदा गोरोचनाकपिलद्युतिरन्तःपुरिका-करतल-परम्परा-सञ्चार्य्यमाणमूर्त्तिरशेषजनाभिनन्दितः (४) मङ्गलप्रदीप इव मे शोकान्धकारमुन्मूलयिष्यति चक्षुषोः। (म) कदा च क्षितिरेणु-(५) धूसरो

(भ) कदेति। सर्वौषधिभिः "कुष्ठमांसीहरिद्राभिर्वचाशैलेयचन्दनैः। सुराचन्दनकर्पूरैर्मुस्तः सर्वौषधिः स्मृतः।" इति राजनिघण्टोक्तद्रव्यविशेषैः पिञ्जराः पिङ्गलवर्णाः, जटिला जटावत् संसक्ताश्च केशा यस्य सः। रक्षार्थं घृतमिति रक्षाघृतं, तथा च निहितः स्थापितः रक्षाघृतस्य बिन्दुः कणो यस्मिन् तस्मिन् तथोक्ते तालुनि तालुदेशे विन्यस्ता अर्पिता गौरसर्षपेण श्वेतसर्षपेण उन्मिश्रा संयुक्ता भूतिलेखा भस्मरेखा यस्य सः। गोरोचनया चित्रितः कण्ठसूत्रग्रन्थिर्यस्य स.। अत्र मस्तकादौ सर्वौषधिप्रभृतिविन्यासो रक्षार्थः। तत्प्रमाणन्तु मत्स्यपुराणादावनुसन्धेयम्। उत्तान ऊर्द्ध्वाननः शेत इत्युत्तानशयः "शीङोऽधिकरणे चे"ति चकारात् कर्त्तर्य्युपपदे शयतेरच्। दशनशून्यं दन्तरहितं अथच स्मितं प्रफुल्लं आननं यस्य सः। पुत्रक इत्यनुकम्पायां कप्रत्ययः।

(म) कदेति। गोरोचनावत् कपिला पिङ्गलवर्णा द्युतिः कान्तिर्यस्य सः। अन्तःपुरिकाणां अन्तःपुरस्थानां स्त्रीणां करतलपरम्परया पाणिश्रेण्या सञ्चार्य्यमाणा एकस्या हस्तादपरस्या हस्ते नीयमाना मूर्त्तिर्यस्य सः। अशेषैः समस्तैर्जनैः अभिनन्दितः राजपुत्रतया माङ्गलिकतया च अभ्यर्थितः। शोकः पुत्राभावनिबन्धनो विषाद एवान्धकारस्तम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारो निरङ्गकेवलरूपकेण सङ्कीर्य्यते।

(य) कदेति। क्षितिरेणुभिर्भूतलधूलिभिः धूसरः गात्रेषु लग्नतया धूसरवर्णः। मण्डयिष्यति भूषयि-

রঞ্জিত বস্ত্র পরিধান করিয়া পুত্র ক্রোড়ে করিয়া আমাকে আনন্দিত করিবে? (ভ)—চুলগুলি সর্ব্বৌষধি লেপন করায় পিঙ্গলবর্ণ ও জটিল হইবে, তালুতে রক্ষাঘৃতের বিন্দু সিক্ত থাকিবে এবং শ্বেতসর্ষপসংযুক্ত ভস্মের রেখা দেওয়া হইবে, এবং গোরোচনা-দ্বারা কণ্ঠের সূত্র চিত্রিত থাকিবে—এই অবস্থায় উত্তানশায়ী (চিৎ হইয়া শোওয়া) এবং দন্তবিহীন-প্রফুল্ল-বদন পুত্র, কবে আমার চিত্তের আহ্লাদ জন্মাইবে? (ম) গোরোচনার ন্যায় পীতবর্ণ-কান্তিসম্পন্ন হইবে, অন্তঃপুরবাসিনী রমণীগণের মধ্যে এক এক জন অপরাপরের হস্ত হইতে নিতে থাকিবে এবং সকল লোকে দেখিয়া অভিনন্দন করিবে—এইরূপ পুত্র, মাঙ্গলিক প্রদীপের ন্যায় কবে আমার নয়নযুগলের শোকরূপ অন্ধকার দূর করিবে? (য) পুত্রবস্ত্র ধূলিতে ধূসরবর্ণ হইয়া আমার মন ও নয়নের সহিত বিচরণ করত কবেই বা

(१)...घृतमधुबिन्दु तालुविन्यस्त...। (२)...भूतिलेशः।
(३)...चित्र...। (४)...नन्दितः। (५) क्षितितलरेणु...।

मण्डयिष्यति मम हृदयेन दृष्ट्या च सह परिभ्रमन् भवनाङ्गनम्। (य) कदा केशरि-किशोरक इव सञ्जातजानु-चङ्क्रमणारम्भः (१) सञ्चरिष्यतीतस्ततः स्फटिक-मणिमय-भित्त्यन्तरितान् (२) भवनमृगशावकान् जिघृक्षुः (३)। (र) कदा अन्तःपुरिका-(४) नूपुर-निनादसङ्गतान् गृहकलहंसकान् (५) अनुसरन् कक्षा-न्तरप्रधावितः (६) कनककमेखला-घण्टिका-रवानुसारिणीमायासयिष्यति धात्रीम्। (ल) कदा कृष्णागुरु-पङ्क-लिखित-मदलेखालङ्कृत-गण्डस्थलकः, (७) कोमलसुख-रव-डिण्डिमध्वनि-जात-प्रीतिः (८) ऊर्ध्वकार-विप्रकीर्ण-चन्दन-चूर्ण-

ष्यति। यत्र यत्रैव स परिभ्रमिष्यति तत्र तत्रैव मम हृदयं दृष्टिश्च कौतुकानन्दाभ्यां यास्यतीति भावः। अतएवात्र सहोक्तिरलङ्कारः।

(र) कदेति। सञ्जात उत्पन्नः जानुभ्यां चङ्क्रमणारम्भः परिभ्रमणारम्भो यस्य सः। केशरिकिशोरक इव सिंहशावक इव। स्फटिकमणिमयीभिर्भित्तिभिः अन्तरितान् व्यवहितान् भवनमृगशावकान् गृहपालित-हरिणशिशून् जिघृक्षुर्ग्रहीतुमिच्छुः सन् इतस्ततः सञ्चरिष्यति। अत्रोपमालङ्कारः।

(ल) कदेति। अन्तःपुरिकाणां अन्तःपुरस्थानां स्त्रीणां नूपुरनिनादेन सङ्गतान् उपस्थितान् हंसानां नूपुरनिनादानुसारित्वस्वभावादिति भावः, गृहकलहंसकान् गृहपालितक्षुद्रक्षुद्रकादम्बान् अनुसरन् कौतुका-दनुगच्छन्, कक्षान्तरप्रधावितः हंसानामपि तत्र तत्र प्रस्थानात् तदनुसरणाय प्रकोष्ठात् प्रकोष्ठान्तरं द्रुतं गतः, कनककमेखलायास्तस्यैव सुवर्णमयकाञ्चीदाम्नः घण्टिकाः किङ्किण्यस्तासां रवं शब्दं अनु लक्षीकृत्य सर्तुं गन्तुं शीलं यस्यास्तां, कक्षान्तरगमनेनादर्शनादिति भावः, धात्रीमुपमातरं आयासयिष्यति सर्वत्र तदनुसरणस्यावश्यकत्वात् परिश्रमयिष्यति। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(व) कदेति। कृष्णागुरुपङ्केन घनेन कालागुरुद्रवेण लिखिता चित्रिता या मदलेखावत् लेखा रेखा तया अलङ्कृते शोभिते गण्डस्थले कपोलयुगलं यस्य सः, पक्षे कृष्णागुरुपङ्कवत् लिखिता लिप्ता या मदलेखा दानजलरेखा तया अलङ्कृतगण्डस्थलकः। कोमलो यो मुखरवः जिह्वाया विन्यासविशेषेण 'टक'

* গৃহপ্রাঙ্গণ অলঙ্কৃত করিবে? (র) জানুযুগলদ্বারা পরিভ্রমণ আরম্ভ হইলে, (হামাগুড়ি বা হাপুর দিতে শিখিলে) স্ফটিকময় ভিত্তির অন্তরালে অবস্থিত গৃহপালিত হরিণশাবকগণকে ধরিবার ইচ্ছায় কবেই বা সিংহশাবকের ন্যায় ইতস্ততঃ বিচরণ করিবে? (ল) কবেই বা অন্তঃপুরবাসিনী রমণী-গণের নূপুরের রব শুনিয়া উপস্থিত গৃহপালিত হংসগণের অনুসরণ করত এক প্রকোষ্ঠ হইতে অপর প্রকোষ্ঠে বেগে চলিয়া যাইবে, তখন ধাত্রী, তাহার স্বর্ণময় কাঞ্চীস্থিত কিঙ্কিণীর রব লক্ষ্য করিয়া ধাবিত হইতে হইতে পরিশ্রান্ত হইয়া পড়িবে। (ব) গাঢ় কৃষ্ণাগুরু-রসের দ্বারা গণ্ডযুগলে মদরেখার ন্যায় রেখা অঙ্কিত করায় মনোহর শোভা ধারণ করিয়া, ডিণ্ডিমশব্দের

(१)…चङ्क्रमणावस्थः। (२) स्फटिकमणिभित्त्यन्तरितान्। (३) आजिघृक्षुः। (४) अन्तःपुर…। (५) गृहहंसकान्। (६) पक्षान्तर…, प्रधावितान्। (७)…गण्डस्थलः। (८) सुखडिण्डिमध्वनिजनितप्रीतिः। …

धूलि-धूसरः, कुञ्चिताङ्गुलि-शिखराङ्कुशाकर्षण-विधूत-शिराः, करिष्यति मदमत्त-गजराज-लीलाम् (১)। (व) कदा मातुश्चरणयुगल-रागोपयुक्त-(২) शेषेण पिष्टालक्तकरसेन कञ्चुकिनां (৩) विडम्बयिष्यति मुखानि। (श) कदा कुतूहल-चञ्चल-(৪) लोचनो मणिकुट्टिमेष्वधोदत्त-दृष्टिरनुसरिष्यति स्खलद्गति-रात्मनः प्रतिबिम्बानि। (৫) (ष) कदा नरेन्द्र-सहस्र-प्रसारित-भुज-युगलाभिनन्द्य-मानागमनो भूषणमणि-मयूख-लेखाकुलीक्रियमाण-(৬) लोलदृष्टिरास्थानस्थितस्य मे (৭) पुरः पर्य्यटिष्यति (৮) सभान्तरेषु। (स) इत्येतानि चान्यानि (৯)

'टक्' इत्येव' धात्र्या मुखशब्दो डिण्डिमध्वनिरिव कोमलमुखरवशत् डिण्डिमध्वनिश्च, तेन जाता प्रीतिरानन्दो यस्य सः। ऊर्द्ध्वकराभ्यां उत्तोलितहस्ताभ्यां उत्तोलितमुष्ट्या च विप्रकीर्णाभिर्विक्षिप्ताभिः, चन्दनचूर्णरूप-धूलिभिः चन्दनचूर्णवत् पांशुभिश्च धूसरः। तथा कुञ्चिताया वक्रीकृताया अङ्गुल्या उपमातुस्तर्ज्जन्या इत्यर्थः शिखरं अग्रभागः अङ्कुश इव कुञ्चिताङ्गुलिशिखरवदङ्कुशस्य तेन यदाकर्षणं तेन विधूतं प्रत्यावर्त्तनासम्मति-सूचनाय कम्पितं शिरो येन सः। मदमत्तस्य गजराजस्य लीलां व्यवहारं करिष्यति। अत्र लीलामिव लीला-मिति सादृश्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धरूपा निदर्शनालङ्कारः श्लेषेण सङ्कीर्य्यते।

(व) कदेति। मातुर्जनन्याः चरणयुगलस्य यो रागो रञ्जनं तत्र उपयुक्तात् पर्य्याप्तात् शेषेण अव-शिष्टेन, पिष्टालक्तकरसेन घनलाक्षाद्रवेण तल्लेपनेनेत्यर्थः कञ्चुकिनां सन्निहितवृद्धब्राह्मणानां मुखानि विडम्ब-यिष्यति विरूपीकरिष्यति।

(श) कदेति। कुतूहलेन चञ्चले लोचने यस्य सः, मणिमयभूमिषु स्वप्रतिबिम्बदर्शनादिति भावः। मणिकुट्टिमेषु मणिबद्धसभाभूमिषु। स्खलन्ती भूमेरतिश्लक्ष्णतया भ्रश्यन्ती गतिर्गमनं यस्य सः। आत्मनः स्वस्य।

(ष) कदेति। नरेन्द्रसहस्रेण राजसमूहेन कर्त्रा प्रसारितेन भुजयुगलेन करणेन अभिनन्द्यमानं

ন্যায় ধাত্রীর মনোহর মুখশব্দে আনন্দিত হইয়া, হস্তযুগল উত্তোলন করিয়া গাত্রে চন্দনচূর্ণ নিক্ষেপপূর্ব্বক ধূসরবর্ণ হইয়া, অঙ্কুশের ন্যায় বক্রীকৃত ধাত্রীর তর্জ্জনীর আকর্ষণে মস্তক কম্পিত করিয়া কবে মদমত্ত হস্তিরাজের অনুকরণ করিবে? (শ) মাতার চরণযুগল রঞ্জিত করিলে পর যে ঘন আলতার রস অবশিষ্ট থাকিবে, তাহা লেপিয়া দিয়া কবে কঞ্চুকি-গণের মুখ বিকৃত করিয়া দিবে? (ষ) কৌতুকবশতঃ মণিময় ভূমিতে দৃষ্টিনিক্ষেপপূর্ব্বক চঞ্চলনেত্র হইয়া স্খলিতগতিতে কবে নিজের প্রতিবিম্বসমূহের অনুসরণ করিবে? (স) আর কবেই বা আমি সভামধ্যে উপবিষ্ট থাকিব, রাজগণ বাহুযুগল প্রসারিত করিয়া তাঁহার

---

(১) मत्तगजराजलीलालीलाः, मत्तगजक्रीडाम्, मत्तगजराजलीलाम्, मत्तगजराजलीलः क्रीडाम्, मत्तगजराजलीलाः। (২) चरणरागोपयुक्त...। (৩) वृद्धकञ्चुकिनां।

(৪) लोल...। (৫) प्रतिबिम्बितानि। (৬)...मयूखाकुलीक्रियमाण...।

(৭) मम। (৮) सर्पिष्यति। (৯) इत्येतानि च, इत्येतानि मनो...।

मनोरथशतानि चिन्तयतोऽन्तः सन्तप्यमानस्य प्रयान्ति (१) रजन्यः। (ङ) मामपि दहत्येवायमहर्निशमनल इवानपत्यतासमुद्भवः सन्तापः (२)। (च) शून्यमिव (३) मे प्रतिभाति जगत्, अफलमिव पश्यामि राज्यम् (४)। (छ) अप्रतिविधेये तु विधातरि किं करोमि, तन्मुच्यतां देवि! शोकानुबन्धः, आधीयतां धैर्य्ये धर्म्मे च धीः, धर्म्मपरायणानां हि सदा समीपसञ्चारिण्यः कल्याणसम्पदो भवन्ति" इत्येवं (५) अभिधाय सलिलमादाय स्वयं करतले-

---

आदरादभ्यर्थ्यमानं आगमनं यस्य सः। अतएव भूषणमणीनां राज्ञामाभरणीभूतरत्नानां मयूखशिखया किरणशिखया आकुलीक्रियमाणा दर्शनौत्सुक्यात् व्यस्तीक्रियमाणा अतएव लोला चञ्चला दृष्टिर्यस्य सः, आस्थानस्थितस्य सभायामुपविष्टस्य मे मम पुरः अग्रतः सभान्तरेषु राजसभामध्यदेशेषु पर्य्यटिष्यति विचरिष्यति। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(ङ) इतीति। इत्येतानि पूर्वोक्तानि पुत्त्रचरित्राणि, अन्यानि चानुक्तानि मनोरथशतानि आशाविषयीक्रियमाणानि पुत्त्रस्य शिक्षाचातुर्य्यादिचरित्राणि। अन्तः सन्तप्यमानस्य तादृशपुत्त्रानुत्पत्तेरन्तःकरण एव विषीदतः, अधीरताप्रकाशापवादभयाद्बहिरप्रकाशयत इति भावः। ममेति शेषः। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(च) मामिति। न केवलं त्वां मामपीत्यपेरर्थः। अत्रोपमालङ्कारः।

(छ) शून्यमिति। जगत् शून्यमिव प्रतिभाति तादृशावलम्बनाभावादित्याशयः। राज्यं अफलमिव पश्यामि भाविनो भोक्तुरभावादित्यभिप्रायः।

(ज) तर्हीदृशसन्तापनिवृत्तये कोऽप्युपायः क्रियतामित्याह अप्रतीति। विधातरि विधेः प्रातिकूल्य इत्यर्थः अप्रतिविधेये मानुषचेष्टया प्रतिविधातुमशक्ये सति। प्रतिकूलविधिकृत एवायमस्माकं सन्ताप इति भावः। तत्तस्मात्। मुच्यतां त्यज्यतां। शोकानुबन्धः अनपत्यतानिबन्धना विषादपरम्परा। आधीयतां स्थाप्यतां। धर्म्म एव परमुत्कृष्टं अयनमाश्रयो येषां ते धर्म्मपरायणा धार्म्मिकास्तेषां। अभिनवपल्लवेनेव

আগমনের অভিনন্দন করিবেন, তাঁহাদের আভরণস্থ রত্নসমূহের কিরণজালে তাহার নয়নযুগল আকুল করিয়া তুলিবে—এই অবস্থায় সেই পুত্ররত্ন আমার সম্মুখে সভামধ্যে বিচরণ করিবে। (ঙ) এই সকল, আরও বহুতর আকাঙ্ক্ষার বিষয় চিন্তা করিতে করিতে আমার মনে অত্যন্ত সন্তাপ উপস্থিত হইতে থাকে—সেই অবস্থায় প্রতিদিন রাত্রি অতীত হইয়া যায়। (চ) নিঃসন্তানতানিবন্ধন এই সন্তাপ অগ্নির ন্যায় দিবারাত্রি আমাকেও দগ্ধ করিতেছে। (ছ) জগৎসংসার আমার নিকট শূন্য বলিয়া বোধ হইতেছে; এই রাজ্য নিষ্ফল বলিয়া মনে করিতেছি। (জ) কিন্তু বিধাতার প্রতিকূলতাচরণের প্রতিবিধান করা যায় না, সুতরাং করিব কি? অতএব দেবি! এই নিরবচ্ছিন্ন মনস্তাপ পরিত্যাগ কর, ধৈর্য্য ও ধর্ম্মে

---

(१) यान्ति। (२) शोकः। (३) शून्यमेव। (४) अफलमिवाखिलं पश्यामि जीवितं राज्यञ्च।
(५) इत्थं, एवं।

नाभिनव-पल्लवेनेव विकचकमलतुल्यं (१) आननमस्याः साश्रुलेखं ममार्ज। (ख) पुनः पुनश्च प्रियशतमधुराभिः शोकापनोदन-(२) निपुणाभिर्धर्म्मोपदेशगर्भाभि-र्वाग्भिराश्वास्य सुचिरं स्थित्वा (३) नरेन्द्रो निर्जगाम। (ग)

निर्गते च तस्मिन् मन्दीभूतशोकावेगा (४) विलासवती यथाक्रियमाणा-भरण-परिग्रहादिकसमुचितं (५) दिवसव्यापारमन्वतिष्ठत् (६)। (घ) ततः प्रभृति सुतरां देवताराधनेषु ब्राह्मण-पूजासु गुरुजन-सपर्य्यासु चादरवती (७) बभूव। यद् यच्च किञ्चित् कुतश्चित् शुश्राव व्रतं (८) तत्तदर्भकतृष्णया (९) सर्वं चकार। (ङ) न महान्तमपि क्लेशमजीगणत्। अनवरत-दह्यमान-

रक्तेनेति भावः, करतलेन पाणिना। अश्रुलेखया नयनजलरेखया सहेति साश्रुलेखं, विकचकमलतुल्यं प्रस्फुटपद्मसमानं अस्या विलासवत्या आननं ममार्ज। अत्र प्रथमा श्रौती द्वितीया चार्थी उपमेत्यनयोरङ्गाङ्गि-भावेन सङ्करः।

(ग) पुनरिति। नरेन्द्रो राजा। प्रियशतैश्चाटुबाहुल्यैर्मधुरा मनोहरास्ताभिः। धर्म्मोपदेशो गर्भ मध्ये यासां ताभिः।

(घ) निर्गत इति। यथा पूर्वप्रकारेण क्रियमाणः आभरणपरिग्रहः अलङ्कारधारणं आदौ यस्य तं, उचितं योग्यं दिवसव्यापारं दिनकार्य्यं अन्वतिष्ठत् अकरोत्।

(ङ) तत इति। गुरुजनानां सपर्य्यासु पूजासु च। सुतरां नितान्तं यथा तथा। कुतश्चित् यस्मात् कस्माच्चित् जनात्। अर्भकतृष्णया बालकस्पृहया पुत्रलाभेच्छयेत्यर्थः।

(च) नेति। अनवरतं दह्यमानानां गुग्गुलूनां धूमैरन्धका[illegible]जातान्धकारेषु। धवलाम्बरा

মতি সংস্থাপন কর ; কারণ- মঙ্গলসম্পদ সর্ব্বদাই ধার্ম্মিকগণের নি[illegible]চরণ করিয়া থাকে” এইরূপ বলিয়া, জল লইয়া রাজা নিজেই, নূতন পল্লবের ন্যায় করতলদ্বারা নয়নজলের রেখা-সংযুক্ত এবং প্রস্ফুটিত পদ্মের তুল্য রাণীর মুখমণ্ডল মার্জ্জনা করিয়া দিলেন। (গ) এবং শোক দূর করিতে নিপুণ, ধর্ম্মোপদেশ-পূর্ণ ও চাটুগর্ভ বিবিধ মধুর বাক্যে বারংবার রাণীকে আশ্বস্ত করিয়া, সে স্থানে বহুসময় অবস্থান পূর্ব্বক চলিয়া গেলেন।

(ঘ) রাজা চলিয়া গেলে তাঁহার উপদেশেই শোকের আবেগ কমিয়া যাওয়ায় রাণী বিলাসবতী, পূর্ব্বের ন্যায় অলঙ্কারধারণপ্রভৃতি দিবসের কর্ত্তব্য কার্য্য করিতে লাগিলেন। (ঙ) আর তদবধি দেবতাগণের আরাধনাতে এবং ব্রাহ্মণ ও গুরুজনের পূজাতে সমধিক যত্নবতী হইলেন। আর যে কোন ব্যক্তির নিকট যে যে ব্রত-নিয়ম শুনিতে লাগিলেন, পুত্রলাভের

(१) कमलतुल्यं। (२) शोकापनोद...। (३) क्वचित् 'स्थित्वा' इति नास्ति।

(४) मन्दीभूतशोका। (५) यथाक्रियमाणं, आभरणपरिग्रहादिकं समुचितं, आभरणपरिग्रहादि-समुचितं। (६) वासरव्यापारमकरोत्। (७) ब्राह्मणपूजासु आदरवती, गुरुजनपरिचर्य्यासु च, अधिक-मादरवती। (८) क्वचित् 'व्रत' इति न दृश्यते। (९) गर्भतृष्णया।

गुग्गुलु-धूमान्धकारितेषु (१) चण्डिका-गृहेषु धवलाम्बरा (२) शुचि-मूर्त्तिरुपोषिता हरितकुशोपच्छदेषु (३) मुसलशयनेषु (४) सुष्वाप। (च) पुण्यसलिलपूर्णैः (५) विविध-कुसुमफलोपेतैः क्षीरतरु-पल्लव-लाञ्छनैः सर्वरत्नगर्भैः शातकुम्भकुम्भैः गोकुलेषु वृद्धगोपवनिताकृतमङ्गलानां (६) लक्षणसम्पन्नानां गवामधः सस्नौ। (छ) प्रतिदिवसमुत्थाय (७) सर्वरत्नोपेतानि हैमानि तिलपात्राणि ब्राह्मणेभ्यो ददौ। (ज) महानरेन्द्र-लिखित-मण्डल-मध्यवर्त्तिनी विविध-बलिदाना-नन्दित-दिग्देवतानि बहुल-(८) चतुर्दशीनिशासु चतुष्पथे (९) स्नानमङ्गलानि (१०)

श्वेतवस्त्रा, शुचिमूर्त्तिः स्नानेन पवित्रदेहा, उपोषिता कृतोपवासा सती। हरिताः पालाशवर्णा नूतना इत्यर्थः कुशा उपच्छदा आस्तरणानि येषु तादृशेषु मुसलशयनेषु श्रेणीभावेन पातितमुसलशय्यासु सुष्वाप शयितवती। पुत्रलाभाय तदानीन्तनशिष्टाचारादमी स्त्र्याचाराः प्रत्येतव्याः, इदानीन्तनकालार्करुद्रपूजाप्रकरणीयपदार्थाः लोकाचारवत्। क्वचित्तु पौराणिकप्रमाणमप्युपलभ्यते तत्तु ग्रन्थगौरवाशङ्कया नोदाहृतम्।

(च) पुण्येति। पुण्यसलिलपूर्णैः पवित्रजलपूरितैः। क्षीरतरूणां आम्रवटादीनां पल्लवा एव लाञ्छनानि उपरितनचिह्नानि येषां तैः। शातकुम्भकुम्भैः सुवर्णकलसैः। गोकुलेषु गोष्ठेषु। वृद्धाभिः गोपवनिताभिः कृतानि मङ्गलानि सिन्दूरचन्दनमाल्यार्पणादिरूपाणि यासां तासां लक्षणसम्पन्नानां सम्पूर्ण-लक्षणवर्णादिसुलक्षणानां गवां धेनूनां अधस्तले सस्नौ स्नातवती।

(छ) प्रतीति। हैमानि सुवर्णमयानि।

(ज) महेति। महानरेन्द्रेण प्रधान-भूतवैद्येन लिखितं अङ्कितं यत् मण्डलं वर्त्तुलरेखा तस्य

ইচ্ছায় সে সমস্তই করিতে লাগিলেন। (চ) তখন গুরুতর কায়ক্লেশও গণনা করিতেন না। উপবাসী থাকিয়া শুভ্রবর্ণ বস্ত্র পরিধানপূর্ব্বক পবিত্রদেহে, অবিশ্রান্ত দহ্যমান গুগ্গুলুর ধূমের অন্ধকারে পরিপূর্ণ চণ্ডীমণ্ডপে নূতন কুশের আস্তরণ-সংযুক্ত মুষলময় শয্যার উপরে শয়ন করিতেন। (ছ) গোষ্ঠে যাইয়া বৃদ্ধ গোপরমণীগণকর্ত্তৃক সিন্দূর, চন্দন ও মাল্যাদিদ্বারা ভূষিত সুলক্ষণসম্পন্ন গরুর নীচে বসিয়া, পবিত্রজলপরিপূর্ণ, নানাবিধ পুষ্প ও ফলসংযুক্ত, আম্র ও বটপ্রভৃতি ক্ষীরিবৃক্ষের পল্লবসমন্বিত ও সকল রত্ন-পূর্ণ সুবর্ণময় কলসের জলে স্নান করিতেন। (জ) প্রতিদিন নিদ্রা হইতে উঠিয়া, নানাবিধ রত্নের সহিত বহুতর তিলপাত্র ব্রাহ্মণদিগকে দান করিতেন। (ঝ) কৃষ্ণপক্ষের চতুর্দ্দশীর রাত্রিতে চতুষ্পথে

---

(१)...गुग्गुलबहलधूपान्धकारितेषु। (२) धवलाम्बरेण, धवलाम्बर...(३) हरितकुश,...हरितकुशोप-च्छदेषु। (४) मुसलशयनेषु। (५) पूरितैः, पूर्णैः। (६)...मङ्गला। (७) उत्थायोत्थाय। (८) बहुलपक्ष...। (९) चतुष्पथेषु। (१०) स्नपन...।

भेजे। (झ) सिद्धायतनानि कृतविविध-देवतोपयाचितकानि (१) सिषेवे। (ञ) दर्शितप्रत्ययानि (२) सन्निहितमातृका-(३) भवनानि जगाम। (ट) प्रसिद्धेषु नागकुल-ह्रदेषु ममज्ज। (ठ) अश्वत्थप्रभृतीनुपपादित-पूजान्महावनस्पतीन् कृतप्रदक्षिणा ववन्दे। (ड) दोलायमान-वलयेन (४) पाणियुगलेन स्नाता (५) स्वयमखण्ड-सिक्थ-सम्पादितं (६) रजतपात्र-(७)

मध्यवर्त्तिनी सती, बहुलस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्दशीनिशासु, चतुर्णां पथां समाहारः सम्मेलनस्थानमिति चतुष्पथं तस्मिन्, विविधानां नानाप्रकाराणां बलीनामुपहाराणां दानेन आनन्दिता दिग्देवता दिक्पाला येषु तानि, स्नानरूपाणि मङ्गलानि भेजे विहितवती।

(ञ) सिद्धेति। कृतानि अर्पितानि विविधानि देवताभ्य उपयाचितकानि 'यदि मे पुत्रलाभः स्यात्तदा परमप्येवमेव प्रदेयं' इत्यङ्गीकारपूर्वकोपहारा येषु तानि, सिद्धायतनानि योगिक्षेत्राणि सिषेवे भक्तिपूर्वकमाश्रितवती। "दीयते यत्तु देवेभ्यो मनोराज्यस्य सिद्धये। उपयाचितकं दिव्यं दोहदं तद्विदुर्बुधाः।" इति जटाधरः।

(ट) दर्शितेति। दर्शितो मातृकाभिरेव लोके प्रकाशितः प्रत्ययः अभिलषितफलदानेन विश्वासो येषु तानि, सन्निहितानि मातृकाणां ब्राह्मीप्रभृतीनां भवनानि गृहाणि। मातरश्च—"ब्राह्मी माहेश्वरी चण्डी वाराही वैष्णवी तथा। कौमारी चैव चामुण्डा चर्च्चिकेत्यष्टमातरः।"

(ठ) प्रसिद्धेष्विति। प्रसिद्धेषु मज्जनेन वन्ध्याया अपि पुत्रजनकतया विख्यातेषु, नागकुलस्य ह्रदेषु पन्नगानामावासीभूतस्थानेषु ममज्ज सशिरोमज्जनं कृतवती।

(ड) अश्वत्थेति। कृतं प्रदक्षिणं यया सा, उपपादिता विहिता पूजा येषां तान्। महान्तो ये वनस्पतयः पुष्पहीनाः फलवन्तो वृक्षास्तान्। ववन्दे नमस्कार।

(ढ) दोलायेति। स्नाता कृतस्नाना सती, स्वयमात्मनैव, दोलायमाने चपले वलये यस्य तेन।

যাইয়া, প্রধান ভূতবৈদ্য (ওঝা) কর্ত্তৃক অঙ্কিত মণ্ডলের মধ্যে থাকিয়া, নানাবিধ উপহারে দিক্‌পালগণকে সন্তুষ্ট করিয়া মাঙ্গলিক স্নান করিতেন। (ঞ) 'আমার যদি পুত্র হয়, তবে পুনরায় এইরূপ উপহার প্রদান করিব', এইরূপ মানসিক করিয়া দেবতাদিগকে নানাবিধ উপহার প্রদানপূর্ব্বক ভক্তিপূর্ণচিত্তে সিদ্ধক্ষেত্রের সেবা করিতেন। (ট) মাতৃগণ লোকের অভীষ্ট ফল প্রদান করিয়া যেখানে বিশ্বাস জন্মাইয়া দিয়াছেন, নিকটবর্ত্তী সেই সকল ব্রাহ্মী প্রভৃতি মাতৃকাগণের মন্দিরে গমন করিতেন। (ঠ) বিখ্যাত সর্পময় হ্রদে স্নান করিতেন। (ড) পূজা ও প্রদক্ষিণ করিয়া অশ্বত্থ প্রভৃতি মহাবৃক্ষদিগকে নমস্কার করিতেন। (ঢ) স্নান করিয়া নিজেই, রূপার পাত্রে করিয়া অক্ষত-ধান্য-সংযুক্ত ও দধিমিশ্রিত অন্নের উপহার কাক-

---

(१) कृतविधिव...कृतविविधदैवतोप...।

(२)...प्रत्यादेशानि। (३) सन्निधानमातृका..., सन्निहितमातृ...। (४)...मणिवलयेन।

(५) कृतस्नाना। (६) अखण्डितसिक्थकुसुम...। (७) रजतपात्रे।

परिगृहीतं वायसेभ्यो दध्योदन-बलिमदात्। (ढ) अपरिमित-कुसुम-धूप-विलेपापूप-(१) पलल-पायस-लाज-(२) कल्पितामहरहरम्बादेवी-(३) सपर्य्यामाततान। (ण) स्वयमुपहृत-(४) पिण्डपात्रान् भक्तिप्रवणेन मनसा सिद्धादेशानग्नक्षपणकान् पप्रच्छ। (त) विप्रश्निकादेशवचनानि बहु मेने। (थ) निमित्तज्ञानुपचचार। (द) शकुनज्ञानविदामादरमदर्शयत्। (ध) अनेकवृद्ध-

---

अखण्डैरक्षतैः सिक्थैर्धान्यपुलाकैः सम्पादितं निष्पादितं। दध्योदनबलिं दधिमिश्रितान्नरूपमुपहारं। वायसेभ्यः काकेभ्यः।

(ण) अपरीति। अहरहः प्रतिदिनं अपरिमितैर्बहुभिः कुसुमैः, धूपैः, विलेपैश्चन्दनादिविलेपनद्रव्यैः, अपूपैः पिष्टकैः, पललैर्मांसैः, पायसैः परमान्नैः, लाजैर्धानाभिश्च कल्पितां सम्पादितां अम्बादेव्या दुर्गायाः सपर्य्यां पूजां आततान कृतवती।

(त) स्वयमिति। भक्तिप्रवणेन भक्तियुक्तेन मनसा, स्वयमात्मनैव, उपहृतानि उपढौकितानि पिण्ड-पात्राणि अन्नभाजनानि येभ्यस्तान्, सिद्धाः सफलाः आदेशा आज्ञावाक्यानि येषां तान्, नग्नक्षपणकान् दिगम्बरान् बौद्धविशेषान्, पप्रच्छ पुत्रो मे भवेन्न वा इति जिज्ञासितवती। 'अचिरमेव पुत्रस्ते भवेत्' इति चेदमी वदेयु-स्तदाऽमीषां सिद्धादेशतया अभीष्टसिद्धिः स्यादित्याशयेनेति भावः।

(थ) विप्रेति। विप्रश्निकानां शुभाशुभगणनाकारिणीनां स्त्रीणां आदेशवचनानि आज्ञावाक्यानि बहु मेने आदद्रे। "विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा" इत्यमरः।

(द) निमित्तेति। निमित्तानि शुभाशुभसूचकानि नयनस्पन्दनादीनि जानन्ति ये ते तथोक्तास्तान्, उपचचार उपययौ, तदवगमार्थमिति भावः।

(ध) शकुनेति। शकुनज्ञानं वसन्तराजीयादिकं पक्षिचेष्टादर्शनेन शुभाशुभनिर्णायकं शास्त्रं विदन्ति जानन्ति ये तेषां, आदरं बहुमानम् अदर्शयत्। पक्षिचेष्टादर्शनेन तेभ्योऽपि शुभाशुभज्ञानार्थमिति भावः।

দিগকে দিতেন, তখন তাঁহার হস্তের বলয় চলিতে থাকিত। (ণ) প্রতিদিন অপরিমিত পুষ্প, ধূপ, অনুলেপন, পিষ্টক, মাংস, পায়স ও খই দ্বারা দুর্গাদেবীর পূজা করিতেন। (ত) নিজেই ভক্তিযুক্তচিত্তে অন্নের পাত্র উপঢৌকন দিয়া সত্যবাদী উলঙ্গ বৌদ্ধ সন্ন্যাসী-দিগকে জিজ্ঞাসা করিতেন (যে আমার পুত্র হইবে কি না)। (থ) দৈবজ্ঞস্ত্রীলোকের আদেশবাক্যের বিশেষ আদর করিতেন। (দ) চক্ষুঃস্পন্দনপ্রভৃতি শুভাশুভলক্ষণ জানা লোকের নিকট যাইতেন। (ধ) শাকুনশাস্ত্রজ্ঞ লোকের প্রতি আদর দেখাইতেন।

---

(१) अपरिमितधूपविलेपा। (२) पायसबलिं, पायसबलिलाज...। (३)...र्ज्येष्ठादेवी...।
(४) उपाहित..., उपाहृत...।

परम्परासमागतानि (१) रहस्यानि चकार (२) । (न) दर्शनागत-द्विजगणान् (३) आत्मजदर्शनोत्सुका वेदश्रुतीरकारयत् । (प) अनवरत-(४) वाच्यमानाः पुण्यकथाः (५) शुश्राव । (फ) गोरोचना-लिखित-भूर्जपत्रगर्भान् मन्त्र-करण्डकान् (६) उवाह (ब) । रक्षाप्रतिसरोपेतानि (७) ओषधिसूत्राणि (८) बबन्ध । (भ) परिजनोऽपि चास्याः सततमुपश्रुत्यै निर्जगाम, तन्निमित्तानि च जग्राह, शिवाभ्यो मांसबलिपिण्डमनुदिनं निश्युत्ससर्ज, (९) स्वप्नदर्शनाश्चर्याण्याचार्याणामाचचक्षे, चत्वरेषु शिवाबलिं (१०) उपजहार । (म)

(न) अनेकेति । रहस्यानि गुप्तमन्त्रसाधनादीनि ।

(प) दर्शनेति । आत्मजदर्शनोत्सुका पुत्रदर्शनायोत्कण्ठिता, दर्शनाय स्वसाक्षात्काराय आगता ये द्विजगणा ब्राह्मणसमूहास्तान्, वेदानां श्रूयन्त इति श्रुतयो व्यक्तपाठास्तान् अकारयत् । "वा क्रुञोः"-रित्यनेन द्विजगणानिति प्रयोज्यकर्त्तुः कर्म्मत्वम् ।

(फ) अनेति । पुण्यकथाः श्रीकृष्णादिजन्मवृत्तान्तान् ।

(ब) गोरोचनेति । गोरोचनया लिखितं भूर्जपत्रं गर्भे मध्ये येषां तान्, मन्त्रकरण्डकान् नृसिंहादि-मन्त्रयुक्तपिटकान्, उवाह धारयामास ।

(भ) रक्षेति । रक्षाप्रतिसरेण रक्षार्थकङ्कणेन उपेतानि युक्तानि, ओषधिसूत्राणि गर्भोत्पादकौषधि-युक्तसूत्राणि, बबन्ध हस्त इति शेषः । "भवेत् प्रतिसरो मन्त्रभेदे माल्ये च कङ्कणे ।" इत्यादि मेदिनी ।

(म) परीति । उपश्रुत्यै दैवप्रश्नाय दैवज्ञेभ्यः शुभाशुभश्रवणायेत्यर्थः । "नक्तं निर्गत्य यत्किञ्चिच्छु-भाशुभकरं वचः । श्रूयते तद्विदुर्धीरा दैवप्रश्नमुपश्रुतिम् ।" इति हारावली । तन्निमित्तानि दैवज्ञस्य शुभाशुभ-लक्षणवचनानि, जग्राह यत्नेनाददौ, विलासवत्यै वक्तुमिति भावः । अनुदिनं प्रतिदिनं मांसबलिपिण्डं मांसरूपमुपहारं शिवाभ्यः शृगालीभ्यः । स्वप्नदर्शनाश्चर्याणि आश्चर्य्यस्वप्नानित्यर्थः, आचार्य्याणां यज्ञाचार्य्याणां समीपे आचचक्षे उवाच, तेभ्यस्तेषां शुभाशुभत्वमवगन्तुमिति भावः । चत्वरेषु गृहाङ्गनेषु, शिवाभ्यो बलिमुप-हारं उपजहार ददौ । अयमुपहारस्तु दिवस इति न पूर्वेण सह पौनरुक्त्यम् ।

(न) বহুতর প্রাচীন পরম্পরায় প্রচলিত গুপ্তমন্ত্র সাধন করিতেন। (প) পুত্রলাভের নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া, সাক্ষাৎ করিবার জন্য উপস্থিত ব্রাহ্মণগণদ্বারা বেদপাঠ করাইতেন। (ফ) কথকদিগের নিকট সর্ব্বদা পুণ্যোপাখ্যান শুনিতেন। (ব) গোরোচনাদ্বারা লিখিত ভূর্জ্জপত্র-পূর্ণ মন্ত্রের মাদুলী ধারণ করিতেন। (ভ) হস্তে রক্ষাকঙ্কণ ও ঔষধযুক্ত সূত্র বন্ধন করিতেন। (ম) তাঁহার পরিজনবর্গও দৈবজ্ঞের নিকট শুভাশুভ বাক্য শুনিবার নিমিত্ত

(१) आगमागतानि, गतानि । (२) अङ्गीचकार, अङ्गीकरोति स्म । (३) दर्शनागतं द्विजजनं ।
(४) अनवरतं । (५) पुण्याः कथाः । (६) मन्त्रगण्डकान्, मन्त्रदण्डकान् ।
(७) रक्षापरिसरोपेतानि । (८) औषधिसूत्राणि, औषधीसूत्राणि । (९) समुत्ससर्ज ।
(१०) शिवबलिं ।

एवं (১) गच्छति काले कदाचिद्राजा क्षीणभूयिष्ठायां रजन्यामल्पावशेष-(২) पाण्डुतारके जरत्पारावत-पक्षधूसरे (৩) नभसि स्वप्ने सौधशिखर-(৪) स्थिताया विलासवत्याः करिण्या इव विसवलय-(৫) मानने सकलकलापूर्ण-(৬) मण्डलं शशिनं प्रविशन्तं (৭) अद्राक्षीत्। (य) प्रबुद्धश्चोत्थाय हर्षविकाश-स्फीततरेण चक्षुषा धवलीकृतवासभवनस्तस्मिन्नेव क्षणे सबहुमानं शुकनासमाहूय तं (৮) स्वप्नमकथयत्। (र)

समुपजातहर्षः स तं प्रत्युवाच—"देव! सम्पन्नाः सुचिरादस्माकं प्रजानाञ्च

(य) एवमिति। क्षीणभूयिष्ठायां अतीतप्रायायां सत्यां। नभसि आकाशे च, अल्पावशेषाः पाण्डुवर्णा-स्तारका नक्षत्राणि यस्मिन् तस्मिन्; जरतो वृद्धस्य पारावतस्य कपोतस्य पक्षवत् पतत्रवत् धूसरे धूम्रवर्णे च सति। सौधशिखरस्थितायाः प्रासादोपरिगतायाः विलासवत्या आनने मुखे, करिण्या हस्तिन्या आनने विसवलयं मृणाल-मण्डलमिव, सकलाभिः कलाभिः पूर्णं मण्डलं विम्बं यस्य तं, शशिनं चन्द्रं। अत्र प्रथमा लुप्तोपमा द्वितीया च श्रौत्युपमा, अनयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(र) प्रबुद्ध इति। प्रबुद्धो जागरितः। हर्षेण आनन्देन यो विकाश उन्मीलनं तेन स्फीततरं अतीव विस्तृतं तेन, धवलीकृतं वासभवनं शयनगृहं येन सः। सबहुमानं सादरम्।

(ल) समुपेति। समुपजातो हर्ष आनन्दो यस्य सः, स शुकनासः, तं राजानं। सम्पन्नाः सफला

নির্গত হইত এবং যত্নপূর্ব্বক তাঁহাদের বাক্য শুনিত, প্রতিদিন রাত্রিতে শিবাদিগকে মাংস উপহার দিত, গ্রহাচার্য্যগণের নিকট আশ্চর্য্য স্বপ্নের বৃত্তান্ত বলিত আর গৃহপ্রাঙ্গণে দিনেও শিবাবলি দিত।

(য) এই ভাবে সময় চলিয়া যাইতে লাগিলে একদিন রাত্রির অধিকাংশই অতীত হইয়াছে, আকাশও বৃদ্ধ কপোতের পক্ষের ন্যায় ধূসরবর্ণ হইয়া আসিয়াছে, এবং নক্ষত্রগণও পাণ্ডুবর্ণ হইয়া অল্পমাত্র অবশিষ্ট রহিয়াছে—এমন সময়ে রাজা স্বপ্নে দেখিলেন যে—হস্তিনীর মুখে মৃণালবলয়ের ন্যায়, প্রাসাদের উপরিস্থিত বিলাসবতীর মুখমণ্ডলে সমগ্র কলাপরিপূর্ণ চন্দ্রমণ্ডল প্রবেশ করিতেছে। (র) রাজা তৎক্ষণাৎ জাগরিত হইয়া শয্যা হইতে উঠিয়া আনন্দ-বিস্ফারিতনেত্রের আলোকে শয়ন-গৃহ শুভ্রবর্ণ করিয়া সেই সময়েই আদরের সহিত মন্ত্রী শুকনাসকে আহ্বান করিয়া আনিয়া সেই স্বপ্নের বৃত্তান্ত বলিলেন।

(ল) শুকনাসও আনন্দিত হইয়া রাজাকে কহিলেন—"মহারাজ! বহুকালের পর

(১) एवञ्च। (২) अल्पशेष…। (৩) जरत्पारापतपक्षधूम्रे। (৪) सितप्रासादशिखर…।
(৫) विसपल्लवं, विसकिसलयं। (৬)…परिपूर्ण…। (৭) विशन्तं।
(৮) शुकनासं समाहूय स्वप्नं, समाहूय शुकनासाय तं।

मनोरथाः। कतिपयैरेवाहोभिरसंशयमनुभविष्यति (१) स्वामी सुतमुखकमला-वलोकनसुखम्। अद्य खलु मयापि निशि स्वप्ने धौतधवल-(२) वाससा शान्तमूर्त्तिना (३) दिव्याकृतिना द्विजेन विकचं चन्द्र-(४) कलावदात-दलशतं, आलोलकेसरसहस्रजटालं, मकरन्द-(५) विन्दु-सन्दोहवर्षि-(६) पुण्डरीक-मुत्सङ्गे देव्या मनोरमाया निहितं दृष्टम्। (ल) आवेदयन्ति हि प्रत्यासन्न-मानन्दमग्रजातानि (७) शुभानि निमित्तानि (८)। (व) किञ्च (९) अन्यदा-नन्दकारणमतो भविष्यति (१०)। अवितथफला हि (११) प्रायोनिशावसानसमय-

---

जाताः। स्वामी अधिपतिर्भवान्। धौतं क्षालितं अतएव धवलं वासो वसनं यस्य तेन, दिव्या मनोहरा आकृतिर्यस्य तेन, द्विजेन केनचित् ब्राह्मणेन। विकचं प्रस्फुटं, चन्द्रकलावत् अवदातं श्वेतं दलानां शतं यस्य तत्, आलोलेन चञ्चलेन केसरसहस्रेण किञ्जल्कसमूहेन जटालं जटिलं तादृशकेसररूपजटाविशिष्ट-मित्यर्थः। प्राणिस्थादातो मत्वर्थे आलच्। मकरन्दविन्दूनां मधुकणानां सन्दोहं समूहं वर्षतीति तत्, पुण्डरीकं श्वेतपद्मं। मनोरमायास्तदाख्याया निजभार्यायाः, उत्सङ्गे क्रोडे निहितं स्थापितं। इति मयापि स्वप्ने दृष्टमित्यन्वयः। अत्र चन्द्रकलावदातेति लुप्तोपमालङ्कारः।

(व) आवेदयन्तीति। अग्रजातानि प्रथमोत्पन्नानि शुभानि निमित्तानि लक्षणानि प्रत्यासन्नं अचिर-भाविनं आनन्दं आवेदयन्ति सूचयन्ति।

(श) किञ्चेति। अतोऽन्यत् किमानन्दकारणं भविष्यतीत्यन्वयः। ननु स्वप्नदर्शनमात्रमेव कथमीदृगा-नन्दकारणमित्याह अवितथेति। हि यस्मात्। प्रायो बाहुल्येन अवितथं सत्यं अवश्यम्भावीत्यर्थः फलं येषां ते।

আমাদের ও প্রজাবর্গের অভিলাষ পূর্ণ হইয়াছে ; কারণ—অল্প দিনের মধ্যেই আপনি নিঃসংশয় পুত্রের মুখকমল-দর্শনের সুখ অনুভব করিতে পারিবেন। আমিও আজ রাত্রিতে স্বপ্নে দেখিয়াছি যে—প্রক্ষালিত-শ্বেতবর্ণ-বস্ত্রপরিধায়ী, শান্তমূর্ত্তি এবং সুন্দরাকৃতি এক ব্রাহ্মণ, প্রকাশিত চন্দ্রকলার ন্যায় শ্বেতবর্ণ শতদল-সমন্বিত, জটার ন্যায় চঞ্চল কেশরসমূহ-সংযুক্ত এবং প্রচুর মধুবিন্দুবর্ষী প্রস্ফুটিত একটি শ্বেতপদ্ম, মনোরমাদেবীর ক্রোড়ে সংস্থাপন করিয়াছেন। (ব) বহুতর শুভলক্ষণ পূর্ব্বেই প্রকাশ পাইয়া অচিরভাবী কোন বিশেষ আনন্দের সূচনা করিয়া থাকে। (শ) ইহা অপেক্ষা আনন্দের কারণ আর কি হইতে পারে? রাত্রিশেষে

---

(१) असन्देहं। (२) धौतसकल···, धौतसकलधवल...। (३) प्रशान्तमूर्त्तिना।
(४) विकचचन्द्र···। (५)...जटालमकरन्द..., जटिलमकरन्द...। (६) विन्दुशीकरवर्षि।
(७) अग्रजातानि, आनन्दपातीनि, अग्रे पातीनि अग्रपातीनि। (८) शुभनिमित्तानि।
(९) किं वाऽन्यत् प्रियतरं परमानन्द, अधिकानन्द,...। (१०) विद्यते। (११) च।

दृष्टाः (१) भवन्ति स्वप्नाः। (घ) सर्वथा नचिरेणैव (२) मान्धातारमिव धौरेयं राजर्षीणां (३) भुवनानन्दहेतुमात्मजं जनयिष्यति देवी। (ङ) शरत्कालकमलिनीव (४) अभिनवकमलोद्गमेन गन्धगजमाह्लादयिष्यति देवम्। (च) येनेयं दिग्गजमदलेखेवाविच्छिन्नसन्ताना क्षितिभारधारणोचिता भविष्यति कुलसन्ततिः स्वामिनः" इत्येवमभिदधानमेव तं करेण गृहीत्वा नरेन्द्रः प्रविश्याभ्यन्तरमुभाभ्यामपि ताभ्यां स्वप्नाभ्यां विलासवतीमानन्दयाञ्चकार (५)। (छ)

कतिपयदिवसापगमे च देवताप्रसादात् सरसीमिव प्रतिमाशशी विवेश

(घ) अतएवाह सर्वथेति। देवी विलासवती, मान्धातारं युवनाश्वपुत्रं सूर्यवंशीयराजविशेषमिव, राजर्षीणां धौरेयं धुरन्धरं श्रेष्ठं। अत्रोपमालङ्कारः। नचिरेणेति "नमिकर्म्मीक्रितनैकनीहता" इत्यादिवत् "नभ्राजादिषु नञ् प्रकृत्ये"ति नलोपाभावः। स्वप्नवृत्तान्तं तु ब्रह्मवैवर्त्तमत्स्यपुराणादावनुसन्धेयाः।

(ङ) शरदिति। शरत्कालस्य कमलिनी पद्मिनी, अभिनवानां कमलानां पद्मानां उद्गमेन उत्पादनेन गन्धगजं पूर्वोक्तलक्षणकं हस्तिश्रेष्ठमिव, देवी अभिनवायाः कमलाया लक्ष्म्याः पुत्रसम्पदः इत्यर्थः, उद्गमेन उत्पादनेन देवं भवन्तं। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। उद्गमेनेति इलिनन्तादुद्गमधातोरल्।

(च) येनेति। येन हेतुना, इयं उत्पत्स्यमाना, स्वामिनो भवतः कुलस्य वंशस्य सन्ततिः पुत्ररूपमपत्यं, दिग्गजस्य मदलेखा दानजलरेखेव अविच्छिन्नः विच्छेदमप्राप्तः सन्तानो वंशः प्रवाहश्च यस्याः सा तादृशी सती, क्षितिभारस्य धारणे उचिता योग्या समर्था। अत्रोपमालङ्कारः। तं शुकनासं। नरेन्द्रो राजा। अभ्यन्तरमन्तःपुरम्। स्वप्नाभ्यां स्वप्नद्वयवृत्तान्तकथनेनेत्यर्थः।

(छ) कतीति। प्रतिमाशशी प्रतिविम्बभूतश्चन्द्रः सरसीं सरोवरमिव, गर्भो विलासवतीं विलासवत्या

যে সকল স্বপ্ন দেখা যায়, তাহার ফল প্রায়ই সত্য হইয়া থাকে। (ঘ) অতএব মহিষী বিলাসবতী, অচিরকালমধ্যেই নিশ্চয় মান্ধাতার ন্যায় রাজর্ষিদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ জগতের আনন্দের কারণ পুত্র জন্মাইবেন। (ঙ) শরৎকালের পদ্মিনী যেমন নূতন পদ্ম জন্মাইয়া গন্ধহস্তীকে আহ্লাদিত করে, সেইরূপ বিলাসবতীও নূতন পুত্রসম্পদ জন্মাইয়া আপনাকে আহ্লাদিত করিবেন। (চ) যেহেতু, দিক্‌হস্তীর মদজলরেখা যেমন অবিচ্ছিন্ন ধারায় বহিত হইতে থাকে, সেইরূপ আপনার এই পুত্রসন্তান অবিচ্ছিন্নভাবে বংশরক্ষা করিয়া পৃথিবীর ভার বহন করিতে সমর্থ হইবে," শুকনাস এইরূপ বলিতে লাগিলে, রাজা হস্তদ্বারা তাঁহার হস্ত ধারণ করিয়া অন্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া সেই দুই স্বপ্নের বৃত্তান্ত বলিয়া বিলাসবতীকে আনন্দিত করিলেন।

(ছ) তাহার পর কিছু দিন অতীত হইলে দেবতাদের অনুগ্রহে সরোবরমধ্যে চন্দ্রের

(१) समये दृष्टाः। (२) नचिरेण, अचिरेण। (३) सर्वराजर्षीणां। (४) शरत्कमलिनीव। (५) विनोदयाञ्चकार।

गर्भो विलासवतीम्। (क) येन च नन्दनवनराजिरिव (१) पारिजातेन, मधुसूदनवक्षःस्थलीव कौस्तुभमणिना सा सुतरामराजत, (२) दर्पणश्रीरिव च (३) गर्भच्छलेन संक्रान्तमवनिपालप्रतिविम्बमुवाह, शनैः शनैश्च (४) प्रतिदिनं (५) उपचीयमानगर्भा (६) निर्भर-परिपीत-सागर-सलिल-भर-मन्थरेव मेघमाला मन्दं मन्दं सञ्चचार। (ख) मुहुर्मुहुरनुबद्धजृम्भिकं (७) आजिह्मित-लोचनम् (८) सालसं निशश्वास (९)। (ग) तथावस्थाञ्च तामभिनन्दितपान-

उदरमित्यर्थः। अत्रोपमालङ्कारः। प्रतिमाशशी विशति गर्भस्तु विवेश इति कालभेदादुपमागतो भग्नप्रक्रमता-दोषः, स तु यथा प्रतिमाशशी सरसीं विशति तथा विवेश गर्भो विलासवतीमिति पाठेन समाधेयः। एव-मुत्तरत्रापि बोध्यम्।

(क) येनेति। येन च गर्भेण। सा विलासवती, सुतरां नितान्तं, अराजत अशोभत। अत्रोपमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। दर्पणश्रीर्मुकुरलक्ष्मीरिव। संक्रान्तं आत्मनि पतितं, अवनिपालस्य राज्ञ-स्तारापीडस्य प्रतिविम्बं प्रतिरूपं उवाह धारयामास "आत्मा वै जायते पुत्र" इति श्रुतेरिति भावः। अत्रो-पमापह्नुत्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। उपचीयमानो वर्द्धमानो गर्भो यस्याः सा। निर्भरमतिमात्रं परिपीतानां सागरसलिलानां भरेण भारेण, मन्थरा अलसा मेघमाला मेघश्रेणीव। अत्रोपमालङ्कारः।

(ख) मुहुरिति। अनुबद्धा कृता जृम्भिका जृम्भा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, आजिह्मिते ईषत् कुटिलीकृते निद्रावेशात् सङ्कुचिते लोचने नयनद्वयं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, अलसेन आलस्येन सहेति सालसं भावप्रधानोऽयं निर्देशः। निशश्वास निश्वासं त्यक्तवती। गर्भस्वभावोऽयम्।

(ग) तथेति। इङ्गितेषु आन्तरिकभावबोधकचेष्टितेषु कुशलोऽभिज्ञः परिजनः सेवकवर्गः, अनभि-नन्दितं अनादृतं पानं भोजनञ्च यया तां, गर्भावस्थायां योषितामाहारेष्वरुचिसम्भवादिति भावः। प्रावृष'

প্রতিবিম্বের ন্যায় গর্ভ, বিলাসবতীর উদরে প্রবেশ করিল। (ক) পারিজাতবৃক্ষদ্বারা নন্দন-বনশ্রেণীর ন্যায় এবং কৌস্তভমণিদ্বারা নারায়ণের বক্ষঃস্থলের ন্যায়, যে গর্ভদ্বারা বিলাসবতী অত্যন্ত শোভা পাইতেছিলেন। দর্পণ যেমন প্রতিবিম্ব ধারণ করে, সেইরূপ বিলাসবতীও, গর্ভচ্ছলে অন্তরে প্রবিষ্ট রাজার প্রতিবিম্ব ধারণ করিতে লাগিলেন; এবং ধীরে ধীরে প্রতিদিন তাঁহার গর্ভ বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, তখন, সমুদ্রের জল অধিক পান করায় তাহার ভারে অলস মেঘশ্রেণীর ন্যায় বিলাসবতী ধীরে ধীরে গমন করিতেন। (খ) বারংবার হাই তুলিয়া, নয়নযুগল সঙ্কুচিত করিয়া আলস্যের সহিত নিশ্বাস ত্যাগ করিতেন। (গ) পান ও ভোজনে তাঁহার অভিরুচি ছিল না, স্তনযুগলের অগ্রভাগ বর্ষাকালের ন্যায় শ্যামবর্ণ হইয়াছিল এবং

(१) येन नन्दनराजिरिव। (२) सुतरामराजत सा, सुतरामराजत देवी।
(३) क्वचित् चकारो नास्ति। (४) सा शनैः शनैश्च। (५) प्रतिदिवसं।
(६) प्रतिदिनमुपचीयमानगर्भा। (७) मुहुरनुबद्धजृम्भिकं। (८)…लोचना। (९) निःशश्वास।

भोजनां (१) प्रावृषमिव श्यामायमान-पयोधरमुखीं केतकीमिव गर्भपाण्डुरां (२) आलोक्येङ्गित-कुशलः परिजनः (३) विज्ञातवान्। (ग)

अथ तस्याः सर्वपरिजन-(४) प्रधानभूता सदा राजकुल-संवासचतुरा सर्वदा च (५) राजसन्निकर्ष-प्रगल्भा सर्वमङ्गलकुशला कुलवर्द्धना नाम महत्तरिका (६) प्रशस्ते दिवसे प्रदोषवेलायामभ्यन्तरास्थान-मण्डपगतं गन्धतैलावसेक-(७) ज्वलित-दीपिकासहस्रपरिवृतं (८) उडु निकर-मध्यवर्त्तिनमिव पौर्णमासी-शशिनम्, उरगराज-फणा-(९) मणि-सहस्रान्तरालस्थितमिव नारायणम्, मूर्द्धाव-सिक्तैः प्रधान-नरेन्द्रैः (१०) परिमितैः परिवृतम्, अनतिदूरावस्थितपरिजनम्, अनन्तरमुत्तुङ्गवेत्रासनोपविष्टेन धौतधवलाम्बरपरिधानेन नात्युल्वण-वेषेण (११)

वर्षाकालमिव, श्यामायमाने श्यामलीभवन्ती पयोधरयोः स्तनयोः मुखे उपरिभागद्वयं यस्यास्ताम्, अन्यत्र तु श्यामायमानं पयोधरमुखं मेघयुक्तप्रथमभागो यस्यास्ताम्। केतकीं तदाख्यं कुसुममिव, गर्भेण गर्भधारणेन पाण्डुरां श्वेताङ्गीं तां, अन्यत्र तु गर्भे मध्यदेशे पाण्डुरां स्वभावतः श्वेतां ताम्, आलोक्य विज्ञातवान् गर्भ-वत्तया विदितवान्, तादृशलक्षणवत्त्वादिङ्गितकुशलत्वाच्चात्मन इति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं पूर्णोपमा-द्वयञ्चेत्येषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। गर्भलक्षणमाह स्म वाभटः—

"क्षामता गरिमा कुक्षेर्मूर्च्छा छर्दिररोचकम्। जृम्भाप्रसेकः सदनं रोमराज्याः प्रकाशनम्।"

भावप्रकाशश्च—"स्तनयोर्मुखकार्ष्ण्यं स्याद्रोमराज्युद्गमस्तथा।" इत्यादि।

(घ) अथेति। अथ कुलवर्द्धना राज्ञो भूमिपालमुपसृत्य विलासवतीगर्भवृत्तान्तं विदितमकार्षीदित्यन्वयः। राजकुले राजगृहे संवासेन अवस्थानेन चतुरा सर्वकार्य्याणामवसराभिज्ञा, राज्ञः सन्निकर्षेऽपि सन्निधावपि प्रगल्भा धृष्टा, तथा सर्वमङ्गलेषु सर्वविधशुभकार्य्येषु कुशला निपुणा। महत्तरिका शूद्रजातीया दासी। "शूद्रः स्यात् पादजो दासो ग्रामकूटो महत्तरः।" इति त्रिकाण्डशेषः। अभ्यन्तरास्थानमण्डपगतं मध्यवर्त्ति सभा-

---

গর্ভধারণ করায় কেতকীকুসুমের ন্যায় শরীর শ্বেতবর্ণ হইয়াছিল—এই অবস্থায় তাঁহাকে দেখিয়া তিনি যে গর্ভবতী হইয়াছেন—ইহা ইঙ্গিতজ্ঞ পরিজনবর্গ সকলেই বুঝিতে পারিয়াছিল।

(ঘ) তদনন্তর তাঁহার পরিজনবর্গের মধ্যে প্রধানা, সর্ব্বদা রাজগৃহে বাস করায় সুচতুরা এবং রাজার নিকটেও প্রগল্‌ভস্বভাবা ও সকল প্রকার মঙ্গলকার্য্যে নিপুণা কুলবর্দ্ধনা নামে শূদ্র-জাতীয়া কোন দাসী, কোন প্রশস্ত দিনে প্রদোষকালে মধ্যবর্ত্তী সভামণ্ডপে উপবিষ্ট রাজার নিকটে উপস্থিত হইয়া তাঁহার কাণে আস্তে আস্তে রাণী বিলাসবতীর গর্ভবৃত্তান্ত নিবেদন করিল। তখন রাজার সকল দিকে সুগন্ধি তৈলসংসিক্ত বহুতর প্রদীপ জ্বলিতেছিল, সুতরাং নক্ষত্রসমূহের

---

(१) अन्यत्रः स्वयमनेकरसलाञ्छितपानभोजनां। (२) गर्भच्छविपाण्डुरां। (३) अन्तःपुरिकाजनः।
(४) सर्वसेवकवर्ग…। (५) सदा च। (६) महान्तःपुरिका सा। (७)…अभिषेक…।
(८) परिवारं। (९)…फण…। (१०) नरेन्द्रैः परिवृतं। (११) अनुल्वणवेष।

जलनिधिनेवागाधगाम्भीर्य्येण समुपारूढ़-विस्रम्भनिर्भरास्तास्ताः कथाः शुकनासेन सह (१) कुर्वाणं, भूमिपालमुपसृत्य रहः कर्णमूले विदितं (२) विलासवती-गर्भवृत्तान्तमकार्षीत्। (घ)

तेन तु तस्या वचनेनाश्रुतपूर्व्वेणासम्भाव्येनामृतरसेनेव सिक्तसर्वाङ्गस्य सद्यः-प्ररूढ़-(३) रोमाञ्च-निकर-कण्टकिततनोरानन्दरसेन विह्वलीक्रियमाणस्य स्मित-विकसित-कपोलस्थलस्य (४) परिपूरितहृदयातिरिक्तं हर्षमिव (५) दशनांशु-

मध्यउपस्थितं। गन्धतैलानां अवसेकेन प्रक्षेपेण ज्वलितानां दीपिकानां प्रदीपानां सहस्रेण समूहेन परिवृतं परिवेष्टितं। अतएव उड़ुनिकरस्य नक्षत्रसमूहस्य मध्यवर्त्तिनं पौर्णमासीशशिनमिव स्थितम्। उरगराजस्य सहस्रमस्तकस्य अनन्तनागस्य यत् फणामणीनां सहस्रं तस्य अन्तराले मध्ये स्थितं नारायणमिव। अनयो-पमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। परिमितैरल्पसंख्यकैः, मूर्द्धावसिक्तैः कृताभिषेकैः, प्रधाननरेन्द्रैः श्रेष्ठैर्भूपतिभिः। अनतिदूरे अवस्थिताः परिजनाः परिचारका यस्य तम्। अनन्तरं अदूरं स्थानं प्राप्य उत्तुङ्गे अत्युच्चे वेत्रासने उपविष्टेन, धौतं प्रक्षालितं धवलं अम्बरं वस्त्रं परिधानं अधोंशुकं यस्य तेन, नात्युल्वणो नात्युज्ज्वलो वेशो यस्य तेन, जलनिधिना समुद्रेणेव, अगाधं अन्यैरशेयं अतल-स्पर्शञ्च गाम्भीर्य्यं धैर्य्यं गभीरता च यस्य तेन। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। समुपारूढ़ः समुत्पन्नः विस्रम्भ-निर्भरो विश्वासातिशयो यासु ताः, तास्ता विविधा इत्यर्थः कथा आलापान्। भूमिपालं राजानं तारापीड़ं। रहो गुह्यं अन्यैरश्राव्यं यथा स्यात्तथा।

(ङ) तेनेति। तस्याः कुलवर्द्धनायाः। असम्भाव्येन अचिन्तनीयेन। अमृतरसेन पीयूषद्रवेण सिक्तानि सर्वाणि अङ्गानि यस्य तादृशस्येव सतः। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः। सद्यः प्ररूढ़ेन तत्क्षणादुत्पन्नेन रोमाञ्चनिकरेण कण्टकिता सञ्जातकण्टका तनुः शरीरं यस्य तस्य। स्मितेन ईषद्धास्येन विकसिते स्फीते कपोलस्थली गण्डद्वयं यस्य तस्य। दशनांशूनां दन्तकिरणानां वितानच्छलेन विस्तारव्याजेन परिपूरितहृदयात्

মধ্যবর্ত্তী চন্দ্রের ন্যায় এবং সহস্রশিরা অনন্তনাগের সহস্রসংখ্যক ফণামণির অন্তর্গত নারায়ণের ন্যায় রাজাকে দেখা যাইতেছিল ; অভিষিক্ত কয়েক জন প্রধান রাজা তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া অবস্থান করিতেছিলেন, পরিজনবর্গও অনতিদূরে অবস্থান করিতেছিল, আর নিকটে উচ্চ বেত্রাসনে উপবিষ্ট, ধৌত শ্বেতবস্ত্র-পরিধায়ী, কিঞ্চিৎ উজ্জ্বলবেষ এবং সমুদ্রের ন্যায় অগাধ-গাম্ভীর্য্যশালী মন্ত্রিপ্রবর শুকনাসের সহিত রাজা নানাবিধ বিশ্রম্ভালাপ করিতেছিলেন।

(ঙ) অশ্রুতপূর্ব্ব ও অভাবনীয় কুলবর্দ্ধনার সেই বাক্য শুনিয়া রাজার সকল অঙ্গ যেন অমৃতরসে সিক্ত হইয়া গেল, তৎক্ষণাৎ রোমাঞ্চসমূহ উৎপন্ন হইয়া তাঁহার সকল শরীর কণ্টকিত করিল, আনন্দে তাঁহাকে বিহ্বল করিয়া ফেলিল, ঈষৎ হাস্য করায় গণ্ডযুগল বিস্ফারিত

(१) क्वचित् सहशब्दो न दृश्यते। (२) विदितविलासवती…। (३)…प्रकट…।
(४)…मूलस्य। (५)…अतिरिक्तहर्षमिव।

वितानच्छलेन विकिरतो राज्ञः शुकनासमुखे लोलतारकमानन्दजलविन्दुक्लिन्नपक्ष्ममालं तत्क्षणं पपात चक्षुः। (ङ)

अनालोकितपूर्वं तु (१) हर्षप्रकर्षमभिसमीक्ष्य (२) भूपतेः, कुलवर्द्धनाञ्च स्मितविकसितमुखीमागतां दृष्ट्वा तस्य चार्थस्य सततं मनसि वर्त्तमानत्वात् (३) अविदितवृत्तान्तोऽपि तत्कालोचितमपरमतिमहतो हर्षस्य कारणमपश्यन् शुकनासः स्वयमुत्प्रेक्ष्य समुत्सर्पितासनः समीपतरमुपसृत्य नातिप्रकट-(४) मावभाषे—(च) "देव! किमस्ति (५) किञ्चित्तस्मिन् (६) स्वप्नदर्शने सत्यम्? अत्यन्तमुत्फुल्ललोचना (७) हि कुलवर्द्धना दृश्यते, देवस्यापीदं प्रियवचनश्रवण-

अतिरिक्तं उद्वृत्तं हर्षं आनन्दं, विकिरत इव निक्षिपत इव सतः। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः। लोले चपले तारके कनीनिकाद्वयं यस्य तत्, आनन्दजलविन्दुभिः आनन्दाश्रुकणैः क्लिन्ना आर्द्रीकृता पक्ष्ममाला लोमश्रेणिर्यस्य तत तथोक्तं चक्षुर्नयनद्वयं शुकनासमुखे पपात।

(च) अनेति। भूपतेस्तारापीडस्य, हर्षप्रकर्षमानन्दाधिक्यं अभिसमीक्ष्य दृष्ट्वा। तस्य विलासवत्या गर्भधारणरूपस्य, अर्थस्य विषयस्य, सततं मनसि वर्त्तमानत्वात् राज्ञः स्वप्नवृत्तान्तश्रवणेनेति भावः। उत्प्रेक्ष्य 'कुलवर्द्धना विलासवत्या गर्भधारणवृत्तान्तमेवाह' इति सम्भाव्य, समुत्सर्पितं त्यक्तं आसनं येन सः, समीपतरमतिनिकटं। नातिप्रकटं अनतिस्पष्टं सन्दिग्धतया सर्वेषां श्रवणानौचित्यादिति भावः।

(छ) देवेति। ननु विषयान्तरमपहाय कथं तत्स्वप्नविषय एव पृच्छ्यते इत्याह अत्यन्तमिति। हि यस्मात्। उत्फुल्ललोचना आनन्देन विस्फारितनेत्रा। तत्स्वप्नविषयभूतराज्ञीगर्भधारणवृत्तान्तमन्तरेण कुलवर्द्धनाया ईदृगानन्दासम्भवादिति भावः। तत्सम्भावनाया एव हेत्वन्तरमाह देवस्यापीति। प्रियवचनश्रवणकुतूहलादिवेति हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

হইল, দন্তের প্রভা-প্রকাশ-চ্ছলে তিনি যেন পরিপূর্ণ চিত্ত হইতে উদ্বৃত্ত আনন্দ ছড়াইতে লাগিলেন, নয়নের তারা দুইটি চঞ্চল হইল এবং আনন্দাশ্রুজলে নয়নের লোমগুলি ভিজিয়া গেল, এইরূপ তাঁহার নয়নযুগল তৎক্ষণাৎ শুকনাসের মুখে পতিত হইল।

(চ) পূর্ব্বে যাহা কখনও দেখা যায় নাই—এ হেন রাজার আনন্দাতিশয় দর্শন করিয়া কুলবর্দ্ধনাকেও হাস্য-প্রফুল্লমুখে উপস্থিত দেখিয়া এবং সেই স্বপ্নবৃত্তান্ত শুনিয়া অবধি রাণীর গর্ভধারণের কথা সর্ব্বদা মনে পড়ায় শুকনাস, প্রকৃত বৃত্তান্ত জানিতে না পারিয়াও, সেই সময়ে অত্যন্ত আনন্দের অন্য উপযুক্ত কারণ দেখিতে না পাইয়া, নিজেই মনে মনে ধারণা করিয়া, আসন পরিত্যাগপূর্ব্বক রাজার অতিনিকটে যাইয়া অনতিস্পষ্টভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন—(ছ) "মহারাজ! সেই স্বপ্ন দেখার বিষয় কিছু সত্য হইয়াছে কি? কারণ—কুলবর্দ্ধনাকে

(१) अनालोकितपूर्वं तु तं। (२) अभिसंवीक्ष्य।

(३) परिवर्त्तमानत्वात्, विपरिवर्त्तमानत्वात्। (४) नातिप्रकाशं...। (५) अस्ति।

(६) क्वचित् 'तस्मिन्' इति नास्ति। (७) अत्यन्तोत्फुल्ललोचना, उत्फुल्ललोचना।

कुतूहलादिव श्रवणमूलमुपसर्पद्रुपरचयदिव नीलकुवलय-कर्णपूर-शोभां, आनन्द-जल-परिप्लुतं तरलतारकं (१) विकसदावेदयति महत् प्रहर्ष-(२) कारणमीक्षण-युगलम्, उपारूढ़महोत्सव-श्रवण-कुतूहलमुत्सुकोत्सुकं (३) क्लाम्यति मे मनः। तदावेदयतु देवः किमिदम्”। (क)

इत्युक्तवति तस्मिन् राजा विहस्याब्रवीत्—“यदि सत्यमनया यथा कथितं, तदा (४) सर्वमवितथं स्वप्नदर्शनम्। अहन्तु न श्रद्दधे. कुतोऽस्माकमियती भाग्यसम्पत्, अभाजनं हि वयमीदृशानां प्रियवचनश्रवणानाम्। अवितथवादिनी-मप्यहं कुलवर्द्धनामेवंविधानां कल्याणानामसम्भावितमात्मानं मन्यमानो विप-

श्रवणयोः कर्णयोः मूलं समीपं उपसर्पत् गच्छत्। कुलवर्द्धनातः श्रुतवृत्तान्ताभ्यां कर्णाभ्यामेव तद्वृत्तान्त-श्रवणसम्भवादिति भाव.। अतएव नीलकुवलयस्य नीलोत्पलरूपस्य कर्णपूरस्य कर्णाभरणस्य शोभां उपरचय-दिव जनयदिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आनन्दजलेन आनन्दाश्रुणा परिप्लुतं क्लिन्नं, तरले चञ्चले तारके कनीनिकाद्वय यस्य तत् विकसत् विस्फारं प्राप्नुवत् इदं देवस्य भवतोऽपि ईक्षणयुगलं नयनद्वयं कर्त्तृ, महद्विशालं प्रहर्षस्य विशेषानन्दस्य कारणं आवेदयति सूचयति। ननु तथापि किन्ते, इत्याह उपा-रूढ़ेति। उपारूढ़मुत्पन्न महोतसवश्रवणाय विशालानन्दवृत्तान्ताकर्णनाय कुतूहलं कौतुकं यत्र तत्, उत्-सुकोत्सुकं नितान्तोत्कण्ठित मे मम मनः क्लाम्यति क्लिश्यति।

(ख) इतीति। तस्मिन् शुकनासे। अनया कुलवर्द्धनया यथा कथितं तद्यदि सत्यमित्यर्थः। अवितथं अमिथ्याभूतं सत्यम्। श्रद्दधे विश्वसिमि। हि यस्मात्। अभाजनं अपात्रं अयोग्या इत्यर्थः।

আনন্দে অত্যন্ত উৎফুল্লনেত্র৷ দেখিতেছি, আপনারও এই নয়নযুগল প্রিয়বাক্য শুনিবার জন্য কৌতুকবশতই যেন কর্ণের নিকটে উপস্থিত হইতেছে, তাহাতে যেন নীলোৎপলময় কর্ণাভরণের শোভা জন্মাইতেছে, আনন্দাশ্রুজলে সিক্ত ও বিস্ফারিত হইতেছে, তারা দুইটিও চঞ্চল হইয়াছে, সুতরাং (এই নয়নযুগলই) গুরুতর আনন্দের কারণ প্রকাশ করিতেছে। গুরুতর আনন্দের সংবাদ শুনিবার জন্য আমারও কৌতুহল জন্মিয়াছে এবং মন অত্যন্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া ক্লেশ ভোগ করিতেছে; অতএব আপনি বলুন—এ ব্যাপারটা কি?

(খ) শুকনাস এইরূপ বলিলে রাজা হাস্য করিয়া বলিলেন—“কুলবর্দ্ধনা যাহা বলিয়াছে, তাহা যদি সত্য হয়, তবে সেই স্বপ্নবৃত্তান্ত সমস্তই সত্য; কিন্তু আমি বিশ্বাস করিতেছি না; কারণ—আমাদের এত ভাগ্যসম্পদ হইবে কোথা হইতে; যেহেতু—আমরা এই জাতীয় প্রিয়বাক্য শুনিবার পাত্র নহি। কুলবর্দ্ধনাকে পূর্ব্ব হইতেই সত্যবাদিনী বলিয়া জানি; কিন্তু আমি যে এই জাতীয় মঙ্গল-সম্পদের পাত্র হইব, ইহা অসম্ভব মনে করিয়া আজ উহাকে

(१)...प्लुततरलतारकं। (२) प्रकर्ष...।

(३) उत्सुकं। (४) तथा।

रीतामिवाद्य पश्यामि। तदुत्तिष्ठ, स्वयमेव गत्वा किमत्र सत्यमिति देवीं पृष्ट्वा ज्ञास्यामि।" (ज)

इत्यभिधाय विसृज्य (१) सकलनरेन्द्रलोकं, उन्मुच्य स्वाङ्गेभ्यो भूषणानि कुलवर्द्धनायै दत्त्वा, तया च दत्तप्रसादानन्तरमवनितलाश्लिष्टललाटरेखया शिरःप्रणामेनाभ्यर्च्चितः, सह शुकनासेनोत्थाय हर्षविशेषनिर्भरेण त्वर्य्यमाणः (२) मनसा, पवन-चलित-नील-कुवलय-दल-लीला-विडम्बकेन दक्षिणेनाक्ष्णा परिस्फुरताऽभिनन्द्यमानः (३) तत्काल-सेवा-समुचितेन विरलविरलेन परिजनेनानुगम्यमानः पुरःसंसर्पिणीनामनिललोलशिखानां (४) प्रदीपिकानामालोकेन समुत्सार्य्यमाणकक्षान्तरतिमिरं (५) अन्तःपुरमयासीत्। (झ)

अवितथवादिनीमपि पूर्वस्मादेव सत्यवादिनीमपि। असम्भावितं आस्पदत्वेन अनिर्द्धारितं। विपरीतां अवितथवादिनीभिन्नरूपां मिथ्यावादिनीमित्यर्थः। अत्र अस्या उक्तिविषये।

(झ) इतीति। विसृज्य विहाय। उन्मुच्य अवतार्य्य। दत्तो यः प्रसीदत्यनेनेति प्रसादोऽनुग्रहदानं तस्मादनन्तरं, अवनितलेन भूतलेन आश्लिष्टा प्रणामकाले स्पृष्टा ललाटरेखा भालदेशो यस्यास्तया, तया कुलवर्द्धनया शिरःप्रणामेन मस्तकावनमनेन अभ्यर्च्चितो वन्दितः। हर्षविशेषेण आनन्दबाहुल्येन निर्भरं परिपूर्णं तेन, मनसा त्वर्य्यमाणः अन्तःपुरगमने सत्वरीक्रियमाणः। पवनेन वायुना चलितं कम्पितं यत् नीलकुवलयं नीलोत्पलं तस्य लीलां शोभां विडम्बयति अनुकरोतीति तत्तथोक्तं तेन। अत्रार्थोपमालङ्कारः। परिस्फुरता अतीवस्पन्दमानेन, दक्षिणेन अक्ष्णा चक्षुषा अभिनन्द्यमानः अभीष्टलाभसूचनेन सन्तोष्यमाणः। तथाचोक्तं "अङ्गविस्फुरणं नृणां दक्षिणं सर्वकामदं। तदेव शस्यते सद्भिर्नारीणामप्रदक्षिणम्।" तत्कालसेवायां अन्तःपुरगमनकालीनपरिचर्य्यायां समुचितेन योग्येन, विरलविरलेन अल्पाल्पेन। पुरःसंसर्पिणीनां अग्रगामिनीनां, अनिलेन वायुना लोलाश्चञ्चलाः शिखा यासां तासां प्रदीपिकानां दीपानां

পূর্ব্বের বিপরীত (মিথ্যাবাদিনী) বলিয়া বোধ করিতেছি। অতএব উঠ, নিজেরাই যাইয়া, 'এ বিষয়ে যথার্থ ঘটনা কি' ইহা মহিষীকে জিজ্ঞাসা করিয়া জানি।"

(ঝ) এই কথা বলিয়া উপস্থিত রাজগণকে বিদায় দিয়া, নিজের অঙ্গ হইতে আভরণ উন্মুক্ত করিয়া কুলবর্দ্ধনাকে দিলেন, সেও সেই অনুগ্রহদানের পর মস্তক অবনমনপূর্ব্বক ললাটদ্বারা ভূতল স্পর্শ করিয়া রাজাকে নমস্কার করিল; রাজা শুকনাসের সহিত উঠিলেন, অত্যন্ত আনন্দ-পরিপূর্ণ চিত্ত, তাঁহাকে অন্তঃপুরে যাইবার নিমিত্ত দ্রুত পরিচালিত করিতে লাগিল, বায়ুকম্পিত নীলোৎপলের অনুকরণকারী দক্ষিণ-চক্ষু স্পন্দিত হইয়া তাঁহাকে সন্তুষ্ট করিতে লাগিল, সেই সময়ে পরিচর্য্যা করিবার উপযোগী অল্প অল্প পরিজন তাঁহার পশ্চাৎ

---

(१) विसर्ज्य। (२) पूर्य्यमाणः। (३) अभिवन्द्यमानः।

(४) अनिललोलोच्चलच्छिखानां। (५) प्रदीपकानां,...कक्षान्तरतिमिरसंहतिः।

तत्र च सुकृत-(१) रक्षासंविधाने, नवसुधानुलेपन-(२) धवलिते, प्रज्वलित-मङ्गलप्रदीपे, (३) पूर्णकलसाधिष्ठितपक्षके, (४) प्रत्यग्रलिखित-मङ्गल्यालेख्योज्ज्वल-भित्ति-भाग-(५) मनोहारिणि, समुपरचित-सित-वितान-पर्य्यन्तावबद्ध मुक्तागुणे,(६) मणिप्रदीप-प्रहत-(७) तिमिरे वासभवने, (८) (ञ) भूमि-(९) लिखित-

आलोकेन प्रभया, समुत्सार्य्यमाणानि दूरीक्रियमाणानि कक्षान्तराणां अग्रायवर्त्तिनामन्येषां प्रकोष्ठानां तिमि-राण्यन्धकारा यस्मिन्-तत्।

(ञ) तत्रेति। तत्र अन्तःपुरे वासभवने शयनतलमधिशयाना विलासवतीं राजा ददर्शेत्यन्वयः। तत्रादौ सप्तम्यन्तानि पदानि वासभवन इत्यस्य विशेषणानि। सुष्ठु सम्यक् कृतं मणिमन्त्रौषधादिना विहितं रक्षासंविधानं डाकिन्यादिभ्यो गर्भरक्षणविधिर्यस्मिन् तस्मिन्। नवेन नूतनेन सुधानुलेपनेन चूर्णादिद्रव्य-लेपनेन धवलिते शुभ्रीकृते। "सुधा प्रासादभागद्रव्यं सुधा विद्युत् सुधाऽमृतम्।" इत्याद्यनेकार्थध्वनिमञ्जरी। प्रज्वलितो मङ्गलप्रदीपो यस्मिन् तस्मिन्। मङ्गलार्थः प्रदीप इति मङ्गलप्रदीपः "शाकपार्थिवादयश्च"ेति मध्यपदलोपी समासः। पूर्णकलसेन जलपूर्णकुम्भेन अधिष्ठित आश्रितः पक्षको द्वारपार्श्वो यस्य तस्मिन्। "पक्षकस्तु पुमान् पार्श्वद्वारे च पार्श्वमात्रके।" इति मेदिनी। प्रत्यग्रं नूतनं यथा स्यात्तथा लिखितानि चित्रितानि यानि मङ्गल्यानि दैवतारूपत्वान्मङ्गलजनकानि आलेख्यानि चित्राणि तैरुज्ज्वलो यो भित्तिभाग-स्तेन मनोहारिणि। समुपरचितस्य उपरि योजितस्य सितवितानस्य शुभ्रचन्द्रातपस्य पर्य्यन्तेषु प्रान्तदेशेषु अवबद्धो ग्रथिता मुक्तागुणो मुक्तामाला यस्मिन् तस्मिन्। तथा मणय एव प्रदीपास्तैः प्रहतानि नाशितानि तिमिराणि अन्धकारा यस्मिन् तस्मिन्। वासभवने निवासगृहे।

পশ্চাৎ যাইতে লাগিল, বায়ু-কম্পিত-শিখা-সমন্বিত অগ্রগামী প্রদীপসমূহের আলোকে অন্যান্য প্রকোষ্ঠের অন্ধকার দূর করিতে লাগিল, এই অবস্থায় রাজা অন্তঃপুরে গমন করিলেন।

(ঞ) রাজা অন্তঃপুরে যাইয়া দেখিলেন—রাণী বিলাসবতী বাসগৃহে, শয্যার উপরে শয়ন করিয়া রহিয়াছেন। মণি, মন্ত্র ও ঔষধাদিদ্বারা সেই বাসগৃহের সম্পূর্ণ রক্ষাবিধান করা হইয়াছিল, এবং নূতন চূর্ণলেপন করিয়া সেই বাসগৃহকে শুভ্রবর্ণও করা হইয়াছিল, তাহার মধ্যে মঙ্গলপ্রদীপ জ্বলিতেছিল, দ্বারের পার্শ্বে পূর্ণকুম্ভ স্থাপিত ছিল, দেওয়ালে নূতন চিত্রিত মঙ্গলকর চিত্রসমূহে সে ঘরখানি সুন্দর দেখাইতেছিল, উপরে একখানি শ্বেতবর্ণ চন্দ্রাতপ খাটাইয়া তাহার চারিদিকে মুক্তার ঝালর ঝুলান হইয়াছিল, আর মণিময় প্রদীপের আলোকে

(१) तत्र च सुकृत…, तत्र बहुकृत…। (२) नवसुधालेप…। (३) ..दीपे।
(४)…अधिष्ठिते…द्वारपक्षके। (५) ..मङ्गल्यलेख्य, ..उज्ज्वलित…भागे। (६)·सितविताने वितान,… पर्य्यन्तस्थितमुक्तागणे। (७)…प्रतिहत…। (८) वासभुवने। (९) भूमि…।

পত্রলতা-কৃত-রক্ষা-পরিক্ষেপম্, শয়ন-শিরোভাগ-বিন্যস্ত-ধবল (১) নিদ্রা-কলসম্, আবদ্ধ-বিবিধৌষধি-মূল-মন্ত্র-(২) পবিত্রম্, অবস্থাপিত-রক্ষা-শক্তিবলয়ম্, ইতস্ততো বিকীর্ণ-(৩) গৌরসর্ষপম্, অবলম্বিত-(৪) বাল-যৌক্ত্র-গ্রথিত-লোহ-পিপ্পলপত্রম্, (৫) আসক্ত-হরিতারিষ্টপল্লবম্, উত্তুঙ্গ-পাদপীঠ-(৬) প্রতিষ্ঠিতম্, ইন্দু-দীধিতি-ধবল-প্রচ্ছদ-পটম্, অচলরাজ-শিলাতল-বিশালম্, গর্ভোচিতং

(ট) ভূমীতি। ইতঃপ্রভৃতি ক্লীবলিঙ্গদ্বিতীয়ান্তপদানি শয়…স্য বিশেষণানি। ভূমৌ লিখিতয়া শয্যায়া এব সমন্তাচ্ছিবিতয়া পত্রলতয়া পত্রান্বিতকল্পলতয়া আলিপনেত্যর্থঃ, কৃতো রক্ষাপরিক্ষেপো গর্ভরক্ষার্থং পরিবেষ্টনং যস্য তৎ। শয়নে শয়নকালে যঃ শিরোভাগস্তস্মিন্ বিন্যস্তঃ স্থাপিতঃ, ধবলো রৌপ্যময়ত্বাৎ শ্বেতো নিদ্রাকলসো নিদ্রাকুম্ভো যস্মিন্ তৎ। আবদ্ধানি স্থাপিতানি বিবিধানি নানাপ্রকারাণি ওষধয়ো লতাবিশেষাঃ মূলানি তল্লতামূলানি যন্ত্রাণি লাঙ্গলচক্রাদীনি পবিত্রাণি গোরচনাদিপবিত্রদ্রব্যাণি যস্মিন্ তৎ। অবস্থাপিতানি রক্ষার্থে শক্তীনাং ব্রাহ্মীবৈষ্ণবীপ্রভৃতীনাং বলয়ানি মন্ত্রপূতকটকানি যস্মিন্ তৎ। ইতস্ততো বিকীর্ণা বিক্ষিপ্তা গৌরসর্ষপাঃ শ্বেতসর্ষপা যস্মিন্ তৎ। অবলম্বিতানি স্থাপিতানি বালযৌক্ত্রেণ ক্ষুদ্ররজ্জুবিশেষেণ গ্রথিতানি গুম্ফিতানি লোহানি লৌহখণ্ডানি পিপ্পলপত্রাণি অশ্বত্থদলানি চ যস্মিন্ তৎ। "আবন্ধো যৌক্ত্রং যোত্রম্।" "বোধিদ্রুমশ্চলদল পিপ্পলঃ কুঞ্জরাশনঃ। অশ্বত্থে" ইতি চামরঃ। আসক্তাঃ পরস্পরলগ্নাঃ হরিতা নূতনত্বাৎ পালাশবর্ণাঃ অরিষ্টপল্লবা নিম্বকিসলয়ানি যস্মিন্ তৎ। "অরিষ্টঃ ফেনিলে নিম্বে লশুনে কাককঙ্কয়োঃ।" ইতি বিশ্বঃ। গর্ভিণীশয্যায়ামীদৃশানাং দ্রব্যবিশেষাণাং সংস্থাপনং খলু গর্ভরক্ষার্থং তদানীন্তনতদ্দেশাচারাদিতি বোধ্যম্। উত্তুঙ্গেষু অত্যন্তোচ্চেষু পাদপীঠেষু পর্য্যঙ্কপাদাধার-কাষ্ঠবিশেষেষু প্রতিষ্ঠিতং অবস্থিতং। তেষু পর্য্যঙ্কস্য প্রতিষ্ঠিতত্বাৎ পর্য্যঙ্কোপরিপাতিতশয্যায়া অপি তৎপ্রতিষ্ঠিতত্বমুপচারাৎ। ইন্দুদীধিতিবৎ চন্দ্রকিরণবৎ ধবলং প্রচ্ছদপটং আস্তরণবস্ত্রং যস্মিন্ তৎ। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ। তথা অচলরাজস্য হিমালয়স্য শিলাতলবৎ বিশালপ্রস্তরখণ্ডবৎ বিশালং বিস্তৃতং।

সে ঘরের অন্ধকার দূর করিয়াছিল; (ট) আবার রাণী যে শয্যায় শয়ন করিয়াছিলেন, তাহার চারিদিকে মাটীতে আলিপনা দিয়া রক্ষামণ্ডল করা হইয়াছিল, শিয়রে একটি শ্বেতবর্ণ নিদ্রাকুম্ভ স্থাপিত ছিল, নানাপ্রকার ওষধি, মূল (কুমু'রের লতা ও তাহার মূল প্রভৃতি), লাঙ্গলপ্রভৃতি যন্ত্র ও গোরোচনাপ্রভৃতি পবিত্র দ্রব্য সেই শয্যার সংস্পর্শে রাখা হইয়াছিল, গর্ভরক্ষার জন্য ব্রাহ্মী ও বৈষ্ণবীপ্রভৃতি মাতৃগণের মন্ত্রে অভিমন্ত্রিত করিয়া কতকগুলি বালা সেই শয্যার উপরে রাখা হইয়াছিল, চারিদিকে শ্বেত সরিষে ছড়ান ছিল, ছোট দড়ি দিয়া গাঁথা কতকগুলি লোহার খণ্ড ও অশ্বত্থের পাতা এবং পরস্পর সংলগ্ন হরিতবর্ণ কতকগুলি নিমের পল্লব সেই শয্যার উপরে সংস্থাপিত ছিল, উচ্চ উচ্চ কাষ্ঠখণ্ডের উপরে সেই পর্য্যঙ্কের পায়াগুলি স্থাপিত ছিল, চন্দ্রকিরণের ন্যায় শুভ্রবর্ণ একখানি আস্তরণ বস্ত্র (চাদর) তাহার উপরে পতিত ছিল আর সেই শয্যাখানি হিমালয়ের বিশাল প্রস্তরখণ্ডের ন্যায় বিস্তৃত এবং

(১)...রজতধবল...। (২)...মন্ত্র...। (৩) বিপ্রকীর্ণ...। (৪) অবলম্বি...।
(৫) বালযৌক্ত্রগ্রথিত..., লৌহ, লোহিত,...দল'। (৬) পাদপীঠী...।

शयनतलमधिशयानाम्, (ट) कनकपात्र-परिगृहीतैः अविच्छिन्न-(१) विरलावस्थित-दधिलवैः जल-तरङ्ग-तरल-श्वेत-(२) शालि-सिक्थ-निकरैः अग्रथित-कुसुम-(३) सनाथैः पूर्णभाजनैः, (ठ) अखण्डितानन मत्स्य-पटलैश्च प्रत्यग्र-पिशितपिण्ड-मिश्रैः, (ड) अविच्छिन्न-सलिलधारानुगम्यमान-(४) मार्गैः, पटलकप्रज्वलितैश्च शीतल[illegible]ैः, (ढ) गोरोचनामिश्रगौरसर्षपैश्च सलिलाञ्ज-

अत्रापि लुप्तोपमालङ्कारः । गर्भोचितं गर्भवतीशयनयोग्यं शयनतलं शय्योपरिभागं अधिशयानां आश्रित्य शयितां । विलासवत्या विशेषणमेतत् ।

(ठ) कनकेति । अत्र पूर्णभाजनैरित्यन्तानि सिक्थनिकरैरित्यस्य विशेषणानि । आचारेषु तद्देशिकलौकिकव्यवहारेषु कुशलाऽभिज्ञस्तेन, अन्तःपुरजरतीजनेन अन्तःपुरस्थवृद्धस्त्रीलोकवर्गेण । आदौ तदन्तर्गतेन केनचित् वृद्धस्त्रीजनेन कर्त्त्रेत्यर्थः । कनकपात्रे स्वर्णभाजने परिगृहीतैः स्थापितैः । अविच्छिन्नाः परस्पर-संलग्नाः, विरला अल्पाः, अवस्थिता दधिलवा दधिबिन्दवो येषु तैः । अग्रथितानि सूत्रेणागुम्फितानि विकीर्णानि यानि कुसुमानि तैः सनाथाः संयुक्तास्तैः । तथा पूर्णं व्याप्तं भाजनं पात्रं येस्तैः । जलतरङ्गवत् तरलाश्चञ्चलाः, तदीयवाष्पाणां तरलतया तेषामपि तरलवद्दृश्यमानत्वादिति भावः, श्वेताः शुभ्राः, शालिसिक्थ-निकराः सद्यःपक्वशालितण्डुलान्नसमूहास्तैः करणैः । तरङ्गशब्दस्य नानार्थतया वस्त्रादीनामप्यभिधानात्तद्व्यावृत्तये जलपदमिति नाधिकपदत्वदोषः । शालिर्हैमन्तिकं धान्यम् ।

(ड) अखण्डितेति । अपरेण केनचिज्जरतीजनेनेति कर्त्तृपदमादावूहनीयम् । प्रत्यग्राणि नूतनानि यानि पिशितपिण्डानि मांसखण्डानि तन्मिश्रैस्तत्संयुक्तैः अखण्डितानि अच्छिन्नानि आननानि मुखानि येषां तादृशानां मत्स्यानां पटलैः समूहैश्च । क्रियमाणावतारणकमङ्गलामित्यग्रिमेणान्वयः ।

(ढ) अविच्छिन्नेति । अविच्छिन्नया सलिलधारया अनुगम्यमानो मार्गः पन्था येषां तैः, केनचिज्जरतीजनेन पश्चात् पश्चात् क्रियमाणाविच्छिन्नजलधारैरित्यर्थः । पटलकेषु क्षुद्रपिटकेषु तन्मध्येष्वित्यर्थः प्रज्वलितैः । "पटलं तिलके नेत्ररोगे छदिषि सञ्चये । पिटके परिवारे च"ति हैमः । शीतलप्रदीपैश्च अनेकजरतीजनैरानीयमानैः कर्पूरदीपैश्च करणैः । क्रियमाणावतारणकमङ्गलामित्यनेनान्वयः । "शीतलः (पुं)... कर्पूरभेदः" इति शब्दकल्पद्रुमः ।

গর্ভবতীর শয়নের উপযুক্ত ছিল। (ঠ) কোন বৃদ্ধ স্ত্রীলোক রাণীর জন্য স্বর্ণপাত্রে পরিপূর্ণ করিয়া শুভ্রবর্ণ শালিতণ্ডুলের অন্ন লইয়া আসিতেছিল, সেই অন্নের উপরে পরস্পর সংলগ্ন অথচ অল্প অল্প দধিবিন্দু এবং অসংলগ্নভাবে কতকগুলি পুষ্প প্রক্ষিপ্ত ছিল আর সেই অন্ন হইতে জলতরঙ্গের ন্যায় বাষ্প উঠিতেছিল, (ড) কোন বৃদ্ধ স্ত্রীলোক, কতকগুলি অচ্ছিন্ন-মুখ মৎস্য নিয়া আসিতেছিল, তাহাতে নূতন মাংসখণ্ডও মিশ্রিত ছিল; (ঢ) কতকগুলি বৃদ্ধ স্ত্রীলোক, পেটড়ার (লণ্ঠনের) মধ্যে প্রজ্বলিত কতকগুলি কর্পূরের প্রদীপ লইয়া আসিতে-

(१) अविच्छेद... । (२)...श्वित... । (३)...कुसुमाञ्जलि... । (४)...गम्यमान... ।

लिभिश्च, (ण) आचार-(१) कुशलेनान्तःपुर-जरतीजनेन क्रियमाणावतारणक-(२) मङ्गलाम्, (त) धवलाम्बर-विविक्त-वेषेण प्रमुदितेन प्रस्तुतमङ्गल (३) प्रायालापेन परिजनेनोपास्यमानाम्, (थ) उपारूढगर्भतयाऽन्तर्गतकुलशैला-मिव क्षितिम्, सलिल-निमग्नैरावतामिव मन्दाकिनीम्, गुहागतसिंहामिव गिरिराजमेखलाम्, जलधर-पटलान्तरित-दिनकरा[illegible]दिवसश्रियम्, (४) उदय-गिरि-तिरोहित-शशिमण्डलामिव विभावरीम्, अ[illegible]ह्म-कमल-विनिर्गमामिव नारायणनाभिम्, आसन्नागस्त्योदयामिव दक्षिणाशाम्, फेनावृतामृतकलशामिव

(ण) गोरोचनेति। गोरोचनया मिश्राः संयुक्ताः गौराः श्वेता ये सर्षपास्तैश्च केनचिज्जरतीजनेन पश्चात् पश्चात्ताद्दशसर्षपविक्षेपैश्च करणैरित्यर्थः। सलिलाञ्जलिभिश्च केनचिज्जरतीजनेनाञ्जलिपूर्णसलिलैश्च क्रियमाणा-वतारणकमङ्गलामित्यर्थः।

(त) आचारेति। क्रियमाणं उक्तरूपेण विधीयमानं अवतारणकं अवतारणे भूतविषये भोजनीया-नयनवेलायां भूतापसारणविषय इत्यर्थ. मङ्गलं यस्यास्ताम्। "अवतारणं भूताद्यिग्रहे वस्त्राञ्चलेऽर्चने।" इति मेदिनी। तदानीन्तनतद्देशाचारादिदमङ्गलवर्णनम्।

(थ) धवलेति। धवलाम्बरं श्वेतवस्त्रं तद्रूपो विविक्तः पवित्रो वेषो यस्य तेन, प्रमुदितेन हृष्टेन, प्रस्तुत आरब्धो मङ्गलप्राय आलापो येन तादृशेन परिजनेन उपास्यमाना पादसंवाहनादिभि सेव्यमानाम्।

(द) उपेति। उपारूढगर्भतया उत्पन्नगर्भतया हेतुना। अयमर्थ इतः सर्वत्रान्वीयते अन्तर्गतः कुलशैलो यस्यास्तां क्षितिमिव, सलिले निमग्न ऐरावतो हस्ती यस्यास्ताम्, मन्दाकिनीं वियद्गङ्गामिव, गुहायां गतः स्थितः सिंहो यस्यास्तां गिरिराजस्य हिमालयस्य मेखलां मध्यभागमिव, जलधरपटलेन मेघ-वृन्देन अन्तरितो व्यवहितो दिनकरः सूर्य्यो यस्यां तां दिवसश्रियमिव, उदयगिरिणा तिरोहितं शशिमण्डलं यस्यां तां विभावरीं रात्रिमिव, अभ्यर्णं आसन्नः ब्रह्मकमलस्य चतुर्मुखजन्मस्थानीभूतपद्मस्य विनिर्गमो यस्यास्तां नारायणस्य नाभिमिव, आसन्नः अगस्त्यस्योदयो यस्यां तां दक्षिणाशां दक्षिणदिशमिव, तथा फेनैरावृत

ছিল, কেহ তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ পথে অবিচ্ছিন্ন জলধারা দিতেছিল, কেহ গোরোচনা-মিশ্রিত শ্বেত-সর্ষপ পথে নিক্ষেপ করিতেছিল, আর অপর কেহ অঞ্জলিপূর্ণ জল লইয়া আসিতেছিল, (ত) এই ভাবে সেই দেশের ও সেই বংশের আচারে অভিজ্ঞ এইরূপ অন্তঃপুরস্থ বৃদ্ধ স্ত্রীলোকগণ রাণীর জন্য খাদ্যদ্রব্য আনিবার সময়ে ভৌতিক অনিষ্টের নিবারণ করিবার জন্য মঙ্গলাচরণ করিতেছিল। (থ) এবং শ্বেতবর্ণ বস্ত্রের নির্ম্মল পরিচ্ছদ-সমন্বিত হৃষ্টচিত্ত পরিজনবর্গ, পরস্পর মঙ্গলময় আলাপ করিতে করিতে রাণীর পরিচর্য্যা করিতেছিল। (দ) গর্ভ উৎপন্ন হওয়ায়, অন্তর্গত কুলপর্ব্বত-সমন্বিত পৃথিবীর ন্যায়, ঐরাবত হস্তী জলমধ্যে নিমগ্ন হইলে স্বর্গগঙ্গার ন্যায়, গুহামধ্যে সিংহ অবস্থান করিতে লাগিলে হিমালয়ের মেখলার (মধ্যদেশের) ন্যায়, সূর্য্য মেঘসমূহে আবৃত হইলে দিনশ্রীর ন্যায়, চন্দ্রমণ্ডল উদয়াচলদ্বারা

(१) अभिचार...। (२)...अवतरणक...। (३)...मङ्गल...। (४) दिनश्रियम्।

क्षीरोदवेलाम्, गोरोचना-चित्रित-(१) दशमनुपहतमतिधवलं (२) दुकूलयुगलं वसानां विलासवतीं ददर्श। (द)

ससम्भ्रम-परिजन-प्रसारित-करतलावलम्बनावष्टम्भेन (३) वामजानु-विन्यस्त-हस्तपल्लवां प्रचलित-(४) भूषणमणि-रव-मुखरमुत्तिष्ठन्तीं विलासवतीम् "अलमलमत्यादरेण, देवि! नो[illegible]यम्" इत्यभिधाय सह तया तस्मिन्नेव शयनीये पार्थिवः समुपाविशत्। (ध[illegible]ष्ट-चामीकर-चारुपादे (५) धवलोपच्छदे चासन्ने शयनान्तरे शुकनासोऽपि न्यषीदत्। (न)

आच्छादितः अमृतकलसो यस्यां तां क्षीरोदस्य सागरस्य वेलां जलवृद्धिमिव स्थिताम्, तथा गोरोचनया चित्रिता दशाः प्रान्तदेशा यस्य तत्, अनुपहतं प्रागपरिधानेनापर्य्युषितं नूतनमित्यर्थः अतिधवलं दुकूलयुगलं सूक्ष्मवस्त्रद्वयं वसानां परिदधानाम्। अत्र मालोपमालङ्कारः। "दुकूलं तु क्षौमे सूक्ष्मांशुकेऽपि च।" इति विश्वः।

(ध) ससम्भ्रमेति। ससम्भ्रमेण राजानमवलोक्य सत्वरेण परिजनेन कयाचित् परिचारिकया प्रसारितं विस्तारितं यत् करतलं तदेवावलम्बनं तस्य अवष्टम्भेन आश्रयेण. वामजानुनि विन्यस्तः स्थापितो हस्तपल्लवो यया ताम्, अन्यथा गर्भभारेणोत्थानासम्भवादित्युभयथापि भावः। प्रचलितानां शरीरसञ्चलनेन चलितानां भूषणमणीनां रवेण शब्देन मुखरं सशब्दं यथा स्यात्तथा। तया विलासवत्या। पार्थिवो राजा।

(न) प्रमृष्टेति। प्रमृष्टाः परिष्कृताः, चामीकरस्य सुवर्णस्य सुवर्णमया इत्यर्थः चारुपादा यस्य

অন্তরিত থাকিলে রাত্রির ন্যায়, ব্রহ্মার জন্মস্থানরূপ পদ্মের প্রকাশ হইতে লাগিলে নারায়ণের নাভির ন্যায়, অগস্ত্যের উদয় নিকটবর্ত্তী হইলে দক্ষিণদিকের ন্যায়, এবং ফেনদ্বারা আবৃত অবস্থায় অভ্যন্তরে অমৃতকুম্ভ থাকার সময়ে ক্ষীরোদসাগরের জলবৃদ্ধির ন্যায় বিলাসবতীকে রাজা দর্শন করিলেন; তখন রাণী অত্যন্ত শুভ্রবর্ণ নূতন দু'খানি সূক্ষ্মবস্ত্র পরিধান করিয়াছিলেন, তাহার প্রান্তভাগ গোরোচনাদ্বারা চিত্রিত ছিল।

(ধ) তখন রাজাকে দেখিয়া কোন পরিচারিকা, স্বকীয় হস্ত প্রসারিত করিল, রাণী দক্ষিণহস্তদ্বারা সেই হস্ত ধারণপূর্ব্বক, বামজানুর উপরে বাম-হস্ত বিন্যস্ত করিয়া গাত্রোত্থান করিতে লাগিলেন, সেই অঙ্গসঞ্চালনে চঞ্চলীভূত অলঙ্কারগুলির শব্দ হইতে লাগিল, ইহা দেখিয়া রাজা বলিলেন—"থা'ক্ থা'ক্, এ অবস্থায় অত্যন্ত গৌরব দেখাইবার প্রয়োজন নাই, তুমি উঠিও না।" তাহার পর রাজা রাণীর সহিত সেই শয্যার উপরেই উপবেশন করিলেন। (ন) শুকনাসও নিকটবর্ত্তী অপর কোন শয্যার উপরে বসিলেন, সেই শয্যার উপরেও শুভ্রবর্ণ আস্তরণ-বস্ত্র ছিল এবং তাহার খাটের সোনার পায়াগুলি পরিষ্কার করা ছিল।

(१)···तिलकचित्रित...। (२) मतिधवलं। (३)...आलम्बनावष्टम्भेन। (४) प्रचल...। (५)...चारुपदे।

अथ तामुपारूढगर्भामालोक्य हर्षभरमन्थरेण मनसा प्रस्तुत-परिहासो राजा—"देवि! शुकनासः पृच्छति 'यदाह कुलवर्द्धना किमपि, तत् किं तथैव'?" इत्युवाच। (प) अथाव्यक्त-स्मितच्छुरित-(१) कपोलाधरलोचना लज्जया दशनांशु-जालक-(२) व्याजेनांशुकेनेव मुखमाच्छादयन्ती विलासवती तत्क्षणमधोमुखी तस्थौ। (फ) पुनः पुनस्सा[illegible]ध्यमाना (३) "किं मामतिमात्रं त्रपापरवशां करोषि, नाहं किञ्चिद[illegible]" इत्यभिदधाना तिर्य्यग्वलित-तारकेण चक्षुषा अवनतमुखी राजानं साभ्यसूयमिवापश्यत्। (ब) अपरिस्फुट-हास-ज्योत्स्ना-विशदेन मुखशशिना भूभुजां पतिरेनां (४) भूयो

तस्मिन्, धवल उपच्छद आस्तरणवस्त्रं यस्मिन् तादृशे, आसन्ने निकटवर्त्तिनि, शयनान्तरे अन्यस्यां शय्यायां। न्यषीदत् उपाविशत्।

(प) अथेति। उपारूढगर्भामुत्पन्नगर्भाम्। हर्षभरेण आनन्दातिशयेन मन्थरं जड़ं तेन। प्रस्तुत आरब्धः परिहासो येन स.। अत्र प्रश्ने शुकनाम इत्यपरकर्त्तृनिर्देशात् परिहासावगमः।

(फ) अथेति। अव्यक्तं अस्पष्टं यत् स्मितं मन्दहास्यं तेन छुरितानि रञ्जितानि, कपोलौ गण्डौ अधरौ ओष्ठौ लोचने चक्षुषी च तानि यस्याः, दशनांशुजालकस्य दन्तकिरणसमूहस्य व्याजेन छलेन, अंशुकेनेव श्वेतवसनेनेव। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) पुनरिति। त्रपापरवशां लज्जाधीनां। तिर्य्यग्वलिता वक्रभावेन चलिता तारका यस्य तेन।

(भ) अपरीति। अपरिस्फुटः अस्पष्टो यो हासः स ज्योत्स्ना इव तया विशदेन निर्म्मलेन, मुखं शशीव तेन, उपलक्षणे तृतीया, भूभुजां पतिः राज्ञामधीश्वरस्तारापीड़ः, एनां विलासवतीम्। अत्र चन्द्रेण हासो वैशिष्ट्यासम्भवात् मुखशशिनेत्यत्र उपमितसमास एवाश्रयणीयः तदनुसारात् हासज्योत्स्नेत्यत्राप्युपमितसमास एवेति लुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(প) তদনন্তর রাজা বিলাসবতীকে গর্ভবতী দেখিয়া অত্যন্ত আনন্দে বিহ্বলচিত্ত হইয়া পরিহাস করিয়া বলিলেন—"দেবি! শুকনাস জিজ্ঞাসা করিতেছে;—'কুলবর্দ্ধনা যে কিছু বলিয়াছে, তাহা কি সেইরূপই'?" (ফ) তাহার পর অস্পষ্ট মন্দ হাস্য করায় বিলাসবতীর গণ্ডযুগল, ওষ্ঠযুগল ও নয়নযুগল প্রফুল্ল হইল, তখন তিনি লজ্জাবশতঃ দন্তকিরণচ্ছলে বস্ত্রদ্বারাই যেন মুখ আচ্ছাদন করিয়া অধোমুখ হইয়া রহিলেন। (ব) রাজা বারংবার অনুরোধ করিতে লাগিলে বলিলেন—"আমাকে অত্যন্ত লজ্জিত করিতেছ কেন, আমি কিছুই জানি না" এই কথা বলিয়া অবনতমুখে বক্র-নয়নে রাজার প্রতি অত্যন্ত অসূয়ার সহিতই যেন একবার দৃষ্টিপাত করিলেন। (ভ) তখন জ্যোৎস্নার ন্যায় অস্পষ্ট

(१) अव्यक्तच्छुरित...। (२) दशनांशुकजाल...। (३) अनुबध्यमाना।

(४) क्वचित् 'एनां' इति नास्ति।

बभाषे—(भ) "सुतनु ! यदि मदीयेन वचसा (१) तव त्रपा वितन्यते, तदयमहं स्थितो निभृतम्। (म) अस्य तु किं प्रतिविधास्यसि विघटमान-दल-कोश विशद-चम्पक-द्युतेः सवर्णतया परिमलानुमीयमान-कुङ्कुमाङ्गरागस्य (२) पाण्डुरतामापद्यमानस्य वर्णस्य, (३) (य) अनयोश्च गर्भसम्भवामृतावसेक-(४) निर्वाप्यमाण-शोकानलप्रभवं धूममिव वमतोः (५) आननगृहीत-(६) नीलोत्-

(म) सुतन्विति। हे सुतनु ! सुन्दरशरीरे ! त्रपा लज्जा। निभृतं तूष्णीम्।

(य) अस्येति। विघटमानानि प्रकाशमानानि दलानि यस्य स तादृशः कोशो मुकुलं यस्य तस्य तथोक्तस्य विशदस्य निर्मलस्य चम्पकस्य चम्पककुसुमस्य द्युतेः कान्तेः सवर्णतया तुल्यवर्णतया हेतुना, परिमलेन केवलसौरभेण अनुमीयमानः कुङ्कुमाङ्गरागः वाह्लीकदेशजात-पाण्डुरकुङ्कुमानुलेपनं यस्मिन् तस्य, "वाह्लीकदेशसञ्जातं कुङ्कुमं पाण्डुरं भवेत्" इति भावप्रकाशवचनात् कुङ्कुमाङ्गरागः शरीरवर्णश्चेत्युभयमपि चम्पकवत् समानपाण्डुरमिति पृथक्तया प्रत्यक्षासम्भवात् कुङ्कुमाङ्गरागः परिमलेनानुमीयत इति भावः, पाण्डुरता गर्भस्वभावात् पाण्डुत्वं आपद्यमानस्य प्राप्नुवतः, अस्य दृश्यमानस्य, वर्णस्य तव शरीरकान्तेः किं प्रतिविधास्यसि कं प्रतीकारं करिष्यसि। तव लज्जामाशङ्क्य मयि तूष्णीम्भूतेऽपि गर्भस्वभावेन स्वयं प्रकाशमानायाः शरीरपाण्डुरतायाः सर्वथैव गोपनासम्भव इति भावः। अत्र परिमलेत्यादिना सामान्यं नामालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनाऽलङ्कारध्वनिः।

(र) अनयोरिति। गर्भस्य सम्भव उत्पत्तिरेव अमृतं तस्य अवसेकेन निर्वाप्यमाणो निर्वाणं नीयमानः शोकः पुत्रानुत्पत्तिजनितो विषाद एवानलस्तस्मात् प्रभवति उत्पद्यत इति तं, धूमं वमतोरुद्गिरतोरिव, श्याममुखत्वादिति भावः। अत्र परस्परितरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। आननयोर्गृहीते नीलोत्पले याभ्यां तयोश्चक्रवाकयोः पक्षिणोरिव स्थितयोरित्युपमा। तमालपल्लवाभ्यां लाञ्छिते चिह्निते मुखे उपरिभागद्वयं ययोस्तयोः कनककलसयोरिव स्थितयोरित्युपमा। सकृदेकवारमात्रं न तु पूर्ववत् प्रतिदिनमिति भावः, आलिखिते चित्रिते कृष्णागुरुपङ्केन गाढकृष्णागुरुद्रवेण पत्रलते पत्रवल्लीद्वयं

হাস্যে রাজরাজেশ্বরের মুখ-চন্দ্র প্রফুল্ল হইল, তিনি পুনরায় বলিলেন—(ম) "সুন্দরি ! আমার বাক্যেই যদি তোমার লজ্জা জন্মাইয়া থাকে, তবে এই আমি চুপ করিয়া থাকিলাম। (য) কিন্তু তোমার শরীরের এই বর্ণটি, প্রকাশমান নির্ম্মল চম্পক-কুসুম-কান্তির সমান বলিয়া ইহার কুঙ্কুমানুলেপন সৌরভদ্বারাই অনুমিত হইতেছে, এবং ইহা ক্রমে পাণ্ডুতা প্রাপ্ত হইতেছে; সুতরাং তুমি ইহার কি প্রতিবিধান করিবে? (র) আর এই স্তনযুগলের অগ্রভাগ শ্যামবর্ণ হইয়া গিয়াছে, তাহাতে বোধ হইতেছে যে, 'গর্ভোৎপত্তিরূপ অমৃতসেকে শোকানল নির্ব্বাপিত হইয়াছে, তাহার ধূম যেন উদ্গিরণ করিতেছে' এবং মুখে নীলোৎপলধারী চক্রবাক-পক্ষিযুগলের ন্যায় এবং তমালপল্লবদ্বারা আবৃতমুখ

(१) मदीयवचसा। (२)···मानस्य कुङ्कुमाङ्गरागस्य। (३) क्वचित् वर्णस्येति नास्ति।
(४) गर्भसम्भवावसेक। (५) वहतोः। (६) अननगृहीत, गृहीत···।

पत्रयोरिव चक्रवाकयो: तमालपल्लवलाञ्छितमुखयोरिव कनककलसयो: सकृद्विरा-लिखित-(१) कृष्णागुरु-पङ्क-पत्रलतयो: श्यामायमानचूचुकयो: पयोधरयो:, (र) अस्य च प्रतिदिनमतिगाढ़तामापद्यमानेन (२) काञ्चीकलापेन दूयमानस्य नश्यत्त्रिवलि-लेखावलयस्य कृशिमानमुज्झतो मध्यभागस्य," (ल) इत्येवं ब्रुवाणमवनिपालमन्तर्मुख-विनिगूढ़हास: (३) शुकनास:—"देव! किमायासयसि देवीम्, इयमनया कथयापि लज्जते, त्यज कुलवर्द्धना-कथित-वार्त्ता-सम्बन्धमालापम् (४)" इत्यब्रवीत्। एवंविधाभिश्च नर्म्मप्रायाभि: कथाभि: सुचिरं स्थित्वा शुकनास: स्वभवनमयासीत्। नरेन्द्रोऽपि तस्मिन्नेव वासगृहे तया सह तां निशामत्यवाहयत्। (व)

यर्योस्तयोरिव स्थितयोरिति क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:। तथा श्यामायमाने चूचुके अग्रभागद्वयं ययोस्तयो: "चूचुकन्तु कुचाग्रं स्या"दित्यमर:। अनयोश्च पयोधरयो: स्तनयो: किं प्रतिविधास्यसीत्यन्वय:। अनयोरपि गर्भलक्षण-प्रकाशकत्वं दुर्निवारमेवेति भाव:।

(ल) अस्येति। अतिगाढता मध्यभागस्य क्रमेण स्थूलतया दृढ़संलग्नत्वम्। काञ्चीकलापेन रशना-दाम्ना, दूयमानस्य अतिदृढ़संलग्नतया पीड्यमानस्य, नश्यत् उदरपीवरत्वेन क्रमेण विलोपं प्राप्नुवत्, त्रिवलि-लेखानां वलित्रयरूपरेखाणां वलयं मण्डलं यस्मिन् तस्य, कृशस्य भाव: कृशिमा तं पूर्वकृशत्वं, उज्झत: क्रमेण त्यजत:, अस्य च मध्यभागस्य उदरस्य किं प्रतिविधास्यसीत्यन्वय:। अस्यापि सर्वजनैर्गर्भलक्षणतयाऽव-गम्यमानत्वाद्गोपनासम्भव इति भाव:।

(व) इत्येवमिति। अन्तर्मुखे मुखमध्ये विनिगूढो गाम्भीर्य्यभङ्गभयेन संवृतो हासो येन स:। नर्म्मप्रायाभि: परिहासबहुलाभि:।

স্বর্ণকুম্ভদ্বয়ের ন্যায় দেখা যাইতেছে; আর কৃষ্ণাগুরুদ্বারা ইহাদের উপরে একবারমাত্র যেন পত্রলতা চিত্র করিয়া রাখা হইয়াছে বলিয়া প্রতীতি হইতেছে; ইহারই বা কি প্রতি-বিধান করিবে? (ল) আর তোমার উদরটি দিন দিন পূর্ব্বের কৃশতা পরিত্যাগ করিতেছে (ক্রমে মোটা হইতেছে); তাহাতে উহার থরগুলি ক্রমে বিলুপ্ত হইয়া যাইতেছে এবং চন্দ্রহার অত্যন্ত লাগিয়া পড়ায় ব্যথা পাইতেছে, ইহারই বা তুমি কি প্রতীকার করিবে?"—(ব) রাজা এইরূপ বলিতেছিলেন, তখন শুকনাস মুখমধ্যেই হাস্য সংবরণ করিয়া বলিলেন—'মহারাজ! কেন মহিষীকে কষ্ট দিতেছেন, ইনি এই কথাতেও লজ্জিত হইতেছেন; সুতরাং কুল-বর্দ্ধনা যে সংবাদ বলিয়াছে, সে বিষয়ের আলাপ পরিত্যাগ করুন।' এই জাতীয় পরিহাস-ময় কথোপকথনে সেই স্থানে বহু সময় অবস্থান করিয়া শুকনাস নিজ গৃহে চলিয়া গেলেন; রাজাও সেই বাসগৃহেই রাণীর সহিত সেই রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

---

(१) लिखित...। (२) अतिगाढ़तरतां, आपाद्यमानेन।

(३) अन्तर्मुखहास:, मुखनिगूढहास:। (४) आलापर्ञ्च, आलापमपि।

ततः क्रमेण यथासमीहित-(१) गर्भदोहद-सम्पादन-प्रमुदिता पूर्णे प्रसव-समये पुण्येऽहनि अनवरत-गलन्नाडिका-कलित-काल-कलैः (२) बहिरागृहीत-च्छायैर्गणकैर्गृहीते लग्ने प्रशस्तायां वेलायामिरम्मदमिव मेघमाला (३) सकल-लोकहृदयानन्दकारिणं विलासवती सुतमसूत। (श) तस्मिन् जाते सम्भ्रमितस्ततः प्रधावितस्य परिजनस्य चरणशत-संक्षोभ-चलित-क्षितितलो

(श) तत इति। यथासमीहितेन यथाचेष्टितेन शक्त्यनुरूपेणेत्यर्थः गर्भदोहदस्य गर्भकालीनेच्छाया. सम्पादनेन पूरणेन प्रमुदिता विशेषहृष्टा विलासवती। गर्भसमये हि योषितस्तत्तदिच्छायाः पूरणं यथा-सामर्थ्यमवश्यकर्त्तव्यम्। तथाचोक्तमभियुक्तैः,—

"गर्भिण्यास्तत्तदिच्छाया विशेषेण प्रयुज्यते। दोहदस्याप्रदानेन गर्भो दोषमवाप्नुयात्।"

पूर्णे उपस्थित इत्यर्थः। पुण्येऽहनि शुभदिने। अनवरतं गलन्तीभिः जलस्राविणीभिः नाड़िकाभिर्घटिकाभिः समयनिरूपकयन्त्रविशेषैः कलिता अवगताः कालकलाः सूक्ष्मकालांशा यैस्तैः। "नाड़िका (स्त्री) षट्क्षणः। घड़ि इति भाषा" इति शब्दकल्पद्रुमः। सा तु सार्द्धद्वादशपलपरिमितताम्रनिर्म्मितं सार्द्धद्वादशपलपरिमित-जलपूरणीयः पञ्चरत्तिकापरिमितस्वर्णनिर्म्मितशलाकया अधश्छिद्रसंयुक्तो यन्त्रविशेषः। तया च शलाकया जलबिन्दुपतनात्सञ्जाते च चिह्नविशेषोपगते पूर्वं समयनिरूपणरीतिरासीत्। एतद्विस्तरप्रकारान्तराणि विष्णुपुराणे समनुसन्धेयानि। तथा बहिः प्राङ्गणादौ आगृहीता निरूपिता छाया पादच्छाया शङ्कुच्छाया वा यैस्तैः। पादच्छायाग्रहणपणात्यापि पूर्वं समयनिरूपणरीतिरासीत। तथा च ज्योतिषे—"पच्छायां द्विगुणीकृत्य चतुर्दश-समन्वितास्। पञ्चषट्करभागलब्धं दण्डादिकं भवेत्।" गृहीते निरूपिते। प्रशस्तायां उच्चस्थैर्ग्रहैर्जात-कस्य सुखसौभाग्यसूचिकायां, वेलायां समये, मेघमाला, इरया जलेन माद्यतीति इरम्मदो मेघोत्पन्नवह्नि-स्तमिव, "वर्षेलिहाभ्रलिहपरन्तपेरम्मदाश्च" इति खश्-प्रत्ययान्तो निपातः "मेघज्योतिरिरम्मदः" इत्यमरः। अत्रो-पमालङ्कारः।

(ष) तस्मिन्निति। तस्मिन् राजपुत्रे जाते राजकुले अतिमहान् दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमः राज्ञः सौभाग्यवृद्धिजन्या लोकानां त्वरा अभूदित्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि सम्भ्रम इत्यस्य विशेषणानि। सरभसं सहर्षम्।

(শ) তাহার পর রাণী গর্ভকালীন যে যে ইচ্ছা প্রকাশ করিতেন, রাজা শক্তি অনুসারে সে সমস্তই পরিপূরণ করিতেন বলিয়া রাণী অত্যন্ত আনন্দিত ছিলেন; ক্রমে প্রসবের কাল উপস্থিত হইলে কোন শুভদিনে ঘটিকাযন্ত্র হইতে অবিশ্রান্ত জলবিন্দু পতিত হইতেছিল, তাহাদ্বারা কোন কোন দৈবজ্ঞ সূক্ষ্ম সময় নিরূপণ করিতেছিলেন; আবার কোন কোন দৈবজ্ঞ বাহিরে যাইয়া পায়ের ছায়া মাপিয়া লগ্ন নিরূপণ করিতেছিলেন—এই অবস্থায় মেঘশ্রেণী যেমন অগ্নি প্রসব করে, সেইরূপ বিলাসবতী প্রশস্ত সময়ে সকল লোকের হৃদয়া-নন্দকারী একটি পুত্র প্রসব করিলেন। (ষ) সেই রাজপুত্র জন্মিলে রাজার সৌভাগ্য-বৃদ্ধিনিবন্ধন রাজবাটীতে লোকের খুব হুড়াহুড়ী হইতে লাগিল; পরিজনবর্গ আনন্দের

(१) समीहित..., समुचित...। (२)...कलैः...कलै। (३) जलधरमाला।

भूपालाभिमुख-प्रस्तुत-स्खलद्गति-विकल-(१) कञ्चुकिसहस्रो जन-सम्मर्द-निष्पिष्यमाण-पतित-कुब्ज-वामन-किरातगणो विस्फार्य्यमाणान्तःपुर-(२) जनाभरण-झङ्कार-मनोहरः पूर्णपात्राहरण-(३) विलुण्ठ्यमान-(४) वसनभूषणः संक्षोभित-नगरो राजकुले दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमोऽतिमहानभूत्।(क) अनन्तरञ्च मन्दर-मथ्यमान-(५) जलनिधि-(६) घोष-गम्भीर-दुन्दुभि-ध्वान-पुरःसरेण प्रहत-मृदु-मृदङ्ग-शङ्ख-काहलानक-निवह-निनाद-निर्भरेण (७) मङ्गल-पटह-पटु-रव-

---

चरणानां शतस्य समूहस्य संक्षोभेण आघातेन चलितं कम्पितं क्षितितलं यस्मिन् सः। भूपालाभिमुखं यत् प्रस्तुतं वार्त्तामभिधातुं प्रस्थितं स्खलद्गति भ्रष्टगमनं विकलं आनन्दसमाकुलञ्च कञ्चुकिसहस्रं अन्तःपुरचरवृद्धब्राह्मणसमूहो यस्मिन् सः। जनानां सम्मर्द्देन संघर्षेण निष्पिष्यमाणः अतएव पतितः, कुब्जानां वामनानां खर्व्वाकृतीनां किरातानां क्षुद्रदेहानाञ्च गणो यस्मिन् सः। "किरातः स्यादल्पतनौ" इत्यादि हैमः। विस्फार्य्यमाणो वृद्धिं नीयमानो यः अन्तःपुरजनानामाभरणझङ्कारः तेन मनोहरः। उत्सवे सुहृद्भिर्यानि बलादाकृष्य नीयन्ते तानि पूर्णपात्राणि तेषामाहरणेन ग्रहणेन विलुण्ठ्यमानानि हस्ताहस्तिकारणसम्भ्रमेण पतितानि वसनानि भूषणानि च यस्मिन् सः। "वस्त्रादिकं यदानन्दादलङ्कारादिकं पुनः। आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकञ्च तत्।" इति हारावली। संक्षोभितमुद्वेलितं नगरं राजधानी येन सः। राजकुले राजवाटे।

(क) अनन्तरमिति। मन्दरेण पर्व्वतेन मथ्यमानस्य जलनिधेः समुद्रस्य घोषवत् शब्दवत् गम्भीरो दुन्दुभिध्वानः भेरीशब्दः पुरःसरो यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। प्रहता वादिता ये मृदवः कोमलध्वनिकारिणः मृदङ्गाः, शङ्खाः काहला वाद्यविशेषाः आनका पटहाश्च तेषां निवहस्य समूहस्य निनादेन निर्भरः अतिमात्रो वर्द्धित इत्यर्थः तेन। मङ्गलपटहानां माङ्गलिकढक्कानां पटुरवैर्विशालध्वनिभिः संवर्द्धितेन। अनेकेषां जनसहस्राणां कलकलैः कोलाहलैर्बहुलो विशालीभूतस्तेन। सामन्तैः समीपवर्त्तिभि-

---

সহিত ইতস্ততঃ ধাবিত হইতে লাগিল, তাহাদের চরণের আঘাতে ভূতল কাঁপিয়া উঠিল, কঞ্চুকিগণ আনন্দে আকুল হইয়া রাজার নিকট সংবাদ বলিবার জন্য স্খলিত গতিতে ধাবিত হইতে লাগিলেন, কুব্জ, বামন (খর্ব্বদেহ, বামনবীর) ও কৃশশরীর লোক সকল লোকের ঠেসাঠেসিতে নিষ্পেষিত হইয়া ভূতলে পড়িয়া যাইতে লাগিল, অন্তঃপুরস্থ রমণীগণের অলঙ্কারের বৃহৎ ও মনোহর ঝঙ্কার শুনা যাইতে লাগিল, লোকের গাত্র হইতে অপর লোক বলপূর্ব্বক বসন-ভূষণ টানিয়া লইতেছিল, তাহাতে অনেক বসন ও ভূষণ ভূতলে লুণ্ঠিত হইতেছিল, এই অবস্থায় রাজধানী একেবারে উদ্বেলিত হইয়া উঠিল। (ক) তদনন্তর ত্রিভুবন পরিপূর্ণ করিয়া সেই মহোৎসবের কোলাহল হইতে লাগিল; মন্দরপর্ব্বতদ্বারা মথ্যমান সমুদ্রের শব্দের ন্যায় গম্ভীর দুন্দুভির শব্দ, সকল শব্দের অগ্রে অগ্রে চলিতে লাগিল; কোমলশব্দকারী মৃদঙ্গ,

---

(१)...मुख...। (२) घूर्णमानान्तःपुर...। (३) पूर्णपात्रहरण...। (४)...विलुप्यमान...।
(५) मन्दराराध्यमान...। (६)...जलधि...। (७)...निवहनिर्भरेण।

সংবর্দ্ধিতেন অনেক-জন-সহস্র-কলকল-বহুলেন ত্রিভুবনমাপূরয়তা উৎসবকোলাহলেন সসামন্তাঃ সান্তঃপুরাঃ (১) সপ্রকৃতয়ঃ সরাজলোকাঃ সবেশ্যাযুবতয়ঃ সবালবৃদ্ধা ননৃতুরাগোপালমুন্মত্তা ইব হর্ষনির্ভরাঃ প্রজাঃ। (ঙ) প্রতিক্ষণং (২) অবর্দ্ধত চন্দ্রোদয়েনেব জলনিধিঃ (৩) কলকলমুখরো রাজসূনোর্জন্ম-(৪) মহোৎসবঃ। (চ)

পার্থিবস্তু তনয়ানন-দর্শন-মহোৎসব-(৫) হৃতহৃদয়োঽপি দিবসবশেন মৌহূর্ত্তিকগণোপদিষ্টে প্রশস্তে মুহূর্ত্তে নিবারিত-নিখিলপরিজনঃ শুকনাস-দ্বিতীয়ঃ (ছ) মণিময়-(৬) মঙ্গলকলসযুগলাশূন্যেন আসক্ত-বহুপুত্রিকা-

ভূপতিভিঃ সহেতি সসামন্তাঃ, অন্তঃপুরৈরন্তঃপুরস্থজনৈঃ সহেতি সান্তঃপুরাঃ, প্রকৃতিভিঃ পুরবাসিভিঃ সহেতি সপ্রকৃতয়ঃ, রাজলোকৈঃ রাজপুরুষৈঃ সহেতি সরাজলোকাঃ, বেশ্যাযুবতিভিঃ সহেতি সবেশ্যাযুবতয়ঃ, বালৈর্বৃদ্ধৈশ্চ সহেতি সবালবৃদ্ধা, প্রজাঃ হর্ষনির্ভরা আনন্দপূর্ণাঃ সত্যঃ উন্মত্তা ইব, গোপালান্ বল্লবান্ মর্য্যাদীকৃত্যেতি আগোপালং যথা স্যাত্তথা ননৃতুঃ নৃত্যঞ্চক্রুঃ।

(চ) প্রতীতি। চন্দ্রোদয়েন জলনিধিরিব, কলকলৈঃ কোলাহলৈর্মুখরঃ শব্দায়মানঃ, রাজসূনোঃ রাজপুত্রস্য জন্মমহোৎসবঃ প্রতিক্ষণং অবর্দ্ধত। অত্রোপমালঙ্কারঃ।

(ছ) পার্থিব ইতি। পার্থিবো রাজা সূতিকাগৃহমপশ্যদিতি বহুপরবর্ত্তিন্যা ক্রিয়য়া অন্বয়ঃ। তনয়াননস্য পুত্রমুখস্য দর্শনমেব মহোৎসবঃ তেন হৃতহৃদয়োঽপি আকৃষ্টচিত্তোঽপি, দিবসবশেন শুভসময়ানুরোধেন, মৌহূর্ত্তিকগণোপদিষ্টে দৈবজ্ঞগণনির্দ্দিষ্টে। নিবারিতাঃ সহ গমনায় নিষিদ্ধাঃ নিখিলাঃ পরিজনা যেন সঃ, শুকনাস এব দ্বিতীয়ঃ সহচরো যস্য সঃ।

(জ) মণীতি। ইতস্তৃতীয়ান্তপদানি বক্ষ্যমাণদ্বারদেশেনেত্যস্য বিশেষণানি। মণিময়েন মঙ্গল-

শঙ্খ, বৃহৎ ঢাক ও ছোট ঢাক প্রভৃতির শব্দে সেই কোলাহল বৃদ্ধি পাইতে লাগিল এবং জয়ঢাকের বিশাল শব্দে ও বহু সহস্র লোকের কোলাহলে সেই উৎসব-কোলাহল অতিশয় বাড়িয়া উঠিল; তখন সামন্তরাজগণ, অন্তঃপুরের পরিজনগণ, পুরবাসিগণ, রাজপুরুষগণ, বেশ্যাগণ এবং বালক ও বৃদ্ধগণের সহিত গোপালক হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত প্রজাবর্গ আনন্দে পরিপূর্ণ হইয়া উন্মত্তের ন্যায় নৃত্য করিতে লাগিল। (ঙ) রাজপুত্রের সেই জন্মমহোৎসব কোলাহলে পরিপূর্ণ হইয়া চন্দ্রোদয়ে সমুদ্রের ন্যায় ক্রমে বৃদ্ধি পাইতে লাগিল।

(চ) কিন্তু রাজা পূর্ব্বেই পুত্রের মুখদর্শনরূপ মহোৎসবে আকৃষ্টচিত্ত হইয়াও শুভ সময়ের অনুরোধে দৈবজ্ঞগণের উপদেশ অনুসারে প্রশস্ত মুহূর্ত্তে অন্যান্য পরিজনদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া কেবল শুকনাসের সহিত যাইয়া সূতিকাগৃহ দর্শন করিলেন। (ছ) সেই সূতিকাগৃহের দ্বারের উভয় পার্শ্বে মঙ্গলের নিমিত্ত দুইটি মণিময় কলস স্থাপিত ছিল, তাহার

(১) সান্তঃপুরজনঃ। (২) প্রতিদিনম্। (৩) জলধিঃ। (৪) জন্মনো...।
(৫)...দর্শনোৎসব...। (৬) কনকময়...।

लङ्कृतेन (१) विविध-नव-(२) पल्लव-निवह-निरन्तर-निचितेन सन्निहित-कनक-मय-हल-मुसल-युगेन विरल-ग्रथित-सित-कुसुम-मिश्र-दूर्वा-प्रवाल-मालालङ्कृतेन आलम्बिताविकल-(३) व्याघ्रचर्म्मणा वन्दन-मालाऽ-(४) न्तराल-घटित-घण्टा-गणेन द्वारदेशेन (५) विराजमानम्, (क) उभयतश्च द्वारपक्षकयोर्मर्य्यादा-निपुणेन गोमयमयोभित्त्युत्तान-विनिहित-वराटक-प्रकर-(६) दन्तुराभिः अन्तरा-न्तरावद्ध-विविध-वर्ण-(७) राग-रुचिर-कार्पास-(८) कुसुम-लेश-लाञ्छिताभिः

कलसयुगलेन अमूल्यः अविरहितः संयुक्तस्तेन। आमन्त्राभिः सम्मिलिताभिरुपस्थिताभिः बहुपुत्रिकाभि-र्बहुपुत्रशालिनीभिः स्त्रीभिः अलङ्कृतः शोभितस्तेन। सन्तानरक्षोपदेशाय तासामुपस्थितिरिति बोध्यम्। विविधानां नानाप्रकाराणां नवानां नूतनानां पल्लवानां निवहेन समूहेन निरन्तरं घनं यथा स्यात्तथा निचितो व्याप्तस्तेन। कलसयुगलोपर्य्यवस्थामीभिः पल्लवैर्व्याप्तेरिति ध्येयम्। सन्निहितं द्वारव्यवहारादासन्नं कनकमययोः हलमुसलयोर्युगं यत्र तेन। विरलं अघनं यथा स्यात्तथा ग्रथितैः सन्ततं गुम्फितैः सित-कुसुमैः श्वेतपुष्पैः मिश्राः संयुक्ता ये दूर्वाप्रवाला दूर्वापल्लवास्तेषां मालया स्रजा अलङ्कृतः शोभितस्तेन। अशुभनिवारणार्थमिदमलङ्करणम्। "वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे।" इति त्रिकाण्डशेषः। आलम्बितं आधारादेकपार्श्वे द्वारावरणार्थमवलम्बितं अविकलं अखण्डं व्याघ्रचर्म्म यस्मिन् तेन। तथा वन्दनमालायास्तोरणोपरि विन्यस्तायाः कुसुममालायाः, अन्तराले मध्ये मध्ये घटितो ग्रथितो घण्टागणो यस्मिन् तेन। "तोरणार्थं तु मङ्गल्यं दाम वन्दनमालिका।" इत्यभिधानचिन्तामणिः। ईदृशेन द्वारदेशेन विराजमानमिति सूतिकागृहविशेषणम्।

(ख) उभयत इति। किञ्चेति चार्थः। मर्य्यादानिपुणेन कौलिकनियमाभिज्ञेन। इत्यतस्तृतीयैक-वचनान्तपुंलिङ्गपदानि 'पुरन्ध्रिवर्गेण समधिष्ठित'मिति वक्ष्यमाणसूतिकागृहविशेषणीभूतवाक्यगतस्य पुरन्ध्रि-वर्गेत्यस्य विशेषणानि। द्वारपक्षकयोर्द्वारपार्श्वयोः उभयत उभयभागयोः। वक्ष्यमाणस्य स्वस्तिकभक्ति-

উপরে ঘনভাবে নানাবিধ নূতন পল্লব বিন্যস্ত ছিল, বহুপুত্রশালিনী রমণীগণ সে স্থানে উপস্থিত হইয়া শোভাবর্দ্ধন করিতেছিল, সুবর্ণময় একখানা হল ও একটা মুষল রাখা হইয়াছিল, সাদা ফুল ও দূর্ব্বার পল্লব দিয়া ফাঁক্ ফাঁক্ করিয়া গাঁথা এক ছড়া মালা দিয়া সেই দ্বারের শোভা করা হইয়াছিল, পূরা একখানা বাঘের চামড়া এক পাশে ঝুলান ছিল, আর তোরণের উপরে এক ছড়া ফুলের মালা লম্বা করিয়া দেওয়া ছিল, তাহার মাঝে মাঝে ছোট ছোট ঘণ্টা গাঁথা ছিল— এইরূপ দোরে সেই সূতিকাঘর বেশ শোভা পাইতেছিল। (খ) কৌলিক আচারে অভিজ্ঞ পতিপুত্রবতী রমণীগণের মধ্যে কেহ কেহ সেই দ্বারের উভয় পার্শ্বে গোময় দ্বারা লেপ দিয়া, তাহার উপরে চিৎ করিয়া কতকগুলি কড়ি দিয়াছিল, তাহাতে সেই লেপটি

(१)...पुत्रिकाप्रतानेन। (२)...घन...। (३)...अविरल...। (४) माला, मालिका...। (५) द्वारेण। (६)...वराटकदन्तुराभिः। (७)...पर्ण...। (८) कूर्पास..., कर्पास...।

कुसुम्भ-केसर-लवाश्लेष-लोहिताभिर्लेखाभिरालिखित--स्वस्तिक - भक्तिजालमुपरचयता (ख) हारिद्र-द्रव-(१) विच्छुरण-परिपिञ्जराम्बर-(२) धारिणीं भगवतीं षष्ठी-देवीं कुर्वता (ग) विकच-पक्षपुट-विकट-शिखण्डि-पृष्ठमण्डला-(३) धिरूढ़ं आलोल-लोहित-पट-घटित-पताकं उल्लसित-शक्तिदण्ड-प्रचण्डं कार्त्तिकेयं सङ्घटयता (४) (घ) विन्यस्तालक्तक-पटल-पाटल-मध्यभागौ सूर्य्याचन्द्रमसावा-

जालमित्यस्याधिकरणमेतत्। गोमयमयीभिर्गोमयेन कृताभिः, उत्तानं ऊर्द्धमुखं यथा स्यात्तथा विनिहितेन स्थापितेन वराटकानां कपर्द्दकानां प्रकरेण समूहेन दन्तुराभिर्विषमीकृताभिः, अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये वद्धैरर्पितैः विविधैर्नानाप्रकारैः वर्णैर्नीलपीतादिभिः यो रागो रञ्जनं तेन रुचिराणि मनोहराणि यानि कार्पासकुसुमानि तेषां लेशैः क्षुद्रक्षुद्रखण्डैः लाञ्छिताभिश्चिह्निताभिः। कुसुम्भानां कुसुम्भपुष्पाणां ये केसर-लवाः किञ्जल्ककणास्तेषां आश्लेषेण संयोगेन लोहिता रक्तवर्णास्ताभिः, लेखाभिर्लिपिभिः, आलिखितानां चित्रितानां स्वस्तिकभक्तीनां त्रिकोणरचनाविशेषाणां जालं समूहं उपरचयता विदधता।

(ग) हारिद्रेति। हरिद्राया अयमिति हारिद्रो यो द्रवो रसस्तेन यद्विच्छुरणं रञ्जनं तेन परिपिञ्जरं सर्वतः पिङ्गलवर्णं अम्बरं वस्त्रं धारयति परिदधाति या सा तथोक्ता ताम्। षष्ठीदेवी षष्ठीदेवीप्रतिमां कुर्वता पिष्टतण्डुलैर्विदधता।

(घ) विकचेति। विकचेन प्रस्फुटेन विस्तृतेन पक्षपुटेन पक्षद्वयेन विकटं विशालं यत् शिखण्डिनो मयूरस्य पृष्ठमण्डलं तत् अधिरूढं आरूढम्। आलोला चञ्चला लोहितपटघटिता रक्तवर्णवस्त्रनिर्म्मिता पताका यस्य तम्। तथा उल्लसितेन उत्तोल्य गृहीतेन शक्तिदण्डेन शक्तिनामकास्त्रेण प्रचण्डो भयङ्करस्तं, कार्त्तिकेयं कार्त्तिकेयप्रतिमां सङ्घटयता तण्डुलपिष्टेनैव कुर्वता। बालकरक्षार्थमेतत् प्रतिमाद्वयनिर्म्माणमिति बोध्यम्।

(ङ) विन्यस्तेति। विन्यस्तेन अर्पितेन अलक्तकपटलेन लाक्षारससमूहेन पाटलौ आरक्तौ मध्यभागौ ययोस्तौ, सूर्य्याचन्द्रमसौ सूर्य्याचन्द्रमसोः प्रतिमाद्वयं आवध्नता तण्डुलपिष्टेनैव कुर्वता।

উচু-নীচু হইয়াছিল, নানাবিধ বর্ণদ্বারা রঞ্জিত করায় মনোহর কার্পাস-কুসুমের কণাদ্বারা সেই লেপটিকে আবার চিহ্নিত করিতেছিল, কুসুম-ফুলের কেসর-রেণুর সংযোগে সেই লেপটি রক্তবর্ণ হইয়াছিল,—সেই লেপদ্বারাই আবার চিত্রিত স্বস্তিক (ত্রিকোণাকার দ্রব্য) নির্ম্মাণ করিতেছিল ; (গ) কেহ, ভগবতী ষষ্ঠীদেবীর প্রতিমা নির্ম্মাণ করিয়া তাহাকে হরিদ্রার রসে রঞ্জিত পিঙ্গলবর্ণ বস্ত্র পরিধান করাইতেছিল ; (ঘ) কেহ, পক্ষযুগল বিস্তৃত করায় বিশাল ময়ূরের পৃষ্ঠে আরূঢ়, চঞ্চল রক্তবর্ণ পতাকা-সমন্বিত এবং শক্তি অস্ত্র উত্তোলন করায় ভয়ঙ্কর-মূর্ত্তি এইরূপ কার্ত্তিকেয়-প্রতিমা নির্ম্মাণ করিতেছিল ; (ঙ) কেহ, মধ্যস্থান আলতার রসে রক্তবর্ণ করিয়া চন্দ্র ও সূর্য্যের প্রতিমা নির্ম্মাণ করিতেছিল ;

(১) हारिद्रद्राव..., हरिद्रद्रव...। (२)...पिञ्जरिताम्बर।
(३)...शिखण्डिमण्डल..., शिखिपृष्ठमण्डल...। (४) संघट्टयता।

बध्नता (ङ) कुङ्कुम-पङ्क-पिञ्जरीकृतां ऊर्द्ध्वप्रोत-कनकमय-यव-निकर-कण्टकितां अविरल-लग्न-गौर-सिद्धार्थक-प्रकरतया (१) काञ्चनरस-खचितामिव मृन्मय-गुटिका-कदम्ब-मालां विन्यस्यता (च) चन्दनजलधवलितेषु भित्तिशिखर-भागेषु पञ्चराग-विचित्र-चेलचीर-कलाप-चिह्निताम् आपीतपिष्टातक-(२) पङ्काङ्कितां वर्द्धमानक-(३) परम्परां अन्यानि च सूतिकागृह-(४) मण्डनमङ्गलानि सम्पादयता पुरन्ध्रिवर्गेण समधिष्ठितम्, (छ) उपद्वार-संयत-विविध-गन्ध-

(च) कुङ्कुमेति। कुङ्कुमपङ्केन गाढकुङ्कुमरसेन पिञ्जरीकृतां पिङ्गलवर्णीकृतां। ऊर्द्ध्वम् उपरिभागे प्रोताः स्यूताः निखाता ये कनकमयाः सुवर्णनिर्म्मिता यवाः तेषां निकरेण समूहेन कण्टकितां सञ्जातकण्टकां तां विषमीकृतामित्यर्थः। अविरलं घनं यथा स्यात्तथा लग्नः संसक्तः गौरसिद्धार्थकानां श्वेतसर्षपाणां प्रकरः समूहो यत्र तस्य भावस्तया हेतुना, काञ्चनरसेन तरलीकृतसुवर्णेन खचितां लिप्तामिव स्थितामिति क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। मृन्मयगुटिका मृत्तिकानिर्म्मितगुलिका एव कदम्बानि कदम्बकुसुमानि तेषां मालां श्रेणीं विन्यस्यता भूमौ स्थापयता। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

(छ) चन्दनेति। चन्दनजलेन धवलितेषु शुभ्रीकृतेषु, भित्तीनां शिखरभागेषु उपरिदेशेषु, पञ्चभिः रज्यते एभिरिति रागा वर्णास्तैः विचित्राणां चेलचीराणां वस्त्रखण्डानां कलापेन समूहेन चिह्नितां समावृतामित्यर्थः, तथा आपीतानां ईषत्पीतवर्णानां पिष्टातकानां पटवासानां पङ्केन गाढद्रवेण अङ्कितां चिह्नितां चित्रितामित्यर्थः, वर्द्धमानकपरम्परां शरावश्रेणीं "शरावो वर्द्धमानकः" इत्यमरः। सूतिकागृहस्य मण्डनमङ्गलानि शोभाविधानरूपशुभकार्य्याणि सम्पादयता विदधता पुरन्ध्रिवर्गेण पतिपुत्रवतीनां नारीणां समूहेन समधिष्ठितं आश्रितम्।

(ज) उपेति। उपद्वारे द्वारसमीपे संयतो बद्धः, विविधानां नानाप्रकाराणां गन्धकुसुमानां सुगन्धिपुष्पाणां मालया अलङ्कृतः जरन् वृद्धश्छागो यस्य तत्।

(চ) কেহ কেহ, বহুতর মৃত্তিকার গুটী সাজাইয়া রাখিতেছিল; সেগুলি কুঙ্কুমের জলে পিঙ্গলবর্ণ করা হইয়াছিল, উপরে বহুতর সোনার যব পুঁতিয়া দেওয়ায় উঁচু-নীচু হইয়াছিল এবং ঘন ঘন করিয়া শ্বেত সরিষা লাগাইয়া দেওয়ায় যেন স্বর্ণ-খচিত বলিয়া বোধ হইতেছিল, (ছ) অন্য কেহ, চন্দনের লেপদ্বারা ধবলীকৃত ভিত্তির উপরিভাগে, পঞ্চবিধ বর্ণে চিত্র করা, কতকগুলি বস্ত্রখণ্ডে বেষ্টিত করিয়া পীতবর্ণ আবীরের লেপে রঞ্জিত করিয়া কতকগুলি শরা শ্রেণীভাবে সাজাইয়া রাখিতেছিল; কেহ কেহ সূতিকা-গৃহের অন্যান্য শোভা-সম্পাদনরূপ মঙ্গল-কার্য্য করিতেছিল; এই ভাবে—কৌলিক আচারে অভিজ্ঞ পতি-পুত্রবতী রমণীগণ সেই সূতিকাগৃহমধ্যে অবস্থান করিতেছিল। (জ) নানাবিধ সুগন্ধি পুষ্পের মালায় অলঙ্কৃত করিয়া একটা বৃদ্ধ ছাগল দ্বারের নিকটে বাঁধিয়া রাখা হইয়াছিল;

(१) प्रकारतया। (२)...पिष्ट, पिष्टक...। (३) वर्द्धमान...। (४) प्रसवगृह...।

कुसुम-मालालङ्कृत-जरच्छागम्, (ज) अखिल-व्रीहि-मध्यावस्थापितार्य्य-(१) वृद्धाध्यासित-शयनीय-(२) शिरोभागम्, (झ) अनवरत-दह्यमानाज्य-मिश्र-भुजग-निर्म्मोक-मेष-विषाण-क्षोदम्, (ञ) अनल-प्लुष्यमाणारिष्टतरु-(३) पल्लवोल्लसित-रक्षा-धूमगन्धम्, (ट) अध्ययन-मुखर-द्विजगण-विप्रकीर्य्यमाण-शान्त्युदक-लवम्, (ठ) अभिनव-लिखित-मातृ-पट-पूजा-व्यग्र-धात्रीजनम्, (ड) अनेक-वृद्धाङ्गनारब्ध-सूतिका-मङ्गलगीतिका-मनोहरम्, (ढ) उपपाद्यमान-स्वस्त्ययनम्, (ण) क्रियमाण-शिशुरक्षा-बलि-विधानम्, (त) आबध्यमान-धवल-

(झ) अखिलेति। अखिलानां सर्वप्रकाराणां व्रीहीणां शरत्पक्वधान्यानां मध्ये अवस्थापिता उपवेशिता या आर्य्यवृद्धा सत्कुलोत्पन्ना जरती स्त्री तया अध्यासितः तत्कालीनव्यवहारोपदेशार्थमाश्रितः शयनीयस्य महिषीशय्यायाः शिरोभागो यस्मिन् तत्। "व्रीहिः शरत्पक्वधान्यं" इति प्रायश्चित्तविवेके शूलपाणिः।

(ञ) अनेति। अनवरतं दह्यमानाः आज्यमिश्रा घृतसंयुक्ताः, भुजगनिर्म्मोकाणां सर्पकञ्चुकानां मेषविषाणानां मेषशृङ्गानाञ्च क्षोदाश्चूर्णानि यस्मिन् तत्।

(ट) अनलेति। अनलेन वह्निना प्लुष्यमाणा दह्यमाना ये अरिष्टतरुपल्लवा निम्बवृक्षकिसलयानि तेभ्य उल्लसिता उत्थिता रक्षार्था बालकरक्षणप्रयोजनका धूमा गन्धाश्च यस्मिन् तत्। अत्र केचिदत्रत्यव्यवहारास्तदानीन्तनतद्देशाचारादवगन्तव्याः, अतएव मर्य्यादानिपुणेनेति प्रागेवोक्तम्।

(ठ) अध्ययनेति। अध्ययनेन मन्त्रपाठेन मुखरः शब्दायमानो यो द्विजगणो ब्राह्मणवर्गस्तेन विप्रकीर्य्यमाणाः प्रसूतिबालकयोरुपरि निक्षिप्यमाणाः शान्त्युदकलवाः शान्तिजलविन्दवो यस्मिन् तत्।

(ड) अभीति। अभिनवं नूतनं लिखितश्चित्रितो यो मातृपटस्तस्य पूजायां तदानीमेव पटे चित्रितानां गौर्य्यादिमातृणामर्च्चनायामित्यर्थः व्यग्रा व्यासक्ताः धात्रीजना यस्मिन् तत्।

(ढ) अनेकेति। अनेकाभिर्वृद्धाङ्गनाभिर्वृद्धस्त्रीभिः आरब्धया सूतिकामङ्गलगीतिकया प्रसूत्या मङ्गलसम्पादकगानेन मनोहरम्।

(ण) उपेति। उपपाद्यमानानि विधीयमानानि स्वस्त्ययनानि देवतापूजादीनि यस्मिन् तत्।

(त) क्रियेति। क्रियमाणं शिशो रक्षायै बलीनां देवतोपहाराणां विधानं यस्मिन् तत्।

(ঝ) শয্যার শিয়রের দিকে নানাবিধ শরৎপক্ব শস্যের উপরে সৎকুলোৎপন্ন এক জন বৃদ্ধ স্ত্রীলোককে বসাইয়া রাখা হইয়াছিল; (ঞ) সর্পকঞ্চুকের ও মেষশৃঙ্গের চূর্ণ, ঘৃত-সংযুক্ত করিয়া অবিশ্রান্ত দগ্ধ করা হইতেছিল; (ট) বালকের রক্ষার নিমিত্ত অগ্নিতে দহ্যমান নিমের পল্লব হইতে ধূম ও গন্ধ উত্থিত হইতেছিল; (ঠ) ব্রাহ্মণগণ মন্ত্র পাঠ করিতে করিতে শান্তির জল নিক্ষেপ করিতেছিলেন; (ড) ধাত্রীগণ পটে নূতন চিত্রিত মাতৃগণের পূজার আয়োজনে ব্যস্ত ছিল; (ঢ) অনেক বৃদ্ধ স্ত্রীলোক প্রসূতির মঙ্গলের নিমিত্ত গান আরম্ভ করায় সুন্দর দেখাইতেছিল; (ণ) কেহ স্বস্ত্যয়ন করিতেছিল; (ত) কেহ বালকের রক্ষার নিমিত্ত দেবতাদিগকে উপহার

(१) अवस्थितार्य्य..., आयुर्वृद्ध...। (२) शयन...। (३)...निम्बतरु...।

कुसुम-दाम-शतम्, (थ) अविच्छिन्न-पठ्यमान-नारायण-नाम-सहस्रम्, (द) अमल-हाटक-यष्टि-प्रतिष्ठापितैरन्तःशुभशतानीव निश्चल-शिखैर्ध्यायद्भिर्मङ्गल-प्रदीपैरुद्भासितम्, (ध) उत्खातासि-(१) लता-सनाथ-पाणिभिः सर्वतो रक्षा-पुरुषैः परिवृतम्, सूतिकागृहमपश्यत्। (न) अम्भः पावकञ्च स्पृष्ट्वा विवेश। (प)

प्रविश्य च प्रसवपरिक्षामपाण्डुर-(२) मूर्त्तेरुत्सङ्गगतं विलासवत्याः, स्वप्रभा-

(थ) आबध्येति। आबध्यमानं आलम्ब्यमानं धवलकुसुमानां दामशतं मालासमूहो यस्मिन् तत्।

(द) अवीति। अविच्छिन्नं निरन्तरं पठ्यमानं बालरक्षार्थमुच्चार्य्यमाणं नारायणस्य नाम्नां सहस्रं यस्मिन् तत्।

(ध) अमलेति। अमलासु परिष्कृतासु हाटकयष्टिषु सुवर्णदण्डेषु प्रतिष्ठापितैः संस्थापितैः निश्चल-शिखैर्वाताभावात् निस्पन्दार्च्चिर्भिः अतएव अन्तः अन्तःकरणेषु शुभशतानि प्रसूतिबालकयोरनेकमङ्गलानि ध्यायद्भिरिव स्थितैः, मङ्गलप्रदीपैः उद्भासितं प्रकाशितम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) उत्खातेति। उत्खाता उन्मुक्ता या असिलता लतावल्लम्बमानास्तरवारयः, ताभिः सनाथाः संयुक्ताः पाणयो येषां तैः, रक्षापुरुषैः रक्षानियुक्तलोकैः सर्वतः समन्तात्।

(प) अम्भ इति। अम्भो जलं पावकं वह्निञ्च स्पृष्ट्वा विवेश शुकनासेन सह राजा तत् सूतिकागृह-मित्यर्थः। जलाग्निस्पर्शनन्तु प्रसूतिबालकयोरागन्तुकदोषशङ्कानिरासार्थमिति बोध्यम्।

(फ) प्रविश्येति। प्रविश्य च राजा आत्मजं ददर्शेत्यन्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपुंलिङ्गपदानि आत्मजमित्यस्य विशेषणानि। प्रसवेन परिक्षामा नितान्तकृशा पाण्डुरा च मूर्त्तिर्देहो यस्यास्तस्या विलासवत्याः, उत्सङ्गगतं क्रोडस्थितं, स्वप्रभासमुदयेन निजदीप्तिनिवहेन उपहतास्तिरस्कृताः गर्भगृहस्य सूतिकागृहस्य प्रदीपानां प्रभा येन तम्। अत्र दीपप्रभाणामुपहननासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। अस्यानुरूपः श्लोको यथा रघुवंशे—

দিতেছিল; (থ) কেহ শ্বেতবর্ণ পুষ্পের বহুতর মালা বাঁধিয়া দিতেছিল; (দ) কেহ অবিশ্রান্ত নারায়ণের সহস্র নাম পাঠ করিতেছিল; (ধ) এবং নির্ম্মল সুবর্ণময় দণ্ডের উপরে সংস্থাপিত নিস্পন্দ বহুতর মঙ্গল-প্রদীপ, মনে মনে যেন প্রসূতি ও বালকের নানাবিধ মঙ্গল চিন্তা করিতে করিতে সেই সূতিকাগৃহ আলোকিত করিতেছিল; (ন) এবং রক্ষার্থ নিযুক্ত পুরুষগণ উন্মুক্ত তরবারি-হস্তে সেই সূতিকাগৃহের চতুর্দ্দিকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (প) অনন্তর রাজা শুকনাসের সহিত জল ও অগ্নি স্পর্শ করিয়া সেই সূতিকাগৃহে প্রবেশ করিলেন।

(ফ) রাজা শুকনাসের সহিত প্রবেশ করিয়া অসীম আনন্দজনক সেই পুত্রটি

(१) उद्यतासि...। (२)...पाण्डु...।

समुदयोपहत-गर्भगृह-प्रदीप-(१) प्रभम्, (फ) अपरित्यक्तगर्भरागत्वादुदय-परिपाटल-मण्डलमिव सवितारम्, अपरसन्ध्या-(२) लोहितबिम्बमिव चन्द्रमसम्, अनुपजातकाठिन्यमिव कल्पतरुपल्लवम्, उत्फुल्लमिव रक्तारविन्दराशिम्, अवनिदर्शनावतीर्णमिव लोहिताङ्गम्, (ब) विद्रुमकिसलयदलैरिव बालातपच्छेदैरिव पद्मरागरश्मिभिरिव विरचितावयवम्, (३) (भ) अनभिव्यक्त-मुखपञ्चक-मिव महासेनम्, (म) सुरवनिता-करतल-(४) परिभ्रष्टमिवामरपतिकुमारम्, (य)

"अरिष्टशय्या परितो विसारिणा सुजन्मनस्तस्य निजेन तेजसा।
निशीथदीपाः सहसा हतत्विषो बभूवुरालेख्यसमर्पिता इव॥"

(ब) अपरीति। अपरित्यक्तो गर्भरागो गर्भावस्थानकालीना रक्तिमा येन तस्य भावस्तस्मादिति:। अयन्तु विरचितावयवमित्यन्तं यावदेव हेतुरिति बोध्यम्। उदये उदयसमये परिपाटलं आरक्तवर्णं मण्डलं यस्य तं सवितारं सूर्यमिव। अपरसन्ध्यायां सायंकाले लोहितबिम्बं रक्तमण्डलं चन्द्रमसमिव। अनुपजात-काठिन्यं अचिरोत्पन्नत्वादिति भावः, तेन लौहित्यमपि व्यज्यते, विशेषलौहित्यद्योतनाय कल्पतरुपदमिति नाविशेषे विशेषाख्यदोषः। उत्फुल्लं विकसितं। अवनिदर्शनाय भूतलावलोकनाय अवतीर्णं स्वर्गादवरूढं लोहिताङ्गं मङ्गलग्रहमिव, तस्यापि रक्ताङ्गत्वादिति भावः। अत्र मालोपमालङ्कारः। अवनीत्यादौ तु द्रव्योत्प्रेक्षा।

(भ) विद्रुमेति। विद्रुमकिसलयदलैः प्रवालस्य विसारिकिरणैः, विरचितावयवं विधात्रा निर्म्मिताङ्गमिव। बालातपच्छेदैर्नवीनसूर्य्यालोकखण्डैः। पद्मरागस्य तदाख्यमणेः रश्मिभिः किरणैः। अत्र तिसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(म) अनभीति। अनभिव्यक्तं अप्रकाशितं मुखपञ्चकं यस्य तं षण्णां मुखानां मध्ये आविर्भूतैक-मात्रमुखमित्यर्थः। महासेनं कार्त्तिकेयमिव स्थितं परमसुन्दरत्वादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) सुरेति। सुरवनितायाः पालयित्र्या देवयोषितः, करतलात् परिभ्रष्टं असावधानतया विच्युतं अमरपतिकुमारं देवराजशिशुसुतं जयन्तमिव, तादृशकान्तिमत्त्वादिति भावः। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षा।

দর্শন করিলেন; প্রসব করায় নিতান্ত-ক্ষীণ-দেহা ও পাণ্ডুবর্ণা বিলাসবতীর ক্রোড়ে থাকিয়া সে, স্বকীয় কান্তিজালে সূতিকাগৃহস্থিত প্রদীপসমূহের প্রভা তিরোহিত করিতেছিল; (ব) তখনও গর্ভের রক্তিমা পরিত্যাগ না করায় উদয়কালীন রক্তমণ্ডল সূর্য্যের ন্যায়, সন্ধ্যাকালীন রক্তমণ্ডল চন্দ্রের ন্যায়, কঠিনতা জন্মিবার পূর্ব্বে কল্পতরু-পল্লবের ন্যায়, বিকসিত রক্তপদ্মরাশির ন্যায় এবং ভূমণ্ডল দর্শন করিবার নিমিত্ত স্বর্গ হইতে অবতীর্ণ লোহিতাঙ্গ মঙ্গল গ্রহের ন্যায় সেই শিশুটি বিরাজ করিতেছিল; (ভ) প্রবালমণির বিস্তৃত কিরণজালে কিংবা নবীনসূর্য্যালোকে অথবা পদ্মরাগমণির রশ্মিসমূহে, বিধাতা যেন তাহার অঙ্গ সকল নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন; (ম-য) পাঁচখানি মুখ প্রকাশ পাইবার পূর্ব্বে এক-মুখ কার্ত্তিকেয়ের ন্যায় এবং কোন দেবীর হস্ত হইতে নিপতিত দেবরাজের শিশুপুত্রের ন্যায় বালকটি

(१)...प्रदीपक...। (२) सन्ध्या...। (३) रचितावयवं। (४) कर...।

उत्तप्त-कल्याण-कार्त्तस्वर-भास्वरया स्वदेहप्रभया पूरयन्तमिव वासभवनम्, (र) उद्भासमानैः सहज-भूषणैरिव महापुरुषलक्षणैरुपेतम्, (ल) आगामि-(१) काल-पालन-प्रहृष्टयेव (२) श्रिया समालिङ्गितं, आह्लादहेतुमात्मजं ददर्श। (व) विगत-निमेष-निश्चल पक्ष्मणा च मुहुर्मुहुः प्रमृष्ट-सङ्घटितानन्द (३) वाष्प-पटल-(४) प्लुततारकेण दूर-(५) विस्फारितेन स्निग्धेन चक्षुषा पिबन्निव आलपन्निव स्पृशन्निव मनोरथसहस्र-प्राप्तदर्शनं सस्पृहमीक्षमाणः (६) तनयाननं मुमुदे, कृतकृत्यश्चात्मानं मेने। (श)

(र) उत्तप्तेति। उत्तप्तं वह्निना सन्तप्तं यत् कल्याणकार्त्तस्वरं उत्कृष्टजातीयं सुवर्णं तद्वत् भास्वरया दीप्तिमत्या। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) उद्भासेति। सहजभूषणैरिव स्वाभाविकालङ्कारैरिव, उद्भासमानैः स्पष्टं प्रकाशमानैः, महापुरुषाणां लक्षणैः शङ्खध्वजादिचिह्नैः उपेतं युक्तं। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) आगामीति। श्रिया लक्ष्म्या, आगामिनि काले भविष्यत्समये यौवनादौ यत् पालनं आत्मनो रक्षणं तेन प्रहृष्टया सन्तुष्टया सत्या समालिङ्गितमिव, परमसुन्दरत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आह्लादहेतुं आनन्दजनकं आत्मजं पुत्रम्।

(श) विगतेति। विगतेन निमेषेण हेतुना निश्चलानि निस्पन्दानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन, मुहुर्मुहुर्वारं वारं प्रमृष्टं पाणिना अपनीतमपि पुनः सङ्घटितमाविर्भूतं यत् आनन्दवाष्पपटलं आनन्दाश्रुसमूहः तेन प्लुता क्लिन्ना तारका यस्य तेन, दूरविस्फारितेन अत्यन्तप्रसारितेन, स्निग्धेन स्नेहव्यञ्जकेन चक्षुषा, पिबन्निव चुम्बन्निव, आलपन्निव मनोभावं व्यञ्जयन्निव, स्पृशन्निव संसजन्निव सन्, मनोरथानामभिलाषाणां सहस्रेण प्राप्तं दर्शनं यस्य तत्, तनयाननं पुत्रमुखं सस्पृहं ईक्षमाणः पश्यन् मुमुदे प्रीतो बभूव ; आत्मा-

---

দীপ্তি পাইতেছিল ; (র) উত্তপ্ত উত্তম সুবর্ণের ন্যায় দীপ্যমান স্বকীয় দেহকান্তিতে সেই সূতিকাগৃহ যেন পরিপূর্ণ করিতেছিল ; (ল) স্বাভাবিক অলঙ্কারের ন্যায় মহাপুরুষের সমস্ত লক্ষণই তাহাতে প্রকাশ পাইতেছিল ; (ব) 'ভবিষ্যতে ইনিই আমাকে পরিপালন করিবেন' ইহা মনে করিয়া সন্তুষ্ট হইয়াই যেন লক্ষ্মী তাহাকে আলিঙ্গন করিতেছিলেন ; (শ) তখন রাজার নয়নে নিমেষ ছিল না, লোমগুলি নিস্পন্দ হইয়াছিল, বারংবার মার্জ্জনা করিতে থাকিলেও আনন্দাশ্রু, পুনরায় উৎপন্ন হইয়া তারাযুগল প্লাবিত করিতেছিল—এইরূপ অত্যন্ত উৎফুল্ল ও স্নেহব্যঞ্জক নয়নের ভঙ্গীতে রাজা যেন বালকটিকে চুম্বন করতঃ, আলাপ করতঃ ও আলিঙ্গন করতঃ, বহুতর অভিলাষে প্রাপ্ত তাহার মুখকমল সস্পৃহভাবে দর্শন করিয়া আনন্দিত হইলেন এবং আপনাকে কৃতার্থ মনে করিলেন।

---

(१) आगमि...। (२) क्वचित् इवशब्दो नास्ति। (३)...सङ्घट्टितानन्द...। (४) वाष्पबिन्दु...। (५) दूरं। (६) निरीक्षमाणः।

समृद्ध-मनोरथः शुकनासस्तु शनैः शनैरङ्गप्रत्यङ्गान्यस्य (१) निरूपयन् प्रीति-विस्फारित-लोचनः (२) भूमिपालमवादीत्—"देव ! पश्य पश्य, (३) अस्य कुमारस्य गर्भसम्पीड़नवशादपरिस्फुटावयव-(४) शोभस्यापि माहात्म्यमाविर्भावयन्ति (५) चक्रवर्त्तिचिह्नानि (ष)। तथाहि, अस्य सन्ध्यांशु-(६) रक्त-बाल-शशिकलाकारे ललाटपट्टे नव-नलिन नाल-(७) भङ्ग-तन्तु-तन्वीयमूर्णा परिस्फुरति (स)। एतद्विकच-पुण्डरीक-धवलं कर्णान्तायतं मुहुर्मुहुरुन्मिषितैर्धवलयतीव वासभवनमच्छपक्ष्म लोचनयुगलम् (ह) विजृम्भमाण-कमल-

नन्द कृतकृत्यं कृतार्थं मेने मनसि चकार, चिरादाशापूरणादिति भावः। अत्र पिबन्निवेत्यादौ तिसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ष) समृद्धेति। समृद्धमनोरथः सम्पूर्णाभिलाषः। अस्य बालकस्य अङ्गानि हस्तपदादीनि प्रत्यङ्गानि अङ्गुल्यादीनि च तानि, निरूपयन् निःशेषेणावलोकयन्। गर्भेण गर्भाशयेन सम्पीडनवशात् अल्पावकाशतया नितान्तप्रसारणाकरणात् अपरिस्फुटा सर्वतोभावेनाव्यक्ता अवयवानामङ्गानां शोभा यस्य तादृशस्यापि सतः, चक्रवर्त्तिचिह्नानि सार्वभौमलक्षणानि, माहात्म्यं भावि महापुरुषत्वं आविर्भावयन्ति द्योतयन्ति सूचयन्ति।

(स) अथ कानि नाम चक्रवर्त्तिचिह्नानीत्याह तथाहीति। सन्ध्यांशुभिः सन्ध्यारागैः रक्ता लोहिता, बाला स्तोका अल्पमाना, या शशिकला तद्वदाकारो यस्य तस्मिन्, ललाटपट्टे भालफलके, नवो नूतनः अशुष्कः यो नलिननालभङ्गः पद्मनालखण्डः तस्य तन्तुवत् सूत्रवत् तन्वी सूक्ष्मा इव दृश्यमाना, ऊर्णा भ्रूयुगलमध्यवर्त्ती लोमावर्त्तः परिस्फुरति विराजते। अत्र लुप्तोपमाद्वयस्य परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। "ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्त्ते चान्तरा भ्रुवोः।" इत्यमरः। तथा च भरतः—'भ्रूद्वयमध्ये मृणालतन्तुसूक्ष्मः शुभायत एकः प्रशस्तावर्त्तो महापुरुषलक्षणं चक्रवर्त्त्यादीनां महायोगिनाञ्च भवति।"

(ह) एतदिति। विकचपुण्डरीकधवलं प्रस्फुटितश्वेतपद्मवत् शुभ्रं कर्णान्तायतं कर्णसमीपपर्य्यन्तविस्तृतं अरालपक्ष्म वक्रलोमकं, लोचनयुगलं कर्त्तृ, मुहुर्मुहुरुन्मिषितैरुन्मीलनैः वासभवनं धवलयतीव शुभ्रीकरोतीव। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अत्र सामुद्रकम्—

"बाहुनेत्रद्वयं कुक्षि द्वौ तु नासा तथैव च। स्तनयोरन्तरञ्चैव पञ्च दीर्घं प्रशस्यते॥"

(ষ) পূর্ণ-মনোরথ শুকনাস ধীরে ধীরে বালকের অঙ্গপ্রত্যঙ্গ নিরীক্ষণ করিয়া আনন্দপ্রফুল্ল-নেত্রে রাজাকে বলিলেন—"মহারাজ ! দেখুন দেখুন, জননীজঠরযাতনায় এই বালকটির অঙ্গের সকল শোভা পরিস্ফুট না হইলেও সম্রাটের লক্ষণগুলি, ভাবী মহাপুরুষত্বের সূচনা করিতেছে; দেখুন—সন্ধ্যারাগ-রঞ্জিত অর্দ্ধচন্দ্রাকার ললাটদেশে পদ্মের সদ্যোভগ্ন নালখণ্ডের সূত্রের ন্যায় সূক্ষ্ম এই লোমাবর্ত্ত বিরাজ করিতেছে। (স) প্রস্ফুটিত শ্বেতপদ্মের ন্যায় ধবলবর্ণ, বক্র-লোমসংযুক্ত ও আকর্ণবিস্তৃত এই নয়নযুগল, বারংবার উন্মীলনদ্বারা সূতিকাগৃহকে যেন ধবলবর্ণ করিতেছে। (হ) স্বর্ণরেখার ন্যায় সুদীর্ঘ এই নাসিকাটি, বিকাসকালীন পদ্ম-

(१) बालस्य। (२) प्रीतिविस्फारितास्यः, प्रीतिविस्फारितलोचनं। (३) क्वचिदिदं नास्ति।
(४) अस्फुटावयव...। (५) आविर्भावयन्तीव। (६) सन्ध्यांशुक...। (७) नलिन ..।

कोष-परिमल-मनोहरमियमस्य सहजमाननामोदमाजिघ्रतीव दूरायता कनक-लेखेव नासिका (च)। रक्तोत्पल-कलिकाकारमुद्वहतीव (१) चास्याधर-रुचकम् (२) (छ)। रक्तोत्पल-कलिका-लोहित-(३) तलौ भगवतो विष्टरश्रवस इव शङ्खचक्रचिह्नौ प्रशस्तलेखा-लाञ्छितौ करौ (ज)। अभिनव-कल्पतरु-पल्लव-कोमलं लेखामयैर्ध्वज-रथ-तुरगातपत्र-कमलैरलङ्कृतं अनेक-नरेन्द्र-सहस्र-

(च) विजृम्भमाणेति। कनकलेखेव स्वर्णलेखेव दूरायता सुदीर्घा इयमस्य नासिका, विजृम्भमाणस्य विकसतः कमलकोषस्य पद्ममुकुलस्य परिमलवत् सौरभवत् मनोहरं, सहजं स्वाभाविकं आननामोदं मुखगन्धं आजिघ्रतीव गन्धातीव। अत्र उपमा-लुप्तोपमा-क्रियोत्प्रेक्षाणामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। प्रमाणस्तकम्।

(छ) रक्तोत्पलेति। रुचकं बिम्बाकारमाङ्गलिकद्रव्यं। अधरो रुचकमिव अधर एव रुचकमिति वा तदधररुचकं कर्तृ, रक्तोत्पलकलिकाया आकारमुद्वहतीव। अत्र उपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः, रक्तोत्पलकलिकाया आकार इव आकारस्तमिति सादृश्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धा निदर्शना क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "रुचकं मङ्गलद्रव्ये" इत्यादि विश्वः। अत्र सामुद्रकम्—

"पाणिपादतलौ रक्तौ नेत्रान्तरनखानि च। तात्वोष्ठोऽधरजिह्वा च सप्त रक्तं प्रशस्यते॥"

(ज) रक्तोत्पलेति। रक्तोत्पलकलिकावत् लोहिते तले ययोस्तौ, करौ। "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणा"-मिति भगवद्गीतोक्तेः विष्टरे अश्वत्थे श्रूयत इति विष्टरश्रवा विष्णुस्तस्येव "वैकुण्ठो विष्टरश्रवा" इत्यमरः। शङ्खचक्रयोश्चिह्ने रेखे ययोस्तौ, पक्षे शङ्खचक्रे एव चिह्ने ययोस्तौ, प्रशस्ताभिर्लेखाभिः अङ्कुशादिभिः रेखाभिः लाञ्छितौ चिह्नितौ, इदमुभयत्रापि समानम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। अत्र पूर्वमेव प्रमाणसपरञ्च सामुद्रकम्—

"अङ्कुशं कुलिशं छत्रं यस्य पाणितले भवेत्। तस्यैश्वर्यं विनिर्दिष्टं अशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम्॥"

(झ) अभीति। अभिनवकल्पतरुपल्लववत् कोमलं। लेखामयैः रेखास्वरूपैः ध्वजः रथः तुरगोऽश्वः आतपत्रं छत्रं कमलं पद्मञ्च तैः। अनेकेषां नरेन्द्रसहस्राणां राजसहस्राणां चूडामणिचक्रैः शिरोमणिसमूहैः यत्र स्वनं नमस्कारकाले संस्पर्शः तस्य उचितं योग्यं। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। तथा च सामुद्रकं—

"यस्य पादतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरणं। अङ्कुशं कुलिशं छत्रं स सम्राड् भवति ध्रुवम्॥"

কলিকার সৌরভের ন্যায় মনোহর স্বাভাবিক মুখের গন্ধ যেন আঘ্রাণ করিতেছে। (চ) এবং ইহার অধরবিম্ব যেন রক্তোৎপল-কলিকার আকার ধারণ করিতেছে। (ছ) রক্তোৎপল-কলিকার ন্যায় লোহিতবর্ণ পাণিতলে ভগবান্ নারায়ণের ন্যায় শঙ্খ ও চক্রের চিহ্ন এবং অঙ্কুশপ্রভৃতি প্রশস্ত রেখা রহিয়াছে। (জ) নূতন কল্পতরুপল্লবের ন্যায় কোমল এবং ধ্বজ, রথ, অশ্ব, ছত্র ও পদ্মরেখাতে অলঙ্কৃত ইহার চরণযুগল, বহুতর রাজগণের শিরোমণি-

(१) रक्तोत्पलनिकरं, रक्तोत्पलकलिकानुरागं।

(२) अधरपुटकं अधरकं। (३)...कलिकाकारलोहित...।

चूड़ामणि-चक्र-चुम्बनोचितं चरणयुगलम् (ग)। एष च दुन्दुभेरिवातिगम्भीरः स्वरयोगोऽस्य रुदतः श्रूयते” (घ)

इत्येवं कथयत्येव तस्मिन् ससम्भ्रमापसृतेन राजलोकेन द्वारि स्थितेन (१) दत्तमार्गस्त्वरितगतिरागत्य प्रहर्षोद्गम-पुलकित-तनुः स्फारीभवल्लोचनो मङ्गलक-नामा (२) प्रहृष्ट-वदनः पुरुषः (३) पादयोः प्रणम्य राजानं व्यजिज्ञपत्—(ङ) “देव! दिष्ट्या वर्द्धसे, प्रतिहतास्ते शत्रवः, चिरं जीव जय च (४) पृथिवीम्। त्वत्प्रसादादत्रभवतः शुकनासस्यापि ज्येष्ठायां ब्राह्मण्यां मनोरमाभिधानायां राम इव रेणुकायां तनयो जातः। श्रुत्वा देवः प्रमाणम्” इति। (च)

अथ नृपतिः (५) अमृतवृष्टिप्रतिममाकर्ण्य तद्वचनं प्रीति-विस्फारिताक्षः

(घ) एष इति। स्वरयोगः कण्ठसम्बन्धो ध्वनिरित्यर्थः। अत्रोपमालङ्कारः। तथा सामुद्रकम्—
“स्वरो बुद्धिश्च नाभिश्च त्रिगम्भीरमुदाहृतम्।” इत्यादि।

(ङ) इत्येवमिति। तस्मिन् शुकनासे। ससम्भ्रमं सत्वरं अपसृतेन पन्थानं त्यक्त्वा गतेन। राज-लोकेन राजगणेन, दत्तो मार्गः पन्था यस्य सः। प्रहर्षोद्गमेन आनन्दोदयेन पुलकिता रोमाञ्चिता तनुः शरीरं यस्य सः, स्फारीभवन्ती विस्तारं प्राप्नुवती लोचने यस्य सः। प्रहृष्टं प्रफुल्लं वदनं यस्य सः।

(च) देवेति। दिष्ट्या भाग्येन। प्रतिहता भवन्त्विति शेषः। त्वत्प्रसादादिति विशेषानुनयद्योत-नार्थमुक्तं अत्रभवतो माननीयस्य। रेणुकायां जमदग्निभार्य्यायां रामः परशुराम इव। अत्रोपमालङ्कारः। देवो भवान् प्रमाणं कर्त्तव्यनिर्द्धारयिता।

(छ) अथेति। अमृतवृष्टिप्रतिमं पीयूषवर्षणतुल्यं। कल्याणपरम्परा मङ्गलसन्ततिः ममेति शेषः।

সমূহের সংস্পর্শের যোগ্য। (ঘ) আর রোদন করিবার সময় ইহার এই কণ্ঠস্বর, দুন্দুভি-ধ্বনির ন্যায় অতিগম্ভীর শুনা যাইতেছে।”

(ঙ) শুকনাস এইরূপ বলিতেছিলেন—এই সময়েই দ্বারস্থিত রাজগণ সত্বর পথ ছাড়িয়া দিলে, আনন্দে রোমাঞ্চিতশরীর, বিস্ফারিতনেত্র ও প্রফুল্লবদন মঙ্গলকনামে এক ব্যক্তি, দ্রুতগতিতে আসিয়া রাজার চরণে প্রণাম করিয়া তাঁহাকে জানাইল। (চ) “মহারাজ! সৌভাগ্যবশতঃ আপনার উন্নতি হইতেছে, আপনার শত্রুগণ বিনষ্ট হউক, আপনি চিরজীবী হউন, এবং পৃথিবী জয় করুন। আপনার অনুগ্রহে, মাননীয় মন্ত্রিমহাশয়েরও জ্যেষ্ঠ ভার্য্যা মনোরমার গর্ভে, রেণুকার গর্ভে পরশুরামের ন্যায় একটি পুত্র জন্মিয়াছে। এই বৃত্তান্ত শুনিয়া যাহা কর্ত্তব্য হয়, তাহা করুন।”

(ছ) অনন্তর রাজা অমৃতবৃষ্টির ন্যায় সেই বাক্য শুনিয়া প্রীতি-প্রফুল্লনেত্রে বলিলেন—

(१) द्वारस्थितेन। (२) मङ्गलनामा। (३) प्रहृष्टवदनपुरुषः। (४) क्वचित् चकारो नास्ति।
(५) भूपतिः।

प्रत्यवदत्—"अहो! कल्याणपरम्परा। सत्योऽयं लोकप्रवाद: (१) यत्, 'विपद्विपदं सम्पत् सम्पदमनुबध्नाति' इति। सर्वथा समानसुखदुःखतां दर्शयता विधिनाऽपि भवतैव वयमनुवर्त्तिता:" इत्यभिधाय प्रीतिविकसितमुख: सरभसमालिङ्ग्य विहसन् स्वयमेव शुकनासस्योत्तरीयं पूर्णपात्रं जहार। (छ) तस्मै च प्रीतमना: प्रियवचनानुरूपं (२) पुरुषायापरिमितं पारितोषिकमादिदेश। (ज)

उत्थाय च तथैव तेन चरण-विघट्टन-(३) क्वणित-नूपुर-(४) सहस्र मुखरित-

अतएवाह सत्योऽयमिति। अनुबध्नाति अनुसरति। शुकनासं प्रत्याह सर्वथेति। सर्वथा सर्वैः प्रकारैः समानं सुखदुःखं ययोस्तयोर्भावस्तां दर्शयता विधिना दैवेनापि भवतैव त्वयैव वयमहमित्यर्थः अनुवर्त्तिता अनुसृता:। तथा च पुत्त्रोत्पत्ते: प्राक् तव मम च तदनुत्पत्तिनिबन्धनं समानमेव दुःखमासीत्, इदानीमपि च तदुत्पत्तिनिबन्धनं समानमेव सुखं, तेन च "सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते" इति न्यायेन दुःखानुभवानन्तर सुखानुभवस्यातीवमनोरमत्वात् यथा परमसन्तोषोत्पादनेन भवान् मामनुगच्छति विधिरपीदानीं तथैवेति भाव:। अत्रोपमालङ्कार:। सरभसं सहर्षं आलिङ्ग्य शुकनासमाश्लिष्य। उत्तरीयं उत्तरीयवसनरूपं पूर्णपात्रं सन्तोषेणाहरणीयद्रव्यं।

(ज) तस्मा इति। तस्मै पुरुषाय मङ्गलकाय। पारितोषिकं दातुं धनाध्यक्षमादिदेशेत्यर्थ:।

(झ) उत्थायेति। राजा तस्मात् स्थानादुत्थाय तेन अन्तःपुरिकाजनेन राजपरिजनेन प्रवृत्तनृत्येन चारणगणेन चानुगम्यमान: शुकनासभवनं गत्वा द्विगुणतरमुत्सवमकारयदित्यन्वय:। अत्र प्राथमिकानि तृतीयान्तपदानि अन्तःपुरिकाजनेनेत्यस्य विशेषणानि। चरणयोर्विघट्टनेन निक्षेपेण क्वणितानां शब्दितानां नूपुराणां सहस्रेण समूहेन मुखरितानि सशब्दीकृतानि दिगन्तराणि येन तेन। अत्र दिगन्तराणां मुखरीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कार:।

"কি আশ্চর্য্য! আজ যে অবিচ্ছিন্ন মঙ্গলের ধারা দেখিতেছি। অতএব এই লোকপ্রবাদ সত্য; যে—'বিপদ বিপদের ও সম্পদ সম্পদের অনুসরণ করিয়া থাকে'। বিধাতা সকল প্রকারেই তোমার ও আমার সমান দুঃখ ও সমান সুখ দেখাইয়া আজ তোমারই মতন আমার সন্তোষ-বিধান করিলেন" এই কথা বলিয়া প্রীতি-প্রফুল্ল-মুখে আনন্দের সহিত শুকনাসকে আলিঙ্গন করিয়া হাসিতে হাসিতে নিজেই শুকনাসের উত্তরীয়বসন টানিয়া লইলেন; (জ) এবং সন্তুষ্টচিত্তে সেই মঙ্গলককে প্রিয়সংবাদ বলার অনুরূপ অপরিমিত পারিতোষিক দিবার আদেশ করিলেন।

(ঝ) রাজা উঠিয়া সেই ভাবেই শুকনাসের বাড়ী যাইয়া দ্বিগুণ উৎসব করাইলেন;

(१) जनप्रवाद:। (२) प्रियवचनश्रवणानुरूपं।
(३)…विकुट्टन…, कुट्टन…। (४)…मणिनूपुर…।

दिगन्तरेण (झ) सरभसोत्क्षेप-चलित-(१) मणिवलयावली वाचालित-भुजलतेन (ञ) ऊर्द्धीकृतैरुत्तानतलैः करपुटैरनिल-लुलितां (२) आकाशगङ्गा-(३) कमलिनीमिव दर्शयता (ट) पर्य्यस्त-मर्द्दित-कर्णपल्लवेन (ठ) परस्पराङ्गद-कोटि-सङ्घट्ट-दष्ट-पाटितोत्तरीयांशुकेन (ड) श्रमजल-धौताङ्गराग-रञ्जित-चीन-वाससा (४) (ढ) किञ्चिदवशिष्ट-तमालपत्रेण (ण) विलसद्वारविलासिनीोच्छ्वसितैरुन्निद्र-कैरव-वनानुकारं प्रथयता (त) सरभसवल्गन-(५)

(ञ) सरेति। सरभसं सवेगं उत्क्षेपेण नृत्यगीततालानुसारादुत्तोलनेन चलिताभिश्चञ्चलीभूताभिः मणिवलयावलीभिः रत्नमयकङ्कणश्रेणीभिः वाचालिताः शब्दायमानीकृताः भुजलता यस्य तेन।

(ट) ऊर्द्धेति। ऊर्द्धीकृतैरुत्तोलितैः, उत्तानतलैरुन्मुखतलैः करपुटैः करैः, अनिललुलितां वायुना पातितां आकाशगङ्गायाः कमलिनीं पद्मिनीं दर्शयतेव तादृशहस्तोत्तोलनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) पर्य्यस्तेति। पर्य्यस्ता आदौ गमनसम्भ्रमात् भूमौ पतिताः, मर्द्दिता अनन्तरं जनचरणैर्विदलिताः कर्णपल्लवाः कर्णाभरणीभूतकिसलयानि यस्य तेन।

(ड) परस्परेति। परस्परं अङ्गदकोटिभिः केयूराग्रैः संघट्टेन घर्षणेन दष्टानि आदौ विद्धानि अनन्तरं पाटितानि छिन्नानि उत्तरीयांशुकानि यस्य तेन।

(ढ) श्रमेति। श्रमजलैर्घर्म्मजलैर्धौता ये अङ्गरागा अङ्गविलेपनानि कुङ्कुमादीनि तै रञ्जितानि चीनवासांसि सूक्ष्मवसनानि यस्य तेन। "चीनो मृगान्तरे तन्तुव्रीहिदेशांशुकान्तरे।" इति विश्वः।

(ण) किञ्चिदिति। किञ्चिदल्पमात्रं अवशिष्टं तमालपत्रं तिलकं यस्य तेन, अधिकान्तु जनसम्मर्द्दादेव विलुप्तमिति भावः। 'तमालपत्रं तिलके तापिञ्छे पत्रकेऽपि च।" इति हेमः।

(त) विलसदिति। विलसन्तीनां सविलासं गच्छन्तीनां वारविलासिनीनां वेश्यानां उच्छ्वसितैर्हासैः

যাইবার সময় তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ অন্তঃপুরের রমণীগণও যাইতেছিল; তাহাদের পদক্ষেপের সময় নূপুরসমূহের শব্দে দিগন্তর শব্দিত হইতেছিল; (ঞ) বেগে ভুজলতা উত্তোলন করায় চঞ্চল মণিময় বলয়ের শব্দে সে ভুজলতাও শব্দিত হইতেছিল; (ট) তাহারা করতল চিৎ করিয়া উত্তোলন করায় বায়ুকর্ত্তৃক নিপাতিত আকাশগঙ্গার পদ্মিনী যেন দেখাইতেছিল; (ঠ) লোকের সংঘর্ষে কর্ণের পল্লব পতিত হইয়া পদদলিত হইতেছিল; (ড) পরস্পর সংঘর্ষের সময় একের কেয়ূরের অগ্রভাগ অপরের উত্তরীয়-বসনে বিদ্ধ হইয়া তাহা ছিঁড়িয়া ফেলিতেছিল; (ঢ) অঙ্গে লিপ্ত কুঙ্কুমপ্রভৃতি, ঘর্ম্মজলে ধৌত হইয়া সূক্ষ্ম বস্ত্রগুলিকে রঞ্জিত করিতেছিল; (ণ) লোকের ঠেসাঠেসিতে গায়ের তিলক (গোন্দানি প্রভৃতি) অল্পমাত্র অবশিষ্ট ছিল; (ত) তাহারা সবিলাসগামিনী বারাঙ্গনাগণের হাস্যে প্রস্ফুটিত

(१)...चालित..., वल्गित...। (२)...लुलितां। (३) आकाशकमलिनीं।
(४) नवीनवाससा। (५)...वलन...।

খলল্লোল-হারলতাস্ফালিত-কুচস্থলেন (থ) সিন্দূর-তিলক-লুলিতালক-(১) লেখেন (দ) বিপ্রকীর্ণপিষ্টাতক-পাংশু-পুঞ্জ-পিঞ্জরিত-(২) কেশপাশেন (ধ) প্রনৃত্য-বিকল-(৩) মূক-কুব্জ-কিরাত-বামন বধির-জড়-জন-পুরঃসরেণ (ন) উত্তরীয়াংশুক-গ্রীবাববদ্ধাবকৃষ্ট-বিড়ম্বিত-(৪) জরৎকাঞ্চুকি-কদম্বকেন (৫) (প) বীণা-বেণু-মুরজ-কাংস্যতাল-লয়ানুগতেন (৬) (ফ) কল মধুরমুদ্গায়তা (ব)

উন্নিদ্রস্য বিকসিতস্য কৈরববনস্য কুমুদকাননস্য অনুকারমনুকরণং প্রথয়তা প্রকাশয়তা কবিসময়বশাৎ হাস্যস্য শ্বৈতত্বাদিতি ভাবঃ। আর্থীয়মুপমালঙ্কারঃ।

(থ) সরভসেতি। সরভসং সবেগং যৎ বল্গনমাস্ফালনং তেন খলন্তীভিঃ স্বস্থানাৎ ভ্রশ্যন্তীভিঃ লোলাভিঃ হারলতাভিঃ আস্ফালিতং স্পৃষ্টং কুচস্থলং যস্য তেন।

(দ) সিন্দূরেতি। সিন্দূরতিলকেষু লুলিতা গমনসম্ভ্রমাৎ লুঠিতা অলকরেখা চূর্ণকুন্তলরাজি-র্যস্য তেন।

(ধ) বিপ্রেতি। বিপ্রকীর্ণৈর্বিক্ষিপ্তৈঃ পিষ্টাতকপাংশুপুঞ্জৈঃ পটবাসচূর্ণনিকরৈঃ পিঞ্জরিতাঃ পিঙ্গলবর্ণী-কৃতাঃ কেশপাশা যস্য তেন।

(ন) প্রনৃত্যেতি। প্রনৃত্যেন বিশেষনর্ত্তনেন বিকলা বিহ্বলাঃ মূকাঃ, কুব্জাঃ, কিরাতাঃ কৃশদেহাঃ, বামনা হ্রস্বশরীরাঃ, বধিরাঃ, জড়া নিতান্তনির্বোধাশ্চ জনাঃ পুরঃসরা অগ্রগামিনো যস্য তেন।

(প) উত্তরীয়েতি। উত্তরীয়াংশুকৈঃ তন্নদুত্তরীয়বসনৈঃ গ্রীবাসু গলেষু আদৌ বদ্ধং বায়ুপ্রেরণয়া যদৃচ্ছা-বশাৎ সংযমিতং, অনন্তরঞ্চ অবকৃষ্টং আনন্দবিহ্বলতয়া তদনবধানেন গতিবেগাদাকৃষ্টং, অতএব বিড়ম্বিতং প্রসভাকর্ষণেন ভূমৌ পাতনাপক্রমেণ চ বিহ্বলীকৃতং জরতামতিবৃদ্ধানাং কঞ্চুকিনাং অন্তঃপুরচরবিপ্রাণাং কদম্বকং সমূহো যেন তেন। অত্র স্বভাবোক্তিরলঙ্কারঃ। জরৎপদেনাতিবার্দ্ধক্যবোধনান্নাধিকপদত্বদোষঃ।

(ফ) বীণেতি। বীণা, বেণুঃ, মুরজো মৃদঙ্গঃ, কাংস্যতালং করতালং তেষাং লয়ঃ শব্দসাম্যং তদনুগতেন তদনুসারেণ চলিতেন।

(ব) কলেতি। কলমস্ফুটং মধুরঞ্চ যথা স্যাত্তথা উদ্গায়তা উচ্চৈঃস্বরেণ গানং কুর্ব্বতা।

কুমুদবনের অনুকরণ করিতেছিল (থ) বেগে আন্দোলন করায় স্বস্থানচ্যুত চঞ্চল হারলতাদ্বারা তাহাদের স্তনমণ্ডল তাড়িত হইতেছিল; (দ) খোলা চুলগুলি আসিয়া সিন্দুর-তিলকের উপর পড়িতেছিল; (ধ) আবীররাশি নিক্ষেপ করায় কেশকলাপ পিঙ্গলবর্ণ হইতেছিল; (ন) মূক, কুব্জ, ক্ষীণদেহ, খর্ব্বকায়, বধির ও নির্বোধ লোকগুলি উদ্ধতনৃত্যে বিহ্বল হইয়া অগ্রে অগ্রে যাইতেছিল; (প) কোন কোন রমণীর উত্তরীয়বস্ত্র কোন কোন বৃদ্ধ কঞ্চুকীর গলদেশে বদ্ধ হইয়া গেলে পর তাহা আকর্ষণ করায় সেই কঞ্চুকিগণ নিতান্ত বিড়ম্বনা পাইতেছিলেন; (ফ) তাহারা বীণা, বংশী, মৃদঙ্গ ও করতালের লয় অনুসারে পা ফেলিয়া যাইতেছিল; (ব) উচ্চৈঃস্বরে অস্পষ্ট ও মধুর গান করিতেছিল; (ভ) আনন্দে

(১)...লোলিতালক...। (২)...পাংশুপিঞ্জরিত...। (৩) প্রনৃত্তকল..., প্রনৃত্তবিকল..., প্রহৃষ্টকল...। (৪)...বিলম্বিত...। (৫) কদম্বেন। (৬)...অনুযাতেন।

হর্ষনির্ভরতয়া মত্তেনেব উন্মত্তেনেব গ্রহগৃহীতেনেব ব্যপগত-(১) বাচ্যাবাচ্য-বিবেকেন (২) নৃত্য-গীত-ক্রীড়া-(৩) প্রসক্তেনান্তঃপুরিকাজনেন, (ভ) প্রচলিত-(৪) মণিকুণ্ডলাহত (৫) কপোলভিত্তিনা চ বিঘূর্ণমান-কর্ণোৎপলেনাধোগলিত-(৬) বিলোল-শেখরেণ দোলায়মান-বৈকক্ষক (৭) কুসুমমালেন নির্দয়-প্রহত-ভেরী-মৃদঙ্গ-মর্দল-পটহ-নিনাদানুগত-কাহল-(৮) শঙ্খ-রব-জনিত-রভসেন চরণ-নিক্ষেপৈর্দারয়তেব বসুধাং (৯) রাজপরিজনেন, (ম) প্রবৃত্তনৃত্যেন চ (১০) চারণগণেন বিবিধ-

(ভ) হর্ষেতি। হর্ষনির্ভরতয়া আনন্দপরিপূর্ণতয়া, মত্তেনেব মদ্যপানজনিতমত্ততাযুক্তেনেব, উন্মত্তেনেব উন্মাদরোগগ্রস্তেনেব, তথা গ্রহগৃহীতেনেব ভূতাবিষ্টেন জনেনেব ব্যপগতো বিনষ্টঃ বাচ্যাবাচ্যয়োঃ কথ্যাকথ্যয়োঃ বিবেকো বিবেচনং যস্য তেন বাচ্যমপি বদতা অবাচ্যমশ্লীলাদিকমপি বদতেত্যর্থঃ। অন্তঃপুরিকাজনেন অন্তঃপুরস্থ-রমণীগণেন। অত্র মালোপমালঙ্কারঃ। কেচিত্তু উৎপ্রেক্ষামাচক্ষতে।

(ম) প্রচলিতেতি। ইতঃপ্রভৃতি তৃতীয়ান্তপদানি বক্ষ্যমাণস্য রাজপরিজনেনেত্যস্য বিশেষণানি। প্রচলিতৈর্মণিকুণ্ডলৈঃ আহতাঃ কপোলভিত্তয়ো গণ্ডস্থলানি যস্য তেন। বিঘূর্ণমানানি আন্দোলিতানি কর্ণোৎপলানি যস্য তেন। অধোগলিতা ভূমৌ পতিতাঃ বিলোলাশ্চঞ্চলাঃ শেখরাঃ শিরোভূষণানি যস্য তেন। দোলায়মানাঃ কম্পমানাঃ বৈকক্ষককুসুমমালাঃ তির্য্যগলম্বিবক্ষঃস্থপুষ্পমালা যস্য তেন। "বৈকক্ষকন্তু তৎ। যত্তির্য্যক্ ক্ষিপ্তমুরসি" ইত্যমরঃ। নির্দয়ং সাতিশয়ং যথা স্যাত্তথা প্রহতাস্তাড়িতাঃ যে ভের্য্যো মৃদঙ্গাঃ মর্দ্দলা বাদ্যবিশেষাঃ পটহা ঢক্কাশ্চ তেষাং নিনাদৈরনুগতা মিলিতা যে কাহলানাং বিশালঢক্কানাং শঙ্খানাঞ্চ রবাস্তৈর্জনিতো রভস আনন্দো যস্য তেন। দারয়তেবেতি ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(য) প্রবৃত্তেতি। প্রবৃত্তং জাতং নৃত্যং যস্য তেন। বিবিধৈর্মুখবাদ্যৈঃ কৃতঃ কোলাহলো যেন তেন। পরমা

পরিপূর্ণ হওয়ায় কখনও মত্তের ন্যায়, কখনও উন্মত্তের ন্যায় এবং কখনও ভূতাবিষ্টের ন্যায় হইয়া বাচ্য কথাও বলিতেছিল, অনেক অবাচ্য কথাও বলিতেছিল এবং নৃত্য, গীত ও খেলাতে ব্যাপৃত হইয়া চলিতেছিল।

(ম) রাজার পরিজনবর্গও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; তাহাদের মণিময় কুণ্ডল আন্দোলিত হইয়া গণ্ডস্থলে আঘাত করিতেছিল, কর্ণের উৎপল দুলিতেছিল, মস্তকের আভরণ দুলিতে দুলিতে ভূতলে পড়িয়া যাইতেছিল, বক্ষঃস্থলের ফুলের মালা দুলিতেছিল, অত্যন্ত তাড়ন করায় ভেরী, মৃদঙ্গ, মাদল ও ঢাকের শব্দের সহিত জয়ঢাক ও শঙ্খের শব্দে তাহাদের আনন্দ জন্মাইতেছিল, আর তাহারা পদক্ষেপে ভূতল যেন বিদীর্ণ করিতেছিল। (য) চারণগণও রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ নৃত্য

(১) অপগত:। (২) বিবেকেনৈব। (৩) নৃত্তক্রীড়া...। (৪) প্রচল...। (৫)...উদ্ঘট্টিত...। (৬) গলিত...। (৭) বৈকক্ষিক..., বৈকক্ষ...। (৮)...কাহলা...। (৯) বিদারয়তেব বসুন্ধরাং। (১০) নৃত্তে প্রবৃত্তে।

मुख-वाद्य-(१) कृतकोलाहलेन पठता गायता वल्गता (२) चानुगम्यमानः शुक-नासभवनं गत्वा द्विगुणतरमुत्सवमकारयत्। (य)

अतिक्रान्ते च षष्ठीजागरे, प्राप्ते दशमेऽहनि, पुण्ये मुहूर्त्ते गाः सुवर्णञ्च कोटिशो ब्राह्मणसात्कृत्वा (३) 'मातुरस्य मया परिपूर्णमण्डलश्चन्द्रः स्वप्ने मुख-कमलमाविशन् दृष्टः' इति स्वप्नानुरूपमेव सूनोः (४) चन्द्रापीड इति नाम चकार। (र)

अपरेद्युः शुकनासोऽपि कृत्वा ब्राह्मणोचिताः सकलाः क्रिया राजानुमत-मात्मजस्य विप्रजनोचितं वैशम्पायन इति नाम चक्रे। (ल)

राजस्तुतिमुच्चारयता, गायता, वल्गता उल्लम्फनं प्रलम्फनञ्च कुर्व्वता, चारणगणेन च कुशीलवसमूहेन च। "चारणास्तु कुशीलवाः" इत्यमरः।

(र) अतीति। षष्ठीजागरे षष्ठरात्रिकर्त्तव्ये जागरणे। तथा च विष्णुधर्म्मोत्तरे—"षष्ठेऽह्नि रात्रि यामन्तु जन्मदानान्तु कारयेत्। रात्रौ जागरणं कार्य्यं जन्मदाना तथा बलि" दशमेऽहनि जन्मावधि दशमे दिवसे प्राप्ते उपस्थिते। आविशन् प्रविशन्। सूनोः पुत्रस्य। चन्द्र आपीडः शेखरो यस्य सः। "दशम्यामुत्थाप्य पिता नाम कुर्य्या"दिति पारस्करसूत्रात् "जननाद्दशरात्रे व्युष्टे नामधेयकरण"मिति गोभिल-सूत्राच्च दशमेऽह्नीत्युक्तम्। सपिण्डमरणाशौचस्य चतुर्थदिनादौ सपिण्डजननाशौचस्य चतुर्थादनादिपूर्व्वार्द्धे वा तारापीडस्यासौ पुत्रो जात इति मन्तव्यं, तेन स्वपुत्रजननाशौचस्य तदशौचेन व्यपगमात् दशमदिने शुचितया राज्ञः पुत्रस्य नामकरणमुपपद्यते, अन्यथा क्षत्रियाणां द्वादशाहाशौचितया दशमदिने अशौचवत्त्वात्तत्रानधिकारः। एवञ्चोक्तसूत्रद्वयमपि तादृशसङ्करेणाशौचह्रासविषयमिति ध्येयम्।

(ल) अपरेद्युरिति। अपरेद्युः परस्मिन्नहनि जननादेकादशाहे "एकादशे द्वादशे वा पिता नाम कुर्य्या"दिति श्रुत्या, दिगवि-शिव शताहे तत्कुलाचारतो वा शुभतिथिदिनयोगे नाम कुर्य्यात् प्रशस्त"मिति

করিতেছিল, কেহ কেহ নানাবিধ মুখবাদ্যে কোলাহল করিতেছিল; কেহ কেহ রাজস্তুতি পাঠ করিতেছিল; কেহ কেহ গান করিতেছিল; এবং কেহ কেহ উল্লম্ফনপ্রলম্ফন করিতে করিতে যাইতেছিল।

(র) ষষ্ঠীজাগর বাসর অতীত হইলে, দশম দিনে শুভ মুহূর্ত্তে রাজা ব্রাহ্মণদিগকে কোটি কোটি গরু ও সুবর্ণ দান করিয়া 'এই বালকের মাতার মুখমধ্যে পূর্ণমণ্ডল চন্দ্র, প্রবেশ করিতেছে, ইহা আমি পূর্ব্বে স্বপ্নে দেখিয়াছিলাম' এই কথা মনে করিয়া সেই স্বপ্ন অনুসারে পুত্রের নাম করিলেন—'চন্দ্রাপীড়'।

(ল) শুকনাসও, পরদিন ব্রাহ্মণোচিত সকল কার্য্য সম্পাদন করিয়া রাজার অনুমতি-ক্রমে ব্রাহ্মণের উপযুক্ত, পুত্রের নাম করিলেন—'বৈশম্পায়ন'।

---

(१) विविधवाद्य···। (२) क्वचित् वल्गता इति नास्ति।

(३) कोटिशो ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा। (४) स्वसूनोः।

क्रमेण कृतचूड़ाकरणादिक्रिया-(१) कलापस्य शैशवमतिचक्राम चन्द्रापीड़स्य। (व)

तारापीड़: क्रीड़ाव्यासङ्ग-(२) विघातार्थं बहिर्नगरादनुशिप्रं (३) अर्द्ध-क्रोशमात्रायामं, अतिमहता तुहिनगिरि-शिखर-मालानुकारिणा (४) सुधा-धवलितेन (५) प्राकारमण्डलेन परिगतम्, (श) अनुप्राकारमाहितेन महता परिखावलयेन परिवेष्टितम्, (ष) अतिदृढ़कपाट-सम्पुटम्, उद्घाटितैकद्वार-

---

ज्योतिषवचनेन च नामकरणे एकादशाहोऽपि विहित इत्यवधेयम्। ब्राह्मणोचिता: शर्म्मान्तनामीक्ष्य खादिमङ्गल-नान्दीमुखश्राद्धादौ। राज्ञा अनुमतमनुमोदितं प्रभुतया वयस्यतया च सर्वकार्य्येष्वेव तदनुमतिग्रहण-स्यौचित्यादिति भाव:। विप्रजनोचितं मङ्गलमूलकमित्यर्थ:। यथा मनु:—"मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात् क्षत्रियस्य बलान्वितम्। वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्।" तथा च विश्वं लोकं पातीति विश्वपो विष्णु पृषोदरादित्वात् साधु, स एव अयनमाश्रयो यस्येति विश्वपायन:, ततश्च प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण्। त्रिपुर-विजयिन: शिवस्याभिधानाच्चन्द्रापीड़शब्दस्यापि मङ्गलवाचकत्वमिति दिक्।

(व) क्रमेणेति। चूड़ाकरणं तस्यादिभूते निष्क्रमणान्नप्राशने च तद्रूपा: क्रियास्तासां कलाप इति स:, तथा च कृत चूड़ाकरणादिक्रियाकलापो निष्क्रमणादिसंस्कारकार्य्यसमूहो यस्य तस्य।

अहो! महत् खलु सौभाग्यं श्रोतृणाम्, येन हि कविरस्मिन् विस्मृतात्मभावतया चन्द्रापीड़स्य शैशव-लीलामवर्णयन्नेव विरत इति।

(श) तारेति। तारापीड़, चन्द्रापीड़स्य क्रीडासु व्यासङ्गविघातार्थं आसक्तिनिवारणार्थं नगरात् स्वराजधानीतो बहि:, शिप्रा शिप्रातीरमनु इत्यनुशिप्रं शिप्रानदीतीरे विद्यामन्दिरमकारयदित्यन्वय:। क्लीव-लिङ्गद्वितीयान्तपदानि तस्य विशेषणानि। अर्द्धक्रोशमातं आयामो दैर्घ्यं यस्य तत्। तुहिनगिरेर्हिमाचलस्य शिखरमालानुकारिणा शृङ्गश्रेणीसदृशेन अतिमहता अत्युच्चेनेत्यर्थ:। सुधया चूर्णलेपेन धवलितं शुभ्रीकृतं तेन।

(ष) अन्विति। अनुप्राकारं तस्य प्राकारस्य समीपे, आहितेन स्थापितेन कृतेन।

(ব) ক্রমে চন্দ্রাপীড়ের নিষ্ক্রমণ, অন্নপ্রাশন ও চূড়াকার্য্য সম্পাদন করা হইল এবং শৈশবকাল অতীত হইল।

(শ) তদনন্তর মহারাজ তারাপীড়, চন্দ্রাপীড়ের খেলাতে আসক্তি নিবারণ করিবার নিমিত্ত, রাজধানীর বাহিরে শিপ্রানদীর তীরে অর্দ্ধক্রোশদীর্ঘ একটি বিদ্যালয় নির্ম্মাণ করাইলেন; হিমালয়ের শৃঙ্গসমূহের ন্যায় অত্যন্ত উচ্চ ও চূর্ণলেপনে শুভ্রবর্ণ প্রাচীরদ্বারা সেই বিদ্যালয়টি পরিবেষ্টিত করা হইল; (ষ) প্রাচীরের নিকটে নির্ম্মিত বৃহৎ পরিখা-

---

(१)···बालक्रिया...। (२) व्यासङ्ग···। (३) अनुशिप्रं, अनुसिप्रं। (४) शिखरानुकारिणा।

(५) सुधाधवलेन, प्राकारधवलेन चन्द्रमालावलयेन विलासितं प्राकार...।

प्रवेशम्, एकान्तोपरचित-तुरग-(१) वाह्याली-विभागम्, अधःकल्पित-व्यायाम-शालम्, अमरागाराकारम्, विद्यामन्दिरं (२) अकारयत्। (स) सर्वविद्याचार्य्याणाञ्च संग्रहे यत्नमतिमहान्तमन्वतिष्ठत्। (ह) तत्रस्थञ्च तं केशरि-किशोरकमिव पञ्जरगतं कृत्वा प्रतिषिद्धनिर्गमम्, आचार्य्य-कुल-पुत्र-प्राय-परिजनम्, अपनीताशेष-शिशुजन-क्रीडन-(३) व्यासङ्गम्, अनन्यमनसम्, अखिल-विद्योपादानार्थमाचार्य्येभ्यश्चन्द्रापीडं शोभने दिवसे वैशम्पायनद्वितीयमर्पयाम्बभूव (च)। प्रतिदिनञ्चोत्थायोत्थाय (४) सह विलासवत्या विरलपरिजनस्तत्रैव गत्वैनमालोकयामास राजा। (क)

(स) अतीति। अतिदृढैः कपाटैः सम्पुटं आवरणं यस्य तत्। उद्घाटितेन उन्मुक्तकपाटेन एकेन द्वारेण प्रवेशो यस्मिन् तत्। एकान्ते एकस्मिन् पार्श्वे उपरचितो निर्म्मितः तुरगवाह्यालीनां अश्वशकटश्रेणीनां विभागः अवस्थितिस्थानं यस्मिन् तत्। अधःप्रदेशे कल्पिता निर्म्मिता व्यायामशाला मल्लक्रीडागृहं यस्मिन् तत्। अमरागाराकारं देवगृहतुल्यम्।

(ह) सर्वेति। सर्वविद्यानां ये आचार्य्याः शिक्षकास्तेषां, संग्रहे आनयने।

(च) तत्रेति। केशरिकिशोरकं सिंहशावकं पञ्जरगतमिव, तं चन्द्रापीडं तत्रस्थं कृत्वा। अत्रोपमालङ्कारः। आचार्य्याः शिक्षकाः कुलपुत्राः सत्कुलजाताः कुमाराश्च प्रायः बहुलाः परिजना यस्य तम्। अपनीतो निषेधेन दूरीकृतः अशेषेषु समस्तेषु शिशुजनक्रीडनेषु बालविलासेषु व्यासङ्गः आसक्तिर्यस्य तम्। न विद्यते अन्यस्मिन् विषये मनो यस्य तं तादृशञ्च कृत्वा, वैशम्पायनद्वितीयं तं चन्द्रापीडं। अखिलविद्योपादानार्थं सकलविद्याशिक्षार्थं।

(क) प्रतीति। उत्थायोत्थाय प्रातः प्रातरित्यर्थः। विरला अल्पाः परिजना यस्य सः, अन्यथा विद्यालये हुलहुलिका स्यादिति भावः। एनं चन्द्रापीडम्।

দ্বারাও তাহা বেষ্টিত হইল; (স) অত্যন্ত দৃঢ় কপাটে তাহার অন্যান্য দ্বারগুলি বদ্ধ ছিল; একটিমাত্র দ্বার উন্মুক্ত থাকায় সেইমাত্র প্রবেশের পথ ছিল; একদিকে বহুতর ঘোড়ার গাড়ী রাখিবার স্থান নির্ম্মাণ করাইলেন এবং নীচে ব্যায়ামের ঘর তৈয়ারী করান হইল, ইহাতে সেই বিদ্যালয়টি স্বর্গীয় দেবভবনের ন্যায় সুন্দর হইয়াছিল। (হ) অনন্তর সকল-প্রকার বিদ্যা শিক্ষা করাইবার লোক আনয়ন করিবার জন্য বিশেষ যত্ন করিলেন। (চ) এবং সিংহশাবককে যেমন পঞ্জরে স্থাপন করে, সেইরূপ চন্দ্রাপীড়কে সেই বিদ্যালয়ে স্থাপন করিয়া, তাহা হইতে নির্গত হইতে নিষেধ করিয়া, শিক্ষকগণ ও সৎকুলজাত কুমারগণকেই অধিক পরিমাণে সহচর নির্দিষ্ট করিয়া, বালকের সকল প্রকার খেলাতেই আসক্ত হইতে নিষেধ করিয়া, অনন্যমনে শিক্ষা করিবার উপদেশ দিয়া, সকল প্রকার বিদ্যাশিক্ষা করিবার নিমিত্ত, বৈশম্পায়নের সহিত চন্দ্রাপীড়কে শুভদিনে শিক্ষকগণের হস্তে সমর্পণ করিলেন। (ক) এবং রাজা বিলাসবতীর সহিত প্রতিদিন নিদ্রা হইতে

(१)...तुरङ्ग...। (२) विद्यागृहं। (३)...शिशुक्रीडन...। (४) क्वचित् [illegible]।

चन्द्रापीडोऽप्यनन्यहृदयतया तथा नियन्त्रितो राज्ञा (१) अचिरेणैव कालेन (२) यथास्वमात्मकौशलं प्रकटयद्भिः पात्रवशादुपजातोत्साहैराचार्य्यैरुपदिश्यमानः (३) सर्वा विद्या जग्राह। (ख) मणिदर्पण इवातिनिर्म्मले तस्मिन् सञ्चक्राम सकलः कलाकलापः। (ग) तथाहि पदे, वाक्ये, प्रमाणे, धर्म्मशास्त्रे, राजनीतिषु, व्यायामविद्यासु, चाप-चक्र-चर्म्म (४) कृपाण-शक्ति-तोमर-परशु-गदाप्रभृतिषु सर्वेष्वायुधविशेषेषु, रथचर्य्यासु, गजपृष्ठेषु, तुरङ्गमेषु (५) वीणा-वेणु-मुरज-कांस्यताल-दर्दुरपुटप्रभृतिषु वाद्येषु, भरतादिप्रणीतेषु नृत्यशास्त्रेषु, (६) नारदीयप्रभृतिषु गान्धर्व्ववेदविशेषेषु, हस्तिशिक्षायां, तुरगवयोज्ञाने, (७) पुरुषलक्षणेषु, चित्रकर्म्मणि, यन्त्रच्छेद्ये, (८) पुस्तक-

(ख) चन्द्रेति। राज्ञा तारापीडेन तथा नियन्त्रितो निर्गमनिषेधादिना तादृशं नियमितः, चन्द्रापीडोऽपि अनन्यहृदयतया विद्याशिक्षायामेवैकाग्रचित्ततया। यथास्वं यथार्थं "यथास्वन्तु यथायथ"मित्यमरः, आत्मकौशलं शिक्षादाने स्वस्वनैपुण्यं प्रकटयद्भिराविष्कुर्वद्भिः, पात्रवशात् आधारवशात् चन्द्रापीडस्य प्रखरधीशक्त्यादिना उत्कर्षवशादित्यर्थः। उपदिश्यमानोऽध्याप्यमानः। जग्राह शिशिक्षे।

(ग) किञ्च मणीति। कलाकलापो नृत्यगीतादिकलाविद्यासमूहः, सञ्चक्राम आचार्य्येभ्यः संक्रान्तो बभूव। अत्रोपमालङ्कारः। विद्यान्तरेभ्यः कलानां सुकुमारतया पृथगुपन्यासः।

(घ) उक्तमेवार्थं विशेषेण विवृण्वन्नाह तथाहीति। पदं व्याकरणशास्त्रं पदसाधनमात्रप्रयोजनत्वात्, तस्मिन्। वाक्यं पूर्व्वोत्तरमीमांसाद्वयं वेदवाक्योपजीव्यत्वात्, तस्मिन्। प्रमाणं न्यायवैशेषिकादिदर्शनशास्त्रं आत्मानात्मनोः प्रमितिकरणत्वात्, तस्मिन्। धर्म्मशास्त्रं मन्वादिप्रणीतं धर्म्मप्रतिपादनप्रधानं शास्त्रं तस्मिन्। राजनीतिषु शुक्रकामन्दकादिप्रणीतासु। व्यायामविद्यासु मल्लक्रीडाज्ञानेषु। रथचर्य्यासु रथारोहणेषु। कांस्यतालं करतालं। दर्दुरपुटं भेकशब्दाकारशब्दात्मको वाद्यविशेषः। तुरगवयोज्ञाने अस्य तुरगस्य कियद्वय

উঠিয়া উঠিয়া, অল্পসংখ্যক পরিজনে পরিবৃত হইয়া, সেই বিদ্যালয়ে যাইয়া চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া আসিতেন।

(খ) চন্দ্রাপীড়ও মহারাজকর্ত্তৃক সেইরূপ নিয়মিত হইয়া, অচিরকালমধ্যেই সকল বিদ্যা শিক্ষা করিলেন; কারণ—শিক্ষকগণ চন্দ্রাপীড়ের অত্যন্ত যোগ্যতা দর্শনে উৎসাহী হইয়া, স্ব স্ব ক্ষমতা যথাযথভাবে প্রকাশ করতঃ শিক্ষা দিয়াছিলেন। (গ) মণিময় দর্পণের ন্যায় অত্যন্তনির্ম্মল চন্দ্রাপীড়ের হৃদয়ে নৃত্যগীতাদি সকল কলাবিদ্যাও শিক্ষকগণ হইতে সংক্রান্ত হইয়াছিল। (ঘ) অর্থাৎ ব্যাকরণ, পূর্ব্বমীমাংসা ও উত্তরমীমাংসা, ন্যায় ও বৈশেষিকাদি দর্শনশাস্ত্র, স্মৃতিশাস্ত্র, নীতিশাস্ত্র, ব্যায়ামবিদ্যা (কুস্তী), ধনু, চক্র, চর্ম্ম

(१) यन्त्रितो राज्ञा। (२) क्वचित् 'कालेन' इति नास्ति। (३) उपदिश्यमानाः। (४)…चर्म्म…। (५)* तुरङ्गेषु। (६) नृत्यशास्त्रेषु। (७)…ज्ञानेषु। (८) पत्रच्छेद्ये।

व्यापारे, लेख्यकर्म्मणि, सर्वासु द्यूतकलासु, गन्धशास्त्रेषु, (१) शकुनिरुतज्ञाने, ग्रहगणिते, रत्नपरीक्षासु, दारुकर्म्मणि, दन्तव्यापारे, वास्तुविद्यासु, आयुर्वेदे, मन्त्रप्रयोगे, (२) विषापहरणे, सुरङ्गोपभेदे, तरणे, लङ्घने, प्लुतिषु, आरोहणे, रतितन्त्रेषु, (३) इन्द्रजाले, कथासु, नाटकेषु, आख्यायिकासु, काव्येषु, महाभारत-पुराणेतिहास-रामायणेषु, सर्वलिपिषु, सर्वदेशभाषासु, सर्वसंज्ञासु, सर्वशिल्पेषु, (४) छन्दःसु, अन्येष्वपि कलाविशेषेषु परं कौशलमवाप। (घ)

इति ज्ञानमित्यर्थः। पुरुषाणां लक्षणेषु चिह्नरेखादिदर्शनेन शुभाशुभबोधकशास्त्रेषु सामुद्रिकेषु। यन्त्रेण दूरवीक्षणादियन्त्रेण ज्ञेये परिच्छेत्तुं शक्ये ग्रहनक्षत्रादिनिर्णये। पुस्तकव्यापारे पुस्तकनिर्म्माणकर्म्मणि ग्रन्थरचनायामित्यर्थः। लेख्यकर्म्मणि अक्षरविन्यासे। द्यूतकलासु अक्षक्रीडादिरूपकलाविद्यासु। गन्धशास्त्रेषु गन्धद्रव्यनिर्म्माणविद्यासु। शकुनिरुतज्ञाने पक्षिरवानुसारेण शुभाशुभनिर्णयशास्त्रे वसन्तराजशाकुनादौ। ग्रहगणिते ज्योतिःशास्त्रे। दारुकर्म्मणि काष्ठद्वारा नानाविधवस्तुनिर्म्माणे। दन्तव्यापारे हस्तिदन्तद्वारा नानाविधशिल्पनिर्म्माणे। वास्तुविद्यासु गृहारामादिप्रकारबोधकशास्त्रेषु। मन्त्रप्रयोगे मन्त्रणाकरणे। विषापहरणे विषचिकित्सायां। सुरङ्गाया उपभेदे खननपूर्वकनिर्म्माणे। तरणे नद्यादौ सन्तरणे। लङ्घने प्राकारादीनाम्। प्लुतिषु शार्दूलादिभिर्मल्लक्रीडायामुल्लम्फनेषु। आरोहणे वृक्षादौ। रतितन्त्रेषु रतिशास्त्रेषु वात्स्यायनसूत्रादिषु। कथासु कथाकाव्येषु। आख्यायिकासु तदाख्यकाव्यविशेषेषु। काव्येषु महाकाव्यादिषु। महाभारतं प्रसिद्धं, पुराणानि ब्राह्मादीनि, इतिहासाः पुरावृत्तानि कथासरित्सागरादीनि, रामायणं वाल्मीकीयम् तेषु। कथानाटकाख्यायिकानां काव्यान्तर्गतत्वेऽपि पृथगुपादानं, महाभारतरामायणयोरितिहासान्तर्गतत्वेऽपि पृथगुपादानञ्च तेषु तेषां स्वाभिमतप्राधान्यसूचनार्थं गोवृषन्यायात्। सर्वलिपिषु सर्वविधाक्षरपरिचयेषु अतो न लेख्यकर्म्मणीत्यनेन पौनरुक्त्यम्। सर्वसंज्ञासु करनयनभङ्ग्यादिना सकलप्रकारार्थसूचनासु। छन्दःसु वेदेषु पिङ्गलादिप्रणीतछन्दःशास्त्रेषु वा। अन्येष्वपि आकरज्ञानादिषु। परमुत्कृष्टं कौशलं नैपुण्यम्।

(ঢাল), তরবারি, শক্তি, তোমর, পরশু ও গদাপ্রভৃতি সকলপ্রকার বিশেষ বিশেষ অস্ত্র, রথারোহণ, গজারোহণ, অশ্বারোহণ, বীণা, বংশী, মৃদঙ্গ, করতাল ও দর্দ্দুরপুটপ্রভৃতি বাদ্য, ভরতমুনিপ্রভৃতি-প্রণীত নাট্যশাস্ত্র, নারদপ্রভৃতিপ্রণীত গান্ধর্ববেদ (গানশাস্ত্র), হস্তিশিক্ষা, অশ্বের বয়সের জ্ঞান, সামুদ্রিকশাস্ত্র, চিত্রবিদ্যা, দূরবীক্ষণাদি যন্ত্রদ্বারা গ্রহনক্ষত্রাদিনির্ণয়, গ্রন্থরচনা, নানাবিধ লেখা, সকলপ্রকার দ্যূতক্রীড়া, গন্ধদ্রব্য নির্ম্মাণ, পক্ষীর রব শুনিয়া শুভাশুভ নির্ণয়, জ্যোতিষশাস্ত্র, রত্নপরীক্ষা, কাষ্ঠদ্বারা নানাবিধ বস্তু নির্ম্মাণ, হস্তিদন্তদ্বারা নানাবিধ বস্তুনির্ম্মাণ, বাস্তুশাস্ত্র, আয়ুর্ব্বেদ, মন্ত্রণাকরণ, বিষচিকিৎসা, সুরঙ্গনির্ম্মাণ, সন্তরণ লঙ্ঘন,

---

(१) क्वचिद् अयं पाठो नास्ति। क्वचित् गान्धर्वशास्त्रेष्विति पाठः। (२) यन्त्रप्रयोगे।
(३) क्वचित् 'आरोहणे, रतितन्त्रेषु,' इति पाठो नास्ति। (४) शिल्पेषु।

सहजा चास्याजस्रं (१) अभ्यस्यतो वृकोदरस्येव शैशव एव (२) आविर्बभूव सर्वलोक-(३) विस्मयजननी महाप्राणता। (ङ) यदृच्छया क्रीडताऽप्यनेन करतलालम्बित-(४) कर्णपल्लवावनताङ्गाः सिंहकिशोरक-(५) क्रमाक्रान्ता इव गजकलभाश्चलितुमपि न शेकुः। (च) एकैकेन कृपाणप्रहारेण तालतरून् (६) मृणालदण्डानिव लुलाव। (छ) सकल-राजन्य-वंश-वन-दावानलस्य परशुरामस्येवास्य नाराचाः शिखरिशिलातलभिदो बभूवुः। (ज) दश-पुरुष-

---

अहो मन्ये खल्वेतावतीमेव शिक्षामुपपादयन्तो बाणस्य लेखनी सहसैव भग्नमुखी जाता, इतरथा वर्ष-शतेनापि मुनिजनदुर्लभां योगसिद्धिमपि कुमारस्यालिखीत्।

(ङ) सहजेति। किञ्चेति चार्थः। अजस्रं निरन्तरं अभ्यस्यतः शिक्षमाणस्य अस्य चन्द्रापीडस्य वृकोदरस्य द्वितीयपाण्डवस्येव, शैशव एव सहजा स्वाभाविकी, सर्वेषां लोकानां विस्मयजननी आश्चर्यजनिका, महाप्राणता अतीव दैहिकबलं। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) यदृच्छयेति। यदृच्छया स्वेच्छया क्रीडतापि खेलां कुर्वतापि अनेन चन्द्रापीडेन करतलाभ्यां अवलम्बितौ आकृष्य धृतौ यौ कर्णपल्लवौ ताभ्यां अवनतानि अङ्गानि येषां ते, गजकलभा हस्तिशावकाः, सिंहकिशोरकेण सिंहशावकेन क्रमाभ्यां चरणाभ्यां आक्रान्ता इव सन्तः, चलितुमपि न शेकुः, किं पुनः प्रसर्तुमिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) एकैकेनेति। कृपाणप्रहारेण तरवारेराघातेन। लुलाव चिच्छेद। अत्रोपमालङ्कारः।

(ज) सकलेति। सकला राजन्यवंशाः क्षत्रियकुलान्येव वंशा वेणवस्तेषां वनस्य समूहस्य दावानलो वनवह्निस्तस्य, सर्वक्षत्रियान्तकारिण इत्यर्थः, परशुरामस्येव अस्य चन्द्रापीडस्य नाराचा लौहमयबाणाः, शिखरिशिलातलभिदः पर्वतप्रस्तरविदारिणः। अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकसङ्कीर्णोपमालङ्कारः।

উল্লম্ফন, আরোহণ, রতিশাস্ত্র, ইন্দ্রজালবিদ্যা, উপাখ্যান, নাটক, আখ্যায়িকা, কাব্য, মহাভারত, পুরাণ, ইতিহাস, রামায়ণ, সকলপ্রকার অক্ষরপরিচয়, সকল দেশীয় ভাষাজ্ঞান, সকলপ্রকার সঙ্কেত, সর্ব্ববিধ শিল্পকার্য্য ছন্দঃশাস্ত্র এবং অন্যান্য কলাবিদ্যা—এই সমস্ত বিষয়েই চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত নিপুণতা লাভ করিয়াছিলেন।

(ঙ) চন্দ্রাপীড় তখন সর্ব্বদাই শিক্ষা করিতেছিলেন, কিন্তু সেই অবস্থাতে সেই শৈশবকালেই ভীমসেনের ন্যায় তাঁহার, সকল লোকের বিস্ময়জনক স্বাভাবিক অত্যন্ত দৈহিক বল প্রকাশ পাইয়াছিল। (চ) চন্দ্রাপীড় ইচ্ছানুসারে খেলা করিতে করিতেও হস্তদ্বারা কর্ণযুগল আকর্ষণ করিয়া ধরিলে, হস্তিশাবকগণ অবনতদেহ হইয়া সিংহশাবক কর্ত্তৃক আক্রান্ত হইয়াই যেন চলিতেও পারিত না। (ছ) চন্দ্রাপীড় এক একটি তরবারির আঘাতে মৃণালদণ্ডের ন্যায় এক একটি তালবৃক্ষ ছেদন করিতেন। (জ) সকল ক্ষত্রিয়-বংশের দাবানল পরশুরামের ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের লৌহময় বাণসকল পর্ব্বতের পাষাণতল বিদারণ

---

(१) सहजाश्चर्यं...। (२) शैशवमेव। (३) लोकविस्मयजननी।

(४)...आलम्बित, आकुञ्चित...। (५) सिंहकिशोर...। (६) बाल एव तालतरून्।

संवाहनयोग्येन चायोदण्डेन श्रममकरोत्। (झ) ऋते च महाप्राणतायाः सर्वाभिरन्याभिर्विद्याभिः (१) अनुचकार तं वैशम्पायनः। (ञ) चन्द्रापीडस्य तु सकल-कला-कलाप-परिचय-बहुमानेन शुकनास-गौरवेण सहपांशुक्रीडनया सहसंवर्द्धनतया च सर्वविस्रम्भस्थानं द्वितीयमिव हृदयं वैशम्पायनः परं मित्रमासीत्। (ट) निमेषमपि तेन विना स्थातुमेकाकी न शशाक। वैशम्पायनोऽपि तमुष्णकरमिव वासरोऽनुगच्छन् क्षणमपि विरहयाञ्चकार। (ठ)

एवं तस्य सर्वविद्यापरिचयमाचरतश्चन्द्रापीडस्य त्रिभुवनविलोभनीयोऽमृतरस इव सागरस्य, सकललोक-हृदय-नयनानन्द-(२) जननश्चन्द्रोदय इव प्रदोषस्य,

(झ) दशेति। अयोदण्डेन लौहमुद्गरेण। श्रमं व्यायामं।

(ञ) ऋत इति। महाप्राणतया महाबलवत्त्वात् ऋते विना। "दिगितरर्त्तेऽन्ये"ति पञ्चमी। चन्द्रापीडसमानो विद्वानभूदिति सरलार्थः।

(ट) चन्द्रेति। सकलानां कलानां विद्यानां कलापे समूहे परिचयेन विशेषज्ञानलाभेन यो बहुमानः सम्मानस्तेन, शुकनासगौरवेण शुकनासं प्रति पूज्यत्वज्ञानेन, सह पांशुक्रीडनया एकत्र धूलिखेलया, सह संवर्द्धनतया एकत्र वृद्धिं प्राप्ततया च हेतुना, वैशम्पायनः चन्द्रापीडस्य द्वितीयं हृदयमिव सर्वविस्रम्भस्थानं सकलविश्वासाश्रयभूतम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) निमेषमिति। तेन वैशम्पायनेन। वासरो दिवसः उष्णकरं सूर्यमिव तं चन्द्रापीडं। विरहयाञ्चकार तत्याज। रहित्यादिः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ड) एवमिति। सागरस्य अमृतरसः पीयुषद्रव इव। त्रिभुवनं विलोभयति विशेषेण मोहयतीति सः "कृत्यल्युटोऽन्यत्रापी"ति कर्त्तर्य्यनीयः। वक्ष्यमाणस्य यौवनारम्भ इत्यस्य विशेषणान्येतानि। प्रदोषस्य रजनी-

করিত। (ঝ) এবং দশজন পুরুষে যে লৌহদণ্ড বহন করিতে পারে, চন্দ্রাপীড় সেই লৌহদণ্ডদ্বারা ব্যায়াম করিতেন। (ঞ) বৈশম্পায়ন অত্যন্ত শারীরিক বল ভিন্ন অন্য সকল বিদ্যাতেই চন্দ্রাপীড়ের অনুকরণ করিয়াছিলেন। (ট) সকল বিদ্যাতে বিশেষ জ্ঞানলাভ করায় নিজের সেই সম্মানবশতঃ, পিতা শুকনাসের প্রতি গৌরববশতঃ, এক সঙ্গে ধূলিখেলা করায় এবং একত্র বর্দ্ধিত হওয়ায় বৈশম্পায়ন, চন্দ্রাপীড়ের দ্বিতীয় হৃদয়ের ন্যায় সকলপ্রকার বিশ্বাসের পাত্র পরম বন্ধু ছিলেন। (ঠ) চন্দ্রাপীড় বৈশম্পায়নকে ত্যাগ করিয়া একাকী এক নিমেষকালও থাকিতে পারিতেন না। এবং দিন যেমন সূর্য্যের অনুগমন করে অথচ ক্ষণকালও তাঁহাকে ত্যাগ করে না, সেইরূপ বৈশম্পায়নও চন্দ্রাপীড়ের অনুগমন করতঃ ক্ষণকালও তাঁহাকে ত্যাগ করিতেন না।

(ড) চন্দ্রাপীড় এই ভাবে সমস্ত বিদ্যা অভ্যাস করিতেছিলেন, এই সময় তাঁহার যৌবনকাল উপস্থিত হইল; সেই নব যৌবন, সমুদ্রের অমৃতের ন্যায় জগতের লোভজনক,

(१) कलाभिः। (२) ...हृदयानन्द...।

बहुविध-राग-विकार-भङ्गुरः सुरधनुःकलाप इव जलधरसमयस्य, मकर-ध्वजायुधभूतः कुसुमप्रसव इव कल्पपादपस्य, अभिनवाभिव्यज्यमान-राग-रमणीयः सूर्य्योदय इव कमलवनस्य, विविध-लास्य-विलास-योग्यः कलाप इव शिखण्डिनो यौवनारम्भः प्रादुर्भवन् रमणीयस्यापि द्विगुणां रमणीयतां पुपोष। (ड) लब्धावसरः सेवक इव (१) निकटीबभूवास्य मन्मथः। (ढ) लक्ष्म्या सह वितस्तार वक्षःस्थलम्। बन्धुजनमनोरथैः सहापूर्य्यतोरुदण्डद्वयम्। अरि-जनेन सह तनिमानमभजत मध्यभागः। त्यागेन सह प्रथिमानमाततान

सुखस्य। जलधरसमयस्य वर्षाकालस्य, सुरधनुःकलाप इव इन्द्रचापसमूह इव बहुविधा रागविकारा विषया-भिलाषरूपविक्रतयः नीलपीतादिरञ्जनवर्णमिश्रणानि च यस्मिन् सः, तथा भङ्गुरो विनश्वरः। तयोः कर्म्म-धारयः। कल्पपादपस्य कुसुमप्रसव इव पुष्पोद्गम इव, मकरध्वजायुधभूतः कन्दर्पास्त्रस्वरूपः, उभयथापि कामपीड़ाजननादिति भावः। कमलवनस्य सूर्य्योदय इव, अभिनवं अभिव्यज्यमान आविर्भवन् यो रागो रमणीष्वनुरागो रक्तिमा च तेन रमणीयः। तथा शिखण्डिनो मयूरस्य कलापः पुच्छदेश इव, विविधानां लास्यानां नृत्यानामिव विलासानां "धीरा दृष्टिर्गतिश्चित्रा विलासे सस्मितं वचः" इत्युक्तलक्षणानां विभ्रमाणां योग्य उत्पादने समर्थः। एवमनेन प्रकारेण सर्वासां विद्यानां परिचयमभ्यासं आचरतः कुर्वतः तस्य चन्द्रापीड़स्य यौवनारम्भः प्रादुर्भवन्नित्यन्वयः। पुपोष चकार। अत्र पूर्णा मालोपमालङ्कारः।

(ड) लब्धेति। मन्मथो मदनः सेवकः पादसंवाहनादिकरः परिचारक इव लब्धावसरो यौवनो-दयादन्यान्यलोकागमाच्च प्राप्तावकाशः सन्। अस्य चन्द्रापीड़स्य। अत्रापि पूर्णोपमालङ्कारः।

(ढ) लक्ष्म्येति। लक्ष्म्या शरीरशोभया। वितस्तार विस्तीर्णं बभूव। इतः प्रभृति 'स्वरेण सह गम्भीरतामाजगाम हृदय'मित्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये सहोक्तिरलङ्कारः। बन्धुजनानां मनोरथैः 'कदा चन्द्रापीड़ो युवा भविष्यति' इत्यभिलाषैः। अपूर्य्यत पूर्णं बभूव। मध्यभागः कटिदेशः। तनीभाव-

---

প্রদোষকালের চন্দ্রোদয়ের ন্যায় সকল লোকের হৃদয় ও নয়নের আহ্লাদকারী, বর্ষাকালের ইন্দ্রধনুর ন্যায় নানাবিধ রাগবিকার-সমন্বিত (নানাবিষয়ের অভিলাষবিশিষ্ট, পক্ষান্তরে—নীলপীতাদি নানাবর্ণমিশ্রিত) ও অচিরস্থায়ী, কল্পবৃক্ষের পুষ্পবিকাসের ন্যায় কন্দর্পের অস্ত্রস্বরূপ, পদ্মবনের সূর্য্যোদয়ের ন্যায় নূতন প্রকাশমান রাগে (রমণীর প্রতি অনুরাগে, পক্ষান্তরে রক্তবর্ণে,) রমণীয় এবং ময়ূরের পুচ্ছের ন্যায় নৃত্যতুল্য বিবিধ বিলাসের উপযোগী হইয়াছিল; আর চন্দ্রাপীড় স্বভাবতই সুন্দর হইলেও সেই নবযৌবন তাঁহার দ্বিগুণ সৌন্দর্য্য বর্দ্ধিত করিয়াছিল। (ঢ) এই সময় শুশ্রূষাকারী সেবকের ন্যায় কন্দর্প, অবসর পাইয়া তাঁহার নিকটবর্ত্তী হইলেন। (ণ) আর সেই সময়ে চন্দ্রাপীড়ের শরীর-শোভার সহিত বক্ষঃস্থল বিস্তার পাইতে লাগিল বন্ধুজনের অভিলাষের সহিত ঊরুযুগল পূর্ণ হইয়া উঠিল, শত্রুগণের সহিত কটিদেশ কৃশ হইতে লাগিল, ত্যাগশক্তির সহিত নিতম্বদেশ বিস্তার পাইতে

---

(१) अनुसेवकः, नवसेवकः।

लितस्कन्धभागः। प्रतापेन सहाकरोह रोमराजिः। अहित-कलत्रालक-लताभिः सह प्रलम्बतामुपययौ भुजयुगलम्। चरितेन सह धवलतामभजत लोचन-युगलम्। आज्ञया सह गुरुर्बभूव भुजशिखरदेशः (१)। स्वरेण सह गम्भीरतामाजगाम हृदयम्। (थ)

एवञ्च (२) क्रमेण समारूढयौवनारम्भं परिसमाप्त-सकल-कला-विज्ञानमधीताशेषविद्यञ्चावगम्यानुमोदितमाचार्य्यैश्चन्द्रापीडमानेतुं राजा बलाधिकृतं बलाहकनामानमाहूय बहु (३) तुरगबल-पदाति-परिवृतमतिप्रशस्तेऽहनि प्राहिणोत्। (त) स गत्वा विद्यागृहं द्वारपैः (४) समावेदितः प्रविश्य (५)

लघिमा तं लघुत्वम्। त्यागेन दानेन। पृथोर्भावः प्रथिमा तं, विशालताम्, आततान लेभे धातूनामनेकार्थत्वान्न नेयार्थत्वदोषः। अहितकलत्राणां शत्रुस्त्रीणां अलकलताभिः लतावल्लम्बमानचूर्णकुन्तलैः। प्रलम्बता दीर्घता आलम्बितत्वञ्च। भाविभर्त्तृबधभावनया वैरिवनिताभिः केशानामसंयमनादिति भावः। चरितेन चरित्रेण। धवलता बाल्यचापल्यदोषराहित्यं शुभताच। गुरुराज्ञापक्षे गौरववती सर्वेषां शिरोधार्य्येत्यर्थः, पक्षान्तरे तु गुरुर्विशालः। भुजशिखरदेशः स्कन्धभागः। गम्भीरता मन्द्रत्वं धीरत्वञ्च।

(त) एवञ्चेति। राजा तारापीडः। समारूढः समुत्पन्नो यौवनारम्भो यस्य तम्, परिसमाप्तं सकलानां कलानां नृत्यगीतादीनां विज्ञानं शिक्षया ज्ञानलाभो यस्य तम्, अधीता अशेषाः समस्ता विद्या येन तम्, आचार्य्यैः शिक्षकैः अनुमोदितं गन्तुमनुज्ञातं बलाधिकृतं सैन्याध्यक्षं। बहुभिः तुरगबलैरश्वारोहिसैन्यैः पदातिभिश्च सैन्यैः परिवृतं। प्राहिणोत् प्रेरितवान्।

(थ) स इति। स बलाहकः। द्वारपैर्द्वारपालैः समावेदितः स्वसन्निधावुपसर्त्तुं राजपुत्रस्यानुमति

লাগিল, প্রতাপের সহিত রোমরাজি উৎপন্ন হইতেছিল, শত্রু-স্ত্রীগণের কেশকলাপের সহিত বাহুযুগল দীর্ঘতা লাভ করিতে লাগিল, চরিত্রের সহিত নয়নযুগল নির্ম্মল হইয়া উঠিল আজ্ঞার সহিত স্কন্ধদেশ বিস্তৃত হইতে লাগিল, এবং কণ্ঠস্বরের সহিত হৃদয় গম্ভীরতা লাভ করিতে লাগিল।

(ত) চন্দ্রাপীড়ের যৌবনসময় উপস্থিত, সমস্ত শিল্পকলা শিক্ষা সমাপ্ত হইয়াছে এবং অন্য সকল বিদ্যাও অধ্যয়ন করা হইয়াছে আর শিক্ষকগণও বিদ্যালয় হইতে যাইবার অনুমতি দিয়াছেন, ক্রমে ইহা জানিয়া মহারাজ তারাপীড়, চন্দ্রাপীড়কে আনিবার নিমিত্ত বলাহকনামে সেনাপতিকে আহ্বান করিয়া আনিয়া বহুতর অশ্বারোহী ও পদাতিসৈন্য-পরিবেষ্টিত করিয়া অতিপ্রশস্ত দিনে সেই বিদ্যালয়ে প্রেরণ করিলেন।

(থ) বলাহক বিদ্যালয়ে যাইয়া উপস্থিত হইলেন, তদনন্তর দৌবারিকগণ রাজপুত্রের নিকট যাইয়া ফিরিয়া আসিয়া জানাইল যে, 'রাজপুত্র আপনাকে প্রবেশ করিবার অনুমতি

(१) शिखरदेशः। (२) एवं। (३) बहुल...। (४) द्वास्थैः। (५) प्रविशितः।

क्षितितल-विलम्बित-(१) चूडामणिना शिरसा प्रणम्य स्वभूमिसमुचिते राज-समीप इव सविनयमासने राजपुत्रानुमतो न्यषादत्। (थ) स्थित्वा च मुहूर्त्तमात्रं बलाहकश्चन्द्रापीडमुपसृत्य व्यजिज्ञपत्-(२)—"कुमार! महाराजः समाज्ञापयति—'पूर्णा नो मनोरथाः, अधीतानि शास्त्राणि, शिक्षिताः सकलाः कलाः, गतोऽसि (३) सर्वायुधविद्यासु (४) परां प्रतिष्ठाम्, अनुमतोऽसि निर्गमाय विद्यागृहात् सर्वाचार्य्यैः। (द) उपगृहीतशिक्षं गन्धगजकुमारकमिव वारि-विनिर्गतं (५) अधिगत-सकल-कला-कलापं (६) पौर्णमासीशशिनमिव नवोद्गतं (७) पश्यतु त्वां जनः। (ध) व्रजन्तु सफलतामतिचिर-दर्शनोत्कण्ठितानि

मीतेति विज्ञापितः। क्षितितले विलम्बितः संसक्तश्चूडामणिर्यस्य तादृशेन शिरसा। स्वभूमौ निजोपयुक्त-स्थाने राजपुत्रस्य वामपार्श्वे इत्यर्थः समुचिते योग्ये राजपुत्रासनात् किञ्चिन्नीचे इति तात्पर्य्यं आसने। राजस्तारापीडस्य समीप इव।' अत्रोपमालङ्कारः।

(द) स्थित्वेति। नोऽस्माकं मनोरथा अभिलाषाः पूर्णाः। कथमित्याह अधीतानीत्यादि। परां सुत्तमां प्रतिष्ठां शिक्षाजनितगौरवम्। "प्रतिष्ठा गौरवे स्थितौ" इत्यादि मेदिनी।

(ध) उपेति। वारेर्गजबन्धनस्थानाद्विनिर्गतं वहिर्भूतं। "वारिर्वाग्गजबन्धन्योः स्त्री क्लीवेऽम्बुनि बालके।" इति मेदिनी। अधिगतः प्राप्तः सकलानां कलानां कलाविद्यानां षोडशभागानाञ्च कलापः समूहो येन तम्। अत्र प्रथमा उपमा द्वितीया च पूर्णोपमा इत्युभयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

দিয়াছেন।' পরে বলাহক প্রবেশ করিয়া মস্তক অবনত করিয়া রাজপুত্রকে প্রণাম করিলেন। তখন তাঁহার চূড়ামণি ভূতলে সংলগ্ন হইল; তদনন্তর তিনি মহারাজ তারাপীড়ের নিকটে যে ভাবে উপবেশন করিয়া থাকেন, সেই ভাবে রাজপুত্রের অনুমতি অনুসারে নিজের উপযুক্ত স্থানে উপযুক্ত আসনে বিনীতভাবে উপবেশন করিলেন। (দ) বলাহক কিছুকাল থাকিয়া চন্দ্রাপীড়ের নিকটে যাইয়া জানাইলেন—"কুমার! মহারাজ আদেশ করিতেছেন—যে, 'আমাদের সকল অভিলাষ পূর্ণ হইয়াছে; কারণ—তুমি সকল শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াছ, সমস্ত শিল্পকলা শিক্ষা করিয়াছ, সকল অস্ত্র-বিদ্যাতেও অত্যন্ত প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছ, আবার শিক্ষকগণও বিদ্যালয় হইতে যাইবার অনুমতি দিয়াছেন। (ধ) সুতরাং বন্ধনস্থান হইতে নির্গত শিক্ষিত গন্ধহস্তিশাবকের ন্যায় এবং সকল কলা-পরিপূর্ণ নবোদিত পূর্ণিমার চন্দ্রের ন্যায় এখন তোমাকে লোকে দর্শন করুক (এখন তুমি নির্গত হইয়া আসিবে)। (ন) তোমাকে দর্শন করিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত জনসাধারণের নয়ন এখন সফলতা লাভ

(१)...अवलम्बित, चुम्बित...। (२) व्यजिज्ञापयत्। (३) गतः।
(४) सर्वासु। (५) वारिबन्धाद्विनिर्गतं। (६)...कलापकं। (७) उद्गतं।

लोकलोचनानि। (न) दर्शनं प्रति ते समुत्सुकान्यतीव सर्वाण्यन्तःपुराणि। (प) अयमत्रभवतो दशमो वत्सरः (१) विद्यागृहमधिवसतः, प्रविष्टोऽसि षष्ठमनुभवन् वर्षम्, एवं सम्पिण्डितेनाधुना (२) षोड़शेन प्रवर्द्धसे, तदद्य प्रभृति निर्गत्य दर्शनोत्सुकाभ्यो दत्त्वा दर्शनमखिलाभ्यो मातृभ्यः, (३) अभिवाद्य च गुरून्, (४) अपगतनियन्त्रणो यथासुखमनुभव राज्यसुखानि नवयौवनललितानि च। (फ) सम्मानय राजलोकं, पूजय द्विजातीन्, परिपालय प्रजाः, आनन्दय बन्धुवर्गम्। (ब) अयञ्च ते (५) त्रिभुवनैकरत्नमनिल-गरुड़-समजव इन्द्रायुधनामा तुरङ्गमः प्रेषितो महाराजेन द्वारि तिष्ठति। एष खलु देवस्य पारसीकाधिपतिना त्रिभुवनाश्चर्य्यमिति कृत्वा 'जलनिधिजलादुत्थितमयोनिजमिदमश्वरत्नमासादितं मया महाराजाधिरोहणयोग्य' इति सन्दिश्य प्रहितः। (भ)

(प) दर्शनमिति। अन्तःपुराणि अन्तःपुरस्थाः स्त्रिय इत्यर्थः।

(फ) अयमिति। अत्रभवतः परमश्लिष्टितया अपरसाधारणमाननीयस्य। "तिष्ठ तत्रभवान् पूज्यस्तथैवात्रभवानपि।" इति कोषः। सम्पिण्डितेन सङ्कलितेन। षोड़शेन वर्षेण। अपगतं नियन्त्रणं पूर्ववन्निरोधो यस्य सः। नवयौवनस्य ललितानि विलासव्यापारान्।

(ब) सम्मानयेति। राजलोकं अधीनमित्रनृपतिवर्गम्। द्विजातीन् ब्राह्मणान्।

(भ) अयमिति। त्रिभुवने एकं अद्वितीयं रत्नं अश्वजातिषूत्कृष्ट इत्यर्थः, अनिलगरुड़योर्वायुगरुड़योः समः समानो जवो वेगो यस्य सः। ते तव निमित्तं प्रेषितः। पारसीकाधिपतिना पारसीक-

---

করুক। (প) এবং অন্তঃপুরস্থ সকল রমণীগণ তোমাকে দর্শন করিবার নিমিত্ত অত্যন্ত উৎকণ্ঠিত হইয়াছেন। (ফ) আর তুমি বিদ্যালয়ে বাস করিতেছ, এই তাহার দশম বৎসর চলিতেছে এবং তুমি ষষ্ঠ বৎসর বয়সে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়াছিলে, অতএব ইহার সঙ্কলনে, এখন তুমি ষোড়শ বৎসর-বয়স্ক হইয়া বৃদ্ধি লাভ করিয়াছ. অতএব অদ্য হইতে নির্গত হইয়া, দর্শনের নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত সকল মাতৃগণকে দর্শন দান করিয়া, গুরুজনদিগকে অভিবাদন করিয়া, [illegible] রাজ্যসুখ ও নবযৌবনের ভোগবিলাস যথেচ্ছভাবে অনুভব কর। (ব) রাজগণের [illegible] কর, ব্রাহ্মণদিগের পূজা কর, প্রজাদিগকে পালন কর এবং আত্মীয়-স্বজনকে আনন্দিত কর।' (ভ) ত্রিভুবনের মধ্যে রত্নস্বরূপ এবং বায়ু ও গরুড়ের তুল্য বেগবান্ ইন্দ্রায়ুধনামে একটিঅশ্ব আপনার নিমিত্ত মহারাজ পাঠাইয়া দিয়াছেন, সেই অশ্বটি দ্বারদেশে রহিয়াছে। 'সমুদ্রের জল হইতে উত্থিত অযোনিজাত এই অশ্বরত্নটি আমি পাইয়াছি, ইহা মহারাজেরই (তারাপীড়েরই) আরোহণের যোগ্য' এইরূপ খবর দিয়া এবং এই অশ্বটি ত্রিভুবনের মধ্যে

---

(१) संवत्सरः। (२) अमुना। (३) अखिलमातृभ्यः,। (४) गुरुणा।

(५) क्वचित् 'ते' इति नास्ति।

दृष्ट्वा च निवेदितं लक्षणविद्भिः—"यान्युच्चैःश्रवसः श्रूयन्ते लक्षणानि तैरयमुपेतः। नैवंविधो भूतो भावी वा तुरङ्गमः" इति। तदयमनुगृह्यतामधिरोहणेन। (म) इदञ्च मूर्द्धाभिषिक्त-(१) पार्थिवकुल-प्रसूतानां विनयोपपन्नानां शूराणामभिरूपाणां कलावताञ्च (२) कुलक्रमागतानां राजपुत्राणां सहस्रं परिचारार्थं (३) अनुप्रेषितं तुरङ्गमारूढं (४) द्वारि प्रणामलालसं प्रतिपालयति।" इत्यभिधाय विरतवचसि (५) बलाहके चन्द्रापीड़ः पितुराज्ञां शिरसि कृत्वा नवजलधर-ध्वान-गम्भीरया गिरा "प्रवेश्यतामिन्द्रायुध" इति निर्जिगमिषुरादिदेश। (य)

देवराजेन। महाराजस्य तारापीड़स्य तव अधिरोहणयोग्यं आरोहणोचितं। इति जलनिधिजलादित्यादिकं सन्दिश्येत्यर्थः। देवस्य तारापीड़स्य समीपे एष तुरङ्गमः प्रहितः प्रेरितः।

(म) ननु सर्वः खल्वात्मीयं प्रशंसतीति पारसीकराजप्रशंसाया नास्ति विशेषगौरवमित्याह दृष्टे ति। लक्षणविद्भिरवस्थितैरस्मल्लक्षणाभिज्ञैः। उच्चैरुन्नते श्रवसी कर्णौ यस्य तस्य देवराजाश्वस्य। इति सम्भावयाम इति शेषः। अतएव पारसीकराजवाक्यं सत्यमेवेति भावः।

(य) इदमिति। ब्राह्मणेभ्यः क्षत्रियासु जाता मूर्द्धाभिषिक्ताः। यथाविधि राजेऽभिषिक्ता मूर्द्धाभिषिक्ता इत्यपि सम्प्रदायः। तादृशा ये पार्थिवा राजानस्तेषां कुले प्रसूता उत्पन्नास्तेषाम्। अभिरूपाणां मनोहराकृतीनाम्। कलावतां शिक्षितकलाविद्यानां, कुलक्रमागतानां वंशपरम्परयागतानां। एषां पूर्वपुरुषा यथा भवतः पूर्वपुरुषाणां परिचर्य्यां कृतवन्तः, इमेऽपि तथैव भवन्तमागता इति भावः। परिचारार्थं परिचर्य्यानिमित्तं। अनुप्रेषितं महाराजेन मत्पश्चात् प्रेरितं। प्रणामे भवतो नमस्कारे लालसं नितान्ता-

একটি আশ্চর্য্য এইরূপ মনে করিয়া পারস্যরাজ, মহারাজের (তারাপীড়ের) নিকট এই অশ্বটি পাঠাইয়া দিয়াছেন। (ম) এই দেশের অশ্বলক্ষণাভিজ্ঞেরাও দেখিয়া জানাইয়াছেন যে, 'উচ্চৈঃশ্রবার যতগুলি লক্ষণ শুনা যায়, সেই সমস্ত লক্ষণ-সম্পন্নই এই অশ্ব; সুতরাং আমরা মনে করি, এইরূপ অশ্ব পূর্ব্বেও কখন জন্মে নাই কিংবা ভবিষ্যতেও জন্মিবে না।' অতএব আপনি আরোহণ করিয়া ইহাকে অনুগৃহীত করুন। (য) অভিষিক্ত রাজ
বংশে উৎপন্ন, বিনয়গুণ-সম্পন্ন, বলবান্, সুন্দরাকৃতি, শিল্পকলাভিজ্ঞ ও কুলক্রমাগ
একসহস্র রাজপুত্রকে আপনার পরিচর্য্যার নিমিত্ত মহারাজ আমার পরে প্রেরণ করিয়াছেন; ইঁহারা অশ্বে আরোহণ করিয়া, আপনাকে নমস্কার করিবার অভিলাষী হইয়া দ্বারদেশে প্রতীক্ষা করিতেছেন।" এই কথা বলিয়া বলাহক বিরত হইলে, চন্দ্রাপীড় পিতার আদেশ শিরোধার্য্য করিয়া, বিদ্যালয় হইতে নির্গত হইবার অভিলাষী হইয়া জলদগম্ভীর-স্বরে আদেশ করিলেন—"ইন্দ্রায়ুধকে প্রবেশ করান।"

(१) मूर्द्धाभिषिक्तानां। (२) कुलवतां। (३) परिवारार्थं। (४)···अधिरूढं। (५) अभिधाय विरराम।

अथ वचनानन्तरमेव प्रवेशितम्, उभयतः खलीन-कनक-(१) कटकाव-लग्नाभ्यां पदे पदे कृताकुञ्चनप्रयत्नाभ्यां पुरुषाभ्यामाकृष्यमाणम्, अतिप्रमाणम्, ऊर्द्ध्व-कर-पुरुष-प्राप्य-पृष्ठभागम्, (क) आपिबन्तमिव सम्मुखागतमखिलमाकाशम्, (ख) अतिनिष्ठुरेण मुहुर्मुहुः प्रकम्पितोदररन्ध्रेण ह्रेषारवेण पूरितभुवनोदर-विवरेण निर्भर्त्सयन्तमिवालीक-वेग-दुर्विदग्धं गरुत्मन्तम्, (ग) अतिदूरम-वनमता प्रतिक्षण-मतिदूरमुन्नमता च जव-निरोध-स्फीत-रोष-घुरघुरायमाण-घोर-घोणेन शिरोभागेन (२) निज-जव-दर्प-(३) वशादुल्लङ्घनार्थमाकलयन्तमिव

भिलाषुकं सत्। प्रतिपालयति भवन्तं प्रतीक्षते। नवजलधरध्वानवत् नूतनमेघगर्जनवत् गम्भीरा तया। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। निर्जिगमिषुः विद्यालयान्निर्गन्तुमिच्छुः।

(क) अथेति। अथेति वाक्यान्तरारम्भे, आनन्तर्यार्थस्य तु वचनानन्तरमेवेत्यनेनैवाभिधानात्। वचना-नन्तरमेव चन्द्रापीडस्यादेशवाक्यानन्तरमेव, प्रवेशितं बलाहकादेशेनानीतं इन्द्रायुधमद्राक्षीदिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि इन्द्रायुधमित्यस्य विशेषणानि। खे मुखविवरे लीन इति खलीनः कविका स एव कनककटकं सुवर्णवलयं तस्मिन् अवलग्नाभ्यां संसक्ताभ्यां धृतकविकाभ्यामित्यर्थः, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं कृतं आकुञ्चने आकृष्यानयने प्रयत्नो याभ्यां ताभ्यां, आकृष्यमाणं आकृष्य आनीयमानं, प्रमाणं साधारणमेव परिमाणमतिक्रान्तमित्यतिप्रमाणं, अतएव ऊर्द्ध्वकरेण उन्नमितहस्तेन पुरुषेण प्राप्यः स्पृश्यः पृष्ठ-भागो यस्य तं अतीवोन्नतमित्यर्थः।

(ख) आपिबेति। आपिबन्तमिव मुहुर्मुहुर्मुखव्यादानादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) अतीति। अतिनिष्ठुरेण नितान्तकर्कशेन, मुहुर्मुहुः प्रकम्पितं उदररन्ध्रं येन तेन, तथा पूरितं भुवनोदरविवरं जगन्मध्यं येन तेन, ह्रेषारवेण अश्वध्वनिना, अलीकवेगेन मिथ्याजवेन दुर्विदग्धं दुरभि-मानिनं गरुत्मन्तं गरुडं निर्भर्त्सयन्तं तिरस्कुर्वन्तमिव, आत्मनस्तदधिकयथार्थवेगवत्त्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) अतीति। प्रतिक्षणं क्षणे क्षणे अतिदूरं अत्यन्तं अवनमता अधोगच्छता, अतिदूरमुन्नमता अत्यन्तमूर्द्ध्वं गच्छता च, जवनिरोधेन दारककर्त्तृकवेगावरोधेन स्फीतो वृद्धिं प्राप्तो यो रोषः क्रोधस्तेन घुरघुरायमाणा 'घुरघुर' इत्येवं शब्दं कुर्वाणा घोरा भयानका घोणा नासिका यस्य तेन, शिरोभागेन मस्तकदेशेन

(ক) রাজপুত্রের আদেশের পরই বলাহক সেই অশ্বকে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করাইলেন, দুইজন লোক দুই দিকে থাকিয়া, কড়িয়ালি ধরিয়া, প্রতিপদক্ষেপে আকর্ষণে যত্ন করিয়া টানিয়া আনিতেছিল; তাহার আকৃতি অতিবৃহৎ, কোন পুরুষ (দণ্ডায়মান হইয়া) ঊর্দ্ধে হস্ত প্রসারণ করিয়া তাহার পৃষ্ঠদেশ পাইতে পারে, (খ) সেই অশ্ব বারংবার মুখব্যাদান করায় সম্মুখবর্ত্তী সমস্ত আকাশ যেন পান করিতেছিল। (গ) বারংবার উদর কাম্পিত করিয়া নির্গত, জগতের মধ্য-পরিপূরক ও অত্যন্ত কর্কশ হ্রেষারবে (অশ্বের শব্দের নাম—

(१) खलीनकटक...। (२) मुखेन। (३) निजदर्पवशात्, निजजवदर्पावेशात्।

ত্রিভুবনম্, (ঘ) অসিত-পীত-হরিত-পাটলাভিরাখণ্ডল-চাপানুকারিণীভির্লেখাভিঃ কল্মাষিত-(১) শরীরম্, আস্তীর্ণ বিবিধবর্ণ-(২) কম্বলমিব কুঞ্জরকলভম্, কৈলাস-তটাঘাত-ধাতু-ধূলি পাটলমিব হরবৃষভম্, অসুর-রুধির-পঙ্কলেখা-লোহিত-সটমিব পার্ব্বতীসিংহম্, (ঙ) রংহঃসঙ্ঘাতমিব মূর্ত্তিমন্তম্, (চ) অনবরত-পরিস্ফুরত্প্রোথপুটোন্মুক্ত সূত্কারেণ (৩) অতিজবাপীতমনিলমিব নাসিকাবিবরে-

---

করণেন, নিজজবদর্পবশাৎ স্বকীয়বেগাভিমানবশাৎ উল্লঙ্ঘনার্থং অতিক্রমণার্থং ত্রিভুবনং আকলয়ন্তমিব কিংপরিমাণমিতি বিতর্কয়ন্তমিব। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ঘ) অসিতেতি। অসিতাঃ কৃষ্ণাঃ, পীতাঃ, হরিতাঃ পাটলাঃ শ্বেতরক্তাশ্চ তাভিঃ, অতএব আখণ্ডল-চাপানুকারিণীভিঃ ইন্দ্রধনুঃসদৃশীভিঃ, লেখাভিঃ রোমরেখাভিঃ, কল্মাষিতং বিচিত্রীকৃতং শরীরং যস্য তম্। অতএব আস্তীর্ণং পৃষ্ঠোপরি পাতিতং বিবিধবর্ণং কম্বলং যস্য তং, কুঞ্জরকলভং হস্তিশাবকমিব। তথা কৈলাসস্য তটে প্রদেশবিশেষে আঘাতেন শৃঙ্গপ্রহারেণ ধাতুধূলিভিঃ নির্গতগৈরিকাদিরেণুভিঃ পাটলং শ্বেতরক্তবর্ণং হরবৃষভং শিবস্য বৃষমিব। তথা অসুরাণাং রুধিরপঙ্কলেখাভির্গাঢ়রক্তরেখাভিঃ লোহিতা রক্তবর্ণাঃ সটা জটা যস্য তং, পার্ব্বত্যা দুর্গায়াঃ সিংহমিব স্থিতম্। অত্র আর্থোপময়া বাক্যার্থহেতুককাব্যলিঙ্গেন চ সঙ্কীর্ণা মালোপমালঙ্কারঃ।

(ঙ) রংহ ইতি। রংহঃসঙ্ঘাতং বেগসমূহমিব। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(চ) অনেতি। অনবরতং পরিস্ফুরত ইতস্ততঃ সঞ্চরতঃ প্রোথপুটান্নাসিকাগ্রাৎ উন্মুক্তো যঃ সূত্কারঃ 'সূৎ' ইত্যেবং শব্দঃ তেন হেতুনা, নাসিকাবিবরেণ করণেন অতিজবেন পূর্ব্বকৃতেন নিতান্তবেগেন আপীতং সম্যক্ পীতং অনিলং বায়ুং উদ্বমন্তং নিঃসারয়ন্তমিব। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

হ্রেষা, হ্রেষা) সে যেন মিথ্যাবেগে দুরভিমানী গরুড়কে তিরস্কার করিতেছিল। (গ) তাহার মস্তক ক্ষণে ক্ষণে অত্যন্ত অবনত ও উত্থিত হইতেছিল, এবং বেগরোধ করায় অতিরিক্ত ক্রোধবশতঃ নাসিকা, 'ঘুর ঘুর' শব্দ করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল—যে, সে নিজের বেগের অহঙ্কারে ত্রিভুবন উল্লঙ্ঘন করিবার নিমিত্ত 'ত্রিভুবন কতটুকু' তাহা যেন মনে মনে বিবেচনা করিতেছিল; (ঘ) ইন্দ্রধনুর অনুকারী, কৃষ্ণবর্ণ, হরিদ্রাবর্ণ, হরিতবর্ণ ও শ্বেত-রক্তবর্ণের বহুতর রেখা, তাহার শরীর বিচিত্র করিয়াছিল; সুতরাং পিঠের উপরে নানাবর্ণের কম্বলসংযুক্ত হস্তিশাবকের ন্যায়, কৈলাস-পর্ব্বতের গাত্রে শৃঙ্গের আঘাত করায় নির্গত গৈরিকাদি ধাতুর রেণুতে পাটলবর্ণ শিবের বৃষের ন্যায় এবং অসুরগণের গাঢ়রক্ত সংলগ্ন হওয়ায় রক্তবর্ণ জটা-সমন্বিত দুর্গার সিংহের ন্যায় সেই অশ্বটিকে দেখা যাইতেছিল। (ঙ) মূর্ত্তিমান্ বেগ-সমূহের ন্যায় সে দণ্ডায়মান ছিল। (চ) অবিশ্রান্ত ইতস্ততঃ সঞ্চালিত নাসিকার অগ্র হইতে 'সূৎ' 'সূৎ' শব্দ নির্গত হইতেছিল, সেই জন্য বোধ হইতেছিল যে,— পূর্ব্বে অত্যন্ত বেগ-

---

(১) কল্মিষিত, কল্মষিত…। (২) আস্তীর্ণকম্বলমিব। (৩)…ফুৎকারেণ।

णोद्वमन्तम्, (घ) अन्तःस्खलित-मुखर-खलीन-खर-शिखर-क्षोभ-जन्मनो लाला-जलभुवः फेनपल्लवान् (१) उदधि-निवास-परिपीतामृतरस-गण्डूषानिवोद्गिरन्तम्, (ङ) अत्यायतं निर्म्मांसतया (२) समुत्कीर्णमिव वदनमुद्वहन्तम्, (क) आनन-मण्डल--निहितारुण--मणि-समुद्गतैरंशुकलापैरुपेतेनावसक्त--रक्त--चामरेणेव निश्चलशिखरेण कर्णयुगलेन विराजमानम्, (ख) उज्ज्वल-कनक-शृङ्खला-रचित-(३) रश्मि-कलाप-कलितया लाक्षा-लोहित-लम्ब-लोल-सटा-सन्तानया जलनिधि-

(घ) अन्तरिति। अन्तर्मुखमध्ये स्खलितः सञ्चलितः, अतएव मुखरः शब्दायमानो यः खलीनः कविका तस्य खरशिखरेण तीक्ष्णाग्रेण यः क्षोभो घर्षणं तस्माज्जन्म येषां तान्, लालाजलं मुखस्रावजलं तस्माद्भवन्ति उत्पद्यन्ते ये ते तान्, फेनपल्लवान् विस्तृतफेनान्, उदधिनिवासे समुद्रावस्थानकाले परिपीता ये अमृतरसास्तेषां गण्डूषान् मुखपूरणपरिमिताशान् उद्गिरन्तं बहिष्कुर्वन्तमिव। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) अत्येति। अत्यायतमतिदीर्घं, निर्म्मांसतया अश्वजातेः स्वभावात् देहोपयोगिमांसहीनतया समुत्कीर्णमिव सन्तक्ष्य काष्ठविशेषादुद्धृतमिव वदनं उद्वहन्तं धारयन्तम्। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) आननेति। आननमण्डले मस्तक इत्यर्थः निहितेभ्यः शोभार्थं सूत्रैर्ग्रन्थित्वा स्थापितेभ्यः अरुण-मणिभ्यः रक्तवर्णरत्नेभ्यः प्रवालादिभ्यः समुद्गतैः अंशुकलापैः किरणसमूहैः उपेतेन युक्तेन, अतएव अव-सक्तः संलग्नः रक्तो लोहितवर्णश्चामरो यस्मिन् तेनेव स्थितेन, निश्चले निष्पन्दे शिखरे अग्रभागौ यस्य तेन। अत्र रक्तचामरसंयोगोत्प्रेक्षणादगुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) उज्ज्वलेति। उज्ज्वलया कनकशृङ्खलया रचितः कल्पितो यो रश्मिकलापः प्रग्रहसमूहस्तेन कलितया बद्धया, तथा लाक्षावत् लोहितो रक्तवर्णः लम्बो दीर्घः लोलश्चञ्चलः सटासन्तानो जटासमूहो यस्यां

বশতঃ যে সকল বায়ু পান করিয়াছিল, তাহা যেন নাসিকারন্ধ্র দ্বারা নিঃসৃত করিয়া দিতেছে। (ঘ) মুখমধ্যে সঞ্চলিত কবিকার (কড়িয়ালির) তীক্ষ্ণ অগ্রভাগের ঘর্ষণে লালা হইতে বিস্তৃত ফেন উৎপন্ন হইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সমুদ্রমধ্যে নিবাসকালীন যে সকল অমৃত পান করিয়াছিল, তাহার গণ্ডূষ যেন বাহির করিয়া দিতেছে। (ঙ) অত্যন্ত দীর্ঘ এবং মাংস না থাকায় কাষ্ঠ বা প্রস্তর হইতে খোদিতের ন্যায় অবস্থিত, মুখমণ্ডল ধারণ করিতেছিল। (ক) কর্ণযুগলের অগ্রভাগ নিশ্চল ছিল, তাহার উপরে মস্তকস্থিত রক্তবর্ণ মণিসমূহের রশ্মি আসিয়া পড়িতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যেন দু'খানা রক্তবর্ণ চামর কর্ণযুগলের উপরে সংলগ্ন হইয়া রহিয়াছে। (খ) চক্‌মকে সোনার শিকলের লাগামে তাহার গলা বাঁধা ছিল গলার উপরে লা'র মত রক্তবর্ণ লম্বা লম্বা বহুতর জটা ঝুলিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে—সমুদ্রমধ্যে বিচরণ করায় যেন বহুতর প্রবাল

(१) फेनजवान्। (२) अतिनिर्म्मांसतया। (३)...रचित...।

सञ्चरण-लग्न विद्रुम-पल्लवयेव शिरोधरयोपशोभितम्, (ग) अतिकुटिल-कनक-पत्र-लता-प्रतान-भङ्गुरेण पदे पदे रणितरत्नमालेन स्थूलमुक्ताफलप्रायेण तारागणेनेव सन्ध्यारागं (१) अरुणेनाश्वालङ्कारेणालङ्कृतम्, (घ) अश्वालङ्कार-निहित-मरकतरत्न-प्रभा-श्यामायमान-देहतया गगनतल-निपतित-दिवसकर-रथ-तुरग (२) शङ्कामिवोपजनयन्तम्, (ङ) अतितेजस्वितया जव-निरोध-रोष-वशात् प्रतिरोम-कूपात् समुद्गतानि (३) सागर-परिचय-लग्नानि (४) स्वेद लव-(५) जालकानि

तया, अतएव जलनिधिसञ्चरणे पूर्वं समुद्रे विचरणकाले लग्ना: संसक्ता: विद्रुमपल्लवासक्तया विसृत-प्रवाला यस्यां तयेव, शिरोधरया ग्रीवया। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षालङ्कार:।

(घ) अतीति। अतिकुटिलानां नितान्तवक्राणां कनकपत्रलतानां स्वर्णनिर्म्मितपत्राकार-लताकाराश्व-विशेषाणां प्रतानो बाहुल्यं यत्र तच्च तत् भङ्गुरं समुदायेनापि वक्रञ्चेति तेन, पदे पदे प्रतिपदक्षेपे रणिता शब्दिता रत्नमाला यत्र तेन, स्थूलानां मुक्ताफलानां प्रायो बाहुल्यं यत्र तेन, अरुणेन रक्तवर्णेन अश्वालङ्कारेण अश्वाभरणेन अलङ्कृतं भूषितम् अतएव तारागणेन नक्षत्रसमूहेन सन्ध्यारागं सन्ध्याकालीनरक्तिमानमिव स्थितं। अत्रोपमालङ्कार:।

(ङ) अश्वेति। अश्वालङ्कारेषु निहितानां अर्पितानां मरकतरत्नानां प्रभाभि: श्यामायमानं श्यामवदाचरन् देहो यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, गगनतलात् निपतितो यो दिवसकररथस्य सूर्य्यरथस्य तुरग अश्व: तस्य शङ्कां आत्मनि भ्रमं उपजनयन्तं कुर्व्वन्तमिव स्थितम्। रविरथतुरगाणामपि श्यामत्वादतिविशालत्वाच्चेति भाव:। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(च) अतीति। अतितेजस्वितयेति च रोषोत्पत्तौ हेतु:। जवनिरोधेन पालककर्त्तृकवेगावरोधेन यो रोष: क्रोधस्तद्वशात् प्रतिरोमकूपात् समुद्गतानि उत्थितानि स्वेदलवजालकानि घर्म्मविन्दुसमूहान्, सागरपरिचयेन समुद्रमध्ये विचरणपौन:पुन्येन लग्नानि देहसंसक्तानि मुक्ताफलानि मौक्तिकानीव वहन्तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:।

লাগিয়া রহিয়াছে, এইরূপ গ্রীবাদ্বারা সে শোভা পাইতেছিল; (ঘ) রক্তবর্ণ অশ্বালঙ্কারে সে অলঙ্কৃত ছিল, সেই অলঙ্কারের মধ্যে পত্র ও লতার ন্যায় আকৃতিবিশিষ্ট অত্যন্ত বক্র সুবর্ণনির্ম্মিত বহুতর ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অংশ ছিল, আর সে অলঙ্কারগুলি প্রায় সম্পূর্ণই বক্র ছিল, প্রত্যেক পদক্ষেপে মণিময় মালার শব্দ হইতেছিল, আর তাহার মধ্যে বহুসংখ্যকই বড় বড় মুক্তা ছিল, সুতরাং নক্ষত্রসমূহে শোভিত সন্ধ্যারাগের ন্যায় সেই অশ্বটাকে দেখা যাইতেছিল। (ঙ) সেই অলঙ্কারগুলির মধ্যে স্থাপিত মরকত-মণির কিরণে তাহার দেহ শ্যামবর্ণ হওয়ায় সে যেন আকাশ হইতে নিপতিত সূর্য্যরথ-নিযুক্ত ঘোটকের ভ্রম জন্মাইতেছিল। (চ) সেই অশ্বটা অত্যন্ত তেজস্বী, অথচ তাহারই বেগ-রোধ করা হইয়াছিল; সুতরাং ক্রোধবশতঃ

---

(१) सन्ध्यारागारुणेन, सन्ध्यारागानुरागेण। (२)...तुरङ्गम...।
(३)...कूपसमुद्गतानि, कूपसमुद्गतानि। (४)...परिचयाल्लग्नानि। (५) स्वेदजलव।

वर्षन्तम्, (च) इन्द्रनीलमणि-पादपीठानुकारिभिरञ्जनशिला-घटितैरिव अनवरत-पतनोत्पतन-जनित-विषम-सुख-रवैः (१) पृथुभिः खुरपुटैर्जर्जरितवसुन्धरैर्मुरजवाद्यमिवाभ्यस्यन्तम्, (छ) उत्कीर्णमिव जङ्घासु, विस्तारितमिवोरसि, श्लक्ष्णीकृतमिव मुखे, प्रसारितमिव कन्धरायाम्, उल्लिखितमिव पार्श्वयोः, द्विगुणीकृतमिव जघनभागे, (ज) जव-(२) प्रतिपक्षमिव गरुत्मतः, त्रैलोक्यसञ्चरणसहायमिव मारुतस्य, अंशावतारमिवोच्चैःश्रवसः, वेगसब्रह्मचारिणमिव मनसः, (झ)

(छ) इन्द्रेति। इन्द्रनीलमणेर्नीलकान्तमणेः पादपीठानि अनुकर्तुं शील येषां तैः, श्यामत्वादिति भावः। अञ्जनशिलया कज्जलवत् कृष्णवर्णपाषाणेन घटितैर्निर्म्मितैरिव, अनवरतं यत् पतनं भूमाववतरणं उत्पतनं भूमेरुत्थानञ्च ताभ्यां जनितो विषमो विकटः सुखरवः अग्रभागध्वनिर्येषां तैः, पृथुभिर्विशालैः, जर्जरितवसुन्धरैर्विदारितभूतलैः खुरपुटैः, मुरजवाद्यं मृदङ्गवाद्यं अभ्यस्यन्तं शिक्षमाणमिव तादृशशब्दोत्पत्तेरिति भावः। अत्र आर्थोपमासङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) उत्कीर्णमिति। जङ्घासु जङ्घावच्छेदे उत्कीर्णमिव दारुविशेषं पाषाणं वा सन्तक्ष्य बहिष्कृतमिव, तत्र देहोपयोगिमांसाभावेन केवलास्थिमयतया प्रतीयमानत्वादिति भावः। इतः प्रभृति द्विगुणीकृतमिवेत्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। सर्वत्र विधिनेति कर्त्तृपदमूहनीयम्, अवयवेष्ववयविनः सत्त्वाङ्गीकारेणाधिकरण एव सप्तमी। जङ्घायुगलस्यातीव दीर्घतया अंशबहुत्वाभिप्रायेण बहुवचनम्। तस्य जङ्घायुगलमुत्कीर्णमिवेति सरलार्थः। एवमन्यत्रापि बोध्यम्। उरसि वक्षसि। श्लक्ष्णीकृतमिव चिक्कणीकृतमिव। कन्धरायां ग्रीवायां प्रसारितमिव आयतीकृतमिव दीर्घग्रीवत्वादिति भावः। उल्लिखितमिव उत्कीर्णमिव देहोपयोगिमांसाभावादिति भावः। जघनभागे नितम्बदेशे द्विगुणीकृतमिव, तयोरतिस्थूलत्वादिति भावः।

(झ) जवेति। गरुत्मतो गरुडस्य जवप्रतिपक्षमिव वेगे प्रतिस्पर्द्धिनमिव, तत्तुल्यवेगशालित्वादिति भावः। एवमन्यत्रापि। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अन्येष्वप्येवम्। मारुतस्य वायोः त्रैलोक्यसञ्चरणसहायमिव त्रिभुवनविचरणसहचरमिव। उच्चैःश्रवसो देवराजाश्वस्य। वेगे सब्रह्मचारिणं सतीर्थमिव।

প্রত্যেক রোমকূপ হইতে সমুত্থিত ঘর্ম্মবিন্দুসমূহ বর্ষণ করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, বহুবার সমুদ্রমধ্যে বিচরণ করায় গাত্রসংলগ্ন মুক্তাসমূহ যেন বর্ষণ করিতেছে। (ছ) বিধাতা তাহার বিস্তৃত খুরগুলিকে যেন কজ্জলের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ প্রস্তর দ্বারা নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, সুতরাং সেগুলি, নীলকান্তমণি-নির্ম্মিত পাদপীঠের অনুকরণ করিতেছিল এবং ভূতল বিদারণ করিতেছিল; অতএব অনবরত উত্থান ও পতন কর্ত্তৃক উৎপাদিত সেই খুরগুলির অগ্রভাগের বিকটশব্দে সে যেন মৃদঙ্গবাদ্য অভ্যাস করিতেছিল। (জ) বিধাতা তাহার জঙ্ঘাদ্বয় যেন কাষ্ঠ বা পাষাণ হইতে খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন, বক্ষঃস্থল যেন বিস্তৃত করিয়াছিলেন, মুখভাগ যেন পালিস করিয়া দিয়াছিলেন, গ্রীবা যেন আয়ত করিয়াছিলেন, পার্শ্বযুগলও যেন খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন এবং নিতম্বদ্বয় যেন দ্বিগুণ করিয়া নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন। (ঝ) আর সে, বেগে গরুড়ের যেন প্রতিপক্ষ, ত্রিভুবন-বিচরণে বায়ুর যেন

(१)...विषमखरमुखरवैः। (२) जय...।

हरिचरणमिव सकलवसुन्धरोल्लङ्घनक्षमम्, (ञ) वरुणहंसमिव मानस प्रचारम्, (ट) मधुमासदिवसमिव विकसिताशोकपाटलम्, (ठ) व्रतिन-मिव भस्म-सित-पुण्ड्राङ्कितमुखम्, (ड) कमलवनमिव मधु-पङ्क-पिङ्ग-केशरम्, (ढ) ग्रीष्मदिवसमिव महायाममुग्रतेजसञ्च, (ण) भुजङ्गमिव (१)

(ञ) हरीति। हरेर्वामनरूपस्य विष्णोश्चरणमिव। बलियज्ञे वामनचरणस्य सकलवसुन्धरातिक्रमणात् इन्द्रायुधस्यापि तद्‌योग्यत्वादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ट) वरुणेति। मानसवत् मनोवत् प्रचारो गतिर्यस्य तम्, पक्षे मानसे तदाख्यसरोवरे प्रचारो विचरणं यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ठ) मध्विति। मधुमासस्य चैत्रमासस्य दिवसमिव, विकसितं यदशोकं पुष्पं तद्वत् पाटलं श्वेतरक्तम्, पक्षे विकसितैरशोकैः पुष्पैः पाटलम्। पूर्णोपमा।

(ड) व्रतिनमिति। व्रतिनं किञ्चिन्नियमवन्तं श्राद्धादिवैधकर्म्मप्रवृत्तं द्विजमिव, भस्मवत् सितः शुभ्रो यः पुण्ड्रको ललाटे रोमविन्यासविशेषः, पक्षे भस्मना यः सितपुण्ड्रकं शुभ्रतिलकविशेषस्तेन अङ्कितं चिह्नितं मुखं यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ढ) कमलेति। कमलवनं पद्मवनमिव, मधुना पुष्परसेन युक्तो यः पङ्को वचादिचूर्णलेपः, पक्षे मधुपङ्को गाढमकरन्दः, तेन पिङ्गाः पिङ्गलवर्णाः केशराः स्कन्धकेशाः किञ्जल्काश्च यस्य तम्। पूर्णोपमा। अत्र वैद्यशास्त्रम् यथा—"अश्वस्य वातादिदोषशान्तये मधुयुक्तवचादिचूर्णस्य पङ्केन तनुलेपनम्।"

(ण) ग्रीष्मेति। महान् आयामो दीर्घता यस्य तम्, तथा उग्रं भयङ्करं तेजो बलं यस्य तम्, अन्यत्र तु महान्तः अन्यान्यऋत्वपेक्षया वृहत्तमाः यामाः प्रहरा यस्मिन् तम्, तथा उग्रं दारुणं तेज आतपो यस्मिन् तम्। पूर्णोपमा।

(त) भुजङ्गमिति। भुजङ्गं सर्पमिव, सदा सर्वदा गतौ गमने अभिमुखमुन्मुखं, पक्षे सदागते-र्वायोः अभिमुखं अभिमुखावस्थितम्। पूर्णोपमा।

সহচর, উচ্চৈঃশ্রবার যেন অংশাবতার এবং বেগশিক্ষায় মনের যেন সতীর্থ ছিল। (ঞ) সেই অশ্বটা, বামনরূপী নারায়ণের চরণের ন্যায় সমস্ত পৃথিবীলঙ্ঘন সমর্থ ছিল; (ট) বরুণের হংস যেমন মানস-সরোবরে বিচরণ করে, সেও তেমন মনের মতন বেগে বিচরণ করিত; (ঠ) চৈত্র মাসের দিন যেমন প্রস্ফুটিত অশোক-কুসুমে পাটলবর্ণ হয়, সেও তেমন প্রস্ফুটিত অশোক-কুসুমের ন্যায় পাটলবর্ণ ছিল; (ড) বৈধকার্য্যে প্রবৃত্ত ব্রাহ্মণের মুখমণ্ডল যেমন ভস্মদ্বারা নির্ম্মিত শুভ্রবর্ণ ত্রিপুণ্ড্রকে অঙ্কিত থাকে, তাহার মুখখানাও তেমন ভস্মের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ললাটস্থিত রোমাবর্ত্তে অঙ্কিত ছিল; (ঢ) পদ্মসমূহের কেশরগুলি যেমন তাহার গাঢ় মধুতে পিঙ্গলবর্ণ হইয়া থাকে, তাহার কেশরগুলিও (স্কন্ধের কেশগুলিও) তেমন মধু-মিশ্রিত বচ প্রভৃতির লেপে পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিল; (ণ) গ্রীষ্মকালের দিন যেমন অন্যান্য ঋতু অপেক্ষা বৃহৎ বৃহৎ প্রহর ও দারুণ রৌদ্র-সমন্বিত হয় সেই অশ্বটার শরীরও তেমন অত্যন্ত

---

(१) जयतीजघा भुजगं।

सदागत्यभिमुखम्, (त) उदधिपुलिनमिव शङ्खमालिकाभरणम्, (थ) भीतमिव स्तब्धकर्णम्, (द) विद्याधरराज्यमिव चक्रवर्तिनरवाहनोचितम्, (ध) सूर्य्योदयमिव सकलभुवनार्घार्हम्, (१) (न) अश्वातिशयमिन्द्रायुधमद्राक्षीत्। (प)

दृष्ट्वा च तमदृष्टपूर्वममानुषलोकोचिताकारमखिल-त्रिभुवन-राज्योचितमशेष-

(थ) उदधीति। उदधिपुलिनं समुद्रसैकतमिव, शङ्खमालिका कण्ठार्पिता अस्मात् स्वयमुत्थिता च या शङ्खश्रेणिः सैवाभरणं भूषणं यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(द) भीतमिति। भीतं अपरकथ्यमाननिजकार्य्यश्रवणादुद्विग्नं चौरादिजनमिव, स्तब्धौ निस्पन्दौ कर्णौ यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(ध) विद्येति। विद्याधराणां देवयोनिविशेषाणां राज्यमिव, चक्रवर्त्तिनः सार्वभौमस्य समग्रपृथिवीपतीभूतस्य नरस्य पुरुषस्य वाहने वहनकरणे उचितं योग्यम्, आत्मनोऽपि सर्वथैवोत्कृष्टत्वादिति भावः। पक्षे चक्रवर्त्तिनः सार्वभौमस्य नरवाहनस्य नरवाहनदत्तनामकस्य वत्सराजपुत्रस्य उचितं योग्यम्। पूर्णोपमा। पुरा किल उदयनाख्यस्य वत्सराजस्य महिष्यां वासवदत्तायां नरवाहनदत्तनामा पुत्रो जातः, स च विद्याधरराज्यस्य राजा बभूवेति कथासरित्सागरे विस्तृतवार्त्तानुसन्धेया।

(न) सूर्य्योदयमिति। सकलभुवनमेव अर्घो मूल्यं तस्य अर्हो योग्यस्तम्, समग्रभुवनरूपमूल्येन क्रययोग्यमित्यर्थः परमोत्कृष्टत्वादिति भावः। पक्षे सकलभुवनस्य समस्तजगद्वासिनो जनस्य अर्घे अर्घदाने अर्हं योग्यं। पूर्णोपमा।

(प) अश्वेति। अश्वेषु अतिशय उत्कर्षो यस्य तं अश्वजातिषूत्कृष्टमित्यर्थः। अद्राक्षीच्चन्द्रापीड इति शेषः।

(फ) दृष्टेति। अमानुषलोकः स्वर्गलोकस्तस्य उचितो योग्य आकारो यस्य तम्। अखिलं

দৈর্ঘ্য ও ভয়ঙ্কর বল-সমন্বিত ছিল; (ত) সর্প যেমন বায়ুর অভিমুখে অবস্থান করে, ইন্দ্রায়ুধও তেমন সর্ব্বদাই গমনের নিমিত্ত উন্মুখ হইয়া অবস্থান করিত; (থ, দ) আর সেই ইন্দ্রায়ুধ, সমুদ্র-পুলিনের ন্যায় শঙ্খমালাময় অলঙ্কারে অলঙ্কৃত এবং ভীত ব্যক্তির ন্যায় স্তব্ধকর্ণ ছিল; (ধ) বিদ্যাধররাজ্য যেমন সমগ্র পৃথিবীর অধিপতি নরবাহনদত্তের উপযুক্ত ছিল, ইন্দ্রায়ুধও তেমন যিনি সমগ্র পৃথিবীর অধিপতি, এইরূপ পুরুষের বাহনের উপযুক্ত ছিল; (ন) আর সূর্য্যোদয় যেমন সকল জগদ্বাসী লোকের অর্ঘদানের যোগ্য, ইন্দ্রায়ুধও তেমন সমগ্র ভুবনরূপ মূল্যের যোগ্য ছিল। (প) চন্দ্রাপীড় অশ্বজাতির মধ্যে উৎকৃষ্ট সেই ইন্দ্রায়ুধকে দর্শন করিলেন।

(ফ) চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত ধীরপ্রকৃতি হইলেও, সেই অশ্বরূপী অনির্ব্বচনীয় পদার্থ দেখিয়া

(१) सकलभुवनार्घं।

लक्षणोपपन्नमश्वरूपातिशयमतिधीरप्रकृतेरपि चन्द्रापीडस्य पस्पर्श विस्मयं (१) हृदयम्। (फ) आसीच्चास्य मनसि 'सरभस-परिवर्त्तन-(२) वलित-(३) वासुकि-भ्रमित-मन्दरेण मथ्नता जलधि-(४) जलं इदमश्वरत्नमनुद्धरता (५) पूर्वं किं नाम रत्नमुद्धृतं सुरासुरलोकेन (६)। (ब) अनारोहता च मेरुशिलातलविशाल-मस्य पृष्ठमाखण्डलेन किमासादितं त्रैलोक्यराज्यफलम्। (भ) उच्चैःश्रवसा विस्मितहृदयो वञ्चितः खलु जलनिधिना शतमखः। (म) मन्ये च भगवतो

त्रिभुवनं राज्यं यस्य तस्य देवराजस्येत्यर्थः. उचितं योग्यं। अशेषैः समस्तैः लक्षणैरश्वोत्कर्षलक्षणैः उपपन्नं विशिष्टं। अश्वरूपः अतिशयः अनिर्वचनीयः कश्चिदतिरेकः अतिरिक्तः पदार्थ इत्यर्थः तम्, तमिन्द्रायुधं दृष्ट्वा विद्यमानस्य। हृदयं कर्त्तृ विस्मयं पस्पर्श आश्चर्यं प्राप। अत्राभेदेऽपि अश्वरूपातिशयमित्यनेन भेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ब) आसीदिति। किञ्चेति चार्थः। अस्य चन्द्रापीडस्य मनसि ईदृशी दृत्तिरासीदित्यर्थः। सरभसं सवेगं यत् परिवर्त्तनं आकर्षणं तेन वलितो वर्द्धितो यो वासुकिरनन्तनागस्तेन भ्रमितो घूर्णितो यो मन्दरः पर्वतस्तेन करणेन। मथ्नता आलोडयता सुरासुरलोकेन देवदानवगणेन। किं नाम रत्नमुद्धृतं न किमपीत्यर्थः। जगत्प्रथितानि उच्चैःश्रव प्रभृतीनि रत्नानि इतस्तुच्छानीति भावः।

(भ) अनेति। आखण्डलेन इन्द्रेण, मेरुशिलातलवत् मेरुपर्वतस्य इहत् पाषाणवत् विशालं अस्य इन्द्रायुधस्य पृष्ठं अनारोहता सता, किं त्रैलोक्यराज्यस्य त्रिभुवनराजत्वकारणस्य फलं आसादितं प्राप्तं अपि तु किमपि नेत्यर्थः। अस्य पृष्ठारोहणमतीवसौभाग्यफलमिति भावः।

उच्चैरिति। उच्चैःश्रवसा तदाख्यघोटकदर्शनेनेत्यर्थः विस्मितं हृदयं यस्य सः, शतमख इन्द्रः जलनिधिना मथ्यमानेन समुद्रेण वञ्चितः खलु, येनेदं न दत्तमिति भावः। अत्र ध्रुवशब्दसमानार्थकखलुशब्दोपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

তাঁহার হৃদয় বিস্ময়াপন্ন হইল ; কারণ, সেই অশ্ব, স্বর্গলোকের উপযুক্ত-আকার বিশিষ্ট, সমগ্র ত্রিভুবনাধিপতির আরোহণের যোগ্য এবং সর্ব্বোৎকৃষ্ট অশ্বের সকল লক্ষণ-সংযুক্ত ছিল এবং সেরূপ অশ্ব পূর্ব্বে আর কখনও তাঁহার দৃষ্টিগোচর হয় নাই। (ব) তখন তাঁহার এইরূপ মনে হইতে লাগিল যে —'বেগের সহিত আকর্ষণ করায় বর্দ্ধিত-দেহ বাসুকির টানে ঘূর্ণিত মন্দর-পর্ব্বতদ্বারা সমুদ্র মন্থন করতঃ দেব ও দানবগণ, এই অশ্বরত্ন উদ্ধার না করিয়া কি রত্ন উদ্ধার করিয়াছিলেন ? (ভ) দেবরাজ, সুমেরু-পর্ব্বতের শিলাতলের ন্যায় বিস্তৃত এই অশ্বের পৃষ্ঠে আরোহণ না করিয়া ত্রিজগতের রাজত্ব করায় কি ফল পাইতেছেন ? (ম) উচ্চৈঃশ্রবাকে

---

(१) विस्मयः। (२)...विवर्त्तन...। (३)...चलित...। (४) जलनिधि...।
(५) अत्युद्धरता, अप्युद्धरता। (६) सुरलोकेन।

नारायणस्य चक्षुर्गोचरमियतापि (१) कालेन नायमुपगतः, येनाद्यापि तां गरुड़ारोहण-व्यसनितां न त्यजति (२)। (य) अहो खल्वतिशयित-(३) त्रिदशराज-(४) समृद्धिरियं तातस्य राज्यलक्ष्मीः, यदेवंविधान्यपि सकल-त्रिभुवनदुर्लभानि रत्नान्युपकरणतामागच्छन्ति। (र) अतितेजस्वितया महाप्राणतया च सदैवतेवेयं (५) अस्याकृतिः, यत्सत्यमारोहणे शङ्कामिव मे जनयति। (ल) न हि सामान्यवाजिनाममानुषलोकोचिताः सकल-त्रिभुवन-विस्मयजनन्य ईदृश्यो भवन्त्याकृतयः। (व) दैवतान्यपि हि मुनिशापवशादुज्झित-निजशरीराणि (६) शापवचनबलोपनीतानि (७) एतानि शरीरान्तराणि (८)

(य) मन्ये इति। अयमश्वः। येन हेतुना। तां पूर्वजातां गरुड़ारोहणे व्यसनितां आसक्तिं न त्यजति नारायण इति शेषः; अन्यथा गरुड़मपहाय एनमेवारोहेदिति भावः। अत्र मन्ये इत्युपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) अहो इति। अतिशयिता अतिक्रान्ता त्रिदशराजस्य देवराजस्य समृद्धिर्यया सा। यद् यस्मात्तेः। उपकरणतां भोगसाधनतां आगच्छन्ति प्राप्नुवन्ति। ईदृशं रत्नं देवराजस्य नास्तीति भावः।

(ल) अतीति। अस्याश्वस्य इयमाकृतिः, अतितेजस्वितया अतीवप्रभाववत्तया महाप्राणतया नितान्त-बलशालितया च हेतुना सदैवतेव कयाचिद्देवतया सहितेव अधिष्ठितेव। अत्र देवतासंयोगित्वरूपगुणोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। अत एवाह यत्सत्यमिति। यत्सत्यमित्येकमेवाव्ययं याथार्थ्ये।

(व) ननु सदैवतेवेति कथं सम्भाव्यत इत्याह नहीति। सामान्यवाजिनां साधारणघोटकानां आकृतयः, ईदृश्यः अमानुषलोकोचिताः स्वर्गलोकयोग्याः, तथा सकलत्रिभुवनस्य विस्मयजनन्य आश्चर्यजनिका नहि भवन्ति। सुतरां सदैवतेवेति सम्भावनेति भावः।

(श) ननु कथं देवतमस्याकृतिमाश्रयेदित्याह दैवतानीति। हि यस्मात्। दैवतान्यपि देवा अपि।

দেখিয়াই বিস্মিতচিত্ত ইন্দ্র, নিশ্চয়ই সমুদ্রকর্তৃক বঞ্চিত হইয়াছিলেন। (য) আমি মনে করি,—'এত কালের মধ্যেও এই অশ্ব, ভগবান্ নারায়ণের দৃষ্টিগোচর হয় নাই'; যেহেতু, তিনি এখনও সেই গরুড়ে আরোহণ করিবার আসক্তি ত্যাগ করিতেছেন না। (র) কি আশ্চর্য্য! পিতার এই রাজলক্ষ্মী, নিশ্চয়ই দেবরাজের সমৃদ্ধিকে অতিক্রম করিয়াছে; যেহেতু, সমস্ত ত্রিভুবনের মধ্যে দুর্লভ এই জাতীয় রত্নসকলও আসিয়া ক্রমে তাঁহার ভোগ্য হইতেছে। (ল) অত্যন্ত তেজস্বী ও মহাবলবান্ বলিয়া ইহার এই শরীর, কোন দেবতাকর্তৃক যেন অধিষ্ঠিত বলিয়া বোধ হইতেছে; সুতরাং আরোহণ করিতে আমার যেন শঙ্কা জন্মাইতেছে। (ব) কারণ, সাধারণ অশ্বের আকৃতি, এই রূপ, মনুষ্যলোকের অযোগ্য ও সমগ্র ত্রিভুবনের বিস্ময়জনক হয় না। (শ) দেবতারাও মুনিগণের অভিসম্পাতে নিজ নিজ শরীর পরিত্যাগ

(१) क्वचित् अपिशब्दो नास्ति। (२) तं गरुड़ारोहणव्यसनिता न परित्यजति। (३) अतिशय...। (४)...राजा...। (५) सर्वदैवतेयं। (६)...शरीरकाणि। (७)...वचनोपनीतानि। (८) शरीराणि।

অধ্যাসত এব। (গ) শ্রূয়তে হি পুরা কিল (১) স্থূলশিরা নাম মহাতপা মুনিরখিল ত্রিভুবন (২) ললামভূতামপ্সরসং রম্ভাভিধানাং শশাপ ; সা সুরলোকমপহায়াশ্বহৃদয়ে নিবেশ্যাত্মানমশ্বহৃদয়েতি বিখ্যাতা বড়বা ভূত্বা (৩) মৃত্তিকাবত্যাং (৪) শতধন্বানং নাম রাজানমুপসেবমানা মর্ত্ত্যলোকে মহান্তং কালমুবাস। (ঘ) অন্যে চ মহাত্মানো মুনিজনশাপ-পরিপীতপ্রভাবা নানাকারা ভূত্বা বভ্রমুরিমং লোকম্। অসংশয়মনেনাপি মহাত্মনা কেনাপি শাপভাজা ভবিতব্যম্। আবেদয়তীব মদন্তঃকরণমস্য দিব্যতাম্।' (ঙ)

উজ্ঝিতশরীরাণি ত্যক্তদেবদেহানি। শাপবচনবলেন অভিসম্পাতবাক্যপ্রভাবেণ উপনীতানি উপস্থাপিতানি, এতানি ঈদৃশানি, অধ্যাসত এব আশ্রয়ন্ত্যেব। সুতরামস্যাকৃতাবপি কস্যচিদ্দেবস্যাশ্রয়সম্ভাবনেতি ভাবঃ।

(ঘ) নন্বীদৃশী ঘটনা কদাচিদ্দৃষ্টা শ্রুতা বেত্যাহ শ্রূয়ত ইতি। অখিলস্য ত্রিভুবনস্য ললামভূতামলঙ্কারস্বরূপা। "বা নপুংসকে সমা অপ্সরসঃ" ইতি শ্রীপত্যুক্তঃ "বাসো দশা অপ্সরসঃ বর্ষাপঃ, কৃত্তিকা মঘাঃ। বহুত্বস্য সদৈকত্বমানবতেশ্চ বিংশতে"রিতি চন্দ্রগোমুক্তেশ্চ অপ্সরসমিত্যেকবচনং। প্রয়োগশ্চ কাশ্মিক্যাভ্যুদয়াদৌ "অপ্সরা ব্যথিত পার্শ্বমশূন্যম্।" বড়বা অশ্বী। মৃত্তিকাবত্যা তদাখ্যায়া রাজধান্যা। পুরা কিল স্থূলশিরা নাম মহর্ষিঃ সমিৎকুশাহরণায় বনং পর্য্যটন্ 'হন্ত! বয়মধঃ পতামঃ, পরিত্রায়স্বাস্মা'-নিত্যার্ত্তরবমাকর্ণ্য তৎপ্রদেশমুপগম্য লতাপ্রান্তমাত্রাশ্রিতান্ অতলস্পর্শগর্ত্তে পতনোন্মুখান্ কাংশ্চন পুরুষানালোক্য 'কে যূয'মিত্যপৃচ্ছত্, তে চ 'স্থূলশিরসঃ পিতরো বয়, তস্য তু সন্তানাভাবাৎ তৎপরমধঃ পতাম' ইত্যব্রুবন্, স্থূলশিরাস্তু তদাকর্ণ্য অপত্যমুৎপাদয়িতুকামো রম্ভাং চকমে, সা তু দেবকার্য্যং কৃত্বা আগচ্ছামীত্যভিধায় গত্বা বিলম্বিতবতীতি মুনিস্তাং বড়বা ভবেতি শশাপ। ইতি মহাভারতবার্ত্তা। অংশান্তরন্তু কবিনৈবোক্তম্।

(ঙ) অন্য ইতি। মুনিজনানাং শাপেন পরিপীতা বিলয়ং নীতঃ প্রভাবো মাহাত্ম্যং যেষাং তে। যথা অগস্ত্যাদীনাং শাপেন নহুষাদয়ঃ অজগররূপাদিভিঃ। সংশয়স্যাভাব ইত্যসংশয়ম্, অভাবার্থেঽব্যয়ীভাবঃ। দিব্যতা স্বর্গীয়ত্বম্।

করিয়া, শাপবাক্যের প্রভাবে উপস্থাপিত এইরূপ অন্যান্য শরীর আশ্রয় করিয়াই থাকেন। (গ) যেহেতু—শুনা যায় 'পূর্ব্বকালে স্থূলশিরা নামে কোন মহাতপা মুনি, সমস্ত ত্রিজগতের অলঙ্কারস্বরূপা রম্ভা নামে অপ্সরাকে অভিশাপ দিয়াছিলেন, সেই জন্য রম্ভা স্বর্গলোক পরিত্যাগ করিয়া অশ্বের হৃদয়ে আপনাকে প্রবেশ করাইয়া 'অশ্বহৃদয়া' নামে কোন অশ্বী হইয়া মৃত্তিকাবতী নামে রাজধানীতে শতধন্বানামক রাজার সেবা করতঃ বহুকাল যাবৎ মর্ত্ত্যলোকে বাস করিয়াছিল। (ঘ) অন্যান্য মহাত্মারাও, মুনিগণের অভিসম্পাতে স্ব স্ব প্রভাব বিনষ্ট হইলে নানাপ্রকার আকৃতি ধারণ করিয়া এই জগতে বিচরণ করিয়া গিয়াছেন। সুতরাং এও শাপগ্রস্ত কোন মহাত্মাই হইবে, ইহাতে কোন সংশয় নাই। আমার অন্তঃকরণও ইহাকে স্বর্গীয় বলিয়া যেন পরিচয় দিতেছে।

---

(১) ক্বচিৎ কিলশব্দো নাস্তি। (২)...ভুবন...। (৩) ক্বচিৎ ভূত্বেতি নাস্তি। (৪) মৃত্তিকাবত্যাং।

इति विचिन्तयन्नेवारुरुक्षुरासनादुदतिष्ठत्। मनसा च तं तुरङ्गमुपसृत्य (१) 'महात्मन्! अर्वन्! योऽसि सोऽसि, नमोऽस्तु ते, सर्वथा मर्षणीयोऽयमारोहणातिक्रमोऽस्माकम्, अपरिगतानि दैवतान्यप्यनुचित-परिभवभाञ्जि भवन्ति' इत्यामन्त्रयाम्बभूव। (ह) विदिताभिप्राय इव स तमिन्द्रायुधश्चटुलशिरः-केसर-सटा-हति-कूणिताकेकर-तारकेण तिर्य्यक् चक्षुषा विलोक्य मुहुर्मुहुस्ताडयता क्षितितलं उत्खात-धूलि-धूसरित-क्रोड़-रोम-राजिना दक्षिणखुरेणारोहणायाह्वयन्निव स्फुरित-घ्राण-विवर-घर्घरध्वनिमिश्रं मधुरमपरुष-(२) हुङ्कारपरम्परानुबद्धमतिमनोहरं हेषारवं (३) अकरोत्। (क्ष)

(ह) इतीति। तं तुरङ्गमुपसृत्य तस्याश्वस्य समीपं गत्वा चन्द्रापीड़ः, मनसा इत्यामन्त्रयाम्बभूव अभ्यर्थयामास। किन्तदामन्त्रणमित्याह महात्मन्निति। हे अर्वन्! घोटक ! "वाजिवाहार्वगन्धर्व्वहयसैन्धवसप्तयः।" इत्यमरः। मर्षणीयः क्षन्तव्यः। अपरिगतानि दैवत्वेनापरिचितानि, दैवतान्यपि देवा अपि, अनुचितं अयोग्यं परिभवं अवमाननां भजन्ते प्राप्नुवन्तीति तानि तथोक्तानि भवन्ति। सुतरां भवानप्यपरिचिततयैव ममैतदारोहणपरिभवभाग्भवतीति भावः।

(क्ष) विदितेति। स इन्द्रायुधोऽतिमनोहरं हेषारवमकरोदित्यन्वयः। विदितः अभिप्रायश्चन्द्रापीड़स्य सविनय आशयो येन सः। चटुलस्य चपलस्य शिरसो याः केसरा एव सटा जटास्तासां आहत्या ताड़नेन कूणिता कुञ्चिता आकेकरा ईषद्वक्रा च तारका कनीनिका यस्य तेन तादृशेन चक्षुषा तं चन्द्रापीड़ं विलोक्य। उत्खाताभिराघातेनोत्थापिताभिः धूलिभिर्रेणुभिः धूसरिता धूम्रवर्णीकृता क्रोड़स्य रोमराजिर्येन तादृशेन दक्षिणखुरेण तं चन्द्रापीड़ं आह्वयन्निव सन्, स्फुरितस्य स्पन्दितस्य घ्राणविवरस्य नासिकारन्ध्रस्य यो घर्घरध्वनिस्तेन मिश्रं संयुक्तं, मधुरं सुश्राव्यं अपरुषया अकर्कशया हुङ्कारपरम्परया हुमित्येवंशब्दश्रेण्या अनुबद्धं सम्मिलितं अतिमनोहरं हेषारवमकरोत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षाद्वयेन सङ्कीर्णो स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(হ) এইরূপ চিন্তা করিতে করিতেই চন্দ্রাপীড় আরোহণ করিবার ইচ্ছায় আসন হইতে উঠিলেন এবং সেই অশ্বের নিকট যাইয়া মনে মনে তাহাকে এই অভ্যর্থনা করিলেন যে, 'হে মহাত্মন্! অশ্ব! তুমি যে হও, সে হও, তোমাকে নমস্কার; তুমি আমার এই আরোহণরূপ মর্য্যাদালঙ্ঘন সর্ব্বপ্রকারে ক্ষমা কর; কারণ, অপরিচিত দেবতারাও, অসঙ্গত অনেক অবমাননাভাগী হইয়া থাকেন। (ক্ষ) তদনন্তর সেই ইন্দ্রায়ুধ চন্দ্রাপীড়ের অভিপ্রায় জানিয়াই যেন, চঞ্চল মস্তকস্থিত কেসররূপ জটার তাড়নে আকুঞ্চিত ও বক্র তারাসমন্বিত নয়নদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের প্রতি তির্য্যগ্‌ভাবে দৃষ্টিপাত করিয়া, দক্ষিণ খুর দ্বারা বারংবার ভূতল তাড়ন করিয়া উত্থিত ধূলিরাশিতে ক্রোড়ের রোমসমূহ ধূসরবর্ণ করিয়া, আহ্বান করিতে করিতেই যেন, স্পন্দিত নাসিকাবিবরে 'ঘর্ঘর' শব্দসংযুক্ত ও অকর্কশ হুঙ্কারসমন্বিত সুশ্রাব্য ও অতি মনোহর হ্রেষারব করিল।

(१) अनुपसृत्य, समुपसृत्य। (२) अपरुषं। (३) अतिमनोहरं हेषारवं।

अथानेन मधुर-ह्रेषितेन (१) दत्तारोहणाभ्यनुज्ञ इव इन्द्रायुधमारुरोह चन्द्रापीडः। (क) समारुह्य तं प्रादेशमात्रमिव त्रैलोक्यमखिलं मन्यमानो निर्गत्य, जलधर-(२) विमुक्तोपलासार-परुषेण जर्जरयतेव रसातलमतिनिष्ठुरेण खुर-पुटानां रवेण, खुररजोनिरुद्ध-घ्राण-घोर-घोषेण च ह्रेषितेन (३) वधिरीकृत-सकल-भुवन-(४) विवरम्, (ख) अशिशिरकिरण-दीधिति-परामर्श-(५) स्फुरित-विमल-फलकेन ऊर्द्ध्वीकृतेन कुन्त-लता-वनेन उन्नाल-नीलोत्पल-कलिका-वन-गहनं सर इव

आच्छिन्दत

अत्रो अश्वह्रेषारवस्य मधुरतां मनोहरताञ्चोपवर्णयन् कविरसौ कोकिल-कामिनी-कलकण्ठरवं वीणानिनादञ्च कमिवाश्रौषीत्।

(क) अथेति। अनेन इन्द्रायुधेन कर्त्रा, मधुरह्रेषितेन सुश्राव्यह्रेषारवेण करणेन, दत्ता आरोहणाय अभ्यनुज्ञा अनुमतिर्यस्य स इव चन्द्रापीडः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) समारुह्येति। तमिन्द्रायुधं समारुह्य चन्द्रापीडः, अखिलं त्रैलोक्यं त्रिभुवनं, प्रसारित-तर्ज्जन्यङ्गुष्ठपरिमितं मानं "प्रादेशः प्रदेशिन्यादिभिः सार्द्धमङ्गुष्ठे विततैः सति। प्रादेशतालगोकर्णवितस्तयो-र्यथाक्रमं।" इत्यभिधानचिन्तामणिः। तन्मात्रमिव मन्यमानः, इन्द्रायुधस्य सम्भावनीयनिरतिशयवेगवशेनाति-शीघ्रलङ्घनसम्भवादिति भावः, निर्गत्य अश्वसैन्यमपश्यदिति परेणान्वयः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। अथ द्वितीयान्तपदानि अश्वसैन्यमित्यस्य विशेषणानि। जलधरैर्मेघैः विमुक्तो दृष्टो य उपलासारः सन्तता शिलावृष्टि-स्तेनैव तस्य रववदित्यर्थः परुषेण श्रुतिदुःखावहेन, रसाया भुवस्तलं उपरिभागं जर्जरयतेव विदारयतेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा अतिनिष्ठुरेण नितान्तकर्कशेन, खुरपुटानां अश्वखुराग्राणां रवेण शब्देन, तथा खुररजोभिः स्वस्वखुरपुटोत्थापितधूलिभिः निरुद्धानां परिपूरितप्रायाणां घ्राणानां नासिकानां घोर-घोषो दारुणशब्दो यस्मिन् तादृशेन ह्रेषितेन ह्रेषारवेण च वधिरीकृतानि सकलानि भुवनविवराणि भुवन-वासिनां प्राणिनां कर्णरन्ध्राणि येन तत्। अत्र वधिरीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ग) अशिशिरेति। अशिशिरकिरणस्य उष्णरश्मेः सूर्य्यस्य दीधितिपरामर्शेन रश्मिसम्पर्केण स्फुरि-तानि दीप्तानि विमलानि फलकानि अग्रदेशा यस्य तेन, ऊर्द्ध्वीकृतेन उत्तोलितेन, कुन्ता अस्त्रविशेषा एव लता तद्वल्लम्बमानत्वादिति भावः, तासां वनेन समूहेन करणेन, उद्गतानि नालानि यासां तासां नीलोत्-

(क) তদনন্তর চন্দ্রাপীড়, ইন্দ্রায়ুধের মধুর হ্রেষারবে আরোহণের অনুমতি পাইয়াই যেন তাহার পৃষ্ঠে আরোহণ করিলেন, (খ) আরোহণ করিয়া সমস্ত ত্রিভুবন যেন প্রাদেশপ্রমাণ মনে করিয়া, বিদ্যালয় হইতে নির্গত হইয়া অসংখ্য অশ্বারোহী সৈন্য দর্শন করিলেন। মেঘমুক্ত শিলাবৃষ্টির শব্দের ন্যায় শ্রুতিকঠোর, ভূতলের যেন বিদারণকারী ও অত্যন্ত কর্কশ খুরপুট-সমূহের শব্দে এবং খুরাঘাতে উত্থাপিত ধূলিসমূহে পরিপূর্ণপ্রায় নাসিকাবিবরের ভয়ঙ্কর শব্দ-মিশ্রিত হ্রেষারবে সেই অশ্বারোহী সৈন্য, জগদ্বাসী সকল প্রাণীর কর্ণবিবর বধির করিয়াছিল; (গ) সূর্য্যের কিরণ-সংস্পর্শে উজ্জ্বল ও নির্ম্মল ফলক-সমন্বিত, উত্তোলিত ও লতাস্বরূপ-

(१)...ह्रेषितेन। (२) प्रलयजलधर...। (३) ह्रेषितेन। (४)...त्रिभुवन...। (५) अशिशिरदीधितिसंस्पर्श...

गगनतलमलङ्कुर्वाणम्, (ग) उद्दण्ड-मायूरातपत्र-सहस्रान्धकारिताष्टदिङ्मुखतया स्फुरित-शतमन्यु-चाप-कलाप-कल्माषमिव जलधरवृन्दम्, (घ) उद्वमत्-फेन-पुञ्ज-धवलित-मुखतया अनवरत-वल्गन-चटुलतया च प्रलय-सागर-जल-कल्लोल-सङ्घातमिव समुन्नतम्, अदृष्ट-पर्य्यन्तमश्वसैन्यं (१) अपश्यत्। (ङ) तच्च सागरजलमिव चन्द्रोदयेन चन्द्रापीडनिर्गमेन सकलमेव सञ्चचालाश्वीयम्। (च) अहमहमिकया च प्रणामलालसाः सरभसापनीतातपत्र-शून्य-शिरसः परस्परोत्-

---

पलकलिकानां इन्दीवरकोरकाणां वनेन काननेन गहनं निरन्तरालं सरः सरोवरमिव गगनतलं अलङ्कुर्वाणं। अत्र वनगहनयोः पर्य्यायतया आपाततः पौनरुक्त्यप्रतीतावपि परं गहनशब्दस्य निरन्तरालार्थकतया पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः निरङ्गकेवलरूपकं श्रौत्युपमा चेतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(घ) उद्दण्डेति। उत्तोलिता दण्डा येषां तानि उद्दण्डानि यानि मायूरातपत्राणि मयूरपिच्छकृतच्छत्राणि तेषां सहस्रेण समूहेन करणेन अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि अष्टानां दिशां मुखानि आद्यभागा येन तत् तथोक्तं, तस्य भावस्तया हेतुना, स्फुरितेन उद्दीप्तेन शतमन्युचापकलापेन इन्द्रधनुःसमूहेन कल्माषं विचित्रं जलधरवृन्दं मेघसमूहमिव स्थितम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(ङ) उद्वमदिति। उद्वमद्भिरुद्गच्छद्भिः फेनपुञ्जैः धवलितानि शुभ्रीकृतानि मुखानि अश्वानां वदनानि यस्मिन् तस्य भावस्तया, अनवरतवल्गनेन सतताङ्गसञ्चालनेन चटुलतया समुदयस्यापि चञ्चलतया च हेतुना, समुद्गतं तीरे समुत्थितं, प्रलये प्रलयकाले सागरजलस्य कल्लोलसङ्घातं महातरङ्गसमूहमिव स्थितम्, तस्यापि फेनपुञ्जधवलत्वात् सततचाञ्चल्याच्चेति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। अदृष्टा अतिबहुलतया नयनाविषयत्वादनवलोकिताः पर्य्यन्ताः प्रान्तभागा यस्य तत्।

(च) तच्चेति। किञ्चेति चार्थः। चन्द्रोदयेन सागरजलमिव, चन्द्रापीडनिर्गमेन हेतुना तत् सकलमेव अश्वीयमश्वसैन्यवृन्दं सञ्चचाल तस्य परिवेष्टनाय गमनोद्यमादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। ''वृन्दे त्वश्वीय-माश्ववम्''मित्यमरः।

(छ) अहमिति। अहमादौ अहमादौ इत्यभिमानोऽहमहमिका तया, मयूरव्यंसकादित्वान्निपातः।

দীর্ঘ-কুম্ভসমূহদ্বারা সেই সৈন্যগণ, জলোপরি উত্থিত-নাল-সমন্বিত নীলোৎপলকলিকাসমূহে সমাচ্ছন্ন সরোবরের ন্যায় গগনতল অলঙ্কৃত করিতেছিল। (ঘ) দণ্ড উত্তোলন করিয়া ধৃত, ময়ূরপুচ্ছ-নির্ম্মিত ছত্রসমূহে অষ্ট দিক অন্ধকার করায় সেই অশ্বারোহী সৈন্য, দীপ্তিমান্ ইন্দ্রধনুঃসমূহে বিচিত্রীকৃত মেঘসমূহের ন্যায় অবস্থান করিতেছিল। (ঙ) উত্থিত ফেনপুঞ্জে অশ্বগণের মুখ ধবলবর্ণ হওয়ায় এবং অনবরত অঙ্গসঞ্চালনে সম্পূর্ণ চঞ্চল হওয়ায় সেই অশ্বারোহী সৈন্য, প্রলয়কালে তীরে উত্থিত সমুদ্রজলের মহাতরঙ্গসমূহের ন্যায় দৃষ্টিগোচর হইতেছিল। (চ) চন্দ্রের উদয়ে সমুদ্রজলের ন্যায়, সকল অশ্বারোহী সৈন্যই চন্দ্রাপীড়ের নির্গমে চঞ্চল হইয়া উঠিল। (ছ) এবং 'আমি আগে আমি আগে' এইরূপ ইচ্ছাপ্রণোদিত হইয়া

---

(१) अप्रमेयमश्वसैन्यं।

पीड़न-कुपित-तुरङ्गम-निवारणायस्ताः (१) राजपुत्रास्तं पर्य्यवारयन्त। (छ) एकैकशश्च प्रतिनाम-ग्रहणं (२) आवेद्यमाना बलाहकेन विचलित-मुकुट-पद्मराग-किरणोद्गमच्छलेनानुरागमिवोद्गमद्भिः सङ्घटित-सेवाञ्जलि मुकुलतया यौवराज्याभिषेक-कलसावर्जित-सलिल-लग्न-कमलैरिव दूरावनतैः शिरोभिः प्रणेमुः। (ज) चन्द्रापीड़स्तु तान् सर्वान् मानयित्वा यथोचितमनन्तरं तुरङ्गमाधिरूढ़ेनानु-

"अहमहमिका तु सा स्यात् परस्परं यो भवत्यहङ्कारः।" इत्यमरः। प्रथमलालसाश्चन्द्रापीड़स्य नमस्काराभिलाषुकाः, सरभसं सवेगं अपनीतैर्नामितैः आतपत्रैश्छत्रैः शून्यानि विरहितानि शिरांसि येषां ते, तथा परस्परोत्पीड़नेन अन्योन्यसङ्घर्षेण कुपितानां तुरङ्गमाणां निवारणेन निरोधनेन आयस्ताः क्लान्ताः। तं चन्द्रापीड़ं पर्य्यवारयन्त पर्य्यवेष्टन्त।

(छ) एकैकश इति। बलाहकेन तदाख्येन सेनापतिना, प्रतिनामग्रहणं यथा स्यात्तथा एकैकश आवेद्यमानाः 'अयममुकदेशस्य राज्ञः पुत्रः, ईदृशचरित्रः' इत्थं परिचाय्यमाना राजपुत्राः, विचलितानां शिरोऽवनमनेन कम्पितानां मुकुटानां ये पद्मरागा मणयस्तेषां किरणोद्गमच्छलेन अनुरागं चन्द्रापीड़ं प्रत्यनुरक्तिं उद्गमद्भिरुद्गिरद्भिरिव स्थितैः। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षाऽलङ्कारः। सङ्घटिताः ललाटेषु संयोजिताः सेवाञ्जलयः प्रणतिद्योतककरसंयोगाः मुकुलानीव येषु तेषां भावस्तया हेतुना, तेषां यौवराज्ये योऽभिषेकस्तस्य कलसैः स्नानकुम्भैः आवर्जिताभ्यः पातिताभ्यः सलिलेभ्यः लग्नानि ललाटेषु संसक्तानि कमलानि पद्मानि येषु तैरिव स्थितैः ललाटलग्नसेवाञ्जलीनां कमलतुल्यत्वादिति भावः। दूरावनतैः अत्यन्तावनतैः शिरोभिश्चन्द्रापीड़ं प्रणेमुः। अत्र लुप्तोपमागुणोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ज) चन्द्रेति। चन्द्रापीड़ो नगराभिमुखः प्रतस्थे इति परवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। चन्द्रापीड़स्तु

চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিবার অভিলাষী, ছত্রসমূহ সত্বর অপসারিত করায় অনাবৃতমস্তক এবং পরস্পর সঙ্ঘর্ষবশতঃ ক্রুদ্ধ অশ্বগণকে অবরুদ্ধ করায় পরিশ্রান্ত রাজপুত্রগণ আসিয়া চন্দ্রাপীড়কে পরিবেষ্টন করিলেন। (ছ) তখন বলাহক (সেনাপতি) প্রত্যেকের নাম উচ্চারণ করিয়া এক এক জনকে পরিচয় করাইয়া দিলে রাজপুত্রগণ মস্তক অত্যন্ত অবনত করিয়া ...পীড়কে নমস্কার করিলেন; তখন তাঁহাদের চঞ্চল মুকুটের পদ্মরাগমণির কিরণোদ্গমচ্ছলে ম... ...গুলি যেন চন্দ্রাপীড়ের প্রতি অনুরাগ উদ্গিরণ করিতেছিল আর রাজপুত্রগণ নমস্কার করিবার সময়ে ... ...দেশে পদ্মকলিকার ন্যায় অঞ্জলিপুট সংস্থাপন করায়, তাঁহাদের যৌবরাজ্যাভিষেকের সময়ে কলস ... নির্গত জল হইতে পদ্মসমূহ যেন ললাটে লাগিয়া রহিয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল।

(জ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড়, প্রত্যভিবাদনপূর্ব্বক সেই সকল ... যথোচিত সম্মান করিয়া নগরাভিমুখে প্রস্থান করিলেন; বৈশম্পায়নও অশ্বে আরোহণ ...পূর্ব্বক ...

(१) निवारणायासायितक्लान्ताः, निवारणायासायिताः। (२) प्रतिनामग्राहं।

गम्यमानो वैशम्पायनेन, (झ) राजलक्ष्मी-निवास-योग्य-पुण्डरीकाकृतिना, (१) सकल-राजन्यकुल-कुमुद-षण्ड-चन्द्रमण्डलेनेव तुरङ्गम-सेना-स्रवन्ती-पुलिनाय-मानेन, क्षीरोद-फेन-धवलित-वासुकि-फणा-मण्डल-च्छविना, स्थूलमुक्ता-कलाप-जालकावृतेन, (२) उपरिचिह्नीकृतं केसरिणमुद्वहता अतिमहता कार्त्तस्वरदण्डेन (३) ध्रियमाणेनातपत्रेण निवारितातपः,(ञ) उभयतः समुद्धूयमान-चामर-कलाप-पवन-नर्त्तित-कर्णपल्लवः, (ट) पुरःप्रधावता तरुण-वीर-पुरुष-प्रायेण (४) अनेक-

तान् सर्वान् राजपुत्रान् यथोचितं मानयित्वा प्रत्यभिवादनेन सम्मान्य, अनन्तरं तुरङ्गमाधिरूढ़ेन वैशम्पायने-नानुगम्यमान इत्यन्वयः।

(झ) राजेति। इत्यतस्तृतीयान्तपदानि आतपत्रेणेत्यस्य विशेषणानि। राजलक्ष्मीनिवासयोग्यं यत् पुण्डरीकं श्वेतपद्मं तस्य आकृतिरिवाकृतिर्यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। सकलं राजन्यकुलं उपस्थित-क्षत्रियगणः कुमुदषण्डं कैरवसमूह इव तस्य चन्द्रमण्डलेनेव, चन्द्रमण्डलदर्शनेन कुमुदानामिव तच्छत्रदर्शनेन राजपुत्राणामानन्देन मुखविकासादिति भावः। अत्र लुप्तोपमोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तुरङ्गमसेना तदश्वसैन्यमेव स्रवन्ती नदी बहुदूरविस्तृतत्वात् प्रवाहेण चलनाच्चेति भावः, तस्याः पुलिनवत् सैकतवदाचरतेति पुलिनायमानेन पुलिनवत् शुभ्रवर्णत्वाद्विस्तृतत्वाच्चेति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकं कण्ड्गतोपमा चानयो-रङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। क्षीरोदस्य सागरस्य फेनैर्धवलितं शुभ्रीकृतं यद्वासुकेरनन्तनागस्य फणामण्डलं तस्य छविरिव छविः कान्तिर्यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। स्थूलमुक्ताकलापानां जालकेन मालया आवृतं प्रान्तदेशे आलम्बितं तेन। उपरिचिह्नीकृतं केशरिणं उपरिभागे सूत्रादिनिर्म्मितां सिंहाकृतिमित्यर्थः-उद्वहता धारयता, अतिमहता नितान्तविशालेन, कार्त्तस्वरस्यायमिति कार्त्तस्वरः स्वर्णमयो दण्डो यस्य तेन, ध्रियमाणेन] मस्तकोपरि केनचित् किङ्करेणेति शेषः। आतपत्रेण छत्रेण ।नवारित आतपः सूर्य्यकिरणो यस्य स इति चन्द्रापीड़ इत्यस्य विशेषणम्।

(ट) उभयत इति। उभयत उभयपार्श्वयोः समुद्धूयमानस्य किङ्करैरान्दोल्यमानस्य चामरकलापस्य पवनेन वायुना नर्त्तितौ सञ्चालितौ कर्णपल्लवौ यस्य सः।

পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিলেন; (ঞ) কোন সেবক চন্দ্রাপীড়ের মস্তকের উপর ... রাজলক্ষ্মীর অতিবৃহৎ একটা ছত্র ধারণ করিয়া রৌদ্র নিবারণ করিতে লাগিল, সেই ছত্র ... রে চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় অবস্থানের যোগ্য শ্বেতপদ্মের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল এবং কুমুদব... নদীর পুলিনের ন্যায় দেখা যাইতে-রাজপুত্রগণের নিকটে প্রকাশ পাইতেছিল; অন... অনন্তনাগের ফণামণ্ডলের ন্যায় শোভা পাইতে-ছিল; এবং ক্ষীরোদসাগরের ফেন... বড় মুক্তার ঝালর ছিল; এবং উপরিভাগে সূত্রদ্বারা একটা ছিল; আর তাহার ... করা ছিল; আর তাহার দণ্ডটা স্বর্ণময় ছিল। (ট) চন্দ্রাপীড়ের দিকের ... উঠিল

(१)...निवासपुण्डरीकाकृतिना। (२) मुक्ताफलकलाप...परिवृतेन। (३) कार्त्तस्वरेण दण्डेन। (४) वीरप्रायेण।

सहस्र-संख्येन पदातिपरिजनेन (ठ) 'जय जीवे'ति च मधुरवचसा मङ्गलप्रायं (१) अनवरतमुच्चैः पठता वन्दिजनेन स्तूयमानो नगराभिमुखः (२) प्रतस्थे। (ड)

क्रमेण च तं समासादितविग्रहमनङ्गमिवावतीर्णं नगरमार्गमनुप्राप्तमवलोक्य सर्व एव परित्यक्तसकलव्यापारो रजनिकरोदय-परिबुध्यमान-कुमुदवनानुकारी (३) जनः समजनि। (ढ) "सत्यस्मिन् सम्प्रति मुख-कुमुद-कदम्बक-विजिताकृतिः (४) कार्त्तिकेयो विड़म्बयति कुमारशब्दम्। (ण) अहो वयमतिपुण्यभाजो य इमाममानुषीं (५) अस्याकृतिमन्तःसमारूढ़-प्रीतिरस-निष्यन्द-(६) विस्तारितेन

(ठ) पुर इति। पुरः प्रधावता अग्रतो द्रुतं चलता, तरुणवीरपुरुषाः प्राया बहुला यस्मिन् तेन। पदातिपरिजनेन पादचारिपरिजनवर्गेण समन्वित इति शेषः।

(ड) जयेति। चकारो भिन्नक्रमो, अन्वयश्चास्य स्तूयमान इत्यनेन। मधुरवचसा, अनवरतं जय जीवेति मङ्गलप्रायं वाक्यं उच्चैः पठता उच्चारयता, वन्दिजनेन वैतालिकगणेन स्तूयमानश्च सन्।

(ढ) क्रमेणेति। किञ्चेति चार्थः। सर्व एव जनः, समासादितविग्रहं गृहीतदेहं अनङ्गं कन्दर्प-मिव अवतीर्णमुपस्थितम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। क्रमेण नगरमार्गमनुप्राप्तं राजधानीरथ्योपस्थितमव-लोक्य परित्यक्तसकलव्यापारः सन्, रजनिकरस्य चन्द्रस्य उदयेन परिबुध्यमानं प्रकाशमानं कुमुदवनं अनु-करोतीति स तथाविधः समजनि जातः, चन्द्रापीड़दर्शनजनितानन्देन प्रफुल्लमुखो बभूवेत्यर्थः। अत्रार्थो-पमालङ्कारः पूर्वोक्तद्रव्योत्प्रेक्षया संसृज्यते।

(ण) इदानीं चन्द्रापीड़मवलोक्य नागरिकाणामुक्तिविकल्पानाह सत्यस्मिन्निति। सम्प्रति अस्मिन् चन्द्रापीड़े, सति विद्यमाने, मुखानि षड़्वदनानि कुमुदानीव श्वेतत्वादिति भावः, तेषां कदम्बकेन समूहेन विजिता अप्रायिकत्वात् कुत्सितीकृता आकृतिर्यस्य सः, कार्त्तिकेयः कुमारशब्दं विड़म्बयति स्ववाचकत्वेनाङ्गी-

উভয় পার্শ্বে সেবকগণ চামর-সমূহ আন্দোলন করিতেছিল, তাহার বায়ুতে চন্দ্রাপীড়ের কর্ণের পল্লব দুইটি দুলিতেছিল; (ঠ) অগ্রে অগ্রে বহুসংখ্যক পরিজন পাদচারে যাইতে-ছিল, তাহাদের মধ্যে বহুসংখ্যকই যুবা ও বীরপুরুষ ছিল; (ড) আর মধুরভাষী স্তুতি-পাঠকগণ, 'জয় হউক, চিরজীবী হউন' এইরূপ মঙ্গলময় বাক্য অবিশ্রান্ত উচ্চৈঃস্বরে উচ্চারণ করতঃ তাঁহার স্তব করিতে৷৷

(ঢ) ক্রমে চন্দ্রাপীড় নগরমার্গে উপস্থিত হইলে, তখন সমস্ত লোকই, শরীরধারী কন্দর্পের ন্যায় তাঁহাকে উপস্থিত দেখিয়া সকল কার্য পরিত্যাগ করিয়া, চন্দ্রোদয়ে প্রকাশমান কুমুদবনের ন্যায় প্রফুল্লবদন হইয়াছিল। (ণ) আর [illegible] এইরূপ

(১) মঙ্গলপ্রায়ালাপং। (২) নগরাভিমুখং। (৩) পুষ্পকুমুদ...।
(৪) মুখকলাপবিকল্পনঃ। (৫) যদমানুষীং, যত ইমাং...। (৬)...নিঃস্যন্দ...

कुतूहलोत्तानितेन लोचनयुगलेनानिवारिताः पश्यामः। (त) सफला नोऽद्य जाता जन्मवत्ता। सर्वथा नमोऽस्मै रूपान्तरधारिणे भगवते चन्द्रापीडच्छद्मने पुण्डरीकेक्षणाय" इति वदन्नारचितप्रणामाञ्जलिर्नगरलोकः प्रणनाम। (थ) सर्वतश्च समपावृत-(१) कपाट-पुट प्रकट-वातायन-सहस्रतया चन्द्रापीड-दर्शन-कुतूहलान्नगरमपि समुन्मीलित-लोचन-निवहमिवाभवत्। (द)

कृत्य अन्वर्थशून्यं करोति। तथा च कुत्सितो मारः कन्दर्पो यस्मात् स कुमार इति व्युत्पत्त्या कुमारशब्दो मुखषट्केन विकृताकृतौ कार्त्तिकेये अनुपयुज्यमानं सर्वथा सुन्दराकृतौ चन्द्रापीड एव नितरामुपयुज्यत इति भावः। अत्र विडम्बनासम्बन्धेऽपि तत् सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः स च लुप्तोपमया सङ्कीर्य्यते। ... च कार्त्तिकेयात् सुन्दरश्चन्द्रापीड इति व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(त) अहो इति। यद् यस्मात् अनिवारिताः केनाप्यनिषिद्धा वयं, अन्त समारूढेन चित्ते समुत्पन्नेन प्रीतिरसेन आनन्दप्रवाहेण निष्पन्दं निश्चलं विस्तारितञ्च तेन, कुतूहलेन उत्तानितं उन्नमितं तेन, लोचनयुगलेन, इमां अमानुषीं अलौकिकीं स्वर्गीयां अस्य चन्द्रापीडस्य आकृतिं पश्याम इत्यन्वयः।

(थ) सफलेति। जन्मवत्ता जन्मधारणम्। चन्द्रापीड एव छद्म छलं यस्य तस्मै, पुण्डरीकेक्षणाय विष्णवे। अन्यथा नेदृशो गुणग्रामः सम्भवतीति भावः। आरचितः कृतः प्रणामायाञ्जलिः करयुगलसंयोगो येन सः।

(द) सर्वत इति। अपि चेति चार्थः। सर्वतः समन्तात्, समपावृतैरपसारितैरुद्घाटितैरिति यावत् कपाटपुटैः प्रकटं प्रकाशितं वातायनसहस्रं गवाक्षजालसमूहो यस्मिंस्तस्य भावस्तया हेतुना। न केवलं नगरलोको नगरमपीत्यपेरर्थः, समुन्मीलितः प्रकाशितः लोचननिवहो येन तत्तादृशमिव अभवत्। तादृशवातायनान्येव लोचनस्थानपातीनीति भावः। अत्र उन्मीलनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

বলিতে লাগিল যে, "এই রাজপুত্র বিদ্যমান থাকিতে, কুমুদের ন্যায় মুখসমূহে বিকৃতদেহ কার্ত্তিক নিজের কুমারশব্দকে অন্বর্থহীন করিতেছেন। (ত) অহো! আমরা অত্যন্ত পুণ্যবান্; যে হেতু, চিত্তে সমুৎপন্ন আনন্দপ্রবাহে নিস্পন্দ ও বিস্তারিত এবং কৌতুকবশতঃ উন্নমিত নয়নযুগল দ্বারা অনিবিদ্ধভাবে ইঁহার এই স্বর্গীয় আকৃতি দর্শন করিতেছি ... এবং আজ আমাদের জন্ম সফল হইল। ভগবান্ নারায়ণ ... রূপান্তর ধারণ করিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, সুতরাং ইঁহাকে ... নমস্কার করি" এইরূপ বলিতে বলিতে নগরের সমস্ত লোক কৃতাঞ্জলিপুটে ... কার করিতে লাগিল। (থ) এবং সকল দিকেই কপাটসমূহ উদ্ঘাটি... গবাক্ষদ্বারগুলি প্রকাশ পাইতে লাগিল, তাহাতে সেই রাজধানীও ... পীড়-দর্শনের কৌতুকবশতঃ নয়নসমূহ উন্মীলন করিতেছে বলিয়া ... লাগিল।

---

(१) समुपवृत, समुपावृत...।

अनन्तरञ्च "समाप्तसकलविद्यो विद्यागृहान्निर्गतोऽयमागच्छति (१) चन्द्रापीड़ः" इति समाकर्ण्यालोकनकुतूहलिन्यः सर्वस्मिन्नेव नगरे ससम्भ्रममुत्सृष्टार्द्ध-परिसमाप्त-प्रसाधन-व्यापाराः, काश्चिद्वाम-करतल-गत-दर्पणाः स्फुरित-सकल-रजनिकर-मण्डला इव पौर्णमासीरजन्यः, (ध) काश्चिदार्द्रालक्तक-रस-पाटलित-चरणपुटाः कमल-परिपीत-बालातपा इव नलिन्यः, (न) काश्चित् ससम्भ्रम-गति-विगलित-मेखला-कलापाकुलित-चरण-किसलयाः शृङ्खला-सन्दान-मन्द-मन्द-सञ्चारिण्य इव करिण्यः, (प) काश्चिज्जलधर-समय-दिवसश्रिय इवेन्द्रायुध-राग-

---

(ध) अनेति। ससम्भ्रमं सत्वरं उत्सृष्टाः परित्यक्ताः अर्द्धपरिसमाप्ताः अर्द्धविहिताः प्रसाधनव्यापाराः भूषणक्रिया याभिस्ताः, ललना हर्म्म्यतलानि समारुरुहुरिति वक्ष्यमाणेनान्वयः। तदारोहणप्रकारमेव दर्शयन्नाह काश्चिदिति। काश्चित्तासां मध्ये काश्चिल्ललना इत्यर्थः। एवमन्यत्रापि। वामकरतलेषु गताः स्थिता दर्पणा मुकुरा यासां ताः, अतएव स्फुरितं प्रकाशितं सकलं सम्पूर्णं रजनिकरमण्डलं चन्द्रबिम्बं यासु ताः, पौर्णमासीरजन्य इव। दर्पणानां वर्त्तुलतया निर्म्मलतया च चन्द्रमण्डलतुल्यत्वात् तासाञ्च ज्योत्स्नावत्-स्मित-कान्तिमत्त्वादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(न) काश्चिदिति। आर्द्रेण अलक्तकरसेन पाटलितानि आरक्तीकृतानि चरणपुटानि याभिस्ताः, अतएव कमलैः पद्मैः करणैः परिपीतो ग्रस्तो गृहीतः, बालातपो रक्तवर्णो नवीनसूर्य्यालोको याभिस्ताः, नलिन्यः पद्मिन्यः पद्मलता इव। अत्रोपमालङ्कारः। बालातपेन अलक्तकरसस्य, पद्मैश्चरणानां, पद्मिनीभिश्च ललनानां सादृश्यं बोध्यम्।

(प) काश्चिदिति। ससम्भ्रमगत्या सत्वरगमनेन विगलितैः कटिदेशात् स्रस्तैः मेखलाकलापैः काञ्चीदामभिः आकुलितानि व्याकुलीकृतानि पदे पदे प्रतिबध्यमानानि चरणकिसलयानि यासां ताः, अतएव शृङ्खलया सन्दानेन चरणयोर्बन्धनेन मन्दमन्दसञ्चारिण्यः करिण्य इव। अत्रोपमाश्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः।

(फ) काश्चिदिति। जलधरसमयदिवसश्रियः वर्षाकालदिनशोभा इव इन्द्रायुधस्य शक्रचापस्य राग इव

(ধ) তদনন্তর "চন্দ্রাপীড় সকল বিদ্যাশিক্ষা সমাপ্ত করিয়া বিদ্যালয় হইতে নির্গত হইয়া এই আসিতেছেন" এই কথা শুনিয়া সমস্ত নগরবাসিনী রমণীগণ অলঙ্কার-ধারণ-কার্য্য অর্দ্ধ-পরিসমাপ্ত অবস্থায় পরিত্যাগ করিয়া তাড়াতাড়ি যাইয়া দালানের ছাদে ও মধ্যের তলায় উঠিতে লাগিল। তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ, বামহস্তে দর্পণ ধারণ করিয়া, প্রকাশমান-পূর্ণচন্দ্র-সমন্বিত পূর্ণিমারাত্রির ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। (ন) কেহ কেহ আর্দ্র অলক্তক-রসে চরণযুগল রঞ্জিত করিয়া, পদ্মের উপরে নূতন সূর্য্যালোক পতিত হইলে পদ্মলতার ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; (প) কোন কোন রমণী, দ্রুতগমনবশতঃ কটিদেশ হইতে নিপতিত কাঞ্চীদামে চরণযুগল আবদ্ধ হওয়ায়, চরণে শৃঙ্খলা-বন্ধননিবন্ধন মন্দমন্দগামিনী হস্তিনীর

---

(१) क्वचित् 'आगच्छति' इति पदं नास्ति।

रुचिराम्बरधारिण्यः, (फ) काश्चिदुल्लसित-धवल-नख-मयूख-पल्लवान् नूपुररवाकृष्ट-गृह-कलहंसकानिव चरणपुटानुद्वहन्त्यः, (ब) काश्चित् करतल-स्थित-स्थूल-मुक्ता-हार-(१) यष्टयो रतिमिव मदनविनाश-शोक-गृहीत स्फाटिकाक्षवलयां विडम्बयन्त्यः, (भ) काश्चित् पयोधरान्तराल-गलित-मुक्तालतास्तनुविमलस्रोतो-जलान्तरित-चक्रवाकमिथुना इव प्रदोषश्रियः, (म) काश्चिन्नूपुरमणिसमुत्थि-

रागो विविधवर्णयोगस्तेन रुचिराणि अम्बराणि वसनानि धारयन्तीति ताः, पक्षे इन्द्रायुधस्य रागेण रञ्जनेन रुचिरं अम्बरमाकाशं धारयन्तीति ताः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ब) काश्चिदिति। उल्लसित उत्थितः धवलो नखानां मयूखपल्लवः किरणसमूहो येभ्यस्तान्, अतएव नूपुररवैराकृष्टा आकृष्य आनीता ये गृहकलहंसकास्तानिव स्थितान् चरणपुटान् पादयुगलानि, उद्वहन्त्यो धारयन्त्यः। अत्र जात्युत्प्रेक्षैवालङ्कारो नतूपमा नूपुररवाकृष्टपदाभिधानतात्पर्य्यादिति सुधीभिर्भाव्यम्।

(भ) काश्चिदिति। करतलेषु स्थितास्त्वरावशात् कण्ठेष्वनर्पणेन पाणिष्वेव विद्यमानाः स्थूलमुक्तानां हारयष्टयो हारलता यासां ताः, अतएव मदनविनाशेन कामदेवमरणेन यः शोकस्तेन गृहीतं शिवाराधनाय धृतं स्फटिकाक्षवलयं स्फटिकनिर्म्मितजपमाला यया तां रतिं कामपत्नीं विडम्बयन्त्यः अनुकुर्वन्त्य इव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) काश्चिदिति। पयोधरयोः स्तनयोः अन्तरालेषु मध्येषु गलिता गतिवेगान्निपत्य समवेता मुक्तालता मौक्तिकहारा यासां ताः, अतएव तनुनः कृशस्य विमलस्य निर्म्मलस्य स्रोतसः प्रवाहस्य जलेन अन्तरितं व्यवहितं चक्रवाकयोर्मिथुनं युगलं यासु ताः प्रदोषश्रियो रजनीमुखशोभा इव। प्रदोषारम्भे चक्रवाक-दम्पत्योर्नद्या उभयतीरावस्थितिः प्रसिद्धा। तथा च ताद्दृशचक्रवाकमिथुनैः स्तनयुगलानां, तनुस्रोतोजलैर्हार-लतानां, प्रदोषश्रीभिश्च ललनानां साद्दृश्यं बोध्यम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(य) काश्चिदिति। नूपुरमणिभ्यः समुत्थितानि, इन्द्रायुधानि इन्द्रधनुःसद्दृशनानावर्णप्रभामण्डलानि

ন্যায় ধীরে ধীরে উঠিতে লাগিল; (ফ) বর্ষাকালের দিনলক্ষ্মী যেমন ইন্দ্রধনুর বিবিধবর্ণে মনোহর আকাশ ধারণ করে, সেইরূপ কতকগুলি যুবতী ইন্দ্রধনুর ন্যায় বিবিধবর্ণে মনোহর বসন ধারণ করিয়া আরোহণ করিতে লাগিল; (ব) কেহ কেহ নখ হইতে উত্থিত শুভ্রবর্ণ-কিরণরাজিসমন্বিত চরণযুগল বহন করিয়া যাইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন নূপুরের রবে আকৃষ্ট গৃহপালিত কলহংসগণকে চরণে বহন করিয়া লইয়া যাইতেছে; (ভ) কোন কোন রমণী বৃহৎ বৃহৎ মুক্তানির্ম্মিত হার হস্তে ধারণ করিয়া মদন-বিনাশ-শোকে স্ফটিকময় জপমালা-ধারিণী রতিকে যেন অনুকরণ করিতে করিতে যাইতেছিল; (ম) কোন কোন যুবতীর মুক্তার হার স্তনযুগলের মধ্যে পতিত হইয়া সম্মিলিত হইতে লাগিল, সুতরাং যখন চক্রবাক ও চক্রবাকী নদীর উভয়তীরে অবস্থান করে এবং মধ্য দিয়া অল্প স্রোত চলিতে থাকে, সেই প্রদোষকালের ন্যায় তাহারা শোভা পাইতে লাগিল; (য) কোন কোন যুবতী মণিময় নূপুর

(१)···स्थूलहार···।

तेन्द्रायुधतया परिचयानुगत-(१) गृहमयूरिका इव विराजन्त्यः, (य) काश्चि-दर्द्धपीतोज्झित-मणिचषकाः स्फुरितरागैर्मधुरसमिवाधरपल्लवैः क्षरन्त्यो हर्म्म्याग्र-तलानि ललनाः समारुरुहुः। (र) अन्याश्च मरकत-वातायन-विवर-विनिर्गत-मुखमण्डला विकच-कमल-कोषपुटामम्बरतल-(२) सञ्चारिणीं कमलिनीमिव दर्शयन्त्यो ददृशुः। (ल)

उदपादि च सहसा सरभस-सञ्चलन-जन्मा, मधुर-सारणास्फालित-(३)

यासां तासां भावस्तया हेतुना, परिचयेन चिरसाहचर्य्येण अनुगताः पश्चात् पश्चादुपस्थिताः गृहमयूरिका गृहपालितशिखण्डिन्यो यासां ता इव। मयूरीणामपि नानावर्णमयपक्षशालित्वादिति भावः। अत्र मयूराणा-मनुगमनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) काश्चिदिति। अर्द्धपीतानि अनन्तरमुज्झितानि चन्द्रापीड़दर्शनत्वरावशात् परित्यक्तानि मणि-चषकाणि मणिमयपानपात्राणि याभिस्ताः, अत्र मद्यानां पीतत्वेन तदाधाराणामपि पीतत्वमुपचारात्। "चषकोऽस्त्री पानपात्र"मित्यमरः। अतएव स्फुरित् उद्दीप्तो रागो रक्तिमा येषां तैः अधरपल्लवैः पल्लवतुल्यौष्ठैः करणैः मधुरसं मद्यद्रवं क्षरन्त्यः स्रवन्त्य इव, अधराणामार्द्रत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। हर्म्म्याग्रतलानि सौधानामुपरिभागाम् मध्यतलानि च।

(ल) अन्या इति। अन्याश्च ललनाः, मरकतवातायनविवरेभ्यः मरकतमणिमयगवाक्षरन्ध्रेभ्यः विनि-र्गतानि मुखमण्डलानि यासां ताः, अतएव विकचानि भेदं गतानि, कमलस्य पद्मस्य कोषपुटानि कोष-पुटकाकारपत्राणि यस्यास्तां, अम्बरतलसञ्चारिणीं आकाशवर्त्तिनीं कमलिनीं दर्शयन्त्य इव स्थिताः, केशान्त-प्रान्तानां मुखमण्डलानां प्रस्फुटितपद्मान्विततत्पत्रतुल्यत्वादिति भावः। ददृशुः कुमारमिति शेषः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) उदपादीति। अपि च सहसा भूषणनिनाद उदपादीत्यन्वयः। सरभसं सवेगं यत् सञ्चलनं तस्माज्जन्म यस्य सः। मधुरो यः सारणया अङ्गुलीताड़नेन आस्फालितानां सञ्चालितानां वीणानां वीणा-

---

হইতে উত্থিত নানা বর্ণের প্রভামণ্ডলে শোভা পাইতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন গৃহ-পালিত ময়ূরীগণ তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতেছে, (র) কোন কোন রমণী, মণিময় পাত্র হইতে মদ্য অর্দ্ধমাত্র পান করিয়াই তাহা ফেলিয়া আসিতেছিল বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল যেন তাহারা স্ফুরিত-রক্তিমা-সম্পন্ন পল্লবতুল্য ওষ্ঠ দ্বারা সেই মদ্য ক্ষরণ করিতে করিতে উঠিতেছে। (ল) এবং অন্যান্য যুবতিগণ মরকতমণি-নির্ম্মিত গবাক্ষদ্বার হইতে মুখমণ্ডল বাহির করিয়া চন্দ্রাপীড়কে দর্শন করিতেছিল, সুতরাং বোধ হইতেছিল যেন প্রস্ফুটিত পদ্ম-সমন্বিত আকাশ-বর্ত্তিনী পদ্মিনী দর্শন করাইতেছে।

(ব) সবেগে গমন করায় সহসাই সকল অট্টালিকার মধ্যে অলঙ্কারের শব্দ হইতে লাগিল; তন্ত্রীতে অঙ্গুলী তাড়ন করায় বীণার রবে সেই অলঙ্কারের শব্দ বর্দ্ধিত

---

(१) परिचर्य्यानुगत...। (२)...पुटाम्बरतल...। (३)...साधारणास्फालित...।

वीणा-रव-कोलाहल-बहल:, रशना-रवाहूत-गृहसारस-(१) रसितसम्भिन्न:, स्खलित-चरणतल-ताड़ित-मणि-सोपान-(२) जात-गम्भीर-ध्वनि-प्रहृष्टानामवरोध-शिखण्डिनां केकारवैरनुगम्यमान:, नव-जलधर-रव भय-चकित-कलहंस-कुल-कोलाहल-(३) कोमल:, मकरध्वज-विजय-घोषणानुकारी परस्पर-विघट्टना-रणित-तारतर-हार-मणीनां रमणीनां श्रोत्रहारी, हर्म्यकुक्षिषु प्रतिरव-निर्ह्रादी भूषण-निनाद:। (व)

मुहूर्त्तादिव युवतिजन-निरन्तरतया नारीमया इव प्रासादा:, सालक्तक-पद-कमल-विन्यासै: पल्लवमयमिव क्षितितलम् अङ्गनानां (४) अङ्गप्रभा-प्रवाहेण

तन्त्रीणां रव: स एव कोलाहल: स बहलो बहुलो यस्मिन् स:। रशनारवै काञ्चीशब्दै: आहूताना तदाकर्णनेनागतानामित्यर्थ: गृहसारसानां गृहपालितसारसपक्षिणां रसितै: शब्दै: सम्भिन्न: सम्मिलित.। स्खलितै-स्त्वरावशात् प्रभ्रष्टै: चरणतलै: ताड़ितेभ्य: मणिसोपानेभ्य: जातै: गम्भीरध्वनिभि: प्रहृष्टाना मेघरवभ्रमेणानन्दितानां अवरोधशिखण्डिनां अन्त:पुरमयूराणां केकारवै: अनुगम्यमान: सम्मिश्र इत्यर्थ:। नवजलधरस्य अकालमेघस्येति तात्पर्य्यं रवाद्‌गर्जनात् भयेन चकितस्य भीतस्य कलहंसकुलस्य कोलाहलवत् कोमलो मृदुल: अकर्कश:। अत्र लुप्तोपमालङ्कार:। मकरध्वजस्य मदनस्य विजयघोषणां जयप्रचारं अनुकरोतीति स:। अत्रार्थोपमालङ्कार:। परस्परविघट्टनया अन्योन्यसङ्घर्षेण रणिता: शब्दिता: तारतरा अतिस्थूला: हारमणयो मुक्तामालास्थितरत्नानि यासां तासां रमणीनां स्त्रीणां श्रोत्रहारी श्रुतिमधुर:। अत्र हारमणीनां रमणीनामित्यंशक्रमेणावृत्त्या यमकालङ्कार:। प्रतिरवेन प्रतिध्वनिना निर्ह्रादी बहलीभूत:। हर्म्यकुक्षिषु प्रासादमध्येषु।

(श) मुहूर्त्तादिति। युवतिजनैर्निरन्तरतया निरवकाशतया व्याप्ततया हेतुना प्रासादा अट्टालिका:, नारीमया: स्त्रीभिर्निष्पन्ना इव बभूवु:। अत्र विकारार्थे मयटप्रत्ययात् विकारस्य च अन्यथात्वरूपतया गुणत्वात्

হইতেছিল, কাঞ্চীর শব্দ শুনিয়া উপস্থিত গৃহপালিত সারসপক্ষিগণের শব্দ সেই শব্দের সহিত মিশিয়াছিল ; প্রভ্রষ্ট চরণসমূহের তাড়নে মণিময় সোপান হইতে গম্ভীর শব্দ উঠিতেছিল, তাহা শুনিয়া আনন্দিত অন্তঃপুরস্থ ময়ূরগণের কেকারব সেই সঙ্গে মিশিতেছিল ; সেই শব্দ, আকালিক মেঘগর্জ্জনের ভয়ে চকিত কলহংসগণের কোলাহলের ন্যায় মধুর শুনা যাইতেছিল এবং কন্দর্পের বিজয়ঘোষণার অনুকরণ করিতেছিল ; আর পরস্পর সংঘর্ষবশতঃ শব্দায়মান বৃহৎ বৃহৎ মণিসংযুক্ত-হারধারিণী রমণীগণের কর্ণ আকর্ষণ করিতেছিল ; এবং প্রতিধ্বনিতে বৃদ্ধি পাইতেছিল।

(শ) মুহূর্ত্তমধ্যেই যুবতিগণ-সমাচ্ছন্ন বলিয়া অট্টালিকাগুলি যেন স্ত্রীলোকময় হইল, অলক্তকরঞ্জিত-পদ বিন্যাসে ভূতল যেন পল্লবময় হইল, রমণীগণের শরীরকান্তিতে নগরটি যেন

(१)…रवाहूतसारस…। (२)…ताड़ितसोपान…।

(३)…कलहंसकोलाहल…। (४) क्वचित् 'अङ्गनाना'मिति पदं नास्ति।

लावण्यमयमिव नगरम्, आननमण्डलनिवहेन चन्द्रबिम्बमयमिव गगनतलम्, आतपनिवारणायोत्तानित-(१) करतल-जालकेन कमलवनमयमिव दिक्चक्रवालम्, आभरणांशु-कलापेन इन्द्रायुधमय इवातपः, लोचन-(२) मयूख-लेखा-सन्तानेन नीलोत्पलदलमय इव दिवसो बभूव। (ग) कौतुकप्रसारितनिश्चल-लोचनानाञ्च पश्यन्तीनां तासामादर्शमयानीव सलिलमयानीव स्फटिकमयानीव हृदयानि विविशु चन्द्रापीड़ाकृतिः। (घ)

गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। सालक्तकानि अलक्तकरसरञ्जितानि यानि पदकमलानि रमणीनां चरणारविन्दानि तेषां विन्यासैः पातैः क्षितितलं पल्लवमयमिव बभूव, पदकमलानां पल्लवतुल्यत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। अङ्गनानां अङ्गप्रभायाः प्रवाहेण निर्झरेण नगरं सा राजधानी लावण्यमयमिव बभूव। "मुक्ताफलेषु च्छायायां तरलत्वमिवान्तरा। प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते।" इत्युज्ज्वलनीलमणिः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। आननमण्डलानां मुखमण्डलानां निवहेन समूहेन गगनतलं चन्द्रबिम्बमयमिव बभूव, तेषां चन्द्रबिम्बतुल्यत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। आतपस्य रविकिरणस्य निवारणाय उत्तानितानि मस्तकोपरि उत्तानीकृत्य स्थापितानि यानि करतलानि पाणितलानि तेषां जालकेन समूहेन, दिशां चक्रवालं मण्डलं, कमलवनमयमिव बभूव, तत्करतलानां कमलतुल्यत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। आभरणानामलङ्काराणां अंशुकलापेन किरणसमूहेन आतप इन्द्रायुधमय इव बभूव तत्किरणसमूहस्य नानावर्णत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। लोचनानां नेत्राणां या मयूखश्रेणाः किरणावलयः तासां सन्तानेन प्रवाहेण, दिवसः नीलोत्पलदलमय इव बभूव, नयन-किरणप्रवाहाणां नीलोत्पलदलसदृशत्वादिति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा।

(घ) कौतुकेति। किञ्च, चन्द्रापीड़स्य आकृतिः रूपम्, कौतुकेन दर्शनकौतूहलेन प्रसारितानि विस्तारितानि अनन्तरं निश्चलानि लोचनानि यासां तासां। तासां नागरललनानां। आदर्शमयानीव दर्पण-निर्म्मितानीव। अन्यत्राप्येवम्। हृदयानि विविशु दर्पणादौ यथा प्रतिबिम्बं प्रविशति तथेति भावः। नितान्त-मनोरमतया सातिशयानुरागविषयीभूता बभूवेत्यर्थः। अत्र पूर्ववत्तिसृणां क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

লাবণ্যময় হইয়া উঠিল, মুখমণ্ডলসমূহে আকাশ যেন চন্দ্রমণ্ডলময় হইল, রৌদ্র নিবারণ করিবার জন্য মস্তকের উপরে উত্তানীকৃত (চিৎ করা) করতলসমূহে দিঙ্মণ্ডল যেন পদ্মবনময় হইল, অলঙ্কারের নানাবর্ণের কিরণসমূহে যেন ইন্দ্রায়ুধময় হইল এবং নয়ন-কিরণসমূহের প্রবাহে সেই দিনটি যেন নীলোৎপল-দলময় হইল। (ঘ) যে সময়ে নগরবাসিনী রমণীগণ, কৌতুক-বশতঃ বিস্তারিত ও নিস্পন্দ নয়নে চন্দ্রাপীড়কে দর্শন করিতেছিল, তখন তাহাদের হৃদয়, যেন দর্পণময়, জলময় ও স্ফটিকময় ছিল বলিয়া তাহাতে চন্দ্রাপীড়ের আকৃতি প্রবেশ করিয়াছিল।

---

(१) उत्तानितेन। (२) साभ्रसूर्यालोचन...।

आविर्भूत-मदनरसानामन्योन्यत: (१) सपरिहासा:, सविश्रम्भा:,ससम्भ्रमा:, सेर्ष्या:, सोत्प्रासा:, साभ्यसूया:, सविलासा:, समन्मथा:, सस्पृहाश्च तत्क्षणमतिरमणीया: (२) प्रससुरालापा:। (स)

तथा हि। "त्वरितगमने! मामपि प्रतिपालय। (ह) दर्शनोन्मत्ते! गृहाणोत्तरीयम्। (च) चपले! (३) उन्नासय अलकलतामाननावलम्बिनीम्। (क) मूढ़े! चन्द्रलेखामुपाहर (४)। (ख) उपहार-कुसुम-स्खलित-चरणा (५)

(स) आविरिति। किञ्च, आविर्भूतो मदनरस: कामानुरागो यासां तासां ललनानां सविश्रम्भा: सविश्वासा:, अन्यथा तादृशालापै: क्रुद्धा अपि स्युरिति भाव:। ससम्भ्रमा: सत्वरा:, अन्यथा तादृशालापैश्चिरमन्यमनस्कतया तत्कटदर्शनं न स्यादिति भाव:। ईर्ष्यया अक्षमया असहिष्णुतया सहेति सेर्ष्या:, स्थानसुयोगेनान्यस्या अधिकतरदर्शनसुयोगादिति भाव:। सोत्प्रासा: सस्मिता: "उत्प्रास: स मनाक् स्मित"मित्यमर:। परगुणेषु दोषाविष्करणमभ्यसूया तया सहेति साभ्यसूया:, अन्यस्या: सौन्दर्यदर्शनेन तत्कालेऽपि मात्सर्योदयादिति भाव:। विलासेन करनयनादिभङ्गीविशेषेण सहेति सविलासा:। सस्पृहा: साभिलाषा:। प्रससु: बाहुल्येन बभूवु:।

(ह) तानेवालापान् प्रदर्शयितुमाह तथाहीति। प्रतिपालय प्रतीक्षस्व। आत्मानमतिक्रम्य त्वरितं गच्छन्तीं सहचारिणीं प्रति कस्याश्चित् सेर्ष्यमुक्ति:।

(च) दर्शेति। दर्शनोन्मत्ते! चन्द्रापीडदर्शनेन उन्मादयस्ते! स्खलतोऽपि स्वपरिच्छदस्याननुभवादिति भाव:। उत्तरीयं वसनं। पतदुत्तरीयां प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्ति:।

(क) उन्नासयेति। हे चपले! चञ्चले! आननावलम्बिनीं चञ्चलतयैव मुखोपरिसञ्चारिणीं अलकलतां लतावल्लम्बमानां स्खलितकेशावलीं उन्नासय अपसारय। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् सविश्रम्भेयमुक्ति:।

(ख) मूढ़ इति। हे मूढे! चन्द्रापीडदर्शनेन नष्टचेतने! पतितायामपि चन्द्रलेखायां तदनवधानादिति भाव:। चन्द्रलेखां चन्द्रलेखाकारं ललाटाभरणविशेषं उपाहर उत्तोल्य गृहाण। इयमपि पतितचन्द्रलेखां काञ्चित् प्रति कस्याश्चित् सविश्रम्भोक्ति:।

(ग) उपेति। हे मदनान्धे! कामोद्दीपनया अन्यत्र दृष्टिशक्तिहीने! अदर्शनवशात् कुसुमेषु स्खलित-

(স) তদনন্তর তাহাদের মদনানুরাগ জন্মিল; তখন তাহাদের পরস্পর পরিহাস, বিশ্বাস, ত্বরা, ঈর্ষ্যা, ঈষৎ হাস্য, অসূয়া, ভাবভঙ্গী, কামোদ্রেক ও অনুরাগের সহিত অতি-মনোহর আলাপ হইতে লাগিল।

(হ) যথা, "হে দ্রুতগামিনি! আমাকেও একটু প্রতীক্ষা কর। (চ) হে চন্দ্রাপীড়-দর্শনোন্মত্তে! উত্তরীয় বসনখানা তুলিয়া লও। (ক) হে চঞ্চলে! মুখের উপরের চুলগুলি সরাইয়া ফেল। (খ) হে মূঢ়ে! চন্দ্রলেখাটা (কপালের অলঙ্কার) তুলিয়া লও। (গ) হে

(१) अन्योन्यं। (२) रमणीया:। (३) चपले! इति पदं क्वचिन्नास्ति।
(४) मुहुरुपाहर। (५)...चरणे!।

पतसि मदनान्धे!। (ग) संयमय मदनिश्चेतने! केशपाशम्। (घ) उत्क्षिप चन्द्रापीड़दर्शनव्यसनिनि! काञ्चीदामकम्। (ङ) उत्सर्पय पापे! कपोलदोलायितं कर्णपल्लवम्। (च) अहृदये! गृहाण निपतितं दन्तपत्रम्। (छ) यौवनोन्मत्ते! विलोक्यसे जनेन, स्थगय पयोधरभारम् (१)। (ज) अपगतलज्जे! शिथिलीभूतमाकलय दुकूलम्। (झ) अलीकमुग्धे! द्रुत-

---

पदतया पतितप्रायत्वादिति भावः। उपहारकुसुमेषु शोभार्थं विकीर्णेषु पुष्पेषु, स्खलितौ प्रभ्रष्टौ चरणौ यस्यास्तादृशी सती पतसि। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्ति।

(घ) संयमयेति। हे मदनिश्चेतने! मदनमत्ततया चैतन्यहीने! विकीर्णेष्वपि केशेषु तदननुभवादिति भावः। संयमय ग्रथितं कुरु। इतस्ततो विकीर्णकेशीं प्रति कस्याश्चिदियमपि सपरिहासोक्ति'।

(ङ) उत्क्षिपेति। चन्द्रापीड़दर्शने व्यसनिनि अत्यन्तासक्तिमति! विषयान्तरेष्वनवधानादिति भावः। सत्सम्बोधनम्। काञ्चीदामकं रशनागुणं उत्क्षिप उत्तोलय। कटिदेशाच्चरणयोः पतितेन काञ्चीदाम्ना प्रतिबद्धगमनां प्रति सोत्प्रासेयमुक्तिः।

(च) उत्सर्पयेति। हे पापे। पापवति! परपुरुषदर्शनोन्मत्तत्वादिति भावः। कपोलयोर्दोलायितं गतिवेगादान्दोलितं कर्णपल्लवं उत्सर्पय कर्णान्तिके उत्तोलय, अन्यथा नयनोपरि पतितेन दर्शनविघ्नः स्यादिति भावः। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् साभ्यसूयेयमुक्तिः।

(छ) अहृदय इति। हे अहृदये। चित्तरहिते! चन्द्रापीड़ं प्रति हृदयगमनेन दन्तपत्रपतनानवबोधादिति भावः। दन्तपत्रं हस्तिदन्तनिर्म्मितं पत्राकारकर्णालङ्कारविशेषं। पतितदन्तपत्रां प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(ज) यौवनोन्मत्त इति। हे यौवनोन्मत्ते! तारुण्यमदेनोन्मत्ते! स्तनयोरावरणाभावेऽपि तदनवगमादिति भावः। जनेन त्वं विलोक्यसे, सुतरां पयोधरभारं आवरणहीनं विशालस्तनयुगलं, स्थगय वसनेनावृणु। अनावृतस्तनीं प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(झ) अपेति। हे अपगतलज्जे! नितम्बदर्शनेऽपि वसनानुत्तोलनादिति भावः। शिथिलीभूतं कटीदेशात् स्खलितं दुकूलं वसनं आकलय स्वस्थाने स्थापय। तादृशीं प्रति सोत्प्रासेयमुक्तिः।

কামান্ধে! বিক্ষিপ্ত পুষ্পসমূহের উপরে চরণ স্খলিত হওয়ায় প'ড়িয়া যাইতেছ। (ঘ) হে মদ-চৈতন্যহীনে! কেশকলাপ বন্ধন কর। (ঙ) হে চন্দ্রাপীড়দর্শনাসক্তে! কাঞ্চীদাম উত্তোলন কর। (চ) হে পাপিনি! কর্ণের পল্লব গণ্ডের উপর দুলিতেছে, সুতরাং তাহা উত্তোলন কর। (ছ) হে হৃদয়শূন্যে! পতিত দন্তপত্রটা তুলিয়া লও। (জ) হে যৌবনোন্মত্তে! লোকে তোমাকে দেখিতেছে, সুতরাং বিশাল স্তনমণ্ডল আবৃত কর। (ঝ) হে নির্লজ্জে! পরিধেয় বসন খুলিয়া পড়িতেছে, তুলিয়া পরিধান কর। (ঞ) হে মিথ্যামুগ্ধে!

---

(१)…भागम्।

तरमागम्यताम्। (ञ) कुतूहलिनि! देहि दर्शनान्तरम् (१)। (ट) असन्तुष्टे! कियदालोकयसि। (ठ) तरलहृदये! परिजनमपेक्षस्व। (ड) पिशाचि! (२) गलितोत्तरीया विहस्यसे (३) जनेन। (ढ) रागावृतनयने! पश्यसि न सखीजनम्। (ण) अनेकभङ्गिविकारपूर्णे! दुःखमकारणायासित-हृदया (४) जीवसि। (त) मिथ्याविनीते! किं व्यपदेशवीक्षितैः, विश्रब्ध-

(ञ) अलीकेति। अलीकमुग्धे! मिथ्याप्रकटितमुग्धभावे! वस्तुतस्त्वं प्रगल्भैव चन्द्रापीडदर्शनोत्-कण्ठया साधारणदर्शनयोग्यस्थानागमनेन निर्लज्जत्वादिति भावः। द्रुततरमागम्यतां, अन्यथा दर्शनपथमति-क्रामेच्चन्द्रापीड इत्याशयः। कयेन प्रकटितमुग्धभावां प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ट) कुतूहेति। हे कुतूहलिनि! दर्शनायातीवकौतुकशालिनि! सहचारिण्या ममाप्यनपेक्षणादिति भावः। दर्शनान्तरं ममापि दर्शनायावकाशम्। अप्राप्तावकाशायाः कस्याश्चित् स्थानरोधिनीं प्रति सेर्ष्य-मुक्तिः।

(ठ) असन्तुष्ट इति। हे असन्तुष्टे! चिरदर्शनेनाप्यतृप्ते! अनपसरणादिति भावः। कियदा-लोकयसे, इदानीमपसरेत्यभिप्रायः। इयमपि चिरं पश्यन्तीं प्रति सेर्ष्योक्तिः।

(ड) तरलेति। तरलहृदये! चञ्चलचित्ते! दर्शनोत्कण्ठया द्रुतागमनादिति भावः। परिजनं सहचारिण्यादिकं अपेक्षस्व प्रतीक्षस्व। तदपेक्षया शनैः शनैर्गच्छेत्याशयः। सहचरीवर्गमपहाय धावन्तीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ढ) पिशाचीति। हे पिशाचि! तत्तुल्ये! निर्लज्जत्वादिति भावः। गलितोत्तरीया अतएव जनेन पश्यता लोकेन विहस्यसे। सुतरां यथास्थानमुत्तरीयं निवेशयेत्यभिप्रायः। तादृशीं प्रति सविश्रम्भेयमुक्तिः।

(ण) रागेति। रागेण चन्द्रापीडानुरागेण आवृते आच्छादिते अन्यदर्शनानुपयोगिनी कृते इत्यर्थः नयने चक्षुषी यस्यास्तत्सम्बोधनम्। अतएव सखीजनमपि न पश्यसीति काकुः। सहसैव तवेदं नोचितमिति भावः। निष्पन्दनयनां प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(त) अनेकेति। अनेका भङ्गयः करनयनादिसङ्केता एव विकारास्तैः पूर्णा तत्सम्बोधनं। अकारणं चन्द्रापीडलाभासम्भवात् निष्प्रयोजनं आयासितहृदया उत्कण्ठया खिन्नचित्ता दुःखं यथा स्यात्तथा जीवसि। तथा च सहस्रमपि भङ्गिविकारान् दर्शय किन्तु कदापि न ते चन्द्रापीडलाभः सम्भवेत्, सुतरामिदानीमुत्कण्ठया चित्तपीडा परत्र चानुतापादुःखेन जीवनधारणमिति भावः। इयमपि तादृशीं प्रति सपरिहासोक्तिः।

अतिक्रुत आगমন কর। (ট) হে কৌতুকবতি! আমাকেও একটু দেখিবার স্থান দেও। (ঠ) হে অতৃপ্তে! কত দেখিবে। (ড) হে চঞ্চলচিত্তে! পরিজনদিগের অপেক্ষা কর। (ঢ) হে পিশাচি! তোমার উত্তরীয় বস্ত্র পড়িয়া যাওয়ায় লোকে দেখিয়া হাসিতেছে। (ণ) হে অনুরাগাচ্ছন্ননেত্রে! সখীজনকেও দেখিতেছ না? (ত) হে নানাবিধভঙ্গিবিকার-পূর্ণে! তুমি অকারণ খিন্নচিত্ত হইয়া দুঃখে জীবন ধারণ করিতেছ। (থ) হে মিথ্যা-

(१) सुपदर्शनान्तरम्। (२) पिशाचिके। (३) हस्यसे। (४) दुःखकारणायासितहृदया।

मालोकय (१)। (थ) यौवनशालिनि! किं पीडयसि पयोधरभारेण। (द) अतिकोपने! पुरतो भव। (ध) मत्सरिणि! किमेकाकिनी रुणत्सि वातायनम्। (न) अनङ्गपरवशे! मदीयमुत्तरीयांशुकमुत्तरीयतां नयसि? (प) रागासवमत्ते! (२) निवारयात्मानम्। (फ) उज्झितधैर्य्ये! किं धावसि

(थ) मिथ्येति। मिथ्याविनीते। अलीकविनयप्रदर्शिनि! व्यपदेशवीक्षितैः कपटावलोकनैः किं, अस्माभिस्तद्दृश्यमानत्वेन विनयमिथ्यात्वावधारणान्न किमपि फलमिति भावः, अतएव विस्रब्धं निःशङ्कमालोकय। तथा सति तवापि दर्शनसुखवृद्धिर्भवेत् अस्माकमपि कपटतावधारणेन त्वयि विरक्तिर्न स्यादिति भावः। व्यापदेशेन पश्यन्तीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(द) यौवनेति। हे यौवनशालिनि। उत्कृष्टयौवनान्विते! तदुत्कर्षप्रतिपादककठिनपीनस्तनवत्त्वादिति भावः। पयोधरभारेण तादृशस्तनयोर्गुरुत्वेन भारवत्स्तनयुगलेनेत्यर्थः, पीडयसि पृष्ठस्य आघातेन पीडां करोषि। अत्र पीडनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। अग्रगमनावेगात् कठिनकुचयुगलेन पृष्ठतः सङ्घर्षकारिणीं प्रति कस्याश्चित् सोत्प्रासपरिहासेयमुक्तिः।

(ध) अतीति। हे अतिकोपने। नितान्तक्रुद्धस्वभावे। अपसर्त्तुमुद्यतेव भ्रूकुटीकारित्वादिति भावः। पुरतः अग्रगामिनी भव। येन हि तव सङ्घर्षवशादग्रे स्थातुं न शक्नोमीत्याशयः। अतीवदर्शनोत्कण्ठया सङ्घर्षेणाग्रे यियासन्तीं प्रति कस्याश्चिदग्रवर्त्तिन्या ईर्ष्यावशादुक्तिरियम्।

(न) मत्सरेति। हे मत्सरिणि। अन्यशुभद्वेषिणि! दर्शनविघ्नाचरणादिति भावः। गवाक्षद्वाररोधिनीं प्रति सम्यक् दिदृक्षमाणायास्तदवकाशमलभमानायाः सेर्ष्यमुक्तिः।

(प) अनङ्गेति। अनङ्गपरवशे! कामाधीने। कामावेशवशेन प्राप्तमोहे! इत्यर्थः, स्वकीयास्वकीयविवेकाभावादिति भावः। अत एवाह मदीयमिति। स्वकीयभ्रमेण परकीयमुत्तरीयमाददानां प्रति कस्याश्चित् सपरिहासेयमुक्तिः।

(फ) रागेति। रागश्चन्द्रापीडं प्रत्यनुराग एव आसवो मद्यं तेन मत्ता तत्सम्बोधनम्, नानाविधभङ्गिकरणादिति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। आत्मानं चन्द्रापीडं प्रति सानुरागं मनः निवारय, अन्यथा अमुष्य लाभाभावेन चिरमनुतापमनुभविष्यसीत्याशयः। विविधभङ्गिकारिणीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ब) उज्झितेति। उज्झितं दर्शनोत्कण्ठया त्यक्तं धैर्य्यं यया तत्सम्बोधनम् गुरुजनसमक्षधावनादिति भावः। गुरुजनानां श्वशुरादीनां समक्षं अक्ष्णोः समीपं। तादृशीं प্রতি सासूयेयमुक्तिः।

বিনয়বতি! ছলপূর্ব্বক দর্শন করায় ফল কি, নিঃশঙ্কভাবে দর্শন কর। (দ) হে যৌবনবতি! বিশালস্তনযুগলদ্বারা আঘাত করিতেছ কেন? (ধ) হে নিতান্তক্রুদ্ধস্বভাবে! তুমিই অগ্রবর্ত্তিনী হও। (ন) হে মাৎসর্য্যবতি! তুমি একাকী গবাক্ষদ্বার রোধ করিতেছ কেন? (প) হে মদনাধীনে! তুমি আমার উত্তরীয় বসন, নিজের উত্তরীয় করিয়া লইতেছ কেন? (ফ) হে অনুরাগ-মদ্য-মত্তে! নিজের মনকে বারণ কর। (ব) হে

(१) विलोकय। (२) रागमत्ते!।

गुरुजनसमक्षम्। (ब) उल्लसत्स्वभावे! किमेवमाकुलीभवसि? (भ) मुग्धे! निगूहस्व मदनज्वर-जनित-पुलकजालकम्। (म) असाध्वाचरणे! (१) किमेवमुत्ताम्यसि? (य) बहुविकारे! विविधाङ्ग (२) वलनायासित-मध्य-भागा वृथा खिद्यसे। (र) शून्यहृदये! स्वभवनान्निर्गतमपि नात्मानमव-गच्छसि। (ल) कौतुकाविष्टे! विस्मृतासि निश्वसितुम् (३)। (व)

(भ) उल्लसदिति। हे उल्लसत्स्वभावे! आविर्भवन्मनोविकारे! व्यक्तत्वादिति भावः। एवमित्थं किमाकुलीभवसि। न खलु ते चन्द्रापीडसम्मेलनं भवेत् सुतरामयमाकुलीभावो व्यर्थ एवेति भावः। तादृशीं प्रति कस्याश्चित् सोत्प्रासपरिहासेयमुक्तिः।

(म) मुग्ध इति। हे मुग्धे! सरले! आविर्भवतोऽपि पुलकजालस्यानवगमादिति भावः। मदन-ज्वरेण कामोत्तापेन जनितं पुलकजालकं रोमाञ्चसमूहं निगूहस्व वसनावरणेन संवृणु। अन्यथा लोकैरुप-हासिष्यसे इत्याशयः। तादृशीं प्रति पूर्ववदुक्तिरियम्।

(य) असाध्विति। हे असाध्वाचरणे! असद्व्यवहारिणि! परपुरुषार्थमुत्तान्तत्वादिति भावः। एवमित्थं सातिशयमित्यर्थः उत्ताम्यसि आकुलीभवसि। पतिव्रताया नैतदुचितमित्यभिप्रायः। भङ्गिविशेष-दर्शनेनानुमिताकुलीभावां प्रति सासूयेयमुक्तिः।

(र) बह्विति। बहवो विकाराः शृङ्गारभावा यस्यास्तत्सम्बोधनं कटीचालनकटाक्षपातादिमत्त्वादिति भावः। विविधेन अङ्गवलनेन गात्रविक्षेपेण आयासितः खेदितः मध्यभागः कटीदेशो यया सा तादृशी सती वृथा खिद्यसे अनर्थकं परिश्राम्यसि, चन्द्रापीडलाभासम्भवादिति भावः। मध्यभागस्यैव नितान्तकृशत्वात्तन्मा-त्रोक्तिः सङ्गच्छते। तादृशीं प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ल) शून्येति। शून्यहृदये! विषयान्तरज्ञानरहितचित्ते! चन्द्रापीडं प्रत्येकाग्रत्वादिति भावः। आत्मानं स्वदेहम्। गृहाद्बहिर्धावन्तीं प्रति सोत्प्रासपरिहासेयमुक्तिः।

(व) कौतुकेति। हे कौतुकाविष्टे! चन्द्रापीडरूपदर्शनकुतूहलाक्रान्तचित्ते! विषयान्तरविस्मरणादिति भावः। अत एवाह निश्वसितुमपि विस्मृतासीति। अत्र निश्वासविस्मरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरति-शयोक्तिरलङ्कारः। निर्निमेषतया अनुमितैकाग्रतां प्रति पूर्ववदुक्तिरियम्।

ধৈর্য্যহীনে! গুরুজনের সমক্ষে ধাবিত হইতেছ কেন? (ভ) হে আবির্ভূতমনো-বিকারে! এরূপ আকুল হইতেছ কেন? (ম) হে সরলে! মদনসন্তাপজনিত রোমাঞ্চসমূহ সংবরণ কর। (য) হে অসাধুচরিতে! কেন এত উতলা হইতেছ? (র) হে অনেকবিকারপূর্ণে! তুমি নানাপ্রকার অঙ্গসঞ্চালনদ্বারা কটীদেশের কষ্ট জন্মাইয়া বৃথা পরিশ্রম করিতেছ। (ল) হে শূন্যহৃদয়ে! তুমি নিজ গৃহ হইতে বাহির হইয়া পড়িয়াছ, তাহাও বুঝিতেছ না। (ব) হে কৌতুকাকৃষ্টচিত্তে! তুমি নিশ্বাস ত্যাগ করিতেও

(१) असाध्वाचरणे।। (२) विविधाङ्गभङ्गवलन...,। (३) निःश्वसितुं।

अन्तःसङ्कल्प-रचित-सुरत-(१) समागम-सुख-रस-निमीलित-लोचने! समुन्मीलय लोचनयुगलम्, अतिक्रामत्ययम्। (श) अनङ्ग-शर-प्रहार-मूर्च्छिते! रवि-किरणनिवारणाय कुरु शिरस्युत्तरीयांशुकपल्लवम्। (ष) अयि सतीव्रत-ग्रह-गृहीते! द्रष्टव्यमपश्यन्ती वञ्चयसि लोचनयुगलम्। (स) अधन्ये! (२) हृतासि परपुरुष-दर्शन-परीहार-व्रतेन (३)। (ह) प्रसीद उत्तिष्ठ सखि! पश्य रतिविरहितं साक्षादिव भगवन्तमगृहीत-मकरध्वजं मकरध्वजम्। (क्ष)

(श) अन्तरिति। अन्तःसङ्कल्पेन मनोभावनया रचितं कल्पितं यत् सुरतसमागमसुखं चन्द्रापीडेन सह रमणसम्मेलनानन्दः तस्य रसेन आस्वादेन अनुभवेन निमीलिते मुद्रिते लोचने यया तत्सम्बोधनम्। तादृशरसास्वादमन्तरेणेदानीं नयनमुद्रणासम्भवादिति भावः। लोचनयुगलं समुन्मीलय, यतः अयं चन्द्रापीडः अतिक्रामति नयनपथमतीत्य याति। तथा च सति अलौकिकदर्शनसुखं न स्यादिति भावः। मुद्रितनयनां प्रति सपरिहासेयमुक्तिः।

(ष) अनङ्गेति। अनङ्गशरप्रहारेण मूर्च्छिता मूर्च्छापन्ना तत्सम्बोधनम्, वर्त्तमानकष्टानुभवादिति भावः। उत्तरीयांशुकपल्लवं उत्तरीयवस्त्रविस्तारं। आतपक्लिष्टां प्रति सपरिहासोक्तिरियम्।

(स) अयीति। सत्याः पतिव्रतायाः यद्व्रतं परपुरुषादर्शनरूपो नियमः स एव ग्रहो भूतविशेषस्तेन गृहीता आविष्टा तत्सम्बोधनम्। भूतावेशं विना ईदृशरूपदर्शनवैमुख्यं न स्यादिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। अतएव द्रष्टव्यं दर्शनीयमलौकिकसुन्दरं चन्द्रापीडमित्यर्थः अपश्यन्ती लोचनयुगलं वञ्चयसि अन्यदेदृशदर्शनासम्भवादिति भावः। अन्याभिः सहागत्य परपुरुषदर्शनात्, पातिव्रात्यभङ्गभयेनापश्यन्तीं प्रति सविस्रम्भेयमुक्तिः।

(ह) अधन्ये इति। हे अधन्ये! अपुण्यवति! सति पुण्ये दर्शनावश्यम्भावादिति भावः। परपुरुष-दर्शनस्य परिहारः परित्याग एव व्रतं तेन हृता चिराय वञ्चितासि द्रष्टव्यादर्शनादिति भावः। इयमपि पूर्ववदुक्तिः।

अहो परमचमत्कारिणी खल्वियमालापरचनाचातुरी कविचूडामणेः।

(क्ष) प्रसीदेति। रत्या निजपत्न्या विरहितं, चन्द्रापीडस्यापि स्त्रीरहितत्वादिदं विशेषणमिति बोध्यम्। न गृहीतः मकरध्वजो मकराख्यजलजन्तुचिह्नितो ध्वजो येन तम्। चन्द्रापीडस्यापि तादृशध्वजाभावादिदं विशेषणम्। साक्षान्मकरध्वजं। कन्दर्पमिव अमुं पश्य। अत्र मकरध्वजशब्दयोः पौनरुक्त्ये तात्पर्य्यतो

বিস্মৃত হইয়াছ। (শ) হে…মুদ্রিতনয়নে! তুমি নয়নযুগল উন্মীলিত কর, ইনি যে দৃষ্টিপথ অতিক্রম করিয়া যাইতেছেন। (ষ) হে মদন-বাণ-প্রহার-মূর্চ্ছিতে! রৌদ্র নিবারণ করিবার নিমিত্ত মস্তকের উপরে উত্তরীয় বসন বিস্তৃত কর। (স) হে সতী-নিয়ম-পালন-রূপ-ভূতাবিষ্টে! দেখিবার বস্তু না দেখিয়া নয়নযুগলকে বঞ্চিত করিতেছ। (হ) হে অপুণ্য-বতি! পরপুরুষ-দর্শন-পরিত্যাগরূপ ব্রতদ্বারা তুমি বঞ্চিত হইতেছ। (ক্ষ) সখি! প্রসন্ন

---

(१)…रस…। (२) अधनी! (३)…दर्शनव्रतेन।

अयमस्य सितातपत्रान्तरेण अलिकुलनीले शिरसि तिमिरशङ्कानिपतित इव शशिकरकलापो मालतीकुसुमशेखरोऽभिलक्ष्यते। (क) एतदस्य कर्णाभरण-मरकत-प्रभा-श्यामायितं उपरचित-विकच-शिरीष-कुसुम-कर्ण-पूरमिव कपोल-तलमाभाति। (ख) अयमस्य हारान्तर्निविष्टारुण-मणि-किरण-कलाप-च्छलेन हृदयं विविक्षुरभिनवयौवनराग इव बहिः परिस्फुरति। (ग) एतदनेन चामरकलापान्तरैरित इव वीक्षितम् (१)। (घ) एतत् किमपि वैशम्पायनेन

भेदात् लाटानुप्रासो द्रव्योत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। रूपमोत्कर्षेनोपविष्टां प्रति कस्याश्चित् समन्मथेयमुक्तिः।

(क) अयमिति। अलिकुलवत् भ्रमरसमूहवत् नीले तादृशकेशाहृतत्वान्नितान्तकृष्णवर्णे अस्य चन्द्रापीडस्य शिरसि, तिमिरशङ्कया अन्धकारभ्रमेण अन्धकारभ्रमोत्पादिततन्निरासबुद्ध्येत्यर्थः निपतितः शशिकरकलाप इव चन्द्रकिरणसमूह इव अयं मालतीकुसुमानां शेखरो मालारूपशिरोभूषणं सितातपत्रान्तरेण श्वेतच्छत्राभ्यन्तरेण अभिलक्ष्यते दृश्यते। अत्र लुप्तोपमा, भ्रान्तिमान्, जात्युत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। सस्पृहेयमुक्तिः।

(ख) एतदिति। कर्णाभरणं यन्मरकतं हरिन्मणिस्तस्य प्रभया श्यामायितं श्यामावदाचरितं एतद्दृश्यमानं अस्य चन्द्रापीडस्य कपोलतलं गण्डद्वयोपरिभागः, उपरचितो निर्म्मितः विकचस्य प्रस्फुटस्य शिरीषकुसुमस्य कर्णपूरः कर्णाभरणं यस्मिन् तत् तादृशमिव आभाति शोभते। शिरीषकुसुमस्य श्यामत्वात् कर्णलग्नस्य गण्डोपरिप्रभापतनसम्भावास्तीति भावः। अत्र क्यङ्गतोपमा, शिरीषकुसुमेन कर्णपूररचनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। पूर्ववदुक्तिरियम्।

(ग) अयमिति। अयं दृश्यमानः, अभिनवयौवनस्य रागस्तत्कालसम्भवोऽनुराग एव रागो रक्तिमा, हारस्य अन्तर्निविष्टा मध्यगता ये अरुणमणयः पद्मरागास्तेषां किरणकलापच्छलेन विद्यमान इत्यर्थः, हृदयं विविक्षुः प्रवेष्टुमिच्छुरिव सन् बहिः परिस्फुरति इदानीमपि प्रवेशाभावात् हृदयोपरि प्रसरति। अस्य वक्षसि येयं रक्ताभा परिलक्ष्यते नासौ पद्मरागकान्तिः, अपि तु यौवनसम्भवानुरागो हृदयं विविक्षुरिदानीमपि बहिस्तिष्ठतीति सरलार्थः। अत्र रक्तिमानुरागयोः श्लेषाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः सापह्नवोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। पूर्ववदुक्तिरियम्।

হও, উঠ; রতিদেবী ও মকরধ্বজ-রহিত সাক্ষাৎ ভগবান্ কামদেবের ন্যায় ইহাঁকে দর্শন কর। (ক) ভ্রমরসমূহের ন্যায় অত্যন্ত কৃষ্ণবর্ণ মস্তকের উপরে অন্ধকারভ্রমে নিপতিত চন্দ্রকিরণসমূহের ন্যায় ইহাঁর এই মালতীকুসুমের মালা, শ্বেতবর্ণছত্রের ভিতর দিয়া দেখা যাইতেছে। (খ) ইহাঁর এই গণ্ডযুগল, কর্ণালঙ্কার মরকতমণির প্রভায় শ্যামবর্ণ হইয়া দীপ্তি পাইতেছে; সুতরাং বোধ হইতেছে যেন প্রস্ফুটিত শিরীষকুসুমের কর্ণাভরণ নির্ম্মাণ করিয়া কর্ণে দেওয়া হইয়াছে। (গ) ইহাঁর এই নবযৌবনসম্ভূত অনুরাগ যেন হৃদয়ে প্রবেশ

(१) एतदलकचामरकलापान्तरैरितविरलवीक्षितम्।

सह समामन्त्र्य (१) दशन-मयूख-लेखा-धवलीकृत-(२) दिक्चक्रवालं हसितम्। (ङ) एषोऽस्य शुक-पक्षति-हरित-रागिणोत्तरीयांशुकप्रान्तेन बलाहकस्तुरग-खुर-चलन-जन्मानं लग्नं (३) अग्रकेशेषु रेणुमपहरति। (च) अयमनेन लक्ष्मी-कर-कमल-कोमल-तलः समुत्क्षिप्य तिर्य्यक् तुरङ्गमस्कन्धे निक्षिप्तचरण-पल्लवः। (छ) सलीलमयमनेन च ताम्बूल-याचनार्थमुत्तानिततलः (४) कोमल-दीर्घाङ्गुलिः (५) आताम्र-पुष्कर-शोभी गजेनेव शैवाल-कवल-लालसः (६)

(घ) एतदिति। अनेन चन्द्रापीड़ेन चामरकलापान्तरैः आन्दोल्यमानचामरसमूहमध्यैः, इत इव मम दिशीव वीक्षितम्। कस्याश्चित् सविलासमन्मथेयमुक्तिः।

(ङ) एतदिति। वैशम्पायनेन सह किमपि समामन्त्र्य समालप्य, दशनमयूखलेखया दन्तरश्मिश्रेण्या धवलीकृतं दिक्चक्रवालं दिङ्मण्डलं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा एतत् हसितं अयमनेन हासः कृतः। अत्र दिङ्मण्डलस्य धवलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। सकामेयमुक्तिः।

(च) एष इति। एष बलाहकस्तदाख्यः पूर्वोक्तसेनापतिः, शुकपक्षतेः कीरपक्षिपक्षमूलस्येव हरितो रागो वर्णो यस्य तेन उत्तरीयांशुकप्रान्तेन, तुरगाणां अश्वानां खुरचलनात् जन्म यस्य तं, अस्य चन्द्रापीड़स्य अग्रकेशेषु केशाग्रेषु लग्नं रेणुं धूलिं अपहरति दूरीकरोति। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। सस्पृहेयमुक्तिः।

(छ) अयमिति। अनेन चन्द्रापीड़ेन, लक्ष्मीकरकमलवत् कोमलं तलं यस्य स तादृशः अयं चरण-पल्लवः, तिर्य्यग्भावेन समुत्क्षिप्य उत्तोल्य तुरङ्गमस्कन्धे निक्षिप्तो न्यस्तः। अत्रापि लुप्तोपमालङ्कारः। पूर्ववदुक्तिरियम्।

(ज) सलीलमिति। किञ्चेति चार्थः। गजेन आताम्रेण पुष्करेण शुण्डाग्रेण शोभत इति सः, तथा शैवालकवले शैवलग्रासग्रहणे लालसो लोलुपः हस्तिनो लालसत्वात्तच्छुण्डाया अपि लालसत्वमुपचर्य्यत इति बोध्यम्, करः शुण्डादण्ड इव, अनेन चन्द्रापीड़ेन, उत्तानितं ऊर्द्धीकृतं तलं यस्य सः, कोमला दीर्घाश्च

করিতে ইচ্ছা করিয়া, মুক্তামালার অন্তর্গত পদ্মরাগমণির কিরণসমূহচ্ছলে এখনও বাহিরেই প্রকাশ পাইতেছে। (ঘ) এই যে ইনি চামরগুলির ভিতর দিয়া এই দিকেই যেন দৃষ্টিপাত করিলেন। (ঙ) বৈশম্পায়নের সহিত কোন বিষয় আলাপ করিয়া, দন্তরশ্মিসমূহে দিঙ্মণ্ডল শুভ্রবর্ণ করিয়া এই ইনি হাস্য করিলেন। (চ) এই বলাহক (সেনাপতি), শুকপক্ষীর পক্ষমূলের ন্যায় হরিতবর্ণ স্বকীয় উত্তরীয়বসন-প্রান্তদ্বারা, অশ্বগণের খুর হইতে উত্থিত ইঁহার কেশাগ্রসংলগ্ন ধূলিসমূহ ঝাড়িয়া দিতেছেন। (ছ) এই ইনি, লক্ষ্মীদেবীর করকমলের ন্যায় কোমল-তল-সম্পন্ন স্বকীয় চরণপল্লব, তির্য্যগ্ ভাবে (তেরচা করিয়া) উত্তোলন করিয়া অশ্ব-স্কন্ধে বিন্যস্ত করিলেন। (জ) হস্তী যেমন শৈবাল-(শেওলা) কবল গ্রহণ করিবার লালসায় শুণ্ড প্রসারণ করে, সেইরূপ ইনি, তাম্বূল প্রার্থনা করিবার নিমিত্ত কোমল ও

(१) समामन्त्रयतः। (२)...धवलित...। (३) आलग्नं, आलग्नकेशेषु।

(४)...तली,...करतलः। (५) दीर्घाङ्गुलिः। (६)...कमलग्रासलालसः।

प्रसारितः करः। (ज) धन्या सा, या लक्ष्मीरिव निर्जितकमलं करतलमस्य वसुन्धरासपत्नी ग्रहीष्यति। (झ) धन्या च देवी विलासवती, सकलमहीमण्डल-भारधारणक्षमः (१) ककुभा दिग्गज इव गर्भेण ययायमूढः (२)।" (ञ)

इत्येवंविधानि चान्यानि च वदन्तीनां तासां आपीयमान इव लोचन-पुटैः, आहूयमान इव भूषणरवैः, अनुगम्यमान इव हृदयैः, निबध्यमान इव (३)

अङ्गुलयो यस्य सः, तथा आताम्रं ईषत्ताम्रवर्णं यत् पुष्करं पद्मं तद्वत् शोभत इति सः, करो हस्तः, ताम्बूल-याचनार्थं सलीलं सविलासं प्रसारितः। अत्र श्लेषसङ्कीर्णोपमालङ्कारः। पूर्णोपमेति केचित्। इयमपि पूर्ववदुक्तिः।

(झ) धन्येति। या अङ्गना वसुन्धरायाः पृथिव्याः सपत्नी सती, अस्य भाविवसुन्धराधिपतित्वादिति भावः, लक्ष्मीरिव राजलक्ष्मीरिव निर्जितकमलं पद्मादपि सुन्दरमित्यर्थः अस्य चन्द्रापीडस्य करतलं पाणिं ग्रहीष्यति परिणयविधाविति शेषः, सा धन्या सैव पुण्यवती, परमसौभाग्यादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। तथा विशेष्यीभूतस्य तच्छब्दनिर्दिष्टवाक्यस्य प्राङ्निर्देशात् "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिवद्वाक्यगत-विधेयाविमर्शदोषः, स तु 'धन्या सा' इत्यस्य ग्रहीष्यतीत्यनन्तरं पाठेन समाधेयः। समन्मथेयमुक्तिः।

(ञ) धन्येति। यया विलासवत्या, ककुभा दिशा दिग्गज इव, सकलमहीमण्डलस्य यद्भारधारणं शासनव्यापारपरिचालना गुरुत्ववहनञ्च तत्र क्षमो योग्यः, अयं चन्द्रापीडः, गर्भेण उदरेण अभ्यन्तरेण च ऊढो धृतः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। किन्त्वत्र पूर्ववाक्ये तच्छब्दाभावात् यच्छब्दस्य चोत्तरवाक्यगतत्वेन तच्छब्दानपेक्षणात् पूर्ववन्न विधेयाविमर्शदोषः, "आत्मा जानाति, यत् पापं" इत्यादिवत्। सस्पृहेयमुक्तिः।

(ट) इत्येवमिति। तासां पौरललनानां लोचनपुटैरित्येवं सर्वत्र सम्बन्धः। आपीयमान इवेत्यादौ सर्वत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। किञ्च आभरणरत्नानां रश्मयः किरणा एव रज्जवस्ताभिः निबध्यमान इवेति निरङ्ग-केवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा। तथा नवयौवनान्येव वलय उपहारद्रव्याणि तैः, उपक्रियमाण उपहारपात्री-

---

দীর্ঘ অঙ্গুলি-সমন্বিত এবং ঈষৎতাম্রবর্ণ পদ্মের ন্যায় শোভিত করকমল উত্তানিত (চিৎ) করিয়া লীলার সহিত প্রসারণ করিলেন। (ঝ) সেই রমণীই ধন্য; যে, পৃথিবীর সপত্নী হইয়া রাজলক্ষ্মীর ন্যায়, ইহাঁর পদ্মবিজয়ী পাণি গ্রহণ করিবে। (ঞ) দিক্ যেমন দিগ্-হস্তীকে গর্ভে ধারণ করে, সেইরূপ যিনি, সমগ্র ভূমণ্ডলের ভার বহন করিতে সক্ষম এই চন্দ্রাপীড়কে গর্ভে ধারণ করিয়াছেন, সেই দেবী বিলাসবতীও ধন্য।"

(ট) পুরবাসিনী রমণীগণ এই রকম এবং অন্যান্য অনেক রকম বলিতেছিল, তখন তাহাদের নয়নযুগল যেন চন্দ্রাপীড়কে পান করিতেছিল; অলঙ্কারের শব্দ যেন আহ্বান করিতেছিল; মন যেন তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; অলঙ্কারস্থিত রত্নের কিরণরূপ

---

(१)...मण्डलधारणक्षमः। (२)...दिग्गज इव यया च व्यूढः, गर्भेण यया व्यूढः, गर्भेण ययायं व्यूढः।

(३) अनुबध्यमान इव।

आभरण-रत्न-रश्मि-रज्जुभिः, उपक्रियमाण इव नवयौवनबलिभिः, शिथिल-(१) भुजलता-विगलित-धवल-वलय-निकरैः (२) पदे पदे विवाहानल इव कुसुम-मिश्रै र्लाजाञ्जलिभिरवकीर्य्यमाणश्चन्द्रापीडो राजकुलसमीपमाससाद। (ट)

क्रमेण च यामावस्थिताभिः अनवरत-करटस्थल-विगलित-(३) मद-मसीपङ्क-कारीभिः (४) अञ्जनगिरिमालामलिनाभिः कुञ्जर-घटाभिरन्धकारितदिङ्मुखतया जलधरदिवसायमानम्, उद्दण्ड-धवलातपत्रसहस्रसङ्कटम्, अनेकद्वीपान्तरागत-दूत-शत-समाकुलं राजद्वारमासाद्य तुरङ्गमादवततार। (ठ)

क्रियमाण इव, आयत्तीय दानाभिलाषादिति भावः। अत्रापि निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा। तथा शिथिलाभ्यः कामोद्रेकात् स्रस्ताभ्यः भुजलताभ्यः विगलितः, धवलानां रजतमयत्वात् हीरकमयत्वाद्वा शुभ्राणां वलयानां कटकानां निकरः तत्किरणसमूह इत्यर्थः येषु तैः, कुसुममिश्रैः लाजाञ्जलिभिः अञ्जलिपूर्णधानाभिः, विवाहानलः पाणिग्रहणकालीनवह्निरिव, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं अवकीर्य्यमाणस्ताभिर्ललनाभिरभिरभ्यमाणः, चन्द्रापीडः राजकुलस्य राजवाट्याः समीपं आससाद प्राप। अत्रोपमालङ्कारः। पाणिग्रहणसमये तदनले लाजनिक्षेपः शास्त्रात्, राजागमनादौ तु लाजनिक्षेपो देशाचारात्। तथा च रघुवंशेऽपि "अवाकिरन् बाललताः प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्याः।"

(ठ) क्रमेणेति। यामेषु अवस्थिताभिः प्रतिप्रहरं भिन्नभिन्नाभिः स्थिताभिः। अनवरतं करटस्थलीभ्यो गण्डदेशेभ्यः विगलिता मदा दानजलान्येव मसीपङ्का गाढमस्यः कृष्णतासाधर्म्यात्, अथवा तादृशमदा मसी-पङ्का इव तान् कुर्वन्तीति ताभिः अत्र साधकबाधकप्रमाणाभावादुपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। अञ्जन-गिरिमालावत् कज्जलपर्वतश्रेणीवत् मलिनाभिः कृष्णवर्णाभिः कुञ्जरघटाभिर्हस्तिसमूहैः करणैः, अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि दिङ्मुखानि यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, जलधरदिवसायमानं मेघाच्छन्नदिनवदाचरत्। अत्र काव्यगतोपमालङ्कारः। उद्दण्डानां उत्तोलितदण्डानां धवलातपत्राणां श्वेतच्छत्राणां सहस्रेण समूहेन

রজ্জু যেন তাঁহাকে বন্ধন করিতেছিল; আর তাহারা নবযৌবনরূপ উপহারদ্রব্যদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে যেন উপঢৌকন দিতেছিল; এবং বিবাহের অগ্নিতে যেমন খই নিক্ষেপ করে, সেইরূপ অঞ্জলিপূর্ণ করিয়া পুষ্পমিশ্রিত খই, প্রত্যেক পদক্ষেপে চন্দ্রাপীড়ের গাত্রে নিক্ষেপ করিতেছিল; তখন তাহাদের শিথিল ভুজলতা হইতে নিপতিত ধবলবর্ণ বলয়ের কিরণসমূহ সেই খই'র সঙ্গে মিশিতেছিল; এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় রাজবাটীর নিকটে উপস্থিত হইলেন।

(ঠ) চন্দ্রাপীড়, ক্রমে রাজদ্বারে উপস্থিত হইয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন; সে স্থানে প্রত্যেক প্রহরে পরিবর্ত্তিত হইয়া বহুতর হস্তী অবস্থান করিতেছিল, তাহাদের গণ্ডস্থল হইতে অবিশ্রান্ত, গাঢ় কালীর ন্যায় মদজল বিগলিত হইতেছিল; এবং সেগুলি কজ্জলময় পর্ব্বতের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ছিল, তাহাতে নিকটবর্ত্তী দিক্‌সমূহ অন্ধকার হইয়া যাওয়ায় সেই রাজদ্বার,

---

(१) शिथिलित...। (२)...निकरैः। (३)...गलित...। (४)...मषीकारीभिः।

अवतीर्य्य च करतलेन करे वैशम्पायनमवलम्ब्य पुरः सविनयं प्रस्थितेन बलाहकेनोपदिश्यमान-मार्गः त्रिभुवनमिव पुञ्जीभूतम्, (ड) आगृहीत-कनक-वेत्रलतैः सित-वारवाणैः (१) सिताङ्गरागैः (२) सितकुसुमशेखरैः सितोष्णीषैः सितवेशपरिग्रहतया श्वेतद्वीपसम्भवैरिव कृतयुगपुरुषैरिव महाप्रमाणैर्दिवानिश-मालिखितैरिव उत्कीर्णैरिव तोरणस्तम्भनिषण्णैर्द्वारपालैरनुज्झितद्वारदेशम्, (ढ)

सङ्कटं व्याप्तम्, तथा अनेकद्वीपान्तरेभ्य आगतानां स्वस्वराजप्रयोजनसाधनाय उपस्थितानां दूतानां शतेन समूहेन समाकुलं व्याप्तं प्रवेशानुमत्यपेक्षया तेषां तत्रावस्थानादिति भावः।

(ड) अवेति। किञ्चेति चार्थः। चन्द्रापीडस्तुरङ्गमादवतीर्य्य, करतलेन करे वैशम्पायनमवलम्ब्य वैशम्पायनस्य करं धृत्वेत्यर्थः, सविनयं पुरः प्रस्थितेन बलाहकेन तदाख्येन सेनापतिना उपदिश्यमानमार्गः प्रदर्श्यमानप्रवेशपथः सन्, पुञ्जीभूतं त्रिभुवनमिव अतीवविशालत्वात् सर्वविधपदार्थाधारत्वाच्च एकत्र समवेतं त्रिजगदिव स्थितं राजकुलं विवेशेति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) आगृहीतेति। इतस्तृतीयान्तपदानि वक्ष्यमाणस्य द्वारपालैरित्यस्य विशेषणानि। आगृहीता धृताः कनकवेत्रलताः स्वर्णखचितवेत्रयष्टयो यैस्तैः। सिताः शुभ्राः वारवाणाः कञ्चुका येषां तैः। सितान् वेशान् परिगृह्णन्तीति ते तेषां भावस्तया हेतुना श्वेतद्वीपे सम्भवैरिव उत्पन्नैरिव तेषां सर्वश्वेतत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा सितपदस्यासकृदुपादानादनवीकृतत्वदोषः, स च सित-वारबाणाङ्गराग-कुसुमशेख-रोष्णीषधारिभिरिति पाठेन समाधेयः। कृतयुगपुरुषैः सत्ययुगीयमानवैरिव महाप्रमाणैरतिदीर्घाकृतिभिः। अत्रोपमालङ्कारः। आलिखितैश्चित्रितैरिव सततसावधानतया निश्चलत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। उत्कीर्णैरिव तोरणस्तम्भेषु चोदितैरिव गाढसंलग्नत्वादिति भावः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। तोरणस्य बहि-र्द्वारस्य स्तम्भेषु निषण्णैस्तदाश्रयेणावस्थितैः, द्वारपालैर्दौवारिकैः दिवानिशं अनुज्झितः अपरित्यक्तः द्वारदेशो यस्य तत्। राजकुलमित्यस्य विशेषणमेतत्।

মেঘাচ্ছন্ন দিনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল, এবং উত্তোলিতদণ্ড বহুতর শ্বেতচ্ছত্রে পরিপূর্ণ ও অন্যান্য অনেক দ্বীপ হইতে উপস্থিত রাজদূতগণে ব্যাপ্ত ছিল।

(ড) চন্দ্রাপীড় অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া স্বহস্তে বৈশম্পায়নের হস্তধারণপূর্ব্বক রাজবাটীতে প্রবেশ করিলেন; তখন বলাহক (সেনাপতি), বিনয়ের সহিত অগ্রে অগ্রে পথ দেখাইয়া যাইতেছিলেন। সেই রাজবাটী পুঞ্জীভূত ত্রিভুবনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ঢ) বহির্দ্বারের স্তম্ভের নিকটে দৌবারিকগণ সর্ব্বদা অবস্থান করিতেছিল, তাহাদের হস্তে সুবর্ণ-খচিত বেত্রযষ্টি, গাত্রে শ্বেতবর্ণ সাঁজোয়া ও শ্বেতবর্ণ অঙ্গরাগ এবং মস্তকে শ্বেতকুসুমের মালা ও শ্বেতবর্ণ উষ্ণীষ ছিল; সুতরাং শ্বেতবর্ণ সকল পরিচ্ছদ ধারণ করায় তাহারা যেন শ্বেতদ্বীপ-সম্ভূত বলিয়া বোধ হইতেছিল; আর সত্যযুগের মনুষ্যের ন্যায় তাহাদের অত্যন্ত দীর্ঘ আকৃতি ছিল এবং নিশ্চলভাবে অবস্থান করায় তাহাদিগকে চিত্রিতের ন্যায় এবং ক্ষোদিতের

---

(१) सितवारवाणधारिभिः।

अनेक-सञ्जवन-(१) चन्द्रशाला-(२) विटङ्क-वेदिका-सङ्कट-शिखरैरभ्रङ्कषैरुपहसित-कैलास-शैल-शोभैः (३) अमलसुधावदातैः सप्रालेयशैलमिव (४) महाप्रासादैः, (ण) अनेक-वातायन-विवर-विनिर्गत-युवति-भूषण-किरण-(५) सहस्रतया कनकशृङ्खलाजालकेनेवोपरिविस्तीर्णेन (६) विराजमानम्, (त) अन्तर्गतायुधनिवहाभिराशीविष-कुल-सङ्कुलाभिः पातालगुहाभिरिवातिगम्भीराभिरायुधशालाभिरुपेतम्, (थ) अबलाचरणालक्तक-रस-रक्त-मणि-शकलैः शिखर-निलीन-

---

(ण) अनेकेति। अनेका बहुतराः, सञ्जवनानि चतुःशालानि, चन्द्रशाला उपरिस्थगृहाणि, विटङ्कानि कपोतपालिकाः, वेदिका उपवेशनाद्यर्थं बद्धभूमयश्च ताभिः सङ्कटानि व्याप्तानि शिखराणि उपरिभागा येषां तैः। "सञ्जवनन्त्विदं। चतुःशालं।" "कपोतपालिकायान्तु विटङ्कं पुंनपुंसक"मित्यमरः। "शुद्धान्ते वलभी-चन्द्रशाले सौधोर्द्ध्ववेश्मनि।" इति रभसः। अभ्रमाकाशं कषन्तीति तैः अत्युच्चैरित्यर्थः। "सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः" इति खश्प्रत्ययः। उपहसिता आपेक्षिकविशेषशुभ्रत्वात्तिरस्कृता कैलासशैलस्य शोभा यैस्तैः। अमलाभिः सुधाभिश्चूर्णलेपैः अवदाताः श्वेतास्तैः। महाप्रासादैर्बृहदट्टालिकाभिः करणैः, प्रालेयशैलैर्हिमाचलैः सहेति सप्रालेयशैलं तदिव स्थितमिति राजकुलमित्यस्य विशेषणम्। तादृशप्रासादानां हिमाचलतुल्यत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) अनेकेति। अनेकेभ्यो वातायनविवरेभ्यो गवाक्षरन्ध्रेभ्यो विनिर्गतं युवतिभूषणकिरणानां सहस्रं समूहो यस्मिन् तस्य भावस्तया हेतुना, उपरि विस्तीर्णेन प्रसारितेन कनकशृङ्खलाना जालकेन समूहेनेव विराजमानं तत्किरणानां कनकशृङ्खलावत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) अन्तरिति। अन्तर्गता आयुधनिवहा अस्त्रसमूहा यासां ताभिः, अतएव आशीविषकुलेन सर्पसमूहेन सङ्कुलाभिर्व्याप्ताभिः, पातालगुहाभिः पातालविवरैरिव स्थिताभिः, अतिगम्भीराभिर्नितान्तभीषणाभिः आयुधशालाभिरस्त्रागारैरुपेतं युक्तम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(द) अबलेति। अबलाना उपरिविचरणकारिणीनां रमणीनां ये चरणालक्तकरसास्तै रक्तानि

ন্যায় বোধ হইতেছিল। (ণ) সেই রাজবাটীতে কৈলাস-শোভা-তিরস্কারী, গগনস্পর্শী এবং নির্ম্মল-চূর্ণ-লেপনে শুভ্রবর্ণ বৃহৎ বৃহৎ অট্টালিকাসমূহ ছিল, তাহার উপরিভাগ বহুতর চতুঃশালা, চিলে কোঠা, পায়রা'র খোপ এবং বসিবার নিমিত্ত উচ্চ ভূমিতে ব্যাপ্ত ছিল, সুতরাং প্রতীতি হইতেছিল যেন সেই রাজবাটী হিমালয়-সংযুক্ত হইয়া রহিয়াছে। (ত) বহুতর গবাক্ষরন্ধ্র হইতে যুবতিগণের অলঙ্কারের কিরণ নির্গত হওয়ায় বোধ হইতেছিল যেন উপরিভাগে স্বর্ণ-শৃঙ্খলের জাল বিস্তৃত করিয়া রাখা হইয়াছে, তাহাতে রাজবাটীটি শোভা পাইতেছিল। (থ) সর্পসমূহব্যাপ্ত পাতালগুহার ন্যায় অত্যন্ত ভয়ঙ্কর, এবং নানাবিধ অস্ত্রে পরিপূর্ণ বহুতর অস্ত্রাগার সেই রাজবাটীতে ছিল। (দ) বহুতর কৃত্রিম ক্রীড়াপর্ব্বত ছিল ; তাহার রত্নখণ্ড-

---

(१)…संयमन, संयवन…। (२)…शालिका…। (३)…सितकैलासशोभैः।
(४)…शैलेयमिव। (५)…युवतिकिरण…। (६) ..वितानेन, वितनेन।

शिखि-कुल-कृत-केकारव-कलकलैः क्रीड़ापर्वतकैरुपशोभितम्, (द) उज्ज्वल-वर्ण-कम्बलावगुण्ठित-कनक-पर्य्याणाभिः प्रलम्ब-(१) चामर-कलाप-चुम्बित-चल-कर्ण-पल्लवाभिः कुलयुवतिभिरिवोपरूढ़-(२) शिक्षाविनय-निभृताभिः (३) याम-करेणुकाभिरशून्यकक्षान्तरम्, (ध) आलान-स्तम्भनिषण्णेन च नवजलधर-घोष-(४) गम्भीरं अनुगत-(५) वीणा-वेणु-रव-रम्यं आस्फालित-घर्घरिका-घर्घरं अनवरत-मृदु-मृदङ्ग-ध्वनिं (६) आमीलित-लोचन-त्रिभागेन वाम-दशन-कोटि-

---

लोहितानि मणिशकलानि रत्नखण्डानि येषां तैः, तथा शिखरेषु तेषामेव शृङ्गेषु निलीनानां स्थितानां शिखिनां मयूराणां कुलेन समूहेन कृताः केकारवा एव कलकलाः कोलाहला येषु तैः, क्रीड़ापर्वतकैः विहारार्थनिर्म्मितक्षुद्रपर्व्वतैरुपशोभितं राजकुलम्।

(ध) उज्ज्वलेति। उज्ज्वलवर्णैः कम्बलैः अवगुण्ठितानि आच्छादितानि कनकपर्य्याणानि स्वर्णनिर्म्मित-पल्ययनानि यासां ताभिः, प्रलम्बैर्दीर्घैः चामरकलापैः चुम्बितौ स्पृष्टौ चलौ चपलौ कर्णपल्लवौ यासां ताभिः, शिक्षा सङ्केतज्ञानं गार्हस्थ्यनैपुण्यलाभश्च, विनयः अनौद्धत्यं नम्रता च, तथा च उपरूढ़ाभ्यामुत्पन्नाभ्यां शिक्षा-विनयाभ्यां निभृता अनुग्राः अप्रगल्भाश्च ताभिः, कुलयुवतिभिरिव स्थिताभिः यामकरेणुकाभिः प्रतिप्रहरं पृथक् पृथग् बन्धनीयाभिर्हस्तिनीभिः अशून्यानि अविरहितानि पूर्णानीत्यर्थः कक्षान्तराणि प्रकोष्ठमध्यभागा यस्य तत्तथोक्तं राजकुलं। अत्रोपमालङ्कारः।

(न) आलानेति। अपि चेति चार्थः। इतस्ततीयान्तपदानि वक्ष्यमाणस्य गन्धहस्तिनेत्यस्य विशेषणानि। आलानस्तम्भे गजबन्धनस्थाणौ निषण्णः स्थितस्तदाश्रयेण स्थित इत्यर्थस्तेन। नवस्य जलधरस्य मेघस्य घोषवत् गर्जनवत् गम्भीरमिति लुप्तोपमा, अनुगतैः स्वानुसृतैः वीणावेणुरवैः रम्यं मनोहरं, आस्फालितानां वादितानां घर्घरिकाणां क्षुद्रघण्टिकानां घर्घरः शब्दो यस्मिन् तं तच्छब्दमिश्रितमित्यर्थः, अनवरतः अविश्रान्तः मृदुः कोमलो यो मृदङ्गध्वनिर्मुरजशब्दस्तम्, आकर्णयतेत्यस्य कर्म्मपदमेतत्। आकर्णनप्रकारमाह आमीलितेत्यादि। आमीलित ईषन्मुद्रितो लोचनयोस्त्रिभागस्तृतीयः अंशो येन तेन। त्रिभागेत्यत्र त्रिशब्देनैव तृतीयरूपार्थो बोध्यः, वृत्तिविषये संख्याशब्दस्य पूरणार्थत्वनियमात् "विभागशेषासु निशासु च क्षण"मिति कुमारसम्भवादावपि दर्शनात्। वामस्य

গুলি রমণীগণের চরণের আলতার রসে রঞ্জিত হইয়াছিল এবং ময়ূরগণ শৃঙ্গে বসিয়া কেকারবে কোলাহল করিতেছিল। (ধ) শিক্ষা ও বিনয়বশতঃ কুল-রমণীগণের স্থায় শান্তস্বভাব এবং প্রতিপ্রহরে পরিবর্তনীয় কতকগুলি হস্তিনী প্রকোষ্ঠমধ্যে রহিয়াছিল, উজ্জলরঙের কম্বল-দ্বারা তাহাদের সোনার জিনগুলি আচ্ছাদিত ছিল এবং লম্বমান চামরসমূহ, তাহাদের চঞ্চল ও বিস্তৃত কর্ণগুলি স্পর্শ করিতেছিল। (ন) আর একদিকে গন্ধমাদননামে একটা গন্ধহস্তী বন্ধনস্তম্ভে বদ্ধ ছিল; তখন নবীন-মেঘ-গর্জ্জনের স্থায় গম্ভীর, সঙ্গে সঙ্গে বীণা ও বংশীর রব হইতে ... প্রকার মনোহর এবং মন্দিরার শব্দ-মিশ্রিত অবিশ্রান্ত কোমল মৃদঙ্গধ্বনি হইতেছিল;

---

(१) प्रबल, ...। (२)...उपारूढ़...। (३)...विनयेन निभृताभिः।
(४) जलधरगर्जितघोष...। (५) अनुगत...। (६) अनवरतवल्गितमङ्गलमृदङ्गध्वनिं।

निषण्ण-हस्तेन निश्चलकर्णतालेनाकर्णयता, (न) सलीलमुभयपार्श्वावलम्बि-(१) वर्णकम्बलतया विन्ध्यगिरिणेवाविष्कृतधातु-विचित्र-(२) पक्षसम्पुटेन, (प) आधोरण-गीतानन्द-कृत-मन्द्र-कण्ठ-गर्जितेन, (फ) मदजल-शबल-शङ्ख-शोभित-श्रवणपुटेन रजनिकर-विम्ब-चुम्बि संवर्त्तकाम्बुद-वृन्द-(३) विडम्बकेन, (ब) कर्णान्तलम्बिना (४) काञ्चनमयेन कृतकर्णपूरमिवाङ्कुशेन मुखमुद्वहता, (भ)

दशनस्य दन्तस्य कोटौ अग्रे निषण्णः स्थितः हस्तः शुण्डा यस्य तेन। तथा कर्णौ ताली तालपत्रे इव इति कर्णताली तथा च निश्चले कर्णताले तालपत्रवद्विस्तृतकर्णौ यस्य तेन तादृशेन च सता, आकर्णयता तथाविधमृदङ्गध्वनिं शृण्वता। ईदृशा एव हस्तिनां गानादिश्रवणस्वभावाः अतएवात्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(प) सलीलमिति। सलीलं यथा तथा उभयपार्श्वे अवलम्बते पततीति तत्तादृशं वर्णकम्बलं विचित्र-पृष्ठास्तरणं यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, "प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयो"रित्यमरः। आविष्कृतं प्रकटितं धातुभिर्गैरिकादिभिः विचित्रं पक्षयोः सम्पुटं युगलं येन तेन तादृशेन विन्ध्यगिरिणेव स्थितेन। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) आधोरणेति। आधोरणस्य हस्तिपकस्य गीतेन गानश्रवणेन य आनन्दस्तेन कृतं मन्द्रं गम्भीरं कण्ठगर्जितं येन तेन।

(ब) मदेति। मदजलेन शबलो विचित्रो यः शङ्खो ललाटास्थि तेन शोभितं श्रवणपुटं कर्णयुगलं यस्य तेन। "शङ्खो निधौ ललाटास्थि कम्बौ न स्त्री" इत्यमरः। अतएव रजनिकरविम्बं चन्द्रमण्डलं चुम्बति स्पृशतीति तत् तादृशं यत् संवर्त्तकाम्बुदवृन्दं प्रलयकालीनमेघसमूहस्तद्विडम्बयति अनुकरोतीति तेन। शश-लाञ्छितचन्द्रमण्डलेन सह तादृशशङ्खस्य, तन्मेघसमूहेन च सह हस्तिनः सादृश्यं बोध्यं। अतएवात्र आर्थो-पमा पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(भ) कर्णेति। कर्णान्तलम्बिना काञ्चनमयेन अङ्कुशेन कृतकर्णपूरमिव विहितकर्णभूषणमिव मुखं वदनं उद्वहता धारयता। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

গন্ধমাদন নয়নের তৃতীয়ভাগ ঈষৎ মুদ্রিত করিয়া, বাম দন্তের উপরিভাগে শুণ্ড সংস্থাপিত করিয়া এবং বিস্তৃত কর্ণযুগল নিশ্চল রাখিয়া সেই মৃদঙ্গের শব্দ শুনিতেছিল। (প) গন্ধমাদনের পৃষ্ঠের উপরে একখানা বিচিত্র কম্বল আস্তৃত ছিল, তাহা দুই পার্শ্বে ঝুলিয়া পড়িয়াছিল; সুতরাং ধাতুরঞ্জিত পক্ষযুগল-প্রসারণকারী বিন্ধ্যপর্ব্বতের ন্যায় গন্ধমাদনকে দেখা যাইতেছিল। (ফ) গন্ধমাদন, মাহুতের গান শুনিয়া আনন্দবশতঃ গম্ভীর গর্জ্জন করিতেছিল। (ব) মদজলে গন্ধমাদনের ললাটের হাড়খানা বিচিত্র হইয়াছিল, তাহাতে কর্ণযুগল শোভা পাইতেছিল, সুতরাং গন্ধমাদন, চন্দ্রমণ্ডলসংস্পর্শী প্রলয়কালীয় মেঘসমূহের অনুকরণ করিতেছিল। (ভ) সুবর্ণময় একখানা অঙ্কুশ তাহার কর্ণে ঝুলান ছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন তাহার কর্ণে অলঙ্কার দেওয়া হইয়াছে, এই জাতীয় মুখভাগ সে বহন করিতেছিল। (ম) কতক-

(१) प्रलम्बित...। (२)...विचित्रित...। (३)...विम्बचुम्बितावर्त्तकाम्बुद...। (४) कर्णावलम्बिना।

मदजलमलिनेन द्वितीयेनेव कर्णचामरेण कपोलतलदोलायमानेन मधुकरकुले-नालङ्क्रियमाणेन, (म) अत्युदग्रतया पूर्वकायस्य अतिवामनतया च जघन-भागस्य पातालादिव (१) उत्तिष्ठता, (य) निशासमयेनेव परिस्फुरत्सार्द्धचन्द्र-नक्षत्रमालेन, (र) शरदारम्भेणेव प्रकटिताक्ण-चारु-पुष्करेण, (ल) वामन-रूपेणेव कृतत्रिपदीविलासेन, (व) स्फटिकगिरितटेनेव लग्न-सिंहमुखप्रति-

(म) मदेति। मदजलेन मत्तसंसक्ततयेत्यर्थः मलिनं गाढ़कृष्णं तेन, तथा द्वितीयेन अपरेण कर्ण-चामरेणेव स्थितेन, कपोलतले गण्डयोरुपरि दोलायमानेन चञ्चलीभूतेन मधुकरकुलेन भ्रमरगणेन, अल-ङ्क्रियमाणो भूष्यमाणस्तेन। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अत्युदग्रेति। पूर्वकायस्य शरीरपूर्वार्द्धस्य अत्युदग्रतया नितान्तोन्नततया, तथा जघनभागस्य शरीरपश्चाद्भागस्य च अतिवामनतया नितान्तखर्वतया हेतुना, पातालादुत्तिष्ठतेव, अन्यस्यापि निम्नादुच्चदेशो-त्थानवेलायामीदृशावस्थादर्शनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) निशेति। निशासमयेन रात्रिकालेनेव, परिस्फुरन्ती सर्वतो दीप्यमाना सार्द्धचन्द्रा अर्द्धचन्द्राकार-ललाटाभरणसहिता नक्षत्रमाला सप्तविंशतिसंख्यकमुक्तायथितमाल्यं यस्य तेन। "सैव नक्षत्रमाला स्यात् सप्तविंशतिमौक्तिकै"रित्यमरः। पक्षे परिस्फुरन्ती सार्द्धचन्द्रा अष्टमीचन्द्रसहिता नक्षत्रमाला तारकाश्रेणि-र्यस्मिन् तेन। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ल) शरदिति। शरदारम्भेणेव, प्रकटितं प्रकाशितं अरुणं रक्तवर्णं चारु सुन्दरञ्च पुष्करं शुण्डाग्रं यस्य तेन। पक्षे प्रकटितानि प्रस्फुटितानि अरुणानि चारूणि च पुष्कराणि पद्मानि यस्मिन् तेन। पूर्णो-पमा। "पुष्करं पङ्कजे व्योम्नि पयःकरिकराग्रयोः।" इत्यादि विश्वः।

(व) वामनेति। वामनरूपेण हरेर्वामनावतारेणेव, कृतः त्रिपद्या पादबन्धनशृङ्खलया विलासः क्रीड़ा येन तेन। "त्रिपदी पादबन्धन"मिति यादवः। "त्रिपदीच्छेदिनामपि" इति कालिदासप्रयोगश्च। पक्षे त्रयाणां पदानां समाहार इति त्रिपदी, कृतस्त्रिपद्या स्वर्गमर्त्त्यपातालेषु पादत्रयविन्यासेन विलासो लीला येन तेन। पूर्णोपमा।

গুলি ভ্রমর, মদজলে আরও মলিন হইয়া গণ্ডের উপরে দ্বিতীয় কর্ণচামরের ন্যায় ভ্রমণ করিতে করিতে গন্ধমাদনকে শোভিত করিতেছিল। (য) তাহার দেহের সম্মুখভাগ অত্যন্ত উচ্চ এবং পশ্চাদ্ভাগ অত্যন্ত খর্ব্ব ছিল বলিয়া সে যেন পাতাল হইতে উঠিতেছিল বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল। (র) রাত্রিতে যেমন অর্দ্ধচন্দ্রের সহিত নক্ষত্রশ্রেণী দীপ্তি পাইতে থাকে, গন্ধমাদনেরও তেমন অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি ললাটাভরণের সহিত মুক্তার মালা দীপ্তি পাইতেছিল। (ল) শরৎকালের প্রারম্ভে যেমন রক্তবর্ণ ও সুন্দর পদ্ম প্রকাশিত হয়, গন্ধমাদনেরও তেমন রক্তবর্ণ ও সুন্দর শুণ্ডাগ্র প্রকাশ পাইতেছিল। (ব) বামনরূপী নারায়ণ যেমন বলির যজ্ঞে স্বর্গ, মর্ত্ত্য ও পাতালে স্বকীয় চরণত্রয়ের বিন্যাসদ্বারা লীলাখেলা করিয়াছিলেন, গন্ধমাদনও

(१) पातालतलादिव।

नेन, (श) प्रसाधितेनेव * आलोल-(१) कर्णपल्लवाहतमुखेन, (ष) गन्धमादन-नाम्ना गन्धहस्तिना सनाथीकृतैकदेशम, (स) उज्ज्वल-पट्टकम्बल-पट्ट-(२) प्रावारित-(३) पृष्ठैश्च रसित-मधुर-घण्टिका-रव-मुखर-कण्ठैः, मञ्जिष्ठा-लोहित-स्कन्ध-केसर-वालैः, (४) निहत-वन-गज-रुधिर-पाटल-सटैरिव केसरिभिः, पुरो-निहित-यवस-राशि-शिखरोपविष्ट-मन्दुरापालैः, आसन्न-मङ्गल-गीत-ध्वनि-दत्त-

(श) स्फटिकेति। स्फटिकगिरितटेनेव स्फटिकमयपर्वतभित्त्येव, लग्ना दन्तोपरि संसक्ता सिंहमुखा केशरिवदग्राकाराग्रदेशा प्रतिमा दन्तबन्धनशृङ्खला यस्य तेन। "गजानां दन्तबन्धेऽपि प्रतिमाऽनुक्तलावपि।" इति विकाण्डशेषः। पक्षे लग्ना आभिमुख्येन सिंहस्यावस्थानात् पतिता सिंहमुखस्य प्रतिमा प्रतिविम्बं यस्मिन् तेन। पूर्णोपमा।

(ष) प्रसेति। प्रसाधितेनेव नानाविधालङ्कारैरलङ्कृतेन जनेनेव। आलोलाभ्यां अतीवचञ्चलाभ्यां कर्णपल्लवाभ्यां विस्तृतकर्णाभ्यां आहतं भ्रमरापसारणाय ताडितं मुखं येन तेन। पक्षे आलोलाभ्यां कर्णयोः पल्लवाभ्यां आहतं मुखं यस्य तेन। पूर्णोपमा।

(स) गन्धेति। गन्धमादननाम्ना गन्धहस्तिना पूर्वोक्तलक्षणेन गन्धगजेन सनाथीकृतः ससंयुक्तीकृतः अधिष्ठित इत्यर्थः, एकदेशो यस्य तत्, राजकुलमित्यस्य विशेषणमेतत्।

(ह) उज्ज्वलेति। इतस्तृतीयान्तपदानि तुरङ्गैरिति, वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। उज्ज्वलैर्दीप्तिमद्भिः पट्टकम्बलैः कृमिकोषोत्थसूत्रनिर्मितकम्बलैः पट्टु सम्यक् प्रावारितानि आच्छादितानि पृष्ठानि येषां तैः। रसितानां ग्रीवाचालनेन शब्दितानां मधुराणां मनोज्ञानां घण्टिकानां क्षुद्रघण्टानां रवैः शब्दैः मुखरा शब्दायमानाः कण्ठा गला येषां तैः। मञ्जिष्ठावत् रञ्जनद्रव्यविशेषवत् लोहिता रक्तवर्णाः स्कन्धेषु केसरवालाः केसराख्यलोमानि येषां तैः, अतएव निहतानां स्वयं मारितानां वनगजानां रुधिरैः पाटलाः श्वेतरक्ताः सटा जटा येषां तैः केसरिभिः सिंहैरिव स्थितैः। अतोपमालङ्कारः। पुरोनिहितानां अग्रतः स्थापितानां यवस-राशीनां घासपुञ्जानां शिखरेषु उपरिभागेषु उपविष्टा मन्दुरापाला वाजिशालारक्षका येषां तैः। "वाजिशाला

তেমন পাদবন্ধন শৃঙ্খলদ্বারা খেলা করিতেছিল। (শ) স্ফটিকময় পর্ব্বতভিত্তিতে যেমন সিংহ-মুখের প্রতিবিম্ব পতিত হয়, গন্ধমাদনেরও তেমন দন্তের উপরে একছড়া সিংহ-মুখের ন্যায় অগ্রদেশসমন্বিত শৃঙ্খল লগ্ন ছিল। (ষ) নানা অলঙ্কারে অলঙ্কৃত ব্যক্তির মুখ যেমন চঞ্চল কর্ণপল্লবদ্বারা আহত হইতে থাকে, গন্ধমাদনের মুখও তেমন বিস্তৃত কর্ণযুগলদ্বারা আহত হইতেছিল। (স) এইরূপে গন্ধমাদন নামক গন্ধহস্তী কর্ত্তৃক রাজবাটীর একদেশ অধিষ্ঠিত হইয়াছিল। (হ) এবং সেই রাজবাটী অশ্বশালাস্থিত বহুতর অশ্বে শোভা পাইতেছিল; উজ্জ্বল রেসমী কম্বলে তাহাদের পৃষ্ঠদেশ সম্পূর্ণ আচ্ছাদিত ছিল; শব্দায়মান মনোহর ক্ষুদ্রঘণ্টার রবে তাহাদের কণ্ঠদেশ শব্দিত হইতেছিল; তাহাদের স্কন্ধের উপরে মঞ্জিষ্ঠার ন্যায় রক্তবর্ণ কেসর (লম্বা লোম) ছিল, সুতরাং নিহত বন্য হস্তীর রক্তে রক্তবর্ণ-জটা-সমন্বিত সিংহের ন্যায় সেই অশ্বগুলিকে দেখা যাইতেছিল; তাহাদের সম্মুখ-স্থাপিত ঘাসরাশির উপরে অশ্বশালার

* प्रसाधितेन। (१) लोल...। (२)...पट...। (३)...प्रावृत, प्रावरित...। (४)...वालपल्लवैः।

कर्णैः, अन्तःकपोल-धृत-मधुर-सरस-(१) लुलित-लाज-(२) कवलैः, भूपालवल्लभैर्मन्दुरागतैस्तुरङ्गमैरुद्भासितम्, (ङ) अधिकरणमण्डपगतैश्चार्य्यवेशैरत्युच्चवेत्रासनोपविष्टैर्धर्म्ममयैरिव धर्म्माधिकारिभिर्महापुरुषैरधिष्ठितम्, (च) अधिगत-सकल-ग्राम-नगर-(३) नामभिरेकभवनमिव जगदखिलमालोकयद्भिरालिखित-सकल-भुवन-व्यापारतया धर्म्मराजनगर-व्यतिकरमिव दर्शयद्भिरधिकरण-(४) लेखकैरालिख्यमान-शासन-सहस्रम्, (छ) अभ्यन्तरावस्थित-नरपति-निर्गम-(५)

तु मन्दुरा" इत्यमरः। आसन्नेषु समीपवर्त्तिषु मङ्गलगीतध्वनिषु दत्तौ कर्णौ यैस्तैः, तेषामपि गानश्रवणोत्सुक्यसत्त्वादिति भावः। अन्तःकपोलेषु गण्डाभ्यन्तरेषु धृताः मधुराः सुस्वादाः सरसा गुडेनार्द्राः अतएव लुलिता उभयतो गलद्गुडाः लाजकवला धानाग्रासा यैस्तैः। भूपालवल्लभै राज्ञः प्रियैः, मन्दुरागतैर्वाजिशालास्थितैः तुरङ्गमैर्घोटकैः उद्भासितं शोभितं। इदं राजकुलमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्।

(ङ) अधीति। अधिक्रियन्ते जना अस्मिन्नित्यधिकरणं व्यवहारदर्शनसभा, तन्मण्डपगतैः, आर्य्यवेशैः सभाजनोचितवेशैः सुपरिष्कृतपरिच्छदैरित्यर्थः, अत्युच्चेषु वेत्रासनेषु उपविष्टैः, धर्म्ममयैर्धर्म्मनिष्पन्नैरिव, धर्म्माधिकारिभिः व्यवहारदर्शिभिः प्राड्विवाकैः महापुरुषैः शिक्षान्यायपरायणतादिसद्गुणयुक्तैर्जनैः अधिष्ठितमाश्रितं राजकुलम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) अधीति। अधिगतानि ज्ञातानि सकलानां ग्रामनगराणां नामानि यैस्तैः। ग्रामलक्षणमाह च रघुनाथः—"तथा शूद्रजनप्राया सुसमृद्धकृषीवला। क्षेत्रोपयोगि-भूमध्ये वसतिर्ग्रामसंज्ञिका।" नगरलक्षणमाह मार्कण्डेयपुराणम्—"देवतायतनैश्चित्रैः प्रासादापणवेश्मभिः। नगरं दर्शयेद्विद्वान् राजमार्गैश्च शोभनैः।" एकभवनमिव एकगृहमिव अखिलं जगदालोकयद्भिः चिराय पर्य्यालोचनावशात् एकगृहस्येव समग्रजगतः स्थानजनवृत्तान्तं जानद्भिरित्यर्थः। अर्थोपमालङ्कारः। आलिखिताः शासनसौकर्य्याय पत्रेषु लिप्ताः, सकलभुवनस्य व्यापारा राजकार्य्यप्रयोजनीयस्थानजनादिघटनावली यैस्तेषां भावस्तया हेतुना, धर्म्मराजनगरस्य यमपुरस्य व्यतिकरं सम्बन्धं दर्शयद्भिरिव स्थितैः, यमपुरेऽपि चित्रगुप्तादिभिः सकलभुवनव्यापारलिखना-

রক্ষকগণ বসিয়াছিল ; সেই অশ্বগুলি নিকটবর্ত্তী মঙ্গল-গীতের শব্দের দিকে কর্ণ অর্পণ করিয়াছিল ; গালের ভিতরে গুড়মিশ্রিত সুস্বাদু খই'র গ্রাস লইয়াছিল, সুতরাং গালের দুই দিক্ দিয়া তাহার রস বাহিয়া পড়িতেছিল ; এবং সেই অশ্বগুলি রাজার প্রিয় ছিল। (ঙ) বিচারালয়ে সাক্ষাৎ ধর্ম্মের ন্যায় মহাগুণবান্ বিচারকগণ সভ্যজনোচিত বেশভূষায় সজ্জিত হইয়া অত্যুচ্চ বেত্রাসনে উপবেশন করিয়া রহিয়াছিলেন। (চ) বিচারালয়ের লেখকগণ বিচারকদিগের আদেশসমূহ লিখিতেছিল, তাহারা সকল গ্রাম ও নগরের নাম জানিত, এবং সর্ব্বদা আলোচনা করায় একখানি ঘরের মত সমগ্র জগৎ দেখিতেছিল আর সমস্ত জগতের ঘটনা লেখায় সেই রাজবাটীর সহিত যম-পুরীর কোন সম্বন্ধ আছে এইরূপ যেন দেখাইতেছিল। (ছ) বাটীর ভিতরে

(१)...मधु-रस-लव-लुलित...। (२)...जम्बाल...।
(३)...ग्रामकर्वटनगर सकलनगरखेटखर्वट...। (४) अधिकार...। (५)...निर्गमन...।

प्रतीक्षण-परेण च स्थान-स्थानेषु (१) बद्धमण्डलेन, कनकमयार्द्धचन्द्र-तारागण-शबलैः (२) चर्म्मफलकैर्निशासमयमिव दर्शयता, स्फुरित-निशित-करवाल-कर-प्ररोह-करालितातपेन, एक-श्रवणपुट-घटित-धवलदन्तपत्रेण (३) ऊर्द्ध-बद्ध-मौलि-कलापेन, धवल चन्दन-स्थासक-खचित-भुजोरुदण्डेन, बद्धासिधेनुकेन अन्ध्र-द्रविड़-सिंहलप्रायेण सेवकजनेन, (ख) आस्थानमण्डपगतेन च यथोचितासनोप-

दिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अधिकरणस्य विचारालयस्य लेखकैर्जनैः, आलिख्यमानं पत्रेषु लिप्यमानं शासनसहस्रं राज्ञः प्राड्‌विवाकानाञ्च आदेशसमूहो यस्मिन् तत्, राजकुलम्।

(ख) अभ्यन्तरेति। इतस्तृतीयान्तपदानि सेवकजनेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अभ्यन्तरे वाटीमध्ये अवस्थिता महाराजतारापीड़समीपे स्वस्वप्रयोजनसाधनाय विद्यमानाः, ये नरपतयः स्वे स्वे राजानस्तेषां प्रतीक्षणपरेण बहिरागमनप्रतीक्षापरायणेन, आगतेषु तेषु तैः सह गमनाभिप्रायादिति भावः। बद्धं कृतं मण्डलं वर्त्तुलाकारेणावस्थानं येन तेन। कनकमयाः स्वर्णनिर्म्मिता ये अर्द्धचन्द्रा अर्द्धचन्द्राकारचिह्नानि तारागणा नक्षत्राकारचिह्नसमूहाश्च तैः शबलानि विचित्राणि तैः, चर्म्मफलकैः करणैः निशासमयं रात्रिकालं दर्शयतेव सता, रात्रावप्यर्द्धचन्द्रतारागणोदयादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। स्फुरितानां देदीप्यमानानां निशितानां तीक्ष्णानां करवालानां तरवारीणां करप्ररोहैः किरणाङ्कुरैः करालितो भीषणीकृत आतपः सूर्य्यालोको येन तेन। एकस्मिन् श्रवणपुटे कर्णपुटे घटितं योजितं दन्तपत्रं हस्तिदन्तनिर्म्मितपत्राकाराभरणं येन तेन। देशाचारात्तेषामेककर्णे दन्तपत्रधारणमिति बोध्यम्। ऊर्द्धं बद्धो मौलिकलापः संसृष्टकेशपाशो येन तेन। धवलैश्चन्दनस्थासकैश्चन्दनचर्च्चाभिः खचितौ चिह्नितौ भुजौ ऊरुदण्डौ च यस्य तेन। ऊरौ चन्दनचर्च्चापि देशाचारात्। बद्धा कटीदेशेषु संयता असिधेनुकाच्छुरिका येन तेन। "छुरिका-चासिधेनुका" इत्यमरः। अन्ध्रद्रविड़सिंहलास्तत्तद्देशीयाः प्राया बहुला यस्मिन् तेन। सेवकजनेन भिन्नभिन्नदेशीयराजगणशरीररक्षिलोकेन। अधिष्ठितमिति वक्ष्यमाणक्रियापदस्य कर्त्तृपदमेकमेतत्।

(ग) आस्थानेति। इतस्तृतीयान्तपदानि सामन्तलोकेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। आस्थानमण्डप-

মহারাজ তারাপীড়ের নিকটে অবস্থিত আপন আপন রাজার নির্গমনের প্রতীক্ষায় ভিন্ন ভিন্ন দেশীয় রাজগণের শরীররক্ষী সৈন্যগণ স্থানে স্থানে মণ্ডলাকারে অবস্থান করিতেছিল; তাহারা, অর্দ্ধচন্দ্রাকার ও নক্ষত্রাকার স্বর্ণময় চিহ্নসমূহে বিচিত্র ঢাল ধারণ করিয়া সেই সময়কে যেন রাত্রি বলিয়া দেখাইতেছিল, দেদীপ্যমান তীক্ষ্ণ তরবারির কিরণে রৌদ্রকে ভয়ঙ্কর করিয়াছিল, এক কর্ণে হস্তিদন্তনির্ম্মিত পত্রাকৃতি অলঙ্কার ধারণ করিয়াছিল, চুলগুলি মাথার উপরে বাঁধিয়াছিল, শ্বেতচন্দনের লেপে বাহুযুগল ও উরুযুগল চিহ্নিত করিয়াছিল এবং কটিদেশে এক একখানা ছুরী বাঁধিয়াছিল আর তাহাদের মধ্যে অধিকসংখ্যকই অন্ধ্রদেশীয়, দ্রবিড়দেশীয় ও সিংহলদেশীয় লোক ছিল। (গ) এবং সভামণ্ডপে বহুসহস্রসংখ্যক অভিষিক্ত সামন্তরাজগণ

(१) स्थाने स्थाने। (२)...शतशबलैः। (३) घटितानेकदन्तपत्रेण।

विष्टेन प्रसारयता दुरोदरक्रीड़ाम्, अभ्यस्यताऽष्टापदव्यापारम्, आस्फालयता परिवादिनीम्, आलिखता चित्रफलके भूमिपालप्रतिबिम्बम्, आबध्नता काव्य-गोष्ठीम्, आतन्वता परिहासकथाम्, विन्दता बिन्दुमतीम्, चिन्तयता प्रहेलिकाम्, भावयता नरपतिकृतकाव्य-सुभाषितानि, पठता द्विपदीम्, (१) गृह्णता कवि-गुणान्, उत्किरता (२) पत्रभङ्गान्, आलपता वारविलासिनीजनम्, आकर्णयता वैतालिकगीतम्, (३) अनेकसहस्रसंख्येन, धवलोष्णीषपटाश्लिष्टविकट-किरीट-सङ्कट-शिरसा, सनिर्भर-शिखर-लग्न-(४) बालातपमण्डलेनेव कुलपर्वतचक्र-

गतेन सभागृहस्थितेन। दुरोदरक्रीड़ां द्यूतखेलाकौशं प्रसारयता विस्तारयता। अष्टापदव्यापारं शारिफलनिक्षेप-कार्य्यं अभ्यस्यता पौनःपुन्येन कुर्वता। "अष्टापदं शारिफल"मित्यमरः। परिवादिनीं सप्ततन्त्रीविशिष्टां वीणां आस्फालयता वादनेन स्पन्दयता। भूमिपालस्य राज्ञस्तारापीड़स्य प्रतिबिम्बं, आलिखता भक्तिर्य्यातनार्थं चित्रयता। काव्यगोष्ठीं काव्यालापं आबध्नता कुर्वता। "गोष्ठी सभायां संलापे" इति विश्वः। आतन्वता बाहुल्येन कुर्वता। बिन्दुमतीं प्रागुक्तलक्षणां (२४ पृष्ठास्थटीकायां) विन्दता लभमानेन अपरेण पृच्छ्यमानां शृण्वतेत्यर्थः। प्रहेलिकामप्युक्तलक्षणाम्। (२४ पृष्ठास्थटीकायां)। नरपतिना तारापीड़ेन कृतानि यानि काव्यरूपाणि सुभाषितानि सुन्दरवाक्यानि तानि भावयता मनोहरतया चिन्तयता। द्विपदीं पदद्वयात्मिकां गाथाम्। कवेर्गुणान् तत्काव्यगतप्रसादमाधुर्य्यभावालङ्कारादिधर्म्मान् गृह्णता श्रुत्वैव बुध्यमानेन। पत्रभङ्गान् वाराङ्गनानां स्तनकपोलादौ तिलकविशेषान् उत्किरता ददता। वैतालिकानां वन्दिनां गीतं स्तुतिपाठं। अनेकानि सहस्राणि संख्या यस्य तेन। धवलैरुष्णीषपटैः आश्लिष्टानि रुग्णानि विकटानि महान्ति यानि किरीटानि तैः सङ्कटानि व्याप्तानि शिरांसि यस्य तेन, अतएव निर्झरैः प्रस्रवणैः सहेति सनिर्झराणि यानि शिखराणि शृङ्गानि तेषु लग्नं बालातपमण्डलं नवीनरविकिरणसमूहो यस्य तेन तादृशेन, कुलपर्वतानां महेन्द्र-मलयादीनां चक्रवालेन मण्डलेनेव स्थितेन। अत्र निर्झरैः सह धवलोष्णीषपटानां, बालातपैः किरीटानां

যথোপযুক্ত আসনে উপবেশন করিয়াছিলেন; তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ পাশার কোঠ পাতিতেছিলেন, কেহ কেহ বার‌ংবার পাশার ছক্ নিক্ষেপ করিতেছিলেন, কেহ বীণা বাজাইতে-ছিলেন, কেহ চিত্রফলকে মহারাজ তারাপীড়ের প্রতিমূর্ত্তি চিত্রিত করিতেছিলেন, কেহ কেহ কাব্যালাপ করিতেছিলেন, কেহ কেহ পরিহাস করিতেছিলেন, কেহ বিন্দুমতী (কাব্যবিশেষ) শুনিতেছিলেন, কেহ প্রহেলিকার চিন্তা করিতেছিলেন, কেহ মহারাজ তারাপীড়-কৃত কাব্যময় মনোহর বাক্যের ভাবনা করিতেছিলেন, কেহ দ্বিপদিকা পাঠ করিতেছিলেন, কেহ কবির গুণ গ্রহণ করিতেছিলেন, কেহ বারবনিতাদিগের কণ্ঠ-কপোলে তিলক দিয়া দিতেছিলেন, কেহ বারাঙ্গনাগণের সহিত আলাপ করিতেছিলেন এবং কেহ কেহ স্তুতিপাঠকদিগের গান শুনিতেছিলেন; তাঁহাদের মস্তক, শ্বেতবর্ণ উষ্ণীষ সংশ্লিষ্ট বৃহৎ বৃহৎ কিরীটে আবৃত ছিল; সুতরাং নির্ঝরজল-সংযুক্ত শৃঙ্গের উপরে নবীন সূর্য্যালোক পতিত হইলে কুলপর্ব্বতগণের ন্যায়

(१) द्विपदीः। (२) उत्कीर्य्यता। (३)...गीतिम्। (४)...बालप...

वालेन, मूर्द्धाभिषिक्तेन, सामन्तलोकेनाधिष्ठितम्, (ग) आस्थानोत्थित-भूमिपाल-संवर्त्तितानाञ्च कुथानां रत्नासनानाञ्च राशिभिरनेकवर्णैरिन्द्रायुधपुञ्जैरिव विराजितसभा-पर्य्यन्तम्, (घ) अमल-मणि-भूमि-(१) संक्रान्त-मुख-निवह-प्रतिबिम्बतया विकच-कमलपुष्प-प्रकरमिव सम्पादयता, गति-वश-रणित-नूपुर-पारिहार्य्य-(२) रशना-स्वन-(३) मुखरेण, स्कन्धावसक्त-(४) कनकदण्डचामरेण, निर्गच्छता प्रविशता चानवरतं वारविलासिनीजनेनाकुलितम्, (ङ) एकदेश-निषण्ण-चामीकर-शृङ्खला-संयत-श्वगणम्, (५) (च) इतस्ततः प्रचलित-परिचिता-

---

कुलपर्वतैश्च सामन्तानां सादृश्यमित्युपमालङ्कारः। मूर्द्धनि अभिषिक्तेन राज्याभिषिक्तेनेत्यर्थः, सामन्तलोकेन अधीनदेशस्थराजगणेन अधिष्ठितमाश्रितं। राजकुलमित्यस्य विशेषणमिदम्।

(घ) आस्थानेति। आस्थानात् सभातः उत्थितेषु उत्थाय चलितेषु भूमिपालेषु सदस्यनृपतिषु संवर्त्तितानां भृत्यैरुत्तोल्यैकत्र सङ्कोचितानां कुथानां विचित्रकम्बलानां रत्नासनानाञ्च अनेकवर्णैः राशिभिः, इन्द्रायुधपुञ्जैः इन्द्रधनुःपुञ्जैरिव स्थितैः, विराजितः शोभितः सभायाः पर्य्यन्तः प्रान्तभागो यस्मिन् तत्, राजकुलम्। अत्रेन्द्रायुधानां पुञ्जीभूतत्वासम्भावाज्जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) अमलेति। अमलासु मणिभूमिषु संक्रान्तानि सञ्चरितानि मुखनिवहस्य प्रतिबिम्बानि यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, विकचानां प्रस्फुटानां कमलपुष्पाणां पद्मानां प्रकरं समूहं सम्पादयता प्रवर्त्तयतेव, तन्मुखानां पद्मतुल्यत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। गतिवशेन गमनेन हेतुना रणितानां शब्दितानां नूपुराणां, पारिहार्य्याणां कङ्कणानां, रशनानां काञ्चीदाम्नाञ्च, स्वनैः शब्दैर्मुखरः शब्दायमानस्तेन। स्कन्धेषु अवसक्तानि लग्नानि कनकदण्डानि चामराणि यस्य तेन। तथा अनवरतं निर्गच्छता प्रविशता च वारविलासिनीजनेन वेश्यागणेन आकुलितं व्याप्तम्।

(च) एकेति। एकदेशे निषण्णः स्थितः चामीकरशृङ्खलाभिः स्वर्णशृङ्खलाभिः संयतानां बद्धानां शुनां कुक्कुराणां गणो यस्मिन् तत्, राजकुलम्।

তাঁহারা বিরাজ করিতেছিলেন। (ঘ) রাজগণ সভা হইতে উঠিয়া গেলে ভৃত্যগণ সভার বিচিত্র কম্বল ও রত্নময় আসনগুলি একদিকে একত্র করিয়া রাখিল, তাহাতে পুঞ্জীভূত ইন্দ্রধনুসমূহের ন্যায় নানাবর্ণের সেই কম্বল ও রত্নাসনে সভার প্রান্তভাগ সুশোভিত হইয়াছিল। (ঙ) বারবনিতাগণ স্কন্ধে সুবর্ণদণ্ডের চামর লইয়া অনবরত প্রবেশ করিতেছিল এবং নির্গত হইতেছিল, তখন নির্ম্মল মণিময়ভূমিতে তাহাদের মুখের প্রতিবিম্ব পতিত হওয়ায় তাহারা যেন প্রস্ফুটিত পদ্মসমূহ জন্মাইতেছিল আর গমনবশতঃ তাহাদের নূপুর, কঙ্কণ ও চন্দ্রহারের শব্দে শরীরও শব্দিত হইতেছিল। (চ) একদিকে স্বর্ণশৃঙ্খলে বদ্ধ বহুতর কুকুর বসিয়াছিল।

---

(१) अमलभूमि...। (२)...परिहार्य्य...। (३)...स्वन...। (४) स्कन्धसक्त...।

(५)...श्वगणम्।

मितकस्तूरिकाकुरङ्ग-परिमल-वासित-दिङ्मुखम्, (छ) अनेक-कुब्ज-किरात-वर्षवर-(१) वधिर-वामन-मूक-सङ्कुलम्, (ज) उपाहृत-किन्नरमिथुनम्, आनीत-वनमानुषम्, आबद्ध-मेष-कुक्कुट-कुरर-कपिञ्जल-लावक-वर्त्तिका-युद्धम्, उत्कूजित-चकोर-कादम्ब-हारीत-कोकिलम्, लालप्यमान-(२) शुकसारिकम्, (झ) इभ-पतिमद-परिमलामर्ष-(३) जृम्भितैश्च निष्कूजद्भिः शिखरिणां जीवितैरिव गिरि-गुहानिवासिभिर्गृहीतैः पञ्जरकेशरिभिरुद्भास्यमानम्, (ञ) उद्भास्यमानैः

(छ) इत इति। इतस्ततः प्रचलितानां, परिचितानां विश्वस्तचित्तानां, अमितानां असंख्यानां कस्तूरिकाकुरङ्गाणां कस्तूरीविशिष्टहरिणानां परिमलेन गात्रसौरभेण वासितानि आमोदितानि दिङ्मुखानि यस्य तत्, राजकुलनम्।

(ज) अनेकेति। अनेके ये कुब्जाः, किराताः कृशदेहाः "किरातो म्लेच्छभेदे स्यान्मूर्निम्बेऽल्पतनावपि।" इत्यादि मेदिनी। वर्षमन्तःपुरं वृन्वन्तीति वर्षवराः क्लीवाः, "शण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ" इत्यमरः। वधिराः, वामनाः खर्वदेहाः, मूका वाक्शक्तिहीनाश्च तैः सङ्कुलम् व्याप्तम्।

(झ) उपेति। उपाहृतानि संगृह्य आनीतानि किन्नरमिथुनानि तुरङ्गवदनदम्पत्यो यत्र तत्। आनीता वनमानुषा यत्र तत्। आबद्धानि आरब्धानि मेषैः कुक्कुटादिभिश्च पक्षिविशेषैर्युद्धानि यत्र तत्। उत्कूजिता उच्चैःस्वरेण शब्दायमानाः, चकोराः, कादम्बाः कलहंसाः, हारीताः पक्षिविशेषाः, कोकिलाश्च यत्र तत्। लालप्यमानाः पुनः पुनर्लपन्त्यः शुकसारिका यत्र तत्। राजकुलमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणान्येतानि।

(ञ) इभेति। इभपतीनां करीन्द्राणां मदपरिमलैर्दानजलसौरभैर्ये अमर्षाः क्रोधास्तैर्जृम्भिताः पञ्जरमध्य एव घूर्णितास्तैः, निष्कूजद्भिर्गर्जद्भिः, कूजधातोः कोकिलादीनां कोमलशब्द एव ख्यातत्वेनात्र कर्कशशब्दे प्रयोगात् ख्यातविरुद्धतादोषः, स च गर्जद्भिरिति पाठेनैव समाधेयः। शिखरिणां पर्वतानां जीवितैरिव प्राणैरिव गुहावासकाले तदभ्यन्तरसञ्चरणादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। शिखरिणामित्यभिधाय पुनर्गिरिगुहानिवासिभिरिति गिरिपदाभिधानादत्र "उदन्वच्छिन्ना भूः स च पतिरपां योजनशतम्"

(ছ) বিশ্বস্তচিত্ত অসংখ্য কস্তূরী-মৃগ ইতস্ততঃ বিচরণ করিতেছিল, তাহাদের দেহের গন্ধে সকল দিক্ আমোদিত করিয়াছিল। (জ) বহুতর কুব্জ, কৃশদেহ, নপুংসক, বধির, বামনবীর ও বোবা মানুষে সেই রাজবাটী ব্যাপ্ত ছিল। (ঝ) সেই বাটীতে বহুতর কিন্নরদম্পতী ও বনমানুষ আনা হইয়াছিল; স্থানে স্থানে মেড়া, বনকুকুড়া, বাজকুরুল, চাতক, লাওয়া (লাড়ুয়া) ও বাটভার পাখী লড়াই করিতেছিল; আবার কোন কোন স্থানে চকোর, বালিহাঁস, হরিতালিয়া ও কোকিল উচ্চৈঃস্বরে রব করিতেছিল এবং কোথাও শুক ও সারিকা-গণ অবিরত কথা বলিতেছিল। (ঞ) যে সকল সিংহ পূর্ব্বে গুহামধ্যে বাস করায় পর্ব্বতের জীবনের ন্যায় ছিল, সেই সিংহগুলিকে আনিয়া পিঞ্জরমধ্যে আবদ্ধ করা হইয়াছিল, তাহারা

(१)...वर्षधर, वर्धवर्ध्वर...। (२) आलप्यमान...। (३) इभपतिपरिमलामर्ष...।

काञ्चन-भवन-प्रभा-जनित-दावानल-शङ्कै र्लोलतारकैर्भ्रमद्भिर्वन-(१) हरिण-कदम्बकैर्लोचनप्रभया शवलीकृतदिगन्तरम्, (ट) उद्दाम-केकारवानुमीयमान-मरकत-कुट्टिम-स्थित-शिखण्डि-मण्डलम्, (ठ) अतिशिशिर-चन्दन-विटपि-च्छाया-निषण्ण-निद्रायमाण-गृह-सारसम्, (ड) अन्तःपुरेण च बालिकाजन-प्रस्तुत-कन्दुक-पञ्चालिका-क्रीडेन, (ढ) अविरत-वाद्यमान-(२) दोला-(३) शिखर-क्वणित-

इति दर्पणोदाहरणवत् भग्नप्रक्रमतादोषः, तत्समाधानाय पुनः शिखरिपदोपादाने तु कथितपदतादोषः प्रसज्येत, सुतरां तद्गुहानिवासिभिरिति पाठेनासौ समाधेयः। गुहैर्गिरिगुहाभो गृहैर्वा आनीतैः पञ्जरकेशरिभिः पञ्जरस्थसिंहैः, उद्भास्यमानं उत्कर्षेण शोभमानम्, राजकुलम्।

(ट) उत्पाद्येति। काञ्चनभवनानां स्वर्णनिर्मितगृहाणां प्रभाभिर्जनिता दावानलशङ्का येषां तैः, अतएव उत्पाद्यमानैस्तयैव शङ्कया विशेषेण वशीक्रियमाणैः, अतएव च लोलतारकैः सद्भिर्भ्रमद्भिः, वन-हरिणानां कदम्बकैः समूहैः, लोचनप्रभया नयनदीप्त्या शवलीकृतानि विचित्रीकृतानि दिगन्तराणि यस्य तत्, राजकुलं। तेषां नयनानामपि विचित्रत्वादिति भावः। अत्र काञ्चनभवनप्रभासु हरिणानां दावानल-भ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः, तथा लोचनप्रभया दिगन्तराणां शवलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्ति-स्तयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ठ) उद्दामेति। उद्दामैर्विशालैः केकारवैः अनुमीयमानं मरकतकुट्टिमेषु स्थितं शिखण्डिमण्डलं मयूरसमूहो यस्मिन् तत्। मरकतबद्धभूमीनां मयूराणाञ्च तुल्यवर्णतया तत्रस्थितानां मयूराणां प्रत्यक्षेणानु-पलम्भात् केवलकेकारवैरेवानुमानमिति भावः। अतएव सामान्यालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(ड) अतीति। अतिशिशिरासु नितान्तशीतलासु चन्दनविटपिनां चन्दनवृक्षाणां छायासु निषण्णा अवस्थिताः सन्तो निद्रायमाणाः गृहसारसा गृहपालितसारसपक्षिणो यत्र तत्।

(ढ) अन्तरिति। अपि चेति चार्थः। अन्तःपुरेणेति समुपेताभ्यन्तरमिति वक्ष्यमाणपदान्तर्गतायाः समुपेतेतिक्रियायाः कर्तृपदं, तथात तृतीयैकवचनान्तपदानि अन्तःपुरेणेत्यस्य विशेषणानि। बालिकाजनैः प्रस्तुता आरब्धा कन्दुकैर्गेन्दुकैः पञ्चालिकाभिर्वस्त्रनिर्मितपुत्तलिकाभिश्च क्रीडा खेला यस्मिन् तेन। "पञ्चालिका स्त्रियां वस्त्रपुत्रिकागीतिभेदयोः।" इति मेदिनी।

হস্তিগণের মদজলের গন্ধ পাইয়া পিঞ্জরমধ্যে ঘুরিতেছিল এবং গর্জ্জন করিতেছিল। (ট) বন্য হরিণগণ, স্বর্ণময় গৃহের প্রভাকে দাবানল মনে করিয়া ভীত হইয়া চঞ্চলনয়নে ইতস্ততঃ বিচরণ করতঃ নয়নের দীপ্তিতে বহু স্থান বিচিত্র করিয়াছিল। (ঠ) মরকতমণিময়-ভূমি-স্থিত ময়ূরগণকে কেবল বৃহৎ কেকারবে অনুমান করা হইতেছিল। (ড) অত্যন্ত শীতল চন্দনতরুর ছায়াতে থাকিয়া গৃহপালিত সারসপক্ষিগণ নিদ্রা যাইতেছিল। (ঢ) সেই বাটীর ভিতরে অন্তঃপুর সংলগ্ন ছিল; সেখানে বালিকারা গেড়ুয়া ও কাপড়ের পুতুল দিয়া খেলা

(१) भवन...। (२)—संवाद्यमान...। (३)...दोला...।

घण्टा-टङ्कार-पूरिताशामुखेन, (ण) भुजग-निर्म्मोक-शङ्कित-मयूर-क्रियमाण-हारेण, (त) सौध-शिखरावतीर्ण-प्रचलित-पारावत-कुलतया स्थलोत्पलिनीवन-शोभितेनेव, (१) (थ) अन्तः-पुरिकाजन-प्रस्तुत-नरपति-चरित-विडम्बन-क्रीड़ेन, (द) अश्व-मन्दुरा-परिभ्रष्टागतैरवलुप्त-भवन-दाड़िमीफलैराखण्डिताङ्गन-सहकार-पल्लवैरभिभूत-कुब्ज-वामन-किरात-करतलाच्छिन्नानि भूषणानि विकिरद्भिः कपिभिराकुलीकृतेन, (२) (ध) शुक-सारिका-प्रकाशित-सुरत-विस्रम्भालाप-

(ण) अविरतेति। अविरतं बाह्यमानानां दोलनसुखानुभवाय युवतिभिरारुह्य चाल्यमानानां दोलानां दोलनयन्त्राणां शिखरेषु उपरिभागेषु क्वणितानां दोलनवेगेन शब्दितानां घण्टानां टङ्कारैः 'टं' 'टं' इति शब्दैः पूरितानि आशामुखानि दिङ्मुखानि यत्र तेन।

(त) भुजगेति। भुजगनिर्म्मोकस्य सर्पकञ्चुकस्य शङ्कितेन सञ्जातशङ्केन हारमवलोक्य सर्पकञ्चुकोऽयमिति भ्रान्तिमतेत्यर्थः मयूरेण क्रियमाणो हारो मुक्तामाला यत्र तेन। अत्र हारे मयूरस्य सर्पकञ्चुकभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः।

(थ) सौधेति। सौधशिखरादट्टालिकोपरिभागादवतीर्णं सत् प्रचलितं पारावतकुलं कपोतसमूहो यस्मिन् तस्य भावस्तया हेतुना, स्थलोत्पलिनीनां जलहीनस्थानगतसपत्रपद्मलतानां वनेन समूहेन शोभितं तेनेव, तेषां कपोतानां पद्मपत्रवत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(द) अन्तरिति। अन्तःपुरिकाजनैः अन्तःपुरस्थस्त्रीलोकैः प्रस्तुता आरब्धा नरपते राज्ञस्तारापीडस्य यच्चरितं वेशविन्यासव्यवहारदर्शनादिव्यापारस्तस्य विडम्बनमनुकरणमेव क्रीड़ा यत्र तेन।

(ध) अश्वेति। अश्वमन्दुराया वाजिशालातः परिभ्रष्टाः सन्त आगतास्तैः। "अश्वानां दृष्टिदोषबाधनार्थमश्वशालायां कपयः स्थाप्यन्त इति राज्ञामाचार" इति भानुचन्द्रः। अत्र मन्दुरापदेनैव वाजिशालाबोधनेऽपि पुनरश्वपदोपादानेनाधिकपदत्वदोषः, स तु अश्वपदपरिहारेणैव समाधेयः। अवलुप्तानि छिन्नानि भवनदाड़िमीफलानि गृहाङ्गनगतदाड़िम्बफलानि यैस्तैः। आखण्डितानि छिन्नानि अङ्गनसहकाराणां चत्वरस्थितानाम्राणां पल्लवानि यैस्तैः। अभिभूतानां तैरेव कपिभिराक्रम्य विजितानां कुब्जवामनकिरातानां कर-

आरम्भ করিয়াছিল ; (ণ) যুবতিগণ দোলায় উঠিয়া অবিশ্রান্ত দুলিতেছিল তাহাতে দোলার উপরের ঘণ্টাগুলির 'টং টং' শব্দে সকল দিক্ পরিপূর্ণ হইতেছিল। (ত) কোন ময়ূর সাপের খোলস মনে করিয়া এক ছড়া হার লইয়া যাইতেছিল। (থ) কপোতগণ অট্টালিকার উপর হইতে ভূতলে পতিত হইয়া বিচরণ করিতে থাকায় বোধ হইতেছিল যেন সেই স্থানটি স্থলস্থিত পদ্মপত্রসমূহে শোভিত হইয়াছে। (দ) অন্তঃপুরের রমণীগণ মহারাজ তারাপীড়ের চরিত্রের অনুকরণরূপ খেলা করিতেছিল। (ধ) কতকগুলি বানর অশ্বশালা হইতে বাহির হইয়া আসিয়া, উঠানের দাড়িমফল পাড়িয়া, আমের পল্লব ছিঁড়িয়া, কুব্জ, বামনবীর ও কৃশদেহ লোকগুলিকে পরাস্ত করিয়া তাহাদের হাত হইতে বলপূর্ব্বক অলঙ্কার

(१) स्थलोत्पलिनीवनेनेव। (२)...आकुलीभूतेन।

लज्जितावरोधजनेन, (न) प्रसाद-सोपान-समारोहण-चलितैरबलानां चरणावसक्तैर्मणिमयैः पदे पदे (१) रणद्भिस्तुलाकोटि-वलयैर्द्विगुणीकृत-कूजित-रुताभिः (२) भवनकलहंसमालाभिर्धवलिताङ्गनेन, (३) (प) धृत-(४) धौत-धवल-दुकूलोत्तरीयैः कलधौत-दण्डावलम्बिभिः पलित-पाण्डुर-(५) मौलिभिराचारमयैरिव (६) विनय-मयैरिव (७) मर्य्यादामयैरिव मङ्गलमयैरिव गम्भीराकृतिभिः स्वभाव-धीरैरुष्णीषिभिर्वयःपरिणामेऽपि जरत्सिंहैरिवापरित्यक्तसत्त्वावष्टम्भैः कञ्चुकिभिरधिष्ठितेन समुपेताभ्यन्तरम्, (फ) जलधर-(८) सनाथमिव कृष्णागुरुधूम-

---

तलेभ्य आच्छिन्नानि बलादाकृष्य नीतानि भूषणानि बलयादीनि विकिरद्भिरितस्ततो विक्षिपद्भिः कपिभिर्वानरैः आकुलीकृतेन उपद्रुतेन। अमी वानरस्वभावाः, अतएवात्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(न) शुकेति। शुकसारिकाभिः शयनगृहगताभिरिति तात्पर्य्यं, प्रकाशिता जनान्तरसकाशे स्पष्टमुच्चारिताः ये सुरतविस्रम्भालापा रमणकालीनस्वैरवाक्यानुकरणवाक्यानि तैर्लज्जिता अवरोधजना अन्तःपुररमण्यो यत्र तेन।

(प) प्रासादेति। प्रासादानां सोपानेषु समारोहणेन चलितैः स्पन्दितैः, अबलानां चरणेषु अवसक्तैः स्थितैः, मणिमयैः, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं रणद्भिः शब्दायमानैः तुलाकोटिवलयैर्नूपुरमण्डलैः "पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियां" इत्यमरः, द्विगुणीकृतं स्वकीयरवैर्वर्द्धितं कूजितरुतं अव्यक्तशब्दो यासां ताभिः, भवनकलहंसमालाभिर्गृहपालितकादम्बश्रेणिभिः धवलितं स्वस्वावस्थानेन शुभ्रीकृतं अङ्गनं चत्वरं यस्य तेन।।

(फ) धृतेति। धृतानि धौतानि रजकपरिष्कृतानि अतएव धवलानि दुकूलोत्तरीयाणि पट्टोत्तरीयवसनानि यैस्तैः। कलधौतदण्डान् स्वर्णयष्टीरवलम्बन्ते धारयन्तीति तैः। पलितेन वार्द्धक्यजनितशुक्लतया पाण्डुराः शुभ्राः मौलयः केशा येषां तैः। आचारमयैरिव शिष्टव्यवहारविकारैरिव सर्वदा तदनुसरणात्तदुप-

---

আনিয়া তাহা ইতস্ততঃ নিক্ষেপ করতঃ অন্তঃপুরটাকে আকুল করিয়া তুলিয়াছিল। (ন) শুক ও সারিকাগণ সম্ভোগসময়ের বিশ্রম্ভালাপ প্রকাশ করিয়া অন্তঃপুরের রমণীদিগকে লজ্জিত করিতেছিল। (প) কতকগুলি বালিহাঁস আসিয়া উঠানখানা সাদা করিয়া ফেলিয়াছিল; —দিকে রমণীগণ দালানের সিঁড়ী দিয়া উপরে উঠিতেছিল, তখন তাহাদের চরণস্থিত মণিময় নূপুরগুলি চলিতে থাকিয়া প্রত্যেক পদক্ষেপে শব্দ করিতেছিল, সেই শব্দে বালিহাঁসগুলির অব্যক্ত রব দ্বিগুণ করিয়া তুলিয়াছিল। (ফ) কঞ্চুকিগণ (বৃদ্ধব্রাহ্মণগণ) পরিষ্কৃত শ্বেতবর্ণ পট্টবস্ত্রের উত্তরীয় ধারণ করিয়া এবং স্বর্ণযষ্টি গ্রহণ করিয়া সেই অন্তঃপুরে অধিষ্ঠান করিতেছিলেন; তাঁহারা যেন সদাচারময়, বিনয়ময়, মর্য্যাদাময় ও মঙ্গলময় ছিলেন আর তাঁহাদের

---

(१) मणिमयैर्विभूषणैः पदे पदे। (२)…रुताभिः। (३) धवलीकृताजिरेण। (४) क्वचित् धृतपदं नास्ति। (५)…पाकपाण्डुर…। (६) आधारमयैरिव। (७) क्वचिदयं पाठो नास्ति।

(८) सजलजलधर…।

पटलैः, सनीहारमिव यामकुञ्जरघटा-कर-शीकरैः, सनिशमिव तमालवीथिकान्धकारैः, सबालातपमिव रक्ताशोकैः, (१) सतारागणमिव मुक्ताकलापैः, सवर्षासमयमिव धारागृहैः, सतड़िल्लतमिव हैममयीभिर्मयूरयष्टिभिः, सगृहदैवतमिव शालभञ्जिकाभिः, (ब) शिवभवनमिव द्वारावस्थित-दण्डपाणि-प्रतीहारगणम्, (भ)

देशास्त इति भावः। अत्र विकारार्थे मयट्प्रत्ययात् विकारस्य चान्यथात्वरूपतया गुणत्वात्तस्य चोत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। उत्तरेष्वपि विशेषेवम्। विनयमयैरिव सर्वदा नम्रव्यवहारात्। न्यायमार्गेस्थितिर्मर्यादा तन्मयैरिव सर्वत्र न्याय्याचरणात्। मङ्गलमयैरिव सर्वदा सर्वेषामेव मङ्गलानुध्यानात्। गम्भीरा दुरवगाह्या अचपला आकृतयो येषां तैः। स्वभावा मनोवृत्तयोऽपि धीरा येषां तैः। उष्णीषाण्येषां सन्तीति तैः। वयःपरिणामेऽपि वार्द्धक्येऽपि सति जरत्सिंहैरिव वृद्धकेशरिभिरिव, अपरित्यक्तः सत्त्वावष्टम्भः उत्साहावलम्बनं यैस्तैः। अत्रोपमालङ्कारः। कञ्चुकिभिः (६४ पृष्ठस्थटीकायां) उक्तलक्षणैर्ब्राह्मणैः, अधिष्ठितेन आश्रितेन उक्तप्रकारेणान्तःपुरेण, समुपेतं युक्तमभ्यन्तरं यस्य तत्, राजकुलमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणमेतत्।

(ब) जलेति। कृष्णागुरूणां दह्यमानानामित्यर्थात् धूमपटलैः, जलधरसनाथमिव मेघसंयुक्तमिव धूमपटलानां मेघतुल्यत्वादिति भावः। अत्र साहित्यस्य संयोगरूपतया गुणत्वात्तस्य चोत्प्रेक्षणाद् गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। उत्तरेष्वपि समस्तु वाक्येष्वेवम्। यामकुञ्जरघटायाः प्रतिप्रहरपरिवर्त्तितहस्तिसमूहस्य करशीकरैः शुण्डातो निर्गतजलविन्दुभिः सनीहारमिव तुषारयुक्तमिव, तुषारवत्तेषां पतनात्। तमालवीथिकाभिः समालतरुश्रेणीभिर्ये अन्धकारास्तैः सनिशमिव रात्रियुक्तमिव, उभयान्धकाराणामपि तुल्यत्वात्। रक्ताशोकैः पुष्पैः सबालातपमिव नवीनसूर्यालोकसहितमिव, बालातपवत्तदशोकानां रक्तत्वात्। मुक्ताकलापैः सतारगणमिव, मुक्ताकलापानां नक्षत्रगणवद्विशालत्वादुज्ज्वलत्वाच्च। धारागृहैरविश्रान्तजलवर्षियन्त्रयुक्तगृहैः। सतड़िल्लतमिव विद्युल्लतासंयुक्तमिव तद्यष्टीनां विद्युवत्प्रतीयमानत्वात्। शालभञ्जिकाभिः काष्ठपुत्तलिकाभिः सगृहदैवतमिव, तासां गृहदेवतावद्गृहमध्येऽवस्थानात्।

(भ) शिवेति। शिवभवनमिव काशीस्थविश्वेश्वरमन्दिरमिव, द्वारावस्थितः दण्डपाणिर्यष्टिहस्तः प्रतीहार-

---

আকৃতি গম্ভীর, প্রকৃতিও ধীর এবং মস্তকে উষ্ণীষ ছিল এবং তাঁহারা বৃদ্ধ হইলেও বৃদ্ধ সিংহের ন্যায় উৎসাহ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন না। (ব) আর সেই রাজবাটী, দহ্যমান কৃষ্ণাগুরুর ধূমরাশিতে যেন মেঘসংযুক্ত ছিল; প্রতিপ্রহরে পরিবর্ত্তিত হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নিঃসৃত জলবিন্দুসমূহে, যেন হিমকণা-সমন্বিত ছিল; তমালবৃক্ষসমূহের অন্ধকারে যেন রাত্রিসংযুক্ত বলিয়া বোধ হইতেছিল; রক্তবর্ণ অশোকপুষ্পে যেন নবীন-সূর্য্যালোক-যুক্ত ছিল; মুক্তাসমূহে যেন নক্ষত্রগণযুক্ত বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল; জলযন্ত্রের গৃহ থাকায় যেন বর্ষাকাল-বিশিষ্ট বলিয়া বোধ হইতেছিল; ময়ূরের বসিবার জন্য স্বর্ণময় যষ্টি থাকায় যেন বিদ্যুৎসংযুক্ত ছিল এবং বহুতর কাষ্ঠপুত্তলিকা থাকায় যেন গৃহদেবতাগণসংযুক্ত বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ভ) বিশ্বেশ্বরের মন্দিরের দ্বারদেশে যেমন দণ্ডপাণি ভৈরব ও প্রমথগণ দ্বারপালরূপে অবস্থান

---

(१) आरक्ताशोकैः।

उत्कृष्टकविगद्यमिव (१) विविधवर्णश्रेणि-(२) प्रतिपाद्यमानानेकाभिनवार्थ-(३) सञ्चयम्, (म) अप्सरोगणमिव प्रकटमनोरमारम्भम्, (४) (य) दिवसकरोदयमिव उल्लसत्पद्माकरकमलामोदम्, (र) उष्णकिरणमिव निजलक्ष्मीकृतकमलोपकारम्, (ल) नाटकमिव पताकाङ्क-(५) शोभितम्, (व) शोणित-

गणो द्वारपालसमूहो यस्य तत्। अन्यत्र तु द्वारावस्थिताः दण्डपाणिस्तदाख्यो भैरवविशेषः, प्रतीहाररूपा गणाः प्रमथाश्च यस्य तत्। इतः प्रभृति वर्षपर्वतसमूहमिवान्तस्थितापरिमाणशृङ्गिहेमकूट'मित्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये पूर्णोपमालङ्कारः। श्लेषोपमेति केचित्।

(म) उत्कृष्टेति। उत्कृष्टकवेर्गद्यं गद्यात्मकं वासवदत्तादिकं काव्यमिव, कादम्बरीकाव्यमिवेत्यपि ध्वन्यते। विविधानां वर्णानां ब्राह्मणादीनां श्रेण्या समूहेन प्रतिपाद्यमान उपहारभावेन दीयमानः अनेको नानाप्रकारः अभिनवः अर्थसञ्चयो धनराशिर्यत्र तत्। अन्यत्र तु विविधानां वर्णानामक्षराणां श्रेण्या प्रतिपाद्यमानः अभिधीयमानः अनेकेषां अभिनवानां अर्थानां विषयाणां सञ्चयः समूहो यस्मिन् तत्।

(य) अप्सर इति। अप्सरोगणमिव प्रकटा अगुप्ता मनोरमाः सुन्दराश्च आरम्भाः कार्य्योपक्रमा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु प्रकटमनोरमा अत्यन्तसुन्दरी रम्भा तदाख्या अप्सरा यस्मिन् तम्।

(र) दिवसेति। दिवसकरस्य सूर्य्यस्य उदयमिव, उल्लसन् परिस्फुरन् पद्माकर-कमलानां तड़ागतीरगतहरिणविशेषाणां आमोदः कस्तूरीसौरभं यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु उल्लसन् प्रस्फुटिततया इतस्ततः प्रसरन् पद्माकर-कमलानां तड़ागस्थितपद्मानां आमोदः सौरभं यस्मात् तम्। "स्यात् कुरङ्गेऽपि कमल" इत्यमरः।

(ल) उष्णेति। उष्णकिरणं सूर्य्यमिव, निजलक्ष्म्या स्वकीयशोभया कृतः कमलाया राजलक्ष्म्याः उपकारो वृद्धिरूपसाहाय्यं येन तत्। अन्यत्र तु निजलक्ष्म्या स्वकीयप्रकाशरूपश्रिया कृतः कमलानां पद्मानां उपकारो विकासरूपोपकृतिर्येन तम्।

(व) नाटकमिति। नाटकं तदाख्यं रूपकविशेषमिव, पताकाभिर्वैजयन्तीभिः अङ्कैर्नानाविध-

করিতেছেন, সেই রাজবাটীর দ্বারদেশেও তেমন যষ্টিহস্তে দ্বারপালগণ অবস্থান করিতেছিল। (ম) উৎকৃষ্ট কবির গদ্যকাব্যে যেমন নানাপ্রকার অক্ষরসমূহে অনেক নূতন বিষয়সমূহ কথিত হইয়া থাকে, সেই রাজবাটীতেও তেমন ব্রাহ্মণ প্রভৃতি নানাজাতীয় ব্যক্তিগণ নূতন নূতন নানাবিধ ধনসমূহ উপহারভাবে দিতেছিল। (য) অপ্সরাগণের মধ্যে যেমন অত্যন্ত সুন্দরী রম্ভানামে অপ্সরা আছে, সেই রাজবাটীতেও তেমন প্রকাশ্যভাবে সুন্দর সুন্দর কার্য্যারম্ভ হইতেছিল। (র) সূর্য্যের উদয় হইতে যেমন সরোবরস্থ পদ্মের সৌরভ বাহির হয়, সেই রাজবাটীতেও তেমন সরোবরতীরস্থ হরিণগণের শরীরের সৌরভ বাহির হইতেছিল। (ল) সূর্য্য যেমন নিজের প্রকাশরূপ শোভাদ্বারা পদ্মের প্রকাশরূপ উপকার করেন, সেই রাজবাটীও তেমন নিজ শোভাদ্বারা রাজলক্ষ্মীর বৃদ্ধিরূপ উপকার করিয়াছিল। (ব) নাটক গ্রন্থ যেমন

(१)...कविकाव्यमिव। (२)...श्रेणी...। (३)...प्रतिपाद्यमानाभिनवार्थ...।
(४) रम्भालीनं। (५) प्रकटपताकाङ्क...।

पुरमिव बाणयोग्यावासोपेतम्, (श) पुराणमिव विभागावस्थापित-(१) सकल-भुवनकोशम्, (ष) सम्पूर्ण-(२) चन्द्रोदयमिव मृदुकरसहस्रसंवर्द्धितरत्नालयम्, (स) दिग्गजमिवाविच्छिन्न-महादान-सन्तानम्, (ह) ब्रह्माण्डमिव सकलजीवलोक-व्यवहार-कारणोत्पन्नहिरण्यगर्भम्, (क्ष) ईशानबाहुवनमिव महाभोगिमण्डल-

---

चिह्नैश्च शोभितं, अन्यत्र तु पताकया "व्यापि प्रासङ्गिकं वृत्तं पताकेत्यभिधीयते" इतिलक्षणकेन अर्थप्रकृति-विशेषेण, अङ्कैः "प्रत्यक्षनेतृचरितो रसभावसमुज्ज्वलः" इत्यादिलक्षणकैः परिच्छेदैश्च शोभितम्।

(श) शोणितेति। शोणितपुरं तदाख्यां बाणासुरराजधानीमिव, बाणानां शराणां शरादस्त्राणामित्यर्थः बाणस्य बाणराजस्य च योग्यैरावासैर्गृहैरुपेतं युक्तम्।

(ष) पुराणमिति। पुराणं शास्त्रमिव, विभागेन श्रेणीबद्धभावेन अवस्थापितः सकलभुवनकोशः सकलभुवने यावान् धनराशिः सम्भवति तावान् धनराशिरित्यर्थः यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु विभागे अंशविशेषे अवस्थापित उक्त्या विन्यस्तः सकलानां चतुर्दशानां भुवनानां कोशो मण्डलं यस्मिन् तत्, सर्वेष्वेव पुराणेषु सकलभुवनानां वर्णनासत्त्वादिति भावः। "कोशः कोष इवाण्डके। कुड्मले चषके दिव्येऽर्थचये योनिशिम्बयोः। जातीकोशेऽसिपिधाने" इति हेमः।

(स) सम्पूर्णेति। सम्पूर्णचन्द्रोदयमिव, मृदवः कोमलाः प्रजाभिरनायासेन दत्ता ये कराः राजग्राह्यधनानि तेषां सहस्रेण समूहेन संवर्द्धिताः रत्नानामालया धनागाराणि यस्य तत्। अन्यत्र तु मृदुकर-सहस्रेण कोमलकिरणसमूहेन संवर्द्धिताः रत्नालयाः समुद्रा येन तम्।

(ह) दिगिति। दिग्गजमिव, अविच्छिन्नो विच्छेदं विराममप्राप्तो महादानानां सातिशयधनवितरणानां सन्तानः परम्परा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु अविच्छिन्नो महान् दानसन्तानो मदजलधारा यस्य तम्।

(क्ष) ब्रह्माण्डमिति। ब्रह्माण्डं ब्रह्मकोषमिव, सकलजीवलोकानां व्यवहारो विवादादिनिर्णय एव कारणं तस्मादुत्पन्नानि विवादनिर्णयकाले लोकैर्दत्तानीत्यर्थः हिरण्यानि धनानि गर्भे यस्य तत्। अन्यत्र तु सकल-

---

পতাকা ও অঙ্কদ্বারা শোভিত হয়, সেই রাজবাটীও তেমন ধ্বজ পতাকা ও নানাবিধ চিহ্নদ্বারা শোভিত ছিল। (শ) শোণিতপুর যেমন বাণরাজার যোগ্য-গৃহসমূহসমন্বিত ছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বাণপ্রভৃতি অস্ত্র রাখার যোগ্য গৃহসমূহ-সমন্বিত ছিল। (ষ) পুরাণশাস্ত্রে যেমন চতুর্দ্দশ ভুবনমণ্ডলের বৃত্তান্ত বর্ণিত আছে, সেই রাজবাটীতেও তেমন সমস্ত জগতের ধনরাশি শ্রেণীবদ্ধভাবে স্থাপিত ছিল। (স) পূর্ণচন্দ্রের উদয় যেমন কোমল কিরণসমূহে সমুদ্রগণকে বর্দ্ধিত করে, সেই রাজবাটীতেও তেমন প্রজাগণকর্তৃক অনায়াসদত্ত কর-(খাজনা) সমূহে ধনাগার সকল বর্দ্ধিত করিয়াছিল। (হ) দিগ্‌হস্তীর বিশাল মদজল-ধারা যেমন অবিচ্ছিন্ন-ভাবে বহিত হইতে থাকে, সেই রাজবাটীতেও তেমন অত্যন্ত ধনবিতরণ অবিচ্ছিন্নভাবে হইতে থাকিত। (ক্ষ) ব্রহ্মাণ্ডমধ্যে যেমন প্রাণিগণের আচার-নিরূপণের নিমিত্ত ব্রহ্মা উৎপন্ন

---

(१) यथाविभागावस्थापित...,अवस्थित...। (२) पूर्ण...।

सहस्राधिष्ठित-(१) प्रकोष्ठम्, (क) महाभारतमिवानन्तगीताकर्णनानन्दित-नरम्, (ख) यदुवंशमिव कुलक्रमागतशूरभीमपुरुषोत्तमबल-परिपालितम्, (ग) व्याकरणमिव प्रथम-मध्यमोत्तम-पुरुष-विभक्ति-स्थितानेकादेश-कारकाख्यात-सम्प्रदान-क्रिया-(२) व्यय-प्रपञ्च-सुस्थितम्, (घ) उदधिमिव भयान्तःप्रविष्ट-(३)

जीवलोकानां व्यवहार आचार एव कारणं तस्मादुत्पन्नः लोकाचारनिर्णयाय जात इत्यर्थः हिरण्यगर्भो ब्रह्मा यस्मिन् तत्। लोकानां सृष्टये तदाचारनिर्णयाय च तस्य जातत्वादिति भावः।

(क) ईशानेति। ईशानस्य शिवस्य बाहूनां वनं समूहमिव, बाहूनां पादपतुल्यायतत्वाद्वनशब्दप्रयोगः, महाभोगिमण्डलानां महासुखिजनसमूहानां सहस्रेण अधिष्ठिताः प्रकोष्ठा गृहैकदेशा यस्य तत्। अन्यत्र तु महाभोगिमण्डलानां मण्डलीभूतमहासर्पाणां सहस्रेण अधिष्ठिताः प्रकोष्ठा मणिबन्धदेशा यस्य तत्।

(ख) महेति। महाभारतमितिहासमिव, अनन्तानामसंख्यानां गीतानां गीतापाठानां आकर्णनेन श्रवणेन आनन्दिता नरा मनुष्या यत्र तत्। अन्यत्र तु अनन्तस्य कृष्णस्य या गीता कृष्णोक्ता गीतेत्यर्थः तस्या आकर्णनेन आनन्दितो नरो नराख्यमुनेरंशावतारोऽर्जुनो यत्र तत्।

(ग) यद्विति। यदुवंशमिव, कुलक्रमेणागतानां भीमानां शूराणां वीराणां भीमाणां भयङ्कराणाञ्च पुरुषोत्तमानां पुरुषश्रेष्ठानां बलेन सामर्थ्येन परिपालितं। अन्यत्र तु कुलक्रमेण तद्वंशीयरीत्या आगतौ जातौ शूरौ वीरौ भीमौ शत्रूणां भयङ्करौ यौ पुरुषोत्तमबलौ श्रीकृष्णबलरामौ ताभ्यां परिपालितम्।

(घ) व्याकरणमिति। व्याकरण शास्त्रमिव, प्रथम-मध्यमोत्तमतया या पुरुषविभक्तिः 'अयं सर्वोत्कृष्ट-गुणतया प्रथमं दानपात्रं, अयं माध्यमिकगुणतया माध्यमिकं दानपात्रम्, अयञ्चोत्तमगुणतया मध्यमत उत्तमं दानपात्रम्,' इत्येवं प्रार्थिजनविभागः, तत्र विषये स्थिता नियुक्ता ये अनेके आदेशकारकाः 'इदमस्मै दीयतां'

হইয়া... র, সেই রাজবাটীর মধ্যেও তেমন সকল লোকের বিবাদ-মীমাংসা করিয়া দেওয়ার বহুতর ধন ... হইয়াছিল। (ক) মহাদেবের বাহুসমূহের মণিবন্ধদেশ যেমন মণ্ডলীভূত বিশাল সর্পসমূহে অধিষ্ঠিত, সেই রাজবাটীর প্রকোষ্ঠসমূহও তেমন অত্যন্ত সুখিজনসমূহে অধিষ্ঠিত ছিল। (খ) মহাভারতে যেমন অর্জ্জুন শ্রীকৃষ্ণের গীতা শুনিয়া আনন্দিত হইয়াছিলেন, সেই রাজবাটীতেও তেমন মনুষ্যগণ অসংখ্য গীতা শুনিয়া আনন্দিত হইত। (গ) যদুবংশ যেমন কুলের রীতি অনুসারে বীর ও ভয়ঙ্কর হইয়া উৎপন্ন শ্রীকৃষ্ণ ও বলরাম কর্ত্তৃক পরিরক্ষিত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন কুলক্রমাগত বীর ও ভয়ঙ্কর পুরুষশ্রেষ্ঠগণের বলে পরিরক্ষিত হইত। (ঘ) ব্যাকরণশাস্ত্র যেমন প্রথমপুরুষ, মধ্যমপুরুষ, উত্তমপুরুষ, সুপ্ ও তিঙ্ বিভক্তি, ভিস্ ও চতস্প্রভৃতি অনেক আদেশ, কর্ত্তাপ্রভৃতি কারক, পচতি-প্রভৃতি আখ্যাত, সম্প্রদান কারক, ভূপ্রভৃতি ধাতু এবং অব্যয়পদের বিস্তারে সুপ্রসিদ্ধ আছে; সেই রাজবাটীও তেমন 'ইনি প্রথম দানের পাত্র, ইনি মধ্যম দানের পাত্র এবং ইনি উত্তম

(१)...अध्यासित...। (२) सम्प्रदानापादान...। (३) भयात्प्रविष्ट...।

सपक्ष-भूमिभृत्-(१) सहस्रसङ्कुलम्, (ङ) उषानिरुद्धसमागममिव चित्रलेखा-(२) दर्शित-विचित्र-सकल-त्रिभुवनाकारम्, (च) बलियज्ञमिव पुराणपुरुष-वामना-

इत्थमाज्ञाकर्त्तारो जनास्तैराख्याता निर्दिष्टा याः सम्प्रदानक्रियाः सम्यक् प्रकर्षेण वितरणकार्य्याणि ताभिर्यो व्ययप्रपञ्चो धनापगमबाहुल्यं तेन सुस्थितं यशस्वितया विद्यमानम्। अन्यत्र तु प्रथमपुरुषो मध्यमपुरुष उत्तमपुरुषश्चेति तिङ्वचनानां प्रत्येकत्रिकस्य एकैकसंज्ञा, विभक्तयः सुप्तिङ्रूपाः, तासु स्थिता अनेके आदेशाः त्रि-चतुर्-शब्दयोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ इत्यादयः हन्तेर्वध इत्यादयश्च, कारकाणि कर्त्रादीनि, आख्यातं तिङन्तं पदं, सम्प्रदानं कारकविशेषः श्लेषयोजनाभिप्रायादस्य पृथगुक्तिः, क्रियाः क्रियाप्रतिपादका भूप्रभृतयः शब्दाः, अव्ययानि "सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु" इत्याद्युक्तलक्षणानि स्वरादीनि, तेषां प्रपञ्चेन विस्तारेण सुस्थितं सुप्रसिद्धम्।

(ङ) उदधिमिति। उदधिं समुद्रमिव, भयेन विपक्षराजभीत्या अन्तःप्रविष्टानां अभ्यन्तरगतानां सपक्षाणां सहायसहितानां भूमिभृतां राज्ञां सहस्रेण बाहुल्येन सङ्कुलं व्याप्तम्। अन्यत्र तु भयेन इन्द्रकर्त्तृकपक्षच्छेदनभयेन अन्तःप्रविष्टानां सपक्षाणां पतत्रान्वितानां भूमिभृतां मैनाकादिपर्वतानां सहस्रेण सङ्कुलं व्याप्तम्। इन्द्रकर्त्तृकपक्षच्छेदनभयेन पक्षवन्तः पर्वताः पुरा समुद्रमध्ये पलायिता इति रामायणम्।

(च) ऊषेति। ऊषा वाणराजकन्या अनिरुद्धः श्रीकृष्णपौत्रस्तयोः समागमं सम्मेलनमिव, चित्रलेखाभिस्तत्तदालेख्यरचनाभिः दर्शिता विचित्रा विविधाः सकलत्रिभुवनस्य तद्वर्त्तिनः पदार्थस्य आकारा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु चित्रलेखया तदाख्यया ऊषासख्या दर्शितास्त्रिवर्णयित्वा ऊषायै प्रदर्शिताः विचित्राः विशिष्टचित्रस्वरूपाः, सकलत्रिभुवनस्य समस्तत्रिजगद्वासिनो युवकसमूहस्य आकारा यस्मिन् तम्।

पुरा किल ऊषा नाम वाणराजकन्या स्वप्ने कञ्चन परमसुन्दरं युवानमवलोक्य तदर्थमतीवोत्कण्ठिता बभूव, स तु कुत्रास्तीत्यूषया निर्देष्टुमशक्यतया चित्रलेखा नाम तस्याः सखी त्रिजगती यावतो युवनराम् चित्रयित्वा समानीय तस्यै समदर्शयत्, तत्र तु अनिरुद्धचित्रमवलोक्य सोऽयमित्यूषायां निर्दिष्टे— चित्रलेखा मायया शयानं तमनिरुद्धमानीय ऊषया सङ्गमितवतीति हरिवंशवार्त्ता।

দানের পাত্র' এইরূপে প্রার্থিজনের বিভাগকার্য্যে নিযুক্ত অনেক আদেশকারী লোক, নির্দ্দিষ্ট করিয়া দিলে যে দানকার্য্য সম্পাদন হইত, তাহার ব্যয়বাহুল্যে যশস্বী বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিল। (ঙ) সমুদ্র যেমন, ইন্দ্রকর্ত্তৃকপক্ষচ্ছেদনের ভয়ে অভ্যন্তর-প্রবিষ্ট পক্ষসমন্বিত মৈনাকপ্রভৃতি পর্ব্বতসমূহে ব্যাপ্ত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বিপক্ষগণের ভয়ে অভ্যন্তর-প্রবিষ্ট সহায়সম্পন্ন রাজগণে ব্যাপ্ত ছিল। (চ) ঊষা ও অনিরুদ্ধের মিলনে যেমন ঊষার সখী চিত্রলেখা সমস্ত ত্রিভুবনের যুবকগণের আকৃতি চিত্র করিয়া আনিয়া ঊষাকে দেখাইয়াছিল, সেই রাজবাটীতেও তেমন চিত্রকরেরা সমস্ত ত্রিভুবনের সকল পদার্থের নানাবিধ আকৃতি চিত্র করিয়া

(१) भूभृत्...। (२) चित्रितलेखा...।

धिष्ठिताभ्यन्तरम्, (छ) शुक्लपक्षप्रदोषमिव वितत-शशि-किरण-कलाप-धवला-म्बर-(१) वितानम्, (ज) नरवाहनदत्त-चरितमिव (२) अन्तःसंवर्द्धित-प्रिय-दर्शन-राजदारिका-गन्धर्वदत्तोत्कण्ठम्, (झ) महातीर्थमिव सद्योऽनेकपुरुष-

---

(छ) बलीति। बलिराजस्य यज्ञमिव, पुराणपुरुषैर्वृद्धमानुषैः वामनैः खर्वाकृतिभिर्जनैः, अन्यत्र तु पुराणपुरुषेण आदिपुरुषेण वामनेन वामनावतारेण नारायणेन, अधिष्ठितमाश्रितमभ्यन्तरं यस्य तत्, अन्यत्र तम्। पुरा भगवान् वामनो बलिं वञ्चयितुं तदीययज्ञं गत इति श्रीमद्भागवतवार्त्ता।

(ज) शुक्लेति। शुक्लपक्षस्य प्रदोषं निशामुखमिव, विततानि उपरि विस्तृतानि शशिकिरणकलापवत् धवलानि अम्बरवितानानि वस्त्रनिर्म्मितचन्द्रातपा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु विततैः प्रसृतैः शशिकिरणकलापैः धवलं अम्बरमाकाशमेव वितानं यस्मिन् तम्।

(झ) नरेति। नरवाहनदत्तस्य तदाख्यस्य वत्सराजोदयनपुत्रस्य चरितं चरित्रमिव, अन्तरन्तःपुरे संवर्द्धिताभिः प्रियदर्शनाभिः परमसुन्दरीभिः राजदारिकाभिः आगतान्यान्यराजकन्याभिः गन्धर्वेभ्यो दत्ता सौन्दर्यातिशयादर्पिता उत्कण्ठा समागमौत्सुक्यं यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु अन्तःसंवर्द्धिता प्रियदर्शना परमसुन्दरी, राज्ञः सागरदत्तस्य दारिका कन्या या गन्धर्वदत्ता गन्धर्वदत्तानाम्नी तस्या उत्कण्ठा नरवाहनदत्तनिमित्तमौत्सुक्यं यस्मिन् तत्। पुरा किल गन्धर्वदत्तानाम्नी सागरदत्ताख्यगन्धर्वराजकन्या दूतवन्दिद्विजादिभ्यो नरवाहनदत्तस्य गुणोत्कर्षमाकर्ण्य तदर्थमतीवोत्कण्ठिता बभूवेति कथासरित्सागरवार्त्ता। तथाच तत्रैव—"राजा सागरदत्ताख्यो गन्धर्वाणामिहास्ति यः। तस्य गन्धर्वदत्ताख्या सुतास्ति न्यक्कृताप्सराः।"

(ञ) महेति। महातीर्थं गङ्गादिकमिव, सद्यस्तारापीडानुमतिक्षणमेव अनेकपुरुषैर्विभिन्नदेशीय-राजपुत्रैः प्राप्तानि अभिषेकाः स्वस्वराज्याभिषेका एव फलानि यस्मात् तत्, तत्स्थतारापीडानुमत्या राज्याभिषेक-फललाभात् तद्वाटीत एव तल्लाभ उपचारात्। अन्यत्र तु सद्यः स्नानक्षण एव अनेकपुरुषैः स्नातुः पूर्वपुरुषैः

লোকদিগকে দেখাইয়াছিল। (ছ) বলিরাজার যজ্ঞস্থল যেমন, আদিপুরুষ বামনদেবকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বৃদ্ধ ও খর্ব্বাকৃতি মনুষ্যগণকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত ছিল। (জ) শুক্লপক্ষের প্রদোষকাল যেমন চন্দ্রের বিস্তৃত কিরণসমূহে ধবলবর্ণ আকাশরূপ চন্দ্রাতপবিশিষ্ট হয়, সেই রাজবাটীও তেমন চন্দ্রের কিরণসমূহের ন্যায় ধবলবর্ণ বস্ত্রদ্বারা নির্ম্মিত এবং উপরে বিস্তৃত এইরূপ চন্দ্রাতপবিশিষ্ট ছিল। (ঝ) নরবাহনদত্ত রাজার উপাখ্যানে যেমন অন্তঃপুরে পরিবর্দ্ধিতা পরমসুন্দরী সাগরদত্তরাজার কন্যা গন্ধর্ব্বদত্তার উৎকণ্ঠা শুনা যায়, সেই রাজবাটীতেও তেমন অন্তঃপুরে পরিবর্দ্ধিত পরমসুন্দরী রাজকন্যাগণ গন্ধর্ব্বগণেরও উৎকণ্ঠা জন্মাইত বলিয়া শুনা যায়। (ঞ) গঙ্গাপ্রভৃতি মহাতীর্থে স্নান করিলে যেমন তৎক্ষণাৎ স্নানকর্ত্তার পূর্ব্বপুরুষগণ স্বর্গপ্রভৃতি ফললাভ করেন, সেই রাজবাটীতেও তেমন মহারাজ তারাপীড়ের অনুমতি হইলে তৎক্ষণাৎ বিভিন্নদেশীয় রাজপুত্রগণ স্ব স্ব রাজ্যে অভি-

---

(१)...धवलित...। (२) नरवाहनदत्तकथेव।

प्रासाभिषेक-फलम्, (ञ) प्राग्वंशमिव नानासवपात्र-सङ्कुलम्, (ट) निशा-समयमिवानेकनक्षत्रमालालङ्कृतम्, (ठ) प्रभातसमयमिव पूर्वदिग्भाग-रागानु-मेय-मित्रोदयम्, (ड) गान्धिक-(१) भवनमिव स्नान-धूप-विलेपन-(२) वर्ण-कोज्ज्वलम्, (ढ) ताम्बूलिकभवनमिव क्रत-लवली-लवङ्गैला-कक्कोल-(३) पत्र-सञ्चयम्, (ण) प्रथम-(४) वेश्यासमागममिव अविदित-हृदयाभिप्राय-चेष्टा-

---

प्रासं अभिषिकात् अपत्यानामिव स्नानात् फलं स्वर्गादिफलं यस्मात्तत्; तथा च प्रायश्चित्ततत्त्वे ब्रह्माण्डपुराणं— "संक्रान्तिषु व्यतीपाते ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः। पुष्ये स्नात्वा तु जाह्नव्यां कुलकोटीः समुद्धरेत्।"

(ट) प्रागिति। यस्मिन् गृहे होमार्थं हविःस्थाप्यते तस्मात् पूर्वदिग्वर्त्ति यजमानादिस्थित्यर्थं गृहं प्राग्वंशः, "प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहा"दित्यमरः, तमिव, नाना अनेकैः आसवपात्रैर्मद्यभाजनैः, अन्यत्र तु सवपात्रैः स्रुक्स्रुवादिभिर्यज्ञीयपात्रैः सङ्कुलं व्याप्तम्।

(ठ) निशेति। निशासमयं रात्रिकालमिव, अनेकाभिर्नक्षत्रमालाभिः सप्तविंशतिमुक्ताफलग्रथितमाल्यैः ताराश्रेणीभिश्च अलङ्कृतम्।

(ड) प्रभातेति। प्रभातसमयमिव, पूर्वदिग्भागे पूर्वावस्थायां रागेण तारापीडस्यानुरागदर्शनेन अनुमेयाः मित्राणां सुहृदां उदया अभ्युदया यस्मिन् तत्, तथा च यं यं सुहृदं प्रति पूर्वं तारापीडस्यानुरागो दृष्टस्तस्य तस्यैवाचिरात्सद्वृत्तधनादिभिरुन्नतिर्भविष्यतीति लोकैरनुमितमिति सरलार्थः। अन्यत्र तु पूर्वदिग्भागे पूर्वस्यां दिशि रागेण रक्ततादर्शनेन अनुमेयो मित्रस्य सूर्यस्य उदयो यस्मिन् तत्।

(ढ) गान्धिकेति। गन्धद्रव्यपण्ययोगात् गान्धिको गन्धद्रव्यविक्रयी, तस्य भवनं गृहमिव, स्नानं स्नानीयद्रव्यं सुगन्धितैलादि, धूपः, विलेपनं चन्दनादिकं, वर्णकमङ्गरागद्रव्यं कुङ्कुमादिकञ्च, तैरुज्ज्वलं कान्तिमत्, इदमुभयत्रापि समानं। "वर्णकं चाथ विच्छित्तिः स्त्रीकषायोऽङ्गरागके।" इति रभसः।

(ण) ताम्बूलिकेति। ताम्बूलपण्ययोगात्ताम्बूलिकस्ताम्बूलविक्रयी तस्य भवनमिव, क्रतो भोगाय विक्रयाय च विहितः लवलीनां लवङ्गानां एलानां कक्कोलानां पत्राणां पर्णानां ताम्बूलानाञ्चेति यावत् सञ्चयः संवृद्धी यस्मिन् तत्।

যেকরূপ ফল লাভ করিতেন। (ট) হোমগৃহের পূর্ব্বদিগ্‌বর্ত্তী গৃহ যেমন স্রুক্‌ ও স্রুব-প্রভৃতি নানাবিধ যজ্ঞীয় পাত্রে ব্যাপ্ত থাকে, সেই রাজবাটীও তেমন নানাবিধ মদ্যপাত্রে ব্যাপ্ত ছিল। (ঠ) রাত্রিকাল যেমন বহুতর নক্ষত্রশ্রেণীতে শোভিত হয়, সেই রাজবাটীও তেমন বহুতর মুক্তামালাতে শোভিত ছিল। (ড) প্রভাতকালে যেমন পূর্ব্বদিক্‌ রক্তবর্ণ দেখিয়া সূর্য্যের উদয় অনুমান করা হয়, সেই রাজবাটীতেও তেমন মিত্রগণের প্রতি প্রথম অবস্থাতে মহারাজের অনুরাগ দেখিয়া তাহাদের উন্নতির অনুমান করা হইত। (ঢ) গন্ধদ্রব্য-বিক্রেতার গৃহের ন্যায় সেই রাজবাটী, সুগন্ধিতৈলপ্রভৃতি স্নানীয় দ্রব্য, ধূপ, চন্দনপ্রভৃতি অনুলেপন দ্রব্য এবং কুঙ্কুমপ্রভৃতি অঙ্গরাগ দ্রব্যে উজ্জ্বল ছিল। (ণ) তাম্বূল-বিক্রেতার

---

(१) गन्धिक...। (२)...लेपन...। (३)...कङ्कोलि, कङ्कोल...। (४) प्रधान...।

विकारम्, (त) कामुकजनमिव बहु-चाटु-संलाप-सुभाषित-रसास्वाद-दत्त-ताल-शब्दम्, (थ) धूर्त्तमण्डलमिव दीयमान-मणि-शत-सहस्रालङ्करण-कृत-लेख्य-पत्र-सञ्चयम्, (द) धर्म्मारम्भमिवाशेषजन-मनः-प्रह्लादनम्, (ध) महा-वनमिव विविध-श्वापद-(१) द्विजोपघुष्टम्, (न) रामायणमिव कपि-(२)

(त) प्रथमेति। प्रथमवेश्यासमागममिव, अविदितो नितान्तगाम्भीर्य्यात् केनाप्यनवगतो हृदयाभिप्रायो याभ्यस्तादृश्यश्चेष्टाः क्रियाः विकारा मुखनेत्रादिभङ्गयश्च यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु अविदितः अपरिचितत्वात् केनाप्यज्ञातः हृदयाभिप्रायो यासु तादृश्यश्चेष्टाः कामचेष्टाः विकारा भ्रूभङ्गीप्रभृतयश्च यस्मिन् तम्।

(थ) कामुकेति। कामुकजनमिव, बहूनि चाटूनि प्रियवचनानि येषु तादृशैः संलापैर्मिथोभाषणैः सुभाषितैरेकैकस्य मनोहरवाक्यैश्च यो रसास्वादो रसावबोधस्तेन दत्तः सम्मतिज्ञापनाय कृतः तालशब्दः करतल-ध्वनिर्यस्मिन् तत्, अन्यत्र तु येन तम्।

(द) धूर्त्तेति। धूर्त्तमण्डलं द्यूतकारसमूहमिव, दीयमानानि विभिन्नदेशीयसामन्तैरुपहारभावेन वितीर्य्य-माणानि यानि मणीनां शतसहस्राणि अलङ्करणानि भूषणानि च तेषां कृते नियुक्तलेखकैर्विहितः लेख्यपत्र-सञ्चयस्तान्युल्लिख्योल्लिख्य तत्पत्रसंग्रहो यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु दीयमानाय द्यूते पराजितत्वात् दातव्यायेत्यर्थः मणिशतसहस्राय अलङ्करणाय च कृतः स्वहस्ताक्षरैर्विहितः लेख्यपत्रसञ्चयः 'एतावत्कालमध्ये एतानि मया देयानि' इति प्रमाणपत्रसंग्रहो येन तत्।

(ध) धर्म्मेति। धर्म्मारम्भं यागादिधर्म्मकार्य्योपक्रममिव, अशेषाणां सकलानां जनानां मनःप्रह्लादनं चित्तानन्दजनकम्, अतीववैचित्र्यादिति भावः। इदमुभयत्रापि समानम्।

(न) महेति। महावनमिव, विविधैः श्वापदैः पालितहिंस्रजन्तुभिर्वन्यहिंस्रजन्तुभिश्च व्याघ्रादिभिः, द्विजैः पालितपक्षिभिर्ब्राह्मणैर्वा अन्यत्र वन्यपक्षिभिश्च उपघुष्टं मुखरीकृतम्।

গৃহের ন্যায় সেই রাজবাটীতেও নোয়াড়ি (লোয়াইল), লবঙ্গ, এলাচী, কাঁকলাফল এবং তাম্বূল সংগৃহীত ছিল। (ত) প্রথম বেশ্যাসংসর্গে যেমন তাহার মনের অভিপ্রায়, ব্যবহার ও মুখভঙ্গীপ্রভৃতির ভাব বুঝা যায় না, সেই রাজবাটীতেও তেমন লোকদিগের মনের অভিপ্রায়, ব্যবহার ও মুখভঙ্গীপ্রভৃতির ভাব বুঝা যাইত না। (থ) কামুকব্যক্তির ন্যায় সেই রাজবাটীর লোকেরাও বহুতর প্রিয়বাক্য দ্বারা পরস্পর আলাপের এবং একের একের মনোহর বাক্যের রসাস্বাদন করিয়া করতলধ্বনি করিত। (দ) দ্যূতকারগণ যেমন দ্যূতে পরাজিত হইয়া পণের শত-সহস্র মণি ও অলঙ্কারের জন্য লেখ্য পত্র (দলিল) লিখিয়া দেয়, সেই রাজ-বাটীতেও তেমন সামন্তরাজগণ উপহারভাবে যে শত-সহস্র মণি ও অলঙ্কার দিতেছিলেন, লেখক-গণ তাহার লেখ্য পত্র (তালিকা) লিখিয়া লইতেছিল। (ধ) যাগাদি ধর্ম্মকার্য্যারম্ভের ন্যায় সেই রাজবাটীও সকল লোকের চিত্তের আনন্দজনক ছিল। (ন) মহারণ্যের ন্যায়

---

(१) क्वचित् विविधपदं नास्ति। (२) कपि...।

कथासमाकुलम्, (प) माद्रीकुलमिव नकुलालङ्कृतम्, (फ) सङ्गीतभवनमिवा-नेकस्थानावस्थापित-मृदङ्गम्, (ब) रघुकुलमिव भरतगुणानन्दितम्, (१) (भ) ज्योतिषमिव ग्रहमोक्ष-कला-भाग-निपुणम्, (म) नारदीयमिव वर्ण्यमान-(२)

(प) रामेति। रामायणमितिहासमिव, कपिभिः पालितवानरैः कथाभिर्नानोपाख्यानैश्च, अन्यच्च कपि-कथया सुग्रीवहनूमदादीनामुपाख्यानेन समाकुलं व्याप्तम्।

(फ) माद्रीति। माद्री पाण्डोः कनिष्ठा स्त्री तस्याः कुलं सन्ततिमिव, नकुलैः पालितसर्पारिभिः, नकुलेन तदाख्येन चतुर्थपाण्डवेन च अलङ्कृतम्।

(ब) सङ्गीतेति। सङ्गीतभवनमिव, अनेकेषु स्थानेषु अवस्थापिताः, मृदोऽङ्गानि मृत्तिकया निर्म्मिता हस्तपदाद्यवयवा यासां ता मृदङ्गा मृत्पुत्तलिकाः, मुरजाश्च यस्मिन् तत्।

(भ) रघ्विति। रघुकुलमिव, भरतानां नटानां गुणैरभिनयनैपुण्यैः, भरतस्य कैकयीपुत्रस्य गुणैर्दया-दाक्षिण्यादिभिश्च आनन्दितम्।

(म) ज्योतिषमिति। ज्योतिषं शास्त्रमिव, ग्रहा ग्रहणं दुष्टानामावद्धीकरणं, मोक्षो निर्द्दिष्टसमयापगमे दण्डितानां कारागारान्मोचनं, कला नृत्यगीतादिकलाविद्याः, भागो यथाशास्त्रं द्रव्यविभजनं तेषु निपुणा जना इत्यर्थः यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु ग्रहो राहुणा सूर्य्याचन्द्रमसोर्ग्रहणं, मोक्षस्तयो राहुतो मुक्तिः, कला पञ्चपलात्मकः कालः, भागश्च पञ्चदण्डात्मकः कालः, तेषु तन्निरूपणाविषयेषु निपुणं समर्थम्। तथा च सूर्य्यसिद्धान्तः—"विकलानां कला षष्ट्या तत्षष्ट्या भाग उच्यते। तत्त्रिंशता भवेद्राशिर्भगणो द्वादशैव ते।"

(य) नारेति। नारदीयं पुराणमिव, वर्ण्यमाना राजधर्म्मा यस्मिन् तत्। नारदीयेऽपि तद्वर्णनसत्त्वात्।

সেই রাজবাটীও, বিবিধ হিংস্রজন্তু ও পক্ষীর শব্দে শব্দায়মান ছিল। (প) রামায়ণ যেমন সুগ্রীব ও হনুমান্‌প্রভৃতি বানরগণের উপাখ্যানে পরিপূর্ণ, সেই রাজবাটীও তেমন পালিত বানর ও নানাস্থানে আরব্ধ উপাখ্যানে পরিপূর্ণ ছিল। (ফ) মাদ্রীর বংশ যেমন নকুল (চতুর্থ পাণ্ডব) কর্তৃক অলঙ্কৃত ছিল, সেই রাজবাটীও তেমন নকুল (পালিত বেজী) কর্তৃক অলঙ্কৃত ছিল। (ব) সঙ্গীতালয়ে যেমন নানাস্থানে মৃদঙ্গ স্থাপিত থাকে, সেই রাজবাটীতেও তেমন নানাস্থানে মৃত্তিকার পুত্তলিকা স্থাপিত ছিল। (ভ) রঘুবংশ যেমন ভরতের গুণে আনন্দিত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন নটগণের গুণে আনন্দিত ছিল। (ম) জ্যোতিষশাস্ত্র যেমন চন্দ্র ও সূর্য্যের গ্রহণ এবং মুক্তি, কলা (পঞ্চপলাত্মক কাল), এবং ভাগের (পঞ্চদণ্ডাত্মক কালের) নিরূপণে নিপুণ, সেই রাজবাটীতে অনেক ব্যক্তিও তেমন দুর্জ্জনকে আবদ্ধ করা, নির্দ্দিষ্ট সময় অতীত হইলে দণ্ডিত ব্যক্তিকে কারাগার হইতে মুক্ত করা, নৃত্যগীতাদি কলাবিদ্যা এবং যথাশাস্ত্র দ্রব্যবিভাগ করা—এই সকল বিষয়ে নিপুণ ছিল। (য) নারদীয় পুরাণে যেমন রাজধর্ম্মসকল বর্ণিত আছে, সেই রাজবাটীতেও সেই রাজধর্ম্মসকল রক্ষিত ছিল।

---

(১) ভরতেকুলানন্দিতম্। (২) আবর্ণ্যমান...।

राजधर्म्मम्, (य) यन्त्रमिव विविध-शब्द-रस-लब्धास्वादम्, (र) मृदुकाव्यमिवान्य-(१) चिन्तित-स्वभावाभिप्रायावेदकम्, (२) (ल) महानदी-प्रवाहमिव सर्वदुरितापहरम्.(३) (व) धनमिव न कस्यचिन्नाकाङ्क्षणीयम्, (४) (श) सन्ध्यासमयमिव दृश्यमानचन्द्रापीड़ोदयम्, (ष) नारायणवक्षःस्थलमिव श्री-रत्न-प्रभा-भासित-दिगन्तम्, (स) बलभद्रमिव कादम्बरी-रस-विशेष-वर्णनाकुल-

(र) यन्त्रमिति। यन्त्रं वीणादिकमिव, विविधानां शब्दानां योजितवाक्यानां ये रसाः शृङ्गारादयस्तेषां लब्धः काव्यनिपुणैः प्राप्त आस्वादो यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु विविधानां शब्दानां तन्त्रीसमुत्थितरवाणां रसस्य माधुर्य्यस्य लब्धः श्रोतृभिः प्राप्त आस्वादो यस्मात् तत्।

(ल) मृद्विति। मृदु कोमलं प्रसादगुणान्वितमित्यर्थः काव्यमिव, अन्यैरितरस्थानस्थजनैः चिन्तितः केवलचिन्ताविषयीकृतः न तु लब्ध इति भावः, यः स्वभावः स्वरूपं अभिप्रायस्तत्रत्यजनानामाशयश्च तयोरावेदकं ज्ञापकं, तस्य राजभवनस्यासाधारणचमत्कारित्वं तत्रत्यजनानामुदाराशयश्च अन्यलोकैराकाङ्क्षित एव न तु लब्धः, तयोश्च सूचकं तद्भवनमिति सरलार्थः। अन्यत्र तु अन्यैर्वक्तृभिन्नैर्जनैः चिन्तितः श्रुतिमात्रेणावगतः यः स्वभावः स्वार्थः अभिप्रायो वक्तुराशयश्च तयोरावेदकं प्रकाशकम्।

(व) महेति। महानद्या गङ्गादेः प्रवाहमिव, सर्वेषां दुरितानां दुरितजनकदुराचाराणां अपहरं तत्रत्यपण्डितानां सदुपदेशात् विनाशकम्। अन्यत्र तु सर्वदुरितानां सर्वविधपापानां अपहरं स्नानेन विनाशकम्।

(श) धनमिति। धनमिव कस्यचिन्नाकाङ्क्षणीयमिति न अपि तु सर्वस्यैव आकाङ्क्षणीयमित्यर्थः।

(ष) सन्ध्येति। सन्ध्यासमयमिव, दृश्यमानश्चन्द्रापीड़स्य तदाख्यस्य राजपुत्रस्य उदय उपस्थितिर्यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु दृश्यमानः, चन्द्र एव आपीड़ः सन्ध्याया एव शिरोभूषणं तस्य उदयो यस्मिन् तत्।

(स) नारायणेति। नारायणवक्षःस्थलमिव, श्रीयुक्तानि रत्नानि श्रेष्ठरत्नानि कान्तिविशिष्टमणयस्तेषां प्रभाभिर्भासिता दीपिता दिशां अन्ताः शेषसीमा यस्य तत्। अन्यत्र तु श्रिया लक्ष्म्याः रत्नस्य कौस्तुभमणेश्च प्रभाभिर्भासिता दिगन्ता यस्य तत्।

(র) বীণা প্রভৃতি যন্ত্র হইতে শ্রোতৃগণ যেমন নানাবিধ শব্দ-মাধুর্য্যের রসের আস্বাদ পাইয়া থাকে, সেই রাজবাটীতে কাব্যাভিজ্ঞ ব্যক্তিগণও তেমন নানাবিধ কাব্যরসের আস্বাদ পাইত। (ল) প্রসাদগুণান্বিত কাব্য, যেমন অন্যের বোধগম্য অর্থ ও কবির অভিপ্রায় শ্রবণমাত্রেই ব্যক্ত করে, সেই রাজবাটীও তেমন অন্যের কেবল চিন্তার বিষয়ীভূত স্বকীয় চমৎকারিতা ও অধিবাসিগণের সদভিপ্রায় ব্যক্ত করিত। (ব) গঙ্গাপ্রভৃতি মহানদীর প্রবাহ যেমন সকল পাপ দূর করে, সেই রাজবাটীও তেমন জ্ঞানিগণের উপদেশদ্বারা সকলের দুর্ব্যবহার দূর করিত। (শ) ধনের ন্যায় সেই রাজবাটীও সকলের বাঞ্ছনীয় ছিল। (ষ) সন্ধ্যাকালে যেমন সন্ধ্যার শিরোভূষণ চন্দ্রের উদয় দেখা যায়, সেই রাজবাটীতেও তেমন তখন চন্দ্রাপীড়ের উদয় দেখা যাইতেছিল। (স) নারায়ণের বক্ষঃস্থল যেমন লক্ষ্মী ও কৌস্তুভ-

(১) অনল্প—। (২) বেদকং। (৩) দুরিতাপহরং। (৪) কাঙ্ক্ষণীয়ম্।

मति, (१) (ह) ब्रह्माणमिव (२) पद्मासनोपदेशदर्शित-भूमण्डलम्, (क्ष) स्कन्दमिव शिखिक्रीड़ारम्भचञ्चलम्, (क) कुलाङ्गना-प्रचारमिव सर्वदोपजात-शङ्कम्, (ख) वेश्याजनमिवोपचारचतुरम्, (ग) दुर्जनमिवापगतपरलोक-

(ह) मतीति। बलभद्रं बलराममिव, कादम्बर्याः सुरायाः रसविशेषवर्णने आकुला व्यस्ता मतिर्जनानां बुद्धिर्यस्मिन् तत्, यस्य तच्च। बलभद्रमित्यनेनान्वये तु मतिमिति लिङ्गव्यत्ययः कार्य्यः।

(क्ष) ब्रह्माणमिति। ब्रह्माणं ब्रह्मचारिणमिव, पद्मायाः राजलक्ष्म्याः आसनाय चिराय स्थितये य उपदेशो गुरुभिस्तारापीड़ाय नीतिशिक्षादानं तेन दर्शितं भूमण्डलं भूमण्डलव्यवहारो यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु पद्मासनस्य "ऊरुमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदं। वामोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम्।" इत्युक्तलक्षणस्य आसनविशेषस्य उपदेशः, दर्शितं तत्त्वावबोधाय ज्ञापितं भूमण्डलञ्च यस्मै तम्।

(क) स्कन्दमिति। स्कन्दं कार्त्तिकेयमिव, शिखिनां पालितमयूराणां क्रीड़ारम्भेण उद्धतनृत्यखेलारम्भेण चञ्चलं चपलप्रायम्। अन्यत्र तु शिखिनो वाहनीभूतमयूरस्य क्रीड़ारम्भेण नृत्यखेलारम्भेण चञ्चलं तदुपरि स्थिततया स्पन्दितदेहम्।

(ख) कुलेति। कुलाङ्गनायाः प्रचारं वहिःपथादौ गमनमिव, सर्वदा उपजाता साधारणानां तस्याः कुलाङ्गनायाश्च उत्पन्ना शङ्का भयं यस्मिन् तत्, तच्च।

(ग) वेश्येति। वेश्याजनमिव, उपचारे उपस्थितजनानामादराभ्यर्थनायां चतुरं निपुणम्, तत्स्थजनानां नैपुण्यात्तस्यापि नैपुण्यमुपचर्य्यते। एवमन्यत्रापि। अत्र श्लेषोपमायामुपमानान्तरप्रयोगे ईदृशवैचित्र्यविशेषस्यासम्भवतया सत्यप्युपमानस्य जुगुप्सितत्वे "चण्डाल इव राजासौ संग्रामेऽधिकसाहस" इति दर्पणोदाहृतवन्नानुचितार्थत्वदोष इति नव्याः। परवर्त्तिवाक्यद्वयेऽप्येवम्।

মণির প্রভাদ্বারা দিগন্ত আলোকিত করে, সেই রাজবাটীও তেমন দীপ্তিসম্পন্ন রত্নসমূহের প্রভাদ্বারা দিগন্ত আলোকিত করিয়াছিল। (হ) বলরামের মতি যেমন মদ্যের রসমাধুর্য্য-বর্ণনায় ব্যস্ত থাকিত, সেই রাজবাটীর অনেক লোকের মতিও তেমন মদ্যের রসমাধুর্য্য-বর্ণনায় ব্যস্ত থাকিত। (ক্ষ) ব্রহ্মচারীকে যেমন তাহার গুরু তত্ত্বজ্ঞানের নিমিত্ত পদ্মাসনের উপদেশ ও ভূমণ্ডলের সকল পদার্থ বুঝাইয়া দেন, সেই রাজবাটীতেও তেমন রাজগুরুগণ রাজলক্ষ্মীকে চিরস্থায়িনী করিবার নিমিত্ত, রাজাকে নীতিশাস্ত্রের উপদেশ ও পৃথিবীর আচার ব্যবহার বুঝাইয়া দিতেন। (ক) কার্ত্তিক যেমন নিজবাহন ময়ূরের নৃত্যারম্ভে চঞ্চল হ'ন, সেই রাজবাটীও তেমন পালিত ময়ূরগণের নৃত্যারম্ভে চঞ্চলপ্রায় হইত। (খ) কুলরমণীর যেমন প্রকাশ্যপথে চলিবার সময়ে সর্ব্বদা আশঙ্কা জন্মে, সেই রাজবাটীতেও তেমন সাধারণ লোকের সর্ব্বদা আশঙ্কা জন্মিত। (গ) বেশ্যার ন্যায় সেই রাজবাটীও আগন্তুক লোকের আদর অভ্যর্থনায় নিপুণ ছিল। (ঘ) দুর্জনের যেমন

(१) मति' (२) ब्राह्मणमिव।

भयम्, (घ) अन्त्य-(१) जनमिव अगम्यविषयाभिलाषम्, (ङ) अगम्य-विषयासक्तमपि प्रशंसनीयम्, (च) अन्तक-भटगणमिव कृताकृत-सुकृत-विचार-निपुणम्, (छ) सुकृतमिवादिमध्यावसानकल्याणकरम्, (ज) वासरारम्भमिव परिस्फुरत्-(२) पद्मरागारुणी-क्रियमाण-निशान्तम्, (झ) दिव्यमुनिगणमिव

(घ) दुर्जनमिति। दुर्जनमिव, अपगतं सुरक्षितत्वाद्दूरीभूतं परलोकात् शत्रुजनात् भयं यस्य तत्। अन्यत्र तु अपगतं मोक्षावृतत्वाद्दूरीभूतं परलोकादैहिकपापजन्य परजन्मीयदुःखाद्भयं यस्य तम्।

(ङ) अन्त्येति। अन्त्यजनं चण्डालादिनीचजनमिव, अगम्या अन्यैरशक्याः विषयाः परराज्यानां अभिलाषा राज्ञ आकाङ्क्षा यस्मिन् तत्, एतेन तस्य मन्त्रगुप्तिरभिहिता। अन्यत्र तु अगम्ये सज्जिर्गन्तुमशक्ये विषये देशे महारण्यपर्वतादौ अभिलाषो निवासेच्छा यस्य तम्।

(च) अगम्येति। अगम्ये अभोग्ये विषये वेश्यामद्यादौ आसक्तमपि प्रशंसनीयमिति विरोधः, अगम्ये अन्यैर्गन्तुमप्यशक्ये विषये परराज्ये आसक्तं जयाय कृताभिनिवेशमिति तत्समाधानम्। अतएवात्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(छ) अन्तकेति। अन्तकभटगणमिव यमदूतगणमिव, कृताकृतयोः प्रजावर्गेण विहिताविहितयोः कार्य्ययोः सुकृतेन विचारे धर्म्मानुसारेण मीमांसायां निपुणं गुप्तचरेभ्यः सर्वावगमात् नैसर्गिकप्रतिभाबलाच्च दक्षम्। अन्यत्र तु कृतयोर्जीवजनेन विहितयोः अकृतसुकृतयोः पापपुण्ययोः विचारे निपुणम्।

(ज) सुकृतमिति। सुकृतं पुण्यमिव, आदिमध्यावसानेषु वहिर्देश-मध्यदेश-शेष-देशेषु कल्याणकरं अधिवासिनां सुखसञ्चरणीयत्वात् शुभकरं। अन्यत्र तु आदिमध्यावसानेषु अवस्थासु कल्याणकरम्।

(झ) वासरेति। वासरारम्भं प्रभातकालमिव, परिस्फुरद्भिर्दीप्यमानैः पद्मरागैस्तदाख्यमणिभिः अरुणी-क्रियमाणानि निशान्तानि गृहाणि यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु परिस्फुरतां प्रस्फुटतां पद्मानां रागै रक्तिमभिः अरुणी-क्रियमाणः निशान्तो रात्रिशेषो येन तम्।

পরজন্মের ভয় থাকে না, সেই রাজবাটীরও তেমন শত্রু হইতে ভয় ছিল না। (ঙ) চণ্ডালাদি নীচ লোকের যেমন সাধুজনের অগম্য স্থানে বাস করিবার অভিলাষ হয়, সেই রাজবাটীতেও তেমন দুর্গম পররাজ্য অধিকার করিবার অভিলাষ হইত। (চ) সেই রাজবাটী, ভোগের অযোগ্য বেশ্যা ও মদ্যে আসক্ত হইলেও প্রশংসনীয় ছিল (অন্যের দুর্গম পররাজ্য জয় করিবার যত্ন করিত এবং প্রশংসনীয় ছিল)। (ছ) যমদূতগণ যেমন জীবের পাপপুণ্য-বিচারে নিপুণ, সেই রাজবাটীও তেমন প্রজাবর্গ যে কার্য্য করিয়াছে বা না করিয়াছে, তাহার বিচার করিতে নিপুণ ছিল। (জ) ধর্ম্ম যেমন প্রথম, মধ্যম ও শেষ সকল অবস্থাতেই লোকের মঙ্গলকর, সেই রাজবাটীও তেমন বাহির, মধ্য ও অন্দর—সকল স্থানেই অধিবাসিগণের মঙ্গলকর ছিল। (ঝ) প্রভাতকাল যেমন প্রকাশমান

---

(১) अन्त्यज...। (२) क्वचित् परिस्फुरदिति नास्ति।

कलापि-(१) सनाथ-श्वेतकेतु-शोभितम्,(२) (ञ) भारतसमरमिव कृतवर्म्मबाण-(३) चक्र-सम्भार-भीषणम्. (ट) पातालमिव महाकञ्चुकिसहस्राध्यासितम्, (४) (ठ) वर्ष-पर्वतसमूहमिवान्तःस्थितापरिमित-शृङ्गि-हेमकूटम्, (५) (ड) महाद्वारमपि

(ञ) दिव्येति। दिव्यमुनिगणं महर्षिसमूहमिव, कलापिसनाथैर्मयूरपुत्तलिकासहितैः श्वेतकेतुभिः सितध्वजैः शोभितम्। अन्यत्र तु कलापी वैशम्पायनशिष्यो मुनिविशेषः तत्सनाथः श्वेतकेतुनामा मुनिना शोभितम्।

(ट) भारतेति। भारतसमरं कुरुपाण्डवयुद्धमिव, कृतो यः वर्म्मणां बाणानां चक्राणाञ्च सम्भारः संग्रहः तेन भीषणम्। अन्यत्र तु कृतवर्म्मणस्तदाख्यस्य यदुवंशीयमहावीरस्य बाणचक्रस्य शरसमूहस्य सम्भारेण प्रयोगेण भीषणम्।

(ठ) पातालमिति। पातालमिव, महतां कञ्चुकिनां अन्तःपुरचराणां वृद्धब्राह्मणानां निर्मोकवतां सर्पाणाञ्च सहस्रेण अध्यासितमाश्रितम्।

(ड) वर्षेति। जम्बूद्वीपगतानां भारतादीनां नवसंख्यकानां सीमाभूताः पर्वता वर्षपर्वताः। तथा च हारावली—"हिमवान् हेमकूटश्च निषधो मेरुरेव च। चैत्रः कर्णी च शृङ्गी च सप्तैते वर्षपर्वताः।" तेषां समूहमिव, अन्तर्मध्ये स्थितः अपरिमितानां शृङ्गिणां गवादिशृङ्गवत्पशूनां हेम्नां स्वर्णानाञ्च कूटः समूहो यस्य तत्। अन्यत्र तु अन्तःस्थितौ अपरिमितौ अतिमहान्तौ शृङ्गिहेमकूटौ तदाख्यौ पर्वतौ यस्य तत्।

(ढ) महेति। महान्ति द्वाराणि यस्य तत् तथाभूतमपि दुष्प्रवेशमिति विरोधः, अन्यजनानामपराधाशङ्कया प्रवेष्टुमशक्यमिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधालङ्कारः।

পদ্মের রক্তিমায় রাত্রির শেষভাগ রক্তবর্ণ করে, সেই রাজবাটীও তেমন দীপ্যমান পদ্মরাগমণি-সমূহদ্বারা গৃহসমূহকে রক্তবর্ণ করিতেছিল। (ঞ) মহর্ষিগণ যেমন কলাপিনামক মুনির সহিত শ্বেতকেতুনামক মুনিদ্বারা শোভিত হইয়াছিলেন, সেই রাজবাটীও তেমন কৃত্রিম ময়ূরসংযুক্ত শ্বেতবর্ণ ধ্বজসমূহে শোভিত ছিল। (ট) কুরু-পাণ্ডবের যুদ্ধ যেমন কৃত-বর্ম্মার বাণ ও চক্র-নিক্ষেপে ভয়ঙ্কর হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বর্ম্ম, বাণ ও চক্র সংগ্রহ করায় ভয়ঙ্কর ছিল। (ঠ) পাতাল যেমন মহাসর্প-সমূহ কর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত, সেই রাজবাটীও তেমন অন্তঃপুরচারি-মহাবৃদ্ধ-ব্রাহ্মণগণকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত ছিল। (ড) হিমালয়-প্রভৃতি বর্ষ-পর্ব্বতগণের মধ্যে যেমন অতি বৃহৎ শৃঙ্গী ও হেমকূট নামে পর্ব্বতদ্বয় আছে, সেই রাজবাটীর মধ্যেও তেমন শৃঙ্গবিশিষ্ট অসংখ্য গবাদি পশু এবং সুবর্ণসমূহ ছিল। (চ) এবং সেই রাজবাটী, বৃহৎ বৃহৎ দ্বার-সমন্বিত হইলেও প্রবেশ করা দুষ্কর ছিল (অন্যের

(१) चित्रकलापि...। (२)...उपशोभितं...।

(३)...शिलीमुख...। (४) महाकञ्चुक्याध्यासितं। (५)...अपरिमाण...शृङ्ग, शृङ्गी...।

दुष्प्रवेशम्, (ढ) अवन्तिविषयगतमपि मागधजनाधिष्ठितम्, (ण) स्फीतमपि भ्रमन्नग्नलोकं राजकुलं विवेश। (त)

ससम्भ्रमोपगतैश्च कृतप्रणामैः * प्रतीहारमण्डलैरुपदिश्यमानमार्गः, (थ) सर्वतः प्रचलितेन च पूर्वंकृतावस्थानेन दूर-पर्य्यस्त-मौलि-शिथिलित-(१) चूड़ामणि-मरीचि-चुम्बित-वसुधातलेन राजलोकेन प्रत्येकशः प्रतीहार-निवेद्यमानेन (२) सादरं प्रणम्यमानः, (द) पदे पदे चाभ्यन्तरविनिर्गताभिराचारकुशलाभि-

(ण) अवन्तीति। अवन्तिविषयगतमपि अवन्तिदेशस्थितमपि मागधजनैर्मगधदेशीयलोकैरधिष्ठितमिति विरोधः, मागधजनैः स्तुतिपाठकलोकैरधिष्ठितमिति तत्समाधानम्। विरोधालङ्कारः। "मागधो मगधोद्भवे शुक्लजीरकवन्दिनोः।" इत्यादि हेमः।

(त) स्फीतमिति। स्फीतं धनसमृद्ध्या पीनं पूर्णमपि, भ्रमन्तो विचरन्तः नग्नलोका दारिद्र्येण वस्त्राभावाद्विवस्त्रजना यस्मिन्निति विरोधः, भ्रमन्तो नग्नलोका बौद्धसन्न्यासिनो यत्र तदिति तत्परिहारः। विरोधालङ्कारः। "नग्नो वन्दिक्षपणयोः पुंसि त्रिषु विवाससि।" इति मेदिनी। राजकुलं राजगृहं राजवाटीमिति यावत्। "कुलं जनपदे गृहे।" इत्यादि विश्वः। "वाटी वास्तौ गृहोद्याने" इति हेमः।

अहो धैर्य्यं तदानीन्तनश्रोतृणां, येन खल्वीदृशमसङ्गदेकवस्तुवर्णनापरिपीनमपि नातिचमत्कारिणं सन्दर्भमवाधमसहन्त।

(थ) ससम्भ्रमेति। किञ्चेति चार्थः। ससम्भ्रमोपगतैः सत्वरं समीपमागतैः, प्रतीहारमण्डलैर्द्वारपालगणैः कृतप्रणामैः सद्भिः उपदिश्यमानमार्गश्चन्द्रापीडः पितरमपश्यदिति वक्ष्यमाणेनान्वयः। "प्रतीहारो द्वारि द्वाःस्थे" इत्यमरः।

(द) सर्वत इति। सर्वतः समन्तात् प्रचलितेन उपागतेन, पूर्वं कृतं कुमारागमनप्रतीक्षया विहितं अवस्थानं येन तेन, दूरादेव पर्य्यस्तैरवनमितैः मौलिभिर्मस्तकैः शिथिलिताः शिथिलीकृता ये चूड़ामणयस्तेषां मरीचिभिः किरणैः चुम्बितं संस्पृष्टं वसुधातलं भूतलं यस्य तेन, तथा प्रत्येकशः प्रतीहारनिवेद्यमानेन द्वारपालैर्दत्तपरिचयेन राजलोकेन नानादेशीयसामन्तराजगणेन सादरं प्रणम्यमानः।

প্রবেশ করা দুষ্কর ছিল)। (ণ) সেই রাজবাটী অবন্তিদেশে থাকিলেও তাহাতে মগধ-দেশীয় লোক বাস করিত (অনেক স্তুতিপাঠক লোক বাস করিত)। (ত) আর সেই রাজবাটী ধনসমৃদ্ধিতে পরিপূর্ণ হইলেও অর্থাভাবে লোক সকল বিবস্ত্র হইয়া ভ্রমণ করিত (বৌদ্ধসন্ন্যাসিগণ ভ্রমণ করিত)।

(থ) চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিলে দ্বারপালগণ তাড়াতাড়ি আসিয়া প্রণাম করিয়া ভিতরে প্রবেশ করিবার পথ বলিয়া দিতে লাগিল; (দ) নানাদেশীয় সামন্ত-রাজগণ চন্দ্রাপীড়ের আগমন প্রতীক্ষায় পূর্ব্ব হইতেই সেই স্থানে অবস্থান করিতেছিলেন, সুতরাং

* कृतप्रणामः। (१)...श्लथित...। (२)...निवेद्यमाननाम्ना।

রন্তঃপুরবৃদ্ধাভিঃ ক্রিয়মাণাবতরণমঙ্গলঃ, (ধ) ভুবনান্তরাণীব বিবিধ-প্রাণিসহস্রসঙ্কুলানি সপ্তকক্ষান্তরাণ্যতিক্রম্য, (ন) অভ্যন্তরাবস্থিতং, অন-বরত-শস্ত্র-গ্রহণ-(১) শ্যামিকালীঢ়করতলৈঃ কর-চরণ-লোচন-(২) বর্জ্জমসিত-লোহজালকাবৃতশরীরৈঃ, আলানস্তম্ভৈরিব গজ-মদ-পরিমল-লোভ-নিরন্তর-নিলীন-মধুকর-পটল-জটিলৈঃ কুলক্রমাগতৈরুদাত্তান্বয়ৈরনুরক্তৈর্মহাপ্রাণতয়া (৩) অতিকর্কশতয়া চ দানবৈরিব অতিশয়াকারৈঃ (৪) সম্ভাব্যমানপরাক্রমৈঃ সর্ব্বতঃ শরীররক্ষাধিকারনিযুক্তৈঃ পুরুষৈঃ পরিবৃতম্, (প) উভয়তো বারবিলাসিনীভি-

(ধ) পদ ইতি। অপি চেতি চার্থঃ। অভ্যন্তরাৎ বিনির্গতাভিঃ, আচারকুশলাভিঃ দেশকুলাচার-বেদিনীভিঃ, অন্তঃপুরস্য বৃদ্ধাভিঃ স্ত্রীভিঃ, পদে পদে প্রতিপদক্ষেপং ক্রিয়মাণানি অবতরণমঙ্গলানি নবাগতস্য যানাদবতরণকালীনমঙ্গলাচরণানি ধান্যদূর্ব্বানিক্ষেপাদীনি যস্য সঃ।

(ন) ভুবনেতি। ভুবনান্তরাণীব অতিবৃহত্ত্বাদিতি ভাবঃ, বিবিধানাং প্রাণিনাং ব্যাঘ্রাদীনাং জন্তূনাং সহস্রেণ সমূহেন সঙ্কুলানি ব্যাপ্তানি, কক্ষান্তরাণি অন্যান্ প্রকোষ্ঠান্। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ।

(প) অভ্যন্তরেতি। অভ্যন্তরাবস্থিতমিতি পিতরমিতি বক্ষ্যমাণস্য বিশেষণম্। অনবরতশস্ত্রগ্রহণেন যাঃ শ্যামিকাঃ কৃষ্ণচিহ্নানি কিণা ইত্যর্থঃ, তৈরালীঢ়ানি আক্রান্তানি করতলানি যেষাং তৈঃ। ইতঃপ্রভৃতীন্যষ্টপদানি শরীররক্ষাধিকারনিযুক্তৈঃ পুরুষৈরিত্যস্য বিশেষণানি। করচরণলোচনানি বর্জ্জয়িত্বেতি শেষঃ, যদ্বা তানি বর্জ্জয়িত্বার্থ-মিতি ভাবঃ, অসিতলোহজালকৈঃ কৃষ্ণবর্ণলৌহবর্ম্মভিঃ আবৃতানি শরীরাণি যেষাং তৈঃ, অতএব গজমদস্য পরিমল-লোভেন সৌরভতৃষ্ণয়া নিরন্তরনিলীনং নিরবকাশোপবিষ্টং যন্মধুকরপটলং ভ্রমরসমূহস্তেন জটিলৈর্ব্যাকীর্ণৈঃ আলানস্তম্ভৈর্গজবন্ধনস্তম্ভৈরিব স্থিতৈঃ। অত্রোপমালঙ্কারঃ। উদাত্তা উচ্চা অন্বয়া বংশা যেষাং তৈঃ। মহা-প্রাণতয়া অতীববলশালিতয়া, অতিকর্কশতয়া নিতান্তকঠিনদেহতয়া চ হেতুনা, দানবৈরিব দৃশ্যমানৈঃ।

[তখন তাঁহারা সকল দিক্ হইতে আসিয়া আদরের সহিত চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিতে লাগিলেন, তখন দূর হইতেই মস্তক অবনত করায় তাঁহাদের শিথিলীভূত মুকুট-মণির কিরণসমূহে ভূতল স্পর্শ করিতে লাগিল, এবং কোন দ্বারপাল তাঁহাদের প্রত্যেকের নাম ও ধাম বলিয়া চন্দ্রা-পীড়ের নিকটে পরিচয় করাইয়া দিতে লাগিল ; (ধ) এবং অভ্যন্তর হইতে নির্গত, দেশাচার ও কুলাচারে অভিজ্ঞ অন্তঃপুরের বৃদ্ধ স্ত্রীলোকগণ চন্দ্রাপীড়ের প্রত্যেক পদক্ষেপে যানাবতরণ-মঙ্গলের অনুষ্ঠান করিতে লাগিল। (ন) এই ভাবে চন্দ্রাপীড় অপর সপ্ত জগতের ন্যায় নানাবিধ প্রাণিসমূহে পরিপূর্ণ সপ্তকক্ষা (সাতটা মহল) অতিক্রম করিয়া যাইয়া, অভ্যন্তরে অবস্থিত, হংসের ন্যায় ধবলবর্ণ শয্যার উপরে উপবিষ্ট পিতাকে দর্শন করিলেন ; (প) শরীর-রক্ষাকার্য্যে নিযুক্ত কতকগুলি পুরুষ তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল, সর্ব্বদা অস্ত্র ধারণ

(১)...শস্ত্রগ্রহ...। (২)...বিলোচন। (৩) মহাপ্রমাণতয়া। (৪) অতিশয়াকারং, আশয়াকারং, আশয়াকারসম্ভাব্যমান..., অতিশয়াকারসম্ভাব্যমান...।

आनवरतमुद्धूयमानधवलचामरम्, अमलपुलिनतलशोभिनि सुरकुञ्जरमिव मन्दाकिनीवारिणि हंसधवल-(१) शयनतले निषण्णं पितरमपश्यत्। (फ)

"आलोकये"ति च प्रतीहारवचनानन्तरं, अतिदूरावनतेन चलित-चूड़ामणिना शिरसा कृतप्रणामं, "एह्येहि" इत्यभिदधानः (२) दूरादेव प्रसारितभुजयुगलः, शयनतलादीषदुच्छ्वसित-(३) मूर्त्तिः, आनन्दजल-पूर्य्यमाण-(४) लोचनः समुद्गत-पुलकतया (५) सीव्यन्निव, एकीकुर्वन्निव, पिबन्निव तं पिता विनयावनतमालिलिङ्ग। (ब) आलिङ्गितोम्मुक्तश्च पितुश्चरणपीठसमीपे पिण्डीकृतमुत्तरीय-

अवाप्युपमालङ्कारः। अतिशयाकारैरतिबृहदाकृतिभिः, अतएव सम्भाव्यमानपराक्रमैः। सर्वतः समन्तात् परिवृतमित्यन्वयः।

(फ) उभेति। उभयतः पार्श्वयोः। उद्धूयमानानि आन्दोल्यमानानि धवलानि चामराणि यस्य तम्, अतएव अमलाभ्यां विशदाभ्यां पुलिनतलाभ्यां उभयपार्श्ववर्त्तिसिकतामयदेशाभ्यां शोभत इति तस्मिन्, मन्दाकिनीवारिणि स्वर्गगङ्गाजले सुरकुञ्जरमैरावतहस्तिनमिव, हंसवद्धवलं यत् शयनतलं शय्योपरिभागस्तस्मिन् निषण्णमुपविष्टम्। अत्र उभयतः सिकतामयदेशाभ्यां सह आन्दोल्यमानचामराणां, मन्दाकिनीवारिणा सह धवलशय्यायाः सुरकुञ्जरेण च सह राज्ञः सादृश्यमिति लुप्तोपमोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ब) आलोकयेति। आलोकय कुमार! पितरं पश्य, इति प्रतीहारवचनानन्तरं सहागतद्वारपालोक्तेः परं, अतिदूरं अत्यन्तं अवनतेन, अतएव चलितः स्पन्दितश्चूड़ामणिर्यस्य तेन तादृशेन शिरसा, कृतः प्रणामो येन तं कुमारम्। शयनतलात् शय्यातः, ईषदुच्छ्वसितमूर्त्तिः किञ्चिदुत्तोलितदेहः, आनन्दजलैरानन्दाश्रुभिः

করায় তাহাদের করতল, কিণে (কড়ে, মাঁড়ুয়াতে) পরিপূর্ণ ছিল, এবং হস্ত, পদ ও নয়ন ভিন্ন অপর সকল অঙ্গ, কৃষ্ণবর্ণ লৌহবর্ম্মে আবৃত ছিল ; সুতরাং হস্তীর মদজলসৌরভের লোভে ঘনভাবে উপবিষ্ট ভ্রমরসমূহে পরিব্যাপ্ত হস্তি-বন্ধনস্তম্ভের ন্যায় তাহারা বিরাজ করিতেছিল আর তাহারা বংশানুক্রমে সেই শরীর-রক্ষা কার্য্য করিয়া আসিতেছিল এবং উচ্চবংশ-সম্ভূত ও রাজার প্রতি বিশেষ অনুরক্ত ছিল, এবং মহাবলবান্ ও অত্যন্ত-কঠিন দেহ বলিয়া তাহাদিগকে দানবগণের ন্যায় দেখা যাইতেছিল ; আর আকৃতি অতিবৃহৎ বলিয়া তাহাদের যে বেশ পরাক্রম আছে, তাহা বুঝা যাইতেছিল। (ফ) এবং বারবনিতাগণ রাজার উভয় পার্শ্বে অবিশ্রান্ত শ্বেত চামর আন্দোলন করিতেছিল ; তাহাতে নির্ম্মল পুলিনে (বালুকাময় চড়াতে) পরিশোভিত মন্দাকিনীর জলে ঐরাবত হস্তীর ন্যায় রাজাকে দেখা যাইতেছিল।

(ব) "কুমার! আপনার পিতাকে দর্শন করুন" এইরূপ দ্বারপালের বাক্যের পর কুমার চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত অবনত মস্তকে পিতাকে প্রণাম করিলেন, তখন তাঁহার চূড়ার মণিটি

(१) हंसधवले। (२) आदरेणाभिदधानः। (३) उच्छ्वसित...। (४)... आपूर्य्यमाण...। (५)...पुलककञ्चुकतया।

मात्मीयं (१) ताम्बूलकरङ्क-(२) वाहिन्या सत्वरमासनीकृत"मपनये"ति शनैर्वद-न्नग्रचरणेन समुत्सार्य्य चन्द्रापीडः (३) क्षितितल एव निषसाद। (भ) अनन्तरं निहिते (४) चान्यासने राज्ञा सुतनिर्विशेषमुपगूढो वैशम्पायनो न्यषीदत्। (म) मुहूर्त्तमिव विस्मृतचामरोत्क्षेपनिश्चलानां वारविलासिनीनां साभिलाषैरनिल-चलित-कुवलय-दल-(५) दाम-दीर्घैराजिह्म-तरलतर-(६) तार-कारै-रवलुप्यमान इव दृष्टिपातैः स्थित्वा "गच्छ, वत्स! पुत्रवत्सलां मातरमभि-

---

पूर्य्यमाणलोचनः पिता तारापीडः, विनयावनतं तं चन्द्रापीडं, समुद्गतपुलकतया स्वाङ्गेषूत्पन्नरोमाञ्चतया सीव्यन्निव स्वदेहेन सह स्यूतं कुर्वन्निव, एकीकुर्वन्निव गाढालिङ्गनादित्याशयः, पिबन्निव सस्नेहदृष्टिपातादिति भावः, आलिलिङ्ग। अत्र तिसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(भ) आलिङ्गितेति। आदावालिङ्गितः अनन्तरमुन्मुक्तश्च चन्द्रापीडः, ताम्बूलकरङ्कवाहिन्या पितुरित्यर्थः, सत्वरं आत्मीयं स्वकीयं, पिण्डीकृतं सङ्कोचनेन स्तूपीकृत्य चन्द्रापीडस्यासनीकृतमित्यर्थः उत्तरीयं वसनं, अपनय एतदपसारय गुरोरन्तिके आसनोपवेशनस्यानौचित्यादिति भावः। अग्रचरणेन पादाग्रेण तदुत्तरीयं समुत्सार्य्य पितुश्चरणपीठसमीपे क्षितितल एव निषसाद उपविवेश। एतेन विनयातिशयो द्योत्यते।

(म) अन्येति। वैशम्पायनश्च राज्ञा सुतनिर्विशेषं पुत्रतुल्यं उपगूढ आलिङ्गितः सन् अस्य चन्द्रापीडस्य अनन्तरं पश्चात् निहिते आसने न्यसीदत् उपाविशत्। वैशम्पायनस्य मन्त्रिपुत्रत्वेऽपि ब्राह्मणत्वादासने समुपवेशनं नानुचितमिति बोध्यम्।

স্পন্দিত হইল; এবং "এস এস" এই কথা বলিতে বলিতে পিতা তারাপীড়, দূর হইতেই বাহুযুগল প্রসারিত করিয়া, শয্যা হইতে শরীর অল্প উত্তোলন পূর্ব্বক, বিনয়াবনত পুত্র চন্দ্রাপীড়কে আলিঙ্গন করিলেন। তখন মহারাজের নয়নযুগল আনন্দাশ্রুজলে পরিপূর্ণ হইতেছিল এবং সকল শরীরে রোমাঞ্চ উৎপন্ন হওয়ায় তিনি যেন নিজদেহের সহিত চন্দ্রাপীড়কে সেলাই করিতেছিলেন, গাঢ় আলিঙ্গনে যেন এক করিয়া ফেলিতেছিলেন এবং স্নিগ্ধ দৃষ্টিতে যেন পান করিতেছিলেন। (ভ) মহারাজ, চন্দ্রাপীড়কে আলিঙ্গন করিয়া ছাড়িয়া দিলে, মহারাজের তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী তাড়াতাড়ি নিজের উত্তরীয় বস্ত্র স্তূপীকৃত করিয়া চন্দ্রাপীড়ের বসিবার জন্য আসন করিয়া দিল; তখন চন্দ্রাপীড় ধীরে ধীরে বলিলেন, "উহা সরাইয়া ফেল" এই কথা বলিতে বলিতে নিজেই চরণাগ্রে তাহা সরাইয়া ফেলিয়া পিতার পাদপীঠের নিকটে ভূতলেই উপবেশন করিলেন। (ম) মহারাজ পুত্রনির্ব্বিশেষে বৈশম্পায়নকেও আলিঙ্গন করিলেন, তখন বৈশম্পায়ন চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাতে সংস্থাপিত আসনে উপবেশন করিলেন।

---

(१) आत्मनाम्बूल...। (२) करङ्क...। (३) क्वचित् चन्द्रापीड इति नास्ति।
(४) अनन्तरनिहिते, अनन्तरविनिहिते। (५)...कुवलयदाम...। (६)...तरलतार...।

वाञ्छ दर्शनलालसा: (१) यथाक्रमं सर्वा जननीर्दर्शनेनानन्दय" इति विसर्जितः पित्रा, सविनयमुत्थाय निवारितपरिजनो वैशम्पायनद्वितीयोऽन्तःपुरप्रवेशयोग्येन राजपरिजनेन (२) उपदिश्यमानवर्त्मा अन्तःपुरमाययौ। (य)

तत्र धवलकञ्चुकावच्छन्नशरीरैरनेक-(३) शतसंख्यैः श्रियमिव क्षीरोदकल्लोलैः (४) समन्तात् परिवृतां शुद्धान्तवंशिकैः, (५) (र) अतिप्रशान्ता-कारामिव कषायरक्ताम्बरधारिणीभिः सन्ध्याभिरिव सकललोकवन्द्याभिः प्रलम्ब-

(य) मुहूर्त्तमिति। विस्मृता: चन्द्रापीडस्य निरतिशयसौन्दर्यदर्शनजनितविस्मयवशाद्विस्मृतिं प्राप्ता ये चामरोत्क्षेपा आन्दोलनानि तैर्निश्चलानां वारविलासिनीनां, साभिलाषैः, अनिलचलितानां वायुस्पन्दितानां कुवलयदलानां नीलोत्पलपत्राणां दामवत् मालावत् दीर्घः, अत्र लुप्तोपमालङ्कारः, आजिह्मा अतीववक्राः तरलतरा अतीवचञ्चलाश्च यास्ताराः कनीनिकास्ताभिः शारा विचित्रास्तैः, दृष्टिपातैः अवलुप्यमानः पीयमान इव चन्द्रापीडः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। मुहूर्त्तमिव कियन्तं कालं स्थित्वा। यथाक्रमं ज्येष्ठानुक्रमेणेत्यर्थः। अत्र जननीपदं पितृभार्य्यामात्रे लाक्षणिकम्।

(र) तत्रेति। तत्रान्तःपुरे चन्द्रापीडः, धवलैः कञ्चुकैर्वारवाणैः अवच्छन्नशरीरा आवृतदेहास्तैः, अनेकानि शतानि संख्या येषां तैः, वंशस्य गृहस्यान्तर्नियुक्ता इत्यन्तर्वंशिकाः शुद्धा निर्दोषाश्च ते अन्तर्वंशिकाश्चेति तैः कञ्चुकिभिरित्यर्थः "अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः" इत्यमरः, क्षीरोदस्य सागरस्य कल्लोलैर्महातरङ्गैः श्रियं लक्ष्मीमिव, समन्तात् परिवृतां मातरं प्रणनामेति परेणान्वयः। अत्रोपमालङ्कारः।

(য) এই সময়ে বারবিলাসিনীগণ চামরান্দোলন বিস্মৃত হইয়া নিস্পন্দভাবে দণ্ডায়মান থাকিয়া সতৃষ্ণ দৃষ্টিপাতে চন্দ্রাপীড়কে যেন পান করিতে লাগিল; তখন তাহাদের নয়ন-যুগল, বায়ু-কম্পিত নীলোৎপল-পত্রশ্রেণীর ন্যায় দীর্ঘ এবং বক্র ও অত্যন্ত চঞ্চল তারাতে বিচিত্র হইয়াছিল, এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সে স্থানে কিছুকাল অবস্থান করিলে মহারাজ বলিলেন,—"যাও, বৎস! পুত্রবৎসলা জননীকে অভিবাদন করিয়া, তোমার দর্শনাভিলাষিণী সকল মাতৃগণকে ক্রমে দর্শন দান করিয়া আনন্দিত কর" এই কথা বলিয়া বিদায় করিলে, চন্দ্রাপীড় বিনয়ের সহিত উঠিয়া, পরিজনদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, কেবল বৈশম্পায়নের সহিত অন্তঃপুরে গমন করিলেন; তখন অন্তঃপুরে প্রবেশের যোগ্য রাজ-পরিজনগণ তাঁহাকে পথ বলিয়া দিতে দিতে চলিয়াছিল।

(র) চন্দ্রাপীড় অন্তঃপুরে উপস্থিত হইয়া মাতা বিলাসবতীকে প্রণাম করিলেন। পূর্ব্বে ক্ষীরোদসাগরের মহাতরঙ্গসমূহ যেমন লক্ষ্মীদেবীকে পরিবেষ্টন করিত, সেইরূপ শুভ্র-বর্ণ কঞ্চুকে (সাঁজোয়াতে) আবৃতদেহ এবং নির্দোষস্বভাব বহুসংখ্যক কঞ্চুকী, মহারাণী বিলাসবতীকে সকল দিকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (ল) এবং অত্যন্তসৌম্যমূর্ত্তি

(१)...लालसा। (२) परिजनेन। (३) नेक...(४)...जलकल्लोलैः। (५) शुद्धान्तान्तर्वंशिकैः।

श्रवणपाशाभिर्विदितानेककथालापवृत्तान्ताभिः (१) भूतपूर्वाः (२) कथाः कथयन्तीभिः इतिहासान् वाचयन्तीभिः पुस्तकानि दधतीभिः (३) धर्म्मोपदेशान् निवेदयन्तीभिर्जरत्प्रव्रजिताभिर्विनोद्यमानाम्, (ल) उपरचितस्त्रीवेशभारेण (४) गृहीतविकटप्रसाधनेन वर्षवरजनेन (५) संसेव्यमानाम्, (६) (व) अनवरतविधूयमान-(७) बालव्यजनकलापाम्, (श) अङ्गनाजनेन च वसनाभरणकुसुम-पटवास-ताम्बूल-तालवृन्ताङ्गराग-भृङ्गार-धारिणा मण्डलोपविष्टेनोपास्य-

---

(ल) अतीति। अपि चेति चार्थः। अतिप्रशान्ताकाराभिर्नितान्तसौम्यमूर्त्तिभिः। कषायेण रक्तानि रञ्जितानि अम्बराणि वसनानि धारयन्तीति ताभिः, अन्यत्र तु कषायेण रक्तं रञ्जितमिव अम्बरमाकाशं धारयन्तीति ताभिः, सकलैर्लोकैर्जनैर्वन्द्याभिः पूजनीयाभिः, सन्ध्याभिः सन्ध्याकालैरिव स्थिताभिः, अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। प्रलम्बा दीर्घाः श्रवणपाशाः शोभनकर्णा यासां ताभिः। "पाशः कचान्ते संघार्थः कर्णान्ते शोभनार्थकः। छात्राद्यन्ते च निन्दार्थः पाशः पक्ष्यादिबन्धने।" इति विश्वः। दीर्घकर्णत्वमभिज्ञतासूचकमिति सामुद्रिकम्। विदिता ज्ञाताः अनेके कथा उपाख्यानानि आलापा मिथोभाषणानि वृत्तान्ता लौकिकवार्त्ताश्च याभिस्ताभिः। भूतपूर्वाः कथाः वत्सराजचरितादीनि प्राचीनोपाख्यानानि। इतिहासान् महाभारतादीन्, वाचयन्तीभि र्व्याख्यापयन्तीभिः। पुस्तकानि दधतीभिः अनन्तरवाचनार्थमिति भाव.। निवेदयन्तीभिः श्रावयन्तीभिः। जरत्प्रव्रजिताभिर्वृद्धसन्न्यासिनीभिः, विनोद्यमानां तैस्तैरुपायैः सन्तोष्यमाणाम्।

(व) उपेति। उपरचितः कृतः स्त्रीवेशभारः स्त्रीसदृशवसनधम्मिल्लधारणादिवेशसमूहो येन तेन, तथा गृहीतं अङ्गीकृतं विकटं अत्युज्ज्वलं प्रसाधनं भूषणक्रिया येन तेन, वर्षवरजनेन नपुंसकगणेन संसेव्यमानाम्।

(श) अनेति। अनवरतं विधूयमानः परिचारिकाभिरान्दोल्यमानः बालव्यजनकलापश्चामरसमूहो यस्यास्ताम्।

কষায়-রঞ্জিত-বস্ত্রধারিণী এব সন্ধ্যার ন্যায় সকল লোকের পূজনীয় বহুতর বৃদ্ধ সন্ন্যাসিনী সে স্থানে উপস্থিত ছিলেন; তাঁহাদের সুন্দর কর্ণযুগল আয়ত ছিল এবং তাঁহারা অনেক উপাখ্যান, পরস্পর আলাপ ও লৌকিক বৃত্তান্ত জানিতেন; তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ প্রাচীন উপাখ্যান বলিয়া, কেহ কেহ মহাভারত প্রভৃতি ইতিহাস গ্রন্থের ব্যাখ্যা করিয়া, কেহ কেহ পুস্তক লইয়া, আবার কেহ কেহ ধর্ম্মোপদেশ শুনাইয়া মহারাণীকে সন্তুষ্ট করিতেছিলেন। (ব) নপুংসক-(খোজা) গণ স্ত্রীলোকের বেশ ধারণ করিয়া এবং অত্যুজ্জ্বল অলঙ্কারে অলঙ্কৃত হইয়া মহারাণীর সেবা করিতেছিল। (শ) পরিচারিকারা অনবরত চামর

---

(१)...कथावृत्तान्ताभिः। (२) श्रुतपूर्वाः। (३) वाचयन्तीभिरितिहासपुस्तकानि दधतीभिर्धर्म्मोपदेशान्, निवेदयन्तीभिः पुण्याः कथाः। (४)...भारेण। (५) वर्षधरजनेन। (६) उपवीज्यमाना।

(७)...अभिधूयमान...।

मानाम्, (ग) पयोधरान्तरावलम्बित-(१) मुक्तागुणां, अचल-द्वय-मध्य-प्रवृत्त-गङ्गा-(२) प्रवाहामिव मेदिनीम्, (ह) आसन्न-दर्पण-पतित-मुख-प्रतिबिम्बाम्, अर्क-बिम्ब-प्रविष्ट-शशिमण्डलामिव दिवं (३) समुपसृत्य मातरं प्रणनाम। (४) (च) सा तु तं ससम्भ्रममुत्थाप्य सत्यप्याज्ञासम्पादनदक्षे पार्श्वपरिवर्त्तिनि परिजने

(ग) अङ्गनेति। वसनानि आभरणानि कुसुमानि, पटवासान् रक्तचूर्णविशेषान्, तथा च वराहः "त्वगुशीरपत्रभागैः सूक्ष्मैलार्द्धेन संयुतश्चूर्णः। पटवासः प्रवरोऽयं मृगकर्पूरप्रबोधेन।" ताम्बूलानि, तालवृन्तानि व्यजनानि, अङ्गरागान् कुङ्कुमचन्दनादीन्, भृङ्गारान् जलपात्रविशेषांश्च धारयतीति तेन, मण्डलोपविष्टेन समन्ताद्वर्त्तुलाकारेण निषण्णेन, अङ्गनाजनेन परिचारिकागणेन।

(ग) पयोधरेति। पयोधरयोः स्तनयो अन्तरा मध्ये अवलम्बितो लम्बमानो मुक्तागुणो मुक्तामाला यस्यास्ताम्, अतएव अचलद्वयमध्ये पर्वतयोरन्तरे प्रवृत्तः प्रचलितः गङ्गाप्रवाहो यस्यास्तां तादृशीं मेदिनीं पृथिवीमिव स्थिताम्। अत्र अचलद्वयेन सह अत्युन्नत्या स्तनद्वयस्य, गङ्गाप्रवाहेण मुक्ताहारस्य, मेदिन्या च विलासवत्याः सादृश्यमित्युपमालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ह) आसन्नेति। आसन्ने निकटाभिमुखस्थे दर्पणे पतितं मुखप्रतिबिम्बं यस्यास्ताम्, अतएव अर्कबिम्बे सूर्य्यमण्डले प्रविष्टं समसूत्रपातन्यायेनाधःस्थितं शशिमण्डलं यस्यां तां दिवमाकाशमिव स्थिताम्। अमावस्यायां हि राशिचक्रे समसूत्रपातन्यायेन सूर्य्यमण्डलादधश्चन्द्रमण्डलं तिष्ठति। तथा च गोभिलः—"सूर्य्याचन्द्रमसोर्यः परः सन्निकर्षः साऽमावस्या।" तिथितत्त्वे तन्निथितत्त्वे स्मार्त्तेन—"परः सन्निकर्षश्च उपर्य्यधोभावापन्नसमसूत्रपातन्यायेन राश्यंकांशाद्यवच्छेदेन सहावस्थानरूपः" इति। अतएवात्रापि पूर्ववदुपमालङ्कार एव।

(च) सेति। ससम्भ्रमं सत्वरं। तं प्रणामावनतं चन्द्रापीडम्। कृतं अवतरणमङ्गलं यानावतरणकालीनधान्यदूर्वादिनिक्षेपरूपमङ्गलाचरणं यया सा, प्रस्नुती पुत्रदर्शनेन दुग्धस्राविणौ यौ पयोधरौ स्तनौ ताभ्यां

আন্দোলন করিতেছিল। (গ) অন্যান্য পরিচারিকারা বস্ত্র, অলঙ্কার, ফুল, আবীর, পান, তালপাতার পাখা, অঙ্গলেপনের দ্রব্য ও গাড়ু (ঝারি) লইয়া চারিদিকে মণ্ডলাকারে উপবেশন করিয়া পরিচর্য্যা করিতেছিল। (ঘ) স্তনযুগলের মধ্যে এক ছড়া মুক্তার হার ঝুলিতেছিল; সুতরাং পর্ব্বতদ্বয়ের মধ্যে গঙ্গার প্রবাহ চলিতে লাগিলে পৃথিবীর ন্যায় তাঁহাকে দেখা যাইতেছিল। (ঙ) সম্মুখবর্ত্তী একখানা দর্পণে তাঁহার মুখের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল; তাহাতে সূর্য্যমণ্ডলে চন্দ্রমণ্ডল প্রবেশ করিলে আকাশের ন্যায় তিনি বিরাজ করিতেছিলেন।

(ক) মহারাণী বিলাসবতী তাড়াতাড়ি তাঁহাকে তুলিলেন এবং আজ্ঞা সম্পাদন করিতে নিপুণ পরিজনবর্গ পার্শ্বে বিদ্যমান থাকিলেও নিজেই চন্দ্রাপীড়ের নবাগমনের মঙ্গলাচরণ করিলেন, তখন দুগ্ধস্রাবী স্তনযুগল হইতে নিঃসৃত দুগ্ধবিন্দুচ্ছলে মহারাণীর হৃদয়

---

(१) पयोधरावलम्बि...पयोधरावलम्बित...। (२) अचलमध्यप्रवृत्तगङ्गा..., अचलद्वयप्रवृत्तगङ्गा...। (३) दिवमिव श्रियं। (४) ननाम।

स्वयमेव कृतावतरणमङ्गला, (१) प्रस्नुत-(२) पयोधर-क्षरत्-पयोविन्दु-च्छलेन द्रवीभूय स्नेहाकुलेन निर्गच्छतेव हृदयेनान्तः शुभशतान्यभिध्यायन्ती (३) मूर्द्धन्युपाघ्राय तं सुचिरमाश्लिक्षेष। (अ)

अनन्तरञ्च तथैव कृतयथोचितसमुपचारमाश्लिष्ट-(४) वैशम्पायना स्वयमुपविश्य विनयादवनितले समुपविशन्तं (५) आकृष्य बलादनिच्छन्तमपि चन्द्रापीड़मुत्सङ्गमारोपितवती। (क)

ससम्भ्रम-(६) परिजनोपनीतायामासन्द्यामुपविष्टे च वैशम्पायने चन्द्रापीड़ं पुनः पुनरालिङ्ग्य ललाटदेशे वक्षसि भुजशिखरयोश्च मुहुर्मुहुः करतलेन परामृशन्ती विलासवती तमवादीत् (ख) "वत्स! कठिनहृदयस्ते पिता,

---

क्षरतां पयोविन्दूनां दुग्धलवानां छलेन द्रवीभूय तरलीभूय निर्गच्छतेव, स्नेहाकुलेन वात्सल्यपूर्णेन हृदयेन करणेन, अन्तर्मध्ये शुभशतानि चन्द्रापीड़स्य कल्याणबाहुल्यं अभिध्यायन्ती सती, मूर्द्धन्युपाघ्राय मस्तकाघ्राणं कृत्वा। आश्लिक्षेष आलिलिङ्ग। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) अनेति। तथैव चन्द्रापीड़वदेव कृतो यथोचितं समुपचारः अवतरणमङ्गलं यस्मिन् कर्म्मणि तद् यथा तथा आश्लिष्ट आलिङ्गितो वैशम्पायनो यया सा विलासवती। अनिच्छन्तमपि अतीतशैशवतया शिशुवदुत्सङ्गमारोढुमनभिलषन्तमपि चन्द्रापीड़ं बलादाकृष्य उत्सङ्गं क्रोड़मारोपितवती, मातृत्वे हृद्यालौकिकत्वादिति भावः।

(ख) ससम्भ्रमेति। ससम्भ्रमेण सत्वरेण परिजनेन उपनीतायामुपस्थापितायां आसन्द्यां क्षुद्रखट्वायां "आसन्दी वासुदेवे स्यात् खट्वाभेदे च योषिति" इति मेदिनी। भुजशिखरयोः स्कन्धयोः। परामृशन्ती आमर्शनं कुर्वती सती।

যেন তরল হইয়া নির্গত হইতেছিল, মহারাণী স্নেহপূর্ণ সেই হৃদয় দ্বারা অন্তরে চন্দ্রাপীড়ের বহুতর মঙ্গল চিন্তা করতঃ, মস্তকের আঘ্রাণ করিয়া তাঁহাকে বহুসময় যাবৎ আলিঙ্গন করিলেন।

(ক) পরে, সেই ভাবেই যথোচিত মঙ্গলাচরণপূর্ব্বক বৈশম্পায়নকেও আলিঙ্গন করিয়া মহারাণী নিজে উপবেশন করিলেন, চন্দ্রাপীড়ও বিনয়বশতঃ ভূতলে উপবেশন করিতেছিলেন; কিন্তু কোলে উঠিতে ইচ্ছা করিতেছিলেন না, তথাপি মহারাণী বলপূর্ব্বক আকর্ষণ করিয়া আনিয়া চন্দ্রাপীড়কে কোলে তুলিয়া লইলেন।

(খ) এ দিকে কোন পরিজন তাড়াতাড়ি একখানি ছোট খাট আনিয়া দিল, বৈশম্পায়ন তাহাতে উপবেশন করিলেন; পরে মহারাণী বিলাসবতী চন্দ্রাপীড়কে বারংবার আলিঙ্গন

---

(१) कृतावतरणका। (२)...प्रस्नुत..., अपस्नुत...। (३)...शतानीव ध्यायन्ती। शतानीवाभिध्यायन्ती। (४) समुपचाराश्लिष्ट...। (५) समुपाविशन्तम्। (६) ससम्भ्रमं।

येनेयमाकृतिरीदृशी (१) त्रिभुवनलालनीया क्लेशमतिमहान्तमियन्तं कालं लम्भिता। कथमसि (२) सोढ़वानतिदीर्घामिमां गुरुयन्त्रणाम्?। अहो बालस्यापि सतः कठोरस्येव ते महद्धैर्य्यम्। अहो विगत-(३) शिशुजन-क्रीड़ा-कौतुक-लाघवमर्भकस्यापि (४) ते हृदयम्। अहो गुरुजनस्योपरि भक्तिरसाधारणी (५) सर्वथा (६)। यथा पितुः प्रसादात् समस्ताभिरुपेतो विद्याभिरालोकितोऽसि, एवमचिरेणैव कालेनानुरूपाभिर्वधूभिरुपेतमालोकयिष्यामि" (ग) इत्येवमभिधाय लज्जास्मितावनतमात्ममुखप्रतिबिम्बगर्भे विकच-कमल-कृत-कर्णपल्लवावतंस इव कपोले पर्य्यचुम्बदेनम्। (घ) एवञ्च तत्रापि

(ग) वत्सेति। त्रिभुवनलालनीया त्रिजगद्वासिभिरेव जनैर्वात्सल्येनैव सन्निधौ पालनीया, निरतिशय-कोमलललितत्वादिति भावः। इयन्तं कालं यावत्। अतिदीर्घामतिदीर्घकालव्यापिनीं। गुरुयन्त्रणां विद्यालये शिक्षकगणकर्त्तृकावरोधक्लेशम्। अहोशब्दत्रयमाश्चर्य्ये। कठोरस्येव पूर्णवयसो जनस्येव। अर्भकस्यापि बालकस्यापि ते तव हृदयं, विगतं दूरीभूतं शिशुजनक्रीड़ा-कौतुकलाघवं बालजनोचितखेला-कौतुकस्य निमित्तीभूतं लघुत्वं चाञ्चल्यं यस्मात्तत्तादृशम्। सर्वथा असाधारणी सर्वाधिका। अन्यथैतावन्तं कालं यावद्विद्यालयावरोधक्लेशं न सहेथा इत्थं विनयनमस्कारादिञ्च न कुर्य्या इति भावः। एवं तथा पितुः प्रसादेनैवेत्यर्थः।

(घ) इतीति। लज्जास्मितेन अवनतं बालचापल्येन वधूकथाश्रवणात् स्मितं कृत्वा लज्जया अवनत-मुखमित्यर्थः, एनं चन्द्रापीड़म्, आत्मनः स्वस्य मुखस्य प्रतिबिम्बं गर्भे अभ्यन्तरे यस्य तस्मिन्, चन्द्रापीड़स्य स्वच्छ-

---

করিয়া, তাঁহার ললাটে, বক্ষে ও স্কন্ধযুগলে বারংবার হস্তামর্শন করিতে করিতে বলিলেন,—(গ) "বৎস! তোমার পিতার হৃদয় কঠিন; যেহেতু—তিনি ত্রিজগতের লোকেরই সস্নেহে পরিপালন করার যোগ্য তোমার এইরূপ এই আকৃতিকে এত কাল যাবৎ অত্যন্ত কষ্ট সহ্য করাইয়াছেন। তুমি কি করিয়া এই অতিদীর্ঘকালব্যাপী শিক্ষকগণের যন্ত্রণা সহ্য করিলে? কি আশ্চর্য্য! বালক হইয়াও, পূর্ণবয়স্ক ব্যক্তির ন্যায় তোমার গুরুতর ধৈর্য্য দেখিতেছি। বিশেষ আশ্চর্য্য এই যে—তুমি বালক হইলেও, তোমার হৃদয় হইতে শিশুজনোচিত খেলাকৌতুকের চপলতা দূরীভূত হইয়াছে। আরও আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে—গুরুজনের উপরে সর্ব্বপ্রকারে তোমার অসাধারণ ভক্তি দেখিতেছি। অতএব পিতার অনুগ্রহে সর্ব্ব-বিদ্যা-সম্পন্ন অবস্থায় এখন যেমন তোমাকে দেখিতেছি, এইরূপ অচিরকালমধ্যেই অনুরূপ বধূগণের সহিত তোমাকে দেখিতে পাইব" (ঘ) বিলাসবতী এই কথা বলিলে চন্দ্রাপীড় ঈষৎ হাস্য করিয়া লজ্জায় মুখ অবনত করিলেন, তখন বিলাসবতী চন্দ্রাপীড়ের গণ্ডদেশে চুম্বন করিলেন,

---

(१) ईदृश…। (२) कथमपि। (३) विगलित…। (४) अर्भकत्वे त्वयि, अर्भकत्वेऽपि ते, अर्भके ते। (५) असाधारणा। (६) सर्व्वा।

नातिचिरमेव स्थित्वा क्रमेण सर्वान्तःपुराणि दर्शनेन नन्दयामास। निर्गत्य च राजकुलद्वारावस्थितं (१) इन्द्रायुधमारुह्य तथैव तेन राजपुत्रलोकेनानुगम्यमानः शुकनासं द्रष्टुमयासीत्। (ङ)

यामावस्थित-विविध-गज-घटा-(२) सङ्कटम्, अनेक-तुरङ्ग-सहस्र-सम्बाधम्, अपरिमित-जन-समूह-सम्मर्द-(३) सङ्कुलम्, (च) एकदेशोपविष्टैः सहस्रशो निबद्धचक्रवालैरनेककार्य्यागतैर्दर्शनोत्सुकैः समन्ततो विविधशास्त्राञ्जनोन्मीलित-

---

कपोलसमीपे स्वमुखन्यसनादिति भावः, अतएव विकचकमलेन प्रस्फुटितपद्मेन कृतः कर्णपल्लवः कर्णपल्लवमाणेव अवतंसः कर्णालङ्कारो यस्मिन् तादृश इव कर्णाभरणीकृतपद्मयुते इव स्थिते इत्यर्थः। कपोले गण्डे पर्य्यचुम्बत्, विलासवतीति शेषः। अत्र विकचकमलेन कर्णाभरणकरणस्योत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, स च पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते। तेन च विलासवतीमुखस्य प्रस्फुटितपद्मतुल्यत्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। गले बद्धा गौरित्यादिवत् कपोल इत्यधिकरण एव सप्तमी।

(ङ) एवञ्चेति। सर्वान्तःपुराणि सकला अन्तःपुरस्थाः स्त्रियः। तथैव पूर्ववदेव।

(च) यामेति। यामेषु प्रतिप्रहरं अवस्थिताः परिवृत्य परिवृत्य विद्यमाना ये गजास्तेषां घटया समूहेन सङ्कटं व्याप्तम्। इतः क्लीवलिङ्गद्वितीयान्तपदानि शुकनासगृहद्वारमिति अध्याहार्य्यस्य विशेषणानि। अनेकैस्तुरङ्गसहस्रैरश्वसमूहैः सम्बाधं सङ्कीर्णं। अपरिमितानां जनानां समूहस्य सम्मर्द्देन सङ्घर्षेण सङ्कुलं व्याप्तम् दुर्गमम्।

(छ) एकेति। सहस्रशो निबद्धानि विहितानि चक्रवालानि मण्डलानि मण्डलाकारेणावस्थानानि यैस्तैः। अनेककार्य्यागतैर्भिन्नभिन्नोद्देश्येनोपस्थितैरित्यर्थः। दर्शनोत्सुकैः शुकनाससाक्षात्काराभिलाषुकैः। समन्ततः सर्वासु दिक्षु सर्वेषु विषयेष्वित्यर्थः, विविधानि शास्त्राण्येव अञ्जनानि कज्जलानि तैरुन्मीलितानि

সেই সময়ে বিলাসবতীর মুখের প্রতিবিম্ব চন্দ্রাপীড়ের গণ্ডে পতিত হওয়ায় বোধ হইতে লাগিল যেন, প্রস্ফুটিত পদ্মদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের কর্ণাভরণ করা হইয়াছে। (ঙ) চন্দ্রাপীড় এই ভাবে সেখানেও অধিক কাল না থাকিয়া ক্রমে সাক্ষাৎ করিয়া অন্তঃপুরস্থ সমস্ত রমণীগণকে আনন্দিত করিলেন, এবং তথা হইতে নির্গত হইয়া, রাজবাটীর দ্বারস্থিত ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া, সেইভাবে সেই সকল রাজপুত্রগণের সহিত, শুকনাসের সঙ্গে সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত গমন করিলেন।

(চ) ক্রমে শুকনাসের বাটীর দ্বারদেশে যাইয়া উপস্থিত হইলেন। সেই দ্বারদেশ প্রহরে প্রহরে পরিবর্ত্তিত নানাবিধ হস্তিসমূহে ব্যাপ্ত ছিল, এবং বহুতর অশ্বসমূহে পরিপূর্ণ ও অসংখ্য জনসমূহের সঙ্ঘর্ষে দুর্গম ছিল। (ছ) এবং তাহার একদিকে শাক্যসিংহের উপদেশমার্গে অগ্রগণ্য বহুতর বৌদ্ধসন্ন্যাসী এবং রক্তবস্ত্রধারী বহুতর শিবোপাসক ব্রাহ্মণ, বহুস্থানে

---

(१) राजकुलद्वारा बहिःस्थितं। (२)...मत्तगज...। (३)...समूहसङ्घसम्मर्द्द...।

बुद्धिलोचनैः (१) चीवरच्छद्मना (२) विनयानुरागिभिर्धर्म्मपटैरिवावगुण्ठितैः शाक्यमुनिशासनपथधौरेयैः, रक्तपटैः (३) पाशुपतैर्द्विजैश्च दिवानिशमासेव्यमानम्, (ज) अभ्यन्तरप्रविष्टानाञ्च सामन्तानां जघनोपविष्ट-पुरुषोत्सङ्ग-स्थित-द्विगुणित-कुथाभिः (४) अतिचिरावस्थान निर्वेद-प्रसुप्ताधोरणाभिरपर्य्याणाभिः सपर्य्याणाभिश्च निश्चलावस्थानप्रचलायिताभिः शतसहस्रशः करिणीभिराकीर्णम्, शुकनास-गृहद्वारमासाद्य, (ज) सत्वर-प्रधावितैर्द्वारदेशावस्थितैः प्रतीहारपुरुषै-

---

विकसितानि बुद्धय एव लोचनानि येषां तैः। अत्र शास्त्रेष्वञ्जनत्वारोपस्य बुद्धिषु लोचनत्वारोपं प्रति निमित्तत्वात् परम्परितरूपकमलङ्कारः। चीवराणि शाक्यभिक्षुप्रावरणानि तेषां छद्मना व्याजेन, विनयेन धर्म्मशिक्षया अनुरागोऽभिलाष एवानुरागो रञ्जनद्रव्यमेषामस्तीति तैस्तादृशैः, येषु धर्म्मशासनान्युल्लिख्य शिष्येभ्यः प्रदर्श्यन्ते ते धर्म्मपटा बौद्धाचारसिद्धवसनविशेषास्तैरवगुण्ठितैरिव आवृतदेहैरिव स्थितैः। अत्र चीवरद्वारावरणेषु धर्म्मपटद्वारावरणत्वमुत्प्रेक्षितं श्लिष्टविनयानुरागसाधर्म्म्यादिति सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। शाक्यमुनेः शाक्यसिंहस्य शासनपथे उपदिष्टधर्म्मविषये धौरेया धुरन्धरा अग्रगण्यास्तैः। रक्तपटैर्लोहितवसनधारिभिः पाशुपतैः शिवोपासकैर्द्विजैर्ब्राह्मणैश्च दिवानिशं आसेव्यमानं शुकनासानुरागिणाश्रीयमाणम्।

(ज) अभ्यन्तरेति। अपि चेति चार्थः। अभ्यन्तरप्रविष्टानां स्वस्वप्रयोजनसाधनाय अभ्यन्तरे शुकनाससमीपं गतानां सामन्तानां करिणीभिरिति सम्बन्धः। जघनेषु तासामेव करिणीनां कटिदेशेषु उपविष्टानां पुरुषाणां तत्तत्सामन्तपरिचारकलोकानां उत्सङ्गेषु क्रोडेषु स्थिताः, द्विगुणिता आरोहिणां सामन्तानामवतरणानन्तरमेवोत्तोल्य द्विगुणीकृता, कुथाः पृष्ठास्तरणानि यासां ताभिः। अतिचिरावस्थानेन सामन्तानां विलम्बाद्बहुकालावस्थित्या यो निर्वेदो विरक्तिस्तत्प्रसङ्गेन प्रसुप्ता निद्रिताः, आधोरणा हस्तिपका यासां ताभिः। अपर्य्याणाभिरपनीतपल्ययनाभिः, सपर्य्याणाभिः पूर्ववत् पल्ययनयुक्ताभिश्च, निश्चलावस्थानेन प्रचलायिताभिः निद्राविशेषेण घूर्णिताभिः "घूर्णितः प्रचलायितः" इत्यमरः। आकीर्णं व्याप्तम्।

মণ্ডলাকারে উপবেশন করিয়া রহিয়াছিলেন; তাঁহারা ভিন্ন ভিন্ন কার্য্যের নিমিত্ত উপস্থিত হইয়াছিলেন এবং সকলেই শুকনাসের সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্য উৎসুক ছিলেন; নানা-শাস্ত্ররূপ কজ্জল, সকল বিষয়েই তাঁহাদের জ্ঞান-নয়ন উন্মীলিত করিয়াছিল; আর বৌদ্ধ-সন্ন্যাসিগণ কৌপীন-ধারণচ্ছলে, ধর্ম্মশিক্ষাদ্বারা ধর্ম্মে অনুরাগরূপ রঞ্জনদ্রব্যে রঞ্জিত ধর্ম্মপটদ্বারা যেন শরীর আবৃত করিয়াছিলেন। (জ) সামন্তরাজগণ শুকনাসের সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত ভিতরে প্রবেশ করিয়াছিলেন, তাঁহাদের শত সহস্র হস্তিনী সেই দ্বারদেশ ব্যাপ্ত করিয়া রহিয়াছিল, সেগুলি বহুকাল যাবৎ নিশ্চলভাবে অবস্থান করায় নিদ্রার আবেশে ঘুরিতেছিল, তাহাদের মধ্যে কতকগুলির পালান নামাইয়া রাখা হইয়াছিল, এবং কতকগুলির পালান লাগানই ছিল আর সেই রাজগণের পরিচারকগণ সেই হস্তিনীগণের কটিদেশে উপবেশন

---

(१) ...उन्मीलितप्रतिभैः। (२) अवरच्छद्मना। (३) रक्तपादैः। (४)...द्विगुणकुथाभिः।

রনিবার্য্যমাণোঽপি রাজকুল ইব রাজপুত্রো বাহ্যাঙ্গণ এব (১) তুরঙ্গাৎ (২) অবততার। (ঝ)

দ্বারদেশাবস্থাপিত-(৩) তুরঙ্গশ্চ বৈশম্পায়নমবলম্ব্য পুরঃপ্রধাবিতৈঃ সমুৎসারিত-পরিজনৈস্তৎপ্রতীহার-(৪) মণ্ডলৈরুপদিশ্যমানমার্গঃ, (ঞ) তথৈব চলিত-মুকুটকোটিভির্নরেন্দ্রবৃন্দৈঃ সেবাসমুপস্থিতৈরুত্থায়োত্থায় প্রণম্যমানঃ, (ট) তথৈব চ প্রচণ্ড-প্রতীহার-হুঙ্কার-ভয়-মূকীভবৎ-পরিজনানি প্রচলিত-বেত্রলতা-চকিত-(৫) সামন্ত-চক্র-চরণ-শত-চলিত-বসুন্ধরাণি কক্ষান্তরাণি নিরীক্ষ-

(ঝ) সত্বরেতি। সত্বরপ্রধাবিতৈঃ সম্মুখবর্ত্তিলোকাপসারণার্থং দ্রুতমগ্রগতৈঃ। প্রতীহারপুরুষৈর্দৌবারিকৈঃ। রাজকুল ইব রাজবাট্যামিব। বাহ্যাঙ্গণ এব গৃহাদ্বহিশ্চত্বর এব, অস্যাপি গৃহে সযানপ্রবেশস্যান্যায্যত্বাদিতি ভাবঃ।

(ঞ) দ্বারেতি। কিঞ্চ, দ্বারদেশে অবস্থাপিতস্তুরঙ্গো যেন স তথোক্তো রাজপুত্রঃ। সমুৎসারিতাঃ সম্মুখপথাদপসারিতাঃ পরিজনাঃ সমন্তাদাগতা লোকা যৈস্তৈঃ, তৎপ্রতীহারমণ্ডলৈস্তদ্গৃহদ্বারপালগণৈঃ, উপদিশ্যমানো মার্গঃ পন্থা যস্য সঃ।

(ট) তথৈবেতি। রাজবাট্যাং যথা তথৈবেত্যর্থঃ। চলিতা মস্তকাবনমনবেলায়াং স্পন্দিতাঃ মুকুটানাং কোটয়ঃ অগ্রদেশা যেষাং তৈঃ, সেবাসমুপস্থিতৈঃ শুকনাসসন্তোষার্থমাগতৈঃ।

(ঠ) তথৈবেতি। প্রচণ্ডেন ভয়ঙ্করেণ প্রতীহারাণাং দ্বারপালানাং হুঙ্কারেণ অপসরণব্যঞ্জকহুংশব্দেন যদ্ভয়ং কোলাহলেন রাজপুত্রতো ভয়ং তেন মূকীভবন্তো নিঃশব্দা জায়মানাঃ পরিজনা যেষু তানি। তথা প্রচলিতাভি-

করিয়া, তাহাদের পিঠের কম্বলগুলি গুটাইয়া কোলের উপর রাখিয়াছিল এবং মাহুতগণ বহু সময় অবস্থান করায় বিরক্তিবশতঃ নিদ্রা যাইতেছিল। (ঝ) চন্দ্রাপীড় দ্বারদেশে উপস্থিত হইলে দ্বারদেশস্থিত দৌবারিকগণ অগ্রে অগ্রে দ্রুত যাইতে লাগিল, কিন্তু কেহই চন্দ্রাপীড়কে অশ্বের সহিত প্রবেশ করিতে নিষেধ করিল না, তথাপি তিনি রাজবাটীর ন্যায় বাহিরের উঠানেই অশ্ব হইতে নামিলেন।

(ঞ) এবং দ্বারদেশে অশ্বটা রাখিয়া বৈশম্পায়নের হস্তধারণ করিয়া প্রবেশ করিতে লাগিলেন; তখন সেই বাটীর দৌবারিকগণ, চতুর্দ্দিক হইতে আগত লোকদিগকে সম্মুখ হইতে অপসারণপূর্ব্বক পথ বলিয়া দিতে দিতে অগ্রে অগ্রে যাইতে লাগিল। (ট) শুকনাসের সন্তোষের নিমিত্ত উপস্থিত নানাদেশীয় রাজগণ, সেই ভাবেই উঠিয়া উঠিয়া প্রণাম করিতে লাগিলেন, তখন তাঁহাদের মুকুটের অগ্রভাগ কম্পিত হইতেছিল। (ঠ) চন্দ্রাপীড় দেখিতে দেখিতে সেই ভাবেই এক এক প্রকোষ্ঠ হইতে অন্যান্য প্রকোষ্ঠে যাইতে লাগিলেন; সেই

(১) বাহ্যাঙ্গে। (২) তুরগাৎ। (৩)...অবস্থিত...। (৪) তথৈব প্রতীহার...। (৫)...সাধ্বসচকিত...।

माणः (ठ) तथैव च नव-नव-सुधावदात-प्रासाद-सहस्र-निरन्तरं (१) द्वितीय-मिव राजकुलं शुकनास-भवनं विवेश। (ड) प्रविश्य चानेक-नरेन्द्र-सहस्रमध्यो-पविष्टं (२) अपरमिव पितरमुपदर्शितविनयो दूरावनतेन मौलिना शुकनासं ववन्दे। (ढ)

शुकनासस्तं ससम्भ्रममुत्थाय (३) आनुपूर्व्येण (४) उत्थित-राजलोकः (५) सादरमभिमुखदत्ताविरलपदः प्रहर्ष-(६) विस्फारितलोचनागतानन्द-(७) जल-कणः सह (८) वैशम्पायनेन प्रेम्णा गाढ़मालिलिङ्ग। (ण) आलिङ्गितोन्मुक्तश्च

र्वेत्रलताभिर्द्वारपालैर्धृताभिर्वेत्रयष्टिभिः चकितं त्रस्तं यत्सामन्तचक्रं अधीनराजवृन्दं तस्य चरणशतेन पादन्याससमूहेन चलिता कम्पिता वसुन्धरा भूमिर्येषु तानि, कक्षान्तराणि अन्यान्यान् प्रकोष्ठान् निरीक्षमाणः पश्यन्।

(ड) तथैवेति। नवनवाभिः सुधाभिश्चूर्णादिलेपैः अवदातं शुभ्रं यत् प्रासादानामट्टालिकानां सहस्रं समूहस्तेन निरन्तरं निरवकाशं परिपूर्णं, अतएव द्वितीयं राजकुलं राजवाटीमिव स्थितम्। अत्र द्रव्योत्-प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) प्रविश्येति। उपदर्शितो विनयो नम्रता येन सः, अनेकेषां नरेन्द्रसहस्राणां सामन्तसमूहानां मध्ये उपविष्टं अतएव अपरं पितरं तारापीड़मिव स्थितं, तस्यापि तथैव सामन्तशतमध्योपवेशनादिति भावः। दूरादेव अवनतेन मौलिना मस्तकेन। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) शुकेति। ससम्भ्रमं सत्वरं। आनुपूर्व्येण पूर्वपूर्वानुक्रमेण उत्थितो राजलोको यस्मात् सः, अभिमुखे चन्द्रापीड़ाभिमुखे दत्तानि कृतानि अविरलानि घनानि पदानि पादक्षेपा येन सः, दूरत एव तेन नमस्कृतत्वादिति भावः, तथा प्रहर्षेण महानन्देन विस्फारितयोर्विस्तारितयोर्लोचनयोरागता आनन्दजलकणा

সকল স্থানে দ্বারপালগণের ভয়ঙ্কর হুঙ্কারে, পরিজনবর্গ ভয়ে নিঃশব্দ হইয়া রহিতে লাগিল; এবং বেত্রযষ্টি সঞ্চালিত হইতে থাকায় সামন্তরাজগণ ত্রস্ত হইয়া সরিয়া যাইতে লাগিলেন, তাঁহাদের পদভরে সে স্থান কম্পিত হইতে লাগিল। (ড) ক্রমে চন্দ্রাপীড় সেই ভাবেই দ্বিতীয় রাজবাটীর ন্যায় শুকনাসের বাটীতে প্রবেশ করিলেন; সেই বাটী, নূতন নূতন চূর্ণ-লেপনে শুভ্রবর্ণ বহুতর অট্টালিকাতে পরিপূর্ণ ছিল। (ঢ) চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিয়া বিনয়-প্রদর্শনপূর্ব্বক, দূর হইতেই মস্তক অবনত করিয়া, বহুতর রাজগণের মধ্যে উপবিষ্ট অপর পিতার ন্যায় শুকনাসকে প্রণাম করিলেন।

(ণ) তখন শুকনাস তাড়াতাড়ি গাত্রোত্থান করিলেন, পরে রাজগণও ক্রমে ক্রমে গাত্রোত্থান করিলেন; তখন শুকনাস চন্দ্রাপীড়ের অভিমুখে ঘন ঘন পদক্ষেপ করিয়া

---

(१)...प्रासादनिरन्तरं। (२)...उपस्थितं। (३) समुत्थाय। (४)...पूर्वेण। (५)...लोकैः। (६) संहर्ष...। (७)...विलोचन...। (८) सर्व।

सादरोपनीतमपहाय रत्नासनमवनावेव राजपुत्रः समुपाविशत्, तदनु च वैशम्पायनः। (त) उपविष्टे (१) च राजपुत्रे शुकनासवर्जमन्यदखिलमवनिपालचक्रमुज्झित-निजासनमवनितलमभजत। (थ) स्थित्वा च तूष्णीं क्षणमिव (२) शुकनासः समुद्गतप्रीतिपुलकैरङ्गैराविद्यमान-हृदय-हर्ष-(३) प्रकर्षस्तमब्रवीत्। (द)

"तात! चन्द्रापीड! (४) अद्य खलु देवस्य तारापीडस्य समाप्तविद्य-

---

आनन्दाश्रुबिन्दवो यस्य सः, तथोक्तः शुकनासः, प्रेम्णा वात्सल्येन वैशम्पायनेन सह तं चन्द्रापीडं सादरं गाढमालिलिङ्ग।

(त) आलिङ्गितेति। आदावालिङ्गितः पश्चादुन्मुक्तः परित्यक्तश्चेति स तथोक्तो राजपुत्रः, अवनावेव भूतल एव। तदनु तस्य पश्चाद्भागे वैशम्पायनश्च समुपाविशदित्यन्वयः। शुकनासस्य मन्त्रित्वेऽपि ब्राह्मणतया पितृवयस्यत्वेन पितृस्थानीयतया च तदन्तिके चन्द्रापीडस्य आसनपरिग्रहानौचित्यात्, वैशम्पायनस्य तु पितृत्वेन तदन्तिके आसनपरिग्रहस्य सर्वथैवान्याय्यत्वाद्भूमावुपवेशनमिति भावः।

(थ) उपेति। शुकनासं वर्जयतीति शुकनासवर्जं। अवनिपालचक्रं राजगणः, उज्झितनिजासनं परित्यक्तस्वस्वासनं सत्, अवनितलं अभजत भूतल एवोपाविशदित्यर्थः। शुकनासस्य मन्त्रित्वेऽपि ब्राह्मणतया पितृवयस्यत्वेन पितृस्थानीयतया च कुमारे भूतलोपविष्टेऽप्यासनोपवेशनमेव न्याय्यं, अधीनक्षत्रियनृपतीनान्तु राजराजेश्वरपुत्रे भूमावुपविष्टे आसनोपवेशनस्य सर्वथैवान्याय्यत्वाद्भूमावुपवेशनमेव न्याय्यमिति भावः।

(द) स्थित्वेति। समुद्गताः प्रीत्या आनन्देन पुलका रोमाञ्चा येषु तैरङ्गैः, आविद्यमानः सूच्यमानः हृदयस्य हर्षप्रकर्षश्चित्तस्य आनन्दातिरेको यस्य सः, तं कुमारम्।

(ध) तातेति। हे तात! पुत्र! पुत्रस्थानीय! "पूज्ये पितरि पुत्रे च तातशब्दः स्मृतो बुधैः।"

যাইতে লাগিলেন, অত্যন্ত আনন্দবশতঃ বিস্ফারিত নয়নযুগলে আনন্দাশ্রুবিন্দু আবির্ভূত হইল; শুকনাস এই ভাবে যাইয়া স্নেহবশতঃ বৈশম্পায়নের সহিত চন্দ্রাপীড়কে সাদরে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন। (ত) তিনি আলিঙ্গন করিয়া ছাড়িয়া দিলে কোন পরিজন আদরের সহিত একখানি রত্নাসন আনিয়া দিল, চন্দ্রাপীড় তাহা পরিত্যাগ করিয়া ভূতলেই উপবেশন করিলেন, বৈশম্পায়নও তাঁহার পিছনে বসিলেন। চন্দ্রাপীড় ভূতলে উপবেশন করিলে শুকনাস-ভিন্ন অন্য সকল রাজগণ, স্ব স্ব আসন ত্যাগ করিয়া ভূতলেই উপবেশন করিলেন। (দ) তখন অত্যন্ত আনন্দবশতঃ শুকনাসের সমস্ত অঙ্গে রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইল, তাহাতে তাঁহার মনেও যে অত্যন্ত আনন্দ জন্মিয়াছিল, তাহা প্রকাশ পাইতে লাগিল, এই অবস্থায় শুকনাস ক্ষণকাল মৌনাবলম্বনপূর্ব্বক থাকিয়া চন্দ্রাপীড়কে বলিতে লাগিলেন।

(ধ) "বাবা চন্দ্রাপীড়! তোমার সমস্ত বিদ্যা-শিক্ষা সমাপ্ত হইয়াছে এবং যৌবনকাল

---

(१) समुपविष्टे। (२) क्षणमपि। (३) आविद्यमानहर्ष...। (४) क्वचित् चन्द्रापीड इति नास्ति।

मुपारूढयौवनमालोक्य भवन्तं सुचिराद्भुवनराज्यफलप्राप्तिरुपजाता। (ध) अद्य समृद्धाः सर्वा गुरुजनाशिषः, अद्य फलितमनेकजन्मान्तरोपात्तमवदातं कर्म्म, अद्य प्रसन्नाः कुलदेवताः, न ह्यपुण्यभाजां (१) भवादृशास्त्रिभुवन-(२) विस्मय-जनकाः (३) पुत्त्रतां प्रतिपद्यन्ते। (न) क्वेदं वयः, क्वेयममानुषी शक्तिः, क्व चेदमशेष-विद्याग्रहणसामर्थ्यम्। (प) अहो धन्याः प्रजाः, यासां भरत-भगीरथप्रतिमो भवानुत्पन्नः पालयिता। (फ) किं खलु कृतमवदातं कर्म्म वसुन्धरया, ययासि भर्त्ता समासादितः। (ब) हरिवक्षःस्थलनिवासासद्ग्रह-व्यसनिनो (४) हता खलु लक्ष्मीः, या विग्रहवती भवन्तं नोपसर्पति। (भ)

इति शेषः। उपारूढमुत्पन्नं यौवनं यस्य तम्। भुवनराज्यस्य समग्रभूमण्डलराजत्वस्य यत्फलमसीमप्रीति-स्तस्य प्राप्तिरुपजाता, तव जन्मनः प्राक् पुत्त्राभावजनितं जाते च त्वयि शिक्षासमाप्तेः प्राक् गुणवत्पुत्त्राभावजनितं दुःखमासीदिति भावः।

(न) अद्येति। समृद्धाः सम्पूर्णाः सफला इत्यर्थः। अनेकजन्मान्तरेषु उपात्तमर्जितं अवदातं निर्म्मलं कर्म्म धर्म्मकार्य्यमित्यर्थः। नन्वीदृशस्य मम जातत्वेनैव कथं जन्मान्तरीयं पुण्यं फलितमित्युच्यत इत्याह नहीत्यादि। अत्र वैधर्म्येण कारणेन कार्य्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(प) क्वेति। इदं नवयौवनरूपं अत्यल्पमित्यर्थः वयः क्व, इयं अमानुषी मनुष्यलोकासम्भवा शक्तिः कायिकसामर्थ्यं क्व, इदमशेषविद्याग्रहणसामर्थ्यञ्च क्व। मनुष्यलोके ईदृशे अत्यल्पवयसि न खल्वन्यस्य कस्यापि ईदृशमसाधारणं कायिकसामर्थ्यं समस्तविद्याभ्याससामर्थ्यञ्च स्यादिति भावः। अतएवात्र विरूपाणां सङ्घटनया विषमालङ्कारः।

(फ) अहो इति। भरतः शकुन्तलापुत्त्रो भगीरथश्च प्रतिमा उपमा यस्य सः।

(ब) किमिति। अवदातं कर्म्म विशुद्धं कार्य्यं पुण्यमित्यर्थः।

(भ) हरीति। हरेर्वक्षःस्थले निवासे यः असद्ग्रहो दुष्टबुद्धिस्तत्र व्यसनिनी आसक्तिमती लक्ष्मी-

উপস্থিত হইয়াছে—এই অবস্থায় তোমাকে দেখিয়া, আজ মহারাজ তারাপীড়ের বহুকালের পর পৃথিবীর রাজত্ব-করার ফল-লাভ হইয়াছে। (ন) আজ গুরুজনবর্গের সমস্ত আশীর্ব্বাদ সফল হইয়াছে, আজ অনেক জন্মান্তরের ধর্ম্মকার্য্য ফলিয়াছে এবং আজ কুলদেবতারা প্রসন্ন হইয়াছেন; কারণ—তোমার মত ত্রিজগতের বিস্ময়-জনক ব্যক্তিগণ অপুণ্যবান্ ব্যক্তি-গণের পুত্রত্ব স্বীকার করেন না। (প) এই নবীন বয়সই বা কোথায়, আর এই অমানুষী দৈহিক শক্তি ও সমস্ত বিদ্যা-শিক্ষার ক্ষমতাই বা কোথায়। (ফ) অহো ধন্য প্রজাগণ; ভরত ও ভগীরথের তুল্য তুমি যাহাদের পরিপালক হইয়া জন্মিয়াছ। (ব) পৃথিবী কি ধর্ম্মকার্য্য করিয়াছিলেন, যিনি তোমাকে পতিরূপে পাইয়াছেন। (ভ) লক্ষ্মীদেবী নারায়ণের

(१) तत्पुण्यभाजं। (२) सकलत्रिभुवन...। (३) विस्मयकरिणः। (४)...व्यसनितया।

सर्वथा कल्पकोटीर्महावराह इव दंष्ट्रावलयेन (१) वह बाहुना वसुन्धराभारं सह पित्रा" इत्यभिधाय (२) स्वयमाभरण-वसन-कुसुमाङ्गरागादिभिरभ्यर्च्य विसर्जयाञ्चकार। (म)

विसर्जितश्चोत्थायान्तःपुरं प्रविश्य दृष्ट्वा (३) वैशम्पायनमातरं मनोरमाभिधानां निर्गत्य समारुह्येन्द्रायुधं पित्रा पूर्वकल्पितं प्रतिच्छन्दकमिव राजकुलस्य, द्वारावस्थित-सित-पूर्ण-कलसम्, आबद्ध-हरित वन्दनमालम्, (४) उत्तम्भित-पताका-सहस्रम्, अभ्याहतमङ्गल-तूर्य्यरव-परिपूरित-दिगन्तरम्, उपरचित-विकच-कमल-कुसुम-प्रकरम्, अचिरकृताग्निकार्य्यम्, उज्ज्वल-विविक्त-परिजनम्, उपपादिताशेष-गृहप्रवेशमङ्गलम्, कुमारो भवनं जगाम। (य) गत्वा च श्रीमण्डपाव-

---

हंता विधिना वञ्चिता खलु, विग्रहवती मूर्त्तिमती सती। अत्र हृतत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः, तेन च हरितोऽपि चन्द्रापीडस्योत्कर्षप्रत्यायनाद्व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(म) सर्वथेति। दंष्ट्रावलयेन दन्तमण्डलेन महावराहो वराहावतारो नारायण इव, पित्रा सह त्वं बाहुना कल्पकोटीः कोटिसंख्यकान् कल्पान् यावत् वसुन्धराया भारं शासनव्यापारं गुरुत्वञ्च सर्वथा वह। अत्रोपमालङ्कारः। तथा महावराहो वसुन्धराभारमुवाह त्वन्तु वहेति विधिभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, "चिरञ्जीवतु ते सूनुर्मार्कण्डेयमुनिर्यथा" इति दर्पणोदाहृतवत्, स च 'महावराहो यथोवाह तथा वह' इति पाठेन समाधेयः। पुरा किल भगवान्नारायणो वराहावतारं परिगृह्य दन्तमण्डलेन जलधिमग्नं भूमण्डलमुद्दधारेति वराहपुराणम्।

(य) विसर्जित इति। पूर्वकल्पितं पूर्वमेव निर्म्मितं। राजकुलस्य राजवाट्याः प्रतिच्छन्दकं प्रतिमूर्त्तिमिव, सर्वथा सौसादृश्यादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। "प्रतिरूपं प्रतिच्छन्द" इति त्रिकाण्डशेषः। द्वारे अवस्थितौ सितौ शुभ्रौ पूर्णकलसौ यस्य तत्। आबद्धाः तोरणेषु योजिताः हरिताः पालाशवर्णा वन्दनमाला माङ्गलिकं पुष्पमाल्यं यस्मिन् तत्। "तोरणाद्यं तु माङ्गल्यं दाम वन्दनमालिका।" इत्यभिधान-

---

বক্ষঃস্থলে বাস করার দুষ্টবুদ্ধিতে আসক্ত হইয়া বিধিকর্তৃক বঞ্চিত হইয়াছেন, যিনি শরীর ধারণ করিয়া এখনও তোমার নিকট আসিতেছেন না। (ম) আদি বরাহ যেমন দন্তদ্বারা পৃথিবীর ভার বহন করিয়াছিলেন, তুমিও তেমন পিতার সহিত কোটিসংখ্যক কল্প-(দেবতাদের এক হাজার যুগে এক কল্প) কাল যাবৎ বাহুদ্বারা পৃথিবীর ভার বহন কর"—এই কথা বলিয়া নিজেই অলঙ্কার, বস্ত্র, পুষ্প ও অঙ্গরাগ-দ্রব্য দিয়া সম্মান করিয়া কুমারকে বিদায় করিলেন।

(য) তখন কুমার চন্দ্রাপীড় শুকনাসের নিকট বিদায় লইয়া, উঠিয়া অন্তঃপুরে যাইয়া বৈশম্পায়নের মাতা মনোরমাদেবীকে দেখিয়া, তথা হইতে নির্গত হইয়া ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ

---

(१) दंष्ट्रावलेन। (२) अभिधाय च। (३) दृष्ट्वा च। (४) हरितचन्दन, हरितचन्दन...।

स्थिते शयने मुहूर्त्तमुपविश्य सह तेन राजपुत्रलोकेन अभिषेकादिकं (१) अशना-वसानमकरोद्दिवसविधिम्। (र) अभ्यन्तरे च शयनीय(२) गृह एवेन्द्रायुधस्या-वस्थानमकल्पयत्। (ल)

एवं प्रायेण चास्योदन्तेन तदहः परिणतिमुपययौ। (व) गगनतलादव-तरन्त्या दिवसश्रियः पद्मरागनूपुरमिव स्वप्रभापिञ्जितरन्ध्रं रविमण्डलमुन्मुक्ता-

चिन्तामणिः। उल्लसितमुड्डीनं पताकानां सहस्रं समूहो यस्मिन् तत्। अभ्याहतानां वादितानां मङ्गल-तूर्य्याणां माङ्गलिकवाद्यविशेषाणां रवैः परिपूरितानि दिगन्तराणि यस्य तत्। उपरचितः कृतः विकचानां प्रस्फुटानां कमलकुसुमानां पद्मपुष्पाणां प्रकरो विक्षेपो यस्मिन् तत्। अचिरं कृतं अग्निकार्य्यं शान्तिहोमो यस्मिन् तत्। उज्ज्वला उद्दीप्तवेशाः विविक्ता विविधाः परिजना यस्मिन् तत्। तथा उपपादितानि राज्ञैव सम्पादितानि अशेषाणि सर्वाणि गृहप्रवेशमङ्गलानि वास्तुपूजाभ्युदयिकश्राद्धादीनि यस्य तादृशं भवनं वाटीम्।

(र) गत्वेति। श्रीमण्डपे कान्तियुक्ते सभागृहे अवस्थितं तस्मिन् शयने शय्यायां। मुहूर्त्तं द्वादशक्षण-परिमितं कालं अत्यल्पसमयमित्यर्थः। अभिषेकादिकं स्नानादिकं, अशनावसानं भोजनान्तं, दिवसविधिं दिनकार्य्यम्।

(ल) अभ्यन्तर इति। अवस्थानं अवस्थितिं। अतीवादरपात्रत्वादिति भावः।

(व) एवमिति। किञ्चेति चार्थः। एवं प्रायेण इत्थम्भूतेन अस्य चन्द्रापीडस्य उदन्तेन वृत्तान्तेन व्यापारेण तदहस्तद्दिनं परिणतिमवसानम्।

(श) गगनेति। रविमण्डलं सूर्य्यविम्बं कर्त्तृ, उन्मुक्ता ऊर्द्ध्वं त्यक्ताः पादाः किरणा येन तादृशं सत्,

করিয়া, পূর্ব্বনির্ম্মিত নিজের বাটীতে গমন করিলেন। সেই বাটী, রাজবাটীর যেন প্রতিমূর্ত্তি-স্বরূপ ছিল, তাহার দ্বারে দুইটি শুভ্রবর্ণ জলপূর্ণ কলস ছিল, তোরণের সঙ্গে মাঙ্গলিক পুষ্পমালা বদ্ধ ছিল, বহুতর পতাকা উড়িতেছিল, বাদিত মাঙ্গলিক তূর্য্য-ধ্বনিতে দিগ্‌দিগন্তর পূর্ণ করিতেছিল, অভ্যন্তরে বহুতর প্রস্ফুটিত পদ্মপুষ্প বিক্ষিপ্ত ছিল, অনতিপূর্ব্বে হোমকার্য্য করা হইয়াছিল, ভিন্ন ভিন্ন আকারের পরিজনগণ উজ্জ্বলবেশে বিচরণ করিতেছিল এবং সেই বাটীতে গৃহপ্রবেশের সমস্ত মঙ্গলকার্য্যই সম্পাদন করা হইয়াছিল। (র) রাজকুমার সেই বাটীতে যাইয়া, সুন্দর সভামণ্ডপ-স্থিত শয্যার উপরে অতি অল্প সময় উপবেশন করিয়া, সেই সকল রাজপুত্রগণের সহিত, স্নান হইতে ভোজনপর্য্যন্ত দিনের কর্ত্তব্য কার্য্য সম্পাদন করিলেন। (ল) এবং বাটীর ভিতরে শয়নের ঘরেই ইন্দ্রায়ুধের থাকিবার জায়গা নির্দ্দিষ্ট করিলেন।

(ব) চন্দ্রাপীড়ের এইরূপ ব্যাপারে সেই দিন শেষ হইয়া গেল। (শ) তখন সূর্য্যমণ্ডল উপরের দিকে কিরণ নিক্ষেপ করিয়া আকাশ হইতে পড়িতে লাগিল, তাহাতে বোধ হইল

(१) अभिषेकादि। (२) स्वशयनीय...।

পাদং পপাত। (গ) জলপ্রবাহ ইব (১) রথচক্রমার্গানুসারিণা দিবসকরস্য বাসরালোকঃ প্রতীচীং ককুভমগাৎ (২)। (ঘ) অভিনবপল্লবলোহিততলেন (৩) করেণেবাধোমুখপ্রসৃতেন রবিবিম্বেন (৪) বাসরঃ কমলরাগমশেষং মমার্জ। (ঙ) কমলিনী-পরিমল-পরিচয়াগতালিমালাকুলিত-কণ্ঠং কালপাশৈরিব চক্রবাক-মিথুনমাকৃষ্যমাণং বিজঘটে। (চ) করপুটৈরাদিবসান্তং (৫) আপীতমর-

---

গগনতলাদবতরন্ত্যাঃ, দিবসশ্রিয়ো দিনলক্ষ্ম্যাঃ, স্বপ্রভয়া স্বকীয়কিরণাবল্যা পিহিতং আবৃতং রন্ধ্রং বিবরভাগো যস্য তাদৃশং পদ্মরাগনূপুরমিব, পপাত আকাশাদিতি শেষঃ। রবিমণ্ডলং রন্ধ্রহীনমধ্যং, সুতরাং তৎসাম্যপ্রতিপাদনায় স্বপ্রভাপিহিতরন্ধ্রমিতি নূপুরবিশেষণম্। স্বপদং নূপুরপরম্। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ঘ) জলেতি। বাসরালোকো দিনদীপ্তিঃ, জলপ্রবাহ ইব, দিবসকরস্য সূর্য্যস্য রথচক্রমার্গানুসারিণা রথচক্রপথক্রমেণ রথচক্রপথবদিতিত্যর্থঃ, প্রতীচীং ককুভং পশ্চিমাং দিশম্ অগাৎ। জলপ্রবাহপক্ষে তু রথচক্রক্ষুণ্ণ-পথানুসরণেনেত্যর্থঃ তস্য নিম্নগামিত্বাৎ। অত্রোপমালঙ্কারঃ। তথা জলপ্রবাহ এতি, বাসরালোকস্তু অগাদিতি কালভেদাদুপমাগতভগ্নপ্রক্রমতাদোষঃ "কাপ্যভিখ্যা তয়োরাসী" দিত্যাদিদর্পণোদাহৃতবৎ, স চ যথা জলপ্রবাহো রথচক্রমার্গানুসারেণ নিম্নমেতি তথা বাসরালোক...ইতি পাঠেন সমাধেয়ঃ।

(ঙ) অভীতি। বাসরো দিবসঃ, করেণেব হস্তেনেব, অভিনবস্য পল্লবস্যেব লোহিতং তলমুপরিভাগো যস্য তেন, অধোমুখেন সতা প্রসৃতেন প্রচলিতেন রবিবিম্বেন সূর্য্যমণ্ডলেন, অশেষং সমস্তং কমলরাগং পদ্মস্য রক্তিমানং মমার্জ প্রোঞ্ছিতবানিব। অন্যোঽপি তাদৃশহস্তেন বস্তুবিশেষস্য বর্ণং প্রোঞ্ছতি। সূর্য্যস্যাস্তগমনেন পদ্মস্য সঙ্কোচাদ্রক্তিমাপগমোঽভূদিতি তাৎপর্য্যম্। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষাপ্রতীয়মানক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(চ) কমলিনীতি। কমলিনীপরিমলস্য পদ্মিনীসৌরভস্য পরিচয়েন লোভাতিরেকেণ আগতয়া উপস্থিতয়া, তস্যা মুদ্রণেন তৎসৌরভলাভাভাবাদুড্ডীয়তৎকণ্ঠ এবোপবিষ্টয়েত্যর্থঃ অলিমালয়া ভ্রমরশ্রেণ্যা আকুলিতো ব্যাপ্তঃ কণ্ঠো গলদেশো যস্য তৎ তথোক্তং, অতএব কালপাশৈর্গলবদ্ধশ্যামবর্ণরজ্জুভিরাকৃষ্যমাণমিব সৎ, কেনাপীতি শেষঃ, চক্রবাকমিথুনং চক্রবাকপক্ষিদম্পতী বিজঘটে বিযুক্তং বভূব। নিশাগমেন স্বভাবসিদ্ধেঽপি চক্রবাক-

---

যে—দিন-লক্ষ্মী আকাশ হইতে অবতরণ করিয়া যাইতেছেন, তাঁহার পদ্মরাগমণিময় একখানা নূপুর যেন পড়িতেছে এবং সেই নূপুরখানার মধ্যের রন্ধ্র ভাগ যেন তাহারই কিরণে পূর্ণ হইয়া গিয়াছে। (ঘ) জলের প্রবাহ যেমন রথচক্রদ্বারা খনন করা পথে নীচের দিকে যাইয়া থাকে, দিনের আলোকও তেমন সূর্য্যের রথচক্র-পথানুসারে পশ্চিমদিকে যাইতে লাগিল। (ঙ) দিন, নূতন-পল্লব-তুল্য-রক্তবর্ণ এবং অধোমুখ হইয়া প্রচলিত হস্তের ন্যায় সূর্য্যমণ্ডলদ্বারা পদ্মের সমস্ত রক্তিমা যেন মুছিয়া ফেলিল। (চ) ভ্রমরগণ, পদ্মিনীর সৌরভলোভে আসিয়াছিল, কিন্তু পদ্মিনী মুদ্রিত হওয়ায় চক্রবাকদম্পতীর কণ্ঠে যাইয়া বসিল, সুতরাং তখন সেই চক্রবাক-

---

(১) সলিলপ্রবাহ ইব। (২) দিশমগমৎ। (৩) পল্লবদললোহিতকরেণ।
(৪) দিবসকরবিম্বেন। (৫) দিবসান্তং।

विन्दमधुरसमिव रक्तातपच्छलेन गगनगमनखेदादिव दिवसकरविम्बं ववाम। (ख) क्रमेण च प्रतीचीकर्णपूर-रक्तोत्पले लोकान्तरमुपगते भगवति गभस्तिमालिनि, (क) समुल्लसितायामम्बर-(१) तड़ाग-विकच-कमलिन्यां सन्ध्यायाम्, (ख) कृष्णागुरु-पङ्क-पत्रलताखिव तिमिरलेखासु स्फुरन्तीषु दिशां मुखेषु, (२) (ग) अलिकुलमलिनेन (३) कुवलयवनेनेव रक्तकमलाकरे

दम्पतीवियोगे भ्रमराणां तत्कण्ठोपवेशनात् कृष्णवर्णपाशैराकर्षणहेतुकवियुक्तत्वमुत्प्रेक्षितमिति बोध्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ख) करैरिति। दिवसकरविम्बं सूर्य्यमण्डलं कर्त्तृ, आदिवसान्तं दिवावसानं यावत् करपुटैः किरणसमूहैरेव करपुटैरञ्जलिभिः आपीतं सम्यक्पीतं अरविन्दानां पद्मानां मधुरसं मकरन्दद्रवं, गगनगमनखेदादिव आकाशपर्य्यटनश्रमादिव हेतोः, रक्तातपच्छलेन लोहितवर्णालोकप्रसारणव्याजेन ववाम उज्जगारेव। अन्योऽपि श्रमातिरेकात् पीतजलादिकं वमति अत्र किरणहस्तयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, हेतूत्प्रेक्षा, सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षा चेत्य तेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(क) क्रमेणेति। प्रतीच्याः पश्चिमाया दिशः कर्णपूरं कर्णाभरणीभूतं यत् रक्तोत्पलं तद्रूपे, भगवति माहात्म्यवति, गभस्तिमाला किरणश्रेणिरस्यास्तीति तस्मिन् सूर्य्ये, लोकान्तरं अन्यद्भुवनं अस्तमित्यर्थः उपगते सति। अत्र सूर्य्ये रक्तोत्पलत्वारोपः शाब्दः प्रतीच्यां स्त्रीत्वारोपस्त्वार्थ इत्यसमासेऽपि "मुखं तव कुरङ्गाक्षि! सरोजमिति नान्यथा" इति दर्पणोदाहृतवदेकदेशविवर्त्ति रूपकमलङ्कारः।

(ख) समिति। अम्बरमाकाशमेव तड़ागो निर्म्मलत्वनीलत्वसाम्यात् सरोवरस्तस्य विकचकमलिन्यां रक्तत्वात् प्रस्फुटितपद्मिनीस्वरूपायां सन्ध्यायां समुल्लसितायां प्रकाशितायां सत्यां। अत्राम्बरे तड़ागत्वारोपः सन्ध्यायां विकचकमलिनीत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(ग) कृष्णेति। कृष्णागुरुपङ्कस्य गाढकालागुरुद्रवस्य पत्रलतासु पत्रलताकारचिह्नविशेषेष्विव तिमिरलेखासु अन्धकारावलीषु दिशां मुखेषु भागेषु वदनेषु च, स्फुरन्तीषु प्रसरन्तीषु सतीषु। अत्र तिमिरलेखानां पत्रलतासाम्यं शाब्दं, दिशां स्त्रीसाम्यन्तु गम्यमित्येकदेशविवर्त्तिन्युपमालङ्कारः।

(घ) अलीति। अलिकुलेन भ्रमरसमूहोपवेशनेनेत्यर्थः मलिनं तेन, कुवलयवनेन नीलोत्पलसमूहेन रक्तकमलाकरे रक्तपद्मसरोवर इव, अलिकुलवन्मलिनं तेन तिमिरनिकरेण सन्ध्यारागे उत्सार्य्यमाणे पूर्य्यमाणे दूरीक्रियमाणे च सति। अत्रोपमालङ्कारः।

দম্পতী গলবদ্ধ কৃষ্ণবর্ণ রজ্জুদ্বারা আকৃষ্যমাণ হইয়াই যেন পরস্পর বিচ্ছিন্ন হইয়া গেল। (খ) সূর্য্যমণ্ডল, দিনের শেষপর্য্যন্ত করপুটদ্বারা পদ্মের যে সকল মধু পান করিয়াছিল, তাহা যেন আকাশপর্য্যটনের পরিশ্রমে রক্তবর্ণ রৌদ্রের ছলে বমন করিতে লাগিল। (ক) ক্রমে পশ্চিম দিকের কর্ণালঙ্কার-রক্তোৎপলস্বরূপ ভগবান্ সূর্য্যদেব অস্তমিত হইলেন। (খ) আকাশরূপ সরোবরের সন্ধ্যারূপ পদ্মিনী প্রকাশ পাইল। (গ) গাঢ় কৃষ্ণাগুরুর রসে নির্ম্মিত পত্রলতাচিহ্নের ন্যায় অন্ধকারশ্রেণী সকল দিকে বিস্তৃত হইয়া পড়িল। (ঘ) ভ্রমরগণের উপবেশনে মলিনবর্ণ

(१) अम्बरतल...। (२) दिशामुखेषु। (३) अलिकुलेन मलिनेषु।

तिमिरनिकरेण (१) उत्सार्यमाणे सन्ध्यारागे, (घ) कमलिनी-निपीतमातप-मुन्मूलयितुमन्धकारकरपल्लवेष्विव (२) प्रविशत्सु (३) रक्तकमलोदराणि मधु-करकुलेषु, (ङ) शनैः शनैश्च निशाविलासिनी-मुखावतंस-पल्लवे गलिते सन्ध्या-रागे, (च) दिक्षु (४) विक्षिप्तेषु सन्ध्यादेवतार्चन-(५) बलिपिण्डेषु, (छ) शिखर-देश-लग्नतिमिरास्वनारूढमयूरास्वपि मयूराधिष्ठितास्विव मयूरयष्टिषु, (ज) गवाक्षविवरनिलीनेषु प्रासादलक्ष्मीकर्णोत्पलेष्विव (६) पारावतेषु, (झ)

(ङ) कमेति। कमलिनीभिर्निपीतं दिवसे निगीर्णं आतपं रविकिरणं उन्मूलयितुं स्वयमुत्पा-दुत्पाटयितुं अन्धकाराणां करपल्लवेष्विव नीलत्वसाम्यात् प्रसारितहस्तेष्विव मधुकरकुलेषु, रक्तकमलानां उदराणि प्रविशत्सु सत्सु, निपीतद्रव्याणामुदरस्थत्वेव सत्त्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) शनैरिति। निशा रात्रिरेव विलासिनी प्रसाधनप्रिया रमणी तस्या मुखस्य आद्यभागस्य वदनस्य च अवतंसपल्लवे रक्ततासाम्यात् आभरणीभूतकिसलयस्वरूपे सन्ध्यारागे शनैः शनैर्गलिते दूरीभूते च सति। अत्र पूर्ववत् परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(छ) दिक्ष्विति। सन्ध्यायां यानि देवतार्चनानि वास्तुप्रभृतिपूजाः तेषां बलिपिण्डेषु उपहारीभूता-न्नादिद्रव्येषु दिक्षु विक्षिप्तेषु साधकैर्विकीर्णेषु सत्सु।

(ज) शिखरेति। शिखरदेशे उपरिभागे लग्नं तिमिरं यासां तासु, अतएव अनारूढो मयूरो यासु तास्वपि मयूरयष्टिषु मयूरावस्थानदण्डेषु मयूराधिष्ठितास्विव सतीषु। अग्रलग्नतिमिरस्यैव मयूरत्वम् प्रतीतेरिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्यते। तथा मयूरशब्दस्यासकृत् पाठात् पुन-रुक्ततादोषः, केचित्तु अनवीकृतत्वदोष इति वदन्ति। सुतरां 'अनारूढमयूरास्वपि तदधिष्ठितास्विव तद्यष्टिषु' इति पाठे तूभयमतेऽपि निर्दोषः।

(झ) गवाक्षेति। प्रासादलक्ष्म्याः अट्टालिकाश्रियः कर्णोत्पलेष्विव कर्णपूरीभूतनीलोत्पलेष्विव, गवा-क्षाणां कर्णसमानदेशस्थायित्वात् पारावतानाञ्च तदुत्पलसमाननीलत्वादिति भावः, पारावतेषु गृहकपोतेषु गवाक्षविवरेषु निलीनेषु तूष्णीं स्थितेषु सत्सु। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

নীলোৎপলসমূহ যেমন রক্তপদ্মের সরোবরকে আবৃত করে, সেইরূপ অন্ধকাররাশি সন্ধ্যার রক্তিমাকে লুপ্ত করিল। (ঙ) পদ্মিনী সমস্ত দিন যাবৎ সূর্য্যের যে সকল কিরণ পান করিয়া-ছিল, তাহা উদ্ধৃত করিবার জন্য, অন্ধকারের প্রসারিত হস্তের ন্যায় ভ্রমরগণ, রক্ত-পদ্মের ভিতরে প্রবেশ করিতে লাগিল। (চ) রাত্রিরূপ রমণীর মুখের আভরণপল্লবস্বরূপ সন্ধ্যার রক্তিমা ধীরে ধীরে দূরীভূত হইল। (ছ) সাধকগণ সন্ধ্যাকালীন দেবতাপূজার উপহারদ্রব্য সকল দিকে বিক্ষিপ্ত করিতে লাগিলেন। (জ) ময়ূরগণের আবাস যষ্টির উপরিভাগে অন্ধকার পড়িয়াছিল, সুতরাং সে স্থানে ময়ূরগণ আরোহণ না করিয়া থাকিলেও যেন ময়ূরগণ অবস্থান

---

(१) तिमिरेण। (२) अन्धकारपल्लवेष्विव। (३) विशत्सु। (४) दिक्षु दिक्षु।
(५)...अर्चना...। (६) कर्णोत्पलेषु।

বিগতবিলাসিনীসংবাহন-নিশ্চল-(১) কাঞ্চন-পীঠাসু মূকীভূতঘণ্টাসু (২) অন্তঃপুরদোলাসু, (ঞ) ভবনসহকার-শাখাবলম্বিত-(৩) পঞ্জরেষু বিগতালাপেষু শুকসারিকানিবহেষু, (ট) সঙ্গীত-(৪) বিরাম-বিশ্রান্তরবাসূৎসার্য্যমাণাসু বীণাসু, (ঠ) যুবতি-নূপুর-শব্দোপশম-নিভৃতেষু ভবনকলহংসেষু, (ড) অপনীয়মান-কর্ণ-শঙ্খ-চামর-নক্ষত্রমালা-মণ্ডনেষু (৫) মধুকর-শূন্য কপোল-

(ঞ) বিগতেতি। বিগতেন দূরীভূতেন বিলাসিনীনাং দোলনপ্রিয়াণাং রমণীনাং সংবাহনেন দোলনেন কারণেন, নিশ্চলানি নিস্পন্দানি কাঞ্চনপীঠানি স্বর্ণনির্ম্মিতোপবেশনপীঠানি যাসাং তাসু তাদৃশীষু, অন্তঃপুরস্য দোলাসু দোলনযন্ত্রেষু, মূকীভূতা নিঃশব্দা জাতা ঘণ্টা যাসাং তাসু তাদৃশীষু সতীষু। দোলনকৌতুকং পরিহায় বিলাসিনীনাং গৃহপ্রবেশাদিতি ভাবঃ।

(ট) ভবনেতি। ভবনসহকারাণাং বাটীস্থিতাম্রবৃক্ষাণাং শাখাসু অবলম্বিতানি স্থাপিতানি পঞ্জরাণি যেষাং তেষু তথোক্তেষু, শুকসারিকানিবহেষু বিগতালাপেষু উক্তিপ্রত্যুক্তিহীনেষু সৎসু, নিদ্রাবেশাদিতি ভাবঃ।

(ঠ) সঙ্গীতেতি। সঙ্গীতবিরামেণ বিশ্রান্তস্তিরোহিতো রবো যাসাং তাসু, বীণাসু উৎসার্য্যমাণাসু কিঙ্করৈঃ সঙ্গীতস্থানাদপনীয়মানাসু সতীষু।

(ড) যুবতীতি। ভবনকলহংসেষু গৃহপালিতহংসেষু, যুবতীনাং যে নূপুরশব্দাস্তেষামুপশমেন তাসাং বিশ্রান্ততয়া বিরামেণ, নিভৃতেষু নিঃশব্দেষু সৎসু। যুবতীনাং নূপুরশব্দেষু প্রবৃত্তেষু কলহংসানাং রবকরণাৎ নিবৃত্তেষু চ তেষু তেষামপি তদকরণাদিতি ভাবঃ।

(ঢ) অপেতি। মধুকরশূন্যা নিদ্রাবেশেন মদস্রাবাভাবাদ্ভ্রমরহীনাঃ কপোলভিত্তয়ো গণ্ডদেশা যেষাং তেষু, মত্তবারণেষু মত্তহস্তিষু, অপনীয়মানানি তদানীং সজ্জতায়া অনাবশ্যকতয়া হস্তিপালৈর্মুচ্যমানানি, কর্ণয়োঃ শঙ্খস্য ললাটাস্থ্নশ্চ চামরাণি, নক্ষত্রমালা সপ্তবিংশতিমুক্তাগ্রথিতমাল্যানি তদিতরাণি চ মণ্ডনানি ভূষণানি যেষাং তেষু তথোক্তেষু সৎসু। "শঙ্খো নিধৌ ললাটাস্থ্নি কম্বৌ ন স্ত্রী।" "সৈব নক্ষত্রমালা স্যাৎ সপ্তবিংশতিমৌক্তিকৈঃ।" ইতি চামরঃ।

করিতেছে বলিয়া বোধ হইতে লাগিল। (ঝ) অট্টালিকালক্ষ্মীর কর্ণের নীলোৎপলের ন্যায় কপোতগণ, গবাক্ষ-বিবরে নিঃশব্দে অবস্থান করিতে লাগিল। (ঞ) বিলাসিনীরা তখন আর দুলিতেছিল না বলিয়া, অন্তঃপুরের দোলাগুলির নীচের সোনার পীড়িগুলি নিশ্চল ও উপরের ঘণ্টাগুলি নীরব হইয়াছিল। (ট) বাটীর আম্রবৃক্ষের শাখাতে বিলম্বিত (ঝুলান) পিঞ্জরের ভিতরে শুক ও সারিকাগণ নিঃশব্দ হইয়াছিল। (ঠ) সঙ্গীতচর্চ্চা বিরত হওয়ায় বীণার রবও বিরত হইল, তখন ভৃত্যগণ সেই বীণাগুলি সরাইয়া নিতে লাগিল। (ড) যুবতিদিগের নূপুরের শব্দ নিবৃত্তি পাইল, তাহাতে গৃহপালিত কলহংসগণও নীরব হইল। (ঢ) নিদ্রার আবেশে মত্তহস্তিগণের মদজল গলিত হইতেছিল না বলিয়া গণ্ডস্থল ভ্রমর-শূন্য হইল এবং

(১)...নিশ্চলাসু। (২) ঘণ্টাস্বরাসু, ঘণ্টারবাসু। (৩)···অবলম্বি...।
(৪) সঙ্গীতক···। (৫) মণ্ডনপিণ্ডেষু, মণ্ডনেষু।

भित्तिषु मत्तवारणेषु, (ढ) प्रदीप्यमानेषु राजवल्लभ-तुरङ्गम-(१) मन्दुरा-प्रदीपेषु, (ण) प्रविशन्तीषु प्रथमयामकुञ्जरघटासु, (त) कृतस्वस्त्ययनेषु (२) निष्क्रामत्सु पुरोहितेषु, (थ) विसर्जित-राजलोक-विरलपरिजनेषु विस्तारितेष्विव राजकुलकक्षान्तरेषु, (द) प्रज्वलित-दीपिका सहस्र-प्रतिबिम्ब-चुम्बितेषु कृत-विकच-चम्पक-दलोपहारेष्विव मणिभूमि-कुट्टिमेषु, (ध) निपतित-दीपालोकासु रवि-विरहार्त्त-नलिनी-विनोदनागत-बालातपास्विव भवनदीर्घि-

(ण) प्रदीप्येति। राज्ञो वल्लभानां प्रियाणां तुरङ्गमानामश्वानां मन्दुरायाः शालायाः प्रदीपेषु प्रदीप्यमानेषु ज्वाल्यमानेषु सत्सु। "वाजिशाला तु मन्दुरा" इत्यमरोक्तेर्मन्दुरापदेनैवाश्वशालाप्रतीतावपि तदानीमश्वस्थितिद्योतनार्थं तुरङ्गमपदमिति न पुनरुक्ततादोषः धनुर्ज्यादिशब्दवत्।

(त) प्रवीति। प्रथमयामस्य कुञ्जरघटासु रात्रेः प्रथमप्रहरे द्वाररक्षकहस्तिसमूहेषु प्रविशन्तीषु सतीषु।

(थ) कृतेति। स्वस्ति मङ्गलमयते प्राप्यतेऽनेनेति स्वस्त्ययनं देवपूजादि, कृतानि स्वस्त्ययनानि यैस्ताद्दशेषु पुरोहितेषु निष्क्रामत्सु सत्सु।

(द) विसीति। विसर्ज्जितो विश्रामाय स्वस्वावासं गन्तुं महाराजेनानुज्ञातः राजलोकः सामन्तवर्गस्तेन हेतुना विरला अल्पीभूताः परिजना येषु तेषु, राजकुलकक्षान्तरेषु राजवाटीप्रकोष्ठाभ्यन्तरेषु, विस्तारितेष्विव सत्सु विरलपरिजनत्वादेव पूर्वतः प्रसारितवत् प्रतीयमानेष्वित्यर्थः। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ध) प्रज्वलितेति। प्रज्वलितानां दीपिकासहस्राणां प्रदीपसमूहानां प्रतिबिम्बैश्चुम्बितेषु संसृष्टेषु, मणिभूमिकुट्टिमेषु मणिमयबद्धभूमिषु, कृतो विकचचम्पकदलानां प्रस्फुटितचम्पकपुष्पपत्राणां उपहारो निक्षेपो येषु तेष्विव सत्सु तत्र तत्र पतितप्रदीपप्रतिबिम्बानां निक्षिप्तविकचचम्पकदलवत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः।

(न) निपतितेति। निपतिता दीपानामालोका यासु तासु, भवनदीर्घिकासु वाटीचतुःसीमान्तर्गत-

হস্তিপালকগণ সেই হস্তিগণের কর্ণযুগলের ও ললাটের চামর, মুক্তার মালা এবং অন্যান্য আভরণ খুলিয়া নিতে লাগিল। (ণ) অশ্বরক্ষকগণ, রাজার প্রিয় অশ্বগণের গৃহমধ্যে প্রদীপ জ্বালিয়া দিতে লাগিল।

(ত) প্রথম প্রহরের হস্তিগণ প্রবেশ করিতে লাগিল। (থ) পুরোহিতগণ স্বস্ত্যয়ন করিয়া বাহির হইতে লাগিলেন। (দ) সামন্তরাজগণ বিদায় লইয়া স্ব স্ব আবাসে গিয়াছিলেন, সুতরাং অল্প অল্প পরিজন ছিল বলিয়া রাজবাটীর প্রকোষ্ঠগুলির অভ্যন্তর যেন বিস্তারিত হইয়াছিল। (ধ) প্রজ্বলিত দীপসমূহের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া মণিময় ভূমিতে (মেঝে) যেন প্রস্ফুটিত চম্পকপুষ্পের দল সকল বিক্ষিপ্ত করিয়া রাখা হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ন) রাজবাটীর চতুঃসীমার মধ্যের দীঘিগুলিতে দীপের আলোক পড়িয়া-

(१)...तुरङ्ग...। (२) कृतराजस्वस्त्ययनेषु।

कासु, (न) निद्रालसेषु पञ्जरकेशरीषु, (प) समारोपितकार्म्मुके गृहीतसायके यामिक इवान्तःपुरप्रविष्टे मकरकेतौ, (फ) अवतंसपल्लवेष्विव सरागेषु कर्णे क्रियमाणेषु सुरतदूतीवचनेषु, (ब) सूर्य्यकान्तमणिभ्य इव (१) संक्रान्तानलेषु ज्वलत्सु (२) मानिनीनां शोकविधुरेषु हृदयेषु, (भ) प्रवृत्ते प्रदोषसमये चन्द्रापीड़ः प्रज्वलितदीपिका-चक्रवालपरिवारश्चरणाभ्यामेव राजकुलं गत्वा पितुः समीपे मुहूर्त्तं (३) स्थित्वा दृष्ट्वा च विलासवतीमागत्य स्वभवन-

---

वापीषु, रविविरहेणार्त्तानां नलिनीनां पद्मिनीनां विनोदनाय आश्वासनाय आगता बालातपा नवोदितसूर्य्यस्य रक्तकिरणा यासु तास्विव सतीषु, प्रतिबिम्बितदीपालोकानां बालातपवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्ववत् पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, क्रियोत्प्रेक्षा, रविनलिन्योः पुंस्त्रीलिङ्गाभ्यां नायकनायिकाव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(प) निद्रेति। पञ्जरकेशरिषु पञ्जरस्थसिंहेषु निद्रया अलसेषु सत्सु।

(फ) समेति। समारोपितकार्म्मुके सज्यीकृतधनुषि गृहीतसायके च, कामिलक्षेषु वाणक्षेपस्य तस्यैव प्रथमसमयत्वादिति भावः, मकरकेतौ मदने, यामिके प्राहरिके जने इव अन्तःपुरप्रविष्टे सति। अत्रोपमालङ्कारः।

(ब) अवेति। अवतंसपल्लवेष्विव कर्णभूषणीभूतकिसलयेष्विव, सरागेषु, जनकतया नायकं प्रत्यनुरागविशिष्टेषु नायकं प्रत्यनुरागजनकेष्वित्यर्थः, पक्षे लौहित्यविशिष्टेषु, सुरतदूत्या वचनेषु वाक्येषु कर्णे क्रियमाणेषु, श्रूयमाणेषु अर्प्यमाणेषु चेत्यर्थे। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(भ) सूर्य्येति। सूर्य्यकान्तमणिभ्यो दिवसे सूर्य्यकरस्पर्शाद्वह्निं वमद्भ्य इत्यर्थः संक्रान्तः सञ्चरितः अनलो येषु तेष्विव, शोकविधुरेषु मानेन स्वयमुत्पादितविरहात्तदानीं कामोद्दीपनया दुःखविह्वलेषु, मानिनीनां हृदयेषु ज्वलत्सु मदनानलेन दह्यमानेषु सत्स्वित्यर्थः। अत्रानलसंक्रमणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) प्रवृत्त इति। प्रदोषसमये इत्यत्र "प्रदोषोऽस्तमयादूर्द्ध्वं घटिकाद्वयमिष्यते।" इति दैवज्ञोक्तलक्षणे काले प्रवृत्ते सञ्जाते सति। प्रज्वलितं दीपिकामण्डलं प्रदीपसमूहः परिवारः परिवेष्टनकारी

ছিল বলিয়া, বোধ হইতেছিল যেন, সূর্য্যের বিরহে দুঃখিত পদ্মিনীকে আশ্বস্ত করিবার জন্য নূতন রৌদ্র আসিয়াছে। (প) পঞ্জরস্থ সিংহগণ নিদ্রার আবেশে অলস হইয়া পড়িতেছিল। (ফ) কামদেব ধনুতে গুণারোপণ ও বাণধারণ করিয়া প্রহরীর ন্যায় অন্তঃপুরে প্রবেশ করিতেছিলেন। (ব) রমণীগণ, নায়কের প্রতি অনুরাগ-জনক রতিদূতীদিগের বাক্য, রক্তবর্ণ কর্ণপল্লবের ন্যায় কর্ণে ধারণ করিতে লাগিল। (ভ) বিরহ-বেদনায় বিহ্বল মানিনীদিগের হৃদয়ে সূর্য্যকান্তমণি হইতেই যেন অগ্নি সংক্রান্ত হইয়াছিল বলিয়া তাহা জ্বলিতে লাগিল। (ম) এইরূপ প্রদোষকাল উপস্থিত হইলে রাজপুত্র চন্দ্রাপীড়, প্রজ্বলিত প্রদীপসমূহে পরিবেষ্টিত হইয়া, পাদচারেই রাজবাটীতে গমন করিয়া, পিতার নিকটে কিছুকাল থাকিয়া

---

(१) सूर्य्यमणिभ्य इव। (२) प्रज्वलत्सु। (३) मुहूर्त्तकं।

मनेकरत्नप्रभाशबलमुरगराजफणामण्डलमिव हृषीकेशः शयनतलमधिशिश्ये। (य)

प्रभातायाञ्च निशीथिन्यां समुत्थाय समभ्यनुज्ञातः पित्रा, अभिनवमृगया-कौतुकाकृष्यमाण(१) हृदयो भगवत्यनुदित एव सहस्ररश्मावारुह्येन्द्रायुधम्, अग्रतो वालेयप्रमाणानाकर्षद्भिः (२) चामीकरशृङ्खलाभिः कौलेयकान्, जरद्व्याघ्र-चर्म्म शबल-वसन-कञ्चुक-(३) धारिभिरनेकवर्ण-पट्ट-चीरिकोद्बद्ध-(४) मौलिभि-रुपचितश्मश्रु-गहनमुखैरेककर्णावसक्तहेमतालीपुटैराबद्ध-निविड़-कक्षैरनवरतश्रमो-

यस्य सः। अनेकेषां नानाविधानां बहूनाञ्च रत्नानां प्रभाभिः शबलं विचित्रं। इदमुभयोरपि विशेषणं उरग-राजस्य अनन्तस्य फणामण्डलं, हृषीकाणामिन्द्रियाणामीशो नियन्तेति हृषीकेशो नारायण इव शयनतलं शय्योपरिभागं अधिशिश्ये अधिष्ठाय शयितवान्। अत्रोपमालङ्कारः।

(य) प्रभातायामिति। अपि चेति चार्थः। निशीथिन्यां रात्रौ। पित्रा तारापीड़ेन समभ्यनुज्ञातो मृगयायामनुमतः। अभिनवेन मृगयाकौतुकेन आकृष्यमाणं हृदयं यस्य सः, चन्द्रापीडो वनं ययावित्यन्वयः। सहस्ररश्मौ सूर्य्ये। चामीकरस्य स्वर्णस्य शृङ्खलाभिः करणैः, बलाय हिता इति वालेया गर्द्दभास्तत्प्रमा-णान् गर्द्दभतुल्यवृहत इत्यर्थः कुले भवाः कौलेयाः कुलकुक्षिग्रीवाभ्य'' इत्येयण, ततश्च स्वार्थे कप्रत्यय इति कौलेयकाः कुक्कुरास्तान्, "चक्रीवन्तस्तु वालेया रासभा गर्द्दभाः खराः।" "कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः।" इति चामरः। अग्रत आकर्षद्भिः। इतस्तृतीयान्तपदानि श्वपोषकैरिति वक्ष्यमाणस्य विशे-षणानि। जरद्व्याघ्रस्य वृद्धव्याघ्रस्य चर्म्मेव शबलं विचित्रं वसनं तस्य कञ्चुकधारिभिस्तन्निर्म्मितवारवाण-धारिभिः, अनेकवर्णानां पट्टानां क्षौमवस्त्राणां चीरिकाभिः क्षुद्रक्षुद्रखण्डैः उद्बद्धा उन्नमय्य संयताः मौलयः संस्पृष्टकेशा यैस्तैः, उपचितैः क्षौराभावाद् वृद्धिं प्राप्तैः श्मश्रुभिर्मुखलोमभिर्गहनानि व्याप्तानि मुखानि येषां तैः, एकस्मिन् कर्णे अवसक्तं लग्नं हेम्नः स्वर्णस्य तालीपुटं अलङ्कारविशेषो येषां तैः, आबद्धा वसनेन संयताः

এবং বিলাসবতীর সহিত সাক্ষাৎ করিয়া, নিজ বাটীতে আগমন করিলেন; পরে নারায়ণ যেমন, বহুতর রত্নের প্রভায় বিচিত্র অনন্তনাগের ফণামণ্ডলে শয়ন করিয়াছিলেন, সেইরূপ বহুতর রত্নের প্রভায় বিচিত্র শয্যার উপরে শয়ন করিলেন।

(য) এবং রাত্রি প্রভাত হইলে উঠিয়া, পিতার অনুমতি লইয়া, নূতন মৃগয়া-কৌতুকে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া ভগবান্ সূর্য্য উদিত না হইতেই ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া, বহুতর হস্তী, অশ্ব ও পদাতিসৈন্যে পরিবেষ্টিত হইয়া বনে গমন করিলেন। অগ্রে অগ্রে ধাবিত কতকগুলি কুক্কুরপালক, অনবরত কোলাহল করিয়া চন্দ্রাপীড়ের মৃগয়া-গমনের উৎসাহ দ্বিগুণ বর্দ্ধিত করিতে লাগিল, তাহারা গর্দ্দভের ন্যায় বৃহৎ বৃহৎ কুক্কুরদিগকে স্বর্ণশৃঙ্খলদ্বারা আকর্ষণ করিয়া লইয়া যাইতেছিল, বৃদ্ধব্যাঘ্রের চর্ম্মদ্বারা নির্ম্মিত বিচিত্র সাঁজোয়া ধারণ করিয়াছিল, নানাবর্ণের পট্টবস্ত্রের খণ্ডদ্বারা কেশকলাপ উন্নমিত করিয়া বন্ধন করিয়াছিল, এবং বৃহৎ

(१)...अवकृष्यमाण...। (२) वालेयद्वीपिप्रमाणान्, आकर्षयद्भिः। (३)...शबलकञ्चुक...।
(४)...अवबद्ध, ऊर्द्ध्वबद्ध...।

पचितोरुपिण्डकैः (१) कोदण्डपाणिभिः (२) श्वपोषकैरनवरत-कृत-कोलाहलैः प्रधावद्भिर्द्विगुणीक्रियमाणगमनोत्साहो बहु-गज-तुरग-पदाति-(३) परिवृतो वनं (४) ययौ। (य)

तत्र च कर्णान्ताकृष्ट-(५) मुक्तैर्विकच-कुवलय-पलाश-कान्तिभिर्भल्लैः, मद-कल-कलभ-कुम्भ-भित्ति-भिदुरैश्च नाराचैः, चाप-टङ्कार-भय-(६) चकित-वनदेवता-र्द्धाक्ष-वीक्षितो वनवराहान् केसरिणः (७) शरभांश्चामराननेककुरङ्गांश्च (८) सहस्रशो जघान। (र) अन्यांश्च जीवत एव महाप्राणतया स्फुरतो जग्राह। (ल)

निविड़कक्षा दृढ़परिकरा यैस्तैः, अनवरतश्रमेण उपचितौ वृद्धिं प्राप्तौ ऊरुपिण्डौ ऊरुमांसानि येषां तैः, कोदण्डानि धनूंषि पाणिषु येषां तैः, अनवरतं कृतः कोलाहलो यैस्तैः, तथा प्रधावद्भिः, श्वपोषकैः कुक्कुर-पालकैर्व्याधविशेषैः, द्विगुणीक्रियमाणो गमनोत्साहो यस्य सः, तथा बहुभिर्गजैस्तुरगैः पदातिभिश्च परिवृतः।

(र) तत्रेति। किञ्च तत्र वने, चापटङ्काराद्धनुषः शब्दाद्भयेन चकिताभिस्त्रस्ताभिर्वनदेवताभिः अर्द्धाक्षेण भयवशादेवार्द्धसङ्कुचितेन नेत्रेण वीक्षितो दृष्टश्चन्द्रापीडः कर्णान्तं आकृष्टा अनन्तरं मुक्तास्त्यक्तास्तैः, तथा विकचानां प्रस्फुटितानां कुवलयानां नीलोत्पलानां यानि पलाशानि दलानि तेषामिव कान्तिः शोभा येषां तैः, भल्लैरर्द्धचन्द्राकाराग्रबाणैः, मदकलानां मदमत्तानां कलभानां त्रिंशद्वर्षीय-करिशावकानां याः कुम्भ-भित्तयो भित्तिवद्विस्तृता दृढाश्च कुम्भदेशास्तासां भिदुरा विदारकास्तैः, नाराचैर्लौहमयैर्बाणैश्च। केसरिणः सिंहान्। शरभान् अष्टापदमृगान्। चामरान् चमरविशिष्टान् अनेककुरङ्गान् अनेकविधहरिणान्। अत्र अर्द्धाक्षेण वनदेवताकर्तृकवीक्षणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः, विकचेत्यादौ लुप्तोपमा चानयो-मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ल) अन्यानिति। महाप्राणतया महाबलतया। अन्यान् पशून्। स्फुरतः स्पन्दमानान्।

বৃহৎ শ্মশ্রুরাজিতে তাহাদের মুখমণ্ডল ব্যাপ্ত ছিল, এক এক কর্ণে স্বর্ণনির্ম্মিত তালীপুট নামক অলঙ্কার ছিল, দৃঢ়ভাবে কক্ষদেশ বদ্ধ ছিল, অবিশ্রান্ত পরিশ্রম করায় উরুযুগল স্থূল হইয়াছিল এবং হস্তে ধনুক ছিল।

(র) চন্দ্রাপীড় সেই বনে প্রবেশ করিয়া কর্ণপর্য্যন্ত ধনু আকর্ষণপূর্ব্বক নিক্ষিপ্ত, প্রস্ফুটিত নীলোৎপলদলের ন্যায় শোভিত ভল্লদ্বারা এবং মদমত্ত হস্তিশাবকের কুম্ভবিদারণে সমর্থ নারাচদ্বারা সহস্র সহস্র বন্যশূকর, সিংহ, শরভ (ভয়ঙ্কর পশুবিশেষ—ইহাদের আটখানা করিয়া পা আছে), চমরবিশিষ্ট হরিণ ও অন্যান্য নানাবিধ হরিণ বধ করিলেন। (ল) আর অত্যন্ত দৈহিক বল ছিল বলিয়া, স্পন্দমান অন্যান্য পশুদিগকে জীবন্ত অবস্থায়ই ধরিয়াছিলেন।

---

(१)...पिण्डकैः। (२) दण्डपाणिभिः। (३)...पादातिभिः।

(४) घनं वनम्। (५)...अवकृष्ट...। (६) चापटङ्काररव...। (७) वनवराहकेसरिणः।

(८) चमराननेकविध...।

समारूढे च मध्यमह्नः सवितरि वनात्, स्नानोत्थितेनेव (१) श्रमसलिल-बिन्दुवर्षमनवरतमुज्झता मुहुर्मुहुर्दशनविघट्टनैः खणखणायित-खर-खलीनेन श्रम-शिथिल-मुख-विगलित (२) फेनिल-रुधिर-लवेन पर्य्याण-पट्टकानुसरणोत्थित-(३) फेन-राजिना कर्णावतंसीकृतमुत्फुल्लकुसुमशबलमलिपटल-झङ्कार-(४) मुखरं वनगमनचिह्नं पल्लव-स्तवकमुद्वहतेन्द्रायुधेनोह्यमानः, (व) समुद्गतस्वेदतया-ऽन्तरार्द्रीकृत-(५) मण्डलेन मृग-रुधिर-लव-शत-शबलेन वारबाणेन द्विगुणतर-मुपजनितकान्तिः, (६) (श) अनेकरूपानुसरण-(७) सम्भ्रम-परिभ्रष्ट-छत्रधर-

(व) समेति। सवितरि सूर्य्ये अह्नो दिवसस्य मध्यं समयं समारूढे प्राप्ते सति कुमारो वनात् स्वभवन-माजगामेत्यन्वयः। स्नानोत्थितेनेव स्नानात् परमुत्थितेनेव सतेत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अनवरतं श्रमसलिलबिन्दुवर्षं घर्म्मबिन्दुवृष्टिं उज्झता त्यजता। इतस्तृतीयैकवचनान्तपदानि इन्द्रायुधेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। मुहुर्मुहुः दशनैर्दन्तैर्यानि विघट्टनानि घर्षणानि तैः, खणखणायितः खणखणेति शब्दायमानी-कृतः खरस्तीक्ष्णः खलीनः कविका येन तेन। श्रमेण शिथिलात् विवृतादित्यर्थः मुखात् विगलितः फेनिलो लालाफेनवान् रुधिरलवो रक्तबिन्दुर्यस्य तेन। पर्य्याणं पल्ययनं तस्य यः पट्टकः स्थितिपीठं तस्मिन्ननुसरणं त-द्यावद्गमनं यस्याः सा तादृशी सती उत्थिता फेनराजिर्यस्य तेन। कर्णावतंसीकृतं कर्णभूषणीकृतं, उत्फुल्लैः विकसितैः कुसुमैः शबलं विचित्रं, अलिपटलस्य तत्सौरभलोभेनागतस्य भ्रमरसमूहस्य झङ्कारेण मुखरं शब्दायमानं, वनगमनचिह्नस्वरूपं पल्लवस्तवकं किसलयगुच्छं उद्वहता धारयता इन्द्रायुधेन उह्यमानः पृष्ठेन धार्य्यमाणः कुमारः।

(श) समुद्गतेति। समुद्गतस्वेदतया उत्पन्नघर्म्मतया हेतुना, अन्तरभ्यन्तरे आर्द्रीकृतानि मण्डलानि वर्त्तुलाकारभागा यस्य तेन, मृगरुधिराणां लवशतेन बिन्दुसमूहेन शबलो विचित्रस्तेन, वारबाणेन कञ्चुकेन द्विगुणतरं यथा स्यात्तथा उपजनिता कान्तिः शोभा यस्य सः, कुमारः।

(ব) সূর্য্য, দিনের মধ্যসময়ে উপস্থিত হইলে, রাজপুত্র ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া সেই বন হইতে নিজের বাটীতে আগমন করিলেন; তখন ইন্দ্রায়ুধ পরিশ্রমবশতঃ গাত্র হইতে অবিশ্রান্ত ঘর্ম্মবিন্দু বর্ষণ করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সে স্নান করিয়া উঠিয়াছে; বারংবার দন্তের ঘর্ষণে ইন্দ্রায়ুধের মুখের তীক্ষ্ণ কড়িয়াল 'খণ খণ' করিতেছিল; পরিশ্রমবশতঃ বিবৃত মুখ হইতে ফেনবিশিষ্ট রুধিরবিন্দু নির্গত হইতেছিল; পালানের কাঠখানা পর্য্যন্ত ফেনরাজি উঠিয়াছিল, প্রস্ফুটিত নানাবিধ পুষ্প থাকায় বিচিত্র ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে শব্দায়মান এবং বনগমনের চিহ্নস্বরূপ দুইটি পল্লবস্তবক অলঙ্কারস্বরূপ দুই কর্ণে ধারণ করিতেছিল। (শ) চন্দ্রাপীড়ের শরীর হইতে ঘর্ম্মজল উৎপন্ন হইয়া সাঁজোয়ার ভিতরের বর্ত্তুলাকার অংশগুলিকে আর্দ্র করিয়াছিল এবং হরিণের রক্তবিন্দুসমূহে তাহার উপরিভাগ বিচিত্র হইয়াছিল,

(१) स्नानोत्थितेन। (२)...गलित...। (३)—अनुसारोत्थित...। (४)...झङ्काररव...।
(५) अन्तरान्तरार्द्रीकृत...। (६) उपजातकान्तिः। (७)...अनुसार...।

र्यया (१) छत्रीकृतेन नवपल्लवेन (२) निवार्य्यमाणातपः, (ष) विविध-वन-लता-कुसुम-रेणु-धूसरो वसन्त इव विग्रहवान्, (स) अश्व-खुर-रजो-मलिन-ललाटाभिव्यक्तावदात-स्वेदलेखः, (ह) दूरविच्छिन्नेन पदातिजनेन (३) शून्यीकृतपुरोभागः, (च) प्रजवि-तुरङ्गमाधिरूढ़ैरल्पावशिष्टैः सह राजपुत्रैः 'एवं मृगपतिः, एवं वराहः, एवं महिषः, (४) एवं शरभः, एवं हरिणः' इति तमेव मृगयावृत्तान्तमुच्चारयन् स्वभवनमाजगाम। (क)

(ष) अनेकेति। अनेकेषां इपायां मृगाणां "रूपं मृगेऽपि विशेयम्" इति हलायुधः अनुसरणे पश्चात् पश्चाद्गमने यः सम्भ्रमस्त्वरा तेन परिभ्रष्टो विच्युतश्छत्रधारणस्थानादपसृतः छत्रधर आतपत्रधारी भृत्यो यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, छत्रीकृतेन छत्रस्थानपातीकृतेन नवपल्लवेन निवार्य्यमाण आतपो रविकिरणो यस्य सः, कुमारः।

(स) विविधेति। विविधानां वनलताकुसुमानां रेणुभिः परागैर्धूसर ईषत्पाण्डुवर्णः, अतएव विग्रहवान् मूर्त्तिमान् वसन्तः पुष्पाकरऋतुरिव, तस्यापि तादृशपरागैर्धूसरत्वादिति भावः। अत्र पदार्थ-हेतुककाव्यलिङ्गद्वयोरुपमायाश्चाङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ह) अश्वेति। अश्वखुराणां रजोभिर्धूलिभिर्मलिने ललाटे अभिव्यक्ता आविर्भूता अवदाता विशदा स्वेदलेखा घर्म्मबिन्दुश्रेणिर्यस्य सः।

(च) दूरेति। पदातिजनेन दूरविच्छिन्नेन सता शून्यीकृतः पुरोभागो यस्य सः।

(क) प्रजवीति। प्रजवितुरङ्गमाधिरूढ़ैर्वेगवदश्वारूढ़ैः, अल्पावशिष्टैः, अधिकानामगमनत्वादिति भावः। एवमनेन प्रकारेण, मृगपतिः पशुराजः सिंहो मया व्यापादित इति शेषः। एवमन्यत्रापि। न चात्र असकृदेवं शब्दपाठादनवीकृतत्वदोष इति वाच्यं, अत्रासकृदेवंशब्दपाठेनैव वैचित्र्यविशेषस्य द्योतिततया रसानपकर्ष-कत्वादन्यथा तु तादृशवैचित्र्यासम्भवात्। एतादृगनङ्गीकारे तु "अह्निरह्निरह्निः" इत्यादौ तासत्वरावश्यास्मिन्नन्तया-ह्निस्थलेऽपि तद्दोषप्रसङ्ग इति सुधीभिर्विवेचनीयम्।

সুতরাং সেই সাঁজোয়া চন্দ্রাপীড়ের দ্বিগুণ সৌন্দর্য্য জন্মাইয়াছিল। (ষ) বহুতর হরিণের অনুসরণ করিবার সময়ে চন্দ্রাপীড়ের অত্যন্ত ত্বরাবশতঃ তাঁহার ছত্রধারী ভৃত্য, স্থানভ্রষ্ট হইয়া গিয়াছিল; সুতরাং কতকগুলি নূতন পল্লবই ছত্র করা হইয়াছিল, সেই পল্লবই তাঁহার রৌদ্র-নিবারণ করিতেছিল। (স) বন্য লতার নানাবিধ পুষ্পের রেণুতে চন্দ্রাপীড়ের শরীর ধূসরবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে তিনি মূর্ত্তিমান্ বসন্তের ন্যায় বিরাজ করিতেছিলেন। (হ) এবং চন্দ্রাপীড়ের ললাট অশ্বগণের খুরের ধূলিতে মলিন হইয়াছিল, আর তাহাতে নির্ম্মল ঘর্ম্মবিন্দু সকল আবির্ভূত হইয়াছিল। (চ) পদাতিসৈন্যগণ অগ্রে অগ্রে দূরে গিয়াছিল বলিয়া তাঁহার সম্মুখভাগ শূন্য ছিল। (ক) "আমি এই ভাবে সিংহ মারিয়াছি, এবং এই ভাবে শূকর, এই ভাবে মহিষ, এই ভাবে শরভ, আর এই ভাবে হরিণ সংহার করিয়াছি" এইরূপে

(१) छत्रधारतया। (२) वनपल्लवेन। (३)...परिजनेन। (४) वनमहिषः।

অবতীর্য্য (১) চ তুরঙ্গমাৎ সসম্ভ্রম-প্রধাবিত-পরিজনোপনীতে সমুপবিশ্য (২) আসনে বারবাণমবতার্য্য, অপনীয় চাশেষং তুরঙ্গাদিরোহণোচিতং বেশপরিগ্রহং, ইতস্ততঃ প্রচলিত-তালবৃন্ত-পবনাপনীয়মানশ্রমো মুহূর্ত্তং বিশশ্রাম। (খ) বিশ্রম্য চ মণি-রজত-কনক-কলস-শত-সনাথামন্তর্বিন্যস্ত-কাঞ্চনপীঠাং স্নান-ভূমিমগাৎ। (গ) নির্ব্বর্ত্তিতাভিষেকব্যাপারস্য চ বিবিক্ত-বসন-পরিমৃষ্ট-বপুষঃ স্বচ্ছ-দুকূল-পল্লবাকলিত-(৩) মৌলের্গৃহীতবাসসঃ (৪) কৃতদেবতা-র্চ্চনস্য (৫) অঙ্গরাগভূমৌ সমুপবিষ্টস্য রাজ্ঞা বিসর্জ্জিতা মহাপ্রতীহারাধিষ্ঠিতা রাজকুলপরিচারিকাঃ, (৬) কুলবর্দ্ধনাসনাথাশ্চ বিলাসবতী-দাস্যঃ, সর্ব্বান্তঃপুর-

(খ) অবেতি। সসম্ভ্রমং সত্বরং প্রধাবিতেন পরিজনেন উপনীতে উপস্থাপিতে। বারবাণং কঞ্চুকং অবতার্য্য দেহাদুন্মুচ্য। ইতস্ততঃ প্রচলিতানাং পরিজনান্দোলনেন স্পন্দিতানাং তালবৃন্তানাং ব্যজনানাং পবনৈরপনীয়মানো দূরীক্রিয়মাণঃ শ্রমো যস্য সঃ।

(গ) বিশ্রম্যেতি। মণিরজতকনকানাং কলসাঃ রত্নময়াঃ রৌপ্যময়াঃ স্বর্ণময়াশ্চ যে কুম্ভাস্তেষাং শতেন সমূহেন সনাথা যুক্তা তাং, তথা অন্তর্মধ্যে বিন্যস্তং কাঞ্চনপীঠং যস্যাস্তাম্।

(ঘ) নির্ব্বর্ত্তিতেতি। নির্ব্বর্ত্তিতো নিষ্পাদিতঃ অভিষেকব্যাপারঃ স্নানক্রিয়া যেন তস্য, বিবিক্তবসনেন পবিত্রবস্ত্রেণ গাত্রমার্জ্জন্যেত্যর্থঃ পরিমৃষ্টং ভৃত্যেন জলহীনীকৃতং বপুর্যস্য তস্য, স্বচ্ছেন নির্ম্মলেন দুকূল-পল্লবেন বিস্তৃতপট্টবস্ত্রখণ্ডেন আকলিতো বদ্ধো মৌলিঃ সংযতকেশকলাপো যেন তস্য, গৃহীতবাসসঃ পরিহিত-বস্ত্রস্য, কৃতং দেবতার্চ্চনং নৈত্যিকদেবতাপূজা যেন তস্য, অঙ্গরাগভূমৌ সমুপবিষ্টস্য তস্য চন্দ্রাপীড়স্য, পুরত ইতি সম্বন্ধঃ রাজ্ঞা বিসর্জ্জিতাঃ প্রেরিতাঃ, মহাপ্রতীহারেণ দ্বারপালাধ্যক্ষেণ অধিষ্ঠিতা রক্ষাত্বেনাশ্রিতাঃ। কুল-

চন্দ্রাপীড়, যাইবার সময়ে বেগবান্ অশ্বারোহী ও অল্লাবশিষ্ট রাজপুত্রগণের সহিত সেই মৃগয়ার বিষয়ই আলোচনা করিতেছিলেন।

(খ) চন্দ্রাপীড় বাটীতে আসিয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন; পরে, কোন ভৃত্য বেগে ধাবিত হইয়া একখানা আসন আনিয়া দিল, তিনি তাহাতে উপবেশন করিয়া, গাত্র হইতে কবচ খুলিয়া এবং অশ্বারোহণের যোগ্য সমস্ত বেশভূষা খুলিয়া রাখিলেন, পরে ভৃত্যগণ চতুর্দ্দিকে তালবৃন্ত আন্দোলিত করিতে লাগিল, তাহার বায়ুতে চন্দ্রাপীড়ের পরিশ্রম দূর করিল—এই অবস্থায় তিনি কিয়ৎকাল বিশ্রাম করিলেন। (গ) এবং বিশ্রাম করিয়া স্নান-স্থানে গমন করিলেন; সেই স্থানে রত্নময়, রৌপ্যময় ও সুবর্ণময় বহুসংখ্যক কলস সংস্থাপিত ছিল এবং তাহার মধ্যস্থানে সুবর্ণময় একখানা পীঠ বিন্যস্ত ছিল। (ঘ) সে স্থানে যাইয়া চন্দ্রাপীড় স্নানক্রিয়া সম্পাদন করিলেন; তখন কোন ভৃত্য পরিষ্কৃত গাত্রমার্জ্জনীদ্বারা তাঁহার শরীর মার্জ্জিত করিয়া দিল, পরে তিনি নির্ম্মল ও বিস্তৃত পট্টবস্ত্রদ্বারা কেশকলাপ বন্ধন করিলেন (উষ্ণীষ ধারণ

(১) অবতীর্য্য। (২) উপবিশ্য। (৩)...আকুলিত...। (৪) গৃহীতধৌতবাসসঃ।
(৫) কৃতদেবার্চ্চনস্য। (৬)...প্রতিচারিকাঃ।

প্রেষিতাশ্চান্তঃপুর-পরিচারিকাঃ পটলক-বিনিহিতানি বিবিধান্যাভরণানি মাল্যান্যঙ্গরাগান্ (১) বাসাংসি চাদায় পুরতস্তস্যোপতস্থুঃ, উপনিন্যুশ্চ (২)। (ঘ) যথাক্রমমাদায় চ তাভ্যঃ প্রথমং স্বয়মুপলিপ্য বৈশম্পায়নমুপরচিতাঙ্গরাগো দত্ত্বা চ সমীপবর্ত্তিভ্যো যথার্হমাভরণ-বসনাঙ্গরাগ-কুসুমানি বিবিধ-মণি-ভাজন-সহস্রসারং (৩) শারদমম্বরতলমিব স্ফুরিততারাগণমাহারমণ্ডপম-গচ্ছৎ। (ঙ) তত্র চ দ্বিগুণীকৃত-(৪) কুথাসনোপবিষ্টঃ সমীপোপবিষ্টেন তদ্গুণোপবর্ণনপরেণ (৫) বৈশম্পায়নেন (৬) যথার্হ-(৭) ভূমিভাগোপবেশিতেন

বহুনয়া পূর্ব্বোক্তদাসীবিশেষেণ সনাথাঃ সহিতাঃ। সর্ব্বৈরন্তঃপুরৈরন্তঃপুরস্থস্ত্রীভিঃ প্রেষিতাঃ। পটলকবিনিহিতানি পেটিকামধ্যস্থাপিতানি। উপনিন্যুস্তানি তানি চন্দ্রাপীড়ায় দদুশ্চ।

(ঙ) যথেতি। প্রথমমঙ্গরাগদ্রব্যাণি ততো মাল্যানীত্যেবং ক্রমমনতিক্রম্যেতি যথাক্রমং। তাভ্যঃ সর্ব্বপরিচারিকাভ্যঃ, আদায় তানি তানি গৃহীত্বা, স্বয়মাত্মনৈব প্রথমং বৈশম্পায়নং উপলিপ্য অঙ্গরাগদ্রব্যৈরিতি শেষঃ এতেন তস্মিন্নতীবপ্রেমানুরাগো দ্যোত্যতে। উপরচিতঃ কৃতঃ অঙ্গরাগো যেন সঃ। সমীপবর্ত্তিভ্যো রাজপুত্রেভ্য ইতি শেষঃ। যথার্হং যথাযোগ্যং। বিবিধানাং মণিভাজনানাং রত্নময়ভোজনপাত্রাণাং সহস্রেণ সমূহেন সারং বিচিত্রং, অতএব স্ফুরিত উদ্দীপ্তস্তারাগণো নক্ষত্রসমূহো যত্র তৎ, শারদং শরৎকালীয়ং অম্বরতলমাকাশমিব স্থিতং, আহারমণ্ডপং ভোজনগৃহম্। অত্রোপমালঙ্কারঃ।

(চ) তত্রেতি। কিঞ্চ তত্রাহারমণ্ডপে, দ্বিগুণীকৃতে দ্বিরাবৃত্য সংস্থাপিতে কুথাসনে কম্বলাসনে উপবিষ্টো রাজপুত্রঃ। তস্য চন্দ্রাপীড়স্য গুণোপবর্ণনপরেণ প্রশংসাসক্তেন বৈশম্পায়নেন বক্ষ্যমাণসম্বন্ধযোগে তৃতীয়া।

করিলেন) এবং অন্য বস্ত্র পরিধান করিলেন, পরে দেবতাপূজা করিয়া অঙ্গরাগস্থানে যাইয়া উপবেশন করিলেন; এই সময়ে প্রধান দ্বারপালের সহিত, রাজার প্রেরিত রাজবাটীর পরিচারিকাগণ, কুলবর্দ্ধনার সহিত বিলাসবতীর দাসীগণ এবং অন্যান্য রাণীদের প্রেরিত অন্তঃপুরের সকল পরিচারিকাগণ, পেটরার ভিতরে করিয়া, নানাবিধ অলঙ্কার, মাল্য, অঙ্গরাগ-দ্রব্য ও বস্ত্র লইয়া চন্দ্রাপীড়ের সম্মুখে উপস্থিত হইল এবং সেগুলি চন্দ্রাপীড়কে দিল। (ঙ) চন্দ্রাপীড়, তাহাদের নিকট হইতে সেই সমস্ত দ্রব্য যথাক্রমে গ্রহণ করিয়া প্রথমে নিজেই বৈশম্পায়নের গাত্রে অঙ্গরাগদ্রব্য লেপন করিয়া, পরে নিজে অঙ্গরাগ করিলেন এবং নিকটবর্ত্তী রাজপুত্রগণকে যথাযোগ্য অলঙ্কার, বস্ত্র, অঙ্গরাগদ্রব্য ও পুষ্পমাল্য প্রদান করিয়া ভোজনের গৃহে গমন করিলেন; সেই গৃহে নানাবিধ রত্নময় ভোজনের পাত্র সংস্থাপিত থাকায় গৃহখানি বড়ই বিচিত্র হইয়াছিল; সুতরাং নক্ষত্রসমূহ দীপ্তি পাইতে লাগিলে শরৎকালীয় আকাশের ন্যায় সেই গৃহ দৃষ্টিগোচর হইতেছিল। (চ) চন্দ্রাপীড় সেই গৃহে যাইয়া, দ্বিগুণ করিয়া পাতিত বিচিত্র কম্বলাসনে উপবেশন করিলেন; বৈশম্পায়ন নিকটে বসিয়া তাঁহার

(১) মাল্যাঙ্গরাগান্। (২) উপনিন্যুশ্চোপনীতানি চ। (৩)...সারং, শারাম্বর...।
(৪) দ্বিগুণিত...। (৫)...বর্ণন...। (৬) সুহৃ। (৭) যথার্হং।

राजपुत्रलोकेन (१) 'इदमस्मै दीयताम् इदमस्मै दीयताम्' (२) इति प्रसाद-(३) विशेष-दर्शन-संवर्द्धित-सेवा-रसेन च सहाहार-विधिमकरोत्। (च) उपस्पृश्य च गृहीतताम्बूलस्तस्मिन् मुहूर्त्तमिव स्थित्वा इन्द्रायुधसमीपमगमत् (४)। (छ) तत्र चानुपविष्ट एव तद्‌गुणोपवर्णनप्रायालापाः कथाः कृत्वा सत्यप्याज्ञाप्रतीक्षणोन्मुखे (५) पार्श्वपरिवर्त्तिनि परिजने तद्‌गुणहृत-(६) हृदयः स्वयमेवेन्द्रायुधस्य पुरो यवसमाकीर्य्य निर्गत्य राजकुलमयासीत्। (ज) तेनैव च क्रमेणावलोक्य राजानमागत्य निशामनैषीत्। (झ)

तथा यथार्हं यथायोग्ये भूमिभागे उपवेशितेन। दीयतामिति परिवेशकं प्रत्यनुज्ञा। इति इत्थं प्रसादविशेषस्य अनुग्रहातिरेकस्य दर्शनेन प्रकाशनेन संवर्द्धितः सेवायां स्वानुगत्ये रसोऽनुरागो यस्य तेन तथोक्तेन राजपुत्रलोकेन च सह, आहारविधिं भोजनकार्य्यमकरोत्।

(छ) उपेति। उपस्पृश्य आचम्य, "उपस्पर्शस्त्वाचमन"मित्यमरः। "सुप्त्वा क्षुत्वा च भुक्त्वा च निष्ठीव्योक्त्वाऽनृतं वचः। पीत्वापोऽध्येष्यमाणश्च आचामेत् प्रयतोऽपि सन्।" इति नारदवचनेन भोजनान्ते आचमनविधानादिति भावः। तस्मिन् आहारमण्डपे। इवशब्दो वाक्यालङ्कारे।

(ज) तत्रेति। किञ्च तत्र इन्द्रायुधसमीपे, अनुपविष्ट एव दण्डायमान एव, तस्य इन्द्रायुधस्य गुणोपवर्णनस्यैव प्राचुर्य्येण बाहुल्येन आलापा आलोचना यासु तास्तथोक्ताः, कथाः परस्परभाषणानि कृत्वा राजपुत्रादिभिः सह विधाय, आज्ञाप्रतीक्षणोन्मुखे आदेशपालनोद्यते पार्श्वपरिवर्त्तिनि परिजने भृत्ये सत्यपि, तस्य इन्द्रायुधस्य गुणैर्वेगातिरेकादिभिः हृतमाकृष्टं हृदयं यस्य सः। यवसं घासं आकीर्य्य विक्षिप्य। राजकुलं राजवाटीम्।

(झ) तेनेति। किञ्च तेनैव क्रमेण पूर्वोक्तरूपेण, सविनयनमस्कारादिपूर्वकमित्यर्थः। आगत्य स्वभवनमिति शेषः। अनैषीदतिवाहितवान्।

গুণ-বর্ণনা করিতে লাগিলেন; তখন চন্দ্রাপীড় অন্যান্য রাজপুত্রগণকে যথাযোগ্য স্থানে উপবেশন করাইয়া, পরিবেশকদিগকে বলিতে লাগিলেন যে, "এই বস্তু ইঁহাকে দাও আর এই বস্তু ইঁহাকে দাও" তিনি এইরূপ বিশেষ অনুগ্রহ দেখাইতে লাগিলেন বলিয়া, তাঁহার প্রতি রাজপুত্রগণেরও আনুগত্যের ইচ্ছা বৃদ্ধি পাইতে লাগিল,—এই ভাবে চন্দ্রাপীড়, তাঁহাদের সহিত ভোজনকার্য্য সম্পন্ন করিলেন। (ছ) তাহার পর আচমন করিয়া, পান খাইয়া, সেই ঘরেই কিছু কাল থাকিয়া, ইন্দ্রায়ুধের নিকট গেলেন। (জ) সেখানে যাইয়া না বসিয়াই, রাজপুত্রগণের সহিত নানাবিধ কথোপকথন করিতে লাগিলেন, তাহার মধ্যে ইন্দ্রায়ুধের গুণবর্ণনাই অধিক পরিমাণে হইতে লাগিল; তখন তাঁহার আদেশপ্রতীক্ষায় উন্মুখ হইয়া ভৃত্যগণ পার্শ্বে উপস্থিত থাকিলেও তিনি ইন্দ্রায়ুধের গুণে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া নিজেই তাহার সম্মুখে ঘাস দিয়া তথা হইতে নির্গত হইয়া রাজবাটী গেলেন। (ঝ) সেখানে যাইয়া রাজার সহিত সেই ভাবেই সাক্ষাৎ করিয়া পুনরায় নিজ বাটীতে আসিয়া রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

---

(१) सह राज...। (२) क्वचित् द्विरुक्तिर्नास्ति। प्रदीयताम्। (३) विशेषसंवर्द्धित...।
(४) अगात्। (५) आज्ञा प्रतीक्षमाणोन्मुखे। (६) अपहृत, अपहृत...।

अपरेद्युश्च (१) प्रभातसमय एव सर्वान्तःपुराधिकृतम्, अवनिपतेः परमसम्मतम्, (ञ) अनुमार्गागतया च, प्रथमे वयसि वर्त्तमानया, (ट) राजकुल-संवास-प्रगल्भयाप्यनुज्झितविनयया, (ठ) किञ्चिदुपारूढयौवनया, (ड) शक्रगोपकालोहित-(२) रागेणांशुकेन रचितावगुण्ठनया सबालातपयेव पूर्वया ककुभा, (ढ) प्रत्यग्र-दलित-मनःशिला-चूर्ण-वर्णेन (३) अङ्गलावण्य-प्रभा-प्रवाहेणामृतरस-नदी-पूरेणेव भवनमापूरयन्त्या, ज्योत्स्नयेव राहुग्रास-भयादप-

(ञ) अपरेद्युरिति। किञ्च अपरेद्युः परस्मिन्नहनि प्रभातसमय एव सर्वेषु अन्तःपुरेषु अधिकृतं अधिकारवन्तं अध्यक्षमित्यर्थः, अवनिपते राज्ञः परमसम्मतं नितान्तविश्वस्ततयाऽभिमतं, कन्यकया अनुगम्यमानं कैलासनामानं कञ्चुकिनमायान्तमपश्यदिति दूरेणान्वयः।

(ट) अन्विति। अनुमार्गागतया कैलासपथानुसरणेनागतया। इतः स्त्रियां तृतीयैकवचनान्तपदानि कन्यकयेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। प्रथमे वयसि अभिनवयौवने।

(ठ) राजेति। राजकुलसंवासेन प्रगल्भयाऽपि धृष्टया सत्यापि, अनुज्झितोऽपरित्यक्तो विनयो नम्रभावो यया तया। राजधान्यां विशेषतस्तु राजगृहे निवासेन विविधलोकैरालापव्यवहारात्तत्सन्दर्शनाच्च प्रायेणैव कन्यकाः प्रगल्भा भवन्ति, किन्तु सत्कुलजा विनयं न परिहरन्तीति भावः।

(ड) किञ्चिदिति। किञ्चिदुपारूढं ईषदुत्पन्नं यौवनं यस्यास्तया।

(ढ) शक्रेति। शक्रगोपक इन्द्रगोपापरपर्य्यायो रक्तवर्णकीटविशेषः, तद्वत् आलोहित ईषद्रक्तो रागो वर्णो यस्य तेन तथोक्तेन, अंशुकेन वसनेन रचितं कृतं अवगुण्ठनं मस्तकाच्छादनं यया तया, अतएव बालातपेन नवोदितसूर्य्यालोकेन सहेति तया, पूर्व्वया ककुभा दिशेव दृश्यमानया। अत्र लुप्तोपमा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं श्रौत्युपमा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) प्रत्यग्रेति। प्रत्यग्रदलितायाः सद्योमर्द्दितायाः मनःशिलाया धातुविशेषस्य यच्चूर्णं तस्येव वर्णो यस्य तेन, अङ्गानां लावण्यप्रभायाः प्रवाहेण परम्परया, अमृतरसनदीपूरेणेव नितान्तरमणीयत्वात् पीयूषद्रववरित्प्रवाहेणेव भवनं गृहं आपूरयन्त्या, अतएव राहुग्रासभयात् रजनीकरमण्डलं चन्द्रबिम्बं अपहाय,

(ঞ) চন্দ্রাপীড় পরদিন প্রভাতকালেই, সকল অন্তঃপুরের অধ্যক্ষ এবং রাজার অত্যন্ত বিশ্বস্ত কৈলাসনামক কঞ্চুকীকে আসিতে দেখিলেন ; (ট) তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ একটি কন্যাও আসিতেছিল, সে নবযৌবনে কেবল পদার্পণ করিয়াছিল। (ঠ) আর সে, রাজগৃহে বাস করায় প্রগল্‌ভা হইলেও বিনয় পরিত্যাগ করিয়াছিল না। (ড) তাহার যৌবন অল্পমাত্র প্রকাশ পাইয়াছিল। (ঢ) সে, ইন্দ্রগোপ-(মখমলী পোকা) কীটের ন্যায় ঈষৎ রক্তবর্ণ বসনদ্বারা মস্তক আবৃত করিয়াছিল, তাহাতে নূতন রৌদ্র-সমন্বিত পূর্ব্বদিকের ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল। (ণ) নূতন চূর্ণীকৃত মনঃশিলা-(মছল) চূর্ণের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট অঙ্গের লাবণ্যকান্তির প্রবাহে সে, যেন অমৃতনদীর প্রবাহদ্বারা গৃহ পরিপূর্ণ করিতে-

(१) परेद्युश्च। (२)...लोहित...। (३)...मनःशिलावर्णेन।

ছায়ে রজনীকরমণ্ডলং গাং (১) অবতীর্ণয়া, (ণ) রাজকুল-দেবতয়েব (২) মূর্ত্তিমত্যা, (ত) ক্বণিত-মণিনূপুরাকলিত-(৩) চরণ-যুগলয়া (৪) কূজৎ-কলহংসাকুলিত-কমলয়েব কমলিন্যা, (থ) মহার্হ-হেম-মেখলা-কলাপ-কলিত-(৫) জঘনস্থলয়া, (দ) নাতিনির্ভরোদ্ভিন্ন-পয়োধরয়া, (ধ) মন্দ-মন্দ-(৬) ভুজলতা-বিক্ষেপ-প্রেঙ্খিত নখ-ময়ূখ-চ্ছলেন ধারাভিরিব লাবণ্যরসমনবরতং ক্ষরন্ত্যা, (ন) দিঙ্মুখবিসর্পিণি হারলতানাং রশ্মিজালে নিমগ্ন-

গাং পৃথিবীং অবতীর্ণয়া জ্যোৎস্নয়েব স্থিতয়া। অত্র লুপ্তোপমা, হ্যাপ্যুৎপ্রেক্ষা, পদার্থহেতুকং কাব্যলিঙ্গং, দ্রব্যোৎপ্রেক্ষা চ ইত্যেতেষামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ত) রাজেতি। মূর্ত্তিমত্যা রাজ্ঞস্তারাপীড়স্য কুলদেবতয়েব বিরাজিতয়া, সৌন্দর্য্যপ্রভাবাদিতি ভাবঃ। অত্র দ্রব্যোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(থ) ক্বণিতেতি। ক্বণিতাভ্যাং শব্দিতাভ্যাং মণিনূপুরাভ্যাং আকলিতং সংবদ্ধং চরণযুগলং যস্যাস্তয়া, অতএব কূজদ্ভ্যাং কলহংসাভ্যাং আকুলিতে সংসৃষ্টে কমলে পদদ্বয়ং যস্যাস্তয়া কমলিন্যা ইব স্থিতয়া। অত্র পদার্থহেতুককাব্যলিঙ্গানুপ্রাণিতা শ্রৌত্যুপমালঙ্কারঃ।

(দ) মহার্হেতি। মহার্হেণ মহামূল্যেন হেমমেখলাকলাপেন সুবর্ণনির্ম্মিতকাঞ্চীদাম্না কলিতং বেষ্টিতং জঘনস্থলং নিতম্বদেশো যস্যাস্তয়া।

(ধ) নাতীতি। নাতিনির্ভরং অনতিশয়ং যথা স্যাত্তথা উদ্ভিন্নৌ উত্থিতৌ পয়োধরৌ স্তনৌ যস্যাস্তয়া যৌবনস্য কৈবল্যাবির্ভাবাদিতি ভাবঃ।

(ন) মন্দেতি। মন্দমন্দঃ অল্পাল্পো যো ভুজলতয়োর্বিক্ষেপ আগমনকালীনান্দোলনং তেন প্রেঙ্খিতানাং প্রসৃতানাং নখময়ূখানাং করনখরকিরণানাং ছলেন, অনবরতং ধারাভিঃ প্রবাহৈর্লাবণ্যরসং ক্ষরন্ত্যেব স্থিতয়া। অত্র সাপহ্নবা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(প) দিঙ্মুখেতি। দিঙ্মুখবিসর্পিণি সর্ব্বতঃ প্রসারিণি, হারলতানাং রশ্মিজালে কিরণকলাপে

ছিল, সুতরাং রাহুর গ্রাসের ভয়ে চন্দ্রমণ্ডল পরিত্যাগ করিয়া পৃথিবীতে অবতীর্ণ জ্যোৎস্নার ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল। (ত) আর সে, রাজার মূর্ত্তিমতী কুলদেবতার ন্যায় বিরাজ করিতেছিল। (থ) শব্দায়মান মণিময় নূপুরযুগলে তাহার চরণযুগল অলঙ্কৃত ছিল, সুতরাং পদ্ম-যুগলের নিকটে দুইটি কলহংস রব করিতে লাগিলে সেই পদ্মিনীর ন্যায় সে দৃষ্টিগোচর হইয়াছিল। (দ) মহামূল্য সুবর্ণময় চন্দ্রহারে তাহার নিতম্বদেশ বেষ্টিত ছিল। (ধ) স্তন দু'টি, বেশী উচু হইয়াছিল না। (ন) বাহুযুগল অল্প অল্প আন্দোলিত করায় নখ হইতে নির্গত কিরণসমূহচ্ছলে, সে যেন অবিশ্রান্ত লাবণ্য-জল-ধারা বর্ষণ করিতেছিল। (প) মুক্তাময় হারাবলীর কিরণজাল চতুর্দ্দিকে বিস্তৃত হইয়া পড়িয়াছিল, তাহারই মধ্যে

(১) ভূমণ্ডলং। (২) রাজকুলস্যদেবতয়েব। (৩)...আকুল, আকুলিত...। (৪)...চরণয়া। (৫)...আকলিত...। (৬) মন্দং মন্দং।

शरीरतया क्षीरसागरोन्मग्नवदनयेव लक्ष्म्या, (प) बहल-ताम्बूल-कृष्णिमान्ध-(१) कारिताधर-लेखया, (फ) सम-सुवृत्त-(२) तुङ्ग-नासिकया, (ब) विकसित-पुण्डरीक-धवल-लोचनया, (३) (भ) मणिकुण्डल-मकरपत्र-(४) भङ्ग-कोटि-किरणातपाहत कपोलतया (५) सकर्णपल्लवमिव मुखमुद्वहन्त्या, (म) पर्य्युषित-धूसर-चन्दन रस-तिलकालङ्कृत-ललाट-पट्टया, (य) मुक्ताफलप्राया-लङ्कारया, (र) राधेय-राजलक्ष्म्येव उपपादिताङ्गरागया, (ल) नववन (६)

निमग्नशरीरतया हेतुना, क्षीरसागरात् शुभ्रपयसः क्षीरोदसमुद्रात् उन्मग्नं जलोपरिसमुत्थितं वदनं यस्यास्तया, लक्ष्म्येव लक्ष्मीदेव्येव दृश्यमानया। अत्र शुभ्रेण क्षीरसागरपयसा सह शुभ्रस्य मुक्ताहाररश्मिजालस्यापि साम्यादुपमालङ्कारः।

(फ) बहलेति। बहलः अधिको यस्ताम्बूलस्य कृष्णिमा अतिरिक्तताम्बूलचर्वणजनितकृष्णचिह्नं तेन अन्धकारिता सञ्जातान्धकारा मलिनेत्यर्थः अधरलेखा ओष्ठरेखा यस्यास्तया।

(ब) समेति। समा अनुच्चनीचोपरिभागा, सुवृत्ता सुगोलोपरिदेशा, तुङ्गा उन्नता च नासिका यस्यास्तया।

(भ) विकसितेति। विकसितं यत् पुण्डरीकं श्वेतपद्मं तद्वत् धवले लोचने यस्यास्तया। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(म) मणीति। मणिकुण्डलयोर्यौ मकरपत्रभङ्गौ मकराकार-पत्रखण्डाकारालङ्कारौ तयोः कोट्योरग्रभागयोर्ये किरणातपा मयूखालोकास्तैराहतौ ताडितौ संस्पृष्टावित्यर्थः कपोलौ गण्डौ यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, कर्णपल्लवाभ्यां सहेति सकर्णपल्लवं तदिव, तत्किरणानामेव पल्लववत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्र कर्णपल्लवसंयोगोत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) पर्य्युषितेति। पर्य्युषितं पूर्वदिनकृतं अतएव धूसरं ईषत्पाण्डुवर्णं यच्चन्दनरसस्य तिलकं तेन अलङ्कृतो ललाटपट्टो भालस्थलं यस्यास्तया।

(र) मुक्तेति। मुक्ताफलानि मौक्तिकानि प्रायेण बाहुल्येन येषु ते तथोक्ता अलङ्कारा यस्यास्तया।

(ल) राधेयेति। राधेयस्य कर्णस्य राजलक्ष्म्येव, उपपादितः कृतः अङ्गरागः कुङ्कुमादिभिरङ्ग-

---

তাহার দেহখানি অবস্থান করায়, ক্ষীরোদসাগরের জলের উপরে উন্মুক্তবদনা লক্ষ্মীদেবীর ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল। (ফ) তাম্বূলের অতিরিক্ত কাল চিহ্নে তাহার ওষ্ঠযুগল মলিন হইয়াছিল। (ব) উচ্চ নাসিকার উপরিভাগ সমান ও সুগোল ছিল। (ভ) নয়ন-যুগল, প্রস্ফুটিত শ্বেতপদ্মের ন্যায় ধবলবর্ণ ছিল। (ম) মণিময় কুণ্ডলযুগলের সঙ্গে সংলগ্ন মকরাকার ও পত্রাকার অলঙ্কারের অগ্রভাগের কিরণে তাহার গণ্ডযুগল সংস্পর্শ করিতেছিল বলিয়া, সে যেন কর্ণপল্লব-সংযুক্ত মুখমণ্ডল ধারণ করিতেছিল। (য) পূর্ব্বদিনের ধূসরবর্ণ চন্দনের তিলকে তাহার ললাটদেশ অলঙ্কৃত ছিল। (র) অলঙ্কারগুলির মধ্যে বহুসংখ্যকই

---

(१)...कृष्णिकान्ध···। (२) समुपवृत्त...। (३)...पुण्डरीकलोचनया।
(४)...मरकतमकरपत्र। (५) कपोलतलतया। (६) नवनव...।

लेखयेव कोमल-तनु-लतया, (व) त्रय्येव सुप्रतिष्ठितचरणया, (श) मखशालयेव वेदिमध्यया, (ष) मेरुवनलतयेव कनकपत्रालङ्कृतया, (स) महानुभावाकारया, अनुगम्यमानं कन्यकया (१) कैलासनामानं कञ्चुकिनमायान्तमपश्यत्। (ह)

स कृतप्रणामः समुपसृत्य क्षितितल-निहित-दक्षिणकरो विज्ञापयामास—(क्ष)

लेपनं यया तया, पक्षान्तरे तु उपपादितः कृतः अङ्गेषु तदाख्यदेशे रागो निवासानुरागो यया तया, कर्णस्य अङ्गदेशाधिपतित्वादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(व) नवेति। नवा नूतना या वनलेखा वनश्रेणिस्तयेव, कोमला तनुलता लतावत् कृशं शरीरं यस्यास्तया, पक्षान्तरे तु कोमला नवजातत्वादेव मृदुला तन्वी कृशा च लता वल्ली यस्यां तया। पूर्णोपमा।

(श) त्रय्येवेति। त्रयी वेदत्रयी तयेव, सुप्रतिष्ठितौ सुष्ठु स्थापितौ चरणौ पादौ यया तया, पक्षान्तरे तु सुप्रतिष्ठिता अतीवप्रसिद्धाश्चरणाः शाखा यस्यास्तया। पूर्णोपमा।

(ष) मखेति। मखशालया यज्ञगृहेणेव, वेदिवत् कीटविशेषवत् मध्यः कटिदेशो यस्यास्तया तनुमध्ययेत्यर्थः, पक्षान्तरे तु वेदिः परिष्कृता भूमिर्मध्ये यस्यास्तया। पूर्णोपमा।

(स) मेर्विति। मेरौ सुमेरुपर्वते यद्वनं तस्य लतयेव, कनकपत्राणि स्वर्णनिर्मितपत्राकारालङ्काराः, पक्षे स्वर्णमयानि पर्णानि, तैरलङ्कृतया। पूर्णोपमा।

(ह) महेति। महानुभावो विशेषप्रभावशाली आकारो यस्यास्तया। कन्यकया कयाचिदिति शेषः। अपश्यत् चन्द्रापीड इति सम्बन्धः।

(क्ष) स इति। स कञ्चुकी। कञ्चुकिनो ब्राह्मणत्वेऽपि चन्द्रापीडस्य स्वप्रभुत्वादनभिवादनरूपोऽयं

যুক্ত ছিল। (ল) কর্ণের রাজলক্ষ্মী যেমন অঙ্গদেশে অবস্থান করিবার ইচ্ছা করিতেন, সেই কন্যাটিও তেমন কুঙ্কুম ও চন্দনাদি দ্বারা অঙ্গলেপন করিয়াছিল। (ব) নূতন বনশ্রেণীর মধ্যে যেমন কোমল ও কৃশ লতা থাকে, তাহার শরীরও তেমন লতার ন্যায় কৃশ ও কোমল ছিল। (শ) বেদের শাখা যেমন জগতে প্রসিদ্ধ, সেই কন্যাটির চরণযুগলও তেমন ভূতলে সুন্দরভাবে স্থাপিত ছিল। (ষ) যজ্ঞ-গৃহের মধ্যে যেমন বেদি থাকে, তাহার কটিদেশও তেমন বেদির (বল্লার) ন্যায় কৃশ ছিল। (স) সুমেরু পর্ব্বতের বন-লতা যেমন সুবর্ণময় পত্রে শোভিত হয়, সেই কন্যাটিও তেমন সুবর্ণনির্ম্মিত পত্রাকৃতি অলঙ্কারে শোভিত ছিল। (হ) আর তাহার আকৃতি অত্যন্তপ্রভাব-ব্যঞ্জক ছিল।

(ক্ষ) কঞ্চুকী রাজপুত্রের নিকটে যাইয়া প্রণাম (সেলাম) করিয়া ভূতলে দক্ষিণহস্ত-

---

(१) कन्यया।

"कुमार! महादेवी विलासवती समाज्ञापयति—'इयं खलु कन्यका (१) महाराजेन पूर्वं कुलूत-(२) राजधानीमवजित्य कुलूतेश्वर-(३) दुहिता पत्रलेखाभिधाना बालिका सती वन्दीजनेन सहानीयान्तःपुरपरिचारिकामध्यमुपनीता। (क) सा मया विगतनाथा राजदुहितेति च समुपजातस्नेहया दुहितृनिर्विशेषमियन्तं कालमुपलालिता संवर्द्धिता च। (ख) तदियमिदानीमुचिता भवतस्ताम्बूलकरङ्कवाहिनी (४) इति कृत्वा मया प्रेषिता। (ग) न चास्यामायुष्मता परिजनसामान्यदृष्टिना भवितव्यं, बालेव लालनीया, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया, शिष्येव द्रष्टव्या, (५) सुहृदिव सर्वविस्रम्भेष्व-

केवलावनमनमात्रव्यञ्जकः प्रणाम इति बोध्यम्। चितितले निहितः स्थापितो दक्षिणः करो हस्तो येन सः। अयं व्यवहारोऽपि नम्रतासूचक इति ज्ञेयम्।

(क) कुमारेति। महाराजेन तारापीडेन। कुलूतो देशविशेषः।

(ख) सेति। विगतो विनष्टो नाथो रक्षको यस्याः सा, तथा राजदुहिता इति च हेतोः, समुपजातः स्नेहो यस्यास्तया मया, दुहितुर्निर्न विद्यते विशेषो यस्मिन् कर्मणि तद् यथा तथा। उपलालिता सस्नेहं पालिता।

(ग) तदिति। ताम्बूलकरङ्कवाहिनी पर्णपात्रवाहिनी भवितुमुचितेत्यर्थः।

(घ) नचेति। आयुष्मता दीर्घायुषा त्वया, परिजनसामान्या भृत्यतुल्या भृत्येष्विवावज्ञासूचिकेत्यर्थः दृष्टिर्दर्शनं यस्य तेन, न भवितव्यं, राजदुहितृत्वेनावमाननानर्हत्वादिति भावः। बालेव युवतिः सत्यपि शिशुरिव, लालनीया सस्नेहं रक्षणीया, न तु वयस्थतया स्वयमेव सर्वं विवेक्तुमर्हतीति मत्वा रक्षायामुदासितव्यमिति

সংস্থাপনপূর্ব্বক জানাইল—(ক) "কুমার! মহাদেবী বিলাসবতী আদেশ করিয়াছেন যে—'পূর্ব্বে মহারাজ, কুলূতদেশের রাজধানী জয় করিয়া অন্যান্য বন্দীগণের সহিত বালিকা অবস্থায়ই এই কন্যাটিকে আনিয়া অন্তঃপুরের পরিচারিকাগণের মধ্যে রাখিয়াছিলেন, এ, কুলূতরাজের কন্যা এবং ইহার নাম পত্রলেখা। (খ) ইহার কেহ রক্ষক ছিল না, বিশেষতঃ এ, রাজকন্যা বলিয়া ইহার প্রতি আমার স্নেহ জন্মিয়াছিল, তাই আমি এতকাল যাবৎ কন্যার মত ইহাকে লালন-পালন করিয়াছি ও বর্দ্ধিত করিয়াছি। (গ) সুতরাং এ, এখন তোমার তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী হইবার (পানের ডীবি লইয়া বেড়াইবার) যোগ্য, এই কথা মনে করিয়া আমি ইহাকে তোমার নিকট পাঠাইলাম। (ঘ) আয়ুষ্মন্! তুমি ইহাকে সাধারণ ভৃত্যের ন্যায় দেখিও না, বালিকার ন্যায় ইহার রক্ষণাবেক্ষণ করিবে, নিজের চিত্তবৃত্তির ন্যায় চাপল্য-দোষ হইতে নিবারণ করিবে, শিষ্যার ন্যায় দেখিবে, আর সখীর ন্যায় সকল বিশ্বাস-কার্য্যের

(१) कन्या। (२) कलूत, कुन्तल...। (३) कलूतेश्वर, कुन्तलेश्वर...। (४)...करण्डकवाहिनी।
(५) उपदेष्टव्या।

भ्यन्तरीकरणीया। (घ) दीर्घकाल-संवर्द्धित-स्नेहतया स्वसुतायामिव हृदयमस्यामस्ति मे, बलवानस्यां पक्षपातः (१)। (ङ) महाभिजन-राज-वंश-प्रसूता चार्हतीयमेवंविधानि कर्म्माणि। (च) नियतञ्च (२) स्वयमेवेयमति-(३) विनीततया कतिपयैरेव दिवसैः कुमारमाराधयिष्यति। (छ) केवलमतिचिरकालोपचिता बलवती मे प्रेमप्रवृत्तिरस्याम्, अविदितशीलश्चास्याः कुमार इति सन्दिश्यते। (ज) सर्वथा तथा कल्याणिना प्रयतितव्यं, यथेयमतिचिरमुचिता परिचारिका ते भवतीति" (४)। (झ) इत्यभिधाय विरतवचसि

भावः। चापलेभ्यः अविमृश्यकारिताभ्यः। अत्रोपमालङ्कारः। सर्वविस्रम्भेषु सकलविश्वास्यविषयेष्वित्यर्थः अभ्यन्तरीकरणीया मध्यवर्त्तिनी कर्त्तव्या, अभिजातत्वेन प्रकाशासम्भवात् सर्वं रहस्यमनया सह निःशङ्कं व्यवहर्त्तव्यमित्यभिप्रायः।

(ङ) दीर्घेति। दीर्घकालं यावत् संवर्द्धितः स्नेहो यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना। अस्यां पत्रलेखायां बलवान् पक्षपातः अतीवानुकूल्यञ्च वर्त्तत इति शेषः।

(च) महेति। महाभिजनः अतीवविख्यातो यो राजवंशस्तत्र प्रसूता उत्पन्ना, अतएव एवंविधानि अनीचभूतानि ताम्बूलकरङ्कवहनादीनि, कर्म्माण्यर्हति कर्त्तुं योग्या भवति, न पुनरपरपरिचारिकावन्नीचकर्म्माणीति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः। "कुले ख्याते चाभिजन" इति त्रिकाण्डशेषः।

(छ) नियतमिति। अतिविनीततया नितान्तविनयवत्तया। नियतमाराधयिष्यति अवश्यं सन्तोषयिष्यति।

(ज) केवलमिति। अतिचिरकालोपचिता बहुकालाद्वृद्धिं प्राप्ता। प्रेमप्रवृत्तिः स्नेहाभिनिवेशः। कुमारस्त्वं, अस्याः पत्रलेखायाः, न विदितं शीलं स्वभावो येन सः, इति हेतोः सन्दिश्यते अन्यथैनां प्रति तव नीचपरिचारिकावद्व्यवहारसम्भवान्मम मनःकष्टं स्यादिति भावः।

(झ) सर्वथेति। कल्याणिना मङ्गलास्पदेन त्वया। अतिचिरं अतिदीर्घकालं यावत् उचिता योग्या।

মধ্যে ইহাকে রাখিবে। (ঙ) এ, দীর্ঘকাল যাবৎ আমার স্নেহ বর্দ্ধিত করিয়াছে বলিয়া কন্যার ন্যায় ইহার প্রতি আমার মন রহিয়াছে এবং অত্যন্ত পক্ষপাত জন্মিয়াছে। (চ) কন্যাটি অত্যন্ত বিখ্যাত রাজবংশে জন্মিয়াছে বলিয়া এইরূপ কার্য্য করিবারই উপযুক্ত। (ছ) আর, অত্যন্ত বিনয়সম্পন্ন বলিয়া এ, নিজেই কয়েক দিনের মধ্যেই তোমাকে নিশ্চয়ই সন্তুষ্ট করিতে পারিবে। (জ) বহুকাল হইতে ইহার প্রতি আমার বাৎসল্য, অত্যন্ত বৃদ্ধি পাইয়াছে, তুমিও ইহার স্বভাব জান না, এই জন্যই কেবল সংবাদ পাঠাইতেছি। (ঝ) কল্যাণভাজন! তুমি সর্ব্ব প্রকারে সেই ভাবে যত্ন করিবে, যাহাতে এ, বহুকালের

---

(१) अयं पाठः क्वचिन्नास्ति। (२) नियतं स्वयं...। (३) अभि...। (४) क्वचित् इतिशब्दो नास्ति।

कैलासे कृताभिजात-(१) प्रणामां पत्रलेखामनिमिषलोचनं (२) सुचिरमालोक्य चन्द्रापीड़ः "यथाज्ञापयत्यम्बा।" इत्येवं (३) उक्त्वा कञ्चुकिनं प्रेषयामास। (ञ)

पत्रलेखा तु ततः प्रभृति दर्शनेनैव समुपजातसेवारसा न दिवा, न रात्रौ, न सुप्तस्य, नासीनस्य, नोत्थितस्य, न भ्रमतः, न राजकुलगतस्य छायेव राजसूनोः पार्श्वं मुमोच। (ट) चन्द्रापीड़स्यापि तस्यां दर्शनादारभ्य प्रतिक्षणमुपचीयमाना महती प्रीतिरासीत्। (ठ) अभ्यधिकञ्च प्रतिदिवसं (४) अस्याः प्रसादमकरोत्, आत्महृदयादव्यतिरिक्तामिव चैनां सर्वविश्रम्भेष्वमन्यत। (ड)

(ञ) इतीति। कृतः अभिजातो न्याय्यो भूतलस्पृष्टशिरस्क इत्यर्थः प्रणामो यया तां। 'न्याय्ये कुलीन-बुधयोरभिजातपदं विदु'रिति शाश्वतः।

(ट) पत्रेति। दर्शनेनैव कुमारस्यावलोकनमात्रेणैव समुपजातः सेवारसः कुमारपरिचर्य्यानुरागो यस्याः सा पत्रलेखा, छायेव, राजसूनोः पार्श्वं न दिवा मुमोच तत्याज, इत्थं सर्व्वत्रान्वयः। आसीनस्योपविष्टस्य। अत्रोपमालङ्कारः।

(ठ चन्द्रेति। तस्यां पत्रलेखायां। उपचीयमाना वर्द्धमाना।

(ड) अभीति। किञ्च, अभ्यधिकं अधिकाधिकं। प्रसादमनुग्रहम्। सर्वविश्रम्भेषु सकलविश्वास-विषयेषु, एनां पत्रलेखां, आत्महृदयात् अव्यतिरिक्तामभिन्नामिव अमन्यत, स्वहृदयायेव तस्यै सर्व्वमेव विश्वास-विषयं विवृतवानित्यर्थः। अत्र ऐक्यस्वरूपोत्प्रेक्षा।

জন্য তোমার উপযুক্ত পরিচারিকা হয়।" (ঞ) এই কথা বলিয়া কৈলাস বিরত হইলে, পত্রলেখা চন্দ্রাপীড়কে যথাযোগ্য নমস্কার করিল; তখন চন্দ্রাপীড় বহুকাল যাবৎ নির্নিমেষ নয়নে পত্রলেখার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া কহিলেন,—'মা, যাহা আদেশ করিয়াছেন, (তাহাই করা যাইবে)" এই কথা কহিয়া কঞ্চুকীকে বিদায় দিলেন।

(ট) কিন্তু সেই অবধি রাজপুত্রের দর্শনমাত্রেই তাঁহার পরিচর্য্যা করিবার নিমিত্ত পত্রলেখার ইচ্ছা জন্মিল; সুতরাং দিনে, রাত্রিতে, শয়িত, উপবিষ্ট ও দণ্ডায়মান অবস্থায়, কিংবা ভ্রমণ করিবার সময়ে অথবা রাজবাটীতে গেলে, কোন সময়ের জন্যই পত্রলেখা, ছায়ার ন্যায় রাজপুত্রের পার্শ্ব পরিত্যাগ করে নাই। (ঠ) আবার, সেই দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়া চন্দ্রাপীড়েরও পত্রলেখার প্রতি ভালবাসা, ক্ষণে ক্ষণে বৃদ্ধি পাইয়া শেষে প্রগাঢ় হইয়া পড়িয়াছিল। (ড) এবং তিনি, দিন দিন পত্রলেখার প্রতি অধিক অধিক অনুগ্রহ করিতে লাগিলেন; আর সকলপ্রকার বিশ্বাসের কার্য্যেই পত্রলেখাকে নিজের হৃদয় হইতে অভিন্ন বলিয়া মনে করিতেন।

---

(१) अभिजातः। (२) लोचनः। (३) एवं। (४) प्रतिदिनं।

एवं समतिक्रामत्सु केषुचित् (१) दिवसेषु राजा चन्द्रापीड़स्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतीहारानुपकरणसम्भार-(२) संग्रहार्थमादिदेश। (ढ) समुपस्थितयौवराज्याभिषेकञ्च तं कदाचिद्दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छन् कर्त्तुं (३) शुकनासः सविस्तरमुवाच। (ण)

"तात! चन्द्रापीड़! विदितवेदितव्यस्य (४) अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। (त) केवलञ्च (५) निसर्गत एव अभानुभेद्यमरत्ना-

---

अतो परिणयात् प्राक् चन्द्रापीड़स्य यौवनस्वभावसुलभोच्छृङ्खलतानिवृत्तये भर्त्तीविशेषेणानुमन्यमानजनकजननीप्रेरिततया स्वानुरूपवयोरूपकुलशीलवत्तया सततसाहचर्य्येण नितान्तसम्भवपरतया च पत्रलेखा चन्द्रापीड़स्य भोग्यैवासीदिति प्रतीयते।

(ढ) एवमिति। उपकरणसम्भारस्य अभिषेकसामग्रीसमूहस्य संग्रहार्थं। प्रतीहारान् द्वारपालान्।

(ण) समुपेति। किञ्च, समुपस्थितो यौवराज्याभिषेको यस्य तं, तं चन्द्रापीड़ं। आरूढविनयमपि उत्पन्नविनयमपि। विनीततरं आधिक्येन विनयिनम्।

(त) तातेति। तात! पुत्र! "पूज्ये पितरि पुत्रे च तातशब्दः स्मृतो बुधै"रिति केशवः। विदितं ज्ञातं वेदितव्यं सर्वो ज्ञातव्यविषयो येन तस्य, तथा अधीतानि सर्वाणि शास्त्राणि येन तस्य। अत्र उपदेष्टव्यत्वाभावं प्रति पूर्वविशेषणद्वयार्थो हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(थ) ननु तर्हि कथं तवायमुद्देशोपक्रम इत्याह केवलञ्चेति। किञ्चेति चार्थः। केवलमिति यौवनप्रभवं तम इत्यस्य विशेषणम्। निसर्गतः स्वभावत एव यौवनात् प्रभवतीति यौवनप्रभवं, समस्तमोगुणजनितमज्ञानमेव तमोऽन्धकारः, न भानुना सूर्य्येण भेद्यं निराकर्त्तुं शक्यं, न रत्नानामालोकेन प्रभया च्छेद्यं उच्छेत्तुं शक्यं, तथा न प्रदीपप्रभया अपनेयं दूरीकर्त्तुं शक्यं, अतएव [illegible] नितान्तदुर्द्धर्षं भवतीति वक्ष्यमाणेनान्वयः, लोकानामिति शेषः, इत्यतो विस्तरेणाभिधीयसे, इत्यमन[illegible]यः। अपराम्धकारस्य तु सूर्य्यादिभेद्यत्वादनेन साद्धं महद्वैधर्म्यमिति भावः। अत्र अज्ञानान्धकारयोर्भेदेऽपि तम इति

(ঢ) এই ভাবে কিছুদিন অতীত হইলে রাজা, চন্দ্রাপীড়কে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিতে ইচ্ছা করিয়া, তাহার সামগ্রী সংগ্রহ করিবার নিমিত্ত দৌবারিকগণকে আদেশ করিলেন। (ণ) ক্রমে যৌবরাজ্যাভিষেকের সময় উপস্থিত হইল, এক দিন চন্দ্রাপীড়, সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত শুকনাসের নিকটে উপস্থিত হইলেন, তখন চন্দ্রাপীড় বিনয়ী হইলেও তাঁহাকে অধিকতর বিনয়ী করিবার ইচ্ছা করিয়া শুকনাস সবিস্তরে বলিতে লাগিলেন।

(ত) "বাবা! চন্দ্রাপীড়! তুমি জানিবার বিষয় সমস্তই জানিয়াছ এবং সকল শাস্ত্রই অধ্যয়ন করিয়াছ, সুতরাং তোমাকে অল্পও উপদেশ দিবার বিষয় নাই। (থ) তবে, একমাত্র যৌবনকালে স্বভাবতই যে অন্ধকার উৎপন্ন হয়, সূর্য্য তাহা বিনষ্ট করিতে

---

(१) क्वचित् केषुचिदिति नास्ति। (२) उपसम्भार…। (३) क्वचित् कर्त्तुमिति नास्ति।
(४)[illegible]। (५) केवलन्तु।

अलोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्। (थ) अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। (द) कष्टमनञ्जनवर्त्तिसाध्यमपरं (१) ऐश्वर्य्यतिमिरान्धत्वम्। (ध) अशिशिरोपचारहार्य्योऽतितीव्रः (२) दर्पदाहज्वरोष्मा। (न)

श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः, तथा अतिगहनत्वप्रतिपादनकार्य्यं प्रति अभानुभेद्यत्वादिकारणत्रयोपन्यासात् समुच्चयः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्च, इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। केचित्तु अधिकारूढ-वैशिष्ट्यरूपकमिति वदन्ति, तदसत्, येन हि तथा सति तम इत्यत्र निरङ्गं केवलरूपकं अभानुभेद्यत्वादिना च तत्राधिकं वैशिष्ट्यमारूढमिति वक्तव्यं, किन्तु तन्निरङ्गरूपकमेवात्र न सम्भवति तत्र हि उपमेयोपमानयोर्द्वयोरेव शब्दोपात्तत्वनियमात्, अन्यथारोपप्रतीत्यसम्भवात्, श्लेषेणारोपप्रतीत्या तदङ्गीकारे तु "विश्लेष दुःखादिव बद्धमौन" मित्याद्यभेदाध्यवसायरूपातिशयोक्तिस्थलेऽपि निरङ्गरूपकप्रसङ्गादिति सुधीभिर्विभावनीयम्।

(थ) अपरीति। लक्ष्मीमदो धनसम्पत्तिजनितमत्तता, न विद्यते परिणामे वयोऽवसाने उपयुक्तकालापगमे वा उपशमो निवृत्तिर्यस्य सः, अतएव दारुणो भयङ्करः। तथा च यौवनमदस्य वार्द्धक्येऽपगमात् मद्यादिपानजनितमदस्य च कालान्तरे स्वयमेव निवृत्तेः, लक्ष्मीमदस्य तु यावज्जीवमेव स्थितेरितरमदेभ्यस्य महद्वैषम्यमिति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(द) कष्टमिति। अपरं वास्तविकान्धत्वरोगाद्भिन्नं, ऐश्वर्य्यं धनसम्पत्तिरेव तिमिरं तिमिराख्यनेत्ररोगस्तेन अन्धत्वं दृष्टिराहित्यं, न अञ्जनवर्त्या विड़ालादिवर्त्ताकज्जलद्रव्यया साध्यते प्रतिक्रियत इति तत्, चिकित्साप्रतिकार्य्यं न भवतीत्यर्थः, अतएव कष्टं महादुःखकरं भवति। तथा च तिमिररोगजनितमन्धत्वमञ्जनवर्त्त्यादिना प्रतिकारार्हं, सदसद्विवेकराहित्यरूपमैश्वर्य्यतिमिरान्धत्वन्तु सर्वथैव प्रतिकारानर्हमित्युभयोर्महान् भेद इति भावः। अत्र अधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः। तिमिररोगमाह स्म माधवकरः—

"तिमिराख्यः स वै दोषश्चतुर्थं पटलं गतः। रुणद्धि सर्वतो दृष्टिं लिङ्गनाशमतः परम्।" अञ्जनवर्त्तिविषयो भावप्रकाशे द्रष्टव्यः।

(ध) अशिशिरेति। दर्पो धनाभिमान एव दाहज्वरस्तस्य उष्मा उष्णत्वं न शिशिरोपचारेण चन्दनलेपनादिशीतलप्रक्रियया हार्य्यः प्रतिकार्य्य इति तथोक्तः। अन्योष्मा तु शिशिरोपचारहार्य्यो भवतीत्यस्यातितीव्रत्वमिति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः।

পারেন না, কোন মণির আলোকও তাহার উচ্ছেদ করিতে পারে না এবং প্রদীপের প্রভাও তাহা দূর করিতে পারে না; সুতরাং সে অন্ধকার অতিদুর্ব্বর্ষ হইয়া থাকে। (থ) ধনসম্পত্তিতে যে মত্ততা জন্মে, পরিণামে তাহার উপশম হয় না, সুতরাং সে মত্ততাও ভয়ঙ্কর। (দ) ধনসম্পত্তিরূপ নেত্ররোগে যে অন্ধতা জন্মে, তাহা বাস্তবিক অন্ধতা হইতে সম্পূর্ণ ভিন্ন, অঞ্জনবর্ত্তিতে (ঔষধবিশেষে) তাহার প্রতিকার হয় না, সুতরাং সেই অন্ধতা অত্যন্তকষ্টকর। (ধ) ধনের অভিমানরূপ দাহজ্বরে যে উষ্ণতা জন্মে, চন্দনলেপনপ্রভৃতি শীতলপ্রক্রিয়ায় তাহার উপশম হয় না, অতএব সেই

(१) अपटलं। (२) अत्यन्ततीव्रः।

सततममूलमन्त्रगम्यः (१) विषमो विषयविषास्वादमोहः। (प) नित्यमस्नानशौचवाध्यः (२) बलवान् रागमलावलेपः। (फ) अजस्रमक्षपावसानप्रबोधा घोरा च राज्यसुखसन्निपातनिद्रा भवति, इत्यतः (३) विस्तरेणाभिधीयसे। (ब) गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा। (भ) सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं, किमुत समवायः। (म)

(प) सततमिति। विषमः कठिनः, विषया भोग्याः स्रक्चन्दनवनितादय एव विषाणि अनर्थहेतुत्वाद्गरलानि तेषामास्वादमोहः सम्भोगजनिता मूर्च्छा अज्ञानमिति यावत्, न मूलैरोषधिमूलैः मन्त्रैर्विषापसारकमन्त्रैश्च गम्यो निवर्त्तनीय इति सः। अतएवास्य विषमत्वमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः।

(फ) नित्यमिति। बलवानत्यन्तः, रागो विषयासक्तिरेव मलं पङ्कादि, तस्य अवलेपो लेपनं, नित्यं न स्नानशौचेन अवगाहनशुद्ध्या वाध्यः प्रक्षालनीयः अतएवास्य बलवत्त्वमत्यलेपादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः।

(ब) अजस्रमिति। किञ्च घोरा सर्वथैव ज्ञानानुदयात् विषमा राज्यसुखसन्निपातो राजत्वसुखानुभव एव निद्रा सुषुप्तिः सा, अजस्रं नित्यं, न क्षपावसाने रात्रिशेषे प्रबोधश्चैतन्योदयो यस्यां सा भवति, अतएवास्या घोरत्वमन्यनिद्राया इति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः। इति शब्द उपदेशहेतुप्रदर्शनसमाप्तौ, अतः कारणात्, विस्तरेणाभिधीयसे, त्वयि सम्भाव्यमानानां यौवनप्रभवतमःप्रभृतीनां निवृत्त्यर्थमिति भावः।

(भ) गर्भेति। गर्भादीश्वरत्वं, आशैशवाद्धनशालित्वं, अभिनवं यौवनं यस्य तत्त्वं, अप्रतिमं निरुपमं रूपं सौन्दर्यं यस्य तत्त्वं, अमानुषी दिव्या शक्तिः कायिकसामर्थ्यं यस्य तत्त्वञ्च, इतीयं महती अनर्थपरम्परा विपत्तिश्रेणिः खलु विपत्तिजनकहेतुश्रेणिरेवेत्यर्थः। अत्र हेतुहेतुमतोरभेदेनाभिधानात् हेतुर्नामालङ्कारः, अभिधाहेतुरिति तु रामचरणः।

(म) ननु कथं गर्भेश्वरत्वादीनामनर्थहेतुत्वमित्याह सर्वेति। एषां गर्भेश्वरत्वादीनां मध्ये एकैकमपि सर्वेषां अविनयानां दुराचाराणां आयतनं जनकतया आश्रयः। समवायः समष्टिः किमुत। तथा च हितोपदेशेऽप्युक्तं "यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता। एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।"

উষ্ণতা অতিতীব্র। (প) স্রক্‌চন্দন-বনিতা প্রভৃতি বিষয়-বিষের সম্ভোগে যে মোহ জন্মে, কোন ঔষধের মূলে বা বিষ-নাশক মন্ত্রে সে মোহের শান্তি হয় না, সুতরাং সে মোহ সর্ব্বদাই কঠিন। (ফ) এবং রাজ্যসুখানুভবস্বরূপ যে নিদ্রা হইয়া থাকে তাহাতে রাত্রিশেষে চৈতন্য হয় না বলিয়া সে নিদ্রা সর্ব্বদাই ভয়ঙ্কর; এই সকল কারণবশতঃ তোমাকে বিস্তৃতক্রমে বলিতেছি। (ব) বাল্যকালাবধি ধনসম্পত্তি, নব যৌবন, নিরুপম রূপ এবং অমানুষী দৈহিক শক্তি—এইগুলি নিশ্চয়ই বিপদের গুরুতর কারণসমষ্টি। (ভ) ইহার মধ্যে এক একটিও সকল রকম দোষের কারণ, আর সমুদয় একত্র হইলে তাহার কথা আর

(१)...गम्यः। (२)...वाध्यः, बलवानिति क्वचिन्नास्ति। (३) भवतीति विस्तरेण।

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्म्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। (य) अनुज्झितधवलतापि (१) सरागैव (२) भवति यूनां दृष्टिः। (र) अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरतिदूरं (३) आत्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः। (ल) इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्तेयं (४) उपभोग-मृगतृष्णिका। (व) नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषय-

---

सुतरां गर्भेश्वरत्वादीनां चतुर्णामेवानर्थहेतूनां त्वयि विद्यमानतया तज्जन्याविनयनिवृत्तये ममायमुपदेशोऽद्य इति भावः।

(य) उत्तरमेवार्थमंशतः क्रमशो विवृणोति यौवनारम्भे चेति। प्रायो बाहुल्येन, कस्यचित्तु भाग्यवतो यूनो बुद्धिः कालुष्यं नोपयातीति भावः। शास्त्रमेव जलं नैर्म्मल्यहेतुत्वात्, तेन प्रक्षालनेन निर्म्मलापि बुद्धिः कालुष्यं समलत्वमुपयातीति विरोधः रागद्वेषादिमत्त्वमुपयातीति तत्समाधानं। तवाप्येवं सम्भवा-दयमुपदेश इति भावः। एवमुत्तरत्रापि। अत्र निरङ्गकेवलरूपकविरोधाभासयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(र) अन्विति। अनुज्झिता अत्यक्ता धवलता यया सा तथोक्ता सत्यपि यूनां दृष्टिः, सरागैव रक्तिमान्वितैव भवतीति विरोधः, रमण्यादावनुरागसहिता भवतीति तत्परिहारः। अत्र विरोधाभासो-ऽलङ्कारः।

(ल) अपेति। किञ्च यौवनसमये, समुद्भूता समुत्पन्ना रजसा रजोगुणेन भ्रान्तिर्भ्रमः अतस्मिं-स्तद्बुद्धिरिति यावत् यस्याः सा, पक्षान्तरे तु समुद्भूता रजसां धूलीनां भ्रान्तिर्घूर्णनं यया सा, प्रकृतिः स्वभावः, वात्या वातसमूहः शुष्कपत्रमिव पुरुषं जनं, आत्मेच्छया स्वेच्छया अबाधमित्यर्थः, अतिदूरं बुद्धेरविषयीभूतं अगम्यासमीपादिकमित्यर्थः, पक्षान्तरे तु अतिविप्रकृष्टं देशं अपहरति। अयं खलु यौवन-स्वभाव इति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(व) इन्द्रियेति। किञ्च अतिदुरन्ता नितान्तदुर्निवारा, इयं उपभोगः कामिन्यादिसम्भोगेच्छैव मृग-तृष्णिका मरीचिका, इन्द्रियाण्येव हरिणास्तान् हरतीति सा। यथा मरुभूमौ मध्याह्ने रविकिरणेषु जल-भ्रमात्मकमरीचिका पिपासून् हरिणानाकृष्य परं तत्प्राणान् विनाशयति तथा विषयभोगेच्छापि यूना-मिन्द्रियाणीति भावः। अत्र उपभोगेच्छायां मृगतृष्णात्वारोप इन्द्रियेषु हरिणत्वारोपे निमित्तमिति परम्परित-रूपकमलङ्कारः।

বলিবার কি আছে। (য) যৌবনারম্ভে মানুষের বুদ্ধি, শাস্ত্র-জলের প্রক্ষালনে নির্ম্মল হইলেও প্রায়শই কলুষতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। (র) যুবকদিগের দৃষ্টি, ধবলতা ত্যাগ না করিলেও রাগান্বিতই (রক্তবর্ণ-ই, সানুরাগই) হইয়া থাকে। (ল) যৌবনকালে রজোগুণ-বশতঃ মানুষের স্বভাবে ভ্রম জন্মে, তখন প্রবল বায়ু যেমন শুষ্ক পত্র অতিদূরে লইয়া যায় সেইরূপ সেই স্বভাব, মানুষকে ইচ্ছানুসারে অতিদূরে (অগম্য স্থানে) লইয়া যায়। (ব) আর, অতিদুরন্ত এই সম্ভোগেচ্ছারূপ মৃগতৃষ্ণিকা মানুষের ইন্দ্রিয়-হরিণগণকে হরণ করিয়া থাকে।

---

(१) धवलापि। (२) सरागैव। (३) अदूरं, दूरं। (४) इन्द्रियहरिणं हरतीव। सततदुरन्तेयं।

स्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। (श) नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्त्तकः पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु। (ष) भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि (१) उपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेन (२) उपदेशगुणाः। (स) गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य। (ह)

(श) नवेति। नवयौवनेन कषायिती रागद्वेषादियुक्तीकृतः कषायरसान्वितीकृतश्च आत्मा स्वरूपं यस्य तादृशस्य मनसो यूनश्चित्तस्य, सलिलानीव तान्येव प्रसिद्धानि विषयस्वरूपाणि भोग्यवस्तूनि आस्वाद्यमानानि अनुभूयमानानि सन्ति, मधुरतराणि अतिसुरसानि आपतन्ति आपाततः प्रतीयन्ते। तथा च यथा हरीतक्यादिकषायितायां रसनायाममधुराण्यपि जलान्यतिमधुरायन्ते, तथा यौवनकषायिते यूनो मनसि अमधुरा अपि कामिन्यादिभोग्यपदार्था आपाततोऽतिमधुरायन्ते इति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(ष) ननु मनसस्तथा मधुरतराण्यापतन्तु नाम तेन किमित्याह नाशयतीति। दिङ्मोहो दिग्भ्रम इव, उन्मार्गप्रवर्त्तकः कुपथपरिचालकः, विषयेषु भोग्यपदार्थेषु अत्यासङ्गो नितान्तासक्तिः पुरुषं नाशयति। तथा च माधुर्य्यानुभवाद्विषयेष्वासक्तिर्जायते सा च नाशयतीति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(स) भवेति। भाजनानि पात्राणि विषया इत्यर्थः। हि यस्मात् अपगतमले शास्त्रशिक्षया कामक्रोधादिरहिते अनाविले च, मनसि, स्फटिकमणौ रजनिकरगभस्तयश्चन्द्रकिरणा इव उपदेशस्य गुणाः फलानि सुखेन अनायासेन विशन्ति प्रवेशं लभन्ते। अत्रोपमालङ्कारः।

(ह) गुर्विति। अमलमपि कल्याणकरमपि "अमलं शक्ती च निर्दिष्टं कल्याणे च सुखेऽपि च।" इति विश्वः, गुरुवचनं गुरोरुपदेशवाक्यं, सलिलमिव, अभव्यस्य असाधुजनस्य, श्रवणस्थितं कर्णगतं सत्, महत् शूलं वेदनां उपजनयति, असाधुतापगमहेतुत्वेन प्रतिकूलत्वादिति भावः। उपमालङ्कारः।

(শ) কোন কষায়রসযুক্ত রসনাতে জল যেমন সেরূপ মধুর না হইলেও আপাততঃ অতিমধুর বলিয়া বোধ হয়, সেইরূপ নবযৌবনবশতঃ কামক্রোধাদিযুক্ত চিত্তে, কামিনী কাঞ্চনাদি প্রসিদ্ধ ভোগ্যবস্তু সকল অনুভূত হইতে লাগিলে আপাততঃ বড়ই মধুর বলিয়া বোধ হয়। (ষ) দিগ্ভ্রম যেমন মানুষকে কুপথে পরিচালিত করিয়া বিনষ্ট করে, কামিনী-কাঞ্চনপ্রভৃতি ভোগ্য পদার্থে অত্যন্ত আসক্তিও তেমন মানুষকে কুপথে পরিচালিত করিয়া বিনষ্ট করে। (স) তোমার মত লোকেরাই উপদেশের পাত্র হইয়া থাকে; কারণ, নির্ম্মল স্ফটিকে যেমন চন্দ্রের কিরণ অনায়াসে প্রবেশ করে, সেইরূপ নির্ম্মল হৃদয়েই উপদেশের ফল অনায়াসে প্রবেশ করে। (হ) গুরুর উপদেশবাক্য, মঙ্গলকর হইলেও, অসজ্জনের কর্ণে উপস্থিত হইলে, তাহা জলের ন্যায় গুরুতর বেদনা জন্মায়। (ক্ষ) কিন্তু

---

१) भाजनं। (२) सुखं।

इतरस्य तु (१) करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभासमुदयमधिकतरमुपजनयति। (घ) हरति च सकलं (२) अतिमलिनमप्यन्धकारमिव (३) दोषजातं प्रदोषसमयनिशाकर इव। (क) गुरूपदेशः प्रशमहेतुर्वयःपरिणाम इव (४) पलितरूपेण शिरसिजजालममलीकुर्वन् गुणरूपेण तदेव परिणामयति। (ख) अयमेव चानास्वादित-विषयरसस्य ते काल उपदेशस्य। (ग) कुसुमशर-शर-प्रहार-

(घ) इतरस्येति। इतरस्य अमन्येतरस्य साधोस्तु गुरुवचनमिति सम्बन्धः, करिणो हस्तिनः शङ्खाभरणं शङ्खालङ्कार इव, हस्तिनो दृष्टिदोषोपशमनाय कर्णे शङ्खालङ्कारो बध्यत इति रीतिः, अधिकतरं आननशोभासमुदयं मुखसौन्दर्य्योत्पत्तिं उपजनयति हर्षप्रफुल्लवदनेन तच्छ्रवणादग्रहणाच्चेति भावः। उपमालङ्कारः।

(क) हरतीति। किञ्च गुरुवचनं, प्रदोषसमयनिशाकरः सूर्य्यास्तपरवर्त्तिसमयचन्द्रः, प्रदोषसमये हि नक्षत्रालोकस्याप्यभावादन्धकारस्यातिमालिन्यसम्भवतापदर्शनार्थं प्रदोषसमयपदं। अतिमलिनमपि गाढकृष्णमपि अन्धकारमिव, अतिमलिनमपि नितान्तकलुषमपि सकलं दोषजातं कामक्रोधादिदोषसमूहं हरति उपशमयति। उपमालङ्कारः।

(ख) गुर्विति। प्रशमहेतुर्गुरूपदेशः. पलितरूपेण शिरसिजजालममलीकुर्वन् वयःपरिणाम इव तदेव दोषजातं गुणरूपेण परिणमयतीत्यन्वयः। तथा च प्रशमहेतुरन्तरिन्द्रियनिग्रहकारणीभूतो वयःपरिणामो वार्द्धक्यं यथा शिरसिजजालं केशकलापं अमलीकुर्वन्, तदेव शिरसिजजालं पलितरूपेण वार्द्धक्यनिबन्धनशुक्लत्वरूपेण परिणमयति, तथा प्रशमहेतुर्गुरूपदेशोऽपि तदेव दोषजातं कामक्रोधादिकं अमलीकुर्वन् विषयविशेषे प्रवर्त्तनया निर्म्मलीकुर्वन् गुणरूपेण परिणमयतीत्यर्थः। तथा हि गुरूपदेशो नाम पुरुषाणां धर्म्मार्ज्जने कामं, दस्युषु क्रोधं, स्वर्गादौ लोभं, पापावरणे मोहं, दानदयादौ मदं, खदुर्णये च मात्सर्य्यं प्रवर्त्तयन् दोषानेवैतान् गुणतामेवापादयतीति द्रष्टव्यम्। उपमालङ्कारः।

(ग) ननूपदेशस्य कालान्तरेऽपि सम्भवात् कथमिदानीमेव तवायमुद्यम इत्याह अयमिति। न आस्वादितः अनुभूतः विषयरसः कामिनीकाञ्चनादिभोग्यपदार्थगुणो येन तस्य, ते तव अयमेव उपदेशस्य कालः।

তাহাই আবার সজ্জনের কর্ণে উপস্থিত হইলে, হস্তীর শঙ্খময় কর্ণালঙ্কারের ন্যায় মুখের অত্যন্ত শোভা জন্মায়। (ক) প্রদোষকালের চন্দ্র যেমন, অন্ধকার অত্যন্ত কৃষ্ণবর্ণ হইলেও তাহাকে বিনষ্ট করে, সেইরূপ গুরুর উপদেশ, নিতান্ত কলুষিত হইলেও, কামক্রোধাদি সকল দোষসমূহকে বিনষ্ট করে। (খ) বার্দ্ধক্য, যেমন কেশসমূহকে নির্ম্মল করতঃ ক্রমে শুক্লরূপে পরিণত করে সেইরূপ অন্তরিন্দ্রিয় দমনের কারণ গুরুর উপদেশও, সেই দোষসমূহকেই নির্ম্মল করতঃ ক্রমে গুণরূপে পরিণত করে। (গ) তুমি এখনও কোন ভোগ্য পদার্থের রস অনুভব কর নাই, সুতরাং এই-ই তোমার উপদেশের সময়; (ঘ) কারণ,

(१) च। (२) अपहरति च सकलं, हरत्यति...। (३) अतिमलिनमन्धकारमिव।

(४) क्वचित् वयःपदं नास्ति।

जर्जरिते हि (१) हृदये (२) जलमिव गलत्युपदिष्टम्। (घ) अकारणञ्च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य (३)। चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः, किं वा प्रशमहेतुनापि न प्रचण्डतरीभवति बड़वानलो वारिणा। (ङ) गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलस्नानं, (४) अनुपजात-

(घ) नन्वास्वादितविषयरसस्योपदेशे को दोष इत्याह कुसुमेति। हि यस्मात्, कुसुमशरस्य मदनस्य शरप्रहारेण जर्जरिते उपप्लुते शतच्छिद्रीकृते च हृदये जलमिव उपदिष्टं गुरूपदेशो गलति चालनीन्यायात् स्रवति। तथा च बलवती कामोद्दीपना वाक्यात्रं गुरूपदेशं प्रवेशमात्रमेवापसारयतीति भावः। उपमालङ्कारः।

(ङ) अथ सद्वंशजातस्य शास्त्रज्ञानसम्पन्नस्य च विनयप्रभावेण कथं नाम दोषाः प्रादुर्भवितुमर्हन्तीत्याह अकारणमिति। किञ्च दुष्प्रकृतेर्दुश्चरितस्य जनस्य अन्वयः सत्कुलं, श्रुतं प्रशमहेतुः शास्त्रज्ञानं वा विनयस्य सत्पथप्रवृत्तेः अकारणं भवति हेतुर्न भवतीत्यर्थः, "अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्त्तते" इति न्यायादिति भावः। अत्र अकारणं भवतीति प्रधानस्य नञः समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स तु कारणं न भवतीति पाठेनैव समाधेयः। उक्तमर्थं समर्थयितुमाह चन्दनेति। चन्दनाद्वृक्षात् प्रभवति सङ्घर्षेणोत्पद्यत इति चन्दनप्रभवः अनलः किं न दहति, अपि तु दहत्येवेत्यर्थः। सुतरामन्वयो न विनयस्य कारणमिति भावः। तथा प्रशमहेतुनापि शैत्यकारणेनापि वारिणा समुद्रजलेन बड़वानलः किं वा न प्रचण्डतरीभवति समुद्दीप्तो भवति अपि तु भवत्येवेत्यर्थः। अतः प्रशमहेतुः शास्त्रज्ञानं न विनयस्य कारणमिति भावः। अत्र विशेषेण सामान्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(च) प्रकारान्तरेण प्रकृतं गुरूपदेशं प्रशंसति गुरूपदेशश्चेति। किञ्च गुरूपदेशो नाम पुरुषाणां अखिलमलानां कामक्रोधादीनां पङ्कादीनाञ्च प्रक्षालनक्षमं शोधनसमर्थं, अजलस्नानं जलहीनस्नानस्वरूपः। अन्यस्नानन्तु सजलमित्यप्यवेहि। अत्राधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः। न उपजातं पलितादि वार्द्धक्यनिबन्धनशुक्लतादि वैरूप्यं विकृतिर्यस्मिन् तत्, तथा न विद्यते जरा जीर्णता यस्मिन् तत्, उज्ज्वलम् वार्द्धक्यस्वरूपं, शान्तत्वसदसद्विवेकादिजननादिति भावः। अन्यत्तु वार्द्धक्यन्तु जातपलितादिवैरूप्यं सजरञ्चेत्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। न आरोपितो जनितः मेदोदोषः स्थूलताजनकमेदोनामकधातुवृद्धिदोषो येन तत्, गुरुकरणं

কাম-বাণের প্রহারে যে হৃদয় জর্জ্জরিত হইয়াছে, সে হৃদয় হইতে উপদেশবাক্য জলের ন্যায় পড়িয়া যায়। (ঙ) দুশ্চরিত্র লোকের সদ্বংশে উৎপত্তি কিংবা শাস্ত্রজ্ঞান, সৎপথ-প্রবৃত্তির কারণ হয় না; দেখ—সজ্ঘর্ষবশতঃ চন্দনবৃক্ষ হইতে যে অগ্নি উৎপন্ন হয়, সে কি দগ্ধ করে না? কিংবা শীতল সমুদ্রজলে বড়বানল কি অত্যন্ত ভীষণ হইয়া উঠে না? (চ) গুরুর উপদেশ, মানুষের সমস্ত মল-প্রক্ষালন করিবার যোগ্য জলহীন স্নানস্বরূপ, আর গুরুর উপদেশ মানুষের বার্দ্ধক্যস্বরূপ; এই বার্দ্ধক্যে কেশের পক্বতা ও অঙ্গশৈথিল্য প্রভৃতি

(१) क्वचित् हिशब्दो नास्ति। (२) हृदि। (३) श्रुतञ्चाविनयस्य। (४) अजलं स्नानं।

पलितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं (१) गुरूकरणम्, असुवर्ण-विरचनमग्राम्यं (२) कर्णाभरणम्, अतीत-(३) ज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः, (च) विशेषेण राज्ञाम्, विरला हि तेषामुपदेष्टारः। (छ) प्रतिशब्दक इव (४) राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्। (ज) उद्दाम-दर्प-श्वयथु-स्थगित-(५) श्रवणविवराश्चोपदिश्यमानमपि (६) ते न शृण्वन्ति (झ)। च शृण्वन्तोऽपि

गौरवसाधनस्वरूपः, बहुदर्शिताजनकतया सकलसम्मानप्रयोजनकत्वादिति भावः। अन्यगुरूकरणन्तु मेदोदोषजनकमित्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। न सुवर्णेन स्वर्णेन विरचना निर्म्माणं यस्य तत्, अग्राम्यं ग्राम्यतादोषरहितं भङ्ग्यादिवचनभिन्नभूतं अतिसुन्दरमित्यर्थः कर्णाभरणं कर्णालङ्कारस्वरूपः, श्रवणमात्रेणैव चित्तशोभाजननादिति भावः। अन्यकर्णाभरणन्तु सुवर्णनिर्म्मितं ग्राम्यञ्चेत्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। अतीतज्योतिस्तेजोहीनः आलोकः प्रकाशस्वरूपः, परोक्षार्थप्रकाशादिति भावः। अन्यालोकस्तु तेजस्वीत्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। नोद्वेगकरः अकष्टजनक इत्यर्थः प्रजागरो जागरणस्वरूपः, सर्वविषयेषु सावधानताजननादिति भावः। अन्यजागरणन्तु कष्टजनकमित्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः।

(छ) विशेषेणेति। एते अजरत्वादयो गुणा राज्ञां विशेषेणोपकारिण इत्यर्थः, तथा च सत्सु खल्वेषु तेषां प्रभुतया मङ्गलातिरेकसम्भवात्, असत्सु तु अनर्थबाहुल्यसम्भवाच्चेति भावः। ननु यतस्ते प्रभवः अत उपदेष्टारोऽपि बहव एव सम्भवन्तीत्याह विरला इति। विरला हि अल्पा एव।

(ज) ननु कथं नाम विरलास्तेषामुपदेष्टार इत्याह प्रतीति। प्रतिशब्दकः प्रतिध्वनिरिव स्वार्थे कः, जनः प्रायेण लोकः, भयात् राजवचनमनुगच्छति अनुसरति, न तु सति सम्भवे प्रतिवदत्यपि, सुतरामेव विरला इति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(झ) अथ यदि केचिद्भयमपहाय उपदेष्टुमप्यर्हन्ति इत्याह उद्दामेति। उद्दामा विशालाः दर्पा अहङ्कारा एव श्वयथवः शोथास्तैः स्थगितानि आवृतानि श्रवणविवराणि कर्णरन्ध्राणि येषां ते, ते राजानः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

বিকৃতি জন্মে না এবং শরীরও জীর্ণ-শীর্ণ হয় না; আবার গুরূপদেশ স্থূলতার সাধক, অথচ মেদ-দোষ জন্মায় না; কর্ণের সুন্দর অলঙ্কার, অথচ তাহা স্বর্ণ-নির্ম্মিত নহে; তেজ নাই, অথচ আলোকস্বরূপ এবং জাগরণ বটে, কিন্তু সে কোন কষ্ট জন্মায় না। (ছ) এই সকল গুণ রাজাদের পক্ষে বিশেষ উপকারী; কারণ—তাঁহাদের উপদেষ্টা অল্পই। (জ) যেহেতু—প্রায় সকল লোকই ভয়বশতঃ প্রতিধ্বনির ন্যায় রাজাদের বাক্যের কেবল অনুসরণই করিয়া থাকে। (ঝ) আবার গুরুতর অহঙ্কাররূপ শোথরোগে রাজাদের কর্ণবিবর বদ্ধ হইয়া থাকে, সুতরাং কেহ উপদেশ দিতে লাগিলেও, তাঁহারা তাহা শুনিতে পান না। (ঞ) শুনিতে

---

(१) मददोषं। (२)...विरचनाग्राम्यं। (३) अपनीत...। (४) एव।
(५) उद्दामदर्पाश्च पृथुस्थगित। (६) उपदिश्यमपि।

गजनिमीलितेनावधीरयन्तः (१) खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्। (ञ) अहङ्कार-दाहज्वर-मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः, अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि, राज्य-विष-विकार-तन्द्रीप्रदा (२) राजलक्ष्मीः (३)। (ट) आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। (इयं हि सुभट-(४) खड्गमण्डलोत्पल-वन-विभ्रम-भ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात् पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्, उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्,

(ञ) अहो राजानो हि उपदेशकाले ततो न गच्छन्ति नवा वारयन्ति ततः कथं न शृण्वन्तीत्यत आह शृण्वन्तोऽपीति। गजवन्निमीलितेन नेत्रसङ्कोचमात्रेण अवधीरयन्त उपदेशमवजानन्तः। खेदयन्ति क्लेशयन्ति, स्वकीयोपदेशस्यावज्ञानादिति भावः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ट) ननु राजानः कथमेवं कुर्वन्तीत्याह अहङ्कारेति। हि यस्मात् राजप्रकृतिः राज्ञां स्वभावः, अहङ्कार एव दाहज्वरः समानोष्मजननात् तेन या मूर्च्छा मोहस्तया अन्धकारिता सञ्जातान्धकारा सदसद्विवेकहीनेत्यर्थः, अतएव विह्वला समाकुला अस्थिरा, अत्र निरङ्ग केवलरूपकमलङ्कारः। विशेषतश्च, धनानि, अलीकाभिमानेन धनानां नश्वरत्वान्मिथ्याहङ्कारेण उन्मादं मत्ततां कर्त्तुं शीलं येषां तानि तादृशानि। अपरतश्च राजलक्ष्मीः, राज्यमेव विषं विकारहेतुत्वात्, तेन यो विकारस्तेन तन्वीं तन्द्रां प्रददातीति सा। एतेभ्य एव कारणेभ्यो राजान उक्तरूपं कुर्वन्तीति भावः। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(ठ) राज्यविषेत्याद्युक्तमर्थं समर्थयितुं लक्ष्मीस्वभावमेव बाहुल्येनाह आलोकयत्विति। कल्याणाभिनिवेशी मङ्गलाग्रहान्वितो भवान्, प्रथमं लक्ष्मीमेव तावत् आलोकयतु परमार्थतो विचारयतु। हि तथाहि, सुभटानां निपुणयोद्धॄणां खड्गमण्डलं तरवारिसमूह एव उत्पलवनं तत्र विभ्रमे विचरणे भ्रमरी मधुकरीस्वरूपा, इयं लक्ष्मीः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। पारिजातपल्लवेभ्यः क्षीरोदसागरादेवोत्पद्यमानपारिजातवृक्षकिसलयेभ्यः रागं रक्तिमानमेव रागं आत्मनि लोकानुरागं गृहीत्वेव क्षीरसागरादुद्गता तन्मन्थनवेलायामुत्थिता। इत्थमन्यत्राप्यन्वयः। इन्दुशकलाच्चन्द्रखण्डात् एकान्तवक्रतां अत्यन्तकुटिलतामेव एकान्तवक्रतां अत्यन्तदुष्टव्यवहारं।

পাইলেও তাঁহারা হস্তীর ন্যায় নয়নসঙ্কোচ দ্বারা সেই উপদেশের অবজ্ঞা করতঃ সেই হিতোপদেশদাতা গুরুদিগকে দুঃখিত করিয়া থাকেন; (ট) কারণ—রাজাদের স্বভাব, অহঙ্কাররূপ দাহজ্বর-জনিত মূর্চ্ছাতে বিবেকবিহীন হইয়া একেবারে বিহ্বল হইয়া পড়ে; দ্বিতীয়তঃ ধনসম্পত্তি, মিথ্যা অভিমানে উন্মত্ততা জন্মায় আর রাজলক্ষ্মী, রাজ্যরূপ বিষ-বিকারদ্বারা তন্দ্রা উৎপাদন করে।

(ঠ) তুমি মঙ্গল লাভের নিমিত্ত যত্নবান্; সুতরাং প্রথমে লক্ষ্মীকেই বিচার করিয়া দেখ; এই লক্ষ্মী, নিপুণ যোদ্ধাদিগের তরবারিসমূহস্বরূপ পদ্মবনে বিচরণকারিণী ভ্রমরী-স্বরূপা; এবং এ, ক্ষীরোদসাগর হইতে উঠিবার সময়ে, পারিজাতপ্রভৃতির সহিত একত্র বাস করায় পূর্ব্বেই উহাদের সহিত প্রণয় জন্মিয়াছিল, তাই উহাদের বিরহদুঃখ দূর করিবার

(१) अवधारयन्तः। (२)···तन्द्राप्रदा। (३) राज्यलक्ष्मीः। (४) क्वचित् सुभटपदं नास्ति।

मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेरतिनैष्ठुर्य्यम्, (१) इत्येतानि सहवास-परिचयवशाद्विरहविनोदचिह्नानि गृहीत्वेवोद्गता (२) (ठ)। न ह्येवंविधमपरं (३) अपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति, यथेयमनार्य्या (ड)। लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते, (ढ) दृढगुणपाश सन्दान-(४) निष्पन्दीकृतापि नश्यति, (ण)

उच्चैःश्रवसो घोटकात् चञ्चलतां स्पन्दितदेहत्वमिव चञ्चलतां अचिरस्थायित्वं। कालकूटाद्विषात् मोहनशक्तिं मूर्च्छाजननसामर्थ्यमिव मोहनशक्तिमन्यवशीकरणसामर्थ्यं। मदिरायाः सुरातः मदं मत्तताजननशक्तिमिव मदमौद्धत्यं। तथा कौस्तुभमणेः सकाशात् अतिनैष्ठुर्य्यं नितान्तकाठिन्यमिव अतिनैष्ठुर्य्यं अत्यन्तनिर्द्दयत्वं। इत्येतानि रागादीनि, सहवासपरिचयवशात् एकत्रावस्थानप्रणयवशात्, विरहस्य पारिजातादिभिर्वियोगस्य विनोदचिह्नानि अपनोदनचिह्नभूतानि गृहीत्वेव क्षीरसागरादुद्गता, तत्तद्गुणवत्त्वादिति भावः। अन्योऽपि सहचरैर्वियोगसम्भावनायां तदीयचिह्नीभूतं कनपादकादिकं परिगृह्य प्रवासं गच्छतीति द्रष्टव्यम्। अत्र रक्तिमानुरागादीनां भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, उक्तरूपं रूपकं, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ड) नहीति। अपरिचितं परिचयनिबन्धनसौहार्द्दनिरपेक्षं। किञ्चित् किमपि वस्तु। अनार्य्या नीचस्वभावा।

(ढ) वाक्यबाहुल्येन लक्ष्म्या अपरिचितत्वमुपपादयन्नाह लब्धापीति। प्रायेण न लभ्यते, लब्धापीत्यपेरर्थः। अन्यस्तु परिचितो नैवमिति भावः।

(ण) दृढेति। दृढा यथायथप्रयोगेणानन्यथाकरणीयाः गुणाः सन्धिविग्रहादय एव पाशो रज्जुस्तेन यत् सन्दानं बन्धनं तेन निष्पन्दीकृतापि लक्ष्मीः, नश्यति अन्यपक्षाश्रयाददर्शनं याति, अन्ये पाशबद्धा गवादयोऽपि नैवमिति भावः। अत्र नाशकारणाभावेऽपि तदुत्पत्तेः किं विभावना, उत निष्पन्दीकरणरूपे स्थैर्य्यकारणे सत्यपि तदनुत्पत्तेर्विशेषोक्तिरित्यनयोः सन्देहसङ्करः, सोऽपि निरङ्गकेवलरूपकेण सङ्कीर्य्यते। केचित्त्वेषु विरोधाभासताद्रूप्यरूपकयोः सङ्कर इत्याचक्षते।

চিহ্নস্বরূপ, পারিজাত-পল্লবের নিকট হইতে রাগ (রক্তিমা, অনুরাগ), চন্দ্রখণ্ড হইতে অত্যন্ত বক্রতা, উচ্চৈঃশ্রবার নিকট হইতে চাঞ্চল্য, কালকূট বিষের নিকট হইতে মোহন-শক্তি, মদের নিকট হইতে মাদকতা এবং কৌস্তুভমণির নিকট হইতে অত্যন্ত নিষ্ঠুরতা এই সকল, সঙ্গে লইয়াই যেন উঠিয়াছিল। (ড) দীর্ঘকাল পরিচয়বশতঃ যে সৌহার্দ্দ জন্মে, তাহার গণনা না করে, এমন অপর কেহ এই জগতে নাই; যেমন এই নীচপ্রকৃতি লক্ষ্মী। (ঢ) ইহাকে পাইলেও দুঃখেই পরিপালন করিতে হয়, (ণ) যথাযথভাবে প্রযুক্ত সন্ধি বিগ্রহপ্রভৃতি গুণরূপ রজ্জুদ্বারা বন্ধন করিয়া নিশ্চল করিয়া রাখিলেও চলিয়া যায়, (ত) অত্যন্ত

---

(१) नैष्ठुर्य्यं। (२) गृहीत्वेवोद्गता। (३) क्वचित् अपरमिति न दृश्यते।

(४) दृढगुणसन्दान...।

उद्दाम-दर्प-भट-सहस्रोल्लासितासिलता-(१) पञ्जर-विधृताप्यपक्रामति, (त) मदजल-दुर्दिनान्धकार गज-(२) घन घटा-परिपालितापि प्रपलायते, (थ) न परिचयं रक्षति, नाभिजनमीक्षते, न रूपमालोकयते, (३) न कुलक्रममनुवर्त्तते, न शीलं पश्यति, न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति, न धर्ममनुरुध्यते, न त्यागमाद्रियते, न विशेषज्ञतां विचारयति, नाचारं पालयति, न सत्यमवबुध्यते, (४) न लक्षणं प्रमाणीकरोति (द)। गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव

(त) उद्दामेति। उद्दामो विशालो दर्पो यस्य तेन भटसहस्रेण योद्धृसमूहेन उल्लासिता उत्तोलिता असिलता लम्बिततरवारय एव पञ्जरं तत्र विधृतापि आबद्धापि लक्ष्मीः, अपक्रामति अपसरति पक्षान्तरमवलम्बत इत्यर्थः। पञ्जरबद्धाः सिंहादयः पशवोऽपि नैवमिति भावः। अत्रापि पूर्ववदेवालङ्कारः।

(थ) मदेति। मदजलान्येव दुर्दिनानि वृष्टयस्तैरन्धकारो येभ्यस्तादृशा गजा एव घना मेघास्तेषां घटया समूहेन परिपालितापि लक्ष्मीः प्रपलायते पक्षान्तरं गच्छति। विडालोऽपि नैवं शक्नोतीति भावः। अत्र मदजलेषु दुर्दिनत्वारोपो गजेषु मेघत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकं, पूर्ववद्विभावनाविशेषोक्त्योः सन्देहसङ्करश्च, इत्यनयोरप्यङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(द) नेत्यादि। परिचयं न रक्षति, चिराश्रयस्यापि परित्यागात्, कुक्कुरोऽपि नैवमित्याशयः। अभिजनं सत्कुलं न ईक्षते पर्यालोचयति, तत्परित्यागेन दुष्कुलावलम्बनात्, दासोऽपि नैवमाचरतीत्यभिप्रायः। रूपं सौन्दर्यं नालोकयते, सुन्दरपरित्यागेन कुत्सिताश्रयात्, वेश्यापि नैवं करोतीति भावः। कुलक्रमं नानुवर्त्तते वंशपरम्परया परिरक्षिताहं कथमकस्मादन्यत्र गच्छामीति न विचारयतीत्यर्थः, सहसैव तत्परित्यागात्, करेणुरपि नैवमिति भावः। शीलं सच्चरित्रं न पश्यति, दुश्चरित्रस्याप्यवलम्बनात्, दास्यपि नैवमित्याशयः। वैदग्ध्यं दाक्ष्यं न गणयति, जडस्याप्याश्रयात्, पान्थोऽपि नैवमिति भावः। श्रुतं शास्त्रज्ञानं नाकर्णयति, पण्डितमपहाय मूर्खाश्रयणात्, दास्यपि नैवं करोतीति भावः। धर्मं न अनुरुध्यते, धर्मानुरोधेन धार्मिकं नाश्रयतीत्यर्थः, प्रायेणाधार्मिकस्यैवाश्रयात्, पारावतोऽपि नैवमिति भावः। त्यागं दानं न आद्रियते दानशक्त्यादरेण दातारं नाश्रयतीत्यर्थः, दातृपरित्यागेन कृपणाश्रयात्, विडालोऽपि नैवमिति भावः। विशेषज्ञतां न विचारयति विशेषज्ञतापर्यालोचनया विचक्षणं नावलम्बत इत्यर्थः, प्रायेण वणिजामाश्रयात्, भक्तोऽपि नैवमिति भावः।

দর্প-সমন্বিত যোদ্ধৃগণের উত্তোলিত তরবারি-সমূহরূপ পিঞ্জরমধ্যে আবদ্ধ করিয়া রাখিলেও সরিয়া পড়ে, (থ) মদজলরূপ বৃষ্টিদ্বারা অন্ধকারকারী হস্তিরূপ মেঘসমূহে পরিবেষ্টিত করিয়া রাখিলেও পলাইয়া যায়, (দ) আর এই লক্ষ্মী, প্রণয় রাখে না, কুলের প্রতি দৃষ্টিপাত করে না, রূপ দেখে না, কুলক্রমের অনুসরণ করে না, স্বভাবের প্রতি লক্ষ্য করে না, দক্ষতার আদর করে না, শাস্ত্রজ্ঞান শুনিতে চায় না, ধর্মের গৌরব রাখে না, দানশক্তির আদর করে না, বিশেষ অভিজ্ঞতার বিচার করে না, আচার পালন করে না, সত্য বোঝে না এবং পুরুষের

(१)...उल्लसितासिलता...। (२)...गजघटितघनघटाटोप...।
(३) आलोकयति। (४) अनुबुध्यते।

नश्यति (ध)। [अद्याप्यारूढ़-मन्दर-परिवर्त्तावर्त्त-भ्रान्ति-जनित-संस्कारेव परिभ्रमति (१) (न)। कमलिनी-सञ्चरण-(२) व्यतिकर-लग्न-नलिन-नाल-कण्टक-क्षतेव (३) न क्वचिदपि (४) निर्भरमाबध्नाति पदम्। (प) अतिप्रयत्न-विधृतापि परमेश्वरगृहेषु विविध-गन्धगज-गण्ड-मधुपान-मत्तेव परिस्खलति। (फ)

आचारं न पालयति श्वपाकगृहेऽपि गमनात्, वृषल्यपि नैवमिति भावः। सत्यं नावबुध्यते, प्रायेण धूर्त्ताश्रयात्, जड़ापि नैवमिति भावः। लक्षणं न प्रमाणीकरोति सामुद्रिकोक्तध्वजवज्रादिकरचिह्नादिदर्शनेन तादृशं पुरुषं नाश्रयति, तादृशं परिहाय लक्षणहीनावलम्बनात्, पथिकोऽपि नैवमिति भावः।

(ध) गन्धर्वेति। गन्धर्वनगरलेखा दृष्टिभ्रमादाकाशे नगरवद्दृश्यमाना कापि रेखा, सेव इयं लक्ष्मीः पश्यत एव पश्यन्तं जनमनादृत्यैव नश्यति विलयं याति। इदमतीवाश्चर्य्यमिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। गन्धर्वनगरदर्शनफलमुक्तं बृहत्संहितायाम्—"गन्धर्वनगरमुत्थितमापाण्डुरमशनिपातवातकरम्। दीप्ते नरेन्द्रमृत्यु-र्वामेऽरिभयं जयः सव्ये।" इत्यादि।

(न) अद्येति। आरूढ़ उत्पन्नो यो मन्दरपरिवर्त्तेन समुद्रमन्थनवेलायां मन्दराचलघूर्णनेन आवर्त्तो जलभ्रमिस्तत्र या भ्रान्तिर्लक्ष्म्या अपि तवत्याया घूर्णनं तया जनितः चिरायोत्पादितः संस्कारो भ्रमणरूपवेगाख्य-संस्कारो यस्याः सा तादृशी सतीव अद्यापि परिभ्रमति गृहाद् गृहान्तरं यातीत्यर्थः। अन्योऽपि पूर्वघूर्णनसंस्कार-वशात् समयान्तरेऽपि घूर्णते। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) कमेति। कमलिनीषु पद्मलतासु सञ्चरणव्यतिकरेण लक्ष्म्याः पद्मवनस्थायित्वप्रसिद्धेः विचरण-सम्पर्केण लग्नानि चरणे संसक्तानि यानि नलिनानां पद्मानां नालकण्टकानि तैः क्षता विदीर्णचरणेव लक्ष्मीः, क्वचिदपि पदं प्रतिष्ठामेव पदं चरणं निर्भरं दृढ़ं न आबध्नाति न करोति। अन्योऽपि कण्टकक्षतपदो दृढं पदमर्पयितुं न शक्नोति। अत्र चरणप्रतिष्ठयोर्भेदेऽपि पदशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(फ) अतीति। परमेश्वराणां महाराजानां गृहेषु अतिप्रयत्नेन विधृता आबद्धापि इयं लक्ष्मीः, विविधानां गन्धगजानां गण्डयोर्यानि मधूनि मदजलान्येव मधूनि मद्यानि तेषां पानेन मत्तेव सती परिस्खलति भ्रश्यति राजान्तरं यातीत्यर्थः। अन्यापि मद्यपानमत्ता यत्नेन धृतापि पश्यत एव भ्रश्यति। अत्रापि मदजल-मद्ययोर्भेदेऽपि मधुशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतयोः पूर्ववत् सङ्करः।

ধ্বজ-বজ্রাদি চিহ্ন দেখিয়া তাহার অনুসরণ করে না। (ধ) আকাশে গন্ধর্ব্বনগর-রেখার ন্যায় দেখিতে দেখিতেই লোপ পাইয়া যায়। (ন) সমুদ্রমন্থনের সময় মন্দরপর্ব্বতের ঘূর্ণনে সমুদ্রে যে ঘোলা জন্মিয়াছিল, লক্ষ্মী তাহাতে ঘুরিয়া, সেই সংস্কারবশতই যেন এখনও ঘুরিতেছে। (প) পদ্মবনে বিচরণ করিবার সময়ে পদ্মনালের কণ্টক লাগায় চরণ ক্ষত-বিক্ষত হইয়াছে বলিয়াই যেন লক্ষ্মী, কোন স্থানেও দৃঢ়ভাবে পদক্ষেপ করে না। (ফ) রাজাদের ঘরে অত্যন্ত যত্নে রাখিলেও লক্ষ্মী, নানাবিধ গন্ধহস্তীর গণ্ডের মধুপানে

---

(१) भ्रमति। (२)…सञ्चार…। (३)…नालकण्टकैव, नालकण्टकैत्येव।

(४) क्वचित् अपि शब्दौ नास्ति।

पारुष्यमिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति (ब)। विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्त्तिम् (भ)। अप्रत्ययबहुला च दिवसान्त-(१) कमलमिव समुपचित-(२) मूल-दण्ड-कोष-मण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम् (म)। लतेव विटपकानध्यारोहति (य)। गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला (र)। दिवस-

(ब) पारुष्यमिति। पारुष्यं कठिनतामिव पारुष्यं निर्द्दयत्वं उपशिक्षितुमिव असिधारासु निवसति। येनासिधारा यस्य कण्ठे पातयितुं शक्यते निर्द्दयतया चिराश्रयमपि तमपहाय सहसैव तं पातयितारमाश्रयतीति भावः। अत्र कठिनत्वनिर्द्दयत्वयोर्भेदेऽपि पारुष्यपदश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(भ) विश्वेति। विश्वस्य ब्रह्माण्डस्य रूपाणि यस्मिन् तादृशं यद्रूपं तद्विश्वरूपं तत्त्वं ग्रहीतुमिव नारायणमूर्त्तिमाश्रिता, तन्मूर्त्तेर्विश्वरूपत्ववत्त्वात्। येन हि कदाचिद्वाणिज्यलक्ष्मीरूपेण वणिजां कदाचिच्च राजलक्ष्मीरूपेण राज्ञां गृहेषु इत्यादिप्रकारेण भासत इति तात्पर्य्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) अप्रत्ययेति। किञ्च अप्रत्ययोऽविश्वासो बहुलो यस्यां सा, दिवसान्तकमलमिव दिवावसानपद्ममिव, समुपचितानि सम्यग्वृद्धिं प्राप्तानि मूलं विजयकारणीभूतं सैन्यं ब्रध्नदेशश्च, दण्ड उपायविशेषः नालञ्च, कोषो धनं मध्यदेशश्च, मण्डलं राष्ट्रं परिमण्डलञ्च एतानि यस्य तं तञ्च, भूभुजं राजानं मुञ्चति परित्यजति राजान्तरमाश्रयतीत्यर्थः। अतएवाप्रत्ययबहुलत्वमिति भावः। अत्र त्यागकारणाभावेऽपि तदुत्पत्तेः किं विभावना, आहोस्वित् मूलादिवृद्धिरूपे कारणे सत्यपि तत्कार्य्यस्थैर्य्यानुत्पत्तेर्विशेषोक्तिरित्यनयोः सन्देहसङ्करः पूर्णोपमा चानयोरप्यङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) लतेति। लतेव लक्ष्मीः, विटपकान् कुत्सितकामुकान् तरुशाखाश्च अध्यारोहति आश्रयति। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "विटपः पल्लवे षिड्गे विस्तारे स्तम्बशाखयोः।" इति विश्वः।

(र) गङ्गेति। गङ्गेव लक्ष्मीः, वसूनां धनानां अष्टानां देवविशेषाणाञ्च जनन्यपि, तरङ्गबुद्बुदवच्चञ्चला, पक्षे तरङ्गबुद्बुदैश्चञ्चला। पूर्णोपमा। पुरा किल गङ्गा वशिष्ठशापान्मानुषत्वप्राप्तानष्टौ वसूनुत्पादयामासेति महाभारतवार्त्ता।

মত্ত হইয়াই যেন চলিয়া যায়। (ব) নিষ্ঠুরতা শিক্ষা করিবার জন্যই যেন তরবারির ধারাতে বাস করে। (ভ) নারায়ণের নিকট হইতে বিশ্বরূপ গ্রহণ করিবার জন্যই যেন তাঁহার শরীর আশ্রয় করিয়াছে। (ম) লক্ষ্মীর প্রতি অবিশ্বাসই অধিক পরিমাণে করিতে হয়; কারণ, পদ্মের মূল, নাল, কোষ (বোথল, চাকা) ও বিস্তার বিশেষে বৃদ্ধি পাইয়া থাকিলেও দিনের শেষভাগে শোভা যেমন সেই পদ্মকে পরিত্যাগ করে, সেইরূপ রাজার সৈন্য, দণ্ডশক্তি, ধন ও রাজ্য এই সকল বিশেষ বৃদ্ধি পাইয়া থাকিলেও, লক্ষ্মী সেই রাজাকে পরিত্যাগ করে। (য) লতা যেমন বৃক্ষের শাখা আশ্রয় করে, লক্ষ্মীও তেমন কুৎসিত কামুক ব্যক্তিদিগকে আশ্রয় করে। (র) গঙ্গা যেমন বসুগণের জননী হইয়াও তরঙ্গ ও বুদ্বুদদ্বারা

(१) दिवसावसान...। (२) समुच्छित...।

করগতিরিব প্রকটিত-বিবিধ-সংক্রান্তিঃ (ল)। পাতালগুহেব তমোবহুলা (ব)। হিড়িম্বেব (১) ভীমসাহসৈকহার্য্যহৃদয়া (শ)। প্রাবৃড়িবাচিরদ্যুতি-কারিণী (ষ)। দুষ্টপিশাচীব দর্শিতানেকপুরুষোচ্ছ্রায়া স্বল্পসত্ত্বমুন্মত্তী-করোতি (স)। সরস্বতীপরিগৃহীতমীর্ষ্যয়েব নালিঙ্গতি জনম্, (হ) গুণ-

(ল) দিবসেতি। দিবসকরস্য সূর্য্যস্য গতিরিব লক্ষ্মীঃ, প্রকটিতা বিবিধেষু জনেষু সংক্রান্তিঃ সঞ্চারো যয়া সা, পক্ষে প্রকটিতা বিবিধা মহাবিষুবাদি দ্বাদশপ্রকারাঃ সংক্রান্তয়ো রাশ্যন্তরগমনানি যয়া সা। পূর্ণোপমা।

(ব) পাতালেতি। পাতালগুহেব লক্ষ্মীঃ, তমস্তমোগুণজনিতমোহঃ অন্ধকারশ্চ যস্যাং সা। পূর্ণোপমা।

(শ) হিড়িম্বেতি। হিড়িম্বা রাক্ষসীব, ভীমসাহসৈকেন পররাজ্যাক্রমণাদিকেবলভয়ঙ্করহঠকারিতয়া হার্য্যং হর্তুং শক্যং হৃদয়ং মনো যস্যাঃ সা, পক্ষে ভীমস্য বৃকোদরস্য সাহসেনৈব হিড়িম্ববধাদিকেবলসাহসকর্ম্মণা হার্য্যং হৃদয়ং যস্যাঃ সা। পূর্ণোপমা।

(ষ) প্রাবৃড়িতি। প্রাবৃট্ বর্ষাকাল ইব, অচিরদ্যুতিং অল্পকালস্থায়িনীং পুরভবনাদিশোভাং কর্ত্তুং শীলং যস্যাঃ সা, পক্ষে অচিরদ্যুতিং বিদ্যুতং কর্ত্তুং শীলং যস্যাঃ সা। পূর্ণোপমা।

(স) দুষ্টেতি। দুষ্টা ভয়প্রদর্শনাভিলাষাদ্দূষিতাশয়া পিশাচীব, দর্শিতঃ অনেকেষাং পুরুষাণাং উচ্ছ্রায়ঃ অভ্যুদয়ো যয়া সা তাদৃশী সতী, স্বল্পসত্ত্বং অল্পবুদ্ধিং জনং উন্মত্তীকরোতি তদভ্যুদয়দর্শনেন তদাশয়া উন্মত্তং করোতি, পক্ষে উত্তোলিতপাণিমানুষমানং পুরুষং তথা চ দর্শিতঃ স্বশরীরে প্রকটিতঃ অনেকেষাং পুরুষাণাং উচ্ছ্রায় উচ্চতা যয়া সা অতীবদীর্ঘেত্যর্থঃ, তাদৃশী সতী অল্পসত্ত্বং দুর্ব্বলং মানুষং উন্মত্তীকরোতি ভয়েনেতি ভাবঃ। পূর্ণোপমা।

(হ) সরেতি। সরস্বতীপরিগৃহীতং বিদ্যাবন্তমিত্যর্থঃ জনং ঈর্ষ্যয়েব নালিঙ্গতি নাশ্রয়তি, সপত্ন্যন্তরাশ্লিষ্টং পতিং সপত্ন্যন্তরবদিতি ভাবঃ। অতএবাত্র কার্য্যেণ সপত্নীব্যবহারসমারোপাৎ সমাসোক্তিরলঙ্কারো গুণোৎপ্রেক্ষয়া সঙ্কীর্য্যতে।

চঞ্চল, লক্ষ্মীও তেমন ধনের উৎপাদক হইয়াও তরঙ্গ ও বুদ্বুদের ন্যায় চঞ্চল। (ল) সূর্য্যের গতি যেমন মহাবিষুবপ্রভৃতি নানাবিধ সংক্রান্তি প্রকাশ করে, লক্ষ্মীও তেমন নানাবিধ লোকের গৃহে সঞ্চরণ করে। (ব) পাতাল-গহ্বরে যেমন বহুপরিমাণেই অন্ধকার, এই লক্ষ্মী আসিলে লোকেরও তেমন বহু পরিমাণেই মোহ হইয়া থাকে। (শ) ভীমসেনের সাহস যেমন হিড়িম্বা রাক্ষসীর মন অপহরণ করিয়াছিল, সেইরূপ কেবল ভয়ঙ্কর সাহসই লক্ষ্মীর মন অপহরণ করিয়া থাকে। (ষ) বর্ষাকাল যেমন বিদ্যুৎ প্রকাশ করে, লক্ষ্মীও তেমন লোকের অতি অল্পকালস্থায়ীই গৃহ-নগরের শোভা প্রদর্শন করে। (স) কোন দুষ্ট পিশাচী যেমন আপনার শরীরে বহুপুরুষ-পরিমিত উচ্চতা দেখাইয়া দুর্ব্বল ব্যক্তিকে ভয়ে উন্মত্ত করে, লক্ষ্মীও তেমন অনেক লোকের উন্নতি দেখাইয়া অল্পবুদ্ধি লোককে তাহার আশায় উন্মত্ত করে। (হ) সরস্বতীকর্ত্তৃক পরিগৃহীত লোককে (বিদ্বান্ ব্যক্তিকে) ঈর্ষ্যাবশতই যেন

(১) হিড়ম্বেব।

वन्तमपवित्रमिव न स्पृशति, उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते, सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति, (१) अभिजातमहिमिव लङ्घयति, शूरं कण्टकमिव परिहरति, दातारं दुःस्वप्नमिव (२) न स्मरति, विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति, मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति (३) (घ)। परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति (४) निजं चरितम् (क)। [तथाहि, सततं (५) उष्माणमारोपयन्त्यपि (६) जाड्यमुपजनयति (ख)। उन्नतिमादधानापि नीचस्वभावतामा-

(घ) गुणेति। गुणवन्तं जनं अपवित्रं चण्डालादिं जनमिव न स्पृशति। इत्थं द्वितीयान्तपदानां जनमिति प्रस्तुतविशेष्यपदानुषङ्गात् 'मनस्विनमुन्मत्तमिव हसतीत्यन्तं' यावत् प्रत्येकवाक्ये उपमालङ्कारः। उदारसत्त्वं महाशयं जनं। न बहु मन्यते नाद्रियते। अनिमित्तं उल्कापातादिदुर्लक्षणं। अभिजातं सत्कुलोत्पन्नं जनं अहिं सर्पमिव, लङ्घयति अतिक्रम्य याति। परिहरति परित्यजति। विनीतं विनयोपेतं। मनस्विनं प्रशस्तचित्तं।

(क) परेति। अपि चेति चार्थः। इन्द्रजालं दर्शयन्तीव जगति परस्परविरुद्धं परस्परविरुद्धधर्मान्वितमित्यर्थः, निजं चरितं प्रकटयतीत्यन्वयः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) लक्ष्मीचरिते परस्परविरुद्धधर्मवत्त्वं प्रदर्शयितुमाह तथाहीति। इयं लक्ष्मीः, उष्माणमारोपयन्त्यपि तापं प्रवर्त्तयन्त्यपि जाड्यं शैत्यमुपजनयतीति विरोधः, उष्माणं धनमदं जाड्यं जड़त्वं सदसद्विवेकहीनत्वमिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(ग) उन्नतिमिति। उन्नतिमादधानापि ऊर्द्धगतिं कुर्वाणापि नीचस्वभावता नीचवृत्तित्वं आविष्करोतीति विरोधः, उन्नतिमवस्थोत्कर्षं, नीचस्वभावता भीरुत्वजननेन कुत्सितचरित्रत्वमिति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

আলিঙ্গন করে না, (ক) গুণবান্ ব্যক্তিকে অপবিত্রের ন্যায় স্পর্শ করে না, মহাশয় ব্যক্তিকে অমঙ্গলের ন্যায় আদর করে না, সজ্জনকে দুর্লক্ষণের ন্যায় দেখে না, সৎকুলজাত ব্যক্তিকে সর্পের ন্যায় লঙ্ঘন করিয়া যায়, বীরকে কণ্টকের ন্যায় পরিত্যাগ করে, দাতাকে দুঃস্বপ্নের ন্যায় স্মরণও করে না, পাতকীর ন্যায় বিনয়ীর নিকটেও যায় না আর মনস্বী ব্যক্তিকে উন্মত্তের ন্যায় উপহাস করে। (ক) এবং এই লক্ষ্মী, ইন্দ্রজাল দেখাইতে দেখাইতে যেন এই জগতে পরস্পর-বিরুদ্ধ-ধর্ম্ম-সমন্বিত নিজের চরিত্র প্রকাশ করে। (খ) দেখ—সর্ব্বদা উত্তাপ জন্মাইয়াও শীতলতা জন্মায়, (ধনের অহঙ্কার জন্মায়, অথচ মানুষকে সদসদ্বিবেচনাহীন করে)। (গ) উপরে উঠাইয়াও নীচে রাখে, (অবস্থার উন্নতি জন্মায়, অথচ

(१) क्वचित् न पश्यतीति नञ् न दृश्यते। (२) दुःखस्वप्नं। (३) हसति।
(४) क्वचित् जगतीति नास्ति। (५) धम्मनं। (६) उपजनयन्त्यपि।

विष्करोति (ग)। तोयराशिसम्भवापि तृष्णां संवर्द्धयति (घ)। ईश्वरतां दधानापि अशिवप्रकृतित्वमातनोति (ङ)। बलोपचयमाहरन्त्यपि लघिमानमापादयति (च)। अमृतसहोदरापि कटु (१) विपाका (छ)। विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना (ज)। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया (झ)। रेणुमयीव

(घ) तोयेति। तोयराशेः समुद्रात् सम्भवतीति साऽपि, तृष्णा पिपासां संवर्द्धयतीति विरोधः, तृष्णां धनाकाङ्क्षामिति समाधानम्। विरोधाभासः।

(ङ) ईश्वरतामिति। ईश्वरतां दधानापि शिवत्वं धारयन्त्यपि अशिवप्रकृतित्वं शिवभिन्नस्वभावत्वमातनोतीति विरोधः, ईश्वरतां दधानापि लोकानां प्रभुत्वमापादयन्त्यपि अशिवप्रकृतित्वं परोत्पीडनहेतुतया अमङ्गलस्वभावत्वमातनोतीति परिहारः। विरोधाभासः।

(च) बलेति। बलोपचयमाहरन्त्यपि दैहिकशक्तिवृद्धिं कुर्वत्यपि लघिमानं भारराहित्यमापादयतीति दैहिकबलवृद्धौ देहे भारावश्यम्भावाद्विरोधः, बलोपचयं सैन्यवृद्धिं लघिमानं कार्पण्यमिति समाधानम्। विरोधाभासः।

(छ) अमृतेति। अमृतसहोदरापि एकसमुद्रादुत्पन्नत्वादिति भावः, कटुविपाका रसनायां कटुरसेति अमृतसहोदराया मधुररसत्वसम्भवे कटुरसत्वाद्विरोधः, कटुः परेषामुत्पीडकतया दुःखकरः विपाकः परिणामो यस्याः सेति परिहार। विरोधाभासः।

(ज) विग्रहेति। विग्रहवत्यपि मूर्त्तिमत्यपि, अप्रत्यक्षं दर्शनं ज्ञानं यस्याः सा चाक्षुषप्रत्यक्षायोग्येत्यर्थ इति विरोधः, विग्रहवत्यपि प्रयोजकतया युद्धवत्यपि परस्परयुद्धसङ्घटनकारिण्यपि दैवत्वादेवाप्रत्यक्षदर्शनेति समाधानम्। विरोधाभासः।

(झ) पुरुषेति। पुरुषोत्तमरतापि उत्कृष्टपुरुषासक्तापि खलजनप्रियेति विरोधः, पुरुषोत्तमरतापि नारायणासक्तापि खलजनप्रिया प्रायेण खलजनाश्रयणादिति परिहारः। विरोधाभासः।

মানুষকে কুৎসিতস্বভাব করে)। (ঘ) সমুদ্র হইতে জন্মিয়াও পিপাসা বৃদ্ধি করে, (ধনের আকাঙ্ক্ষা-বৃদ্ধি করে)। (ঙ) শিব হইয়াও অশিবস্বভাব বিস্তার করে, (লোকের প্রভুত্ব জন্মায়, অথচ স্বভাব, সাধারণের পক্ষে অমঙ্গলজনক করে)। (চ) শরীরের বল-বৃদ্ধি করিয়াও লঘুতা জন্মায় (সৈন্য বৃদ্ধি করে, অথচ কৃপণস্বভাব করে)। (ছ) অমৃতের সহোদরা হইয়াও জিহ্বাতে কটুরস বলিয়া অনুভূত হয়, (পরিণামে দুঃখ জন্মায়)। (জ) মূর্ত্তিমতী হইয়াও চাক্ষুষ-প্রত্যক্ষের যোগ্য নহে (ধনিগণের মধ্যে পরস্পর কলহ জন্মায় এবং দৃষ্টিগোচর হয় না)। (ঝ) উৎকৃষ্ট পুরুষে আসক্ত হইয়াও খল ব্যক্তিকে ভালবাসে (নারায়ণে আসক্ত থাকে এবং প্রায়শঃ দুর্জ্জনকেই ভালবাসে)। (ঞ) ধূলিময়ী

(१) कटुक...।

स्वच्छमपि कलुषीकरोति (अ)। यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म्म केवलमुद्वमति (ट)। तथाहि, इयं संवर्द्धन-वारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम्, व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम्, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्, निवासजीर्णवलभी धन-मदपिशाचिकानाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपताका (१) सर्वा-

(अ) रेणुभिरिति। रेणुमयीव धूलिनिष्पन्नेव स्वच्छं निर्म्मलमपि कलुषीकरोति मलिनं विदधातीति विरोधः, स्वच्छमपि रागाभिमानादिहीनमपि जनं कलुषीकरोति रागाभिमानादिमन्तं करोतीति समाधानम्। अत्र धूलिनिष्पन्नत्वस्य तृणे चणात् क्रियोत्प्रेक्षा विरोधाभासस्यानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ट) यथेति। अपि चेति चार्थः। चपला चञ्चला, विद्युदिवेति च ध्वन्यते, दीप्यते प्रकाशते आवि-र्भवति। कज्जलवन्मलिनमेव परहिंसापरभूमिहरणादिकं पापमेव न तु प्रायेण शोभनमित्येवशब्दार्थः कर्म्म केवलमुद्वमति आविष्करोति। पक्षे कज्जलमेव मलिनं कर्म्म। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ठ) मलिनकर्म्मोद्वमनं प्रतिपादयन्नाह तथाहीति। इयं लक्ष्मीः, तृष्णा विषयस्पृहा एव विषवल्ल्यः अनर्थहेतुत्वात् मरणलतास्तासां संवर्द्धनवारिधारा वृद्धिहेतुभूतनिरवच्छिन्नजलसेकः, सत्यामस्यां तृष्णावृद्धिदर्शना-दिति भावः। अत्र तृष्णासु विषवल्लीत्वारोपो लक्ष्म्यां वारिधारात्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कारः। इतः 'राहुजिह्वा धर्म्मेन्दुमण्डलस्य' इत्यन्तं यावत् प्रायेण प्रत्येकवाक्य एवायमलङ्कारः समुन्नेयः। इन्द्रिया-ण्येव मृगास्तेषां व्याधगीतिः, आकृष्य नष्टीकरणात्। व्याधा हि गीतेन हरिणानाकृष्य निघ्नन्तीति प्रसिद्धम्। सच्चरितान्येव चित्राणि आलेख्यानि तेषां परामर्शधूमलेखा आवरणधूमराजिः, सत्यामस्यां प्रायेण लोकानां सच्चरितावरणात्। मोहाः कर्त्तव्याकर्त्तव्यविवेकाभावा एव दीर्घनिद्रास्तासां विभ्रमशय्या विलासशय्या, सत्या-मस्यां मोहवृद्धिदर्शनात्। धनमदा एव पिशाचिकास्तासां निवासाय अवस्थानाय जीर्णवलभी पुरातनचन्द्रशाला पिशाचानां जीर्णमन्दिर इव धनमदानां लक्ष्म्यामेवावासात्। शास्त्राण्येव दृष्टयो नेत्राणि तासां तिमिरोद्-गतिः नेत्ररोगविशेषस्योत्पत्तिः, अनयैव शास्त्रदृष्टिव्याघातात्। सर्वाविनयानां सर्वविधदुराचाराणां पुरःपताका अग्रस्थवैजयन्ती, पताकादर्शनेन रथागमनानुमानवत् लक्ष्मीदर्शनेन सर्वविधदुराचरणानुमानात्। अत्र तु

হইয়াই যেন নির্ম্মল বস্তুকেও মলিন করে (অভিমানাদি-দোষ-বিহীন ব্যক্তিকে অভিমানাদি দোষে দোষী করে)। (ট) আর, যেমন যেমন এই চঞ্চলা লক্ষ্মী আবির্ভূত হয়, তেমন তেমনই দীপশিখার ন্যায় কজ্জলবৎ মলিন পাপকার্য্যই কেবল প্রকাশ করিতে থাকে। (ঠ) দেখ এই লক্ষ্মী, বিষয়লালসারূপ বিষলতাদিগের বৃদ্ধিজনক জলধারা; ইন্দ্রিয়রূপ হরিণগণের পক্ষে ব্যাধের গান; সচ্চরিত্ররূপ চিত্রসমূহের আবরণকারী ধূমশ্রেণী; মোহরূপ দীর্ঘনিদ্রার পক্ষে কোমল শয্যা; ধনাভিমানরূপ পিশাচীদিগের বাসের জন্য পুরাতন চিলেকোঠা; শাস্ত্ররূপ নয়নের পক্ষে তিমির নামক নেত্ররোগ; সর্ব্বপ্রকার দুরাচারের সম্মুখের পতাকা; ক্রোধবেগরূপ জলজন্তুগণের উৎপত্তির নদী, স্রক্-চন্দন-বনিতা প্রভৃতি

(१) पुरःसरपताका।

विनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिः (१) विषयमधूनाम्, सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, (२) अकालप्रावृट् गुणकलहंसकानाम्, विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्, (३) प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्म्मेन्दुमण्डलस्य (ठ)। न हि तं पश्यामि (ड) यो ह्यपरिचितयानया (४) न निर्भरमुपगूढः, यो वा न

निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। क्रोधावेगा एव ग्राहा जलजन्तुविशेषास्तेषां उत्पत्तिनिम्नगा उद्भवनदी, अस्यां सत्यामेव बाहुल्येन क्रोधावेगोत्पत्तिदर्शनात्। विषयाः स्रक्चन्दनादिभोग्यपदार्था एव मधूनि अनर्थहेतुत्वेन मद्यानि तेषां आपानभूमिः पानस्थानं, अस्यामेव बाहुल्येन भोगदर्शनात्। भ्रूविकारा भ्रूकुट्य एव नाट्यानि अभिनयास्तेषां सङ्गीतशाला, अस्यामेव बाहुल्येन भ्रूकुटीकरणात्। दोषाः कामादय एव आशीविषाः प्राणनाशकत्वात् विषधरास्तेषां आवासदरी अवस्थानगुहा, अस्यामेव कामाद्यवस्थानात्। सत्पुरुषाणां व्यवहाराः सदयाचरणानि तेषां उत्सारणाय दूरीकरणाय वेत्रलता, उत्पन्नायामस्यां सत्पुरुषाणामपि पूर्वसदयाचरणविलोपात्। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। गुणा दयादाक्षिण्यादय एव कलहंसकास्तेषां अकालप्रावृट् असमयागतवर्षाकालः, वर्षाकाले हंसानामिव सत्यामस्यां गुणानामदर्शनात्। लोकापवादा एव विस्फोटका व्रणविशेषास्तेषां विसर्पणभूमिः प्रसारणक्षेत्रं, सत्यामस्यां लोकापवादविस्तारदर्शनात्। कपटं कूटव्यवहार एव नाटकं तस्य प्रस्तावना आमुखं, अस्यां सत्यामेव कपटाचरणारम्भात्। काम एव करी हस्ती तस्य कदलिका रम्भा, अस्यामेव कामस्य स्वैरविचरणात्। साधुभावस्य सौजन्यस्य वध्यशाला हत्यागृहं, अस्यामेव साधुताविलोपात्। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। तथा धर्म्मो धर्म्माचरणमेव इन्दुमण्डलं निर्म्मलतया चन्द्रबिम्बं तस्य राहुजिह्वा, अनयैव धर्म्माचरणग्रासात्।

(ड) नहीति। तं जनम्। न निर्भरमुपगूढो न गाढमालिङ्गितः सम्पत्तिलिप्सया निरतिशयचेष्टानन्तरं तया न संश्लिष्ट इत्यर्थः। न विप्रलब्धः परित्यज्य न प्रतारितः। अत्र लक्ष्म्यां कार्य्येणाविश्वासिन्याः कुलटाया व्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः। तथा यच्छब्दान्वितवाक्ययोः परपाठात् "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिवद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स तु 'नहि तं पश्यामि' इति वाक्यस्य परपाठेनैव समाधेयः।

ভোগ্যপদার্থরূপ মদ্যের পানভূমি; ভ্রূকুটীরূপ অভিনয়ের রঙ্গালয়; কামাদিদোষরূপ বিষধর-সর্পগণের বাসের গুহা; সৎপুরুষগণের সদ্ব্যবহার দূর করিবার বেত্রযষ্টি; দয়া-দাক্ষিণ্য প্রভৃতি গুণরূপ কলহংসগণের অসময়োপস্থিত বর্ষাকাল; লোকনিন্দারূপ বিস্ফোটের বিস্তার পাইবার ক্ষেত্র; কপটাচরণরূপ নাটকের প্রস্তাবনা; কন্দর্পরূপ হস্তীর কদলীবন; সৌজন্যের হত্যাগৃহ এবং ধর্ম্মাচরণরূপ চন্দ্রমণ্ডলের পক্ষে রাহুর জিহ্বা, এই লক্ষ্মী। (ড) আমি সেরূপ লোক দেখিতে পাই না, যে এই অপরিচিতা লক্ষ্মীকর্ত্তৃক গাঢ় আলিঙ্গিত হয় নাই, অথবা

---

(१) आवासभूमिः। (२)....व्याहाराणां। (३) विस्फोटानां। (४) क्वचित् अनयेति नास्ति।

विप्रलब्धः (ङ)। नियतमियमालेख्यगतापि चलति, पुस्तमय्यपि (१) इन्द्रजालमाचरति, उत्कीर्णापि विप्रलभते, श्रुताप्यभिसन्धत्ते, चिन्तितापि वञ्चयति (ढ)। एवंविधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः (२) विक्लवा भवन्ति (३) राजानः, सर्व्वाविनयाधिष्ठानताञ्च गच्छन्ति (ण)। तथाहि अभिषेकसमय एव चैषां (४) मङ्गलकलसजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्य्यधूमेनेव मलिनीक्रियते (५) हृदयम्, पुरोहित-कुशाग्र-सम्मार्जनीभिरिवाप-

(ढ) सर्व्वप्रकारेणैव लक्ष्म्याः प्रतारणां प्रदर्शयन्नाह नियतमिति। नियतं निश्चितं। आलेख्यगतापि चित्रार्पितापि चलति गृहान्तरं याति। अत्र मूलबिम्बचित्रितप्रतिबिम्बयोरभेदविवक्षणात् दैवत्वाच्च समाधानाद्विरोधाभासोऽलङ्कारः। एवमन्यत्रापि। पुस्तमय्यपि मृत्काष्ठादिनिर्म्मितपुत्तलिकारूपापि इन्द्रजालमाचरति कुहकं प्रदर्शयति, आकस्मिकविलोपादिव्यवहारात्। "मृदा वा दारुणा वाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्म्मणा। लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते।" इत्यमरटीकायां भरतः। उत्कीर्णापि पाषाणं भित्त्वा निर्म्मितापि विप्रलभते सहसा परित्यज्य प्रतारयति। श्रुतमस्यास्तीति श्रुता अर्श आदित्वादच्, दुर्व्यवहारनिषेधकशास्त्रज्ञानवत्यपीत्यर्थः अभिसन्धत्ते दुर्व्यवहरति, अविश्वासाचरणात्। चिन्तितापि लाभाशया भक्त्या ध्यातापि वञ्चयति, आगमनसम्भावनां प्रदर्श्य अनागमनात्।

(ण) एवमिति। परिगृहीता आश्रिताः। विक्लवाः समाकुलाः। सर्व्वेषां अविनयानां दुराचाराणां अधिष्ठानतामास्पदत्वं। अत्र लक्ष्म्यां कार्य्येण पिशाचीव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः।

(त) वैक्लव्यं अविनयाधिष्ठानताञ्चोपपादयितुमाह तथाहीति। एषां राज्ञां। दाक्षिण्यमौदार्य्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। 'ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यश इत्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये अयमेवालङ्कारः। अग्निकार्य्यस्य अभिषेकाङ्गहोमस्य धूमेन। पुरोहितानां कुशाग्राण्येव सम्मार्जन्यस्ताभिः क्षान्तिः क्षमागुणः अपनीयते

যে প্রতারিত হয় নাই। (ঢ) এই লক্ষ্মী চিত্রপটে চিত্রিত হইলেও নিশ্চয়ই চলিয়া যায়, মৃত্তিকা কিংবা কাষ্ঠাদিদ্বারা পুত্তলিকা করিয়া রাখিলেও সে ইন্দ্রজালের ন্যায় ব্যবহার করে, পাষাণ হইতে ক্ষোদিত করিয়া রাখিলেও সে প্রতারণা করে, শাস্ত্রাভিজ্ঞ হইলেও দুর্ব্যবহার করে এবং ভক্তি সহকারে ধ্যান করিলেও বঞ্চনা করে। (ণ) এইরূপ দুরাচারিণী লক্ষ্মী, অদৃষ্টবশতঃ কোন প্রকারে আসিয়া আশ্রয় করিলেই রাজগণ একেবারে আকুল হইয়া পড়েন এবং সকলপ্রকার দুরাচারপরায়ণ হইয়া উঠেন। (ত) দেখ—অভিষেকের সময়েই রাজাদের সে ঔদার্য্য যেন মাঙ্গলিক কলসের জলে প্রক্ষালন করিয়া ফেলে, হোমের ধূমেই যেন হৃদয় মলিন করে, পুরোহিতগণের কুশাগ্ররূপ সম্মার্জ্জনীই (ঝাঁটা, পিছা) যেন ক্ষমাগুণ অপসারিত করিয়া দেয়, পট্টবসনের উষ্ণীষবন্ধনই যেন 'আমিও বৃদ্ধ হইব' এই চিন্তাকে

(१) पुस्तकमय्यपि। (२) दैवपरिगृहीताः। (३) विक्लवीभवन्ति।
(४) एवैषां, एव चैतेषां। (५) मलिनीभवति।

नीयते (१) क्वान्तिः, उष्णीषपट्ट-(२) बन्धेनेवावच्छाद्यते (३) जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेवापवार्य्यते (४) परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापह्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिवोत्सार्य्यन्ते गुणाः, जयशब्दकलकलैरिव (५) तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यशः (त)। केचित् (६) श्रम-वश-शिथिल-(७) शकुनि-गल-पुट-(८) चपलाभिः खद्योतोन्मेष-मुहूर्त्त-मनोहराभिर्मनस्विजनगर्हिताभिः सम्पद्भिः प्रलोभ्यमानाः, (थ) धन-लव-लाभाव-लेप-विस्मृत-जन्मानोऽनेकदोषोपचितेन दुष्टासृजेव (९) रागावेशेन बाध्य-

---

धूल्यादिवत् दूरीक्रियत इव, प्रायेण सहिष्णुताहीनत्वात्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। उष्णीषपट्टबन्धेन उष्णीषीभूतक्षौमवसनबन्धनेन जरागमनस्मरणं वार्द्धक्यं मे भविष्यतीति चिन्ता अवच्छाद्यते मस्तकवत् आव्रियत इव, प्रायेण इन्द्रानामुपहासात्। आतपत्रमण्डलेन मण्डलीकृतच्छत्रेण परलोकदर्शनं जन्मान्तरदृष्टिः अपवार्य्यते अन्यजनदर्शनवत् निवार्य्यते, प्रायेण जन्मान्तरभाविदुःखज्ञाना-भावेन पापाचरणात्। चामराणां पवनैर्वायुभिः सत्यवादिता अपह्रियते धूलिवद्दूरीक्रियत इव, प्रायेण मिथ्यावादित्वात्। वेत्रदण्डैः गुणा दयादयः उत्सार्य्यन्ते इतरलोकवत् दूरीक्रियन्त इव, प्रायेण तेषां निर्गुण-त्वात्। साधुवादाः सौजन्यप्रशंसावाक्यानि तिरस्क्रियन्ते साधारणालापवत् आच्छाद्यन्त इव, प्रायेण तत् सौजन्यप्रशंसाविमुखत्वात्। ध्वजपटपल्लवैः उत्तोलितकेतुदण्डलग्नविस्तृतपताकाभिः, यशः परामृश्यते आर्द्र-श्वेतवर्णवत् प्रोञ्छ्यत इव, तदवधि नानादुराचारवशात् प्रायेण तेषां यशोविलोपात्।

(थ) केचिदिति। केचित् राजानः, विह्वलतामुपयान्तीति वक्ष्यमाणेनास्यान्वयः। श्रमवशेन दूरोड्डय-नादिपरिश्रमहेतुना शिथिलं यत् शकुनेर्मयूरादिपक्षिणः गलपुटं गलदेशस्तद्वत् चपलाभिश्चञ्चलाभिः, खद्योतो-न्मेषवत् ज्योतिरिङ्गणप्रकाशवत् मुहूर्त्तमनोहराभिः क्षणविनश्वरत्वात् किञ्चित्कालमात्रमनोज्ञाभिः, अतएव मनस्विजनगर्हिताभिर्ज्ञानिलोकनिन्दिताभिः सम्पद्भिर्धनादिसम्पत्तिभिः, प्रलोभ्यमानाः लोभं नीयमानाः। अत्र लुप्तोपमाद्वयं पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्चेत्येतेषां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(द) धनेति। धनलवस्य अत्यल्पधनस्यापि लाभावलेपेन प्राप्ताहङ्कारेण विस्मृतानि जन्मानि यैस्ते,

---

আচ্ছাদন করে, প্রসারিত ছত্রই যেন জন্মান্তরের প্রতি দৃষ্টিপাতকে নিবারণ করে, চামরের বায়ুই যেন সত্যবাদিতা অপহরণ করে, বেত্রযষ্টিই যেন দয়া প্রভৃতি গুণসমূহকে সরাইয়া দেয়, জয়ধ্বনির কোলাহলই যেন সৌজন্যের প্রশংসাকে নীচে ফেলিয়া রাখে এবং ধ্বজের বিস্তৃত পতাকাই যেন যশ মুছিয়া ফেলে। (থ) পরিশ্রমবশতঃ পক্ষীর শিথিল গলদেশের ন্যায় চঞ্চল এবং জোনাকি পোকার প্রকাশের ন্যায় অল্পকালমাত্রই দেখিতে সুন্দর, সুতরাং জ্ঞানি-লোকের নিন্দার ভাজন সম্পদদ্বারা কোন কোন রাজা লুব্ধ হইয়া পড়েন, (দ) সামান্য ধন-লাভের অহঙ্কারে স্ব স্ব জন্মবৃত্তান্ত বিস্মৃত হইয়া যান, দূষিত রক্তের ন্যায় নানাবিধ

---

(१) अपह्रियते। (२)...पट...। (३) अवाच्छाद्यते। (४) अपसार्य्यते, अपर्य्यायते।
(५)...कलकलरवैः। (६) कश्चित्। (७) श्रमशिथिल...। (८)...पक्षपुट...। (९) दोषाङ्कजेव।

मानाः, (द) विविधविषय-ग्रास-(१) लालसैः पञ्चभिरप्यनेक-सहस्रसंख्यैरिवे-न्द्रियैरायास्यमानाः, (ध) प्रकृतिचञ्चलतया लब्धप्रसरेण (२) एकेनापि सहस्रता-मिवोपगतेन मनसा आकुलीक्रियमाणा विह्वलतामुपयान्ति (न)। ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते, मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, सत्त्वैरिवावष्टभ्यन्ते, वायुनेव विडम्ब्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते, (प) मदनशरैर्मर्माहता इव (३) मुख-

---

अत्यल्पस्यापि धनस्याभिमानेन 'के वयं, केषां पुत्राः, कीदृश्यावस्था अभूमे'ति स्मरणहीना इत्यर्थः। दत्तकपुत्र-परमेतत्। अनेकैर्दोषैः कामक्रोधादिभिः वातपित्तकफविकारैश्च उपचितो वृद्धिं गतस्तेन, दुष्टाम्बुनेव दूषितरक्तेनेव, रागावेशेन विषयासक्तिसम्पृक्तया, बाध्यमाना अधीरीक्रियमाणाः पीड्यमानाश्च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ध) विविधेति। विविधानां विषयाणां शब्दस्पर्शादीनां ग्रासेषु ग्रहणेषु लालसैरभिलाषुकैः, पञ्चभिर्वस्तुतः पञ्चसंख्यकैरपि विषयबाहुल्यादनेकसहस्रसंख्यैरिव सद्भिः, इन्द्रियैः श्रोत्रत्वगादिज्ञानेन्द्रियैः वाक्पाण्यादिकर्मेन्द्रियैश्च आयास्यमानाः स्वस्वविषयेषु सततगाढप्रवर्त्तनया परिक्लिश्यमानाः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न)। प्रकृतीति। तथा प्रकृत्या स्वभावेनैव चञ्चलतया हेतुना, लब्धप्रसरेण प्राप्तावकाशेन नानाविषयधाविना, अतएव एकेनापि सता सहस्रतां सहस्रसंख्यकत्वं उपगतेनेव विषयबाहुल्यात् प्राप्तेनेव मनसा आकुलीक्रियमाणाः सन्तः, विह्वलतामस्थिरतामुपयान्ति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) तदा च तेषामवस्थामाह ग्रहैरित्यादि। ग्रहैः पूतनादिभिः गृह्यन्ते ध्रियन्त इव। क्षणे क्षणे विविधभावभङ्गीकरणादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अग्रेतनेष्वप्ययमेव भावोऽलङ्कारश्च वेदितव्यः। भूतैर्देवयोनिविशेषैः। मन्त्रैराथर्वणिकैस्तान्त्रिकैर्वा आवेश्यन्ते कैश्चिज्जनैरात्माधीनतायां प्रवेश्यन्त इव वशीक्रियन्त इवेत्यर्थः। सत्त्वैर्भल्लूकादिहिंस्रजन्तुभिः अवष्टभ्यन्ते बलादाश्रीयन्त इव, कदाचिद्दयालताप्रत्यायनादिति भावः। वायुना वायुरोगेण विडम्ब्यन्ते विचाल्यन्त इव। तथा पिशाचैर्ग्रस्यन्ते अवलम्ब्यन्त इव।

দোষে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত বিষয়াসক্তিতে যাতনা ভোগ করিতে থাকেন, (ধ) শব্দ-স্পর্শপ্রভৃতি নানাবিধ বিষয় গ্রহণ করিতে অভিলাষী এবং পঞ্চসংখ্যক হইলেও বিষয়বাহুল্যনিবন্ধন যেন অনেক সহস্র সংখ্যা প্রাপ্ত—এইরূপ ইন্দ্রিয়গণদ্বারা কষ্ট ভোগ করিতে থাকেন, (ন) মন, স্বভাবতই চঞ্চল বলিয়া নানাবিষয়ে ধাবিত হইতে থাকে সুতরাং এক হইলেও যেন সহস্র সংখ্যা প্রাপ্ত হয়, অতএব সে মনদ্বারাও রাজারা আকুলিত হইয়া একেবারে বিহ্বল হইয়া পড়েন। (প) তখন পূতনাপ্রভৃতি কোন কোন গ্রহ আসিয়া যেন তাঁহাদিগকে আশ্রয় করে, ভূতেই যেন পাইয়া বসে, কেহ কেহ মন্ত্রশক্তিতেই যেন তাঁহাদিগকে বশ করিয়া ফেলে, হিংস্রজন্তুতেই যেন আশ্রয় করে, বায়ুরোগেই যেন বিচলিত করিতে থাকে,

---

(१)...विषयरसग्रास...। (२)...प्रसारेण। (३)...आमर्हता इव।

मुखभङ्गसहस्राणि कुर्वते, धनोष्मणा पच्यमाना इव विचेष्टन्ते, गाढ़प्रहाराहता इव (१) अङ्गानि न धारयन्ति, (फ) कुलीरा इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति, (ब) अधर्म्मभग्नगतयः पङ्गव इव परेण सञ्चार्य्यन्ते, (भ) मृषावाद-विष-विपाक-(२) सञ्जात-मुख-रोगा इवातिकृच्छ्रेण जल्पन्ति, (म) सप्तच्छद-तरव इव कुसुम-रजो-विकारैरासन्नवर्त्तिनां (३) शिरः-शूलमुत्पादयन्ति, (य) आसन्नमृत्यव इव

(फ) अवस्थान्तरमप्याह मदनेत्यादि। मुखभङ्गसहस्राणि नानाविधा मुखभङ्गीरित्यर्थः। अत्रापि प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। धनोष्मणा धनाहङ्कारजनितसन्तापेन। विचेष्टन्ते निस्पन्दविस्पन्दनादीर्विविधचेष्टाः कुर्वन्ति, आत्मगतधानावदिति भावः। गाढप्रहारेण लगुड़ादेस्तीव्राघातेन आहता इव। न धारयन्ति स्वयं न वहन्ति।

(ब) कुलीरा इति। कुलीराः कर्कटा इव, वक्रं विचरन्ति सर्व्वैरेव सार्द्धं कौटिल्यमाचरन्तीत्यर्थः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(भ) अधर्म्मेति। अधर्म्मेण पापेन भग्ना विनष्टा गतिः कर्त्तव्यमार्गे गमनं येषां ते, अन्यत्र तु पापेन विनष्टगमनशक्तयः, अतएव पद्भ्यां न गच्छन्तीति पङ्गवस्त इव, परेण अमात्यादिना सञ्चार्य्यन्ते उपदेशादिना कर्त्तव्यमार्गं परिचाल्यन्ते, अन्यत्र तु परेण बन्धुजनेन सञ्चार्य्यन्ते हस्तावलम्बनादिना गमनं कार्य्यन्ते। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णा पूर्णोपमा।

(म) मृषेति। मृषावादा मिथ्योक्तय एव विषाणि तेषां विपाकेन विकारेण सञ्जातो मुखरोगो येषां ते तादृशा इव सन्तः, अतिकृच्छ्रेण नितान्तकष्टेन जल्पन्ति प्रलपन्ति। प्रायेणाभिमानवशात् तूष्णीमेव तिष्ठन्ति यदि कदाचिन्निर्ब्बन्धातिशयेन वदन्ति तदपि प्रलापप्रायमेवेति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) सप्तेति। सप्तच्छदतरवः सप्तपर्णवृक्षा इव, कुसुमानि नेत्ररोगा अवज्ञासूचकनेत्रभङ्गीविशेषा एव रजोविकाराः रजोगुणपरिणामास्तैः, आसन्नवर्त्तिनां जनानां शिरःशूलं तज्जन्यदुःखमिव दुःखं उत्पादयन्ति, अन्यत्र तु कुसुमरजसां पुष्पपरागाणां विकारैस्तत्सम्पर्कजनितवायुप्रकोपैरित्यर्थः शिरःशूलं मस्तकवेदनाम्। सप्तपर्णकुसुमपरागस्पर्शातिशयेन शिरोरोगो जायत इति वैद्यशास्त्रे प्रसिद्धम्। पूर्णोपमा। "कुसुमं स्त्रीरजो-नेत्ररोगयोः फलपुष्पयो"रिति हेमः।

এমন কি, পিশাচেই যেন পাইয়া বসে। (ফ) আবার তাঁহারাও মদনশরে মর্ম্মাহত হইয়াই যেন বিবিধ মুখভঙ্গী করিতে থাকেন, ধনের অহঙ্কারাগ্নিতে পচ্যমান হইয়াই যেন নানাবিধ ভাব-ভঙ্গী প্রকাশ করেন, (ব) কর্কটের ন্যায় রাজারা সর্ব্বদাই বক্রভাবে চলিয়া থাকেন, (ভ) পাপে, রাজাদের কর্ত্তব্য পথে চলিবার শক্তি বিনষ্ট হইয়া যায়, সুতরাং তাঁহারা পঙ্গুর ন্যায় অন্যকর্ত্তৃক পরিচালিত হইয়া থাকেন, (ম) মিথ্যাবাদিতারূপ বিষের বিকারে মুখ-রোগ উৎপন্ন হওয়ায়ই যেন অত্যন্ত কষ্টে জল্পনা করিয়া থাকেন, (য) সপ্তপর্ণ বৃক্ষ যেমন পুষ্প-রেণুদ্বারা নিকটবর্ত্তী লোকের শিরোরোগ জন্মায়, রাজারাও তেমন দ্রষ্টোগুণ-

(१) अभिहता इव। (२) मृषावादविपाक...। (३) पार्श्ववर्त्तिनां।

बन्धुजनं (१) अपि नाभिजानन्ति, (र) उत्कुपित-(२) लोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते, (ल) कालदष्टा इव महामन्त्रैरपि न प्रतिबुध्यन्ते, (व) जातुषा-भरणानीव (३) सोष्माणं न सहन्ते, (श) दुष्टवारणा इव महामानस्तम्भ-निश्चलीकृताः (४) न गृह्णन्त्युपदेशम्, (ष) तृष्णाविषमूर्च्छिताः (५) कनक-

---

(र) आसन्नेति आसन्नमृत्यवो जना इव, बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति न परिचिन्वन्ति, एकत्राभिमाना-दन्यत्र ज्ञानलोपादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ल) उत्कुपितेति। उत्कुपितलोचना रुग्णनेत्रा जना इव, तेजस्विनः प्रतापवतो लोकान् नेक्षन्ते ईर्ष्यया नावलोकयन्ति, अन्यत्र तु तेजस्विनः सूर्य्यादीन् नेक्षन्ते चक्षुःप्रतिघातान्नावलोकयितुमर्हन्ति। पूर्णोपमा।

(व) कालेति। कालेन महाविषसर्पेण दष्टा जना इव, महामन्त्रैरपि षाड्गुण्यविषयकोत्कृष्ट-मन्त्रणाभिरपि न प्रतिबुध्यन्ते बुद्धिवैगुण्यान्न कर्त्तव्यमवगच्छन्ति, अन्यत्र तु महामन्त्रैरपि विषवैद्यानामित्यर्थः, प्रतिबुध्यन्ते चैतन्यमापद्यन्ते। पूर्णोपमा।

(श) जातुषेति। जतुषा लाक्षया निर्म्मितानीति जातुषाणि आभरणानीव, सोष्माणं तेजस्विनं पुरुषं अग्निञ्च न सहन्ते। एकत्र ईर्ष्यावशादन्यत्र विगलनादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ष) दुष्टेति। दुष्टवारणा अशिक्षितहस्तिन इव, महता मानेन अहङ्कारेण यः स्तम्भः स्तब्धता तेन निश्चलीकृताः सन्तः, अन्यत्र तु महत् मानं प्रमाणं यस्य तादृशो यः स्तम्भ आलानस्तम्भस्तेन तद्बन्धनेन निश्चली-कृताः सन्तः, उपदेशं शिक्षां। पूर्णोपमा।

(स) तृष्णेति। तृष्णा धनलालसैव विषं तेन मूर्च्छिताः प्राप्तमोहाः सन्तः, सर्वं पदार्थं कनकमयमिव धनमयमिव पश्यन्ति, सर्वदा तच्चिन्तावशादिति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकगुणोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

সম্ভব নয়নভঙ্গীদ্বারা নিকটবর্ত্তী লোকের দুঃখ জন্মাইয়া থাকেন, (র) মুমূর্ষু ব্যক্তির ন্যায় রাজারা বন্ধুজনকেও চেনেন না, (ল) চোখ উঠিলে সে লোক যেমন কোন তেজস্বী পদার্থের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে পারে না, রাজারাও তেমন ঈর্ষাবশতঃ তেজীয়ান্ লোকের প্রতি দৃষ্টি-পাত করেন না, (ব) কালসর্পে দংশন করিলে সে লোক যেমন ওঝার উৎকৃষ্টমন্ত্রেও চৈতন্য লাভ করে না, রাজারাও তেমন উৎকৃষ্টমন্ত্রণা দ্বারাও নিজের কর্ত্তব্য বুঝিতে পারেন না ; (শ) লাক্ষা-নির্ম্মিত অলঙ্কারের ন্যায় অন্যের প্রতাপ (পক্ষান্তরে—অগ্নির উত্তাপ) সহ্য করিতে পারেন না, (ষ) দুষ্ট হস্তী যেমন বৃহৎ বন্ধনস্তম্ভে বদ্ধ অবস্থায় নিশ্চল হইয়াও মাহুতের শিক্ষা গ্রহণ করে না, রাজগণও তেমন অত্যন্ত অহঙ্কারে স্তব্ধতাবশতঃ নিস্পন্দ থাকিয়া কাহারও উপদেশ গ্রহণ করেন না, (স) ধনলালসারূপ বিষ-বেগে বিভ্রান্ত হইয়া জগতের সকল বস্তুই যেন ধনময় দেখেন,

---

(१) पुरःस्थितं बन्धुजनं। (२) उत्कम्पित...। (३) जातुषा इव।
(४) महाराज, महामान ··कृता अपि न। (५) अतितृष्णाविषवेगमूर्च्छिताः।

ময়মিব সর্বং পশ্যন্তি, (হ) ইষব ইব (১) পানবর্দ্ধিততৈক্ষ্ণ্যাঃ (২) পরপ্রেরিতা বিনাশয়ন্তি, (ক্ষ) দূরস্থিতান্যপি ফলানীব দণ্ডবিক্ষেপৈর্মহাকুলানি শাতয়ন্তি, (ক) অকালকুসুমপ্রসবা ইব মনোহরাকৃতয়োঽপি লোকবিনাশহেতবঃ, (খ) শ্মশানাগ্নয ইবাতিরৌদ্রভূতয়ঃ, (গ) তৈমিরিকা ইবাদূরদর্শিনঃ, (ঘ) উপসৃষ্টা

(হ) ইষব ইতি। ইষবো বাণা ইব, পানেন মদ্যসেবনেন বর্দ্ধিতং তৈক্ষ্ণ্যম্ উগ্রতা যেষাং তে, পরৈশ্চ প্রেরিতাঃ প্রোৎসাহিতাঃ সন্তঃ, বিনাশয়ন্তি প্রজাদীন্, অন্যত্র তু পানেন শানপাষাণঘর্ষণেন বর্দ্ধিতং তৈক্ষ্ণ্যং সুধারত্বং যেষাং তে, তথা পরৈশ্চ ধনুষা প্রেরিতাঃ সন্তো বিনাশয়ন্তি লক্ষ্যাণীতি শেষঃ। পূর্ণোপমা।

(ক্ষ) দূরেতি। দণ্ডবিক্ষেপৈর্লগুড়নিক্ষেপৈঃ দূরস্থিতান্যপি ফলানি আম্রাদীনীব, দণ্ডবিক্ষেপৈশ্চতুর্থোপায়প্রয়োগৈঃ দূরস্থিতান্যপি মহাকুলানি প্রশস্তবংশান্ শাতয়ন্তি নাশয়ন্তি পাতয়ন্তি চ। অন্যস্মিন্নুপায়ে সতি দণ্ডপ্রয়োগস্যান্যায্যত্বমিতি ভাবঃ। পূর্ণোপমা।

(ক) অকালেতি। অকালে কুসুমপ্রসবাঃ পুষ্পোদ্গমা ইব, মনোহরাকৃতয়োঽপি সন্তঃ, লোকবিনাশস্য হেতবো দণ্ডপ্রয়োগাৎ কারণানি, অন্যত্র তু লোকবিনাশসূচনাহেতবঃ। তথা চ স্মৃতিঃ,—"দ্রুমৌষধিবিশেষাণামকালে কুসুমোদ্গমঃ। ফলপ্রসবয়োর্ম্মধ্যং মহোৎপাতং বিদুর্বুধাঃ।" পূর্ণোপমা।

(খ) শ্মশানেতি। শ্মশানাগ্নয় ইব, অতিরৌদ্রাঃ পরেষামেকান্তভয়ঙ্করাঃ ভূতয়ঃ সম্পদো ভস্মানি চ যেষাং তে। পূর্ণোপমা। "ভূতির্ভস্মনি সম্পদি"ত্যমরঃ।

(গ) তৈমীতি। তিমিরেণ তদাখ্যেন নেত্ররোগেণ সংসৃষ্টা ইতি তৈমিরিকাস্ত ইব, অদূরদর্শিনঃ অপরিণামদর্শিনঃ দূরস্থং বস্তু দ্রষ্টুমক্ষমাশ্চ। পূর্ণোপমা।

(ঘ) উপেতি। উপসৃষ্টা রতিসংসৃষ্টা বারাঙ্গনা ইব, ক্ষুদ্রৈ নীচলোকৈরধিষ্ঠিতং ভবনং যেষাং তে, অন্যত্র তু ক্ষুদ্রৈর্বিটৈরধিষ্ঠিতং ভবনং যাসাং তাঃ। পূর্ণোপমা। "উপসৃষ্টং মৈথুনং স্যা"দিতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।

(হ) পাষাণঘর্ষণে সুধার বাণ যেমন ধনুকর্ত্তৃক নিক্ষিপ্ত হইয়া লক্ষ্য পদার্থ বিনষ্ট করে, রাজগণও তেমন মদ্যপানে উগ্রস্বভাব বর্দ্ধিত হওয়ায় এবং পরের প্ররোচনায় প্রজাবর্গকে বিনষ্ট করেন, (ক্ষ) মানুষ যেমন যষ্টি নিক্ষেপ করিয়া দূরস্থিত ফলও পাতিত করে, রাজগণও তেমন দণ্ডপ্রয়োগ করিয়া দূরবর্ত্তী হইলেও সৎকুলসম্ভূত লোকদিগকে বিনষ্ট করেন, (ক) অকালে পুষ্পবিকাস যেমন সুন্দর হইলেও লোকের বিনাশ-সূচনা করে, রাজগণও তেমন সুন্দরাকৃতি হইয়াও লোকের বিনাশের কারণ হইয়া থাকেন; (খ) শ্মশানস্থ অগ্নির ভস্ম যেমন অত্যন্ত ভয়ঙ্কর, রাজাদের সম্পত্তিও তেমন অত্যন্ত ভয়ঙ্কর; (গ) নেত্ররোগ জন্মিলে লোক যেমন দূরের বস্তু দেখিতে পায় না, রাজগণও তেমন পরিণাম দেখিতে পান না; (ঘ) বারবনিতাগণের গৃহ যেমন কামুকলোকের আশ্রয়, রাজাদের গৃহও তেমন

---

(১) অসয়ঃ, অস্রয়ঃ, অসবঃ। (২)...পারুষ্যাঃ।

इव क्षुद्राधिष्ठितभवना:, (घ) श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वे-जयन्ति, (ङ) चिन्त्यमाना अपि महापातकाध्यवसाया इवोपद्रवमुपजनयन्ति, (च) अनुदिवसमापूर्य्यमाणा: पापेनैवाध्मातमूर्त्तयो भवन्ति, (छ) तदवस्थाश्च व्यसन-शतशरव्यतामुपगता: (१) वल्मीकतृणाग्रावस्थिता: (२) जलविन्दव इव पतित-मप्यात्मानं नावगच्छन्ति। (ज)

अपरे तु स्वार्थनिष्पादनपरैर्धन-पिशित-ग्रास-गृध्रैरास्थाननलिनीबकै: (३),(झ)

(ङ) श्रूयेति। श्रूयमाणा अपि दर्शनादौ का कथा आकर्ण्यमाननामानोऽपि, प्रेतपटहा इव मृत-दाहकालीनढक्काशब्दा इव उद्वेजयन्ति। पूर्णोपमा। मृतदाहकाले पटहा वाद्यन्त इति देशविशेषाचार:।

(च) चिन्त्येति। संसर्गादौ का कथा चिन्त्यमाना अपीत्यर्थ:, महापातकानां ब्रह्महत्यादीनां अध्य-वसाया उद्यमा इव, उपद्रवं चित्ताशान्तिम्। पूर्णोपमा। महापातकान्यनुष्ठितानि तु उपद्रवं जनयन्त्येव किन्तु तदध्यवसाया अपीति 'चिन्त्यमाना अपी'त्यस्य साम्यसूचनार्थमध्यवसायपदमिति भाव्यम्। महापातका-न्याह मनु:—

"ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागम:। महान्ति पातकान्याहु: संसर्गश्चापि तै: सह।"

(छ) अन्विति। अनुदिवसं प्रतिदिनं पापेन आपूर्य्यमाणा भ्रियमाणा इव आध्मातमूर्त्तय: स्फीतदेहा भवन्ति राजान:। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ज) तथा च सति किं स्यादित्याह तदिति। किञ्च, ता: पूर्वोक्तरूपा अवस्था येषां ते, व्यसनशतस्य कामक्रोधजनितदोषसमूहस्य शरव्यतां लक्ष्यतामाश्रयतामुपगता: सन्त:, वल्मीकं पुत्तिकाकृतमृत्तिकास्तूप: तस्य तृणाग्रावस्थिता जलविन्दव इव, पतितं स्वधर्माच्च्युतं भूमौ च्युतञ्चापि आत्मानं नावगच्छन्ति पतिततया नावबुध्यन्ते, एकत्र मोहादन्यत्र शुष्कत्वादिति भाव:। अत्रोपमालङ्कार:। व्यसनान्याह मनु:—

"मृगयाक्षो दिवास्वप्न: परीवाद: स्त्रियो मद:। तौर्य्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गण:।
पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजञ्च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टक:।"

(झ) अपर इति। अपरे तु राजानो वक्ष्यमाणरूपैर्दोषानपि गुणत्वेन आरोपयद्भिर्धूर्त्तै: स्तुतिभि: प्रतार्य्यमाणा: सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्तीति दूरेणान्वय:। प्रथमं धूर्त्तविशेषणान्याह स्वार्थेति। स्वार्थनिष्पादन-

নীচাশয় লোকের আশ্রয়; (ঙ) মৃতব্যক্তির দাহকালীন ঢক্কাশব্দের ন্যায় রাজগণের নাম শুনিলেও সে, উদ্বেগ জন্মায়; (চ) মহাপাতক অনুষ্ঠান করিবার উদ্যমের ন্যায় রাজাদের চিন্তা করিলেও সে, মনে অশান্তি জন্মায়; (ছ) রাজারা প্রতিদিন পাপে পরিপূর্ণ হইতে থাকিয়াই যেন ক্রমে স্ফীতদেহ হইতে থাকেন; (জ) সেই অবস্থায় রাজগণ, কাম ও ক্রোধজনিত নানাবিধ দোষের আশ্রয় হইয়া, বল্মীকমৃত্তিকা-জাত-তৃণের অগ্রবর্ত্তী জলবিন্দুর ন্যায় পতিত হইলেও আপনাকে পতিত বলিয়া বুঝিতে পারেন না।

(ঝ) অপর অনেক রাজা আছেন, তাঁহাদের সভাতে, স্বার্থসম্পাদনপরায়ণ, ধনরূপ

(१)...शरव्यता...। (२)...स्थिता:। (३) ...धूर्त्तबकै:...।

द्यूतं विनोद इति, परदाराभिगमनं वैदग्ध्यमिति, मृगया (१) श्रम इति, पानं विलास इति, प्रमत्तता (२) शौर्य्यमिति, स्वदारपरित्यागः (३) अव्यसनितेति, गुरुवचनावधीरणमपरप्रणेयत्वमिति, अजितभृत्यता (४) सुखोपसेव्यत्वमिति, नृत्य-(५) गीत-वाद्य-वेश्याभिसक्तिः (६) रसिकतेति, (७) महापराधानाकर्णनं (८) महानुभावतेति, परिभवसहत्वं (९) क्षमेति स्वच्छन्दता (१०) प्रभुत्वमिति, देवावमाननं महासत्त्वतेति, बन्दिजनख्यातिः (११) यश इति, तरलता (१२) उत्साह

परैः, तदर्थं व प्रतारणाध्यवसायादिति भावः। धनान्येव पिशितानि मांसानि तेषां ग्रासे गृध्रैः पक्षिविशेषैः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। आस्थान सभैव नलिनी सुन्दरत्वाद्विचित्रत्वाच्च पद्मिनी तस्या बकैः पक्षिविशेषैः। धूर्त्तबकपक्षिणो यथा पद्मिनीमाश्रित्य तत्पत्रावृतदेहा मत्स्यान् प्रतारयन्तः सहसा चञ्चुपुटेन गृह्णन्ति, तथा धूर्त्ता जना अपि राजानमाश्रित्य परान् प्रतारयन्तस्तदीयधनं गृह्णन्तीति भावः। अत्रापि परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(ञ) दोषाणां गुणपक्षेऽध्यारोपणं प्रदर्शयन्नाह द्यूतमित्यादि। द्यूतं अक्षक्रीडादि, विनोद आमोदकरव्यापारः, इति दुर्लक्षया। वस्तुतस्तु द्यूतं दोष एवेति भावः। वैदग्ध्यं चातुर्य्यम्। वस्तुतस्तु परदारगमनं पापजनकमायुःक्षयकरञ्चेति भावः। श्रमो व्यायामः। हिंसात्मकत्वात् प्राणनाशसम्भवाच्च मृगया महान् दोष इति भावः। पानं सुरासेवनं विलासो भोगविशेषः। वस्तुतस्तु सुरापानं महापातकमिति भावः। प्रमत्तता अनवधानता अमात्यादीनां विद्रोहाचरणेऽपि तददर्शितेत्यर्थः, शौर्य्यं उद्वेगाभावात् वीरत्वं। वस्तुतस्तु सा स्वोच्छेदकरी महान् दोषः। अव्यसनिता अनासक्तिः। प्रकृते तु स गुरुतरपापजनक एव। गुरुवचनस्य गुरूपदेशस्य अवधीरणमवज्ञया लङ्घनं, अपरप्रणेयत्वं स्वाधीनताप्रकाशादनन्यवश्यत्वम्। प्रकृते तु हितानादरणान्महान् दोष एव। अजितभृत्यता भृत्यानां स्वाधीनतेत्यर्थः, सुखोपसेव्यत्वं यथेच्छाचरणसम्भवादनायासपरिचर्य्यार्हत्वम्। वस्तुतस्तु सा विशेषहानिजनिकैव। रसिकता तत्तद्रसग्राहित्वं गुण एवेति तेषां भावः। प्रकृते तु कामजदोष एव। महतः अपराधस्य अनाकर्णनमश्रवणं महानुभावता अकिञ्चित्करत्वेनोपेक्षणान्महाप्रभावशालित्वपरिचयः। प्रकृते तु अविचारो दोष एव। परिभवसहत्वं परकृततिरस्कारसहिष्णुत्वं क्षमा

মাংস-গ্রাস করিতে শকুনস্বরূপ এবং সভারূপ পদ্মিনীর বক-পক্ষিস্বরূপ কতকগুলি লোক অবস্থান করে ; (ঞ) সেই ধূর্ত্তগণ এইরূপ বলিয়া থাকে যে,—'পাশাখেলাটা, আমোদ ; পরস্ত্রীগমনটা, চতুরতা ; মৃগয়া করা, ব্যায়াম ; মদ্যপান করাটা, বিলাসিতা ; কোন বিষয়েই সাবধানতা অবলম্বন না করাটা, বীরত্ব ; গুরুর উপদেশ অগ্রাহ্য করাটা, পরের অনধীনতা ; ভৃত্যগণের যে স্বাধীনভাবে চলা, সেটা তাহাদিগকে সুখে শুশ্রূষা করিতে দেওয়া ; নৃত্য, গীত, বাদ্য ও বেশ্যাতে আসক্তিটা রসিকতা ; গুরুতর অপরাধও শ্রবণ না করা, মহাপ্রভাবের

---

(१) मृगयां। (२) प्रमत्तता। (३)...परित्यागं। (४)...भृत्यतां। (५) नृत...।
(६)...अभिसक्तिं। (७) रसिकतामिति। (८) महापराधावकर्णनं। (९) पराभवसहत्वं, परभवसहत्वं।
(१०) स्वच्छन्दतां। (११) ख्यातिं। (१२) तरलतां।

इति, अविशेषज्ञता (१) अपक्षपातित्वमिति, (ञ) दोषानपि गुणपक्षमध्या-रोपयद्भिरन्तः स्वयमपि विहसद्भिः प्रतारणकुशलैर्धूर्त्तैरमानुषोचिताभिः (२) स्तुतिभिः प्रतार्य्यमाणा वित्तमदमत्तचित्ता निश्चेतनतया (३) तथैवेत्यात्मन्यारोपितालीकाभिमानाः (४) मर्त्यधर्म्माणोऽपि दिव्यांशावतीर्णमिव सदैवतमिवातिमानुषं (५) आत्मानमुत्प्रेक्षमाणाः प्रारब्धदिव्योचित-चेष्टानुभावाः सर्वजनस्यो-

तितिक्षागुणः। प्रकृते तु अक्षत्वम्। स्वच्छन्दता स्वेच्छाचारित्वं प्रभुत्वम् स्वाधीनता। प्रकृते तु सा अकारणपरामर्षजनकतया महान् दोष एव। देवानां अवमाननमवज्ञा, महासत्त्वता तेषामपि तुच्छताज्ञानान्महाबलवत्ता। प्रकृते तु निर्बुद्धिता। वन्दिजनख्यातिः स्तुतिपाठककृतप्रशंसैव यशः। वस्तुतस्तु सा वेतनदानफलमात्रमिति भावः। तरलता सर्वकार्य्येषु चापल्यं, उत्साहः। प्रकृते तु कार्य्यहानिकरमगाम्भीर्य्यं दोष एव। अविशेषज्ञता असूक्ष्मपर्य्यालोचनं अपक्षपातित्वं अपराधिनोऽपि दोषानुभावनात् समदर्शित्वं गुणः। प्रकृते तु दोषिणोऽपि तिरस्कारासम्भवात् गुणिनोऽपि च पुरस्कारासम्भवान्मूर्खतैव सेति भावः।

(ट) दोषानिति। गुणपक्षं गुणश्रेण्यन्तर्भावं। अन्तरन्तःकरणेषु। विहसद्भिः तान् राज्ञ इति शेषः, अवाधेन अयथार्थस्वमतस्वीकरणान्नितान्तमूर्खत्वबोधनेनेति भावः। प्रतारणकुशलैः धूर्त्तजनैः, अमानुषोचिताभिर्देवतायोग्याभिः। वित्तमदेन धनगर्वेण मत्तानि चित्तानि येषां ते, निश्चेतनतया मुग्धतया हेतुना, तथैव 'एते यथा वदन्ति तथैवाहं' इति इत्थं आत्मनि स्वस्मिन् आरोपितः अलीकाभिमानो मिथ्याहङ्कारो यैस्ते, मर्त्यस्य मरणयोगिनो मनुष्यस्येव धर्म्मा रोगजरामरणादयो येषां ते तादृशाः सन्तोऽपि, आत्मानं स्वं, दिव्यस्य स्वर्गीयस्य देवस्य अंशेन अवतीर्णमिव, अतएव सदैवतमिव देवाधिष्ठितमिव। अनयोः प्रथमा क्रियोत्प्रेक्षा द्वितीया च गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। अतिमानुषं मानुषमतिक्रान्तं, उत्प्रेक्षमाणाः सम्भावयन्तः, अतएव प्रारब्धाः प्रदर्शयितुमुपक्रान्ताः दिव्योचिता देवतायोग्या. चेष्टाः सङ्कल्पमात्रेण समुद्रतरणादिव्यापाराः अनुभावाः शापमात्रेण शत्रुविनाशादिप्रभावा यैस्ते, अतएव सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति।

परिচয়; অন্যের তিরস্কার সহ্য করাটা, ক্ষমা; স্বেচ্ছাচারিতা, প্রভুত্ব; দেবগণেরও অবমাননা করা, মহাবলশালিতার পরিচয়; স্তুতিপাঠকগণের প্রশংসাই যশ; চপলতাটা, উৎসাহ; এবং সূক্ষ্মরূপে কার্য্যের পর্য্যালোচনা না করা, অপক্ষপাতিত্ব—(ট) এই ভাবে প্রতারণানিপুণ ধূর্ত্ত লোকগণ দোষগুলিকেও গুণের শ্রেণীতে আরোপ করতঃ এবং মনে মনে আপনারাই উপহাস করতঃ, দেবতার উপযুক্ত স্তবদ্বারা প্রতারণা করিতে থাকে; এদিকে রাজগণ একেই ধনের অহঙ্কারে সর্ব্বদা উন্মত্ত, তাহাতে আবার ঐরূপ স্তব করায় একেবারে চৈতন্যবিহীন হইয়া পড়েন; সুতরাং 'ইহারা যেরূপ বলে, আমি সেইরূপই বটি' এই ভাবে সেই রাজগণ আপনার উপরে মিথ্যা অভিমান আরোপ করিয়া, মানুষ হইয়াও আপনাকে যেন দেবতার অংশে অবতীর্ণ কিংবা কোন দেবতাকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত, সুতরাং দেবতা মনে করিয়া, দেবতার উপযুক্ত

(१) अविशेषज्ञता। (२) अमानुषलोकोचिताभिः। (३) मत्ततिमयेन। (४) तथेति, यथेति, आत्मारोपित...। (५) अतिमानुषकं।

पञ्चास्यतामुपयान्ति (ट)। आत्मविडम्बनाञ्चानुजीविना जनेन क्रियमाणामभिनन्दन्ति (ठ)। मनसा देवताध्यारोपणप्रतारणा-(१) सम्भूत-(२) सम्भावनोपहताश्चान्तःप्रविष्टापरभुजद्वयमिवात्मबाहुयुगलं सम्भावयन्ति (ड)। त्वगन्तरितत्तृतीयलोचनं स्वललाटमाशङ्कन्ते (ढ)। दर्शनप्रदानमपि (३) अनुग्रहं गणयन्ति, दृष्टिपातमप्युपकारपक्षे स्थापयन्ति, सम्भाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति, आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते, स्पर्शमपि (४) पावनमाकलयन्ति (ण)।

(ठ) आत्मेति। किञ्च, आत्मविडम्बनां आत्मन्यविद्यमानगुणारोपणरूपां प्रतारणां। अभिनन्दन्ति साधुवादेन सादरं प्रशंसन्ति।

(ड) मनसेति। किञ्च, देवताध्यारोपणं धूर्त्तैरात्मनि देवत्वारोपणमेव प्रतारणा तया सम्भूता उत्पन्ना या सम्भावना आत्मनि देवत्वमननं तया उपहता विनाशितबुद्धयः सन्तः, मनसा आत्मबाहुयुगलं, अन्तःप्रविष्टं अभ्यन्तरगतत्वेनादृश्यं अपरं भुजद्वयं यस्य तस्मादृशं सम्भावयन्ति मन्यन्ते। अत्र भुजद्वयस्यान्तःप्रवेशोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन चात्मनो नारायणत्वं ध्वन्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। तथा बाहुभुजेति भिन्नानुपूर्वीकपर्य्यायशब्दद्वयोपादानादप्रक्रमतादोषः, स च तद्वयमिवेति पाठेन समाधेयः।

(ढ) त्वगिति। स्वललाटं त्वचा चर्म्मणा अन्तरितं आवृतं तृतीयं लोचनं यत्र तादृशं, आशङ्कन्ते सम्भावयन्ति। एतेनात्मनः शिवत्वं ध्वन्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिः।

(ण) दर्शनमिति। सम्भाषणमालापमपि, संविभागमध्ये विभागपूर्व्वकदेयद्रव्यदानमध्ये, कुर्वन्ति अर्पयन्ति देयद्रव्यदानजन्यसन्तोष आलापेनैव जात इति मन्यन्त इत्यर्थः। पावनं पवित्रताजनकं आकलयन्ति भावयन्ति। अत्र प्रतिवाक्यं यथासम्भवं प्रतीयमानोत्प्रेक्षालङ्कारः।

কার্য্য ও প্রভাব দেখাইতে আরম্ভ করিয়া, সকল লোকের উপহাসাস্পদ হইয়া পড়েন। (ঠ) এবং অনুচরগণ নিজের স্তবরূপ যে প্রতারণা করে, তাহারও প্রশংসা করেন। (ড) আর, আপনার উপরে দেবত্ব-সংস্থাপনরূপ প্রতারণাবশতঃ যে ধারণা জন্মে, তাহাতেই বুদ্ধি বিনষ্ট হইয়া যায়, সুতরাং 'নিজের বাহুদ্বয়ের ভিতরে অপর বাহুদ্বয় লুক্কায়িত রহিয়াছে' মনে মনে এইরূপ ধারণা করিতে থাকেন। (ঢ) এবং 'নিজের ললাটে আর একটি চক্ষু, চর্ম্মদ্বারা আবৃত হইয়া রহিয়াছে' এরূপও ভাবিয়া থাকেন। (ণ) দর্শন দান করাটাও যেন অনুগ্রহ করা বলিয়া গণনা করেন, দৃষ্টিপাত করাটাও যেন উপকারশ্রেণীতে ভুক্ত করেন, আলাপ করাটাও যেন কিছু বিভাগ করিয়া দিলেন বলিয়া মনে করেন, আদেশ করাটাও যেন বরপ্রদান করিলেন বলিয়া ভাবিয়া থাকেন এবং স্পর্শ করাটাও যেন পবিত্রতাজনক

---

(१)...विप्रतारणा...। (२)...असद्भूत,...समुद्भूत...।
(३) प्रदानेऽपि। (४) संस्पर्शमपि।

मिथ्यामाहात्म्यगर्व्वनिर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन्, (१) न मानयन्ति मान्यान्, नार्च्चयन्त्यर्च्चनीयान्, नाभिवादयन्त्यभिवादनार्हान्, नाभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून् (त)। अनर्थकायासान्तरितविषयोपभोग-(२) सुखमित्युपहसन्ति विद्वज्जनम्, (३) जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धजनोपदेशम्, (४) आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादिने (थ)। सर्व्वथा तमभिनन्दन्ति, तमालपन्ति, तं पार्श्वे कुर्व्वन्ति, तं संवर्द्धयन्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददति, तं मित्रतामुपनयन्ति, (५) तस्य वचनं

(त) मिथ्येति। किञ्च मिथ्यामाहात्म्येन अलीकात्ममहिम्ना यो गर्व्वोऽहङ्कारस्तेन निर्भराः परिपूर्णाः। द्विजातीन् ब्राह्मणान् न पूजयन्ति नमस्कारादिना न प्रीणयन्ति। मान्यान् श्वशुरादीन्। अर्च्चनीयानुपाध्यायादीन्। अभिवादनार्हान् पुरोहितादीन्। गुरून् नाभ्युत्तिष्ठन्ति अवज्ञीकृत्य गात्रोत्थानं न कुर्व्वन्ति।

(थ) अनर्थकेति। अनर्थकेन निष्फलेन आयासेन विद्यार्ज्जनपरिश्रमेण यागाद्यनुष्ठानश्रमेण वा अन्तरितं व्यवहितं अपास्तं विषयोपभोगसुखं वनितादिसम्भोगसुखं येन तं, इत्थमादेव हेतोः, विद्वज्जनं उपहसन्ति, जड़त्वबोधेनेति भावः। जरया वार्द्धक्येन यद्वैक्लव्यं मतेरस्थिरता, तेन प्रलपितं जल्पितं इति कृत्वा वृद्धजनोपदेशं पश्यन्ति असारं मन्यन्ते। आत्मप्रज्ञायाः स्वबुद्धेः परिभवस्तिरस्कारोऽयमिति कृत्वा सचिवोपदेशाय असूयन्ति दोषाविष्कारपूर्व्वकं क्रुध्यन्ति। "क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति च कोपः" इति चतुर्थी; तथा हितवादिने जनाय कुप्यन्ति।

(द) सर्व्वथेति। अभिनन्दन्ति प्रशंसन्ति। संवर्द्धयन्ति नानासाहाय्येन उन्नमयन्ति। तं मित्रतामुपनयन्ति तं मित्रं कुर्व्वन्तीत्यर्थः। नयतिर्द्विकर्म्मकः। तत्र वर्षन्ति तस्मै अविरतं धनानि वितरन्ति।

বলিয়া মনে করেন। (ত) আবার, মিথ্যা মাহাত্ম্যের অহঙ্কারে পরিপূর্ণ হইয়া দেবতাদিগকে প্রণাম করেন না, ব্রাহ্মণদিগের পূজা করেন না, মান্য ব্যক্তিদের সম্মান করেন না, পূজনীয় লোকের পূজা করেন না, অভিবাদন-যোগ্য ব্যক্তিদের অভিবাদন করেন না এবং গুরুদিগকে দেখিয়াও গাত্রোত্থান করেন না। (থ) আবার 'ইহারা অনর্থক পরিশ্রমে বিষয়-সম্ভোগের সুখ দূর করিয়াছে' এইরূপ ভাবিয়া পণ্ডিতগণকে উপহাস করিয়া থাকেন, 'ইহারা বার্দ্ধক্যবশতঃ বুদ্ধির অস্থিরতানিবন্ধন কতকগুলি প্রলাপ বকিতেছে' ইহা ভাবিয়া বৃদ্ধগণের উপদেশকে অসার বলিয়া মনে করেন, 'এটা আপনার বুদ্ধির তিরস্কার করা হইতেছে' ইহা মনে করিয়া মন্ত্রিগণের উপদেশের দোষ আবিষ্কার করেন এবং যে হিতবাক্য বলে, তাহার প্রতি ক্রুদ্ধ হ'ন। (দ) এবং সর্ব্বপ্রকারে, তাহার প্রশংসা করেন, তাহার সহিত আলাপ করেন, তাহাকে নিকটে রাখেন, সাহায্য করিয়া তাহার উন্নতি করিয়া

(१) द्विजान्। (२)...अन्तरितोपभोग...। (३) विद्वज्जनशील।
(४) न पश्यन्ति वृद्धोपदेशं। (५) तस्य भजिता, तं मित्रतामुपजनयन्ति।

शृण्वन्ति, तत्र वर्षन्ति, तं बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयन्ति, (१) (द) योऽहर्निशमनवरतमुपरचिताञ्जलिरधिदैवतमिव विगतान्यकर्त्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यमुद्भावयति (ध)। किं वा तेषां साम्प्रतम्, (२) (न) येषामतिनृशंसप्रायोपदेशनिर्घृणं कौटिल्यशास्त्रं प्रमाणम्, अभिचारक्रियाक्रूरैकप्रकृतयः पुरोधसो गुरवः, पराभिसन्धानपरा मन्त्रिण उपदेष्टारः, नरपतिसहस्रभुक्तोज्झितायां

तत्रैव वर्षन्तीत्यनेन तु कांश्चित्कं वसनाभरणादिपारितोषिकदानमुक्तमित्यपौनरुक्त्यम्। बहु मन्यन्ते आद्रियन्ते। आप्ततामापादयन्ति विश्वस्ततां प्रापयन्ति।

(ध) य इति। यो जनः, विगतं दूरीभूतं अन्यत् कर्त्तव्यं यस्य स तादृशः सन्। उपरचिताञ्जलिः कृताञ्जलिः। अधिदैवतमिव उपास्यदेवतामिव स्तौति। अत्रोपमालङ्कारः। यो वा जनः माहात्म्यमुद्भावयति हरिहराद्यवतारत्वरूपं महिमानं युक्त्या आविष्करोति। अत्र तमभिनन्दन्तीत्यादितच्छब्दान्वितवाक्यानां विधेयसूचकानां प्राक्पाठात् उद्देश्यसूचकयोश्च यच्छब्दान्वितवाक्ययोः परत्र पाठाद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स च यच्छब्दान्वितवाक्ययोः प्राक्पाठेन समाधेयः।

(न) तादृशानाञ्च राज्ञां सर्वमेवान्याय्यमित्याह किं वेति। तेषां राज्ञां किं वा कार्यं साम्प्रतं युक्तं न्यायोपेतं भवितुमर्हतीति शेषः। किमपि नेत्यर्थः। "युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने" इत्यमरः।

(प) अयुक्तत्वे हेतुमाह येषामिति। अतिनृशंसप्रायेण नितान्तनिष्ठुरबहुलेन उपदेशेन निर्घृणं निर्दयं, कौटिल्यशास्त्रं चाणक्यप्रणीतनीतिशास्त्रमेव येषां राज्ञां प्रमाणम्। अभिचारक्रियया श्येनयागादिरूपेण परवधजनकवैदिककार्यविशेषानुष्ठानेन क्रूरा नृशंसा एका मुख्याः प्रकृतयः स्वभावा येषां ते तादृशाः, पुरोधसः पुरोहिताः, गुरवो धर्मशिक्षकाः। पराभिसन्धानपरा अन्यप्रतारणासक्ताः। नरपतिसहस्रेण राजसमूहेन आदौ भुक्ता अनन्तरमुज्झिता त्यक्ता तस्यां। एतेन वेश्याया इव तस्याः, विटानामिव राज्ञाञ्च निन्दनीयत्वं

দেন, তাহার সহিত সুখে অবস্থান করেন, তাহাকে দান করেন, তাহার সহিত মিত্রতা করেন, তাহার বাক্য শোনেন, তাহাকে সর্ব্বদা ধন-বিতরণ করেন, তাহাকেই আদর করেন এবং তাহাকেই সর্ব্বপ্রকারে বিশ্বাসের পাত্র করিয়া থাকেন ; যে ব্যক্তি, দিবারাত্রি সর্ব্বদার জন্য, অন্য কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া কৃতাঞ্জলি হইয়া, উপাস্য দেবতার ন্যায় কেবল স্তব করে ; অথবা যে ব্যক্তি হরি-হরাদির অবতার বলিয়া মাহাত্ম্য প্রকাশ করে। (ন) সেই সকল রাজগণের কোন্ কার্য্যই বা ন্যায়সঙ্গত হইতে পারে ? (প) যাঁহাদের নিকটে, অত্যন্ত নৃশংস-উপদেশে পরিপূর্ণ এবং নিতান্তনির্দ্দয় চাণক্যপ্রণীত নীতিশাস্ত্রই প্রমাণ বলিয়া গণ্য হয়, অভিচারক্রিয়ার অনুষ্ঠান করায় নিতান্তক্রূরস্বভাব পুরোহিতগণ যাঁহাদের শিক্ষক, পরপ্রতারণাপরায়ণ মন্ত্রিগণ যাঁহাদের উপদেষ্টা, সহস্র সহস্র রাজা যাহাকে ভোগ করিয়া পরিত্যাগ করিয়াছেন, সেই লক্ষ্মীর প্রতি যাঁহাদের আসক্তি, মারণোপদেশে পরিপূর্ণ তন্ত্রশাস্ত্রে

---

(१) तमाप्ततामापादयन्ति, तमाद्रियन्ति। (२) असाम्प्रतं।

लक्ष्मग्रामासक्तिः, मारणात्मकेषु शास्त्रेषु (१) अभियोगः, सहजप्रेमार्द्रहृदयानुरक्ता भ्रातर उच्छेद्याः। (प)

तदेवम्प्रायातिकुटिल-कष्टचेष्टा-सहस्रदारुणे (२) राज्यतन्त्रे, अस्मिन् महामोहान्धकारिणि (३) च यौवने, कुमार! तथा (४) प्रयतेथाः यथा (५) नोपहस्यसे जनैः, (६) न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः, नोपालभ्यसे (७) सुहृद्भिः, न शोच्यसे विद्वद्भिः (फ)। यथा च न प्रकाश्यसे (८) विटैः, न प्रहस्यसे (९) कुशलैः, नास्वाद्यसे भुजङ्गैः, नावलुप्यसे सेवकवृकैः, न वञ्च्यसे धूर्त्तैः, न प्रलोभ्यसे वनिताभिः, (१०) न विडम्ब्यसे लक्ष्म्या, न नर्त्यसे मदेन,

---

ध्वस्यते। मारणात्मकेषु मारणोपदेशरूपेषु शास्त्रेषु योगिनीतन्त्रादिषु अभियोग आग्रहः। सहजं स्वाभाविकं यत् प्रेम स्नेहस्तेन आर्द्रं सदयं यत् हृदयं तेन अनुरक्ता.। उच्छेद्या विनाशनीयाः। अत्र तादृशस्वपतीनां सर्वकार्य्यायौक्तिकत्वप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बहुतरकारणोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः।

(फ) तदिति। तस्मात्, एवम्प्रायेण बाहुल्यादुक्तप्रकारेण, अतिकुटिलेन नितान्तवक्रेण अतीवदुर्बोधेनेत्यर्थः कष्टेन दुःखकरेण चेष्टासहस्रेण व्यापारबाहुल्येन दारुणे भयङ्करे, राज्यतन्त्रे राज्यशासनव्यापारे, महामोहेन अन्धं विवेकशून्यं कर्त्तुं शीलं यस्य तस्मिन् यौवने च काले, हे कुमार! चन्द्रापीड। तथा प्रयतेथाः वर्त्तितुं प्रयत्नं कुर्य्याः। नोपालभ्यसे न तिरस्क्रियसे।

(ब) यथेति। विटैः कामुकैः न प्रकाश्यसे लोकसमाजे स्वसाधारण्येन न प्रकटीक्रियसे। कामुकैः सह मिलित्वा तत्पक्षान्तर्गतो मा भवेत्युपदेशः। कुशलैः कार्य्यदक्षैः न प्रहस्यसे, गूढविषयानभिनिवेशाज्जडत्वबोधेनेति भावः। भुजङ्गैः विटैः न आस्वाद्यसे नोपभुज्यसे, सेवकभावेन प्रविश्य गूढप्रतारणया धनापहरणद्वारेणेति भावः। "भुजङ्गः षिङ्गसर्पयो"रिति विश्वः। सेवका एव वृका हिंस्रजन्तुविशेषास्तैः नावलुप्यसे

যাঁহাদের আগ্রহ এবং স্বাভাবিক-স্নেহবশতঃ সদয়চিত্ত ও অনুরক্ত ভ্রাতৃগণ যাঁহাদের উচ্ছেদের পাত্র হইয়া থাকে।

(ফ) অতএব কুমার! চন্দ্রাপীড়! প্রায় এই জাতীয় অত্যন্ত-জটিল এবং দুঃখকর কার্য্য-বাহুল্যে ভয়ঙ্কর রাজ্যশাসন ব্যাপারে এবং মহামোহবশতঃ বিবেকশূন্যকারী এই যৌবনকালে তুমি সেই ভাবে কার্য্য করিতে যত্ন করিবে, যাহাতে লোকে উপহাস না করে, সাধুগণ নিন্দা না করেন, গুরুজনেরা ধিক্কার না দেন, বন্ধুরা তিরস্কার না করেন, এবং পণ্ডিতগণ শোক না করেন। (ব) এবং যাহাতে লম্পটগণ তোমাকে স্বশ্রেণীভুক্ত বলিয়া প্রকাশ না করে, কার্য্যদক্ষ লোকেরা উপহাস না করে, লম্পটেরা তোমার সম্পত্তি ভোগ না করে, ভৃত্যরূপ কেন্দুয়াবাঘগুলি তোমার সম্পত্তি লুটিয়া না লয়, ধূর্ত্তগণ বঞ্চনা না করে, স্ত্রীলোকগণ মুগ্ধ করিয়া না ফেলে,

---

(१) शास्त्रेषु। (२) एवं प्राये—कुटिलकुचेष्टा, कुटिलचेष्टा...। (३) महामोहकारिणि।
(४) तथा तथा। (५) यथा यथा। (६) जनेन। (७) उपलभ्यसे।
(८) प्रतार्य्यसे। (९) प्रतार्य्यसे। (१०) सर्वंवनिताभिः।

नीन्मत्तीक्रियसे मदनेन, नाक्षिप्यसे विषयैः, नावकृष्यसे (१) रागेण, (२) नाप-क्रियसे (३) सुखेन (ब)। कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च महता प्रयत्नेन (४) समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयमप्रतिबुद्धञ्च मदयन्ति धनानि, तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं (५) मुखरीकृतवान् (भ)। इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे,—विद्वांसमपि सचेतनमपि महासत्त्वमप्यभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति (म)। सर्वथा

न राज्यात् परिहीयसे, वृका यथा गूढं प्रविश्य कुक्कुरानपहरन्ति, तथा धूर्त्ताः सेवकभावेन प्रविश्य तव सर्वस्वं नापहरेयुरिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। लक्ष्म्या न विडम्ब्यसे अयथाव्यवहारात् परित्यागेनेति भावः। मदेन अहङ्कारेण। विषयैर्विषयकार्य्यैः नाक्षिप्यसे नैकान्तमाकृष्यसे। रागेण कस्यापि विषयस्य उत्कटभोगाभिलाषेण नावकृष्यसे नाकृष्यसे।

(भ) काममिति। यद्यपीत्यादौ पूरणीयम्। कामं पर्य्याप्तं। समारोपितः शिक्षादक्षैः संस्थापितः संस्कारः सर्वविषयज्ञानं यत्र सः। तथा धनानि तरलहृदयं यौवनाच्चञ्चलचित्तं अप्रतिबुद्धं राज्यशासन-युद्धविजयादिकर्म्मानभिज्ञञ्च पुरुषं मदयन्ति उन्मादयन्ति स्वत एव तेषु तेषु कार्य्येषु प्रोत्साहयन्तीत्यर्थः। तथापि भवद्गुणसन्तोषः तव विद्याविनयादिगुणजनिता मे प्रीतिः, एवमुक्तप्रकारेण मां मुखरीकृतवान् वादितवान्। अथवा तथापीति तरलेत्यादेः प्राग्योजनीयं। तथा च धनानि, यौवनात्तरलहृदयं अप्रतिबुद्धं उपदेशाभावात् सदसद्विवेकहीनञ्च पुरुषं मदयन्ति सगर्वं कुर्वन्ति, इत्यतो भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरी-कृतवान् तन्निरासाय वादितवान्। अतो न मे प्रगल्भता मन्तव्येति भावः।

(म) इदमिति। सचेतनमपि सदसद्विवेकशालिनमपीत्यर्थः। महासत्त्वं अतीवबलवन्तमपि। अभि-जातं सत्कुलोत्पन्नमपि। दुर्विनीता दुश्चरित्रा। खलीकरोति दुर्जनं विदधाति। अतो यथा त्वामियं तादृशं कर्त्तुं न शक्नुयात् तथा यतेथा इति भावः।

লক্ষ্মী তোমাকে বিড়ম্বিত না করেন, অহঙ্কার তোমাকে না নাচাইয়া বেড়ায়, কামদেব উন্মত্ত না করেন, বিষয়কার্য্যে অত্যন্ত আকর্ষণ না করে, কোন বিষয়ের উৎকট অভিলাষে আকৃষ্ট না হও এবং সুখে অপহরণ না করে। (ভ) যদিও তুমি স্বভাবতই অত্যন্তধীর এবং পিতাও তোমাকে বিশেষ যত্ন সহকারে শিক্ষা করাইয়াছেন এবং ধনসম্পত্তিও চঞ্চলচিত্ত ও অভুক্ত-ভোগী মানুষকে স্বভাবতই সেই সেই দুরূহ কার্য্যে প্রবৃত্ত করে; তথাপি তোমার গুণগ্রাম-জনিত সন্তোষই আমাকে এই ভাবে বলাইয়াছে। (ম) এই কথাই কিন্তু তোমাকে বার বার বলিতেছি যে—মানুষ বিদ্বান্, বিবেচক, বলবান্, কুলীন, ধীরপ্রকৃতি এবং যত্নবান্ হইলেও এই

---

(१) विकृष्यसे। (२) रागैः। (३) अपक्रियसे।
(४) महता प्रयत्नेन इति क्वचिन्नास्ति। (५) एव।

কল্যাণৈঃ পিত্রা ক্রিয়মাণমনুভবতু ভবান্ নবযৌব-(১) রাজ্যাভিষেকমঙ্গলম্, কুলক্রমাগতামুদ্বহ পূর্ব্বপুরুষৈরূঢ়াং ধুরম্, অবনময় দ্বিষতাং শিরাংসি, উন্নময় বন্ধুবর্গম্, (২) (য)। অভিষেকানন্তরঞ্চ প্রারব্ধদিগ্বিজয়ঃ পরিভ্রমন্ বিজিতা-মপি তব (৩) পিত্রা সপ্তদ্বীপভূষণাং (৪) পুনর্বিজয়স্ব বসুন্ধরাম্ (র)। অয়ঞ্চ তে কালঃ প্রতাপমারোপয়িতুম্, আরূঢ়-প্রতাপো হি (৫) রাজা ত্রৈলোক্যদর্শীব সিদ্ধাদেশো ভবতি” ইত্যেতাবদভিধায়োপশশাম। (ল)

উপশান্তবচসি (৬) শুকনাসে চন্দ্রাপীড়স্তাভিরমলাভিঃ (৭) উপদেশ-বাগ্ভিঃ প্রক্ষালিত ইব, উন্মীলিত ইব, স্বচ্ছীকৃত ইব (৮) নিমৃষ্ট ইব, অভি-

---

(য) সর্ব্বথেতি। সর্ব্বথা কল্যাণৈঃ সর্ব্বপ্রকারমঙ্গলৈঃ। নবো যো যৌবরাজ্যে অভিষেকঃ স এব মঙ্গলং তৎ। ধুরং পৃথিবীশাসনরূপং ভারং। উন্নময় উন্নতং কুরু, দানমানাদিভিরিতি ভাবঃ।

(র) অপীতি। সপ্ত দ্বীপা জম্বুপ্রভৃতয়ো ভূষণানি যস্যাস্তাম্, সর্ব্বামিতি ভাবঃ।

(ল) ননু পিত্রৈব বিজিতায়া বসুন্ধরায়াঃ পুনর্বিজয়ে কিং প্রয়োজনমিত্যাহ অয়ঞ্চেতি। প্রতাপং কোষ-দণ্ডজং তেজঃ, আরোপয়িতুং শত্রুষু প্রবর্ত্তয়িতুং অয়মেব কালঃ। আত্মনঃ সর্ব্বপ্রকারোন্নতিসত্ত্বাৎ পিতুশ্চ সাহায্যসম্ভবাদিতি ভাবঃ। অথ প্রতাপারোপণেন কিং ফলমিত্যাহ আরূঢেতি। হি যস্মাৎ, আরূঢ়ঃ শত্রুষু জাতঃ প্রতাপো যস্য সঃ। ত্রৈলোক্যদর্শী সর্ব্বজ্ঞো যোগীশ্বর ইব, সিদ্ধঃ অব্যাহত আদেশো যস্য সঃ। উপ-শশাম শুকনাসো বিরতবান্।

অহো বিচিত্রং লক্ষ্মীচরিত্রং সমুচিতাশ্চ প্রভুজনদুর্জ্জনতামাবিষ্কুর্ব্বতী খল্বিয়মুপদেশবচনাবলী নিতরাং লোক-শিক্ষাদক্ষা মহামধুরায়মাণা চ ভাববৈর্ভবৈঃ।

(ব) উপশান্তেতি। উন্মীলিতো বিকাশীকৃতঃ। স্বচ্ছীকৃতো নির্ম্মলীকৃতঃ। নির্মৃষ্টো মসৃণীকৃতঃ।

দুশ্চরিত্র লক্ষ্মী তাহাকে দুর্জ্জন করিয়া থাকে। (য) পিতা তোমাকে নূতন যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিতেছেন, সুতরাং তুমি এই মঙ্গলময় কার্য্য সর্ব্বপ্রকার মঙ্গলে মঙ্গলে অনুভব কর; তোমার পূর্ব্বপুরুষগণ যে ভার বহন করিয়া গিয়াছেন, তুমি সেই কুলক্রমাগত পৃথিবীশাসনের ভার বহন কর; শত্রুগণের মস্তক অবনত কর এবং বন্ধুবর্গকে উন্নত কর। (র) এবং এই সপ্তদ্বীপালঙ্কৃত পৃথিবীকে তোমার পিতা জয় করিয়া থাকিলেও অভিষেকের পর দিগ্বিজয় আরম্ভ করিয়া পরিভ্রমণ করতঃ তুমিও আবার জয় কর। (ল) এই তোমার প্রতাপ বিস্তার করিবার সময়; কারণ—রাজার প্রতাপ উৎপন্ন হইলে, সর্ব্বজ্ঞ মহাযোগীর ন্যায় তাঁহার আদেশ সর্ব্বত্রই সফল হইয়া থাকে” এই পর্য্যন্ত বলিয়া শুকনাস বিরত হইলেন।

(ব) শুকনাস বিরত হইলে সেই সকল নির্ম্মল উপদেশবাক্যে চন্দ্রাপীড় যেন প্রক্ষালিত,

---

(১) নবযৌবন...। (২) স্ববন্ধুবর্গং। (৩) ভবত্...।
(৪) সপ্তদ্বীপসমুদ্রভূষণাং। (৫) ক্বচিৎ হিশব্দো নাস্তি। (৬)...বচনে।
(৭) ক্বচিৎ অমলাভিরিতি নাস্তি। (৮) স্বচ্ছীকৃত ইব।

षिक्त इव, अभिलिप्त इव, अलङ्कृत इव पवित्रीकृत इव, उद्भासित इव, प्रीत-हृदयो मुहूर्त्तं स्थित्वा स्वभवनमाजगाम। (ब)

ततः कतिपयदिवसापगमे च राजा स्वयमुत्क्षिप्तमङ्गलकलसः सह शुकनासेन पुण्येऽहनि पुरोधसा सम्पादिताशेष-राज्याभिषेकमङ्गलम्, अनेकनरपतिसहस्र-परिवृतः, सर्व्वेभ्यस्तीर्थेभ्यः सर्व्वाभ्यो नदीभ्यः सर्व्वेभ्यश्च सागरेभ्यः समाहृतेन सर्व्वौष-धिभिः सर्व्वफलैः सर्व्वमृद्भिः सर्व्वरत्नैश्च परिगृहीतेन आनन्दवाष्पजलमिश्रेण मन्त्र-पूतेन वारिणा सुतमभिषिषेच (श)। अभिषेकसलिलार्द्रदेहश्च तं लतेव पादपान्तरं निजपादपममुञ्चन्त्यपि तारापीड़ं तत्क्षणमेव सञ्चक्राम राजलक्ष्मीः (१) (ष)।

उद्भासित उज्ज्वलीकृतः। सर्व्वत्र चित्तप्रसादेनाधिकसौन्दर्य्यादिति भावः। अत्र नवानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) तत इति। स्वयमात्मनैव उत्क्षिप्तः अभिषेकाय उत्तोलितो मङ्गलकलसो येन सः। पुरोधसा पुरोहितेन सम्पादितानि अशेषाणि समस्तानि राज्याभिषेकस्य मङ्गलानि मङ्गलाचरणानि देवतापूजादीनि यस्य तं, सुतमित्यस्य विशेषणमेतत्। समाहृतेन आनीतेन वारिणा। परिगृहीतेन मिलितेनेत्यर्थः। सुतं पुत्रं चन्द्रापीड़म्।

(ष) अभीति। लता निजपादपं आश्रितवृक्षं अमुञ्चन्त्यपि अत्यजन्त्यपि सती पादपान्तरं अन्यं वृक्षमिव, राजलक्ष्मीः तारापीड़ममुञ्चन्त्यपि, अभिषेकेण आर्द्रो देहो यस्य तं तथाभूतं तं चन्द्रापीड़ं तत्क्षण-मेव सञ्चक्राम सञ्चचार। तदानीमेव चन्द्रापीड़ः अंशतो राजशक्तिं लेभे इति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। अस्यानुरूपः श्लोको यथा रघुवंशे—

"नरेन्द्रमूलायतनादनन्तरं तदास्पदं श्रीर्युवराजसंज्ञितम्।
अगच्छदंशेन गुणाभिलाषिणी नवावतारं कमलादिवोत्पलम्॥"

प्रफুল্ল, নির্ম্মলীকৃত, মসৃণীকৃত (মসৃণ—পালিস) অভিষিক্ত, অভিলিপ্ত, অলঙ্কৃত, পবিত্রীকৃত ও উজ্জ্বলীকৃত হইলেন এবং সন্তুষ্টচিত্তে সে স্থানে কিছুকাল অবস্থান করিয়া নিজের বাটীতে আগমন করিলেন।

(শ) তাহার পর কয়েক দিন অতীত হইলে, কোন শুভদিনে পুরোহিত, অভিষেকের সমস্ত মঙ্গলাচরণ সম্পাদন করিলেন, এদিকে বহুতর সামন্তরাজগণে পরিবেষ্টিত হইয়া, শুকনাসের সহিত মহারাজ তারাপীড়, আপনিই অভিষেকের মঙ্গল-কলস উত্তোলন করিয়া সকল তীর্থ, সকল নদী ও সকল সমুদ্র হইতে আনীত এবং সর্ব্বৌষধি, সকল ফল, সকল মৃত্তিকা ও সকল রত্ন-মিশ্রিত এবং আনন্দাশ্রুজল-সংযুক্ত মন্ত্রপূত জলদ্বারা পুত্র চন্দ্রাপীড়কে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন। (ষ) তখন লতা যেমন আশ্রিত বৃক্ষ পরিত্যাগ না করিয়া অপর বৃক্ষ অবলম্বন করে, সেইরূপ রাজলক্ষ্মী মহারাজ তারাপীড়কে পরিত্যাগ না করিয়াও, অভিষেকের জলে আর্দ্রদেহ

---

(१) राज्यलक्ष्मीः।

अनन्तरमखिलान्तःपुरपरिवृतया च प्रेमार्द्रहृदयया विलासवत्या स्वयमापाद-तलादामोदिना चन्द्रातपधवलेन चन्दनेनानुलिप्तमूर्त्तिः, अभिनव-विकसित-सित-कुसुम-कृत-शेखरः, गोरोचना-(१)च्छुरित-देहः, दूर्वाप्रवालरचितकर्णपूरः, (स) दीर्घदशमनुपहतमिन्दुधवलं दुकूलयुगलं वसानः, (ह) पुरोहित-प्रतिबद्ध-प्रतिसर-प्रसाधितपाणिः, (च) अभिनव-(२) राजलक्ष्मी-कमलिनी-मृणालेन अभिषेकदर्शनार्थमागतेन सप्तर्षिमण्डलेनेव हारेणालिङ्गितवक्षःस्थलः, (क) सित-कुसुम-ग्रथिताभिराजानुलम्बिनीभिरिन्दु-कर-कलाप-कोमलाभिः (३) वैकक्ष-

(स) अनेति। अनन्तरञ्च चन्द्रापीड़ः सिंहासनमारुरोह इत्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि चन्द्रापीड़ इति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अखिलैरन्तःपुरैरन्तःपुरस्थस्त्रीभिः परिवृतया। विलासवत्येति अनुलिप्तेत्यस्य कर्तृपदं। आमोदिना अतीवसौरभवता, चन्द्रस्य आतपवत् किरणावलीवत् धवलेन, चन्दनेन, आपादतलात् अनुलिप्ता मूर्त्तिर्यस्य सः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अभिनवैः विकसितैः सितैः शुभ्रैः कुसुमैः कृतः शेखरः शिरोभूषणं यस्य सः। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः। गोरोचनया छुरितो रञ्जितो देहो यस्य सः। दूर्वाणां प्रवालैः पल्लवैः रचितौ विहितौ कर्णपूरौ कर्णालङ्कारौ यस्य सः। "दूर्वा दहति पापानि धात्री हरति पातकम्। हरीतकी हरेद्रोगं तुलसी हरते भयम्।" इति विष्णुधर्म्मोत्तरवचनाद्दूर्वाभिः कर्णभूषणं।

(ह) दीर्घेति। दीर्घा दशाः प्रान्तवर्त्तयो यस्य तत्, अनुपहतं प्राक्परिधानेनापर्य्युषितं इन्दुवच्चन्द्रवत् धवलं दुकूलयुगलं सूक्ष्मवसनद्वयं वसानः परिदधानः। "ईषद्धौतं नवं शुभ्रं सदशं यन्न धारितम्। आहतं तद्विजानीयात् सर्वकर्म्मसु पावनम्।" इति स्मृतेरिति भावः।

(च) पुरोहितेति। पुरोहितेन प्रतिबद्धो यः प्रतिसरो हस्तसूत्रं तेन प्रसाधितो भूषितः पाणिर्यस्य सः। "ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रिया" मित्यमरः।

(क) अभीति। अभिनवा राजलक्ष्मीरेव कमलिनी परमसौन्दर्य्यात् पद्मिनी तस्या मृणालेन शुभ्रत्वा-न्मृणालस्वरूपेण। सप्तर्षिमण्डलेनेव मरीच्यादिदेवर्षिगणेनेव स्थितेन, तेषामपि वाञ्छनीयत्वादिति भावः। आलिङ्गितं संसृष्टं वक्षःस्थलं यस्य सः। अत्र परम्परितरूपकजात्युत्प्रेक्षयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

চন্দ্রাপীড়কে তখনই অবলম্বন করিলেন। (স) তদনন্তর অন্তঃপুরের সমস্ত রমণীগণে পরিবেষ্টিত হইয়া স্নেহ-পূর্ণ-হৃদয়া মহারাণী বিলাসবতী আপনিই, চন্দ্র-রশ্মির ন্যায় শুভ্রবর্ণ এবং মহাসুগন্ধি চন্দনদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের চরণতল হইতে সমস্ত অঙ্গ লেপিয়া দিলেন, নূতন-প্রস্ফুটিত-শুভ্রবর্ণ-পুষ্প-মাল্য-দ্বারা মস্তক পরিবেষ্টিত করিয়া দিলেন, গোরোচনাদ্বারা সকল অঙ্গ রঞ্জিত করিলেন এবং দূর্ব্বাপল্লবদ্বারা কর্ণাভরণ করিয়া দিলেন, (হ) চন্দ্রাপীড়, চন্দ্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ নূতন সূক্ষ্ম বস্ত্রযুগল পরিধান করিলেন, তাহার প্রান্তভাগের দশাগুলি লম্বা লম্বা ছিল; (ক) পুরোহিত, হস্তসূত্র বন্ধন করিয়া চন্দ্রাপীড়ের পাণিকমল অলঙ্কৃত করিয়া দিলেন; (ক) নূতন রাজলক্ষ্মীরূপ পদ্মিনীর মৃণালস্বরূপ এবং অভিষেক-দর্শনের নিমিত্ত আগত সপ্তর্ষিমণ্ডলের ন্যায়

(१) गोरचना। (२) नव...। (३) इन्दुकरकलाभिः

कस्रग्भिः (१) निरन्तरनिचितशरीरतया धवलवेशपरिग्रहतया च नरसिंह इव विधुत-(२) केसरनिकरः, कैलास इव स्रवत्स्रोतस्विनी-स्रोतोराशिः, ऐरावत इव मन्दाकिनी-मृणाल-जाल-जटिलः, क्षीरोद इव स्फुरित-फेनलताकुलः (३) (ख) तत्काल-प्रतिपन्न-वेत्रदण्डेन पित्रा स्वयं पुरःप्रारब्धसमुत्सारणः सभामण्डपमुपगम्य (४) काञ्चनमयं शशीव मेरुशृङ्गं चन्द्रापीडः सिंहासनमारुरोह। (ग)

(ख) सितेति। इन्दुकरकलापवत् चन्द्रकिरणसमूहवत् कोमलाभिरिति लुप्तोपमा। विशेषेण कक्षे लम्बत इति वैकक्षं ततः स्वार्थे क इति वैकक्षकम् उरसि तिर्य्यक् उपवीतवत् कण्ठात् स्थितं, 'वैकक्षकन्तु तत्। यत्तिर्य्यक् क्षिप्तमुरसि" इत्यमरः, तद्रूपाभिः स्रग्भिर्मालाभि, निरन्तरनिचितशरीरतया अंशतो निरवकाशव्याप्तदेहतया तथा धवलवेशं परिगृह्णातीति पचादित्वादच् तस्य भावस्तया च हेतुना, विधुतः केसरनिकरो धवलजटासमूहो येन तादृशो नरसिंहो भगवतो नृसिंहावतार इव। अत्र नृसिंहजटानां शुभ्रतयैव लोके प्रसिद्धत्वान्नोपमागतन्यूनपदत्वदोष इति ध्येयम्। स्रवन् निर्गच्छन् स्रोतस्विनीनां नदीनां स्रोतसां राशिः समूहो यस्मात्तादृशः कैलासो गिरिरिव। मन्दाकिन्याः स्वर्गगङ्गाया मृणालजालेन जटिलो व्याप्तः ऐरावतो हस्तीव। तथा स्फुरिताभिराविर्भूताभिः फेनानां लताभिः परम्पराभिः आकुलो व्याप्तः क्षीरोदः सागर इव। नरसिंहकैलासैरावतक्षीरोदैः सह चन्द्रापीडस्य, केसरनिकरस्रोतोराशिमृणालजालफेनलताभिश्च सह तदीयमालानां सादृश्यं। तेनात्र मालोपमालङ्कारः।

(ग) तत्कालेति। तस्मिन् काले प्रतिपन्नो गृहीतो वेत्रदण्डो येन तेन, पित्रा तारापीडेन, स्वयमात्मनैव, पुरोऽग्रतः प्रारब्धा आनन्देन निरतिशयसम्मानप्रदर्शनोद्देशेन च उपक्रान्ता समुत्सारणा लोकानामपसारणा यस्य सः तथोक्तश्चन्द्रापीडः, सभामण्डपमुपगम्य काञ्चनमयं मेरुशृङ्गं शशीव काञ्चनमयं सिंहासनमारुरोह। अत्रोपमालङ्कारः। तथा शशी आरोहति चन्द्रापीडस्तु आरुरोहेति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च शशी यथारोहति तथारुरोहेति पाठेन समाधेयः।

এক ছড়া মুক্তার হারে বক্ষঃস্থল পরিশোভিত হইল ; (খ) শ্বেতবর্ণ পুষ্পদ্বারা গ্রথিত, আজানুলম্বিত, চন্দ্রের রশ্মি-সমূহের ন্যায় কোমল এবং যজ্ঞোপবীতের ন্যায় লম্বমান কতকগুলি মালা দ্বারা সমস্ত দেহ ব্যাপ্ত হওয়ায় এবং শ্বেতবর্ণ বেশ ধারণ করায় চন্দ্রাপীড়, শুভ্রবর্ণ জটাসমূহধারী ভগবান্ নরসিংহের ন্যায়, নদীর স্রোতসমূহ পতিত হইতে লাগিলে কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায় স্বর্গগঙ্গার মৃণালসমূহে ব্যাপ্তদেহ ঐরাবত হস্তীর ন্যায় এবং আবির্ভূত ফেনশ্রেণীতে ব্যাপ্ত ক্ষীরোদসাগরের ন্যায় বিরাজ করিতে লাগিলেন ; (গ) সেই সময়ে মহারাজ তারাপীড় আপনিই বেত্রযষ্টি ধারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়ের সম্মুখবর্ত্তী লোকসমূহকে সরাইয়া দিতে লাগিলেন ; এই অবস্থায়—চন্দ্র যেমন সুবর্ণময় সুমেরুশৃঙ্গে আরোহণ করেন, সেইরূপ কুমার চন্দ্রাপীড় সভামণ্ডপে যাইয়া সুবর্ণময় সিংহাসনে আরোহণ করিলেন।

---

(१) वैकक्षकस्रग्भिः। (२) विधुत, विधूत..। (३)...लताकुलः। (४) आगम्य।

আরূঢ়স্য চাস্য কৃতযথোচিতসকলরাজলোকসম্মানস্য (১) মুহূর্ত্তং স্থিত্বা দিগ্বিজয়প্রয়াণশংসী প্রলয়-ঘন-ঘটা-ঘোষ-ঘর্ঘরধ্বনিঃ, উদধিরিব মন্দরঘাতৈঃ, বসুন্ধরাপীঠমিব যুগান্তনির্ঘাতৈঃ, উৎপাতজলধর ইব তড়িদ্দণ্ডপাতৈঃ, (২) পাতালকুক্ষিরিব মহাবরাহ-ঘোণাভিঘাতৈঃ, কনককোণৈঃ (৩) অভিহন্যমানঃ প্রস্থানদুন্দুভিরামন্থরং দধ্বান (ঘ)। যেন ধ্বনতা সমাধ্মাতানীব উন্মীলিতানীব মুখরীকৃতানীব (৪) পৃথক্কৃতানীব বিস্তারিতানীব গর্ভীকৃতানীব প্রদক্ষিণী-কৃতানীব বধিরীকৃতানীব রবেণ ভুবনান্তরাণি, বিশ্লেষিতা ইব দিশঃমন্যোন্য-

(ঘ) চন্দ্রাপীড়স্য দিগ্বিজয়যাত্রাং বর্ণয়িতুমুপক্রমতে আরূঢ়স্য চেতি। কিঞ্চেতি চার্থঃ। কৃতো যথোচিতঃ সকলরাজলোকস্য উপস্থিতসামন্তগণস্য সম্মানো যেন তস্য, মুহূর্ত্তং স্থিত্বা বিদ্যমানস্যেত্যর্থঃ অস্য চন্দ্রাপীড়স্য, প্রলয়ে তৎকালে যা ঘনঘটা মেঘসমূহস্তস্যা ঘোষবৎ শব্দবৎ ঘর্ঘর ইত্যেবংরূপো ধ্বনির্যস্য সঃ, প্রস্থানদুন্দুভিঃ কনককোণৈঃ সুবর্ণনির্ম্মিতবাদনদণ্ডৈঃ "কোণো বীণাদি বাদন"মিত্যমরঃ, অভিহন্যমানো বাদ্যমানঃ সন্, মন্দরঘাতৈঃ অন্তর্ঘূর্ণমানমন্দরাচলতাড়নৈঃ উদধিঃ ক্ষীরসাগর ইব; যুগান্তে প্রলয়কালে নির্ঘাতৈঃ ঔৎপাতিকৈরাকাশাৎ পতিতবায়ুবিশেষৈঃ, অভিহন্যমানং বসুন্ধরাপীঠং পৃথিবীপৃষ্ঠমিব। নির্ঘাত উক্তো নারদসংহিতায়াম্—"বায়ুনাভিহতো বায়ুর্গগনাৎ পতিতঃ ক্ষিতৌ। যদা দীপ্তঃ খগরুত. স নির্ঘাতোঽতিদোষকৃৎ।" তড়িতো বিদ্যুতো দণ্ডা ইব লম্বমানত্বাৎ তেষাং পাতৈঃ, উৎপাতজলধর ইব ঔৎপাতিকমেঘ ইব। তথা মহাবরাহস্য নারায়ণতৃতীয়াবতারস্য ঘোণায়া নাসিকায়াঃ অভিঘাতৈঃ প্রহারৈঃ পাতালস্য কুক্ষির্মধ্যদেশ ইব, আমন্থরং অতীববিশালং দধ্বান শব্দিতবান্। অত্রাপি মালোপমালঙ্কারঃ। "মন্থরঃ কুসুম্ভে কোশে বক্রে মন্দে পৃথৌ মথি। মন্থরং তু কুসুম্ভ্যাং স্যাৎ।" ইতি হৈমঃ।

(ঙ) যেনেতি। ধ্বনতা শব্দায়মানেন যেন চ দুন্দুভিনা রবেণ, ভুবনানাং অন্তরাণি মধ্যদেশাঃ, সমাধ্মাতানীব পরিপূরিতানীব, উন্মীলিতানীব জাগরিতানীব, মুখরীকৃতানীব শব্দায়মানীকৃতানীব, পৃথক্-কৃতানীব বিদারিতানীব, বিস্তারিতানীব প্রসারিতানীব, গর্ভীকৃতানীব অন্তর্গতীকৃতানীব। সর্ব্বত্র জাতানীতি শেষঃ। তথা দিশাং অন্যোন্যবন্ধসম্বন্ধঃ পরস্পরবন্ধনজনিতসংযোগাঃ বিশ্লেষিতা বিভক্তা ইব জাতাঃ। অত্র সর্ব্বত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ঘ) তিনি সিংহাসনে আরোহণ করিয়া উপস্থিত সামন্তরাজগণের যথোচিত সম্মান করিয়া কিছুকাল অবস্থান করিলে, তাঁহার দিগ্বিজয়-যাত্রা সূচক যাত্রাদুন্দুভি, সুবর্ণময় বাদনদণ্ডদ্বারা তাড়িত হইয়া, মন্দরপর্ব্বতের আঘাতে ক্ষীরোদসাগরের ন্যায় প্রলয়কালীন নির্ঘাত-বায়ুর আঘাতে ভূতলের ন্যায়, বিদ্যুতের আঘাতে উৎপাত মেঘের ন্যায় এবং নারায়ণের তৃতীয় অবতার মহাবরাহের নাসিকার আঘাতে পাতাল-মধ্যদেশের ন্যায়, অত্যন্ত বিশাল শব্দ করিতে লাগিল। (ঙ) শব্দায়মান যে দুন্দুভির শব্দে সমস্ত ত্রিভুবনের মধ্যভাগ, যেন পরিপূরিত, জাগরিত, শব্দিত, বিদারিত, বিস্তারিত, অভ্যন্তরগত, প্রদক্ষিণীকৃত ও বধিরীকৃত হইয়াছিল

(১) সম্মানস্য। (২) তড়িদ্দণ্ডপাতৈঃ। (৩) কনককর্ণৈঃ, কনককর্ণৈঃ। (৪) ক্বচিদয়ং পাঠো নাস্তি।

बन्धसन्धयः (ङ)। यस्य च भयवशविषमचलितोत्तान-(१) फणासहस्रेणा-लिङ्ग्यमान इव रसातले शेषेण, (च) मुहुर्मुहुरभिमुख दत्तदन्तोर्द्धघातैः (२) आहूयमान इव दिक्षु दिक्कुञ्जरैः, (छ) सन्त्रास-रचित-रेचित-(३) मण्डलैः प्रदक्षिणीक्रियमाण इव नभसि दिवसकर-रथ-तुरगैः, (४) (ज) अपूर्व-शर्वाट्टहास-शङ्का-हर्ष-हुङ्कृतेन (५) आभाष्यमाण इव कैलासशिखरिणि त्र्यम्बकवृषभेण, (झ)

(च) यस्येति। यस्य च दुन्दुभेर्निनाद इति सम्बन्धः। रसातले पाताले भयवशेन विषमं अस्मानं इतस्ततः इत्यर्थः चलितं कम्पितं उत्तानं ऊर्द्धीभूतं फणानां सहस्रं यस्य तेन तादृशेन सता, शेषेण अनन्तनागेन आलिङ्ग्यमानः सर्वतः प्राप्यमाण इव सन्। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) मुहुरिति। दिक्षु मुहुर्मुहुः अभिमुखे पर्वतभित्त्यादौ दत्ता दन्ताभ्यां ऊर्द्धघाता यैस्तैः, दिक्कुञ्जरैः दिग्दन्तिभिः आहूयमान आमन्त्र्यमाण इव, प्रतिद्विरदगर्जनभ्रमादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च दुन्दुभिनिनादे प्रतिद्विरदगर्जनभ्रमात् भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(ज) सन्त्रासेति। नभसि आकाशे, सन्त्रासेन भयेन रचितं विहितं रेचितमण्डलं मध्यमवेगगत्या परिभ्रमणं यैस्तैः, भयवशादेव महावेगवतामपि मध्यमवेगेन भ्रमणमिति भावः। "उत्तेजितं रेचितं स्यान्मध्यवेगेन या गतिः" इति हैमनाममाला। दिवसकररथतुरगैः सूर्यरथवाहिघोटकैः, प्रदक्षिणीक्रियमाण इव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(झ) अपूर्वेति। कैलासशिखरिणि त्र्यम्बकवृषभेण शिवस्य वृषेण कर्त्रा, अपूर्वः अश्रुतपूर्वो यः शर्वस्य शिवस्य अट्टहासः उच्चहास्यं तस्य शङ्कया श्रूयमाणे तस्मिन् दुन्दुभिनिनादे शिवाट्टहासभ्रमेणेत्यर्थः, यो हर्षः आनन्दस्तेन यत् हुङ्कृतं आत्मनो हुङ्कारस्तेन करणेन, आभाष्यमाण आलप्यमान इव। अत्र भ्रान्तिमत्-क्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

এবং সকল দিকের পরস্পর সন্ধিস্থলগুলি যেন বিভক্ত হইয়া গিয়াছিল। (চ) এবং পাতালে ভয়বশতঃ অনন্তনাগের উত্তোলিত সহস্র ফণা, ইতস্ততঃ চলিতে লাগিয়াছিল, এই অবস্থায় তিনি যে দুন্দুভিধ্বনি সকল দিক্ হইতেই যেন শুনিতেছিলেন; (ছ) সকল দিকেই দিগ্‌হস্তিগণ, সম্মুখবর্ত্তী পর্ব্বতভিত্তিতে উর্দ্ধদিকে বার বার দন্তাঘাত করিয়া বিপক্ষ হস্তীর গর্জ্জন মনে করিয়া যে দুন্দুভির শব্দকে যেন আহ্বান করিতেছিল, (জ) আকাশে সূর্য্য-রথের অশ্বগণ অত্যন্তভয়বশতঃ মধ্যমগতিতে মণ্ডলাকারে পরিভ্রমণ করিয়া যে দুন্দুভিধ্বনিকে যেন প্রদক্ষিণ করিতেছিল; (ঝ) কৈলাসপর্ব্বতে শিবের বৃষটা, অশ্রুতপূর্ব্ব শিবের উচ্চ-হাস্য-রব মনে করিয়া আনন্দবশতঃ হুঙ্কারদ্বারা যে দুন্দুভিধ্বনির সহিত যেন আলাপ করিতেছিল;

---

(१) चलितोत्तान...। (२)...दन्तघातैः।

(३)...रेचक...। (४)...तुरङ्गमैः। (५) क्वचित् अश्रुतपूर्व इत्यधिकः पाठो दृश्यते।

जल-गम्भीर-कण्ठगर्जितेन प्रत्युद्गम्यमान इव मेरौ (१) ऐरावतेन, (ञ) अश्रुत-पूर्व-रव-रोषावेश-(२) तिर्य्यगवनमित-विषाण-मण्डलेन प्रणम्यमान इव यमसद्मनि (३) कृतान्तमहिषेण, (ट) सन्त्रस्त सकल-लोकपालाकर्णितो बभ्राम त्रिभुवन-मखिलं (४) निनादः। (ठ)

ततो दुन्दुभिरवमाकर्ण्य जय जयेति च सर्वतः समुद्घुष्यमाण जयशब्दः सिंहासनात् सह क्षितलों श्रिया सञ्चचाल चन्द्रापीडः। (ड)

समन्तात् ससम्भ्रमोत्थितैश्च परस्पर-सङ्घट्ट-विघटित-(५) हारसूत्रविगलितान्

(ञ) जलेति। मेरौ सुमेरुपर्वते, जलं गम्भीरं कण्ठगर्जितं येन तेन, ऐरावतेन हस्तिना प्रत्युद्गम्यमान इव, गौरवादभ्यर्थनार्थमिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ट) अश्रुतेति। यमसद्मनि यमालये, अश्रुतपूर्वेण रवेण यो रोषावेशस्तेन तिर्य्यगवनमितं विषाण-मण्डलं येन तेन, कृतान्तमहिषेण प्रणम्यमान इव। अत्र प्रहाराभिप्रायेण कृतं विषाणनमनं नमस्कारार्थ-नमनत्वेनोत्प्रेक्षितमिति क्रियोत्प्रेक्षा तथा यमसद्मनीत्यभिधाय कृतान्तमहिषेण इत्यभिधानादप्रक्रमता दोषः, स च तन्महिषेणेति पाठेन समाधेयः।

(ठ) सन्त्रस्तेति। सन्त्रस्तैः किमिदमिति भीतैः सकलैर्लोकपालैरिन्द्रादिभिराकर्णितः। अत्र तेषां तादृशाकर्णनासम्बन्धेऽपि तत् सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ड) तत इति। सर्वतः समन्तात् समुद्घुष्यमाणो जयशब्दो यस्य सः। दिग्विजयाय चन्द्रापीडस्य चलनेन सह क्षितलक्ष्मीरपि चिरावस्थानासम्भवत्वप्रतीत्या चञ्चला बभूवेति भावः। अत्र सहोक्तिरलङ्कारः।

(ढ) समन्तादिति। किञ्च समन्तात् सर्वाभ्यो दिग्भ्यः, ससम्भ्रमं सत्वरं उत्थितैः, परस्परसङ्घट्टेन अन्योन्यसङ्घर्षेण विघटितानि छिन्नानि यानि हारसूत्राणि तेभ्यो विगलितान्, आशाविजयाय दिग्विजयाय

(ঞ) সুমেরুপর্ব্বতে ঐরাবত হস্তী, গভীর গর্জ্জন করিয়া যে দুন্দুভিধ্বনির যেন প্রত্যুদ্গমন করিতেছিল ; (ট) যমালয়ে যমের মহিষটা, অশ্রুতপূর্ব্ব শব্দ শুনিয়া ক্রোধবশতঃ শৃঙ্গদ্বয় তির্য্যগ্-ভাবে অবনত করিয়া যে দুন্দুভিকে যেন নমস্কার করিতেছিল ; (ঠ) এবং অত্যন্তভীত সকল দিক্‌পালগণকর্তৃক শ্রুত হইয়া যে দুন্দুভিধ্বনি সমস্ত ত্রিভুবন পরিভ্রমণ করিয়াছিল।

(ড) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় দুন্দুভিধ্বনি শুনিয়া বিপক্ষ রাজগণের রাজলক্ষ্মীর সহিত সিংহাসন হইতে নামিলেন। এদিকে সমস্ত সৈন্য-সামন্তগণ সকল দিক্ হইতে 'জয় জয়' ইত্যাকারে চন্দ্রাপীড়ের জয়ধ্বনি ঘোষণা করিতে লাগিল।

(ঢ) চন্দ্রাপীড় সিংহাসন হইতে নামিলে সকল দিক্ হইতে সামন্তনরপতিগণ তাড়াতাড়ি গাত্রোত্থান করিলেন, তখন পরস্পর সঙ্ঘর্ষবশতঃ তাঁহাদের গলার হারের সূতাগুলি ছিঁড়িয়া

(१) क्वचित् 'मेरौ' इति नास्ति। (२)...रवजनितरोष ; रव इव। (३) विबुधसद्मनि।
(४) क्वचित् अखिलमिति न दृश्यते। (५)...विघट्टित...।

अनवरतमाशाविजयप्रस्थानमङ्गललाजानिव (१) मुक्ताफल-प्रकरान् क्षरद्भिः, पारिजात इव सित-कुसुममुकुल-पातिभिः कल्पपादपैः, ऐरावत इव विमुक्तकर-शीकरैराशागजैः, गगनाभोग इव तारागणवर्षिभिर्दिगन्तरैः, जलदकाल इव स्थूल-जल-लवासार-स्यन्दिभिर्जलधरैः, अनुगम्यमानो नरपतिसहस्रैरास्थान-मण्डपान्निरगात्। (ढ)

निर्गत्य च पूर्वारूढया पत्रलेखया (२) अध्यासितान्तरासनाम्, उपपादित-प्रस्थानसमुचितमङ्गल्यालङ्कारां ससम्भ्रमाधोरणोपनीतां करेणुकामारुह्य (३)

प्रस्थाने मङ्गललाजान् माङ्गलिकधाना इवेति जात्युत्प्रेक्षा मुक्ताफलप्रकरान् मौक्तिकसमूहान्, अनवरतं क्षरद्भिः पातयद्भिः, नरपतिसहस्रैः सामन्तगणैः, अनुगम्यमान इति सम्बन्धः, सितकुसुममुकुलपातिभिः शुभ्रवर्णपुष्पकलिकावर्षिभिः कल्पपादपैः पारिजातो वृक्ष इव, विमुक्ता निक्षिप्ताः करेभ्यः शुण्डाभ्यः शीकरा जलविन्दवो यैस्तैः आशागजैर्दिग्गजैः, ऐरावतो हस्तीव, तारागणवर्षिभिर्दिगन्तरैर्विभिन्नदिग्भिः गगनाभोगो विस्तृताकाशदेश इव, तथा स्थूलजललवासारस्यन्दिभिः स्थूलजलविन्दुधारावर्षिभिः जलधरैर्मेघैः जलदकालो वर्षाकाल इव, अनुगम्यमानश्चन्द्रापीडः, आस्थानमण्डपात् सभागृहात् निरगात् निर्गतो बभूव। अत्र मालोपमालङ्कारः प्रागुक्तजात्युत्प्रेक्षया सङ्कीर्य्यते।

(ण) निर्गत्येति। किञ्च। समध्यासितं अधिष्ठितं अन्तरासनं मध्यस्थितासनं यस्यास्ताम्। उपपादिता भृत्यैर्यथास्थानं योजिताः प्रस्थानसमुचिता रणप्रयाणयोग्या मङ्गल्यालङ्कारा यस्यास्ताम्। ससम्भ्रमेण त्वरया आधोरणेन हस्तिपकेन उपनीतां उपस्थापितां करेणुकां काञ्चित् हस्तिनीं आरुह्य चन्द्रापीडः, अचलरेचकेन मन्दरभ्रमणेन चक्रीकृतो घूर्णितो यः क्षीरोदस्य सागरस्य आवर्त्तो जलभ्रमिस्तद्वत् पाण्डुरेण, दशवदनस्य रावणस्य बाहुदण्डे अवस्थितो यः कैलासो गिरिस्तस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य तेन। छत्त्रस्यापि भृत्य

যাইতে লাগিল, তাহাতে দিগ্বিজয়প্রস্থানকালীন মাঙ্গলিক খইর ন্যায় মুক্তাগুলি অনবরত পতিত হইতে লাগিল; তখন শুভ্রবর্ণ পুষ্পকলিকাবর্ষী কল্পবৃক্ষগণ যেমন পারিজাতবৃক্ষের, শুণ্ড হইতে জলবিন্দুবর্ষী-দিগ্‌হস্তিগণ যেমন ঐরাবতের, নক্ষত্রবর্ষী দিক্‌সমূহ যেমন আকাশের এবং স্থূল-জলবিন্দু-বর্ষী মেঘসমূহ যেমন বর্ষাকালের পশ্চাতে অবস্থান করে, সেইরূপ সামন্তনরপতিগণ চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাৎ পশ্চাৎ অবস্থান করিয়া যাইতে লাগিলেন, এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সভামণ্ডপ হইতে নির্গত হইলেন।

(ণ) চন্দ্রাপীড় নির্গত হইলে, হস্তিপক সত্বর একটী হস্তিনী আনিয়া উপস্থিত করিল, পত্রলেখা পূর্ব্বেই তাহাতে আরোহণ করিয়া মধ্যবর্ত্তী আসনে উপবেশন করিয়া রহিয়াছিল, ভৃত্যগণ যুদ্ধযাত্রার উপযোগী মাঙ্গলিক অলঙ্কারে তাহাকে অলঙ্কৃত করিয়া রাখিয়াছিল চন্দ্রাপীড় সেই হস্তিনীর পৃষ্ঠে আরোহণ করিয়া রাজবাটী হইতে নির্গত হইতে আরম্ভ করিলেন; তখন

---

(१)...मङ्गललीलालाजानिव। (२) कुलूतेश्वरपुत्र्या। (३) अधिरुह्य।

भ्रमरेचकचक्रीकृत-क्षीरोदावर्त्त-पाण्डुरेण दशवदन-बाहुदण्डावस्थित-कैलास-कान्तिना मुक्ताफलजालिना शतशलाकेनातपत्रेण निवार्य्यमाणातपो निर्गन्तु-मारेभे। (ण)

निर्गच्छंश्च अभ्यन्तरावस्थित एव प्राकारान्तरित-(१) दर्शनानां द्वारावस्थितानां (२) प्रतिपालयतां राज्ञामुन्मयूखानां चूडामणीनामलक्तकद्रवद्युतिमुषा बहले-नालोकबालातपेन राज्याभिषेकानन्तरप्रसृतेन स्वप्रतापवह्निनेवात्यर्थं पिञ्जरी-क्रियमाणा दश दिशः, यौवराज्याभिषेकजन्मना निजानुरागेणेव रज्यमान-

---

करावस्थितत्वात् साम्यप्रतिपादनार्थं दशवदनबाहुदण्डावस्थितेति कैलासविशेषणं बोध्यम्। मुक्ताफलजाल-मस्यास्तीति तेन, तथा शतं शलाका यस्य तेन, आतपत्रेण छत्रेण निवार्य्यमाण आतपो यस्य स तादृशः सन्। अत्र अचलेत्यादौ लुप्तोपमाद्वयस्य मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(त) निर्गच्छन्निति। किञ्च, वाटीतो निर्गच्छन् चन्द्रापीडः, अभ्यन्तरावस्थित एव वाच्या इति शेषः। प्राकारेण अन्तरितं व्यवहितं दर्शनं येषां तेषां। प्रतिपालयतां आत्मानं प्रतीक्षमाणानां राज्ञां सामन्तनर-पतीनां। उद्गता मयूखाः किरणा येषां तेषां। अलक्तकद्रवस्य लाक्षारसस्य द्युतिं कान्तिं मुष्णाति हरतीति तेन। अत्र द्युतिमिव द्युतिमिति सादृश्याक्षेपान्निदर्शनालङ्कारः। बहलेन प्रचुरेण, आलोकः प्रभा बालातपो नवोदितसूर्य्यकिरण इव तेन, अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। राज्याभिषेकानन्तरं प्रसृतेन विस्तृतेन, स्वप्रतापवह्निनेव स्थितेन, अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अत्यर्थं पिञ्जरीक्रियमाणाः पिङ्गलवर्णा विधीयमानाः, दश दिशो ददर्श। अत्र पिङ्गलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। यौवराज्याभिषेकाज्जन्म यस्य तेन, निजानु-रागेणेव चूडामणीनामालोकबालातपेनेति सम्बन्धः, रज्यमानमवनितलं भूतलं ददर्श। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। आसन्नानां अचिरभाविनां रिपुविनाशानां पिशुनेन सूचकेन दिग्दाहेनेव, चूडामणीनामालोकबालातपेनेति

মন্দরপর্ব্বতের পরিভ্রমণে চক্রাকারে ঘূর্ণিত ক্ষীরোদসমুদ্রের ঘোলার ন্যায় শুভ্রবর্ণ, রাবণের হস্ত-স্থিত কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায় কান্তিসম্পন্ন, মুক্তার ঝালরসংযুক্ত এবং শতশলাকা-নির্ম্মিত একটা ছত্র ধারণ করিয়া কোন ভৃত্য চন্দ্রাপীড়ের রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল।

(ত) সামন্তনরপতিগণ চন্দ্রাপীড়ের প্রতীক্ষা করতঃ দ্বারদেশে অবস্থান করিতেছিলেন, কিন্তু প্রাচীরে ব্যবধান করায় তাঁহাদিগকে ভিতর হইতে দেখা যাইতেছিল না; তাঁহাদের মুকুট-মণির কিরণজাল আলতার রসের সৌন্দর্য্য অপহরণ করিতেছিল এবং নবোদিত-সূর্য্য-কিরণের ন্যায় দীপ্তি পাইতেছিল; তখন চন্দ্রাপীড় নির্গত হইতে হইতে ভিতরে থাকিয়াই দেখিতে লাগিলেন যে, রাজ্যাভিষেকের পর বিস্তৃত স্বকীয় প্রতাপানলের ন্যায়ই যেন সেই মুকুটমণির প্রচুর কিরণজাল, দশদিক্ অত্যন্ত পিঙ্গলবর্ণ করিতেছিল, রাজ্যাভিষেক হইতে উৎপন্ন নিজের অনুরাগের ন্যায়ই যেন সেই কিরণজালে ভূতল রঞ্জিত হইতেছিল; অচির-

---

(१) धवलप्राकारान्तरित...। (२) क्वचित् अयं पाठो नास्ति।

मवनितलं, आसन्नरिपुविनाशपिशुनेन दिग्दाहेनेव पाटलीक्रियमाणमम्बरतलं, अभिमुखागतभुवनतललक्ष्मीचरणालक्तकरसेनेव लोहितायमानातपं दिवसं ददर्श। (त)

विनिर्गतस्य ससम्भ्रम-प्रचलित-गजघटा (१) सहस्रै रन्योन्यसङ्घट्ट-जर्जरितातपत्र-मण्डलैरादरावनत-मौलि-शिथिल-(२) मणिमुकुटपङ्क्तिभिरावर्जितरत्नकर्णपूरैः (३) कपोलस्थल-स्खलित-रत्नकुण्डलैराज्ञप्तसेनापति-निर्दिश्यमान-नामभिरवनिभुजां चक्रवालैः प्रणम्यमानः, (थ) बहलसिन्दूररेणुपाटलेन क्षितितल-दोलाय-

---

सम्बन्धः पाटलीक्रियमाणं अम्बरतलं ददर्श अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा अभिमुखागताया जगज्जयेन आगामिन्याः भुवनतललक्ष्म्याः जगल्लक्ष्म्याः चरणालक्तकरसेनेव चूड़ामणीनामालोकबालातपेन, लोहितायमान आतपो यत्र तादृशं दिवसं ददर्श। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) विनीति। विनिर्गतस्य चन्द्रापीडः प्रथममेव शातक्रतवीमाशामभिप्रतस्थे इत्यन्वयः। प्रथमतस्तृतीयाबहुवचनान्तपदानि अवनिभुजां चक्रवालैरिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। ससम्भ्रमं सत्वरं प्रचलितं गजघटानां हस्तिसमूहानां सहस्रं येषां तैः। अन्योन्यसङ्घट्टेन परस्परसङ्घर्षेण जर्जरितं बहुधा भग्नं आतपत्र-मण्डलं छत्रसमूहो येषां तैः। आदरेण अवनता ये मौलयो मस्तकानि तेभ्यः शिथिला श्लथीभूता मणिमुकुट-पङ्क्तिर्येषां तैः। आवर्जिता अवनता रत्नकर्णपूरा मणिमयकर्णाभरणानि येषां तैः। कपोलस्थलयोर्गण्ड-देशयोरुपरि स्खलिते शिरोऽवनमनाद् गते रत्नकुण्डले मणिमयकर्णकुण्डलद्वयं येषां तैः। तथा आज्ञप्तेन तेषां नामान्यभिधातुमादिष्टेन सेनापतिना निर्दिश्यमानानि नामानि येषां तैः अवनिभुजां चक्रवालैः राज्ञां मण्डलैः समूहैः, प्रणम्यमानश्चन्द्रापीड़ः।

(द) बहलेति। इतस्तृतीयैकवचनान्तपदानि गन्धमादनेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। बहलैः

ভাবি-শত্রুবিনাশ সূচক দিগ্দাহের ন্যায়ই যেন সেই কিরণজাল আকাশকে আরক্তবর্ণ করিতেছিল এবং সম্মুখে আগত জগৎ-লক্ষ্মীর চরণের অলক্তকরসের ন্যায়ই যেন সেই কিরণ-জাল দিনের আলোক লোহিতবর্ণ করিতেছিল।

(থ) চন্দ্রাপীড় নির্গত হইলে সকল দিক্ হইতে সামন্তনরপতিগণ আসিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিতে লাগিলেন; তখন তাঁহাদের বহুসংখ্যক হস্তিসমূহ তাড়াতাড়ি চলিতে লাগিল, পরস্পর সঙ্ঘর্ষবশতঃ ছত্রসমূহ ভগ্ন হইতে লাগিল; আদরে মস্তক অবনত করায় মণিময় মুকুটগুলি মস্তক হইতে শিথিল হইয়া পড়িল; রত্নময় কর্ণপূরগুলি অবনত হইল; মণিময় কুণ্ডলগুলি গালের উপরে আসিয়া দুলিতে লাগিল এবং চন্দ্রাপীড় তাঁহাদের নাম বলিবার জন্য আদেশ করিলে সেনাপতি, সকলের নাম বলিয়া দিতে লাগিলেন। (দ) গন্ধ-মাদননামে সেই গন্ধহস্তীটা চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতেছিল; তাহার কুম্ভমণ্ডল

---

(१) मत्तगजघटा (२) आदरादनवरतप्रणामशिथिलित...। (३) आवर्जितरत्नकर्णपूरैः।

मान-स्थूलमुक्ताकलापावचूलेन सित-कुसुम-माला-जाल-शवल-शिरसा संलग्न-सन्ध्यातपेन तिर्य्यगावर्ज्जित-श्वेतगङ्गाप्रवाहेण तारागण-दन्तुरित-शिखर-(१) शिला-तलेन मेरुगिरिणेव गन्धमादनेनानुगम्यमानः, (द) कनकालङ्कारप्रभा-प्रतान-(२) कल्माषितावयवेन च दत्तकुङ्कुमस्थासकेनेवाकृष्यमाणेनेन्द्रायुधेन सनाथीकृतपुरो-भागः शनैः शनैः प्रथममेव शातक्रतवीमाशामभिप्रतस्थे। (ध)

अथ चलितगजघटा-कम्पित-धवलातपत्र-(३) वनम्, अनेककल्लोल-परम्परा-

प्रचुरैः सिन्दूररेणुभिः पटलो रक्तीकृतकुम्भदेशस्तेन। क्षितितले दोलायमानः स्थूलमुक्ताकलापो यस्य तादृशः अवचूलः ध्वजाग्रबद्धाधोमुखवस्त्रं यस्य तेन "अवचूलः (पुं) ध्वजाग्रबद्धाधोमुखवस्त्र" इति शब्दकल्पद्रुमः। तथा सितकुसुममालानां जालेन समूहेन शवलं विचित्रं शिरो यस्य तेन। अतएव संलग्नः सन्ध्याया आतपो रागो यत्र तेनेति सिन्दूररञ्जितकुम्भसादृश्यम्। तिर्य्यक् आवर्ज्जितः पतितः श्वेतो गङ्गाप्रवाहो यस्मात्तेनेति पृष्ठबद्धध्वजगतपताकासादृश्यम्। तथा तारागणेन नक्षत्रसमूहेन दन्तुरितं विषमीकृतं शिखरशिलातलं शृङ्गाग्र-भागो यस्य तेनेति सितकुसुममालासादृश्यम्। ईदृशेन मेरुगिरिणेव सुमेरुपर्व्वतेनेव गन्धमादनेन तदाख्येन पूर्व्ववर्णितेन गन्धहस्तिना अनुगम्यमानश्चन्द्रापीडः। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णः श्रौतुपमालङ्कारः।

(ध) कनकेति। कनकालङ्कारप्रभाणां प्रतानेन बाहुल्येन कल्माषिता विचित्रीकृताः अवयवा अङ्गानि यस्य तेन, अतएव दत्ता गात्रेषु अर्पिताः कुङ्कुमस्थासकाः (कुङ्कुमद्रवकृतहस्तबिम्बचित्राणि) यस्मिन् तेनेव सता अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आकृष्यमाणेन केनाप्याकृष्य नीयमानेन इन्द्रायुधेन पूर्व्ववर्णितेन तदाख्यघोटकेन सनाथी-कृतः संयुक्तीकृतः पुरोभागः सम्मुखदेशो यस्य सः, चन्द्रापीडः। शतक्रतोरिन्द्रस्येयमिति शातक्रतवी तामाशां पूर्व्वां दिशम्।

(न) अथेति। अथ चन्द्रापीडप्रस्थानानन्तरं, चलितासु गजघटासु कम्पितं धवलातपत्राणां आरोहिगण-

---

প্রচুর সিন্দূররেণুতে রঞ্জিত করা হইয়াছিল; পিঠের উপরে যে ধ্বজ ছিল, তাহার পতাকা-সংলগ্ন বড় বড় মুক্তার মালা ভূতলে দুলিতেছিল; এবং শ্বেতবর্ণ পুষ্পমালাসমূহে তাহার মস্তক বিচিত্র করা হইয়াছিল; সুতরাং সন্ধ্যার রক্তিমা পতিত হইলে, গঙ্গার শ্বেতবর্ণ প্রবাহ নীচের দিকে পড়িতে লাগিলে এবং উপরের প্রস্তরখণ্ড নক্ষত্রসমূহে অসমানতল হইলে সুমেরুপর্ব্বতের ন্যায় সেই গন্ধমাদনকে দেখা যাইতেছিল। (ধ) কোন ভৃত্য, চন্দ্রা-পীড়ের অগ্রে অগ্রে সেই ইন্দ্রায়ুধকে আকর্ষণ করিয়া নিয়া যাইতেছিল, সুবর্ণময় অলঙ্কারের প্রভারাশিতে তাহার সকল অঙ্গ বিচিত্র করিয়াছিল তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন কুঙ্কুমরস-দ্বারা তাহার অঙ্গে হাতের পাঞ্জা চিত্র করিয়া দেওয়া হইয়াছে—এই ভাবে চন্দ্রাপীড় প্রথমেই পূর্ব্বদিক্-অভিমুখে প্রস্থান করিলেন।

(ন) তিনি প্রস্থান করিলে সকল সৈন্যগণ অদ্ভুত কোলাহল করিতে করিতে ভূতল

---

(१) दन्तुरितशिलातलेन। (२)...प्रभाकल्माषित...। (३)...कम्पितातपत्र...।

पतित-चन्द्रमण्डल-प्रतिबिम्ब-सहस्रम्, महाप्रलय-जलधि-जलमिव प्लावितमही-तलम्, अद्भुतोद्भूतकलकलम्, अखिलं (१) सञ्चचाल बलम्। (न)

उच्चलितस्य चास्य स्वभवनादुपपादितप्रस्थानमङ्गलो दुकूल-(२) वासाः सितकुसुमाङ्गरागो महता बलसमूहेन नरेन्द्रवृन्देनानुगम्यमानः (३) धृतधवलात-पत्रो द्वितीय इव युवराजस्त्वरितपदसञ्चारिण्या करिण्या वैशम्पायनः समीपमा-जगाम (४) (प)। आगत्य च रजनिकर इव (५) रवेरासन्नवर्त्ती बभूव। (फ)

श्वेतच्छत्राणां वनं समूहो यस्मिन् तत्, अतएव अनेकासु कल्लोलपरम्परासु महातरङ्गश्रेणीषु पतितं चन्द्रमण्डल-प्रतिबिम्बानां सहस्रं समूहो यस्य तादृशं, महाप्रलयकालीनजलधिजलमिव, प्लावितमहीतलं, अद्भुत आश्चर्यः उद्भूत उत्पन्नः कलकलः कोलाहलो यत्र तत्, अखिलं बलं चन्द्रापीडसैन्यं सञ्चचाल तत्पश्चादिति शेषः। अत्रोपमालङ्कारः।

(प) उच्चलितस्येति। किञ्च, उच्चलितस्य प्रस्थितस्य अस्य चन्द्रापीडस्य समीपमाजगामेति सम्बन्धः। उपपादितं वैजयिकहोमादिना ऋत्विग्भिः सम्पादितं प्रस्थानमङ्गलं यस्य सः, दुकूलवासाः परिहितसूक्ष्मवस्त्रः सितकुसुमैरङ्गरागो गात्रशोभा यस्य सः। धृतं केनचिद्भृत्येन मस्तकोपरि गृहीतं धवलातपत्रं यस्य सः, वैशम्पायनः, द्वितीयो युवराज इव, तादृशाडम्बरशालित्वादिति भावः। करिण्या तदारोहणेनेत्यर्थः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) आगत्येति। आगत्य च वैशम्पायनः रवेः सूर्यस्य रजनिकरश्चन्द्र इव आसन्नवर्त्ती चन्द्रापीडस्य पार्श्ववर्त्ती बभूव। शुक्लपक्षप्रथमभागे दिवसावसाने नभसि चन्द्रो रवेरासन्नवर्त्ती भवतीति द्रष्टव्यम्। अत्रोपमालङ्कारः। तथा रजनिकरो रवेरासन्नवर्त्ती भवति वैशम्पायनस्तु बभूवेति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च रजनिकरो यथा भवति तथा बभूवेति पाठेन समाधेयः।

প্লাবিত করিয়া তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল; হস্তিসমূহ চলিতে লাগিলে আরোহি-গণের শ্বেতবর্ণ ছত্রসমূহ কম্পিত হইতে লাগিল, তাহাতে বহুতর বড় বড় তরঙ্গশ্রেণীর উপরে চন্দ্রমণ্ডলের প্রতিবিম্বসমূহ পতিত হইলে প্রলয়কালীন সমুদ্রজলপ্রবাহের ন্যায় সেই সৈন্য-গণকে দেখা যাইতে লাগিল।

(প) বৈশম্পায়ন দ্বিতীয় যুবরাজের ন্যায় একটা দ্রুতগামিনী হস্তিনীতে আরোহণ করিয়া নিজবাটী হইতে, প্রস্থিত চন্দ্রাপীড়ের নিকটে আগমন করিলেন; পুরোহিতগণ তাঁহার যাত্রাকালীন মঙ্গলকার্য্য সম্পাদন করিয়াছিলেন, তাঁহার পরিধানে সূক্ষ্ম বস্ত্র ছিল, শ্বেতবর্ণপুষ্পে শরীরের শোভা করা হইয়াছিল, এবং কোন ভৃত্য মস্তকের উপরে শ্বেতবর্ণ ছত্র ধারণ করিয়া-ছিল, বিশাল সৈন্যশ্রেণী এবং সামন্তরাজগণ তাঁহারও পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতেছিলেন। (ফ) চন্দ্র যেমন সূর্য্যের পার্শ্ববর্ত্তী হন, সেইরূপ বৈশম্পায়ন আসিয়া চন্দ্রাপীড়ের পার্শ্ববর্ত্তী হইলেন।

---

(१) सकलं। (२)...धवलदुकूल...। (३)...अनुगम्यमानः।
(४) समाजगाम (५) शशिकर इव।

অনন্তরমিতস্ততশ্চ 'নির্গতো যুবরাজ:' ইতি সমাকর্ণ্য প্রধাবতাং বলানাং ভরেণ চলিত-কুলশৈল-কীলিত-জলধি-জল-তরঙ্গ-গতেব তৎক্ষণমাচকম্পে মেদিনী (ব)। সম্মুখাগতৈরন্যৈশ্চান্যৈশ্চ প্রণমদ্ভির্ভূমিপালৈঃ, অংশুলতা-জাল-জটিল-চূলিকানাং মণিমুকুটানামালোকেনোন্মিষিতবহুলরোচিষাঞ্চ পত্রভঙ্গিনীনাং (১) কেয়ূরমণ্ডলীনাং প্রভাসন্তানেন ক্বচিদ্বিকীর্য্যমাণ-চাষ-পক্ষ-ক্ষোদা ইব, ক্বচিদুৎপতিত-শিখি-কুল-চলচ্চন্দ্রক-শত-শারা ইব, ক্বচিদকাল-জলধর-তড়িত্তরলা ইব, ক্বচিৎ সকল্পতরুপল্লবা ইব, ক্বচিৎ সশতক্রতুচাপা ইব (২) ক্বচিৎ সবালাতপা

(ব) অনেতি। ইতশ্চেতশ্চ ইতস্তত ইত্যর্থ: যুবরাজো নির্গত ইতি বাক্যং সমাকর্ণ্য প্রধাবতাং তৎপশ্চাদিতি শেষ:, বলানাং সৈন্যানাং ভরেণ, মেদিনী পৃথিবী, চলিতৈ: পক্ষবত্তয়া গমনশীলৈ: কুলপর্ব্বতৈ: প্রাগুক্তৈর্মহেন্দ্রাদিভি: কীলিতো বিদ্ধো যো জলধিস্তস্য জলতরঙ্গগতেব সতী তৎক্ষণমাচকম্পে। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কার:। চলিতগজঘটাসাম্যদ্যোতনার্থং চলিতকুলশৈলকীলিতেতি বিশেষণম্।

(ভ) সম্মুখেতি। পরস্পরং সম্মুখাগতৈ: অন্যৈশ্চ অন্যৈশ্চ ভিন্নভিন্নৈ: প্রণমদ্ভির্ভূমিপালৈর্হেতুভি:। অংশুলতানাং কিরণশ্রেণীনাং জালেন জটিলা বিষমা: চূলিকাশ্চূড়া প্রান্তদেশা যেষাং তেষাং মণিমুকুটানামালোকেন, তথা উন্মিষিতানি উদ্গতানি বহুলানি রোচীংষি দীপ্তয়ো যাসাং তাসাং পত্রভঙ্গিনীনাং পত্রলতাবিশিষ্টানাং কেয়ূরমণ্ডলীনাং প্রভাসন্তানেন দীপ্তিপ্রবাহেণ চ করণেন, ক্বচিদ্দেশে বিকীর্য্যমাণা বিক্ষিপ্যমানা: চাষাণাং পক্ষিণাং পক্ষক্ষোদা: পক্ষচূর্ণানি যাসু তা ইব, দশ দিশ: অক্রিয়ন্ত ইত্যন্বয়:। এবমন্যত্র। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কার:। ক্বচিৎ উৎপতিতস্য উড্ডীনস্য শিখিকুলস্য ময়ূরসমূহস্য চলতা চন্দ্রকশতেন মেচকসমূহেন পুচ্ছগতবিচিত্রচিহ্নসমূহেনেতি যাবৎ শারা বিচিত্রা ইব। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কার:। ক্বচিৎ অকালে যো জলধরো মেঘস্তস্য তড়িতা বিদ্যুতা তরলাশ্চপলা ইব। অত্রাপি গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কার:। ক্বচিৎ কল্পতরুপল্লবৈ: সহ বিদ্যমানা ইতি সকল্পতরুপল্লবা ইব। গুণোৎপ্রেক্ষা। ক্বচিৎ শতক্রতুচাপৈরিন্দ্রধনুর্ভি: সহেতি

(ব) তদনন্তর "যুবরাজ বাটী হইতে নির্গত হইয়াছেন" এই কথা শুনিয়া সৈন্যগণ তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হইতে লাগিল; তাহাদের পদভরে পৃথিবী, গমনশীল কুলপর্ব্বতগণদ্বারা গ্রথিত-সমুদ্র-জল-স্থিত হইয়াই যেন কাঁপিতে লাগিল। (ভ) সামন্তরাজগণ পরস্পর পরস্পরের সম্মুখে উপস্থিত হইয়া নমস্কার করিতে লাগিলেন, তখন তাঁহাদের মণিময় মুকুটের প্রান্তভাগ কিরণজালে আলোকিত ছিল, সেই আলোকে এবং নানাবিধ-পত্রলতা-বিশিষ্ট ও অত্যন্ত-দীপ্তিশালী কেয়ূরসমূহের আলোকমালাতে, কোন জায়গায় দশ দিকে সোণাচড়ার (পাখীর) পাখা চূর্ণ করিয়া যেন বিক্ষিপ্ত করা হইতেছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; কোন স্থানে উড্ডীন ময়ূরগণের গমনশীল পুচ্ছ-চিত্রেই যেন দশ দিক্ বিচিত্র করিয়াছিল; কোন স্থানে অকাল-মেঘের বিদ্যুতেই যেন দশ দিক্ চঞ্চল করিয়াছিল; কোন স্থানে দশ দিক্ যেন কল্পতরুর পল্লবযুক্ত, কোন স্থানে যেন ইন্দ্রধনুসমন্বিত এবং কোন স্থানে যেন নবো-

(১) পত্রভঙ্গীনাং। (২) সশতমন্যুচাপা ইব।

इवाक्रियन्त (१) दश दिशः (भ)। धवलान्यपि विविध-मणि-निकर-कल्माषैरुत्-सर्पिभिश्चूडामणि-मरीचिभिर्मायूराणीवाराजन्त (२) राज्ञामातपत्राणि। (म)

क्षणेन च तुरगमयमिव महीतलम्, कुञ्जरमयमिव दिक्चक्रवालम्, आतपत्र-मण्डलमयमिवान्तरिक्षम्, ध्वजवनमयमिवाम्बरतलम्, इभमदगन्धमय इव समीरणः, भूपालमयीव प्रजासृष्टिः, आभरणांशुमयीव दृष्टिः, (३) किरीटमय इवातपः, चामरमय इव दिवसः, (४) जयशब्दमयमिव त्रिभुवनमभवत् (य)। सर्वतश्च कुलपर्वताकारैः प्रचलद्भिर्मत्तवारणैः, उत्पातचन्द्रमण्डलनिभैश्च प्रेङ्खि-रातपत्रैः (५) संवर्त्तकाम्भोदगम्भीरभीमनादेन च ध्वनता दुन्दुभिना, तारकावर्ष-

सप्तशक्रचापा इव। गुणोत्प्रेक्षा। क्वचिच्च बालातपेन नवोदितरविकिरणेन सहेति सबालातपा इव, दश दिशः अक्रियन्त। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) धवलानीति। धवलान्यपि राज्ञामातपत्राणि छत्राणि, विविधानां मणीनां तत्किरणानामित्यर्थः निकरेण समूहेन कल्माषैर्विचित्रैर्नानावर्णैः, उत्सर्पिभिः ऊर्द्ध्वप्रसारिभिः चूडामणिमरीचिभिः करणैः, मायूराणि मयूरपिच्छनिर्म्मितानीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) क्षणेनेति। दिक्चक्रवालं दिक्समूहः। ध्वजवनमयमिव केतुसमूहमयमिव। इभमदगन्धमय इव हस्तिदानजलसौरभमय इव। दृष्टिर्दर्शनं आभरणांशुमयी राज्ञामलङ्कारकिरणमयीव। अत्र विकारार्थे मयट्प्रत्ययाद्विकारस्य च अन्यथारूपत्वेन गुणत्वात् सर्वत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) सर्वत इति। किञ्च कुलपर्वताकारैरित्यार्थोपमालङ्कारः। सर्वतः प्रचलद्भिर्मत्तवारणैर्मत्त-हस्तिभिः। प्रलयसमये जगतामुत्पातसूचनायैव चन्द्रमण्डलस्खलनमिति द्योतनार्थमुत्पातपदम्। अत्राप्यार्थी-

দিত সূর্য্য-কিরণ-সংযুক্ত করিয়াছিল। (ম) রাজগণের ছত্রসমূহ শ্বেতবর্ণ হইলেও, সেগুলি নানাবিধ মণির কিরণসমূহে বিচিত্র হইয়া এবং ঊর্দ্ধগামী চূড়ামণির কিরণে যেন ময়ূরপুচ্ছ-নির্ম্মিতের ন্যায় বিরাজ করিতে লাগিল।

(য) ক্ষণকালমধ্যে ভূতল যেন ঘোটকময় হইয়া গেল, দিঙ্মণ্ডল যেন হস্তিময় হইয়া পড়িল, আকাশ যেন ছত্রময় ও ধ্বজময় হইয়া উঠিল, বায়ু যেন হস্তীর মদজল-গন্ধময় হইল, সকল লোকই যেন রাজময় বলিয়া বোধ হইতে লাগিল, দৃষ্টিপাত যেন অলঙ্কারের কিরণময় হইয়া উঠিল, রৌদ্র যেন মুকুটময় হইয়া গেল, দিনটা যেন চামরময় হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতে লাগিল এবং ত্রিভুবন যেন জয়-জয়শব্দময় হইয়া পড়িল। (র) এবং কুলপর্ব্বতের ন্যায় বৃহৎ-আকার মত্তহস্তিগণ সকল দিক্ ব্যাপ্ত করিয়া যাইতে লাগিল; ঔৎপাতিক

(१) क्रियन्ते। (२) राजन्ते, अरज्यन्त। (३) सृष्टिः। (४) किरीटमय इव दिवसः, अयः···।
(५) सितसितातपत्रैः।

सहस्रेण विसर्पता गजशीकरनिकरेण, धूमकेतुधूसरैश्चोल्लसद्भिरवनिरजोदण्डकैः, निर्घात-पात-परुष-गम्भीरघोषैश्च करिकण्ठगर्जितैः, क्षतज-कण-वर्ष-बभ्रुणा च भ्रमता मतङ्गज-कुम्भ-सिन्दूर-रेणुना, संक्षुभित-जलधि-जल-कल्लोल-चञ्चलाभिश्च विसर्पन्तीभिः (१) तुरङ्ग-(२) मालाभिः, अन्धकारितदिगन्तरेण चानवरतं क्षरता (३) गज-मदजल-धारा-(४) दुर्दिनेन, कलकलेन च भुवनान्तरव्यापिना महाप्रलयकाल इव सञ्जज्ञे। (र)

बल-बहल-(५) कोलाहलभीता इव धवल-ध्वज-निवह-निरन्तरावृता ययुः

पमालङ्कारः। प्रेङ्खद्भिः चञ्चलद्भिः। संवर्त्तकाम्भोदवत् प्रलयकालीनमहामेघवत् गम्भीरो भीमो भयानकश्च नादो यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। ध्वनता शब्दायमानेन। तारकावर्षसदृशेन नक्षत्रवृष्टितुल्येन अत्रार्थोपमा, विसर्पता समन्तात्प्रसरता, गजशीकरनिकरेण हस्तिशुण्डानिर्गतजलविन्दुसमूहेन। धूमकेतुवद् धूसरैरिति लुप्तोपमा, उल्लसद्भिरुत्तिष्ठद्भिः, अवनिरजोदण्डकैः दण्डवल्लम्बमानधूलीश्रेणीभिः। निर्घातः प्रागुक्तलक्षणो वायुस्तस्य पातवत् परुषाः कर्कशाः गम्भीराश्च घोषाः शब्दा येषां तैः। क्षतजकणवर्षवत् रक्तविन्दुवृष्टिवत् बभ्रुणा पिङ्गलवर्णेनेति लुप्तोपमा, मतङ्गजकुम्भसिन्दूररेणुना हस्तिकुम्भस्थितसिन्दूरकणेन। संक्षुभिता उद्वेलिता ये जलधिजलकल्लोलास्तद्वच्चञ्चलाभिरिति लुप्तोपमा, विसर्पन्तीभिः प्रचलन्तीभिः तुरङ्गमालाभिर्घोटकश्रेणीभिः। अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि दिगन्तराणि येन तेन, गजमदजलधारादुर्दिनेन हस्तिदानजलधारावृष्ट्या। तथा भुवनान्तरव्यापिना कलकलेन सैन्यानां कोलाहलेन च कारणेन, महाप्रलयकालः समुत्पन्न इव, तदाप्युत्पाकुलत्वं तच्चलनाद्यवश्यम्भावादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च सर्वेषां विनाशो भवत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ल) बलेति। धवलेन ध्वजनिवहेन निरन्तरं निरवकाशं यथा तथा आवृता आच्छन्नाः दश दिशः, बलानां सैन्यानां बहलेन बहुलेन कोलाहलेन भीता इव सत्यः, क्वापि अनिर्दिष्टस्थाने ययुः अदृश्यतां गताः

চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় ছত্রসমূহ চলিতে লাগিল; তাড্যমান দুন্দুভি, প্রলয়কালের মহামেঘের ন্যায় গম্ভীর ও ভয়ঙ্কর শব্দ করিতে লাগিল; হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নক্ষত্রবৃষ্টির ন্যায় জলবিন্দুসমূহ পড়িতে লাগিল; ভূতল হইতে ধূমকেতুর ন্যায় ধূসরবর্ণ ধূলী উঠিতে লাগিল; হস্তিগণ নির্ঘাত-বায়ু-পতনের ন্যায় কর্কশ ও গম্ভীর শব্দে গর্জন করিতে লাগিল; হস্তিগণের কুম্ভস্থল হইতে রক্তবৃষ্টির ন্যায় সিন্দূরের রেণু উড়িতে লাগিল; উদ্বেলিত সমুদ্রজলের মহাতরঙ্গের ন্যায় ঘোটকগণ চলিতেছিল; হস্তিগণের মদজল-ধারা, সকল দিক্ অন্ধকার করিয়া অনবরত ক্ষরিত হইতেছিল এবং সৈন্যগণের কোলাহলে জগৎসংসার ব্যাপ্ত হইল—এই সকল কারণে সেই সময়ে যেন মহাপ্রলয়কাল উপস্থিত হইল।

(ল) শ্বেতবর্ণ ধ্বজসমূহে ঘনভাবে আবৃত দশ দিক্, সৈন্যগণের অত্যন্ত কোলাহলে ভীত

---

(१)…प्रविसर्पन्तीभिः। (२) तुरङ्गम..। (३) अनवरतक्षरता। (४) क्वचित् मदपदं नास्ति।
(५) बहलतर…'।

क्वापि दश दिशः (ल)। मलिनावनि-(१) रजःसंस्पर्शशङ्कितमिव समद-गज-घटावचूल-सहस्र-संवृतमतिदूरमम्बरं (२) अपससार (व)। प्रबल-वेत्रि-वेत्रलता-(३) समुत्सार्य्यमाणा इव तुरग-खुररजोधूसरं (४) अर्ककिरणा मुमुचुः पुरोभागम् (श)। इभ-कर-शीकर-निर्वापण-त्रस्त इवातपत्र-संच्छादितातपो दिवसो ननाश (ष)। बल-भर-(५) जर्जरीकृता मद-कल-करि-चरण-शत-

---

इत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, ध्वजनिरन्तरावरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा दिक्षु कार्य्येण कोलाहलभीतापसृतकुलकामिनीव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(व) मलिनेति। समदानां गजघटानां हस्तिसमूहानां अवचूलसहस्रेण पृष्ठस्थध्वजपताकासमूहेन संवृतं आच्छन्नं अम्बरमाकाशं कर्त्तृ, मलिनानां अवनिरजसां धूलीनां संस्पर्शात् शङ्कितमिव सत् अतिदूरमपससार, तत्सैन्यानां दूर एव दृश्यतां ययाविति भावः। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, अतिशयोक्तिश्च, तथा अम्बरे स्त्रीरजःस्पर्शशङ्कया अपसृतजनव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्चेत्येतेषां पूर्ववत् सङ्करः।

(श) प्रबलेति। अर्ककिरणाः प्रबलस्य राजनियोगात् पूर्णप्रभावस्य वेत्रिणो वेत्रयष्टिधारिणो रक्षिजनस्य वेत्रलतया समुत्सार्य्यमाणा अपसार्य्यमाणा इव सन्तः, तुरगखुररजोधूसरं पुरोभागं मुमुचुस्तत्यजुः, राज-पुरोगामिसाधारणजनवदिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, परित्यागं प्रति तुरगखुररजोधूसरपदस्यार्थो हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं तथा कार्य्येणार्ककिरणेषु राजपुरःपरित्यागरूपसाधारणजनव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरित्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) इभेति। आतपत्रैः संच्छादित आतपो रविकिरणो यत्र तादृशः स दिवसः, इभानां हस्तिनां करशीकरैः शुण्डानिःसृतजलविन्दुभिर्यन्निर्वापणं आत्मनो विलयस्तेन त्रस्तो भीत इव सन्, ननाश अदृश्यतां गतः, आतपत्रैरावरणाद्दिवालोको नासीदिति भावः। जलविन्दुभिर्वह्नेरिव दिवालोकस्य निर्वापणसम्भावनेति बोध्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, दिवसनाशं प्रति आतपत्राच्छादनं हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा दिवस-नाशासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरित्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(स) बलेति। भूमिर्भूतलं बलानां सैन्यानां भरेण जर्जरीकृता क्षुण्णा, तथा मदकलानां मदमत्तानां

হইয়াই যেন কোথাও চলিয়া গেল। (ব) আকাশতল, মদমত্ত-হস্তিগণের পৃষ্ঠবর্ত্তী পতাকা-সমূহে আচ্ছন্ন হইয়া, মলিন ধূলির সংস্পর্শের আশঙ্কায়ই যেন অতিদূরে সরিয়া গেল। (শ) সূর্য্যের কিরণসমূহ, বেত্রযষ্টিধারী প্রবল রক্ষিপুরুষের বেত্রযষ্টিদ্বারা অপসারিত হইয়াই যেন, অশ্বগণের খুরের ধূলীতে ধূসরবর্ণ সম্মুখভাগ পরিত্যাগ করিয়াছিল। (ষ) ছত্রসমূহে দিনের আলোক আবৃত হইয়াছিল, সুতরাং সেই দিনটা, হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নির্গত জলবিন্দুসমূহে আপনার

---

(१) मलिनीकृतमिव। (२) अम्बरतलं। (३) प्रचलितवेत्रलता, प्रचुरवेत्रलता...।

(४)...धूसरताभीता इवार्क..., धूसरताभीतार्क...। (५) बहुलबलभर...।

ताड़िता (१) द्वितीयेव प्रयाणभेरी भैरवं भूमी रराम (ग)। गुल्फदघ्नसि च तुरङ्ग-मुख-विनिःसृत-सित-फेन-पल्लविते (२) मदपयसि मदस्नुतां करिणां प्रचस्खलुः पदे पदे पदातयः (ह)। हरिताल-परिमलनिभेन चातिपटुना गजमदामोदेनानुलिप्तस्य सामजस्येवापययौ (३) निखिलान्यगन्धग्रहणसामर्थ्यं घ्राणेन्द्रियस्य। (च)

क्रमेण च प्रसर्पतो बलस्य पुरःप्रधावतां जन-कदम्बकानां कोलाहलेन, तारतर-

करिणां चरणशतेन पदसमूहेन ताड़िता च सती, द्वितीया प्रयाणभेरीव प्रस्थानदुन्दुभिरिव भैरवं भयानकं यथा तथा रराम दध्वान। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा शब्दकरणं प्रति पूर्वविशेषणद्वयार्थौ हेतुरिति पदार्थ-हेतुकं काव्यलिङ्गञ्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ह) गुल्फेति। पदातयः सैन्याः पदे पदे प्रतिपदक्षेपं, गुल्फदघ्नसि पादग्रन्थिपरिमिते। प्रमाणे दघ्नसच्प्रत्ययः। तुरङ्गाणां मुखेभ्यो विनिःसृतैः सितैः शुभ्रैः फेनैः पल्लविते विस्तारिते, मदस्नुतां मदजलस्राविणां करिणां मदपयसि दानजले प्रचस्खलुः स्खलित्वा पतितवन्तः। अत्र गुल्फदघ्नसत्वाद्य-सम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(च) हरीति। हरितालस्य स्वनामख्यातधातुविशेषस्य परिमलनिभेन सौरभसदृशेन, अतिपटुना नितान्ततीव्रेण च गजमदामोदेन हस्तिनां दानजलसौरभेण अनुलिप्तस्य संबद्धस्य सञ्चितस्य च, सामजस्य तत्तत्करिण इव घ्राणेन्द्रियस्य जनगणनासिकायाः, निखिलान्यगन्धग्रहणसामर्थ्यं अपययौ विननाश, गज-मदामोदेन स्वस्वमदामोदेन च परिपूर्णत्वादिति भावः। अत्र लुप्तोपमाश्रौतोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "सामजस्तु गजे पुंसि सामोत्थे पुनरन्यवत्।" इति मेदिनी।

(क) क्रमेणेति। प्रसर्पतो बलस्य गच्छतः सैन्यस्य। जनकदम्बकानां लोकसमूहानाम्। तारतर-

নির্ব্বাণ হইয়া যাইবার ভয়েই যেন অদৃশ্য হইয়া গিয়াছিল। (গ) সৈন্যগণের পদভরে ভূতল জর্জ্জরিত হইতেছিল, আবার মদমত্ত হস্তিগণের চরণসমূহদ্বারাও তাড়িত হইতেছিল, সুতরাং সেই ভূতল দ্বিতীয় প্রয়াণদুন্দুভির ন্যায় ভয়ঙ্কর শব্দ করিতেছিল। (হ) মদস্রাবী হস্তিগণের মদজল, ভূতলে পড়িতেছিল, সেগুলি আবার অশ্বগণের মুখনিঃসৃত শুভ্রবর্ণ ফেনপুঞ্জে বিস্তৃত হইয়া গুল্‌ফ-(গোড়ালি, গুরমুরিয়া) পরিমাণে উচু হইয়াছিল, সুতরাং পদাতি সৈন্যগণ প্রত্যেক পদক্ষেপে তাহাতে স্খলিত হইয়া পড়িয়া যাইতেছিল। (চ) হরিতালের গন্ধের তুল্য এবং অত্যন্ততীব্র হস্তিগণের মদজলের গন্ধ, যাহাদের নাসিকায় যাইতেছিল, সেই সকল হস্তি-গণের নাসিকার ন্যায় সৈন্যগণের নাসিকারও অন্য সকল গন্ধ গ্রহণ করিবার শক্তি লোপ পাইয়াছিল।

(ক) ক্রমে প্রচলিত সৈন্যগণের অগ্রগামী লোকসমূহের কোলাহলে, জয়ঢাকের অতিবৃহৎ

(१)…चरणशतसन्ताड़िता, चरणशतक्षुण्णिता। (२)…पल्लवे। (३) उपययौ, समुपययौ, समाययौ।

दीर्घेण च काहलानां निनादेन, खुर-रव-मिश्रितेन च वाजिनां ह्रेषारवेण, (१) अनवरत-कर्णताल-स्वन-(२) सम्पृक्तेन च दन्तिनामाडम्बररवेण, ग्रैवेयक-किङ्किणी-क्वणितानुसृतेन (३) च गतिवशाद्विषम-(४) विराविणीनां घण्टानां टङ्कृतेन, मङ्गल-शङ्ख-शब्द-संवर्द्धित-ध्वनीनाञ्च प्रयाणपटहानां निनादेन, मुहुर्मुहुरितस्ततस्ताड्यमानानाञ्च डिण्डिमानां (५) निःस्वनेन, जर्जरीकृतश्रवणपुटस्य मूर्च्छेवाभवज्जनस्य। (क)

शनैः शनैश्च बलसंक्षोभजन्मा क्षितेरनेकवर्णतया क्वचिज्जीर्णशफर-क्रोड़-धूम्रः, क्वचित् क्रमेलक-सटा-सन्निभः, क्वचित् परिणत-रल्लक-रोम-पल्लव-मलिनः,

दीर्घेण अत्यन्तोच्चैस्तरेण, काहलानां वृहद्ढक्कानाम्। अनवरतो यः कर्णतालयोरविच्छिन्नतालपत्रवद्विशालयोः कर्णयोः स्वनः शब्दस्तेन सम्पृक्तः सम्मिलितस्तेन। आडम्बररवेण विशालवृंहितध्वनिना। ग्रैवेयकाणि कण्ठाभरणानि तेषु याः किङ्किण्यः क्षुद्रघण्टिकास्तासां क्वणितैः रवैरनुसृतः अनुगतस्तेन, गतिवशात् विषम-विराविणीनां भयङ्करशब्दकारिणीनां घण्टानां कण्ठलम्बितानामित्यर्थः टङ्कृतेन 'ट' 'ट' शब्देन। मङ्गलशङ्खशब्दैः संवर्द्धिता ध्वनयो येषां तेषां, प्रयाणपटहानां यात्राढक्कानां। जर्जरीकृतं प्रव्यथितं श्रवणपुटं यस्य तस्य जनस्य मूर्च्छा मोहः अभवदिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) शनैरिति। बलसंक्षोभात् सैन्यस्य ससंरम्भचलनाज्जन्म यस्य स तादृशो रेणुरुत्पपातेति वक्ष्यमाण-क्रिययान्वयः। क्षितेर्गमनाधारभूतभूतलस्य अनेकवर्णतया हेतुना। क्वचित् धूसरमृत्तिकामयभूमौ, जीर्ण-शफरस्य परिणतप्रोष्ठीमत्स्यविशेषस्य क्रोडवत् धूम्रो धूमलवर्णः। क्वचित् पिङ्गलमृत्तिकामयभूतले, क्रमेलकस्य उष्ट्रस्य सटासन्निभो जटातुल्यः। क्वचित् कृष्णमृत्तिकामयस्थाने, परिणतस्य वृद्धस्य रल्लकस्य हरिणविशेषस्य रोम्णां पल्लववत् गुच्छवत् मलिनः कृष्णवर्णः। "रल्लकः कम्बले स्मृतः। तथैव कम्बलमृगे" इति हैमः। क्वचित् पाण्डुमृन्मयस्थले, वटलकुचादिपत्रेषु क्रिमिभिरूर्णायाः कृतत्वात् पत्रसम्बन्धिनी ऊर्णा अस्तीति पत्रोर्णं, परिष्कृत-

শব্দে, খুরের শব্দ-মিশ্রিত অশ্বগণের হ্রেষারবে, হস্তিগণের অবিশ্রান্ত-সঞ্চালিত বৃহৎকর্ণ-শব্দের সহিত বিশাল বৃংহিতধ্বনিতে, এবং তাহাদের কণ্ঠালঙ্কারের অন্তর্গত কিঙ্কিণীর শব্দমিশ্রিত গমনবেগে ভয়ঙ্করশব্দকারী ঘণ্টাসমূহের 'টংটং' শব্দে, মাঙ্গলিক শঙ্খের শব্দে পরিবর্দ্ধিত প্রয়াণ-ঢক্কার শব্দে এবং সকলদিকে অনবরত বাদ্যমান ডিণ্ডিমের (ডেঙ্গরীর) ধ্বনিতে লোকের কর্ণযুগল জর্জরিত করিয়াছিল এবং তাহাতেই যেন তাহাদের মূর্চ্ছা উপস্থিত হইয়াছিল।

(খ) সৈন্যগণের সম্মর্দ্দবশতঃ ভূতল হইতে ধূলি উঠিতে লাগিল; ভূতল নানাবর্ণ বলিয়া কোন স্থলে সেই ধূলিগুলি বৃদ্ধ প্রোষ্ঠীমৎস্যের ক্রোড়ের ন্যায় ধূসরবর্ণ, কোন স্থলে উষ্ট্রের জটার ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, কোন স্থলে বৃদ্ধ হরিণবিশেষের লোমগুচ্ছের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ, কোন স্থানে

(१) ह्रेषारवेण। (२)...स्वर...। (३)...अनुगुञ्जितेन। (४) गतिवशविषम...।
(५) भिन्नडिण्डिमानां।

क्वचित् पत्रोर्ण-(१) तन्तुपाण्डुरः, क्वचिज्जरठ-मृणालदण्डधवलः, क्वचिज्जरत्कपि-केसर-(२) कपिलः, क्वचिद्धर-(३) वृषभ-रोमन्थ-फेन-पिण्ड-पाण्डुरः, (ख) त्रिपथगाप्रवाह इव हरिचरणप्रभवः, (ग) कुपित इव मुञ्चन् क्षमाम्, (घ) आरब्ध-परिहास इव रुन्धन्नयनानि, (ङ) तृषित इव पिबन् करि-कर-शीकर-जलानि, (च) पक्षवानिवोत्पतन् गगनतलम्, (छ) अलिनिवह इव लुभ्यन्

कौशेयवस्त्रं तस्य तन्तुवत् पाण्डुरः। "पत्रोर्णं धौतकौशेय"मित्यमरः। क्वचित् श्वेतमृत्तिकास्थाने, जरठः परिणतो यो मृणालदण्डस्तद्वत् धवलः। क्वचित् पिङ्गलवर्णमृत्तिकामयस्थानान्तरे, जरतः स्थविरस्य कपेर्वानरस्य केसरवत् कपिलः पिङ्गलवर्णः। क्वचित् पाण्डुवर्णमृत्तिकामयस्थानान्तरे, हरवृषभस्य शिववृषस्य रोमन्थेन चर्वितचर्वणेन यः फेनपिण्डस्तद्वत् पाण्डुरः। एषु प्रत्येकवाक्य एव लुप्तोपमालङ्कारः। अविशेषे हरवृषभेति विशेषोपादानाद्विशेषे विशेषाख्यदोषः, वरवृषभेति पाठेऽपि स एव, हरपदपरित्यागे तु तद्दोषाभावः।

(ग) त्रिपथगेति। त्रिपथगाया गङ्गायाः प्रवाह इव, हरीणामश्वानां चरणेभ्यः पक्षे हरेर्नारायणस्य चरणात्, प्रभवतीति सः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(घ) कुपित इति। कुपितो जन इव, क्षमां भूतलं सहिष्णुताञ्च मुञ्चन् परित्यजन्। एकत्र अधीरत्वादन्यत्र उड्डयनादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ङ) आरब्धेति। आरब्धः परिहासः कैश्चित् सह नर्म येन स तादृशो जन इव, नयनानि लोकानां चक्षूंषि परिहास्यजनानां नयनानि च रुन्धन् आवृण्वन्। करेण नयनावरणं लौकिकपरिहासे प्रचलितम्। पूर्णोपमा।

(च) तृषित इति। तृषितः पिपासार्त्तो जन इव, करिकरशीकरजलानि हस्तिशुण्डानिःसृतजलबिन्दून् पिबन् कर्द्दमीभूय शोषयन्, पीतानि कुर्वंश्च। पूर्णोपमा।

(छ) पक्षेति। पक्षवान् पक्षीव, गगनतलं उत्पतन् उड्डयमानः। पूर्णोपमा।

পরিষ্কৃত পট্টবস্ত্রের সূতার ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ, কোন স্থানে পরিণত মৃণালের ন্যায় শুভ্রবর্ণ, কোন স্থানে বৃদ্ধ বানরের কেশরের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, আবার কোন স্থানে শিবের বৃষের চর্ব্বিতচর্ব্বণের সময় উৎপন্ন ফেন-পুঞ্জের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ ছিল। (গ) নারায়ণের চরণকমল হইতে গঙ্গা-প্রবাহের ন্যায় অশ্বগণের খুর হইতে সেই ধূলিসমূহ উৎপন্ন হইতেছিল; (ঘ) ক্রুদ্ধ লোক যেমন সহিষ্ণুতা ত্যাগ করে, সেই ধূলিসমূহও তেমন ভূতল ত্যাগ করিতেছিল; (ঙ) পরিহাস আরম্ভ করিয়া কোন লোক যেমন হস্তদ্বারা অপর লোকের নয়ন আচ্ছাদন করে, সেই ধূলিসমূহও তেমন লোকের নয়ন আচ্ছাদন করিতেছিল; (চ) পিপাসাতুর লোক যেমন জল পান করে, সেই ধূলিসমূহও তেমন হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নিঃসৃত জলবিন্দু সকল পান (শোষণ) করিতেছিল; (ছ) সেই ধূলিগুলি পক্ষীর ন্যায় আকাশে উঠিতেছিল; (জ) ভ্রমর-

---

(१) उत्पत्रोर्णा...। (२)...केश...। (३) वर...।

मदलेखाम्, (ज) मृगपतिरिव रचयन् करिकुम्भस्थलीषु पदम् (झ) उपात्तविजय इव गृह्णन् पताकाः, (१) (ञ) जरागम इव पाण्डुरीकुर्वन् शिरांसि, (ट) मुद्रयन्निव पक्ष्माग्रसंस्थितो दृष्टिम्, (ठ) आजिघ्रन्निव मकरन्द-मधु-बिन्दु-पङ्कलग्नः (२) कर्णोत्पलानि, (ड) मद-कल-करि-कर्ण-ताल-ताड़न-त्रस्त इव विशन् (३) कर्ण-(४) शङ्खोदर-विवराणि, (ढ) पीयमान इवोष्मखोभिरवनि-

---

(ज) अलीति। अलिनिवहो भ्रमरसमूह इव, मदलेखां हस्तिनां मदजलश्रेणीं चुम्बन् स्पृशन् तत्संयोगं कुर्वंश्च। पूर्णोपमा।

(झ) मृगेति। मृगपतिः सिंह इव, करिकुम्भस्थलीषु पदं प्रतिष्ठां पदक्षेपञ्च रचयन् कुर्वन्, एकत्र पतनादन्यत्राक्रमणादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) उपात्तेति। उपात्तविजयो युद्धे लब्धजयो राजेव, पताका वैजयन्तीः गृह्णन् स्पृशन् अपहरंश्च। जेता हि विजितशत्रूणां पताका हरतीति प्रसिद्धं। पूर्णोपमा।

(ट) जरेति। जरागमो वार्द्धक्यमिव, लोकानां शिरांसि पाण्डुरीकुर्वन्; एकत्र केशव्यापनादन्यत्र केशपाकादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ठ) मुद्रयन्निति। पक्ष्मणां नयनलोम्नां अग्रेषु संस्थितः सन् दृष्टिं मुद्रयन् सङ्कोचयन्निव, तत्पतनशङ्कया लोकानां नयनोन्मीलनासम्भवादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) मकेति। मकरन्देषु तेषां कर्णोत्पलानामेव किञ्जल्केषु ये मधुबिन्दुपङ्काः गाढ़रसबिन्दवस्तेषु लग्नः संसक्तः सन्; लोकानां कर्णोत्पलानि आजिघ्रन् तद्गन्धं गृह्णन्निव। अत्र मकरन्दमधुशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतावपि परं मकरन्दशब्दस्य किञ्जल्कार्थत्वेऽवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः क्रियोत्प्रेक्षया सङ्कीर्य्यते। "मकरन्दः (पुं)...किञ्जल्के क्ली" इति शब्दकल्पद्रुमः।

(ढ) मदेति। मदकलानां मदमत्तानां करिणां कर्णतालाभ्यां तालवृन्तवद्विशालकर्णाभ्यां यत्ताडन प्रहारस्तस्मात् त्रस्तो भीत इव सन्, कर्णयोः शङ्खानां ललाटास्थ्नाञ्च उदरविवराणि अभ्यन्तरच्छिद्राणि विशन् प्रविशन्। क्रियोत्प्रेक्षा।

সমূহের ন্যায় হস্তিগণের মদধারাতে সংযুক্ত হইতেছিল; (ঝ) সিংহের ন্যায় হস্তিগণের কুম্ভস্থলে অবস্থান করিতেছিল; (ঞ) বিজয়ী রাজা যেমন যুদ্ধে বিজিত শত্রুর পতাকা সকল গ্রহণ করেন, সেই ধূলিসমূহও তেমন রথের পতাকা সকল গ্রহণ (স্পর্শ) করিতেছিল; (ট) বার্দ্ধক্যের ন্যায় লোকের মস্তক শুভ্র করিতেছিল; (ঠ) লোকের নয়ন-লোমের অগ্রে থাকিয়া যেন তাহাদের দৃষ্টি সঙ্কুচিত করিতেছিল; (ড) কর্ণোৎপলের কেশর-স্থিত গাঢ় মধুবিন্দুতে সংলগ্ন হইয়া যেন সেই কর্ণোৎপলগুলির আঘ্রাণ করিতেছিল; (ঢ) মদমত্ত হস্তিগণের বৃহৎ কর্ণের তাড়নের ভয়েই যেন তাহাদের কর্ণ ও ললাটাস্থির ভিতরের ছিদ্রে

---

(१) पताका। (२)...बिन्दुलग्नः। (३) आविशन्। (४) करिकर्ण...।

पति-मुकुटमणि-भङ्ग-(१) मकरिकाभिः, (ण) अभ्यर्च्यमान इव तुरग-मुख-विक्षेप-विप्रुतैः फेन-पल्लव-कुसुम-स्तवकैः, (त) अनुगम्यमान इव मत्त-गज-घटा-कुम्भ-भित्ति-सम्भवेन धातुधूलिवलयेन, (थ) आलिङ्ग्यमान इव चलच्चामर-कलापविधुतेन (२) पटवासपांशुना, (द) प्रोत्साह्यमान इव (३) नरपति-शेखर-सहस्र-परिच्युतैः कुसुमकेशररजोभिः, (ध) उत्पातराहुरिव दिवसकर-मण्डलमकाण्ड एव पिबन्, (न) नृप-प्रस्थान-मङ्गल-प्रतिसर-वलय-मालिकासु

(ण) पीयेति। उन्मुखीभिः ऊर्द्ध्ववदनाभिः, अवनिपतीनां राज्ञां मुकुटेषु याः मणिभङ्गमकरिकाः रत्नखण्डनिर्म्मिता मकराकाराङ्गास्ताभिः पीयमान इव, तदभ्यन्तरगतत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) अभ्यर्च्येति। तुरगाणां मुखविक्षेपेण विप्रुतैर्विक्षिप्तैः, फेनपल्लवाः विस्तृतफेना एव कुसुमस्तवकास्तैः, अभ्यर्च्यमानः पूज्यमान इव, तदुपरि पतनादिति भावः। अत्र निरङ्गरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षा।

(थ) अन्विति। मत्तगजघटायाः कुम्भभित्तेः सम्भवति प्रसरतीति तेन, धातुधूलिवलयेन गैरिकादि-रेणुमण्डलेन, अनुगम्यमान इव, तस्यापि धूल्यनुसरणादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(द) आलिङ्ग्येति। चलतां स्पन्दमानानां राज्ञां समीपे भृत्यैरान्दोलितानामित्यर्थः चामराणां कलापेन समूहेन विधुतः सञ्चालितस्तेन, पटवासपांशुना पिष्टातकरेणुना आलिङ्ग्यमान इव, परस्परसंयोगादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ध) प्रोत्साह्येति। नरपतीनां शेखरसहस्रात् शिरोवेष्टनमालासमूहात् परिच्युतैः कुसुमकेशररजोभिः पुष्पकिञ्जल्कपरागैः, प्रोत्साह्यमानः प्रसर्तुं प्रकृष्टसुधर्मं नीयमान इव, तेषामपि प्रसरणेन पृष्ठवर्त्तित्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(न) उत्पातेति। उत्पातराहुः असमयोदयात् लोकानामुत्पातसूचको राहुः स इव, अकाण्ड एव असमय एव दिवसकरमण्डलं सूर्य्यबिम्बं पिबन् आरब्धन् ग्रसंश्च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(प) नृपेति। नृपाणां प्रस्थाने प्रयाणवेलायां ये मङ्गलप्रतिसराः माङ्गलिकहस्तसूत्राणि त एव वलयानि

প্রবেশ করিতেছিল; (ণ) রাজগণের মুকুটে মণিখণ্ডদ্বারা যে মকরাকার অংশ নির্ম্মিত ছিল, সেইগুলি উন্মুখ হইয়া যেন সেই ধূলিসমূহকে পান করিতেছিল; (ত) অশ্বগণের মুখবিক্ষেপে ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত বিস্তৃত ফেনরূপ পুষ্পগুচ্ছদ্বারা সেই ধূলি যেন পূজিত হইতেছিল; (থ) মদমত্ত হস্তিগণের কুম্ভস্থল হইতে নির্গত গৈরিকাদিধাতুর রেণুগুলি যেন সেই ধূলিসমূহের অনুগমন করিতেছিল; (দ) হস্তীর কুম্ভস্থিত আবীরের রেণুগুলি, আন্দোলিত চামর সমূহদ্বারা সঞ্চালিত হইয়া সেই ধূলিসমূহকে যেন আলিঙ্গন করিতেছিল; (ধ) রাজগণের মস্তক-মালা হইতে নির্গত পুষ্পের রেণুসকল, সেই ধূলিগুলিকে যেন বিস্তৃত হইয়া উড়িবার জন্য উৎসাহিত করিতেছিল; (ন) সেই ধূলিসমূহ, ঔৎপাতিক রাহুর ন্যায় অসময়েই সূর্য্যমণ্ডলকে গ্রাস করিতেছিল; (প) যাত্রা করিবার সময়ে রাজগণ হস্তে যে মাঙ্গলিক সূত্র বন্ধন

---

(१)...मणिपणभङ्ग...। (२)...विधूतेन, (३) प्रसाह्यमानः, प्रोत्साह्यमानः।

(१) गोरोचनाचूर्णायमानः, (प) क्रकच-कृत-चन्दन-क्षोद-धूसरो रेणुवृत्
पपात (फ)। अपरिमाण-बल-संघट्ट-समुपचीयमानश्च शनैः शनैः संहरन्निव विश्वमशेषं, अकाल-काल-मेघ-पटल-मेदुरो विस्तारमुपगन्तुमारेभे। (ब)

तेन च क्रमेणोपचीयमानबहलमूर्त्तिना दिग्विजयमङ्गलध्वजेन, रिपु-कुल-कमल-प्रलय-नीहारेण, राजलक्ष्मी-विलास-पटवासचूर्णेन, अस्थितातपत्र पुण्डरीक-षण्ड-तुषारेण, (२) सेनाभर (३) पीड़ित महीतल-मूर्च्छान्धकारेण, चलद्बल-(४)

तेषां मालिकासु राजिषु, गोरोचनाचूर्णायमानः गोरोचनारेणुवदाचरन् दृश्यमान इत्यर्थः। अत्र क्यङ्गतोपमालङ्कारः।

(फ) क्रकचेति। क्रकचेन करपत्रेण कृतच्छेदनवेलायां विहितो यश्चन्दनक्षोदः चन्दनतरुकणस्तद्वत् धूसरः, रेणुर्भूतलधूलिः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ब) अपरीति। किञ्च अपरिमाणबलस्य असंख्यसैन्यस्य संघट्टेन पदसम्मर्द्देन समुपचीयमानो वर्द्धमानः, अतएव अशेषं विश्वं सर्वं जगत् शनैः शनैः, संहरन्निव व्याप्त्या सङ्कोचयन्निव, अकाले यत् कालं कृष्णवर्णं मेघपटलं तद्वन्मेदुरः सान्द्रः, स रेणुरिति शेषः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(भ) तेनेति। किञ्च, तेन रजसा त्रिभुवनमलङ्कृत इत्यन्वयः। अत्र तृतीयैकवचनान्तपदानि रजसेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। उपचीयमाना वर्द्धमाना बहला विशाला मूर्त्तिर्यस्य तेन। अतएव दिग्विजयस्य मङ्गलध्वजेन माङ्गलिककेतुदण्डस्वरूपेण, तद्वदुत्थानादिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। रिपुकुलान्येव कमलानि पद्मानि तेषां प्रलये विनाशे नीहारेण तुषारस्वरूपेण, तुषारपातेन पद्मानामिव तन्निपातेन रिपुकुलानां विनाशसूचनादिति भावः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। राजलक्ष्म्या विलासस्य वेशविन्यासस्य पटवासचूर्णं पिष्टातकरेणुः फल्गुरिति यावत् तेन। वीरभोग्या हि राजलक्ष्मीर्वीरैरभरोत्थितेनैव रेणुनात्मानमलङ्करोतीति भावः। अत्र रजसि पटवासचूर्णत्वारोपः शाब्दः, राजलक्ष्म्यां विलासिस्त्रीत्वारोपस्तु आर्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकमलङ्कारः। निरङ्गरूपकमिति केचित् अस्थितानां शत्रूणां आतपत्राणि छत्राण्येव पुण्डरीकाणि श्वेतपद्मानि तेषां षण्डस्य समूहस्य तुषारो हिमं तेन। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। रिपुकुलेत्यादिना विनाशकत्वेन हिमत्वारोपः, अत्र तु आवरकत्वेनेति भेदः। सेनाया भरेण

করিয়াছিলেন, তাহার উপরে সেই ধূলিসমূহকে গোরোচনা চূর্ণের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ফ) এবং করাত দিয়া চন্দনগাছ কাটিবার সময় যে গুঁড়ো বাহির হয়, তাহার মত ধূসরবর্ণ সেই ধূলোগুলি উড়িতে লাগিল। (ব) অকালসম্ভূত কৃষ্ণবর্ণ মেঘসমূহের ন্যায় ঘনীভূত সেই ধূলিসমূহ, অসংখ্য সৈন্যগণের পদসংঘর্ষে বৃদ্ধি পাইয়া, ধীরে ধীরে সমগ্র ভূমণ্ডলকেই যেন সঙ্কুচিত করিতে করিতে ক্রমে বিস্তার পাইতে আরম্ভ করিল।

(ভ) এবং সেই ধূলিসমূহের বিশালমূর্ত্তি ক্রমে বৃদ্ধি পাইতে লাগিলে সেগুলিকে দিগ্বিজয়ের মাঙ্গলিকধ্বজস্বরূপ দেখা যাইতে লাগিল; আর সেগুলি শত্রুগণরূপ পদ্মবনের

---

(१)…प्रतिसरमालिकासु। (२)…खण्डमतुषारेण। (३) सैन्यभर…। (४) चलद्बलबल…।

बल-जलद-काल-कदम्ब-कुसुमोद्गमेन, दिवसकर-कर-(१) कमल-वनोद्दलन-द्विपयूथेन, गगन-महीतल-प्लावन-प्रलय-पयोधि-पूरेण, त्रिभुवन-लक्ष्मी-शिरोऽवगुण्ठन-पटेन, (म) महावराह-केशर-निकर-कर्बुरेण, प्रलयानल-धूम-राजि-मांसलेन, (य) पातालतलादिवोत्तिष्ठता, चरणेभ्य इव निर्गच्छता, लोचनेभ्य इव निष्पतता, दिग्भ्य इवागच्छता, नभस्तलादिव पतता, पवनादिवोल्लसता, रविकिरणेभ्य इव सम्भवता, (र) अनपहृतचेतनेन निद्रागमेन, अनवगणित-

पीड़ितस्य महीतलस्य मूर्च्छा मोहस्तस्य अन्धकारस्तिमिरं तेन। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। चलत् बलं सैन्यमेव जलदकालः प्रावृट् तस्य कदम्बकुसुमोद्गमेन विषमत्वात्। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। दिवसकरस्य सूर्य्यस्य कराः किरणा एव कमलवनानि तेषां उद्दलने विनाशने द्विपयूथं हस्तिसमूहस्तेन। द्विपयूथं यथा कमलवनानि विनाशयति तथासौ रजोराशिरपि सूर्य्यकिरणानदृश्यतानयनेन विनाशयति स्मेति भावः। अत्र पूर्ववदलङ्कारः। गगनमेव महीतलं तस्य प्लावने प्रलयपयोधिपूरस्तेन। अत्रापि पूर्ववदेवालङ्कारः। त्रिभुवनलक्ष्म्या अवगुण्ठनपटस्तेन। अत्र त्रिभुवनशोभायां स्त्रीत्वारोप आर्थः, रजोराशौ तदवगुण्ठनपटत्वारोपस्तु शाब्द इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकमलङ्कारः। अत्रापि निरङ्गं रूपकमिति केचित्।

(म) महेति। महावराहस्य नारायणतृतीयावतारस्य केशरनिकरवत् कर्बुरेण विचित्रवर्णेन। प्रलयानलस्य धूमराजिवत् मांसलेन परिपुष्टेन। अनयोः प्रत्येकं लुप्तोपमालङ्कारः।

(य) पातालेति। पातालतलादुत्तिष्ठतेव मूलादर्शनात्, सैन्यानां चरणेभ्यो निर्गच्छतेव प्रत्येकचरणलग्नत्वात्, सैनिकानां लोचनेभ्यो निष्पततेव तत्रापि लग्नत्वात्, दिग्भ्य आगच्छतेव तासु सर्वास्वेव दर्शनात्, नभस्तलात् पततेव तत्र दृष्टिपथं यावद्दर्शनात्, पवनादुल्लसता वायुतः प्रादुर्भवतेव सर्व्ववायुप्रवहणात्, तथा रविकिरणेभ्यः सम्भवतेव तत्रापि सर्व्वत्र दर्शनात्। एषु प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च सर्वतोविसारित्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(र) अनपेति। अनपहृता न विलोपिता चेतना चैतन्यं येन तेन, निद्रागमेन निद्रावेशस्वरूपेण।

তুষার, রাজলক্ষ্মীর বেশবিন্যাসের আবীর, শত্রুগণের ছত্ররূপ পদ্মবনের হিম, সৈন্যগণের পদভরে পরিপীড়িত মহীতলের মূর্চ্ছার অন্ধকার, প্রচলিত সৈন্যরূপ বর্ষাকালের কদম্বপুষ্প, সূর্য্যকিরণরূপ পদ্মবন দলিত করিতে হস্তিসমূহ, আকাশরূপ মহীতল প্লাবন করিতে প্রলয়কালীন সমুদ্রের প্রবাহ এবং ত্রিভুবনলক্ষ্মীর মস্তকাবগুণ্ঠন করিবার বস্ত্রস্বরূপ বিরাজ করিতেছিল; (ম) আর সেই ধূলিসমূহ আদিবরাহের কেশর-সমূহের ন্যায় বিচিত্রবর্ণ এবং প্রলয়াগ্নির ধূমসমূহের ন্যায় পরিপুষ্ট দেখা যাইতেছিল; (য) আর সেই ধূলিগুলি পাতাল হইতে যেন উঠিতেছিল, সৈন্যগণের চরণ হইতে যেন নির্গত হইতেছিল, তাহাদের নয়ন হইতে যেন নিঃসৃত হইতেছিল, সকল দিক্ হইতে যেন আসিতেছিল, আকাশ হইতে যেন পড়িতেছিল, বায়ু হইতে যেন আবির্ভূত হইতেছিল এবং সূর্য্যের কিরণ হইতে যেন উৎপন্ন হইতেছিল; (র) এবং সেই

(१) दिवसकरकमल, दिवसकरकिरणकमल...।

सूर्य्येण (१) अन्धकारेण, अधर्म्मकालोपस्थितेन भूमिगृहेण, अनुदिततारागण-निवहेन बहुलनिशाप्रदोषेण, अपतितसलिलेन (२) जलधरसमयेन, अभ्रान्त-भुजङ्गेन (३) रसातलेन, (र) हरिचरणेनेव संवर्द्धमानेन त्रिभुवनमलङ्घ्यत रजसा। (ल)

विकचकुवलयवनमिव नवोदकेन गगनतलमवष्टभ्यमानमलक्ष्यत क्षीरोद-

रजसो नेत्रनिमीलनहेतुतया निद्रासाम्यं अथ च चेतनानपहरणात्ततो वैशिष्ट्यमिति भावः। अतएवात्र अधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः। न अवगणितः अस्तगमनादवज्ञातः सूर्य्यो येन तेन, अन्धकारेण तिमिररूपेण। सर्वपदार्थावरणहेतुत्वादन्धकारसाम्यं अथ च सति सूर्य्ये प्रादुर्भावात्ततो वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। अधर्म्मकाले अग्रीष्मकाले उपस्थितेन भूमिगृहेण भूगर्भान्तर्गतगृहस्वरूपेण। ग्रीष्मकाले हि लोकैः रविकिरणसन्ताप-शान्तये भूगर्भगृहमाश्रीयते, रविकिरणनिवारणहेतुतया भूगर्भगृहसाम्यं अथ च अग्रीष्मकाले उपस्थितत्वात्ततो वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। न उदितस्तारागणानां निवहः समूहो यत्र तेन, बहुलनिशाप्रदोषेण कृष्णपक्ष-रजनीमुखस्वरूपेण। निविडान्धकारोपगमात् कृष्णपक्षरजनीमुखसाम्यं तारागणानुदयाच्च तद्वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। ताराणामतिप्राचुर्य्यद्योतनार्थं गणनिवहेति पर्य्यायशब्दद्वयोपादानम्। न पतितं सलिलं वर्षाजलं यत्र तेन, जलधरसमयेन वर्षाकालेन। सूर्य्यावरणाद्वर्षाकालसाम्यं वृष्टिजलाभावाच्च तद्वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। न भ्रान्ता विचरिताः भुजङ्गाः सर्पा यत्र तेन, रसातलेन पातालस्वरूपेण। गाढान्धकारप्रादुर्भावात् पातालसाम्यं सर्पविचरणाभावाच्च ततो वैषम्यमिति भावः। पूर्ववदेवालङ्कारः।

(ल) हरीति। हरेर्वामनस्य चरणेनेव संवर्द्धमानेन रजसा भूरेणुना त्रिभुवनं अलङ्घ्यत व्याप्यत। अत्र त्रिभुवनलङ्घनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः पूर्णोपमा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(ब) विकचेति। क्षीरोदस्य सागरस्य फेनवत् पाण्डुना, नवोदकेन नूतनवृष्टिजलेन, विकचकुवलय-वनमिव प्रस्फुटितनीलोत्पलवनमिव, क्षीरोदफेनपाण्डुना क्षितिक्षोदेन भूरेणुना, गगनतलं अवष्टभ्यमानं आश्रीयमाणं व्याप्यमानं, अलक्ष्यत लोकैरिति शेषः। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा श्रौत्युपमालङ्कारः।

ধূলিসমূহ সকলেরই নিদ্রাস্বরূপ হইয়াছিল বটে, কিন্তু কাহারও চৈতন্য হরণ করে নাই; অন্ধকারস্বরূপ প্রাদুর্ভূত হইয়াছিল বটে, কিন্তু সূর্য্যাস্তের পর প্রাদুর্ভূত হয় নাই; ভূতলের অভ্যন্তরস্থিত গৃহস্বরূপ হইয়াছিল বটে, কিন্তু গ্রীষ্মকালে উপস্থিত হয় নাই; কৃষ্ণপক্ষের প্রদোষকালস্বরূপ দেখা যাইতেছিল বটে, কিন্তু নক্ষত্রসমূহ উঠে নাই; বর্ষাকালস্বরূপ হইয়াছিল বটে, কিন্তু বৃষ্টির জল পড়ে নাই; পাতালস্বরূপ বোধ হইতেছিল বটে, কিন্তু সর্পগণ ভ্রমণ করে নাই; (ল) এইরূপ সেই ধূলিসমূহ, বামনদেবের চরণের ন্যায় বৃদ্ধি পাইতে পাইতে ত্রিভুবন ব্যাপ্ত করিয়াছিল।

(ব) নূতন বৃষ্টির জলে যেমন প্রস্ফুটিত নীলোৎপলবন আচ্ছন্ন করে, সেইরূপ ক্ষীরোদ সাগরের ফেনের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ভূতলের ধূলিসমূহ গগনতল আচ্ছন্ন করিয়াছে বলিয়া লোকে

(१) अनपहृतलोचनमानवगणितसूर्य्येण। (२) पतितसलिलेन। (३)...भुजङ्गमेन।

फेनपाण्डुना (१) क्षितिक्षोदेन (व)। बहुलरजोधूसरितमशिशिरकिरण-बिम्बमवचूलचामरमिव निष्प्रभमभवत् (श)। दुकूलपट-(२) धवला कदलिकेव कलुषतामाजगाम गगनापगा (ष)। नरपालबलभरमतिगुरुमसहमाना (३) पुनरिव भारावतारणार्थममरलोकमारुरोह रजोमिषेण (४) मही (स)। निःशेष-निपीतातपं (५) अन्तर्दह्यमानमिव जलधिजलेषु धूसरित-रवि-रथ-ध्वज-पटमपतदवनिरजः (ह)। मुहूर्त्तेन च गर्भवासमिव, संहारसागरजलमिव,

(श) बहुलेति। बहुलैः रजोभिर्धूलिभिः धूसरितं धूम्रवर्णीकृतं, अशिशिरकिरणबिम्बं सूर्य्यमण्डलं, अवचूलचामरमिव ध्वजाग्रलम्बितवस्त्रखण्डं चामरमिव। अत्रोपमालङ्कारः।

(ष) दुकूलेति। दुकूलपटवत् सूक्ष्मवसनवत् धवला, गगनापगा स्वर्नदी मन्दाकिनी, कदलिका तदीयपताकेव, कलुषतामाविलतां आजगाम प्राप, तद्रजःसम्पातादिति भावः। अत्र मन्दाकिन्याः कालुष्यप्राप्त्य-सम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारो लुप्तोपमाश्रौतोपमाभ्यां सङ्कीर्य्यते।

(स) नरेति। अतिगुरुं अत्यन्तविशालं नरपालबलभरं राजसैन्यभारं असहमाना वोढ़मशक्नुवती मही पृथिवी, भारावतारणार्थं रजोमिषेण धूलिच्छलेन, पुनरमरलोकं स्वर्गं आरुरोहेव, रावणकंसादिभाराव-तारणार्थं पूर्वारोहणवदिति भावः। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) निःशेषेति। धूसरितो धूम्रवर्णीकृतो रविरथस्य ध्वजपटः पताका येन तत्, तथा निःशेषेण साकल्येन निपीतो यस्त आतपः सूर्य्यालोको येन तत्, अत एवातपपानात् अन्तर्दह्यमानमिव अन्तरे सन्तप्य-मानमिव सत्, अवनिरजो भूतलधूलिः, जलधिजलेषु अपतत्, सन्तप्तस्य शीतक्रियायाः शान्तिकरत्वादिति भावः। अत्र तद्धूलेर्जलधिजलेषु पतनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(क्ष) मुहूर्त्तेनेति। किञ्च पृथिवी मुहूर्त्तेन क्षणेनैव गर्भवासं मातुर्गर्भाशयं विवेशेव। इत्यं सर्वत्रान्वयः

দেখিতেছিল। (শ) সেই ধূলিরাশিতে ধূসরবর্ণ সূর্য্যমণ্ডল, পতাকাবদ্ধ চামরের ন্যায় প্রভাশূন্য হইয়া গেল। (ষ) সূক্ষ্ম বস্ত্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মন্দাকিনীর জল, সেই সৈন্যগণের পতাকার ন্যায় ধূলিরাশিতে মলিনতা প্রাপ্ত হইল (স) রাজসৈন্যগণের গুরুতর ভার বহন করিতে অসমর্থ হইয়া পৃথিবী যেন, সেই ভার নামাইবার জন্য ধূলিচ্ছলে পুনরায় স্বর্গে আরোহণ করিতে লাগিল। (হ) সেই ধূলিরাশি সূর্য্য রথের পতাকা ধূসরবর্ণ করিয়া সূর্য্যের সমস্ত কিরণ পান করিয়াছিল বলিয়া অন্তরে যেন দগ্ধ হইতেছিল, তাই সমুদ্রের জলে যাইয়া পড়িতেছিল। (ক্ষ) এবং ক্ষণকালমধ্যে পৃথিবী যেন মাতার গর্ভে, প্রলয়কালীন

(१) क्षीरोदपाण्डुना। (२) दुकूलपट...।
(३)...भरमसहमाना। (४) रजोमिषेन। (५)...पीतातपं।

कृतान्तजठरमिव, महाकालमुखमिव, नारायणोदरमिव, ब्रह्माण्डमिव विवेश पृथिवी (ख)। मृन्मय इव बभूव दिवसः पुस्तमय्य इव (१) चकाशिरे ककुभः, (२) रेणुरूपेणेव परिणतमम्बरतलम्, (३) एकमहाभूतमयमिव त्रैलोक्यमासीत्। (क)

अथ निजमदोष्मसन्तप्तानां दन्तिनां (४) दिशि दिशि करविवरविनिःसृतैः (५) चरद्भिः क्षीरोद क्षोद-धवलैः (६) शीकरासारैः कर्णपल्लव-प्रहति-विसृतेन (७) च विसर्पता दानजलविन्दुदुर्दिनेन, हेषारवविप्रकीर्णैश्च वाजिनां लालाजल-

तद्रजसान्धकारितत्वादिति च भावः। संहारे प्रलयसमये यः सागरस्तज्जलं। ब्रह्माण्डं ब्रह्मकोषं। अत्र प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) मृन्मय इति। दिवसो मृन्मयो मृद्विकार इव बभूव, ककुभो दिशः पुस्तमय्यो धूलिलेपविकारा इव सत्यः चकाशिरे विरेजिरे। अनयोः प्रत्येकं गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। "पुस्तं (क्ली) लेप्यादिशिल्पकर्म...।" इति शब्दकल्पद्रुमः। अम्बरतलं कर्त्तृ, रेणुरूपेण परिणतमिव, अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा त्रैलोक्यं कर्त्तृ, एकमहाभूतमयमिव केवलक्षितिमयमिव आसीत्, अन्येषां जलाकाशादीनां धूलिभिस्तिरोहितत्वादिति भावः। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

अहो धूलिवर्णनमपहाय यदि तु सेनायाः प्रत्यङ्गमवर्णयिष्यन् तदा खल्वितोऽपि महामनोरममभविष्यत्।

(ख) अथेति। निजमदोष्मणा स्वकीयतेजस्तापेन सन्तप्तानां, दन्तिनां हस्तिनां। करविवरविनिःसृतैः, शुण्डाच्छिद्रनिर्गतैः, चरद्भिर्गलद्भिः, क्षीरोदक्षोदधवलैः क्षीरोदसागरजलविन्दुवत् शुभ्रैः शीकरासारैर्जलविन्दुवृष्टिभिः, तथा, कर्णपल्लवाभ्यां विस्तृतकर्णाभ्यां प्रहत्या ताड़नेन विसृतं विस्तृतं तेन, विसर्पता प्रसरता, दानजलविन्दूनां दुर्दिनेन वृष्ट्या; तथा हेषारवैर्विप्रकीर्णानि विक्षिप्तानि तैः, वाजिनामश्वानां ये लालाजललवा मुखनिर्गतजलविन्दवस्तेषां जालकैः समूहैश्च, रजसि तस्मिन् धूलिराशौ उपशमिते निवारिते सति। अत्र तैस्तादृशरजसामुपशमनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। तथा दिक्षु, पुनरपि जात आलोकः प्रकाशो यासु तासु

সমুদ্রের জলে, যমের উদরে, মহাকালের মুখে, নারায়ণের উদরে এবং ব্রহ্ম-কোষের ভিতরে প্রবেশ করিল। (ক) এবং দিনটা যেন মৃত্তিকাময় হইয়া গেল; দিক্‌সমূহ যেন মৃত্তিকালেপময় হইয়া দীপ্তি পাইতে লাগিল; আকাশ যেন ধূলিরূপে পরিণত হইল এবং ত্রিভুবন যেন কেবল পৃথিবীময় হইয়া গেল।

(খ) তদনন্তর স্বকীয় তেজের উত্তাপে উত্তপ্ত হস্তিগণের শুণ্ড হইতে, ক্ষীরোদসাগরের জলবিন্দুর ন্যায় শুভ্রবর্ণ জলবিন্দুসমূহ নির্গত হইয়া সকল দিকে পড়িতে লাগিল; বিশাল কর্ণযুগলের তাড়নে বিক্ষিপ্ত হইয়া মদজলবৃষ্টি, সকল দিকে ছড়াইয়া যাইতেছিল; আবার অশ্বগণের মুখ হইতে হ্রেষারবে বিক্ষিপ্ত হইয়া লালাময় জলবিন্দুসমূহ নির্গত হইতে লাগিল;

(१) प्रस्तमय्य इव। (२) दिशः। (३) अम्बरं। (४) क्वचित् दन्तिनामिति पाठो नास्ति।
(५)...निःसृतैः। (६) क्षीरोदधवलैः। (७)...विप्रुतेन।

लव-जालकैरुपशमिते रजसि, पुनरपि जातालोकासु (१) दिक्षु, सागरसलिलादिव (२) उन्मज्जमानमालोक्य तदपरिमाणं बलमुपजातविस्मयः सर्वतो दत्तदृष्टिर्वैशम्पायनश्चन्द्रापीडमाबभाषे। (ख)

“युवराज! किं न जितं (३) देवेन महाराजाधिराजेन तारापीडेन यज्जेष्यसि; का दिशो न वशीकृताः या वशीकरिष्यसि; कानि दुर्गाणि न प्रसाधितानि यानि प्रसाधयिष्यसि; कानि द्वीपान्तराणि नात्मीकृतानि यान्यात्मीकरिष्यसि; कानि रत्नानि नोपार्जितानि यान्युपार्जयिष्यसि; (ग) के वा न प्रणता राजानः, कैर्न विरचितः शिरसि बाल-कमल-कुड्मल-कोमलः सेवाञ्जलिः, कैर्न (४) मसृणीकृताः प्रतिबद्धहेमपट्टैर्ललाटैः सभाभुवः, कैर्न घृष्टाः पादपीठे चूडामणयः, कैर्न प्रतिपन्ना वेत्रयष्टयः, (५) कैर्नोद्धूतानि (६) चामराणि, कैर्नोद्धा-

---

सतीषु, तत् अपरिमाणं असंख्यं बलं सैन्यं, सागरसलिलात् उन्मज्ज उत्थितमिव आलोक्य, उपजातविस्मयो वैशम्पायनः, सर्वतो दत्तदृष्टिः सन् चन्द्रापीडमाबभाषे इत्यन्वयः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) युवेति। प्रसाधितानि जयसाधनेनात्मीकृतानि। प्रसाधयिष्यसि जयसाधनेनात्मीकरिष्यसि। आत्मीकृतानि “सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः।” इत्यादिमनुवचनात् जयेन स्वीकृतानि स्वत्वास्पदीकृतानीत्यर्थः।

(घ) के इति। न प्रणताः, देवतारापीडस्य भयादिति भावः। अपि तु सर्व एव प्रणता इत्यर्थः। एवमन्यत्रापि। एषु प्रश्नवाक्येषु अर्थापत्तिरलङ्कारः। बालं नूतनं यत् कमलकुड्मलं पद्ममुकुलं तद्वत् कोमलः, सेवा उपासना तदर्थमञ्जलिः सेवाञ्जलिः। अत्रार्थापत्तिलुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। प्रतिबद्धः अलङ्करणाय योजितः हेमपट्टः स्वर्णफलकं येषु तादृशैर्ललाटैः सभाभुवः, न मसृणीकृताः श्लक्ष्णीकृताः। प्रतिपन्ना प्रतिहारिभावेन गृहीताः। उद्धूतानि आन्दोलितानि। किरीटेषु यानि पत्राणि पत्राकाराण्या-

---

তাহাতে সেই ধূলিরাশি নিবারিত হইলে এবং পুনরায় সকল দিকে আলোক প্রকাশ পাইলে, সেই অসংখ্য সৈন্য যেন সমুদ্রের জল হইতে উঠিল; এইরূপ দেখিয়া বৈশম্পায়নের বিস্ময় জন্মিল, তখন তিনি সকল দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া চন্দ্রাপীড়কে বলিতে লাগিলেন।

(গ) “যুবরাজ! মহারাজাধিরাজ তারাপীড় কি জয় করেন নাই, যাহা তুমি জয় করিবে; কোন্ দিক্ অধিকার করেন নাই, যাহা তুমি অধিকার করিবে; কোন্ দুর্গ আয়ত্ত করেন নাই, যাহা তুমি আয়ত্ত করিবে; কোন্ দ্বীপান্তর আত্মসাৎ করেন নাই, যাহা তুমি আত্মসাৎ করিবে; কোন্ রত্ন উপার্জন করেন নাই, যাহা তুমি উপার্জন করিবে; (ঘ) এবং তাঁহার প্রতাপে কোন্ কোন্ রাজা বা অবনত হ'ন নাই, কোন্ কোন্ রাজা বা আপনার মস্তকে

---

(१) पुनरुपजातालोकासु। (२) सागरादिव। (३) किमनर्जितं किं किमजितं। (४) कैश्च।
(५) वेत्रलताः। (६) उद्धृतानि।

রিতা জয়শব্দাঃ, কৈষাং ন পীতাঃ কিরীটপত্রমকরৈঃ সলিলধারা ইব নির্ম্মলা-স্তচ্চরণ-(১) নখ-ময়ূখ-রাজয়ঃ (ঘ)। এতে হি (২) চতুরুদধিজলাবগাহ-দুর্ল্ললিত-বল-মদাবলিপ্তা দশরথ-ভগীরথ-ভরত-দিলীপালর্ক-মান্ধাতৃপ্রতিমাঃ কুলাভিমানশালিনঃ সোমপায়িনো মূর্দ্ধাভিষিক্তাঃ পৃথিব্যাং সর্ব্বপার্থিবা রক্ষা-ভূতিমিবাভিষেক-পয়ঃ-পাত-পূতৈশ্চূড়ামণিপল্লবৈরুদ্বহন্তি মঙ্গল্যাং ভবচ্চরণরজঃ-

---

তানি মকরাঃ স্বনামপ্রসিদ্ধা জলজন্তুবিশেষা ইব তৈঃ, সলিলধারা ইব, নির্ম্মলাঃ, তস্য তারাপীড়স্য চরণনখানাং ময়ূখরাজয়ঃ কিরণশ্রেণয়ঃ, ন পীতাঃ নমস্কারকালে ন গ্রস্তাঃ, অপি তু সর্ব্বেষামেবেত্যর্থঃ। অত্র লুপ্তোপমা শ্রৌতোপমা অর্থাপত্তিশ্চেত্যেতেষামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ঙ) দেবতারাপীড়েন বিজিতা রাজানো ভবন্তমপি প্রণিপতন্তীত্যাহ এত ইতি। হি তথাহি। চতুর্ণাং উদধীনাং সমুদ্রাণাং জলেষু যঃ অবগাহঃ দ্বীপান্তরবিজয়গমনার্থমবতরণং তদেব দুর্ল্ললিতং হঠকারিতা যেষাং তেষাং তথোক্তানাং বলানাং সৈন্যানাং মদেন দর্পেণ অবলিপ্তা দর্পিতাঃ। দশরথাদয়ঃ প্রসিদ্ধাঃ, অলর্কো নাম দানশৌণ্ডঃ কশ্চিদ্রাজর্ষির্ম্মহাভারতাশ্বমেধপর্ব্বণি প্রসিদ্ধঃ, তৎপ্রতিমাস্তত্তুল্যাঃ। কুলাভিমানশালিনো মহাকুলোৎপন্নত্বাহঙ্কারবিশিষ্টাঃ। সোমপায়িনঃ সোমযাগং বিধায় সোমরসপায়িনো নিয়তযজ্ঞানুষ্ঠায়িন ইত্যর্থঃ। মূর্দ্ধসু অভিষিক্তা রাজ্যপ্রাপ্তিকালে কৃতাভিষেকাঃ, পৃথিব্যাং সর্ব্বপার্থিবাঃ, অভিষেকপয়ঃপাতেন অভিষেকীয়-জলসম্পর্কেণ পূতৈঃ, চূড়ামণিপল্লবৈর্বিস্তৃতচূড়ামণিভিঃ, রক্ষাভূতিমিব রক্ষার্থকযজ্ঞীয়ভস্মেব, মঙ্গল্যাং কল্যাণকরীং, ভবতস্তব চরণয়োঃ রজঃসংহতিং ধূলিসমূহং উদ্বহন্তি নমস্কারকালে ধারয়ন্তি। অত্র তেষাং রাজ্ঞাং প্রাধান্যপ্রতিপাদনকার্য্যং প্রতি বহুতরকারণোপন্যাসাৎ সমুচ্চয়ঃ শ্রৌতোপমা চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

নূতন পদ্মকলিকার ন্যায় কোমল অঞ্জলিপুট স্থাপন করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা স্বর্ণ-কলকালঙ্কৃত নিজ নিজ ললাটদ্বারা (নমস্কার করিয়া করিয়া) সভার ভূমিতল মসৃণ (পালিস) করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা নমস্কার করিবার সময় মহারাজ তারাপীড়ের পাদপীঠে আপনাদের চূড়ামণি ঘর্ষণ করেন নাই; কোন্ রাজা বা (প্রতিহারীর ন্যায়) বেত্রযষ্টি ধারণ করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা চামর আন্দোলন করেন নাই; কোন্ কোন্ রাজা বা জয়শব্দ উচ্চারণ করেন নাই; এবং মকর যেমন সমুদ্রের জলধারা পান করে, সেইরূপ কোন্ কোন্ রাজারই বা মুকুটের স্বর্ণপত্র-নির্ম্মিত মকরাকার অংশগুলি, মহারাজ তারাপীড়ের চরণ-নখের নির্ম্মল কিরণশ্রেণী পান করে নাই। (ঙ) যে সৈন্যগণ অন্যান্য দ্বীপ জয় করিতে যাইবার নিমিত্ত চারি সমুদ্রের জলে অবগাহন করিয়া অত্যন্ত সাহসিকতা প্রকাশ করিয়াছে, সেই সৈন্যগণের গর্ব্বে গর্ব্বান্বিত এবং দশরথ, ভগীরথ, ভরত, দিলীপ, অলর্ক ও মান্ধাতার তুল্য গুণবান্, কুলগৌরবসম্পন্ন, সোমরসপায়ী ও রাজ্যে অভিষিক্ত পৃথিবীর এই সকল রাজগণ, অভিষেক-জল-সংস্পর্শে পবিত্র আপন আপন চূড়ামণিদ্বারা, যজ্ঞীয় রক্ষাভস্মের

---

(১) লম্বরণ...। (২) এতে হি তে।

संश्रतिम् (ङ)। एभिरियमादिपर्व्वतैरिवापरैर्धृता धरित्री, एतानि चाप्य मीषामाशाविततदशदिगन्तरालानि सैन्यानि भवन्तमुपासते (च)। तथाहि पश्य, (१) यस्यां यस्यां दिशि विक्षिप्यते चक्षुः, तस्यां तस्यां रसातलमिवोद्गिरति, वसुधेव सूते, ककुभ इव वमन्ति, गगनमिव वर्षति, दिवस इव सृजति बलानि (छ)। अपरिमितबलभराक्रान्ता मन्ये स्मरति महाभारत-समर-संक्षोभस्य (२) अद्य क्षितिः (ज)। एष शिखरदेशेषु (३) परिस्खलित-(४) मण्डलो ध्वजान् गणयन्निव कुतूहलाद्भ्रमति कदलिकावनान्तरेषु मयूख-

(च) एभिरिति। अपरैः प्रकृतभिन्नैः आदिपर्व्वतैर्महेन्द्रादिभिः कुलपर्व्वतैरिव एभिर्वर्णितपूर्व्वैः राजभिः, इयं धरित्री पृथिवी धृता धारिता रक्षिता च। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। आशाविततानि व्याप्तानि दशानां दिशां अन्तरालानि मध्यभागा यैस्तानि, एतानि दृश्यमानानि अमीषां राज्ञां सैन्यानि च भवन्तं उपासते दिग्विजयसाहाय्याय सहगमनेन सेवन्ते। एतदपि देवस्य तारापीड़स्यैव प्रभावादिति भावः।

(छ) तदेव दर्शयति तथाहीति। रसातलं पातालं कर्त्तृ, बलानि सैन्यानि उद्गिरतीव। सीमादर्शना-भावादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। एवमन्यत्रापि। वसुधा बलानि सूते प्रसवतीव। ककुभो दिशो बलानि वमन्तीव। गगनं कर्त्तृ, बलानि वर्षतीव। दिवसो बलानि सृजति उत्पादयतीव।

(ज) अपरीति। अपरिमितबलभराक्रान्ता क्षितिः, अद्य महाभारते ग्रन्थे व्याख्यातो यः समरः कुरु-पाण्डवयुद्धं स महाभारतसमरः, शाकपार्थिवादित्वान्मध्यपदलोपी समासः, तस्य संक्षोभः सम्मर्द्दस्तस्य स्मरति, इत्यहं मन्ये। तत्तुल्यभराक्रान्तत्वादिति भावः। अत्र मन्ये इत्युपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। संक्षोभ-स्येति "स्मृत्यर्थकर्म्मणो"ति कर्म्मणि षष्ठी।

(झ) एष इति। शिखरदेशेषु ध्वजानामेवोपरिभागेषु परिस्खलितं प्रतिबिम्बितत्वात् पतितं मण्डलं यस्य सः, एष मयूखमाली सूर्य्यः, कुतूहलात् गणयन्निव ध्वजानामेव संख्यां कुर्व्वन्निव, कदलिकावनान्तरेषु

न्याय मঙ্গলকর তোমার চরণ-ধূলিসমূহ বহন করিতেছেন। (চ) অপর কুলপর্ব্বতগণের ন্যায় এই রাজগণই এই পৃথিবীকে রক্ষা করিতেছেন এবং ইহাদের এই সৈন্যগণ সকল দিক্ ব্যাপ্ত করিয়া আজ তোমার সেবা করিতেছে। (ছ) তাহাই দেখ,—যে দিকে যে দিকে দৃষ্টিপাত করিবে, সেই সেই দিকেই 'পাতাল যেন সৈন্য উদ্গিরণ করিতেছে, পৃথিবী যেন সৈন্য প্রসব করিতেছে, দিক্‌সমূহ যেন সৈন্য বমন করিতেছে, আকাশ যেন সৈন্য বর্ষা করিতেছে এবং দিনেই যেন সৈন্য সৃষ্টি করিতেছে' বলিয়া বোধ হইবে। (জ) আমি মনে করি—আজ পৃথিবী, তোমার অসংখ্য সৈন্যের ভারে আক্রান্ত হইয়া মহাভারতবর্ণিত সেই কুরুপাণ্ডবের যুদ্ধ-সঙ্ঘর্ষ স্মরণ করিতেছে। (ঝ) ধ্বজসমূহের উপরিভাগে নিজের প্রতিবিম্ব পতিত হওয়ায় সূর্য্য যেন কৌতুকবশতঃ গণনা করিয়া করিয়া পতাকাসমূহের অভ্যন্তরে ধ্বজগুলি বমন

(१) पश्य पश्य। (२) महाभारतसंक्षोभस्य, महाभारतस्य समरसंक्षोभस्य।
(३) मणिमयकाष्ठशिखरदेशेषु। (४) स्खलित...।

माली (झ)। सर्वतश्च मदजलमुचां करिणामेलापरिमल-सुरभिणि वेणिका-वाहिनि मदवारिणि निरन्तरमग्ना (१) निपतित-(२) मधुकर-कुल-कलकल-कलिला (३) कालिन्दी-जल-कल्लोल-कलितेव (४) भाति भूतधात्री (ञ)। सैन्यभरसंक्षोभभयात् (५) सरित इव गगनतलं (६) उत्पतिता आच्छादयन्ति (७) एता दिक्चक्रवालमिन्दुधवला ध्वज-पङ्क्तयः (८) (ट)। सर्वथा चित्रं, यदद्य विघटित-सकल-कुल-शैल-सन्धि-बन्धा (९) सहस्रधा शकली-

---

पताकासमूहान्तरालेषु ध्वजान् स्वर्णवेष्टितोपरिभागान् कीर्तिम् वमति उद्गिरतीव। प्रत्येकध्वजोपरिभागे सूर्य-मण्डलस्य प्रतिबिम्बितत्वात् ते ध्वजाः सूर्यमुद्गीर्यमाणा इव भान्तीति सरलार्थः। अत्र प्रथमा वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा द्वितीया च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "कदली वैजयन्त्याञ्च रम्भायां हरिणान्तरे।" इत्यादि विश्वः।

(ञ) सर्वत इति। किञ्च सर्वतः समन्तात्, मदजलमुचां दानजलस्राविणां करिणां, एलायाश्चन्द्र-बालायाः परिमलवत् सौरभवत् सुरभिणि सौरभवति वेणिकावाहिनि प्रवाहेण सञ्चारिणि मदवारिणि, निरन्तरमग्ना निरवकाशं क्लिन्नेत्यर्थः, तथा निपतितस्य तन्मदजलोपरि गतस्य मधुकरकुलस्य भ्रमरसमूहस्य कलकलैः कोलाहलैः कलिला गहना दुष्प्रवेशा, भूतधात्री धरित्री, कालिन्दीजलस्य यमुनाजलस्य कल्लोलैः महातरङ्गैः कलिता व्याप्तेव सती भाति, करिणां मदजलप्रवाहस्य यमुनाजलतुल्यकृष्णवर्णत्वादिति भावः। अत्र एलेत्यत्र लुप्तोपमा, मदजले निरन्तरमग्नत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्ये-तेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। 'कलिलं गहनं समे।" इत्यमरः।

(ट) सैन्येति। सैन्यभरसंक्षोभभयात् गगनतलमुत्पतिता उड्डीनाः सरितो नद्य इव एता इन्दुधवला ध्वजपङ्क्तयः दिक्चक्रवालं दिङ्मण्डलं आच्छादयन्ति। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) सर्वथेति। चित्रमाश्चर्यम्, यदद्य धरित्री, बलभरेण विघटिता विश्लेषिताः सकलानां कुल-शैलानां सन्धिबन्धाः संयोगबन्धनानि यस्याः सा तादृशी सती, सहस्रधा न शकलीभवति न खण्डखण्डतां

করিতেছেন বলিয়া বোধ হইতেছে। (ঞ) এবং সকল দিকে মদস্রাবী হস্তিগণের, এলাচীর সৌরভের ন্যায় সৌরভযুক্ত মদজল প্রবাহিত হইতেছে, ভ্রমরগণ তাহার উপর পড়িয়া কোলাহল করিতেছে, পৃথিবী সেই মদজলে ঘনভাবে নিমগ্ন হইয়া যমুনার জলতরঙ্গে ব্যাপ্ত হইয়াই যেন বিরাজ করিতেছে। (ট) চন্দ্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ এই সকল ধ্বজসমূহ দিঙ্মণ্ডল আচ্ছাদন করিয়াছে, তাহাতে বোধ হইতেছে যে, কতকগুলি নদী, সৈন্যগণের পদভরে বেদনা পাইবার ভয়েই যেন আকাশে উঠিয়া অবস্থান করিতেছে। (ঠ) সর্ব্বপ্রকারে আশ্চর্য্যের বিষয় এই

---

(१) मदवारिणि मग्ना। (२) निरन्तरनिपतित...। (३)...कलिला, कलङ्ककालिका, ललिता।
(४) कलितेव, कवलितेव। (५) सैन्यसंक्षोभभयात्, धरणिमपहाय।
(६) गगनं। (७) संछादयन्ति। (८) विजयपङ्क्तयः। (९) शैलबन्धा।

भवति बलभरेण धरित्री, यद्वा बलभर-पीड़ित-वसुधा-धारण-विधुरा न चलन्ति (१) फणिनां पत्युः फणाभित्तयः।" (ठ)

इत्येवं वदत एव तस्य युवराजः समुच्छ्रितानेकतोरणां तृणमय-प्राकार-मन्दिर-सहस्र-सम्बाधां, (२) उन्नामित-धवल पट-मण्डप-शोभिनीं (३) आवास-भूमिमवाप (ड)। तस्याञ्चावतीर्य्य राजवत् सर्वाः क्रियाश्चकार। सर्वैश्च तैः समेत्य नरपतिभिरमात्यैश्च विविधाभिः कथाभिर्विनोद्यमानस्तं दिवसमशेषमभिनवपितृवियोगजन्मना शोकावेगेनायास्यमानहृदयो दुःखेनात्यवाहयत् (ढ)। अतिवाहितदिवसश्च यामिनीमपि स्वशयनीयस्य नातिदूरे निहितशयननिषण्णेन (४)

प्राप्नोति। अत्र शकलीभवनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। बलभरेण पीड़िताया वसुधाया धारणेन विधुरा विह्वलाः, फणिनां पत्युः सर्पराजस्य अनन्तस्य फणाभित्तयो विस्तृतफणामण्डलानि न चलन्ति न स्खलन्ति, तदपि चित्रमित्यर्थः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः।

(ड) इतीति। वदत एव तस्येत्यनादरे षष्ठी। दिग्विजयतो निवृत्तौ तद्वचनमनादृत्येत्यर्थः। समुच्छ्रितानि अत्युच्चानि अनेकानि तोरणानि बहिर्द्वाराणि यस्यास्तां, तृणमये प्राकारे तन्मध्य इत्यर्थः मन्दिरसहस्रेण गृहसमूहेन सम्बाधा व्याप्ता तां, उन्नामितेन उत्थापितेन धवलेन पटमण्डपशतेन वसनमयगृहसमूहेन शोभत इति तां, आवासभूमिं पूर्वनिर्म्मितनिवासस्थानम्।

(ढ) तस्यामिति। सर्वा क्रियाः सैन्यपर्य्यवेक्षणसेनापतिसम्भाषणनियोगादीः। समेत्य मिलित्वा। विनोद्यमानः प्रसाद्यमानः। अभिनवात् पितृवियोगात् जन्म यस्य तेन। आयास्यमानं सन्तप्यमानं हृदयं यस्य स चन्द्रापीड़ः, अशेषं सकलं तं दिवसं दुःखेनात्यवाहयत्।

(ण) अतीति। किञ्च अतिवाहितदिवसश्चन्द्रापीड़ः। स्वशयनीयस्य निजशय्यायाः, नातिदूरे निहितं

যে, সৈন্যগণের পদভরে সমস্ত কুলপর্ব্বতগণের সন্ধিবন্ধন বিশ্লেষিত হওয়ায় পৃথিবী আজ সহস্র খণ্ডে বিভক্ত হইয়া যাইতেছে না এবং সৈন্যগণের পদভরে পরিপীড়িত পৃথিবীর ধারণে বিহ্বল হইয়া অনন্তনাগের ফণাগুলি, স্থানচ্যুত হইতেছে না।"

(ড) বৈশম্পায়ন এইরূপ বলিতেছিলেন, এই অবস্থায় যুবরাজ চন্দ্রাপীড়, পূর্ব্বনির্দ্দিষ্ট বাসস্থানে যাইয়া উপস্থিত হইলেন; সে স্থানের বাহিরের দ্বারগুলি অত্যন্ত উচ্চ ছিল, তৃণময় প্রাচীরের মধ্যস্থল বহুসংখ্যক মন্দিরে পরিপূর্ণ ছিল এবং উত্তোলিত বহুসংখ্যক শুভ্রবর্ণ পটমণ্ডপে (তাঁবুতে) সে স্থানটি শোভা পাইতেছিল। (ঢ) চন্দ্রাপীড় সেই বাসস্থানে হস্তিনীর পৃষ্ঠ হইতে অবতরণ করিয়া রাজার ন্যায় সকল কার্য্য সম্পাদন করিলেন, এবং সেই সকল রাজগণ ও মন্ত্রিগণের সহিত মিলিত হইয়া নানাবিধ কথোপকথনে আনন্দ অনুভব করিতেছিলেন বটে, কিন্তু নূতন পিতৃবিয়োগবশতঃ শোকাবেগে হৃদয় সন্তপ্তও হইতেছিল, তাই তিনি দুঃখেতেই সেই সমস্ত দিনটা অতিবাহিত করিলেন। (ণ) দিন অতিবাহিত করিলে পর রাত্রিতে নিজের

(१) दलन्ति। (२)...मन्दिरसम्बाधा। (३)...संशोभिनीं। (४) नातिदूरनिषण्णेन।

वैशम्पायनेन, अन्यतश्च समीपे (१) क्षितितल-विन्यस्त-(२) कुथप्रसुप्तया पत्रलेखया सह, अन्तरा पितृसक्ताम्, अन्तरा मातृसम्बद्धाम्, अन्तरा शुकनासमयं कुर्वन्नालापं नात्युपजातनिद्रः (३) प्रायेण जाग्रदेव निन्ये (ण)। प्रत्यूषे (४) चोत्थाय तेनैव क्रमेणानवरतप्रयाणकैः प्रतिप्रयाणकमुपचीयमानेन सेनासमुदायेन जर्जरयन् वसुन्धराम्, आकम्पयन् गिरीन्, उत्सिञ्चन् (५) सरितः, रिक्तीकुर्वन् सरांसि, चूर्णयन् काननानि, समीकुर्वन् विषमाणि, दलयन् दुर्गाणि, पूरयन्निम्नानि, निम्नयन् स्थलानि प्रातिष्ठत (६) (त)।

स्थापितं यत् शयनं शय्या तत्र निषण्णेन स्थितेन। अन्यतः स्वशय्याया अन्यस्मिन् पार्श्वे। क्षितितले विन्यस्तं यत् कुथं विचित्रकम्बलं तस्मिन् प्रसुप्ता शयिता तया पत्रलेखया च सह। अन्तरा मध्ये मध्ये। पितरि तारापीड़े सक्तं सम्बन्धं। शुकनासमयं तद्विषयकं आलापं कुर्वन्। न अतिरेकेण उपजाता निद्रा यस्य सः, अतएव प्रायेण बाहुल्येन जाग्रदेव सन् यामिनीमपि तां रात्रिमपि निन्ये यापयामास।

(त) प्रत्यूष इति। अनवरतप्रयाणकैरविश्रान्तप्रस्थानैः। प्रतिप्रयाणकं प्रतिदिवसीयप्रस्थानसमय इत्यर्थः। उभयत्राप्यज्ञाने कप्रत्ययः। उपचीयमानेन वर्द्धमानेन, तत्तद्देशीयाधीननृपतिवृन्दसैन्यसम्मेलनादिति भावः। सेनासमुदायेन वाहिनीसमूहेन। जर्जरयन् जर्जरां कुर्वन् भरेण परिपीड़यन्नित्यर्थः। उत्सिञ्चन् जलोत्तोलनेनाल्पजलाः कुर्वन्। रिक्तीकुर्वन् पानाद्यर्थजलानयनादिना जलशून्यीकुर्वन्। विषमाणि उच्चावचानि स्थानानि समीकुर्वन्। दुर्गाणि दुर्गमाणि मार्गवर्त्तिपर्वतादिस्थलानि, दलयन् ध्वंसयन्। निम्नानि मार्गवर्त्तिगर्त्तादीनि पूरयन् मृत्तिकादिभिः समीकुर्वन्। स्थलानि मृत्तिकास्तूपादीनि, निम्नयन् समीकरणायापेक्षिकनिम्नानि कुर्वन्। यानवाहनादीनामनायासेन गमनार्थमिति सर्वत्र भावः। प्रातिष्ठतेति "समवप्रविभ्यः" इत्यात्मनेपदम्।

শয্যার অনতিদূরে সংস্থাপিত একখানি শয্যার উপরে বৈশম্পায়ন অবস্থান করিতে লাগিলেন এবং নিকটেই অপর পার্শ্বে ভূতলে একখানি বিচিত্র কম্বল পাতা ছিল, পত্রলেখা তাহার উপরে শয়ন করিয়াছিল, এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় তাহাদের সহিত মধ্যে মধ্যে পিতার সম্বন্ধে, মধ্যে মধ্যে মাতার সম্বন্ধে এবং মধ্যে মধ্যে শুকনাসের সম্বন্ধে কথোপকথন করিতে লাগিলেন, তাহাতে অধিক নিদ্রা হইল না, প্রায়শই জাগিয়া রহিলেন—এই ভাবে সেই রাত্রিও অতিবাহিত করিলেন। (ত) প্রভাতকালে গাত্রোত্থান করিয়া সেই ভাবেই অবিশ্রান্ত গমন করিতে লাগিলেন; প্রত্যেক দিন প্রস্থান করিবার সময়ে নূতন নূতন সৈন্য আসিয়া যোগ দিতে লাগিল, তাহাতে নিজের সৈন্য অত্যন্ত বৃদ্ধি পাইল, সেই সৈন্যসমূহদ্বারা পৃথিবীকে জর্জ্জরিত করিয়া, পর্ব্বত কাঁপাইয়া, নদী সেচিয়া, জলাশয়গুলিকে জলশূন্য করিয়া, বন ভাঙ্গিয়া, উঁচু নীচু

(१) शयनीयसमीपे। (२) क्षितितले विन्यस्त...। (३) नातिजातनिद्रः।
(४) प्रत्यूषसि। (५) उपसिञ्चन्। (६) प्रतिष्ठता।

শনৈঃ শনৈশ্চ স্বেচ্ছয়া পরিভ্রমন্, নময়ন্নুন্নতান্, উন্নময়ন্নবনতান্, (১) আশ্বাসয়ন্ ভীতান্, রক্ষন্ শরণাগতান্, উন্মূলয়ন্ বিটপকান্, উৎসাদয়ন্ কণ্টকান্, অভিষিঞ্চন্ স্থানস্থানেষু রাজপুত্রান্, সমর্জয়ন্ রত্নানি, প্রতীচ্ছন্নুপায়নানি, গৃহ্ণন্ করান্, আদিশন্ দেশব্যবস্থাঃ, (২) স্থাপয়ন্ স্বচিহ্নানি, কুর্ব্বন্ কীর্ত্তনানি, লেখয়ন্ শাসনানি, পূজয়ন্নগ্রজন্মনঃ, প্রণমন্ মুনীন্, পালয়ন্নাশ্রমান্, জনয়ন্ (৩) জনানুরাগম্, প্রকাশয়ন্ বিক্রমম্, আরোপয়ন্ প্রতাপম্, উপচিন্বন্ যশঃ, বিস্তারয়ন্ গুণান্, প্রখ্যাপয়ন্

(থ) বিজয়প্রকারমাহ শনৈরিতি। উন্নতান্ ধনবলদর্পেণোদ্ধুমান্ নৃপতীন্, নময়ন্ বিজয়েনাবনতীকুর্ব্বন্। অবনতান্ স্বয়মেব বশীভূতান্ নৃপতীন্, উন্নময়ন্ দানমানাদিনা বর্দ্ধয়ন্। বিটপকান্ ধূর্ত্তাধিপান্। কুৎসায়াং কপ্রত্যয়ঃ। "বিটপো ন স্ত্রিয়াং স্তম্বশাখাবিস্তারপল্লবে। বিটাধিপে না" ইতি মেদিনী। কণ্টকান্ ক্ষুদ্রশত্রূন্। "রোমাঞ্চে ক্ষুদ্রশত্রৌ চ দ্রুমাঙ্গে কণ্টকোঽস্ত্রিয়াম্।" ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ। উপায়নানি বশীভূতনৃপতিদত্তোপহারদ্রব্যাণি, প্রতীচ্ছন্ স্বীকুর্ব্বন্। দেশব্যবস্থাঃ দেশশাসননিয়মান্ আদিশন্ আয়ত্তীভূতনৃপতিষ্বিত্যর্থঃ। স্বচিহ্নানি স্বকীয়বিজয়চিহ্নানি স্তম্ভাদীনি। কীর্ত্তনানি আত্মনো বিজয়ঘোষণাঃ। শাসনানি অধীনতাসূচকলেখ্যপত্রাণি, লেখয়ন্ বিজিতনৃপতিভিরিতি শেষঃ। অগ্রজন্মনো ব্রাহ্মণান্। আশ্রমান্ ব্রহ্মচর্য্যাদীন্। আরোপয়ন্ প্রবর্ত্তয়ন্। উপচিন্বন্ সদ্ব্যবহারাদিনা প্রবর্দ্ধয়ন্। বেলাবনানি সমুদ্রতীরবর্ত্তীন্যরণ্যানি আমৃদ্নন্ সম্যগ্‌ভঞ্জন্। "বেলা কালে চ সীমায়ামব্ধেঃ কূলবিকারয়োঃ।"

জায়গা সমান করিয়া, দুর্গম পর্ব্বতগুলিকে ধ্বংস করিয়া, হ্রদগুলিকে পূরণ করিয়া, মৃত্তিকাস্তূপ নিম্ন করিয়া প্রস্থান করিতে লাগিলেন।

(থ) চন্দ্রাপীড় এই ভাবে ইচ্ছানুসারে ধীরে ধীরে পরিভ্রমণ করতঃ, বলগর্ব্বে গর্ব্বিত রাজগণকে বশীভূত করিলেন, আপনা হইতেই অবনত রাজগণকে দানমানাদিদ্বারা উন্নত করিলেন, ভীত রাজগণকে আশ্বস্ত করিলেন, শরণাগত রাজগণকে রক্ষা করিলেন, ধূর্ত্তনায়কগণকে উন্মূলিত করিলেন, ক্ষুদ্র শত্রুগণকে উৎসন্ন করিলেন, স্থানে স্থানে রাজপুত্রদিগকে অভিষিক্ত করিলেন, বহুতর রত্ন উপার্জ্জন করিলেন, বশীভূত রাজাদের নিকট হইতে উপহার গ্রহণ করিলেন, কর আদায় করিলেন, বিজিত দেশ-সমূহে শাসনের নিয়মপদ্ধতি বলিয়া দিলেন, স্থানে স্থানে নিজের বিজয়চিহ্ন স্থাপন করিলেন, সকল দেশেই আপনার জয় ঘোষণা করিলেন, বিজিত রাজগণদ্বারা অধীনতাসূচক শাসনপত্র (দলিল) লেখাইয়া লইলেন, ব্রাহ্মণদিগের সম্মান করিলেন, মুনিগণকে নমস্কার করিলেন, আশ্রমগুলির রক্ষার ব্যবস্থা করিলেন, আপনার প্রতি লোকের অনুরাগ জন্মাইলেন; সকল দেশেই বিক্রম প্রকাশ করিলেন, প্রভাব খাটাইলেন, যশ বৃদ্ধি করিলেন, গুণ বিস্তার করিলেন, সচ্চরিত্র বিখ্যাত করিলেন এবং সমুদ্রের তীরবর্ত্তী বনগুলিকে

(১) উন্নতান্ নময়ন্ ইতিমাত্রঃ পাঠঃ ক্বচিৎ।

(২)···ব্যবস্থা। (৩) ক্বচিৎ জনয়ন্ ইতি পাঠো নাস্তি।

सञ्चरितम्, (१) आमृद्नंश्च (२) वेलावनानि, बलरेणुभिराधूसरीकृत-सकल-सागरसलिलः पृथिवीं विचचार (थ)। प्रथमं प्राचीम्, ततस्त्रिशङ्कुतिलकाम्, ततो वरुणलाञ्छनाम्, अनन्तरञ्च सप्तर्षितारागवलां दिशं विजित्य (३) (द)। एवं (४) वर्षत्रयेण चात्मीकृताशेषद्वीपान्तरं सकलमेव चतुरम्भोधि (५) खात-वलय-परिखा-प्रमाणं बभ्राम महीमण्डलम् (ध)। ततः क्रमेणावर्जित-(६) सकल-भुवन-तलः प्रदक्षिणीकृत्य वसुधां (७) परिभ्रमन्, कदाचित् कैलास-समीपचारिणां हेमकूटधाम्नां (८) किरातानां सुवर्णपुरं नाम निवासस्थानं

इत्यादि मेदिनी। बलरेणुभिः सैन्योत्थापितधूलीभिः आधूसरीकृतानि तीरविचरणकाले सम्यग् धूसरवर्णीकृतानि सकलानां सागराणां सलिलानि येन स तादृशश्चन्द्रापीडः।

(द) प्रथममिति। प्रथमं प्राचीं पूर्वां दिशं विजिग्ये विजितवान्। त्रिशङ्कुसदाख्यो राजा तिलक इव यस्यां तां, दक्षिणां दिशम्। त्रिशङ्कुर्नाम राजा स्वर्गमारोहन् देवराजेन दक्षिणस्यां दिश्यधःक्षिप्त इति रामायणवार्त्ता। वरुणो लाञ्छनं अधिपतितया चिह्नं यस्यां तां, पश्चिमां दिशम्। सप्तर्षितारामिर्नक्षत्रात्मकमरीच्यादिसप्तर्षिभिः शबलां विचित्रां उत्तरां दिशं। तथा च वृहत्संहितायां—"एकैकस्मिन् ऋक्षे शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम्। प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्तेससाध्वीकाः।"

(ध) वर्षेति। आत्मीकृतानि स्वत्वास्पदीकृतानि अशेषाणि समस्तानि द्वीपान्तराणि यस्य तत्, तथा चतुर्णामम्भोधीनां समुद्राणां खातवलयं खाताग्रमण्डलमेव परिखा तया प्रमाणं परिमाणं यस्य तत् तथोक्तं सकलमेव महीमण्डलं बभ्राम। अभ्यन्तरवर्त्तिस्थानविशेषपरित्यागशङ्कानिरासार्थं सकलपदमिति नाधिकपदत्व-दोषः।

(न) तत इति। हेमकूटोनाम हिमालयादुत्तरस्थितः पर्वतविशेषो धाम आश्रयो येषां तेषां, किरा-तानां म्लेच्छविशेषाणां। पूर्वजलनिधेः पूर्वसमुद्रात् नातिविप्रकृष्टं अनतिदूरवर्त्ति। जग्राह आयत्तीकृतवान्।

मर्দিত করিলেন ; এই ভাবে সৈন্যগণের পদভরে উত্থিত ধূলিরাশিদ্বারা সকল সমুদ্রের জল ধূসরবর্ণ করিয়া সমগ্র পৃথিবী বিচরণ করিলেন। (দ) প্রথমে পূর্ব্বদিক্, তাহার পর ত্রিশঙ্কু-শোভিত দক্ষিণদিক্, তাহার পর বরুণ-চিহ্নিত পশ্চিমদিক্ এবং তদনন্তর নক্ষত্ররূপি-সপ্তর্ষি-শোভিত উত্তরদিক্ জয় করিলেন। (ধ) এই ভাবে তিন বৎসরে অন্যান্য সকল দ্বীপ আয়ত্ত করিয়া চারি সমুদ্রের খাতরূপ পরিখাদ্বারা পরিমিত সমগ্র পৃথিবীমণ্ডলই পরিভ্রমণ করিলেন। (ন) তাহার পর ক্রমশঃ সমগ্র ভুবনমণ্ডল জয় করিয়া, পৃথিবী প্রদক্ষিণ করিয়া, পরিভ্রমণ করতঃ, সুবর্ণপুরনামে একটি স্থান জয় করিয়া আয়ত্ত করিলেন ; সেই সুবর্ণপুর, কৈলাসপর্ব্বতের নিকটে বিচরণকারী হেমকূটপর্ব্বতনিবাসী ম্লেচ্ছগণের বাসস্থান ছিল এবং পূর্ব্বসমুদ্র হইতে

(१) उद्योतयन् पौरुषं इति क्वचिदधिकः पाठः। (२) आनम्रन् वेला, आमर्द्दयंश्च वेला…।
(३) जिग्ये। (४) क्वचित् एवमिति नास्ति। (५) चतुरुदधि…। (६) निर्जित, आवर्जित…।
(७) वसुन्धरां। (८) हेमजकूटनाम्ना, हेमजटनाम्ना, हेमजटानाम्ना।

नातिविप्रकृष्टं (१) पूर्वजलनिधेर्जित्वा जग्राह (न)। तत्र च निखिल-धरणि-तल-(२) पर्य्यटनखिन्नस्य निजबलस्य विश्रामहेतोः कतिपयान् दिवसान-तिष्ठत्। (प)

एकदा तु तत्रस्थ एवेन्द्रायुधमारुह्य मृगयानिर्गतः (३) विचरन् काननं (४) शैलशिखरादवतीर्णं (५) यदृच्छया किन्नरमिथुनमद्राक्षीत् (फ)। अपूर्वदर्शन-तया तु (६) समुपजातकुतूहलः कृतग्रहणाभिलाषस्तत्समीपमादरादुपसर्पित-तुरगः (७) समुपसर्पन्, (८) अदृष्टपूर्वपुरुषदर्शनत्रासप्रधावितञ्च तत् पलायमान-मनुसरन्, अनवरतपार्ष्णिप्रहारद्विगुणीकृतजवेनेन्द्रायुधेन एकाकी निर्गत्य निज-बल-(९) समूहात् सुदूरमनुससार (१०) (ब)। "अत्र गृह्यते अत्र गृह्यते

(प) तत्रेति। किञ्च तत्र सुवर्णपुरे। निखिलधरणितलपर्य्यटनेन खिन्नस्य परिश्रान्तस्य।

(फ) एकदेति। यदृच्छया स्वाधीनभावेन स्वेच्छया विचरदिति शेषः। किन्नरमिथुनं तुरङ्गवदन-दम्पती, अद्राक्षीत् युवराज इत्यनुकृष्यते।

(ब) अपूर्वेति। अपूर्वं पूर्वमकृतं दर्शनं यस्य तस्य भावस्तया हेतुना।* उपसर्पितः सञ्चालित-स्तुरगो येन सः। अदृष्टपूर्वस्य पुरुषस्य मानुषस्य चन्द्रापीडस्य दर्शनेन यस्त्रासो भयं तेन प्रधावितं वेगेन चलितं, तत् किन्नरमिथुनं। अनवरतं यः पार्ष्णिप्रहारः पादमूलाभ्यां ताड़नं तेन द्विगुणीकृतो जवो वेगो यस्य तेन। "पार्ष्णिः कुन्त्यां चमूपृष्ठे पादमूलोन्मदस्त्रियोः।" इति हेमचन्द्रः।

(भ) अत्रेति। अत्र द्वित्रिपदान्तरस्थाने, गृह्यते मया इदं किन्नरमिथुनमिति शेषः। इति अनया

অধিক দূরবর্ত্তী ছিল না। (প) সমস্ত পৃথিবী পর্য্যটন করায় সৈন্যগণ পরিশ্রান্ত হইয়াছিল, সুতরাং চন্দ্রাপীড় সেই সুবর্ণপুরে কয়েক দিন বিশ্রাম করিবার নিমিত্ত অবস্থান করিলেন।

(ফ) সেই সুবর্ণপুরে থাকিবার সময়েই একদিন চন্দ্রাপীড় ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া মৃগয়া করিবার নিমিত্ত নির্গত হইয়া বনমধ্যে বিচরণ করিতে করিতে দেখিতে পাইলেন যে, দুইটি কিন্নর পর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে নামিয়া ইচ্ছানুসারে বিচরণ করিতেছে। (ব) তাহাদিগকে পূর্ব্বে কখনও দেখেন নাই বলিয়া তাঁহার কৌতূহল জন্মিল এবং ধরিবার ইচ্ছা হইল, তাই তিনি যত্নপূর্ব্বক অশ্বচালনা করিয়া সেই কিন্নরদম্পতীর নিকট যাইতে লাগিলেন; এদিকে তাহারাও সেই প্রথম মনুষ্য দর্শন করিয়া ভয়ে দ্রুতবেগে পলায়ন করিতে লাগিল, চন্দ্রাপীড়ও তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিলেন, এই ভাবে তিনি, অবিশ্রান্ত গুল্‌ফপ্রহার করায় দ্বিগুণবেগবান্ ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া একাকী নির্গত হইয়া নিজ সৈন্যগণ হইতে বহুদূরে যাইয়া পড়িলেন। (ভ) 'এইখানেই ধরিব, এইখানেই ধরিব, এই ধরিয়াছি, এই ধরিয়াছি' এইরূপ ভাবিতে

(१) विप्रकृतं। (२) धरणीतल...। (३)...विनिर्गतः। (४) काननं। (५) शैलशिखरादवतीर्णं।
(६) अपूर्वतया तु। (७)...तुरङ्गः। (८) समुपसर्पन्। (९) बलसमूहात्। (१०) उपससार

इदं गृहीतं इदं गृहीत" इत्यतिरभसाकृष्टचेता महाजवतया तुरङ्गमस्य मुहूर्त्तमात्रेणैकपदमिवासहायस्तस्मात् प्रदेशात् पञ्चदशयोजनमात्रमध्वानं जगाम (भ)। तच्चानुबध्यमानं किन्नरमिथुनमालोकयत एवास्य सम्मुखापतितमचलतुङ्गशिखरमारुरोह (म)। आरूढे च तस्मिन् शनैः शनैस्तदनुसारिणीं निवर्त्य दृष्टिम्, अचल-शिखर-प्रस्तर प्रतिहत-(१) गतिप्रसरो विधृततुरङ्गः (२) चन्द्रापीडस्तस्मिन् काले समारूढ़-(३) श्रम-स्वेदार्द्र-शरीरमिन्द्रायुधमात्मानञ्चावलोक्य (४) क्षणमिव विचार्य्य स्वयमेव विहस्याचिन्तयत् (य) 'किमिति निरर्थकमयमात्मा मया शिशुनेवायासितः। किमनेन गृहीतेनागृहीतेन वा किन्नरयुगलेन प्रयोजनम्। यदि (५) गृहीतमिदं ततः किम्,

---

भावनया अतिरभसेन महावेगेन महानन्देन वा आकृष्टं चेतो यस्य सः। एकपदमिव एकपदपरिमितस्थानमिवेत्यर्थः। पञ्चदशभिर्योजनैः प्रमितमिति पञ्चदशयोजनमात्रं, प्रमाणे मात्रट्प्रत्ययः षष्टिक्रोशपरिमितं पन्थानमित्यर्थः। "स्याद्योजनं क्रोशचतुष्टयेन" इति लीलावती।

(म) तच्चेति। किञ्च, अनुबध्यमानं अनुस्रियमाणं। आलोकयत एवास्य आलोकयन्तमिमं चन्द्रापीडमनादृत्य। अनादरे षष्ठी। सम्मुखे आपतितं उपस्थितं, अचलतुङ्गशिखरं पर्वतस्योच्चशृङ्गम्।

(य) आरूढ इति। किञ्च तस्मिन् किन्नरमिथुने आरूढे सति। अचलशिखरस्य पर्वतशृङ्गस्य प्रस्तरैः प्रतिहतः प्रतिबद्धो गतिप्रसरो गमनवेगो यस्य सः, अतएव विधृततुरङ्गः। समारूढेन समुत्पन्नेन श्रमस्वेदेन परिश्रमजनितघर्म्मेण आर्द्रं क्लिन्नं शरीरं यस्य तं। आत्मानं स्वदेहम्।

(र) किमितीति। आत्मा देहः। आयासितः अयत्नपथागमनेन परिश्रमितः। इदं किन्नरयुगलम्।

ভাবিতে অত্যন্ত আনন্দে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া একাকী চন্দ্রাপীড়, অশ্বটা অত্যন্ত বেগগামী ছিল বলিয়া এক মুহূর্ত্তে সেই সুবর্ণপুর হইতে এক-পদ-পরিমিত স্থানের ন্যায় ষাট ক্রোশ পথ চলিয়া গেলেন। (ম) কিন্তু চন্দ্রাপীড় তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ-ই যাইতেছিলেন এবং দেখিতেছিলেন, এই অবস্থাতেই সেই কিন্নর দুইটি সম্মুখবর্ত্তী কোন পর্ব্বতের উচ্চ শৃঙ্গে যাইয়া আরোহণ করিল। (য) তাহারা পর্ব্বতের শৃঙ্গে আরোহণ করিলে চন্দ্রাপীড় ধীরে ধীরে সে দিক্ হইতে চোখ ফিরাইলেন এবং পর্ব্বত-শৃঙ্গের প্রস্তরে গমনবেগ রুদ্ধ হইতেছিল বলিয়া ঘোড়াটা ধরিলেন, সে সময়ে পরিশ্রমবশতঃ ঘর্ম্মজল নির্গত হইয়া শরীর আর্দ্র করিয়াছিল—এই অবস্থায় আপনাকে ও ইন্দ্রায়ুধকে দেখিয়া, ক্ষণকাল মনে মনে বিতর্ক করিয়া, আপনা আপনিই হাস্য করিয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন—(র) 'কেন আমি বালকের ন্যায় এই শরীরকে অনর্থক পরিশ্রম করাইলাম; এই কিন্নর দুইটাকে ধরিলেই বা কোন্ ফল হইত, আর না ধরায়ই বা কোন্

---

(१)...प्रस्तरस्खलनप्रतिहत...। (२)...तुरङ्गमः।

(३) समुपारूढ...। (४) आलोक्य। (५) क्वचित् गृहीतमिति नास्ति।

अथ न गृहीतं ततोऽपि किम्? अहो मे मूर्खतायाः प्रकारः, अहो यत्किञ्चनकारितायामादरः, अहो निरर्थकव्यापारेष्वभिनिवेशः, अहो बालिशचरितेष्वासक्तिः (र)। साधुफलं कर्म्म क्रियमाणं वृथा जातम्। अवश्यकर्त्तव्या (१) क्रिया प्रस्तुता विफलीभूता। सुहृत्कार्य्यमुपपाद्यमानं नोपपन्नम्। राजधर्म्मः प्रवर्त्तितो न निष्पन्नः। गुर्व्वर्थः प्रारब्धो न परिसमाप्तः। विजिगीषुव्यापार-(२) प्रयत्नो न सिद्धः (ल)। कस्मादहमाविष्ट इवोत्सृष्टनिजपरिवार एतावतीं (३) भूमिमायातः (व)। कस्माच्च मया निष्प्रयोजनमिदमनुसृतमश्वमुखद्वयमिति विचार्य्यमाणे सत्ययं (४) आत्मैव मे पर इव हासमुपजनयति (श)।

आश्चर्य्ये अहोशब्दाः। प्रकारो विशेषः। यत्किञ्चन निष्प्रयोजनं यत्किञ्चित् कार्य्यं करोतीति स तस्य भावस्तस्यां, आदरो महायत्नः। अभिनिवेश आग्रहः। बालिशचरितेषु मूढ़जनव्यवहारेषु आसक्तिरेकाग्रता।

(ल) साध्विति। साधु उत्कृष्टं फलं यस्य तत्तादृशं क्रियमाणं कर्म्म दिग्विजयरूपं, वृथा जातं, इतः प्रतिनिवृत्त्यसम्भवेन तत्फलभोगासम्भवादिति भावः। अवश्यकर्त्तव्या क्रिया दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहात्मकसुशासनरूपा, प्रस्तुता आरब्धा, विफलीभूता, इतो मे प्रतिनिवृत्त्यसम्भवात्। सुहृदां मित्रनृपतीनां कार्य्यं राज्येषु सुशासनव्यवस्थापनरूपं, उपपाद्यमानं मयैव निष्पाद्यमानं सत् न उपपन्नं न सम्पूर्णं इतो गमनासम्भवात्। राजधर्म्मो दिग्विजयात्मकः, प्रवर्त्तित आरब्धः, न निष्पन्नः पुनः स्वदेशगमनासम्भवात्। गुर्व्वर्थः पितृकार्य्यं तत्कीर्त्तिप्रसारणं, प्रारब्धो न परिसमाप्तः, अत्रैव मे विलयेन परं पराजयघोषणासम्भवात्। विजिगीषुव्यापाराय दिग्विजयात्मकाय प्रयत्नो न सिद्धः, पुनर्गृहगमनासम्भवात्।

(व) कस्मादिति। आविष्ट इव भूतग्रस्त इव सन्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(श) कस्मादिति। किञ्च। अश्वमुखद्वयं किन्नरयुगलं। पर इव अन्य इव।

অনিষ্ট হইয়াছে? যদি ইহাদিগকে ধরিতে পারিতাম, তাহা হইলেই বা কি হইত, আর যে ধরিতে পারি নাই, তাহাতেই বা কি হইয়াছে? কি আশ্চর্য্য! আমার মূর্খতার রকম দেখ, যে কোন কার্য্য করিতে আমার যত্ন, অনর্থক কার্য্যে আমার আগ্রহ! এবং মূর্খের ব্যবহারে আমার আসক্তি। (ল) যাহার ফল উৎকৃষ্ট, সেই কার্য্য করিতেছিলাম; কিন্তু তাহা আজ বৃথা হইল; যাহা অবশ্যকর্ত্তব্য, সেই কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলাম, তাহা বিফল হইয়া গেল; মিত্রগণের কার্য্য করিতেছিলাম, সম্পন্ন হইল না; রাজার নিয়ম আরম্ভ করিয়াছিলাম, সম্পূর্ণ হইল না; পিতার কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলাম, সমাপ্ত হইল না; বিজিগীষুর কার্য্যসাধনে যত্ন করিয়াছিলাম, সিদ্ধ হইল না। (ব) কেন আমি ভূতাবিষ্টের ন্যায় নিজের পরিজনদিগকে পরিত্যাগ করিয়া এত দূরে আসিলাম। (শ) বিনা প্রয়োজনে কেন আমি এই কিন্নর দুইটার অনুসরণ করিলাম, ইহার বিচার করিতে লাগিলে আমার এই আত্মাই অন্যের ন্যায়

(१) कर्त्तव्यक्रिया। (२)...व्यापार'।

(३) उत्सृज्य निजपरिवारं अनवसृष्टपरिवार एव तावतीं। (४) यत् सत्यं।

न जाने कियताध्वना विच्छिन्नमितो बलमनुयायि मे (ष)। महाजवो हीन्द्रायुधो निमिष-(१) मात्रेणातिदूरमतिक्रामति (स)। न चागच्छता मया तुरगवेगवशात् किन्नरमिथुने बद्धदृष्टिना (२) अस्मिन्नविरल-तरु-शत-शाखा-गुल्म-लता-सन्तान-गहने निरन्तर निपतित-(३) शुष्क-पर्णावकीर्ण-तले महावने पन्था निरूपितः, येन प्रतिनिवृत्य यास्यामि (ह)। न चास्मिन् प्रदेशे प्रयत्नेनापि परिभ्रमता मया (४) मर्त्त्यधर्म्मा कश्चिदासाद्यते, यः सुवर्णपुरगामिनं पन्थानमुपदेक्ष्यति (क्ष)। श्रुतं हि मया बहुशः कथ्यमानं, 'उत्तरेण सुवर्णपुरं सीमान्तलेखा पृथिव्याः सर्व्वजनपदानाम्, ततः परतो निर्म्मानुषमरण्यम्,

---

(ष) ननु वृथानिर्वेदमपहाय गत्वा स्वजनैः सह संयुज्यतामित्याह न जान इति।

(स) अथेदानीमेवागतोऽसीति न तथातिदूरे बलमित्याह महेति। हि यस्मात्।

(ह) ननु तथापि पन्थानं पश्यन्नेवागतोऽसीति तेनैव परिचितेन पथा प्रतिगम्यतामित्याह न चेति। अविरलेन घनेन तरुशतस्य वृक्षसमूहस्य, शाखानां, गुल्मानां स्तम्बानां, लतानाञ्च सन्तानेन परम्परया गहने निविड़े, तथा निरन्तरं निरवकाशं यथा स्यात् तथा निपतितैः शुष्कपर्णैः अवकीर्णं आच्छन्नं तलं निम्न-देशो यस्य तस्मिन्। न च निरूपितः नैव सम्यग् दृष्टः। अत्र निरूपणाभावं प्रति किन्नरमिथुने बद्धदृष्टित्वं तुरगवेगः अविरलेत्यादिविशेषणद्वयार्थश्च हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(क्ष) अथैवञ्चेत् कञ्चिज्जनं पन्थानं पृष्ट्वा गच्छ इत्याह नचेति। मर्त्त्यधर्म्मा मानवः। प्रयत्नेनापि नासाद्यते न लब्धुं शक्यते। सुतरां जिज्ञासयापि निरूपणासम्भव इति भावः।

(क) ननु कथं मर्त्त्यधर्म्मा नासाद्येत इत्याह श्रुतमिति। हि यस्मात्। कथ्यमानं वृद्धैरिति शेषः। सुवर्णपुरं उत्तरेण सुवर्णपुरस्यादूरे उत्तरस्यां दिशि। उत्तरेणेति "अदूरे एनोऽपञ्चम्या" इत्येनप्रत्ययः, तद्-योगे सुवर्णपुरमिति "द्वितीयैनेने"ति द्वितीया। पृथिव्याः सर्व्वजनपदानां सीमान्तलेखा अवधिशेषरेखा।

হাস্ত অন্যায়। (ষ) জানি না—আমার অনুগামী সৈন্যগণ এ স্থান হইতে কত পথে বিভক্ত হইয়া রহিয়াছে। (স) কারণ—মহাবেগবান্ ইন্দ্রায়ুধ এক নিমেষেই বহুদূর অতিক্রম করিয়া থাকে। (হ) আমি আসিবার কালে অশ্বের বেগবশতঃ এবং কিন্নর দুইটার প্রতি নিশ্চল দৃষ্টি রাখায় এই মহাবনের পথ নিরূপণ করিতে পারি নাই যে, ফিরিয়া যাইব; বিশেষতঃ ঘন ঘন বৃক্ষসমূহ, শাখা, গুল্ম ও লতাসমূহে এই মহাবন অত্যন্ত নিবিড় ছিল এবং ঘনভাবে নিপতিত শুষ্কপত্রসমূহে ইহার নিম্নদেশ আচ্ছন্ন ছিল। (ক্ষ) আমি এই প্রদেশে বিচরণ করিয়া বিশেষ যত্ন করিলেও এমন কোন মানুষ পাইব না, যে সুবর্ণপুরগামী পথ বলিয়া দিবে। (ক) কারণ—আমি প্রাচীনদিগকে বহুতর বলিতে শুনিয়াছি যে, 'সুবর্ণপুরের উত্তরে পৃথিবীর সমস্ত দেশের শেষ সীমার রেখা রহিয়াছে, তাহার পর মনুষ্যহীন অরণ্য এবং

---

(१) निमिष…। (२) निबद्धदृष्टिना। (३)…पतित…। (४) कञ्चित् मयेति नास्ति।

तमप्यतिक्रम्य कैलासगिरिरिति'। अयञ्च कैलासः (क)। तदिदानीं प्रतिनिवृत्त्यैकाकिना स्वयमुत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य दक्षिणामाशां केवलमङ्गीकृत्य गन्तव्यम् (ख)। आत्मकृतानां हि दोषाणां नियतमनुभवितव्यं फलमात्मनैव' इत्यवधार्य्य वामकरतल-वलित-(१) रश्मिपाशस्तुरङ्गमं व्यावर्त्तयामास। (ग)

व्यावर्त्तिततुरङ्गमश्च (२) पुनश्चिन्तितवान्—'अयमुल्लासित प्रभा-भास्वरो भगवान् भानुरधुना दिवसश्रियो रशनामणिरिव नभस्तलमध्यं (३) अलङ्करोति (घ)। परिश्रान्तश्चायमिन्द्रायुधः, तदेनं तावदागृहीत-कतिपय-दूर्वा-प्रवाल-कवलं कस्मिंश्चित् सरसि शिलाप्रस्रवणे वा सरिदम्भसि वा स्नातपीतोदकमपनीतश्रमं कृत्वा स्वयञ्च सलिलं पीत्वा कस्यचित्तरोरधश्छायायां मुहूर्त्त-

---

कैलासगिरिर्वर्त्तत इति शेषः। इति कथ्यमानमित्यन्वयः। अयञ्च सन्निधौ दृश्यमानः स कैलासः। सुतरामत्र मानुषप्राप्त्याशैव नास्तीति भावः।

(ख) तदिति। तस्मात्। स्वयमुत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य आत्मनैव सम्भाव्य सम्भाव्य, दक्षिणामाशां दिशमङ्गीकृत्य गन्तव्यत्वेन स्वीकृत्य अवलम्ब्येत्यर्थः, केवलं गन्तव्यं। तथा च यदि स्वजनः प्राप्यत इति भावः।

(ग) आत्मेति। नियतं निश्चितं। इत्यवधार्य्य मनसा निश्चित्य। वामकरतलेन वलित आकृष्य धृतः रश्मिपाशः प्रग्रहरज्जुर्येन सः। तुरङ्गमिन्द्रायुधम्।

(घ) व्यावर्त्तितेति। उल्लासितप्रभाभिः सन्दीप्तद्युतिभिः भास्वरो विशेषेण दीप्तिमान्, भानुः सूर्य्यः, दिवसश्रियो रशनामणिरिव काञ्चीदामरत्नमिव नभस्तलस्य आकाशस्य मध्यमलङ्करोति, मध्याह्नः प्रवृत्त इत्यर्थः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) परीति। एनमिन्द्रायुधं, आगृहीता मुखेन धृताः खादिता इत्यर्थः कतिपये दूर्वाप्रवालानां

তাহা অতিক্রম করিয়া কৈলাসপর্ব্বত অবস্থান করিতেছে'; এই সেই কৈলাসপর্ব্বত দেখা যাইতেছে। (খ) সুতরাং এখন একাকীই এখান হইতে ফিরিয়া আপনা আপনিই বিবেচনা করিয়া করিয়া দক্ষিণ দিক্ অবলম্বনপূর্ব্বক কেবলই গমন করিতে হইবে। (গ) 'নিজকৃত দোষের ফল, নিশ্চয় নিজেরই ভোগ করিতে হয়' এইরূপ মনে মনে স্থির করিয়া বামহস্তদ্বারা লাগাম টানিয়া ধরিয়া ঘোড়াটা ফিরাইলেন।

(ঘ) ঘোড়াটা ফিরাইয়া আবার চিন্তা করিতে লাগিলেন—'প্রখর কিরণসমূহে অত্যন্ত দীপ্তিমান্ এই সূর্য্যদেব, এখন দিনলক্ষ্মীর কাঞ্চীদামস্থিত মণির ন্যায় আকাশের মধ্যস্থান অলঙ্কৃত করিতেছেন। (ঙ) এই ইন্দ্রায়ুধও পরিশ্রান্ত হইয়া পড়িয়াছে, অতএব ইহাকে কয়েকটি দূর্ব্বাপল্লবের গ্রাস ভক্ষণ করাইয়া, কোন সরোবরে কিংবা পার্ব্বত্য-প্রস্রবণে অথবা নদীর জলে

---

(१)...वलित..। (२)...तुरङ्गमश्च, तुरगश्च। (३) क्वचित् नभस्तलमिति नास्ति।

मात्रं विश्रम्य ततो गमिष्यामि' (ङ)। इति चिन्तयित्वा सलिलमन्विष्यन् (१) मुहुर्मुहुरितस्ततो दत्तदृष्टिः पर्यटन् नलिनीजलावगाहोत्थितस्याचिराद-पक्रान्तस्य च महतो गिरिचरस्य वनगजयूथस्य चरणोत्थापितैः (२) पङ्कपटलैरार्द्रीकृतम्, करावकृष्टैश्च समृणालमूलनालैः (३) कमलकलापैः कल्माषितम्, आर्द्रार्द्रैश्च शैवलप्रवालैः श्यामलितोद्देशम्, उद्दलितैश्च कुमुद-(४) कुवलय-कह्लार-कुड्मलैरन्तरान्तरा विच्छुरितम्, उत्खातैश्च सकर्द्दमैः शालूककन्दैराकीर्णम्, खण्डितैश्च (५) कुसुमस्तवकशारैर्घनपल्लवैराच्छादितम्, आलूनाभिश्च कुसुमो-

---

दूर्वापल्लवानां कवला ग्रासा येन तम्। शिलाप्रस्रवणे पर्वतनिर्झरे, सरिदम्भसि नदीजले वा, आदौ स्नातं स्नानाश्रयीकृतं पश्चात् पीतं उदकं येन तं, अतएव अपनीतः श्रमो यस्य तं तादृशं।

(च) इतीति। पर्य्यटन् चन्द्रापीडो मार्गमद्राक्षीदिति परेणान्वयः। नलिन्याः पद्मयुक्तस्य सरोवरस्य जले अवगाहात् मज्जनात् परमुत्थितस्य। "नलिनी पद्मिनी पद्म-व्योमसिन्धु-सरोवरे। नलिकायाञ्च नलिनी" इति विश्वः। अपक्रान्तस्य अपसृतस्य। पङ्कपटलैः कर्द्दमसमूहैः। आर्द्रीकृतमित्यतो द्वितीयैकवचनान्त-पदानि मार्गमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। करावकृष्टैः शुण्डाभिराकृष्यानीतैः। अपि चेति चकाराणामर्थः सर्व्वत्र। कल्माषितं शबलीकृतम् आर्द्रार्द्रैरचिरोत्तोलनादतिशयेन जलक्लिन्नैः, शैवलप्रवालैः शैवालपल्लवैः श्यामलिताः श्यामवर्णीकृताः उद्देशाः स्थानानि यस्य तम्। उद्दलितैर्मर्द्दयित्वोत्थापितैः, कुमुदानि श्वेतोत्पलानि, कुवलयानि नीलोत्पलानि, कह्लाराणि सौगन्धिकानि, तेषां कुड्मलैर्मुकुलैः, अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये विच्छुरितं रञ्जितम्। उत्खातैरुत्पाटितैः शालूककन्दैरुत्पलानां मूलैः, आकीर्णं व्याप्तम्। "शालूक-मेषां कन्दः स्या"दित्यमरः। अत्र शालूकशब्देनैव चरितार्थत्वे पुनर्मूलार्थककन्दशब्दोपादानादधिक-पदतादोषः, कन्दपदपरित्यागेनैवासौ समाधेयः। खण्डितैर्भग्नैः कुसुमस्तवकशारैः पुष्पगुच्छविचित्रैः। आलू-

---

স্নান ও জলপান করাইয়া, ইহার পরিশ্রম দূর করিয়া আপনিও জলপান করিয়া কোন বৃক্ষের নীচের ছায়াতে কিছুকাল বিশ্রাম করিয়া তাহার পরে যাইব' (চ) এইরূপ চিন্তা করিয়া জলের অন্বেষণে ইতস্ততঃ বারংবার দৃষ্টিপাত করিয়া বিচরণ করিতে করিতে একটি পথ দেখিতে পাইলেন। পর্ব্বতচারী কতকগুলি বন্য হস্তী সরোবরের জলে অবগাহনপূর্ব্বক উঠিয়া সম্প্রতি চলিয়া গিয়াছে, তাহাদের চরণদ্বারা উত্থাপিত কর্দ্দমসমূহে সেই পথটি আর্দ্র করিয়াছিল; শুণ্ডদ্বারা মৃণাল, মূল ও নালদণ্ডের সহিত উত্তোলিত কতকগুলি পদ্মে, সেই পথটি বিচিত্র করিয়াছিল; জলক্লিন্ন শেওলার পল্লবে তাহার বহুস্থান শ্যামবর্ণ করিয়াছিল; উদ্ধৃত শ্বেতোৎপল, নীলোৎপল ও সুঁধির কলিকাতে মধ্যে মধ্যে সে পথটি রঞ্জিত করিয়াছিল; কর্দ্দমের সহিত উত্তোলিত শালূকে ব্যাপ্ত ছিল; ভগ্ন ও পুষ্পগুচ্ছে বিচিত্র এইরূপ বনপল্লবে আচ্ছাদিত ছিল; ছিন্ন

---

(१) अन्विष्यमाणः, अन्वेषमाणः, अन्वेषयन्। (२) अपक्रान्तस्य, अतिमहतः, गिरिचरस्य चरणोत्पादितैः। (३) करिकरावकृष्टैः समृणालनालैः। (४) कमलकुमुद...। (५) आखण्डितैश्च।

প্রবিষ্টোল্লসত্-(১) ষট্পদাভির্বনলতাভিরাকুলিতম্, অভিনবকুসুম-(২) পরিমল-বাহিনা চ তমালপল্লবরস-(৩) শ্যামেন মদজলেন সর্ব্বতঃ সিক্তং মার্গমদ্রাক্ষীত্। (চ)

উপজাতজলাশয়শঙ্কশ্চ (৪) তং প্রতীপমনুসরন্, উদ্গ্রীবদৃশ্যৈরুপরিচ্ছত্র-মণ্ডলাকারৈঃ সরল-সাল-সল্লকী-প্রায়ৈরবিরলৈরপি নিঃশাখতয়া বিরলৈরিবোপলক্ষ্য-মাণৈঃ পাদপৈরুপেতেন, (ছ) স্থূল-কপিল-বালুকেন, (জ) শিলাবহুলতয়া (৫)

নাভিস্তিস্রাভিঃ, কুসুমেষু উপবিষ্টাঃ সন্তঃ উল্লসন্তঃ স্ফুরন্তঃ ষট্পদা ভ্রমরা যাসু তাভিঃ। আকুলিতং ব্যাপ্তম্। তথা অভিনবকুসুমস্য সদ্যঃপ্রস্ফুটিতপুষ্পস্য পরিমলং সৌরভং তত্তুল্যগন্ধমিত্যর্থঃ বহতীতি তেন। অতএবাত্র অসম্বন্ধেহসম্বন্ধরূপা নিদর্শনালঙ্কারঃ। তমালপল্লবস্য রসবত্ নির্য্যাসবত্ শ্যামেন। অত্র লুপ্তো-পমালঙ্কারঃ।

(ছ) উপেতি। উপজাতা জলজাদিচিহ্নদর্শনাদুত্পন্না জলাশয়স্য শঙ্কা সম্ভাবনা যস্য সঃ, চন্দ্রা-পীড়ঃ, তং মার্গং প্রতীপং প্রতিকূলং যথা স্যাত্তথা অনুসরন্ তদভিমুখ্যেন গচ্ছন্ কৈলাসতলেন কঞ্চিদধ্বানং গত্বা তত্ষণ্ডং দদর্শেত্যন্বয়ঃ। উদ্গ্রীবং যথা স্যাত্তথৈব দৃশ্যৈর্দ্রষ্টুং যোগ্যৈরিত্যর্থঃ, উপরি ভাগে ছত্রমণ্ডলস্য আত-পত্রাবরণবলয়স্য আকার ইব আকারো যেষাং তৈঃ। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ। সরলসালসল্লক্যঃ স্বনামখ্যাত-পার্থিবহৃক্ষবিশেষাঃ প্রায়া বহুলা যেষু তৈঃ, অবিরলৈর্ঘনৈরপি নিঃশাখতয়া শিখরপর্য্যন্তশাখাহীনতয়া হেতুনা, বিরলৈরঘনৈরিব উপলক্ষ্যমাণৈর্দৃশ্যমানৈঃ। অত্র গুণোত্প্রেক্ষালঙ্কারঃ। পাদপৈরুপেতেন—ইত্যতঃ ক্লীবলিঙ্গানি তৃতীয়ৈকবচনান্তপদানি কৈলাসতলেনেতি বক্ষ্যমাণস্য বিশেষণানি।

(জ) স্থূলেতি। স্থূলাঃ পীবরাঃ কপিলাঃ পিঙ্গলবর্ণাশ্চ বালুকাঃ সিকতা যস্মিন্ তেন।

(ঝ) শিলেতি। শিলাবহুলতয়া হেতুনা, বিরলা অল্পাঃ, তৃণানি, উলপা বিস্তীর্ণা লতাশ্চ যস্মিন্ তেন। "লতা প্রতানিনী বীরুদ্গুল্মিন্যুলপ ইত্যপি" ইত্যমরঃ।

বন্য লতাতে ব্যাপ্ত ছিল, ভ্রমরগণ সেই লতার ফুলের উপর বসিয়া শোভা পাইতেছিল এবং নূতন পুষ্পের ন্যায় সৌরভবাহী ও তমালপল্লবের নির্য্যাসের ন্যায় শ্যামবর্ণ হস্তিগণের মদজলে সেই পথটির সকল স্থান সিক্ত ছিল।

(ছ) সেই পথ দেখিয়া নিকটে জলাশয় আছে বলিয়া চন্দ্রাপীড়ের ধারণা জন্মিল; তখন তিনি সেই পথের অভিমুখে কৈলাসপর্ব্বতের নীচ দিয়া যাইতে লাগিলেন; সেই স্থানে বহুতর বৃক্ষ ছিল, সেগুলিকে উদ্গ্রীব হইয়া দেখিতে হইত; সেগুলির উপরিভাগ, ছত্রের ন্যায় মণ্ডলাকার পত্র ও পল্লবে আচ্ছন্ন ছিল; তাহার মধ্যে সরল, সাল ও সল্লকীবৃক্ষই অধিক পরিমাণে ছিল, এবং ঘন হইলেও শাখা না থাকায় ফাঁক ফাঁক হইয়া রহিয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল। (জ) সে স্থানে পিঙ্গলবর্ণ বড় বড় বালি ছিল; (ঝ) প্রস্তরময় বলিয়া

(১) কুসুমোপবিষ্টমিলিত্যোল্লসত্...। (২)...বকুলকুসুম...। (৩)...সরস...।
(৪)...জলাশয়। (৫) শিলাতলবহুলতয়া।

विरलतृणोलपेन, (झ) वन-द्विप-दशन-दलित-मनःशिला-धूलि-कपिलेन, (ञ) आभङ्गिनीभिरुत्कीर्णाभिरिव पत्रभङ्गकुटिलाभिः पाषाणभेदक-मञ्जरीभिर्जटिलीकृतशिलातलेन, (ट) अनवरत-गलद्‌गुग्गुलु-द्रुम-द्रवार्द्रीकृत-दृषदा, (ठ) शिखर-स्रुत-शिला-जतु-रस-पिच्छिलोपलेन, (ड) टङ्कन-हय-खुर-खण्डित-हरिताल-क्षोद-पांशुलेन, (ढ) आखु-नखरोत्खात-बिल-विप्रकीर्ण-(१) काञ्चन-चूर्णेन, (ण) सिकता-निमग्न-चमर-(२) कस्तूरिका-मृगी-खुर-

(ञ) वनेति। वनद्वीपानां वन्यहस्तिनां दशनैर्दन्तैर्दलितानां मर्द्दितानां मनःशिलानां पार्वत्यधातु-विशेषाणां धूलिभिः रेणुभिः कपिलेन पिङ्गलवर्णेन।

(ट) आभङ्गीति। आभङ्गो विविधभङ्गिरासामस्तीति ताभिः, अतएव उत्कीर्णाभिरिव पाषाणं खनित्रा निर्म्मिताभिरिव स्थिताभिः, पत्रभङ्गवत् कपोलादौ पत्रलताचिह्नवत् कुटिलाभिर्वक्राभिः, पाषाण-भेदकानां वृक्षविशेषाणां मञ्जरीभिः जटिलीकृतानि विषमितानि शिलातलानि पाषाणयोरन्तराणि यस्य तेन। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। "पाषाणभेदनः (पुं) वृक्षविशेष" इति कल्पद्रुमः।

(ठ) अनेति। अनवरतं गलद्भिः गुग्गुलुद्रुमाणां द्रवैर्निर्य्यासैः आर्द्रीकृता दृषदः पाषाणा यस्मिन् तेन।

(ड) शिखरेति। शिखरात् शृङ्गात् स्रुतेन गलितेन शिलाजतुरसेन तदाख्यधातुद्रवेण पिच्छिला उपलाः प्रस्तरा यस्मिन् तेन।

(ढ) टङ्कनेति। टङ्कनानि पाषाणविदारणास्त्राणीव ये हयानामश्वानां खुरास्तैः खण्डितानां चूर्णितानां हरितालानां क्षोदैश्चूर्णैः पांशुलं धूलिमयं तेन। "टङ्कः पाषाणदारण" इत्यमरः।

(ण) आखुनेति। आखूनां उन्दुराणां नखरैर्नखैः उत्खातेभ्यः कृतेभ्यो बिलेभ्यो गर्त्तेभ्यः विप्र-कीर्णानि विच्छिन्नानि काञ्चनचूर्णानि सुवर्णरेणवो यस्मिन् तेन।

(त) सिकतेति। सिकतासु बालुकासु निमग्ना अवगाढ़ा चमराणां हरिणविशेषाणां कस्तूरिका-मृगीणाञ्च खुरपङ्क्तिः खुरचिह्नश्रेणिर्यस्मिन् तेन।

তৃণ ও লতা অল্পই ছিল। (ঞ) বন্য হস্তিগণের দন্তদ্বারা চূর্ণিত মনঃশিলার রেণুতে সে স্থানটি পিঙ্গলবর্ণ হইয়াছিল। (ট) হাড়জোড়া গাছের মঞ্জরীতে দুই দুইখানা পাথরের মধ্যস্থান দুর্গম করিয়াছিল; সেগুলি, কপোল-চিত্রিত পত্রলতাচিহ্নের ন্যায় বক্র ছিল এবং নানাবিধ ভঙ্গী থাকায় সেগুলিকে পাষাণ হইতে খোদিতের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ঠ) গুগ্‌গুলু-বৃক্ষ হইতে অনবরত নির্যাস গলিত হইয়া পাথরগুলিকে আর্দ্র করিয়াছিল; (ড) শৃঙ্গ হইতে গলিত শিলাজতুর রসে পাথরগুলি পিচ্ছল হইয়াছিল; (ঢ) সাবলের ন্যায় ঘোড়ার খুরদ্বারা বিদীর্ণ হরিতালের রেণুতে সে স্থানটা ধূলিময় হইয়াছিল; (ণ) মূষিকের নখ-নির্মিত গর্ত্ত হইতে স্বর্ণরেণু সকল বিক্ষিপ্ত ছিল; (ত) চমরমৃগ ও কস্তূরীমৃগের খুরের চিহ্ন

(१)...अवकीर्ण...। (२)...चमरक...।

पङ्क्तिना, (त) संशीर्ण-रङ्कु-(१) रल्लक-रोम-प्रकर-निचितेन, (थ) विषम-शिलाच्छेदोपविष्ट-जीवञ्जीवक-युगलेन, (द) वनमानुषमिथुनाध्यासिततट-गुहामुखेन, (ध) गन्धपाषाण-परिमलामोदिना, वेत्रलताप्रतानप्ररूढवेणुना (२) कैलासतलेन, (न) कञ्चिदध्वानं गत्वा तस्यैव कैलासशिखरिणः पूर्वोत्तरे दिग्भागे जलभारालसं (३) जलधर-व्यूहमिव बहुल-पक्ष-क्षपान्धकारमिव (४) पुञ्जीकृतमत्यायतं तरुषण्डं (५) ददर्श (प)। तच्च (६) सम्मुखादागतेन (७)

(थ) संशीर्णेति। संशीर्णेन देहात् पतितेन रङ्कूणां रल्लकानाञ्च हरिणविशेषाणां रोमप्रकरेण लोमसमूहेन निचितं व्याप्तं तेन।

(द) विषमेति। विषमेषु उच्चावचेषु शिलाच्छेदेषु प्रस्तरखण्डेषु उपविष्टानि जीवञ्जीवकयुगलानि चकोरपक्षिमिथुनानि यस्मिन् तेन। जीवं प्राणिनं जीवयति विषनाशनेनेति जीवञ्जीवकः। "जीवञ्जीवश्चकोरे स्याद् द्रुमभेदेऽपि पुंस्ययम्।" इति मेदिनी।

(ध) वनेति। वनमानुषाणां मिथुनैर्दम्पतीभिः अध्यासितानि तटगुहामुखानि पार्श्वस्थगह्वरद्वाराणि यत्र तेन।

(न) गन्धेति। गन्धपाषाणानां गन्धकानां परिमलेन सौरभेण आमोदिना आह्लादकारिणा। "गन्धपाषाणः (पुं) गन्धकः।" इति शब्दकल्पद्रुमः। वेत्रलतानां प्रतानेषु पुञ्जेषु प्ररूढा उत्पन्ना वेणवो वंशा यस्मिन् तेन। कैलासतलेन कैलासपर्वतस्य निम्नदेशेन।

(प) कञ्चिदिति। कञ्चिदध्वानं कियन्तं पन्थानं। जलधरव्यूहं मेघसमूहमिव, तथा बहुलपक्षस्य कृष्णपक्षस्य क्षपाया रात्रेरन्धकारमिव, निविड़तया गाढ़कृष्णवर्णमिति भावः। अत्यायतं बहुस्थानव्यापि, तरुषण्डं वृक्षसमूहं। अत्र श्रौतोपमाद्वयस्य परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(फ) तच्चेति। कुसुमरजसां पुष्पपरागाणां कषायैः सौरभैः आमोदिना आह्लादकारिणा, "कषायः

সকল বালুকারাশির উপরে পড়িয়াছিল; (থ) রঙ্কুমৃগ ও কম্বলমৃগের গাত্র হইতে লোমসমূহ পতিত হইয়া সে স্থানটা ব্যাপ্ত করিয়াছিল; (দ) উচু নীচু পাথরখণ্ডের উপরে বহুতর চকোরপক্ষী বসিয়াছিল; (ধ) পর্ব্বতগহ্বরের দ্বারে বহুসংখ্যক বনমানুষদম্পতী অবস্থান করিতেছিল; (ন) গন্ধকের গন্ধে আমোদ জন্মাইতেছিল এবং বেতের ঝাড়ের ভিতরে বাঁশের ঝাড় জন্মিয়াছিল; (প) চন্দ্রাপীড় সেই কৈলাসপর্ব্বতের নীচ দিয়া কিছু পথ অতিক্রম করিয়া সেই কৈলাসপর্ব্বতেরই পূর্ব্বোত্তর কোণে, জলভারে মন্থর মেঘসমূহের ন্যায় এবং কৃষ্ণ পক্ষের রাত্রির অন্ধকারের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ, বহুস্থানব্যাপী ও পুঞ্জীকৃত বৃক্ষসমূহ দেখিতে পাইলেন। (ফ) পুষ্পরেণুর সৌরভে আহ্লাদজনক, জলসংস্পর্শে শীতল,

---

(१) संशीर्णजीर्णरङ्कु, सङ्कीर्णरङ्कु, सङ्कीर्णजीर्णरल्लक…। (२)…प्रतानवनाप्ररूढ…।
(३) जलभारालसजल…। (४) बहुलक्षपा… (५) विविधतरुषण्डं। (६) तच्च।
(७) सम्मुखागतेन।

कुसुम-(१) रजः-कषायामोदिना जलसंसर्गशिशिरेण शीकरिणा (२) चन्दन-रस-स्पर्शेन (३) आलिङ्ग्यमान इव जलतरङ्गमारुतेन, कमलमधुपानमत्तानाञ्च श्रोत्रहारिभिः कलहंसानां कोलाहलैराहूयमान इव प्रविवेश (४)। (फ)

प्रविश्य च तस्य तरुषण्डस्य मध्यभागे मणिदर्पणमिव त्रैलोक्यलक्ष्म्याः, स्फटिकभूमिगृहमिव वसुन्धरादेव्याः, (५) निर्गमन-(६) मार्गमिव सागराणाम्, निस्यन्दमिव दिशाम्, अवतारमिव जलाकारं (७) गगनतलस्य, कैलासमिव द्रवतामापन्नम्, तुषारगिरिमिव विलीनम्, चन्द्रातपमिव रसतामुपेतम्, हराट्टहासमिव जलीभूतम्, त्रिभुवन-पुण्यराशिमिव सरोरूपेणावस्थितम्,

सुरभौ रसे" इति त्रिकाण्डशेषः, जलसंसर्गेण शिशिरः शीतलस्तेन, शीकरिणा जलबिन्दुवता, तथा चन्दनरसस्य स्पर्श इव स्पर्शो यस्य तेन, जलतरङ्गमारुतेन आलिङ्ग्यमान इव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तरङ्गशब्देन चाञ्चल्यार्थस्यापि बोधनात् तदग्राहकत्वे जलपदमिति नाधिकपदत्वदोषः। कमलमधुपानमत्तानां कलहंसानां श्रोत्रहारिभिर्मधुरतया कर्णाकर्षकैः कोलाहलैराहूयमान इव च सन् तत् तरुषण्डं प्रविवेश च इत्यन्वयः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) प्रविश्येति। किञ्च प्रविश्य तस्य तरुषण्डस्य मध्यभागे अच्छोदं नाम सरो दृष्टवानिति दूरवर्त्तिन्या क्रियया न्वयः। अत्र द्वितीयान्तपदानि अच्छोद नाम सर इत्यस्य विशेषणानि। त्रैलोक्यलक्ष्म्या मणिदर्पणमिव स्वच्छतया सर्वप्रतिबिम्बग्रहणात्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। वसुन्धरादेव्याः स्फटिकभूमिगृहमिव भूमध्यगतं स्फटिकमयं भवनमिव विशदत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। सागराणां निर्गमनमार्गमिव पाताललोकतो निःसरणपथमिव विस्तृतत्वादतलस्पर्शत्वाच्च। जात्युत्प्रेक्षा। दिशां निस्यन्दमिव द्रवीभूय गलनमिव निर्म्मलत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। गगनतलस्य जलाकारं अवतारमिव निर्म्मलत्वादेव। क्रियोत्प्रेक्षा। द्रवतामापन्नं कैलासं पर्वतमिव शुभ्रत्वात्। द्रव्योत्प्रेक्षा। विलीनं द्रवीभूतं तुषारगिरिं हिमाचलमिव शीतलत्वात्; द्रव्योत्प्रेक्षा। रसतामुपेतं जलतां प्राप्तं चन्द्रस्य आतपं प्रभामिव निर्म्मलशीतलशुभ्रत्वात्।

জলবিন্দুবাহী এবং চন্দনরসের ন্যায় শীতলস্পর্শী সম্মুখ হইতে আগত জলতরঙ্গের বায়ু তাঁহাকে যেন আলিঙ্গন করিতে লাগিল এবং পদ্মের মধুপানে মত্ত কলহংসগণের সুমধুর কোলাহল তাঁহাকে যেন আহ্বান করিতে লাগিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সেই বৃক্ষসমূহমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

(ব) চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিয়া সেই বৃক্ষসমূহের মধ্যস্থানে 'অচ্ছোদ' নামে একটি সরোবর দেখিতে পাইলেন। ত্রিলোকলক্ষ্মীর মণিময় দর্পণের ন্যায় পৃথিবীদেবীর ভূতলান্তর্গত স্ফটিকময় গৃহের ন্যায়, পাতাল হইতে সমুদ্রগণের ভূতলে নির্গত হইবার পথের ন্যায়,

(१) कुसुम...। (२) शिशिरशीकरिणा। (३)...रससमस्पर्शेन। (४) विवेश।
(५) वसुधादेव्याः। (६) जलनिर्गमन...।
(७) अंशावतारमिव गगनतलस्य, अवतारमिव जलाकारं, अंशावतारं जलाकारं...।

वैदूर्य्यगिरिजालमिव सलिलाकारेण परिणतं शरदभ्रवृन्दमिव द्रवीभूयैकत्र निस्यन्दितम्, आदर्शभवनमिव (१) प्रचेतस:, (ब) स्वच्छतया मुनिमनोवृत्तिभिरिव सज्जनगुणैरिव हरिणलोचनप्रभाभिरिव मुक्ताफलांशुभिरिव निर्म्मितम्, (भ) आपूर्णपर्य्यन्तमप्यन्त:-स्पष्टदृष्टसकलवृत्तान्ततया रिक्तमिवोपलक्ष्यमाणम्, (म) अनिलोद्धूत-जलतरङ्ग शीकर-धूलि-जन्मभि: सर्वत: संस्थितै: (२)

आत्युत्प्रेक्षा। जलीभूतं हरस्य शिवस्य अट्टहासं विशालहास्यमिव शुभ्रत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा। विशेष-शुभ्रताद्योतनाय हरपदम्। सरोरूपेणावस्थितं त्रिभुवनस्य पुण्यराशिमिव पवित्रत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। सलिलाकारेण परिणतं, विदूरे भवानीति वैदूर्य्याणि रत्नानि तेषां गिरिजालं पर्वतसमूहमिव निर्म्मलत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। नूतनमेघशब्दाद्विदूरभूमौ कानिचित् रत्नान्युत्पद्यन्ते तानि वैदूर्य्याण्युच्यन्ते। यथा कुमार-सम्भवे कालिदासोऽपि—"विदूरभूमिर्नवमेघशब्दादुद्भिन्नया रत्नशलाकयेव।" "वैदूर्य्यं बालवायज"मिति विश्व:। तथा द्रवीभूय एकत्र निस्यन्दितं शरदभ्रवृन्दं शरत्कालीयमेघसमूहमिव विशदत्वात्। जात्युत्प्रेक्षा। शरत्काल एव मेघानां वैशद्यं स्यादित्यत: शरत्पदम्। प्रचेतसो वरुणस्य आदर्शभवनमिव दर्पणमयगृहमिव प्रतिबिम्बपतनात्। जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:।

(भ) स्वच्छेति। स्वच्छतया हेतुना, मुनिमनोवृत्तिभिर्निर्म्मितमिव तासामपि स्वच्छत्वादिति भाव:। इत्थं सर्वत्रान्वय:। अत्र चतसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टि:।

(म) आपूर्णेति। आपूर्णो जलै: सम्पूर्ण: पर्य्यन्त उपरिशेषसीमा यस्य तत्तादृशं सदपि, अन्तर-भ्यन्तरे स्पष्टं यथा स्यात्तथा दृष्टा: सकलवृत्तान्ता: प्रतिबिम्बभावेन सकलतास्पन्दनादिव्यापारा:, अथवा नीचस्थशुक्तिवालुकादिपदार्था यस्मिन् तत्तथोक्तं तस्य भावस्तया हेतुना, रिक्तं जलरहितमिव उपलक्ष्यमाणं दृश्यमानम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(य) अनिलेति। अनिलोद्धूतानां वायूत्पादितानां जलतरङ्गाणां शीकरधूलिभ्यो विन्दुकणेभ्यो जन्म येषां तै:, सर्वत: संस्थितै: समन्ताद्विद्यमानै: इन्द्रचापसहस्रै: इन्द्रधनु:समूहै: रच्यमाणमिव। अत्रापि

দিক্‌সমূহের জল হইয়া ক্ষরিত হওয়ার ন্যায়, আকাশের জলাকারে অবতারগ্রহণের ন্যায়, তরলতাপ্রাপ্ত কৈলাসপর্ব্বতের ন্যায়, দ্রবীভূত হিমালয়ের ন্যায়, জলতাপ্রাপ্ত চন্দ্ররশ্মির ন্যায়, শিবের জলীভূত অট্টহাস্যের ন্যায়, সরোবররূপে অবস্থিত ত্রিজগতের পুণ্যপুঞ্জের ন্যায়, জলাকারে পরিণত বৈদূর্য্যমণির পর্ব্বতসমূহের ন্যায়, দ্রবীভূত হইয়া একস্থানে পতিত শরৎকালীয় মেঘসমূহের ন্যায় এবং বরুণের দর্পণময় গৃহের ন্যায় সেই অচ্ছোদসরোবরকে দেখা যাইতেছিল। (ভ) নিতান্তনির্ম্মল বলিয়া সেই সরোবরটি যেন, মুনিগণের মনোবৃত্তি, সজ্জনের গুণগ্রাম, হরিণগণের নয়নকান্তি, কিংবা মুক্তার কিরণসমূহদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল। (ম) সরোবরটি জলে পরিপূর্ণ থাকিলেও ভিতরের সকল বস্তু স্পষ্ট দেখিতে পাওয়ায় জলশূন্য বলিয়া বোধ হইতেছিল। (য) বায়ুকর্ত্তৃক উত্থাপিত তরঙ্গের জলবিন্দুসমূহে

---

(১) আদর্শমিব, আদর্শভুবনমিব। (২) সমুপস্থিতৈ: সমুত্থিতৈ:।

रक्ष्यमाणमिवेन्द्रचापसहस्रैः, (य) प्रतिमानिभेनान्तः-प्रविष्टं (१) सकानन-(२) शैलनक्षत्रग्रहचक्रवालं त्रिभुवनमुद्भिन्नपङ्कजेनोदरेण नारायणमिव बिभ्राणम्, (र) आसन्नकैलासावतीर्णस्य च सततो भगवतः खण्डपरशोर्मज्जनोन्मज्जन-क्षोभ-चलित-चूड़ामणि-चन्द्रखण्डच्युतेनामृतरसेन जल-क्षालित-वामार्द्ध-कपोल-गलित-लावण्य-प्रवाहानुकारिणा सम्मिश्रितजलम्, (३) (ल) उपकूल-तमाल-वन-

---

क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। उद्‌गतेषु जलविन्दुषु रविकिरणपातेन तेषामिन्द्रचापवत्रागावर्णतया दृश्यमानत्वादियमुत्प्रेक्षेति बोध्यम्।

(र) प्रतिमेति। नारायणमिव, उद्भिन्नानि विकसितानि पङ्कजानि यस्मिन् तेन तादृशेन उदरेण अभ्यन्तरभागेन, नारायणपक्षे तु उद्भिन्नमुत्पन्नं पङ्कजं ब्रह्मकमलं यस्मात्तेन तादृशेन उदरेण कुक्षिणा करणेन, प्रतिमानिभेन प्रतिबिम्बच्छलेन अन्तःप्रविष्टं अभ्यन्तरगतं, काननानां वनानां शैलानां पर्वतानां नक्षत्राणां ताराणां ग्रहाणां रव्यादीनाञ्च चक्रवालेन मण्डलेन सहेति सकाननशैलनक्षत्रग्रहचक्रवालं त्रिभुवनं त्रिजगत् बिभ्राणं धारयदिव, नारायणपक्षे तु धारयन्तम्। सोऽपीदृशं त्रिभुवनं धारयति। तथा च शिशुपालवधेऽपि—"युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकाशमासत।" अत्र श्रौतोपमा सापह्नवा प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ल) आसन्नेति। किञ्च, जलेन क्षालितस्य धौतस्य वामार्द्धस्य पार्वतीरूपदेहवामभागस्य कपोलाद्‌गण्डात् गलितं लावण्यप्रवाहं अनुकरोतीति तेन। अमृतरसेनेत्यस्य विशेषणमेतत्। आसन्नात् कैलासादवतीर्णस्य भगवतः खण्डपरशोः शिवस्य सततोमज्जनोन्मज्जनाभ्यां यः क्षोभ उद्वेलनं तेन चलितात् चूड़ामणेस्तत्स्वरूपात् चन्द्रखण्डात् च्युतेन गलितेन अमृतरसेन सुधाद्रवेण, सम्मिश्रितानि जलानि यस्य तत्। अत्र तादृशामृतरसेन तज्जलानां मिश्रणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। रिपून् खण्डयति छिनत्तीति खण्डः, खण्डः परशुर्यस्य स खण्डपरशुः। तथा च महावीरचरिते—"येनानेन जगत्सु खण्डपरशुर्देवो हरः ख्याप्यते।"

सूर्य्येर किरण पतित हওয়ায়, সকল দিকে বিদ্যমান ইন্দ্রধনুসমূহে যেন সেই সরোবরটিকে রক্ষা করিতেছিল। (র) সেই সরোবরের ভিতরে বহুতর পদ্ম ফুটিয়াছিল এবং বন, পর্ব্বত, নক্ষত্র ও গ্রহগণের সহিত সমস্ত ত্রিভুবন প্রতিবিম্বচ্ছলে তাহার ভিতরে প্রবেশ করিয়াছিল, সুতরাং নারায়ণ যেমন উৎপন্ন-পদ্ম-সমন্বিত উদরদ্বারা বন, পর্ব্বত, নক্ষত্র ও গ্রহগণের সহিত সমস্ত ত্রিভুবন ধারণ করেন, তেমন অচ্ছোদ সরোবরও যেন সেইরূপ ত্রিভুবন ধারণ করিতেছিল। (ল) ভগবান্ মহাদেব, নিকটবর্ত্তী কৈলাসপর্ব্বত হইতে নামিয়া সেই অচ্ছোদ সরোবরে বারংবার নিমজ্জন ও উন্মজ্জন করিতেন (ডুব দিতেন), তাহার বেগে বিচলিত মস্তকস্থিত চন্দ্রখণ্ড হইতে অমৃত নির্গত হইত; সেই অমৃত আবার জলপ্রক্ষালিত বামাঙ্গিনী গৌরীর গণ্ড-

---

(१)...प्रविष्ट...। (२)...सजलभरकानन..., सकलकानन...। (३) लावण्यानुकारिणा, मिश्रितजलं।

प्रतिबिम्बान्धकारिताभ्यन्तरैर्दृश्यमान-रसातल-द्वारैरिव सलिलप्रदेशैर्गम्भीरतरम्, (१) (व) दिवाप्युपजातनिशाशङ्कैश्चक्रवाकमिथुनैः परिह्रियमाण-नीलोत्पल-वन-गहनम्, (श) असकृत्-पितामह-परिपूरित-कमण्डलु-परिपूतजलम्, (ष) अनेकशो बालखिल्य-कदम्बक-कृत-सन्ध्योपासनम्, (स) बहुशः-सलिलावतीर्ण-सावित्री-भग्न-देवतार्चन-कमलम्, (२) (ह) सहस्रशः सप्तर्षिमण्डलस्नान-

---

(व) उपेति। उपकूलं कूलसमीपस्थतमालवनानां प्रतिबिम्बैः अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि अभ्यन्तराणि येषां तैः, अतएव दृश्यमानं रसातलस्य द्वारं येषु तैरिव स्थितैः, सलिलप्रदेशैर्जलस्थलैः गम्भीरतरं अतीवगभीरम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, रसातलद्वारदर्शनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) दिवापीति। दिवापि दिनेऽपि उपजातनिशाशङ्कैरुत्पन्नरात्रिभ्रमैः, तमालवनप्रतिबिम्बान्धकारिताभ्यन्तरत्वादिति भावः, चक्रवाकानां मिथुनैर्युगलैः परिह्रियमाणं परित्यज्यमानं नीलोत्पलवनमेव गहनं निबिडप्रदेशो यत्र तत्। अत्र दिवसे रात्रिभ्रमाद्भ्रान्तिमान्, नीलोत्पलवनपरित्यागासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, तथा वनगहनशब्दयोः पर्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परञ्च गहनशब्दस्य निबिडार्थे पर्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासश्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) असकृदिति। असकृदनेकवारं पितामहेन ब्रह्मणा परिपूरितो यः कमण्डलुस्तेन परिपूतानि जलानि यस्य तत्। तत् कमण्डलोस्तीर्थरूपत्वेन पवित्रस्पर्शत्वादिति भावः।

(स) अनेकश इति। बाल एकः कुन्तल एव खिलः प्रतिरोधको येषां ते बालखिल्याः अङ्गुष्ठपर्वपरिमितदेहाः षष्टिसहस्रऋषिविशेषाः, तेषां कदम्बकेन समूहेन कृता सन्ध्योपासना यत्र तत्। तथा च महाभारतम्—"अथापश्यदृषीन् ह्रस्वानङ्गुष्ठोदरवर्ष्मणः। पलाशयष्टिकामेकां सहितान् वहतः पथि।"

(ह) बहुश इति। सलिले अवतीर्णया सावित्र्या ब्रह्मपत्न्या भग्नानि देवतार्चनस्य कमलानि यस्मिन् तत्।

(क्ष) सहेति। सहस्रशः सप्तर्षिमण्डलस्य स्नानेन अवगाहनेन पवित्रीकृतम्।

নিঃসৃত লাবণ্যপ্রবাহের অনুকরণ করিত, সেই অমৃত অচ্ছোদসরোবরের জলের সহিত মিশ্রিত ছিল। (ব) তীরের নিকটবর্ত্তী তমালবনের প্রতিবিম্ব, গভীর জলের ভিতরে পড়িয়া তাহা অন্ধকার করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, পাতালের দ্বার দেখা যাইতেছে। (শ) সেইরূপ অন্ধকার হওয়ায় দিনের বেলায়ও চক্রবাকদম্পতীগণের রাত্রির ভ্রম জন্মিয়াছিল, সুতরাং তাহারা নিবিড় নীলোৎপলবন পরিত্যাগ করিতেছিল। (ষ) ব্রহ্মা বারংবার কমণ্ডলু পরিপূর্ণ করিয়া তাহার জল পবিত্র করিয়াছিলেন। (স) বালখিল্য মুনিগণ অনেকবার সেই জলে সন্ধ্যা করিয়াছিলেন। (হ) সাবিত্রীদেবী জলে নামিয়া দেবতাপূজার জন্য বহুবার পদ্ম ভাঙ্গিয়া নিয়াছিলেন। (ক্ষ) সপ্তর্ষিগণ অনেক বার অবগাহন

---

(१) गभीरतरं। (२)...कमलसदनं।

पवित्रीकृतम्, (क) सर्वदा सिद्ध-वधू-धौत-कल्पलता-वल्कल-पुण्यीकृतो-दकम्, (१) (क) उदकक्रीड़ा-दोहदागतानाञ्च गुह्यकेश्वरान्तःपुरकामिनीनां मकरकेतु-चाप-चक्राकृतिभिरतिविकटैरावर्त्तिभिर्नाभिमण्डलैरापीतसलिलम्, (ख) क्वचिद्वरुण-हंसोपात्तकमलवनमकरन्दम्, (२) (ग) क्वचिद्दिग्गज-मज्जन-जर्जरित-जरन्मृणालदण्डम्, (३) (घ) क्वचित्त्र्यम्बक-वृषभ-विषाण-कोटि-(४) खण्डित-तट-शिलाखण्डम्, (ङ) क्वचिद् यम-महिष-शृङ्ग-शिखर-विक्षिप्त-फेन-पिण्डम्, (च)

(क) सर्वदेति। सिद्धानां देवयोनिविशेषाणां वधूभिः धौतैः कल्पलतावल्कलैः पुण्यीकृतानि पवित्रीकृतानि उदकानि जलानि यस्य तत्।

(ख) उदकेति। किञ्च उदकक्रीड़ादोहदेन जलकेलीच्छया आगतानां गुह्यकेश्वरस्य कुवेरस्य अन्तःपुरकामिनीनां मकरकेतोर्मदनस्य चापचक्रस्य मण्डलीकृतधनुषः आकृतिरिव आकृतिर्येषां तैः, अतिविकटैर्नितान्तगभीरैः आवर्त्तो वर्त्तुलाकार एषामस्तीति तैः, नाभिमण्डलैः आपीतानि अभ्यन्तरगतीकृतानि सलिलानि यस्य तत्। अत्र आर्थोपमालङ्कारः। मकरकेतुपदेन नाभीनां कामोद्दीपकत्वसूचनान्नाविशेषे विशेषाख्यदोषः।

(ग) क्वचिदिति। वरुणस्य हंसैस्तद्वाहनैर्हंसैः उपात्ता गृहीताः कमलवनस्य मकरन्दा मधूनि यस्मिन् तत्।

(घ) क्वचिदिति। दिग्गजानां मज्जनेन अवगाहनेन जर्जरिताश्छिन्नभिन्नाः जरन्तः परिपाकात् स्वयं जीर्णाः मृणालदण्डा यस्मिन् तत्।

(ङ) क्वचिदिति। त्र्यम्बकवृषभेण शिववृषेण विषाणकोटिभ्यां शृङ्गाग्राभ्यां खण्डिता भग्नास्तटशिला-खण्डा यस्य तत्।

(च) क्वचिदिति। यममहिषेण शृङ्गयोः शिखराभ्यां अग्रदेशाभ्यां विक्षिप्ता अवगाहनकाले विकीर्णाः फेनपिण्डा यस्मिन् तत्।

করিয়া তাহার জল পবিত্র করিয়াছিলেন। (ক) সিদ্ধগণের স্ত্রীগণও সর্ব্বদা কল্পলতার বল্কল প্রক্ষালন করিয়া সেই জল পবিত্র করিয়াছিলেন। (খ) কুবেরের অন্তঃপুরবাসিনী রমণীগণ জলকেলি করিবার অভিলাষে সেই সরোবরে আসিতেন, অতিগভীর এবং কামদেবের মণ্ডলীকৃত ধনুর ন্যায় বর্ত্তুলাকার তাঁহাদের নাভিমণ্ডলে সেই সরোবরের জল প্রবেশ করিত। (গ) সেই সরোবরের কোন স্থানে বরুণের হংসগণ পদ্মবনের মধুপান করিত। (ঘ) কোন স্থানে দিগ্‌হস্তিগণ অবগাহন করিবার সময়ে পুরাতন মৃণালগুলিকে ছিন্ন-ভিন্ন করিত। (ঙ) কোন স্থানে শিবের বৃষ, শৃঙ্গের অগ্রদ্বারা তীরের প্রস্তরখণ্ডগুলি ভাঙ্গিয় ফেলিত। (চ) কোন স্থানে যমের মহিষ অবগাহন করিবার সময়ে শৃঙ্গের অগ্রদ্বারা

(१) पुण्योदकम्। (२)...हंसाक्रान्तविकचकमलवनखण्डं, हंसाक्रान्तकमलमकरन्दं।
(३)...मृणालजालदण्डं। (४)...धवलवृषभविषाणकोटि...।

क्वचिदैरावत-दशन-मुषल-(१) खण्डित-कुमुद-षण्डम्, (छ) यौवनमिवोत्-कलिकाबहुलम्, (ज) उत्कण्ठितमिव मृणालवलयालङ्कृतम्, (झ) महा-पुरुषमिव प्रकट-मीन-मकर-कूर्म्म-चक्र-लक्षणम्, (२) (ञ) षण्मुखचरितमिव श्रूयमाणक्रौञ्चवनिताप्रलापम्, (ट) भारतमिव पाण्डु-धार्त्तराष्ट्रकुल-पक्ष-क्षत-

---

(छ) क्वचिदिति। ऐरावतेन हस्तिना, दशनौ दन्तौ मुषलाविव दशनावेव मुषलाविति वा ताभ्यां खण्डितं विच्छिन्नं कुमुदषण्डं यस्मिन् तत्। अत्रोपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः। एभिर्विशेषणैरच्छोदसरोवरस्य देवानां विहारस्थानत्वं सूचितम्।

(ज) यौवनमिति। यौवनं कालमिव, उत्कलिका उत्पन्नकोरका अनुरागोत्कण्ठाश्च यस्मिन् तत्. अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "चिन्ता तु स्मृतिराध्यानं स्मरणं, सस्पृहे पुनः। उत्कण्ठोत्कलिके तस्मिंः स्त्रियां तूभयोरपि।" इति शब्दार्णवः।

(झ) उदिति। उत्कण्ठितं प्रियजनविरहेणोन्मनस्कं जनमिव, मृणालवलयेन अलङ्कृतम्, एकत्र मदनतापादन्यत्र स्वभावादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) महेति। महापुरुषं भाग्यवन्तं राजादिमिव, प्रकटा स्पष्टं दृश्यमानाः, मीना मत्स्याः मकरा जलजन्तुविशेषाः, कूर्म्माः कच्छपाः, चक्राश्चक्रवाकाः, लक्षणाः सारसाश्च यस्मिन् तत्। पक्षान्तरे तु प्रकटानि स्पष्टानि मीनमकरकूर्म्मचक्रस्वरूपाणि लक्षणानि करचरणयो रेखात्मकचिह्नानि यस्य तम्। पूर्णोपमा। "लक्षणं नाम्नि चिह्ने च सारस्यां लक्षणा क्वचित्।" इति मेदिनी।

(ट) षण्मुखेति। षण्मुखचरितं कार्त्तिकेयचरितमिव, श्रूयमाणः क्रौञ्चवनितानां बकपक्षिणीनां प्रलापः कलरवो यस्मिन् तत्, अन्यत्र तु श्रूयमाणः क्रौञ्चवनितानां क्रौञ्चनामकदैत्यभार्य्याणां प्रलापो विलापो यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा। मयासुरपुत्रः क्रौञ्चासुरः कार्त्तिकेयेन निहत इति हरिवंशवार्त्ता।

(ठ) भारतमिति। भारतं महाभारतमितिहासमिव, पाण्डूनां पाण्डुवर्णानां धार्त्तराष्ट्राणां कृष्णवर्णचञ्चुचरणविशिष्टानां हंसानां यत् कुलं समूहस्तस्य पक्षैः पतत्रैः क्षतः क्षोभः सञ्चालनं यस्य तत्। अन्यत्र तु पाण्डुकुलं पाण्डुराजवंश्यो युधिष्ठिरादिः तथा धृतराष्ट्रस्येदमिति धार्त्तराष्ट्रं कुलं दुर्य्योधनादि तयोः पक्षाभ्यां

ফেনস্তূপগুলি ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত করিত। (ছ) কোন স্থানে ঐরাবত হস্তী দন্তমুষলদ্বারা কুমুদগুলি ছিঁড়িয়া ফেলিত। (জ) যৌবনকাল যেমন উৎকণ্ঠাতে পরিপূর্ণ থাকে, সেই সরোবরও তেমন উৎপন্ন কলিকাতে পরিপূর্ণ ছিল। (ঝ) প্রিয়বিরহে উৎকণ্ঠিত ব্যক্তির ন্যায় সেই সরোবরও মৃণালমণ্ডলে অলঙ্কৃত ছিল। (ঞ) মহাপুরুষের হস্তে ও পদে যেমন মৎস্য, মকর, কূর্ম্ম ও চক্রের চিহ্ন স্পষ্ট দেখা যায়, সেই সরোবরেও তেমন মৎস্য মকর, কূর্ম্ম, চক্রবাক ও সারসপক্ষিণী স্পষ্ট দেখা যাইত। (ট) কার্ত্তিকের চরিত্রে যেমন ক্রৌঞ্চ দৈত্যের ভার্য্যাগণের বিলাপের কথা শুনা যায়, সেই অচ্ছোদসরোবরেও তেমন বকপক্ষিণীগণের কলরব শুনা যাইতেছিল। (ঠ) মহাভারতে যেমন পাণ্ডুবংশ ও ধৃতরাষ্ট্রবংশ এই উভয়পক্ষকৃত

---

(१)…मुषल—। (२) मीन…प्रकटलक्षणं।

क्षोभम्, (ठ) अमृतमथनसमयमिव तीरावस्थित-(१) शितिकण्ठ-पीयमान-विषम्, (ड) कृष्णबाल-(२) चरितमिव तट-कदम्ब-शाखाधिरूढ़-(३) हरि-कृत-जल-प्रपात-क्रीड़म्, (ढ) मदनध्वजमिव मकराधिष्ठितम्, (ण) दिव्य-मिवानिमिषलोचनरमणीयम्, (त) अरण्यमिव विजृम्भमाणपुण्डरीकम्, (थ)

सहायभूताभ्यां योद्धृवर्गाभ्यां कृतः क्षोभः समरो यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा। "क्षात्तराष्ट्राः सितेतरै"-रित्यमरः।

(ड) अमृतेति। अमृतमथनसमयमिव समुद्रमन्थनकालमिवेत्यर्थः, तीरावस्थितैः शितिकण्ठैर्मयूरैः पीयमानानि विषाणि जलानि यस्य तत्। अन्यत्र तु तीरावस्थितेन शितिकण्ठेन महादेवेन पीयमानं विषं समुद्रोत्थितं कालकूटं यस्मिन् तम्। पूर्णोपमा। "विषन्तु गरले तोये" इति मेदिनी। समुद्रमथनोत्थितं कालकूटं शिवः पपाविति महाभारतवार्त्ता।

(ढ) कृष्णेति। कृष्णस्य वासुदेवस्य बालचरितं शैशवक्रीड़ितमिव, तटे तीरे ये कदम्बा वृक्षास्तेषां शाखासु अधिरूढैः हरिभिर्वानरैः हरिणा तेनैव वासुदेवेन च कृता जले प्रपात एव क्रीड़ा यस्मिन् तत्। पूर्णोपमा।

(ण) मदनेति। मदनध्वजं कन्दर्पस्य केतुमिव, मकरैस्तदाख्यैर्जलजन्तुविशेषैः मकरेण मकराकार-पुत्तलिकया च अधिष्ठितम्। पूर्णोपमा।

(त) दिव्येति। दिवि भवं दिव्यं स्वर्गीयं कञ्चिद्देवमिव, न विद्यते निमिषो निमेषो ययोस्तादृशी लोचने येषां तैर्मत्स्यैः रमणीयं, अन्यत्र तु अनिमिषे ये लोचने ताभ्यां रमणीयम्। देवमत्स्ययोरुभयोरेव निमेषाभावात्। पूर्णोपमा।

(थ) अरण्येति। अरण्यं महावनमिव, विजृम्भमाणानि विकासं भजमानानि पुण्डरीकाणि श्वेत-पद्मानि यस्मिन् तत्, अन्यत्र तु विजृम्भमाणा निद्राभङ्गानन्तरं स्वाङ्गान्यायच्छमानाः पुण्डरीका व्याघ्रा यस्मिन्

যুদ্ধের বৃত্তান্ত আছে, সেই সরোবরেও তেমন হংসগণের পক্ষের বায়ুতে জলের উদ্বেলন ছিল। (ড) সমুদ্রমন্থনের সময়ে যেমন মহাদেব তীরে থাকিয়া কালকূট বিষ পান করিয়াছিলেন, সেই সরোবরেও তেমন ময়ূরগণ তীরে থাকিয়া জল পান করিতেছিল। (ঢ) কৃষ্ণের শৈশব-চরিত্রে যেমন তিনি যমুনা-তীরস্থিত কদম্ব বৃক্ষের শাখাতে আরোহণ করিয়া তথা হইতে পুনরায় জলে পড়িয়া খেলা করিতেন, সেই সরোবরেও তেমন তীরস্থিত কদম্ববৃক্ষের শাখাতে আরোহণ করিয়া, পুনরায় তথা হইতে জলে পড়িয়া বানরগণ খেলা করিত। (ণ) কামদেবের ধ্বজে যেমন মকরাকৃতি পুত্তলিকা আছে, সেই সরোবরেও তেমন মকরনামে জলজন্তু ছিল। (ত) স্বর্গীয় দেবতা যেমন নিমেষহীন নয়নদ্বারা শোভা পান, সেই সরোবরও তেমন মৎস্যদ্বারা শোভা পাইত। (থ) মহাবনে যেমন ব্যাঘ্র নিদ্রাভঙ্গের পর হাই তোলে, সেই সরোবরেও

(१) तीरकाशारावस्थित...। (२) बालकृष्ण...। (३)...रूढ़...।

उरगकुलमिवानन्त-शतपत्र-पद्मोल्लासितम्, (द) कंसबलमिव मधुकरकुलोप-गीयमान-(१) कुवलयापीड़म्, (ध) कद्रु-(२) स्तनयुगलमिव नागसहस्रपीत-पयोगण्डूषम्, (न) मलयमिव चन्दन-शिशिरवनम्, (प) असत्साधन-

तत्। पूर्णोपमा। "सितच्छत्रामयोः पुण्डरीकं पुंसि तु दिग्गजे। व्याघ्रे च कोशकारे च।" इति त्रिकाण्डशेषः।

(द) उरगेति। उरगकुलं सर्पवंशमिव, अनन्तैरसंख्यैः शतपत्रपद्मैः शतदलकमलैः उल्लासितं शोभितं अन्यत्र तु अनन्तेन वासुकिना, शतपत्रेण पद्मेन च नागविशेषेण उल्लासितम्। अत्र शतपत्रपद्मशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परत्र शतदलान्वितपद्मार्थे पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः पूर्णोपमा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ध) कंसेति। कंसस्य उग्रसेनपुत्रस्य बलं सैन्यमिव, मधुकरकुलेन भ्रमरसमूहेन उपगीयमानानि स्वगानविषयीक्रियमाणानि कुवलयानि नीलोत्पलान्येव आपीड़ः शेखरो यस्य तत्, अन्यत्र तु मधुकरकुलेन भ्रमरगणेन उपगीयमानो मदजलसौरभलोभिनीदेत्य स्वगानश्रवणविषयीक्रियमाणः कुवलयापीड़स्तदाख्यो हस्तीन्द्रो यत्र तत्, अथवा मधौ मधुवने करो राजयाच्यांशो येषां ते मधुकराः कंसादयस्तेषां कुलेन समूहेन उपगीयमानः प्रशस्यमानः कुवलयापीड़नामा हस्ती यत्र तत्। पूर्णोपमा।

(न) कद्रुरिति। कद्रोर्नागमातुः कश्यपभार्य्याविशेषस्य स्तनयुगलमिव, नागानां हस्तिनां सर्पाणाञ्च सहस्रेण समूहेन पीतः पयसां जलानां दुग्धानाञ्च गण्डूषो यस्मात् तत्। पूर्णोपमा।

(प) मलयमिति। मलयं पर्वतमिव, चन्दनवत् शिशिराणि शीतलानि वनानि जलानि यत्र तत्, अन्यत्र तु चन्दनानां तरूणां शिशिरवनं शीतलकाननं यत्र तम्। पूर्णोपमा। "वनं काननमम्बु च" इत्यनेकार्थध्वनिमञ्जरी।

(फ) असदिति। असत् साधनमिव हेत्वाभासदुष्टं हेतुमिव गौलवान् अश्वत्वादित्यादिसाध्याभाववत्-पक्षवृत्तिहेतुमिवेत्यर्थः, न दृष्टः केनाप्यवलोकितः अन्तः अवसानं यस्य तत् अतिवृहदित्यर्थः, अन्यत्र तु न विद्यते दृष्टान्तो निश्चितसाध्यवान् दृष्टान्ताख्यो न्यायावयवविशेषो यस्मिन् तत्, अतएवासत्साधनत्वमिति भावः।

তেমন শ্বেতপদ্ম বিকাশ পাইতেছিল। (দ) সর্পবংশ যেমন অনন্ত, শতপত্র ও পদ্মনামক সর্প-দ্বারা শোভিত, সেই সরোবরও তেমন অসংখ্য শতদল পদ্মদ্বারা শোভিত ছিল। (ধ) কংসের সৈন্যগণমধ্যে যেমন ভ্রমরগণ-গুঞ্জন-শ্রবণ-পরায়ণ কুবলয়াপীড়নামে একটা হস্তী ছিল সেই অচ্ছোদ সরোবরেও তেমন নীলোৎপলরূপ তাহার শিরোভূষণ ছিল এবং তাহার নিকটে ভ্রমরগণ গান করিতেছিল। (ন) কশ্যপপত্নী কদ্রুর স্তনযুগল হইতে যেমন সর্পগণ দুগ্ধ পান করিত, সেই সরোবর হইতেও তেমন হস্তিগণ জল পান করিত। (প) মলয়পর্ব্বতে যেমন শীতল চন্দনবন আছে, সেই সরোবরেও তেমন চন্দনের ন্যায় শীতল জল ছিল। (ফ) অসৎ হেতুর

---

(१)...उपगीयमान...। (२) कद्रू...।

মিবাদৃষ্টান্তম্, (ফ) অতিমনোহরমাহ্লাদনং দৃষ্টেঃ, অচ্ছোদং নাম সরো দৃষ্টবান্। (ব)

আলোকন-(১) মাত্রেণৈবাপগতশ্রমো দৃষ্ট্বা মনস্যেবমকরোৎ(২) 'অহো! নিষ্ফলমপি মে তুরগ-(৩) মুখমিথুনানুসরণমেতদালোকয়তঃ সরঃ সফলতামুপগতম্। অদ্য পরিসমাপ্তমীক্ষণযুগলস্য দ্রষ্টব্যদর্শনফলম্, আলোকিতঃ খলু রমণীয়ানামন্তঃ, দৃষ্ট আহ্লাদনীয়ানামবধিঃ, বীক্ষিতা মনোহরাণাং সীমান্তলেখা, প্রত্যক্ষীকৃতা প্রীতিজননানাং পরিসমাপ্তিঃ, বিলোকিতা (৪) দর্শনীয়ানামবসানভূমিঃ (ভ)। ইদমুৎপাদ্য সরঃসলিলমমৃতরসমুৎপাদয়তা বেধসা পুনরুক্ততামিব নীতা স্বসৃষ্টিঃ (ম)। ইদমপি খল্বমৃতমিব সর্বেন্দ্রিয়াহ্লাদনসমর্থ-

অত্র তৎসরোবরস্যান্তদর্শনসম্বন্ধেঽপি তদসম্বন্ধোক্তেরতিশয়োক্তিঃ পূর্ণোপমা চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ "লৌকিকপরীক্ষকাণাং যস্মিন্নর্থে বুদ্ধিসাম্যং স দৃষ্টান্তঃ" ইতি গৌতমসূত্রীয়বাৎস্যায়নভাষ্যম্।

(ব) অতীতি। দৃষ্টের্নয়নস্য আহ্লাদনম্। অচ্ছানি নির্ম্মলানি উদকানি যস্য তদচ্ছোদম্।

(ভ) আলোকেতি। আলোকমাত্রেণৈব দর্শনমাত্রেণৈব অপগতশ্রমঃ, মনঃপ্রসাদাদিতি ভাবঃ। দৃষ্ট্বা পুনঃ বিশেষেণাবলোক্য। তুরগমুখমিথুনানুসরণং কিন্নরদ্বয়ানুগমনং। ঈক্ষণযুগলস্য নয়নদ্বয়স্য। আহ্লাদয়ন্তীত্যাহ্লাদনীয়াস্তেষাং "কৃত্যযুটোঽন্যত্রাপী"তি কর্ত্তর্যনীয়ঃ, অবধিঃ শেষসীমা। অত্র চন্দ্রাপীড়স্যানন্দমগ্নতয়া বিস্ময়েন চ একার্থস্যাপি পুনঃ পুনরুক্তির্ন দোষায় বিবাদাদৌ কথিতপদবৎ।

(ম) ইদমিতি। ইদং সরঃসলিলং উৎপাদ্য পুনরমৃতরসং সুধাদ্রবং উৎপাদয়তা, বেধসা ব্রহ্মণা, স্বসৃষ্টিঃ পুনরুক্ততাং নীতা প্রাপিতেব। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। এতেনাস্যামৃততুল্যত্বং ব্যজ্যতে।

(য) ননু কথং পুনরুক্ততা নীতেত্যাহ ইদমপীতি। ইদমপি সরঃসলিলং কর্তৃ। শিশিরতয়া শীতল-

যেমন দৃষ্টান্ত নাই, সেই সরোবরেরও তেমন শেষ সীমা দৃষ্টিগোচর হইত না। (ব) এবং সেই অচ্ছোদসরোবর অত্যন্ত সুন্দর ও নয়নের আহ্লাদজনক ছিল।

(ভ) সেই সরোবর দর্শনমাত্রেই চন্দ্রাপীড়ের পরিশ্রম দূরীভূত হইল, তখন তিনি বিশেষভাবে দেখিয়া এইরূপ মনে করিতে লাগিলেন—'প্রথমে, কিন্নর দুইটার অনুসরণ করা আমার নিষ্ফল হইয়াছিল, এখন এই সরোবর দেখিয়া সফলতা লাভ করিয়াছে। আজ আমার নয়নযুগলের দেখিবার জিনিষ দেখার ফল সমাপ্ত হইয়াছে; আজ আমি সুন্দর পদার্থের চূড়ান্ত দেখিলাম, আহ্লাদজনক বস্তুর শেষ দর্শন করিলাম, মনোহর পদার্থের শেষ সীমার রেখা দৃষ্টিগোচর করিলাম, আনন্দজনক পদার্থের পরিসমাপ্তি আজ প্রত্যক্ষ হইল এবং দেখিবার জিনিষের শেষ আজ দেখিলাম। (ম) বিধাতা এই সরোবরের জল সৃষ্টি করিয়া আবার অমৃত সৃষ্টি করায় আপনার সৃষ্টিকে যেন পুনরুক্তিদোষগ্রস্ত করিয়াছেন। (য) কারণ, এই সরোবরের জলও অমৃতের ন্যায় সকল ইন্দ্রিয়ের আহ্লাদ জন্মাইতে সমর্থ, অতএব নির্ম্মল বলিয়া

(১) আলোকন...। (২) মনস্যকরোৎ। (৩) তুরঙ্গ...। (৪) অবলোকিতা।

मतिविमलतया चक्षुषः प्रीतिमुपजनयति, शिशिरतया अङ्गसुखमुपहरति, (१) कमलसुगन्धितया घ्राणमाप्याययति, हंसमुखरतया श्रुतिमानन्दयति, स्वादुतया रसनामास्वादयति (य)। नियतमस्यैव दर्शनतृष्णया न परित्यजति भगवान् कैलासनिवासव्यसनमुमापतिः (र)। न खलु साम्प्रतमाचरति जलशयनदोहदं देवः (२) रथाङ्गपाणिः, यदिदममृतरस-सुरभि-सलिलमपहाय लवण-रस-परुष-पयस्सु दन्वति स्वपिति (ल)। नूनमिदं न प्रथममासीत् सरः, येन प्रलय-वराह-

तया। उपहरति जनयति। कमलस्येव शोभनो गन्धोऽस्यास्तीति कमलसुगन्धि, मत्वर्थीय इन्प्रत्ययः तस्य भावस्तया हेतुना। न च "न कर्मधारयान्मत्वर्थीयो बहुव्रीहिश्चेत्तदर्थप्रतिपत्तिकरः" इति निषेधात् कथमत्र मत्वर्थीय इन्प्रत्यय इति वाच्यम्, अत्र प्रशंसायामिन्प्रत्ययात् तदर्थस्य तु बहुव्रीहिणा वक्तुमशक्यत्वात्, अतएव च बहुव्रीहिश्चेत्तदर्थप्रतिपत्तिकर इत्यभिधानात्। एतत्तु मालतीमाधवटीकायां भावमनोहरायामस्माभिर्विशेषेण विवेचितम्। घ्राणमाप्याययति नासिकां प्रीणयति। हंसमुखरतया हंसशब्दैः शब्दायमानतया, श्रुतिं कर्णं। रसनां जिह्वां। अतएव सर्वथैवामृतोपमतया पुनरमृतसृष्टिः पुनरुक्तामिव नीतेति भावः।

(र) नियतमिति। उमापतिः शिवः, कैलासनिवासे व्यसनमासक्तिं न परित्यजतीति नियतं निश्चितम्, अन्यथान्यत्र तिष्ठेदिति भावः। अत्र ध्रुवशब्दसमानार्थकनियतशब्दोपादानात् वाच्या अभावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) नेति। देवो रथाङ्गपाणिश्चक्रपाणिर्नारायणः, जलशयनस्य दोहदमभिलाषं न खलु साम्प्रतं युक्तं आचरति। "युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने" इत्यमरः। यदयस्मात्, अमृतस्येव रसो यस्य तदमृतरसं सुरभि च सलिलं यस्य तदिदं सरः, अपहाय त्यक्त्वा लवणरसेन परुषाणि रूक्षाणि पयांसि जलानि यस्य तस्मिन् उदन्वति समुद्रे स्वपिति। यदि जलशयनाभिलाषं युक्तिसङ्गतमेवाचरिष्यत् तदा लवणजलं जलधिमपहाय अस्मिन्नमृतोपमजले ध्रुवमस्वप्स्यदिति भावः।

(व) नूनमिति। प्रलये कल्पान्तकाले वराहस्य यज्ञवराहस्य घोणाया नासिकायाः अभिघातात् भीता। इन्द्रायं पोत्थापनकाले नासिकाघातः सम्भवत्येवेति द्रष्टव्यम्। भूतधात्री पृथिवी, कलसयोनिना अगस्त्येन

নয়নের আনন্দ জন্মাইতেছে, শীতল বলিয়া স্পর্শসুখ জন্মাইয়া থাকে, পদ্মের ন্যায় সুগন্ধি বলিয়া নাসিকার তৃপ্তি করিতেছে, হংসগণের শব্দে শব্দায়মান বলিয়া কর্ণের আনন্দ জন্মাইতেছে এবং সুস্বাদু বলিয়া রসনারও তৃপ্তি করিয়া থাকে। (র) ভগবান্ মহাদেব এই সরোবর-দর্শনের অভিলাষেই নিশ্চয়ই কৈলাসপর্ব্বতে বাস করিবার আসক্তি ত্যাগ করিতেছেন না। (ল) ভগবান্ নারায়ণও যুক্তিসঙ্গতভাবে জল-শয়নের অভিলাষ করিতেছেন না; যেহেতু—অমৃতের ন্যায় সুস্বাদু ও সুগন্ধি জলে পরিপূর্ণ এই সরোবর ত্যাগ করিয়া তিনি লবণরসে কটুজল-সমন্বিত সমুদ্রে শয়ন করিতেছেন। (ব) এবং নিশ্চয়ই এই সরোবর পূর্ব্বে ছিল না; যেহেতু—পৃথিবী, প্রলয়কালে যজ্ঞবরাহের নাসিকার আঘাতে ভীত হইয়া সমুদ্রমধ্যে

(१) उपाहरति। (२)...दोहदमिव:।

घोषाभिघात-भीता (१) भूतधात्री कलसयोनि-पान-परिकलित-सकल-सलिलं सागरमवतीर्णा, अन्यथा यद्यगाधपाताल-(२) गम्भीराम्भसि निमग्ना भवेन्महा-सरसि, किमेकेन, महावराह-सहस्रैरपि नासादिता भवेत् (च)। नूनमस्मादेव सलिललेशमादायादाय (३) महाप्रलयेषु प्रलयपयोदाः प्रलयदुर्दिनान्धकारित-दशदिशः प्लावयन्ति भुवनान्तराणि (छ)। मन्ये च यत् (४) सृष्टेरर्वाक् सलिलमयं ब्रह्माण्डरूपमादौ भुवनमभूत्, तदिदं पिण्डीभूय (५) सरोव्यपदेशे-नावस्थितम्॥' (ज)

पानाय परिकलितं सम्भावितं सकलं सलिलं यस्य तं, एतेनास्य क्षुद्रत्वं सूचितं, सागरमवतीर्णा पलायनाय समुद्रं प्रविष्टा। अन्यथा यदीदं सरः प्रथममासीदित्यर्थः, यदि च अगाधपातालवत् गम्भीरमतलस्पर्शं अम्भो जलं यत्र तादृशे अत्र महासरसि निमग्ना भवेत् सा भूतधात्रीति शेषः, तदा एकेन तेन वराहेण किं, महा-वराहसहस्रैरपि आसादिता प्राप्ता न भवेत्। सुतरां नूनमिदं सरः प्रथमं नासीदिति भावः। अत्र नून-मित्यादिवाक्ये अभावाभिमानिनी वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तावता वाक्येन च व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(छ) नूनमिति। सलिललेशं जलबिन्दुं। प्रलयस्य पयोदा मेघाः, प्रलये यद्दुर्दिनं गाढान्धकारस्तेन अन्धकारिताः सञ्जातान्धकाराः दश दिशो यैस्ते तादृशाः सन्तः। भुवनान्तराणि जगन्मध्यदेशान्। अत्र भावा-भिमानिनी वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा प्रलयशब्दस्य पुनः पुनः पाठादनवीकृतत्वदोषः, स तु परवर्त्ति-प्रलयशब्दयोः परित्यागेन परिहरणीयः।

(ज) मन्ये इति। किञ्च, सृष्टेरर्वाक् प्राणादिसृष्टेः पूर्वम्। अभूदासीत्। तत् सलिलं पिण्डीभूय एकत्र समवेतीभूय सरोव्यपदेशेन सरोवरच्छलेन इदमवस्थितमित्यहं मन्ये। अत्रापि भावाभिमानिनी वाच्या सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा सृष्टेरर्वागित्यभिधाय पुनरादावित्यभिधानादधिकपदतादोषः, सोऽपि आदावित्यस्य परित्यागेन समाधेयः। सृष्टेः प्राक् भुवनस्य सलिलमयत्वे प्रमाणं यथा मनुः—"अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्।"

প্রবেশ করিয়াছিলেন, এদিকে কিন্তু মহর্ষি অগস্ত্য সে সমুদ্রের সমস্ত জলই পান করিবার জন্য মনে মনে স্থির করিয়া রাখিয়াছিলেন; যদি এই সরোবর পূর্ব্বেও থাকিত এবং অগাধ পাতালের স্থায় গভীর জলে পরিপূর্ণ এই মহা সরোবরে পৃথিবী নিমগ্ন হইয়া থাকিতেন, তবে এক যজ্ঞবরাহ কেন, মহাবরাহসহস্রও তাঁহাকে ধরিতে পারিত না। (শ) এবং নিশ্চয়ই প্রলয়কালে মেঘসমূহ এই সরোবর হইতেই জলবিন্দু সকল গ্রহণ করিয়া করিয়া, প্রলয়কালের সেই গাঢ় অন্ধকারে দশদিক্ অন্ধকার করিয়া জগতের মধ্যস্থান সকল প্লাবিত করিয়া থাকে। (ষ) আর আমি মনে করি—সৃষ্টির পূর্ব্বে যে এই জগৎসংসার জলময় ব্রহ্মাণ্ডস্বরূপ ছিল, সেই জলরাশিই একত্র সমবেত হইয়া সরোবরচ্ছলে এই অবস্থান করিতেছে।'

(१)...अभिभूता। (२) अगाधानिलपाताल...। (३) क्वचित् विचलिताचि। (४) यथात्। (५) पिण्डीभूतं।

इति विचारयन्नेव तस्य शिला-शकल-कर्कश-वालुकाप्रायं विद्याधरोद्धृत-सनाल-कुमुद-कलापार्च्चितानेक (१) चारु-सैकत लिङ्गम्, अरुन्धती-दत्त-दिनकरार्घ्य-(२) पयः पर्य्यस्त-रक्त-(३) कमल-शोभितम्, उपकूल-शिलातलोपविष्ट-जलमानुष-निषेव्यमाणातपम्, अभ्यर्णतया च कैलासस्य स्नानागतमातृमण्डल-पद-पङ्क्ति-मुद्राङ्कितम्, (४) अवकीर्ण-(५) भस्म-सूचित-मग्नोत्थित-गण-वृन्दोद्धूलनम्, (६) अवगाहावतीर्ण-(७) गणपति-गण्डस्थल-गलित-मद-(८) प्रस्रवण-सिक्तम्, अति-

(स) इतीति। इति विचारयन्नेव चन्द्रापीडस्तस्य सरोवरस्य दक्षिणं तीरमासाद्य तुरगादवततार इत्यन्वयः। अत्र क्लीवे द्वितीयान्तपदानि तीरमित्यस्य विशेषणानि। शिलाशकलवत् प्रस्तरखण्डवत् कर्कशाः कठिनाः वालुकाः प्रायेण बाहुल्येन यस्मिन् तत्। विद्याधरैर्देवयोनिविशेषैरुद्धृतेन सनालानां कुमुदानां कलापेन समूहेन अर्च्चितानि पूजितानि अनेकानि चारूणि सैकतलिङ्गानि वालुकामयशिवलिङ्गानि यस्मिन् तत्। अरुन्धत्या वशिष्ठभार्य्यया दत्तं दिनकराय सूर्य्याय यदर्घ्यं तस्य पयसो जलात् पर्य्यस्तैः प्रभ्रष्टैः रक्तकमलैः शोभितम्। उपकूले तीरसमीपे शिलातलेषु उपविष्टैर्जलमानुषैर्मानुषाकृतिजलजन्तुविशेषैः निषेव्यमाण आतपः सूर्य्यकिरणो यत्र तत्। कैलासस्य पर्वतस्य च अभ्यर्णतया आसन्नतया हेतुना, स्नानाय आगतस्य मातृमण्डलस्य ब्राह्मीप्रभृतिमातृगणस्य पदपङ्क्तेश्चरणश्रेण्या मुद्राभिश्चिह्नैरङ्कितम्। अवकीर्णैर्विक्षिप्तैर्भस्मभिः सूचितानि अनुमापितानि मग्नोत्थितानां अवगाहनानन्तरोत्तीर्णानां गणानां प्रमथानां वृन्दस्य समूहस्य उद्धूलनानि धूलिवन्मर्द्दनानि त्रिपुण्ड्रादिविधानार्थं धूलिवत् सूक्ष्मकरणाय भस्मनां पेषणानि यस्मिन् तत्। उत्कृष्टा धूलय इत्युद्धूलयस्तासां करणमित्युद्धूलनं करोत्यर्थेऽनन्तादुद्धूलिशब्दाण्णिचि युट्। अवगाहाय अवतीर्णस्य अवतरीतुं चलितस्य गणपतेर्गजाननस्य गण्डस्थलात् गलितस्य मदस्य दानजलस्य प्रस्रवणेन धारया सिक्तम्।

(স) চন্দ্রাপীড় এইরূপ মনে মনে বিতর্ক করিতে করিতে সেই অচ্ছোদসরোবরের দক্ষিণ তীরে যাইয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন। সেই দক্ষিণ তীরে পাষাণখণ্ডের ন্যায় অত্যন্ত কঠিন বহুতর বালি ছিল, বিদ্যাধরগণ নালের সহিত কুমুদসমূহ উত্তোলন করিয়া তাহাদ্বারা সুন্দর সুন্দর বহুতর বালুকাময় শিবলিঙ্গের পূজা করিয়াছিল; অরুন্ধতীদেবী সূর্য্যকে যে অর্ঘ দিয়াছিলেন, তাহার রক্তপদ্মগুলি, তাহারই জল হইতে দূরে পড়িয়া শোভা জন্মাইতেছিল; কতকগুলি জলমানুষ তীরের নিকটে পাথরের উপর বসিয়া রৌদ্র সেবন করিতেছিল; এবং কৈলাসপর্ব্বত নিকটবর্ত্তী বলিয়া তথা হইতে ব্রাহ্মী প্রভৃতি মাতৃগণ স্নান করিবার নিমিত্ত আসিয়াছিলেন, তাঁহাদের চরণের চিহ্নশ্রেণীতে সে স্থানটি চিহ্নিত ছিল; কতকগুলি ভস্ম ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত থাকিয়া ইহাই প্রকাশ করিয়াছিল যে, প্রমথগণ অবগাহনপূর্ব্বক উঠিয়া ভস্মের তিলক ধারণ করিবার নিমিত্ত কতকগুলি ভস্ম, ধূলির মত করিবার জন্য পেষণ করিয়া-

(१)...अर्च्चितं। (२)...दत्तार्घ...। (३)...आरक्त...। (४)...मण्डलमुद्राङ्कितं।
(५) अवतीर्ण...। (६)...कदम्बक...। (७) अवगाहनावतीर्ण...। (८) ...गण्डस्थमद..

प्रमाण पादानुमीयमान-(१) तृषित-कात्यायनी-सिंहावतरण-(२) मार्गम्, दक्षिण-(३) तीरमासाद्य तुरगादवततार। (घ)

अवतीर्य्य च व्यपनीतपर्य्याणमिन्द्रायुधमकरोत् (ङ)। क्षितितल-लुठितोत्थितञ्च गृहीत-कतिपय-यवसग्रासं सरोऽवतार्य्य (४) पीत-सलिलमिच्छया स्नातं चोत्थाप्यान्यतमस्य समीपवर्त्तिनस्तरोर्मूलशाखायामपगतखलीनं हस्तपाश-शृङ्खलया कनकमय्या चरणौ (५) बद्ध्वा कृपाणिकावलूनान् क्षिप्त्वा चाग्रतः कतिचित् सरस्तीरप्ररूढ़दूर्वा-(६) प्रवालकवलान्, स्वयमपि (७) सलिलमवततार (च)। ततश्च प्रक्षालितकरयुगलः (८) चातक इव कृत्वा जलमय-

तथा अतिप्रमाणैरतिबृहद्भिः पादैः पादचिह्नैः अनुमीयमानः तृषितस्य सञ्जातपिपासस्य कात्यायनीसिंहस्य दुर्गाया वाहनभूतसिंहस्य अवतरणमार्गो यस्मिन् तत्।

(ङ) अवेति। व्यपनीतं अपसारितं पर्य्याणं पल्ययनं यस्य तं तादृशम्।

(च) क्षितीति। किञ्च, आदौ क्षितितले लुठितः पर्य्याणापनयनानन्तरमेव लुण्ठितः अनन्तरमुत्थितस्तं, अयमश्वस्वभावः, गृहीताः कतिपये यवसानां घासानां ग्रासा येन तं इन्द्रायुधं। अपगतः खलीनः कविका यस्य तं। हस्तपाशौ हस्तबन्धनरज्जुस्तद्रूपा या शृङ्खला तया। कृपाणिकया क्षुरिकया अवलूनान् छिन्नान्। सरस्तीरप्ररूढदूर्वाणां प्रवालकवलान् पल्लवग्रासान्, अग्रतः क्षिप्त्वा इन्द्रायुधस्य सम्मुखे संस्थाप्य च, स्वयमपि चन्द्रापीड़ः सलिलमवततार।

(छ) ततेति। जलमयमाहारं कृत्वा उदरं परिपूर्य्य जलं पीत्वेत्यर्थः। चक्राह्वयश्चक्रवाकः।

ছিলেন ; স্নান করিতে যাইবার সময়ে গণেশের গণ্ডস্থল হইতে মদজল নিঃসৃত হইয়া সেই স্থানটা সিক্ত করিয়াছিল ; আর বৃহৎ বৃহৎ পদচিহ্ন দেখিয়া ইহাই অনুমান হইতেছিল যে, এইটাই পিপাসার্ত্ত দুর্গার সিংহের জলে নামিবার পথ।

(ঙ) চন্দ্রাপীড় অবতরণ করিয়া ইন্দ্রায়ুধের পালান খুলিয়া দিলেন। (চ) তখন ইন্দ্রায়ুধ ভূতলে লুণ্ঠিত হইয়া পুনরায় উঠিয়া, কয়েকটি ঘাসের গ্রাস মুখে লইল ; তাহার পর চন্দ্রাপীড় তাহাকে জলে নামাইলেন, তখন সে, ইচ্ছানুসারে জল পান করিল ও স্নান করিল, পরে চন্দ্রাপীড় তাহাকে তীরে উঠাইয়া কড়িয়াল খুলিয়া নিজের হস্তস্থিত সুবর্ণময় শৃঙ্খলদ্বারা, নিকটবর্ত্তী কোন বৃক্ষের মূলের শাখাতে তাহার চরণদ্বয় বন্ধন করিয়া, ছুরিকা-দ্বারা সরোবরের তীরজাত দূর্ব্বার কতকগুলি পল্লব কাটিয়া, সেগুলি ইন্দ্রায়ুধের সম্মুখে রাখিয়া আপনিও যাইয়া জলে নামিলেন। (ছ) তাহার পর হস্ত প্রক্ষালন করিয়া, চাতকের ন্যায়

(१)...पद...। (२)...अवतार...। (३) दक्षिणं। (४) अवतीर्य्यं। (५) चरणौ। (६) सरस्तीरदूर्वा...। (७) पुनरपि। (८)...करचरणयुगलः।

माहारं, (१) चक्राह्वयः (२) इवास्वाद्य मृणाल-शकलानि, शिशिरांशुरिव कराग्रैः स्पृष्ट्वा कुमुदानि, फणीवाभिनन्द्य जलतरङ्गवातान्, अनङ्गशरप्रहारातुर इवोरसि निधाय नलिनीदलोत्तरीयम्, अरण्यगज इव शीकरार्द्रपुष्करोपशोभितकरः सरः (३) सलिलादुदगात् (क)। प्रत्ययभग्नशिशिरैश्च (४) समृणालैर्जल-कणिकाचितैः कमलिनीपलाशैर्लतामण्डपपरिक्षिप्ते शिलातले स्रस्तरं (५) आस्तीर्य्य, निधाय शिरसि पिण्डीकृतमुत्तरीयं निषसाद। (ख)

मुहूर्त्तं विश्रान्तश्च तस्य सरस उत्तरे तीरप्रदेशे समुच्चरन्तम्, उन्मुक्तकवलेन निश्चलश्रवणपुटेन तन्मुखीभूतेनोदग्रीवेणेन्द्रायुधेन प्रथममाकर्णितं श्रुतिसुभगं वीणातन्त्रीझङ्कारमिश्रममानुषं गीतशब्दमशृणोत् (ग)। श्रुत्वा च 'कुतोऽत्र

मृणालानां शकलानि खण्डानि। शिशिरांशुश्चन्द्र इव। कराग्रैरङ्गुलिभिः किरणाग्रैश्च। फणी सर्प इव जलतरङ्गवातान् अभिनन्द्य प्रशस्य सुखकरत्वेन निषेव्येत्यर्थः। अनङ्गशरप्रहारातुर इव कामार्त्तो जन इव नलिनीदलरूपमुत्तरीयं उरसि वक्षसि निधाय। शीकरैर्जलबिन्दुभिरार्द्रं यत् पुष्करं पद्मं तेन उपशोभितः करो हस्तः शुण्डा च यस्य सः, चन्द्रापीडः। उदगादुत्तस्थौ। अत्र प्रत्येकवाक्य एव पूर्णोपमालङ्कारः।

(ख) प्रत्ययेति। किञ्च, प्रत्ययं नवमचिरं यथास्यात्तथा भग्नानि च तानि, अतएव शिशिराणि शीतलानि चेति तैः। जलकणिकाभिश्चितैर्व्याप्तैः, कमलिनीपलाशैः पद्मपत्रैः, लतामण्डपपरिक्षिप्ते मण्डपाकारमापन्नाभिर्लताभिः परिवेष्टिते शिलातले कस्मिंश्चित् वृहत्पाषाणोपरिभागे स्रस्तरमास्तरणं आस्तीर्य्य प्रसार्य्य पातयित्वा, पिण्डीकृतं स्तूपीकृतं उत्तरीयं वसनं शिरसि निधाय मस्तकाधोभागे दत्त्वा निषसाद शयितवान्।

(ग) मुहूर्त्तमिति। समुच्चरन्तं उत्तिष्ठन्तं। उन्मुक्तकवलेन त्यक्तघासग्रासेन, निश्चले श्रवणपुटे कर्णयुगलं यस्य तेन। सर्व्वत्र गीतमाधुर्य्यादिति भावः। श्रुतौ सुभगं मधुरं। अमानुषं दिव्यम्।

জলময় আহার করিয়া, চক্রবাকের ন্যায় মৃণালখণ্ড চর্ব্বণ করিয়া, চন্দ্রের ন্যায় করাগ্রদ্বারা কুমুদগুলিকে স্পর্শ করিয়া, সর্পের ন্যায় জলতরঙ্গের বায়ু সেবন করিয়া, কামাতুরের ন্যায় বক্ষঃস্থলে পদ্মপত্র রাখিয়া এবং বন্য হস্তীর ন্যায় জলবিন্দুসংসিক্ত পদ্ম ধারণ করায় শোভিতহস্ত হইয়া সরোবরের জল হইতে উঠিলেন। (খ) নূতন ভগ্ন করায় শীতল, মৃণালসংযুক্ত ও জলকণায় ব্যাপ্ত কতকগুলি পদ্মপত্রদ্বারা, মণ্ডপাকারে লতায় বেষ্টিত কোন বৃহৎ পাষাণের উপরে আস্তরণ পাতিয়া, তাহার উপরে, মস্তকের নীচে নিজের উত্তরীয় বস্ত্র স্তূপীকৃত করিয়া দিয়া শয়ন করিলেন।

(গ) এই ভাবে কিছুকাল বিশ্রাম করিলেন, তাহার পর সেই সরোবরের উত্তর তীরে উত্থিত, বীণাতন্ত্রীর ঝঙ্কারমিশ্রিত এবং শ্রুতিমধুর অলৌকিক গীতধ্বনি শুনিতে পাইলেন; এদিকে কিন্তু ইন্দ্রায়ুধ ঘাসের গ্রাস ত্যাগ করিয়া, কর্ণযুগল নিশ্চলভাবে রাখিয়া এবং

---

(१) जलमाहारं। (२) चक्राह्वः। (३) क्वचित् सरःपदं नास्ति। (४)...भग्नशिरैश्च। (५) संस्तरं।

বিগতমর্ত্ত্যসম্পাতে প্রদেশে গীতধ্বনেঃ সম্ভূতিঃ' ইতি সমুপজাতকৌতুকঃ কমলিনীদলস্রস্তরাৎ (১) উত্থায় তামেব গীতসম্পাতসূচিতাং দিশং চক্ষুঃ প্রাহিণোৎ (ঘ)। অতিদবীয়স্তয়া তু তস্য প্রদেশস্য প্রযত্নব্যাপৃতলোচনোঽপি বিলোকয়ন্ন কিঞ্চিদদর্শ, তমেব কেবলমনবরতং গীতশব্দং (২) শুশ্রাব (ঙ)। কুতূহলবশাচ্চ গীতধ্বনিপ্রভবজিজ্ঞাসয়া কৃতগমনবুদ্ধির্দত্তপর্য্যাণমিন্দ্রায়ুধমারুহ্য প্রিয়গীতৈঃ প্রথমপ্রস্থিতৈরপ্রার্থিতৈরপি বনহরিণৈরুপদিশ্যমানবর্ত্মা, সপ্তচ্ছদ-(৩) বকুলৈলা-লবঙ্গ-লবলী-লোল-কুসুম-সুরভি-পরিমলয়া অলিকুল-

(ঘ) মুর্ত্তেতি। বিগতো মর্ত্ত্যানাং মানুষাণাং সম্পাতঃ সঞ্চারো যস্মাত্তস্মিন্। সম্ভূতিরুৎপত্তিঃ। ইতি বিভাব্য সমুপজাতকৌতুকশ্চন্দ্রাপীড়ঃ। কমলিনীদলস্রস্তরাৎ পদ্মপত্রাস্তরণাৎ। দিশং প্রতি।

(ঙ) অতীতি। অতিদবীয়স্তয়া নিতান্তদূরতয়া। প্রযত্নেন ব্যাপৃতে নিবর্ত্তুং প্রবৃত্তে লোচনে যস্য স তাদৃশঃ সন্নপি।

(চ) কুতূহলেতি। প্রভবত্যস্মাদিতি প্রভব উৎপত্তিস্থানং, গীতধ্বনেঃ প্রভবস্য জিজ্ঞাসয়া জ্ঞানেচ্ছয়া, কৃতগমনবুদ্ধিশ্চন্দ্রাপীড়ঃ। প্রিয়ং গীতং যেষাং তৈঃ, প্রথমপ্রস্থিতৈঃ অগ্রে চলিতৈঃ, অপ্রার্থিতৈরপি বর্ত্মোপদেষ্টুমযাচিতৈরপি বনহরিণৈঃ, উপদিশ্যমানং বর্ত্ম পন্থা যস্য স তাদৃশঃ সন্। সপ্তচ্ছদানাং বকুলানাম্ এলানাং লবঙ্গানাং লবলীনাঞ্চ লোলো বায়ুনা চলিতঃ কুসুমানাং সুরভিপরিমলো ঘ্রাণতর্পণগন্ধো যস্যাং তয়া, অন্যত্র তু তৎকুসুমানামিব সুরভিপরিমলো যস্যাস্তয়া, অলিকুলস্য ভ্রমরগণস্য বিরুত্যা রবেণ মুখরিতয়া শব্দিতয়া, তমালতরুভির্নীলা তমালবন্নীলা চ তয়া, দিঙ্নাগস্য দিগ্দন্তিনঃ মদবীথ্যা মদজলশ্রেণ্যা তৎপ্রকাণ্ডেনেব স্থিতয়া,

উত্তরাভিমুখে উদগ্রীব হইয়া সেই গীতধ্বনি প্রথম শুনিয়াছিল। (ঘ) সেই গীতধ্বনি শুনিয়া মনে মনে চিন্তা করিলেন, 'এখানে মানুষের যাতায়াত নাই, তথাপি কোথা হইতে এই গীতধ্বনির উৎপত্তি হইতেছে' তাই তাঁহার কৌতূহল জন্মিল, তখন তিনি সেই পদ্মপত্রের শয্যা হইতে গাত্রোত্থান করিয়া, গীতসংসূচিত সেই দিকেই দৃষ্টিপাত করিলেন। (ঙ) কিন্তু সেই স্থানটি অত্যন্ত দূরবর্ত্তী বলিয়া বিশেষ যত্নপূর্ব্বক নয়নযুগল ব্যাপৃত করিয়া দেখিতে লাগিয়াও বিশেষ কিছুই দেখিতে পাইলেন না, কেবল অবিশ্রান্ত সেই গীতধ্বনিই শুনিতে লাগিলেন। (চ) তাহার পর কৌতুকবশতঃ গীতধ্বনির উৎপত্তিস্থান জানিবার ইচ্ছা করিয়া, গমনে কৃতনিশ্চয় হইয়া ইন্দ্রায়ুধের পালান লাগাইলেন এবং তাহাতে আরোহণ করিলেন; এদিকে গানপ্রিয় বন্য হরিণগণ, প্রার্থনা না করিলেও অগ্রে অগ্রে প্রস্থান করিয়া পথ দেখাইতে দেখাইতে চলিল; এইভাবে চন্দ্রাপীড় সেই গীতধ্বনি লক্ষ্য করিয়া সরোবরের পশ্চিম তীরের বনশ্রেণীর ভিতর দিয়া উত্তর দিকে চলিলেন; সেই বনের ভিতরে সপ্তপর্ণ, বকুল, এলাচী, লবঙ্গ ও লবলীপুষ্পের মনোহর সৌরভ বায়ুভরে পরিচালিত হইতেছিল;

(১)…স্রস্তরাৎ, পত্রস্রস্তরাৎ। (২) শব্দং। (৩) ক্বচিৎ সপ্তচ্ছদপদং নাস্তি।

विरुति-मुखरितया तमालनीलया दिङ्नागमदवीथ्येव पश्चिमया सरस्तीर-वन-लेखया (१) निमित्तीकृत्य तं गीतध्वनिमभिप्रतस्थे। (च)

क्रमेण च सम्मुखागतैः, स्वच्छ-निर्झरजल-कणजाल-जनित जड़िमभिः, जर्जरितभूर्जवल्कलैः, धूर्जटि-वृषभ-(२) रोमन्थ-फेन-बिन्दुवाहिभिः, षण्मुख शिखण्डि-शिखा-चुम्बिभिः, अम्बिका-कर्णपूर-पल्लवोल्लासन-(३) दुर्ललितैः, उत्तर-कुरु-कामिनी-कर्णोत्पल-प्रेङ्खोलन-दोहदिभिः, आकम्पितकक्कोलैः (४) नमेरु कुसुम-पांशुपातिभिः, पशुपति-जटा-बन्धार्त्त-वासुकि-परिपीत-शेषैः, आह्लादिभिः पुण्यैः

पश्चिमया सरस्तीरस्य वनलेखया वनश्रेण्या करणेन, तं गीतध्वनिं निमित्तीकृत्य उद्दिश्य अभिप्रतस्थे तदभिमुखं जगाम। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(छ) क्रमेणेति। किञ्च क्रमेण सम्मुखागतैः कैलासमारुतैरभिनन्द्यमानश्चन्द्रापीडस्तं प्रदेशं गत्वा पादपैः परिवृतं शूलपाणेः शून्यं सिद्धायतनमपश्यदिति बहुदूरेणान्वयः। तत्र प्राथमिकानि तृतीयाबहुवचनान्त-पदानि कैलासमारुतैरित्यस्य विशेषणानि। स्वच्छानां निर्म्मलानां निर्झरजलानां कणजालेन बिन्दुसमूहेन जनितो जड़िमा शीतलत्वं येषां तैः। जर्जरितानि श्लथीकृतानि भूर्जानां तरूणां वल्कलानि यैस्तैः। धूर्जटि-वृषभस्य शिववृषस्य रोमन्थे चर्वितचर्वणसमये ये फेनास्तेषां बिन्दुवाहिभिः। षण्मुखस्य कार्त्तिकेयस्य यः शिखण्डी वाहनीभूतो मयूरस्तस्य शिखाचुम्बिभिश्चूड़ास्पर्शिभिः। अम्बिकायाः पार्वत्याः कर्णपूरयोः कर्णभूषण-भूतयोः पल्लवयोः उल्लासनेन सञ्चालनेन दुर्ललिता हठकारिणस्तैः। उत्तरकुरुनामा हिमालयोत्तरवर्त्ती देशविशेषस्तस्य कामिनीनां यानि कर्णोत्पलानि तेषां प्रेङ्खोलने आन्दोलने दोहदिभिरभिलाषिभिः। आक-म्पितानि कक्कोलानि कोषफलानि यैस्तैः। नमेरुकुसुमानां रुद्राक्षपुष्पाणां पांशून् परागान् पातयन्तीति तैः। पशुपतेः शिवस्य जटाबन्धेन आर्त्तः पीड़ितो यो वासुकिरनन्तनागस्तेन परिपीतेभ्यः सर्पाणां वायुभोजित्वात्

ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে সে বনটি মুখরিত হইয়াছিল এবং তমাল বৃক্ষ থাকায় দিগ্‌হস্তীর মদজল-প্রবাহের ন্যায় নীলবর্ণ ছিল।

(ছ) চন্দ্রাপীড় ক্রমে সেই স্থানে যাইয়া উপস্থিত হইলেন; যাইবার সময়ে আনন্দ-কর ও পবিত্র কৈলাসপর্ব্বতের বায়ু, সম্মুখে বহিত হইয়া তাঁহার আনন্দ জন্মাইতেছিল, নির্ম্মল পার্ব্বত্য প্রস্রবণজলের কণাসমূহে সেই বায়ুর শীতলতা জন্মাইয়াছিল, আবার সে বায়ু ভূর্জবৃক্ষের বল্কল শিথিল করিয়াছিল, শিব-বৃষের চর্বিতচর্ব্বণ করিবার সময়ে তাহার ফেনবিন্দু বহন করিয়াছিল, কার্ত্তিকের ময়ূরের শিখা স্পর্শ করিয়াছিল, দুর্গার কর্ণপল্লব আন্দোলিত করিতে সাহসী হইয়াছিল, উত্তরকুরু-দেশস্থ রমণীগণের কর্ণের উৎপল আন্দোলিত করিতে অভিলাষী ছিল, কক্কোলফল কম্পিত করিয়াছিল, রুদ্রাক্ষপুষ্পের রেণু নিপাতিত করিয়াছিল এবং শিবের জটাতে বন্ধন করায় ব্যথিত অনন্তনাগ যাহা পান করিয়াছিলেন, তাহার অবশিষ্ট বায়ুই

(१) क्वचित्तु केवलं वनलेखयेति पदं दृश्यते।

(२)...वृष...। (३)...उल्लसन...। (४) आकम्पितकमलैः नमेरुकुसुममालापांशुवाहिभिः।

কৈলাসমারুতৈরভিনন্দ্যমানো গত্বা চ তং প্রদেশং, (ছ) সর্বতো মরকতহরিতৈঃ, (জ) হারি-হারীত-রুতি-রমণীয়ৈঃ, (ঝ) ভ্রমদ্ভৃঙ্গরাজ-নখর-জর্জরিত-জরঠ-কুড্মলৈঃ,(ঞ) উন্মদ-কোকিল-কুল-কবলীকৃত সহকার-কোমলাগ্রপল্লবৈঃ, (১) (ট) উন্মদ-ষট্-চরণ-চক্রবাল-বাচালিত-বিকচ-চূত-কলিকৈঃ, (ঠ) অচকিত-চকোর-চঞ্চু (২) চুম্বিত-মরিচাঙ্কুরৈঃ, (ড) চম্পক-পরাগ-পুঞ্জ-পিঞ্জর-কপিঞ্জল-জগ্ধ-পিপ্পলীফলৈঃ, (ঢ) ফল-ভর নিকর নিপীড়িত-(৩) দাড়িম-নীড়-প্রসূত-কলবিঙ্কৈঃ, (ণ) প্রক্রীড়িত-

---

ভুক্তেভ্যঃ শেষৈরবশিষ্টৈঃ। আজ্ঞাদিভিরানন্দকরৈঃ। তথা পুণ্যৈঃ দেবস্পর্শিত্বাৎ পবিত্রৈঃ কৈলাসমারুতৈঃ কৈলাসাচলস্পর্শিবায়ুভিঃ, অভিনন্দ্যমানঃ সেব্যমানশ্চন্দ্রাপীড়ঃ। তং প্রদেশং গীতোৎপত্তিস্থানম্।

(জ) সর্বত ইতি। সর্বতঃ সমন্তাৎ মরকতবৎ তদাখ্যমণিবৎ হরিতৈঃ শ্যামবর্ণৈঃ। ইত্যারভ্য তৃতীয়াবহুবচনান্তপদানি পাদপৈরিতি বক্ষ্যমাণস্য বিশেষণানি। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

(ঝ) হারীতি। হারিণাং মনোহরাণাং হারীতানাং পক্ষিবিশেষাণাং রুতিভিঃ কলরবৈ রমণীয়ৈঃ।

(ঞ) ভ্রমদিতি। ভ্রমতাং ভৃঙ্গরাজানাং ভ্রমরাণাং নখরৈর্জর্জরিতানি ক্ষতানি জরঠানি পরিণতানি কুড্মলানি মুকুলানি যেষাং তৈঃ। "ভৃঙ্গরাজো মধুকরে" ইত্যাদি হৈমঃ।

(ট) উন্মদেতি। উন্মদেন মদমত্তেন কোকিলকুলেন কবলীকৃতানি ভক্ষিতানি সহকারাণাম্ আম্রতরূণাং কোমলানি অগ্রপল্লবানি কিসলয়াগ্রাণি যেষু তৈঃ।

(ঠ) উন্মদেতি। উন্মদেন ষট্চরণচক্রবালেন ভ্রমরমণ্ডলেন বাচালিতা মুখরীকৃতাঃ বিকচাঃ প্রস্ফুটাঃ চূতকলিকা যেষু তৈঃ।

(ড) অচকিতেতি। অচকিতৈরত্রস্তৈঃ চকোরৈঃ পক্ষিভিঃ কর্তৃভিঃ, চঞ্চুভিঃ করণৈঃ চুম্বিতা ভক্ষণায় স্পৃষ্টা মরিচাঙ্কুরা যেষু তৈঃ। অত্র চকারাণামসকৃৎসাম্যাদ্বৃত্ত্যনুপ্রাসোঽলঙ্কারঃ।

(ঢ) চম্পকেতি। চম্পকানাং পুষ্পাণাং পরাগপুঞ্জেন অঙ্গেষু তৎপতনেনেত্যর্থঃ পিঞ্জরাঃ পিঙ্গলবর্ণা যে কপিঞ্জলাস্তিত্তিরিপক্ষিণস্তৈর্জগ্ধানি ভক্ষিতানি পিপ্পলীফলানি যেষু তৈঃ। অত্রাপি বৃত্ত্যনুপ্রাসঃ।

(ণ) ফলেতি। ফলানাং ভরনিকরেণ ভারসমূহেন নিপীড়িতানাং দাড়িমানাং বৃক্ষাণাং নীড়েষু তত্রস্থকুলায়েষু প্রসূতা চটকীভির্জনিতাঃ কলবিঙ্কাশ্চটকা যেষু তৈঃ। বৃত্ত্যনুপ্রাসঃ।

বহিত হইতেছিল। (জ) চন্দ্রাপীড় সেই স্থানে যাইয়া জনশূন্য একটি শিবালয় দেখিতে পাইলেন; নানাবিধ বৃক্ষে সেই শিবালয়টি পরিবেষ্টিত ছিল; সেই বৃক্ষগুলি সকল দিকেই মরকতমণির ন্যায় হরিতবর্ণ ছিল, (ঝ) মনোহর হারিলপক্ষীর রবে সুন্দর হইয়াছিল, (ঞ) ভ্রমরগণ বিচরণ করতঃ নখদ্বারা পরিণত কলিকাগুলিকে ক্ষত-বিক্ষত করিতেছিল, (ট) উন্মত্ত কোকিলগণ আমের কোমল পল্লবগুলি ভক্ষণ করিতেছিল; (ঠ) উন্মত্ত ভ্রমরগণ ঝঙ্কার করিয়া প্রস্ফুটিত আমের কলিকাগুলিকে মুখর করিতেছিল; (ড, চকোর পক্ষিগণ নির্ভয়চিত্তে চঞ্চুদ্বারা মরিচের অঙ্কুর ভক্ষণ করিতেছিল; (ঢ) তিত্তিরিপক্ষিগণ চম্পক-পুষ্পের রেণুতে পিঙ্গলবর্ণ হইয়া পিপুল ফল ভক্ষণ করিতেছিল; (ণ) ফলভরে

---

(১) সহকারকোরকৈঃ। (২)...চকোরচুম্বিত...। (৩)...পীড়িত...।

कपिकुल-(१) करतल-ताड़न-तरलित-ताड़ीपुटैः, (त) अन्योन्य-कलह-कुपित-(२) कपोत-पोत-पक्ष-(३) पाली-पातित-कुसुमैः, (थ) कुसुम-रजोराशि-शार-सारिका-श्रित-शिखरैः, (४) (द) शुक-शत-मुख-नख शिखर-शकलित-फल स्फीतैः, (ध) जलधर-जल-लुब्ध-(५) विप्रलब्ध मुग्ध चातक-ध्वान-मुखरित-तमाल-षण्डैः, (न) इभ-कलभकोमून-पल्लव-वेल्लित लवली-वलयैः, (प) आलोयमान-(६) नव-यौवन-

(त) प्रक्रीड़ितेति। प्रक्रीड़ितस्य खेलाप्रवृत्तस्य कपिकुलस्य वानरगणस्य करतलताड़नैः तरलितानि कम्पितानि ताड़ीपुटानि तालीपत्राणि येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(थ) अन्योन्येति। अन्योन्यं परस्परं कलहकुपितानां कपोतपोतानां पारावतशावकानां पक्षपालीभिः पतत्रश्रेणीभिः पातितानि कुसुमानि येषां तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(द) कुसुमेति। कुसुमानां रजोराशिना परागपुञ्जेन शाराभिर्विचित्राभिः रञ्जिताभिरित्यर्थः सारिकाभिः शुकस्त्रीभिः आश्रितानि शिखराणि उपरिभागा येषां तैः। अत्रापि राशिशारेति स्वरूपतः साम्याद्नुप्रासो-ऽलङ्कारः।

(ध) शुकेति। शुकशतस्य शुकपक्षिसमूहस्य मुखैः नखशिखरैरग्रैश्च शकलितानि खण्डीकृतानि यानि फलानि तैः स्फीताः पूर्णास्तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(न) जलेति। जलधरजलेषु मेघसलिलेषु लुब्धा अभिलाषिणः नीलत्वसाम्यात् तमालतरुष्वेव मेघ-भ्रमेण प्रथमं तदीयजललब्धा इत्यर्थः अनन्तरञ्च विप्रलब्धा जललाभाभावेन वञ्चिता ये मुग्धचातकास्तेषां ध्वानेन रवेण मुखरितं तमालषण्डं तमालतरुसमूहो येषु तैः। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कार-ध्वनिः, वृत्त्यनुप्रासश्चालङ्कारः।

(प) इभेति। इभकलभकैर्हस्तिशावकैस्तन्नूनानि छिन्नानि पल्लवानि यस्य तत्, अतएव वेल्लितं कम्पितं लवलीवलयं लवलीतरुमण्डलं येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

অবনত দাড়িম্ব বৃক্ষে যে সকল বাসা ছিল, তাহাতে চটকপক্ষিণীগণ চটকশাবক প্রসব করিয়াছিল, (ত) বানরগণ খেলায় প্রবৃত্ত হইয়া হস্তের তাড়নে তাড়িয়াতের পাতা কাঁপাইতেছিল; (থ) কপোতশাবকগণ কলহে পরস্পর কুপিত হইয়া পক্ষশ্রেণীর তাড়নে বৃক্ষ হইতে পুষ্প নিপাতিত করিতেছিল; (দ) সারিকাগণ পুষ্পের রেণুরাশিতে রঞ্জিত হইয়া বৃক্ষের উপরে বসিয়াছিল; (ধ) শুকপক্ষিগণ মুখ ও নখদ্বারা যে ফল খণ্ড খণ্ড করিয়া ফেলিয়াছিল, তাহাতে সে বনটি পরিপূর্ণ হইয়াছিল; (ন) মুগ্ধ চাতকপক্ষিগণ তমালবৃক্ষগুলিকে মেঘ মনে করিয়া বৃষ্টির লোভে আসিয়াছিল, কিন্তু তাহাতে বঞ্চিত হইয়া উচ্চরবে তমাল-বন মুখরিত করিতেছিল; (প) হস্তিশাবকগণ পল্লব ছিঁড়িয়া খাইবার সময়ে নোয়াড়ি (লোয়াইল) গাছগুলি কাঁপিতে-

(१)...चपलकपिकुल...। (२) अन्योन्यकुपित...। (३)...पीतसंहतिलोलपक्ष...।
(४)...सारिकाश्रित...। (५)...जलधरलुब्ध। (६) तमालीकलाल...।

मद-मत्त-(१) पारावत-पक्ष-क्षेप-पर्य्यस्त-कुसुम-स्तबकैः, (२) (फ) तनु-पवन-कम्पित-कोमल-कदली-दल-वीजितैः, (ब) अविरल-फल-निकरावनत-नारिकेर-वनैः, (भ) अकठोर-पत्र-पुट-पूग-(३) विटपि-परिवृतैः, (म) अनिवारित-विहङ्ग-तुण्ड-खण्डित-पिण्डखर्जूर-जालकैः, (य) मद-मुखर-मयूरी-मधुर-रव-विराविता‌न्तरैः, (४) (र) अकलित कलिका-कलाप-दन्तुरैः, (५) (ल) अन्तरान्तरा कैलास-तरङ्गिणी-तरङ्गित-सिकतिल-तल-भूमिभागैः, (व) वन-देवता-करतल-निवह-निभमलक्तक-जल-लव-सिक्तमिव किसलयनिकरमतिसृकु-

(फ) आलीयेति। आलीयमानानां निभृतस्थितानां नवयौवनमदमत्तानां पारावतानां कपोतानां पक्षक्षेपैः पर्य्यस्ता विक्षिप्ताः कुसुमस्तबका येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(ब) तन्विति। तनुपवनेन मन्दमारुतेन कम्पितैः कोमलैः कदलीदलैः वीजिताः कृतव्यजनास्तैः।

(भ) अविरलेति। अविरलं घनं फलनिकरेण अवनतानां नारिकेराणां नारिकेलतरूणां वनं येषु तैः।

(म) अकठोरेति। अकठोराणि कोमलानि पत्रपुटानि येषां तादृशैः पूगविटपिभिर्गुवाकवृक्षैः परिवृतास्तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(य) अनीति। अनिवारितैः केनाप्यनिषिद्धैः विहङ्गैः पक्षिभिः कर्तृभिः, तुण्डैश्चञ्चुभिः करणैः खण्डितं खण्डखण्डीकृत्य भक्षितं पिण्डखर्ज्जूराणां जालकं समूहो येषु तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(र) मदेति। मदेन मुखराणां शब्दायमानानां मयूरीणां मधुररवैर्विरावितानि सञ्जातशब्दानि अन्तराणि मध्यदेशा येषां तैः। वृत्त्यनुप्रासः।

(ल) अकेति। अकलितानां अप्रस्फुटितानां कलिकानां कलापेन समूहेन दन्तुरा विषमास्तैः।

(व) अन्तरेति। अन्तरान्तरा मध्ये मध्ये कैलासतरङ्गिणीनां कैलासाचलस्थनदीनां तरङ्गिताः सञ्जाततरङ्गा अतएव सिकतिला वालुकान्वितास्तलभूमिभागा येषां तैः। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः। सिकता एषां सन्तीति सिध्मादित्वादिलच्प्रत्ययः।

(श) वनेति। वनदेवतानां करतलनिवहनिभं रक्ततासाम्यात् पाणितलसमूहतुल्यं, अतएवालक्तक

ছিল; (ফ) নীরবে অবস্থিত কপোতগণ নব যৌবনের মদে মত্ত হইয়া পক্ষের তাড়নে পুষ্পগুচ্ছ সকল ফেলিয়া দিতেছিল; (ব) কোমল কদলীপত্রগুলি অল্প অল্প বায়ুতে সঞ্চালিত হইয়া বাতাস করিতেছিল; (ভ) ফলভারে অবনত নারিকেল বৃক্ষসমূহ ঘন ঘন ভাবে রহিয়াছিল; (ম) কোমল-পত্র-সমন্বিত গুবাকবৃক্ষশ্রেণীতে সেই বনটি পরিবেষ্টিত ছিল; (য) পক্ষিগণ অবাধে চঞ্চুদ্বারা খণ্ড খণ্ড করিয়া পিণ্ডখর্জ্জুর ভক্ষণ করিতেছিল; (র) মত্ততাবশতঃ শব্দায়মান ময়ূরীগণের মধুর শব্দে সেই বনের অভ্যন্তরদেশ শব্দিত হইতেছিল; (ল) অপ্রস্ফুটিত কলিকাসমূহে বৃক্ষগুলিকে অসমান করিয়াছিল; (ব) মধ্যে মধ্যে কৈলাসপর্ব্বতস্থ নদীর তরঙ্গ আসিয়া পতিত হওয়ায় নীচের স্থানগুলি বালুকাময় হইয়াছিল; (শ) সেই বৃক্ষগুলি

(१)...यौवनमत्त...। (२)...पर्य्यस्तस्तबकैः। (३)...पूग, पूगैः...।
(४)...विराजितान्तरैः। (५) आकलित...दन्तुरितैः।

মানমুদ্বহদ্ভিঃ, (ষ) গ্রন্থিপর্ণ-গ্রাস-মুদিত-(১) চমরীকুল-নিষেবিত-মূলৈঃ, (স) কর্পূরাগুরুপ্রায়ৈঃ, (হ) ইন্দ্রায়ুধৈরিব ঘনাবস্থানৈঃ, (ক্ষ) কুমুদৈরিবাদত্ত-দিনকর-কর-প্রবেশ-(২) শিশিরাভ্যন্তরৈঃ, (ক) দাশরথিবলৈরিবাঞ্জন-নীল-নল-পরিগত-প্রান্তৈঃ, (খ) প্রাসাদৈরিব সপারাবতৈঃ, (গ) ভবনতাপসৈরিব সন্নিহিত-

---

জলানাং লবৈর্বিন্দুভিঃ সিক্তমিব স্থিতং, অতিসুকুমারং নিতান্তকোমলং কিসলয়নিকরং পল্লবসমূহং উদ্বহদ্ভির্ধারয়দ্ভিঃ। অত্র আর্থোপমাক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ষ) গ্রন্থীতি। গ্রন্থিপর্ণানাং শুক্লাখ্যবৃক্ষবিশেষাণাং গ্রাসেন ভক্ষণেন মুদিতং আনন্দিতং যচ্চমরীকুলং হরিণবিশেষগণস্তেন নিষেবিতানি অধিষ্ঠিতানি মূলানি যেষাং তৈঃ।

(স) কর্পূরেতি। কর্পূরা অগুরবশ্চ বৃক্ষাঃ প্রায়েণ বাহুল্যেন যেষু তৈঃ।

(হ) ইন্দ্রেতি। ইন্দ্রায়ুধৈঃ শক্রধনুর্ভিরিব, ঘনং নিবিড়ং অবস্থানং যেষাং তৈঃ, অন্যত্র তু ঘনেষু মেঘেষু অবস্থানং যেষাং তৈঃ। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ।

(ক্ষ) কুমুদৈরিতি। কুমুদৈঃ কৈরবৈরিব, অদত্তেন দিনকরকরপ্রবেশেন সূর্য্যকিরণপাতেন হেতুনা শিশিরং শীতলং অভ্যন্তরং যেষাং তৈঃ, পাদপপক্ষে ঘনাবস্থানেন পত্রপল্লবৈরুপরিভাগাচ্ছাদনাৎ, কুমুদপক্ষে তু সঙ্কোচেন প্রবেশাসম্ভবাদিতি ভাবঃ। পূর্ণোপমা।

(ক) দাশেতি। দাশরথে রামচন্দ্রস্য বলৈঃ সৈন্যৈরিব, অঞ্জনবৎ কজ্জলবৎ নীলাঃ শ্যামলাঃ যে নলাস্তদাখ্যতৃণবিশেষাস্তৈঃ পরিগতাঃ পরিবেষ্টিতাঃ প্রান্তাঃ শেষভাগা যেষাং তৈঃ অন্যত্র তু আঞ্জনঃ অঞ্জনাপুত্রো হনুমান্ নীলো নলশ্চ বানরবিশেষাঃ তৈঃ পরিগতঃ পরিগৃহীতঃ প্রান্তঃ অগ্রভাগো যেষাং তৈঃ। পূর্ণোপমা।

(খ) প্রাসাদৈরিতি। প্রাসাদৈরট্টালিকাভিরিব, পারাবতৈঃ বানরৈঃ কপোতৈশ্চ সহ বিদ্যমানাস্তৈঃ। পূর্ণোপমা। 'পারাবতঃ কলরবে শৈলে মর্কটতিন্দুকে" ইতি বিশ্বঃ।

(গ) ভবনেতি। ভবনতাপসৈর্গৃহস্থতপস্বিভিরিব, সন্নিহিতা নিকটবর্ত্তিনঃ বেত্রাণি বেতসলতাঃ

বনদেবতাদিগের পাণিতলসমূহের ন্যায় অত্যন্ত কোমল পল্লবসমূহ ধারণ করিতেছিল এবং সেগুলি যেন আলতার রসে সিক্ত ছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল ; (ষ) গাঁঠিয়াল বৃক্ষ ভক্ষণ করিয়া চমরী হরিণীগণ হৃষ্টচিত্তে মূলের উপরে বসিয়াছিল ; (স) আর সেই বৃক্ষসমূহের মধ্যে কর্পূর ও অগুরু বৃক্ষই অধিকসংখ্যক ছিল ; (হ) ইন্দ্রধনু যেমন মেঘের উপরে অবস্থান করে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন ঘন ঘন ভাবে অবস্থান করিতেছিল ; (ক্ষ) সঙ্কোচবশতঃ সূর্য্যরশ্মি প্রবেশ করিতে না দেওয়ায় কৈরবসমূহের অভ্যন্তর যেমন শীতল থাকে, তেমন পত্র-পল্লবে উপরিভাগ আবৃত থাকাবশতঃ সূর্য্যরশ্মি প্রবেশ করিতে না দেওয়ায় সেই বৃক্ষগুলির ভিতরও শীতল ছিল ; (ক) রামচন্দ্রের সৈন্যগণের অগ্রভাগ যেমন হনুমান্, নল ও নীল কর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত হইত, সেই বৃক্ষগুলির প্রান্তভাগও তেমন কজ্জলের ন্যায় নীলবর্ণ নলে পরিবেষ্টিত ছিল ; (খ) অট্টালিকাতে যেমন কপোতগণ থাকে, সেই বৃক্ষসমূহেও তেমন

---

(১) গ্রন্থিপর্ণকগ্রাসসমুদিত...। (২)...দিনকরপ্রবেশ...।

বেত্রাসনৈঃ (গ) রুদ্রৈরিব নাগলতাবদ্ধপরিকরৈঃ, (ঘ) উদধি-কূল-পুলিনৈরিব নিরন্তরোদ্ভিন্ন-প্রবাল-লতাঙ্কুর-জালকৈঃ, (ঙ) অভিষেকসলিলৈরিব সর্বৌষধি-কুসুম-ফল-কিসলয়-সনাথৈঃ, (চ) আলেখ্যগৃহৈরিব বহু-বর্ণ-চিত্র-পত্র-শকুনি-

---

আসনাঃ প্রিয়সালকবৃক্ষাশ্চ যেষাং তৈঃ, অন্যত্র তু সন্নিহিতানি বেত্রাসনানি বেতসনির্ম্মিতাসনানি যেষাং তৈঃ। পূর্ণোপমা। বরিষ্ঠাসকানামাসনপ্রয়োজনাভাবান্নবনপদম্।

(ঘ) রুদ্রৈরিতি। রুদ্রৈরেকাদশরুদ্রৈরিব, নাগলতাভিস্তাম্বূলবল্লীভির্বদ্ধঃ পূর্ণঃ পরিকরো মধ্যভাগো যেষাং তৈঃ, অন্যত্র তু নাগলতাভির্লতাবল্লম্বমানৈঃ সর্পৈর্বদ্ধাঃ পরিকরাঃ কটিদেশা যেষাং তৈঃ। পূর্ণোপমা। 'তাম্বূলবল্লী তাম্বূলী নাগবল্ল্যপ্যথ দ্বয়োরপি।" ইত্যভিধানচিন্তামণিঃ।

(ঙ) উদধীতি। উদধিকূলপুলিনৈরিব, নিরন্তরং ঘনং উদ্ভিন্নং প্রকাশিতং প্রবালানাং পল্লবানাং লতাঙ্কুরাণাঞ্চ জালকং সমূহো যেষু তৈঃ, অন্যত্র তু নিরন্তরং সর্বদা উদ্ভিন্নং তরঙ্গাঘাতেন উত্থিতং প্রবাললতানাং বিদ্রুমমণিমূর্তীনাং অঙ্কুরজালকং ক্ষুদ্রক্ষুদ্রখণ্ডসমূহো যেষু তৈঃ। পূর্ণোপমা। "প্রবালোঽস্ত্রী কিসলয়ে বীণাদণ্ডে চ বিদ্রুমে।" ইতি মেদিনী।

(চ) অভীতি। অভিষেকসলিলৈর্দেবতাদীনাং স্নানীয়জলৈরিব, সর্বৌষধীনাং সর্বপ্রকারফলপাকান্তলতানাং কুসুমৈঃ ফলৈঃ কিসলয়ৈশ্চ সনাথাঃ সহিতাস্তৈঃ, অন্যত্র তু "মুরামাংসী বচা কুষ্ঠং শৈলেয়ং রজনীদ্বয়ং। শঠী চম্পকমুস্তঞ্চ সর্বৌষধিগণঃ স্মৃতঃ।" ইতি লিখিতস্বল্পতরবচনপরিগণিতদ্রব্যগণাত্মকসর্বৌষধিভিঃ কুসুমৈঃ ফলৈঃ কিসলয়ৈশ্চ তত্তদ্বিধিবোধিতৈঃ সনাথানি সহিতানি তৈঃ। পূর্ণোপমা।

(ছ) আলেখ্যেতি। আলেখ্যগৃহৈশ্চিত্রশালাভিরিব, বহুবর্ণৈর্নীলপীতাদিভিঃ চিত্রাণি আশ্চর্য্যাণি পত্রাণি পক্ষা যেষাং তাদৃশানাং শকুনীনাং পক্ষিণাং শতেন সমূহেন শোভিতাস্তৈঃ, অন্যত্র তু বহুবর্ণৈর্নীলপীতাদিচিত্রকরণোপকরণৈঃ চিত্রা আলেখ্যভূতা যে পত্রশকুনয়ঃ হস্ত্যশ্বাদিবাহনানি পক্ষিণশ্চ তেষাং শতেন সমূহেন শোভিতৈঃ। পূর্ণোপমা।

বানরগণ ছিল; (গ) গৃহস্থ তপস্বিগণের নিকটে যেমন বেত্রাসন থাকে, সেই বৃক্ষগুলির নিকটেও তেমন বেতস ও পিয়াসাল বৃক্ষ ছিল; (ঘ) রুদ্রগণের কটিদেশ যেমন লতার ন্যায় লম্বমান সর্পদ্বারা বদ্ধ থাকে, সেই বৃক্ষগুলির মধ্যস্থানও তেমন তাম্বূললতায় বদ্ধ (পরিপূর্ণ) ছিল; (ঙ) সমুদ্রতীরের নিকটবর্ত্তী চড়াতে যেমন তরঙ্গের আঘাতে সর্ব্বদাই শ্রেণীবদ্ধভাবে প্রবালমণির খণ্ডসমূহ আসিয়া উত্থিত হয়, সেইরূপ সেই বৃক্ষসমূহের মধ্যেও পল্লব ও লতার অঙ্কুর ঘন ঘন ভাবে উৎপন্ন হইয়াছিল; (চ) দেবতা ও রাজগণের স্নানীয় জল যেমন সর্ব্বৌষধি (মুরামাংসী প্রভৃতি), পুষ্প, ফল ও পল্লব সংযুক্ত থাকে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন সর্ব্বৌষধির (ফল পাকিলে যে যে লতা মরিয়া যায়, সেই সকল লতার) পুষ্প, ফল ও পল্লবসংযুক্ত ছিল; (ছ) চিত্রশালা যেমন নানাবিধ বর্ণদ্বারা চিত্রিত হস্তি-অশ্ব প্রভৃতি বাহনের এবং পক্ষীর চিত্রসমূহে শোভিত থাকে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন বহুবর্ণে চিত্রিত-পক্ষ-সমন্বিত

शत-शोभितः, (१) (छ) कुरुभिरिव भारद्वाजोपसेवितैः, (२) (ज) महासमर-मुखैरिव पुन्नाग-समाकृष्ट-शिलीमुखैः, (झ) महाकरिभिरिव प्रलम्ब-बाल-पल्लव-स्पृष्ट-भूतलैः, (ञ) अप्रमत्तपार्थिवैरिव पर्य्यन्तावस्थित बहु गुल्मकैः, (ट) दंशितैरिव भ्रमर-सङ्घात-(३) कवचावृतकायैः, (ठ) प्रमाणाभिमुखै-रिव (४) वानर-कराङ्गुलि-स्पृष्ट-गुञ्जैः, (ड) अवनिपालशयनैरिव सिंह-

(ज) कुरुभिरिति। कुरुभिर्दुर्य्योधनादिभिरिव, भारद्वाजेन व्याघ्राटपक्षिणा द्रोणाचार्य्येण च उपसेविते राश्रितैः। पूर्णोपमा।

(झ) महेति। महासमरस्य मुखैः प्रारम्भैरिव, पुन्नागैर्नागकेशरपुष्पैः समाकृष्टाः स्वमधुप्रलोभने-नानीताः शिलीमुखा भ्रमरा येषु तैः, अन्यत्र तु पुन्नागैः पुंहस्तिभिः समाकृष्टाः समाकृष्य नीताः शिलीमुखा बाणा येषु तैः, तत्र बाणानामतिप्रचुरत्वादेव हस्तिभिर्नयनं अतएव महासमरत्वं ज्ञमिति भावः। पूर्णोपमा।

(ञ) महेति। महाकरिभिर्हस्तीन्द्रैरिव, प्रलम्बैर्लम्बमानैः बालपल्लवैर्नूतनकिसलयैः स्पृष्टानि भूत-लानि अधोदेशा येषां ते, अन्यत्र तु प्रलम्बैर्दीर्घैः बालपल्लवैर्विस्तृतलाङ्गूलैः स्पृष्टानि भूतलानि येषां तैः। पूर्णोपमा। "बालोऽश्वे ऽश्वेभपुच्छयो"रिति हेमचन्द्रः।

(ट) अप्रेति। अप्रमत्ताः सावधाना ये पार्थिवा राजानस्तैरिव, पर्य्यन्ते प्रान्तभागे राज्यसीमान्ते च अवस्थिता बहवो गुल्माः स्तम्बाः सेनानिवेशाश्च येषां तैः। पूर्णोपमा। "गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च" इत्यमरः।

(ठ) दंशितैरिति। दंशितैर्युद्धसज्जैर्जनैरिव, भ्रमरसङ्घाता मधुलोभेनोपविष्टभ्रमरसमूहाः कवचानीव तैरावृतकायानि:, अन्यत्र तु भ्रमरसङ्घातवत् भ्रमरसमूहवत कवचैः तद्वत्कृष्णवर्णैर्वर्मभिरित्यर्थः आवृताः काया देहा येषां तैः, पूर्णोपमा। "सन्नद्धो वर्म्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः।" इत्यमरः।

(ड) प्रमाणेति। प्रमाणाभिमुखैः सुवर्णादिमापनप्रवृत्तैर्जनैरिव, वानरैः कपिभिः कराङ्गुलिभिः करस्थैः

পক্ষিসমূহে শোভিত ছিল; (জ) দুর্য্যোধনপ্রভৃতি কুরুবংশীয়গণ যেমন দ্রোণাচার্য্যকর্ত্তৃক সেবিত ছিলেন, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন ভারুইপক্ষিকর্ত্তৃক সেবিত ছিল; (ঝ) মহাযুদ্ধের প্রারম্ভে যেমন হাতীগুলি বাণের গাড়ী টানিয়া আনে, সেই বৃক্ষগুলিও তেমন নাগকেশর ফুলের গন্ধে ভ্রমরদিগকে টানিয়া আনিতেছিল; (ঞ) বড় বড় হস্তীর বৃহৎ লাঙ্গুল যেমন ভূতল স্পর্শ করে, সেই বৃক্ষসমূহের নূতন পল্লবগুলিও তেমন ঝুলিয়া পড়িয়া ভূতল স্পর্শ করিয়াছিল; (ট) সাবধান রাজগণের রাজ্যের সীমান্তে যেমন বহুতর সেনানিবেশ (কেল্লা) থাকে, সেই বৃক্ষসমূহের প্রান্তভাগেও তেমন বহুতর শাখা-পত্র-বিহীন বৃক্ষ ছিল; (ঠ) যুদ্ধে সজ্জিত বীরগণের দেহ যেমন ভ্রমরসমূহের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ বর্ম্মদ্বারা আবৃত থাকে, সেই বৃক্ষ-সমূহের সকল স্থানও তেমন কবচের ন্যায় ভ্রমরসমূহদ্বারা আবৃত ছিল; (ড) সুবর্ণ মাপিতে প্রবৃত্ত লোক যেমন বানরের ন্যায় হস্তের অঙ্গুলীদ্বারা গুঞ্জা (কুঁচ) স্পর্শ করে, সেইরূপ সেই

(१)…संशोभितैः। (२) भारद्वाजद्विजोपसेवितैः। (३)…सम्पात…।

(४) प्रमाणाभिमुखैरिव।

पादाङ्किततलैः, (१) (ढ) आरब्धपञ्चतपःक्रियैरिवोच्छिखशिखिमण्डलपरिवृतैः, (ण) दीक्षितैरिव कृतकृष्णसारविषाणकण्डूयनैः, (त) जरद्गृहस्थमुनिभिरिव जटालबालकमण्डलधरैः, (२) (थ) इन्द्रजालिकैरिव दृष्टिहारिभिः, (द) पादपैः परिवृतं चन्द्रप्रभनाम्नस्तस्य सरसः पश्चिमे तीरे

स्पृष्टा गुञ्जा येषु तैः, अन्यत्र तु वानरवत् कराङ्गुलिभिः स्पृष्टा गुञ्जा यैस्तैः। सुवर्णादिमापनसमर्थं सर्वैरेव गुञ्जा गृह्यते। पूर्णोपमा।

(ढ) अवनीति। अवनिपालशयनैः राजशय्याभिरिव, सिंहानां पादैश्चरणचिह्नैः अङ्कितानि तलानि निम्नभूतलानि येषां तैः, अन्यत्र तु सिंहानां पादैरिव पादैः पर्य्यङ्कपादैः अङ्कितं तलं अधोवर्त्ती पर्य्यङ्को येषां तैः। पूर्णोपमा।

(ण) आरब्धेति। आरब्धा पञ्चतपःक्रिया पञ्चाग्निसाधनकार्य्यं यैस्तैस्तपस्विभिरिव स्वासनानां चतुर्षु कोणेषु चत्वारः प्रज्वलितवह्नयः, उपरि च सूर्य्य इत्यमवस्थिता ये तपस्यन्ति ते पञ्चतपस उच्यन्ते तैरिवेत्यर्थः, उच्छ्रिताः शिखाश्चूडा अर्च्चिषश्च यस्य तेन शिखिमण्डलेन मयूरगणेन अग्निसमूहेन च परिवृतास्तैः। पूर्णोपमा।

(त) दीक्षितैरिति। दीक्षितैर्यज्ञे सञ्जातदीक्षैर्यजमानैरिव, कृतं कृष्णसारैर्हरिणविशेषैः कर्त्तृभिः विषाणैः शृङ्गैः करणैः कण्डूयनं येषां तैः अन्यत्र तु कृतं कृष्णसारविषाणैः कण्डूयनं गात्रकण्डूया यैस्तैः, यज्ञे दीक्षितानां कृष्णसारशृङ्गे गात्रकण्डूयनविधानादिति भावः। तथा च श्रुतिः "कृष्णविषाणया कण्डूयते।" कात्यायनश्च "कृष्णविषाणां त्रिवलिं पञ्चवलिं दीक्षितानां बध्नीत तया कण्डूयनम्।" पूर्णोपमा।

(थ) जरदिति। जरन्तो वृद्धा ये गृहमुनयो गृहस्थास्तापसास्तैरिव, जटासु मूलेषु आलबालकानां जलधाराणां मण्डलं समूहं धरन्तीति तैः, अन्यत्र तु जटालं जटाविशिष्टं बालकमण्डलं शिष्यसमूहं धरन्ति परिपालयन्तीति तैः। तेषां पत्नीसहिततया बालकोत्पत्तिसम्भव इति बोध्यम्। पूर्णोपमा। "जटा लग्नकचे मूले मांस्यां स्त्रियां पुनर्जटौ।" इति मेदिनी।

(द) इन्द्रेति। इन्द्रजालिकैर्जनैरिव, दृष्टिहारिभिः सुन्दरत्वान्नयनाकर्षिभिः, अन्यत्र तु स्वप्रभावालोकानां यथायथदृष्टिशक्तिलोपिभिः। पूर्णोपमालङ्कारः।

বৃক্ষসমূহের মধ্যেও বানরগণ হস্তের অঙ্গুলীদ্বারা গুঞ্জা (কুঁচ) স্পর্শ করিতেছিল; (ঢ) রাজগণের শয্যার নীচের পর্য্যঙ্ক যেমন সিংহের পায়ের ন্যায় পায়াসংযুক্ত থাকে, সেই বৃক্ষসমূহের নীচের স্থানগুলিও তেমন সিংহের পায়ের চিহ্নে চিহ্নিত ছিল; (ণ) যাঁহারা পঞ্চাগ্নিসাধনরূপ তপস্যা আরম্ভ করেন, তাঁহারা যেমন প্রজ্বলিত অগ্নিসমূহে পরিবেষ্টিত থাকেন, সেই বৃক্ষসমূহও তেমন চূড়াসমন্বিত ময়ূরগণে পরিবেষ্টিত ছিল; (ত) যজ্ঞে দীক্ষিত হইয়া যজমানগণ যেমন কৃষ্ণসারের শৃঙ্গদ্বারা গাত্র-কণ্ডূয়ন করেন, সেই বৃক্ষসমূহেও তেমন কৃষ্ণসারগণ শৃঙ্গদ্বারা কণ্ডূয়ন করিতেছিল; (থ) বৃদ্ধ গৃহস্থ মুনিগণ যেমন জটাধারী বালকগণকে পরিপালন করেন, সেই বৃক্ষসমূহও তেমন মূলদেশে আলবাল ধারণ করিতেছিল; (দ) ঐন্দ্র-

(१)·· अङ्कितमञ्चतलैः। (२) दीर्घजटा,···कमण्डलुधरैः।

कैलासपादस्य ज्योत्स्नावदातया प्रभया धवलयतस्तं प्रदेशं तल-(१) भागसन्नि-विष्टं भगवतः शूलपाणेः शून्यं (२) सिद्धायतनमपश्यत्। (ध)

तच्च पवनोद्धूतैः (३) इतस्ततः समापतद्भिः केतकीगर्भधूलिपटलैः (४) धवली-क्रियमाणकायः पशुपतिदर्शनहेतोर्बलादिव प्रतिपाद्यमानो भस्मव्रतम्, आयतन-प्रवेशपुण्यैरिव परिगृह्यमाणः प्रविश्याद्राक्षीत् (न) चतुःस्तम्भस्फटिकमण्ड-पिकातलप्रतिष्ठितम्, अचिरोद्धृतैरार्द्रार्द्रैर्दलशिखर-गलज्जलबिन्दुभिः (५) ऊर्ध्व-

---

(ध) पादपैरिति। पादपैरुक्तविशेषणविशिष्टैस्तरुभिः परिवृतं। तस्य सरसः पश्चिमे तीरे ज्योत्स्नावत्-अवदातया श्वेतया प्रभया निजदीप्त्या तं प्रदेशं धवलयतः धवलं कुर्वतः, चन्द्रप्रभनाम्नः कैलासपादस्य कैलास-प्रत्यन्तपर्वतस्य तलभागसन्निविष्टं अधोदेशस्थितं भगवतः शूलपाणेः शिवस्य, शून्यं लोकरहितं। लोका यत्र सिद्धिं लभन्ते तत् सिद्धायतनम्।

(न) तच्चेति। तदायतनं प्रविश्य च त्र्यम्बकमद्राक्षीदित्यन्वयः। पवनोद्धूतैर्वायुपरिचालितैः। केतकी-गर्भधूलिपटलैः केतकीकुसुमान्तर्गतरेणुसमूहैः, धवलीक्रियमाणः कायो देहो यस्य सः, अतएव पशुपतिदर्शन-हेतोः केतकीगर्भधूलिपटलैरेव बलात् भस्मव्रतं अङ्गेषु भस्मधारणनियमं प्रतिपाद्यमानः कार्य्यमाण इव सन्। "विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया। पूजितोऽपि महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः।" इत्याह्निकतत्त्व-धृतवचनतात्पर्य्यादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा तदायतनप्रवेशपुण्यैः परिगृह्यमाण आलिङ्ग्य-मान इव च सन्। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) चतुरेति। चत्वारः स्तम्भाः स्थूणा यस्याः सा चतुःस्तम्भा या स्फटिकमण्डपिका स्फटिकमयः क्षुद्र-मण्डपस्तस्यास्तले अधोभागे प्रतिष्ठितं। त्र्यम्बकमित्यस्य विशेषणमेतत्। अचिरोद्धृतैरतएव आर्द्रार्द्रैरत्यन्तार्द्रैरतिशय-

---

জালিকগণ যেমন আপনার ক্ষমতাবলে লোকের দৃষ্টি হরণ করে, সেই বৃক্ষসমূহও তেমন সুন্দর বলিয়া নয়ন আকর্ষণ করিতেছিল; (ধ) সেই অচ্ছোদসরোবরের পশ্চিম তীরে কৈলাসপর্ব্বতের নিকট চন্দ্রপ্রভ নামে একটি ক্ষুদ্র পর্ব্বত আছে; সে, জ্যোৎস্নার ন্যায় ধবলবর্ণ স্বকীয় প্রভাদ্বারা সেই স্থানটা ধবলবর্ণ করিতেছিল; তাহার নিম্নদেশে ভগবান্ মহাদেবের সেই সিদ্ধায়তনটি ছিল, কিন্তু সেখানে জনমানব ছিল না।

(ন) চন্দ্রাপীড় যাইয়া সেই সিদ্ধায়তনে প্রবেশ করিলেন, তখন কেতকীকুসুমের ভিতরের রেণুসমূহ বায়ুবেগে চতুর্দ্দিকে বিক্ষিপ্ত হইয়া পড়িতেছিল, তাহাতেই চন্দ্রাপীড়ের শরীর ধবলবর্ণ করিয়া ফেলিল; সুতরাং বোধ হইতেছিল যে, মহাদেবের দর্শন করিবেন বলিয়াই যেন কেতকীকুসুমের রেণুগুলি তাঁহাকে বলপূর্ব্বক ভস্মধারণ করাইয়া দিতেছে এবং পবিত্র শিবালয়ে প্রবেশ করার পুণ্যেই যেন আলিঙ্গন করিতেছে। (প) তাহার পরে দেখিতে পাইলেন—চারিটি স্তম্ভের উপরে স্ফটিকময় একখানি ক্ষুদ্র মণ্ডপ, তাহার নীচে, সমস্ত

---

(१) भूतल···। (२) क्वचित् शून्यमिति न दृश्यते।

(३) पवनोद्धूतैः। (४)...धूलिभिः। (५) आर्द्रार्द्रदल..., आर्द्रार्द्रशिखर...।

विपाटित-चन्द्रबिम्बदलैरिव निजाट्टहासावयवैरिव शेषफणाशकलैरिव पाञ्चजन्य-सहोदरैरिव चीरोदहृदयाकारैरुपपादितमौक्तिकमुकुटविभ्रमैः शुचिभिर्मन्दा-किनीपुण्डरीकैः कृतार्चनम्, अमलमुक्ताशिलाघटितलिङ्गम्, अशेषत्रिभुवनवन्दित-चरणम्, चराचरगुरुं चतुर्मुखं भगवन्तं त्र्यम्बकम्। (प)

तस्य च दक्षिणां मूर्त्तिमाश्रित्याभिमुखीमासीनाम्, (१) (फ) उपरचित-

---

क्लिन्नेभ्यः दलशिखरेभ्यः पत्राग्रेभ्यः गलन्तो जलविन्दवो येषां तैः, अतएव च ऊर्द्ध उपरिभागे विपाटितस्य विदारितस्य चन्द्रबिम्बस्य दलैः खण्डैरिव स्थितैः, तेभ्योऽप्यमृतविन्दुक्षरणादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षा लङ्कारः। निजस्य शिवसम्बन्धिनः अट्टहासस्य अवयवैरिव। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। शेषस्य अनन्तनागस्य फणानां शकलैः खण्डैरिव, तेषामपि शुभ्रत्वाद्वर्त्तुलाकारत्वाच्चेति भावः। पूर्ववदुत्प्रेक्षा। पाञ्चजन्यः कृष्णस्य शङ्खस्तस्य सहोदरैर्भ्रातृभिरिव, शुभ्रत्ववर्त्तुलत्वसाम्यादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः। चीरोदस्य सागरस्य हृदयाकारैः श्वेत-पुण्डरीकतुल्यैः, समानशुभ्रत्वादिति भावः। अत्र आर्थोपमालङ्कारः। तथा उपपादितो द्रष्टृणां विहितो मौक्तिक-मुकुटविभ्रमः स्वेषु मुक्तामयकिरीटभ्रान्तिर्यैस्तैः। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारः। शुचिभिः पवित्रैः मन्दाकिनी-पुण्डरीकैः स्वर्गगङ्गाजातश्वेतपद्मैः, कृता अर्च्चना पूजा यस्य तम्। अमलया मुक्ताशिलया मौक्तिकतुल्यश्वेत-प्रस्तरेण घटितं निर्म्मितं लिङ्गमाकृतिर्यस्य तम्। त्र्यम्बकं शिवं। "तदूर्द्ध्वभागः सञ्जातश्चतुर्वक्त्रश्चतुर्भुजः। पद्मकेशरगौराङ्गश्चाद्यो ब्रह्मा महेश्वरः" इति कालिकापुराणीयद्वादशाध्यायवचनात् शिवस्य चतुर्मुखमूर्त्तिरपि प्रमेया। केचित्तु एतद्वचनानवलोकनेन समाधानाय समाकुलाः सन्तो मोहविजृम्भितमनेकविधमेव प्रलपितवन्तः।

(फ) तस्येति। किञ्च तस्य त्र्यम्बकस्य दक्षिणां दक्षिणाभिमुखीं मूर्त्तिं आश्रित्य लक्ष्यीकृत्य अभि-मुखीमासीनां तत्सम्मुखे उत्तरमुखी सतीमुपविष्टां, प्रतिपन्नपाशुपतव्रतां कन्यकां ददर्शेति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि कन्यकामित्यस्य विशेषणानि।

(ब) उपेति। उपचरितं कृतं ब्रह्मण आसनमिव आसनं यया तां, पद्मासनोपविष्टामित्यर्थः।

ত্রিভুবনের লোক যাঁহার চরণযুগলের সেবা করে এবং যিনি চরাচর জগৎসংসারের গুরু, সেই ভগবান্ মহাদেবের নির্ম্মল মুক্তার ন্যায় শ্বেতবর্ণ প্রস্তরদ্বারা নির্ম্মিত চতুর্মুখ একখানি মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে, স্বর্গগঙ্গা হইতে অনতিপূর্ব্বে উদ্ধৃত পবিত্র কতকগুলি শ্বেতপদ্ম-দ্বারা কেহ তাঁহার পূজা করিয়াছে, অত্যন্ত আর্দ্র সেই পদ্মগুলির দলাগ্র হইতে জলবিন্দু পড়িতেছে; উপরিভাগ বিদারিত হইলে চন্দ্রমণ্ডলের খণ্ডসমূহের ন্যায়, শিবের অট্টহাস্যের অংশসমূহের ন্যায়, অনন্তনাগের ফণাখণ্ডগুলির ন্যায়, পাঞ্চজন্য শঙ্খের সহোদরগণের ন্যায় এবং ক্ষীরোদসাগরের হৃৎপদ্মের ন্যায় সেই শ্বেতপদ্মগুলিকে দেখা যাইতেছিল; আর সেই পদ্মগুলি মুক্তাময় মুকুটের ভ্রম জন্মাইতেছিল।

(ফ) চন্দ্রাপীড় আরও দেখিতে পাইলেন যে, সেই দক্ষিণাভিমুখী শিবমূর্ত্তির সম্মুখে

---

(१) अभिमुखमासीनां।

बद्धासनाम्, (ब) अतिविस्तारिणा सर्वदिङ्मुखप्लावकेन प्रलय-परिप्लुत-(१) क्षीरपयोधि-पूर-पाण्डुरेण (२) अतिदीर्घकालसञ्चितेन तपोराशिनेव सर्वतो विसर्पता (३) पादपान्तरैस्त्रिस्रोतोजलनिभेन पिण्डीभूय वहतेव देहप्रभावितानेन सगिरिकाननं चन्द्रमयमिव (४) तं प्रदेशं कुर्वतीम्, (भ) अन्यथैव धवलयन्तीं कैलासगिरिम्, (म) अन्तर्द्रष्टुरपि लोचनपथप्रविष्टेन (५) श्वेतिमानमिव मनो नयन्तीम्, (य) अतिधवलप्रभापरिगतदेहतया स्फटिकगृहगतामिव दुग्धसलिलमग्नामिव विमलचीनांशुकान्तरितामिव (६) आदर्शतल-

(भ) अतीति। प्रलयकाले परिप्लुतस्य उद्वेलितस्य चीरपयोधेः पूरवत् प्रवाहवत् पाण्डुरेण शुभ्रवर्णेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। सर्वतो विसर्पता समन्तात् प्रसरता, अतिदीर्घकालसञ्चितेन तपोराशिनेव स्थितेन। अत्र तपसो वैधर्म्येशरूपत्वेन गुणत्वाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः त्रिस्रोतसो मन्दाकिन्या जलनिभेन। अत्र आर्थोपमालङ्कारः। पादपान्तरैर्वृक्षाणामन्तरालदेशैः पिण्डीभूय प्रसरणे वृक्षैः प्रतिबन्धकताचरणात् परस्परसम्मिश्रीभूय वहतेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। देहस्य प्रभावितानेन दीप्तिपरम्परया सगिरिकाननं तं प्रदेशं चन्द्रमयमिव कुर्वतीम्, तत्प्रभायाः शुभ्रत्वादिति भावः अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार उक्तपूर्वालङ्कारैः सङ्कीर्यते।

(म) अन्यथेति। अन्यथा अन्येन प्रकारेणैव देहप्रभयैव कैलासगिरिं धवलयन्ती स्वतो धवलमपि पुनः कृत्रिमधवलं कुर्वतीमिव स्थिताम्। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अन्तरिति। द्रष्टुरपि जनस्य अन्तर्देहाभ्यन्तरे लोचनपथप्रविष्टेन देहप्रभावितानेन मनः श्वेतिमानं धावल्यं नयन्ती प्रापयन्तीमिव स्थिताम्, दर्शनमात्रेण द्रष्टुर्मनसोऽपि सन्तोषेण प्रसन्नत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) अतीति। अतिधवलया प्रभया परिगतः परिवेष्टितो देहो यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना।

একটি কন্যা উত্তরমুখী হইয়া বসিয়া রহিয়াছে; (ব) সে পদ্মাসন করিয়া বসিয়াছিল; (ভ) তাহার দেহের কান্তিপ্রবাহ অতিবিস্তৃতভাবে নির্গত হইয়া সকলদিক্ প্লাবিত করিতেছিল, প্রলয়কালীন উদ্বেলিত ক্ষীরোদসাগরের প্রবাহের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল, সর্ব্বদিগ্ব্যাপী দীর্ঘকালসঞ্চিত তপস্যারাশির ন্যায় বিরাজ করিতেছিল এবং মন্দাকিনীর জলপ্রবাহের ন্যায় গাছের ভিতর দিয়া একত্র মিলিত হইয়া বহিত হইতেছিল; ঐরূপ দেহের প্রভাদ্বারা সে, যেন পর্ব্বত ও বনের সহিত সেই স্থানটা সম্পূর্ণ চন্দ্ররশ্মিময় করিতেছিল; (ম) কৈলাসপর্ব্বতকে অন্য রকমেই যেন ধবলবর্ণ করিতেছিল, (য) সেই কন্যাটিকে দেখিবামাত্রই তাহার দেহের কান্তিপ্রবাহ, দ্রষ্টার নয়নপথে ভিতরে প্রবেশ করিয়াই যেন মনপর্য্যন্ত শুভ্রবর্ণ করিতেছিল; (র) অত্যন্ত ধবলবর্ণ প্রভাপুঞ্জে তাহার দেহখানি পরিবেষ্টিত ছিল বলিয়া

(१)...विप्लुत...। (२)...पयःपूरपाण्डरेण। (३) क्वचित् सर्वत इति नास्ति।
(४) चन्द्रमयमिव। (५) लोचनपथं प्रविश्य,...प्रविष्टेन। (६)...चीनांशुकान्तरितामिव।

संक्रान्तामिव शरदभ्रपटलतिरस्कृतामिव अपरिस्फुट-(१) विभाव्यमानावयवाम्, (र) पञ्चमहाभूतमयमपहाय द्रव्यात्मकमङ्ग-(२) निष्पादनोपकरणकलापं धवलगुणेनैव केवलेनोत्पादिताम्, (ल) दक्षाध्वर-(३) क्रियामिवोद्धृत-(४) गण-कच-ग्रह-भयोपसेवित-त्र्यम्बकाम्, (व) निरन्तरभस्मोद्धूलनसिताङ्गीं (५) रतिमिव मदनदेहनिमित्तं हरप्रसादनार्थमागृहीतहराराधनाम्, (श) क्षीरो-

---

विमलेन चीनांशुकेन अन्तरितामावृतामिव। आदर्शतले दर्पणे संक्रान्तां प्रतिबिम्बितामिव। तथा शरदः कालस्य अभ्रपटलेन अर्थाच्छुभ्रवर्णेन मेघसमूहेन तिरस्कृतामावृतामिव अतएव प्रभावरणादपरिस्फुटं अस्पष्टं यथा स्यात्तथा विभाव्यमाना लक्ष्यमाणा अवयवा अङ्गप्रत्यङ्गानि यस्यास्ताम्। अत्र पञ्चानां क्रियोत्प्रेक्षाणां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ल) पञ्चेति। पञ्चमहाभूतमयं क्षित्यप्तेजोमरुद्व्योमस्वरूपं द्रव्यात्मकं अङ्गनिष्पादनोपकरणकलापं शरीरनिर्माणसामग्रीसमूहं अपहाय विधाता केवलेन एकेन धवलगुणेन उत्पादितां सृष्टामिव, क्षित्यादिसामग्रीजन्यत्वे तु तद्गुणानां कृष्णपीतादीनामप्यत्र सम्मिश्रणेन ईदृशकेवलधावल्यासम्भवादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। द्रव्याणां नवविधत्वात् पञ्चमहाभूतमयमिति, भूतशब्दस्य च सत्याद्यर्थस्यापि वाचकत्वात् द्रव्यात्मकमिति नापुष्टार्थत्वदोष इति संक्षेपः।

(व) दक्षेति। उद्धतैर्बलदृप्तैर्गणैः प्रमथगणैर्यः कचग्रहः केशाकर्षणं तस्माद्भयेन उपसेवितः परित्राणार्थमाश्रितस्त्र्यम्बकः शिवो यया तां, दक्षस्य प्रजापतेरध्वरक्रियां यज्ञकार्य्यमिव स्थिताम्, तस्या अपि महाश्वेतारूपत्वेन श्वेतत्वादिति भावः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पुरा किल दक्षप्रजापतिना शिवापमानार्थमेवानुष्ठीयमाने यज्ञे स भगवानाहूत इति तत्प्रमथाः समागत्य तं यज्ञं विध्वंसयामासुरिति भागवतादिवार्त्ता।

(श) निरन्तरेति। मदनदेहनिमित्तं पुनरपि पत्युः कन्दर्पस्य देहलाभार्थं यत् हरस्य प्रसादनं तदर्थं आगृहीतहराराधनां आरब्धशिवोपासनां अतएव निरन्तरभस्मोद्धूलनेन सिताङ्गीं रतिमिव स्थिताम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा हरपदस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च आगृहीततदाराधनामिति पाठेन समाधेयः।

অঙ্গ-প্রত্যঙ্গগুলি স্পষ্টভাবে দেখা যাইতেছিল না ; সুতরাং সে, যেন স্ফটিকময় গৃহের ভিতরে ছিল, দুগ্ধমিশ্রিত জলে নিমগ্ন ছিল, নির্ম্মল চীনদেশীয় বস্ত্রদ্বারা আবৃত ছিল, দর্পণের ভিতরে প্রতিবিম্বিত হইয়াছিল এবং শরৎকালীয় মেঘসমূহে আচ্ছাদিত ছিল বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল ; (ল) বিধাতা, পঞ্চমহাভূতস্বরূপ দ্রব্যাত্মক শরীরনির্ম্মাণোপযোগী সামগ্রীসমূহ পরিত্যাগ করিয়া কেবল ধবলগুণদ্বারাই যেন তাহাকে নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন ; (ব) উদ্ধতস্বভাব প্রমথগণকর্ত্তৃক কেশাকর্ষণের ভয়ে দক্ষের যজ্ঞক্রিয়া যেন আত্মরক্ষার নিমিত্ত আসিয়া শিবের আশ্রয় লইয়াছিল ; (শ) পুনরায় কামদেবের দেহলাভের নিমিত্ত শিবকে প্রসন্ন করিবার

---

(१) परिस्फुट...। (२)...मङ्गल...। (३) अध्वर...। (४) उद्धृत...। (५) क्वचिदयं पाठो नास्ति।

दधि-(१) देवतामिव सहवास-परिचित-हर-चन्द्रलेखोत्कण्ठाकृष्टाम्, (२) (ष) इन्दुमूर्त्तिमिव स्वर्भानु-भय कृत-त्रिनयन-शरण-गमनाम्, (३) (स) ऐरावत-देहच्छविमिव गजाजिनावगुण्ठनोत्कण्ठित-शितिकण्ठचिन्तितोपनताम्, (ह) पशुपति-दक्षिण-मुख-हास-च्छविमिव बहिरागत्य (४) कृतावस्थानाम्, (क्ष) शरीरिणीमिव रुद्रोद्धूलनभूतिं (५) आविर्भूताम्, (क) ज्योत्स्नामिव हरकण्ठा-

---

(ष) क्षीरोदेति। सहवासेन एकक्षीरोदसागरे मथनात् पूर्वमवस्थानेन परिचिता या हरस्य ललाटस्था चन्द्रलेखा तस्या उत्कण्ठया आकृष्टां क्षीरोदस्य अधिदेवतां अधिष्ठात्रीं देवीमिव, निरतिशय-शुभ्रक्षीरोदाधिष्ठातृत्वात्तस्या अपि निरतिशयशुभ्रत्वसम्भवादिति भावः। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(स) इन्द्विति। स्वर्भानोराहोर्भयेन कृतं त्रिनयनस्य शिवस्य शरणगमनं यया तां इन्दोश्चन्द्रस्य मूर्त्ति-मिव। द्रव्योत्प्रेक्षा।

(ह) ऐरेति। गजाजिनस्य हस्तिचर्म्मणः अवगुण्ठने परिधाने उत्कण्ठितो गजाजिनप्रियत्वादुत्सुको यः शितिकण्ठः शिवस्तेन चिन्तिता अनन्तरमेव उपनता उपस्थिता तां, ऐरावतस्य देवराजशुभ्रहस्तिनः देहच्छविं शरीरकान्तिमिव स्थिताम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क्ष) पश्विति। बहिरागत्य कृतावस्थानां, पशुपतेः शिवस्य दक्षिणमुखे तत्पुरुषस्य चतुर्म्मुखत्वा-द्दक्षिणदिग्वर्त्तिवदने यो हासो हास्यं तस्य छविं कान्तिमिव। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) शरीति। शरीरिणीं स्त्रीमूर्त्तिधारिणीं सतीमाविर्भूतां रुद्रस्य शम्भोः उद्धूलनभूतिमिव अङ्ग-मर्द्दनवेलायां धूलीभूय प्रसृतदेहभस्मेव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) ज्योत्स्नामिति। हरस्य नीलकण्ठस्य शिवस्य कण्ठे योऽन्धकारः अन्धकारतुल्यनीलवर्णस्तस्य

জন্য রতিদেবী যেন তাঁহার আরাধনায় প্রবৃত্ত হইয়া সর্ব্বদা ভস্মে লুণ্ঠন করায় শ্বেতাঙ্গী হইয়া সেখানে রহিয়াছিলেন; (ষ) পূর্ব্বে একত্র বাস করায় পরিচিত শিবের ললাটস্থ চন্দ্রকলার সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠাতে আকৃষ্ট হইয়াই যেন ক্ষীরোদসাগরের অধিষ্ঠাত্রী দেবী আসিয়া বসিয়াছিলেন; (স) রাহুর ভয়ে মহাদেবের শরণাপন্ন চন্দ্রমূর্ত্তির ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল; (হ) হস্তীর চর্ম্ম পরিধান করিবার নিমিত্ত উৎকণ্ঠিত হইয়া মহাদেব চিন্তা করিলে আপনিই উপস্থিত ঐরাবতহস্তীর দেহপ্রভার ন্যায় সে বিরাজ করিতেছিল; (ক্ষ) মহাদেবের হাস্যের শোভা যেন বাহিরে আসিয়া অবস্থান করিতেছিল; (ক) অঙ্গ-মর্দ্দন করিবার সময়ে শিবের অঙ্গের ভস্মরেণুগুলি যেন স্ত্রীমূর্ত্তি ধারণ করিয়া আবির্ভূত হইয়াছিল; (খ) মহাদেবের কণ্ঠদেশের নীলবর্ণ দূর করিবার চেষ্টা করার জন্য তাঁহারই কণ্ঠের

---

(१) क्षीरोदधि...। (२)...लेखोत्कण्ठाम्।
(३)...शरणागमनाम्। (४) बहिर्निर्गत्य, इव निर्गत्य। (५)...विभूतिं।

अन्धकारविघट्टनोद्यमप्राप्ताम्, (ख) गौरीमन:शुद्धिमिव (१) कृतदेहपरिग्रहाम्, (ग) कार्त्तिकेय-कौमारव्रतक्रियामिव मूर्त्तिमतीम्, (घ) गिरीश-(२) वृषभ-देह-द्युतिमिव पृथगवस्थिताम्, (ङ) आयतन-तरु-कुसुम-समृद्धिमिव शङ्कराभ्यर्च्चनाय स्वयमुद्यताम्, (च) पितामहतप:सिद्धिमिव महीतलमवतीर्णाम्, (छ) आदियुगप्रजापतिकीर्त्तिमिव सप्तलोकभ्रमणखेदविश्रान्ताम्, (ज) त्रयीमिव कलियुग-ध्वस्त-धर्म्म-शोक-गृहीत-वनवासाम्, (झ) आगामिकृत-युग-बीजकला-

---

विघट्टनोद्यमेन स्वयमपसारणारम्भेन प्राप्तां तत्कण्ठत एव उपस्थितां ज्योत्स्नां कान्तिमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) गौरीति। कृतदेहपरिग्रहां गौर्य्या: सतीशिरोमणिभूताया: पार्व्वत्या: मनस: शुद्धिं पवित्रतामिव। अत्रापि गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) कार्त्तीति। मूर्त्तिमतीं कार्त्तिकेयस्य कौमारव्रतक्रियां ब्रह्मचर्य्यनियमानुष्ठानमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पापस्य मलिनतया वर्णनीयत्वात्तद्विपरीतस्य पुण्यस्य तु शुभ्रतयैव वर्णनौचित्यादेवमुक्तिरिति बोध्यम्। एवमन्यत्रापि।

(ङ) गिरीशेति। पृथगवस्थितां गिरीशवृषभस्य शिववृषभस्य देहद्युतिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(च) आयतनेति। शङ्करस्य अभ्यर्च्चनाय स्वयमुद्यतां आत्मनैवोद्युक्तां, आयतनस्य तस्यैव सिद्धायतनस्य तरुकुसुमानां समृद्धिं राजिमिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) पितेति। महीतलमवतीर्णां पितामहस्य ब्रह्मणस्तप:सिद्धिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(ज) आदीति। सप्तसु लोकेषु भूरादिषु भ्रमणेन पर्य्यटनेन य: खेद: परिश्रमस्तेन विश्रान्तां तत्र कृतविश्रामां, आदियुगे सत्ययुगे प्रजापतेर्ब्रह्मणो या कीर्त्ति: सृष्टिप्रशंसा तामिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(झ) त्रयीमिति। कलियुगेन ध्वस्तो विनष्टो यो धर्म्मस्तस्य शोकेन गृहीतवनवासां त्रयीं ऋग्यजु:सामात्मकं वेदत्रयमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

প্রভা যেন বাহির হইয়া রহিয়াছিল; (গ) পার্ব্বতীর মনের পবিত্রতা যেন শরীর ধারণ করিয়া অবস্থান করিতেছিল; (ঘ) কার্ত্তিকের ব্রহ্মচর্য্যানুষ্ঠান যেন মূর্ত্তিমান্ হইয়া বিরাজ করিতেছিল; (ঙ) শিবের বৃষটার দেহের প্রভা যেন পৃথক্ হইয়া অবস্থান করিতেছিল; (চ) সেই সিদ্ধায়তনস্থ বৃক্ষসমূহের পুষ্পগুলি যেন শিবের পূজা করিবার নিমিত্ত আপনা আপনিই উদ্যত হইয়াছিল; (ছ) ব্রহ্মার তপস্যাসিদ্ধি যেন ভূতলে অবতীর্ণ হইয়া সেই স্থানে অবস্থান করিতেছিল; (জ) সত্যযুগে ব্রহ্মার যে কীর্ত্তি জন্মিয়াছিল, সে, যেন সপ্তলোক পরিভ্রমণ করিয়া পরিশ্রমবশতঃ সেই স্থানে আসিয়া বিশ্রাম করিতেছিল; (ঝ) কলিযুগের প্রভাবে ধর্ম্ম বিনষ্ট হওয়ায় সেই শোকে বেদ যেন বন-বাস অবলম্বন করিয়া সেই স্থানে

---

(१) गौरीतप:सिद्धिमिव। (२) गिरीश...।

मिव प्रमदारूपेणावस्थिताम्, (ञ) देहवतीमिव मुनिजन-ध्यानसम्पदम्, (ट) अमर-गज-वीथिमिवाभ्रगङ्गाभ्यागम-वेगपतिताम्, (ठ) कैलासश्रियमिव दश-मुखोन्मूलन-क्षोभ-निपतिताम्, (ड) श्वेतद्वीप-लक्ष्मीमिवान्यद्वीपावलोकन-(१) कुतूहलागताम्, (ढ) काशकुसुमविकाशकान्तिमिव शरत्समयमुदीक्ष-माणाम्, (ण) शेषशरीरच्छायामिव रसातलमपहाय निर्गताम्, (त) मुषला-युधदेहप्रभामिव मधुमदविघूर्णनायासविगलिताम्, (थ) शुक्लपक्षपरम्परामिव

(ञ) आगामीति। प्रमदारूपेण स्त्रीभावेनावस्थितां, आगामिनो भविष्यत: कृतयुगस्य सत्ययुगस्य बीज-कलामिव उपादानमात्रामिव, सत्ययुगस्य धर्म्ममयत्वेन शुभत्वात्तदुपादानकारणस्यापि शुभत्वमिति भाव:। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ट) देहेति। देहवतीं मुनिजनानां ध्यानसम्पदमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ठ) अमरेति। अभ्रगङ्गाया मन्दाकिन्या: अभ्यागमस्य तत्रोपस्थितेर्वेगेन पतितां स्वर्गाच्च्युतां अमरगजानामैरावतादीनां वीथिं श्रेणिमिव, तस्यातीवशुभत्वादिति भाव:। वस्तुत: समूहसमूहिनोरभेदेऽपि स्त्रीरूपमेदमभिप्रेत्येदमभिहितमिति बोध्यम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ड) कैलासेति। दशमुखस्य रावणस्य उन्मूलनेन उत्पाटनेन य: क्षोभ: सञ्चलनं तेन निपतितां, कैलासस्य श्रियं शोभामिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ढ) श्वेतेति। अन्येषां द्वीपानामवलोकनकुतूहलेनागतां श्वेतद्वीपस्य लक्ष्मीं कान्तिमिव। गुणोत्-प्रेक्षा।

(ण) काशेति। शरत्समयमुदीक्षमाणां प्रतीक्षमाणां काशकुसुमानां विकाशकान्तिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।

(त) शेषेति। रसातलमपहाय निर्गतां, शेषस्य अनन्तनागस्य शरीरच्छायां देहकान्तिमिव, अनन्त-नागस्यापि शुभत्वादिति भाव:। गुणोत्प्रेक्षा। "छाया सूर्य्यप्रिया कान्ति: प्रतिबिम्बमनातप:।" इत्यमर:।

(थ) मुषलेति। मधुमदेन मद्यपानजनितमत्ततया यद्विघूर्णनं तदायासेन विगलितां देहाच्च्युतां मुषलायुधस्य बलरामस्य देहप्रभामिव, तस्या: अपि शुभत्वात्। गुणोत्प्रेक्षा।

অবস্থান করিতেছিল; (ঞ) আগামী সত্যযুগের বীজের অংশ যেন স্ত্রীরূপে অবস্থান করিতেছিল; (ট) মুনিগণের ধ্যানসম্পত্তি যেন মূর্ত্তিমতী হইয়া রহিয়াছিল; (ঠ) দেব-হস্তীর শ্রেণী যেন আকাশগঙ্গার আগমনের বেগে পড়িয়া গিয়াছিল; (ড) কৈলাসপর্ব্বতের শোভা যেন রাবণকর্ত্তৃক উন্মূলনের বেগে নিপতিত হইয়াছিল; (ঢ) শ্বেতদ্বীপের কান্তি যেন অন্যান্য দ্বীপ দর্শন করিবার কৌতুকে আসিয়াছিল; (ণ) কাশ-(কেশে) পুষ্পের বিকাশশোভা যেন শরৎকালের প্রতীক্ষা করিতেছিল; (ত) অনন্তনাগের দেহের শোভা যেন পাতাল ত্যাগ করিয়া নির্গত হইয়াছিল; (থ) বলরামের শরীরের কান্তি যেন মত্ত-

(१) अन्यद्वीपान्तरावलोकन...।

पुञ्जीकृताम्, (द) सर्वहंसैरिव धवलतया कृतसंविभागाम्, (ध) धर्म्म-हृदयादिव विनिर्गताम्, (१) शङ्खादिवोत्कीर्णाम्, मुक्ताफलादिवाकृष्टाम्, मृणालैरिव विरचितावयवाम्, दन्तदलैरिव घटिताम्, इन्दुकरकूर्च्चकैरिव प्रक्षालिताम्, (२) वर्णसुधाच्छटाभिरिव च्छुरिताम्, (३) अमृतफेनपिण्डैरिव पाण्डुरीकृताम्, पारदरसधाराभिरिव धौताम्, रजतद्रवेणेव निर्म्मृष्टाम्, चन्द्रमण्डलादिवोत्कीर्णाम्, कुटज-कुन्द-सिन्धुवार-(४) कुसुम-च्छविभिरिवोल्लासिताम्, (न) इयत्तामिव धवलिम्नः, (प) स्कन्धावलम्बिनीभिरुदयतटगतादर्क-(५) बिम्बादु-

(द) शुक्लेति। पुञ्जीकृता विधात्रा स्तूपीकृता शुक्लपक्षाणां परम्परां राजिमिव। पक्षाणां कालत्वेन द्रव्यत्वादत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ध) सर्वेति। सर्वहंसैः धवलतया स्वस्वशुभ्रतागुणेन करणेन कृतः संविभागः विभज्य प्रतिपादनं यस्यै तां समर्पितस्वस्वशुभ्रतामिवेत्यर्थः। अत्र विभागकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) धर्म्मेति। धर्म्मस्य हृदयाद्विनिर्गतामिव शङ्खादुत्कीर्णामिव। शङ्खं भित्त्वा बहिष्कृतामिव। मुक्ताफलान्मौक्तिकात् आकृष्टामाविर्भावितामिव। मृणालैर्विरचितावयवां निर्म्मिताङ्गीमिव। दन्तदलैर्हस्तिदन्तखण्डैः घटितां निर्म्मितामिव। इन्दुकराश्चन्द्ररश्मय एव कूर्चकास्तूलिकास्तैः प्रक्षालितां परिष्कृत्य धौतामिव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। वर्णसुधानां शुक्लताविधायकसुधाख्यलेपनद्रव्याणां छटाभिः समूहैः छुरितां लिप्तामिव। पारदरसस्य पारदद्रवस्य धाराभिर्धौतामिव। अत्र पारदरसशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परन्तु रसशब्दस्य द्रवार्थे पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। रजतद्रवेण रौप्यरसेन निर्म्मृष्टां परिमृष्टामिव। उल्लासितां परिशोभिताम्। एषामुक्तानत्र प्रत्येकविशेषणे क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) इयत्तामिति। धवलिम्नः शुभ्रतायाः इयत्तां चरमसीमामिव। गुणोत्प्रेक्षा।

পানের মত্ততাবশতঃ তাঁহার ঘূর্ণন করার পরিশ্রমে পড়িয়া গিয়াছিল, (দ) বিধাতা শুক্লপক্ষশ্রেণীকে যেন পুঞ্জীভূত করিয়া রাখিয়াছিলেন; (ধ) সকল হংসগণ যেন স্ব স্ব ধবলগুণ তাহাকে বিভক্ত করিয়া দিয়াছিল; (ন) সে যেন ধর্ম্মের হৃদয় হইতে নির্গত হইয়াছিল; বিধাতা যেন তাহাকে শঙ্খ খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন, মুক্তা হইতেই যেন নিষ্কাশিত করিয়াছিলেন, মৃণালদ্বারাই যেন তাহার অঙ্গগুলি নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, গজ-দন্ত-খণ্ডদ্বারাই যেন গড়াইয়াছিলেন, চন্দ্রকিরণরূপ কুঁচোদ্বারাই যেন প্রক্ষালন করিয়া পরিষ্কার করিয়া দিয়াছিলেন, চূর্ণলেপদ্বারাই যেন লেপিয়া দিয়াছিলেন, অমৃতের ফেনপুঞ্জদ্বারাই যেন শুভ্রবর্ণ করিয়াছিলেন, পারার রসের ধারাতেই যেন ধুইয়া দিয়াছিলেন, রূপার রসেই যেন মার্জিত করিয়াছিলেন, চন্দ্রমণ্ডল হইতেই যেন খোদিত করিয়া বাহির করিয়াছিলেন এবং কুটজ, কুন্দ ও নিসিন্দা ফুলের প্রভাদ্বারাই যেন শোভিত করিয়া দিয়াছিলেন; (প) আর

(१) निर्गतां, उद्गतां। (२) आक्षालितां। (३) आच्छुरितां। (४)···सिन्दुवार···। (५)···गतार्क···।

द्धृत्य बालरश्मिप्रभाभिरिव निर्म्मिताभिरुन्मिषत्तडित्तरल-(१) तेजस्ताम्राभिरचिरस्नानावस्थित-विरल-वारि-कणतया प्रणाम-लग्न-पशुपति-चरण-भस्म-चूर्णाभिरिव जटाभिरुद्भासितशिरोभागाम्, (फ) जटापाश-ग्रथितमुत्तमाङ्गेन मणिमयं नामाङ्कमीश्वर-चरणद्वयमुद्वहन्तीम्, (ब) रवि-रथ-तुरग-खुर-मुख-क्षुण्ण-(२) नक्षत्र-क्षोद-विशदेन भस्मनालङ्कृत-(३) ललाटपट्टिकाम्, शिखर-शिलाश्लिष्ट-शशाङ्ककलामिव शैलराजमेखलाम्, (भ) अतुलभक्तिप्रसाधितया लक्ष्मीकृतलिङ्गया

(फ) स्कन्धेति। उदयतटगतादुदयाचलप्रदेशस्थितात् अर्कबिम्बात् सूर्य्यमण्डलात् उद्धृत्य बालरश्मिप्रभा एव उत्तोल्य ताभिर्बालरश्मिप्रभाभिर्नूतनकिरणदीप्तिभिः करणैः विधात्रा निर्म्मिताभिरिव स्थिताभिः, उन्मिषन्ती प्रकाशमाना या तडित् विद्युत् तस्या यत्तरलं तेजस्तद्वत्ताम्राभिस्ताम्रवर्णाभिः, तथा अचिरस्नानेन अवस्थिताः विरला अल्पाल्पा वारिकणा यासु तासां भावस्तया हेतुना प्रणामे नमस्कारसमये लग्नानि पशुपतेः शिवस्य चरणभस्मचूर्णानि यासु ताभिरिव स्थिताभिर्जटाभिः उद्भासितः शोभितः शिरोभागो यस्यास्ताम्। अत्र उदयेत्यादौ क्रियोत्प्रेक्षा, उन्मिषदित्यादौ लुप्तोपमा, प्रणामेत्यादौ च क्रियोत्प्रेक्षा, इत्यासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ब) जटेति। उत्तमाङ्गेन मस्तकेन, जटापाशग्रथितं मणिमयं मणिनिर्म्मितं नाम्नः शिवनाम्नः अङ्कः चिह्नं यत्र तादृशं, ईश्वरस्य शिवस्य चरणद्वयं पदद्वयप्रतिमाम् उद्वहन्तीं भक्तिभरेण धारयन्तीम्।

(भ) रवीति। रविरथस्य तुरगाणामश्वानां खुरमुखैः खुराग्रभागैः क्षुण्णानां विदारितानां नक्षत्राणां क्षोदश्चूर्णवत् विशदेन शुभ्रेण भस्मना भस्मकृततिलकेन अलङ्कृतः ललाटपट्टो भालफलकं यस्यास्ताम्, अतएव शिखरशिलया मध्यभागस्थप्रस्तरेण आश्लिष्टा धृता शशाङ्ककला चन्द्ररेखा यस्यास्तां शैलराजस्य हिमालयस्य मेखलां नितम्बं मध्यभागमिव स्थिताम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं तथा चन्द्रकलया सह भस्मतिलकस्य, शुभ्रशिलया सह ललाटपट्टस्य, मेखलया च सह कन्यायाः साम्यमिति द्रव्योत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

তাহাকে যেন শুভ্রবর্ণের চরম সীমা বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ফ) দেদীপ্যমান বিদ্যুতের তরল তেজের ন্যায় তাম্রবর্ণ এবং স্কন্ধপর্য্যন্ত পতিত কতকগুলি জটাদ্বারা তাহার মস্তক পরিশোভিত ছিল; বিধাতা, উদয়াচলগত সূর্য্যমণ্ডল হইতে নূতন কিরণ বাহির করিয়া তাহার দীপ্তিদ্বারাই যেন সেই জটাগুলিকে নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন, এবং অনতিপূর্ব্বে স্নান করায় তখনও জটাগুলির উপরে অল্প অল্প জলবিন্দু ছিল, সুতরাং প্রতীতি হইতেছিল যেন, সে প্রণাম করিবার সময়ে শিবের চরণের ভস্ম-রেণুগুলি জটার উপরে লাগিয়া রহিয়াছে; (ব) এবং সে মস্তকে শিব-নামাঙ্কিত মণিময় দুখানি শিবের চরণ, জটাতে বন্ধন করিয়া ধারণ করিতেছিল; (ভ) সূর্য্যের রথে নিযুক্ত ঘোটকগণের খুরাগ্রের আঘাতে চূর্ণীকৃত-নক্ষত্রচূর্ণের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ভস্মের তিলকে তাহার ললাটদেশ অলঙ্কৃত ছিল; সুতরাং শৃঙ্গের প্রস্তরের উপরে চন্দ্রকলা সংলগ্ন হইলে হিমালয়ের মেখলার ন্যায় তাহাকে দেখা

(१)...तडित्तन्तुतरल...। (२)...तुरङ्गखुरक्षुण्ण...। (३) कृत...।

द्वितीययेव (१) पुण्डरीकमालया दृष्ट्या सम्भावयन्तीं भूतनाथम्, (म) अनवरत-गीत-परिस्फुरिताधरपुटवशात् (२) अतिशुचिभिः शुद्धहृदयमयूखैरिव गीतगुणैरिव स्वरैरिव स्तुतिवर्णैरिव मूर्त्तिमद्भिर्मुखान्निष्पतद्भिर्दशनांशुभिः पुनरिव स्नपयन्तीं गौरीपतिम्, (३) (य) अतिविमलैश्च वेदार्थैरिव साक्षात् पितामह-मुखादाकृष्टैः, गायत्रीवर्णैरिव ग्रथिततां-(४) उपगतैः, नारायणनाभिपुण्डरीक-बीजैरिवोद्धृतैः, सप्तर्षिभिरिव कर-(५) स्पर्शपूतमात्मानमिच्छद्भिस्तारकारूपेणा-

(म) अतुलेति। अतुलया निरुपमया भक्त्या प्रसाधिता प्रसन्नताजननेनालङ्कृता तया, लक्षीकृतं विषयीकृतं लिङ्गं शिवमूर्त्तिर्यया तया, द्वितीयया पुण्डरीकमालयेव श्वेतपद्मश्रेण्येव स्थितया, दृष्टेरपि श्वेतत्वादिति भावः, दृष्ट्या भूतनाथं शिवं सम्भावयन्तीं सादरमवलोकयन्तीम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अनेति। अनवरतं गीतेन परिस्फुरितं परिस्पन्दितं यदधरपुटमोष्ठयुगलं तद्वशात्, मुखात् निष्पतद्भिर्निर्गच्छद्भिः, अतिशुचिभिरत्यन्तशुभ्रैः, शुद्धहृदयस्य पवित्रचित्तस्य मयूखैः किरणैरिव, मूर्त्तिमद्भिः गीतगुणैर्गानमाधुर्य्यैरिव, स्वरैर्निषादादिध्वनिभिरिव, स्तुतिवर्णैः शिवस्तवाक्षरैरिव स्थितैः, दशनांशुभिर्दन्त-रश्मिभिः, गौरीपतिं शिवं पुनः स्नपयन्तीमिव स्थिताम्। मूर्त्तिमद्भिरिति गीतगुणैरित्यादीनां त्रयाणामेव विशेषणं, पूजारम्भे सकृत् स्नपनाच्च पुनः पदमिति बोध्यम्। अत्र प्रथमास्वतस्रो गुणोत्प्रेक्षाः शेषा च क्रियोत्प्रेक्षा इत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(र) अतीति। किञ्च। अतिविमलैरिति मुक्ताफलैरिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्। पितामहस्य ब्रह्मणो मुखादाकृष्टैराकृष्यानीतैः साक्षाद्वेदार्थैरिव, निरतिशयसत्यतया तेषामप्यतिविमलत्वादिति भावः। ग्रथिततां संयोजनमुपगतैः गायत्र्याः स्वनामख्यातस्य वैदिकमन्त्रविशेषस्य वर्णैरक्षरैरिव, तेषामपि ब्रह्मरूपतया निर्म्मलत्वादिति भावः। उद्धृतैरुत्तोलितैः नारायणस्य नाभिपुण्डरीकबीजैरिव। तथा आत्मानं स्वस्वदेहं करस्पर्शेन जपकाले तस्याः कन्यकायाः पाणिस्पर्शेन पूतं पवित्रं कर्त्तुमिच्छद्भिः, तारकारूपेण नक्षत्रभावे-मागतैः, मुक्तानां नक्षत्रवदुज्ज्वलत्वादितिभावः, सप्तर्षिभिर्मरीच्यादिभिरिव स्थितैः, तथा आमलकीफलवत् स्थूलैः,

যাইতেছিল; (ম) অতুলনীয় ভক্তিতে পরিশোভিত ও দ্বিতীয় শ্বেতপদ্মমালার ন্যায় নির্ম্মল দৃষ্টিদ্বারা সে, শিবমূর্ত্তিকে লক্ষ্য করিয়া আদরের সহিত শিবকে দেখিতেছিল; (য) অনবরত গান করায় কন্যাটির ওষ্ঠযুগল স্পন্দিত হইতেছিল; সুতরাং মুখ হইতে নির্গত অত্যন্ত নির্ম্মল দন্ত-রশ্মিদ্বারা সে যেন পুনরায় শিবকে স্নান করাইতেছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; সেই দন্ত-রশ্মিগুলিকে, তাহার পবিত্র হৃদয়ের কিরণের ন্যায় এবং মূর্ত্তিমান্ গানের মাধুর্য্যের ন্যায়, মূর্ত্তিমান্ স্বরলহরীর ন্যায় ও মূর্ত্তিমান্ স্তবের অক্ষরের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (র) আমলকীফলের ন্যায় বড় বড় ও অত্যন্ত নির্ম্মল মুক্তাদ্বারা গ্রথিত এক ছড়া জপের মালা তাহার কণ্ঠদেশে লম্বিত ছিল; ব্রহ্মার মুখ হইতে আকর্ষণ করিয়া আনীত সাক্ষাৎ বেদার্থের

(१) अपरयेव। (२)...गीतस्फुरित...। (३) पुनरपि...गौरीनाथं।
(४) ग्रथनतां, ग्रन्थनां, ग्रथनशीलतां। (५) करतल...।

गतैः, आमलकीफलस्थूलैर्मुक्ताफलैरुपरचितेनाक्षवलयेनाधिष्ठितकण्ठभागाम्, परिवेश-(१) परिगत-चन्द्रमण्डलामिव पौर्णमासीनिशाम्, (२) (ख) अधोमुख-हर-शिरः-कपाल-मण्डलाकारेण मोक्ष-पुर-द्वार-कलस-(३) कान्तिना स्तनयुगलेन, एक-हंस-मिथुन (४) सनाथामिव गङ्गाम्, (५) (ल) गौरीसिंहसटामयेनेव चामर-रुचिराकृतिना (६) स्तनयुगलमध्यनिबद्धग्रन्थिना कल्पतरु-लतावल्कलेन

मुक्ताफलैर्मौक्तिकैः उपरचितेन विहितेन अक्षवलयेन जपमालया अधिष्ठित आश्रितः कण्ठभागो यस्यास्ताम्, अतएव परिवेशेन परिधिना परिगतं परिवेष्टितं चन्द्रमण्डलं यस्यां तां पौर्णमासीनिशामिव स्थिताम्। अत्र प्रथमाक्षतयो आत्युत्प्रेक्षाः, आमलकीति लुप्तोपमा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा परिवेशेन सह मुक्तामालायाः, चन्द्रमण्डलेन तन्मुखस्य, पौर्णमासीनिशया च तन्मूर्त्तेः सादृश्यमिति श्रौत्युपमा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ख) अध इति। अधोमुखं हरस्य शिवस्य शिरसि यत् कपालं नरशिरोऽस्थि तद्वन्मण्डलाकारेण वर्त्तुलाकृतिना, तथा मोक्षस्य यत् पुरं ब्रह्मभवनं तस्य द्वारकलसवत् द्वारस्थापितकुम्भवत् कान्तिर्यस्य तेन तादृशेन स्तनयुगलेनोपलक्षितामित्यर्थः, अतएव एकेन हंसयोर्मिथुनेन युगलेन सनाथा संयुक्ता तां गङ्गामिव स्थिताम्। अत्र लुप्तोपमाद्वयं, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तथा हंसयुगलेन स्तनयुगलस्य गङ्गया च कन्यायाः सादृश्यमिति श्रौत्युपमा चैतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। कपालस्य उन्मुखत्वे तदुपरिभागस्य उन्नावचत्वा-न्मण्डलाकारो न स्यात्, कपालस्याधोमुखत्वे तु तत्पृष्ठभागस्य दृष्टिगोचरस्य मण्डलाकारः स्यादित्येतत्प्रतिपादनायाधोमुखपदमिति बोध्यम्।

(ल) गौरीति। गौरीसिंहस्य दुर्गाया वाहनीभूतसिंहस्य सटामयेनेव जटानिर्म्मितेनेव, चामरवत् रुचिरा आकृतिर्यस्य तेन, तथा स्तनयुगलस्य मध्ये निबद्धो ग्रन्थिर्यस्य तेन, कल्पतरुलतावल्कलेन कृतं उत्तरीयस्य कृत्यं कार्य्यं यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

ন্যায়, গ্রথিত গায়ত্রীর অক্ষরের ন্যায়, নারায়ণের নাভিস্থিত শ্বেতপদ্ম হইতে উত্তোলিত বীজের ন্যায় এবং সেই কন্যাটির করস্পর্শে আপনাদিগকে পবিত্র করিতে ইচ্ছা করিয়া নক্ষত্ররূপে আগত সপ্তর্ষিগণের ন্যায় সেই মুক্তাগুলিকে দেখা যাইতেছিল; এবং ঐরূপ মুক্তামালায় কণ্ঠদেশ পরিবেষ্টিত ছিল বলিয়া, পরিবেশদ্বারা চন্দ্রমণ্ডল পরিবেষ্টিত হইলে পূর্ণিমার রাত্রির ন্যায় সেই কন্যাটিকে দেখা যাইতেছিল; (খ) মহাদেবের মস্তকস্থিত অধোমুখ নরমুণ্ডের ন্যায় বর্ত্তুলাকার এবং ব্রহ্মভবনের দ্বারস্থিত কলসদ্বয়ের ন্যায় কান্তি-সম্পন্ন দুইটি স্তন, সেই কন্যাটির বক্ষঃস্থলে বিরাজ করিতেছিল; সুতরাং কেবল দুইটি হংসসংযুক্ত গঙ্গার ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল; (গ) চামরের ন্যায় সুন্দর আকৃতি একখানা কল্পতরুর বল্কল, তাহার স্তনযুগলের মধ্যস্থানে বদ্ধ থাকিয়া তাহার উত্তরীয় বস্ত্রের কার্য্য করিতেছিল;

(१) परिवेष...। (२) पौर्णमासीम्। (३) मोक्षद्वारकलश, मोक्षद्वारनियुक्तकलश···।
(४) एकगतहंस...। (५) श्वेतगङ्गाम्। (६) चीराकृतिना।

कृतोत्तरीयकृत्याम्, (श) अयुग्मलोचनसकाशात् प्रसादलब्धेन चूड़ामणि-चन्द्र-मयूख-जालेनेव मण्डलीकृतेन ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकायाम्, (१) (ष) आप्रपदीनेन च स्वभावसितेनापि ब्रह्मासनबन्धोत्तान-चरणतल-प्रभा-परिष्वङ्ग-लोहितायमानेन दुकूलपटेन प्रावृतनितम्बाम्, (स) यौवनेनापि स्वकालोप-सर्पिणा निर्विकार-विनीतेन (२) शिष्येणेवोपास्यमानाम्, (ह) लावण्येनापि कृतपुण्येनेव स्वेच्छात्मना परिगृहीताम्, (क्ष) रूपेणापि रुचिरलोचनेन विगत-

(श) अयुग्मेति। अयुग्मलोचनस्य त्रिलोचनस्य शिवस्य सकाशात् प्रसादलब्धेन अनुग्रहात् प्राप्तेन, चूड़ामणेः शिवस्यैव चूड़ामणीभूतस्य चन्द्रस्य मयूखजालेनेव किरणकलापेनेव स्थितेव, शुभ्रत्वादिति भावः, मण्डलीकृतेन ब्रह्मसूत्रेण यज्ञोपवीतेन पवित्रीकृतः कायो देहो यस्यास्ताम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। अस्यास्तु तदा ब्रह्मचारितया यज्ञोपवीतधारणं शास्त्रीयमेव। तथा च हारीतः—"द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्म-वादिन्यः सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे च भैक्षचर्य्या।" तदेतत् प्रपञ्चितमस्माभिरुत्तररामचरितटीकायामनुसन्धेयम्।

(ष) आप्रेति। किञ्च। प्रपदं पादाग्रं मर्य्यादाभूतमित्याप्रपदं तत् प्राप्नोतीत्याप्रपदीनः पादतलपर्य्यन्त-व्यापकः तेन, "स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत् प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत्" इत्यमरः, स्वभावेन सितो धवलस्तेनापि सता, ब्रह्मासनबन्धेन पद्मासनकरणेन उत्ताने उन्मुखे ये चरणतले तयोः प्रभाया अर्थाल्लोहितायाः परिष्वङ्गात् संसर्गात् लोहितायमानेन दुकूलपटेन सूक्ष्मवसनेन प्रावृतावाच्छादितौ नितम्बौ यस्यास्ताम्। अत्र श्वेतदुकूलस्य लौहित्यगुणग्रहणात्तद्गुणोऽलङ्कारः।

(स) यौवनेनेति। अपिः समुच्चये। स्वकाले उपयुक्तवयसि स्वकीयसेवावसरे च उपसर्पति आगच्छ-तीति तेन, तथा निर्विकारं कामविकाररहितं क्रोधादिविकाररहितञ्च यथा स्यात्तथा विनीतेन शिक्षितेन यौवनेन, शिष्येणेव उपास्यमानां आश्रीयमाणां सेव्यमानाञ्च। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ह) लावण्येनेति। कृतपुण्येनेव सता स्वेच्छात्मना विग्रहेन कामभलङ्गीनस्वरूपेण च लावण्येन परि-गृहीतामाश्रिताम्। अत्र पुण्यकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

সেখানা যেন দুর্গার সিংহের জটাদ্বারা নির্ম্মিত বলিয়া বোধ হইতেছিল। (শ) কণ্ঠদেশে মণ্ডলীকৃত একটি যজ্ঞসূত্রে তাহার দেহ পবিত্র করিয়াছিল; মহাদেবের নিকট হইতে অনুগ্রহে লব্ধ, তাঁহারই চূড়ামণিরূপ চন্দ্রের কিরণসমূহের ন্যায় সেই যজ্ঞসূত্রটি বিরাজ করিতেছিল। (ষ) এবং চরণের অগ্রপর্য্যন্তব্যাপী সূক্ষ্মবস্ত্রে তাহার নিতম্বদেশ আবৃত ছিল; সেই বস্ত্রখানা স্বভাবতই শুক্লবর্ণ হইলেও, সে পদ্মাসন করিয়া বসিয়া থাকায়, উত্তানীকৃত (চিৎ করা) চরণতলের প্রভা তাহাতে পতিত হওয়ায় বস্ত্রখানার সেই অংশটা রক্তবর্ণ হইয়াছিল। (স) অবসরক্রমে উপস্থিত ও ক্রোধাদি-বিকার-বিহীন শিক্ষিত শিষ্যের ন্যায়, উপযুক্ত বয়সে উপস্থিত

(१) पवित्रतरीकृतकायां। (२) निर्विकारेण विनीतेन।

चापलेन आयतनमृगेणेव निषेविताम्, (१) (च) उत्सङ्गगतां च स्वसुतामिव सूक्ष्म-शङ्ख-खण्डिकाङ्गुरीयक-पूरिताङ्गुलिना (२) त्रिपुण्ड्रकावशिष्ट-भस्म-पाण्डुरेण (३) प्रकोष्ठ-बद्ध-शङ्ख-खण्डकेन नख-मयूख-दन्तुरतया गृहीतदन्तकोणेनेव दक्षिणकरेण वीणामास्फालयन्तीम्, प्रत्यक्षामिव गन्धर्वविद्याम्, (छ) मणिमण्डपिकास्तम्भ-लग्नाभिरात्मानुरूपाभिः सहचरीभिरिव सवीणाभिर्विलासवतीभिः प्रतिमाभि (४)-रुपेताम्, (ज) स्नपनार्द्र-लिङ्ग-संक्रान्त-प्रतिबिम्बतया

(च) रूपेणेति। रुचिरे सुन्दरे लोचने यस्य यत्र च तेन, तथा विगतं चापलं स्वाभाविकचाञ्चल्यं मदनोद्वेगश्च यस्य यत्र च तेन, आयतनमृगेणेव तत्सिद्धायतनहरिणेनेव रूपेण सौन्दर्य्येण निषेवितामाश्रिताम्। अत्रापि पूर्णोपमालङ्कारः।

(छ) उत्सङ्गेति। सूक्ष्माणां शङ्खखण्डिकानां शङ्खखण्डानाम् अङ्गुरीयकैः पूरिता अङ्गुलयो यस्य तेन, त्रिपुण्ड्रकात्तदाख्यतिलककरणादवशिष्टेन भस्मना पाण्डुरेण शुभ्रेण, तथा प्रकोष्ठे मणिबन्धदेशे बद्धो धृतः शङ्खखण्डः शङ्खवलयं यस्य तेन, नखानां मयूखैर्दन्तुरतया तुङ्गतया दीर्घतया हेतुना, गृहीतो दन्तकोणो गजदन्तनिर्म्मितवीणावादनसाधनं येन तादृशेनेव प्रतीयमानेन दक्षिणकरेण, उत्सङ्गगतां क्रोडस्थितां, दन्तमयीं गजदन्तभूषणप्रचुरां वीणां स्वसुतां निजकन्यामिव आस्फालयन्तीं वादयन्तीं सवात्सल्यमुत्क्षिप्योत्क्षिप्य लालयन्तीञ्च, अतएव प्रत्यक्षां गन्धर्वविद्यां गानशास्त्रविद्यामिव विद्यमानाम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः, तथा दन्तकोणग्रहणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, प्रत्यक्षां गन्धर्वविद्यामिवेति गुणोत्प्रेक्षा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। शङ्खमयाङ्गुरीयकवलयाभ्याञ्च वैधव्यं व्यज्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिः। "कोणो वीणादिवादन"मित्यमरः।

(ज) मणीति। विलासवतीभिर्विभ्रमशोभाशालिनीभिः। सहचरीभिरिव स्थिताभिः प्रतिमाभिरात्मप्रतिबिम्बैरुपेताम्। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

ও কাম-বিকার-বিহীন বশ্য যৌবনকাল তাহাকে আশ্রয় করিয়াছিল। (ঙ) লাবণ্যও, যেন পুণ্যোপার্জ্জন করিয়াই নির্ম্মল হইয়া তাহাকে অবলম্বন করিয়াছিল। (চ) সেই সিদ্ধায়তনের হরিণের ন্যায় সুন্দর-নয়ন-সম্পন্ন ও চাঞ্চল্যবিহীন রূপও, তাহাকে আশ্রয় করিয়াছিল। (ছ) আর সে, নিজ কন্যার ন্যায় হস্তি-দন্ত-ভূষিত একটি বীণা ক্রোড়ে স্থাপন করিয়া, দক্ষিণহস্তদ্বারা বাজাইতেছিল; তাহার সেই দক্ষিণ-হস্তের অঙ্গুলিগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শঙ্খ-খণ্ডের অঙ্গুরীদ্বারা পরিপূর্ণ ছিল, ত্রিপুণ্ড্র ধারণ করার অবশিষ্ট ভস্মে সেই দক্ষিণ-হস্ত শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, তাহার মণিবন্ধদেশ শঙ্খবলয়ে পরিবেষ্টিত ছিল এবং নখের কিরণে সেই দক্ষিণ হস্ত লম্বা বলিয়া বোধ হওয়ায় হস্তি-দন্তের ছড়ি ধারণ করিয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; ইহাতে তাহাকে সাক্ষাৎ গন্ধর্ব্ববিদ্যার ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (জ) মণ্ডপের মণিময় স্তম্ভগুলিতে লীলাবিলাস-সংযুক্ত, বীণার

(१) सेविता। (२) सूक्ष्मदन्तखण्डिकाङ्गुलीयकापूरिताङ्गुलिना। (३)...पाण्डरेण।
(४) सवीणाभिः प्रतिमाभिः।

अतिप्रबलभक्त्याराधितस्य हृदयमिव प्रविष्टां हरस्य, (ग) हारलतयेव (१) प्राप्तकण्ठयोगया ग्रहपङ्क्तिरिव ध्रुवप्रतिबद्धया क्रुद्धयेव रक्त-(२) मुखवर्णया मत्तयेव घूर्णित-मन्द्र (३) तारया उन्मत्तयेव अनेककृततालया मीमांसयेव अनेकभावना-नुविद्धया गीत्या देवं विरूपाक्षमुपवीणयन्तीम्, (घ) अतिमधुरगीतावकृष्टै-

(ग) स्नपनेति। स्नपनेन आर्द्रे स्फिग्धे लिङ्गे शिवमूर्त्तौ संक्रान्तं प्रतिबिम्बं यस्यास्तया भावस्तया हेतुना, अतिप्रबलभक्त्या आराधितस्य हरस्य हृदयं प्रविष्टामिव स्थिताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) हारेति। हारलतयेव प्राप्तकण्ठयोगया लब्धगलसम्बन्धया. इदमुभयत्रापि समानं। ग्रहाणां रव्यादीनां पङ्क्त्या श्रेण्येव, ध्रुवेण गानाङ्गविशेषेण प्रतिबद्धया नियमितया अन्यत्र तु ध्रुवाभ्यां तदाख्य-नक्षत्राभ्यां प्रतिबद्धया संयतया। गानाङ्गध्रुवलक्षणमुक्तं सङ्गीतदामोदरे—"उत्तमः षट्पदः प्रोक्तो मध्यमः पञ्चमः स्मृतः। कनिष्ठश्च चतुर्भिः स्याद् ध्रुवकोऽयं मयोदितः।" इत्यादि। ग्रहचक्रस्य ध्रुवनक्षत्रयोर्बन्धन मुक्तं सूर्य्यसिद्धान्ते—"भचक्रं ध्रुवयोर्बद्धमाक्षिप्तं प्रवहानिलैः। पर्य्यत्यजस्रं तन्नद्धा ग्रहकक्षा यथाक्रमम्।" क्रुद्धया स्त्रियेव, रक्तानि श्रीरागादियुक्तानि सुखवर्णानि सुखोच्चारितान्यक्षराणि यस्यां तया, अन्यत्र तु रक्तौ लोहितौ मुखवर्णौ यस्यास्तया। मत्तया मद्यादिपानजनितमदया स्त्रियेव, घूर्णितो मण्डपिकामध्ये विचरितः मन्द्रो मृदुः तार उच्चश्च स्वरो यस्यास्तया, अन्यत्र तु घूर्णिते मदवशाच्चलिते मन्दे अलसे तारे कनीनिकाद्वयं यस्यास्तया। उन्मत्तया स्त्रियेव, अनेके कृतास्ताला: कालक्रियामानरूपाः करतलध्वनयश्च यस्यां यया च तया। मीमांसया जैमिनिप्रणीतपूर्वमीमांसाशास्त्रेणेव, अनेकाभिर्विविधाभिर्भावनाभिर्मूर्च्छनाभिः अनुविद्धया विशिष्टया, पक्षे अनेकया द्विविधया भावनया भावयितुर्व्यापारेण तन्निरूपणेनेत्यर्थः अनुविद्धया ग्रथितया। "भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः, सा च द्विविधा शाब्दी भावना आर्थी भावना चे"ति लौगाक्षिभास्करः। विस्तरस्तु तत्रैव द्रष्टव्यः। एवम्भूतया गीत्या गानेन, त्रिरूपाणि चन्द्रसूर्य्याग्निरूपतया विसदृशानि अक्षीणि नेत्राणि यस्य तं देवं शिवं उपवीणयन्तीं वीणया उपगायन्तीम्। अत्र पूर्णा मालोपमालङ्कारः।

সহিত তাহার দেহের অনুরূপ প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল ; সেগুলিকে তাহার সহচরীদিগের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (গ) স্নান করইয়াছিল বলিয়া আর্দ্র শিব-মূর্ত্তিতে তাহার প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, সুতরাং বোধ হইতেছিল যেন, বিশেষ ভক্তিসহকারে আরাধনা করায় সে, শিবের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়াছে। (ঘ) বীণার ধ্বনির সহিত গান মিশাইয়া সে, মহাদেবের স্তব করিতেছিল ; সেই গানটি মুক্তাময় হারের ন্যায় তাহার কণ্ঠ-সংলগ্ন ছিল, গ্রহচক্র যেমন ধ্রুবনক্ষত্র-সংযুক্ত থাকে, সেই গানটিও তেমন ধুয়া-সংযুক্ত ছিল এবং ক্রুদ্ধা রমণীর যেমন মুখ রক্তবর্ণ হয়, সেই গানটিতেও তেমন মুখ হইতে নানাবিধ রাগ-রাগিণীযুক্ত অক্ষর উচ্চারিত হইতেছিল ; মত্তা রমণীর যেমন নয়নের তারা অলস হইয়া ঘুরিতে থাকে, সেই গানের স্বরও তেমন মৃদু ও উচ্চ হইয়া ঘুরিতেছিল ; উন্মত্তা রমণী যেমন বহুতর করতলধ্বনি করে, সেই গানেও তেমন বহুতর তাল করা হইতেছিল এবং মীমাংসাদর্শন যেমন শাব্দী ও আর্থী নামে দ্বিবিধ ভাবনা-বিশিষ্ট,

(१) हारलीलयेव। (२) रागरक्त...। (३)...मन्द्र...।

ध्यानमिवाभ्यस्यद्भिर्निश्चलकर्णपुटैर्मृग-वराह-वानर-वारण-शरभ-सिंह-प्रभृतिभिर्वनचरैराबद्धमण्डलैराकर्ण्यमान-गीतानुविद्ध-विपञ्ची-घोषाम्, (१) (ङ) अमरापगामिव नभसोऽवतीर्णाम्, (च) दीक्षितवाचमिवाप्राकृताम्, (छ) त्रिपुरारि-शरशलाकामिव तेजोमयीम्, (२) (ज) पीतामृतामिव विगत-तृष्णाम्, (झ) ईशानशिरःशशिकलामिवानुपजातरागाम्, (ञ) अमथितोदधिजलसम्पद-

(ङ) ध्यानेति। अतिमधुरेण गीतेन अवकृष्टैराकृष्य आनीतैः, निश्चलकर्णपुटैः, अतएव ध्यानं अभ्यस्यद्भिः शिक्षमाणैरिव स्थितैः, आबद्धं मण्डलं वर्तुलाकारेणावस्थानं यैस्तैः। वारणो हस्ती। शरभः सिंहघाती अष्टपादो जन्तुविशेषः। आकर्ण्यमानः श्रूयमाणः गीतानुविद्धो गानानुसृतो विपञ्चीघोषः सप्ततन्त्रीविशिष्टवीणाध्वनिर्यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) अमरेति। नभस आकाशादवतीर्णां अमरापगां मन्दाकिनीमिव स्थिताम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) दीक्षितेति। दीक्षितस्य यज्ञादौ व्रतिनः वाचं वाक्यमिव, अप्राकृतां अमानुषीं दिव्याम्, अन्यत्र तु प्राकृतादिभाषाभिन्नां संस्कृतात्मिकामित्यर्थः। "नापभाषित वै न म्लेच्छित वै" इति श्रुत्या व्रतिनोऽपभ्रंशभाषाव्यवहारनिषेधादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ज) त्रिपुरेति। त्रिपुरारेः शिवस्य शरशलाकां त्रिपुरासुरवधकाले नारायणात्मिकां बाणशलाकामिव तेजोमयीं तेजःप्रचुराम्। पूर्णोपमा।

(झ) पीतेति। पीतममृतं यया तां स्त्रियमिव, विगता तृष्णा विषयलोभो जलपिपासा च यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ञ) ईशानेति। ईशानस्य शिवस्य शिरसः शशिकलामिव, अनुपजातो रागः कामानुरागो रक्तिमा च यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा। तच्चन्द्रकलाया उदयास्ताभावादेव रागो न जायत इति बोध्यम्।

সেই গানটিও তেমন বহুতর মূর্চ্ছনা-বিশিষ্ট ছিল। (ঙ) অতি মধুর গানে আকৃষ্ট হইয়া হরিণ, শূকর, বানর, হস্তী, শরভ ও সিংহপ্রভৃতি বন্য পশুগণ নিশ্চল কর্ণপুটে ও মণ্ডলাকারে অবস্থান করিয়া, তাহার গীত-সংযুক্ত বীণার ধ্বনি শুনিতেছিল ; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন তাহারাও ধ্যান অভ্যাস করিতেছে। (চ) আর সেই কন্যাটিকে, আকাশ হইতে অবতীর্ণ মন্দাকিনীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ছ) যজ্ঞে দীক্ষিত ব্যক্তির যেমন প্রাকৃত ভাষা বলিতে নাই, সেই কন্যাটিও তেমন প্রাকৃত (মনুষ্য) ছিল না। (জ) ত্রিপুরাসুরের বধের সময়ে শিবের বাণের ন্যায় সেও তেজোময়ী ছিল। (ঝ) অমৃতপানকারিণীর যেমন পিপাসা থাকে না, তাহারও তেমন বিষয়-লালসা ছিল না। (ঞ) শিবের মস্তকস্থিত চন্দ্রকলার যেমন রাগ (রক্তিমা) জন্মে না, তাহারও তেমন রাগ (কামানুরাগ) জন্মিয়াছিল না। (ট)

(১)...নির্ঘোষাম্। (২) তপোময়ীম্।

मिवान्तःप्रसन्नाम्, (ट) असमस्तपदवृत्तिमिवाद्वन्द्वाम्, (ठ) बौद्धबुद्धिमिव निरालम्बनाम्, (ड) वैदेहीमिव प्राप्तज्योतिःप्रवेशाम्, (ढ) द्यूतकलाकुशलामिव वशीकृताक्षहृदयाम्, (ण) महीमिव जलभृतदेहाम्, (त) हिमसमयदिवस-(१) मुखलक्ष्मीमिव परिगृहीत-(२) भास्करातपाम्, (थ) आर्य्यामिव

(ट) अमथितेति। अमथितस्य उदधः समुद्रस्य जलसम्पदमिव, अन्तःप्रसन्नां चित्ते शुद्धां कामादिरहितचित्तामित्यर्थः, अन्यत्र तु अभ्यन्तरनिर्म्मलाम्। पूर्णोपमा।

(ठ) असमस्तेति। असमस्तानां समासरहितानां पदानां सुबन्तरूपाणां वृत्तिमवस्थितिमिव, अद्वन्द्वां वर्षातपशीतोष्णादिद्वन्द्वदुःखरहितां, अन्यत्र तु द्वन्द्वाख्यसमासरहितां युग्ममेलनरहितां वा। पूर्णोपमा।

(ड) बौद्धेति। बौद्धानां माध्यमिकयोगाचारसाम्प्रदायिकानामित्यर्थः बुद्धिं ज्ञानमिव, निरालम्बनां सर्व्वत्रैवासक्तिरहितां, अन्यत्र तु निर्विषयाम्। पूर्णोपमा। बौद्धानां माध्यमिका योगाचाराश्च सम्प्रदाया विज्ञानातिरिक्तं पदार्थं न मन्यन्ते, वदन्ति च तत्तज्ज्ञानमेव घटादिरूपेणावभासते, भेदस्तु भ्रान्तिरेवेति। तथा च "सहोपलम्भनियमादभेदो नीलतद्धियोः। भेदश्च भ्रान्तिविज्ञानैर्दृश्येतेन्दाविवाद्वये।"

(ढ) वैदेहीमिति। वैदेहीं सीतामिव, प्राप्तो ज्योतिषि परब्रह्मणि प्रवेशो ध्यानगोचरता यया ताम्, अन्यत्र तु प्राप्तो ज्योतिषि परीक्षार्थप्रज्वालितवह्नौ प्रवेशो यया ताम्। पूर्णोपमा।

(ण) द्यूतेति। द्यूतकलायां पाशकक्रीडायां कुशलां निपुणां स्त्रियमिव, वशीकृतानि अक्षाणि इन्द्रियाणि हृदयं चित्तञ्च यया ताम्, अन्यत्र तु वशीकृतं अक्षहृदयं पाशकविद्यारहस्यं यया ताम्। पूर्णोपमा।

(त) महीमिति। महीं पृथिवीमिव, जलेन जलमात्रपानेन भृतो धृतो देहो यया ताम्, अन्यत्र तु जलेन भृतो वेष्टितो देहो यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(थ) हिमेति। हिमसमयस्य माघफाल्गुनात्मकतुषारपातकालस्य दिवसमुखलक्ष्मीमिव प्रत्यूषश्रियमिव, परिगृहीतः पञ्चाग्निसाधनात् शरीरे स्वीकृतः भास्करातपः सूर्य्यालोको यया ताम्, अन्यत्र तु परिगृहीतः तुषारैर्निरुद्धो भास्करातपो यया ताम्। पूर्णोपमा।

অনালোড়িত সমুদ্রের জলের ভিতর যেমন নির্ম্মল, তাহার অন্তঃকরণও তেমন নির্ম্মল ছিল। (ঠ) সমাসবিহীন পদসমূহের যেমন পরস্পর মিলন থাকে না, তাহারও তেমন শীতোষ্ণাদি দ্বন্দ্বদুঃখ ছিল না। (ড) বৌদ্ধদিগের সম্প্রদায়বিশেষের মতে জ্ঞানের যেমন বিষয় নাই, তাহারও তেমন আসক্তি ছিল না। (ঢ) সীতা যেমন অগ্নিতে প্রবেশ করিয়াছিলেন, সেও তেমন পরব্রহ্মে প্রবেশ করিয়াছিল। (ণ) দ্যূতক্রীড়ায় নিপুণ স্ত্রীলোক যেমন পাশক বিদ্যার রহস্য আয়ত্ত করিয়া থাকে, সেও তেমন ইন্দ্রিয়সমূহ এবং চিত্তকে আয়ত্ত করিয়াছিল। (ত) পৃথিবী যেমন জলে পরিবেষ্টিতদেহা, সেও তেমন কেবল জলপানে ধৃতদেহা ছিল। (থ) শীতকালের প্রভাতসময়ের শোভা যেমন হিমদ্বারা সূর্য্যের আলোক আবৃত করে, সেও

(१)…दिन…। (२) परिपीत…।

समुपात्त-(१) यतिगणोचितमात्राम्, (द) आलिखितामिवाचलावस्थानाम्, (ध) अंशुमयीमिव तनुच्छायानुलिप्तभूतलाम्, (न) निर्म्ममाम्, (२) निरहङ्काराम्, निर्म्मत्सराम्, अमानुषाकृतिम्, दिव्यत्वादपरिज्ञायमान-वयः-परिमाणां (३) अष्टादशवर्षदेशीयामिवोपलक्ष्यमाणाम्, प्रतिपन्नपाशुपतव्रतां कन्यकां ददर्श। (प)

ततोऽवतीर्य्य तरुशाखायां बद्ध्वा तुरङ्गं (४) उपसृत्य भगवते भक्त्या (५) प्रणम्य

(द) आर्य्यामिति। आर्य्यां स्वनामप्रसिद्धं छन्दोविशेषमिव, समुपात्ता गृहीता यतिगणस्य जितेन्द्रिय-जनसमूहस्य मुनिगणस्येत्यर्थः उचिता योग्या मात्रा दण्डकमण्डल्वाद्युपकरणं यया ताम्, अन्यत्र तु समुपात्ता गृहीताः, यतिर्जिह्वाविश्रामस्थानं, गणा मगणनगणादयः, उचिता योग्या तत्तल्लक्षणोक्ता मात्रा उच्चारण-कालश्च यया ताम्। पूर्णोपमा। "लक्ष्मैतत् सप्तगणा गोपेता भवति नेह विषमे जः। षष्ठो जश्च न लघु र्वा प्रथमेऽर्द्धे नियतमार्य्यायाः।" इत्यादिच्छन्दोमञ्जरी।

(ध) आलीति। आलिखितां चित्रितामिव, अचले पर्वते अवस्थानं यस्यास्ताम्, अन्यत्र तु अचलं स्थिरमवस्थानं यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(न) अंश्विति। अंशुमयीं तेजोमयीं देवीमिव, तनुच्छायया देहस्य प्रतिबिम्बेन कान्त्या च अनु-लिप्तं भूतलं यया ताम्। पूर्णोपमा।

(प) निर्म्ममामिति। ममतार्थे ममशब्दोऽयमव्ययः, निर्म्ममा ममतारहिताम्। निर्म्मत्सरामन्यविद्वेष-हीनाम्। दिव्यत्वात् गन्धर्वकन्यात्वेन निर्जरत्वादित्यर्थः अपरिज्ञायमानं मानुषवदाकृतिदर्शनमात्रेणाबुध्यमानं वयसः परिमाणं यस्यास्तामपि, अष्टादशवर्षदेशीयामिव अष्टादशवर्षात् किञ्चिन्न्यूनवयस्कामिव। "ईषद-समाप्ता"वित्यादिना देशीयप्रत्ययः। प्रतिपन्नं गृहीतं पशुपतिः शिवो देवता अस्येति पाशुपतं व्रतं शिव-पूजारूपो नियमो यया ताम्।

(फ) तत इति। त्रिलोचनाय शिवाय। दिव्ययोषितं स्वर्गीयस्त्रियम्। अनिमिषाणि निस्पन्दानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन, निश्चलं यथा तथा निबद्धं कृतं लक्ष्यं दृष्टियेन तेन।

তেমন শরীরে সূর্য্যের আলোক ধারণ করিতেছিল। (দ) আর্য্যা ছন্দের যেমন যতি, গণ ও উপযুক্ত মাত্রা থাকে, তাহারও তেমন মুনিগণের উপযুক্ত দণ্ড ও কমণ্ডলু প্রভৃতি উপকরণ ছিল। (ধ) চিত্রিত প্রতিমূর্ত্তি যেমন নিশ্চলভাবে অবস্থান করে, সেও তেমন পর্ব্বতে অবস্থান করিতেছিল। (ন) তেজোময়ী দেবী যেমন শরীরের কান্তিদ্বারা ভূতল লিপ্ত করেন, সেও তেমন শরীরের প্রতিবিম্বদ্বারা ভূতল লিপ্ত করিতেছিল। (প) এবং তাহার মমতা ছিল না, অহঙ্কার ছিল না, বিদ্বেষ ছিল না, ছিল,—অমানুষী আকৃতি; আর স্বর্গীয় বলিয়া তাহার বয়সের যথার্থ পরিমাণ জানিতে না পারিলেও, তাহাকে অষ্টাদশ বর্ষের কিঞ্চিৎ ন্যূনবয়স্ক বলিয়া বোধ হইতেছিল এবং সে, শিবের উপাসনারূপ ব্রত অবলম্বন করিয়াছিল।

(ফ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া কোন বৃক্ষের শাখাতে অশ্বটিকে

(१) उपात्त...। (२) निर्म्मला। (३)...प्रमाणां। (४) तुरगं। (५) नम्राभक्त्या।

त्रिलोचनाय, (१) तामेव दिव्ययोषितमनिमिष-(२) पक्ष्मणा निश्चल-निबद्ध-लक्ष्येण चक्षुषा पुनर्निरूपयामास (फ)। उदपादि चास्य तस्या रूपसम्पदा कान्त्या प्रशान्त्या चाविर्भूतविस्मयस्य मनसि, (ब)—'अहो! जगति जन्तूनाम-समर्थितोपनतान्यापतन्ति वृत्तान्तान्तराणि (भ)। तथाहि, मया मृगयायां यदृच्छया निरर्थकमनुबध्नता तुरङ्गमुख-(३)मिथुनं, अयमतिमनोहरो मानवानामगम्यो दिव्यजनसञ्चरणोचितः प्रदेशो वीक्षितः (४) (म)। अत्र च सलिलमन्वेषमाणेन हृदयहारि सिद्धजनोपस्पृष्टजलं (५) सरो दृष्टम्। तत्तीरलेखाविश्रान्तेन चामानुषं गीतमाकर्णितम्। तच्चानुसरता मानुषदुर्लभदर्शना दिव्यकन्यकेयमालोकिता (य)। नहि मे संशीतिरस्या दिव्यतां प्रति, आकृतिरेवानुमा-

(ब) उदपादीति। किञ्चेति चार्थः। रूपसम्पदा सौन्दर्यातिशयेन, कान्त्या देहद्युत्या, प्रशान्त्या प्रशमेन च कारणेन, आविर्भूतो विस्मयो यस्य तस्य, अस्य चन्द्रापीडस्य मनसि उदपादि। इत्थं वृत्तिरुत्पन्ना।

(भ) कासौ वृत्तिरित्याह अहो इति। जन्तूनां प्राणिनां, वृत्तान्तान्तराणि व्यापारविशेषाः, असमर्थितोपनतानि अतर्कितोपस्थितानि सन्ति आपतन्ति मनसि आगच्छन्ति अनुभवविषयीभवन्तीत्यर्थः।

(म) उक्तमर्थं समर्थयितुमाह तथाहीति। यदृच्छया स्वेच्छया। अनुबध्नता अनुसरता। तुरङ्गमुखमिथुनं किन्नरद्वयं। दिव्यजनसञ्चरणोचितो देवजनविचरणयोग्यः।

(य) अत्रेति। हृदयहारि मनोहरं, सिद्धजनैर्देवयोनिविशेषैः उपस्पृष्टं व्यवहृतं जलं यस्य तत्, सरः अच्छोदसरोवरः। तस्य अच्छोदस्य तीरलेखायां तटवीथ्यां विश्रान्तेन कृतविश्रामेण मयेति सम्बन्धः।

(र) ननु कथमियं दिव्यकन्यकेति निश्चीयत इत्याह नहीति। अस्या दृश्यमानायाः कन्यकायाः,

বন্ধন করিলেন, পরে নিকটে যাইয়া ভক্তিসহকারে ভগবান্ মহাদেবকে নমস্কার করিয়া পুনরায় স্থিরদৃষ্টিতে সেই স্বর্গীয় রমণীকেই দেখিতে লাগিলেন; তখন তাঁহার নয়নের লোমগুলি নিস্পন্দ হইয়াছিল। (ব) তাহার অলৌকিক সৌন্দর্য্যে, শরীরের আলোকে এবং শান্তির পথ অবলম্বন করায় চন্দ্রাপীড়ের বিস্ময় জন্মিল এবং মনে হইতে লাগিল—(ভ) "কি আশ্চর্য্য! জগতে প্রাণিগণের সমক্ষে বিশেষ বিশেষ ঘটনা, অতর্কিতভাবেই উপস্থিত হইয়া থাকে। (ম) কারণ—আমি ইচ্ছানুসারে মৃগয়ায় আসিলাম, অনর্থক কিন্নর দুইটার অনুসরণ করিলাম, পরে, মানুষের অগম্য, স্বর্গবাসীদিগের বিচরণের যোগ্য, অত্যন্ত মনোহর এই স্থানটি দেখিতে পাইলাম। (য) এখানে আবার জলের অন্বেষণ করিতে করিতে সিদ্ধজন-সেবিত সুন্দর সরোবরটি দেখিলাম; তাহার তীরে আবার বিশ্রাম করিতে থাকিয়া অলৌকিক গান শুনিলাম; আবার সেই গীতধ্বনির অনুসরণ করিয়া এই স্বর্গীয় কন্যাটিকে দেখিতে পাইলাম;

(१) पार्वतीपतये। (२) अनिमिष...।
(३) तुरगमुख...। (४) वीक्षितः स्थितः। (५)...उपस्पृष्टजलं।

थयत्यमानुषताम्, कुतश्च मर्त्यलोके सम्भूतिरेवंविधानां गन्धर्व-(१) ध्वनि-विशेषाणाम् (र)। तद्यदि मे सहसा दर्शनपथान्नापयाति, नारोहति वा कैलासशिखरम्, नोत्पतति वा गगनतलम्, ततः 'का त्वम्, किमभिधाना वा, किमर्थं वा प्रथमे वयसि प्रतिपन्ना व्रतम्, (२) इति सर्वमेवैतत् एना-मुपसृत्य पृच्छामि, अतिमहानयमवकाश आश्चर्याणाम्।' इत्यवधार्य तस्यामेव स्फटिकमण्डपिकायामन्यतमं स्तम्भमाश्रित्य समुपविष्टो गीतसमाप्त्यवसरं प्रतीक्ष-माणस्तस्थौ। (ल)

अथ गीतावसाने मूकीभूतवीणा प्रशान्तमधुकररुतेव कुमुदिनी सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामा परिवृत्य स्वभावधवलया तपःप्रभाव-

दिव्यतां प्रति स्वर्गीयताविषये नास्ति मे संशीतिः संशयो वर्तते। आकृतिरेव अमानुषीति शेषः। अमानुषतां दिव्यताम्। न खलु मानुषीणामेवमाकृतिर्भवतीति भावः। सम्भूतिरुत्पत्तिः। सुतरामस्या दिव्यतां प्रति नास्ति संशीतिरिति भावः। संशीतिरिति संपूर्वशीङ्धातोः क्तिः।

(ल) तद्यदीति। नापयाति नापसरति। नोत्पतति नोद्गच्छति। ततस्तदा। किमभिधाना किन्नाम्नी। प्रतिपन्ना आरब्धवती। आश्चर्याणां श्रवणेनाश्चर्यानुभवानां, अयमवकाशः समयः।

(व) अथेति। मूकीभूता निःशब्दा जाता वीणा यस्याः सा, अतएव प्रशान्तं विरतं मधुकररुतं भ्रमरध्वनिर्यस्याः सा, कुमुदिनीव विद्यमाना। अत्रोपमालङ्कारः। प्रदक्षिणीकृत्य शिवमूर्तिमिति शेषः। कृतो

কিন্তু ইহার দর্শন পাওয়া মানুষের পক্ষে দুর্লভ। (র) এ যে স্বর্গীয়, সে বিষয়ে আমার কোনই সংশয় নাই; কারণ—ইহার এই আকৃতিই, 'এ মানবী নহে' বলিয়া আমাকে অনুমান করাইতেছে; বিশেষতঃ মর্ত্যলোকে এইরূপ গন্ধর্বের গীতধ্বনির সম্ভব হইবে কিরূপে? (ল) অতএব যদি সহসাই আমার দৃষ্টিপথ হইতে সরিয়া না যায়, কিংবা কৈলাসপর্বতের শৃঙ্গে আরোহণ না করে, অথবা আকাশে উঠিয়া না যায়, তাহা হইলে 'তুমি কে? তোমার নামই বা কি? কি জন্যই বা এই নবীন বয়সে তপস্যা আরম্ভ করিয়াছ?' এই ভাবে এই সমস্ত বিষয়ই নিকটবর্ত্তী হইয়া ইহাকে জিজ্ঞাসা করিব; কারণ—আশ্চর্য্য শুনিবার এই-ই অত্যন্ত উপযুক্ত অবসর।' চন্দ্রাপীড় এইরূপ মনে মনে স্থির করিয়া সেই স্ফটিকমণ্ডপের ভিতরেই কোন একটি স্তম্ভ অবলম্বন পূর্ব্বক উপবেশন করিয়া গান-সমাপ্তির অবসর প্রতীক্ষা করতঃ অবস্থান করিতে লাগিলেন।

(ব) তাহার পর গান সমাপ্ত হইলে বীণাটিও নীরব হইল, তখন ভ্রমরের রব বিরত হইলে কুমুদিনীর ন্যায় সে বিরাজ করিতে লাগিল; পরে সেই কন্যাটি উঠিয়া

(१) गान्धर्व…। (२) पाशुपतव्रतम्।

प्रगल्भया दृष्ट्या समाश्वासयन्तीव, पुण्यैरिव स्पृशन्ती तीर्थजलैरिव प्रक्षालयन्ती, तपोभिरिव पावयन्ती, शुद्धिमिव कुर्वाणा, वरदानं (१) इवोपपादयन्ती पवित्रतामिव (२) नयन्ती चन्द्रापीडमाबभाषे (व)। "स्वागतमतिथये, कथमिमां भूमिमनुप्राप्तो महाभागः, (३) तदुत्तिष्ठ, आगम्यताम्, (४) अनुभूयतामतिथिसत्कारः" इति (श)। एवमुक्तस्तु तया सम्भाषण-(५) मात्रेणैवानुगृहीतमात्मानं मन्यमान उत्थाय (६) भक्त्या कृतप्रणामो "भगवति! यथाज्ञापयसि" इत्यभिधाय दर्शितविनयः शिष्य इव तां व्रजन्तीमनुवव्राज। (ष)

व्रजंश्च समर्थयामास—"हन्त! तावन्नेयं मां दृष्ट्वा तिरोभूता (७)। कृतं हि मे कुतूहलेन प्रश्नाशया हृदि पदम्। यथा चेयमस्यास्तपस्विजनदुर्लभदिव्य-

---

हराय शिवाय प्रणामो यया सा। तपःप्रभावेण प्रगल्भा दृष्टा भावनिर्णयनिपुणेत्यर्थः तया। समाश्वासयन्तीव सान्त्वनां कुर्वतीव अभयं ददतीवेत्यर्थः। शुद्धिं पापक्षयं। उपपादयन्ती सम्पादयन्ती कुर्वती। नयन्ती प्रापयन्ती। अत्र समानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) स्वागतमिति। महान् भागो भाग्यं यस्य सः। अनुप्राप्त आगतः।

(ष) एवमिति। तया कन्यकया एवमुक्तस्तु चन्द्रापीड इति सम्बन्धः। शिष्य इव दर्शितविनयः सन्। अनुवव्राज अनुजगाम। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(स) व्रजन्निति। किञ्च, व्रजन् तां कन्यकामनुगच्छन् चन्द्रापीडः, समर्थयामास मनसि निर्द्धारयामास। किं समर्थयामासेत्याह हन्तेति। हन्त हर्षे। इयं कन्या। हि तस्मादेव, मे मम हृदि कुतूहलेन

প্রদক্ষিণ করিয়া মহাদেবকে নমস্কার করিল এবং ফিরিয়া, স্বভাবতই ধবলবর্ণ এবং তপস্যার প্রভাবে সর্ব্ব-বিষয়-নির্ণয়-নিপুণ দৃষ্টিদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে যেন আশ্বস্ত করিতেছিল, পুণ্যদ্বারাই যেন স্পর্শ করিতেছিল, তীর্থজলেই যেন প্রক্ষালন করিতেছিল, তপস্যাতেই যেন পবিত্র করিতেছিল, যেন পাপক্ষয় জন্মাইতেছিল, যেন বর-দান করিতেছিল এবং যেন পবিত্রতা জন্মাইতেছিল—এই অবস্থায় বলিল। (শ) "অতিথির শুভাগমন ত? কি করিয়া মহাশয় এখানে আসিলেন? অতএব উঠুন, আসুন, আমার অতিথিসংকার গ্রহণ করুন।"
(ষ) সে, এইরূপ বলিলে চন্দ্রাপীড় সেই সম্ভাষণমাত্রেই আপনাকে অনুগৃহীত মনে করিয়া, উঠিয়া ভক্তিসহকারে তাহাকে প্রণাম করিয়া "দেবি! আপনি যেরূপ আদেশ করেন, (তাহাই করিব)" এই কথা বলিয়া শিষ্যের ন্যায় বিনয়-প্রদর্শনপূর্ব্বক তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিলেন; সেও চলিল।

(স) চন্দ্রাপীড় যাইবার সময়ে মনে মনে এইরূপ স্থির করিলেন যে,—'ভাল! এ, ত

---

(१) वरप्रदानं। (२) पवित्रिताम्। (३) महाभाग! (४) अनुगम्यताम्।
(५) सम्भाषित...। (६) समुत्थाय। (७) अद्भुताकृतिस्तिरोभूता।

रूपाया अपि दाक्षिण्यातिशयया प्रतिपत्तिरभिजाता विभाव्यते, तथा सम्भावयामि नियतमियमखिलमात्मोदन्तं (१) अभ्यर्थ्यमाना कथयिष्यतीति (ख)। एवञ्च कृतमतिः पदशतमात्रमिव गत्वा, निरन्तरैर्दिवापि रजनीसमयमिव दर्शयद्भि-स्तमालतरुभिरन्धकारितपुरोभागाम्, (ङ) उत्फुल्लकुसुमेषु लतानिकुञ्जेषु कूजतां मन्दं मन्दं मदमत्त-(२) मधुलिहां विरुतिभिर्मुखरीकृतपर्य्यन्ताम्, (च) अतिदूरपातिनीनाञ्च धवलशिलातल-प्रतिघातोत्पतनफेनिलानामपां प्रस्रवणैरुत्-

---

प्रश्नाशया पूर्वोक्तरूपजिज्ञासाशंसया पदं प्रतिष्ठा कृतम्। तपस्विजनानां दुर्लभं दिव्यं रूपं यस्यास्तस्या अपि, अस्यां कन्यकायाः, यथा इयं, दाक्षिण्यस्य औदार्य्यस्य अतिशयोऽतिरेको यस्यां सा तादृशी, प्रतिपत्तिः स्वागतमपितये इत्यादिव्यवहारं, अभिजाता उत्पन्ना विभाव्यते लक्ष्यते। अभ्यर्थ्यमाना मया वक्तुमनुरुध्यमाना सती, नियतं निश्चितं। आत्मोदन्तं स्वकीयवृत्तान्तं। इति सम्भावयामीत्यन्वयः।

(ङ) एवमिति। किञ्च, एवं कृतमतिं इत्थं कृतनिश्चयश्चन्द्रापीडं, पदशतमात्रमिव गत्वा गुहा-मद्राक्षीदिति वक्ष्यमाणक्रिययान्वयः। अत्र स्त्रियां द्वितीयैकवचनान्तपदानि गुहामिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। निरन्तरैर्घनैः, अतएव दिवापि रजनीसमयं दर्शयद्भिरिव स्थितैः, तमालतरुभिः करणैः, अन्धकारितः सञ्जातान्धकारः पुरोभागः सम्मुखदेशो यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) उत्फुल्लेति। उत्फुल्लानि विकसितानि कुसुमानि येषु तेषु। मदमत्ता ये मधुलिहो भ्रमरास्तेषां विरुतिभिर्झङ्कारैः मुखरीकृतः शब्दितः पर्य्यन्तः प्रान्तभागो यस्यास्ताम।

(छ) अतीति। किञ्च, अतिदूरात् पतितुं शीलं यासां तासां, धवलेषु शिलातलेषु प्रतिघातेन यदुत्पतनमूर्द्ध्वगमनं तेन फेनिलानां फेनवतीनां अपां जलानां, उत्कोटय उन्नताग्रा ये ग्रावाणः पाषाणास्तेषां विटङ्कपरिभागैः विपाट्यमानानि विच्छिद्यमानानि तैः, उच्चरन्तो घातप्रतिघातैरुत्पद्यमानाः ध्वनयः शब्दा

আমাকে দেখিয়া অন্তর্হিত হইল না; সুতরাং এখন আমার চিত্তে কৌতুকবশতঃ সেই প্রশ্ন করিবার আশা প্রতিষ্ঠা লাভ করিল। ইহার এই দিব্য রূপ, তপস্বিদিগেরও দুর্ল্লভ; তথাপি আমার প্রতি ইহার যখন এইরূপ অত্যন্ত-ঔদার্য্য-সম্পন্ন ব্যবহার জন্মিয়াছে—দেখিতেছি, তখন আমি ইহা স্থির করিতে পারি যে,—আমি ইহাকে বলিবার জন্য অনুরোধ করিলে, এ, নিশ্চয়ই আপনার সমস্ত বৃত্তান্ত বলিবে।' (ঙ) চন্দ্রাপীড় মনে মনে এইরূপ কৃতনিশ্চয় হইয়া, এক-শত-পদ-মাত্র গমন করিয়া একটি গুহা দেখিতে পাইলেন, তাহার সম্মুখভাগ, কতকগুলি তমালবৃক্ষে অন্ধকার করিয়া রাখিয়াছিল, সেই তমালবৃক্ষগুলি, অত্যন্ত ঘন ছিল বলিয়া দিনের বেলায়ও যেন রাত্রিকাল বলিয়া ভ্রম জন্মাইতেছিল; (চ) লতাকুঞ্জের ভিতরে নানাবিধ ফুল ফুটিয়াছিল, তাহাতে মন্দ-মন্দ-রবকারী মদমত্ত ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে সেই গুহাটির প্রান্তভাগ মুখরিত হইয়াছিল। (ছ) পার্ব্বত্য নির্ঝরের জল অতিদূর হইতে ধবল

---

(१) स्वयमात्मोदन्तं। (२) गुञ्जतां मन्दं, मधुमत्त…।

কোটি-গ্রাব-বিটঙ্ক--বিপাট্যমানৈরুচ্চরদ্ভিনির্ভিরবশীর্য্যমাণ-তুষার--শিশির-শীকরা-সারৈরাবধ্যমাননীহারাম্, (ক) হিম-হার-হর-হাস-ধবলৈরুভয়তঃ স্বরদ্ভি-র্নির্ঝরৈর্দ্বারাবলম্বিত-চলচ্চামর-(১) কলাপামিবোপলক্ষ্যমাণাম্, (খ) অন্তঃ-স্থাপিত-মণি-কমণ্ডলু-মণ্ডলাম্, (গ) একান্তাবলম্বিত-যোগ-পট্টিকাম্, (ঘ) বিশাখিকা-শিখর-নিবদ্ধ-(২) নারিকেলী-(৩) ফল-বল্কলময়-ধৌতোপানদ্যুগলো-

---

যেষু তৈঃ, তথা অবশীর্য্যমাণাঃ পাষাণেষু পতনাৎ জর্জ্জরীভবন্তঃ তুষারবৎ শিশিরাঃ হিমবৎ শীতলাঃ শীকরাসারা জলবিন্দুধারা যেষাং তৈঃ, প্রস্রবণৈঃ পার্ব্বত্যনির্ঝরৈঃ, আবধ্যমানা উৎপাদ্যমানা নীহারা হিমবজ্জলবিন্দবো যস্যাং তাম্। অত্র স্বভাবোক্তিরলঙ্কারঃ, তুষারশিশিরশব্দয়োঃ পর্য্যায়তয়া আপাততঃ পুনরুক্ততাপ্রতীতেঃ পরঞ্চ তুষারবৎ শিশিরা ইতি ভেদাবগমাৎ পুনরুক্তবদাভাসস্থানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। তথা ধবলশিলাতলেতি ধবলপদং বর্ণনীয়ার্থস্য ন কিঞ্চিদুপকুরুত ইতি "বিলোক্য বিততে ব্যোম্নি" ইত্যাদি দর্পণোদাহৃতবৎ অপুষ্টার্থত্বদোষঃ, স তু ধবলপদপরিত্যাগেনৈব সমাধেয়ঃ।

(খ) হিমেতি। কিঞ্চ হিমং তুষারঃ হারো মুক্তামালা হরহাসঃ শিবহাস্যং তদ্বত ধবলাস্তৈঃ, উভয়তো দ্বারপার্শ্বদ্বয়ে স্বরদ্ভিঃ স্রবদ্ভিঃ নির্ঝরৈর্হেতুভিঃ, দ্বারে অবলম্বিতং সৎ চলৎ চামরাণাং কলাপো যস্যাস্তামিবোপলক্ষ্যমাণাম্। অত্র চলচ্চামরকলাপোৎপ্রেক্ষণাজ্জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(গ) অন্তরিতি। অন্তরভ্যন্তরে স্থাপিতং মণিময়কমণ্ডলূনাং মণ্ডলং সমূহো যস্যাস্তাম্।

(ঘ) একান্তেতি। একান্তে একপার্শ্বে অবলম্বিতা যোগপট্টিকা যোগসাধনসময়পরিধানায় ক্ষুদ্রপট্টবস্ত্রং যস্যাস্তাম্।

(ঙ) বিশাখিকেতি। বিশাখিকায়াঃ শিক্যায়াঃ শিখরে উপরিভাগে নিবদ্ধং সংযতং নারিকেলীফলস্য বল্কলময়ং ধৌতং যদুপানদ্যুগলং পাদুকাদ্বয়ং তেনোপেতাং বিশিষ্টাম্।

শিলাখণ্ডের উপরে পড়িতেছিল, সুতরাং সেই শিলাখণ্ডের প্রতিঘাতে সেই জলের কতক অংশ পুনরায় উৎক্ষিপ্ত হইতেছিল, এই ঘাত-প্রতিঘাতে সেই জলে বহুতর ফেন জন্মিতেছিল, কোন স্থানে উন্নত পাষাণের অগ্রভাগে সেই জল বিচ্ছিন্ন করিয়া দিতেছিল, তাহাতে শব্দ হইতেছিল এবং হিমের ন্যায় শীতল জল-বিন্দুধারা, আরও ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র হইয়া সেই গুহার ভিতরে নীহারের ন্যায় ছড়াইয়া পড়িতেছিল। (খ) সেই গুহাদ্বারের উভয়পার্শ্বে হিম, মুক্তার মালা ও শিবের হাস্যের ন্যায় ধবলবর্ণ নির্ঝরের জল পড়িতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল, যেন দ্বারের দুই দিকে ঝুলান কতকগুলি চামর দুলিতেছে। (গ) সেই গুহার ভিতরে কতকগুলি মণিময় কমণ্ডলু স্থাপিত ছিল। (ঘ) যোগ-সাধন করিবার সময়ে পরিধান করিবার উপযুক্ত ক্ষুদ্র একখানি পট্টবস্ত্র এক দিকে ঝুলান ছিল। (ঙ) নারিকেল-

---

(১)...দ্বারচলচ্চামর...। (২) বিশাখিকানিবদ্ধ...। (৩)...নালিকেরী ..।

पिनाम्, (१) (ङ) अवशीर्णाङ्ग-भस्म-धूसर-वल्कल-शयनीय-सनाथैकदेशाम्, (च) इन्दुमण्डलेनेव टङ्कोत्कीर्णेन शङ्खमयेन भिक्षाकपालेनाधिष्ठिताम्, (छ) सन्निहित-भस्मालाबुकां गुहामद्राक्षीत्। (ज)

तस्याश्च द्वारि शिलातले समुपविष्टो वल्कल-शयन शिरोभाग-विन्यस्तवीणां ततः पर्णपुटेन निर्झरादागृहीतमर्घ्यसलिलं (२) आदाय तां कन्यकां समुपस्थितां "अलमलमतियन्त्रणया, (३) कृतमतिप्रसादेन, भगवति! प्रसीद, विमुच्यतामयमत्यादरः, त्वदीयमालोकनमपि सर्व्वपापप्रशमनमघमर्षणमिव पवित्रीकरणायालम्,

(च) अवेति। अवशीर्णं पार्श्वपरिवर्त्तनादौ गलितं यदङ्गभस्म तेन धूसरं यत् वल्कलशयनीयं तत्त्वङ्मयी शय्या तेन सनाथः संयुक्तः एकदेशो यस्यास्ताम्।

(छ) इन्द्विति। इन्दुमण्डलेनेव चन्द्रबिम्बेनेव स्थितेन, टङ्केन पाषाणदारणास्त्रेण उत्कीर्णं सम्यक् निर्म्मितं तेन, शङ्खमयेन भिक्षायाः कपालेन पात्रेण अधिष्ठितामाश्रिताम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(ज) सन्नीति। सन्निहिता संस्थापिता भस्मनां भस्मरक्षणार्थां अलाबुः शून्यान्तरा तुम्बी यस्यां ताम्।

(झ) तस्या इति। किञ्च, तस्या गुहाया द्वारि शिलातले समुपविष्टश्चन्द्रापीडस्तां कन्यकामित्यब्रवीदिति सम्बन्धः। वल्कलशयनस्य वल्कलमयशय्यायाः शिरोभागे विन्यस्ता वीणा यया ताम्। अतियन्त्रणया मदर्थमत्यन्तक्लेशकरणेन। अतिप्रसादेन कृतं अत्यन्तानुग्रहेणालम्। अघं पापं मृष्यते प्रोञ्छ्यतेऽनेनेति अघमर्षणं "ऋतञ्च सत्यञ्चाभिध्या"दित्यादि सूक्तम्। अलं समर्थम्। अत्रोपमालङ्कारः। आस्यतामुपविश्यताम्।

ফলের বল্কলদ্বারা নির্ম্মিত পরিষ্কৃত দুইখানা পাদুকা, শিকার উপরে বাঁধা ছিল। (চ) এক-দিকে বল্কলময় একখানি শয্যা ছিল, সে শয্যাখানি, গাত্র হইতে নিপতিত ভস্মে ধূসরবর্ণ হইয়া গিয়াছিল। (ছ) টঙ্ক-(সাবল) দ্বারা নির্ম্মিত শঙ্খময় একটি ভিক্ষাপাত্র ছিল সেই ভিক্ষাপাত্রটিকে চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (জ) আর, ভস্ম রাখিবার জন্য একটি অলাবু-পাত্রও সেই গুহার ভিতরে ছিল।

(ঝ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় সেই গুহার দ্বারদেশে একখানি পাষাণের উপরে উপবেশন করিলেন; এদিকে সেই কন্যাটিও সেই বল্কলময় শয্যার শিয়রে বীণাটি রাখিয়া পত্রপুটকে করিয়া সেই নির্ঝর হইতে অর্ঘ্যের জল লইয়া উপস্থিত হইল; তখন চন্দ্রাপীড় বলিলেন,— "থা'ক থা'ক, আপনি আমার নিমিত্ত অধিক কষ্ট করিবেন না, অত্যন্ত অনুগ্রহ করিবার প্রয়োজন নাই, দেবি! আপনি প্রসন্ন হউন, এই অতিরিক্ত আদর পরিত্যাগ করুন, আপনার দর্শনও সকল পাপ বিনষ্ট করে এবং অঘমর্ষণ সূক্তের ন্যায় পবিত্র করিতে সমর্থ; অতএব

(१)...युगोपेतां। (२) अर्घ्यजलं। (३) अलमतियन्त्रणया।

"आस्यताम्" इत्यब्रवीत् (झ)। अनुरुध्यमानश्च (१) तया तां सर्वामतिथिसपर्य्यामतिदूरावनतेन शिरसा सप्रश्रयं प्रतिजग्राह। (ञ)

कृतातिथ्यया च तया द्वितीयशिलातलोपविष्टया क्षणमिव तूष्णीं स्थित्वा क्रमेण परिपृष्टो दिग्विजयादारभ्य किन्नरमिथुनानुसरण-प्रसङ्गेनागमनमात्मनः सर्वमाचचक्षे (ट)। विदितसकलवृत्तान्ता चोत्थाय सा कन्यका भिक्षाकपालमादाय तेषामायतनतरूणां तलेषु विचचार। अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्य्यत भिक्षाभाजनम्। आगत्य च तेषां फलानामुपयोगाय नियुक्तवती चन्द्रापीडम् (ठ)।

आसीच्च तस्य चेतसि— नास्ति खल्वसाध्यं नाम तपसाम्। किमतः परमाश्चर्य्यम्, यदत्र (२) व्यपगतचेतना अपि (३) सचेतना इवास्यै भगवत्यै समति-

(ञ) अन्विति। किञ्च, तया कन्यकया अनुरुध्यमानश्चन्द्रापीडः। अतिदूरमत्यन्तमवनतं तेन। अतिथेः सपर्य्या सत्कारं। सप्रश्रयं प्रणयसहितम्।

(ट) कृतेति। किञ्च, तया कन्यकया परिपृष्टश्चन्द्रापीडः। आचचक्षे उक्तवान्।

(ठ) विदितेति। किञ्च। तस्याः कन्यकाया भिक्षाभाजनमिति सम्बन्धः। उपयोगाय भक्षणाय।

(ड) आसीदिति। तस्य चन्द्रापीडस्य। तपसां खल्वसाध्यं नाम नास्ति। तथा च तिथितत्त्वधृतं—"तपोभिः प्राप्यतेऽभीष्टं नासाध्यं हि तपस्यतः। दुर्भगत्वं वृथा लोको वहते सति साधने।" व्यपगतचेतनाश्चैतन्यहीना अपि। फलानि समतिसृजन्तः समर्पयन्तः। वनस्पतयो वृक्षाः। एतत् खलु तपस एव फलमिति भावः। अतएवात्र विशेषेण सामान्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः

আপনি উপবেশন করুন।" (ঞ) তাহার পর সেই কন্যাটি অনুরোধ করিলে চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত অবনত মস্তকে সেই সকল অতিথিসৎকার প্রণয়ের সহিত গ্রহণ করিলেন।

(ট) তখন সেই কন্যাটি অতিথিসৎকার সম্পন্ন করিয়া দ্বিতীয় পাষাণখণ্ডের উপরে উপবেশন করিল এবং কিছু কাল নীরবে থাকিয়া, ক্রমে সমস্ত বিষয় জিজ্ঞাসা করিল; তখন চন্দ্রাপীড় দিগ্বিজয় হইতে আরম্ভ করিয়া, কিন্নরদ্বয়ের অনুসরণ-প্রসঙ্গে আগমন-পর্য্যন্ত আপনার সমস্ত বৃত্তান্ত বলিলেন। (ঠ) সমস্ত বৃত্তান্ত অবগত হইয়া সেই কন্যাটি, উঠিয়া ভিক্ষার পাত্রটি লইয়া আয়তনস্থ বৃক্ষের তলে বিচরণ করিতে লাগিল; অচির-কাল-মধ্যেই তাহার সেই ভিক্ষা-পাত্রটি, আপনা আপনি পতিত ফলে পরিপূর্ণ হইয়া গেল। তাহার পর সে আসিয়া, সেই সমস্ত ফল, ভক্ষণ করিবার নিমিত্ত চন্দ্রাপীড়কে অনুরোধ করিল।

(ড) তখন চন্দ্রাপীড়ের মনে হইতে লাগিল যে,—'এই জগতে তপস্যার অসাধ্য কার্য্য

(१) अनुबध्यमानश्च। (२) यत्र। (३) विगतचेतना अपि।

स्सृजन्तः फलान्यात्मानुग्रहमुपपादयन्ति वनस्पतयः (ड)। चित्रमिदमालोकित-मस्माभिरदृष्टपूर्वम्' इत्यधिकतरोपजातविस्मयश्चोत्थाय तमेव प्रदेशमिन्द्रायुध-मानीय व्यपनीतपर्य्याणं नातिदूरे संयम्य निर्झरजलनिर्वर्त्तित-(१) स्नानविधि-स्तान्यमृतस्वादूनि (२) उपयुज्य फलानि, पीत्वा च तुषारशिशिरं प्रस्रवणजल-मुपस्पृश्य चैकान्ते तावदवतस्थे, यावत्तयापि कन्यकया (३) कृतो जल-फल-मूल-मयेष्वाहारेषु प्रणयः। (ढ)

इति परिसमापिताहारां निर्वर्त्तितसन्ध्योचिताचारां शिलातले विस्रब्ध-मुपविष्टां निभृतमुपसृत्य नातिदूरे समुपविश्य चन्द्रापीडः सविनयमब्रवीत् (ण)। "भगवति! त्वत्प्रसाद-प्राप्ति-प्रीत्साहितेन कुतूहले-

(ढ) चित्रमिति। चित्रमाश्चर्य्यम्। व्यपनीतपर्य्याणं अपसारितपल्ययनम्। संयम्य बद्धा। निर्झर-जलेन निर्वर्त्तितो निष्पादितः स्नानविधिर्येन स तादृशश्चन्द्रापीडः। अमृतस्वादूनि पीयूषवत् सुरसानि, तानि फलानि उपयुज्य भुक्त्वा, तुषारवत् शिशिरं शीतलं प्रस्रवणजलं पीत्वा च। अत्रापि तुषारशिशिरपदयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परन्तु तुषारवत् शिशिरं शीतलमिति पर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासो-ऽलङ्कारः। उपस्पृश्य आचम्य। प्रणय आदरः कृतः आहारः कृत इत्यर्थः।

(ण) इतीति। निर्वर्त्तितो निष्पादितः सन्ध्योचिताचारः सायंकालयोग्यो विधिः सन्ध्यावन्दनादिर्यया ताम्। विस्रब्धं सविश्वासं निश्चिन्तं यथा तथा। निभृतं निःशब्दं यथा तथा।

(त) भगवतीति। त्वत्प्रसादप्राप्त्या तवानुग्रहलाभेन प्रीत्साहितं प्रवर्त्तितं तेन, कुतूहलेन आकुली-

নাই। ইহা অপেক্ষা অধিক আর কি আশ্চর্য্য হইতে পারে? যে, চেতনাবিহীন বৃক্ষসমূহও আজ সচেতনের ন্যায় এই দেবীকে ফল সমর্পণ করিয়া আপনাদিগের প্রতি ইঁহার অনুগ্রহ জন্মাইল। (ঢ) আমি আজ এই আশ্চর্য্য বৃত্তান্ত দেখিলাম, এরূপ পূর্ব্বে কখনও দেখি নাই' এই ভাবে চন্দ্রাপীড়ের আরও অধিক বিস্ময় জন্মিল, তখন তিনি উঠিয়া, ইন্দ্রায়ুধকে সেই স্থানে আনয়ন করিয়া, পালানটি খুলিয়া রাখিয়া অনতিদূরে তাহাকে বন্ধন করিলেন; পরে সেই ঝরণার জলে স্নানকার্য্য সম্পাদন করিয়া, অমৃতের ন্যায় সুস্বাদু সেই সকল ফল ভক্ষণ করিয়া, হিমের ন্যায় শীতল সেই ঝরণার জল পান করিয়া এবং আচমন করিয়া এক দিকে তত কাল অবস্থান করিতে লাগিলেন, যত কাল সেই কন্যাটিও ফল, মূল ও জল আহার করিল।

(ণ) সেই কন্যাটি, এই ভাবে আহার শেষ করিয়া সন্ধ্যাকালের উপযুক্ত কার্য্যগুলি সম্পাদন করিয়া, একখানি পাষাণের উপরে নিশ্চিন্তভাবে উপবেশন করিল; তখন চন্দ্রাপীড় নিঃশব্দে তাহার নিকটে উপস্থিত হইয়া, অনতিদূরে উপবেশন করিয়া বিনয়ের

(१)...निवर्त्तित...। (२) अमृतरसस्वादूनि। (३) कन्यया।

माकुलीक्रियमाणो मानुषतासुलभो लघिमा बलादनिच्छन्तमपि मां प्रश्नकर्मणि नियोजयति (त)। जनयति (१) हि प्रभुप्रसादलवोऽपि प्रागल्भ्यमधीरप्रकृतेः (थ)। स्वल्पाप्येकदेशावस्थाने कालकला (२) परिचयमुत्पादयति (द)। अणुरप्युपचारपरिग्रहः प्रणयमारोपयति (ध)। तद्यदि नातिखेदकरमिव ततः कथनेनात्मानमनुग्राह्यं (३) इच्छामि (न)। अतिमहत् खलु भवद्दर्शनात् प्रभृति मे कौतुकमस्मिन् विषये (प)। कतरन्मरुतामृषीणां गन्धर्वाणां गुह्यकानामप्स-

---

क्रियमाणः अधीरीक्रियमाणः, मानुषतासुलभो मादृशेषु मानुषेषु नितान्तसम्भवपर इत्यर्थः, लघिमा लघुत्वं चपलस्वभाव इति तात्पर्य्यम्।

(थ) नन्वपरिचितस्य सहसा प्रश्ने प्रगल्भताप्रतीतिरिति चेत्तत्राह जनयतीति। हि तथाहि। प्रभुप्रसादलवोऽपि स्वाम्यनुग्रहलेशोऽपि, अधीरप्रकृतेर्जनस्य प्रागल्भ्यं धृष्टतां जनयति। तथा च तपस्विनया प्रभुरूपायास्तवातिथिसत्कारादेवानुग्रहलाभो ममैनां प्रगल्भतां जनयतीति स्वीक्रियत एवेति भावः। अतएवात्र सामान्यादप्रस्तुतात् प्रस्तुतस्य विशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

(द) ननु तथाप्यपरिचितस्य प्रश्नो नापपद्यत इत्याह स्वल्पापीति। कालकला समयांशः। तथा च इयन्तं कालमेकत्रावस्थानात्त्वं मे परिचितैवासीति भावः।

(ध) अथ तथापि प्रणयाभावेनेष्टानिष्टसम्बन्धाभावात् कथं प्रश्न इत्याह अणुरिति। अणुरपि स्वल्पोऽपि उपचारपरिग्रहः सद्व्यवहारस्वीकारः प्रणयं सौहार्द्दं आरोपयति उपस्थापयति। तथा च तवातिथिसत्कारस्वीकार एव प्रणयमारोपितवानिति भावः। अतएवात्रापि पूर्ववदप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

(न) तद्यदीति। तत्तस्मात्। नातिखेदकरं न विशेषक्लेशजनकं, ततस्तदा, कथनेन मज्जिज्ञास्यविषयभाषणेन।

(प) अतीति। "सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भाव" इति वचनात् भवदिति पुंवद्भावः।

সহিত বলিতে লাগিলেন। (ত) 'দেবি! আপনার অনুগ্রহ-লাভেই আমার কৌতুক জন্মাইয়াছে, সেই কৌতুকই আবার মনুষ্যোচিত চপল স্বভাবকে আকুল করিয়া তুলিয়াছে, তাই আমি ইচ্ছা না করিলেও সেই চপল স্বভাবই আমাকে বলপূর্ব্বক প্রশ্নকার্য্যে নিযুক্ত করিতেছে। (থ) কারণ, প্রভুর অনুগ্রহের লেশও, চপল-স্বভাব মনুষ্যের প্রগল্‌ভতা জন্মাইয়া থাকে। (দ) এবং এক জায়গায় অল্পকাল অবস্থান করাও, পরস্পরের পরিচয় জন্মাইয়া থাকে। (ধ) বিশেষতঃ পরস্পরের সদ্ব্যবহার অল্প হইলেও, সে প্রণয় জন্মায়। (ন) অতএব যদি আপনার বিশেষ-ক্লেশ-জনক না হয়, তাহা হইলে আপনার বৃত্তান্ত বলুন, তাহা শুনিয়া আমি আত্মাকে অনুগৃহীত মনে করিতে ইচ্ছা করি। (প) আপনার

---

(१) उपजनयति। (२) एकावस्थाने कालकला, एकदेशावस्थानकालकला। (३) अनुग्रहभाजं।

रसां वा कुलमनुगृहीतं भगवत्या जन्मना?। किमर्थं वास्मिन् कुसुमसुकुमारे नवे वयसि व्रतमग्रहणम्? (क)। क्वेदं वयः, क्वेदं तपः; क्वेयमाकृतिः, क्व चायं लावण्यातिशयः, क्वेयमिन्द्रियाणामुपशान्तिः (ख)। तदद्भुतमिव मे प्रतिभाति। किं निमित्तं वा (१) अनेक-सिद्ध-साध्य-सम्बाधानि (२) सुरलोक-सुभगानि (३) अपहाय दिव्याश्रमपदानि एकाकिनी वनमिदममानुषमधिवससि? (ग)। कश्चायं प्रकारः, यत्तैरेव पञ्चभिर्महाभूतैरारब्धमौदार्यी (४) धवलतां धत्ते शरीरम्? नेदमस्माभिरन्यत्र दृष्टश्रुतपूर्वं

(क) अथ कस्ते जिज्ञास्यविषय इत्याह कतरदिति। बहूनां प्रकर्षेऽपि तर इति कालापटीकायां दुर्गसिंहाभिप्रायात् कतरदिति तरप्रत्ययः। मरुतां देवानाम्।

(ख) क्वेति। इदं वयो नवयौवनमिति भावः। इदं तपो वार्द्धक्य एवाचरणीयमिति भावः। इयमाकृतिरसाधारणसुन्दरीत्याशयः; उपशान्तिः सुखभोगनिवृत्तिः। निरुपमसौन्दर्य्यवद्यौवनात्मकप्रवृत्तिकाले वार्द्धकात्मकनिवृत्तिकालावलम्बनीयव्रतावलम्बनदर्शनमेव मे प्रश्नकारणमिति भावः। अत्रोभयोरपि विरूपयोः संघटनया विषमालङ्कारः।

(ग) तदिति। प्रतिभाति प्रतीतिविषयीभवति। अनेकैः सिद्धैः साध्यैश्च देवयोनिविशेषैः सम्बाधानि सङ्कुलानि व्याप्तानि, सुरलोकैर्देवगणैस्तेषां विचरणैरित्यर्थः। सुभगानि मनोहराणि, दिव्याश्रमपदानि स्वर्गीयतपःस्थानानि।

(घ) कश्चेति। प्रकारो विशेषः। यैरेव सर्वेषां शरीराण्यारब्धानि तैरेवेत्यर्थः। महाभूतैः क्षित्यप्तेजोमरुद्व्योमात्मकैः, आरब्धं जनितं, शरीरं तवेदं वपुः। इदं मेलवणत्वं। दृष्टपूर्वं श्रुतपूर्वं वेत्यर्थः। अतएव महदाश्चर्य्यमिदमिति भावः।

দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়া, এই বিষয়ে আমার অত্যন্ত কৌতুক জন্মিয়াছে। (ক) আপনি জন্মগ্রহণ করিয়া কোন্ দেবতার বংশ, কোন্ ঋষিবংশ, কোন্ গন্ধর্ব্ববংশ, কোন্ গুহ্যকবংশ কিংবা কোন্ অপ্সরার বংশ অনুগৃহীত করিয়াছেন? কি জন্যই বা কুসুমের ন্যায় কোমল এই নবীন বয়সে তপস্যা আরম্ভ করিয়াছেন? (খ) এই বয়সই বা কোথায়, আর এই তপস্যাই বা কোথায়। এই আকৃতি বা কোথায় এবং এই অসাধারণ লাবণ্য বা কোথায়, আর এই ইন্দ্রিয়গণের ভোগ-নিবৃত্তিই বা কোথায়। (গ) অতএব এই সকল, আমার নিকট অদ্ভুত বলিয়া বোধ হইতেছে। আর কি নিমিত্তই বা আপনি, বহুতর সিদ্ধ ও সাধ্যগণে পরিপূর্ণ এবং দেবগণের বিচরণে মনোহর স্বর্গীয় আশ্রমসমূহ পরিত্যাগ করিয়া, একাকিনী এই মানুষবিহীন বনে বাস করিতেছেন? (ঘ) আর, এই রকমটাই বা কি, যে, পৃথিবী প্রভৃতি সেই পঞ্চ মহাভূতেরই নির্ম্মিত আপনার এই শরীর, এইরূপ ধবলতা ধারণ করিতেছে?

(१) किंवा। (२)...सम्बाधानि। (३)...सुभगानि। (४) रेष्ट्रम्।

वा (१) (म)। अपनयतु नः कौतुकम्, आवेदयतु भवती सर्वमिदम् (य)। इत्येवमभिहिता सा किमप्यन्तर्ध्यायन्ती तूष्णीं मुहूर्त्तमिव स्थित्वा निःश्वास-स्थूलस्थूलैरन्तर्गतां हृदयशुद्धिमिवादाय निर्गच्छद्भिः, इन्द्रियप्रसादमिव वर्षद्भिः, तपोरसनिस्यन्दमिव स्रवद्भिः लोचन-विषयं धवलिमानमिव द्रवीकृत्य पातयद्भिः, अच्छाच्छैः, अमलकपोलस्थलस्खलितैः, अवशीर्ण-हार-मुक्त-मुक्ताफल-तरलपातैः, अनुबद्धविन्दुभिः, वल्कलावृत-कुच-शिखर-जर्जरित-शीकरैः, अश्रुभिरामीलित-लोचना निःशब्दं रोदितुमारेभे। (र)

ताञ्च प्ररुदितां दृष्ट्वा चन्द्रापीड़स्तत्क्षणमचिन्तयत्—'अहो! दुर्निवारता

(य) अपेति। अपनयतु दूरीकरोतु।

(र) इतीति। स्थूलस्थूलैरित्यादिकं अनुबद्धविन्दुभिरश्रुभिरित्यस्य विशेषणम्। हृदयशुद्धिं चित्तस्य पवित्रतामादायेव निर्गच्छद्भिः। सर्वतासूषां विशदत्वादिति भावः। इन्द्रियाणां नयनादीनां प्रसादं निर्मलतां सकामदृष्टिप्रभृतिदोषहीनतां वर्षद्भिरिव। तपांस्येव रसा द्रवास्तेषां निस्यन्दं धारां स्रवद्भिः क्षरद्भिरिव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकयोगः। लोचनविषयं दृश्यमानं धवलिमानं श्वेतत्वं द्रवीकृत्य पातयद्भिरिव। अत्र प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अच्छाच्छैरतीवनिर्मलैः। अवशीर्णात् छिन्नात् हारात् मुक्तानां स्खलितानां मुक्ताफलानामिव तरलपातश्चञ्चलभावेन पतनं येषां तैः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अनुबद्धा अविच्छिन्नभावेनोत्पादिता बिन्दवो यैस्तैः। वल्कलावृतयोः कुचयोः स्तनयोः शिखराभ्यां उन्नताभ्यां जर्जरिताश्चूर्णिताः शीकराः कणा येषां तैः। एतेन स्तनयोरत्यौन्नत्यं काठिन्यञ्च व्यज्यते। अश्रुभिरुपलक्षिता, आमीलितलोचना मुद्रितनयना।

(ल) ताञ्चेति। किञ्चेति चार्थः। प्ररुदितामतीवरुदतीं "गत्यर्थे"त्यादिना कर्त्तरि क्तः। असतो-पनिपातानां विपदुपस्थितीनां, दुर्निवारता निवारयितुमशक्यता। यद्यस्मात्, अनभिभवनीया तपस्वितया

আমি পূর্ব্বে অন্য স্থানে এরূপ দেখি নাই, বা শুনিও নাই। (য) আপনি আমার কৌতুক-নিবৃত্তি করুন, এই সমস্ত বিষয় বলুন।" (র) চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিলে সেই কন্যাটি মনে মনে কোন বিষয় চিন্তা করতঃ কিছু কাল নীরবে থাকিয়া, নিশ্বাস-পরিত্যাগপূর্ব্বক মুদ্রিত-নয়নে নিঃশব্দে রোদন করিতে লাগিল; তখন অত্যন্তনির্ম্মল বড় বড় অশ্রুবিন্দু, তাহার নির্ম্মল গণ্ডস্থল বাহিয়া পড়িতে লাগিল; সেই অশ্রুবিন্দুগুলি, যেন অন্তর্গত চিত্ত-শুদ্ধি লইয়া নির্গত হইতেছিল, ইন্দ্রিয়সমূহের নির্ম্মলতাই যেন বর্ষণ করিতেছিল, তপস্যা-রসের ধারাই যেন বৃষ্টি করিতেছিল এবং দৃষ্টিগোচর ধবলগুণকেই যেন তরল করিয়া নিপাতিত করিতেছিল, ছিন্ন হার হইতে বিগলিত মুক্তার ন্যায় চঞ্চল-ভাবে পড়িতেছিল আর বল্কলাবৃত স্তনযুগলের উপরে পড়িয়া ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বিন্দুতে পরিণত হইয়া যাইতেছিল।

(ল) তখন চন্দ্রাপীড় তাহাকে রোদন করিতে দেখিয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন,—

(१) क्वचित् "आवन्दी" नास्ति।

व्यसनोपनिपातानाम्, यदीदृशीमप्याकृतिमनभिभवनीयामात्मीयां कुर्व्वन्ति (ल)। सर्व्वथा न न कञ्चन स्पृशन्ति शरीरधर्म्माणमुपतापाः (व)। बलवती हि द्वन्द्वानां प्रवृत्तिः (श)। इदमपरमधिकतरमुपजनितं (१) अतिमहच्च मनसि मे कौतुकमस्या बाष्पसलिलपातेन (ष)। न ह्यल्पीयसा शोककारणेन वशीक्रियन्त एवंविधा मूर्त्तयः। नहि क्षुद्रनिर्घातपाताभिहता चलति वसुधेति' (स)। संवर्द्धितकुतूहलश्च शोकस्मरणहेतुतामुपगतमपराधिनमिवात्मानमवगच्छन्नुत्थाय प्रस्रवणादञ्जलिना मुखप्रक्षालनोदकमुपनिन्ये (ह)। सा तु तदनुरोधादवि-

अभिभवितुमशक्यां ईदृशीमाकृतिमपि आत्मीयां स्ववशां कुर्व्वन्ति, ते व्यसनोपनिपाता इति शेषः। कयापि विपदा जनिताद् दुःखादियं रोदितीति भावः।

(व) ननु विषयेष्वनासक्तमीदृशं तपस्विजनं कथं नाम दुःखमाक्रमितुमर्हतीत्याह सर्व्वथेति। उपतापाः सांसारिकदुःखानि, कञ्चन कञ्चिदपि, शरीरं शरीरधारणमेव धर्म्मो यस्य तं देहिनमित्यर्थः सर्व्वथा न स्पृशन्ति नापद्यन्ते, इति न, अपि तु सर्व्वमेव देहिनमुपतापाः स्पृशन्तीत्यर्थः। सुतरां तपस्विनोऽपि सांसारिक-दुःखसम्भव इति भावः।

(श) अथ तपस्वी तपोबलेन कथं नाम दुःखं न निवारयतीत्याह बलेति। हि यस्मात्, द्वन्द्वानां सुखदुःख-शीतोष्णादीनां प्रवृत्तिः शरीरिषूपस्थितिः बलवती। तपस्वित्वेऽपि शरीरिधर्म्मत्वादेव तत्र द्वन्द्वानां बलवती प्रवृत्तिर्दुर्निवारेति भावः।

(ष) इदमिति। अधिकतरं पूर्व्वस्मात् कौतुकादतिरिक्तं अतएवातिमहदित्यर्थः। अतो नार्थगत-पुनरुक्ततादोषः।

(स) नन्वल्पेनापि शुष्कशोकेन स्त्रीणां बाष्पसलिलसम्भवात् कथं तवातिमहत् कौतुकमित्याह नहीति। वशीक्रियन्ते आश्रयीक्रियन्ते आश्रयितुं शक्यन्त इत्यर्थः। हि तथाहि, क्षुद्रेण स्वल्पेन निर्घातपातेन निर्घात-वायुक्षेपेण अभिहता ताड़िता वसुधा न चलति न कम्पते। अत्र साधर्म्म्येण दृष्टान्तोऽलङ्कारः।

(ह) संवर्द्धितेति। शोकस्मरणस्य हेतुतां निमित्तत्वमुपगतं प्राप्तं, अतएव अपराधिनमिव। मुख-प्रक्षालनाय उदकं जलं उपनिन्ये उपस्थापितवान् चन्द्रापीड इति शेषः।

'কি আশ্চর্য্য! বিপদ আসিয়া উপস্থিত হইতে লাগিলে, কেহই তাহা নিবারণ করিতে পারে না; যেহেতু, এইরূপ দুর্দ্ধর্ষ আকৃতিকেও, সেই বিপদ আসিয়া বশীভূত করিয়াছে। (ব) অতএব দুঃখ যে, সর্ব্বপ্রকারেই কোন প্রাণীকে স্পর্শ করিবে না, এ কথা বলা যায় না। (শ) কারণ—সুখ-দুঃখাদির উপস্থিতি অত্যন্ত প্রবল। (ষ) ইহার অশ্রুবর্ষণে, আমার মনে, এই আর একটি, পূর্ব্ব হইতেও অধিক গুরুতর কৌতুক জন্মাইল। (স) যেহেতু, অল্পমাত্র শোকের কারণ, এই জাতীয় মূর্ত্তিকে আশ্রয় করিতে পারে না; কারণ,—অল্পমাত্র নির্ঘাতবায়ুর আঘাতে আহত হইয়া পৃথিবী কম্পিত হয় না।' (হ) চন্দ্রাপীড়ের কৌতুক বৃদ্ধি পাইল বটে;

(१) जनितं।

च्छिन्न-वाष्पजलधारासन्तानापि किञ्चित्कषायितोदरे प्रक्षाल्य लोचने वल्कलो-पान्तेन वदनमपमृज्य दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य शनैः शनैः (१) प्रत्यवादीत्। (च)

"राजपुत्र! किमनेनातिनिष्ठुर-(२) हृदयाया मम मन्दभाग्यायाः पापाया जन्मनः प्रभृति वैराग्यवृत्तान्तेनाश्रवणीयेन श्रुतेन (क)। तथापि यदि महत् कुतूहलम्, तत् कथयामि, श्रूयताम्। (ख)

एतत् प्रायेण कल्याणाभिनिवेशिनः श्रुतिविषयमापतितमेव, यथा विबुधसद्मनि अप्सरसो नाम कन्यकाः सन्तीति (३)। तासां चतुर्दश कुलानि, एकं भगवतः कमलयोनेर्मनसः समुत्पन्नम्, अन्यद्वेदेभ्यः सम्भूतम्, अन्यदग्नेरुद्भूतम्, अन्यत् पवनात् प्रसूतम्, अन्यदमृतान्मथ्यमानादुत्थितम्, अन्यज्जलाज्जातम्, अन्यदर्क-

(च) छिन्नेति। अविच्छिन्नो विच्छेदमप्राप्तः वाष्पजलधारायाः सन्तानः समूहो यस्याः सा। किञ्चित् कषायिते अश्रुपातेनाविलीकृते रक्ते वा उदरे अभ्यन्तरद्वयं ययोस्ते। वल्कलोपान्तेन परिहितवल्कलाग्रेण।

(क) राजेति। अतिनिष्ठुरं नितान्तनिष्ठुरं हृदयं यस्यास्तस्याः। अश्रवणीयेन अतीवनिष्ठुरतया श्रवणायोग्येन, श्रुतेन त्वया आकर्णितेन किं फलमिति शेषः।

(ख) तथापीति। तदित्यर्थे तदित्यवाचकमित्यवाचकत्वदोषः, स तु तदेति पाठेनैव समाधेयः।

(ग) एतदिति। कल्याणे मङ्गले अभिनिवेश आग्रहोऽस्यास्तीति तस्य भवतः, एतत् प्रायेण बाहुल्येन श्रुतिविषयं श्रवणगोचरतां आपतितमेव गतमेव, अतो नाधिकं मया वक्तव्यमिति भावः। विशेषेण बुध्यन्ते जानन्तीति विबुधा देवास्तेषां सद्मनि आलये स्वर्गे। कन्यका अविवाहिताः स्त्रियः। कमलयोनेः ब्रह्मणः। पवनाद्वायोः प्रसूतं जातम्। निष्पतितं निर्गतम्। सौदामिनीभ्यो विद्युद्भ्यः प्रवृत्तं उत्पन्नम्।

কিন্তু তিনিই সেই কন্যাটির শোকস্মৃতির কারণ হইলেন, তাই আপনাকে অপরাধী বলিয়া মনে করিলেন, সুতরাং উঠিয়া, তাহার মুখ-প্রক্ষালনের নিমিত্ত, ঝরণা হইতে অঞ্জলিপূর্ণ করিয়া জল আনয়ন করিলেন। (ক্ষ) সেই কন্যাটি, নিজের অশ্রুজলের ধারাসমূহ অবিচ্ছিন্নভাবে পড়িতে লাগিলেও, চন্দ্রাপীড়ের অনুরোধে, ঈষৎ-রক্তবর্ণ নয়নযুগল প্রক্ষালন করিয়া বল্কল-প্রান্তদ্বারা মুখমণ্ডল মার্জ্জনা করিয়া, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস-পরিত্যাগপূর্ব্বক ধীরে ধীরে বলিতে লাগিল।

(ক) "রাজপুত্র! আমি পাপিষ্ঠা, আমার হৃদয়ও অত্যন্ত নির্দ্দয়, ভাগ্যও মন্দ, সুতরাং শ্রবণের অযোগ্য আমার এই আজন্ম-বৈরাগ্য-বৃত্তান্ত শুনিয়া আপনার কি ফল হইবে। (খ) তথাপি, আপনার যদি গুরুতর কৌতুক জন্মিয়া থাকে, তবে বলিতেছি, শুনুন।

(গ) আপনি মঙ্গলাভিলাষী; সম্ভবতঃ এই বিষয় আপনার প্রায়ই কর্ণগোচর হইয়াছে যে, দেবলোকে অপ্সরা নামে কতকগুলি কন্যা আছে। তাহাদের চৌদ্দটি বংশ;—তন্মধ্যে

(१) क्वचित् विद्यतेऽयं नास्ति। (२) अतिनिष्ठुर...। (३) क्वचित् इतिशब्दो नास्ति।

किरणेभ्यो निर्गतम्, अन्यत् सोमरश्मिभ्यो निष्पतितम्, (१) अन्यद्भूमेरुद्भूतम्, अन्यत् सौदामिनीभ्यः प्रसृतम्, अन्यन्मृत्युना निर्म्मितम्, अपरं मकरकेतुना समुत्पादितम्, अन्यत्तु दक्षस्य प्रजापतेरतिप्रभूतानां सुतानां (२) मध्ये द्वे सुते (३) मुनिररिष्टा च बभूवतुस्ताभ्यां गन्धर्वैः सह कुलद्वयं जातम्। एवमेतान्येकत्र चतुर्दश कुलानि (ग)। गन्धर्वाणान्तु दक्षात्मजाद्वितयसम्भवं तदेव कुलद्वयं जातम्, तत्र (४) मुनेस्तनयश्चित्रसेनादीनां (५) पञ्चदशानां भ्रातॄणामधिको गुणैः षोड़शश्चित्ररथो नाम समुत्पन्नः (घ)। स किल त्रिभुवन-(६) प्रख्यातपराक्रमो भगवता समस्त-सुर-मौलि-माला-लालित-चरण-नलिनेनाखण्डलेन सुहृच्छब्देनोपबृंहितप्रभावः

मृत्युना यमेन निर्म्मितं कृतं। मकरकेतुना मदनेन। अतिप्रभूतानामतिबहुलानाम्। गन्धर्वैः सह सङ्गमात् ताभ्यां मुन्यरिष्टाभ्यां सकाशात् कुलद्वयं। मुनेरेकं अरिष्टायाश्चैकं कुलं जातमित्यर्थः। एकत्र करणे सङ्कलन इत्यर्थः।

(घ) गन्धर्वाणामिति। दक्षात्मजाद्वितयात् मुन्यरिष्टाख्यात् दक्षकन्याद्वयात् सम्भवं समुत्पन्नं तदेव कुलद्वयं गन्धर्वाणामपि जातं, सन्तानस्य मातापितृभयनिमित्तकत्वादिति भावः। अत्र कुलद्वयमध्ये। गुणैरधिकः शौर्य्यादिभिर्गरीयान्। चित्ररथो नाम तनयः मुनेस्तदाख्याया दक्षकन्यायाः समुत्पन्नः।

(ङ) स इति। किलेति पुराणवार्त्तायाम्। शैशव एव त्रिभुवनप्रख्यातपराक्रमः, समस्तानां सुराणां मौलिमालया मुकुटश्रेण्या लालितं नमस्कारकाले सादरं स्पृष्टं चरणनलिनं पादपद्मं यस्य तेन, भगवता

একটি ভগবান্ ব্রহ্মার মন হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, অন্য একটি বেদ হইতে জন্মিয়াছিল, আর একটি অগ্নি হইতে উদ্ভূত হইয়াছিল, অপর একটি বায়ু হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, আর একটি মথ্যমান অমৃত হইতে উঠিয়াছিল, অন্য একটি জল হইতে জন্মিয়াছিল, অপর একটি সূর্য্যের কিরণ হইতে নির্গত হইয়াছিল, অন্য একটি চন্দ্রের রশ্মি হইতে নিঃসৃত হইয়াছিল, আর একটি পৃথিবী হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, অপর একটি বিদ্যুৎ হইতে জন্মিয়াছিল, যম অপর একটি সৃষ্টি করিয়াছিলেন, কামদেব আর একটি উৎপাদন করিয়াছিলেন এবং দক্ষ-প্রজাপতির বহুতর কন্যা জন্মিয়াছিল, তাহাদের মধ্যে মুনি ও অরিষ্টা নামে দুইটি কন্যা ছিল, গন্ধর্ব্বদের সহিত সম্মিলনে সেই মুনি ও অরিষ্টা হইতে আর দুইটি বংশ জন্মে ; এই ভাবে এইগুলিকে একত্র করিলে চৌদ্দটি বংশ হয়। (ঘ) মুনি ও অরিষ্টা নামে দক্ষের কন্যা দুইটি হইতে, যে বংশ দুইটি জন্মে, তাহাঁই কিন্তু সেই গন্ধর্ব্বদিগেরও বংশ ; সেই বংশদ্বয়ে চিত্রসেন প্রভৃতি অপর পঞ্চদশ ভ্রাতার মধ্যে সর্ব্বগুণে শ্রেষ্ঠ, ষোড়শ চিত্ররথ নামে মুনির একটি পুত্র জন্মগ্রহণ করে। (ঙ) বাল্যকালেই সেই চিত্ররথের পরাক্রম ত্রিভুবনে বিখ্যাত

(१) निपतितं। (२) कन्यकानां। (३) द्वौ सुतौ। (४) अत्र। (५) सेनादीनां।
(६) सकलत्रिभुवन...।

सर्वेषां गन्धर्वाणामाधिपत्यमसिलता-मरीचि-निचय-मेचकितेन बाहुना समुपार्जितं शैशव एवाप्तवान् (ङ)। इतश्च नातिदूरे तस्यास्माद्भारतवर्षादुत्तरेणानन्तरे किम्पुरुषनाम्नि वर्षे वर्षपर्वतो हेमकूटो नाम निवासः (च)। तत्र च तद्भुजयुगल-(१) परिपालितान्यनेकानि गन्धर्वशतसहस्राणि प्रतिवसन्ति। तेनैव चेदं चैत्ररथं नामातिमनोहरं काननं निर्म्मितम्, इदञ्चाच्छोदाभिधानमतिमहत् सरः खानितम्, (२) अयञ्च भवानीपतिरुपरचितो भगवान् (छ)। अरिष्टायास्तु पुत्रस्तुम्बुरुप्रभृतीनां सोदर्य्याणां षण्णां ज्येष्ठो हंसो नाम जगद्विदितो गन्धर्वः (३) तस्मिन् द्वितीये गन्धर्वकुले गन्धर्वराजेन चित्ररथेनैवा-

---

आखण्डलेन इन्द्रेण, सुहृच्छब्देन सखिशब्दप्रयोगेण उपबृंहितः परिवर्द्धितः प्रभावः प्रतापो यस्य सः, स चित्ररथः, असिलतायाः मरीचिनिचयेन किरणसमूहेन मेचकितः श्यामलीकृतस्तेन तथोक्तेन बाहुना समुपार्जितं, सर्वेषां गन्धर्वाणामाधिपत्यं आप्तवान् लब्धवान्।

(च) इत इति। किञ्च इतो नातिदूरे। उत्तरेणानन्तरे अव्यवहितोत्तर इत्यर्थः। हेमकूटो नाम वर्षपर्वतः, तस्य चित्ररथस्य, निवसत्यस्मिन्निति निवास आश्रयस्थानम्।

(छ) तत्रेति। किञ्च, तत्र हेमकूटे। तस्य चित्ररथस्य भुजयुगलेन परिपालितानि। गन्धर्वाणां शतसहस्राणि समूहाः। चित्ररथस्येदमिति चैत्ररथं। काननमुपवनम्। खानितं भृत्यैरिति शेषः। भवानीपतिः शिवमूर्त्तिरित्यर्थः उपरचितो निर्म्माय प्रतिष्ठापितः। अत्र भवस्य पत्नीति भवानी तस्याः पतिरिति भवान्याः पत्यन्तरप्रतीतिकारित्वाद्विरुद्धमतिकारिता दोषः, स च गौरीपतिरिति पाठेन समाधेयः।

(ज) अवशिष्टमरिष्टायाः कुलं परिचाययति अरिष्टाया इति। समाने अभिन्ने उदरे शयिता इति सोदर्य्याः सहोदरास्तेषां। राज्यपदं राजत्वम्।

হইয়াছিল এবং সমস্ত দেবগণ কিরীটসমূহদ্বারা যাঁহার চরণকমল সাদরে স্পর্শ করেন, সেই ভগবান্ দেবরাজ ইন্দ্র, 'সখা' বলিয়া সম্বোধন করিয়া, সেই চিত্ররথের প্রভাব পরিবর্দ্ধিত করিয়াছিলেন; এ হেন চিত্ররথ, তরবারির কিরণসমূহে শ্যামবর্ণ স্বকীয় বাহুদ্বারা অর্জ্জন করিয়া, সকল গন্ধর্ব্বদিগের আধিপত্য লাভ করেন। (চ) এস্থান হইতে অনতিদূরে, এই ভারতবর্ষের অব্যবহিত উত্তরদিকে কিম্পুরুষ নামে একটি বর্ষ আছে, তাহাতে আবার হেমকূট নামে একটি বর্ষপর্ব্বত আছে, সেই হেমকূটই চিত্ররথের বাসস্থান। (ছ) এবং সেই হেমকূট পর্ব্বতে, চিত্ররথের বাহুযুগলদ্বারা পরিরক্ষিত হইয়া বহুতর গন্ধর্ব্বসমূহ বাস করিতেছেন। আর সেই চিত্ররথই, অত্যন্ত মনোহর চৈত্ররথ নামে এই উদ্যানটি নির্ম্মাণ করিয়াছেন এবং অচ্ছোদনামে এই অতিবিশাল সরোবরও তিনিই খনন করাইয়াছেন, আর এই ভগবান্ মহাদেবের প্রতিমূর্ত্তিও তিনিই নির্ম্মাণ করিয়া প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। (জ) এদিকে, সেই দ্বিতীয়

---

(१) तद्भुजयुग...। (२) निखानितं। (३) अरिष्टायास्तु पुत्रस्तावत् द्वितीये...।

भिषिक्तो बाल एव राज्यपदमासादितवान् (ज)। अपरिमितगन्धर्वबलपरिवारस्य (१) तस्यापि स एव गिरिरधिवासः (झ)। यत्तु तत् सोममयूखसम्भवमप्सरसां कुलं, तस्मात् किरणजालानुसार-(२) गलितेन सकलेनेव रजनिकर-कला-कलाप-लावण्येन निर्म्मिता त्रिभुवननयनाभिरामा भगवती द्वितीयेव गौरी, गौरीति नाम्ना (३) हिमकर-(४) किरणावदातवर्णा कन्यका प्रसूता (ञ)। ताञ्च द्वितीयगन्धर्वकुलाधिपतिः (५) हंसो मन्दाकिनीमिव क्षीरसागरः प्रणयिनीमकरोत् (ट)। सा तु भगवता मकरकेतनेनेव (६) रतिः, शरत्समयेनेव

(झ) अपरीति। अपरिमितं गन्धर्वबलं गन्धर्वसेना परिवारः परिजनो यस्य तस्य, तस्यापि हंसस्य स एव गिरिर्हेमकूटः, अधिवसत्यस्मिन्नित्यधिवासो निवासस्थानम्।

(ञ) यदिति। तत् पूर्वोक्तं, सोममयूखसम्भवं चन्द्रकिरणेभ्यो जातं। तस्मात् कुलात् कन्यका प्रसूता जातेत्यन्वयः। किरणजालस्य अनुसारेण अनुसरणक्रमेण गलितं क्षरितं तेन, सकलेन, रजनिकरस्य चन्द्रस्य यः कलानां कलापः समूहस्तस्य लावण्येन निर्म्मितेव, नितान्तनिर्म्मलशुभ्रत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। त्रिभुवनस्य त्रिजगद्वासिनो जनस्य नयनाभिरामा नेत्राह्लादकरी। द्वितीया भगवती गौरी पार्वतीव। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। हिमकरस्य चन्द्रस्य किरणवत् अवदातः शुभ्रो वर्णो यस्याः सा। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ट) तामिति। किञ्च, द्वितीयगन्धर्वकुलाधिपतिर्हंसः क्षीरसागरो मन्दाकिनीमिव तां गौरीं प्रणयिनीं पत्नीमकरोदित्यन्वयः। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः।

(ठ) सेति। मकरकेतनेन मदनेन रतिरिव, शरत्समयेन कमलिनीव हंसेन सह संयोजिता विधिना

গন্ধর্ব্ব-বংশে, হংসনামে অরিষ্টার একটি পুত্র জন্মগ্রহণ করেন, তিনিই তুম্বুরু প্রভৃতি অপর ছয় সহোদরের মধ্যে জ্যেষ্ঠ এবং গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথকর্ত্তৃক বালক অবস্থাতেই অভিষিক্ত হইয়া রাজত্ব লাভ করেন। (ঝ) তিনি অসংখ্য গন্ধর্ব্ব-সৈন্যে পরিবেষ্টিত থাকেন এবং সেই হেমকূট পর্ব্বতই তাঁহারও বাসস্থান। (ঞ) এদিকে, চন্দ্র-রশ্মি হইতে সেই যে অপ্সরার বংশটি জন্মিয়াছিল, তাহা হইতে দ্বিতীয় ভগবতী পার্ব্বতীর ন্যায় গৌরী নামে একটি কন্যা জন্মগ্রহণ করেন, চন্দ্রের কিরণ বাহিয়া বিগলিত, কলাসমূহের সমস্ত লাবণ্যদ্বারাই যেন বিধাতা সেই কন্যাটিকে সৃষ্টি করিয়াছিলেন; এবং সেই কন্যাটি ত্রিজগতের লোকের নয়নানন্দ জন্মাইতেন আর তাঁহার বর্ণও চন্দ্র-কিরণের ন্যায় শুভ্র ছিল। (ট) ক্ষীরোদসাগর যেমন গঙ্গাকে প্রণয়িনী করিয়াছেন, দ্বিতীয় গন্ধর্ব্ব-কুলাধিপতি মহারাজ হংসও তেমন সেই গৌরীকে প্রণয়িনী করেন। (ঠ) ভগবান্ কামদেবের সহিত রতির ন্যায় এবং শরৎকালের সহিত পদ্মিনীর

(१)...परिवारस्य। (२) सोमपीयूषसम्भूतानामप्सरसां कुलं, तस्मात् किरणजालानुसार...। (३) गौरीपतिनाम्ना। (४) हिमकिरण..., रजनीकर...। (५) द्वितीयकुलाधिपतिः। (६) मकरकेतुनेव।

कमलिनी, हंसेन संयोजिता सदृशसमागमोपजनितामतिमहतीं मुदमुपगतवती निखिलान्तःपुरस्वामिनी च तस्याभवत् (ठ)। तयोश्च तादृशयोर्महात्मनोरधमोदृशी (१) विगतलक्षणा शोकाय केवलमनेकदुःखसहस्रभाजनमेकैवात्मजा (२) समुत्पन्ना (ड)। तातस्त्वनपत्यतया सुतजन्मातिरिक्तेन महोत्सवेन मम जन्माभिनन्दितवान्। अवाप्ते च दशमेऽहनि कृतयथोचितसमाचारो महाश्वेतेति यथार्थमेव नाम कृतवान् (ढ)। साहं पितृभवने बालतया कलमधुरप्रलापिनी वीणेव गन्धर्वाणामङ्कादङ्कं सञ्चरन्ती अविदित-स्नेह-शोकायास-मनोहरं (३) शैशवमतीतवती (४) (ण)। क्रमेण च

सङ्गमिता सा गौरी, सदृशेनानुरूपेण समागमेन सम्मेलनेन उपजनितां। मुदमानन्दं उपगतवती लब्धवती। तस्य हंसस्य निखिलानां अन्तःपुराणां तत्स्थरमणीनामित्यर्थः स्वामिनी चाभवत्। अत्र श्रौतोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ड) तयोरिति। किञ्च। विगतलक्षणा करतलादिगतध्वजवज्रादिशुभचिह्नहीना। अनेकं बहुविधं यद्दुःखसहस्रं दुःखसमूहस्तस्य भाजनं पात्रम्।

(ढ) तात इति। अनपत्यतया मदन्यसन्तानहीनतया। अभिनन्दितवान् प्रशंसितवान्। कृतो यथोचितः समाचारो वृद्धिश्राद्धादिव्यवहारो येन सः, तात इति सम्बन्धः। यथार्थमेव मम अत्यन्तश्वेतवर्णत्वादिति भावः।

(ण) सेति। वीणेव कलमस्फुटं मधुरञ्च प्रलपितुं भाषितुं शीलं यस्याः सा। अविदितैर्विशेषज्ञानानुदयादनवगतैः स्नेहशोकायासैर्हेतुभिः मनोहरं तत्तत्कृताकुलताऽभावात् सुन्दरं। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

ন্যায়, মহারাজ হংসের সহিত সম্মিলিত হইয়া সেই গৌরী, অনুরূপসম্মেলন-জনিত অত্যন্ত আনন্দ অনুভব করিতে লাগিলেন এবং মহারাজ হংসের অন্তঃপুরবাসিনী সমস্ত রমণীগণের স্বামিনী হইলেন। (ড) তদনন্তর, সেইরূপ মহাত্মা হংস ও গৌরীদেবীর শোকের নিমিত্তই, শুভলক্ষণবিহীন ও নানাবিধ দুঃখসমূহের ভাজন আমিই কেবল একমাত্র কন্যা জন্মগ্রহণ করিলাম। (ঢ) কিন্তু পিতৃদেব, অন্য-সন্তান-বিহীন বলিয়া, পুত্রজন্ম অপেক্ষাও অতিরিক্ত মহোৎসবের অনুষ্ঠান করিয়া আমার জন্মকে অভিনন্দিত করিলেন; এবং দশম দিন উপস্থিত হইলে যথোচিত-আচার-সম্পাদনপূর্ব্বক 'মহেশ্বেতা' এইরূপ আমার যথার্থ নামকরণই করিলেন। (ণ) সেই আমি পিতৃগৃহে শিশুত্বনিবন্ধন বীণার ন্যায় অস্পষ্ট ও মধুর-ভাষিণী হইয়া গন্ধর্ব্ব-গণের মধ্যে একের ক্রোড় হইতে অপরের ক্রোড়ে বিচরণ করিতাম, এবং স্নেহ, শোক ও কষ্ট কাহাকে বলে, তাহা জানিতাম না বলিয়া মনোহর সেই শৈশবকাল অতিক্রম করিলাম।

---

(१) महात्मनोर्महता कृशेनाभिलाषेण कालेन च केवलं। (२) विपन्नलब्धा केवलं...।

(३)...स्नेहशोकायासं। (४) अतिनीतवती।

कृतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकर इव मदेन, नवयौवनेन पदम्। (त)

अथ विजृम्भमाण-नव-नलिन-वनेषु, (थ) अकठोर-चूत-कलिका-कलाप-कृत-कामुकोत्कलिकेषु, (द) कोमल-मलय-मारुतावतार-तरङ्गितानङ्ग-ध्वजांशुकेषु, (ध) मद-कलित-कामिनी-गण्डूष-सीधु-सेक-पुलकित-बकुलेषु, (न) मधुकर-कुल-कलङ्क-कालीकृत-कालेयक-कुसुम-कुड्मलेषु, (१) (प) अशोकतरु-

(त) क्रमेणेति। किञ्च। वसन्ते काल इव मधुमासेन चैत्रमासेन। मधुकरेण भ्रमरेण। मधुकरे तदानीन्तनभ्रमरे। मे मम वपुषि नवयौवनेन पदं आस्पदं कृतम्। अत्रोत्तरोत्तरस्युपमेयानामुपमानत्वकल्पनात् रशनोपमालङ्कारः।

(थ) अथेति। अथानन्तरं अहं मधुमासदिवसेष्वेकदा अम्बया सह इदमच्छोदं सरः स्नातुमभ्यागममिति दूरेणान्वयः। अत्र सप्तमीबहुवचनान्तपदानि मधुमासदिवसेष्विति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। विजृम्भमाणानि प्रस्फुटन्ति नवानि नलिनानां पद्मानां वनानि येषु तेषु।

(द) अकठोरेति। अकठोरैर्नवोत्पन्नत्वात् कोमलैः चूतकलिकानां आम्रमुकुलानां कलापैः समूहैः कृता कामुकानां जनानां उत्कलिका उत्कण्ठा येषु तेषु।

(ध) कोमलेति। कोमलस्य मन्दमन्दसञ्चारिणः मलयमारुतस्य अवतारेण उपस्थित्या तरङ्गितानि सञ्चालितानि अनङ्गध्वजांशुकानि मदनध्वजस्यपताका येषु तेषु। वसन्तकाले महोत्सवाय प्रायेण मदन-ध्वजोत्थापनादिति भावः।

(न) मदेति। मदकलितानां मद्यपानजनितमत्तताश्यामानां कामिनीनां गण्डूषसीधूनां मुखपूरितमद्यानां सेकेन पुलकिताः पुलकवत्सञ्जातमुकुलाः बकुला वृक्षा येषु तेषु। "पादाघातादशोकं विकसति बकुलं योषितामास्यमद्यै"रिति कविसमयप्रसिद्धेरिति भावः।

(प) मधुकरेति। मधुकरकुलं भ्रमरसमूह एव कलङ्कश्चिह्नं मधुकरकुलं कलङ्क इव इति वा, तेन

(त) তাহার পর, বসন্তকালে যেমন চৈত্রমাস, চৈত্রমাসে যেমন নবপল্লব, নবপল্লবে যেমন পুষ্প, পুষ্পে যেমন ভ্রমর এবং ভ্রমরে যেমন মত্ততা আসিয়া আবির্ভূত হয়, সেইরূপ নবযৌবন আসিয়া আমার শরীরে আবির্ভূত হইল।

(থ) তাহার পর, বসন্তকালে আমি এক দিন আমার মাতার সহিত এই অচ্ছোদ সরোবরে স্নান করিতে আসিয়াছিলাম। তখন, নূতন পদ্মফুল ফুটিতেছিল; (দ) আমের কোমল কলিকাগুলি, কামুক লোকের উৎকণ্ঠা জন্মাইতেছিল; (ধ) মৃদু মন্দ মলয়-সমীরণের আগমনে মদনধ্বজের পতাকাসমূহ সঞ্চালিত হইতেছিল; (ন) মদ-মত্ত কামিনীগণের মুখমদ্য-সেচনে বকুলবৃক্ষে মুকুল জন্মিয়াছিল; (প) কলঙ্কের ন্যায় ভ্রমরগণ পতিত হইয়া, দারুহরিদ্রার

(१)…कालेयककुड्मलेषु।

ताड़ना-रणित-रमणी-मणि-(१) नूपुर-झङ्कार-सहस्र-मुखरेषु, (फ) विकस-न्मुकुल-परिमल-पुञ्जिताऽलिजाल-मञ्जु-शिञ्जित-सुभग-सहकारेषु, (ब) अविरल-कुसुम-धूलि-वालुका-पुलिन-धवलित-धरातलेषु, (भ) मधु-(२) मद-विडम्बित-मधुकरी-(३) कदम्बक-संवाह्यमान-लता-दोलेषु, (म) उत्फुल्ल-पल्लव-लवली-(४) लीयमान-मत्त-कोकिलोल्लासित-मधु-शीकरोद्दाम-(५) दुर्दिनेषु, (य) प्रोषित-जन-

---

कालीकृतानि कृष्णवर्णीकृतानि कालीयकानां दारुहरिद्राणां कालीयचन्दनानां वा कुसुमानि कुड्मलानि मुकुलानि च येषु तेषु। अत्र रूपकोपमयोः सन्देहसङ्करः वृत्त्यनुप्रासश्चेत्युभयोः पुनः संसृष्टिः।

(फ) अशोकेति। अशोकतरुषु ताड़नाभिः पुष्पविकासाय पादप्रहारैः रणिताः शब्दिता ये रमणीनां मणिनूपुरास्तेषां झङ्कारसहस्रेण मुखराः शब्दायमानास्तेषु।

(ब) विकसदिति। विकसतां मुकुलानां परिमलेन गन्धेन पुञ्जितस्य समवेतीकृतस्य अलिजालस्य भ्रमरसमूहस्य मञ्जुशिञ्जितैर्मनोहररवैः सुभगा रमणीयाः सहकारा आम्रवृक्षा येषु तेषु। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(भ) अविरलेति। अविरला घनाः कुसुमानां धूलयः परागा एव वालुकापुलिनानि सैकतानि, अविरलकुसुमधूलयो वालुकापुलिनानीवेति वा, तैर्धवलितं शुभ्रीकृतं धरातलं येषु तेषु। अत्रापि रूपकोपमयोः सन्देहसङ्करः।

(म) मध्विति। मधुमदेन पुष्पमधुपानजनितमत्ततया विडम्बितं विह्वलीकृतं यत् मधुकरीकदम्बकं भ्रमरीगणस्तेन संवाह्यमानाः सञ्चाल्यमानाः लता एव दोला येषु तेषु। अत्र निरङ्गकेवलरूपकानुप्राणिता समासोक्तिरलङ्कारः, मद्यपानमत्ततरुणीदोलासंवाहनकार्य्यप्रतीतेः।

(य) उत्फुल्लेति। उत्फुल्लानि प्रकाशितानि पल्लवानि यासां तासु, लवलीषु लीयमाना गुप्तमवतिष्ठमाना ये मत्तकोकिलास्तैरुल्लासितं आलोड्य वहिष्कृतं यन्मधु पुष्परसस्तस्य शीकरैः कणैः उद्दाममत्यन्तं दुर्दिनं वृष्टिर्येषु तेषु।

পুষ্প ও কলিকাগুলিকে কৃষ্ণবর্ণ করিয়াছিল; (ফ) অশোকবৃক্ষে চরণপ্রহার করায় শব্দায়মান রমণীগণের মণিময় নূপুরের ঝঙ্কারে দিক্‌সকল মুখরিত হইতেছিল; (ব) বিকসিত কলিকা-সমূহের সৌরভে সমবেত ভ্রমরগণের মনোহর রবে আম্রবৃক্ষগুলি মনোহর হইয়াছিল; (ভ) বালুকাময় পুলিনের ন্যায় ঘন ঘন পুষ্পরেণুতে ভূতল ধবলবর্ণ করিয়াছিল; (ম) পুষ্পের মধুপানে মত্ততাবশতঃ বিহ্বল হইয়া ভ্রমরীগণ লতারূপ দোলা সঞ্চালন করিতেছিল; (য) মত্ত-কোকিলগণ নোয়াড়ির বিকসিত পল্লবের অন্তরালে লুক্কায়িত থাকিয়া, তাহার ফুলের মধু

---

(१)...ताड़नरणित-रमणीयमणि···। (२) असह्यमधु...। (३)···मधुकर।
(४)...वल्ली···। (५)···उद्दाम...।

जाया-जीवोपहार-हृष्ट-मन्मथास्फालित-(१) चाप-रव-भय-स्फुटित-पथिक-हृदय-रुधिरार्द्रीकृत-(२) मार्गेषु, (३) (र) अविरत-पतत्-कुसुमशर-पतत्रि-पत्र-(४) सूत्कार-बधिरीकृत-दिङ्मुखेषु, (ल) दिवापि प्रवृत्तान्तर्मदन-(५) रागान्धाभिसारिका सार्थ-सङ्कुलेषु, (व) उद्वेल-रति-रस-सागर-पूर-प्लावितेषु, (श) सकल-जीवलोक-हृदयानन्द-दायकेषु, (६) मधुमासदिवसेषु (ष) एकदाहमम्बया

(र) प्रोषितेति। प्रोषितजनानां विदेशस्थलोकानां या जाया विरहविशीर्णा भार्य्यास्तासां जीवस्य जीवनस्य उपहारेण मदनवेदनया मरणात् तदीयजीवनरूपोपायनलाभेनेत्यर्थः, हृष्टः सन्तुष्टो यो मन्मथस्तेन आस्फालितस्य कामिलक्षेषु शरक्षेपाय मुहुर्मुहुराकृष्टस्य, चापस्य धनुषो रवाच्छब्दाद्भयेन स्फुटितानां विदीर्णानां पथिकहृदयानां विरहिजनवक्षसां रुधिरैः आर्द्रीकृता मार्गाः पन्थानो येषु तेषु। अत्र ताहशरुधिरैर्मार्गाणामार्द्रीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।.

(ल) अविरतेति। अविरतं पतता कामिलक्ष्यं प्रति धावतां कुसुमशरपतत्रिणां मदनबाणानां यानि पत्राणि पक्षास्तेषां सूत्कारेण वेगगमनकालीन-'सूत्' इत्यव्यक्तशब्देन बधिरीकृतानि दिङ्मुखानि तत्तद्दिग्वर्त्तिजनश्रोत्राणि येषु तेषु। अत्रापि बधिरीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्त्या रतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(व) दिवेति। दिवापि दिनेऽपि, प्रवृत्तो जातः अन्तश्चित्ते यो मदनरागः कामासक्तिस्तेन अन्धानां विह्वलानां अभिसारिकाणां रमणाय सङ्केतस्थलं गच्छन्तीनां कामिनीनां सार्थेन समूहेन सङ्कुलेषु व्याप्तेषु।

(श) उद्वेलेति। उद्वेलो वेलामुच्छलितः रतिरसः सुरतानुराग एव सागरः अगाधत्वात् समुद्रस्तस्य पूरेण प्रवाहेन प्लावितेषु। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(ष) सकलेति। सकलानां जीवलोकानां हृदयानन्दं ददतीति तेषु, मधुमासस्य चैत्रमासस्य दिवसेषु।

বাহির করিতেছিল, তাহাতে মধুবিন্দুর অত্যন্ত বৃষ্টি হইতেছিল ; (র) বিদেশস্থ লোকদিগের বিরহিণী প্রণয়িনীগণের জীবন উপহার পাইয়া সন্তুষ্টচিত্তে কামদেব নিজের ধনু বারংবার আস্ফালন করিতেছিলেন, তাহার শব্দে, ভয়ে বিরহীদিগের হৃদয় বিদীর্ণ হইয়া যাইতেছিল ; সেই হৃদয়ের রক্তে পথ সকল আর্দ্র হইতেছিল ; (ল) কামদেবের শর, অনবরত কামীদিগের প্রতি পতিত হইতেছিল, সেই শরসমূহের কঙ্কপত্রের 'সূৎকার' ধ্বনিতে সমস্ত দিঙ্মণ্ডল বধির করিয়া তুলিয়াছিল ; (ব) মনের ভিতরে উৎপন্ন কামাবেশে বিহ্বল হইয়া কামিনীগণ দিনের বেলাও সঙ্কেতস্থানে যাইতেছিল ; (শ) রমণানুরাগরূপ উচ্ছলিত সমুদ্রের প্রবাহে সমস্ত প্লাবিত করিতেছিল ; (ষ) এবং সেই চৈত্রমাসের দিনগুলি সকল প্রাণিগণের হৃদয়েই

---

(१)...हृष्टमन्मथेषु, मन्मथास्फालित...।

(२)...आर्द्र मार्गेषु। (३) अत्र 'किंशुककुसुमाकीर्णेषु' इत्यधिकः पाठः क्वचित्।

(४)...पत्रबधिरीकृत..., पत्रफूत्कारबधिरीकृत...। (५) प्रवृत्तमदन...। (६)...आनन्ददेषु।

मत्र मधुमास-विस्तारित-शोभं प्रोत्फुल्ल नव-नलिन कुमुद-कुवलय-कह्लारमिद-मच्छोदं सर स्नातुमभ्यागमम् (१) (स)। अत्र च स्नानार्थमागतया भगवत्या पार्वत्या तटशिलातलेषु विलिखितानि सभृङ्गरिटीनि (२) पांशु-निमग्न-क्षुद्र-पद-मण्डलानुमित-मुनिजन-प्रणाम-प्रदक्षिणानि त्र्यम्बकप्रतिबिम्बकानि वन्दमाना, (ह) भ्रमर-भर-भुग्न-(३) गर्भ केसर-जर्जर-कुसुमोपहार-(४) रम्योऽयं लतामण्डपः, (क्ष) परभृत-नख-कोटि-पाटित-कुड्मल-नाल-विवर-(५) विगलित-

(स) एकदेति। अच्छया अनन्या। मधुमासेन चैत्रेण विस्तारिता अधिकमुत्पादिता शोभा यस्य तत्, तथा प्रोत्फुल्लानि प्रस्फुटितानि, नवानि नूतनानि कुमुदानि श्वेतोत्पलानि, कुवलयानि नीलोत्पलानि, कह्लाराणि रक्तोत्पलानि च यस्मिन् तत्।

(ह) अत्रेति। तटशिलातलेषु तीरस्थपाषाणोपरिभागेषु विलिखितानि रेखया निर्म्मितानि। भृङ्गरिटिना तदाख्यशिवद्वारपालमूर्त्या सह विद्यमानानीति सभृङ्गरिटीनि। "भृङ्गरिटिः (पुं) शिवद्वार-पालः।" इति शब्दकल्पद्रुमः। तथा पांशुषु धूलिषु निमग्नैः अतएव क्षुद्रैः क्षुद्रतया प्रतीयमानैः पद-मण्डलैश्चरणचिह्नसमूहैः अनुमितानि मुनिजनानां प्रणामप्रदक्षिणानि येषां तानि। त्र्यम्बकस्य शिवस्य प्रति-बिम्बकानि प्रतिमूर्त्तीः, वन्दमाना नमस्कुर्वाणा, अहं व्यचरमिति परेणान्वयः।

(क्ष) भ्रमरेति। भ्रमराणां भरेण भुग्ना वक्रीकृताः, गर्भकेसरा मध्यवर्त्तिकिञ्जल्का येषां तानि, अतएव जर्जराणि शतच्छिद्राणि यानि कुसुमानि तेषामुपहारेण तरुभिर्लताभिश्च पातनेन रम्यो मनोहरः।

(क) परेति। परभृतानां कोकिलानां नखकोटिभिर्नखराग्रैः पाटितानां विदारितानां कुड्मलनालानां

আনন্দ জন্মাইতেছিল। (স) এবং সেই চৈত্রমাস এই অচ্ছোদ সরোবরের শোভা বৃদ্ধি করিয়াছিল, আর, এই সরোবরে নূতন পদ্ম এবং শ্বেত, নীল ও রক্ত উৎপল ফুটিয়াছিল। (হ) ভগবতী পার্ব্বতী, এই অচ্ছোদসরোবরে স্নান করিতে আসিয়া, তীরবর্ত্তী বহুতর প্রস্তরখণ্ডের উপরে অনেকগুলি শিবের প্রতিমূর্ত্তি অঙ্কিত করিয়া গিয়াছিলেন, তাহার প্রত্যেকটির পার্শ্বেই ভৃঙ্গরিটির (শিবের দ্বারপালের) প্রতিমূর্ত্তিও ছিল; মুনিগণ সেই শিবের প্রতিমূর্ত্তিগুলিকে প্রদক্ষিণ করিয়া যে প্রণাম করিয়া গিয়াছিলেন, তাহা তাঁহাদের ধূলি-নিমগ্ন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পদচিহ্ন দেখিয়া অনুমান হইয়াছিল; আমিও সেই মূর্ত্তিগুলিকে নমস্কার করিতে লাগিলাম; (ক্ষ) বৃক্ষ ও লতা হইতে জীর্ণ পুষ্প সকল পতিত হইয়াছে, ভ্রমরের ভরে তাহার ভিতরের কেসরগুলি বক্র হইয়া পড়িতেছে, তাহাতে এই লতামণ্ডপটি সুন্দর দেখাইতেছে; (ক) এই একটি আমগাছ, ইহাতে বিস্তর ফুল ফুটিয়াছে, কোকিলগণ নখাগ্রদ্বারা মুকুলগুলির

(१) अभ्यपतम्, अभ्युपगमम्। (२) सभृङ्गरीटीनि। (३) पतद्भ्रमरभरभुग्न,...भग्न...।
(४) शाखान्तरगर्भकजर्जरकुसुमोपहार...। (५)...कुड्मलविवर...।

मधुधारः (१) सुपुष्पितोऽयं सहकारतरुः, (क) उन्मद-मयूर-कुल-कलकल-(२) भीत-भुजङ्ग-मुक्ततला शिशिरेयं चन्दनवीथिका, (३) (ख) विकाच-कुसुम-पुञ्ज-पात-सूचित-वनदेवता-प्रेङ्खोलन-शोभनेयं लतादोला, (ग) बहुल-कुसुम-रजः-पटल-मग्न-कलहंस-पद-रेखमतिरमणीयमिदं तीरतरुतलं, (घ) इति स्निग्ध-मनोहरतरोद्देश-दर्शन-लोभाक्षिप्तहृदया सह सखीजनेन व्यचरम्। (ङ)

एकस्मिंश्च (४) प्रदेशे झटिति वनानिलेनोपनीतम्, निर्भरविकसितेऽपि कानने अभिभूतान्यकुसुमपरिमलम्, विसर्पन्तम्, अतिसुरभितया अनुलिम्पन्तमिव पूरयन्तमिव तर्पयन्तमिव घ्राणेन्द्रियम्, अहमहमिकया मधुकरकुलैरनु-

मुकुलदन्तानां विवरेभ्यः विगलिता मधुनो धारा यस्मिन् सः, सुपुष्पितः सम्यक्सञ्जातपुष्पः, अयं सहकार-तरुराम्रवृक्षः।

(ख) उन्मदेति। उन्मदस्य मदमत्तस्य मयूरकुलस्य कलकलेन कोलाहलेन भीतैः भुजङ्गैः सर्पैः मुक्तं परित्यक्तं तलं अधोदेशो यस्याः सा, शिशिरा शीतला, इयं चन्दनवीथिका चन्दनतरुश्रेणिः।

(ग) विकचेति। विकाचस्य प्रस्फुटितस्य कुसुमपुञ्जस्य पातेन पतनेन सूचितं अनुमापितं यत् वन-देवतायाः प्रेङ्खोलनं दोलनं तेन शोभना, इयं लतादोला लतात्मकदोलनयन्त्रम्।

(घ) बहलेति। बहले प्रचुरे पुञ्जीभूत इत्यर्थः कुसुमरजःपटले पुष्पपरागसमूहे मग्नाः कलहंसानां पदरेखाश्चरणचिह्नानि यत्र तत्, अतएवातिरमणीयम्।

(ङ) इतीति। इति इत्थं स्निग्धानां नवपल्लवादिभिश्चिक्कणानां अतएव मनोहरतराणां उद्देशानां प्रदेशानां दर्शनलोभेन आक्षिप्तमाकृष्टं हृदयं यस्याः सा तथोक्ता अहम।

(च) एकस्मिन्निति। किञ्च। वनानिलेन वन्यवायुना उपनीतमाहृतम्। निर्भरमतिमात्रं यथा तथा विकसितेऽपि कानने काननकुसुमे, अभिभूतास्तिरस्कृताः अन्येषां कुसुमानां परिमलाः सौरभाणि

নাল বিদীর্ণ করিয়া দিয়াছে, সেই ছিদ্র হইতে মধু-ধারা পড়িতেছে ; (খ) এই একটি শীতল চন্দনবন ; সর্পগণ, উন্মত্ত ময়ূরগণের কোলাহলে ভীত হইয়া ইহার তল পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছে ; (গ) এই একটি লতাময় দোলা ; ইহা হইতে প্রস্ফুটিত কুসুমরাশি নিপতিত হইতেছে বলিয়া বুঝা যাইতেছে যে, কোন বনদেবতার দোলনে ইহাকে সুন্দর দেখা যাইতেছে ; (ঘ) তীরবর্ত্তী বৃক্ষসমূহের এই তলদেশটি অতি মনোহর ; এখানে প্রচুর কুসুম-রেণুরাশির উপরে কলহংসদিগের পদচিহ্ন দেখা যাইতেছে। (ঙ) এইরূপ স্নিগ্ধ ও অত্যন্ত মনোহর স্থানসমূহ দর্শন করিবার অভিলাষে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া আমি সখীগণের সহিত বিচরণ করিতে লাগিলাম।

(চ) তাহার পর কোন একটি স্থানে একপ্রকার কুসুমের গন্ধ আঘ্রাণ করিলাম ;

(१)...मधुनिर्झरधारः। (२) मयूरकलकल..., सकलमयूरकलकल...।

(३) चन्दनवनवीथिका। (४) अथैकस्मिंश्च।

बध्यमानम्, अनाघ्रातपूर्वम्, अमानुषलोकोचितम्, कुसुमगन्धमभ्यजिघ्रम् (च)। कुतोऽयमित्युपारूढकुतूहला चाहं मुकुलितलोचना तेन कुसुमगन्धेन मधुकरीवाकृष्यमाणा (१) कौतुकतरलाभ्यधिकतरोपजात-नूपुरमणि-झङ्काराकृष्ट-सरः-कलहंसानि कतिचित् पदानि गत्वा, (छ) हर-नयन-हुताशनेन्धनीकृत-(२) मदन-शोक-विधुरं वसन्तमिव तपस्यन्तम्, (ज) अखिल-मण्डल-प्रासरथमोशान-शिरः-

येन तम्। विसर्पन्तं सर्वतः प्रसरन्तम्। अतिसुरभितया नितान्तसौरभवत्तया। घ्राणेन्द्रियं नासिका। अहमहमिकया अहमग्रे अहमग्रे इत्यभिमानेन मधुकरकुलैर्भ्रमरगणैः अनुबध्यमानमनुस्रियमाणम्। अत्र तिसृणामिव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(छ) कुत इति। कुतः प्रदेशादयं गन्ध आगच्छतीति शेषः, इत्येवं उपारूढं उत्पन्नं कुतूहलं यस्याः सा तथोक्ता चाहं, मुकुलितलोचना मुकुलवदीषदुन्मीलितनयना मधुकरी भ्रमरीवाकृष्यमाणा च सती, कौतुकेन तरलः कुतूहलेन द्रुततरपदक्षेपात् कम्प्रः, अत्यधिकतरं पूर्वस्मादतिमात्रं यथा तथा उपजातो यो नूपुरमणीनां झङ्कारस्तेन आकृ ।. नूपुररवश्रवणेन कलहंसानामुपस्थितेः स्वाभाविकत्वात् पदसमीपमानीताः कलहंसा येस्तानि, कतिचित् पदानि गत्वा, अनिमनाहरं स्नानार्थमागतं मुनिकुमारकमपश्यमिति दूरेणान्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि मुनिकुमारकमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ज) हरेति। हरनयनस्य शिवतृतीयलोचनस्य यो हुताशनो वह्निस्तेन इन्धनीकृतो दग्ध इत्यर्थः यो मदनस्तस्य शोकेन विधुरं विह्वलं अतएव तपस्यन्तं वैराग्यात्तपश्चरन्तं वसन्तं कालमिव, कुसुमसौरभवत्त्वात्तस्य मदनसखत्वाच्चेति भावः। अत्र इत्युत्प्रेक्षालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्यते।

দ্রুতগামী বন্যবায়ু, সেই কুসুমের গন্ধ আনয়ন করিয়াছিল ; বনের সমস্ত কুসুম অত্যন্ত প্রস্ফুটিত হইয়া থাকিলেও, সেই গন্ধ, অন্য সকল কুসুমের গন্ধকে পরাস্ত করিয়াছিল এবং সকলদিকে ছড়াইয়া পড়িতেছিল আর অত্যন্ত সুগন্ধি বলিয়া, আমার ঘ্রাণেন্দ্রিয়কে যেন লিপ্ত করিতেছিল, পূর্ণ করিতেছিল এবং সন্তুষ্ট করিতেছিল ; :আমি সেরূপ গন্ধ পূর্ব্বে আর কখনও আঘ্রাণ করি নাই এবং সে গন্ধ মনুষ্যলোকের যোগ্য ছিল না। (ছ) 'এ গন্ধ কোথা হইতে আসিতেছে' এইরূপ সংশয় হওয়ায় আমার কৌতূহল জন্মিল, তাহার পর আমি নয়ন উন্মীলিত করিয়া ভ্রমরীর ন্যায় সেই কুসুম-গন্ধে আকৃষ্ট হইয়া কয়েক পদ গমন করিলাম ; তখন কৌতুকবশতঃ দ্রুত পদক্ষেপ করায় আমার নূপুরমণি হইতে, পূর্ব্বাপেক্ষা অধিক এবং কম্পিতভাবে ঝঙ্কার হইতে লাগিয়াছিল, তাহাতে অচ্ছোদ সরোবরের কলহংসগণ আকৃষ্ট হইয়া আসিয়াছিল ; তাহার পর, স্নানের নিমিত্ত আগত অত্যন্ত সুন্দর একটি মুনিকুমারকে দেখিতে পাইলাম। (জ) তাঁহাকে দেখিয়া বোধ হইল যে, মহাদেবের নয়নাগ্নি, কামদেবকে দগ্ধ করিলে, সেই

(१) मधुकरावकृष्यमाणा,...मधुकरीवावकृष्यमाणा। (२) हरहुताशनेन्धनीकृत...।

शशाङ्कमिव धृतव्रतम्, (झ) अयुग्मलोचनं वशीकर्त्तुकामं काममिव सनियमम् (ञ) अतितेजस्वितया प्रचल-तडिल्लता-पञ्जर-मध्यगतमिव ग्रीष्म-दिवस-दिवसकर-मण्डलोदर-प्रविष्टमिव ज्वलन-ज्वाला-कलाप-मध्य-स्थितमिव (१) विभाव्यमानम्, (ट) उन्मिषन्त्या बहुलबहुलया दीपिकालोकपिङ्गलया देहप्रभया कपिलीकृतकाननं कनकमयमिव तं प्रदेशं कुर्वाणम्, (ठ) रोचना-रस-लुलित-प्रतिसर-समान-सुकुमार-पिङ्गल-जटम्, (२) (ड) पुण्यपताकायमानया सरस्वती-

(झ) अखिलेति। अखिलमण्डलप्राप्त्यर्थं तदात्मनः कलामात्रत्वात् सम्पूर्णमण्डललाभार्थं धृतव्रतं गृहीततपोनियमं, ईशानशिरःशशाङ्कं शिवललाटस्थचन्द्रमिव, तत्तुल्यविशदवर्णत्वादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः।

(ञ) अयुग्मेति। अयुग्मलोचनं त्रिलोचनं शिवं, वशीकर्त्तुं स्वापराधेन विरुद्धीभूतत्वात् पुनः प्रसन्नीकर्त्तुं कामोऽभिलाषोऽस्येति तम्, अतएव सनियमं शिवोपासनारूपव्रतशालिनं कामं मन्मथमिव, तद्वत् परमसुन्दरत्वादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः।

(ट) अतीति। अतितेजस्वितया हेतुना, प्रचलानां स्पन्दमानानां तडिल्लतानां पञ्जरमध्यगतमिव समूहाभ्यन्तरस्थितमिव, ग्रीष्मदिवसस्य तदानीं सूर्य्यस्यातितेजस्वित्वादिति भावः यत् दिवसकरमण्डलं सूर्य्यबिम्बं तस्य उदरे अभ्यन्तरे प्रविष्टमिव, तथा ज्वलनज्वालाकलापस्य वह्निशिखासमूहस्य मध्यस्थितमिव, विभाव्यमानं प्रतीयमानम्। अत्र तिसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा दिवसपदस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च ग्रीष्मकालेति पाठेन समाधेयः।

(ठ) उन्मिषन्त्येति। उन्मिषन्त्या देहादेव प्रसरन्त्या, बहुलबहुलया अतिप्रचुरया, दीपिकालोकवत् प्रदीपप्रभावत् पिङ्गलया, देहप्रभया, कपिलीकृतं पिङ्गलवर्णीकृतं काननं वनं येन तं, अतएव तं प्रदेशं कनकमयमिव सुवर्णविकारमिव कुर्वाणम्। अत्र लुप्तोपमा, काननस्य कपिलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, गुणोत्प्रेक्षा चैतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ड) रोचनेति। रोचनारसेन गोरोचनाद्रवेण लुलितो लिप्तो यः प्रतिसरो विवाहादिधारणीयहस्तसूत्रं तत्समानाः सुकुमाराः पिङ्गलाश्च जटा यस्य तम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

শোকে বিহ্বল হইয়া বসন্ত যেন তপস্যা করিতেছেন; (ঝ) মহাদেবের মস্তকস্থিত ক্ষুদ্র চন্দ্র যেন, আপনার মণ্ডলটি সম্পূর্ণ লাভ করিবার নিমিত্ত, ব্রতাবলম্বন করিয়াছেন; (ঞ) কামদেব, যেন পুনরায় মহাদেবকে প্রসন্ন করিতে ইচ্ছা করিয়া তাঁহার উপাসনারূপ ব্রত অবলম্বন করিয়াছেন; (ট) আর সেই মুনিকুমার অত্যন্ত তেজস্বী ছিলেন বলিয়া তাঁহাকে যেন, চঞ্চল বিদ্যুৎ-পুঞ্জের মধ্যবর্ত্তী, গ্রীষ্মকালীয় সূর্য্যমণ্ডলের মধ্যে প্রবিষ্ট এবং অগ্নি-শিখা-সমূহের মধ্য-স্থিত বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ঠ) প্রদীপের আলোকের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, অত্যন্ত প্রচুর এবং সকল দিকে বিস্তৃত দেহ-প্রভাদ্বারা তিনি, সেই বনটাকেই পিঙ্গলবর্ণ করিয়াছিলেন, তাহাতে যেন সেই স্থানটাকে স্বর্ণময় করিতেছেন বলিয়া প্রতীতি

(१) प्रज्वलित..., ग्रीष्मदिवसं दिवस...ज्वलनं ज्वाला...। (२) सुकुमारजटं।

समागमोत्कण्ठा-कृत-चन्दनरेखयेव (१) भस्मललाटिकया बालपुलिनलेखयेव (२) गङ्गाप्रवाहमुद्भासमानम्, (३) (ढ) अनेक-शाप-भ्रूकुटि-(४) भवन-तोरणेन भ्रूलताद्वयेन विराजितम्, (ण) अत्यायततया लोचनमयीं मालामिव ग्रथितामुद्वहन्तम्, सर्वैर्हरिणैरिव दत्त-लोचन-शोभा-संविभागम्, (थ) आयतोत्तुङ्ग-घ्राण-वंशम्, (द) अप्राप्त-हृदय-प्रवेशेन नवयौवनरागेणेव सर्वात्मना पाटलीकृताधररुचकम्, (ध) अनुद्भिन्नश्मश्रुत्वात् (५) अनासादित-मधुकरावली-

---

(ढ) पुण्येति। पुण्यपताकायमानया धर्मवैजयन्तीवदाचरन्त्या, तस्या अपि शुभ्रत्वादिति भावः। सरस्वत्याः समागमाय सङ्गमाय या उत्कण्ठा तया कृता या चन्दनरेखा तयेव स्थितया, भस्मनो ललाटिकया तिलकविशेषेण, बालपुलिनलेखया क्षुद्रसैकतरेखया गङ्गाप्रवाहमिव, उद्भासमानं दीप्यमानम्। अत्र क्रमागतोपमा, जात्युत्प्रेक्षा, श्रौतोपमा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) अनेकेति। अनेके ये शापा अभिसम्पातास्तेभ्यो भ्रूकुटिः भ्रूसङ्कोच एव भवनं गृहं तस्य तोरणेन बहिर्द्वारस्थधनुराकृतिकाष्ठविशेषस्वरूपेण भ्रूलताद्वयेन करणेन विराजितम् शोभितम्। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(त) अत्येति। अत्यायततया लोचनयोरतिदीर्घतया हेतुना लोचनमयीं कृत्वा ग्रथितां मालामिव उद्वहन्तं धारयन्तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) सर्वेति। सर्वैर्हरिणैर्दत्तो लोचनशोभायाः स्वस्वनयनकान्तेः संविभागो विभक्तांशो यस्मै तमिव, हरिणवल्लोचनशोभावत्त्वादिति भावः। अत्र तादृशदानोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(द) आयतेति। आयतो दीर्घः उत्तुङ्ग अत्युच्चश्च घ्राणवंशो नासिकादण्डो यस्य तम्।

(ध) अप्राप्तेति। अप्राप्तो जितेन्द्रियत्वादलब्धो हृदये प्रवेशो येन तेन, नवयौवनस्य रागो रमणीष्वनुराग एव रागो रक्तिमा तेन, सर्वात्मना सकलप्रयत्नेन, पाटलीकृतं श्वेतरक्तीकृतं अधरो रुचकं बीजपूर इव यस्य तम्। अत्र अनुरागरक्तिम्नोर्भेदेऽपि रागशब्देनाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, स्वभावपाटलाधरे नवयौवनरागकर्तृकपाटलीकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा चेतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

হইতেছিল; (ড) তাঁহার মস্তকে, গোরোচনা-রসে রঞ্জিত হস্তসূত্রের তুল্য পিঙ্গলবর্ণ ও কোমল কতকগুলি জটা ছিল; (ঢ) তাঁহার ললাটে, ধর্ম্মের পতাকার ন্যায় এবং সরস্বতীর সহিত সম্মেলনের উৎকণ্ঠায় কৃত চন্দনের রেখার ন্যায়, ভস্মের তিলক ছিল; তাহাতে তিনি, ক্ষুদ্র বালুকাময় পুলিনদ্বারা গঙ্গাপ্রবাহের ন্যায় শোভা পাইতেছিলেন; (ণ) বহুতর অভিসম্পাত-কালীন ভ্রূকুটিরূপ গৃহের তোরণস্বরূপ দুইটি ভ্রূদ্বারা তিনি বিরাজ করিতেছিলেন; (ত) নয়নযুগল অত্যন্ত দীর্ঘ ছিল বলিয়া, তিনি যেন গ্রথিত নয়নময় মালা ধারণ করিতেছিলেন; (থ) সকল হরিণগণ, যেন, তাঁহাকে আপনাদের নয়নের শোভা বিভক্ত করিয়া দিয়াছিল; (দ) তাঁহার নাসিকাদণ্ডটি দীর্ঘ ও উন্নত ছিল; (ধ) নবযৌবনের অনুরাগ

---

(१)...चन्दनलेखयेव।

(२)...रेखयेव। (३) उद्भाव्यमानं। (४)...भ्रकुटि, भ्रुकुटि...। (५) अनुद्भूत,...श्मश्रुराजित्वात्।

বলয়-পরিক্ষেপ-বিলাসমিব বালকমলমাননং দধানম্, (ন) অনঙ্গকার্ম্মুক-গুণেনেব (১) কুণ্ডলীকৃতেন তপস্তড়াগ-কমলিনী-মৃণালেনেব যজ্ঞোপবীতেনালঙ্কৃতম্ (প) একেন সনাল-বকুল-ফলাকারং কমণ্ডলুং, অপরেণ মকরকেতু-বিনাশ-শোক-রুদিতায়া রতেরিব বাষ্পজলবিন্দুভিরারচিতাং স্ফটিকাক্ষমালিকাং (২) করেণ কলয়ন্তম্, (ফ) অনেক-বিদ্যাপগা-সঙ্গমাবর্ত্তনিভয়া নাভিমুদ্রয়োপশোভমানম্, (ব) অন্তর্জ্ঞাননিরাকৃতস্য মোহান্ধকারস্যাপয়ান-পদবীমি-

(ন) অনুদ্ভিন্নেতি। ন উদ্ভিন্নানি উৎপন্নানি শ্মশ্রূণি মুখলোমানি যস্য তস্য ভাবস্তত্ত্বং তস্মাদ্ধেতোঃ, ন আসাদিতঃ প্রাপ্তঃ, মধুকরাবলীবলয়েন ভ্রমরশ্রেণীমণ্ডলেন পরিক্ষেপবিলাসঃ পরিবেষ্টনশোভা যেন তৎ তাদৃশং, বালকমলং নূতনপদ্মমিব আননং মুখং দধানম্। অত্র শ্রৌতোপমালঙ্কারঃ।

(প) অনঙ্গেতি। অনঙ্গস্য মদনস্য কার্ম্মুকগুণেনেব, রমণীনাং মদনোদ্দীপনাদিতি ভাবঃ, কুণ্ডলীকৃতেন বলয়ীকৃতেন, তথা তপ এব তড়াগঃ সরোবরস্তস্য যা কমলিনী তস্যা মৃণালেনেব, শুভ্রত্বাদিতি ভাবঃ, যজ্ঞোপবীতেনালঙ্কৃতম্। অত্র শ্রৌতোপমা, নিরঙ্গকেবলরূপকম্, পুনঃ শ্রৌতোপমা চৈতাসামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ফ) একেনেতি। একেন করেণ বামেনেত্যর্থঃ, সনালং সবৃন্তং যৎ বকুলফলং তদ্বৎ আকৃতির্যস্য তং তাদৃশং কমণ্ডলুং কলয়ন্তমিত্যন্বয়ঃ। কমণ্ডলোরপি নালসত্ত্বাৎ সনালেতি বিশেষণম্। অপরেণ চ দক্ষিণেন করেণ, মকরকেতোর্মদনস্য বিনাশশোকেন রুদিতায়া রতের্বাষ্পজলবিন্দুভিরারচিতাং নির্ম্মিতামিব, শুভ্রত্বাদিতি ভাবঃ, স্ফটিকস্য অক্ষমালিকাং জপমালাং কলয়ন্তং দধানম্। তস্য মুনিকুমারস্য সর্ব্বোপকরণানামেব মদনোদ্দীপনত্বং বোধয়িতুং মদনসম্বন্ধিবিশেষণমিতি বোধ্যম্। অত্র প্রথমে বিশেষণে আর্থোপমা, দ্বিতীয়ে চ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা, অনয়োর্মিথো নিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ।

(ব) অনেকেতি। অনেকা বহুবিধাঃ বিদ্যা এব আপগা নদ্যস্তাসাং সঙ্গমে সম্মেলনে য আবর্ত্তো জলভ্রমিস্তন্নিভয়া তত্তুল্যয়া নাভিমুদ্রয়া নাভি-মণ্ডলেন উপশোভমানম্। অত্র নিরঙ্গকেবলরূপকার্থোপময়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

যেন হৃদয়ে প্রবেশ করিতে না পারিয়া, বীজপূরফলের (টাবা নেবুর) ন্যায় তাঁহার ওষ্ঠযুগলকে পাটলবর্ণ করিয়াছিল; (ন) তাঁহার মুখে লোম উঠিয়াছিল না; সুতরাং ভ্রমরশ্রেণীকর্তৃক মণ্ডলক্রমে পরিবেষ্টনরূপ শোভা-বিহীন নূতন পদ্মের ন্যায়, তিনি মুখমণ্ডল ধারণ করিতেছিলেন; (প) কামদেবের ধনুকের গুণের ন্যায় মণ্ডলীকৃত এবং তপস্যারূপ সরোবরের পদ্মিনীর মৃণালের ন্যায় শুভ্রবর্ণ একটি যজ্ঞোপবীত তাঁহাকে অলঙ্কৃত করিয়াছিল; (ফ) তিনি এক হস্তে, বৃন্ত-সমন্বিত-বকুল-ফলাকৃতি একটি কমণ্ডলু এবং অপর হস্তে এক ছড়া স্ফটিকের জপমালা ধারণ করিতেছিলেন; সেই জপমালা যেন, কামদেবের বিনাশ-শোকে রোরুদ্যমান রতিদেবীর অশ্রুবিন্দুদ্বারা নির্ম্মিত হইয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ব) তিনি, বহুবিধ বিদ্যারূপ

(১) কার্ম্মুকগুণেন। (২) স্ফটিকগুলিকাক্ষমালিকা।

वाञ्जन-रजोलेखा-श्यामलां रोमराजिमुदरेण तनीयसीं (१) बिभ्राणम्, (भ) आत्मतेजसा विजित्य सवितारं परिगृहीतेन (२) परिवेषमण्डलेनेव मौञ्ज-मेखलागुणेन परिच्छिन्नजघनभागम्, (म) अभ्रगङ्गास्रोतोजलप्रक्षालितेन जरच्च-कोर-लोचनपुट-पाटल-कान्तिना मन्दारवल्कलेनोपपादिताम्बरप्रयोजनम्, (य) अलङ्कारमिव ब्रह्मचर्य्यस्य, यौवनमिव (३) धर्म्मस्य, विलासमिव सरस्वत्याः,

---

(भ) अन्तरिति। उदरेण करणेन, अन्तर्ज्ञानेन आन्तरिकतत्त्वबोधेन निराकृतस्य अपसारितस्य, मोहोऽज्ञानमेवान्धकारस्तस्य अपयानपदवीमिव अपसरणमार्गमिव, अञ्जनरजसां कज्जलरेणूनां लेखेव रेखेव श्यामला ताम, तनीयसीं कैवल्योत्पत्त्यारम्भात् कृशतरां रोमराजिं लोमावलीं बिभ्राणं धारयन्तम्। अत्र मोहे अन्धकारत्वारोपः शाब्दः, अन्तर्ज्ञाने आलोकत्वारोपस्तु आर्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्, जात्युत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा चैतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तरलकज्जलरेखावत् रोमराजेः सर्वथासमानतारहित्यद्योतनार्थं रजःपदमिति नापुष्टार्थत्वदोषः।

(म) आत्मेति। आत्मतेजसा सवितारं सूर्य्यं विजित्य परिगृहीतेन बलादानीतेन, परिवेषमण्डलेनेव स्थितेन मौञ्जमेखलागुणेन परिच्छिन्नः परिवेष्टितो जघनभागो यस्य तम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अभ्रेति। अभ्रगङ्गाया आकाशगङ्गायाः स्रोतोजलेन प्रक्षालितं तेन, जरतो वृद्धस्य चकोरस्य पक्षि-विशेषस्य लोचनपुटवत् पाटला श्वेतरक्ता कान्तिर्यस्य तेन, मन्दारस्य देवतरुविशेषस्य वल्कलेन करणेन, उपपादितं निष्पादितं अम्बरप्रयोजनं परिधेयवस्त्रकार्य्यं येन तम्, तादृशमेकं मन्दारवल्कलं परिदधानमित्यर्थः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। वृद्धचकोरस्यैव लोचनपुटकान्तिरधिकपाटला भवतीति द्योतनार्थं जरत्पदमिति नापुष्टार्थत्वदोषः।

(र) अलमिति। ब्रह्मचर्य्यस्य स्त्रीसंसर्गत्यागरूपस्य अलङ्कारमिव, एनमासाद्य पूर्णावयवतया तस्य शोभातिरेकादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। आङ्गिकतत्त्वे ब्रह्मचर्य्यमाह दक्षः—"स्मरणं कीर्त्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं। सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च। एतन्मैथुनमष्टाङ्गं विद्वद्भिः परि-कीर्त्तितम्। विपरीतं ब्रह्मचर्य्यमेतदेवाष्टलक्षणम्।" धर्म्मस्य यौवनमिव, अत्र पूर्णत्वादित्याशयः। अत्रापि

নদীর সম্মেলনস্থানবর্ত্তী ঘোলার ন্যায় নাভিমণ্ডলে শোভা পাইতেছিলেন; (ভ) এবং আন্তরিক তত্ত্বজ্ঞানদ্বারা যে মোহরূপ অন্ধকার দূরীভূত করিয়াছিলেন, সেই অন্ধকারের পলায়নের পথের ন্যায় এবং কজ্জল-রেণু-রেখার ন্যায় শ্যামবর্ণ, ক্ষুদ্রতর রোমরাজি, তিনি উদরের উপরে বহন করিতেছিলেন; (ম) স্বকীয় তেজে সূর্য্যকে পরাজিত করিয়া বলপূর্ব্বক আনীত, তাঁহার পরিধিমণ্ডলের ন্যায় একটি মুঞ্জ-মেখলাতে তাঁহার জঘনদেশ পরিবেষ্টিত ছিল; (য) আর, আকাশগঙ্গার স্রোতোজলে প্রক্ষালিত এবং বৃদ্ধ চকোর পক্ষীর নয়নপুটের ন্যায় পাটল-কান্তি-সম্পন্ন একখানা মন্দার বৃক্ষের বল্কলদ্বারা তিনি বস্ত্রের প্রয়োজন সম্পাদন করিয়া-ছিলেন (সেইরূপ একখানা বল্কল পরিধান করিয়াছিলেন); (র) আর তিনি ব্রহ্মচর্য্যের

---

(१)...तनीयसा तनीयसीं। (२) आगृहीतेन। (३) आपणमिव।

स्वयंवरपतिमिव सर्वविद्यानाम्, सङ्केतस्थानमिव सर्वश्रुतीनाम्, (१) (र) निदाघकालमिव साषाढम्, (ल) हिमसमयकाननमिव स्फुटितप्रियङ्गु-मञ्जरीगौरम्, (व) मधुमासमिव कुसुम-धवल-तिलक-भूति-भूषित-(२) मुखम्, (श) आत्मानुरूपेण सवयसा अपरेण देवतार्च्चनकुसुमान्युच्चिन्वता तापसकुमारेणानुगतम्, अतिमनोहरं, स्नानार्थमागतम्, मुनिकुमारकम-पश्यम्। (ष)

आत्युत्प्रेक्षा। सरस्वत्या वाग्देव्याः विलासं विभ्रममिव, एतमासाद्य तस्या अपि शोभातिशयलाभादित्य-भिप्रायः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। सर्वविद्यानां, स्वयं व्रियत इति स्वयंवरस्तादृशः पतिस्तमिव, विद्याभिः स्वयमेवास्य वृतत्वादनेन तदर्थं न यत्नः कृत इति भावः। अत्र आत्युत्प्रेक्षालङ्कारः। सर्वश्रुतीनां सकल-वेदानां, सङ्केतस्थानमिव सम्मेलनाय परस्परनिर्दिष्टस्थानमिव, आत्मन्येव तासां समागमनादित्याशयः। अत्रापि आत्युत्प्रेक्षा। श्रुतीनां सर्वविद्यान्तर्गतत्वेऽपि प्राधान्यख्यापनाय पृथगुपादानम्, गोवृषन्यायात्।

(ल) निदाघेति। निदाघकालं ग्रीष्मसमयमिव, आषाढेन दण्डेन आषाढमासेन च सहेति साषाढम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "आषाढो व्रतिनां दण्डे मासि मन्मथपर्वते।" इति विश्वः। "शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू।" इति श्रुतिः।

(व) हिमेति। हिमसमयस्य शीतकालस्य काननं वनमिव, स्फुटिता विकसिता या प्रियङ्गुमञ्जरी तद्वद् गौरं तथा च गौरम्। शीतकालएव तद्विकासात् हिमसमयेति विशेषणम्। पूर्णोपमा।

(श) मध्विति। मधुमासं चैत्रमासमिव, कुसुमवद्धवला या तिलकभूतिः त्रिपुण्ड्रात्मकं भस्म तया भूषितं मुखं वदनमण्डलं यस्य तम्, अन्यत्र तु कुसुमैर्धवला ये तिलका वृक्षविशेषास्तेषां भूत्या सम्पदा भूषितं मुखं प्रथमभागो यस्य तम्, वसन्तप्रथमसमयएव तिलकवृक्षाणां कुसुमोत्पत्तेः। पूर्णोपमा। "तिलको-ऽश्वद्रुमभिदोः पुण्ड्रके तिलकालके। तिलकं क्लोमनि।" इति हैमः। "भूतिर्भस्मनि सम्पदि।" इत्यमरः।

(ष) आत्मेति। समानं वयो यस्य तेन सवयसा। मुनिकुमारकमित्यनुकम्पायां कप्रत्ययः।

যেন অলঙ্কার, ধর্ম্মের যেন যৌবনকাল, বাগ্দেবীর যেন বেশবিলাস, সকল বিদ্যার যেন স্বয়ংবৃত পতি এবং সকল বেদের যেন সম্মিলিত হইবার সঙ্কেতস্থান ছিলেন ; (র) গ্রীষ্মকালে যেমন আষাঢ়মাস থাকে, তাঁহার হস্তেও তেমন একখানা দণ্ড ছিল ; (ব) শীতকালের বন যেমন প্রস্ফুটিত প্রিয়ঙ্গু-মঞ্জরীদ্বারা গৌরবর্ণ হয়, তিনিও তেমন প্রস্ফুটিত প্রিয়ঙ্গুমঞ্জরীর ন্যায় গৌরবর্ণ ছিলেন ; (শ) চৈত্রমাসের প্রথমভাগ যেমন কুসুমরাশিতে ধবলবর্ণ তিলকবৃক্ষসমূহে ভূষিত হয়, তাঁহার মুখমণ্ডলও তেমন কুসুমের ন্যায় ধবলবর্ণ ভস্মের তিলকে ভূষিত ছিল ; (ষ) এবং নিজের অনুরূপ ও সমানবয়স্ক আর একটি মুনিকুমার, দেবতা পূজা করিবার নিমিত্ত পুষ্প চয়ন করিতে করিতে, তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিয়াছিলেন।

---

(१) सर्वश्रुतानां। (२)...विच्छुरित...।

तेन च कर्णावतंसीकृतां वसन्तदर्शनानन्दिताया: स्मितप्रभामिव वनश्रिय:, मलयमारुतागमनार्थं-(१) लाजाञ्जलिमिव मधुमासस्य, यौवनलीलामिव कुसुमलक्ष्म्या:, सुरत-परिश्रम-स्वेद-जल-कण-जालकावलीमिव रते:, ध्वज-चिह्न-चामर-पिच्छिकामिव मनोभवगजस्य, मधुकर-कामुकाभिसारिकाम्, कृत्तिका-तारा-स्तवकानुकारिणीम्, अमृतबिन्दुनिस्यन्दिनीम्, अदृष्टपूर्वां कुसुम-मञ्जरीमद्राक्षम्। (म)

(म) तेनेति। किञ्च, तेन मुनिकुमारकेण कर्णावतंसीकृतां कुसुममञ्जरीमद्राक्षमित्यन्वय:। वसन्तस्य ऋतोर्दर्शनेन आनन्दिताया वनश्रिय:, स्मितप्रभां मन्दहास्यद्युतिमिव, शुभ्रत्वसाम्यादिति भाव:। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:। मधुमासस्य चैत्रस्य, मलयमारुतस्य आगमनार्थं आगमनाभिनन्दनार्थं यो लाजाञ्जलि: अञ्जलिपूर्णा धानास्तमिव, शुभ्रत्वसाम्यादिति भाव:। अन्योऽपि आदरणीयजनागमने तदभिनन्दनार्थं लाजान् गृह्णातीति। अत्रापि जात्युत्प्रेक्षा। कुसुमलक्ष्म्या: पुष्पश्रियो यौवनलीलामिव, मदनाभिव्यञ्जकत्वादिति भाव:। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार:। रतेर्मदनभार्याया:, सुरतपरिश्रमेण यानि स्वेदजलानि गात्रनिर्गतघर्म्मवारीणि तेषां कणजालकावलीमिव बिन्दुसमूहश्रेणीमिव, तद्वत् स्वच्छशुभ्रत्वादिति भाव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कार:। मनोभवो मदन एव गजस्तस्य, ध्वजस्य पताकाया: चिह्नरूपा या चामरपिच्छिका निरवयविता चामररूपा पिच्छिका तामिव, तत्पिच्छिकादर्शनेन गजाविर्भावबोधवत् तन्मञ्जरीदर्शनेन मदनाविर्भावबोधादिति भाव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर। मधुकर एव कामुकस्तस्य अभिसारिकां 'अभिसारयते कान्त" मित्यादिलक्षणां नायिकामिव, तदुद्देशेन धावनादिति भाव। अत्र मधुकरे कामुकत्वारोपो मञ्जर्या-मभिसारिकात्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कार:। कृत्तिकातारा: कृत्तिकाख्यानि षट् नक्षत्राणि तेषां स्तवकं गुच्छमनुकर्त्तुं शीलं यस्यास्ताम्, उज्ज्वलशुभ्रत्वादिति भाव:। अत्रार्थोपमालङ्कार:। अमृतबिन्दून् मधुकणान् निस्यन्दते स्रवतीति ताम्।

(म) তাহার পর দেখিলাম—পূর্ব্ববর্ণিত সেই মুনিকুমার, একটি পুষ্প-মঞ্জরীকে কর্ণের আভরণ করিয়াছেন, তাহা যেন, বসন্তকাল-দর্শনে আনন্দিত বনলক্ষ্মীর ঈষৎহাস্যের প্রভা; মলয়-বায়ুর আগমনের অভিনন্দনের নিমিত্ত, চৈত্রমাসের যেন অঞ্জলিপূর্ণ খই; পুষ্পলক্ষ্মীর যেন যৌবনকালের লীলা; রমণ-পরিশ্রমে রতিদেবীর গাত্র হইতে নির্গত ঘর্ম্মজলের যেন বিন্দুরাশি এবং মদনরূপ হস্তীর পূর্ব্ববর্ত্তী পতাকার চিহ্নস্বরূপ চামরের যেন পিছী বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; আর সেই পুষ্পমঞ্জরীটি, ভ্রমররূপ কামুক নায়কের অভিসারিকারূপ নায়িকা ছিল; কৃত্তিকানামক নক্ষত্রপুঞ্জের অনুকরণ করিতেছিল এবং মধুবিন্দু বর্ষণ করিতেছিল, আমি সেরূপ পুষ্পমঞ্জরী পূর্ব্বে আর কখনও দেখি নাই।

(१)...आगमनार्थं।

'अस्याः परिभूतान्यकुसुमामोदो नन्वयं परिमलः' इति मनसा निश्चित्य तं तपोधनयुवानमोक्षमाणाहमचिन्तयम् (ङ) 'अहो! रूपातिशय-निष्पादनोपकरण-कोशस्य अक्षीणता (१) विधातुः, (च) यत्त्रिभुवनाद्भुतरूपसम्भारं भगवन्तं कुसुमायुधमुत्पाद्य तदाकारातिरिक्त-रूपराशिः (२) अयमपरो मुनिमायामयो मकरकेतुरुत्पादितः (छ)। मन्ये च सकलजगन्नयनानन्दकरं शशिबिम्बं विरचयता लक्ष्मी-लीला-वासभवनानि कमलानि सृजता प्रजापतिना (३) एतदाननाकार-करणकौशलाभ्यास एव कृतः, (ज) अन्यथा

(ङ) अस्या इति। अस्याः कुसुममञ्जर्याः, अयं परिमलो गन्धः, परिभूतस्तिरस्कृतः अन्येषां कुसुमानामामोदो गन्धो येन स तादृशो ननु तादृश एव, अतएवेममेव परिमलमहं प्रागभ्यजिघ्रमिति भावः। ईक्षमाणा पश्यन्ती।

(च) अहो इति। अहो आश्चर्यम्। विधातुः स्रष्टुः, रूपातिशयस्य सौन्दर्य्यातिरेकस्य निष्पादने निर्म्माणविषये यान्युपकरणानि सामग्र्यस्तेषां कोशस्य भाण्डस्य अक्षीणता अक्षयता चिरपूर्णतेत्यर्थः।

(छ) कथमेतज्ज्ञायत इत्याह यदिति। यद् यस्मात्, त्रिभुवने अद्भुतो रूपसम्भारः सौन्दर्य्यसमूहो यस्य तम्। कुसुमायुधं मदनं। तदाकारान्मदनाकृतेरतिरिक्तोऽधिको रूपराशिः सौन्दर्य्यसमूहो यस्मिन् सः। मुनिमायामयो मुनिच्छद्ममयः, मुनिवेषधारीत्यर्थः अयं कुमारः, अपरो मकरकेतुर्द्वितीयो मदनः कृत्वा उत्पादितो विधात्रेति शेषः। विधातुस्तदुपकरणभाण्डस्य क्षयिष्णुत्वे तदेकमदननिर्म्माणेनैव तत्क्षयात् पुनरस्य तादृशभावेन निर्म्माणासम्भव इति भावः। अत्र मुनिमायामय इत्यनेन प्रकृतप्रतिषेधेनान्यस्थापनादपह्नुतिरलङ्कारः।

(ज) मन्ये इति। अपि चेति चार्थः। प्रथमं शशिबिम्बं चन्द्रमण्डलं विरचयता विदधता, तथा लक्ष्म्याः कमलायाः लीलया वासस्य भवनानि आश्रयरूपाणि कमलानि पद्मानि सृजता प्रजापतिना विधात्रा, एतस्य आननाकारस्य मुखाकृतेः करणकौशलस्य निर्म्माणोपयोगिनैपुण्यस्य अभ्यासः शिक्षैव कृतः, इति मन्ये इत्यर्थः। अन्योऽपि सुन्दरं वस्तुविशेषं निर्म्मातुं प्रथमं तदाकारवस्त्वन्तरनिर्म्माणेन तन्नैपुण्यं शिक्षते। अत्र मन्ये पदप्रयोगाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च चन्द्रात् कमलाच्च मुनिकुमारवदनस्याधिकसौन्दर्य्यप्रत्यायनेन व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(ঙ) 'এই পুষ্পমঞ্জরীর গন্ধই, অন্য পুষ্পের গন্ধকে নীচে ফেলিয়া বহিত হইতেছে' ইহা মনে মনে নিশ্চয় করিয়া, আমি সেই তপস্বী যুবককে দেখিতে দেখিতে চিন্তা করিতে লাগিলাম যে—(চ) কি আশ্চর্য্য! বিধাতার, অসাধারণ সৌন্দর্য্য-নির্ম্মাণের উপযোগী উপকরণের ভাণ্ড, কখনও ক্ষয়প্রাপ্ত হয় না; (ছ) যেহেতু—তিনি, ত্রিজগতের মধ্যে আশ্চর্য্য রূপরাশি-বিশিষ্ট ভগবান্ কামদেবকে সৃষ্টি করিয়া, তাঁহার আকৃতি হইতেও অতিরিক্ত-সৌন্দর্য্যশালী মুনিবেশধারী এই আর একটি কামদেব সৃষ্টি করিয়াছেন। (জ) আমি মনে করি যে—'বিধাতা প্রথমে, সমগ্র জগতের নয়নানন্দজনক চন্দ্রমণ্ডল নির্ম্মাণ করিয়া এবং লক্ষ্মীর লীলা-

(१)...उपकरणकौशलस्याक्षीणता। (२)...रूपातिशयराशिः। (३) ब्रह्मणा।

किमिव हि सदृशवस्तुविरचनायाः (१) कारणम् (ग)। अलीकञ्चेदं यथा किल सकलाः कलाः कलावतो बहुलपक्षे क्षीयमाणस्य सुषुम्ननाम्ना (२) रश्मिना रविरापिबतीति, (घ) ताः खल्वस्य गभस्तयः समस्ता वपुरिदमाविशन्तीति (ङ) कुतोऽन्यथा रूपापहारिणि क्लेशबहुले तपसि वर्त्तमानस्येदं लावण्यम् (च)। इति चिन्तयन्तीमिव (३) मामविचारितगुणदोषविशेषो रूपैकपक्षपाती नवयौवनसुलभः कुसुमायुधः कुसुमासव-मद इव (४) मधुकरीं परवशामकरोत्। (छ)

(ग) ननु कथमिदमवगम्यत इत्याह अन्यथेति। सदृशवस्तुविरचनायास्तुल्यपदार्थनिर्म्माणस्य।

(घ) अलीकमिति। किञ्च। रविः सुषुम्ननाम्ना रश्मिना स्वकीयकिरणविशेषेण, बहुलपक्षे कृष्णपक्षे क्षीयमाणस्य कलावतश्चन्द्रस्य सकलाः कलाः, आपिबतीति इदं पुराणवचनं अलीकं मिथ्या। यथा विष्णुपुराणे—"सूर्य्यरश्मिः सुषुम्नो यस्तर्पितस्तेन चन्द्रमाः। कृष्णपक्षेऽमरैः सार्द्धं पीयते वै सुधामयः।" अत्र अलीकत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(ङ) ननु तर्हि किं नाम सत्यमित्याह ता इति। अस्य चन्द्रस्य ताः खलु कलाः, समस्ता गभस्तयः किरणाश्च, इदं दृश्यमानं वपुर्मुनिकुमारशरीरं आविशन्ति विधातुरिच्छया प्रविशन्ति, इत्येव सत्यमिति भावः। अत्रापि चन्द्रकलाकिरणानां तद्वपुषि प्रवेशासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः।

(च) अथ कथमेवं ज्ञायत इत्याह कुत इति। अन्यथा चन्द्रस्य कलानां किरणानाञ्चाप्रवेशे। रूपापहारिणि क्लेशबाहुल्यात् सौन्दर्य्यनाशिनि। लावण्यं सौन्दर्य्यं कुतः स्यात् कुतोऽपि नेत्यर्थः, कारणाभावे कार्य्यानुत्पत्तेरिति भावः।

(छ) इतीति। न विचारितो नालोचितो गुणदोषयोर्विशेषो वैषम्यं येन सः, एतेनैतस्मिन् ममासक्तौ दोष एवासीदिति व्यज्यते। रूपैकपक्षपाती केवलसौन्दर्य्यपक्षावलम्बी। कुसुमासवमदः पुष्पमधुपानजनितमत्तता, मधुकरीं भ्रमरीमिव, मां परवशां आयत्ताम्। अत्रोपमालङ्कारः, तथा कुसुमासवमदो मधुकरीं परवशां करोति, मदनस्तु अकरोदिति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च कुसुमासवमदो मधुकरीं यथा करोति, तथा मां परवशामकरोदिति पाठेन समाधेयः।

বাসস্থান পদ্ম সৃষ্টি করিয়া, এই মুখের আকৃতি নির্ম্মাণ করিবার জন্য কেবল কৌশলমাত্র অভ্যাস করিয়াছিলেন; (গ) না হইলে, একরকম অনেক বস্তু সৃষ্টি করিবার কারণ কি? (ঘ) আর এই পৌরাণিক প্রবাদও মিথ্যা যে,—'সূর্য্যদেব স্বকীয় সুষুম্নানামক রশ্মিদ্বারা, কৃষ্ণপক্ষে ক্ষীয়মাণ চন্দ্রের সমস্ত কলা পান করিয়া থাকেন'; (ঙ) তবে,—'চন্দ্রের সেই সকল কলা ও কিরণসমূহ এই শরীরে প্রবেশ করিয়া থাকে (ইহাই সত্য); (চ) না হইলে, ক্লেশবহুল ও সৌন্দর্য্যনাশক তপস্যায় থাকিয়া, ইঁহার এইরূপ সৌন্দর্য্য হইবে কেন?' (ছ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম; এমন সময়ে, যিনি গুণ ও দোষের বৈষম্যের বিচার করেন না,

(१)···विरचनायां। (२) सुषुम्नानाम्ना सुषुम्नानाम्ना। (३) विचिन्तयन्तीमिव। (४) कुसुमसमयमद इव।

उच्छ्वसितैः सह विस्मृतनिमेषेण किञ्चिदामुकुलितपक्ष्मणा जिह्मित-तरल-तर-तार-शारोदरेण दक्षिणेन चक्षुषा सस्पृहमापिबन्तीव, किमपि याचमानेव, 'त्वदायत्तास्मि' इति वदन्तीव, अभिमुखं हृदयमर्पयन्तीव, सर्वात्मनानुप्रविशन्तीव, तन्मयतामिव गन्तुमीहमाना, 'मनोभवाभिभूतां त्रायस्व' इति शरणमिवोपयान्ती, 'देहि मे हृदयेऽवकाशम्' इत्यर्थितामिव दर्शयन्ती, 'हा हा किमिदमसाम्प्रतमतित्रपणमकुलकुमारीजनोचितमिदं मया प्रस्तुतम्' इति जानानाप्यप्रभवन्ती करणानाम्, (ज) स्तम्भितेव, लिखितेव,

(ज) उच्छ्वसितैरिति। उच्छ्वसितैर्निश्वासैः सह विस्मृता निमेषा येन तेन मदनाविर्भावातिशयवशान्निरुद्धश्वासप्रश्वासाहं निर्निमेषेणेत्यर्थः, किञ्चिदामुकुलितानि ईषद्विकसितानि पक्ष्माणि लोमानि यस्य तेन, आजिह्मिते ईषद्वक्रीकृते तरलतरे अत्यन्तचञ्चले तारे कनीनिकाद्वयं यस्य तच्च तत् शारोदरं विचित्रमध्यदेशश्चेति तत्तेन तथोक्तेन। अभिमुखं तत्सम्मुखं। सर्वात्मना सर्वप्रयत्नेन, अनुप्रविशन्तीव तदीयहृदयं प्रविशन्तीव। तन्मयतां तत्सारूप्यं गन्तु लब्धुं ईहमाना चेष्टमानेव। तव हृदये मे मम अवकाशं स्थानं देहीति अर्थितां याचकत्वं दर्शयन्तीव। असाम्प्रतं सहसैव सम्मेलनाद्यमादयुक्तम्, अतित्रपणं सहसैव तादृशभावाश्रितात्यन्तलज्जाकरं, कुलकुमारीजनस्योचितं न भवतीत्यकुलकुमारीजनोचितं। प्रस्तुतमारब्धम्। इति जानानापि बुध्यमानापि करणानां नयनादीनामिन्द्रियाणां अप्रभवन्ती अनीशा सती नयनादीनीन्द्रियाणि नियन्तुमशक्नुवती सतीत्यर्थः, तमतिचिरं व्यलोकयमित्यन्वयः। अत्र प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

কেবল সৌন্দর্য্যেরই পক্ষপাতী এবং প্রথম যৌবনকালে সুলভ, সেই কামদেব আমাকে, পুষ্পের মধু-পান-জনিত মত্ততা যেমন ভ্রমরীকে অধীন করিয়া ফেলে, সেইরূপ নিজের অধীন করিয়া ফেলিলেন।

(জ) তখন আমার শ্বাস-প্রশ্বাস বহিতেছিল না এবং আমি নিমেষবিহীন দক্ষিণ নয়নদ্বারা, অভিলাষের সহিত তাঁহাকে যেন পান করিতেছিলাম; তখন দক্ষিণ নয়নের লোমগুলি অল্প প্রকাশিত হইয়াছিল, তারাযুগল ঈষৎ বক্র ও অত্যন্ত চঞ্চল হইয়াছিল এবং সেই নয়নের মধ্যস্থানও বিচিত্র হইয়াছিল; এই অবস্থায়—আমি যেন কিছু প্রার্থনা করিতেছিলাম, 'আমি তোমার অধীন' ইহা যেন বলিতেছিলাম, তাঁহার সম্মুখে যেন হৃদয় সমর্পণ করিতেছিলাম, সমস্ত যত্ন সহকারে তাঁহার হৃদয়ে যেন প্রবেশ করিতেছিলাম, তন্ময়তা লাভ করিবার নিমিত্ত যেন চেষ্টা করিতেছিলাম, 'কাম-পীড়িতা রমণীকে রক্ষা কর' এই কথা বলিয়া যেন শরণাগত হইতেছিলাম, 'তোমার হৃদয়ে আমাকে একটু স্থান দাও' এই কথা বলিয়া যেন প্রার্থি-ভাব জানাইতেছিলাম এবং 'হায় হায়! আমি কি অন্যায্য আচরণ আরম্ভ করিয়াছি, ইহা অত্যন্ত লজ্জা-জনক এবং কুলকন্যার পক্ষে বিশেষ অনুচিত'

उत्कीर्णेव, संयतेव, मूर्च्छितेव, केनापि (१) विधृतेव, निष्पन्दसकलावयवा तत्कालाविर्भूतेनावष्टम्भेन, अकथितशिक्षितेन अनाख्येयेन स्वसंवेद्येन केवलम्, (झ) न विभाव्यते, किं तद्रूपसम्पदा, किं मनसा, किं मनसिजेन, किमभिनवयौवनेन, किमनुरागेण वा (२) उपदिश्यमाना (३) किमन्येनैव वा केनापि प्रकारेण, अहमपि न (४) जानामि कथं कथमिति तमतिचिरं व्यलोकयम्। (ञ)

(झ) अथापराण्यपि तत्कालजातानि स्वविशेषणान्याह स्तम्भितेवेति। स्तम्भितेव जड़ीकृतेव, लिखितेव चित्रितेव, उत्कीर्णेव दारु पाषाणं वा सन्तक्ष्याविष्कृतेव, संयतेव बद्धेव, मूर्च्छितेव मूर्च्छया संज्ञाहीनेव, तथा केनापि अनेन विधृतेव गृहीतेव सती, निष्पन्दाः सकला अवयवा अङ्गानि यस्याः सा तथोक्ता अहम्, अकथितोऽपि नयनं चालयितुमनुपदिष्टोऽपि शिक्षितस्तत्राभिज्ञस्तेन, अनाख्येयेन आकस्मिकोपस्थित्या किम्भूत इत्याख्यातुं वक्तुमशक्येन, अतएव स्वसंवेद्येन केवलमनोमात्रग्राह्येण, तत्काले आविर्भूतेन, अवष्टम्भेन निष्पन्दताप्रयोजक-सात्त्विकविकारविशेषावलम्बनेन, केवलं तमतिचिरं व्यलोकयमित्यन्वयः। अत्रापि स्तम्भितेवेत्यादौ प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) नेति। न विभाव्यते वक्ष्यमाणानां मध्ये केन उपदिश्यमाना सत्यहं तमतिचिरं व्यलोकयमिति न निश्चेतुं शक्यत इत्यर्थः। किं तस्य मुनिकुमारस्य रूपसम्पदा सौन्दर्यसमृद्ध्या उपदिश्यमाना सती तमतिचिरं व्यलोकयं इत्यं सर्वत्रान्वयः मनसिजेन मदनेन। वा अथवा अन्येनैव उक्तभिन्नेनैव व्यक्तिविशेषेण, केनापि प्रकारेण अनिर्वचनीयभावेन, उपदिश्यमाना सती, कथ केनाप्यनिर्वचनीयभावेन, अतिचिरं अतिबहुतरसमयं यावत् तं मुनिकुमारं व्यलोकयं दृष्टवती, किन्तु कथं तं तथा व्यलोकयमित्यहमपि न जानामीत्यर्थः। अत्र वितर्काख्यभावो विप्रलम्भशृङ्गारस्याङ्गमिति प्रेयोनामालङ्कार। किन्तु "अहमपि न जानामीति"वाक्यस्य

ইহা বুঝিয়াও ইন্দ্রিয়গণকে দমন করিতে পারিতেছিলাম না; (ঝ) তখন আমি যেন স্তম্ভিতের ন্যায়, চিত্রিতের ন্যায়, ক্ষোদিতের ন্যায়, আবদ্ধের ন্যায় মূর্চ্ছিতের ন্যায় এবং কোন ব্যক্তি কর্তৃক ধৃতের ন্যায় হইয়া পড়িলাম; আমার সমস্ত অঙ্গও নিস্পন্দ হইল এবং তখন একপ্রকার বিকার উপস্থিত হইল, মুনিকুমারের প্রতি দৃষ্টিপাত করাইবার নিমিত্ত সে বিকারকে উপদেশ না দিলেও, সে, সেই বিষয়ে বেশ শিক্ষিত ছিল, এবং সে বিকারের স্বরূপ বর্ণনা করা যায় না, কেবল মনেই তাহা বুঝে, আমি সেই বিকারের প্রভাবে কেবলই তাঁহাকে দেখিতে লাগিলাম; (ঞ) আমি নিশ্চয় করিয়া বলিতে পারি না যে—তাঁহাকে দেখিবার জন্য—কি তাঁহার সৌন্দর্য্যসমৃদ্ধি, কিংবা আমার মন, অথবা কামদেব, কিংবা আমার নব যৌবন, অথবা অনুরাগ, কিংবা এতদ্ভিন্ন অন্য কেহ কোন অনির্ব্বচনীয়

---

(१) क्वचित् 'केनापि' इति पाठो नास्ति।

(२) अनुरागेणैव। (३) उपदिश्यमानं। (४) अहं न।

উৎক্ষিপ্য নীয়মানেব তৎসমীপমিন্দ্রিয়ৈঃ, পুরস্তাদাকৃষ্যমাণেব হৃদয়েন, পৃষ্ঠতঃ প্রের্য্যমাণেব পুষ্পধন্বনা, কথমপি মুক্তপ্রযত্নমপ্যাত্মানং (১) অধারয়ম্ (ট)। অনন্তরঞ্চ মেঽন্তর্মদনেন (২) অবকাশমিব দাতুমাহিতসন্তানা নিরীয়ুঃ শ্বাসমরুতঃ (ঠ)। সাভিলাষং হৃদয়মাখ্যাতুকামমিব স্ফুরিতমুখমভূৎ কুচযুগলম্ (ড)। স্বেদ-লব-(৩) লেখা-ক্ষালিতেবাগলল্লজ্জা (ঢ)। মকরধ্বজ-

"উপদিশ্যমানা কথং নমতিচিরং ব্যলোকয়"মিতি বাক্যান্তর্গতত্বেঽপি ন গর্ভিতত্বদোষঃ প্রত্যুত গুণ এব, চমৎকারাতিশয়দ্যোতনাৎ "গর্ভিতত্বং গুণঃ ক্বাপি" ইতি সাহিত্যদর্পণোক্তেঃ।

(ট) উৎক্ষিপ্যেতি। ইন্দ্রিয়ৈর্নয়নাদিভিঃ উৎক্ষিপ্য উত্তোল্য তস্য মুনিকুমারস্য সমীপং নীয়মানেব, হৃদয়েন মনসা পুরস্তাদাকৃষ্যমাণেব, পুষ্পধন্বনা মদনেন পৃষ্ঠতঃ প্রের্য্যমাণেব চাল্যমানেব সতী, মুক্তস্ত্যক্তঃ প্রযত্নস্তৎসমীপগমননিবারণচেষ্টা যেন তং তথাবিধমপি আত্মানং দেহং, কথমপি মহতা ক্লেশেনেত্যর্থঃ অধারয়ং স্বস্থান এবারক্ষম্। অনেন ধৃতিরুক্তা। অত্র তিসৃণামেব ক্রিয়োৎপ্রেক্ষাণাং মিথোনিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ।

(ঠ) অনেতি। কিঞ্চ, অনন্তরং মে মম অন্তর্হৃদয়মধ্যে অবকাশং তস্য মুনিকুমারস্য বসতিস্থানং দাতুমিব, মদনেন আহিতো জনিতঃ সন্তানো বিস্তারো যেষাং তে তথাভূতাঃ শ্বাসমরুতো নিশ্বাসবায়বো নিরীয়ুর্নির্গতাঃ, শ্বাসনির্গমেনৈব হৃদয়ে অবকাশোৎপত্তেরিতি ভাবঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ড) সাভীতি। কুচযুগলং কর্তৃ, সাভিলাষং তন্মুনিকুমারপ্রাপ্তীচ্ছাপরিপূর্ণং হৃদয়ং কর্ম্ম, আখ্যাতুকামমিব 'ত্বমিমমবশ্যং প্রাপ্স্যসী'তি প্রিয়বার্ত্তাং বক্তুমিচ্ছু ইব সৎ, স্ফুরিতং স্পন্দিতং মুখং অগ্রভাগ এব মুখং বদনং যস্য তত্তথাবিধমভূৎ। অন্যোঽপি কিঞ্চিদ্বক্তুকামঃ স্ফুরিতমুখো ভবতি এতেনাভিলাষ উক্তঃ। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষানুপ্রাণিতা অগ্রভাগবদনয়োর্ভেদেঽপি শ্লেষেণ তদভেদাধ্যবসায়মূলাতিশয়োক্তিরলঙ্কারঃ।

(ঢ) স্বেদেতি। লজ্জা, স্বেদলবলেখয়া ঘর্ম্মবিন্দুশ্রেণ্যা ক্ষালিতা ধৌতেব সতী অগলৎ, ধূলিবদিতি ভাবঃ। অনেন স্বেদ উক্তঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

ভাবে, আমাকে উপদেশ দিতেছিল; এই অবস্থায় আমি কোন অনির্ব্বচনীয়ভাবে বহু সময় যাবৎ তাঁহাকে দেখিলাম; কেন যে দেখিলাম, তাহা আমিও জানি না।

(ট) তাহার পর আমার নয়নপ্রভৃতি ইন্দ্রিয়গণ যেন আমাকে উত্তোলন করিয়া তাঁহার নিকট নিয়া যাইতে লাগিল; হৃদয় যেন সম্মুখের দিকে আকর্ষণ করিতে লাগিল এবং কামদেব যেন পিঠের দিক হইতে ঠেলিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় আমি, তাঁহার নিকট যাইতে নিবারণ করিবার চেষ্টা পরিত্যাগ করিয়া থাকিলেও অতিকষ্টে আপনাকে আপনি পূর্ব্বস্থানেই দাঁড় করাইয়া) রাখিলাম। (ঠ) তাহার পর, আমার হৃদয়ে তাঁহার বাস করিবার স্থান দিবার নিমিত্তই যেন কামদেবকর্তৃক বিস্তৃত হইয়া নিশ্বাসবায়ু নির্গত হইল। (ড) তাঁহার প্রতি অভিলাষী আমার মনকে প্রিয় সংবাদ বলিবার জন্যই যেন আমার স্তনযুগলের মুখ স্ফুরিত হইতে লাগিল। (ঢ) ঘর্ম্ম-জল-বিন্দুসমূহে প্রক্ষালিত হইয়াই যেন আমার লজ্জা

---

(১) মুক্তপ্রযত্নমাত্মানং। (২) মন্মথেন। (৩) স্বেদসলিললব...।

निशित-शर-निकर-निपात-(१) त्रस्तेवाकम्पत गात्रयष्टिः (ण)। तद्रूपातिशयं द्रष्टुमिव कुतूहलादालिङ्गन-लालसेभ्योऽङ्गेभ्यो निरगाद्रोमाञ्चजालकम् (त)। अशेषतः स्वेदाम्भसा धौतश्चरणयुगलादिव हृदयमविशद्रागः। (थ)

आसीच्च मम मनसि—'शान्तात्मनि दूरीकृतसुरतव्यतिकरेऽस्मिन् जने मां निक्षिपता किमिदमनार्य्येणासदृशमारब्धं मनसिजेन (द)। एवञ्च नामाति-मूढं हृदयमङ्गनाजनस्य, यदनुरागविषय-योग्यतामपि विचारयितुं नालम् (ध)।

(ण) मकरेति। गात्रयष्टिः, मकरध्वजस्य मदनस्य ये निशिताः शरास्तेषां निकरस्य समूहस्य निपातात् आघातात् त्रस्ता भीतेव सती अकम्पत। अनेन कम्पोऽभिहितः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) तदिति। रोमाञ्चानां जालकं समूहः, तस्य मुनिकुमारस्य यो रूपातिशयः सौन्दर्य्यातिरेकस्तं द्रष्टुमिव, आलिङ्गनलालसेभ्यः अङ्गेभ्यः कुतूहलात् निरगान्निर्गतम् बभूव, ऐन्द्रजालिकव्यापारादिकं द्रष्टुं गृहात् कुलवधूवदनवदिति भावः। अनेन रोमाञ्च उक्तः। अत्रापि दर्शनक्रियारूपफलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) अशेषत इति। स्वेदाम्भसा घर्म्मजलेन अशेषतः साकल्येन धौतः प्रक्षालितः रागोऽलक्तकलौहित्य-मिव रागोऽनुरागः, चरणयुगलात् हृदयमविशदिव। अनेन रतिर्नाम स्थायिभाव उक्तः। अत्र क्रियोत्-प्रेक्षानुप्राणिता लौहित्यानुरागयोर्भेदेऽपि रागशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायरूपातिशयोक्तिरलङ्कारः। स्थायिभावलक्षणं यथा दशरूपके—"विरुद्धैरविरुद्धैर्वा भावैर्विच्छिद्यते न यः। आत्मभावं नयत्यन्यान् स स्थायी लवणाकरः।"

(द) आसीदिति। किञ्च तदानीं मम मनसि एषा वृत्तिरासीदित्यर्थः। शान्तः सत्त्वगुणान्वितः आत्मा मनो यस्य, तस्मिन्, तथा दूरीकृतः सुरतव्यतिकरो रमणसम्बन्धो येन तस्मिन्। अनार्य्येण असभ्येन मनसिजेन मदनेन।

(ध) एवमिति। किञ्च, अङ्गनाजनस्य स्त्रीलोकस्य हृदयं, एवं नाम अतिमूढं। नालं न समर्थम्। अत्राप्रस्तुतात् स्त्रीहृदयसामान्यात् प्रस्तुतस्यात्महृदयरूपविशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

পড়িয়া গেল। (ণ) কামদেবের সুধার বাণসমূহের আঘাতে ভীত হইয়াই যেন আমার শরীর কাঁপিতে লাগিল। (ত) তাঁহার অসাধারণ সৌন্দর্য্য দেখিবার জন্যই যেন কৌতুকবশতঃ আলিঙ্গনাভিলাষী অঙ্গ হইতে রোমাঞ্চসমূহ নির্গত হইল। (থ) এবং ঘর্ম্মজলে সম্পূর্ণ প্রক্ষালিত হইয়াই যেন রাগ (লৌহিত্য, অনুরাগ), চরণযুগল হইতে আমার হৃদয়ে প্রবেশ করিল।

(দ) তখন আমার মনে হইতে লাগিল যে,—'শান্তচিত্ত ও স্ত্রীসম্ভোগ-বর্জ্জিত এই লোকের প্রতি আমাকে নিক্ষেপ করিয়া, অসভ্য কামদেব, আজ এ, কি অন্যায্য আচরণ আরম্ভ করিয়াছে। (ধ) আর, স্ত্রীলোকের হৃদয়, এইরূপই নিতান্ত মূঢ় বটে, যে হেতু—অনু-

(१)...पात...।

क्वेदमतिभास्वरं धाम तेजसां तपसाञ्च, क्व च प्राकृतजनाभिनन्दितानि मन्मथ-परिष्पन्दितानि (१) (न)। नियतमयं मामेवं मकरलाञ्छनेन विडम्ब्य-मानामुपहसति मनसा (प)। चित्रञ्चेदं यदहमेवमवगच्छन्त्यपि न शक्नोम्या-त्मनो विकारमुपसंहर्त्तुम् (फ)। अन्या अपि कन्यकास्त्रपां विहाय (२) स्वयमुपयाताः पतीन्, अन्या अप्यनेन दुर्विनीतेन मन्मथेनोन्मत्ततां नीता नार्य्यः, न पुनरहमिका यथा (ब)। कथमनेन क्षणेनाकारमात्रालोकनाकुलीभूतामिव-मस्वतन्त्रतामुपैत्यन्तःकरणम् (भ)। कालो हि गुणाश्च दुर्निवारतामारोपयन्ति

(न) नन्वङ्गनाजनस्य हृदयं कथं नामातिमूढमित्याह क्वेति। तेजसां तपसाञ्च अतिभास्वरं नितान्त-दीप्तिशीलं इदं मुनिकुमाररूपं धाम आश्रयः क्व, तथा प्राकृतजनैः सामान्यलोकैः अभिनन्दितानि आदृतानि मन्मथपरिष्पन्दितानि कामचेष्टितानि च क्व, ईदृशतपस्विजने कामचेष्टायाः सर्वथैव निष्फलत्वात्तदर्थञ्चोद्यमान्मम हृदयमतिमूढमिति भावः। अत्र विरूपयोः सङ्घटनया विषमालङ्कारः।

(प) नियतमिति। अयं कुमारः, मकरलाञ्छनेन मदनेन एवमित्थं विडम्ब्यमानां वञ्च्यमानां मां नियतं निश्चितमेव मनसा उपहसति, असम्भवनीयविषयप्रवृत्तेरिति भावः।

(फ) चित्रमिति। किञ्च इदं चित्रमाश्चर्य्यम्। एवं मदनकर्त्तृकविडम्बनां कुमारकर्त्तृकोपहासञ्च, अवगच्छन्त्यपि बुध्यमानापि। उपसंहर्त्तुं दूरीकर्त्तुम्।

(ब) अन्या इति। त्रपां लज्जां। दुर्विनीतेन दुराचारेण। न पुनरहमिका यथा, सुतरां नास्त्यात्म-धिक्कार इति भावः।

(भ) कथमिति। आकारमात्रस्य अस्य कुमारस्य केवलाकृतेः आलोकनेनैव आकुलीभूतं विह्वलीभूतं अन्तःकरणं मम चित्तं, एवमस्वतन्त्रतां इत्थं मदनाधीनतां।

(म) तत्र कारणमाह काल इति। हि यस्मात्, कालो वसन्तादिः, गुणाः सौन्दर्य्यादयश्च, मदनस्य

রাগের সম্ভব আছে কি না, ইহাও বিবেচনা করিতে সমর্থ নহে। (ন) কারণ, এই দেদীপ্যমান তেজ ও তপস্যার আধারই বা কোথায়, আর প্রাকৃতলোকের আদরণীয় কাম-চেষ্টাই বা কোথায়। (প) নিশ্চয়ই ইনি আমাকে এইরূপ কামদেবকর্ত্তৃক লাঞ্ছিত হইতে দেখিয়া মনে মনে উপহাস করিতেছেন। (ফ) আর, এই এক আশ্চর্য্য যে,—আমি এইরূপ বুঝিতে পারিয়াও আপনার মনের বিকার দূর করিতে পারিতেছি না। (ব) অন্যান্য কন্যারাও লজ্জা পরিত্যাগ করিয়া আপনা আপনিই পতি-লাভ করিয়াছে, অপরাপর রমণীরাও এই দুরাচার মদনের প্রভাবে উন্মত্ত হইয়াছে; কিন্তু আমি একা নহে। (ভ) কেবল আকৃতি-দর্শনেই আকুল হইয়া আমার অন্তঃকরণ এখন এইরূপ অবশ হইয়া পড়িল কেন? (ম) (হইতেও পারে) কারণ,—কাল ও গুণ এই উভয়ই সর্ব্বপ্রকারে কামবেগের দুর্নিবারতা

(१)···परिस्पन्दितानि। (२) अपहाय।

मदनस्य सर्वथा (म)। यावदेव सचेतनास्मि, यावदेव च न परिस्फुटमनेन विभाव्यते मे मदनदुश्चेष्टितलाघवमेतत्, तावदेवास्मात् प्रदेशादपसर्पणं श्रेयः (य) कदाचिदनभिमत-स्मर-विकार-दर्शन-कुपितोऽयं शापाभिज्ञां करोति माम्। अदूरकोपा हि मुनिजनप्रकृतिः।' इत्यवधार्य्योपसर्पणाभिलाषिण्यहमभवम् (र)। अशेषजनपूजनीया चेयं जातिरिति कृत्वा तद्वदनाकृष्टदृष्टिप्रसरम्, अचलित-पक्ष्ममालम्, अदृष्टभूतलम्, ईषदुल्लसित-(१) कर्णपल्लवोन्मुक्त-कपोलमण्डलम्, आलोलालक-लता-लसत्-कुसुमावतंसम्, अंसदेश-दोलायित-मणिकुण्डलम्, अस्मै प्रणाममकरवम्। (ल)

सर्वथा दुर्निवारतामारोपयन्ति, तस्मादनेन वसन्तकालेन अस्य सौन्दर्य्येण च दुर्निवारमदनारोपणान्मम चित्तमेव-मस्वतन्त्रतामुपेतीति भावः। अतएवात्राप्रस्तुतात् सामान्यात् प्रस्तुतस्य विशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः।

(य) यावदिति। यावदेव सचेतनास्मि अस्य सौन्दर्य्यदर्शनेन निरतिशयकामावेशवशात् कर्त्तव्याकर्त्तव्य-ज्ञानशून्या न भवामीत्यर्थः। अनेन कुमारेण मे मम एतत्, मदनस्य दुश्चेष्टितेन विकारजननेन यत् लाघवं लघुत्वं तत् परिस्फुटं स्पष्टं न विभाव्यते बुध्यते। अपसर्पणं अपसरणं।

(र) ननु तथात्वेऽप्यत्रावस्थाने को दोष इत्याह कदाचिदिति। अयं कुमारः, अनभिमतस्य आत्मनोऽसम्मतस्य स्मरविकारस्य मदीयकामविकारस्य दर्शनेन कुपितः सन्, मां शापाभिज्ञां अभिसम्पातदुःखभोगिनीं करोति कुर्य्यादित्यर्थः। ननु विशेषापराधाभावे कथं कोप इत्याह अदूरेति। हि यस्मात्, मुनिजनप्रकृतिः अदूरकोपा सततसन्निहितक्रोधा, अतएव अभिसम्पाताय विशेषापराधं नापेक्षत इति भावः। अत्र कारणेन कार्य्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ल) अशेषेति। किञ्च, इयं जातिर्मुनिजातिः, अशेषजनपूजनीया, इति मनसि कृत्वा, तस्य कुमारस्य वदनात् आकृष्टः तत्कामावेशादेवासक्तचित्तः दृष्टिप्रसरो दर्शनपरम्परा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, अचलिता निष्पन्दा पक्ष्ममाला नयनलोमश्रेणिर्यस्मिन् कर्म्मणि तद् यथा तथा, न दृष्टं भूतलं यस्मिन् कर्म्मणि तत्, ईषदुल्लसिताभ्यां किञ्चिदुत्क्षिप्ताभ्यां कर्णपल्लवाभ्यां उन्मुक्ते परित्यक्ते कपोलमण्डले गण्डबिम्बद्वयं यस्मिन् तत्,

---

জন্মাইয়া থাকে। (য) অতএব যে পর্য্যন্ত আমি সচেতন আছি এবং যে পর্য্যন্ত ইনি আমার এই কাম-বিকার-জনিত লঘুতা স্পষ্টরূপে বুঝিতে না পারেন, তাহার মধ্যেই এস্থান হইতে আমার চলিয়া যাওয়াই মঙ্গল। (র) কারণ, ইনি, নিজের অনভিমত কাম-বিকার-দর্শনে ক্রুদ্ধ হইয়া, হয় ত কখনও আমাকে শাপগ্রস্তও করিতে পারেন; কারণ,—মুনিগণের স্বভাবে সর্ব্বদাই ক্রোধ উপস্থিত থাকে।' এইরূপ মনে মনে নিশ্চয় করিয়া আমি চলিয়া যাইতে ইচ্ছুক হইলাম। (ল) এবং 'এই জাতিটা জগতের সকল লোকেরই পূজনীয়' এইরূপ মনে করিয়া উঁহাকে প্রণাম করিলাম; তখনও আমি তাঁহার মুখমণ্ডল হইতে দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে পারিয়াছিলাম না; নয়নের লোমগুলি নিষ্পন্দই ছিল; ভূতলের দিকে

---

(१) उल्लसित…।

अथ कृतप्रणामायां मयि (१) दुर्लङ्घ्यशासनतया भगवतः (२) मनोभुवः, मदजननतया च मधुमासस्य, अतिरमणीयतया च तस्य प्रदेशस्य, अविनयबहुलतया चाभिनवयौवनस्य, चञ्चलप्रकृतितया चेन्द्रियाणाम्, दुर्निवारतया चाभिलाषाणाम्, चपलतया च मनोवृत्तेः, तथा भवितव्यतया च तस्य तस्य वस्तुनः, किं बहुना मम मन्दभाग्यदौरात्म्यादस्य चेदृशस्य क्लेशस्य विहितत्वात्तमपि मद्विकारदर्शनापहृतधैर्यं (३) प्रदीपमिव पवनस्तरलतामनयदनङ्गः। (व)

आलोलायामीषच्चञ्चलायां अलकलतायां ललाटलम्बमानस्खलितकेशपाशे लग्नन् शोभमानः कुसुमावतंसो यस्मिन् तत्, तथा अंसदेशयोः स्कन्धभागयोः दोलायिते स्पन्दिते मणिकुण्डले यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, अहं मुनिकुमाराय प्रणाममकरवम्। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(व) अथेति। मनोभुवो मदनस्य दुर्लङ्घ्यशासनतया अनतिक्रमणीयादेशतया हेतुना, एवमन्यत्रापि हेतौ तृतीया। मधुमासस्य चैत्रस्य मदजननतया मत्तताजनकतया। अविनयबहुलतया अशिष्टाचारबाहुल्येन। तस्य तस्य वस्तुनः सुखदुःखादेः तथा भवितव्यतया तथा तथा भावितया, अदृष्टवशादिति भावः। मन्दभाग्यस्य दुरदृष्टस्य दौरात्म्याद्धेतोः, ईदृशस्य क्लेशस्य मम तपश्चरणात्मककष्टस्य। पवनो वायुः प्रदीपमिव, अनङ्गो मदनः, मम विकारदर्शनेन अपहृतं धैर्यं यस्य तं, तमपि मुनिकुमारं, तरलतां चापल्यं अनयत् प्रापितवान्। अत्रोपमालङ्कारः, तथा पवनः प्रदीपं तरलतां नयति अनङ्गस्त्वनयदिति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः "काप्यभिख्या तयोरासी"दित्यादिदर्पणोदाहृतवत्, स च 'पवनो यथा प्रदीपं तरलतां नयति, तथाऽनयदनङ्गः' इति पाठेन समाधेयः। दुर्लङ्घ्येत्यादिसन्दर्भानुरूपो भावो यथा मालतीमाधवे—

"भ्रमति भुवने कन्दर्पाज्ञा विकारि च यौवनं ललितमधुरास्ते ते भावाः क्षिपन्ति च धीरताम्।"

দৃষ্টিপাত করিয়াছিলাম না; কর্ণের পল্লব দুইটি কিছু তুলিয়া ধরায় তাহা গণ্ডযুগল পরিত্যাগ করিয়াছিল; ঈষৎ আন্দোলিত ও লম্বিত কেশকলাপের উপরে মস্তকাভরণ কুসুমগুলি শোভা পাইতেছিল এবং মণিময় কুণ্ডল দুইটি, দুই স্কন্ধের উপরে দুলিতেছিল।

(ব) আমি প্রণাম করিলে তাহার পর, ভগবান্ কামদেবের শাসন লঙ্ঘন করা দুষ্কর বলিয়া এবং চৈত্রমাস, সকলেরই মত্ততা-জনক বলিয়া, আর সেই স্থানটিও অত্যন্ত মনোহর বলিয়া এবং নব যৌবনে বহুপরিমাণেই স্বভাবের বিশৃঙ্খলা ঘটে বলিয়া আর ইন্দ্রিয়গুলিও স্বভাবতই চঞ্চল বলিয়া এবং আকাঙ্ক্ষার নিবৃত্তি করাও দুষ্কর বলিয়া এবং মনোবৃত্তিও চঞ্চল বলিয়া আর সেই সেই সুখ-দুঃখাদি, প্রাণিগণের সেই সেই ভাবেই হইবে বলিয়া, আর অধিক কি বলিব, দুরদৃষ্টের দৌরাত্ম্যবশতঃ আমার পক্ষে বিধাতা এই জাতীয় ক্লেশ বিধান করিয়াছিলেন বলিয়া, আমার কাম-বিকার-দর্শনে সেই মুনিকুমারেরও ধৈর্য্য বিনষ্ট হইল; তখন বায়ু যেমন প্রদীপকে চঞ্চল করে, সেইরূপ কামদেব তাঁহাকেও চঞ্চল করিয়া তুলিলেন।

---

(१) अपि। (२) क्वचित् 'भगवतः' इति नास्ति। (३) मद्विकारापहृतधैर्य्यं।

तदा तस्याप्यभिनवागतं मदनं (१) प्रत्युद्गच्छन्निव (२) रोमोद्गमः प्रादुरभवत् (श)। मत्सकाशमभिप्रस्थितस्य मनसो मार्गमिवोपदिशद्भिः पुरः प्रवृत्तं श्वासैः (ष)। वेपथुगृहीता (३) व्रतभङ्गभीतेवाकम्पत करतलगताक्षमाला (४) (स)। द्वितीयेव कर्णावसक्तकुसुममञ्जरी कपोलतलासङ्गिनी समदृश्यत स्वेदसलिलशीकरजालिका (ह)। मद्दर्शनप्रीतिविस्तारितस्य चोत्तानतारकस्य पुण्डरीकमयमिव तमुद्देशमुपदर्शयतो लोचनयुगलस्य विसर्पि-

(श) तदेति। तस्य मुनिकुमारस्यापि। प्रत्युद्गच्छन्निव आदरं विधातुमभिमुखं गच्छन्निव, रोमोद्गमो रोमाञ्चः। अन्योऽपि नवागतं प्रभुं प्रत्युद्गच्छति। अत्र प्रत्युद्गमनक्रियारूपफलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ष) मदिति। मार्गमुपदिशद्भिरिव श्वासैः पुरः प्रवृत्तं अग्रतः प्रस्थितम्। अन्योऽप्यपरिचितस्य मार्गमुपदिशन्नग्रतो याति। तस्यापि निश्वासो निर्गत इत्यर्थः। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षालङ्कारः।

(स) वेपथ्विति। वेपथुगृहीता देहोत्पन्नकम्पाख्यसात्त्विकभावसंक्रान्ता, करतलगता अक्षमाला जपमाला, व्रतभङ्गभीतेव ब्रह्मचारिणोऽपि कामावेशाद्ब्रह्मचर्य्यलोपाशङ्कितेव सती, अकम्पत। अत्र भयात्मकहेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) द्वितीयेति। द्वितीया कस्याश्चित् कुसुममञ्जर्य्याः पूर्वमेव कर्णे स्थितत्वात्तदपरा, कर्णावसक्तकुसुममञ्जरीव, कपोलतलासङ्गिनी गण्डस्थलोत्पन्ना स्वेदसलिलशीकरजालिका घर्म्मजलबिन्दुश्रेणिः समदृश्यत। अत्र श्लिष्टोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क्ष) मदिति। किञ्च, मम दर्शनप्रीत्या अवलोकनजनितानन्देन विस्तारितस्य, उत्ताने ऊर्द्ध्वं गते तारके कनीनिकाद्वयं यस्य तस्य, तमुद्देशं तत् स्थानं पुण्डरीकमयमिव लोचनयोः श्वेतत्वात् श्वेतपद्मव्याप्तमिव, उपदर्शयतः प्रकाशयतः लोचनयुगलस्य विसर्पिभिः प्रसारिभिः अंशुसन्तानैः किरणप्रवाहैः, अच्छोदस्य सरसः सलिलमपहाय गगनतलं उत्पतितैरुद्गतैः, विकचकुवलयवनैरिव प्रस्फुटितनीलोत्पलवनैरिव स्थितैः, तेषां

(श) তখন নবাগত কামের প্রত্যুদ্গমন করিবার নিমিত্তই যেন তাঁহার শরীরেও রোমাঞ্চ আবির্ভূত হইল। (ষ) তাঁহারও মন আমার নিকটে আসিতেছিল, সুতরাং তাহার পথ বলিয়া দিবার নিমিত্তই যেন তাঁহারও নিশ্বাস অগ্রে প্রস্থান করিল। (স) কম্পমান হস্তস্থিত জপের মালা, যেন ব্রহ্মচর্য্য-লোপের ভয়েই কাঁপিতে লাগিল। (হ) কর্ণসংলগ্ন আর একটি কুসুমমঞ্জরীর ন্যায় তাঁহার গণ্ডস্থলে ঘর্ম্ম-জল-বিন্দু সমূহ দেখা যাইতে লাগিল। (ক্ষ) এবং তাঁহার নয়নযুগল আমাকে দেখিয়া আনন্দে বিস্ফারিত হইল, তারা দুইটি উপরে উঠিল, সুতরাং সেই নয়নযুগল সেই স্থানটাকে যেন শ্বেতপদ্মময় বলিয়া প্রতীতি জন্মাইতে লাগিল, এবং সেই নয়নযুগল হইতে কিরণজাল নির্গত হইয়া দশদিক্ আবৃত

(१)...आगतमदनं। (२) प्रत्युद्गतवानिव। (३) वेपथुना।

(४) अकम्पत गात्रयष्टिरक्षमाला च।

भिरंशुसन्तानैर्यदृच्छयाच्छोदसलिलमपहाय विकचकुवलयवनैरिव गगनतलमुत्पतितैररुध्यन्त दश दिशः (ख)।

तया तु तस्यातिप्रकटया विकृत्या द्विगुणीकृतमदनावेशा तत्क्षणमहमवर्णनयोग्यां (१) कामप्यवस्थामन्वभवम् (क)। इदञ्च मनस्यकरवम्—'अनेक-सुरत-समागम-लास्य लीलोपदेशोपाध्यायो मकरकेतुरेव विलासानुपदिशन्ति, अन्यथा विविध-रसासङ्ग-ललितेष्वीदृशेषु व्यतिकरेष्वप्रविष्टबुद्धेरस्य जनस्य कुत इवेयं (२) अनभ्यस्ताकृती रतिरसनिष्यन्दमिव (३) क्षरन्ती, अमृतमिव वर्षन्ती (४) मदमुकुलितेव, खेदालसेव, निद्राजड़ेव, आनन्द-भर-मन्थर-तरतार-(५)

किरणानान्तु नीलतारोत्पन्नत्वेन नीलत्वादिति भावः, दश दिशः अरुध्यन्त आच्छादयन्त। अत्र प्रथमा क्रियोत्प्रेक्षा, द्वितीया च जात्युत्प्रेक्षा, तथा दशदिशामवरोधासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरित्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(क) तयेति। अतिप्रकटया आधिक्येन प्रकाशितया, विकृत्या कामविकारेण। वर्णनस्य योग्या न भवतीत्यवर्णनयोग्या ताम्।

(ख) इदमिति। अनेके नानाविधा ये सुरतसमागमा रतिसंसर्गास्त एव लास्यलीला नृत्यव्यापारास्तासां उपदेशे शिक्षादाने उपाध्यायः शिक्षकः, मकरकेतुर्मदन एव विलासान् लोकानां लीलाकटाक्षपातादिविभ्रमान् उपदिशति शिक्षयति। अन्यथा मकरकेतुकर्तृकोपदेशाभावे, रस्यन्ते आस्वाद्यन्ते अनुभूयन्ते ये ते रसाः शब्दादयो भोग्यविषयाः, विविधानां रसानां शब्दस्पर्शादिविषयाणां आसङ्गेन सम्भोगसम्पर्केण तज्जनितवैचक्षण्येनेत्यर्थः ललितेषु मनोहरेषु, ईदृशेषु व्यतिकरेषु सविलासदृष्टिपातसम्बन्धेषु, अप्रविष्टा तपस्वितया तदनभिज्ञत्वादलब्धप्रवेशा बुद्धिर्यस्य तस्य, अस्य जनस्य मुनिकुमारस्य कुत इवेयं दृष्टिः सम्भवतीत्यर्थः। दृष्टिविशेषणान्याह अनभ्यस्तेत्यादि। अनभ्यस्ता अशिक्षिता आकृतिः स्वरूपं यया सा। रतिरसस्य रमणायानुरागस्य निष्यन्दं निर्यासप्रवाहं क्षरन्तीव, अमृतं वर्षन्तीव, मादृशीनां कामिनीनामतीवहर्षकरत्वादिति भावः। मदेन काम-

করিল; তখন বোধ হইতে লাগিল—যেন, প্রস্ফুটিত-নীলোৎপল-বন, ইচ্ছানুসারে অচ্ছোদ-সরোবরের জল পরিত্যাগ করিয়া আকাশে উঠিয়াছে।

(ক) কিন্তু তাঁহার সেই কামবিকার অত্যন্ত প্রকাশ পাইয়া, আমার কাম-বিকারকে দ্বিগুণ করিয়া তুলিল, তখন আমি, বর্ণনার অযোগ্য কোন অনির্ব্বচনীয় অবস্থা অনুভব করিতে লাগিলাম। (খ) এবং এইরূপ মনে করিতে লাগিলাম যে—'নানাবিধ সম্ভোগরূপ নৃত্য-শিক্ষার অধ্যাপক কামদেবই লোকের কটাক্ষপাতপ্রভৃতি বিলাসিতা শিখাইয়া থাকেন; তাহা না হইলে, নানাপ্রকার বিষয়সম্ভোগ-নিবন্ধন মনোহর এই কটাক্ষপাতে ইহার বুদ্ধি কখনও প্রবেশ করে নাই, তথাপি এই ব্যক্তির এইরূপ কটাক্ষপাত হইবে কেন;—ইহার

(१) तत्क्षणमहमवर्णनयोग्यां। (२) कुत इयं।

(३)...निःस्यन्दमिव। (४)...वर्षन्ती, क्षरन्ती-अमृतमिव। (५)...तरलतर...।

सञ्चारिणी, अनिभृत-भ्रूलतोल्लासिनी (१) दृष्टिः (ख)। कुतश्चेदमतिनैपुण्यम्, यच्चक्षुषैवानक्षरमेवमन्तर्गतो हृदयाभिलाषः कथ्यते।' (ग)

प्राप्तप्रसरा (२) चोपसृत्य तं द्वितीयमस्य सहचरं मुनिबालकं प्रणामपूर्वकमपृच्छम्,—"भगवन्! किमभिधानः, (३) कस्य वायं तपोधनस्य युवा? किन्नाम्नश्च तरोरियमनेनावतंसीकृता (४) कुसुममञ्जरी? जनयति हि मे मनसि महत् कौतुकमस्याः समुत्सर्पन्नसाधारणसौरभोऽयमनाघ्रातपूर्वो गन्धः" इति। (घ)

मत्ततया मुकुलितेव ईषत्प्रकाशितेव। एतेषां प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार। खेदालसेव परिश्रममन्देव, निद्रया जडेव कुण्ठितेव। अनयोः प्रत्येक गुणोत्प्रेक्षा। आनन्दभरेण आमोदातिशयेन मन्थरं मन्दं यथा स्यात्तथा तरन्ती प्रसरन्ती तारा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा सञ्चरितुं शीलं यस्याः सा। तथा अनिभृतं स्पष्टं भ्रूलते लक्षितभ्रूयुगलं उल्लासयितुं नर्त्तयितुं शीलं यस्या. सा।

(ग) कुत इति। किञ्च चक्षुषैव दृष्टिविशेषेणैव, एवमित्थं अन्तर्गतो हृदयाभिलाषः अनक्षरं वाग्विहीनं यथा स्यात्तथा, यत् कथ्यते उक्तिवत् स्पष्टं बोध्यते, इदमतिनैपुण्यं कुतः स्यादित्यर्थः, सुतरां मकरकेतोरुपदेशादेव ईदृशी दृष्टिरिदञ्च नैपुण्यमिति भावः। अत्र अक्षररूपकारणाभावेऽपि कथात्मककार्य्योत्पत्ते र्विभावनालङ्कारः।

(घ) प्राप्तेति। किञ्च। प्राप्तप्रसरा आत्मनस्तादृशदृष्टिविषयत्वाल्लब्धावकाशाहं। किमभिधानः किंनामा, कस्य वा तपोधनस्य पुत्र इत्यर्थः। अस्याः कुसुममञ्जर्य्याः, समुत्सर्पन् प्रसरन्, असाधारणं सौरभं घ्राणतृप्तिकारित्वं यस्य सः।

নয়ন, এই জাতীয় দৃষ্টি করা পূর্ব্বে কখনও অভ্যাস করে নাই, আবার অনুরাগের রস যেন নিঃসারণ করিতেছে, যেন অমৃত-বৃষ্টি করিতেছে, মত্ততাবশতই যেন ঈষৎ প্রকাশিত হইয়াছে, পরিশ্রমেই যেন অলস হইয়া পড়িয়াছে, নিদ্রাতেই যেন অসার হইয়া গিয়াছে, অত্যন্ত আনন্দবশতঃ তারা দুইটি, ধীরে ধীরে সঞ্চারিত হইতেছে এবং স্পষ্টরূপে ভ্রূদুইটিকে নাচাইতেছে। (গ) এবং ইনি যে, বাক্যব্যতিরেকে কেবল নয়নদ্বারাই, অন্তর্গত মনের অভিলাষ এইরূপে ব্যক্ত করিতেছেন, এইরূপ অত্যন্ত নৈপুণ্যই বা হইবে কিরূপে।

(ঘ) তাহার পর আমি অবসর পাইয়া নিকটে যাইয়া, তাঁহার সহচর সেই দ্বিতীয় মুনিবালকটিকে প্রণাম করিয়া জিজ্ঞাসা করিলাম,—"ভগবন্! ইঁহার নাম কি? এবং এই যুবক কোন্ তপস্বীর পুত্র? এবং ইনি যে পুষ্পমঞ্জরীটি কানে দিয়াছেন, উহা কি গাছের? উহার গন্ধ, সকল দিকে ছড়াইয়া যাইতেছে এবং আমার মনে বড়ই কৌতুক জন্মাইতেছে;

---

(१)...लतालासिनी। (२) लब्धप्रसरा। (३) भगवान् किमभिधानः।

(४) कस्य चायं तपोधनयुवा। इयमवतंसीकृता।

स तु मामीषद्विहस्याब्रवीत्—"बाले! किमनेन पृष्टेन प्रयोजनम्, अथ कौतुकमावेदयामि, श्रूयताम्। (ङ)

अस्ति खलु सकलत्रिभुवन-प्रख्यातकीर्त्तिरत्युदारतपाः (१) सुरासुरसिद्धवृन्द-वन्दित-(२) चरणयुगलो महामुनिर्दिव्यलोकनिवासो श्वेतकेतुर्नाम (च)। तस्य च भगवतः (३) सुरासुरलोक-(४) सुन्दरीहृदयानन्दकरं, अशेषत्रिभुवन-सुन्दरं, अतिशयितनलकूवरं रूपमासीत् (छ)। स कदाचिद्देवतार्च्चनकमलान्युद्धर्त्तुमैरावत-मदजल-विन्दु-बद्ध-चन्द्रक-शत-खचित-जलाम्, हर-हसित-सित-स्रोतसम्, (५) मन्दाकिनीमवततार (ज)। अवतरन्तञ्च तं तदा कमलवनेषु

(ङ) स इति। यदि तव कौतुकं वर्त्तते तदा आवेदयामीत्यर्थः।

(च) अस्तीति। सकले त्रिभुवने त्रिभुवनस्य सकलस्थानेष्वित्यर्थः प्रख्याता कीर्त्तिर्यस्य सः, अत्युदारमतिमहत्तपो यस्य सः, सुराणामसुराणां सिद्धानां तदाख्यदेवयोनिविशेषाणाञ्च वृन्देन वन्दितं चरणयुगलं यस्य सः। दिव्यलोकनिवासी स्वर्गलोकस्थः।

(छ) तस्येति। सुरासुरलोकयोर्याः सुन्दर्य्यो रमण्यस्तासां हृदयानन्दकरं, अशेषे त्रिभुवने त्रिभुवनस्य सकलस्थानेषु सुन्दरं सर्वेभ्यः सुन्दरमित्यर्थः, तथा अतिशयितः अतिक्रान्तः नलकूवरस्तदाख्यः कुबेरपुत्रस्तदीयरूपं येन तत् तादृशम्। आसीदित्यतीतनिर्देशेन वार्द्धक्यादिदानीं तादृशं रूपं नास्तीति सूचितम्।

(ज) स इति। स श्वेतकेतुः। देवतानामर्च्चनाय कमलानि पद्मानि उद्धर्त्तुमुत्तोलयितुं, ऐरावतस्य जले अवगाहमानस्य इन्द्रहस्तिनः मदजलविन्दुभिर्बद्धमुत्पादितं यच्चन्द्रकशतं जलोपरि प्लवमानं विविधवर्ण

কারণ, এরূপ গন্ধ পূর্ব্বে আর কখনও আঘ্রাণ করি নাই, তাই তামার নাসিকার অত্যন্ত তৃপ্তি জন্মাইতেছে।

(ঙ) তখন তিনি ঈষৎ হাস্য করিয়া আমাকে বলিলেন,—"বালিকে! এই বিষয় জিজ্ঞাসা করায় তোমার প্রয়োজন কি, তথাপি যদি কৌতুক জন্মিয়া থাকে, তবে বলিতেছি, শোন।

(চ) স্বর্গলোকনিবাসী শ্বেতকেতু নামে এক মহর্ষি আছেন; তাঁহার কীর্ত্তিকলাপ, ত্রিজগতের সকল স্থানেই বিখ্যাত, তপস্যাও অতিবৃহৎ এবং দেবগণ, দানবগণ ও সিদ্ধগণ তাঁহার চরণযুগলের সেবা করিয়া থাকেন। (ছ) সেই ভগবান্ মহর্ষির রূপও সমস্ত ত্রিভুবনের মধ্যে পরম সুন্দর ছিল; সে রূপ, দেবলোক ও দানবলোকের রমণীগণের হৃদয়ে আনন্দ জন্মাইত, এমন কি, কুবের-নন্দন নলকূবরের রূপকেও পরাস্ত করিয়াছিল। (জ) তিনি দেবতাপূজার জন্য পদ্ম উত্তোলন করিবার নিমিত্ত, কোন সময়ে মন্দাকিনীর জলে যাইয়া

(१) अस्ति त्रिभुवनप्रख्यातकीर्त्तिरत्युदारतया। (२) सुरसिद्धवृन्द, सिद्धवृन्दमौलिमालालित...।

(३) तस्य भगवतः। (४) सुरलोकसुन्दरी, सकललोकसुन्दरी...।

(५) हरहसितस्रोतसं, हरहसिततोया।

सततसन्निहिता विकच-(१) सहस्रपत्र-पुण्डरीकोपविष्टा देवी (२) लक्ष्मी ददर्श (भ)। तस्यास्तु तमवलोकयन्त्याः प्रेममन्द-(३) मुकुलितेनानन्द-वाष्प-भर-तरङ्ग-तरल-तारेण लोचनयुगलेन रूपमास्वादयन्त्या जृम्भिकारम्भ-मन्थर-मुख-विन्यस्त-हस्तपल्लवाया मन्मथविकृतं मन आसीत् (ञ)। आलोकन-मात्रेण च समासादित-सुरत-समागम-सुखायास्तस्मिन्नेवामनोकृते पुण्डरीके कृतार्थतासीत्। तस्माच्च कुमारः समुदपादि (ट)। ततस्तमुत्सङ्गेनादाय (४) "भगवन्! गृहाण तवायमात्मजः" इत्युक्त्वा तस्मै श्वेतकेतवे ददौ (ठ)।

काल्यमानं वर्त्तुलाकारचिह्नवृन्दं तेन खचितं ...रं जलं यस्यास्ताम्, तथा हरहसितवत् महादेवहास्यवत् सितं शुभ्रं स्रोतो यस्यास्ताम्। अत्र हरेत्यादौ लुप्तोपमाच्छेकानुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(भ) अत्रेति। किञ्च। विकचं प्रस्फुटितं सहस्रपत्रं सहस्रदलात्मकं यत् पुण्डरीकं श्वेतपद्मं तत्रोपविष्टा।

(ञ) तस्या इति। प्रेम्णा कामानुरागेण मन्दमुकुलितेन ईषत्प्रकाशितेन, आनन्दवाष्पभरस्य आनन्दाश्रु-समूहस्य तरङ्गेण तरला चञ्चला तारा यस्य तेन। आस्वादयन्त्याः सादरं पश्यन्त्याः। जृम्भिकाया मदना-वेशजनितगात्रभङ्गस्य आरम्भेण मन्थरं अलसं यन्मुखं तत्र विन्यस्तो हस्तपल्लवो यया तस्याः, मनः मन्मथेन विकृतं विकारीकृतमासीत।

(ट) आलोकनेति। किञ्च। समासादितं प्राप्तं सुरतसमागमसुखं रमणात्मकसम्भोगानन्दो यया तस्याः। कृतार्थता रमणसफलता तेजःपात इत्यर्थः। किञ्च, तस्मात् पुण्डरीकात् कुमारः अयं युवा।

अहो! विधातृसहोदरा कविकल्पना विलक्षणं भुवनान्तरमपि निर्म्मातुमर्हति, यस्यामियमद्भुता कुमार-सृष्टिः।

(ठ) तत इति। उत्सङ्गेन क्रोड़ेन, तं कुमारमादाय लक्ष्मीरिति शेषः। तवायमात्मजः त्वद्दर्शने-नैव विजृम्भितात्मवीजादुत्पन्नत्वादिति भावः।

নামিয়াছিলেন; তখন সেই জলগুলি ঐরাবতহস্তীর মদজল-বিন্দু-নির্ম্মিত চক্রাকৃতি চিহ্নসমূহে ব্যাপ্ত ছিল এবং তাহার স্রোত, মহাদেবের হাস্যের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল। (ঝ) তিনি জলে নামিতেছিলেন, তখন, সর্ব্বদা পদ্মবন-নিবাসিনী প্রস্ফুটিত-সহস্রদল-পদ্মোপরি উপবিষ্টা লক্ষ্মীদেবী তাঁহাকে দর্শন করিলেন। (ঞ) লক্ষ্মীদেবী যখন তাঁহাকে দেখিতেছিলেন, তখন তাঁহার নয়নযুগল, মদনানুরাগে ঈষৎ উন্মীলিত হইয়াছিল, এবং আনন্দাশ্রুজলের তরঙ্গে তারা দুইটি চঞ্চল হইয়াছিল; এই ভাবে তিনি মহর্ষির রূপের আস্বাদন করিতেছিলেন, আর হাই তুলিতে আরম্ভ করায় তাঁহার মুখমণ্ডল নিশ্চল হইয়াছিল, এবং মুখমণ্ডলে তিনি হস্তপল্লব স্থাপন করিয়াছিলেন; এই অবস্থায় লক্ষ্মীর মন কামাবেশে বিকৃত হইয়াছিল। (ট) এবং দর্শন-মাত্রেই লক্ষ্মীর ..। এবং সেই শ্বেতপদ্ম হইতে একটি বালক উৎপন্ন হইল। (ঠ) তাহার

---

(१)···सन्निहितविकच ..। (२) देवी कमलवदना लक्ष्मीः। (३) प्रेममद...। (४) उत्सङ्गे आदाय।

असावपि बालजनोचिताः सर्वाः क्रियाः कृत्वा तस्य पुण्डरीकसम्भवतया तदेव पुण्डरीक इति नाम चक्रे (ङ)। प्रतिपादितव्रतस्य तमागृहीतसकलविद्याकलापमकार्षीत्। सोऽयम् (ढ)।

इयञ्च सुरासुरैर्मथ्यमानात् क्षीरसागरादुद्गतः परिजातनामा पादपस्तस्य मञ्जरी। यथा चैषा व्रतविरुद्धमस्य श्रवणसंसर्गमासादितवती, तदपि कथयामि (ण)। अद्य चतुर्दशीति भगवन्तमम्बिकापतिं कैलासगतमुपासितुममरलोकान्मया सह नन्दनवनसमीपेनायमनुसरन्निर्गत्य साक्षान्मधुमासलक्ष्मी-दत्त-ललित-हस्तावलम्बया, बकुलमालिका-मेखलया, पारिजात-कुसुम-(१)

(ङ) असाविति। असौ श्वेतकेतुरपि, गृहीत्वेति शेषः। क्रिया जातकर्म्मादिकाः। पुण्डरीकसम्भवतया श्वेतपद्मजाततया। पुण्डं सुन्दरेषु तिलकभावं प्राधान्यं रियाति गच्छति प्राप्नोतीति पुण्डरी ततः स्वार्थे कः।

(ढ) प्रतीति। किञ्च, प्रतिपादितं सम्पादितं व्रतमुपनयनं यस्य तम्, तथा आगृहीतः शिक्षितः सकलविद्याकलापो येन तम्, अकार्षीत् श्वेतकेतुरिति सम्बन्धः। अयं युवा स पुण्डरीकः।

(ण) इयमिति। तस्य चेयं मञ्जरीति सम्बन्धः। एषा कुसुममञ्जरी च, व्रतविरुद्धं विलासोपकरणत्वाद्ब्रह्मचर्य्यप्रतिकूलं यथा स्यात्तथा, अस्य पुण्डरीकस्य श्रवणसंसर्गं कर्णसंयोगं यथा आसादितवती प्राप्तवती।

(त) अद्येति। चतुर्दशी तिथिरिति हेतोः, "शिवप्रोक्ता चतुर्दशी" इति स्मृतेः शिवोपासनायां चतुर्दश्याः प्राशस्त्यादिति भावः। अम्बिकापतिं शिवम्। अयं पुण्डरीकः, मया सह अमरलोकात् स्वर्गात् नन्दनवनसमीपेन अनुसरन् कैलासाचलमागच्छन्, निर्गत्य नन्दनवनाद्बहिरागत्य साक्षान्नन्दनवनदेवतया प्रत्यक्षीभूतया नन्दनकाननाधिष्ठात्र्या देव्या प्रणम्य अभिहित उक्त इत्यन्वयः। तृतीयैकवचनान्तपदानि नन्दनवनदेव-

---

পর লক্ষ্মী, সেই বালকটিকে কোলে লইয়া মহর্ষির নিকট যাইয়া বলিলেন,—"ভগবন্! আপনার এই পুত্রটি গ্রহণ করুন," এই কথা বলিয়া বালকটিকে সেই শ্বেতকেতুর হস্তে দিলেন। (ঙ) তিনিও, তাহাকে গ্রহণ করিয়া বালকের উপযুক্ত জাতকর্ম্ম প্রভৃতি সকল কার্য্য সম্পাদন করিয়া, সে, শ্বেতপদ্মে জন্মিয়াছিল বলিয়া, তাহার সেই 'পুণ্ডরীক'ই নাম করিলেন। (ঢ) এবং উপনয়নসংস্কার করিয়া সেই বালকটিকে সকল-বিদ্যা-শিক্ষা করাইলেন। ইনিই সেই পুণ্ডরীক।

(ণ) দেব ও দানবগণ ক্ষীরোদসাগর মন্থন করিতেছিলেন, তখন সেই ক্ষীরোদসাগর হইতে পারিজাত নামে একটি বৃক্ষ উৎপন্ন হয়, এইটি সেই পারিজাতবৃক্ষের মঞ্জরী। এবং এই মঞ্জরী ধারণ করা ব্রহ্মচর্য্যের বিরুদ্ধ হইলেও, যে ভাবে ইহা পুণ্ডরীকের কর্ণে স্থান পাইয়াছে, তাহাও বলিতেছি। (ত) আজ চতুর্দ্দশী তিথি বলিয়া, কৈলাসবাসী ভগবান্ মহাদেবের পূজা করিবার নিমিত্ত, ইনি আমার সহিত স্বর্গলোক হইতে নন্দনবনের নিকট দিয়া এই কৈলাসে আসিতেছিলেন, তখন নন্দনবনের দেবতা, এই পারিজাতপুষ্পের মঞ্জরীটি লইয়া,

---

(१) क्वचित् पारिजातेति नास्ति।

पल्लव-ग्रथिताभिराजानुलम्बिनीभिः कण्ठमालिकाभिर्निरन्तराच्छादितविग्रहया, नवचूताङ्कुर-कर्णपूरया, पुष्पासव-पान-मत्तया, नन्दनवन-देवतया, (१) पारिजात-कुसुममञ्जरीमिमामादाय प्रणम्याभिहितः,—(त) "भगवन्! सकलत्रिभुवन-दर्शनाभिरामायास्तवाकृतेरस्याः सुसदृशोऽयं (२) अलङ्कारः, प्रसादीक्रियताम्, (३) इयमवतंस-विलास-दुर्ललिता समारोप्यतां (४) श्रवणशिखरम्, व्रजतु सफलतां जन्म पारिजातस्य" (थ) इत्येवमभिदधानायामात्म-रूप-स्तुतिवाद-(५) त्रपावनमित-लोचनः (६) तामनादृत्यैव गन्तुं प्रवृत्तः (द)। मया तु तामनु-

---

तया इत्यस्य विशेषणानि। मधुमासलक्ष्म्या वसन्तमासश्रिया दत्तो ललितहस्तस्य आत्मनः सुन्दरकरस्य अवलम्बो यस्यास्तया, वसन्तलक्ष्म्याः सुन्दरहस्तधारिण्येत्यर्थः। बकुलमालिका मेखला काञ्ची यस्यास्तया। कण्ठमालिकाभिर्गलदघ्नमालाभिः, निरन्तरं घनं आच्छादित आवृतः विग्रहः शरीरं यस्यास्तया। नवाश्चूताङ्कुरा आम्रमुकुलाः कर्णपूरा यस्यास्तया। पुष्पासवस्य कुसुममधुरूपमद्यस्य पानेन मत्ता तया।

(थ) किमभिहित इत्याह भगवन्निति। सकलत्रिभुवनस्य त्रिजगद्वासिनः सर्वजनस्य दर्शने दृष्टौ अभिरामायाः सर्वतो मनोरमायाः, अस्याः दृश्यमानायास्तवाकृतेः सुसदृशोऽयमलङ्कारः प्रसादीक्रियतां प्रसादपात्रीक्रियतां अनुग्रहेण गृह्यतामित्यर्थः। नन्वनया किं मया करणीयमित्याह इयमिति। अवतंसे अवतंसस्थाने कर्णे यो विलासः अनया कान्तिसम्पादनं तस्मिन् विषये दुर्ललिता अन्येन दुष्प्रापतया दुःखेन लिप्सिता दुर्लभेत्यर्थः इयं मञ्जरी, श्रवणशिखरं कर्णोपरिभागं समारोप्यतां। पारिजातस्य जन्म सफलतां व्रजतु, तव तन्मञ्जरीधारणादिति भावः।

(द) इतीति। किञ्च। अयं पुण्डरीकः, आत्मरूपस्य निजसौन्दर्य्यस्य स्तुतिवादेन प्रशंसया या त्रपा लज्जा तया अवनमिते लोचने चक्षुषी येन स तादृशः सन्। तां नन्दनवनदेवताम्।

বসন্ত-লক্ষ্মীর হস্ত-ধারণপূর্ব্বক প্রত্যক্ষভাবে নন্দনবন হইতে নির্গত হইয়া, ইঁহাকে প্রণাম করিলেন; সে সময়ে তিনি এক ছড়া বকুল-ফুলের মালার চন্দ্রহার ধারণ করিয়াছিলেন, আর পারিজাতের কুসুম ও পল্লবদ্বারা গ্রথিত এবং আজানু-লম্বিত কতকগুলি মালা কণ্ঠে ধারণ করিয়াছিলেন, সেগুলি তাঁহার সমস্ত শরীর আবৃত করিয়াছিল; আর তিনি নূতন আম্র-মুকুলের কর্ণাভরণ ধারণ করিয়াছিলেন এবং পুষ্পের মধু-পানে মত্ত ছিলেন। তাহার পর তিনি বলিলেন,—(থ) "ভগবন্! আপনার এই আকৃতি, ত্রিজগদ্বাসী সকল লোকের দৃষ্টিতেই অত্যন্ত সুন্দর; অতএব ইহার সুযোগ্য এই অলঙ্কার অনুগ্রহপূর্ব্বক গ্রহণ করুন; কর্ণে সমর্পণ করিয়া শোভা সম্পাদন করিতে ইহা অন্যের পক্ষে দুর্ল্লভ, কিন্তু আপনি কর্ণের উপরে ধারণ করুন; আজ পারিজাতবৃক্ষের জন্ম সফলতা লাভ করুক।" (দ) বনদেবতা এইরূপ বলিতেছিলেন, তখন পুণ্ডরীক, নিজের সৌন্দর্য্যের প্রশংসা শুনিয়া লজ্জায় নয়নযুগল অবনত

---

(१) क्वचित् वनदेवतया इतिमात्रः पाठः। (२) सदृशोयं।

(३) प्रसीद, क्रियताम्। (४) आरोप्यतां। (५) आत्मस्तुतिवाद...। (६) ..विलोचनः।

यान्तीमालोक्य 'को दोषः, सखे! क्रियतामस्याः प्रणयपरिग्रहः' इत्यभिधाय बलादियमनिच्छतोऽप्यस्य कर्णपूरीकृता। तदेतत् कात्स्न्र्येन योऽयम्, यस्य चायम्, या चेयम्, (१) यथा चास्य श्रवणशिखरं समारूढ़ा तत्सर्वमावेदितम्। (ध)

इत्युक्तवति तस्मिन् स तपोधनयुवा किञ्चिदुपदर्शितस्मितोमामवादीत् (२)—"अयि कुतूहलिनि! किमनेन प्रश्नायासेन। यदि रुचितसुरभिपरिमला (३) तदा (४) गृह्यतामियम्" इत्युक्त्वा समुपसृत्यात्मीयात् श्रवणादपनीय कलैरलिकुलक्वणितैः प्रारब्धरतिसमागम-प्रार्थनामिव मदीये श्रवणपुटे तामकरोत् (न)।

(ध) मयेति। तां नन्दनवनदेवतां अनुयान्तीं पुण्डरीकमनुगच्छन्तीं। प्रणयपरिग्रहः प्रीतिदानग्रहणम्। इयं कुसुममञ्जरी, अनिच्छतोऽपि कर्णार्पणमनभिलषतोऽपि, अस्य पुण्डरीकस्य, बलात् कर्णपूरीकृता। तत्-स्मात्। कार्त्स्न्येन साकल्येन, अयं तपोधनयुवा यः, यस्य चायं पुत्रः, इयं कुसुममञ्जरी च या यदुत्पन्नेत्यर्थः। अपि च इयं कुसुममञ्जरी यथा येन प्रकारेण, अस्य कुमारस्य श्रवणशिखरं कर्णोपरि देशम्। अत्र कार्त्स्न्येनेति पञ्चवर्णतया, श्रुतिदुःखावहत्वात् दुःश्रवत्वदोषः, स च 'साकल्येन' इति पाठेन समाधेयः।

(न) इतीति। तस्मिन् सहचरे। स तपोधनयुवा पुण्डरीकः, किञ्चिदुपदर्शितं स्मितं येन स तादृशः सन्। रुचित आकाङ्क्षितः, सुरभिर्घ्राणतर्पणकरः परिमलो गन्धो यस्याः सा, इयं मञ्जरी। आत्मीयात् स्वकीयात् श्रवणात् कर्णात् अपनीय उन्मुच्य, तां मञ्जरीं, कलैर्मधुरास्फुटैः अलिकुलक्वणितैः गन्धलोभेन तत्समीपागतभ्रमरगणगुञ्जितैः करणैः प्रारब्धा उपक्रान्ता रतिसमागमस्य सुरतसंसर्गस्य प्रार्थना यया तामिव सतीं अकरोदर्पितवान्। अत्र रतिसमागमप्रार्थनारम्भणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

করিয়া, তাঁহাকে অনাদর করিয়াই যাইতে লাগিলেন। (ধ) এদিকে তাঁহাকেও পুণ্ডরীকের পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে দেখিয়া আমি বলিলাম,—'সখে! দোষ কি, ইহার প্রীতিদান গ্রহণ কর' এই কথা বলিয়', ইনি ইচ্ছা না করিলেও, বলপূর্ব্বক এই মঞ্জরীটি ইহার কর্ণাভরণ করিয়া দিলাম। অতএব, ইনি যে, এবং ইনি যাঁহার পুত্র, আর এই মঞ্জরীটি যে বৃক্ষে জন্মিয়াছে এবং যে ভাবে ইহার কর্ণের উপরে আরোহণ করিয়াছে, তাহা আনুপূর্ব্বিক সমস্তই এই বলিলাম।

(ন) তিনি এই কথা বলিলে সেই তপস্বী যুবক ঈষৎ হাস্য করিয়া আমাকে বলিলেন,—"অয়ি কৌতুকবতি! প্রশ্ন করার এই পরিশ্রমে প্রয়োজন কি, যদি এই মঞ্জরীটির ঘ্রাণতৃপ্তিকর সৌরভে তোমার অভিলাষ হইয়া থাকে, তবে তুমি এটি গ্রহণ কর" এই কথা বলিয়া তিনি আমার নিকটে আসিয়া, নিজের কর্ণ হইতে মঞ্জরীটি নামাইলেন, তখন ভ্রমরগণের অস্পষ্ট ও মধুর ঝঙ্কারে সে যেন সম্ভোগের প্রার্থনা আরম্ভ করিল, এই অবস্থায় তিনি সেই মঞ্জরীটিকে আমার

---

(१) योऽयं या चेयम्। (२) ..स्मितः अवादीत्।
(३) क्वचित् रुचितेति नास्ति। (४) क्वचित् तदित्यपि न दृश्यते।

मम तु तत्करतलस्पर्शलोभेन तत्क्षणमपरमिव पारिजातकुसुमावतंसस्थाने पुलकं (१) आसीत् (प)। स च मत्कपोलस्पर्शसुखेन तरलीकृताङ्गुलिजालकात् करतलादक्षमालां लज्जया सह गलितामपि नाज्ञासीत् (फ)। अथाहं तामसम्प्राप्तामिव भूतलमक्षमालां गृहीत्वा सलीलं तद्भुज-पाश-सन्दानित-कण्ठ-ग्रह-सुखमिवानुभवन्ती दर्शितापूर्व-हारलता-लीलां कण्ठाभरणतामनयम्। (ब)

इत्थम्भूते च व्यतिकरे छत्रग्राहिणी मामवोचत्—"भर्तृदारिके! स्नाता देवी, प्रत्यासीदति गृहगमनकालः, तत्क्रियतां मज्जनविधिः" इति (भ)।

(प) ममेति। अवतंसस्थाने तत्कर्णे, अपरं पारिजातकुसुममिव, उच्चावचसुखत्वसाम्यादिति भावः, पुलकं पुलको रोमाञ्चः अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा पुलकशब्दस्य रोमाञ्चार्थे पुंस्त्वादत्र च क्लीबे प्रयोगाच्च्युतसंस्कृतिदोषः, स तु पुलक इति पाठेनैव समाधेयः। हृदयमिति पाठेऽपि सादृश्याभावादनुचितार्थता-दोषः।

(फ) स इति। स च सोऽपि युवा। तरलीकृतं कम्पितं अङ्गुलीनां जालकं समूहो यस्य तस्मात् करतलात्, लज्जया सह गलितामपि पतितामपि अक्षमालां जपमालां। अत्र सहोक्तिरलङ्कारः।

(ब) अथेति। भूतलं असम्प्राप्तामिव अपतितामिव तामक्षमालां गृहीत्वा, तस्य युवकस्य भुजपाशाभ्यां सन्दानितः परिवेष्टः संयतो यः कण्ठस्तत्र यद्ग्रहसुखं तदालिङ्गनसुखं अनुभवन्तीव, दर्शिता अपूर्वाया आश्चर्यायाः हारलताया लीला शोभा यया तां तथाविधां सतीं, सलीलं कण्ठाभरणतां अनयम्, हारवदात्मनः कण्ठे दत्तवतीत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, हारलताया लीलेव लीलेति सादृश्याक्षेपादसम्भवद्वस्तुसम्बन्धा निदर्शना चानयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(भ) इत्थमिति। व्यतिकरे परस्परासक्तिनिबन्धनव्यवहारे। छत्रग्राहिणी मच्छत्रधारिणी। प्रत्यासीदति उपस्थितो भवति। मज्जनविधिः स्नानकार्य्यम्।

কর্ণপুটে সমর্পণ করিলেন। (প) তখন কিন্তু তাঁহার করস্পর্শের আশায় আমার সেই কর্ণে আর একটি পারিজাতপুষ্পের ন্যায় রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইল। (ফ) এবং আমার গণ্ডস্থলের স্পর্শসুখে তাঁহারও হস্তের অঙ্গুলিসমূহ কাঁপিতে লাগিল, তখন লজ্জার সহিত তাঁহার হস্ত হইতে জপের মালা পড়িয়া গেলেও, তিনি তাহা জানিতে পারিলেন না। (ব) তাহার পর আমি, সেই জপের মালা ভূতলে না পড়িতে পড়িতেই গ্রহণ করিয়া লীলার সহিত নিজের কণ্ঠের আভরণ করিলাম; সেই মালা ছড়া, আমার কণ্ঠে অপূর্ব্ব হারের শোভা দেখাইতে লাগিল এবং তিনি ভুজপাশে আমার কণ্ঠ বেষ্টন করিয়া আলিঙ্গন করিলে যে সুখ হয়, তাহাই যেন অনুভব করিতে লাগিলাম।

(ভ) আসক্তিবশতঃ পরস্পরের এইরূপ ব্যবহার হইয়া গেলে, আমার ছত্রধারিণী পরি-

---

(१) हृदयं।

अहन्तु तेन तस्या वचनेन नवग्रहा करिणीव प्रथमाङ्कुशपातेनानिच्छया (१) कथं कथमपि समाकृष्यमाणा तन्मुखाल्लावण्यपङ्कमग्नामिव कपोल-पुलक-कण्टक-जालक लग्नामिव, मदन-शर-शलाका-कीलितामिव, सौभाग्य-गुण स्यूतामिव अतिकृच्छ्रेण दृष्टिमाकृष्य (२) स्नातुमुदचलम् (म)। उच्चलितायाश्च मयि द्वितीयो मुनिदारकस्तथाविधं (३) तस्य धैर्य्यस्खलितमालोक्य किञ्चित्प्रकटित-प्रणयकोप इवावादीत्। (य)

"सखे! पुण्डरीक! नैतदनुरूपं भवतः। क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः (४)।

(म) अहमिति। प्रथमाङ्कुशपातेन, नवा नूतना ग्रहा धारणं यस्याः सा तादृशी करिणीव, तस्याश्छत्रग्राहिण्यास्तेन वचनेन, अनिच्छया कथं कथमपि कष्टेन समाकृष्यमाणा सती। अत्रोपमालङ्कारः। लावण्यं तस्य सौन्दर्य्यमेव पङ्कः कर्द्दमस्तत्र मग्नामिव, कष्टेनाकर्षणादिति भावः। अत्र निरङ्ग-केवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। कपोलयोस्तदीयगण्डयोः पुलका एव कण्टकानि तेषां जालके जाले लग्नामिव संसक्तामिव। अत्रापि पूर्ववद्भावोऽलङ्कारस्य। मदनस्य शरशलाकाभिः कीलितां विद्धामिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। सौभाग्यमेव गुणः सूत्रं तेन स्यूतां कृतसीवनामिव, कष्टेनाकर्षणादित्युभयत्रापि भावः। अत्रापि पूर्ववत् रूपकोत्प्रेक्षयोः सङ्करः। तन्मुखादतिकृच्छ्रेण दृष्टिमाकृष्य स्नातुमुदचलमिति सम्बन्धः।

(य) उदिति। किञ्च। धैर्य्यस्खलितं कामविकारेण धैर्य्यभङ्गं। किञ्चित् प्रकटित ईषत्प्रकाशितः प्रणयकोपो येन तादृश इव सन्।

(र) सखे इति। अनुरूपमुचितम्। एष मार्गः कामिनीदर्शने कामुकभाव इत्यर्थः, क्षुद्रजनक्षुण्णः नीचलोकैर्व्यवहृतः, न तु त्वादृशैरिति भावः। अतएवात्र आर्थी परिसंख्यालङ्कारः। धैर्य्यधना हि

চারিকা আমাকে ব'লল,—"রাজকন্তে! মহারাণী স্নান করিয়াছেন, বাটীতে যাইবার সময়ও উপস্থিত হইয়াছে; অতএব আপনি স্নান করুন।" (ম) প্রথম অঙ্কুশের প্রহারে নূতন-ধৃত হস্তিনীর ন্যায় আমি, সেই পরিচারিকার বাক্যে অনিচ্ছাপূর্ব্বক অতিকষ্টে ফিরিলাম; তখন আমার দৃষ্টি, তাঁহার লাবণ্যরূপ কর্দ্দমে যেন মগ্ন হইয়াছিল, তাঁহার গণ্ডদেশে জাত রোমাঞ্চরূপ কণ্টকজালে যেন জড়িত হইয়া পড়িয়াছিল, কামদেবের শর-শলাকাতে যেন বিদ্ধ হইয়াছিল এবং সৌভাগ্যরূপ সূত্রে যেন সেলাই করিয়া রাখিয়াছিল; সুতরাং আমি অতিকষ্টে তাঁহার মুখমণ্ডল হইতে সেই দৃষ্টিকে আকর্ষণ করিয়া স্নান করিতে চলিলাম। (য) আমি স্নান করিতে চলিয়াছি, এমন সময়ে, সেই দ্বিতীয় মুনিকুমার, তাঁহার সেইরূপ ধৈর্য্যভঙ্গ দেখিয়া, ঈষৎ প্রণয়-কোপ প্রকাশ ক'রয়াই যেন বলিতে লাগিলেন।

(র) "সখে! পুণ্ডরীক! এরূপ আচরণ করা তোমার উচিত হয় নাই, কারণ—

(१) अनिच्छयापि। (२) समाकृष्य। (३) तथाविधः। (४) क एष मार्गः।

धैर्य्यधना हि साधवः। किं यः कश्चित् (१) प्राकृत इव विक्लवीभवन्तमात्मानं न रुणत्सि। कुतस्तवापूर्व्वोऽयमद्येन्द्रियोपप्लवः ? (२) येनास्येवं कृतः (र)। क्व ते तद्धैर्य्यम्, क्वासाविन्द्रियजयः, क्व तद्वशित्वं चेतसः, क्व सा प्रशान्तिः, क्व तत् कुलक्रमागतं ब्रह्मचर्य्यम्, क्व सा सर्व्वविषयनिरुत्सुकता, क्व ते गुरूपदेशाः, क्व तानि श्रुतानि, क्व ता वैराग्यबुद्धयः, क्व तदुपभोगविद्वेषित्वम्, क्व सा सुख-पराङ्मुखता, क्वासौ तपस्यभिनिवेशः, क्व सा संयमिता, (३) क्व सा भोगाना-मुपर्य्यरुचिः, क्व तद्यौवनानुशासनम् (ल)। सर्व्वथा निष्फला प्रज्ञा, निर्गुणो धर्म्मशास्त्राभ्यासः, निरर्थकः संस्कारः निरुपकारको गुरूपदेशविवेकः, निष्प्रयो-जना प्रबुद्धता, निष्कारणं ज्ञानम्, यदत्र भवादृशा अपि रागाभिषङ्गैः कलुषो-

साधवः, कारणविशेषेणाधीरतासम्भवेऽपीति भावः। प्राकृत इव साधारणलोक इव, विक्लवीभवन्तं मदनावेशेन विह्वलीभवन्तं आत्मानं मनः किं न रुणत्सि। अपूर्व्वः अज्ञातपूर्व्वः, इन्द्रियाणामुपप्लवः क्षोभ उद्वेलनं। एवं कृतः अधीरीकृतः।

(ल) क्वेति। तच्छब्दैरदःशब्दाभ्याञ्च पूर्व्वतनं धैर्य्यादिकं परामृश्यते। वशित्वं निवृत्तिमार्गे स्वाधीनता। प्रशान्तिः शमगुणावलम्बनं सात्त्विकता। सर्व्वेषु विषयेषु निरुत्सुकता तदुत्कण्ठाराहित्यम्। श्रुतानि शास्त्रज्ञानानि। तपस्यभिनिवेशस्तपस्यायामेवाग्रहः। संयमिता संयतभावः भोग्यैरनाकर्षणमित्यर्थः। यौवनानुशासनं यौवनविकारनिग्रहः।

(व) सर्व्वथेति। प्रज्ञा प्रतिभा। निर्गुणः सदसद्विवेकजननरूपगुणहीनः। संस्कारः शिक्षाजनित

ক্ষুদ্র লোকেরাই এই পথ অবলম্বন করিয়া থাকে, আর সাধু লোকের ধৈর্য্যই ধন। তোমার চিত্ত অধীর হইয়া পড়িয়াছে, সুতরাং যে কোন প্রাকৃত লোকের ন্যায় তুমি সেই চিত্তকে রুদ্ধ করিতেছ না কেন? আজ কোথা হইতে তোমার এই অপূর্ব্ব ইন্দ্রিয়ের উপদ্রব উপস্থিত হইল? যে তোমাকে এইরূপ করিয়া ফেলিয়াছে। (ল) তোমার সে ধৈর্য্য কোথায়? সে জিতেন্দ্রিয়তা কোথায়? চিত্তের সে স্বাধীনতা কোথায়? সে শমগুণ কোথায়? কুল-ক্রমাগত সে ব্রহ্মচর্য্য কোথায়? সমস্ত বিষয়ের প্রতি সে নিরুৎসুকতা কোথায়? সে গুরূপদেশ কোথায়? সে শাস্ত্রজ্ঞান কোথায়? সে বৈরাগ্য-বুদ্ধি কোথায়? উপভোগের প্রতি সে বিদ্বেষ কোথায়? সে সুখ-পরাঙ্মুখতা কোথায়? তপস্যার প্রতি সে আগ্রহ কোথায়? সে সংযতভাব কোথায়? ভোগের উপর সে অরুচি কোথায়? এবং যৌবন-বিকারের সে শাসনই বা কোথায় গেল? (ব) আজ প্রতিভা সকল প্রকারে নিষ্ফল হইয়াছে; ধর্ম্মশাস্ত্র অভ্যাস করার গুণ

(१) कथम। (२) आद्येन्द्रियोपप्लवः।

(३) क्वचित् 'क्व सा संयमिता' इति पाठो न दृश्यते।

क्रियन्ते प्रमादैश्चाभिभूयन्ते (ब)। कथं करतलाद्गलितामपहृतामक्षमाला- मपि न लक्षयसि। अहो! विगतचेतनत्वम् (श)। अपहृता नामेयम्, (१) इदमपि तावदपह्रियमाणं (२) अनया अनार्य्यया निवार्य्यतां हृदयम्।" (ष)

इत्येवं (३) अभिधीयमानस्तु तेन किञ्चिदुपजातलज्ज इव प्रत्यवादीत्— "सखे! कपिञ्जल! किं मामन्यथा सम्भावयसि। नाहमेवमस्या दुर्व्विनीत- कन्यकाया मर्षयाम्यक्षमालाग्रहणापराधमिमम्" (स) इत्यभिधाय अलीक-

चित्तशुद्धिः। प्रबुद्धता विषयेषु प्रकृष्टबोधः भोग्यानामसारताबोध इत्यर्थः। ज्ञानं तत्त्वज्ञानम्। यद्‌यस्मात्। रज्यन्ते एभिरिति रागाः स्रक्‌चन्दनवनितादयो विषयास्तेषु अभिषङ्गैरासक्तिभिः, कलुषीक्रियन्ते आविलीक्रियन्ते आक्रम्य दुष्टीक्रियन्त इत्यर्थः, प्रमादैः स्वकर्त्तव्याग्रहरूपैः, अभिभूयन्ते आयत्तीक्रियन्ते, यत्त्वमिदानीमुद्दिष्ट- शिवाराधनमपहाय कामिन्यामासज्यसे इति भावः।

(श) कथमिति। अहो आश्चर्य्यं, विगतचेतनत्वं संज्ञाहीनत्वं, अक्षमालाया अपि लक्षीकरणा- भावादिति भावः।

(ष) अपेति। अनया अनार्य्यया धृष्टया कन्यया, इयमक्षमाला अपहृता नाम, इदमपि तावदपह्रियमाणं हृदयं निवार्य्यतां त्वया निषिध्यताम्।

(स) इतीति। तेन कपिञ्जलेन, इत्येवमभिधीयमानः पुण्डरीकः। अन्यथा तया कन्यया हृतचित्तं किं कथं सम्भावयसि, नाहं तथेति भावः। तर्हि कथं तवेयमधीरतेत्याह नाहमिति। मर्षयामि क्षमे। न खलु कामकृता ममेयमधीरता, अपि तु क्रोधकृतैवेति भावः। अत्र प्रकाशितायाः अपि कामकृतायाः अधीरतायाः क्रोधकृतत्वव्याजेन गोपनात् व्याजोक्तिरलङ्कारः।

গিয়াছে; চিত্ত-শুদ্ধি নিরর্থক হইয়া পড়িয়াছে; গুরূপদেশ-জনিত বিবেক, কোন উপকার করে নাই; বিষয়ের অসারতা-জ্ঞান, প্রয়োজনবিহীন হইয়াছে এবং তত্ত্বজ্ঞান নিষ্ফল হইয়া দাঁড়াইয়াছে; যেহেতু—আজ বিষয়াসক্তিতে তোমার মত লোককেও কলুষিত করিয়াছে এবং প্রমাদ আসিয়া আয়ত্ত করিয়া ফেলিয়াছে। (শ) এদিকে হাত হইতে জপের মালা পড়িয়া গিয়াছে, তাহা আবার কেহ অপহরণ করিয়া নিয়াছে, তুমি তাহাও লক্ষ্য করিতেছ না কেন? তোমার কি আশ্চর্য্য সংজ্ঞাহীনতা! (ষ) এই প্রগল্‌ভা কন্যাটা জপের মালা ত অপহরণ করিয়া নিয়াছেই, তোমার এই হৃদয়কেও যে অপহরণ করিয়া নিতেছে, তাহা নিবারণ কর।"

(স) কপিঞ্জল এইরূপ বলিতে লাগিলে, তিনি যেন কিছু লজ্জিত হইয়াই প্রত্যুত্তর করিলেন—"সখে! কপিঞ্জল! কেন তুমি আমাকে অন্যরূপ মনে করিতেছ? আমি এই দুর্বিনীত কন্যাটার এই ভাবে জপের মালা লইয়া যাইবার এই অপরাধ মার্জ্জনা করিতে

(১) विगतचेतनत्वमपहृतानामेयं। (२) ह्रियमाणं। (३) एवं।

कोप-कान्तेन प्रयत्न-विरचित-भीषण-भ्रुकुटिभूषणेन चुम्बनाभिलाष-स्फुरिताधरेण मुखेन्दुना मामवदत्—"चपले! प्रदेशादस्मादिमामक्षमाला-मदत्त्वा पदात् पदमपि न गन्तव्यम्" इति (ङ)। तच्च श्रुत्वाहमात्मकण्ठा-दुन्मुच्य मकरध्वज-लास्यारम्भ लीला-पुष्पाञ्जलिमेकावलीम् 'भगवन्! गृह्यता-मक्षमाला' इति मन्मुखासक्तदृष्टेः शून्यहृदयस्यास्य प्रसारिते पाणौ निधाय स्वेदसलिलस्नातापि पुनः स्नातुमवातरम् (च)। उत्थाय च कथमपि प्रयत्नेन निम्नगेव प्रतीपं नीयमाना सखीजनेन बलादम्बया सह तमेव चिन्तयन्ती स्वभवनमयासिषम् (छ)। गत्वा च प्रविश्य कन्यान्तःपुरं ततः प्रभृति तद्विरह-

---

(ङ) इतीति। अलीककोपेन कान्तस्तामवर्णतया पूर्वतोऽपि मनोहरस्तेन, प्रयत्नेन क्रोधाभावेन स्वयमुत्पत्त्यसम्भवाच्चेष्टया, विरचिता कृता भीषणा भ्रुकुटिरेव भूषणं यस्य तेन, तथा चुम्बनाभिलाषेण स्फुरितः स्पन्दितः अधरो यस्य तेन, मुखमिन्दुरिव तेन। अत्र भयकारणीभूतभ्रुकुटितो भूषणगुणशोभोत्पत्तेर्विषमालङ्कारः मुखेन्दुनेति लुप्तोपमा चानयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(च) तदिति। मकरध्वजेन मदनेन यो लास्यारम्भः शरीरकम्पनात्मकनृत्यारम्भस्तत्र लीलापुष्पाञ्जलिं तत्स्वरूपां, नृत्यारम्भे पुष्पाञ्जलिक्षेपस्य लोकाचारसिद्धत्वात् स्फटिकाक्षमालायाश्च तद्वद्दृश्यमानत्वादिति भावः। एकावलीं मदीयमेकयष्टिकं हारं। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। मन्मुखे आसक्ता दृष्टिर्यस्य तस्य, शून्यं विषयान्तरज्ञानरहितं हृदयं यस्य तस्य, अतएव मदीयमुक्तामालामपि स्वकीयजपमालात्वेनैवासौ निर्बाधं गृहीतवानिति भावः। अस्य पुण्डरीकस्य। स्वेदसलिलेन घर्मजलेन स्नातापि।

(छ) उत्थायेति। किञ्चाहं सरोवरादुत्थाय, सखीजनेन कर्त्रा, प्रयत्नेन बलाच्च निम्नगा नदीव, कथमपि कष्टेन, प्रतीपं प्रतिकूलं मनसो मुनिकुमारदिग्गामित्वेऽपि तद्विपरीतदिशमित्यर्थः नीयमाना, तमेव मुनिकुमारं चिन्तयन्ती सती, अम्बया मात्रा सह स्वभवनमयासिषमित्यन्वयः। अत्रोपमालङ्कारः।

পারিব না।" (ঙ) এই কথা বলিলে পর তাঁহার মুখচন্দ্র, মিথ্যা ক্রোধে আরও সুন্দর দেখা যাইতে লাগিল, যত্নপূর্ব্বক ভয়ঙ্কর ভ্রূকুটি করিলেন, তাহাও কিন্তু সে মুখের অলঙ্কার হইয়া দাঁড়াইল এবং চুম্বন করিবার ইচ্ছায় অধর স্পন্দিত হইতে লাগিল; এইরূপ মুখচন্দ্রে আমাকে বলিলেন—"হে চঞ্চলে! আমার এই জপের মালা না দিয়া তুমি এ স্থান হইতে এক পা'ও গমন করিও না।" (চ) আমি তাঁহার সেই কথা শুনিয়া, কামদেবকর্ত্তৃক নৃত্যারম্ভের বিলাস-পুষ্পাঞ্জলিস্বরূপ একলহরী মুক্তার মালা, নিজের কণ্ঠ হইতে খুলিয়া বলিলাম—'ভগবন্! জপের মালা গ্রহণ করুন'। তখন তাঁহার দৃষ্টি, আমার মুখে একেবারে লাগিয়া রহিয়াছিল এবং হৃদয়, শূন্য ছিল; অথচ তিনি মালা গ্রহণ করিবার নিমিত্ত হস্ত প্রসারিত করিয়াছিলেন, আমি সেই হস্তের উপরে মালা ছড়া রাখিয়া, ঘর্ম্মজলে স্নান করিয়াও পুনরায় স্নান করিবার নিমিত্ত সরোবরে যাইয়া নামিলাম। (ছ) এবং তথা হইতে উঠিলাম, পরে, সখীগণ আসিয়া,

विधुरा किमागतास्मि, किं तत्रैव स्थितास्मि, किमेकाकिन्यस्मि, किं परिवृतास्मि, किं तूष्णीमस्मि, किं प्रस्तुतालापास्मि, किं जागर्मि, किं सुप्तास्मि, किं रोदिमि, किं न रोदिमि, किं दुःखमिदम्, किं सुखमिदम्, (१) किमुत्कण्ठेयम्, किं व्याधिरयम्, किं व्यसनमिदम्, किमुत्सवोऽयम्, किं दिवस एषः, किं निशेयम्, कानि रम्याणि, कान्यरम्याणीति सर्वं नावागच्छम् (ख)। अविज्ञातमदनवृत्तान्ता च क्व गच्छामि, किं करोमि, किं पश्यामि, किमालपामि, कस्य कथयामि, कोऽस्य प्रतीकार इति सर्वञ्च नाज्ञासिषम्, (ग)। केवलमारुह्य कुमारीपुरप्रासादं विसर्ज्य च सखीजनं द्वारि निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा सर्वव्यापारानुत्सृज्यैकाकिनी मणिजालगवाक्षनिक्षिप्तमुखी, तामेव

(ख) गत्वेति। किञ्च। तस्य मुनिकुमारस्य विरहेण विधुरा विह्वला सती। परिवृता लोकैः परिवेष्टिता। प्रस्तुतालापा सखीभिरारब्धकथोपकथना। सुप्ता निद्रिता। व्यसनं विपत्। कानि वस्तूनि। नावागच्छं न ज्ञातवती। अत्र वितर्काख्यभावो विप्रलम्भशृङ्गारस्याङ्गमिति प्रेयोनामालङ्कारस्तद्विरहविधुरेति पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ग) अविज्ञातेति। अविज्ञातः पूर्वमनवगतः मदनवृत्तान्तः कामप्रभावो यया सा। नाज्ञासिषं, पूर्वमविज्ञातमदनवृत्तान्तत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्ववदेवालङ्कारः।

(घ) केवलमिति। द्वारि निवारितः अशेषाणां सर्वेषां परिजनानां प्रवेशो यया सा। मणीनां जालं समूहो यस्मिन् तादृशे गवाक्षे वातायने निक्षिप्तं स्थापितं मुखं यया सा। तेत(१)र्सनाथतया तेन मुनिकुमारेण संयुक्ततया हेतुना, प्रसाधितामलङ्कृतामिव, कुसुमितां सञ्जातपुष्पामिव, महान्ति रत्नानि यस्मिन् तादृशेन

যত্নপূর্ব্বক বলক্রমে কোনপ্রকারে আমাকে নদীর স্রোতের ন্যায় প্রতিকূলভাবে নিয়া চলিল ; তাই আমি তাঁহাকেই চিন্তা করিতে করিতে, মাতার সহিত নিজ-বাটীতে গেলাম। (খ) এবং যাইয়া কন্যান্তঃপুরে প্রবেশ করিয়া সেই হইতে তাঁহার বিরহে আকুল হইয়া, আমি কি আসিয়াছি কিংবা সেইখানেই রহিয়াছি ; কি একাকিনী আছি অথবা লোকে পরিবেষ্টিত রহিয়াছি ; কি নীরবে আছি, না আলাপ আরম্ভ করিয়াছি ; কি জাগিয়া আছি, না ঘুমাইয়া রহিয়াছি ; কি কাঁদিতেছি, কিংবা কাঁদিতেছি না ; এটা কি দুঃখ, এটা কি সুখ ; এটা কি উৎকণ্ঠা, এটা কি রোগ, এটা কি বিপদ, এটা কি উৎসব, এটা কি দিন, এটা কি রাত্রি এবং কোন্ বস্তু সুন্দর, কোন্ বস্তুই বা কুৎসিত—এই সমস্ত বিষয়ই অবগত হইতে পারিয়াছিলাম না। (গ) পূর্ব্বে আর কখনও কামের বৃত্তান্ত জানি নাই ; সুতরাং 'কোথায় যাইব, কি করিব, কি দেখিব, কি বলিব, কাহার নিকট বলিব এবং ইহার প্রতীকার কি' এই সমস্ত বিষয়ও বুঝিয়াছিলাম না। (ঘ) পরে কন্যা-পুরের অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিয়া, সখীজনকে বিদায় দিয়া, দ্বারে

(१) स्वास्थ्यमिदम्।

दिशं तत्सनाथतया प्रसाधितामिव कुसुमितामिव (१) महारत्ननिधानाधिष्ठितामिव अमृतरससागर-(२) पूर-प्लावितामिव पूर्णचन्द्रोदयालङ्कृतामिव दर्शन-सुभगामीक्षमाणा, (ङ) तस्माद्दिगन्तरादागच्छन्तमनिलमपि वनकुसुमपरिमलमपि शकुनिध्वनिमपि तद्वार्त्तां प्रष्टुमीहमाना, (च) तद्वल्लभतया तपः-क्लेशायापि स्पृहयन्ती, तत्प्रीत्येव गृहीतमौनव्रता, (छ) स्मरजनित-पक्षपाता च, तत्परिग्रहान्मुनिवेशस्य (३) अग्राम्यतां तदास्पदतया यौवनस्य

निधानेन निधिना अधिष्ठिता आश्रिता तामिव, अमृतरसस्य सुधाद्रवस्य यः सागरस्तस्य पूरेण प्रवाहेण प्लावितामिव, तथा पूर्णचन्द्रोदयेन अलङ्कृतामिव, दर्शनसुभगां आलोकने रमणीयां, तामिव दिशं केवलं निरीक्षमाणा सती, निष्पन्दमतिष्ठमिति परेणान्वयः। इत्थमन्येषामपि प्रथमान्तानामन्वयो बोध्यः। अत्र पञ्चानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ङ) तस्मादिति। तस्मात् दिगन्तरात् तेन मुनिकुमारेणाधिष्ठिताद्दिग्विशेषात्, आगच्छन्तं अनिलं वायुमपि, वनकुसुमपरिमलमपि तस्माद्दिगन्तरादागच्छन्तमिति सम्बध्यते, शकुनिध्वनिमपि तथाविधं पक्षिरवमपि, तस्य कुमारस्य वार्त्तां प्रष्टुमीहमाना सती, "कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु" इति न्यायादिति भावः। पृच्छतेर्हि कर्म्मत्वादुभयमपि कर्म्म।

(च) तदिति। तस्य कुमारस्य वल्लभतया प्रियतया तपःक्लेशस्येति भावः, तपःक्लेशायापि स्पृहयन्ती तपश्चरणकष्टमपि वाञ्छन्ती। "स्पृहेरीप्सित"मिति सम्प्रदाने चतुर्थी। तस्य कुमारस्य प्रीत्येव मौनव्रते बाल्लभ्येनैव हेतुना, गृहीतमौनव्रता, वल्लभजनस्य प्रियवस्तुनि स्वस्यापि प्रीतेः सर्वत्र सिद्धत्वादित्युभयत्रापि भावः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) स्मरेति। स्मरेण मदनेन जनितः पक्षपातस्तस्मिन् कुमारे प्रेम यस्याः सा चाहं। तेन कुमारेण परिग्रहादवलम्बनादेव, मुनिवेशस्य अग्राम्यतां निर्दोषतां, अध्यारोपयन्ती निरूपयन्ती। स कुमारः आस्पद-

সকল পরিজনকেই প্রবেশ করিতে নিষেধ করিয়া, সকল কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া একাকিনী, মণিময় গবাক্ষদ্বারে মুখমণ্ডল সংস্থাপন করিয়া, কেবল সেই দিক্‌ই নিরীক্ষণ করিতে লাগিলাম। কারণ—তিনি সেই দিকে ছিলেন বলিয়া সে দিক্‌টা যেন অলঙ্কৃত ছিল, পুষ্পেই যেন শোভিত ছিল, মহামূল্য রত্নে পরিপূর্ণ কোন নিধিকর্তৃক যেন অধিষ্ঠিত ছিল, অমৃত-সাগরের তরঙ্গে যেন প্লাবিত ছিল এবং পূর্ণচন্দ্রের উদয়ে যেন অলঙ্কৃত ছিল, তাই দেখিতেও মনোহর ছিল। (ঙ) সেই দিক্ হইতে যে বায়ু, যে বনপুষ্পের সৌরভ এবং যে পক্ষীর রব আসিতেছিল, তাহাদের প্রত্যেকের নিকটেও তাঁহার বৃত্তান্ত জিজ্ঞাসা করিবার চেষ্টা করিতেছিলাম। (চ) তাঁহার প্রিয় বলিয়া, তপস্যা করিবার কষ্টও ইচ্ছা করিতেছিলাম এবং মৌনব্রতে তাঁহার প্রীতি আছে বলিয়াই যেন মৌনাবলম্বন করিয়াছিলাম। (ছ) এবং কামদেব তাঁহার প্রতি

(१) क्वचित् 'कुसुमितामिव' इति पाठो नास्ति। (२) अमृतरससारसागर...। (३) मुनिवेषस्य।

चारुतां तच्छ्रवणसम्पर्कात् पारिजातकुसुमस्य मनोहरतां तन्निवासात् सुरलोकस्य रम्यतां तद्रूपसम्पदा कुसुमायुधस्य दुर्जयतां चाध्यारोपयन्ती, (छ) दूरस्थस्यापि (१) कमलिनीव सवितुः सागरवेलेव चन्द्रमसः मयूरीव जलधरस्य तस्यैवाभिमुखी, (ज) तथैव तां तद्विरहातुर-जीवितोद्गम-रक्षावलीमिवाक्षावलीं कण्ठेनोद्वहन्ती, (झ) तथैव च तया प्रस्तुततद्रहस्यालापयेव कर्णलग्नया पारिजातमञ्जर्य्या, (ञ) तथैव च तेन तत्करतलस्पर्शसुखजन्मना कदम्ब-

---

माश्रयो यस्य तस्य भावस्तत्ता तयैव हेतुना, यौवनस्य चारुतां मनोहरत्वमध्यारोपयन्ती। तस्य कुमारस्य श्रवणसम्पर्कात् कर्णसंसर्गादेव हेतोः, पारिजातकुसुमस्य मनोहरतां अध्यारोपयन्ती। तस्य कुमारस्य निवासादधिष्ठानादेव सुरलोकस्य स्वर्गस्य रम्यतामध्यारोपयन्ती। तथा तस्य कुमारस्य रूपसम्पदा हेतुना, कुसुमायुधस्य मदनस्य दुर्जयतां मया जेतुमशक्यताञ्चाध्यारोपयन्ती सती। सर्व्वत्र स्मरजनिततत्पक्षपातादिति भावः। अत्र अध्यारोपयन्तीत्येकया क्रियया अवाम्यतामित्यादीनां बहूनां कर्म्मतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(छ) दूरेति। दूरस्थस्यापि सवितुः सूर्य्यस्य कमलिनीव, दूरस्थस्यापि चन्द्रमसः सागरवेलेव समुद्रजलोच्छ्वास इव, तथा दूरस्थस्यापि जलधरस्य मेघस्य मयूरीव, दूरस्थस्यापि तस्यैव कुमारस्य, अभिमुखी सती। अत्र मालोपमालङ्कारः।

(झ) तथैवेति। तस्य कुमारस्य विरहेणातुरं पीड़ितं यत् जीवितं मम जीवनं तस्य उद्गमे देहान्निर्गमनविषये रक्षावलीं तस्य रक्षणायाभिमन्त्रितमालामिव विरहे वल्लभजनस्य यत्किञ्चिद्वस्तुनोऽपि आश्वासोपायत्वादिति भावः। तां अक्षमालां जपमालां तथैव पूर्व्ववदेव कण्ठेनोद्वहन्ती धारयन्ती सती। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। चतुरतरा महाश्वेता तदानीं स्वमुखासक्तदृष्टेः शून्यहृदयस्य पुण्डरीकस्य हस्ते जपमाला गलितामित्युक्त्वा स्वकीयामेव मुक्तामालामर्पितवती, सा स्फटिकमयजपमाला तु तस्याः कण्ठ एवासीदिति बोद्धव्यम्।

(ञ) तथैवेति। प्रस्तुत आरब्धः तस्य कुमारस्य सम्बन्धे रहस्यालापो गोपनीयकथा,यया तयैव, तथैव

আমার অত্যন্ত পক্ষপাত জন্মাইয়াছিলেন ; সুতরাং তিনি ধারণ করিয়াছেন বলিয়াই মুনিবেশের নির্দ্দোষতা মনে করিতেছিলাম ; তাঁহার অঙ্গে যৌবন ছিল বলিয়াই যৌবনের সৌন্দর্য্য নিশ্চয় করিতেছিলাম ; তাঁহার কর্ণে স্থান পাইয়াছিল বলিয়াই পারিজাত পুষ্পের রমণীয়তা স্থির করিতেছিলাম ; তিনি বাস করেন বলিয়াই স্বর্গলোকের মনোহরতা বোধ করিতেছিলাম এবং তাঁহার রূপসমৃদ্ধিতেই, আমার পক্ষে কামদেব অজেয় বলিয়া স্থির করিতেছিলাম। (ছ) তিনি দূরবর্ত্তী হইলেও, সূর্য্যের প্রতি পদ্মিনীর ন্যায়, চন্দ্রের প্রতি সমুদ্র-জলের ন্যায় এবং মেঘের প্রতি ময়ূরীর ন্যায় আমিও তাঁহারই অভিমুখী হইয়া রহিলাম। (ঝ) তাঁহার বিরহ-কষ্টে বহির্গমনোন্মুখ আমার জীবনের রক্ষামালার ন্যায় সেই স্ফটিকময় জপমালা, সেই ভাবেই কণ্ঠে ধারণ করিতেছিলাম। (ঞ) সেই পারিজাতমঞ্জরীটিও তাঁহার সম্বন্ধে গোপনীয় আলাপ

---

(१) दूरस्थापि, दूरतःस्थितस्यापि।

मुकुलकर्णपूरायमाणेन रोमाञ्चजालेन कण्टकितैककपोलफलका निष्पन्द-मतिष्ठम्। (ट)

अथ ताम्बूलकरङ्कवाहिनी मदीया तरलिका नाम मयैव सह गता स्नातु-मासीत्। सा च पश्चाच्चिरादिवागत्य तथावस्थितां शनैः शनैः (१) मामवादीत्—"भर्त्तृदारिके! यौ तौ तापसकुमारकौ दिव्याकारावस्माभिरच्छोदसरस्तीरे दृष्टौ, तयोरेको येन भर्त्तृदुहितुरियमवतंसीकृता (२) सुर-तरु-कुसुम-मञ्जरी, (३) स तस्माद्द्वितीयादात्मनो रक्षन् दर्शनमतिनिभृतपदः कुसुमित-लता-सन्तान-गहनान्तरेणागत्य मामागच्छन्तीं पृष्ठतो भर्त्तृदारिकामुद्दिश्याप्राक्षीत् (ठ)—"बालिके! केयं कन्यका, कस्य वापत्यम्, किमभिधाना, क्व वा गच्छति"

मुनिकुमारार्पितकर्णैव कर्णलग्नया अन्योऽपि रहस्यमालपितुं कर्णे लगति। पारिजातमञ्जर्य्या उपलक्षिता। अत्र रहस्यालापप्रस्तावोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) तथैवेति। तस्य कुमारस्य करतलस्पर्शसुखाज्जन्म यस्य तेन, कदम्बमुकुलस्य यः कर्णपूरस्तद्वदाचरता, तेन तत्स्मरणजनितेन रोमाञ्चजालेन च, तथैव पूर्ववदेव कण्टकितं सञ्जातकण्टकं एकं कपोलफलकं गण्डस्थलं यस्याः सा तादृशी च सती निष्पन्दमतिष्ठम्। अत्र कण्ड्गतोपमालङ्कारः।

(ठ) अथेति। दिव्याकारौ परमसुन्दरमूर्त्ती। इयं सुरतरोः पारिजातस्य कुसुममञ्जरी अवतंसीकृता कर्णभूषणीकृता। द्वितीयात् कपिञ्जलादित्यर्थः, आत्मनो दर्शनं रक्षन् निवारयन् कपिञ्जलो यथात्मानं न पश्यति तथेत्यर्थः, अतिनिभृतपदः अतिशयनि शब्दपदसञ्चारः, कुसुमितो लतासन्तानो वल्लीसमूहो यस्मिन् तादृशस्य गहनस्य निविड़वनस्य अन्तरेण मध्येन।

आरम्भ করিয়াই যেন, সেইভাবেই আমার কর্ণে সংলগ্ন ছিল। (ট) এবং তাঁহার করতল-স্পর্শ-সুখে উৎপন্ন, কদম্ব-কলিকার কর্ণপূরের ন্যায় সেই রোমাঞ্চসমূহে সেইভাবেই আমার একদিকের গণ্ডস্থল কণ্টকিত হইয়াছিল—এই অবস্থায় আমি নিশ্চলভাবে অবস্থান করিতেছিলাম।

(ঠ) তাহার পর, তরলিকা নামে আমার তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী, আমারই সহিত স্নান করিতে গিয়াছিল; সে, বহুকালের পর আসিয়া সেই অবস্থায় আমাকে ধীরে ধীরে বলিল—"রাজকন্যে! আমরা অচ্ছোদ সরোবরের তীরে, মনোহর-আকৃতি সেই যে দুইটি মুনিকুমারকে দেখিয়াছিলাম, তাঁহাদের মধ্যে একটি - যিনি রাজকন্যার (আপনার) কর্ণে এই পারিজাত-কুসুমের মঞ্জরীটি অবতংস করিয়া দিয়াছিলেন, তিনি, সেই দ্বিতীয় মুনিকুমার হইতে আত্ম-দর্শন গোপন করতঃ, অত্যন্ত নিঃশব্দপদসঞ্চারে পুষ্পিত-লতা-পরিপূর্ণ নিবিড় বনের ভিতর দিয়া আসিয়া, পিঠের দিক্ হইতে আপনার উদ্দেশে, আসিবার সময়ে আমাকে জিজ্ঞাসা করিলেন—

(१) क्वचित् शनैःशनैरिति द्विरुक्तिर्नास्ति। (२) कर्णावतंसीकृता। (३) सुरतरुमञ्जरी।

इति। मयोक्तं—'एषा खलु भगवतः श्वेतभानोरंशुसम्भूतायां (१) अप्सरसि गौर्य्यां समुत्पन्ना, देवस्य सकल-गन्धर्व-मुकुट-मणि-शलाका-शिखरोल्लेख-मसृणित-चरण-नख-चक्रस्य प्रणय-प्रसुप्त-गन्धर्व-कामिनी-कपोल पत्रलता-लाञ्छित-भुज-तरु-शिखरस्य पादपीठीकृत-लक्ष्मी-करकमलस्य गन्धर्वाधिपतेर्हंसस्य दुहिता महाश्वेता नाम, गन्धर्वाधिवासं हेमकूटाचलं (२) अभिप्रस्थिता' (ड) इति कथिते च मया, किमपि चिन्तयन् मुहूर्त्तमिव तूष्णीं स्थित्वा विगतनिमेषेण चक्षुषा चिरमभिवीक्षमाणो मां सानुनयमर्थितामिव दर्शयन् पुनराह—

(ड) बालिक इति। श्वेतभानोः शुभ्रांशोश्चन्द्रस्य, अंशुसम्भूतायां किरणेभ्यो जातायां। सकलानां गन्धर्वाणां मुकुटेषु या मणिशलाकास्तासां शिखरैरग्रैः उल्लेखेन नमस्कारकाले घर्षणेन मसृणितं श्लक्ष्णीकृतं चरणयोर्नखानां चक्रं समूहो यस्य तस्य। एतेन महाधिपत्यं द्योतितम्। प्रणयेन प्रसुप्ताः सह सुप्ता या गन्धर्वकामिन्यस्तासां कपोलेषु याः पत्रलताः पत्रलताकाराश्चित्रविशेषास्ताभिर्लाञ्छिते चिह्निते रमणसमये आवेष्टन-क्रमेण तासां मस्तकधारणेन भुजयोः कपोललग्नत्वादिति भावः, भुजौ तरू इव दीर्घत्वात् स्थूलत्वाच्च वृक्षाविव तयोः शिखरे उपरिभागद्वयं यस्य तस्य। एतेन कलाकौशलं सूचितम्। पादपीठीकृतं पादपीठवत् तुच्छीकृतं लक्ष्म्या अपि करकमलं येन तस्य। एतेनाकातरदानशीलत्वं सूचितं। अथवा पादपीठीकृतं चरणासनीकृतं लक्ष्म्याः करकमलं येन तस्य। एतेन सम्पदः पराकाष्ठा ध्वनिता। गन्धर्वाणामधिवासं वासस्थानं। अत्र हंसस्य प्राधान्यप्रतिपादनकार्य्यं प्रति कारणत्रयोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः।

(ढ) इतीति। अर्थितां याचकत्वं दर्शयन्निव। कल्याणिनी शुभलक्षणवती, अविसंवादिनी "यत्राकृति-स्तत्र गुणा वसन्ति" इति न्यायाद्गुणवत्त्वे अव्यभिचारिणी सर्वथा सम्भाव्यमानसकलगुणेत्यर्थः. बालभावेऽपि

(ড) 'বালিকে! এই কন্যাটি কে? কাঁহারই বা সন্তান? উহার নামই বা কি? এবং কোথায়ই বা গেল'। তাহার পর আমি বলিলাম— নমস্কার করিবার সময়ে সকল গন্ধর্ব্ব-দিগের মুকুটস্থিত মণিশলাকার অগ্রভাগের সঙ্ঘর্ষ, যাঁহার চরণের নখসমূহকে মসৃণ (পালিশ) করিয়া থাকে; প্রণয়-সুপ্ত গন্ধর্ব্ব-রমণীগণের গণ্ডস্থলের পত্রলতা-চিহ্নে, যাঁহার বৃক্ষতুল্য-বিশাল বাহুযুগলের উপরিভাগ চিহ্নিত হইয়া থাকে এবং যিনি লক্ষ্মীর পাণি-কমলকে পাদপীঠ করিয়া-ছেন; সেই গন্ধর্ব্বাধিপতি মহারাজ হংসের কন্যা ইনি, ভগবান্ চন্দ্রের কিরণ হইতে উৎপন্ন গৌরীনামক অপ্সরার গর্ভে উৎপন্ন হইয়াছেন; ইহাঁর নাম 'মহাশ্বেতা', ইনি এখন, গন্ধর্ব্বগণের বাসস্থান হেমকূট পর্ব্বতে গেলেন' (ঢ) আমি এই কথা বলিলে সেই মুনিকুমার, কোন বিষয় চিন্তা করতঃ কিছুকাল নীরবে থাকিয়া নির্নিমেষ-নয়নে বহুকাল যাবৎ আমার প্রতি নিরীক্ষণ করিয়া অনুনয়ের সহিত প্রার্থিভাব জানাইয়াই যেন, পুনরায় বলিলেন—'বালিকে! তোমার এই আকৃতি শুভলক্ষণ-সম্পন্ন; সুতরাং তুমি অবশ্যই গুণবতী হইবে এবং বালিকা হইলেও

(१) अंशुभूतायां। (२) हेमकूटपर्वतं।

"बालिके! कल्याणिनी तवाविसंवादिनी अचपला बालभावेऽप्याकृतिरियम्। तत् करोषि मे वचनमेकमभ्यर्थ्यमाना?" इति (ढ)। ततो मया सविनयमुपरचिताञ्जलिपुटया दर्शितादरमभिहितः—'भगवन्! कस्मादेवमभिधत्से, काहम्। महात्मानः सकलत्रिभुवनपूजनीया भवादृशाः (१) पुण्यैर्विना निखिलकल्मषापहारिणीमस्मद्विधेषु दृष्टिमपि न पातयन्ति, किं पुनराज्ञाम्; तद्विस्रब्धमादिश्यतां कर्त्तव्यम्, अनुगृह्यतामयं जन इति (ण)। एवमुक्तश्च मया सस्नेहया सखीमिवोपकारिणीमिव प्राणप्रदामिव दृष्ट्वा मामभिनन्द्य निकटवर्त्तिनस्तमालपादपात् पल्लवमादाय निष्पीड्य तटशिलातले तेन गन्धगजमदसुरभिपरिमलेन रसेन उत्तरीयवल्कलैकदेशाद्विपाट्य पट्टिकां स्वहस्तकमल-

---

बालकत्वेऽपि अचपला, तव इयमाकृतिर्दृश्यत इति शेषः। तत्तस्मात्। अभ्यर्थ्यमाना मया प्रार्थ्यमाना त्वं, एकं वचनं वाक्यपालनं करोषि करिष्यसि किमिति काकुः। करोषीति भविष्यत्सामीप्ये वर्त्तमाना।

(ण) तत इति। दर्शित आदरो यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। अभिधत्से ब्रवीषि अहं का तुच्छेत्यर्थः। तत्तस्मात्, विस्रब्धं विश्वस्तं यथा स्यात्तथा कर्त्तव्यं मया करणीयं आदिश्यतां, अयं मल्लक्षणो जनः अनुगृह्यतां तेनादेशेनेति भावः।

(त) एवमिति। किञ्च, मया एवमुक्तः स कुमारः पत्रिकामर्पितवानित्यन्वयः। सस्नेहया दृष्ट्या, सखीमिव उपकारिणीमिव प्राणप्रदामिव च मामभिनन्द्य अत्र तिसृणामेव जात्युत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः। तटशिलातले तीरस्थपाषाणोपरि, निष्पीड्य संमर्द्य, गन्धगजस्य मदवत् दानजलवत् सुरभिघ्राणतर्पणः परिमलो गन्धो यस्य तेन, रसेन निर्यासेन, उत्तरीयं यद्वल्कलं तस्य एकदेशात् पट्टिकां एकदलं

তোমাকে চঞ্চলা বলিয়া বোধ হয় না; অতএব আমি প্রার্থনা করিতেছি যে, তুমি আমার একটি বাক্য রক্ষা করিবে কি?।' (ণ) তাহার পর আমি সবিনয়ে কৃতাঞ্জলি হইয়া আদর দেখাইয়া বলিলাম—'ভগবন্! কেন আপনি এইরূপ বলিতেছেন, আমি কে!!!। সমস্ত ত্রিজগতের পূজনীয় আপনাদের ন্যায় মহাত্মারা, পুণ্যব্যতীত আমাদের ন্যায় লোকের প্রতি, সমস্ত-পাপ-বিনাশক দৃষ্টিপাতও করেন না; সুতরাং আদেশের বিষয়ে আর বলিবার কি আছে; অতএব আপনি নিঃশঙ্কচিত্তে আমার প্রতি কর্ত্তব্যের আদেশ করুন ও এই ব্যক্তিকে অনুগৃহীত করুন।' (ত) আমি এইরূপ বলিলে তিনি, সস্নেহ দৃষ্টিপাতে আমাকে যেন সখীর ন্যায়, উপকারিণীর ন্যায় ও প্রাণদায়িনীর ন্যায় অভিনন্দিত করিয়া, নিকটবর্ত্তী তমালবৃক্ষ হইতে একটি পল্লব আনয়ন করিয়া, তাহা তীরবর্ত্তী প্রস্তরখণ্ডের উপরে মর্দ্দন করিয়া, গন্ধহস্তীর মদজলের ন্যায় মনোহর সৌরভ-সম্পন্ন সেই রসদ্বারা, উত্তরীয় বল্কলের এক দিক্ হইতে একখণ্ড পটী বাহির করিয়া তাহাতে, স্বকীয় করকমলের কনিষ্ঠাঙ্গুলীর নখাগ্রদ্বারা

---

(१) सकलत्रिभुवनाभिपूजितास्त्वादृशाः।

कनिष्ठिका-नख-शिखरेणाभिलिख्य 'इयं पत्रिका त्वया तस्यै कन्यकायै प्रच्छन्न-मेकाकिन्यै देया' इत्यभिधायार्पितवान्"—इत्युक्त्वा च सा ताम्बूलभाजनादाकृष्य तामदर्शयत् (त)। अहन्तु तेन तत्सम्बन्धिनालापेन शब्दमयेनापि स्पर्शसुख-मिवान्तर्जनयता, श्रोत्रविषयेणापि रोमोद्गमानुमितसर्वाङ्गानुप्रवेशेन मदनाविश-मन्त्रेणेवाविश्यमाना तस्याः करतलादादाय तां वल्कलपत्रिकां तस्यामिमामभि-लिखितामार्य्यामपश्यम्—(थ)।

'दूरं मुक्तालतया विससितया विप्रलोभ्यमानो मे।
हंस इव दर्शिताशो मानसजन्मा त्वया नीतः॥' (द)

विपाट्य उद्धृत्य, तत्र स्वहस्तकमलस्य कनिष्ठिकाया अङ्गुल्याः नखस्य शिखरेण अग्रेण अभिलिख्य। प्रच्छन्नं अतीवगुप्तं यथा स्यात्तथा। सा तरलिका। तां पत्रिकाम्।

(थ) अहमिति। शब्दमयेनापि अन्तरन्तःकरणे स्पर्शसुखं जनयतेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। श्रोत्रविषयेणापि शब्दमयत्वात् केवलकर्णग्राह्येणापि, रोमोद्गमैः सर्वाङ्गेषु रोमाञ्चैः, अनुमितः सर्वेषु अङ्गेषु अनुप्रवेशो यस्य तादृशेनेव, सर्वेष्वङ्गेषु प्रवेशाभावे सर्वेष्वेव तेषु रोमाञ्चासम्भवादिति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। मदनाविशमन्त्रेणेव कामाधिष्ठानजनकीभूतमन्त्रेणेव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। तत्सम्बन्धिना आलापेन, आविश्यमाना अधिष्ठीयमाना सती। तस्यास्तरलिकायाः। आर्य्यां आर्य्याच्छन्दो बद्धामचरश्रेणीम्।

(द) दूरमिति। हे सुन्दरि! त्वया विससितया मृणालवद्धवलवर्णया मुक्तालतया "गृह्यतामियमक्षमाला" इत्युक्त्वा मम करे विन्यस्तेन स्वकीयमुक्तामयहारेण करणेन, विप्रलोभ्यमानो विशेषप्रकर्षेण स्वसङ्गमलोभं प्राप्यमाणः, मामुद्दिश्यात्मन्यपि कामावेशेनैव तादृशचातुरीकरणादिति भावः, अतएव च दर्शिता सूचिता आशा स्वसङ्गमाशंसा यस्य सः, मे मम मानसाच्चित्तात् जन्म यस्य स मानसजन्मा मनसिजः कामः, हंसपक्षे तु मुक्तालतया मुक्तामयहारवल्लभ्यमानेन, विससितया शुभ्रकृणालेन करणेन, विप्रलोभ्यमानः कीनचिज्जनेन

লিখিয়া 'একাকিনী থাকিবার সময়ে সেই কন্যাটির নিকট, তুমি এই পত্রখানা অত্যন্ত গুপ্তভাবে দিবে' এই কথা বলিয়া সেই পত্রখানা আমার নিকট দিলেন।" এই কথা বলিয়া তরলিকা তাম্বূলের পাত্র হইতে সেই পত্রখানা বাহির করিয়া আমাকে দেখাইল। (থ) আমি কিন্তু, তাঁহার বিষয়ের সেই আলাপে একেবারে আবিষ্ট হইয়া পড়িলাম; কারণ—সে কথাগুলি শব্দময় হইলেও, অন্তরে যেন স্পর্শসুখ জন্মাইতেছিল, কেবল কর্ণের বিষয় হইলেও, রোমাঞ্চ উৎপন্ন হওয়ায় যেন আমার সকল অঙ্গে প্রবেশ করিয়াছিল বলিয়া অনুমান হইয়াছিল আর সেই কথাগুলিকে যেন কামাবেশের মন্ত্র বলিয়া বোধ হইতেছিল; তখন আমি তরলিকার হস্ত হইতে সেই বল্কলের পত্রখানা আনয়ন করিয়া, তাহাতে লিখিত এই আর্য্যাটি দেখিলাম—

(দ) "(হে সুন্দরি!) কোন ব্যক্তি যেমন মুক্তাময় হারের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মৃণালদ্বারা অত্যন্ত লোভ জন্মাইয়া, আপনার অভিমত দিক্ দর্শন করাইয়া, মানস-সরোবর-জাত কোন

अनया च मे दृष्टया दिङ्मोहभ्रान्त्येव प्रनष्टवर्त्मनः, बहुलनिशयेवान्धस्य, जिह्वोच्छित्त्येव मूकस्य, इन्द्रजालिकपिच्छिकयेवातत्त्वदर्शिनः, ज्वरप्रलापप्रवृत्त्येवासम्बद्धभाषिणः, दुष्टनिद्रयेव विषविह्वलस्य, लोकायतिकविद्ययेवाधर्मरुचेः,

---

विशेषप्रकर्षेण भक्षणलोभं प्राप्यमानः, तथा दर्शिता आशा स्वाभिमतदिक् यस्मै सः, मानसे तदाख्यसरोवरे जन्म यस्य स तादृशो हंस इव, दूरं नीतः कामुकेषु कामिनीकर्तृकप्रलोभनस्यातीवोद्दीपकत्वादत्यन्तं वर्द्धितः। अतएव शीघ्रमिदानीं तन्निवृत्तेरुपायस्त्वया विधेय इति भावः। हंसपक्षे तु दूरं नीतो विप्रकृष्टदेशं प्रापितः, भक्षणलोभेन हंसस्य नीयमानतृणालानुसरणादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। आर्या जातिः। हंसपक्षे विससितयेति अग्निस्तोकादिवत् विशेषणस्य परनिपातः, तथा स्वल्पं निर्भर्त्सितमिति विससिता "स्त्री स्यात् काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि" इत्यमरोक्तदिशा स्त्रीत्वम्।

(ध) अनयेति। किञ्च। मे इति मयेत्यर्थकमव्ययम्। अनया पत्रिकया आर्यया वा मे मया दृष्टया सत्या, स्मरातुरस्य मे मम मनसः सुतरामाधिक्येन दोषविकारोपचयः कामविकारवृद्धिरक्रियत इत्यन्वयः। केन कस्येवेत्याकाङ्क्षायामुपमानानि योज्यानि। दिङ्मोहभ्रान्त्या दिग्भ्रमात्मकभ्रान्त्या, प्रनष्टं विलुप्तं इदन्तया परिचेतुमशक्यं वर्त्म उद्देश्यीभूतः पन्था यस्य तस्य जनस्येव, उत्पथगामिनो यथा पुनर्दिग्भ्रमेण किङ्कर्त्तव्यताविमूढत्वरूपदोषविकारोपचयः क्रियते तद्वदक्रियतेति सरलार्थः। अत्र दिङ्मोहपदेनैवोपपत्तेः पुनर्भ्रान्तिपदोपादानादधिकपदत्वदोषः, स च दिङ्मोहेनैवेति पाठेनैव समाधेयः। बहुलनिशया कृष्णपक्षरात्र्या अन्धस्येव, अत्रापि किङ्कर्त्तव्यताविमूढत्वरूपदोषविकारोपचयः। जिह्वाया उच्छित्त्या उच्छेदेन मूकस्येव, अत्र उच्चारणात्यन्ताशक्तिरूपो दोषविकारोपचयः। इन्द्रजालिकस्य कुहकिनो जनस्य पिच्छिकया अतत्त्वदर्शिनः स्वभावतो भ्रान्तस्येव, अत्र याथार्थ्यस्यैकान्तानिर्द्धारणरूपो दोषविकारोपचयः। ज्वरप्रलापस्य प्रवृत्त्या आरम्भेण असम्बद्धभाषिणः स्वभावादेव असङ्गतवादिन इव, अत्राविश्रान्तभाषणरूपो दोषविकारोपचयः। दुष्टनिद्रया विषवेगेन संज्ञालोपरूपनिद्रया विषविह्वलस्येव, अत्र पुनः संज्ञालाभाभावरूपो दोषविकारोपचयः। लोकायतेन सर्वेष्वेव लोकेषु नियतेन प्रत्यक्षप्रमाणवादेन संसृष्ट इति लोकायतिको नास्तिकशिरोमणिश्चार्वाकः तस्य केवलप्रत्यक्षप्रमाणवादित्वात्। "क्वचिदुत्तरपदस्यापी"तिपरपदे वृद्धिः। तस्य विद्या तत्प्रणीतशास्त्रं—"यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः। न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः" इत्यादिका हि तस्य विद्या तया, अधर्मरुचेः स्वभावादेवाधर्ममतेर्जनस्येव, अत्र सर्वथा नास्तिक्यरूपो दोषविकारोपचयः। मदिरया मद्यपानेन उन्मत्तस्येव, अत्र मत्तता-

---

হংসকে দূরে লইয়া যায়; সেইরূপ তুমি, মৃণালের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মুক্তামালাদ্বারা অত্যন্ত লোভ জন্মাইয়া, আশা দেখাইয়া আমার কামবেগকে অত্যন্ত বর্দ্ধিত করিয়াছ।"

(ধ) আমি এই আর্য্যাটি পড়িয়া দেখিলাম, তাহাতে,—দিগ্‌ভ্রমবশতঃ উৎপথগামী ব্যক্তির ন্যায়, কৃষ্ণপক্ষের রাত্রিতে অন্ধলোকের ন্যায়, জিহ্বা-চ্ছেদন করায় মূকের (বোবার) ন্যায়, ঐন্দ্রজালিকের পিছিতে স্বভাবতই ভ্রান্ত ব্যক্তির ন্যায়, জ্বরকালীন-প্রলাপের আরম্ভে স্বভাবতই অসম্বদ্ধ-ভাষীর ন্যায়, দূষিতনিদ্রাদ্বারা বিষবেগে বিকল ব্যক্তির ন্যায়, নাস্তিকের

मदिरयेवोन्मत्तस्य, दुष्टावेश-(१) क्रिययेव पिशाचग्रहस्य, दोषविकारोपचयः सुतरामक्रियत (२) स्मरातुरस्य (३) मे मनसः, (ध) येनाकुलीक्रियमाणा सरिदिव पूरेण विह्वलतामभ्यगमम् (४) (न)। ताञ्च द्वितीयदर्शनेन कृत-महापुण्यामिव अनुभूतसुरलोकवासामिव देवताधिष्ठितामिव लब्धवरा-मिव पीतामृतामिव समासादित-त्रैलोक्य-राज्याभिषेकामिव मन्यमाना, (प)

धिक्यरूपो दोषविकारोपचयः। तथा दुष्टा विशेषदुःखजनकत्वेन दूषिता या आवेशक्रिया नाडीनक्षत्रेषु पापग्रहाणां प्रवेशकार्य्यं तया, पिशाचेन ग्रहो ग्रहणं यस्य तस्य पिशाचाविष्टस्य जनस्येव, अत्र विशेष-दुःखभोगो दोषविकारोपचयः। पापग्रहैर्नाडीनक्षत्रावेशे फलमुक्तं यथा ज्योतिषे—"देहादेहार्थहानिः स्या-ज्जन्मर्क्षे उपतापिते। कर्मर्क्षे कर्मणां हानिः पीडा मनसि मानसे।" इत्यादिकं। अत्र मालोपमालङ्कारः, तथा दिग्मोहभ्रान्त्यादिना प्रनष्टवर्त्म प्रभृतेर्दोषविकारोपचयः क्रियते मम तु अक्रियतेति कालभेदात् "काप्य-भिख्या तयोरासीत्" इत्यादिदर्पणोदाहृतवत् भग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'यथा क्रियते दिग्मोहभ्रान्त्या प्रनष्ट-वर्त्मनः, बहलपक्षनिशयान्धस्य...तथा अक्रियत' इति पाठेन समाधेयः।

(न) येनेति। येन दोषविकारोपचयेन आकुलीक्रियमाणा अस्थिरीक्रियमाणाहं पूरेण जलप्रवाहेण सरिन्नदीव विह्वलतां अभ्यागमं सर्वतोभावेन प्राप्तवती। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः, तथा सरित् पूरेण वह्वलतामभिगच्छति, अहन्तु अभ्यगममिति कालभेदात् पुरुषभेदाच्च पूर्ववद्भग्नप्रक्रमतादोषः, सोऽपि च 'यथा सरित् पूरेण विह्वलतामभिगच्छति, तथाहं विह्वलतामभ्यगम'मिति पाठेन परिहरणीयः।

(प) तामिति। किञ्च, द्वितीयदर्शनेन पुण्डरीकस्य पुनरवलोकनेन हेतुना, तां तरलिकां कृतमहा-पुण्यामिव, अनुभूतः सुरलोके स्वर्गे वासो यया तामिव, कयाचिद्देवतया अधिष्ठितामाश्रितामिव, लब्धवरा-मिव, पीतामृतामिव, तथा समासादितः प्राप्तः त्रैलोक्यराज्ये अभिषेको यया तामिव च मन्यमानाहं पुनःपुनः पर्य्यपृच्छमिति परेणान्वयः। अत्र महापुण्यकरणाद्युत्प्रेक्षणात् पञ्चानाम क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा चात्मनोऽपि महती पुनस्तद्दर्शनेच्छा व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

বিদ্যা অভ্যাস করায় স্বভাবতই অধার্ম্মিক লোকের ন্যায়, মদ্যপানে উন্মত্তের ন্যায় এবং জন্মনক্ষত্রপ্রভৃতিতে পাপগ্রহের সঞ্চার হওয়ায় ভূতাবিষ্ট ব্যক্তির ন্যায়, আমার কামাতুর চিত্তের আরও কামবিকার বৃদ্ধি করিয়াছিল; (ন) যাহাতে আমাকে আকুল করিয়াছিল এবং জোয়ারের জলে নদীর ন্যায় আমি বিহ্বল হইয়া পড়িয়াছিলাম। (প) তরলিকা, আর একবারও সেই মুনিকুমারকে দেখিতে পাইয়াছিল বলিয়া, সে যেন কোন মহাপুণ্য করিয়াছিল, স্বর্গলোকেই যেন বাস করিয়াছিল, কোন দেবতা যেন তাহাতে অধিষ্ঠান করিয়া-ছিলেন, এবং সে যেন বর পাইয়াছিল ও অমৃত পান করিয়াছিল আর ত্রিলোকের রাজত্বেই

---

(१) दूरावेश···। (२) अजायत। (३) स्मरातुर स्य। (४) अभ्यागमं, अगमं।

सततसन्निहितामपि दुर्लभदर्शनामिव अतिपरिचितामप्यपूर्वामिव सादरमाभाषमाणा, (फ) पार्श्वावस्थितामपि (१) सर्वलोकस्योपर्य्यवस्थितामिव पश्यन्ती, (ब) कपोलयोरलकलताभङ्गेषु च सोपग्रहं स्पृशन्ती, (भ) विपरीतमिव परिजनस्वामिसम्बन्धमुपदर्शयन्ती, (म) 'तरलिके! कथय (२) कथं स त्वया दृष्टः, किमभिहितासि तेन, कियन्तं कालमवस्थितासि तत्र, कियदनुसरन्नस्मानसावागतः' इति पुनः पुनः पर्य्यपृच्छम् (य)। अनयैव च कथया तया सह तस्मिन्नेव प्रासादे तथैव प्रतिषिद्धाशेषपरिजनप्रवेशा दिवसमत्यवाहयम्। (र)

(फ) सततेति। दुर्लभदर्शनामिव, पुण्डरीकस्य द्वितीयदर्शनेन हेतुनेति भावः। अपूर्वामिव नूतनागतामिव, पूर्ववद्भावः। आभाषमाणा आलपन्ती। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षयोः पूर्ववत्संसृष्टिः।

(ब) पार्श्वेति। अत्रापि पुण्डरीकस्य द्वितीयदर्शनेन हेतुनेति भावः, क्रियोत्प्रेक्षा चालङ्कारः।

(भ) कपोलयोरिति। कपोलयोर्गण्डयोः, अलकलताभङ्गेषु लतावल्लम्बमानस्खलितकुञ्चितकेशकलापेषु सोपग्रहं सानुकम्पं सादरमित्यर्थः स्पृशन्ती स्पर्शं कुर्वती। "उपग्रहः पुमान् बन्द्यामुपयोगेऽनुकूलने।" इति मेदिनी। अलकलताभङ्गेष्विति ग्रामे गच्छतीत्यादिवत् कर्म्मण्यधिकरणत्वविवक्षया सप्तमी।

(म) विपेति। परिजनस्वामिसम्बन्धं सेव्यसेवकभावं विपरीतमिव उपदर्शयन्ती, अहं सेविका सा तु सेव्या इत्थम्भावं प्रदर्शयन्तीत्यर्थः. तस्य द्वितीयदर्शनेन मयैव तस्या महागौरवादरकरणादिति भावः।

(य) तत्रेति। असौ कुमारः, अस्मान् स्वभवनमागच्छन्तीरिति शेषः, अनुसरन् कियदागतः।

(र) अनयेति। तया तरलिकया। प्रतिषिद्धः अशेषाणां सर्वेषां परिजनानां प्रवेशो यया सा।

যেন অভিষেক লাভ করিয়াছিল বলিয়া, আমি তাহাকে মনে করিতেছিলাম; (ফ) আর সর্ব্বদা নিকটে থাকিলেও তাহার দর্শন যেন দুর্ল্লভ এবং সে অত্যন্ত পরিচিত হইলেও যেন নবাগত ব্যক্তি—এইরূপ মনে করিয়া আমি আদরের সহিত তাহার সঙ্গে আলাপ করিতেছিলাম; (ব) আর সে পার্শ্বে থাকিলেও সকল লোকেরই যেন উপরে রহিয়াছে, এইরূপ দেখিতেছিলাম; (ভ) আর তাহার গণ্ডদ্বয়ের ও কুঞ্চিত কেশকলাপের উপরে আদরের সহিত স্পর্শ করিতেছিলাম; (ম) সেব্য-সেবক-সম্বন্ধটাকে যেন বিপরীতভাবে দেখাইতেছিলাম. (য) এবং 'তরলিকে! বল, তুমি কি ভাবে তাঁহাকে দেখিয়াছ, তিনি তোমাকে কি বলিয়াছেন, তুমি কতকাল সেখানে ছিলে এবং তিনি আমাদের অনুসরণ করিতে করিতে কতদূর আসিয়াছিলেন' এই কথা বারবার তরলিকাকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম। (র) এবং সমস্ত পরিজনবর্গকে প্রবেশ করিতে নিষেধ করিয়া, সেই অট্টালিকার ভিতরেই তরলিকার সহিত সেইভাবে সেই কথা নিয়াই সে দিন অতিবাহিত করিলাম।

(१) पार्श्वस्थामपि। (२) कथय कथय।

अथ मदीयेनेव हृदयेन कृतरागसंविभागे लोहितायति गगनतलोपान्तावलम्बिनि (१) रविबिम्बे, (ल) सरागदिवसकरानुरक्तायां कृतकमलशयनायामनङ्गातुरायामिव पाण्डुतां व्रजन्त्यामातपलक्ष्म्याम्, (व) गैरिकगिरिसलिलप्रपातपाटलेषु कमलवनेभ्यः समुत्थाय (२) वनगजयूथेष्विव पुञ्जीभवत्सु भास्करकिरणेषु, (श) गगनावतारविश्रामलालसानां रविरथवाजिनां हर्षहेषारवप्रतिशब्दकेन सह विशति मेरुगिरिगह्वरं वासरे, (ष) मुकुलित-रक्त-

(ल) अथेति। रविबिम्बे सूर्य्यमण्डले, मदीयेन हृदयेन कृतः रागसंविभागः रागोऽनुराग एव रागो रक्तिमा तस्य संविभागो विभज्य दानं यस्मै तस्मिन्निव सति. लोहितायति आरक्तीभवति, गगनतलस्य उपान्तात् प्रान्तप्रायदेशात् अवलम्बिनि पतनोन्मुखे च सति। अत्र अनुरागरक्तिम्नोर्भेदेऽपि रागपदश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, रागसंविभागकरणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) सरागेति। आतपलक्ष्म्यां सूर्य्यालोकश्रियां, रागो रक्तिमैव रागोऽनुरागस्तेन सहेति सरागो यो दिवसकरः तस्मिन्ननुरक्तायां लोहितायामनुरागिण्याञ्च सत्यां, अतएव कृतं कमले पद्मे पद्ममयशय्यायाञ्च शयनं स्थितिः स्वापश्च यया तस्यां अतएव च अनङ्गातुरायां कामार्त्तायामिव सत्यां पाण्डुतां व्रजन्त्यां सत्याम्। अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां श्लिष्टविशेषणसाम्याच्च आतपलक्ष्मीदिवसकरयोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गद्वयं गुणोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) गैरिकेति। गैरिको धातुविशेषस्तद्युक्तो गिरिर्गैरिकगिरिस्तस्य सलिलेषु प्रपातेन पतनेन पाटलेषु श्वेतरक्तेषु, तत्सलिलस्यापि गैरिकसंयोगेन श्वेतरक्तत्वादिति भावः, भास्करकिरणेषु वनगजयूथेष्विव कमलवनेभ्यः समुत्थाय पुञ्जीभवत्सु सत्सु, तदानीं वन्यगजयूथानामपि तथैव पुञ्जीभवनादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(ष) गगनेति। वासरे दिवसे, गगनावतारात् आकाशमार्गे पर्य्यटनात् यो विश्रामस्तत्र लालसानां अभिलाषुकाणां रविरथवाजिनां सूर्य्यरथनियुक्तघोटकानां हर्षेण बहुपरिश्रमात् परं विश्रामलाभसम्भवादानन्देन

(ল) তাহার পর আমার হৃদয়ই যেন সূর্য্যমণ্ডলকে রাগ (অনুরাগ—রক্তিমা) বিভক্ত করিয়া দিল তাহাতে সূর্য্যমণ্ডল রক্তবর্ণ হইয়া আকাশের প্রান্তভাগ হইতে পতিত হইতে লাগিল; (ব) আলোকলক্ষ্মী, রাগান্বিত সূর্য্যের প্রতি অনুরক্ত হইয়া, পদ্মের উপর শয়ন করিয়া কামার্ত্ত হইয়াই যেন ক্রমে পাণ্ডুবর্ণ হইয়া উঠিল; (শ) গৈরিক-(গিরিমাটী) সংযুক্ত পর্ব্বতের নির্ঝর-জলের উপর পতিত হওয়ায় পাটলবর্ণ হইয়া সূর্য্যের কিরণসমূহ, বন্য হস্তিগণের ন্যায় পদ্মবন হইতে উঠিয়া একত্র পুঞ্জীভূত হইতে লাগিল; (ষ) সমস্ত আকাশ পর্য্যটন করিয়া বিশ্রাম করিতে অভিলাষী সূর্য্য-রথ-নিযুক্ত ঘোটকগণের আনন্দ-হ্রেষারবের প্রতিধ্বনির সহিত, দিনটা যেন সুমেরু পর্ব্বতের গুহার ভিতরে যাইয়া প্রবেশ

(१) गगनतलावलम्बिनि। (२) उत्थाय।

पङ्कजपुट-प्रविष्ट-मधुकरावलीषु (१) रवि-विरह-मूर्च्छान्धकारितहृदयास्विव (२) प्रारब्धनिमीलनासु पद्मिनीषु, (ख) ग्रासीकृत-सामान्य-मृणाललता-विवर-संक्रामितानीव परस्परहृदयान्यादाय विघटमानेषु रथाङ्गनाम्नां युगलेषु, (ङ) सा छत्रग्राहिणी समागत्य (३) अकथयत्—"भर्त्तृदारिके! तयोर्मुनिकुमारयोरन्यतरो द्वारि तिष्ठति, कथयति चाक्षमालामुपयाचितुमागतोऽस्मि" इति। (च)

यो हेषारवस्तस्य प्रतिशब्दकेन प्रतिध्वनिना सह, मेरुगिरिगह्वरं सुमेरुपर्वतगुहां विशति प्रविशतीव सति, नानाविधमहामणिकिरणैस्तद्गुहाया रात्रावपि दिवसवदालोकमयीकृतत्वात् सन्निहितसूर्य्याश्वप्रतिध्वनीनाञ्च तत्र प्रवेशसम्भवादिति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा सहोक्तिश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ख) मुकुलितेति। मुकुलितेषु सूर्य्यस्यास्तगमनान्मुद्रितेषु रक्तपङ्कजपुटेषु प्रविष्टा मधुकरावली भ्रमरश्रेणी यासां तासु तादृशीषु पद्मिनीषु, रविविरहेण या मूर्च्छा तया अन्धकारितानि सञ्जातान्धकाराणि हृदयानि यासां तासु तथोक्तास्विव सतीषु, रवेः पद्मिनीवल्लभत्वात् भ्रमराणाञ्चान्धकारवत् कृष्णवर्णत्वादिति भावः, अतएव प्रारब्धं निमीलनं मुद्रणं जड़ताप्राप्तिश्च याभिस्तासु तथाविधासु सतीषु, सूर्य्यास्ते पद्मिनीमुद्रणस्य मूर्च्छारम्भे च जड़ताप्राप्तेः स्वाभाविकत्वादिति भावः। अत्र कार्य्येण लिङ्गेन च रविपद्मिन्योर्नायकनायिकाव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः, हृदयेऽन्धकारोत्पत्तेरुत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ङ) ग्रासेति। रथाङ्गनाम्नां युगलेषु चक्रवाकदम्पतीषु, ग्रासीकृतया कवलीकृतया उभाभ्यामेव चञ्चुपुटेन उभयप्रान्तधृतयेत्यर्थः सामान्यया एकैकया मृणाललतया कर्त्र्या, विवरेण आत्मच्छिद्रपथेन करणेन संक्रामितानीव परस्परयोः सञ्चारितानीव परस्परहृदयान्यादाय गृहीत्वा विघटमानेषु वियुज्यमानेषु सत्सु, चक्रवाकदम्पतीनामपि निशागमे वियोगस्य स्वाभाविकत्वात् प्रणयप्राचुर्य्याच्च परस्परहृदययोः परस्परं प्रति रात्रौ सत्त्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) सेति। अन्यतरः एकः। अक्षमालामुपयाचितुमागतोऽस्मि, महाश्वेतया स्वकीयमुक्तामालां दत्त्वा तदीयाक्षमालाया आनीतत्वादिति भावः।

করিতে লাগিল; (খ) মুদ্রিতপ্রায় রক্তপদ্মের ভিতরে ভ্রমরশ্রেণী প্রবেশ করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সূর্য্যের বিরহে মূর্চ্ছার অন্ধকার আসিয়া তাহাদের হৃদয়ে উপস্থিত হইতেছে, এই অবস্থায় পদ্মিনীগণ মুদ্রিত হইতে আরম্ভ করিল; (ঙ) চক্রবাক ও চক্রবাকীরা চঞ্চুপুটদ্বারা এক একটা মৃণালের দুই দুই দিক্ দুই দুইটাতে ধারণ করিয়াছিল, তখন সেই মৃণালই যেন স্বকীয় ছিদ্র দ্বারা তাহাদের পরস্পরের হৃদয় পরস্পরের শরীরে প্রবেশ করাইয়া দিয়াছিল, সুতরাং তাহারা পরস্পরের হৃদয় লইয়া পরস্পর বিযুক্ত হইতে লাগিল—(চ) এমন সময়ে আমার সেই ছত্রধারিণী পরিচারিকা আসিয়া বলিল—

---

(१) मधुकर्य्यावलीषु। (२) विरहमूर्च्छान्धकारिहृदयास्विव। (३) आगत्य।

अहन्तु मुनिकुमारनामग्रहणादेव स्थानस्थितापि गतेव द्वारदेशं समुपजात-तदागमनाशङ्का समाहूयान्यतमं कञ्चुकिनं "गच्छ, प्रवेश्यताम्" इत्यादिश्य प्राहिणवम्। (क)

अथ मुहूर्त्तादिव तं तस्य, रूपस्येव यौवनम्, यौवनस्येव मकरकेतनम्, मकरकेतनस्येव वसन्तसमयम्, वसन्तसमयस्येव दक्षिणानिलम्, अनुरूपं सखायं मुनि-(१) कुमारकं कपिञ्जलनामानं जराधवलितस्य (२) कञ्चुकिनोऽनुमार्गेण चन्द्रातपस्येव बालातपमागच्छन्तं (३) अपश्यम् (ख)। अन्तिकमुपागतस्य (४) चास्य पर्य्याकुलमिव सविषादमिव शून्यमिव अर्थिनमिव अन्तर्गताकूतं (५)

(क) अहमिति। द्वारदेशं गतेव, उत्कण्ठातिशयादिति भावः। समुपजाता तस्य प्रियतमस्य पुण्डरीकस्य आगमनाशङ्का उपस्थितिसम्भावना यस्याः सा अहम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) अथेति। रूपस्य सौन्दर्य्यस्य अनुरूपं सखि यौवनमिव, यौवनस्य अनुरूपं सखायं मकरकेतनं कन्दर्पमिव, मकरकेतनस्यानुरूपं सखायं वसन्तसमयमिव, वसन्तसमयस्यानुरूपं सखायं दक्षिणानिलमिव, तस्य पुण्डरीकस्य अनुरूपं स्वसदृशं सखायं, चन्द्रातपस्य प्रभातकालीनचन्द्रालोकस्य अनुमार्गेण आगच्छन्तं बालातपं नवीनसूर्य्यालोकमिव, जराधवलितस्य वार्द्धक्येन शुक्लीकृतदेहस्य कञ्चुकिनः अनुमार्गेण पश्चात् पथा आगच्छन्तं, कपिञ्जलनामानं तं मुनिकुमारकमपश्यमित्यन्वयः। अत्र प्रथमा रशनोपमा द्वितीया च श्रौत्युपमा तयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। मुनिकुमारकमितित्यनुकम्पायां कप्रत्ययः।

(ग) अन्तिकमिति। निकटम्। अस्य कपिञ्जलस्य। पर्य्याकुलमिव अत्यन्तव्याकुलमिव। शून्यं सर्वोद्यमरहितमिव, अर्थिनं याचकमिव। अन्तर्गतं आकूतं अभिप्रायविशेषो यस्य तम्। अत्र आदिमे द्वे गुणोत्प्रेक्षे द्वितीये च द्वे जात्युत्प्रेक्षे तासाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

"রাজকন্যে! সেই মুনিকুমার দুইটির মধ্যের একটি আসিয়া দ্বারদেশে অবস্থান করিতেছেন এবং বলিতেছেন যে, 'আমি জপের মালা নিতে আসিয়াছি'।"

(ক) আমি কিন্তু 'মুনিকুমার' এই নাম উচ্চারণমাত্রেই সেই স্থানে থাকিয়াও দ্বারদেশেই যেন গমন করিলাম; এবং তিনিই আসিয়াছেন বলিয়া ধারণা জন্মিল, তাই একজন কঞ্চুকীকে আহ্বান করিয়া "আপনি যা'ন, সেই মুনিকুমারকে প্রবেশ করা'ন" এইরূপ আদেশ করিয়া তাঁহাকে প্রেরণ করিলাম।

(খ) তাহার পর অল্পকালমধ্যেই, সৌন্দর্য্যের যেমন যৌবন, যৌবনের যেমন কন্দর্প, কন্দর্পের যেমন বসন্তকাল এবং বসন্তকালের যেমন দক্ষিণ বায়ু, সেইরূপ সেই প্রিয়তম মুনি-কুমারের অনুরূপ সখা কপিঞ্জল নামক সেই দ্বিতীয় মুনিকুমারকে, প্রভাতকালীন চন্দ্রালোকের পশ্চাৎ পশ্চাৎ নবীন সূর্য্যালোকের ন্যায়, বার্দ্ধক্যনিবন্ধন ধবলদেহ কঞ্চুকীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতে দেখিলাম। (গ) তিনি আসিয়া নিকটে উপস্থিত হইলেন, তখন তাঁহার

(१) ऋषि...। (२) जराधवलस्य। (३) अनुयायिनं। (४) उपगतस्य। (५) अनुपरतोमिर्मितं।

आकारमलक्षयम् (ग)। उत्थाय च कृतप्रणामा सादरं स्वयमासनमुपाहरम् (घ)। उपविष्टस्य च बलादनिच्छतोऽपि प्रक्षाल्य चरणावुपमृज्य (१) चोत्तरीयांशुक-पल्लवेनाव्यवधानायां भूमावेव तस्यान्तिके समुपाविशम् (ङ)। अथ मुहूर्त्तमिव किमपि विवक्षुरिव स तस्यां मत्समीपोपविष्टायां (२) तरलिकायां चक्षुर-पातयत् (च)। अहन्तु विदिताभिप्राया दृष्ट्यैव 'भगवन्! अव्यतिरिक्तेयमस्म-च्छरीरात्, अशङ्कितमभिधीयताम्' इत्यवोचम्। (छ)

एवमुक्तश्च मया कपिञ्जलः प्रत्यवादीत्—"राजपुत्रि! किं ब्रवीमि, वागेव मे नाभिधेयविषयमवतरति त्रपया (ज)। क्व कन्दमूलफलाशी (३) शान्तो

(घ) उत्थायेति। किञ्च। कृतप्रणामा अहं। उपाहरं उपवेशनायार्पितवती।

(ङ) उपेति। अनिच्छतोऽपि मत्कर्त्तृकचरणप्रक्षालनमार्जने अनभिलषतोऽपि तस्य कपिञ्जलस्य चरणौ बलात् प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकपल्लवेन मदीयोत्तरीयवसनप्रान्तेन उपमृज्य च अहं, अन्तिके तस्यैव समीपे, अव्यवधानायां आसनकृतव्यवधानरहितायां केवलायामेवेत्यर्थः भूमौ समुपाविशम्।

(च) अथेति। स कपिञ्जलः किमपि विवक्षुरिव सन्। मुहूर्त्तमिव चक्षुरपातयत् तस्या अपसारणार्थ-मिति भावः।

(छ) अहमिति। दृष्ट्यैव तरलिकां प्रति तस्य तादृशदृष्टिपातभङ्ग्यैव विदितः अभिप्रायस्तरलिकाया अपगमनविषयक आशयो यया सा तादृशी सती। अव्यतिरिक्ता अभिन्ना।

(ज) एवमिति। त्रपया लज्जया। अभिधेयविषयं नावतरति वक्तव्यमर्थं वक्तुं न प्रवर्त्तते।

(झ) क्वेति। कन्दं शालूकं, मूलञ्च नन्दिनरत्, फलञ्च अश्नातीति सः, शान्तः शमगुणान्वितः अन्तरिन्द्रिय

আকৃতিটাকে যেন অত্যন্ত ব্যাকুলের ন্যায়, বিষণ্ণের ন্যায়, শূন্যের ন্যায় এবং যাচকের ন্যায় লক্ষ্য করিলাম এবং ভিতরে যেন কোন বিশেষ অভিপ্রায় আছে বলিয়া বোধ করিলাম। (ঘ) এবং আমি উঠিয়া নমস্কার করিয়া, আদরের সহিত নিজেই একখানি আসন আনিয়া দিলাম। (ঙ) তাহাতে তিনি উপবেশন করিলেন এবং তিনি ইচ্ছা না করিলেও আমি বলপূর্ব্বক তাঁহার চরণযুগল প্রক্ষালন করিয়া, এবং নিজের উত্তরীয়-বসন প্রান্তদ্বারা মার্জ্জনা করিয়া, তাঁহার নিকটে আসনবিহীন ভূমিতেই উপবেশন করিলাম। (চ) তাহার পর তিনি কোন বিষয় বলিতে ইচ্ছা করিয়াই যেন, আমার নিকটে উপবিষ্ট সেই তরলিকার প্রতি কিছুকাল দৃষ্টিপাত করিলেন। (ছ) আমি কিন্তু সেই দৃষ্টিপাতেই তাঁহার অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া এই কথা বলিলাম—'ভগবন্! আমার শরীর হইতে এই ব্যক্তি ভিন্ন নহে; সুতরাং আপনি নিঃশঙ্কচিত্তে বলুন।'

(জ) আমি এই কথা বলিলে কপিঞ্জল প্রত্যুত্তর করিলেন—"রাজকন্যে! বলিব কি,

(१) अपमृज्य। (२) क्वचित् मदिति नास्ति। (३) क्वचित् कन्दपदं नास्ति।

वनवासनिरतः (१) मुनिजनः, क्व चायमप्रशान्त-(२) जनोचितो विषयोपभोगाभिलाषकलुषो मन्मथविविधविलाससङ्कटो रागप्रायः प्रपञ्चः (झ)। सर्वमेवानुपपन्नमालोकय, किमारब्धं दैवेन (ञ)। अयत्नेनैव खलूपहासास्पदतामीश्वरो नयति जनम्। न जाने किमिदं वल्कलानां सदृशम्, उताहो जटानां समुचितम्, किं तपसोऽनुरूपम्, आहोस्विद्धर्म्मोपदेशाङ्गमिदम् (ट)। अपूर्वेयं विडम्बना केवलम्। अवश्यकथनीयमिदम्। अपर उपायो न दृश्यते, अन्या प्रतिक्रिया

नियहशालीति यावत् "शमः अन्तरिन्द्रियनिग्रहः" इति वेदान्तसारः। एतेनात्मनैव कामादिनिवृत्तिः सूचिता। वनवासनिरत इत्यनेन तु भोग्यपदार्थानां दर्शनादिनिबन्धनमाकर्षणमपि न सम्भवतीति ध्वनितं। अशान्तस्य अनिर्जितान्तःकरणस्य जनस्य उचितो योग्यः, विषयाणां स्रक्चन्दनवनितादिभोग्यपदार्थानां उपभोगाभिलाषेण कलुषो मलिनः, मन्मथस्य कामस्य विविधविलासैर्नानाप्रकारचेष्टितैः सङ्कटः सङ्कीर्णः पूर्णः, तथा रागः सुखानुशयिता ऐहिकसुखलालसैव प्रायेण बाहुल्येन यस्मिन् सः, "सुखानुशयी रागः" इति पातञ्जलसूत्रात्। अयं प्रपञ्चः संसारो वा क्व। ईदृशप्रपञ्चे मुनेरासक्तिः कथमपि नोपपद्यत इति भावः। अत्र विरूपयोः संघटनया विषमालङ्कारः। तेन च कश्चिन्मुनिरीदृशप्रपञ्चे समासक्त इति ध्वन्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ञ) सर्वमिति। दैवेन, किं अनिर्वचनीयस्वरूपं, एतत्सर्वमेव अनुपपन्नं अत्यन्तविरुद्धत्वादयुक्तं आरब्धं इति त्वमालोकयेत्यन्वयः। लज्जावशादसम्भवाशङ्कावशाच्च स्पष्टं नाभिधत्त इति बोध्यम्।

(ट) अयत्नेनेति। अयत्नेनैव उपहासप्राप्तौ स्वकीययत्नाभावेनैव। इदं वक्ष्यमाणं पुण्डरीकचेष्टितं, किं वल्कलानां वल्कलधारणस्येत्यर्थः सदृशं योग्यं, इति न जाने इत्यर्थः। कथमपि न सदृशमिति भावः। एवमन्यत्रापि। उताहो किंवा। आहोस्वित् अथवा, धर्म्मोपदेशस्य उपदिष्टधर्म्मार्जनस्य अङ्गं प्रयोजकं।

(ठ) अपूर्वेति। इयं वक्ष्यमाणा पुण्डरीकस्य कामचेष्टा, केवलं अपूर्वा विडम्बना सम्पूर्णनूतना दैवकर्तृकप्रतारणा। इदं वृत्तं। अपरस्त्वन्य सङ्गमाश्रिनः। एवमन्यत्रापि बोध्यम्। उपलभ्यते ज्ञायते। शरणं रक्षकं। गतिः प्रतीकारोपायान्तरम्। गतिशब्दस्याप्युपायार्थकत्वात् अपर उपायो न दृश्यते इत्यभिधाय

লজ্জাবশতঃ আমার বাক্যই বক্তব্য বিষয় বলিতে প্রবৃত্ত হইতেছে না। (ঝ) ফলমূলাশী, বনবাসী এবং জিতেন্দ্রিয় মুনিজনই বা কোথায়, আর অজিতেন্দ্রিয় লোকের যোগ্য, ভোগ্যপদার্থের ভোগাভিলাষে কলুষিত, নানাবিধ কাম-চেষ্টায় পরিপূর্ণ এবং রাগবহুল এই জগৎ-সংসারই বা কোথায়। (ঞ) দেখ—বিধাতা, কি অনির্ব্বচনীয় অসঙ্গত এই সমস্ত ঘটনা আরম্ভ করিয়াছেন। (ট) লোক, স্বয়ং উপহাসের কোন কার্য্য না করিলেও, ঈশ্বরই তাহাকে উপহাসাস্পদ করিয়া থাকেন। জানি না—এটা কি বল্কলধারণের উপযুক্ত, অথবা জটাধারণের পক্ষে যোগ্য, কিংবা তপস্যার পক্ষে উচিত, অথবা গুরূপদিষ্ট-ধর্ম্মোপার্জ্জনের অঙ্গ। (ঠ) এটা, কেবল অভূতপূর্ব্ব বিড়ম্বনা। যাহা হউক, এই বৃত্তান্ত অবশ্যই বলিতে হইবে। কারণ

---

(१) वननिरतः। (२) अनुपशान्त...।

नोपलभ्यते, अन्यच्छरणं नालोक्यते, अन्या गतिर्नास्ति। अकथ्यमाने च महाननर्थोपनिपातो जायते। प्राणपरित्यागेनापि रक्षणीयाः सुहृदसव इति कथयामि (ठ)। अस्ति भवत्याः समक्षमेव स मया तथा निष्ठुरमुपदर्शितकोपेनाभिहितः। तथा चाभिधाय परित्यज्य तं, तस्मात् प्रदेशादुपजातमन्युरुत्सृष्टकुसुमावचयोऽन्यप्रदेशमगमम्। अपयातायाञ्च भवत्यां मुहूर्त्तमिव स्थित्वा एकाकी किमयमिदानीमाचरतीति सञ्जातवितर्कः प्रतिनिवृत्य विटपान्तरितविग्रहस्तं प्रदेशं व्यलोकयम् (ड)। यावत्तत्र तं नाद्राक्षम्, आसीच्च मे मनस्येवम्—'किन्नु मदनपरायत्तचित्तवृत्तिस्तामेवानुसरन् गतो भवेत्, गतायाञ्च तस्यां लब्धचेतनो लज्जया (१) न शक्नोति मे दर्शनपथमुपगन्तुम्; आहोस्वित् कुपितः परित्यज्य मां गतः, उतान्वेषमाणो मामेव प्रदेशमन्यमितः समाश्रितः

पुनरन्या गतिर्नास्तीत्यभिधानादर्थगतपुनरुक्ततादोषः प्रसजन्नपि वक्तुर्विषादमग्नतया दोषतां नावहति, प्रत्युत गुणतामेव भजते। "कथितस्य पदं पुनः। विहितस्यानुवाद्यत्वे विषादे विस्मये क्रुधि।" इत्यादि दर्पणोक्तेः। अनर्थोपनिपातो विपदुपस्थितिः सुहृत्प्राणनाशसम्भवादिति भावः। सुहृदोऽसवः सख्युः प्राणाः।

(ड) अस्तीति। उपदर्शितकोपेन प्रकटितक्रोधेन मया भवत्याः समक्षमेव स पुण्डरीकः तथा निष्ठुरमभिहित उक्तः अस्तीत्यन्वयः। अस्तीत्यतीतसामीप्ये वर्त्तमाना आसीदित्यर्थः। उपजातमन्युः उत्पन्नकोपः। उत्सृष्टः कोपेनैव त्यक्तः कुसुमावचयः पुष्पचयनं येन सः। अयं पुण्डरीकः। सञ्जातवितर्क उत्पन्नसंशयः। विटपान्तरितविग्रहः शाखावृतदेहः अहम्।

(ढ) यावदिति। तं पुण्डरीकं। तावदासीदित्यर्थः। मदनस्य परायत्ता अत्यन्ताधीना चित्तवृत्तिर्यस्य स तादृशः पुण्डरीकः। तां कन्यामेव। कुपितो मम भर्त्सनेन क्रुद्धः। विकल्पयन् विविधां कल्पनां कुर्वन्।

—ইহার অন্ত উপায় দেখিতেছি না, অন্যরকম প্রতিকার আছে বলিয়া বুঝিতেছি না, অন্য রক্ষক দেখিতেছি না এবং অন্য কোন রকমই উপায় নাই। না বলিলেও মহাবিপদ উপস্থিত হয়। নিজের প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াও সখার প্রাণ রক্ষা করা উচিত বলিয়া, বলিতেছি। (ড) আপনার সাক্ষাতেই আমি ক্রোধ প্রকাশ করিয়া পুণ্ডরীককে সেই ভাবে নিষ্ঠুর কথা সকল বলিয়াছিলাম, (তাহা আপনার জানা আছে)। তাহার পর আমি তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া, ক্রোধবশতঃ পুষ্পচয়নও না করিয়া সে স্থান হইতে অন্য স্থানে চলিয়া গেলাম। আপনিও চলিয়া গেলেন, তাহার পর কিছু কাল থাকিয়া আমার মনে এইরূপ সংশয় জন্মিল যে, 'এখন পুণ্ডরীক একাকী কি আচরণ করিতেছে দেখি' তাই আমি ফিরিয়া আসিয়া শাখার অন্তরালে লুক্কায়িত থাকিয়া, সেই দিকে দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলাম। (ঢ) যখন তাহাকে সেখানে দেখিতে

(१) लज्जमानः।

स्थातं इत्येवं विकल्पयन् कञ्चित्कालमतिष्ठम् (ढ)। तेन तु जन्मनः (१) प्रभृत्यनभ्यस्तेन तस्य क्षणमप्यदर्शनेन दूयमानः पुनरचिन्तयम्—'स कदाचिद्धैर्य्य-स्खलनविलक्षः किञ्चिदनिष्टमपि समाचरेत्। नहि किञ्चिन्न (२) क्रियते ह्रिया। तन्न युक्तमेनमेकाकिनं कर्त्तुम्' इत्यवधार्य्यान्वेष्टुमादरमकरवम् (ण)। अन्वेषमाणश्च यदा यदा नापश्यं तम्, तदा तदा सुहृत्स्नेहकातरेण मनसा तत्तदशोभनमाशङ्कमानस्तरुलतागहनानि, चन्दनवीथिकाः, लतामण्डपान् (३) सरःकूलानि च (४) वीक्षमाणो निपुणमितस्ततो दत्तदृष्टिः सुचिरं व्यचरम्। (त)

(ण) तेनेति। तस्य पुण्डरीकस्य। दूयमानः सन्तप्यमानः। स पुण्डरीकः, धैर्य्यस्य स्खलनेन विलोपेन विलक्षो लज्जितः सन्, कदाचित् किञ्चित् अनिष्टमपि उद्बन्धनादिकं। ननु तादृशो मनस्वी कथमनिष्टमाचरेदित्याह नहीति। ह्रिया लज्जया न क्रियते इत्थं किञ्चित् किमपि नहि अस्तीत्यर्थः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(त) अन्वेषेति। अशोभनमनिष्टं। तरुलतानां गहनानि वनानि। चन्दनवीथिकाश्चन्दनतरु-श्रेणीः। सरसः कूलानि तीराणि च, निपुणं यथा तथा वीक्षमाणः।

পাইলাম না, তখন আমার এইরূপ মনে হইতে লাগিল যে—'সম্ভবতঃ, অত্যন্ত-কামায়ত্ত-চিত্ত হইয়া সেই কন্যাটিরই পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়া থাকিবে, তাহার পর সেই কন্যাটি বাড়ী চলিয়া গেলে চৈতন্যলাভ করিয়া লজ্জাতে আমার দৃষ্টিপথে আসিতে পারিতেছে না; অথবা ক্রুদ্ধ হইয়া আমাকে পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গিয়াছে; কিংবা আমাকেই অন্বেষণ করতঃ এস্থান হইতে অন্য স্থানে গিয়াছে', এইরূপ মনে মনে নানাবিধ কল্পনা করতঃ সেই স্থানেই কিছু কাল অবস্থান করিলাম। (ণ) জন্মকাল হইতেই ক্ষণকালের জন্যও পুণ্ডরীকের সহিত সাক্ষাৎ না হওয়া আমার অনভ্যস্ত ছিল, সুতরাং তৎকালীন তাহার সেই অদর্শনে সন্তপ্ত হইয়া আমি পুনরায় চিন্তা করিতে লাগিলাম—'ধৈর্য্য-লোপ-নিবন্ধন লজ্জিত হইয়া কখনও হয় ত পুণ্ডরীক কোন অনিষ্ট আচরণও করিতে পারে; কারণ লজ্জায় করিতে না পারে - এমন কিছুই নাই। অতএব ইহাকে একাকী রাখা উচিত নহে', এইরূপ মনে মনে স্থির করিয়া তাহাকে অন্বেষণ করিবার জন্য চেষ্টা করিলাম। (ত) যখন অন্বেষণ করিয়াও তাহাকে দেখিতে পাইলাম না, তখন সুহৃৎ-স্নেহে কাতরচিত্তে নানাবিধ অমঙ্গলের আশঙ্কা করতঃ পুঙ্খানুপুঙ্খরূপে ইতস্ততঃ দৃষ্টিপাত করিয়া তরুলতাময় বন, চন্দনবৃক্ষশ্রেণী, লতামণ্ডপ এবং সরোবরের তীর দেখিতে দেখিতে বহু সময় যাবৎ বিচরণ করিলাম।

---

(१) जन्मतः। (२) नहि यन्न। (३) चन्दनवीथिकालतामण्डपान्,...मण्डपिकाः।
(४) सरस्तीराणि च।

अथैकस्मिन् सरःसमीपवर्त्तिनि निरन्तरतया कुसुममय इव मधुकरमय इव परभृतमय इव मयूरमय इवातिमनोहरे वसन्तजन्मभूमौ लतागहने कृतावस्थानम्, (थ) उत्सृष्टसकलव्यापारतया लिखितमिवोत्कीर्णमिव स्तम्भितमिवोपरतमिव प्रसुप्तमिव योगसमाधिस्थमिव, (द) निश्चलमपि स्वतत्त्वाच्चलितम्, एकाकिनमपि मन्मथाधिष्ठितम्, सानुरागमपि पाण्डुतामावहन्तम्, शून्यान्तःकरणमपि हृदयनिवासिदयितम्, तूष्णीकमपि कथित-

---

(थ) अथेति। निरन्तरतया पुष्पैर्घनतया हेतुना कुसुममयै पुष्पैर्निर्म्मित इव, मधुकरैर्निरन्तरतया मधुकरमय इव, परभृतैर्निरन्तरतया परभृतमये कोकिलैर्निर्म्मित इव, तथा मयूरैर्निरन्तरतया मयूरमय इव। वसन्तस्य कालस्य जन्मभूमिभूते उत्पत्तिस्थानस्वरूप, एकस्मिन् लतागहने लतामयवने, कृतावस्थानं तमहमद्राक्ष-मिति परेणान्वयः। अत्र प्रस्तुतार्थं मयट्प्रत्ययान्तानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(द) उत्सृष्टेति। उत्सृष्टाः परित्यक्ताः सकला व्यापारा अङ्गप्रत्यङ्गस्पन्दनादयो येन तस्य भावस्तया हेतुना, लिखितं चित्रितमिव, उत्कीर्णं पाषाणादिकं निस्तक्ष्य निर्म्मितमिव, स्तम्भितमिव केनचित् स्तब्धीकृतमिव, उपरतं मृतमिव, प्रसुप्तं निद्रितमिव, तथा योगस्य चित्तवृत्तिनिरोधस्य यः समाधिस्वरमात्ममर्थमात्रनिर्भासनरूपं तस्मिन् तिष्ठतीति तमिव। अत्रापि षण्णामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां पूर्ववत् संसृष्टिः।

(ध) निश्चलमिति। स्वतत्त्वादात्मकर्त्तव्यात् चलितं प्रभ्रष्टमिति विरोधपरिहारः। एकाकिनमसहाय-मपि मन्मथेन सहायेनाधिष्ठितमिति विरोध, मन्मथस्य चित्तवृत्तिमात्रत्वात् समाधानम्। अनुरागेण रक्तिम्ना सह वर्त्तत इति सानुरागस्तमपि पाण्डुतामावहन्तमिति विरोध, सानुरागं दयितायामासक्तमपीति समाधानम्। हृदयनिवासिदयितत्वे शून्यान्तःकरणत्वाभावाद्विरोधः, शून्यं विषयान्तरवृत्तिरहितं अन्तःकरणं यस्य तमिति समाधानम्। तूष्णीं शीलमस्येति तूष्णीकः सन्य आद्यत्वान्निपातः "तूष्णींशीलस्तु तूष्णीक" इत्यमरः। तं मौनावलम्बिनमपि कथितमदनवेदनातिशयमिति मौनकथनयोरेकत्रासम्भवाद्विरोधः, कथितो गात्रस्तम्भादिना

(थ) তাহার পর, সরোবরের নিকটবর্ত্তী, অত্যন্ত মনোহর এবং বসন্তকালের জন্মভূমির তুল্য একটি লতাময় বনের মধ্যে তাহাকে অবস্থান করিতে দেখিলাম; ঘন ঘন পুষ্প ছিল বলিয়া সেই লতাটিকে পুষ্পনির্ম্মিতের ন্যায়, ঘন ঘন ভ্রমর ছিল বলিয়া ভ্রমর-নির্ম্মিতের ন্যায়, অসংখ্য কোকিল ছিল বলিয়া কোকিল-নির্ম্মিতের ন্যায় এবং বহুতর ময়ূর ছিল বলিয়া ময়ূর-নির্ম্মিতের ন্যায় বোধ হইতেছিল। (দ) পুণ্ডরীক, অঙ্গ-প্রত্যঙ্গের স্পন্দনপ্রভৃতি সমস্ত কার্য্যই পরিত্যাগ করিয়াছিল; সুতরাং তাহাকে চিত্রিতের ন্যায়, খোদিতের ন্যায়, স্তম্ভিতের ন্যায়, মৃতের ন্যায়, নিদ্রিতের ন্যায় এবং ধ্যানস্থের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ধ) এবং সে নিশ্চল হইলেও নিজের কর্ত্তব্য হইতে চলিয়াছিল, (পরিভ্রষ্ট হইয়াছিল); সহায়শূন্য হইলেও কামদেব সঙ্গে আছিলেন (কামার্ত্ত ছিল); রক্তবর্ণ হইলেও পাণ্ডুবর্ণ ধারণ করিয়াছিল (আপনার প্রতি অনুরক্ত হইয়াছিল এবং আপনারই বিরহে পাণ্ডুবর্ণ ধারণ করিয়াছিল); তাহার অন্তঃকরণ শূন্য হইলেও হৃদয়ে কোন প্রিয়জন বাস করিতেছিল (অন্তঃকরণে অন্য

मदनवेदनातिशयम्, शिलातलोपविष्टमपि मरणे व्यवस्थितम्, (ध) शापप्रदानभयादिवादत्तदर्शनेन कुसुमायुधेन सन्ताप्यमानम्, (न) अतिनिष्पन्दतया (१) हृदयनिवासिनीं प्रियां द्रष्टुमन्तःप्रविष्टैरिवासह्यसन्तापसंत्रासप्रलीनैरिव मनःक्षोभप्रकुपितैरिव उन्मुच्य गतैरिन्द्रियैः शून्यीकृतशरीरम्, (प) निष्पन्दनिमीलितेनान्तर्ज्वलन्मदनदहनधूमाकुलिताभ्यन्तरेणेव पक्ष्मान्तर-(२) विवरवान्तानेकधारमनवरतमीक्षणयुगले बाष्पजलदुर्दिनमुत्सृजन्तम्, (फ)

सूचितः मदनवेदनाया अतिशय आधिक्यं येन तमिति समाधानम्। शिलातले उपविष्टमपि मरणे व्यवस्थितं विशेषेणावस्थितमुपविष्टमिति विरोधः, व्यवस्थितं कृतनिश्चयमिति समाधानम्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(न) शापेति। अदत्तदर्शनेन अदृश्यदेहेनेत्यर्थः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) अतीति। असह्यसन्तापात् यः सन्त्रासो भयं तेन प्रलीनैर्लुक्कायितैरिव, तथा मनसः क्षोभेण उद्वेलनेन असत्पथगमनेनेत्यर्थः प्रकुपितैः क्रुद्धैरिव, स्वेषां चिरादेवातिसाधुत्वादिति भावः, अतएव उन्मुच्य स्वस्वस्थानं विहाय गतैरिन्द्रियैश्चलपदादिभिः शून्यीकृतं परित्यक्तं शरीरं यस्य तमिव स्थितम्, अन्यथा ईदृशी निष्पन्दता न स्यादिति भावः। अत्र प्रथमास्तिस्रो वाच्याः क्रियोत्प्रेक्षाः, अन्त्या च शरीरशून्यीकरणोत्प्रेक्षणादिवाद्यभावाच्च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा, इत्यासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(फ) निष्पन्देति। निष्पन्दञ्च तत् निमीलितं मुद्रितञ्चेति तेन, अतएव अन्तर्ज्वलतो मदनदहनस्य कामाग्नेर्धूमैराकुलितं व्याप्तमभ्यन्तरं यस्य तेनेव स्थितेन, अन्तर्धूमव्याप्तौ नयननिमीलनस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः, ईक्षणयुगलेन नयनद्वयेन करणेन, पक्ष्मान्तरविवरेभ्यो नयनलोमान्तरालदेशेभ्यः वान्ता उद्गीर्णा अनेका धारा यस्य तत्, वाष्पजलदुर्दिनं अश्रुजलवृष्टिं उत्सृजन्तं वर्षन्तम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं मदनदहनेति निरङ्गकेवलरूपकं क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

বিষয়ের চিন্তা ছিল না, কেবল আপনারই চিন্তা রহিয়াছিল); মৌনাবলম্বন করিয়া থাকিলেও অত্যন্ত কাম-বেদনা বলিতেছিল (নানাবিধ ভঙ্গীদ্বারা কামবেদনার সূচনা করিতেছিল); প্রস্তরখণ্ডের উপর বসিয়া থাকিলেও—মরণে বসিয়াছিল (কৃতনিশ্চয় হইয়াছিল)। (ন) কামদেব, শাপপ্রদানের ভয়েই যেন দর্শন-দান না করিয়া তাহাকে সন্তপ্ত করিতেছিলেন। (প) আর পুণ্ডরীক অত্যন্ত নিস্পন্দভাবে ছিল বলিয়া তাহার ইন্দ্রিয় সকল যেন হৃদয়নিবাসিনী প্রিয়াকে দেখিবার নিমিত্ত ভিতরে প্রবেশ করিয়াছিল, অসহ্য সন্তাপের ভয়েই যেন লুক্কায়িত হইয়া রহিয়াছিল এবং মন অসৎপথে ধাবিত হইয়াছে বলিয়াই যেন ক্রুদ্ধ হইয়া স্ব স্ব স্থান ত্যাগ করিয়া চলিয়া গিয়াছিল; সুতরাং শরীরটা যেন শূন্য পড়িয়া রহিয়াছিল; (ফ) নয়নযুগল নিস্পন্দ ও মুদ্রিত হইয়া রহিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইয়াছিল যেন, অন্তরে প্রজ্বলিত কামানলের ধূমে সেই নয়নযুগলের অভ্যন্তর দেশ ব্যাপ্ত রহিয়াছে এবং নয়ন-

---

(१) अतिनिष्पन्दतया। (२) अक्षिपक्ष्मान्तर...।

আলোহিনীমধরপ্রভামনঙ্গাগ্নেঃ প্রদহতো হৃদয়ং (১) ঊর্দ্ধং সংসর্পিণীং শিখামিবাদায় নিষ্পতদ্ভিরুচ্ছ্বাসৈস্তরলীকৃতাসন্নলতাকুসুমকেশরম্, (ব) বামকপোলশয়নীকৃত করতলতয়া সমুৎসর্পদ্ভিরমলৈর্নখাংশুভির্বিমলীকৃতমচ্ছাচ্ছ-চন্দনরস-রচিত ললাটিকমিব ললাটদেশমুদ্বহন্তম্, (ভ) অচিরাপনীত-পারিজাত-কুসুম-মঞ্জরী-কর্ণপূরতয়া (২) সশেষ-(৩) পরিমলামোদ-লোভোপসর্পিণা কলবিরুতচ্ছলেন মদনসম্মোহনমন্ত্রমিব জপতা মধুকরকুলেন সনীলোৎপলমিব

(ব) আলোহিনীমিতি। হৃদয়ং প্রদহতঃ অনঙ্গাগ্নেঃ কামানলস্য ঊর্দ্ধসংসর্পিণীং উপরিগামিনীং শিখামিব আলোহিনীং আরক্তাং অধরপ্রভামোষ্ঠকান্তিমাদায় নিষ্পতদ্ভির্নির্গচ্ছদ্ভিঃ উচ্ছ্বাসৈর্নিশ্বাসৈঃ করণৈঃ, তরলীকৃতাঃ কম্পিতাঃ আসন্নলতানাং কুসুমকেশরাঃ পুষ্পকিঞ্জল্কা যেন তম্। অত্র নিরঙ্গকেবলরূপকং শ্রৌত্যুপমা চ জাত্যুৎপ্রেক্ষা চেতি কেচিৎ, অনয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। আলোহিনীমিতি "শ্যেতৈতহরিতলোহিতেভ্যস্তো নঃ" ইতি লোহিতশব্দস্য তকারস্য নকারঃ।

(ভ) বামেতি। বামকপোলস্য শয়নীকৃতং শয্যীকৃতং আধারীকৃতমিত্যর্থঃ করতলং বামপাণিতলং যেন তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা প্রসারিতবামপাণিতলে বামগণ্ডস্থাপনেন বামহস্তনখকিরণানাং ললাটে সঞ্চরণাদিত্যর্থঃ, সমুৎসর্পদ্ভির্ললাটং সমুদ্গচ্ছদ্ভিঃ নখাংশুভিঃ নখকিরণৈঃ, বিমলীকৃতং বিশদীকৃতং, অতএব অচ্ছাচ্ছেন নিতান্তনির্ম্মলেন চন্দনরসেন রচিতা নির্ম্মিতা ললাটিকা তিলকবিশেষো যত্র তমিব স্থিতং ললাটদেশমুদ্বহন্তম্। অত্র ললাটিকারচনোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। "পত্রপাশ্যা ললাটিকা" ইত্যমরঃ।

(ম) অচিরেতি। অচিরং অনতিপূর্ব্বে অপনীতঃ মহাশ্বেতায়ৈ দানার্থমপসারিতঃ পারিজাতকুসুমমঞ্জরীরূপঃ কর্ণপূরো যস্য তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা, সশেষস্তদানীমপ্যবশিষ্টো যঃ পরিমলঃ সৌরভং তস্য য আমোদস্তদনুভবজনিতানন্দস্তস্য লোভেন উপসর্পিণা সমীপবর্ত্তিনা, কলবিরুতচ্ছলেন স্বকীয়মধুরাস্ফুটরবব্যাজেন, মদনস্য সম্মোহনমন্ত্রং জপতেব স্থিতেন, মধুকরকুলেন ভ্রমরগণেন করণেন, সনীলোৎপলমিব সতমালপল্লবমিব

লোমের অন্তরাল হইতে বহুতর ধারা পড়িতেছিল,—এই অবস্থায় সে অবিশ্রান্ত অশ্রুবর্ষণ করিতেছিল। (ব) কামানল পুণ্ডরীকের হৃদয় দগ্ধ করিতেছিল, সুতরাং তাহার ঊর্দ্ধগামিনী শিখার ন্যায় আরক্তবর্ণ ওষ্ঠের কান্তি লইয়া নির্গত নিশ্বাসদ্বারা পুণ্ডরীক, নিকটবর্ত্তী লতার পুষ্পের কেশরগুলিকে কম্পিত করিতেছিল; (ভ) বাম-হস্তের উপরে বাম গণ্ড স্থাপন করিয়াছিল, তাহাতে ঊর্দ্ধগামী নির্ম্মল নখের কিরণে ললাটদেশ নির্ম্মল করিয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন ললাটে অত্যন্ত নির্ম্মল চন্দনের কতকগুলি টিপ দিয়া রাখা হইয়াছে,—এইরূপ ললাটদেশ সে ধারণ করিতেছিল; (ম) অনতিপূর্ব্বে পারিজাতকুসুমের মঞ্জরীরূপ কর্ণাভরণটি খুলিয়া দেওয়া হইয়াছিল, সুতরাং তখনও কর্ণে তাহার কিছু সৌরভ অবশিষ্ট ছিল বলিয়া তাহা ভোগ করিবার আনন্দের লোভে, ভ্রমরগণ উপস্থিত হইয়া অস্পষ্ট-মধুর

(১) হৃদয়াৎ। (২)...কুসুমকর্ণপূরতয়া। (৩) অশেষ...।

সতমালপল্লবমিব শ্রবণদেশং দধানম্, (ম) উৎকণ্ঠা-জ্বর-রোমাঞ্চ-ব্যাজেন প্রতিরোম-কূপ-নিপতিতানাং মদনশরাণাং কুসুমশর-শল্য-(১) শকল-নিকর-মিবাঙ্গলগ্নং বিভ্রাণম্, (য) দক্ষিণকরেণ চ স্ফুরিত-কিরণনিকরাং (২) করতল-স্পর্শসুখ-কণ্টকিতামিব মুক্তাবলীমবিনয়পতাকামুরসি ধারয়ন্তম্, (র) মদনবশীকরণচূর্ণেনেব কুসুমরেণুনা তরুভিরাহন্যমানম্, (ল) আত্মরাগমিব

স্থিতং মধুকরকুলস্য নীলোৎপলতমালপল্লবতুল্যতয়া প্রতীয়মানত্বাদিতি ভাবঃ, শ্রবণদেশং কর্ণদেশং দধানম্। অত্র প্রথমা সাপহ্নবা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা অপরে চ দ্বে গুণোৎপ্রেক্ষে ইত্যেতাসাং পরস্পরনিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ।

(য) উৎকণ্ঠেতি। উৎকণ্ঠয়া কামৌৎসুক্যেন যো জ্বরঃ সন্তাপস্তেন যে রোমাঞ্চাস্তেষাং ব্যাজেন ছলেন, অঙ্গলগ্নং, প্রতিরোমকূপনিপতিতানাং মদনশরাণাং মধ্যে যে কুসুমশরাস্তেষাং শল্যশকলনিকরং অগ্রখণ্ড-সমূহং বিভ্রাণমিব, রোমাঞ্চানাং বাণাগ্ররূপতয়া প্রতীতেরিতি ভাবঃ। অত্রাপি সাপহ্নবা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ, তথা পুষ্পবাণস্য পুষ্পাতিরিক্তবাণাসত্ত্বান্মদনশরাণামিত্যনেনৈবোপপত্তৌ পুনঃ কুসুমশরপদোপাদানাদধিকপদত্বদোষঃ, স তু কুসুমশরপদপরিত্যাগেনৈব পরিহরণীয়ঃ।

(র) দক্ষিণেতি। কিঞ্চ দক্ষিণকরেণ উরসি বক্ষসি স্ফুরিতঃ প্রসৃতঃ কিরণনিকরো যস্যাস্তাং, অতএব করতলস্য স্পর্শেন যৎ সুখং তেন কণ্টকিতাং সঞ্জাতরোমাঞ্চামিব স্থিতাং, কিরণনিকরস্য রোমাঞ্চবৎ প্রতীতেরিতি ভাবঃ, তথা অবিনয়স্য কামাবেশরূপদুরাচারস্য পতাকাং বৈজয়ন্তীমিব স্থিতাং মুক্তাবলীং ত্বদীয়ং হারং ধারয়ন্তম্। অত্র পদার্থহেতুকং কাব্যলিঙ্গং তথা প্রথমা বাচ্যা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা দ্বিতীয়া চ প্রতীয়মানা জাত্যুৎপ্রেক্ষা ইত্যেতাসামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ল) মদনেতি। তরুভিঃ কর্তৃভিঃ, মদনস্য বশীকরণচূর্ণেনেব লোকবশ্যতাসাধকচূর্ণেনেব কুসুমরেণুনা করণেন আহন্যমানং দেহোপরি নিক্ষিপ্যমানমিব। অত্র প্রথমা বাচ্যা জাত্যুৎপ্রেক্ষা দ্বিতীয়া চ প্রতীয়মানা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা তয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

ধ্বনির ছলে যেন কামদেবের সম্মোহন-মন্ত্র জপ করিতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সেই কর্ণদেশ, নীলোৎপল-সংযুক্ত অথবা তমালপল্লব-সংযুক্ত হইয়া রহিয়াছে; (য) উৎকণ্ঠার সন্তাপে শরীরে যে সকল রোমাঞ্চ জন্মিয়াছিল, তাহার ছলে পুণ্ডরীক, প্রতিরোমকূপে নিপতিত মদন-শরের অগ্রখণ্ড-সমূহই যেন অঙ্গে ধারণ করিতেছিল; (র) বক্ষের উপরে দক্ষিণ-হস্তদ্বারা আপনার সেই মুক্তাময় হার ছড়াকে ধারণ করিয়াছিল, চতুর্দ্দিকে তাহার কিরণ ছড়াইয়া পড়িয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, করতল-সংস্পর্শের সুখে সেই হার ছড়া রোমাঞ্চিত হইয়াছে এবং সেই হার ছড়াকে অন্যায় আচরণের পতাকার ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ল) বৃক্ষসমূহ, কামদেবের বশীকরণচূর্ণের ন্যায় আপনাদের পুষ্পরেণুদ্বারা

---

(১) কুসুমশরকীলশল্য...। (২) স্ফুরিতমযূখকিরণ।

संक्रामयद्भिरासन्नैरनिलचलितैः (१) अशोकपल्लवैः स्पृश्यमानम्, (व) सुरताभिषेकसलिलैरिवाभिनवपुष्पस्तबकमधुशीकरैर्वनश्रियाभिषिच्यमानम्, (श) अलिनिवह-निपीयमान-परिमलैरुपरि पतद्भिश्चम्पककुड्मलैस्तप्तशरशल्यकैरिव (२) सधूमैः कुसुमशरेण ताड्यमानम्, (ष) अतिबहल-वनामोद-मत्त-मधुकर-निकर-झङ्कार-निस्वनैः (३) हुङ्कारैरिव दक्षिणानिलेन निर्भर्त्स्यमानम्, (स) मद-कल-कोकिल-कुल-कोलाहलैर्वसन्त-जय-शब्द-कलकलैरिव मधुमासेनाकुली-

---

(व) आसन्नेति। आसन्नैर्निकटवर्त्तिभिः, अनिलचलितैर्वायुकम्पितैः, आत्मरागं स्वलौहित्यमेव रागमनुरागं संक्रामयद्भिः पुण्डरीके सञ्चारयद्भिरिव स्थितैः अशोकपल्लवैः स्पृश्यमानम्। अत्र लौहित्यानुरागयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) सुरतेति। वनश्रिया कर्त्र्या, सुरताभिषेकसलिलैरिव रतिराज्याभिषेकजलैरिव, अभिनवानां पुष्पस्तबकानां मधुशीकरैर्मकरन्दबिन्दुभिः करणैः, अभिषिच्यमानमिव। अत्र प्रथमा वाच्या जात्युत्प्रेक्षा द्वितीया तु प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ष) अलीति। कुसुमशरेण मदनेन कर्त्रा, सधूमैरग्निसमेतत्वाद्धूमान्वितैः कुड्मलोपरिस्थभ्रमरसाम्यप्रतिपादनार्थमेतद्विशेषणम्, तप्तशरशल्यकैरिव अग्निसंयुक्तस्वकीयबाणाग्रैरिव स्थितैः, चम्पककुड्मलपीतत्वसाम्यप्रतिपादनार्थं तप्तपदम्, अलिनिवहेन भ्रमरसमूहेन निपीयमानाः सादरमनुभूयमानाः परिमलाः सौरभाणि येषां तैः, पुण्डरीकस्यैव उपरि पतद्भिः चम्पककुड्मलैस्ताड्यमानमिव। अत्रापि प्रथमा वाच्या जात्युत्प्रेक्षा द्वितीया च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(स) अतीति। दक्षिणानिलेन कर्त्रा, हुङ्कारैरिव भर्त्सनसूचकस्वकीयहुंशब्दैरिव, अतिबहलेन अत्यन्तप्रचुरेण वनामोदेन वनसौरभेण मत्तस्य मधुकरनिकरस्य भ्रमरगणस्य झङ्कारनिस्वनैः करणैः निर्भर्त्स्यमानमिव। अत्र हुङ्काराणां शब्दत्वेन गुणत्वात् प्रथमा वाच्या गुणोत्प्रेक्षा परा च प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा अनयोरपि पूर्ववत् सङ्करः।

(ह) मदेति। मधुमासेन चैत्रेण कर्त्रा, वसन्तस्य कालस्य जयशब्दकलकलैरिव मदकलस्य मदमत्तस्य कोकिलकुलस्य कोलाहलैः करणैः, आकुलीक्रियमाणमधीरीक्रियमाणम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

যেন পুণ্ডরীককে আঘাত করিতেছিল; (ব) নিকটবর্ত্তী বায়ুকম্পিত অশোক-পল্লবগুলি যেন পুণ্ডরীকের দেহে আপনাদের রাগ সঞ্চারিত করিতে করিতেই তাঁহাকে স্পর্শ করিতেছিল; (শ) বনলক্ষ্মী, রতি-রাজ্যে অভিষেক করিবার জলের ন্যায় নূতন পুষ্পগুচ্ছের মধুবিন্দুদ্বারা পুণ্ডরীককে যেন অভিষিক্ত করিতেছিলেন; (ষ) কামদেব, ধূমসংযুক্ত অগ্নিময় স্বকীয় বাণখণ্ডদ্বারা পুণ্ডরীককে যেন তাড়ন করিতেছিলেন; কারণ—তাঁহার দেহের উপরে চাঁপাফুলের কলিকা পড়িতেছিল; সেগুলির উপরে আবার সৌরভ-লোভে ভ্রমরগণ বসিয়াছিল; (স) দক্ষিণ বায়ু, স্বকীয় হুঙ্কারের ন্যায় প্রচুর বন্য সৌরভ-মত্ত ভ্রমরগণের ঝঙ্কারশব্দে যেন

---

(१)...वलितैः। (२) तप्तशल्यकैरिव। (३)...निःस्वनैः।

क्रियमाणम्, (ह) प्रभातचन्द्रमिव पाण्डुतया परिगृहीतम्, निदाघगङ्गाप्रवाहमिव कृशिमानमागतम्, अन्तर्गतानलं चन्दनविटपमिव म्लायन्तम्, (क्ष) अन्यमिव, अदृष्टपूर्वमिव, अपरिचितमिव, जन्मान्तरमिवोपगतम्, (१) रूपान्तरेणेव परिणतम्, (क) आविष्टमिव महाभूताधिष्ठितमिव ग्रहगृहीतमिवोन्मत्तमिव छलितमिवान्धमिव वधिरमिव मूकमिव विलासमयमिव मदनमयमिव, (ख) परायत्तचित्तवृत्तिं, परां कोटिमधिरूढं मन्मथावेशस्य, (२) अनभिज्ञेयपूर्वाकारं तमहमद्राक्षम्। (ग)

(क्ष) प्रभातेति। परिगृहीतं शरीरे आश्रितम्। निदाघे ग्रीष्मकाले यो गङ्गायाः प्रवाहस्तमिव, कृशिमानं कृशत्वम्। निदाघकाले सर्वासामेव नदीनां प्रवाहकार्श्यादत्र केवलगङ्गापदोपादानादविशेषे विशेषाख्यदोषः, स तु गङ्गेत्यत्र नदीति पाठेन समाधेयः। अन्तर्गतः अनलो वह्निः कामानलश्च यस्य तं, चन्दनविटपमिव चन्दनशाखामिव, म्लायन्तं म्लानतां गच्छन्तम्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव पूर्णोपमालङ्कारः।

(क) अन्यमिति। अत्र प्रथमास्त्रिषु जात्युत्प्रेक्षा। जन्मान्तरमुपगतं प्राप्तमिव, तथा रूपान्तरेण परिणतमिव। अनयोस्तु प्रत्येकं क्रियोत्प्रेक्षा।

(ख) आविष्टमिति। आविष्टं डाकिन्यादिभिराश्रितमिव, महाभूतैर्वेतालैः अधिष्ठितमिव, ग्रहैः पूतनादिभिर्दुष्टग्रहैः गृहीतं धृतमिव। अत्र प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षा। उन्मत्तं उन्मादरोगविकारवन्तमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षा। छलितं केनचित् प्रतारितमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा। अन्धमिवेत्यादिषु त्रिषु प्रत्येकं गुणोत्प्रेक्षा। विलासमयं विभ्रमप्रधानमिव, तथा मदनमयं कामप्रधानमिव। अनयोस्तु प्रत्येकं क्रियोत्प्रेक्षा।

(ग) परेति। परस्य जनस्य सहायतया, इत्यर्थः आयत्ता अधीना चित्तवृत्तिर्यस्य तम्। मन्मथावेशस्य

পুণ্ডরীককে ভৎসনা করিতেছিল; (হ) এবং চৈত্রমাস, বসন্তকালের জয়ধ্বনির কোলাহলের ন্যায় মদমত্ত কোকিলগণের কোলাহলে পুণ্ডরীককে আকুল করিয়া তুলিয়াছিল; (ক্ষ) আর তখন পুণ্ডরীককে প্রভাতকালীন চন্দ্ররেখার ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ দেখা যাইতেছিল এবং সে গ্রীষ্মকালীয় গঙ্গাপ্রবাহের ন্যায় কৃশতা প্রাপ্ত হইয়াছিল, আর অন্তরে অগ্নি প্রবেশ করিলে চন্দনবৃক্ষের শাখার ন্যায় পুণ্ডরীক ক্রমেই ম্লান হইতেছিল; (ক) তাহাকে দেখিয়া অপরের ন্যায়, পূর্ব্বে যাহাকে কখনও দেখি নাই, সেইরূপ ব্যক্তির ন্যায় এবং অপরিচিতের ন্যায় বোধ হইতেছিল এবং সে যেন জন্মান্তর লাভ করিয়াছিল ও রূপান্তরে পরিণত হইয়াছিল; (খ) এবং তাহাকে যেন ডাকিনীতে পাইয়াছিল, কোন বড় ভূতেই যেন ধরিয়াছিল এবং পূতনাপ্রভৃতি কোন দুষ্ট গ্রহেই যেন আশ্রয় করিয়াছিল আর তাহাকে তখন উন্মত্তের ন্যায়, প্রতারিতের ন্যায়, অন্ধের ন্যায়, বধিরের ন্যায়, মূকের ন্যায়, এবং বিলাসিতাময় ও কামময়ের

---

(१) उपगतं। (२) मदनावेशस्य।

अपगतनिमेषेण चक्षुषा तदवस्थं चिरमुद्वीक्ष्य समुपजातविषादो वेपमानेन हृदयेनाचिन्तयम्—'एवं नामायमतिदुर्विषहवेगः (१) मकरकेतुः, येनानेन क्षणेनायमीदृशमवस्थान्तरं (२) अप्रतीकारमुपनीतः (घ)। कथमेवमेकपदे व्यर्थी-भवेदेवंविधो ज्ञानराशिः। अहो बत महच्चित्रम्, तथा नामायमाशैशवाद्धीर-प्रकृतिरस्खलितवृत्तिः (३) मम चान्येषाञ्च मुनिकुमारकाणां स्पृहणीयचरित आसीत् (ङ)। अद्य तु (४) इतर इव परिभूय ज्ञानं, अवगणय्य तपःप्रभावं, उन्मूल्य गाम्भीर्यं, मन्मथेन जड़ीकृतः। सर्वथा दुर्लभं यौवनमस्खलित-मिति। (च)

कामावेशस्य परां कोटिं चरमां दशां अधिरूढमारूढं। अनभिज्ञेय इदन्तया अभिज्ञातुमशक्यः पूर्वाकारो यस्य तम। तं पुण्डरीकम्।

(घ) अपेति। अपगतनिमेषेण निर्निमेषेण। सा तादृशी वर्णितरूपा अवस्था यस्य तं। वेपमानेन भयात् कम्पमानेन। एवं नाम इत्थम्भूतः, अतिदुर्विषहो वेगो यस्य सः, मकरकेतुर्मदनः। येन हेतुना, अनेन मकरकेतुना, क्षणेनैव अयं पुण्डरीकः। उपनीतः प्रापितः।

(ङ) उक्तवैपरीत्ये असम्भवमाह कथमिति। एवमनेन प्रकारेण। एकपदे सहसा। "तत्क्षणैक-पदे तुल्ये" इति हलायुधः। अहोबतेत्येकमेव विस्मयविषादसूचकमव्ययम्। महत् चित्रमाश्चर्यम्। अस्खलित-वृत्तिः सत्पथादपरिभ्रष्टचरित्र.।

(च) अद्येति। तु किन्तु, अद्य मन्मथेन ज्ञानं परिभूय विजित्य, तपःप्रभावं अवगणय्य अवज्ञाय, तथा गाम्भीर्यं अनन्यथाकरणीयस्वभावं उन्मूल्य उच्छेद्य, इतरः प्राकृतलोक इव जड़ीकृतो मूढ़तां प्रापितः। येन हि, सर्वथा अस्खलितं सत्पथादपरिभ्रष्टं यौवनं लोके दुर्लभं, अतएव मन्मथनैवं कर्त्तुं शक्यत इति भावः। इतिशब्दस्य अचिन्तयमित्यनेनान्वयः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

ন্যায় বোধ হইতেছিল ; (গ) তাহার মন তখন পরের অধীন হইয়া গিয়াছিল, এবং সে, কামাবেশের চরমদশায় উঠিয়াছিল, আর তাহার সেই পূর্ব্বের আকৃতি চেনা যাইতেছিল না।

(ঘ) নির্নিমেষ-নয়নে বহুকাল যাবৎ সেই অবস্থায় তাহাকে দেখিয়া আমার বিষাদ জন্মিল এবং হৃদয় কাঁপিতে লাগিল ; তখন আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম—'এই কন্দর্প, এইরূপই অত্যন্ত-অসহ্য-বেগশালী হইবেন ; যেহেতু, ইনি ক্ষণকালমধ্যেই পুণ্ডরীককে এইরূপ প্রতীকারবিহীন অবস্থান্তরে উপনীত করিয়াছেন। (ঙ) না হইলে এইরূপ জ্ঞানরাশি, সহসাই এই ভাবে ব্যর্থ হইয়া যাইবে কেন ? হায়! বড়ই আশ্চর্য্য! বাল্যকাল হইতে সেইরূপ ধীরপ্রকৃতি ও অস্খলিতচরিত্র এই পুণ্ডরীকের স্বভাব, আমার ও অন্যান্য মুনিকুমারদিগের বাঞ্ছনীয় ছিল। (চ) কিন্তু আজ কন্দর্প, সে জ্ঞানকে পরাজিত করিয়া, তপস্যার প্রভাবকে অবজ্ঞা করিয়া এবং সে গাম্ভীর্য্য নষ্ট করিয়া ইতর লোকের ন্যায় ইহাকে মোহাচ্ছন্ন করিয়া

---

(१) अतिदुर्विषयवेगः। (२) अवस्थान्तरप्रकारं। (३)...स्थिरवृत्तिः। (४) अत्र तु।

उपसृत्य च तस्मिन्नेव शिलातलैकपार्श्वे समुपविश्य अंसदेशावसक्तपाणिः (१) तमनुन्मीलित-(२) लोचनमेव 'सखे! पुण्डरीक! कथय किमिदम्' इत्यपृच्छम् (छ)। अथ सुचिरसम्मीलनाल्लग्नमिव (३) कथमपि प्रयत्नेन अनवरतरोदनवशात् समुपजातारुण-(४) भावमम्बुजलपूर-(५) प्लावितं उत्कुपितमिव सवेदनमिव स्वच्छांशुकान्तरितरक्तकमलवनच्छायं चक्षुरुन्मील्य मन्थरमन्थरया (६) दृष्ट्या सुचिरं विलोक्य मां आयततरं निश्वस्य (७) लज्जाविशीर्य्यमाणविरलाक्षरं "सखे! कपिञ्जल! विदितवृत्तान्तोऽपि किं मां पृच्छसि"

(छ) उपेति। किञ्चाहम्। अंसदेशे पुण्डरीकस्य स्कन्धदेशे अवसक्तः संलग्नः पाणिर्यस्य स तादृशः सन्। अनुन्मीलितलोचनमेव मुद्रितनयनमेव तं पुण्डरीकं।

(ज) अथेति। सुचिरसम्मीलनात् बहुसमयं यावन्मुद्रणात् लग्नमिव परस्परसंसक्तावरणद्वयमिव, कष्टेनोन्मीलनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। समुपजातः अरुणभावो रक्तिमा यस्य तत्, अम्बुजलस्य पूरेण ओघेन प्लावितं, उत्कुपितमिव उत्कोपो नेत्ररोगविशेषस्तद्विशिष्टमिव, आरुण्यादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा। सवेदनमिव सव्यथमिव, कष्टेनोन्मीलनादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षा। स्वच्छांशुकेन निर्म्मलसूक्ष्मवसनेन अन्तरितं आवृतं यत् रक्तकमलवनं तस्य छाया इव छाया कान्तिर्यस्य तत् तथोक्तं चक्षुः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अम्बुजलपूरप्लावनसाम्यप्रतिपादनार्थं स्वच्छांशुकान्तरितेति विशेषणं। किन्तु वनपदोपादानेन उपमानगतप्रमाणाधिक्यात् "स्तनावद्रिसमानौ ते" इति दर्पणोदाहृतवदनुचितार्थत्वदोषः, स तु वनपदपरित्यागेनैव परिहरणीयः। कथमपि प्रयत्नेन उन्मील्य। मन्थरमन्थरया अत्यन्तालसया। आयततरं

ফেলিয়াছে। কারণ—সকল প্রকারেই সৎপথ হইতে পরিভ্রষ্ট না হইয়াছে, এইরূপ যৌবন, জগতে দুর্লভ। . . .

(ছ) তাহার পর আমি পুণ্ডরীকের নিকটে যাইয়া সেই প্রস্তরখণ্ডেরই এক পার্শ্বে উপবেশন করিয়া, তাহার স্কন্ধদেশে করতল সংস্থাপনপূর্ব্বক, মুদ্রিত-নয়ন অবস্থাতেই তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলাম—'সখে! পুণ্ডরীক! এই ঘটনাটা কি; বল।' (জ) তাহার পর, বহুকাল যাবৎ নয়নযুগল মুদ্রিত করিয়া রাখায় তাহার উপরের চর্ম্মাবরণ দুইটা যেন পরস্পর সংলগ্ন হইয়া গিয়াছিল, অবিশ্রান্ত রোদন করায় নয়নযুগল রক্তবর্ণ হইয়াছিল, এবং অশ্রুজলের প্রবাহে প্লাবিত করিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে—সেই চোক দুইটা যেন উঠিয়াছিল (উধাইয়াছিল—খড়াইয়াছিল), ব্যথা পাইতেছিল এবং নির্ম্মল সূক্ষ্মবস্ত্রে আবৃত রক্তবর্ণ পদ্মবনের ন্যায় সৌন্দর্য্য-সম্পন্ন হইয়াছিল; পুণ্ডরীক, কোন প্রকারে যত্নপূর্ব্বক সেই নয়নযুগল উন্মীলিত করিয়া, অত্যন্ত মন্থর দৃষ্টিতে, বহুকাল যাবৎ আমাকে দর্শন করিয়া এবং অত্যন্ত দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ করিয়া, লজ্জাবশতঃ অস্পষ্ট ও অল্পাক্ষরে "সখে! কপিঞ্জল! তুমি

(१) अंसावसक्तपाणितलः। (२) अक्षमसमुन्मीलित…। (३) आलग्नमिव।
(४) उपजातारुणभावं। (५)…पटल…। (६) क्वचिद्विस्तिमीलि। (७) निःश्वस्य।

इति कृच्छ्रेण शनैः शनैः (१) अवदत् (ञ)। अहन्तु तदाकर्ण्य तदवस्थयैवाप्रतीकारविकारोऽयं, तथापि सुहृदा सुहृदसन्मार्गप्रवृत्तो यावच्छक्तितः सर्वात्मना निवारणीय इति मनसावधार्य्याब्रवम् (झ) 'सखे! पुण्डरीक! सुविदितमेतत् (२) मम, केवलमिदमेव पृच्छामि—यदेतदारब्धं भवता, किमिदं गुरुभिरुपदिष्टम्, उत धर्म्मशास्त्रेषु पठितम्, उत धर्म्मार्जनोपायोऽयम्, उतापरस्तपसां प्रकारः, उत स्वर्गगमनमार्गोऽयम्, उत व्रतरहस्यमिदम्, उत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्, (३) आहोस्विदन्यो नियमप्रकारः (ञ)। कथमेतद्युक्तं भवतो मनसापि चिन्तयितुम्, किं पुनराख्यातुमीक्षितुं वा? (ट)। कथय

अतिदीर्घं यथा स्यात्तथा लज्जया विशीर्य्यमाणानि अस्पष्टमुच्चार्य्यमाणानि विरलानि अल्पानि च अक्षराणि यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। कृच्छ्रेण कष्टेन।

(झ) अहमिति। आदौ यद्यपीति पूरणीयम्। अयं पुण्डरीको यद्यपि तदवस्थयैव केवलेन ममोपदेशेनैव वाञ्छनीयां रमणीमन्तरेणेत्यर्थः, न विद्यते प्रतीकार उपशमो यस्य स तादृशो विकारो यस्य स तथोक्तः संवृत्तः। असन्मार्गप्रवृत्तं कुपथचलितः सुहृत्। यावच्छक्तितो यथाशक्ति, सर्वात्मना सर्वप्रयत्नेन। "आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च।" इत्यमरः।

(ञ) सखे इति। व्रतरहस्यं आरब्धव्रतविषये गोपनीयो नियमविशेषः। मोक्षप्राप्तौ युक्तिर्योगविशेषः। अन्यः अस्माभिरविदितः, नियमप्रकारो व्रताचरणभेदः। कपिञ्जलेन पूर्वमप्येवम्प्रायमेवोपदिष्टम्।

(ट) कथमिति। एतत् स्त्रीसंसर्गरूपमाचरणं मनसापि चिन्तयितुं भवतः कथं युक्तमुचितं, अपि तु

বৃত্তান্ত জানিয়াও কেন আমাকে জিজ্ঞাসা করিতেছ" এই কথাটি কষ্টক্রমে ধীরে ধীরে আমাকে বলিল। (ঝ) আমি কিন্তু সেই কথা শুনিয়া মনে মনে স্থির করিলাম যে যদিও, কেবল আমার উপদেশেই পুণ্ডরীকের এই বিকারের উপশম হইবে না; তথাপি এক সুহৃৎ, অসৎপথে গমন করিতে প্রবৃত্ত হইলে, অপর সুহৃদের পক্ষে শক্তি-অনুসারে সর্ব্বপ্রকারে তাহাকে নিবৃত্ত করা উচিত, এইরূপ স্থির করিয়া বলিলাম—(ঞ) সখে! পুণ্ডরীক! এ বৃত্তান্ত আমার বেশ জানা আছে, তথাপি কেবল এই কথাই জিজ্ঞাসা করিতেছি যে, তুমি এই যে ঘটনা আরম্ভ করিয়াছ, গুরুরা কি ইহার উপদেশ দিয়াছেন? না ধর্ম্মশাস্ত্রে পড়িয়াছ? না এই একটা ধর্ম্ম-উপার্জ্জনের উপায়? কিংবা তপস্যারই আর একটা রকম? অথবা এইটা স্বর্গে যাইবার পথ? কিংবা এইটা আবদ্ধ ব্রতের কোন গোপনীয় নিয়ম? অথবা মুক্তিলাভের জন্য এই এক প্রকার যোগ? কিংবা অন্য একপ্রকার ব্রত? (ট) তোমার পক্ষে এ বিষয় মনে চিন্তা করাও কি উচিত? স্ত্রীলোকের সহিত আলাপ করার কিংবা স্ত্রীলোক দেখার

(१) क्वचित् इत्युक्तिर्नास्ति। (२) सुविदितं सर्वमेतन्मम। (३) क्वचित् इयमिति नास्ति।

किम् (१) अप्रबुद्ध इवानेन मन्मथहतकेनोपहासास्पदतां नीयमानमात्मानं नावबुध्यसे ? मूढो हि मदनेनायास्यते (ठ)। का वा सुखाशा साधुजननिन्दितेष्वेवंविधेषु प्राकृतजनबहुमतेषु विषयेषु भवतः ? (ड)। स खलु धर्मबुद्ध्या विषलतावनं (२) सिञ्चति, कुवलयमालेति निस्त्रिंशलतामालिङ्गति, कृष्णागुरुधूमलेखेति कृष्णसर्पमवगूहते, (३) रत्नमिति (४) ज्वलन्तमङ्गारमभिस्पृशति, मृणालमिति

कथमपि नेत्यर्थः आख्यातुं कामतः स्त्रियं तद्विषयं वा आलपितुं, ईक्षितुं कामतः स्त्रियं द्रष्टुं, किं पुनर्वक्तव्यं अपि तु किमपि नेत्यर्थः, सर्वत्र ब्रह्मचारित्वादिति भावः।

(ठ) कथयेति। अप्रबुद्ध इव अज्ञानीव। मन्मथहतकेन दुराचारेण मदनेन। अथ मदनपीडया बुद्धिलोपादहं नावबुध्ये इति चेदुच्यते तत्राह मूढ इति। हि निश्चितं। आयास्यते पीड्यते। न पुनर्भवादृशो ज्ञानीति भावः।

(ड) कैति। प्राकृतजनैर्मूढलोकैः बहुमतेषु आदृतेषु, विषयेषु कामिन्यादिभोग्येषु, भवतः का वा सुखाशा अपि तु कापि नेत्यर्थः, तत्सुखस्य क्षणभङ्गुरत्वेन परमपुरुषार्थत्वाभावादिति भावः।

(ढ) स इति। यो मूढो हिताहितविवेकहीनो जनः, अनिष्टानुबन्धिषु पापदुःखाद्यनर्थजनकेषु विषयोपभोगेषु स्रक्चन्दनवनितादिसम्भोगेषु सुखबुद्धिं सुखजनकताज्ञानं आरोपयति करोति, स खलु जनः धर्मबुद्ध्या इदं पुण्यकार्यमिति मत्वा विषलतावनं सिञ्चति जलेनेति शेषः। कुवलयमाला नीलोत्पलस्रक् इति बुद्ध्या, निर्गतस्त्रिंशतः अङ्गुलीभ्यः त्रिंशदङ्गुलीभ्योऽधिकपरिमाण इति निस्त्रिंशस्तरवारिः स लतेव लम्बमानत्वात् तामालिङ्गति। कृष्णागुरोर्धूमलेखा इति बुद्ध्या कृष्णसर्पं दुरन्तविषधरविशेषं अवगूहते आलिङ्गति। रत्नमिति बुद्ध्या ज्वलन्तमङ्गारं वह्नियुक्तं काष्ठं अभिस्पृशति आदत्ते। तथा मृणालमिति बुद्ध्या दुष्टवारणस्य अशिक्षितकुञ्जरस्य हस्तिनो दन्तमुषलमुन्मूलयति उन्मूलयितुं प्रवर्त्तते। वस्तुतोऽनिष्टजनकेषु विषयोपभोगेषु सुखजनकतया ज्ञानारोपणं धर्मभ्रमेण विषलतावनसेचनमिव परिणामे भयङ्करदुःखजनकमित्थं सर्वत्र भावः। अत्र उक्तप्रकारं बिम्बप्रतिबिम्बभावारोपणं विना वाक्यार्थसम्बन्धासम्भवात् मालारूपा निदर्शनालङ्कारः। तथा यच्छब्दान्वित-

বিষয়ে আর বলিবার কি আছে। (ঠ) বল দেখি, এই দুরাচার কন্দর্প, তোমার মনকে লোকের উপহাসাস্পদ করিয়া তুলিতেছে, তুমি অজ্ঞানীর ন্যায় তাহা বুঝিতেছ না কেন? কন্দর্প, মূঢ় ব্যক্তিকেই কষ্ট দিয়া থাকে। (ড) সাধুলোকেরা এই জাতীয় বিষয় সকলকে নিন্দা করিয়া থাকেন, আর মূঢ় লোকেরাই আদর করিয়া থাকে; সুতরাং তোমার ইহাতে সুখের আশাই বা কি আছে? (ঢ) যে মূঢ় ব্যক্তি পরিণামে দুঃখজনক বিষয়-সম্ভোগকে সুখজনক বলিয়া জ্ঞান করে সে নিশ্চয়ই ধর্মভ্রমে বিষলতার বনকে সিক্ত করে, নীলোৎপলের মালা মনে করিয়া তরবারি আলিঙ্গন করে, কৃষ্ণাগুরুর ধূমের রেখা মনে করিয়া ভয়ঙ্কর সর্পকে

(१) क्वचित् 'कथय किं'मित्यपि न दृश्यते।

(२) विषलता। (३) अवगूहति। (४) महारत्नमिति।

दुष्टवारणदन्तमुषलं (१) उन्मूलयति, मूढो विषयोपभोगेष्वनिष्टानुबन्धिषु यः (२) सुखबुद्धिमारोपयति (ढ)। अधिगतविषयतत्त्वोऽपि कस्मात् खद्योत इव ज्योतिर्निर्वीर्य्यमिदं (३) ज्ञानमुद्वहसि, (ण) यतो न निवारयसि प्रबल-रजःप्रसरकलुषितानि स्रोतांसीवोन्मार्गप्रस्थितानीन्द्रियाणि, न नियमयसि वा क्षुभितं मनः (त)। कोऽयमनङ्गो नाम, धैर्य्यमवलम्ब्य निर्भर्त्स्यतामयं दुराचारः' इत्येवं वदत एव मे वचनमाक्षिप्य प्रतिपक्ष्मान्तरालप्रवृत्तबाष्पवेणिकं प्रमृज्य चक्षुः करतलेन पाणौ (४) मामवलम्ब्यावोचत्। (थ)

वाक्यस्य परपाठात "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिदर्पणोदाहृतवद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स तु यच्छब्दान्वितवाक्यस्य प्राक् पाठात् समाधेयः। एतदनुरूपभावश्लोको यथा साहित्यदर्पणे—

"क्षिपसि शुकं वृषदंशकवदने मृगमर्दयसि मृगादनरदने।
वितरसि तुरगं महिषविषाणे निदधच्चेतो भोगविताने॥"

(ण) अधीति। अधिगतं ज्ञातं विषयतत्त्वं भोग्यपदार्थस्वभावो येन स तादृशः सन्नपि त्वं, कस्माद्धेतोः, खद्योतो ज्योतिस्तदीयं तेज इव निर्वीर्य्यं सामर्थ्यहीनं मनोविकारदूरीकरणासमर्थं इदं ज्ञानं उद्वहसि। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः, तथा खद्योत उद्वहति त्वन्तु उद्वहसीति पुरुषभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः "लतेव राजसे तन्वि!" इति दर्पणोदाहृतवत्, स च खद्योतो यथा वहति ज्योतिस्तथोद्वहसीति पाठेन समाधेयः।

(त) ननु कथं निर्वीर्य्यमिदं ज्ञानमित्याह यत इति। प्रबलस्य रजसो रजोगुणसम्भूतस्य कामस्य प्रसरेण वेगेन कलुषितानि दूषितानि, अन्यत्र तु प्रबलस्य रजसो धूलेः प्रसरेण विस्तारेण कलुषितानि आविलीकृतानि। न निवारयसि निवारयितुं शक्नोषि। क्षुभितं कामोद्वेलितं मनः न वा नियमयसि नियमयितुं निरोद्धुं शक्नोषि। अतएव तव निर्वीर्य्यमिदं ज्ञानमिति भावः। अत्र पूर्ववाक्ये पूर्णोपमालङ्कारः। कामस्य रजोगुणजन्यत्वमुक्तं भगवद्गीतायां—

"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।"

(थ) कोऽयमिति। कोऽयमनङ्गो नाम अतितुच्छ इति भावः। आक्षिप्य आक्रम्य स्ववाक्येन

জড়াইয়া ধরে, রজ্জু জ্ঞান করিয়া জ্বলন্ত কাষ্ঠ গ্রহণ করে, মৃণাল মনে করিয়া দুষ্ট হস্তীর দন্তমুষল উৎপাটন করিতে প্রবৃত্ত হয়। (ণ) তুমি সমস্ত বিষয়ের তত্ত্বই বুঝিয়াছ, তথাপি জোনাকী পোকা যেমন নিজের দুর্ব্বল তেজ বহন করে, তুমিও সেইরূপ দুর্ব্বল এই জ্ঞান বহন করিতেছ; (ত) যেহেতু—প্রবল-রজোগুণ-জনিত কামবেগে দূষিত এবং স্রোতের ন্যায় উৎপথগামী নিজের ইন্দ্রিয়গুলিকে দমন করিতে পারিতেছ না এবং ক্ষুভিত চিত্তকেও নিরুদ্ধ করিতে পারিতেছ না। (থ) বল দেখি, এই কন্দর্পটা কে!! সুতরাং ধৈর্য্য অবলম্বন করিয়া এই দুরাচারকে ভৎর্সনা কর', আমি এইরূপ বলিতেছিলাম, এই অবস্থায়ই পুণ্ডরীক আমার বাক্যে বাধা দিয়া, নয়নের প্রত্যেক লোমের অন্তরাল হইতে অশ্রুধারা

---

(१)…मुसलं। (२) परिणतिविरसेषु। (३) निवार्य्यमिदं। (४) क्वचित् पाणाविति नास्ति।

"सखे ! किं बहुनोक्तेन, (१) सर्वथा सुस्थोऽसि (२)। आशीविषविषवेगविषमाणामेतेषां कुसुमचापसायकानां पतितोऽसि न गोचरे, सुखमुपदिश्यते परस्य (द)। यस्य चेन्द्रियाणि सन्ति मनो वा वर्त्तते, (३) यः पश्यति वा शृणोति वा श्रुतमवधारयति वा, यो वा शुभमिदं न शुभमिदमिति विवेक्तुमलं, स खलूपदेशमर्हति। मम तु सर्वमेवेदमतिदूरापेतम् (ध)। अवष्टम्भो ज्ञानं

प्रतिबध्येत्यर्थः। प्रतिपक्ष्मान्तराले प्रत्येकलोममध्ये प्रवृत्ता प्रसृता बाष्पवेणिका अश्रुप्रवाहो यस्य तादृशं चक्षुः प्रमृज्य, करतलेन पाणौ मामवलम्ब्य मम पाणिं धृत्वेत्यर्थः।

(द) सखे इति। सर्वथा सुस्थोऽसि सर्वप्रकारोत्पातरहितोऽसि, सुतरां धन्यस्त्वमिति भावः। तथा येन हि, आश्यां तालुगतदंष्ट्रायां विषमस्येति आशीविषो विजातीयो भयङ्करः सर्पः, तथा च विषविद्यायां "आशी तालुगता दंष्ट्रा तया दष्टो न जीवति।" तस्य विषवेगवत् विषमाणां दुःसहानां कुसुमचापस्य मदनस्य सायकानां गोचरे विषये न पतितोऽसि, अतएव त्वया परस्य जनस्य सम्बन्धे सुखमनायासं यथा स्यात्तथा उपदिश्यते उपदेष्टुं शक्यते, अन्यथा ममैवावस्था स्यादिति भाव.। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं वृत्त्यनुप्रासश्चानयोः संसृष्टिः।

(ध) इह खलु चतुर्विधावस्थाः सम्भवन्ति लोकाः केचित् समर्थसर्वेन्द्रियशालिनः, केचित् संसारभाववैषम्येण रोगादिना वा किञ्चिद्विकलेन्द्रियाः, केचित् सन्देहाकुला., केचिच्च संसारभावातिवैषम्यात् रोगाद्यैर्वा अत्यन्ताकर्मण्येन्द्रियाः, तत्राद्ये त्रये उपदेशयोग्यत्वं अन्त्ये तु सर्वथैवोपदेशायोग्यत्वमिति विभज्य प्रतिपादयितुमाह यस्येति। इन्द्रियाणि स्वस्वविषयग्रहणसमर्थानि मनो वा सुस्थमिति च भावः। एतेन समर्थसर्वेन्द्रियशालित्वमुक्तं। यो वा जनः पश्यति, उद्वेगेन पित्तदोषादिना वा चक्षुषि किञ्चिद्विकले सत्यपि यथाकथञ्चिद्द्रष्टुं शक्नोति, शृणोति वा उद्वेगेन मलादिना वा कर्णे किञ्चिद्विकले सत्यपि कथञ्चित् श्रोतुमर्हति, श्रुतमवधारयति वा उद्वेगेन व्यापारान्तरेण वा मनसि किञ्चिद्विकले सत्यपि आकर्णितं विषयं अवधारयितुं शक्नोति। एतेन किञ्चिद्विकलेन्द्रियशालित्वमुक्तं। यो वा जनः, इदं कार्य्यं शुभं अथवा इदं न शुभं इति विवेक्तुं विवेचनं कर्त्तुं अलं समर्थः, सन्देहात् परं कस्यचिदुपदेशं सतीति भावः। एतेन सन्देहाकुलत्वमुक्तं। स खलु उक्तरूपस्त्रिविध एव जनः, उपदेशमर्हति तत्फलसम्भवादिति भावः। तु किन्तु मम इदं इन्द्रियसत्तादिकं

বহিত হইতেছিল ; তাই সেই নয়নযুগল মার্জ্জনা করিয়া, হস্তদ্বারা আমার হস্তধারণ করিয়া কহিল ।

(ধ) "সখে ! অধিক বলিবার প্রয়োজন কি। তুমি সকল রকমেই সুস্থ আছ। বিশেষতঃ, ভয়ঙ্কর সর্পের বিষবেগের ন্যায় অসহ্য এই সকল কাম-বাণের লক্ষ্যে পড় নাই ; সেই জন্যই অনায়াসে অন্যকে উপদেশ দিতে পারিতেছ। যাহার ইন্দ্রিয় রহিয়াছে, মনও আছে এবং যে দেখিতে পায় ও শুনিতে পায় অথবা শুনিয়া বুঝিতে পারে, কিংবা যে,

(१) बहुक्तेन। (२) स्वस्थोऽसि। (३) क्वचित् 'मनो वा' इतिमात्र. पाठः, क्वचित् विद्यन्त इति।

धैर्य्यं प्रतिसंख्यानमित्यस्तमितैषा कथा, कथमप्येवमेवायत्नविधृतास्तिष्ठन्त्यसवः, दूरातीतः खलूपदेशकालः, समतिक्रान्तो धैर्य्यावसरः, गता प्रतिसंख्यानवेला, अतीतो ज्ञानावष्टम्भसमयः (न)। केन वाऽन्येनास्मिन् समये भवन्तमपहायोपदेष्टव्यम्, उन्मार्गप्रवृत्तिनिवारणं वा करणीयम्, कस्यान्यस्य वचसि मया स्थातव्यम्, को वाऽपरस्त्वत्समो मे जगति बन्धुः (प)। किं करोमि यन्न शक्नोमि निवारयितुमात्मानम्, इयमनेनैव क्षणेन भवता दृष्टा दुष्टावस्था, (१) तद्गत इदानीमुपदेशकालः (फ)। यावत् प्राणिमि तावदस्य कल्पान्तोदित-द्वादश-दिनकर-किरणातप-तीव्रस्य मदनसन्तापस्य प्रतिक्रियां क्रियमाणामि-

---

विविच्यमानं सर्वमेव, अतिदूरापेतं अतिदूरं गतं कामावेशादत्यन्ताकर्म्मण्येन्द्रियतया तत्सत्त्वादिफलाभावादिति भावः। एतेनात्मनश्चतुर्थविधत्व मुक्तम्।

(न) तत्फलमाह अवेति। अवष्टम्भः सत्प्रवृत्त्याश्रयः। "अवाद्दौर्ग्रन्थिनिकटाश्रयेष्विति" स्तम्भः षत्वम्। प्रतिसंख्यानं सदसद्विवेचनम्। अयत्नविधृता रक्षणप्रयत्नाभावेऽपि स्वयमवस्थिताः, असवः प्राणास्तिष्ठन्ति मम देहे विद्यन्ते। एतेनेदानीं प्राणगमनेऽपि न क्षतिरिति सूचितम्। धैर्य्यस्य अवसरः अवलम्बनकालः। प्रतिसंख्यानवेला सदसद्विवेचनसमयः। ज्ञानस्य अवष्टम्भसमयः अवलम्बनकालः।

(प) केनेति वचसि स्थातव्यं वाक्यानुसारेण प्रवर्त्तितव्यं। तत्र हेतुमाह क इत्यादि।

(फ) किमिति। दुष्टावस्था दुर्दशा कामावेशवशाद्धैतन्यविस्पन्दमवस्थानम्।

(ब) यावदिति। प्राणिमि जीवामि। कल्पान्ते प्रलयकाले उदिता ये द्वादश दिनकराः सूर्य्यास्तेषां किरणातपवत् मयूखसन्तापवत् तीव्रस्य। प्रतिक्रियामुपशमं क्रियमाणां त्वयैव विधीयमानां। अन्यथा न प्राणिमीति भावः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

'এই বিষয়টা শুভ না অশুভ' ইহা উপদেশ পাইয়া বিবেচনা করিতে পারে, সেই ব্যক্তিই উপদেশের যোগ্য; কিন্তু আমার এই সমস্তই, অতিদূরে চলিয়া গিয়াছে। (ন) অতএব সৎপথ অবলম্বন করা, জ্ঞান, ধৈর্য্য ও সদসৎ বিবেচনা করা—এই সমস্তের প্রস্তাবই আমার অস্তমিত হইয়াছে; প্রাণ রাখিবার জন্য যত্ন করিতেছি না, তথাপি কোন প্রকারে এই ভাবেই সে প্রাণ রহিয়া যাইতেছে; উপদেশের সময়, অতিপূর্ব্বেই চলিয়া গিয়াছে; ধৈর্য্য-অবলম্বন করিবার সময়ও অতিক্রম করিয়াছে, সদসৎ বিবেচনা করিবার কালও গিয়াছে এবং জ্ঞান-অবলম্বন করিবার সময়ও অতীত হইয়াছে। (প) এ সময়ে তুমি ভিন্ন অন্য কোন্ ব্যক্তি আমাকে উপদেশ দিবে? কেই বা অসৎপথ-প্রবৃত্তি হইতে নিবারণ করিবে? আমিই বা অন্য কাহার বাক্যের অধীন থাকিব? এই জগতে তোমার তুল্য অন্য বন্ধু আমার কে আছে? (ফ) কি করিব, কিছুতেই যে মনকে নিবারণ করিতে পারিতেছি না; এখনই ত তুমি আমার এই দুরবস্থা দেখিয়াছ; সুতরাং এখন উপদেশের সময় গিয়াছে। (ব) সুতরাং

---

(१) दुष्टावस्था, अवस्था दुष्टा।

च्छामि (ब)। पच्यन्त इव मेऽङ्गानि, उत्क्वथ्यत इव हृदयम्, प्लुष्यत इव दृष्टिः, ज्वलतीव शरीरम् (भ)। अत्र यत् प्राप्तकालं तत् करोतु भवान्" इत्यभिधाय तूष्णीमभवत्। (म)

एवमुक्तोऽपि (१) अहमेनं प्राबोधयं पुनः पुनः। यदा शास्त्रोपदेशविशदैः सनिदर्शनैः सेतिहासैश्च वचोभिः सानुनयं सोपग्रहञ्चाभिधीयमानोऽपि नाकरोत् कर्णे, तदाहमचिन्तयम्—अतिभूमिमयं गतो न शक्यते निवर्त्तयितुमिति (२) इदानीं निरर्थकाः खलूपदेशाः, तत्प्राणपरिरक्षणेऽपि तावदस्य यत्नमाचरामि'—इति कृतमतिरुत्थाय गत्वा तस्मात् सरसः सरसा मृणालिकाः समुद्धृत्य, कमलिनी-पलाशानि जल-लव-लाञ्छितान्यादाय, (३) गर्भ-धूलि-कषाय-परिमल-मनोहराणि

(भ) तीव्रतापसम्पर्के हि वस्तूनां पाकक्वाथदाहज्वलनाख्याश्चतस्रोऽवस्थाः सम्भवन्ति, मदनतीव्रतापेन क्रमादात्मनस्ताः सर्वा एव प्रदर्शयितुमाह पच्यन्त इत्यादि। प्लुष्यते दह्यते। सर्वत्र मदनतापेनेति योज्यम्।

(म) अत्रेति। प्राप्त उपस्थितः कालो यस्य तत् प्राप्तकालं एतत्कालोचितम्।

(य) एवमिति। शास्त्रोपदेशेन विशदैर्निर्मलैः। सनिदर्शनैर्दृष्टान्तसहितैः। सोपग्रहं सानुकूल्यञ्च। अतिभूमिं कामस्य चरमां दशां गतः, अतएव उपदेशमात्रेण निवर्त्तयितुं न शक्यते, इति हेतोः। कृतमतिः कृतवानहं। तस्मात् सरसः अच्छोदसरोवरात्। सरसा नूतनत्वादाभ्यन्तरिकद्रवसहिताः। जलस्य लवैः कणैः लाञ्छितानि चिह्नितानि व्याप्तानि, अतएव विशेषशीतलानीति भावः, कमलिनीपलाशानि पद्मिनीपत्राणि आदाय। गर्भे अभ्यन्तरे या धूलयः परागास्तासां कषायपरिमलैः सुरभिगन्धैर्मनोहराणि, कुमुदानि

যতকাল বাঁচিয়া আছি, তাহার মধ্যে, প্রলয়কালীন উদিত দ্বাদশ সূর্য্যের কিরণ-সন্তাপের ন্যায় অত্যন্ত তীব্র এই মদন-সন্তাপের প্রতীকার কর, আমি তাহাই ইচ্ছা করি। (ভ) মদন-সন্তাপে, আমার অঙ্গগুলি যেন পাক পাইতেছে, হৃদয় হইতে যেন ক্বাথ বাহির হইতেছে, চোখ যেন দগ্ধ হইতেছে এবং শরীর যেন জ্বলিতেছে। (ম) অতএব এখন যাহা উচিত, তুমি তাহাই কর" এই কথা বলিয়া পুণ্ডরীক নীরব হইল।

(য) কিন্তু—এইরূপ বলিলেও আমি উহাকে বারবার প্রবোধ দিলাম। যখন শাস্ত্রীয় উপদেশে নির্ম্মল, দৃষ্টান্ত-সমন্বিত ও ইতিহাসসংযুক্ত বাক্যদ্বারা অনুনয় ও আনুকূল্যের সহিত বলিলেও, পুণ্ডরীক তাহা কাণেই তুলিল না; তখন আমি চিন্তা করিলাম—'এ, কামের চরম দশায় উপস্থিত হইয়াছে, সুতরাং কেবল উপদেশে ইহাকে নিবৃত্তি করান যাইবে না; অতএব এখন উপদেশ দেওয়া নিরর্থক' এইরূপ স্থির করিয়া উঠিয়া যাইয়া সেই সরোবর হইতে সরস মৃণাল তুলিয়া জল-কণা-ব্যাপ্ত পদ্মপত্র লইয়া এবং অভ্যন্তরস্থ রেণুর তৃপ্তিকর

---

(१) उक्तोऽपि। (२) क्वचित् इति शब्दो नास्ति। (३) आदाय।

च कुमुद-कुवलय-कमलानि गृहीत्वागत्य तस्मिन्नेव लतागृह-शिलातले शयनमस्याकल्पयम् (य)। तत्र च सुखनिषण्णस्य प्रत्यासन्नवर्त्तिना चन्दनविटपिना (१) मृदूनि किसलयानि निष्पीड्य तेन स्वभावसुरभिणा तुषारशिशिरेण रसेन ललाटिकामकल्पयम्, आचरणादङ्गचर्च्चाञ्चारचयम् (र)। अभ्यर्ण-पादप-स्फुटित-वल्कल-विवर-शीर्णेन च करसञ्चूर्णितेन (२) कर्पूररेणुना स्वेदप्रतीकारं (३) अकरवम् (ल)। उरोनिहितचन्दनद्रवार्द्रवल्कलस्य स्वच्छसलिल-शीकरस्राविणा कदलीदलेन व्यजनक्रियामन्वतिष्ठम् (व)। एवञ्च मुहुर्मुहु-

---

श्वेतोत्पलानि कुवलयानि नीलोत्पलानि कमलानि पद्मानि च तानि। अस्य पुण्डरीकस्य निमित्तं। शयनं शय्याम्।

(र) तत्रेति। किञ्च, प्रत्यासन्नवर्त्तिना समीपस्थाना चन्दनविटपिना चन्दनतरुणा। स्वभावेनैव सुरभिना सौरभवता, तुषारवत् हिमवत् शिशिरेण शीतलेन रसेन निर्य्यासेन करणेन, तत्र मत्कल्पित-शय्यायां सुखनिषण्णस्य सुस्थभावेन स्थितस्य पुण्डरीकस्य ललाटिकां ललाटे तिलकविशेषं। आचरणात् पादादारभ्य अङ्गचर्च्चां गात्रलेपनञ्च चरचयं अकरवम्, शैत्यार्थमिति भावः। अत्र तुषारशिशिरशब्दयोः पर्य्यायतया आपाततः पुनरुक्तताप्रतीतेः परन्तु तुषारवत शिशिर इत्यर्थपर्य्यवसानात् पुनरुक्तवदाभासोऽलङ्कारः।

(ल) अभ्यर्णेति। अभ्यर्णस्य निकटवर्त्तिनः पादपस्य कर्पूरवृक्षस्य स्फुटितानि स्वयं विदीर्णानि यानि वल्कलानि तेषां विवरेभ्यः शीर्णेन निर्गतेन कराभ्यां पाणिभ्यां सञ्चूर्णितेन निष्पिष्टेन कर्पूररेणुना, स्वेदप्रतीकारं घर्म्मशोषणञ्च अकरवम्।

(व) उर इति। उरसि निहितेन वक्षसि दत्तेन चन्दनद्रवेण आर्द्रं वल्कलं उत्तरीयवल्कलं यस्य तस्य तादृशस्य पुण्डरीकस्याङ्गेष्वित्यर्थः, स्वच्छसलिलशीकरस्राविणा निर्म्मलजलविन्दुवर्षिणा कदलीदलेन, व्यजनक्रियां वायुसञ्चालनं।

সৌরভে মনোহর কতকগুলি শ্বেতোৎপল, নীলোৎপল ও পদ্ম নিয়া ফিরিয়া আসিয়া, লতা-মণ্ডপ-স্থিত সেই প্রস্তর-খণ্ডের উপরেই পুণ্ডরীকের জন্য শয্যা নির্ম্মাণ করিলাম। (র) পুণ্ডরীক তাহার উপরে সুস্থ হইয়া অবস্থান করিতে লাগিল; তখন আমি, নিকটবর্ত্তী চন্দনবৃক্ষের কতকগুলি কোমল পল্লব নিষ্পীড়িত করিয়া, স্বভাবতই সুগন্ধি ও হিমের ন্যায় শীতল সেই রসে, পুণ্ডরীকের ললাটে একটি টিপ করিয়া দিলাম এবং চরণ হইতে সমস্ত অঙ্গে সেই রস লেপন করিয়া দিলাম। (ল) এবং নিকটবর্ত্তী কর্পূর-বৃক্ষের বিদীর্ণ বল্কলগুলির ছিদ্র হইতে নির্গত কর্পূরের রেণুগুলিকে হস্তে নিষ্পেষিত করিয়া তাহা দ্বারা পুণ্ডরীকের ঘর্ম্ম শোষণ করিতে লাগিলাম। (ব) পুণ্ডরীকের বুকের উপরে চন্দনের রস লেপিয়া দিয়াছিলাম, তাহাতে উহার উত্তরীয় বল্কলখানা আর্দ্র হইয়া গিয়াছিল, সেই অবস্থায় আবার

---

(१) चन्दनविटपादीनां। (२) करसम्पुटचूर्णितेन। (३) स्वेदप्रतिक्रिया।

रन्यदन्यन्नलिनीदलशयनमुपकल्पयतः, मुहुर्मुहुश्चन्दनचर्च्चामारचयतः, मुहुर्मुहुश्च स्वेदप्रतिक्रियां कुर्वतः, कदलीदलेन चानवरतं वीजयतः समुदभून्मे मनसि चिन्ता—(श) 'नास्ति खल्वसाध्यं नाम भगवतो मनोभुवः। क्वायं हरिण इव वनवासनिरतः स्वभावमुग्धो जनः, क्व च विविध-विलास-रस-राशिर्गन्धर्वराजपुत्री महाश्वेता (ष)। सर्वथा नहि किञ्चिदस्य दुर्घटं दुष्करमनायत्तमकर्त्तव्यं वा जगति। दुरुपपादेष्वप्यर्थेषु (१) अयमवज्ञया विचरति। न चायं केनापि (२) प्रतिकूलयितुं शक्यते (स)। का वा गणना सचेतनेषु, अपगतचेतनान्यपि सङ्घटयितुमलं; (३) यद्यस्मै रोचते, कुमुदिन्यपि दिनकरकरानुरागिणी भवति,

---

(श) एवमिति। किञ्च, एवमनेन प्रकारेण अन्यदन्यत्, शरीरतापेन पूर्वपूर्वस्य म्लानत्वादिति भावः। नलिनीदलशयनं पद्मिनीपत्रशय्याम्। आरचयतः कुर्वतः, शरीरतापेन पूर्वपूर्वस्याः शुष्कत्वादिति भावः। स्वेद-प्रतिक्रिया घर्म्मशोषणम्।

(ष) नास्तीति। मनोभुवो मदनस्य। स्वभावेनैव मुग्धः सरलचेताः, अयं जनः पुण्डरीकः। विविधानां विलासरसानां विभ्रमभावानां राशिरेव सा तादृशी महाश्वेता च क्व। अत्यन्तविभिन्नप्रकृतिकयोरनयोरपि परस्परभावाविर्भावनान्मनोभुवः किमप्यसाध्यं नास्तीति भावः। अत्र विरूपयोः सङ्घटनया विषमालङ्कारः श्रीतोपमया सङ्कीर्य्यते।

(स) सर्व्वेति। अस्य मनोभुवः। अनायत्तं अनधीनं। अयं मनोभूः, दुरुपपादेष्वपि अन्यैः दुष्करेष्वपि, अर्थेषु विषयेषु अवज्ञया अतीवसुकरत्वबोधादवहेलया विचरति प्रवर्त्तते; प्रतिकूलयितुं प्रतिरोद्धुम्।

(ह) केति। सचेतनेषु मनुष्यादिषु। सङ्घटयितुं संयोजयितुं अलं समर्थः, अयं मनोभूरिति शेषः। यदि चेत् अस्मै मनोभुवे रोचते सङ्घटयितुं रुचिर्भवति, तदा कुमुदिन्यपि दिनकरकरानुरागिणी सूर्य्यकिरणानु-

---

নির্ম্মল জলবিন্দুবর্ষী কদলীপত্রদ্বারা ব্যজন করিতেছিলাম। (শ) এই ভাবে বারংবার নূতন নূতন পদ্মপত্রের শয্যা করিয়া দিতেছিলাম, বারংবার চন্দন লেপিয়া দিতেছিলাম, বারংবার ঘর্ম্মের প্রতীকার করিতেছিলাম এবং কদলীপত্রদ্বারা অনবরত ব্যজন করিতে-ছিলাম—তখন আমার মনে এই চিন্তা উৎপন্ন হইল—(ষ) এই জগতে, ভগবান্ কামদেবের অসাধ্য কিছুই নাই; না হইলে, হরিণের ন্যায় বনবাসে নিরত এবং স্বভাবতই সরল-চিত্ত এই ব্যক্তিই বা কোথায়, আর নানাবিধ বিলাস ও হাব-ভাব-সম্পন্না গন্ধর্ব্বরাজকন্যা মহাশ্বেতাই বা কোথায়। (স) এই জগতে কামদেবের পক্ষে দুর্ঘট, দুষ্কর, অনধীন ও ও অকর্ত্তব্য—এমন কিছুই নাই। ইনি, অন্যের দুষ্কর কার্য্যেও অবজ্ঞাপূর্ব্বক প্রবৃত্ত হইয়া থাকেন। ইহাকে কিন্তু কেহই প্রতিরোধ করিতে পারে না। (হ) সচেতন পদার্থের

---

(१) दुरुपपादेष्वर्थेषु। (२) केनचित्। (३) सङ्घटयितुमलं।

कमलिन्यपि शशिकरद्वेषमुज्झति, निशापि वासरेण सह मिश्रतामेति, ज्योत्स्नाप्यन्धकारमनुवर्त्तते, छायापि प्रदीपाभिमुखमवतिष्ठते, तड़िदपि जलदे स्थिरतां व्रजति, जरापि यौवनेन सञ्चारिणी भवति (च)। किंवा तस्य दुःसाध्यमपरम्, एवंविधो येनायमगाधगाम्भीर्य्यसागरस्तृणवल्लघुतां (१) उपनीतः (च)। क्व तत्तपः क्वेयमवस्था। सर्व्वथा निष्प्रतीकारेयमापदुपस्थिता। किमिदानीं कर्त्तव्यम्, किंवा चेष्टितव्यम्, (२) कां दिशं (३) गन्तव्यम्, किं शरणम्, को वा (४) उपायः, कः सहायः, कः प्रकारः, का युक्तिः, कः समाश्रयः, येनास्यासवः सन्धार्य्यन्ते, (५) (क)। केन वा कौशलेन, कत-

---

रक्ता भवतीत्यादि योज्यम्। जरा वार्द्धकमपि यौवनेन सह सञ्चारिणी भवतीत्यर्थः। तथा च एतान्यत्र न रोचन्ते अतएव कुमुदिन्यादयो दिनकरकरानुरागिण्यादिरूपा न भवन्तीति भावः।

(च) किमिति। येन मनोभुवा एवंविधः अगाधगाम्भीर्य्यसागरः अयं पुण्डरीकः तृणवत् लघुतामुपनीतः प्रापितः, तस्य मनोभुवः अपरं इतोऽन्यत् किं वा दुःसाध्यमस्तीत्यन्वयः, अपि तु किमपि नास्तीत्यर्थः। अतएवार्थापत्तिरलङ्कारः, तथा यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठाद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स च तस्य प्राक्पाठेनैव समाधेयः।

(क) क्वेति। इयं दृश्यमाना अवस्था अत्यन्तविह्वला दशा। गन्तव्यमिति भावे तव्यप्रत्ययः। कां दिशमिति तु "न कर्तृकर्म्मणोः"रिति षष्ठीनिषेधात् कर्म्मणि सामान्यविहिता द्वितीयैव "वेगरोधं न कर्त्तव्यमन्यत्र क्रोधवेगतः" इत्याह्निकतत्त्वोदाहृतवत्। श्रीपतिनाप्यत्रसूत्रे इदमेवोदाहृतं यथा—"गन्तव्यं ग्राममनेनेत्यपि मतं नः। तथा च कां दिशं गन्तव्यमिति।" शरणं रक्षकं। प्रकार एतदापत्प्रतीकारस्य पन्थाः। युक्तिरेतत्प्रतीकाराय मनसि पर्य्यालोचना। समाश्रयः अवलम्बनम्। येन अस्य पुण्डरीकस्य असवः प्राणाः सन्धार्य्यन्ते अवस्थाप्यन्ते मया रक्ष्यन्त इत्यर्थः।

আর কথা কি আছে, অচেতন পদার্থকেও ইনি পরস্পর সংযোজিত করিতে পারেন; যদি ইহার অভিপ্রায় হয়, তাহা হইলে কুমুদিনীও সূর্য্যকিরণের অনুরাগিণী হইতে পারে, পদ্মিনীও চন্দ্রকিরণের প্রতি বিদ্বেষ পরিত্যাগ করিতে পারে, রাত্রিও দিনের সঙ্গে মিশিতে পারে, জ্যোৎস্নাও অন্ধকারের অনুগামী হইতে পারে, ছায়াও প্রদীপের সম্মুখে থাকিতে পারে, বিদ্যুৎও মেঘের উপরে স্থায়িত্ব লাভ করিতে পারে এবং বার্দ্ধক্যও যৌবনের সহচর হইতে পারে। (ক) যিনি, এইরূপ অগাধ গাম্ভীর্য্যের সাগর পুণ্ডরীককে তৃণের ন্যায় লঘু করিয়া তুলিয়াছেন, সেই কামদেবের অকর্ত্তব্য বা অসাধ্য কি আছে। (ক) সেই তপস্যাই বা কোথায়, আর এই অবস্থাই বা কোথায়। সকল প্রকারেই প্রতীকারবিহীন এই বিপদ

---

(১) তৃণবল্লঘুতাং। (২) কিমাচেষ্টিতব্যং। (৩) দিশং।
(৪) কশ্চ। (৫) ধার্য্যন্তে।

मया वा युक्त्या, कतरेण वा प्रकारेण, केन वावष्टम्भेन, कया प्रज्ञया, कतमेन वा समाश्वासनेनायं जीवेत्' इत्येते चान्ये च मे विषण्णहृदयस्य सङ्कल्पाः प्रादुरासन् (ख)। पुनश्चाचिन्तयम्—'किमनया अत्यन्तायतया (१) निष्प्रयोजनया चिन्तया। प्राणास्तावदस्य येन केनचिदुपायेन शुभेनाशुभेन वा रक्षणीयाः (ग)। तेषाञ्च तत्समागममेकमपहाय नास्त्यपरः संरक्षणोपायः (घ)। बालभावादप्रगल्भतया च तपोविरुद्धमनुचितमुपहास्यमिव (२) आत्मनो मदनव्यतिकरं मन्यमानो नियतमेकोच्छ्वासावशेषजीवितोऽपि नायं तस्याः स्वयमभिगमनेन पूरयति

(ख) केनेति। युक्त्या पर्य्यालोचनया। प्रकारेण पथा। अवष्टम्भेन उपायावलम्बनेन। प्रज्ञया उद्भावितया बुद्ध्या सङ्कल्पा वितर्काः। प्रादुरासन् आविर्बभूवुः।

(ग) पुनरिति। अत्यन्तायतया अपारत्वादतिदीर्घया। अथ तर्हि विश्रम्यतामित्याह प्राणा इति। रक्षणीया मयेति शेषः। सुतरां तदर्थमुद्यमः कर्त्तव्य इति भावः।

(घ) ननु त्वया कः खलूपायः सम्भाव्यत इत्याह तेषामिति। किञ्च तस्या महाश्वेतायाः समागमं सङ्गरूपमेकमुपायमपहाय अपरस्तेषां प्राणानां रक्षणोपायो नास्तीत्यन्वयः।

(ङ) तर्हि पुण्डरीकेन स्वयमेव गत्वा महाश्वेतया सङ्गम्यतामित्याह बालेति। एकएव उच्छ्वासो निश्वासोऽवशेषो यस्य एतादृशं जीवितं यस्य सः गमनोद्यतजीवनोऽपीत्यर्थः, अयं पुण्डरीकः, तपोविरुद्धं अतएव अनुचितं सुतरामेव च उपहास्यमिव आत्मनः स्वस्य मदनव्यतिकरं इमं कामावेशं मन्यमानः सन् लज्जाकरत्वादिति भावः, बालभावात् शिशुत्वेन पूर्वाभ्यस्तचातुर्य्याभावात्, अप्रगल्भतया प्रत्युत्पन्नधृष्टताभावेन च मुनित्वानूतनरमणीरमणोपयोगिचातुर्य्याभावेन च हेतुनेत्यर्थः, स्वयमात्मनैव गत्वा तस्या महाश्वेताया अभिगमनेन सङ्गमेन मनोरथं न पूरयति न पूरयितुं शक्नोति इति नियतं निश्चितं सुतरामस्य जीवनसंशय एव संवृत्त इति भावः।

উপস্থিত হইয়াছে। এখন আমি কি করি, কিসের চেষ্টা করি, কোন্ দিকে যাই, কাহার শরণ লই, উপায়ই বা কি, সহায়ই বা কে, প্রতীকারের পথই বা কি, কোন্ যুক্তি অবলম্বন করি এবং কাহারই বা আশ্রয় লই; যাহাতে ইহার প্রাণ রক্ষা করিতে পারি। (খ) কোন্ কৌশলে, কোন্ যুক্তিতে, কোন্ প্রকারে কি অবলম্বনে, কোন বুদ্ধিতে এবং কোন্ আশ্বাসে, এ, রক্ষা পাইবে' এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম চিন্তা, আমার বিষণ্ণচিত্তে উপস্থিত হইতে লাগিল। (গ) এবং পুনরায় চিন্তা করিতে লাগিলাম—'অত্যন্ত দীর্ঘ অথচ নিষ্প্রয়োজন এই চিন্তা করিয়া লাভ কি?। শুভই হউক বা অশুভই হউক, যে কোন উপায়ে ইহার প্রাণরক্ষা করিতেই হইবে। (ঘ) কিন্তু একমাত্র মহাশ্বেতার সম্মিলন ব্যতীত ইহার প্রাণরক্ষার অন্য উপায় নাই। (ঙ) একটি নিশ্বাস পরিত্যাগ মাত্র ইহার জীবনের অবশিষ্ট

(१) ध्यानया। (२) उपनतमुपहास्यमिव।

मनोरथम् (ङ)। अकालान्तरक्षमश्चायमस्य मदनविकारः (च)। सततमतिगर्हितेनाकृत्येनापि (१) रक्षणीयान् (२) मन्यन्ते सुहृदसून् साधवः। तदतिक्षेपणमकर्त्तव्यमप्येतदस्माकमवश्यकर्त्तव्यतामापतितम् (छ)। किञ्चान्यत् क्रियते, का चान्या गतिः, सर्वथा प्रयामि तस्याः सकाशम्, आवेदयाम्येतामवस्थाम्' इति चिन्तयित्वा च (३) कदाचिदनुचितप्रवृत्तं मां विज्ञाय सञ्जातलज्जो निवारयेदित्यनिवेद्यैव तस्मै तत्प्रदेशात् सव्याजमुत्थायागतोऽहम् (ज)। तदेवमवस्थिते यदत्रावसरप्राप्तम् ईदृशस्य चानुरागस्य सदृशम्, अस्मदागमनस्य

(च) अथ काले सर्वस्यैव लोपदर्शनात् कञ्चित् कालं प्रतीक्षतां स्वयमेवेयं मदनवेदना लोपं यास्यतीत्याह अकालेति। अकालान्तरक्षमः कालविलम्बासहः। सुतरामविलम्बमेवास्य प्रतीकाराय मया यतितव्यमिति भावः। एतदनुरूपं वाक्यं यथा शाकुन्तले—"दूरगतमन्मथा अक्षमेयं कालहरणस्य।"

(छ) इदानीं प्रतीकारायात्मन एव प्रवर्त्तनमुचितमित्यभिधातुं तत्र साधुसम्मतिमाह सततमिति। अकृत्येन अतिगर्हितत्वादेव अकर्त्तव्येन कर्तुमशक्येनापि उपायेन। तत्तस्मात्, अतिक्षेपणं अत्यन्तलज्जाकरं अकर्त्तव्यमपि मुनित्वादिति भावः, एतत् महाश्वेतया सह पुण्डरीकस्य सङ्गमनं। आपतितं प्राप्तम्।

(ज) किञ्चेति। तस्या महाश्वेतायाः। अनुचिते कर्म्मणि प्रवृत्तः स तथोक्तस्तं। सञ्जातलज्जः पुण्डरीक इति शेषः, निवारयेत् मत्कर्त्तृकं अन्तिकमागन्तुं निषिधेत्, इति हेतोः। तस्मै पुण्डरीकाय। सव्याजं पुष्पाहरणादिव्याजसहितं यथा स्यात्तथा।

(झ) तदिति। तत्तस्मात् एवमवस्थिते इत्थम्भूते वृत्तान्ते। अवसरप्राप्तं एतत्कालोचितम्। ईदृशस्य

রহিয়াছে তথাপি এ, তপস্যার বিরুদ্ধ বলিয়া অনুচিত নিজের কামবিকারকে উপহাসের ন্যায় মনে করিয়া, বালকতাবশতঃ ও চতুরতা নাই বলিয়া, নিজেই যাইয়া মহাশ্বেতার সহিত মিলিত হইয়া নিশ্চয়ই অভিলাষ পূর্ণ করিতে পারিবে না। (চ) অথচ ইহার এই কামবিকার আর বিলম্ব সহিতে পারিতেছে না। (ছ) অত্যন্ত গর্হিত এবং অকর্ত্তব্য হইলেও যে কোন উপায়ে বন্ধুর প্রাণরক্ষা করা উচিত—সাধুগণ এইরূপ মনে করিয়া থাকেন; অতএব অত্যন্ত লজ্জাকর এবং অকর্ত্তব্য হইলেও এই কার্য্য আমার অবশ্যই করিতে হইবে। (জ) অন্য আর কি করিব, অন্য উপায়ই বা কি আছে; নিশ্চয়ই মহাশ্বেতার নিকটেই যাই, যাইয়া এই অবস্থা জানাই' এইরূপ চিন্তা করিয়া আবার ভাবিলাম—'আমি অসঙ্গত কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়াছি, ইহা জানিয়া হয় ত পুণ্ডরীক, আমাকে আসিতে নিষেধ করিবে; এই জন্য তাহাকে না জানাইয়াই আমি কোন ছল করিয়া সে স্থান হইতে উঠিয়া আসিয়াছি। (ঝ) অতএব এইরূপ ঘটনায় এখন যাহা উচিত, এই জাতীয় অনুরাগের যাহা যোগ্য, আমার আগমনের পক্ষে যাহা সঙ্গত এবং নিজেরও যাহা উচিত, আপনি তাহাই করিতে পারেন" এই

(१) कृत्येनापि। (२) परिरक्षणीयान्। (३) क्वचित् चकारो नास्ति।

चानुरूपम्, आत्मनो वा समुचितम्, तत्र प्रभवति भवती" इत्यभिधाय किमियं वक्ष्यतीति मन्मुखासक्तदृष्टिस्तूष्णीमासीत्। (झ)

अहन्तु तदाकर्ण्य सुखामृतमये ह्रद इव निमग्ना, रतिरसमयमुदधिमिवावतीर्णा, सर्वानन्दानामुपरि वर्त्तमाना, सर्वमनोरथानामग्रमिवाधिरूढ़ा, सर्वोत्सवानामतिभूमिमिवाधिश्रयाना, तत्कालोपजातया लज्जया किञ्चिदवनम्यमानवदनत्वादस्पृष्टकपोलोदरैः ग्रथितैरिवोपर्य्युपरि पतनानुबन्धदर्शितमालाक्रमैः, अप्राप्तपक्ष्मसंश्लेषतया उपजातप्रथिमभरैरमलैरानन्दवाष्पजलविन्दुभिः आवर्त्त्यमानप्रहर्षप्रसरा, (१) तत्क्षणमचिन्तयम् (ञ)। 'दिष्ट्या तावदयमनङ्गो मामिव

परां काष्ठां गतस्येत्यर्थः। सदृशं योग्यं। तत्र कार्य्ये भवती त्वं प्रभवति समर्था भवति, इच्छा चेत् तत् कर्त्तुमर्हतीत्यर्थः। एतेन भवत्यैव गत्वा पुण्डरीकेन सह सङ्गम्यतामिति व्यज्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिः।

(ञ) अहमिति। सुखमेव अमृतं पीयूषं तन्मये ह्रदे निमग्नेव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। रतिरनुराग एव रसो जलं तन्मयमुदधिं अवतीर्णेव, तस्यापि तादृशानुरागश्रवणेन ममानुरागस्य शतधा वृद्धिलाभादिति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः, तथा शृङ्गारस्थायिभावस्य रतेः स्वशब्देनैवोपादानात् स्थायिनः स्वशब्दवाच्यतादोषः, स च आह्लादमयमिति पाठेन समाधेयः। वर्त्तमाना विद्यमानेव। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अग्रमधिरूढ़ेव। अत्र वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा। अतिभूमिं सर्वोपरिस्थानं अधिश्रयाना अधितिष्ठन्तीव। वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा। किञ्चिदवनम्यमानं वदनं यस्यास्तस्या भावस्तत्त्वं तस्माद्धेतोः न स्पृष्टे कपोलयोरुदरे मध्यभागौ यैस्तैः, पतनानुबन्धेन पूर्वपूर्वस्य परपरवर्त्तिनः अविच्छिन्नपतनानुसरणेन दर्शितो मालायाः क्रमः परस्परसंलग्नतारूपा परिपाटी यैस्तैः, अतएव उपर्य्युपरि ग्रथितैरिव स्थितैः। अत्र वाच्या क्रियोत्प्रेक्षा। न प्राप्तः मुखस्यावनततया सरलाधःपतनात् न लब्धः पक्ष्मसु नेत्रलोमसु संश्लेषः संयोगो यैस्तेषां भावस्तया हेतुना, उपजातः प्रथिमभरः स्थूलताातिशयो येषां तैः, अन्यथा तु अश्रुविन्दूनां पक्ष्मभिर्विभक्ततया क्षुद्रत्वं स्यादिति भावः। आवर्त्त्यमानः रुध्यमानः प्रहर्षप्रसरः प्रकृष्टानन्दातिशयो यस्याः सा।

কথা বলিয়া কপিঞ্জল, 'ইনি কি বলেন' এই জন্য আমার মুখে দৃষ্টি সংলগ্ন করিয়া নীরব হইয়া রহিলেন।

(ঞ) কিন্তু আমি সেই সকল কথা শুনিয়া, সুখরূপ অমৃতের হ্রদেই যেন নিমগ্ন হইলাম, অনুরাগরূপ জলের সমুদ্রেই যেন অবগাহন করিলাম, সকল প্রকার আনন্দের উপরেই যেন অবস্থান করিতে লাগিলাম, সকল আশার উপরেই যেন আরোহণ করিলাম এবং সকল উৎসবের চরম সীমায়ই যেন অধিষ্ঠান করিতে লাগিলাম; তখন লজ্জা উৎপন্ন হইয়া আমার মুখমণ্ডলকে ঈষৎ অবনত করিয়া দিল; সেই জন্য, নির্ম্মল আনন্দাশ্রু-বিন্দুগুলি, কপোলযুগলের মধ্যভাগ স্পর্শ না করিয়া, অবিচ্ছিন্ন-পতন-অনুসারে মালার পরিপাটী দেখাইয়া, পর পর যেন গ্রথিত হইয়া এবং নয়নের লোমে সংযুক্ত না হওয়ায় অত্যন্ত স্থূল হইয়া পড়িতে লাগিল;

(১)…प्रसरा।

तमप्यनुबध्नाति, यत्सत्यमनेन (१) मे सन्तापयताप्यंशेन (२) दर्शितानुकूलता (ट)। यदि च सत्यमेव तस्येदृशी दशा वर्त्तते, (३) ततः किमिव नोपकृतमनेन, किं वा नोपपादितम्, को वानेनापरः समानो बन्धुः (ठ)। कथं वा कपिञ्जलस्य स्वप्नेऽपि वितथा भारती प्रशान्ताकृतेरस्माद्वदनान्निष्क्रामति (ड)। इत्थम्भूते किं मयापि प्रतिपत्तव्यम्? तस्य वा पुरः किमभिधातव्यम्?' इत्येवं विचारयन्त्या एव प्रविश्य ससम्भ्रमा प्रतीहारी मामकथयत्—"भर्त्तृदारिके! त्वमस्वस्थशरीरेति (४) परिजनादुपलभ्य महादेवी प्राप्ता" इति (ढ)। तच्च श्रुत्वा कपिञ्जलो महाजनसम्मर्द्दभीरुः सत्वरमुत्थाय

(ट) दिष्ट्येति। दिष्ट्या भाग्येन। तं पुण्डरीकमपि अनुबध्नाति अनुसरति आविशतीत्यर्थः। अतएव मां सन्तापयतापि अनेन मदनेन मे मम अंशेन यत् सत्यं अनुकूलता दर्शिता, न तु साकल्येन, अद्यापि सङ्गमाभावादिति भावः। यत्सत्यमित्येकमेव पदं दर्शितेति क्रियाया विशेषणम्।

(ठ) यदीति। तस्य पुण्डरीकस्य ईदृशी कपिञ्जलोक्तप्रकारा। अनेन मदनेन। उपपादितं सम्पादितं। अनेन मदनेन समानः अपरः को वा मम बन्धुः, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः, अनेनैव ममाशायाः पूरितप्रायत्वादिति भावः।

(ड) ननु कपिञ्जलवचनस्य सत्यत्वे किं प्रमाणमित्याह कथमिति। प्रशान्ताकृतेः अनुतारपानुचकसौम्यमूर्त्तेः कपिञ्जलस्य अस्माद्वदनात् स्वप्नेऽपि कथं वितथा मिथ्या भारती निष्क्रामति कथमपि नेत्यर्थः। अस्य प्रशान्ताकृतिरेव वाक्यस्य सत्यत्वे प्रमाणं, ईदृशाकृतेः कदाचिदपि मिथ्यावचनासम्भवादिति भावः।

(ढ) इत्थमिति। इत्थम्भूते वृत्तान्ते इति शेषः। प्रतिपत्तव्यं अङ्गीकर्त्तव्यम्। तस्य पुरो वा पुण्डरीकस्य समीपे वा किमभिधातव्यं गत्वा वक्तव्यं, अथवा वाचिकं प्रेषयितव्यम्। इत्येवं विचारयन्त्या एव मम गृहे इति शेषः। उपलभ्य ज्ञात्वा। महादेवी गन्धर्वराजमहिषी महाश्वेताया माता।

সুতরাং সেই অশ্রুবিন্দুগুলি, আমার অত্যন্ত আনন্দের সূচনা করিতেছিল—এই অবস্থায় তখন আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম। (ট) সৌভাগ্যবশতই এই কন্দর্প, আমার ন্যায় তাঁহারও অনুসরণ করিতেছেন; অতএব সত্যই ইনি, আমাকে সন্তপ্ত করিয়াও, কোন অংশে আমার আনুকূল্য দেখাইয়াছেন। (ঠ) যদি সত্যই, তাঁহার এইরূপ অবস্থা হইয়া থাকে, তবে কামদেব আমার কোন্ উপকার না করিলেন, কোন্ কার্য্যই বা সম্পাদন না করিলেন এবং কামদেবের তুল্য অন্য বন্ধুই বা আমার কে আছে? (ড) শান্তমূর্ত্তি কপিঞ্জলের মুখ হইতে স্বপ্নেই বা মিথ্যা বাক্য নির্গত হইবে কেন? (ঢ) এই জাতীয় ঘটনায় আমিই বা কি অঙ্গীকার করি? তাঁহার নিকটেই বা কি বলিয়া পাঠাই? আমি মনে মনে এইরূপ বিতর্ক

---

(१) एतेन। (२) किमयताप्यंशेन। (३) क्वचित् वर्त्तत इति नास्ति।

(४) अस्वस्थशरीरेति।

"राजपुत्रि! महानयमुपस्थितः कालातिपातः। भगवांश्च भुवनत्रयचूडामणिरस्तमुपगच्छति दिवसकरः। तद्गच्छामि। सर्वथाभिमत-सुहृत्-प्राण-रक्षा-दक्षिणार्थमयमुपरचितोऽञ्जलिः, एष मे परमो विभवः" इत्यभिधाय प्रतिवचनकालमप्रतीक्ष्यैव पुरोयायिना अम्बायाः प्रविशता कनकवेत्रलताकरेण प्रतीहारीजनेन कञ्चुकिलोकेन गृहीत-(१) ताम्बूल कुसुम-पटवासाङ्गरागेण चामरव्यग्रपाणिना कुब्ज-किरात-बधिर-वामन-वर्षवर-(२) विकलमूकानुगतेन (३) परिजनेन सर्वतः संरुद्धे द्वारदेशे कथमप्यवाप्तनिर्गमः प्रययौ (घ)। अम्बा तु मत्-

(घ) तथेति। महतो जनसम्मर्द्दात् महादेव्या सहागतानां लोकानां अत्यन्तात् सङ्घर्षात् भीरुर्भयशीलः, वनेषु प्रायेणैकाकिन एवावस्थानादिति भावः। कालातिपातः समयविलम्बः, तव तत्र गन्तुमिच्छायां सत्यामपि महादेव्यामप्रस्थितायां तदसम्भवादिति भावः। सर्वथैव अभिमतस्य मनोमतस्य सुहृदः प्राणरक्षाया दक्षिणार्थं अयमञ्जलिः उपरचितः कृतः। एष अञ्जलिरचनारूप एव मे मम परमो विभवः सम्पत्तिः, इत उत्कृष्टं तपस्विनो मे धनं नास्ति यत्तुभ्यं दातव्यमिति भावः। अम्बायाः पुरोयायिना अग्रगामिना सता प्रविशतेत्यर्थः। कनकवेत्रलता स्वर्णखचिता वेत्रयष्टिः करे यस्य तेन। गृहीताः ताम्बूलं कुसुमं पटवासः पिष्टातकः अङ्गरागः अङ्गविलेपनद्रव्यञ्च ते येन तेन, चामरेण व्यग्रो व्यासक्तः पाणिर्यस्य तेन। कुब्जा वक्रदेहाः, किराताः कृशदेहाः, बधिराः श्रवणशक्तिहीनाः, वामनाः खर्व्वाकृतयः, वर्षवराः क्लीवाः, विकला विकलाङ्गाः, मूका वाक्शक्तिविहीनाश्च जनास्तैरनुगतेन। कथमपि कष्टेन अवाप्तो लब्धः निर्गमो निर्गमनमार्गो येन स तादृशः कपिञ्जलः। एतेन जनसङ्घर्षबाहुल्यान्निर्गच्छन्तमपि कपिञ्जलं कोऽपि न ज्ञातवानिति सूचितम्।

করিতেছিলাম—এমন সময়ে প্রতিহারী আমার গৃহমধ্যে তাড়াতাড়ি প্রবেশ করিয়া আসিয়া আমাকে কহিল—'রাজকন্যে! আপনার শরীর অসুস্থ হইয়াছে, ইহা পরিজনবর্গের নিকট জানিয়া মহারাণী উপস্থিত হইয়াছেন।' (ণ) এই কথা শুনিয়া কপিঞ্জল, অত্যন্ত লোক-সঙ্ঘর্ষের ভয়ে তাড়াতাড়ি উঠিয়া বলিলেন—"রাজকন্যে! এই গুরুতর কালবিলম্ব উপস্থিত হইয়াছে। এদিকে, ত্রিভুবনের চূড়ামণি ভগবান্ সূর্য্যও, অস্তে যাইতেছেন। অতএব আমি চলিলাম। সর্ব্বপ্রকারে মনোমত বন্ধুর প্রাণ-রক্ষার দক্ষিণার জন্য এই হাত জোড় করিতেছি; এইমাত্রই আমার পরম ধন" এই কথা বলিয়া, প্রত্যুত্তরের সময় প্রতীক্ষা না করিয়াই তিনি দ্বারদেশে কোনপ্রকারে নির্গমনের পথ পাইয়া চলিয়া গেলেন; কারণ, স্বর্ণখচিত বেত্রযষ্টিধারী প্রতীহারিগণ, কঞ্চুকিগণ এবং তাম্বুল, পুষ্প, আবীর ও অঙ্গলেপনদ্রব্য লইয়া চামরহস্ত পরিজনবর্গ, মাতৃদেবীর অগ্রে অগ্রে প্রবেশ করিতেছিল এবং তাহাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ কুব্জ, কৃশদেহ, বধির, বামনবীর, নপুংসক, বিকলাঙ্গ ও মূকগণ আসিতেছিল; তাহাতে

(१) आगृहीत...। (२)...वर्षर...। (३)...कलमूकानुयायिना।

समीपमागत्य सुचिरं स्थित्वा स्वभवनमयासीत्। तया तु तत्रागत्य किं कृतं किमभिहितं किमाचेष्टितमिति शून्यहृदया सर्वं नालक्षयम्। (त)

गतायाञ्च तस्याम्, (१) अस्तमुपगते भगवति हारीत-हरित-वाजिनि सरोजिनीजीवितेश्वरे चक्रवाकसुहृदि सवितरि, (थ) लोहितायमाने पश्चिमाशा-मुखे, हरितायमानेषु कमलवनेषु, नीलायमाने पूर्वदिग्विभागे, पातालपङ्ककलुषेण महाप्रलय-जलधिपयःपूरेणेव तिमिरेणावष्टभ्यमाने जीवलोके, किङ्कर्तव्यतामूढा तामेव तरलिकामपृच्छम्—(द) 'अयि तरलिके! कथं न पश्यसि, इदमा-

(त) अम्बेति। तया अम्बया। किमाचेष्टितं किमर्थं को यत्नः कृतः। शून्यहृदया विषयान्तरज्ञान-रहितचित्ता, केवलपुण्डरीकविषय एवोत्कटं चिन्तनादिति भावः।

(थ) गतायामिति। तस्यामम्बायाम्। हारीतो हरिद्वर्णपक्षिविशेषः, तद्वत् हरिताः पालाशवर्णा वाजिनो घोटका यस्य तस्मिन्, सरोजिनीजीवितेश्वरे पद्मिनीप्राणनाथे, चक्रवाकस्य पक्षिणः सुहृदि बन्धौ, सति सूर्य्ये चक्रवाकदम्पत्योः संयोगादसति च वियोगादिति भावः। सवितरि सूर्य्ये अस्तमुपगते सति। अत्र छेकानुप्रासवृत्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः, तथा हारीतेत्यादिविशेषणत्रयं प्रकृतार्थस्य न किञ्चिदुपकुरुत इत्यपुष्टार्थता-दोषः, स च तत्परित्यागेनैव समाधेयः।

(द) लोहितेति। पश्चिमाशामुखे प्रतीचीमुखे लोहितायमाने सति, सन्ध्यारागादिति भावः। कमल-वनेषु हरितायमानेषु सत्सु, पद्मानां मुद्रिततया पत्रमात्रप्रभाप्रकाशादिति भावः। पूर्वदिग्विभागे नीलायमाने सति, तिमिरोद्गमादिति भावः। पातालस्य यः पङ्कः कर्द्दमस्तद्वत् कलुषं आविलं मलिनं तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। पङ्कस्याधिकमालिन्यद्योतनार्थं पातालपदम्। महाप्रलये जलधेः पयःपूरो जलौघ-स्तेनेव सर्वावरकेणेत्यर्थः, तिमिरेणान्धकारेण, जीवलोके जगति अवष्टभ्यमाने आक्रम्यमाणे सति। अत्रोपमा-लङ्कारः।

(ध) अयीति। इदमाकुलं अतीव विह्वलं, उद्वेगादिनानाविधभावावेशादिति भावः। अप्रतिपत्त्या

द्वारदেশ, সকল দিকেই রুদ্ধ হইয়া গিয়াছিল। (ত) মা, আমার নিকট আসিয়া কি করিলেন, কি বলিলেন এবং কি নিমিত্ত কোন্ চেষ্টা করিলেন—এই সকলই আমি শূন্যমনে লক্ষ্য করিতে পারিয়াছিলাম না।

(থ) তিনি চলিয়া গেলে, যাঁহার ঘোটকগুলি হারিলপক্ষীর ন্যায় হরিদ্বর্ণ এবং যিনি পদ্মিনীর প্রাণেশ্বর ও চক্রবাকের সখা, সেই ভগবান্ সূর্য্যদেব অস্তমিত হইলেন; (দ) পশ্চিম-দিক্ রক্তবর্ণ হইয়া উঠিল; পদ্মবন হরিদ্বর্ণ হইল, পূর্ব্বদিক্ নীলবর্ণ ধারণ করিল এবং পাতালের কর্দ্দমের ন্যায় মলিনবর্ণ ও মহাপ্রলয়কালীন সমুদ্রের জলপ্রবাহের ন্যায় সর্ব্বব্যাপী অন্ধকার আসিয়া জগৎসংসার আশ্রয় করিল—এমন সময়ে আমি কিংকর্তব্য-বিমূঢ় হইয়া

(१) अम्बा।

কুলং মে হৃদয়ম্, অপ্রতিপত্তিবিহ্বলানি চেন্দ্রিয়াণি। ন স্বয়মল্পমপি কর্ত্তব্যমলমস্মি (১) জ্ঞাতুম্, উপদিশতু মে ভবতী যদত্র সাম্প্রতম্ (ধ)। অয়মেবং ত্বৎসমক্ষমেবাভিধায় গতঃ কপিঞ্জলঃ। যদি তাবদিতরকন্যকেব বিহায় লজ্জাম্, উৎসৃজ্য ধৈর্য্যম্, উন্মুচ্য (২) বিনয়ম্, অচিন্তয়িত্বা জনাপবাদম্, অতিক্রম্য সদাচারম্, উল্লঙ্ঘ্য শীলম্, অবগণয্য কুলম্, অঙ্গীকৃত্যায়শঃ, রাগান্ধবৃত্তিঃ অননুজ্ঞাতা পিত্রা, অননুমোদিতা মাত্রা, স্বয়মুপগম্য গ্রাহয়ামি পাণিম্ ;—এবং গুরুজনাতিক্রমাদধর্ম্মো মহান্ (ন)। অথ ধর্ম্মানুরোধাদিতরপক্ষাবলম্বনদ্বারেণ মৃত্যুমঙ্গীকরোমি, এবমপি প্রথমং তাবৎ স্বয়মাগতস্য প্রথমপ্রণয়িনস্তত্রভবতঃ কপিঞ্জলস্য প্রণয়প্রসরভঙ্গঃ (প)। পুনরপরং যদি

কর্ত্তব্যনিশ্চয়াভাবেন বিহ্বলানি আকুলানি। অতএব স্বয়মাত্মনা অত্রাপি অল্পমপি কর্ত্তব্যং জ্ঞাতুং নির্ণেতুং নালমস্মি ন সমর্থাস্মি। সুতরামেব অত্র বিষয়ে যৎ সাম্প্রতং যুক্তং, তদ্ভবতী মে উপদিশতু।

(ন) অয়মিতি। অয়ং কপিঞ্জলঃ, ত্বৎসমক্ষমেব এবমভিধায় গত ইত্যন্বয়ঃ। ইতরকন্যকেব নীচকুলোদ্ভবকন্যেব। উন্মুচ্য পরিত্যজ্য, বিনয়ং শিক্ষাং শিক্ষাজনিতেন্দ্রিয়বেগদমনমিত্যর্থঃ। রাগেণ কামাসক্ত্যা অন্ধা সদসদ্বিবেকহীনা বৃত্তিরধ্যবসায়ো যস্যাঃ সা। এবং কৃতে তর্হীত্যর্থঃ, গুরুজনানাং জনকজনন্যাদীনাং অতিক্রমাৎ অনুমতেরপ্যনপেক্ষণাৎ মহান্ অধর্ম্মো ভবেদিতি শেষঃ।

(প) ননু তর্হি তত্রাগত্য পূর্ব্ববদেব স্বগৃহে স্থীয়তামিত্যাহ অথেতি। ইতরপক্ষস্য স্বগৃহাবস্থানপক্ষস্য তেন পাণিগ্রাহণাভাবপক্ষস্যেত্যর্থঃ অবলম্বনদ্বারেণ মৃত্যুমঙ্গীকরোমি। এতেন তৎপাণিগ্রহণাভাবে মম মরণমবশ্যম্ভাবীতি সূচিতম্। প্রথমং তাবৎ দূষণমিতদ্ধিতি শেষঃ। প্রণয়প্রসরস্য প্রার্থনাতিশয়স্য ভঙ্গো নিষ্ফলতাসম্পাদনম্।

সেই তরলিকাকেই জিজ্ঞাসা করিলাম—(ধ) 'তরলিকে! তুমি দেখিতেছ না কেন? আমার মন যে বড়ই আকুল হইয়াছে এবং কর্ত্তব্য স্থির করিতে না পারায় ইন্দ্রিয়গুলিও বিহ্বল হইয়া পড়িয়াছে; আমি নিজে অল্পও কর্ত্তব্য স্থির করিতে পারিতেছি না; সুতরাং এ বিষয়ে যাহা যুক্তিসঙ্গত হয়, তুমিই আমাকে তাহার উপদেশ দাও। (ন) কপিঞ্জল, এইমাত্র তোমার সমক্ষেই এইরূপ বলিয়া গেলেন, এখন যদি আমি, ইতরজাতীয় কন্যার ন্যায় লজ্জা, ধৈর্য্য ও বিনয় পরিত্যাগ করিয়া, লোকাপবাদের চিন্তা না করিয়া, সদাচার অতিক্রম করিয়া, স্বভাব উল্লঙ্ঘন করিয়া, বংশের অবজ্ঞা করিয়া এবং লোকনিন্দা স্বীকার করিয়া, অনুরাগবশতঃ সদসদ্বিবেচনাবিহীন হইয়া, পিতার অনুমতি না লইয়া এবং মাতার অনুমোদন না পাইয়া, আপনিই যাইয়া পাণিগ্রহণ করাই; তাহা হইলে গুরুজনের অতিক্রম করায় গুরুতর অধর্ম্ম হয়। (প) আবার যদি ধর্ম্মের অনুরোধে অপর পক্ষ অবলম্বন করিয়া

---

(১) অস্মি। (২) অবমুচ্য।

कदाचित्तस्य जनस्य मत्कृतादाशाभङ्गात् प्राणविपत्तिरुपजायते, तदपि मुनिजनवधजनितं महदेनो भवेत्' (फ)। इत्येवमुच्चारयन्त्यामेव मयि, आसन्न-(१) चन्द्रोदयजन्मना विरलविरलेनालोकेन वसन्तवनराजिरिव कुसुमरजसा धूसरतां वासवी दिगयासीत्। (ब)

ततः शशि-केशरि-कर-नखर-विदार्य्यमाण-(२) तमः-करि-कुम्भ-सम्भवेन मुक्ताफलक्षोदेनेव धवलतामुपनीयमानम्, (भ) उदयगिरि-सिद्ध-सुन्दरी-कुच-च्युतेन चन्दनचूर्णराशिनेव पाण्डुरीक्रियमाणम्, (म) चलित-जलधि-जल-

---

(फ) ननु धर्म्माद्यपेक्षया अकिञ्चित्करत्वात् भवतु नाम तत्प्रणयप्रसरभङ्गस्तेन का हानिरित्याह पुनरिति। धर्म्मानुरोधादितरपक्षावलम्बनद्वारेण पुनरपरमिदं दूषणमित्यर्थः। तस्य जनस्य पुण्डरीकस्य। मनसा पतितेन हृतत्वात् पुण्डरीकनामानुच्चारणमिति बोध्यम्। प्राणानां विपत्तिर्विनाशः। तदपि तदापि। महदेनो महापातकं भवेत्, "ब्रह्महत्या सुरापान" इत्यादिमनुवचनात् आत्मनश्च तत्र निमित्तत्वादिति भावः।

(ब) इतीति। वासवस्य इन्द्रस्येयमिति वासवी पूर्व्वा दिक्, कुसुमरजसा वसन्तवनराजिरिव, आसन्नात् अव्यवहितोत्तरकालभाविनः चन्द्रोदयाज्जन्म यस्य तेन विरलविरलेन अल्पाल्पेन आलोकेन धूसरतामयासीत्। अत्रोपमालङ्कारः।

(भ) तत इति। शशी चन्द्र एव केशरी सिंहः विदारणकर्त्तृत्वसाम्यात् तस्य कराः किरणा एव नखरास्तैः विदारणकरणत्वसाम्यात् विदार्य्यमाणो भिद्यमानः तमोऽन्धकार एव करिकुम्भः श्यामत्वसाम्यात् तस्मात् सम्भवेन उत्पन्नेन, मुक्ताफलक्षोदेनेव मुक्ताकणेनेव इन्दुधाम्ना, धवलतामुपनीयमानं प्राप्यमानं, पश्चिमेतरद्दिगन्तरमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणमेतत्। अत्र समस्तवस्तुविषयं साङ्गरूपकं उत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(म) उदयेति। उदयगिरौ याः सिद्धसुन्दर्य्यो देवयोनिविशेषाङ्गनास्तासां कुचेभ्यः स्तनेभ्यः च्युतेन गलितेन, चन्दनचूर्णराशिनेव इन्दुधाम्ना, पाण्डुरीक्रियमाणं दिगन्तरम्। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः।

মৃত্যু স্বীকার করি, তাহা হইলেও প্রথম দোষ এই যে, আপনা আপনি উপস্থিত এবং প্রথমপ্রার্থী মাননীয় কপিঞ্জলের গুরুতর প্রার্থনা ভঙ্গ করিতে হয়; (ফ) এবং দ্বিতীয় দোষ এই যে, আমাদ্বারা আশাভঙ্গ হওয়ায় কখন যদি সেই ব্যক্তির প্রাণের বিপদ জন্মে, তাহা হইলেও মুনিজনের বধজনিত মহাপাতক হইবে' (ব) আমি এইরূপ বলিতেছিলাম—এমন সময়ে, পুষ্পের রেণুতে বসন্তকালের বনশ্রেণীর ন্যায় পূর্ব্বদিক্, সন্নিহিত চন্দ্রোদয় হইতে উৎপন্ন অল্প অল্প আলোকে, ধূসরবর্ণ হইয়া উঠিল।

(ভ) তাহার পর, চন্দ্ররূপ সিংহের কিরণরূপ নখদ্বারা বিদীর্ণ অন্ধকাররূপ হস্তীর কুম্ভ হইতে সম্ভূত মুক্তাচূর্ণের ন্যায় চন্দ্রের কিরণ, পূর্ব্বদিক্ ধবল করিয়া তুলিল; (ম) উদয়াচল-

---

(१) क्वचित् आसन्नेति पाठो नास्ति। (२) शशिकेसरिविदार्य्यमाण, शशिकेसरिकरविदार्य्यमाण...।

कल्लोलानिलोल्लासितेन वेलापुलिन-सिकतोद्गमेनेव पाण्डुतामापाद्यमानम्, पश्चिमेतरदिन्दुधाम्ना दिगन्तरमदृश्यत (य)। शनैः शनैश्चन्द्रदर्शनान्मन्दमन्द-स्मिताया दशनप्रभेव ज्योत्स्ना निष्पतन्ती निशाया मुखशोभामकरोत् (र)। तदनु रसातलादवनीमवदार्य्य (१) उद्गच्छता शेषफणामण्डलेनेव (२) रजनी-करबिम्बेन (३) अराजत रजनी (ल)। क्रमेण च सकलजीवलोकानन्दकेन कामिनीजनवल्लभेन किञ्चिदुन्मुक्तबालभावेन मकरध्वजबन्धुभूतेन समुपारूढरागेण

(य) कल्लोलेति। कलितस्य जलधिजलस्य पूर्वसमुद्रतोयस्य कल्लोलानां महातरङ्गाणां अनिलैर्वायुभिः उल्लासितं उत्थानं प्रापितस्तेन, वेलापुलिनस्य तीरान्तिकस्थतोयोत्थितदेशस्य सिकतानां उद्गमेन ऊर्द्ध्वगमनेन श्वेतत्वसाम्यप्रतिपादनाय आकाशोद्गतवालुकयेवेत्यर्थः इन्दुधाम्ना चन्द्रकिरणेन, पाण्डुतामापाद्यमानं प्राप्यमाणं, पश्चिमेतरम् पश्चिमाया दिशः सम्पूर्णविपरीतं पूर्वमित्यर्थः दिगन्तरं अदृश्यत लोकैरिति शेषः। अत्रापि उत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा अलङ्कारचयनशक्तिप्रदर्शनाय एकार्थ एव प्रयुक्तं विशेषणद्वयं नाधिकदोषायेति भाव्यम्।

(र) शनैरिति। चन्द्रदर्शनाद्धेतोः मन्दमन्दं स्मितं प्रकाशो हास्यञ्च यस्यास्तस्या निशायाः, दशनप्रभेव दन्तकान्तिरिव शनैः शनैः निष्पतन्ती ज्योत्स्ना, मुखशोभां तस्या निशाया एव प्रथमभागसौन्दर्य्यं वदनसौन्दर्य्यञ्च अकरोत्। अत्र चन्द्रनिशयोः पुंस्त्रीलिङ्गाभ्यां स्मितकार्य्येण च नायकनायिकाव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारो उत्प्रेक्षया सङ्कीर्य्यते।

(ल) तदन्विति। रजनी रात्रिः, अवनीमवदार्य्य पृथिवीं भित्त्वा रसातलात् पातालात् उद्गच्छता उत्तिष्ठता, शेषस्य शुभ्रवर्णस्य अनन्तनागस्य फणामण्डलेनेव श्वेतेन वर्त्तुलेन चेति भावः, रजनीकरबिम्बेन चन्द्रमण्डलेन अराजत। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) क्रमेणेति। किञ्चिदुन्मुक्त ईषत्परित्यक्तो बालभावः शैशवं प्रथमोदितभावश्च येन तेन। मकरध्वजस्य मदनस्य बन्धुभूतेन, उद्दीपकत्वादित्युभयत्रापि भावः। समुपारूढ उत्पन्नः रागोऽनुरागो रक्तिमा च यस्य तेन। सुरतोत्सवस्य रमणानन्दस्य उपभोगे एकयोग्यः सर्व्वथा समर्थस्तेन, तेजोऽतिशयादुद्दीपकत्वाच्चेति

স্থিত সিদ্ধরমণীগণের স্তন হইতে নিপতিত চন্দন-চূর্ণ-রাশির ন্যায় চন্দ্রের কিরণ, পূর্ব্বদিক্ পাণ্ডুরবর্ণ করিল (য) এবং বেগবান্ পূর্ব্ব-সমুদ্রের মহাতরঙ্গের বায়ুতে উত্তোলিত, তীরের নিকটবর্ত্তী চড়া হইতে আকাশে উত্থিত বালুকারাশির ন্যায় চন্দ্রের কিরণ, সেই পূর্ব্বদিক্ পাণ্ডুবর্ণ করিল—ইহা লোকে দেখিতে লাগিল। (র) চন্দ্রকে দর্শন করিয়া মন্দ-মন্দ-হাস্যকারিণী রজনীর দন্তপ্রভার ন্যায় জ্যোৎস্না ধীরে ধীরে ভূতলে পতিত হইতে থাকিয়া, সেই রজনীর মুখ-শোভা-সম্পাদন করিল। (ল) তাহার পর, ভূতল বিদারণ করিয়া পাতাল হইতে উত্থিত অনন্তনাগের ফণামণ্ডলের ন্যায় চন্দ্রমণ্ডলদ্বারা রাত্রিটি শোভা পাইতে লাগিল। (ব) ক্রমে সমস্ত জীবলোকের আনন্দজনক, কামিনীগণের প্রীতিকর, কামদেবের বন্ধু. রাগসমন্বিত (অনুরাগযুক্ত, রক্তবর্ণ), সম্ভোগসুখের একমাত্র যোগ্য ও অমৃতময় (আমোদময়,

(१) अवदीर्य्य। (२) शेषफणमण्डलेनेव। (३) रजनिकरबिम्बेन।

सुरतोत्सवोपभोगैकयोग्येन अमृतमयेन यौवनेनेवारोहता शशिना रमणीयतामनीयत यामिनी। (व)

अथ तं प्रत्यासन्न-समुद्र-विद्रुम-प्रभा-पाटलितमिव उदय-गिरि सिंह-करतलाहत-निज-(१) हरिण शोणित-शोणीकृतमिव रति-कलह-कुपित-रोहिणी-चरणालक्तक-रस-लाञ्छितमिव अभिनवोदय-रागलोहितं (२) रजनीकरं (३) उदितं विलोक्य अन्तर्ज्वलितमदनानलाप्यन्धकारितहृदया, तरलिकोत्सङ्गविधृतशरीरापि मन्मथहस्तवर्त्तिनी, चन्द्रगतनयनापि मृत्युमालोकयन्ती तत्क्षण-

---

भावः। तथा अमृतमयेन प्रमोदबहुलेन सुधात्मकेन च। यौवनेनेव आरोहता शरीरं गगनञ्च अधिरोहता शशिना कर्त्रा, यामिनी रमणीयतां अनीयत प्राप्यत, एकत्र स्वाविर्भावेन सर्वाङ्गपूरणात् अन्यत्र ज्योत्स्नया प्रकाशादिति भावः। अत्र शशिनो यौवनसाम्यं शाब्दं यामिन्या रमणीसाम्यन्त्वार्थमिति श्लेषानुप्राणिता एकदेशविवर्त्तिन्युपमालङ्कारः।

(श) अथेति। अथानन्तरं अभिनवोदयरागलोहितं, अतएव प्रत्यासन्नस्य उभयोरप्युदयाचलसान्निध्यात् समन्निहितस्य, समुद्रस्य पूर्वसागरस्य विद्रुमाणां प्रवालानां प्रभाभिः पाटलितं आरक्तीकृतमिव, उदयगिरौ यः सिंहस्तस्य करतलेन आहतः प्रहृतो यो निजहरिणः स्वक्रोडवर्त्ती मृगस्तस्य शोणितेन रक्तेन शोणीकृतमिव रक्तवर्णीकृतमिव तथा रतिकलहे कुपिता या रोहिणी तदाख्या निजभार्य्या तस्याश्चरणयोरलक्तकरसेन लाक्षाद्रवेण लाञ्छितमिव चरणप्रहारात् चिह्नितमिव, उदितं तं रजनीकरं चन्द्रं विलोक्याहं, अन्तर्ज्वलितमदनानलाप्यन्धकारितहृदयेति विरोधः, अन्धकारितहृदया तदुद्वेगादुत्फुल्लतारहितचित्तेति समाधानं, तरलिकया उत्सङ्गे स्वक्रोडे विधृतं स्थापितं शरीरं यस्याः सा तादृशी सत्यपि मन्मथहस्तवर्त्तिनीति विरोधः, मन्मथहस्तवर्त्तिनी कामवशतापन्नेति समाधानं, तथा चन्द्रगतनयनापि मृत्युमालोकयन्तीति विरोधः, पुण्डरीकसङ्गमाभावे मदनात्याचारादात्मनो मरणं सम्भावयन्तीति समाधानम्। ईदृशी सती तत्क्षणमचिन्तयम्। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णाः प्रथमास्तिस्रः क्रियोत्प्रेक्षाः, परे च त्रयो विरोधाभासा इत्येतेषां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

সুধাময়) এবং অল্প পরিমাণে বালভাব-পরিত্যাগকারী, শরীরারোহী যৌবনের ন্যায় গগনারোহী চন্দ্রমণ্ডল, রাত্রিটিকে মনোহর করিয়া তুলিল।

(শ) তাহার পর, নূতন উদয়রাগে রক্তবর্ণ বলিয়া, নিকটবর্ত্তী পূর্ব্বসমুদ্রের প্রবাল-মণির কিরণে রক্তবর্ণের ন্যায়, উদয়াচলস্থিত সিংহের করপ্রহারে নিঃসৃত নিজের ক্রোড়স্থিত হরিণের রক্তে আরক্তীকৃতের ন্যায় এবং সম্ভোগ-বিবাদে কুপিত রোহিণীদেবীর চরণের আলতার রসে রঞ্জিতের ন্যায় উদিত সেই চন্দ্রমণ্ডলটি দেখিয়া, আমার অন্তরে কামানল জ্বলিতে থাকিলেও, হৃদয়ে অন্ধকার ছিল; তরলিকা তাহার ক্রোড়ে আমার শরীর ধারণ করিয়া রাখিলেও, আমি কামদেবের হস্তগত ছিলাম এবং চন্দ্রের উপর দৃষ্টি থাকিলেও, আমি মৃত্যু

---

(१) क्वचित् निजपदं नास्ति। (२)...तरुणलोहितं। (३) रजनिकरं।

मचिन्तयम्—(घ) 'एकत्र खलु मधुमास-(१) मलयमारुतप्रभृतयः समस्ताः, एकत्र चायं पापकारी चन्द्रहतको न शक्यते सोढुम्। इदमतिदुर्विषहमदन-वेदनातुरञ्च (२) मे हृदयम्। अस्य चोद्गमनमिदं सदाहज्वरस्य (३) अङ्गार-वर्षः, शीतार्त्तस्य तुषारपातः, विषस्फोट-(४) मूर्च्छितस्य कृष्णसर्पदंशः,' (ङ) इत्येवं चिन्तयन्तीमेव (५) चन्द्रोदयोपनीता कमलवनम्लानिनिद्रेव (६) मूर्च्छा मां निमीलितलोचनामकार्षीत् (च)। अचिरेण च सम्भ्रान्ततरलिकोपनीताभि-श्चन्दनचर्च्चाभिस्तालवृन्तानिलैश्चोपलब्धसंज्ञा तामेवाकुलाकुलां मूर्त्तमेवाधिष्ठिता

(घ) एकत्रेति। एकत्र एकस्मिन् पक्षे। मदनोद्दीपने मधुमासादीनां सर्वेषां तुल्य एव एवायं चन्द्र इति भावः, अतएव सोढुं न शक्यते। तेन च इदं मे हृदयं अतिदुर्विषहया मदनवेदनया आतुरं जातमिति शेषः। अस्य च चन्द्रहतकस्य इदमुद्गमनमुदयः, दाहज्वरेण सह विद्यमानस्य सदाहज्वरस्य जनस्य सम्बन्धे अङ्गारवर्षः ज्वलत्काष्ठवृष्टिस्वरूपं, शीतार्त्तस्य जनस्य सम्बन्धे तुषारपातस्तत्स्वरूपम्, तथा विषस्फोटेन विषवद्वेदनाजनकव्रणविशेषेण मूर्च्छितस्य जनस्य सम्बन्धे कृष्णसर्पदंशो विजातीयविषधरदंशनस्वरूपम्, मदनवेदनार्त्तस्य जनस्य सम्बन्धे पुनरतीववेदनाकरमिति भावः। अत्र 'निर्म्माणकौशलं धातु'' रित्यादिदर्पणोदा-हृतवत् निरङ्गं मालारूपकमलङ्कारः।

(ङ) इत्येवमिति। चन्द्रोदयेन उपनीता उपस्थापिता, कमलवनस्य म्लानिः सङ्कोच एव निद्रा सेव, मूर्च्छा मां निमीलितलोचनां मुद्रितनयनामकार्षीत्। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) अचिरेणेति। किञ्च, सम्भ्रान्तया सत्वरया तरलिकया उपनीताभिर्दत्ताभिः चन्दनस्य चर्च्चाभि-र्लेपनैः, तरलिकाकृतैस्तालवृन्तानिलैश्च, अचिरेणाहं उपलब्धसंज्ञा सती, आकुलाकुलां ममावस्थादर्शनेन अतीव-विह्वलां, मूर्त्तमेव मूर्त्तिमतीव विषादेन अधिष्ठितामाश्रितां, मम ललाटे विधृता शान्त्यर्थं स्थापिता स्वकरौ

দেখিতেছিলাম—এই অবস্থায় তখন আমি চিন্তা করিতে লাগিলাম। (ঘ) চৈত্রমাস ও মলয়বায়ু প্রভৃতি সকল উদ্দীপক পদার্থ এক দিকে, আর পাপাচারী খলস্বভাব এই চন্দ্র এক দিকে; সুতরাং ইহাকে আর সহ্য করিতে পারিতেছি না। আমার এই হৃদয়ও, অত্যন্ত দুঃসহ মদন বেদনায় পীড়িত হইতেছে। হায়! এই চন্দ্রের উদয়টা, দাহজ্বর-পীড়িত লোকের পক্ষে অগ্নিসংযুক্ত অঙ্গার-বৃষ্টিস্বরূপ, শীতার্ত্ত ব্যক্তির পক্ষে হিম-পাতস্বরূপ এবং বিস্ফোটের বেদনায় মূর্চ্ছিত লোকের পক্ষে ভয়ঙ্কর সর্পের দংশনস্বরূপ; (ঙ) আমি এইরূপ চিন্তা করিতেছিলাম—এমন সময়ে চন্দ্রোদয়নিবন্ধন পদ্মবনের সঙ্কোচ-নিদ্রার ন্যায় মূর্চ্ছা আসিয়া আমার নয়নযুগল মুদ্রিত করিয়া ফেলিল। (চ) তখন তরলিকা, সত্বর হইয়া আমার অঙ্গে চন্দন লেপন ও তালবৃন্তের বায়ুসঞ্চালন করিতে লাগিল, তাহাতে আমি অচিরকালমধ্যে

(१) मदनमधुमास...। (२) अतिदुर्विषह मदनातुरञ्च, अतिदुर्विषहमदनातुरञ्च।
(३) सदाहज्वरवेदनस्य। (४) विषविस्फोट...। (५) चिन्तयन्तीमिव। (६) म्लानिनिद्रेव।

विषादेन, मल्ललाट-विधृत-स्रवच्चन्द्रकान्तमणिशलाकां, अविच्छिन्न-वाष्पजल-धारान्धकारितमुखीं रुदतीं तरलिकामपश्यम् (छ)। उन्मीलितलोचना च मां सा कृतपादप्रणामा चन्दनपङ्कार्द्रेण करयुगलेन बद्धाञ्जलिरवादीत्—"भर्त्तृदारिके! किं लज्जया गुरुजनापेक्षया वा। प्रसीद, प्रेषय माम्, आनयामि ते हृदयदयितं जनम्, उत्तिष्ठ स्वयं वा तत्र गम्यताम्, अतःपरमसमर्थास्मि सोढुमिमं प्रबल-चन्द्रोदय-विजृम्भमाणोत्कलिकाशतमुदधिमिव मकरचिह्नम्" इत्येवं वादिनीं तामहमवोचम्—(१) (झ) 'उन्मत्ते! किं मन्मथेन। नन्वयं सर्वैर्विकल्पानपहरन्, (२) सर्वोपायदर्शनान्युत्सारयन्, सर्वानन्तरायान् (३)

चन्द्रकरस्पर्शात् जलं क्षरन्ती चन्द्रकान्तमणिशलाका यया तां तथा अविच्छिन्नया वाष्पजलधारया अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं मलिनमित्यर्थः मुखं यस्यास्ताम्। अत्र मूर्त्तेनेवेति मूर्त्तिसंयोगित्वोत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) उन्मीलितेति। किञ्च, कृतः पादयोर्मम चरणयोः प्रणामो यया सा, सा तरलिका। चन्दनस्य पङ्केन मदङ्गलेपनकाललग्नेन गाढद्रवेण आर्द्रेण तेन। प्रबलः प्रकृष्टो यश्चन्द्रोदयस्तेन विजृम्भमाणं वर्द्धमानं उत्कलिकाशतं उत्कण्ठासमूहस्तरङ्गसमूहश्च यस्मिन् तं तादृशं, उदधिं समुद्रमिव मकरचिह्नं ध्वजरूपलक्षणं यस्य तं मकरकेतुं त्वयि समुत्पन्नं कामं, सोढुं असमर्थास्मि। अतएव स्वयं वा तत्र गम्यतामिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(झ) उन्मत्त इति। हे उन्मत्ते! नानाविधप्रलापाच्च वास्तविकार्थानवबोधादिति भावः। मन्मथेन किं एकेन कन्दर्पेण किं कृतमित्यर्थः। नन्वित्यामन्त्रणे। येन हि, स्त्र्योः सकाशं तस्मिन्नगमने मदनाख्याचारात्

সংজ্ঞালাভ করিয়া, সেই তরলিকাকেই রোদন করিতে দেখিলাম; তখন সে, আমার অবস্থা দেখিয়া অত্যন্ত বিহ্বল হইয়া পড়িয়াছিল, বিষাদ যেন মূর্ত্তিমান্ হইয়া তাহার উপরে অধিষ্ঠান করিতেছিল, আমার ললাটের উপরিভাগে জলস্রাবী একটি চন্দ্রকান্তমণির শলাকা ধারণ করিয়াছিল এবং অবিচ্ছিন্ন অশ্রুজলের ধারাতে তাহার মুখমণ্ডল মলিন করিয়াছিল। (জ) আমি নয়নযুগল উন্মীলন করিলাম, তখন তরলিকা, আমার চরণে প্রণাম করিয়া, চন্দনের রসে আর্দ্র স্বকীয় হস্তযুগল দ্বারা অঞ্জলি বন্ধন করিয়া আমাকে বলিল "রাজকন্তে! লজ্জা কিংবা গুরুজনের অপেক্ষা করিয়া ফল কি? আপনি প্রসন্ন হউন, আমাকে পাঠাইয়া দিন, আমি আপনার প্রাণবল্লভকে আনয়ন করি, অথবা উঠুন, আপনি নিজেই সেই স্থানে গমন করুন; ইহার পর আপনার এই কামবেদনা আমি আর সহ্য করিতে পারিব না; কারণ - সুস্পষ্ট চন্দ্রোদয়ে সমুদ্রের তরঙ্গের ন্যায়-আপনারও উৎকণ্ঠা শতগুণে বৃদ্ধি পাইতেছে" তরলিকা এইরূপ বলিতেছিল, তখন আমি তাহাকে বলিলাম—(ঝ) 'উন্মত্তে! কন্দর্প

---

(१) तामवोचम्। (२) अपाहरन्। (३) क्वचित् सर्वानिति नास्ति।

अन्तरयन्, सर्वशङ्कास्तिरस्कुर्वन्, लज्जामुन्मूलयन्, स्वयमभिगमनलाघवदोष-माच्छादयन्, कालातिपातं परिहरन्, आगत एव मृत्योस्तस्यैव वा सकाशं नेता कुमुदबान्धवः (क)। तदुत्तिष्ठ यथाकथञ्चिदनुगमनेन जीविता (१) सम्भाव-यामि हृदयदयितमायासकारिणं जनम्' इत्यभिदधाना मदनमूर्च्छास्वेदविह्वलै-रङ्गैः कथञ्चिदवलम्ब्य तामेवोदतिष्ठम् (ख)। उच्चलितायाश्च मे दुर्निमित्त-

---

मृत्योरन्तिकं, वा अथवा सति सम्भवे तस्य कुमारस्यैव सकाशं नेता मां प्रापयिता अयं कुमुदानां बान्धवश्चन्द्रः, सर्वान् विकल्पान् उक्तरूपान् वितर्कान् अपहरन् दूरीकुर्वन् क्रमिकासक्ततप्रतिपादनेन अवसराप्रदानादिति भावः, सर्वेषामुपायानां मदनवेदनानिवृत्तिहेतुभूतानां चन्दनरसलेपनादीनां दर्शनानि तद्वेदनानिवर्त्तकत्वेन ज्ञानानि उत्सारयन् विनाशयन् आत्मप्रभावेण तैस्तन्निवृत्त्यसम्भवात्, सर्वान् अन्तरायान् लोकसाक्षात्कारादीन् विघ्नान् अन्तरयन् व्यवधापयन् स्वजनितोत्कण्ठायाः प्रबलत्वात्, सर्वशङ्काः पित्राद्यनपेक्षानिबन्धनातङ्कान् तिरस्कुर्वन् न्यक्कुर्वन् इदानीन्तनोत्कण्ठातस्ताभ्याशङ्कानां सर्वथा दुर्बलत्वात्, लज्जामुन्मूलयन् एतदुत्कण्ठान्तिके लज्जायास्तुच्छत्वात्, स्वयमभिगमनेन य आत्मनो लाघवं लघुतारूपो दोषस्तं आच्छादयन् आच्छादयन् इदानीन्त-नोत्कण्ठायाः सर्वोपरिवर्त्तित्वात्, कालातिपातं परिहरन् मदनवेदनायाः सर्वथा असह्यत्वात्, आगत एव मां तत्र नेतुमुपस्थित एव। सुतरां नास्ति विविधकल्पप्रकाशप्रयोजनमिति भावः।

(ख) तदिति। तत्तस्माद्धेतोः। यथाकथञ्चित् कष्टेनापीत्यर्थः दारुणमदनवेदनावशादसारशरीर-तयेति भावः, अनु तं कुमारं लक्षीकृत्य गमनेन जीविता अहं, आयासकारिणं तदुद्देशेनैव तावत्क्लेशोत्पत्तेः क्लेशदायिनं हृदयदयितं तं जनं सम्भावयामि उच्छ्वासयामि। एतेन सम्मेलनाभावे स चाहञ्च मरिष्याव इति सूचितम्। मदनमूर्च्छया कामदशया यः स्वेदो घर्म्मस्तेन विह्वलैरङ्गैरुपलक्षिता, तामेव तरलिकां कथञ्चिदवलम्ब्य कष्टेन विधृत्य।

একাকী কি করিয়াছেন ; দেখ, যিনি, মৃত্যু কিংবা সেই কুমারেরই নিকট আমাকে নিয়া যাইবেন, এই সেই চন্দ্র, উপস্থিতই হইয়াছেন ; ইনি সকল বিতর্ক খণ্ডন করিতেছেন, সকল প্রকার উপায় নিশ্চয় করা দূর করিয়াছেন, সকল প্রতিবন্ধক সরাইয়া দিয়াছেন, সকল আশঙ্কা নীচে ফেলিয়াছেন, লজ্জা বিনষ্ট করিয়াছেন, আপনা আপনিই তাঁহার নিকট গমন করায় যে লঘুতা প্রকাশ পায়, সে দোষ ঢাকিয়া ফেলিয়াছেন এবং কালক্ষেপ করা দূর করিয়াছেন। (খ) অতএব উঠ, জীবিত থাকিতে থাকিতে যে কোন প্রকারে তাঁহার নিকট গমন করিয়া, ক্লেশদায়ক সেই প্রাণবল্লভকে জীবিত রাখি' ; এই কথা বলিতে বলিতে, কামপীড়া বৃদ্ধি পাওয়ায় ঘর্ম্ম নির্গত হইয়া আমার সকল অঙ্গ বিকল করিয়া ফেলিল ; এই অবস্থায় আমি সেই তরলিকাকেই অবলম্বন করিয়া কোন প্রকারে গাত্রোত্থান করিলাম।

---

(१) अनुद्गतजीविता।

निवेदकमस्पन्दत दक्षिणं लोचनम्। उपजातशङ्का चाचिन्तयम्—'इदमपरं किमप्युपक्षिप्तं दैवेन' इति। (ग)

अथ नातिदूरोद्गतेन त्रिभुवनप्रासादमहाप्रणालानुकारिणा सुधासलिलप्रवाहानिव (१) वहता चन्दनरसनिर्झरनिकरानिव क्षरता अमृतसागरपूरानिवोद्गिरता श्वेतगङ्गाप्रवाहसहस्राणीव वमता चन्द्रमण्डलेन प्लाव्यमाने (२) ज्योत्स्नया भुवनान्तराले, (घ) श्वेतद्वीपनिवासमिव सोमलोकदर्शनसुखमिवानुभवति

(ग) उच्चलिताया इति। किञ्च, उच्चलितायास्तं प्रति प्रस्थिताया मे दक्षिणं लोचनं दुर्निमित्तनिवेदकं अशुभसूचकं यथा स्यात्तथा अस्पन्दत। किमपि अशुभमित्यर्थः, उपक्षिप्तं उपस्थापितम्, स्त्रीणां दक्षिणनयनस्पन्दनस्य बन्धुविच्छेदसूचकत्वादिति भावः।

(घ) अथेति। अथानन्तरं प्रदोषसमय एव तस्मात् प्रासादशिखरादवातरमिति दूरेणान्वयः। त्रिभुवनमेव प्रासादस्तस्य महाप्रणालं विशालजलनिर्गमनमार्गं अनुकरोतीति तेन। सलिलतुल्यशीतलकिरणनिःसारणात् वर्त्तुलत्वाच्च सौधोपरिप्रान्तवर्त्ति वर्त्तुलाकारप्रणालानुकारित्वं चन्द्रस्येति बोध्यं। अत्र निरङ्गकेवलरूपकार्थोपमयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः। सुधा सौधलेपनद्रव्यं तद्युक्तं सलिलमिति सुधासलिलं तस्य प्रवाहौघान् वहतेव, तादृशश्वेतकिरणधारणादिति सर्वत्र भावः। चन्दनरसस्य निर्झरनिकरान् धारासमूहान् क्षरतेव। अमृतसागरस्य सुधासमुद्रस्य पूरौघान् उद्गिरतेव। तथा श्वेतगङ्गायाः प्रवाहाणां सहस्राणि वमतेव। चन्द्रमण्डलेन कर्त्रा, ज्योत्स्नया करणेन, भुवनान्तराले प्लाव्यमाने सति। अत्र उक्तसङ्करस्य चतसृणां क्रियोत्प्रेक्षाणाञ्च परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः। केवलशुभताद्योतनाय यमुनाजलाद्यसम्पृक्तभागबोधनार्थं श्वेतगङ्गेति श्वेतपदम्।

(ङ) श्वेतेति। जने लोके, श्वेतद्वीपे निवासमवस्थितिमिव, तथा सोमलोकस्य दर्शनसुखमिव अनुभवति सति, सर्वेषां श्वेतानुभवादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षागुणोत्प्रेक्षयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(গ) উঠিয়া সেই দিকেই চলিলাম, তখন আমার দক্ষিণ নয়ন স্পন্দিত হইয়া অমঙ্গল সূচনা করিল, তাহাতে আশঙ্কা জন্মিল, তাই চিন্তা করিলাম যে, 'বিধাতা, এই আর একটি কিছু উপস্থিত করিলেন।'

(ঘ) তদনন্তর, চন্দ্রমণ্ডল, আকাশের অনতিদূরে উঠিয়া জ্যোৎস্নাদ্বারা সমস্ত জগতের মধ্যস্থান প্লাবিত করিল; তখন সেই চন্দ্রমণ্ডলটি, ত্রিভুবনরূপ অট্টালিকার উপরিভাগের নর্দ্দমার নলের অনুকরণ করিতেছিল, চূর্ণসংযুক্ত জলধারা যেন বহন করিতেছিল, চন্দনরসের প্রবাহসমূহ যেন নিঃসারণ করিতেছিল, অমৃতসমুদ্রের জলরাশি যেন উদ্গিরণ করিতেছিল এবং শ্বেতগঙ্গার অসংখ্য প্রবাহ যেন বমন করিতেছিল। (ঙ) জগতের লোক যেন

(१)...पूरानिव। (२) आप्लाव्यमाने।

जने, (ङ) महावराह दंष्ट्रामण्डलनिभेन शशिना क्षीरसागरोदरादिवोद्ध्रियमाणे महीमण्डले, (च) प्रतिभवनमङ्गनाजनेन विकचकुमुदगन्धैश्चन्दनोदकैरुपक्रियमाणेषु चन्द्रोदयार्घेषु, (छ) कामिनी-प्रहित-सुरत-दूती-सहस्र-सङ्कुलेषु राजमार्गेषु, (ज) नीलांशुकावगुण्ठनासु चन्द्रालोकभयचकितासु कमलवनलक्ष्मीष्विव नीलोत्पलप्रभापिहितासु इतस्ततः पलायमानास्वभिसारिकासु, (झ) प्रतिकुमुदमावद्धमधुकरमण्डलासु प्रबुध्यमानासु भवनदीर्घिकाकुमुदिनीषु (ञ)

(च) महीति। महीमण्डले, महावराहस्य नारायणस्य तृतीयावतारस्य दंष्ट्रामण्डलनिभेन शुभत्वादिति भावः, शशिना क्षीरसागरस्य उदरादभ्यन्तरादुद्ध्रियमाण इव सति, क्षीरचन्द्रवत् सर्वतः श्वेतकिरणप्रसरणादिति भावः। अत्रार्थोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(छ) प्रतीति। प्रतिभवनं प्रत्येकगृहे अङ्गनाजनेन कर्त्रा, विकचानां प्रस्फुटितानां कुमुदानां गन्धो येषु तैस्तादृशैश्चन्दनोदकैः करणैः, चन्द्रोदयार्घेषु उपक्रियमाणेषु दीयमानेषु सत्सु।

(ज) कामिनीति। राजमार्गेषु, कामिनीभिः प्रहिताः प्रियतमान्तिकेषु प्रेरिता याः सुरतदूत्यस्तासां सहस्रेण समूहेन सङ्कुलेषु व्याप्तेषु सत्सु।

(झ) नीलेति। नीलांशुकैः कृष्णवर्णवसनैः अवगुण्ठनं अन्धकारसाम्येन तत्र लोकानामदर्शनार्थं शरीरवेष्टनं यासां तासु, अतएव नीलोत्पलानां प्रभाभिः पिहितासु आच्छादितासु कमलवनलक्ष्मीष्विव अभिसारिकासु नायिकाविशेषेषु, चन्द्रस्य आलोकेन प्रकाशेन यद्भयं लोककर्तृकदर्शनाद्भयं तेन चकितासु उद्विग्नासु सतीषु, इतस्ततः पलायमानासु सतीषु। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णा श्रौतोपमालङ्कारः। अभिसारिकालक्षणमुक्तं साहित्यदर्पणे—

"अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा। स्वयं वाभिसरत्येषा धीरैरुक्ताभिसारिका।"

(ञ) प्रतीति। कुमुदं कुमुदं प्रतीति प्रतिकुमुदं, आबद्धं धृतं मधुकरमण्डलं भ्रमरसमूहो याभिस्तासु, भवनदीर्घिकायाः कुमुदिनीषु, प्रबुध्यमानासु प्रकाशमानासु सतीषु। अत्र चन्द्रोदयेन समस्तकुमुदिनीनामेव प्रकाशात् भवनदीर्घिकापदोपादानेन अविशेषे विशेषाख्यदोषः, स च भवनदीर्घिकापदपरिहारेणैव परिहरणीयः।

শ্বেতদ্বীপে বাস করিতেছিল এবং চন্দ্রলোকদর্শনের সুখ যেন অনুভব করিতেছিল। (চ) আদিবরাহের দন্তমণ্ডলের তুল্য চন্দ্রমণ্ডল যেন পৃথিবীমণ্ডলকে ক্ষীরোদসাগরের ভিতর হইতে উত্তোলন করিতেছিল। (ছ) প্রত্যেক গৃহে রমণীগণ, প্রস্ফুটিত-কুসুম-যুক্ত চন্দনজলদ্বারা চন্দ্রোদয়ের উদ্দেশে অর্ঘ দান করিতেছিল। (জ) রাজপথগুলি কামিনীগণের প্রেরিত রতিদূতীগণে ব্যাপ্ত হইয়াছিল। (ঝ) অভিসারিকা নায়িকাগণ, নীলবর্ণ বসনে সমস্ত শরীর আবৃত করিয়া, নীলোৎপলের প্রভায় আচ্ছাদিত পদ্মবনের শোভার ন্যায় বিরাজ করিতে থাকিয়া, চন্দ্রের আলোকমধ্যে লোকের দর্শনের ভয়ে উদ্বিগ্ন হইয়া চারিদিকে পলায়ন করিতে লাগিল। (ঞ) বাটীস্থিত দীর্ঘিকার কুমুদিনীগুলি প্রস্ফুটিত হইল, তাহাতে

स्फुटित-कुमुदवन-बहल-धूलि-धवलितोदरे निशा-नदी-पुलिनायमाने अन्तरीक्षे, (१) (ट) चन्द्रोदयानन्दनिर्भरे महोदधाविव रतिरसमय इव उत्सवमय इव विलासमय इव प्रीतिमय इव जीवलोके, (ठ) शशिमणिप्रणाल निर्झरे प्रमोद-मुखर-मयूर-रव-रम्ये प्रदोषसमये, (ड) गृहीत-विविध-कुसुम-ताम्बूलाङ्गराग-पटवास-चूर्णया तरलिकयानुगम्यमाना, तेनैव मूर्च्छा-निहितेन किञ्चिदाम्लान-चन्दन-ललाटिका लग्न-धूसरा-कुलालकेन चन्दनरस-

(ट) स्फुटितेति। अन्तरीक्षे आकाशे, स्फुटितस्य कुमुदवनस्य बहलधूलिभिः प्रचुरपरागैः धवलितं शुभ्रीकृतं उदरमभ्यन्तरं यस्य तस्मिन् तादृशे सति, अतएव निशैव नदी नीलत्वसाम्यादिति भावः, तस्याः पुलिनायमाने तीर्योत्थितवालुकामयदेशवदाचरति सति परागाणां वालुकावद्धवलत्वादिति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं निरङ्गकेवलरूपकञ्च, गतोपमयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करस्तेनयोः पुनरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ठ) चन्द्रोदयेति। चन्द्रस्य उदयेन आनन्दनिर्भरः प्रमोदातिशयो यस्मिन् तादृशे, अतएव महोदधाविव स्फीते इति शेषः, जीवलोके प्राणिगणे, रतिरसमये इव शृङ्गारमये इव, उत्सवमये इव, विलासमये इव तथा प्रीतिमये इव च सति। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, चतस्रो गुणोत्प्रेक्षाश्च इत्येतासां मिथोनिरपेक्षतया पुनः संसृष्टिः, रस्य रतिरसेति स्थायिभावस्य स्वशब्दोक्तिदोषः रसस्य स्वशब्दोक्तिदोषश्च, तौ च उत्कण्ठामय इवेति पाठेन समाधेयौ।

(ड) शशीति। शशिमणयश्चन्द्रकिरणस्पर्शेन जलस्राविणश्चन्द्रकान्ता एव प्रणाला जलनिर्गमनालानि तेषां निर्झरो यस्मिन् तादृशे, तथा प्रमोदेन मुखराणां शब्दायमानानां मयूराणां रवैः रम्ये मनोहरे प्रदोषसमये जाते सति। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

(ढ) गृहीतेति। गृहीतानि विविधानि कुसुमानि ताम्बूलानि अङ्गरागः पटवासचूर्णानि च यया तया। मूर्च्छानिहितेन मूर्च्छाकाले तरलिकया दत्तेन। किञ्चिदाम्लाना कालेन शुष्कतया ईषद्घनीभूता या चन्दनस्य ललाटिका ललाटे तिलकविशेषस्तत्र लग्ना अतएव धूसराः, आकुला विकीर्णा अलकाः स्खलितकुन्तला

প্রত্যেক কুমুদের উপর ভ্রমরগণ আসিয়া বসিতে লাগিল। (ট) প্রস্ফুটিত কুমুদের রেণুতে আকাশের মধ্যস্থান ধবলবর্ণ করিয়া তুলিল, তাহাতে আকাশটি, রাত্রিরূপ নদীর পুলিনের ন্যায় বিরাজ করিতে লাগিল। (ঠ) চন্দ্রের উদয়ে আনন্দে পরিপূর্ণ প্রাণিগণ, মহাসমুদ্রের ন্যায় স্ফীত হইয়া, যেন শৃঙ্গারময়, উৎসবময়, বিলাসময় এবং হর্ষময় হইয়া উঠিল। (ড) চন্দ্র-কান্তমণিরূপ পয়নালা হইতে জল-নিঃসরণ হইতে লাগিল, এই ভাবে—আমোদবশতঃ শব্দায়মান ময়ূরগণের রবে মনোহর হইয়া প্রদোষকাল উপস্থিত হইল। (ঢ) এমন সময়ে আমি, পদ্মরাগমণির কিরণে নির্ম্মিতের ন্যায় একখানি রক্তবর্ণ বসনে মস্তক অবগুণ্ঠন করিয়া সেই অট্টালিকার উপর হইতে নামিলাম ; তখন তরলিকা নানাবিধ পুষ্প, তাম্বূল, অঙ্গলেপনদ্রব্য ও আবীর-চূর্ণ লইয়া আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতে লাগিল। তরলিকা, আমার ললাটে যে

(१) अन्तरिक्षे।

चर्चाङ्गरागवेशेनार्द्रेण, (१) तथैव च तया कण्ठस्थितयाक्षमालया श्रवणशिखर-चुम्बिन्या च पारिजातमञ्जर्य्या, पद्मरागरश्मिनिर्म्मितेनेव रक्तांशुकेन कृतशिरोऽवगुण्ठना केनचिदात्मीयेनापि परिजनेनानुपलक्ष्यमाणा तस्मात् प्रासादशिखराद-वातरम्। (ढ)

अवतीर्य्य च पारिजातकुसुम-मञ्जरी-परिमलाकृष्टेन रिक्तीकृतोपवनेन कुमुद-वनान्यपहाय धावता मधुकरजालेन नीलपटावगुण्ठनविभ्रममिव (२) सम्पाद-यतानुबध्यमाना प्रमदवनपक्षद्वारेण निर्गत्य तत्समीपमुदचलम्। (ण)

प्रयान्ती च तरलिकाद्वितीयमपरिजनं (३) आत्मानमालोक्य (४) अचिन्तयम्,

यत्र तेन। आर्द्रेण तदानीमपि किञ्चित् क्लिन्नेन। चन्दनरसस्य चर्चा लेपनमेवाङ्गरागः स एव च वेशस्तेन उपलक्षिता। किञ्च, तथैव तदानीं दृष्टरूपेणैव, कण्ठस्थितया अक्षमालया तस्य कुमारस्य जपमालया चोप-लक्षिता। तया श्रवणशिखरचुम्बिन्या कर्णोपरिवर्त्तिन्या, तया पारिजातमञ्जर्य्या चोपलक्षिता। तथा पद्मरागरत्नस्य रश्मिभिः किरणैर्निर्म्मितेनेव, अतिलौहित्यसाम्यादिति भावः, रक्तांशुकेन कृतं शिरसः अवगुण्ठनं यया सा। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) अवेति। पारिजातकुसुममञ्जर्य्याः परिमलेन सौरभेण आकृष्टं तेन। रिक्तीकृतं सर्वेषामेवा-गमनात् शून्यीकृतं उपवनं येन तेन। नीलपटेन यदवगुण्ठनं तस्य विभ्रमं विलासं शोभां सम्पादयतेव, मस्तकोपरिभ्रमणादिति भावः, मधुकरजालेन भ्रमरसमूहेन, अनुबध्यमाना अनुगम्यमाना अहं, प्रमदवनस्य स्वकीयोपवनस्य पक्षद्वारेण पार्श्वद्वारेण निर्गत्य, तस्य कुमारस्य समीपं उदचलं प्रस्थितवती। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) प्रयान्तीति। तरलिकैव द्वितीया यस्य तं अतएव अपरिजनं अन्यपरिजनरहितं। अत्र

চন্দনের টিপ দিয়াছিল, তখন তাহা কিছু ঘন হইয়া গিয়াছিল, সুতরাং আলুলায়িত কেশকলাপ তাহার উপরে সংলগ্ন হইয়া ধূসরবর্ণ হইয়াছিল; আর মূর্চ্ছার সময়ে আমার শরীরে তরলিকা, যে চন্দন লেপন করিয়া দিয়াছিল, তখনও তাহা আর্দ্র ছিল এবং সেই মাত্র আমার বেশবিন্যাস হইয়াছিল; সেই জপের মালা তখনও সেই ভাবেই আমার গলায় ছিল এবং সেই পারিজাত-মঞ্জরীটিও সেই ভাবেই আমার কাণের উপরে ছিল; আমি নামিলাম বটে, কিন্তু আমার কোন পরিজনও আমাকে দেখিতে পাইল না।

(ণ) আমি নামিয়া, উদ্যানের পার্শ্ব-দ্বার দিয়া নির্গত হইয়া তাঁহার নিকট চলিলাম; তখন ভ্রমরগণ, পারিজাতপুষ্প-মঞ্জরীটির সৌরভে আকৃষ্ট হইয়া, উদ্যানটি শূন্য করিয়া এবং কুমুদবন পরিত্যাগ করিয়া, নীলবর্ণ বসনের অবগুণ্ঠন-শোভাই যেন সম্পাদন করিতে করিতে আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিতে লাগিল।

(ত) আমি যাইবার সময়ে, আপনাকে কেবল তরলিকা-সহায় ও অন্য-পরিজন-বিহীন

(१) आर्द्रार्द्रेण। (२)...विभ्रमानिव। (३) तरलिकाद्वितीयपरिजनं। (४) अवलोक्य।

—'प्रियतमाभिसरणप्रवृत्तस्य जनस्य किमिव कृत्यं बाह्येन परिजनेन (त)। नन्वेत एव परिजनलीलामुपदर्शयन्ति। तथाहि, समारोपितशरासनासक्त-सायकोऽनुसरति कुसुमायुधः, दूरप्रसारितकरः करमिव कर्षति शशी, प्रस्खलन-भयात् पदे पदेऽवलम्बते रागः, लज्जां पृष्ठतः कृत्वा पुरः सहेन्द्रियैर्धावति हृदयम्, निश्चयमारोप्य नयत्युत्कण्ठा' इति (थ)। प्रकाशमब्रवम्—'अयि तरलिके! अपि नाम मामिवायमिन्दुहतकस्तमपि करेण (१) कचग्रहाकृष्टमभिमुखमान-

उदचलमित्यभिधाय प्रयान्तीत्यभिधानात् "एवमुक्तो मन्त्रिमुख्ये रावणः प्रत्यभाषत।" इति दर्पणोदाहृत-वद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'प्रासादशिखरादवातरम्। अवतीर्य्य च' इत्युक्तवत् प्रयान्तीत्यत्र 'उच्चलन्ती' इति पाठेन समाधेयः। प्रियतमस्य प्रियतमाया वा अभिसरणे प्रवृत्तस्य जनस्य नायिकाया नायकस्य वा, बाह्येन बहिरङ्गेन परिजनेन किं नाम कृत्यं कर्त्तव्यं प्रयोजनमस्ति, अपि तु किमपि नेत्यर्थः।

(थ) ननु तर्हि रक्षणाविक्षणादिकं परिजनकार्य्यं कैः कर्त्तव्यमित्याह नन्विति। नन्वित्यवधारणे। एते वक्ष्यमाणाः कुसुमायुधादयः परिजनस्य लीलां व्यवहारं। समारोपितशरासने सज्ये धनुषि आसक्तः सायको यस्य स तादृशः कुसुमायुधः, अनुसरति। एतेनास्य पृष्ठरक्षित्वं सूचितम्। दूरे प्रसारितः करः किरणो हस्तश्च येन स तादृशः शशी करं कर्षतीव हस्तमाकृष्य नयतीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। रागोऽनुरागः प्रस्खलनभयात् पदे पदे प्रतिपदक्षेपं अवलम्बते धारयति। अनयोः पार्श्वरक्षित्वं ध्वनितम्। हृदयं कर्त्तृ, लज्जां पृष्ठतः कृत्वा पृष्ठे समादाय दूरीकृत्य च इन्द्रियैर्नयनादिभिः सह पुरः अग्रतो धावति, तथा निश्चयमारोप्य ध्रुवं तव प्रियसमागमो भविष्यतीति निश्चयबुद्धिमुत्पाद्य नयति। अनयोः सम्मुखरक्षित्वं प्रतिपादितम्।

(द) प्रकाशमिति। अपि नाम अयमिन्दुहतकः खलस्वभावश्चन्द्रः मामिव तमपि कुमारं करेण किरणेनैव पाणिना, कचेषु केशेषु यो ग्रहो ग्रहणं तेन आकृष्टं सन्तं ममाभिमुखमानयेत्। तथा सति सत्वरलाभेन भद्रं भवेदिति भावः। अत्र किरणहस्तयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः।

দেখিয়া চিন্তা করিতে লাগিলাম—'যে ব্যক্তি, বল্লভজনের নিকট অভিসারে প্রবৃত্ত হয়, তাহার আবার বাহিরের পরিজনে প্রয়োজন কি?। (থ) কারণ—ইঁহারাই পরিজনের কার্য্য-সম্পাদন করিয়া থাকেন। যথা,—কামদেব, সজ্য ধনুতে বাণ সন্ধান করিয়া অনুসরণ করিতে থাকেন; চন্দ্র, দূরে কর প্রসারিত করিয়া হস্তধারণ করিয়াই যেন নিয়া যাইতে থাকেন; পড়িয়া যাইবার ভয়ে, অনুরাগ আসিয়া প্রত্যেক পদক্ষেপে ধারণ করিতে থাকে; মন, লজ্জাকে পিছনে রাখিয়া অন্যান্য ইন্দ্রিয়ের সহিত অগ্রে অগ্রে ধাবিত হইতে থাকে এবং 'নিশ্চয়ই প্রিয়তমের সহিত সম্মিলন হইবে' এইরূপ নিশ্চয় ধারণা জন্মাইয়া উৎকণ্ঠা আসিয়া নিয়া যাইতে থাকে।' (দ) তাহার পর প্রকাশ করিয়া কহিলাম—'তরলিকে! এই খলস্বভাব চন্দ্র, আমার ন্যায় তাঁহাকেও করদ্বারা কেশধারণপূর্ব্বক আকর্ষণ করিয়া আমার দিকে কিছু পথ

(१) किरण...।

येत्' (द)। इत्येवंवादिनीञ्च मामसौ विहस्याब्रवीत्—"भर्त्तृदारिके ! मुग्धासि, किमस्य तेन जनेन। अयमात्मनैव तावन्मदनातुर इव भर्त्तृदारिकायां (१) तास्ताश्चेष्टाः करोति। तथाहि प्रतिबिम्बच्छलेन स्वेदसलिलकणिकाचितं (२) चुम्बति कपोलयुगलम्, लावण्यवति पयोधरभारे निपतति, प्रस्फुरितकरः स्पृशति रसनावलिमणीन्, निर्म्मल-नख-लग्नमूर्त्तिः पादयोः पतति (ध)। किञ्चास्य मदनातुरस्येव वपुस्तापाच्छुष्कचन्दनानुलेपपाण्डुतां वहति,(३) मृणाल-वलयधवलान् करान् धत्ते, प्रतिमाव्याजेन स्फटिकमणिकुट्टिमेषु निपतति,

(ध) इतीति। असौ तरलिका। मुग्धा सरलबुद्धिरसि, अतएवैवं ब्रवीषीति भावः। अस्य चन्द्रस्य, तेन जनेन कुमारेण किं प्रयोजनम्। अयं चन्द्रः, आत्मनैव स्वयमेव। तास्ता मदनातुरसम्बन्धिनीः सर्वाः, चेष्टा व्यवहारान् करोति। स्वेदसलिलकणिकाचितं घर्म्मजलबिन्दुव्याप्तं तव कपोलयुगलं प्रतिबिम्बच्छलेन चुम्बतीव। अत्र सापह्नवा प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। ननु कार्य्येण कामुकव्यवहारसमारोपेऽपि समासोक्तिः, अयमात्मनैव तावदित्यादिना द्वयोरपि प्रस्तुतत्वात् प्रस्तुते अप्रस्तुतव्यवहारसमारोपस्यैव समासोक्ति-विषयत्वात्। लावण्यवति पयोधरभारे तव विस्तृतस्तनयुगले निपतति प्रतिबिम्बच्छलेन लगतीव, वक्षसा नायकव-दिति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः। प्रस्फुरितः प्रदीप्तः सात्त्विकभावोदयात् प्रकम्पितश्च करः किरणो हस्तश्च यस्य स तादृशः सन्, रसनावलेः काञ्चीदाम्नः मणीन् स्पृशति, नीवीस्खलनसमये नायकवदिति भावः। अत्र किरणहस्तयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः। तथा निर्म्मलेषु नखेषु तव चरणनखेषु लग्ना संक्रान्ता मूर्त्तिर्यस्य स तादृशः सन् तव पादयोः पततीव, अपराद्धनायकवदिति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) किञ्चेति। किञ्च अपि च। मदनातुरस्येव अस्य चन्द्रस्य वपुः कर्त्तृ, तापात् मदनसन्तापादिव, शुष्को यश्चन्दनस्य अनुलेपः प्रलेपस्तद्वत् पाण्डुतां वहति धारयति। अत्रोपमासङ्कीर्णा प्रतीयमाना हेतूत्प्रेक्षा-

আনিবে কি ?' (ধ) আমি এইরূপ বলিতেছিলাম, তখন তরলিকা হাস্য করিয়া আমাকে বলিল—"রাজকন্যে ! আপনি সরলবুদ্ধি কি না, তাই এইরূপ বলিতেছেন ; প্রকৃতপক্ষে সেই ব্যক্তি দ্বারা চন্দ্রের প্রয়োজন কি ? চন্দ্র যে, নিজেই কামাতুরের ন্যায় আপনার প্রতি সেই সকল ব্যবহার করিতেছে। দেখুন—ঘর্ম্ম-জল-বিন্দু-সমূহে ব্যাপ্ত আপনার গণ্ডযুগলকে প্রতিবিম্বছলে যেন চুম্বন করিতেছে, লাবণ্যযুক্ত স্তনমণ্ডলে যেন লাগিয়া পড়িতেছে, প্রস্ফুরিত-করে আপনার কাঞ্চীদামের মণিগুলিকে স্পর্শ করিতেছে এবং আপনার নির্ম্মল নখসমূহে লগ্নদেহ হইয়া চরণযুগলেই যেন পতিত হইতেছে। (ন) বিশেষতঃ কামাতুরের ন্যায় চন্দ্রের শরীরটা, কাম-সন্তাপবশতই যেন চন্দনের শুষ্ক প্রলেপের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ বহন করিতেছে, মৃণাল-বলয়ের ন্যায় শুভ্রবর্ণ কিরণ ধারণ করিতেছে। প্রতিবিম্বচ্ছলে স্ফটিকময় ভূমিতে লুণ্ঠিত হইতেছে, কেতকী পুষ্পের অভ্যন্তরস্থ কেসরের ন্যায় ধূসরবর্ণ-চরণ হইয়া প্রতিবিম্বচ্ছলে

(१) भर्त्तृदारिकायाः। (२)···अश्चित'। (३) उद्वहति।

कैतकी-गर्भ-केसर-धूसर-पादः कुमुद-सरांस्यवगाहते, सलिलशीकरार्द्रान् शशि-मणीन् करैरामृशति, द्वेष्टि विघटितचक्रवाकमिथुनानि कमलवनानि। एतै-श्चान्यैश्च तत्कालोचितैरालापैस्तया सह तमुद्देशमभ्युपागमम्। (न)

तत्र च मार्ग-लता कुसुम-रजोधूसरं चरणयुगलं कैलासतटाच्चन्द्रोदय-प्रस्नुत-(१) चन्द्रकान्तमणिप्रस्रवणे प्रक्षालयन्ती, (२) यस्मिन् प्रदेशे स आस्ते तस्मिन्नेव चास्य सरसः पश्चिमे तटे पुरुषस्येव रुदितध्वनिं विप्रकर्षान्नातिव्यक्त-

---

लङ्कारः। मृणालवलयवत् धवलान् मृणालवलयेन धवलांश्च, करान् किरणानेव हस्तान् धत्ते, मदनसन्तप्तजन-वदिति भावः। अत्र किरणहस्तयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः। प्रतिमाव्याजेन प्रतिबिम्ब-च्छलेन, स्फटिकमणीनां कुट्टिमेषु बद्धभूमिषु निपतति लुठति, मदनातुरवत् सन्तापनिवृत्त्यर्थमिति भावः। अत्रापह्नुतिरलङ्कारः। कैतक्याः पुष्पस्य गर्भकेसरवत् अभ्यन्तरस्थकिञ्जल्कवत् धूसरः पादः किरण एव चरणो यस्य स तादृशः, प्रतिमाव्याजेन कुमुदसरांसि कैरवपूर्णसरोवरान् अवगाहते, मदनसन्तापशान्त्यर्थमिति भावः। अत्राप्यपह्नुतिरलङ्कारः पूर्ववदतिशयोक्तिश्च, अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। मदनतापेन चरणस्यापि पाण्डुता जातेति प्रदर्शनार्थं कैतकीत्यादिविशेषणमिति नापुष्टार्थतादोषः। सलिलशीकरैः स्वस्पर्शेन निःसृतैर्जलबिन्दुभिः आर्द्रान् क्लिन्नांस्तान् शशिमणीन् चन्द्रकान्तान् करैः किरणैरेव हस्तैः आमृशति स्पृशति, मदनतापनिवृत्त्यर्थमिति भावः। अत्राप्यभेदाध्यवसायमूलातिशयोक्तिरलङ्कारः। तथा विघटितानि रात्रिवियोगस्य नैसर्गिकत्वाद्वियुक्तानि चक्रवाकानां पक्षिणां मिथुनानि दम्पतयः येभ्यस्तानि तादृशानि कमलवनानि, द्वेष्टि एभिरेव कमलवनैश्चक्रवाक-मिथुनानि विघटितानीति मन्यमानस्तानि सङ्कोचयन् तेषु विद्वेषं करोतीव, ये किल प्रियतमयोः सम्मेलनं न सहन्ते तान् प्रति सम्मेलनेच्छोः कामार्त्तस्य विद्वेषो युज्यत एवेति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तमुद्देशं तेन कुमारेणाध्यासितपूर्वं प्रदेशं अभि लक्षीकृत्य उपागमम्।

(प) तत्रेति। किञ्च। कैलासतटाच्चन्द्रकान्तमणिमयादित्यर्थः, चन्द्रोदयेन प्रस्नुतं गलितं यच्चन्द्रकान्त-मणीनां प्रस्रवणं निर्झरस्तस्मिन्, मार्गे पथि यानि लताकुसुमानि तेषां रजोभिः परागैर्धूसरं स्वकीयं चरणयुगलं प्रक्षालयन्ती अहं। स कुमारः। अस्य सरसः अच्छोदस्य। विप्रकर्षाद्दूरत्वात् नातिव्यक्तं अनतिस्पष्टं रुदित-ध्वनिं रोदनशब्दं, उपालक्षयं अशृणवम्।

কুমুদপূর্ণ সরোবরে অবগাহন করিতেছে, জলকণাতে আর্দ্র চন্দ্রকান্তমণির উপরে হস্ত আমর্শন করিতেছে এবং রাত্রি উপস্থিত হওয়ায় চক্রবাকদম্পতিগণ, যে পদ্মবনের নিকট হইতে চলিয়া গিয়াছে, সেই পদ্মবনগুলিকে যেন বিদ্বেষ করিতেছে।' এই প্রকার এবং সেই সময়ের উপযুক্ত অন্যান্য অনেক প্রকার আলাপ করিতে করিতে তরলিকার সহিত সেই স্থান লক্ষ্য করিয়া চলিলাম।

(প) সেখানে চন্দ্রের উদয়ে, কৈলাস পর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে চন্দ্রকান্তমণির জল নিঃসৃত হইতেছিল, এদিকে পথের লতাজাত কুসুমের রেণুতে আমার চরণযুগল ধূসরবর্ণ হইয়া গিয়াছিল,

---

(१)...प्रस्नुत···। (२) क्षालयन्ती।

सुपालभयम् (प)। दक्षिणेक्षणस्फुरणेन च प्रथममेव ममस्थापितशङ्का, तेन सुतरामवदीर्णहृदयेव किमप्यनिष्टमन्तः कथयतेव विषण्णेनान्तरात्मना "तरलिके! किमिदम्" इति सभयमभिदधाना वेपमानगात्रयष्टिस्तदभिमुखं (१) अतित्वरितमगच्छम्। (फ)

अथ निशीथप्रभावाद्दूरादेव विभाव्यमानस्वरमुन्मुक्तार्त्तनादम् "हा हतोऽस्मि, हा दग्धोऽस्मि, हा वञ्चितोऽस्मि, हा किमिदमापतितम्, किं वृत्तम्, उत्सन्नोऽस्मि, (२)। दुरात्मन्! मदनपिशाच! पाप! निर्घृण! किमिदमकृत्यमनुष्ठितम्? आः पापे! दुष्कृतकारिणि! दुर्विनीते! महाश्वेते! किमनेन

(फ) दक्षिणेति। किञ्च। दक्षिणेक्षणस्फुरणेन दक्षिणनयनस्पन्दनेन, आहिता उत्पादिता शङ्का आतङ्को यस्याः सा अहं, तेन रुदितध्वनिना सुतरामत्यन्तं अवदीर्णहृदयेव सती। विषण्णेनान्तरात्मना करणेन सभयमभिदधाना। वेपमाना कम्पमाना गात्रयष्टिर्यष्टिवत् कृशं शरीरं यस्याः सा।

(ब) अथेति। निशीथप्रभावात् रात्रिप्रभावेण सर्वेषामपेक्षिकनिस्तब्धत्वादित्यर्थः। "निशीथस्तु पुमानर्द्धरात्रे स्याद् रात्रिमात्रके।" इति मेदिनी। केचित्तु अर्द्धरात्रप्रभावादिति व्याचक्षते, तदसत् प्रदोषसमये निर्गताया महाश्वेतायाः कियन्मात्रपथातिक्रम एवार्द्धरात्रासम्भवात्। दूरादेव विभाव्यमानः अयं कपिञ्जलस्य स्वर इत्थं परिचीयमानः स्वरो यस्य तं, उन्मुक्तार्त्तनादं, इत्येतानि अन्यानि च विलपन्तं कपिञ्जलमशृणवमिति परेणान्वयः। हतोऽस्मि दैवेन। दग्धोऽस्मि शोकानलेन। वञ्चितोऽस्मि विधात्रा। आपतितं उपस्थितं। वृत्तं जातं। उत्सन्नो दैवेन मूलादुत्खातोऽस्मि। निर्घृण! निर्दय! अकृत्यमकार्य्यं। अनेन पुण्डरीकेण

সুতরাং সেই জলে চরণযুগল প্রক্ষালন করিতেছিলাম ;—এমন সময়ে, তিনি যে স্থানে ছিলেন, অচ্ছোদ সরোবরের সেই পশ্চিমতীরে, দূরত্বনিবন্ধন অস্পষ্ট কোন পুরুষের যেন রোদনধ্বনি শুনিতে পাইলাম। (ফ) এদিকে প্রথমেই দক্ষিণ-চক্ষু স্পন্দিত হইয়া আমার মনে আশঙ্কা জন্মাইয়াছিল, সুতরাং আবার সেই রোদনধ্বনি শুনায় হৃদয় যেন বিদীর্ণ হইয়া গেল এবং অন্তরাত্মা বিষণ্ণ হইয়া মনের নিকট যেন কোন বিপদের সংবাদ বলিতে লাগিল, তখন আমি ভয়ের সহিত বলিলাম—'তরলিকে! এ ব্যাপারটা কি'; আমার কিন্তু শরীর কাঁপিতে লাগিল—এই অবস্থায় আমি অতি তাড়াতাড়ি সেই দিকে যাইতে লাগিলাম।

(ব) তদনন্তর, রাত্রির নিস্তব্ধতাবশতঃ দূর হইতেই স্বর শুনিয়া বুঝিতে পারিয়াছিলাম যে, কপিঞ্জল উন্মুক্ত কণ্ঠে আর্ত্তনাদ করিতেছেন—"হায়! মরিলাম, হায়! কপাল পুড়িল, হায়! বঞ্চিত হইলাম, হায়! এ কি উপস্থিত হইল, কি ঘটিল, এ যে একেবারে উৎসন্ন হইলাম। দুরাত্মন্! মদনপিশাচ! পাপিষ্ঠ! নির্দ্দয়! এ কি অকার্য্য অনুষ্ঠান করিলি? আ পাপিষ্ঠে! পাপকারিণি! দুর্বিনীতে! মহাশ্বেতে! এ, তোর কি অপকার করিয়াছিল?

---

(१) क्वचित् तदिति नास्ति। (२) उच्छिन्नोऽस्मि।

तेऽपकृतम्? आः पाप! दुश्चरित! चन्द्र! चाण्डाल! (१) कृतार्थोऽसि?, इदानीमपगतदाक्षिण्य! दक्षिणानिलहतक! पूर्णास्ते मनोरथाः, कृतं यत्-कर्त्तव्यं? (२) वहेदानीं यथेष्टम् (ब) हा भगवन्! श्वेतकेतो! पुत्रवत्सल! न वेत्सि मुषितमात्मानम्, हा धर्म्म! निष्परिग्रहोऽसि, हा तपः! निराश्रयमसि, हा सरस्वति! विधवासि, हा सत्य! अनाथमसि, हा सुरलोक! शून्योऽसि (भ) सखे! प्रतिपालय माम्, अहमपि भवन्तमनुयास्यामि, न शक्नोमि भवन्तं (३) विना क्षणमप्यवस्थातुमेकाकी। कथमपरिचित इवादृष्टपूर्वं इवाद्य मामेकपदे उत्सृज्य प्रयासि, कुतस्तवेयमतिनिष्ठुरता, कथञ्च त्वद्दते क्व गच्छामि, कं याचे,

---

ते तव किमपकृतं, यत्त्वमेव निमित्तीभूय एनं व्यापादितवतीति भावः। चाण्डाल! चाण्डालतुल्यातिनृशंस!। कृतार्थोऽसि पुण्डरीकस्य मृत्युविधानादिति भावः। इदानीं ननु पूर्वमिति भावः, अपगतं दाक्षिण्यं यस्य तत्-सम्बोधनं, खलस्वभाव दक्षिणवायो!। अत्र दाक्षिण्यशब्दस्य दक्षिणदिग्वर्त्तित्वार्थकत्वे विरोधात् औदार्य्यार्थकत्वे च तत्समाधानाद्विरोधाभासोऽलङ्कारः। इदानीं यथेष्टं इच्छानुसारेण वह सञ्चर।

(भ) हेति। आत्मानं मुषितं दैवेनापहृतसर्वस्वं न वेत्सि न जानासि। निर्नं विद्यते परिग्रहः स्वीकारो यस्य स तादृशोऽसि, त्वमितः परं कस्य परिग्रहं कुर्य्या इति भावः। विधवासि पत्युः पुण्डरीकस्य मरणादिति भावः। एतेनास्य वाचस्पतित्वं ध्वनितं। सुरलोक! स्वर्ग!।

(म) सखे इति। प्रतिपालय प्रतीक्षस्व। एकपदे सहसा। "तत्क्षणैकपदे तुल्ये" इति हलायुधः। उत्सृज्य परित्यज्य। त्वद्दते त्वां विना। शरणमुपैमि रक्षकं लभे। अन्धोऽस्मि त्वच्छोकजनितमोहेन दृष्टि-शक्तिलोपादिति भावः। शून्या इत्यादौ सर्वत्र तवाभावादिति भावः। लोकास्त्रयोऽपि भुवनानि, निर्नं विद्यते सुखं येषु ते तादृशा जाता इति शेषः। स्मितपूर्वं अभिभाषितुं शीलं यस्य स तथोक्तस्तस्य भावः सा। शृधातोः शाब्दबोधे शक्तिं मन्वतां नैयायिकानां मते परिचितस्वरैर्णोच्चार्य्यमाणैः हा हतोऽस्मीत्यादिशब्दैः कपिञ्जल-

---

আ পাপিষ্ঠ! দুশ্চরিত্র! চন্দ্র! চণ্ডাল! কৃতার্থ হইয়াছ? হে দক্ষিণবায়ো! এখন তোমার সে দাক্ষিণ্য দূরীভূত হইয়াছে, মনের অভিলাষ পূর্ণ হইয়াছে, যাহা করিবার তাহা করিয়াছ, এখন ইচ্ছানুসারে বহিতে থাক। (ভ) হা! ভগবন্ শ্বেতকেতো! পুত্রবৎসল! আপনার সর্ব্বস্ব অপহৃত হইয়াছে, তাহা জানিতে পারিতেছেন না। হা ধর্ম্ম! তুমি এখন কাহাকে গ্রহণ করিবে? হা তপস্যে! তুমি এখন নিরাশ্রয় হইলে, হা সরস্বতি! তুমি বিধবা হইলে, হা সত্য! তুমি অনাথ হইলে, হা স্বর্গলোক! তুমি শূন্য হইলে। (ম) সখে! পুণ্ডরীক! আমার প্রতীক্ষা কর, আমিও তোমার অনুগামী হইব; কারণ—তোমাকে ছাড়িয়া আমি একাকী ক্ষণকালও থাকিতে পারিব না। যাহার সহিত পরিচয় হয় নাই এবং যাহার সঙ্গে কখনও দেখা হয় নাই—এইরূপ লোকের ন্যায় তুমি কেন আজ আমাকে হঠাৎ

---

(१) चण्डाल!। (२) क्वचित् यदिति नास्ति। (३) भवता।

कं शरणमुपैमि । अन्धोऽस्मि संवृत्तः, शून्या मे दिशो जाताः, निरर्थकं जीवितम्, अप्रयोजनं तपः, निःसुखाश्च लोकाः । केन सह परिभ्रमामि, समालपामि । (१) उत्तिष्ठ देहि मे प्रतिवचनम्, (२) क्व तन्ममोपरि सुहृत्प्रेम, क्व सा स्मितपूर्वाभिभाषिता च" इत्येतानि चान्यानि च विलपन्तं कपिञ्जलमश्रौषम् । (म)

तच्च श्रुत्वा पतितैरिव प्राणैर्दूरादेव मुक्तैकताराक्रन्दा सरस्तीरलतासक्तिव्यमानांशुकोत्तरीया (३) यथाशक्तित्वरितैरज्ञात-सम-विषम-भूमिभाग-विन्यस्तैः पादप्रक्षेपैः प्रस्खलन्ती पदे पदे, केनाप्युत्क्षिप्य नीयमानेव तं प्रदेशं गत्वा, (य)

विषयकं बोधमकार्षमित्यर्थः, "यदाश्रौषं द्रौपदीं रङ्गमध्ये" इत्यादिवत् । श्रवणेन्द्रियजन्यप्रत्यक्षे शक्तिं ब्रुवतां मीमांसकानां मते तु शाब्दबोध एव श्रवणेति । अथवा धातूनामनेकार्थत्वात् अश्रौषं स्वरपरिचयादनुमानेन कपिञ्जलमज्ञासिषमित्यर्थः ।

(य) तच्चेति । पतितैरिव बहिर्गतैरिव बहिर्गन्तुमुद्यतैरिवेत्यर्थः प्राणैरुपलक्षिता, दूरादेव मुक्तः एकतारः अत्युच्च आक्रन्दो रोदनध्वनिर्यया सा, सरस्तीरेषु या लतास्तासु आसक्त्या लङ्घयितुमनवकाशात् संलग्नतया छिद्यमानं छिद्यमानं अंशुकं परिहितवस्त्रं उत्तरीयं वस्त्रञ्च यस्याः सा, यथाशक्तित्वरितैः शक्त्यनतिक्रमेण शीघ्रचलितैः, अज्ञातेषु अपरिचितेषु समविषमेषु समतलविषमतलेषु भूमिभागेषु विन्यस्तैः पादप्रक्षेपैः पदे पदे प्रस्खलन्ती, केनापि जनेन उत्क्षिप्य उत्तोल्य नीयमानेवाहं, तं कुमाराध्युषितं प्रदेशं गत्वा तत्क्षणविगतजीवितं तं महाभागमद्राक्षमिति परेणान्वयः । इतः पुंसि द्वितीयैकवचनान्तपदानि महाभागमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि । अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः ।

পরিত্যাগ করিয়া যাইতেছ ? তোমার এই অত্যন্ত নিষ্ঠুরতা আজ কোথা হইতে আসিল ? বল, তোমাকে ছাড়িয়া কোথায় যাইব, কাহার নিকট প্রার্থনা করিব এবং কাহার শরণ লইব ? আমি অন্ধ হইয়াছি, আমার সকল দিক্ শূন্য বলিয়া বোধ হইতেছে জীবন অনর্থক মনে করিতেছি, তপস্যার প্রয়োজন নাই এবং ত্রিভুবনের কোথাও সুখ নাই। আমি কাহার সহিত বিচরণ করিব এবং কাহার সঙ্গে আলাপ করিব। ভাই! উঠ, আমার কথার উত্তর দাও, আমার উপরে তোমার সেই বন্ধুর প্রণয় আজ কোথায় গেল এবং ঈষৎ হাস্য করিয়া সেই কথা বলা আজ কোথায় গেল"—তখন কপিঞ্জল এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম বিলাপ করিতেছিলেন।

(য) তাহা শুনিয়া আমার প্রাণ যেন বহির্গত হইতে উদ্যত হইল, আমি দূর হইতেই মুক্তকণ্ঠে উচ্চৈঃস্বরে রোদন করিয়া উঠিলাম, সরোবরের তীরবর্ত্তী লতাতে সংলগ্ন হইয়া আমার পরিহিত ও উত্তরীয় বস্ত্র ছিঁড়িয়া যাইতে লাগিল, অপরিচিত সমতল ও বিষমতল ভূমিতে শক্তি অনুসারে দ্রুতবেগে পদক্ষেপ করায় প্রত্যেক পদক্ষেপেই পড়িয়া যাইতে লাগিলাম

---

(१) केन वार्त्तां करिष्यामीत्यधिकः पाठः क्वचित् (२) मे विलपतः । (३)...लतानुषज्यमानांशु...।

সরস্তীরসমীপবর্ত্তিনি শিশিরশীকরাসারস্রাবিণি শশিমণিশিলাতলে বিরচিতং কুমুদ-কুবলয়-কমল-বিবিধ-বনকুসুম-সুকুমারং (১) মৃণালময়ং কুসুমশর-সায়কময়মিব শয়নমধিশয়ানম্, (র) অতিনিষ্পন্দতয়া মৎপদশব্দমিবা-কর্ণয়ন্তম্, (ল) অন্তঃকোপ-শমিত-(২) মদন-সন্তাপতয়া তৎক্ষণ-লব্ধ সুখ-প্রসুপ্তমিব, (ব) মনঃক্ষোভ-প্রায়শ্চিত্ত-প্রাণায়ামাবস্থিতমিব, (শ) অতিপ্রস্ফু-রিতপ্রভেণ 'ত্বৎকৃতে মমেয়মবস্থেতি' কথয়ন্তমিবাধরেণ, (ষ) ইন্দু-দ্বেষ-পরি-

(র) সর ইতি। শিশিরং শীতলং শীকরাসারং জলবিন্দুধারাং স্রবতি ক্ষরতীতি তস্মিন্, শশিমণি-শিলাতলে চন্দ্রকান্তমণিপাষাণোপরি, বিরচিতং নির্ম্মিতং, কুমুদৈঃ শ্বেতোৎপলৈঃ কুবলয়ৈর্নীলোৎপলৈঃ কমলৈঃ পদ্মৈঃ বিবিধৈর্বনকুসুমৈশ্চ সুকুমারং কোমলং, তথা মৃণালময়ং, অতএব কুসুমশরস্য মদনস্য সায়কময়মিব বাণনিষ্পন্ন-মিব স্থিতং শয়নং শয্যাং অধিশয়ানমধিতিষ্ঠন্তম্। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ল) অতীতি। অতিনিষ্পন্দতয়া হেতুনা, মম পদশব্দমাকর্ণয়ন্তমিব। প্রায়েণৈব নায়কা উৎকণ্ঠা-বশান্নায়িকানামাগমনকালীনপদশব্দমাকর্ণয়ন্তি। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ব) অন্তরিতি। অন্তঃকোপেন মমানাগমনান্মানসিকক্রোধেন শমিতো মদনসন্তাপো যস্য তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা, তস্মিন্ ক্ষণে লব্ধং যৎ সুখং তেন প্রসুপ্তং নিদ্রিতমিব। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(শ) মন ইতি। মনঃক্ষোভস্য ব্রহ্মচর্য্যবিরোধিনো মদনবেগজনিতচিত্তোদ্বেলনস্য তজ্জনিতপাপস্যেত্যর্থঃ প্রায়শ্চিত্তরূপো যঃ প্রাণায়ামঃ কুম্ভকাত্মকস্তস্মিন্নবস্থিতমিব, নিষ্পন্দত্বাদিতি ভাবঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। "পাপক্ষয়মাত্রসাধনত্বেন বিধিবোধিতং কর্ম্ম প্রায়শ্চিত্ত"মিতি স্মার্ত্তাঃ।

(ষ) অতীতি। অতিপ্রস্ফুরিতা অতীবপ্রদীপ্তা প্রভা যস্য তাদৃশেন অধরেণ কারণেন, ত্বৎকৃতে তব নিমিত্তে মম ইয়ং মৃত্যুরূপা অবস্থা জাতেতি শেষঃ, ইতি কথয়ন্তমিব। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

এবং কেহ যেন আমাকে উত্তোলন করিয়া নিয়া গেল—এই ভাবে আমি সেই স্থানে যাইয়া, সেই সময়েই মাত্র জীবন চলিয়া গিয়াছে—এই অবস্থায় সেই মহাভাগ মুনিকুমারকে দেখিতে পাইলাম। (র) সরোবরের তীরের নিকটে, শীতল-জলবিন্দুবর্ষী বৃহৎ একখানা চন্দ্রকান্ত-মণির উপরে মৃণালময় একখানি শয্যা নির্ম্মিত ছিল; শ্বেতোৎপল, নীলোৎপল, পদ্ম ও নানাবিধ বন্য পুষ্পে সেই শয্যাখানি আরও কোমল হইয়াছিল, সুতরাং কামদেবের বাণদ্বারাই যেন তাহা নির্ম্মিত হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল; সেই শয্যার উপরে তিনি শয়ন করিয়া-ছিলেন। (ল) অত্যন্ত নিস্পন্দভাবে ছিলেন বলিয়া আমার পদশব্দই যেন শুনিতেছিলেন। (ব) মনের ক্রোধে মদন-সন্তাপ নিবারিত হওয়ায় তখন যেন সুখে নিদ্রা যাইতেছিলেন। (শ) মনের উদ্দীপনানিবন্ধন পাপের প্রায়শ্চিত্তস্বরূপ কুম্ভক অবস্থায়ই যেন অবস্থান করিতে-ছিলেন। (ষ) ওষ্ঠযুগলের প্রভা তখনও অত্যন্ত প্রকাশ পাইতেছিল, সুতরাং তাহা দ্বারা

(১) সুকুমারমৌণালময়মিব। (২) অন্তঃক্রমাগতকোপশমিত..., অন্তঃক্ষোভশমিত...।

वर्त्तितदेहतया पृष्ठभाग-निपतितैर्मदन-दहन-विह्वल-हृदय-न्यस्त-हस्त-नख-मयूख-च्छलेन च्छिद्रितमिव शशिकिरणैः, (स) उच्छुष्क-पाण्डुरया (१) स्वविनाशोत्पन्नया (२) मदनचन्द्रकलयेव चन्दनलेखिकया रचितललाटिकम्, (३) (ह) 'मत्तः प्रियतरः (४) तवापरो जनो जातः' इति कुपितेनेव जीवितेन परित्यक्तम्, (च) मन्मथव्यथया सहैतानसून् स्वयमिवोत्सृज्य निश्चेतनतासुखं (५) अनुभवन्तम्, (क)

(स) इन्द्विति। इन्दुद्वेषेण अधिकोत्तापकतया चन्द्रं प्रति विद्वेषेण परिवर्त्तितदेहतया न्युब्जीकृतशरीरतया हेतुना, पृष्ठभागनिपतितैः शशिकिरणैः, मदनदहनेन कामानलेन विह्वलं यत् हृदयं तत्र न्यस्तस्य हस्तस्य नखमयूखानां छलेन छिद्रितमिव, सञ्जातच्छिद्रमिव, वक्षसोऽधः प्रसृतानां नखकिरणानामपि पृष्ठपतितचन्द्रकिरणतुल्यत्वात् अमी चन्द्रकिरणा एव देहं भित्त्वा नखकिरणच्छलेनाधोनिर्गता इवेति सरलार्थः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ह) उच्छुष्केति। उच्छुष्का चासौ पाण्डुरा चेति तया, स्वस्यात्मनो विनाशाय उत्पन्नया उदितया, अकाले अस्थाने च ग्रहनक्षत्राणामुदयस्य विनाशसूचकत्वादिति भावः, मदनसम्बन्धिनी या चन्द्रकला तयेव स्थितया, चन्दनस्य लेखिकया अर्द्धचन्द्राकारया रेखया रचिता कपिञ्जलेन निर्म्मिता ललाटिका ललाटे तिलकविशेषो यस्य तम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) मत्त इति। अपरो महाश्वेतालक्षण इत्यर्थः। इति हेतोः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(क) मन्मथेति। स्वयमात्मनैव, मन्मथव्यथया कामपीडया सह एतान् अमून् प्राणान् उत्सृज्येव विहायेव निश्चेतनतया यत् सुखं तदनुभवन्तं, तस्यां चेतनायां नानाविधसंसारभावावेशेन दुःखसम्भवादिति भावः। अत्र सहोक्तिक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

যেন বলিতেছিলেন যে, "তোমার জন্যই আমার এই অবস্থা হইয়াছে"। (স) চন্দ্রের প্রতি বিদ্বেষবশতঃ দেহ পরিবর্ত্তিত করিয়া শয়ন করিয়াছিলেন, তাহাতে পিঠের উপরে চন্দ্রের কিরণ পড়িয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, কামানলে বিহ্বল হৃদয়ের উপরে যে হস্ত সংস্থাপন করিয়াছিলেন, তাহার নখের কিরণচ্ছলে সেই চন্দ্রের কিরণগুলিই যেন দেহ ভেদ করিয়া ছিদ্র করিয়া দিয়াছে। (হ) কপিঞ্জল, চন্দনের রেখাদ্বারা ললাটে একটি টিপ তৈয়ার করিয়া দিয়াছিলেন, সেটি শুকাইয়া পাণ্ডুবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল, যেন নিজের বিনাশের জন্য, মদনবন্ধু চন্দ্রের একটি কলা অস্থানে উদয় পাইয়াছে। (চ) 'আমা হইতেও তোমার অধিক প্রিয় অন্য লোক জুটিয়াছে' ইহা মনে করিয়া ক্রুদ্ধ হইয়াই যেন জীবন তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়াছিল। (ক) নিজেই যেন কামবেদনার সহিত প্রাণ পরিত্যাগ করিয়া

(१) पाण्डुतया। (२) स्वदेहविनाशोत्पन्नया, स्वविनाशोत्पातोत्पन्नया।

(३) ईषदालक्ष्यापविद्धतारकेण अनवरतरोदनाताम्रेण प्राचीनसर्गोपजाताश्रुक्षयतया रुधिरमिव क्षरता मदनशरशल्यवेदनाकूणिततविभागेन नातिनिमीलितेन लोचनयुगलेन। इत्यधिकः पाठः क्वचित्।

(४) अतिप्रियतरः। (५) निश्चेतनासुखं।

अनङ्गयोगविद्यामिव ध्यायन्तम्, (ख) अपूर्वप्राणायाममिवाभ्यस्यन्तम्, (ग) उपपादितास्मदागमनेन प्रणयादिवापहृत-प्राणपूर्णपात्रमनङ्गेन, (घ) रचित-चन्दनललाटिकात्रिपुण्ड्रकम्, (ङ) धृत-सरस-बिससूत्र-यज्ञोपवीतम्, (च) अंसावसक्त-कदली-गर्भपत्र-चारु-चीरम्, (छ) एकावलीविद्याक्षमालम्, (ज) अविरलामल-कर्पूर-क्षोद-भस्म-धवलम्, (झ) आबद्ध-मृणाल-वलय-रक्षा-प्रति-

---

(ख) अनङ्गेति। अनङ्गसम्बन्धिनी या योगविद्या तां ध्यायन्तमिव, निष्पन्दत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ग) अपूर्वेति। अपूर्वः अद्भुतः श्वासप्रश्वासयोरभावेन पूरणरेचनाभावात् केवलकुम्भकरूपत्वादिति भावः, यः प्राणायामस्तं अभ्यस्यन्तं असकृत् क्रियमाणमिव, निष्पन्दत्वात्। क्रियोत्प्रेक्षा।

(घ) उपेति। उपपादितं निष्पादितं अस्माकं ममेत्यर्थः आगमनं येन तेन, अनङ्गेन मदनेन, 'प्रणयादिव समानसौन्दर्य्येण स्नेहादिव, अपहृतं प्राणा एव पूर्णपात्रं पारितोषिकद्रव्यं यस्मात्तम्। अन्योऽपि महासन्तोषकरं कार्य्यं विधाय प्रणयात् पूर्णपात्रं हरति। अत्र हेतूत्प्रेक्षा निरङ्गकेवलरूपकस्यानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "बर्द्धापकं यदानन्दादलङ्कारादिकं पुनः। आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकञ्च तत्।" इति हारावली।

(ङ) रचितेति। रचितं कपिञ्जलेन निर्म्मितं चन्दनललाटिकाया उपरि त्रिपुण्ड्रकं यस्य तम्।

(च) धृतेति। धृतं मदनतापनिवृत्तये गृहीतं सरसमार्द्रं बिससूत्रं मृणालतन्तुरेव यज्ञोपवीतं येन तम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

(छ) अंसेति। अंसे स्कन्धे अवसक्तं लग्नं कदलीगर्भपत्रमेव चारु चीरं कौपीनं यस्य तम्। पूर्ववदलङ्कारः।

(ज) एकेति। एकावली मदीयः स एकश्रेणीको हार एव विद्याख्या अक्षमाला यस्य तम्। पूर्ववदलङ्कारः।

(झ) अविरलेति। अविरला घनाः अमला निर्म्मलाश्च कर्पूरस्य क्षोदाः कपिञ्जलदत्ता रेणव एव भस्मानि तैर्धवलम्। पूर्ववदलङ्कारः।

অচৈতন্য-সুখ অনুভব করিতেছিলেন। (খ) কামদেবের যোগবিদ্যাকে যেন ধ্যান করিতেছিলেন। (গ) অদ্ভুত প্রাণায়াম যেন অভ্যাস করিতেছিলেন। (ঘ) কামদেব, আমার আগমন সম্পাদন করিয়া প্রণয়বশতই যেন তাঁহার প্রাণরূপ পারিতোষিক গ্রহণ করিয়াছিলেন। (ঙ) কপিঞ্জল, তাঁহার ললাটে চন্দনের টিপের উপরে একটি ত্রিপুণ্ড্র অঙ্কিত করিয়া দিয়াছিলেন। (চ) তিনি, আর্দ্র মৃণালসূত্ররূপ যজ্ঞোপবীত ধারণ করিয়াছিলেন। (ছ) কদলীবৃক্ষের অভ্যন্তরের পত্ররূপ একখানা মনোহর কৌপীন, তাঁহার স্কন্ধদেশে সংলগ্ন ছিল। (জ) আমার সেই একলহরী মুক্তার মালাই, তাঁহার বৃহৎ জপের মালা হইয়াছিল। (ঝ) ঘন ও নির্ম্মল কর্পূরের রেণুরূপ ভস্মে তাঁহার শরীরটি শুভ্রবর্ণ

सर (१) मनोहरम्, (ञ) मनोभव-व्रत-वेशमास्थाय (२) मत्समागममन्त्रमिव साधयन्तम्, (ट) (३) अविरत-(४) रोदनाताम्रेण अश्रुक्षयात् (५) आगत-रुधिरेणेव मदन-शर-शल्य-वेदना-कूणित-त्रिभागेण (६) "कठिनहृदये! (७) दर्शनमात्रकेणापि न पुनरनुगृहीतोऽयमनुगतो जनः" इति सप्रणयं मामुपालभमानमिव चक्षुषा, (ठ) किञ्चिद्विवृताधरतया जीवितमपहर्त्तुमन्तःप्रविष्टैरिवेन्दुकिरणैर्निर्गच्छद्भिर्दशनांशुभिर्धवलितपुरोभागम्, (ड) मन्मथव्यथया विघट-

---

(ञ) आबद्धेति। आबद्धो धृतः मृणालवलयमिव रक्षाप्रतिसरः कामव्याधितो रक्षार्थं सूत्रम्, तेन मनोहरम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

(ट) मनोभवेति। मनोभवव्रतवेशं चन्दनकर्पूरचूर्णादिधारणरूपं मदनव्रताचरणोपयोगिवेशं आस्थाय धृत्वा मम समागममन्त्रं सम्मेलनसाधनमन्त्रं साधयन्तमिव, इतरालापवर्ज्जनान्निष्पन्दत्वाच्चेति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ठ) अविरतेति। अविरतरोदनात् आताम्रेण सम्यक्ताम्रवर्णेन, अतएव अश्रुक्षयात् बहुसमयं यावन्निःसरणेनाश्रूणां समाप्तिप्राप्तेर्हेतोः आगतरुधिरेणेव स्थितेन, मदनशराणां यानि शल्यानि लौहमयाग्राणि तैस्तदाघातैरित्यर्थः या वेदना तया आकूणित ईषत्सङ्कुचितस्त्रिभागस्तृतीयो भागो यस्य तेन तादृशेन चक्षुषा चक्षुर्भङ्ग्येत्यर्थः। हे कठिनहृदये! महाश्वेते!। अयं मल्लक्षणो जनः। उपालभमानं निन्दन्तमिव स्थितम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं क्रियोत्प्रेक्षाद्वयञ्च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ड) किञ्चिदिति। किञ्चिद्विवृताधरतया ईषद्व्यादत्तोष्ठयुगलतया हेतुना, जीवितमपहर्त्तुमन्तःप्रविष्टैः इन्दुकिरणैरिव दृश्यमानैः, निर्गच्छद्भिर्दशनानां दन्तानामंशुभिः करणैः, धवलितपुरोभागं शुभ्रीकृतसम्मुखदेशम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

ছিল। (ঞ) হস্তে মৃণালবলয়রূপ রক্ষাসূত্র বন্ধন করায় তাঁহাকে সুন্দর দেখা যাইতেছিল। (ট) কামদেবের ব্রতাচরণের উপযোগী বেশ ধারণ করিয়া আমার সহিত সম্মেলনের মন্ত্রই যেন সাধনা করিতেছিলেন। (ঠ) অনবরত রোদন করায় নয়নযুগল আরক্তবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন অশ্রু শেষ হওয়ায় রক্ত আসিয়া জমা হইয়াছে এবং কামবাণের লৌহময় অগ্রভাগের বেদনায় সেই নয়নযুগলের তৃতীয়ভাগ ঈষৎ সঙ্কুচিত হইয়াছিল, তাহার ভঙ্গী দ্বারা তিনি যেন এই অভিপ্রায়ে আমাকে প্রণয়ের সহিত তিরস্কার করিতেছিলেন যে, 'হে নিষ্ঠুরচিত্তে! তুমি দেখা দিয়াও,—এই অনুগত ব্যক্তির প্রতি অনুগ্রহ করিলে না!!'। (ড) ওষ্ঠযুগল কিঞ্চিৎ বিবৃত (ফাঁক করা) ছিল বলিয়া তাঁহার

---

(१)...मृणालरक्षाप्रतिसर...। (२)...रक्षाप्रतिसरमनोभवव्रतवेशमास्थाय।

(३) ईषदालक्ष्यपरिताम्रताम्रेण इति क्वचिदधिकः पाठः। (४) अनवरत...।

(५) प्राचीनसर्वोपनताश्रुक्षयतया। (६) अतिनिमीलितेन, नातिनिमीलितेन। (७) भोः कठिनहृदये!!

मान-(१) हृदयनिहितेन वामपाणिना "प्रसीद, प्राणैः समं प्राणसमे! न गन्तव्यम्" इति हृदयस्थितां मामिव धारयन्तम्, (ढ) इतरेण च नखमयूख-दन्तुरतया चन्दनमिव स्रवतोत्तानीकृतेन चन्द्रातपमिव निवारयन्तम्, (ण) अन्तिकस्थितेन च अचिरोद्गतजीवितमार्गमिवोद्ग्रीवेण विलोकयता तपःसुहृदा कमण्डलुना समुपेतम्, (त) कण्ठाभरणीकृतेन च मृणालवलयेन रजनीकर-(२) किरणपाशेनेव संयम्य लोकान्तरमुपनीयमानम्, (३) (थ) कपिञ्जलेन महर्घ्यनात्

(ढ) मन्मथेति। मन्मथव्यथया विघटमाने विदीर्य्यमाणे हृदये निहितः स्थापितस्तेन वामपाणिना करेण। हे प्राणसमे! महाश्वेते! प्राणैः समं निर्गच्छद्भिर्ममासुभिः सह, त्वया हृदयान्न गन्तव्यं प्राणसमत्वेन सौहार्द्दैः सह तवापि गमनसम्भवादिति भावः। इति अनेनाभिप्रायेण, हृदयस्थितां चिन्तावशाच्चित्तवर्त्तिनीं मां धारयन्तमिव अवरुन्धन्तमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। एतदनुरूपः श्लोको यथा नैषधे—

"ममादरीदं विदरीतुमान्तरं तदर्थिकल्पद्रुम! किञ्चिदर्थये।
भिदां हृदि द्वारमवाप्य मैव मे हृतासुभिः प्राणसमः समं गमः॥"

(ण) इतरेणेति। किञ्च, नखमयूखैर्दन्तुरतया विषमतया हेतुना चन्दनं स्रवतेव स्थितेन, उत्तानीकृतेन इतरेण दक्षिणेन पाणिना, चन्द्रस्य आतपं अतीवपीडाजनकमालोकं निवारयन्तमिव स्थितम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(त) अन्तिकेति। किञ्च, उद्ग्रीवेण अतएवाचिरोद्गतस्य जीवितस्य मार्गं विलोकयतेव सता अन्तिकस्थितेन तपःसुहृदा कमण्डलुना समुपेतम्। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(थ) कण्ठेति। किञ्च, कण्ठाभरणीकृतेन मृणालवलयेन उपलक्षितं, अतएव रजनीकरस्य चन्द्रस्य किरण एव पाशस्तेन संयम्येव बद्ध्वेव यमेन लोकान्तरमुपनीयमानम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयो-रङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

জীবন অপহরণ করিবার জন্যই যেন অভ্যন্তর-প্রবিষ্ট চন্দ্রকিরণের ন্যায় দন্তের কিরণগুলি নির্গত হইতে থাকিয়া তাঁহার সম্মুখভাগ শুভ্রবর্ণ করিয়াছিল। (ঢ) কামবেদনায় তাঁহার হৃদয় বিদীর্ণ হইতেছিল,—সুতরাং তাহার উপরে তিনি বাম পাণিকমল সংস্থাপন করিয়া, হৃদয়বর্ত্তিনী আমাকে এই অভিপ্রায়েই যেন অবরুদ্ধ করিতেছিলেন যে, 'হে প্রাণোপমে! প্রসন্ন হও, প্রাণের সহিত তুমিও চলিয়া যাইও না'। (ণ) উত্তানভাবে স্থিত দক্ষিণ হস্ত, নখের কিরণে অসমান হওয়ায় চন্দনের রস যেন নিঃসারিত করিতেছিল, আর তিনি যেন সেই হস্তে চন্দ্রের কিরণ নিবারণ করিতেছিলেন। (ত) তপস্যার বন্ধু একটি কমণ্ডলু, নিকটে উদ্‌গ্রীব হইয়া থাকিয়া, তাঁহার অচির-নির্গত জীবনের পথই যেন দেখিতেছিল। (থ) কপিঞ্জল, তাঁহার গলদেশে একটি মৃণালবলয়ের আভরণ করিয়া দিয়াছিলেন, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, যম

(१) मन्मथव्यथाविघटमान...। (२) रजनिकर...। (३) नीयमानं।

'अब्रह्मण्यम्' इत्यूर्द्धहस्तेन द्विगुणीभूतवाष्पोद्गमेनाक्रोशता कण्ठे परिष्वक्तम्, तत्-क्षणविगतजीवितं तमहं पापकारिणी मन्दभाग्या महाभागमद्राक्षम्। (द)

उद्भूतमूर्च्छान्धकारा च पातालतलमिवावतीर्णा तदा क्वाहमगमम्, किमकरवम्, किं व्यलपम्, इति सर्वमेव नाज्ञासिषम् (ध)। असवश्च मे तस्मिन् क्षणे किमतिकठिनतया अस्य मूढहृदयस्य, किमनेक-दुःखसहस्रसहिष्णुतया हतशरीरकस्य, किं विहिततया दीर्घशोकस्य, किं भाजनतया जन्मान्तरोपात्तस्य दुष्कृतस्य, किं दुःखदाननिपुणतया दग्धदैवस्य, किमेकान्तवामतया दुरात्मनो मन्मथहतकस्य, केन हेतुना नोदक्रान्ति स्म तदपि न ज्ञातवती (न)। केवल-

(द) क्रोशतेति। मद्दर्शनात् मम दर्शनेन द्विगुणशोकोदयादित्यर्थः, अब्रह्मण्यं प्रक्रान्तसमयानुपस्थितेर्विधेरिदानीमेवावध्यः पुण्डरीक इत्यर्थः, "अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ" इत्यमरः। अवध्योक्तौ वधं मार्हतीत्युक्ताविति तदर्थः। ऊर्द्धहस्तेन उत्थितकरेण, द्विगुणीभूतो वाष्पोद्गमो यस्य तेन आक्रोशता आक्षेपं कुर्वता मनस्तापं प्रकाशयता कपिञ्जलेन, कण्ठे परिष्वक्तमालिङ्गितम्। पापकारिणा मन्निमित्त एव मरणात्, मन्दभाग्या बाल्य एव वैधव्यादिति च भावः। महाभागं तादृशरूपादिगुणशालित्वादतीवभाग्यवन्तम्।

(ध) उद्भूतेति। किञ्च, उद्भूत उत्पन्नो मूर्च्छान्धकारो मोहवैधुर्य्यं यस्याः साहम्, पातालस्य तलमवतीर्णेव सती। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) नन्वीदृशे शोकावेगे कथं ते प्राणा न गता इत्याह असव इति। किञ्च, मे मम असवः प्राणाः, तस्मिन् क्षणे, अस्य मूढहृदयस्य अतिकठिनतया किं नोदक्रान्ति स्म, इत्थं सर्वत्रान्वयः। हतशरीरकस्येति कुत्सायां कप्रत्ययः। विहिततया दैवेन निर्द्दिष्टतया। जन्मान्तरोपात्तस्य पूर्वजन्मार्जितस्य दुष्कृतस्य पापस्य। एषां मध्ये केन हेतुनेत्यर्थः। अत्र वितर्काख्यभावः करुणरसस्याङ्गमिति प्रेयो नामालङ्कारः। आकाशवाण्यनन्तरमेवालङ्कारिकैः करुणविप्रलम्भस्याङ्गीकारादत्र करुण एव रसः।

যেন চন্দ্রের কিরণরূপ রজ্জুদ্বারা তাঁহাকে বন্ধন করিয়া লোকান্তরে নিয়া যাইতেছেন। (দ) কপিঞ্জল আমাকে দেখিয়া হস্ত উত্তোলন করিয়া "এখনই ইহার মৃত্যুবিধান করা উচিত হয় নাই" এইরূপ আক্ষেপ করিতে করিতে, তাঁহার গলদেশে আলিঙ্গন করিয়াছিলেন; তখন কপিঞ্জলের অশ্রুজল, পূর্ব্বাপেক্ষা দ্বিগুণ হইয়া নির্গত হইতেছিল। তখনই মাত্র তাঁহার জীবন গিয়াছিল। আমি পাপিষ্ঠা, আমার ভাগ্যও মন্দ; তাই আমি সেই মহাভাগ্যবান্‌কে সেই অবস্থায় দেখিয়াছিলাম।

(ধ) তাহার পর, আমার মূর্চ্ছার অন্ধকার আসিয়া উপস্থিত হইল, আমি যেন পাতালের তলে যাইয়া নামিলাম; সুতরাং তখন আমি কোথায় গেলাম, কি করিলাম এবং কি আর্ত্তস্বর বিলাপ করিলাম—এ সমস্তই বুঝিতে পারিলাম না। (ন) আমার এই মূঢ় হৃদয় অত্যন্ত কঠিন ছিল বলিয়া, কিংবা এই ছার দেহ বহুতর দুঃখ-সমূহ সহ্য করিতে পারে বলিয়া,

मतिचिराल्लब्धचेतना दुःखभागिनी वह्नाविव पतितमसह्यशोकदह्यमानमात्मानमवनौ विचेष्टमानमपश्यम् (प)। अश्रद्दधाना च (१) असम्भावनीयं तस्य मरणमात्मनश्च जीवितम्, उत्थाय 'हा हा (२) किमिदमुपनतम्' इति मुक्तार्त्तनादा 'हा अम्ब! हा तात! हा सख्यः!' इति व्याहरन्ती, 'हा नाथ! जीवितनिबन्धन! आचक्ष्व, क्व (३) मामेकाकिनीमशरणामकरुण! (४) विमुच्य यासि?। पृच्छ तरलिकाम्, त्वत्कृते मया यानुभूतावस्था (५)। युगसहस्रायमाणः कृच्छ्रेण नीतो दिवसः। प्रसीद, सकृदप्यालप, दर्शय भक्तवत्सलताम्, (६) ईषदपि विलोकय, पूरय मे मनोरथम्. आर्त्तास्मि, भक्तास्मि, अनुरक्तास्मि, अनाथास्मि,

(प) केवलमिति। दुःखभागिन्यहं अतिचिरात् बहुक्षणात् परं लब्धचेतना सती असह्यशोकेन दह्यमानं अतएव वह्नौ पतितमिव सन्तं, अवनौ भूतले विचेष्टमानं शोकवेगेन स्पन्दमानं आत्मानं केवलमपश्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) अश्रद्दधानेति। किञ्च, असम्भावनीयं कारणाभावात् सम्भावयितुमप्यशक्यं, तस्य कुमारस्य तन्मरणं तन्मरणे आत्मनो जीवितं, अश्रद्दधाना अविश्वसती। उपनतमुपस्थितम्। व्याहरन्ती वदन्ती। निबध्यतेऽनेनेति निबन्धनं कारणं। जीवितनिबन्धन। जीवनधारणकारण। मदनाद्याचारेण गमनसम्भवेऽपि

বিধাতা আমার কপালে দীর্ঘকালীন শোক বিধান করিয়াছেন বলিয়া, কিংবা আমি পূর্ব্বজন্মার্জ্জিত পাপ-ভাগিনী বলিয়া অথবা পোড়া দৈব দুঃখ দিতে নিপুণ বলিয়া, কিংবা খলপ্রকৃতি দুরাত্মা কন্দর্প অত্যন্ত প্রতিকূল ছিল বলিয়া, —ইহার কোন্ কারণে যে তখন আমার প্রাণ গিয়াছিল না, তাহাও আমি বুঝিতে পারিয়াছিলাম না। (প) চিরদুঃখিনী আমি বহুকালের পর চৈতন্য লাভ করিয়া, কেবল ইহাই দেখিতে পাইলাম যে, আমার শরীরটা, অসহ্য শোকে দগ্ধ হইতে থাকিয়া, অগ্নিতে পতিতের ন্যায় ভূতলে পড়িয়া ছট্‌ফট্ করিতেছে। (ফ) তাঁহার সেই মরণ এবং তাঁহার মরণ হইলে নিজের জীবন-ধারণ—এই দুইটিই অসম্ভাবনীয় ছিল; তাই তখন আমি তাহা বিশ্বাস করিতে পারিতেছিলাম না। উঠিয়া 'হায়! হায়! এ কি উপস্থিত হইল' এই ভাবে মুক্তকণ্ঠে আর্ত্তনাদ করিয়া উঠিলাম 'হা মাতঃ! হা পিতঃ! হা সখীগণ!' এইরূপ বলিতে লাগিলাম, 'হা নাথ! হা জীবনধারণের কারণ! হা নির্দ্দয়! তুমি বল, রক্ষক-হীন অবস্থায় একাকিনী আমাকে পরিত্যাগ করিয়া কোথায় যাইতেছ?। আমি তোমার জন্য যেরূপ অবস্থা অনুভব করিয়াছি, তাহা তরলিকাকে জিজ্ঞাসা কর। একটি মাত্র দিন, সহস্র যুগের ন্যায় বোধ হইতেছিল; তাই তাহা কষ্টে অতিবাহিত করিয়াছি। তুমি প্রসন্ন হও, একবার মাত্র আলাপ কর, ভক্তবৎসলতা দেখাও, একটু চাহিয়া দেখ, আমার মনের অভিলাষ

(१) अश्रद्दधानश्च। (२) क्वचित् द्विरुक्तिर्नास्ति। (३) क्वि। (४) अकरुणं।
(५) यानुभूता व्यथा। (६) कृतप्रणयवत्सलता, प्रकटय परमां कृपालुतां।

বালাস্মি, অগতিকাস্মি, দুঃখিতাস্মি, অনন্যশরণাস্মি, মদনপরিভূতাস্মি, কিমিতি ন করোষি দয়াম্? (ফ)। কথয়, কিমপরাদ্ধম্, কিংবা নানুষ্ঠিতম্ ময়া, কস্যাং বা নাজ্ঞায়ামাদৃতম্, কস্মিন্ বা তদনুকূলে নাভিরতম্, যেন কুপিতোঽসি। দাসীজনং (১) অকারণাৎ পরিত্যজ্য ব্রজন্ ন বিভেষি কৌলীনাৎ? (ব)। অলীকানুরাগপ্রতারণ-(২) কুশলয়া কিংবা ময়া বাময়া পাপয়া (ভ)। আঃ, অহমদ্যাপি প্রাণিমি, হা হতাস্মি মন্দভাগিনী। কথং মে ন ত্বম্, (৩)

ত্বৎসঙ্গমাশয়ৈব জীবনধারণাত্ত্বমেব জীবনধারণকারণমিতি ভাবঃ। হে অকরুণ! নির্দ্দয়! অশরণা রক্ষকহীনা। বিমুখ বিহায়। অগতিকা নিরাশ্রয়া। ন বিদ্যতে অন্যৎ ত্বদ্ভিন্নং শরণং যস্যাঃ সা।

(ব) কথয়েতি। আজ্ঞায়াং তবাদেশে। ত্বদনুকূলে কর্ম্মণি। নাভিরতং ময়া নাসক্তং। দাসীজনং মল্লক্ষণমিত্যর্থঃ। কৌলীনাৎ শরণাগতপরিত্যাগজনিতাল্লোকাপবাদাৎ। "কৌলীনং পশুভির্যুদ্ধে কুলীনত্বাপবাদয়োঃ।" ইতি ধরণিঃ।

(ভ) অলীকেতি। অলীকঃ সমাগমাত্মকফলজননাসামর্থ্যান্মিথ্যাবৎ প্রতীয়মানঃ, যোঽনুরাগস্তেন যৎ প্রতারণং কুমারস্য বঞ্চনং তত্র কুশলয়া নিপুণয়া, বাময়া সর্ব্বেষামেব প্রতিকূলয়া অসুখহেতুত্বাদিতি ভাবঃ, পাপয়া পাপকারিণ্যা ব্রহ্মহত্যানিমিত্তত্বাদিত্যাশয়ঃ, ময়া কিংবা প্রয়োজনং স্যাদিতি শেষঃ।

(ম) আ ইতি। আ ইতি পীড়ার্থকমব্যয়ং। মে মম ত্বং ন জাতো শরণম্। তাতোঽপি ন পক্ষে স্থিত ইতি শেষং, অনুমত্যভাবেঽপীদৃশাচরণেন চিরবিরাগাদিতি ভাবঃ। বিনয়ঃ কুলকন্যায়াঃ শিক্ষাগুণঃ সদাচারোঽপি ন স্থিতঃ, অভিসরণাদিত্যাশয়ঃ। বন্ধুবর্গোঽপি ন পূর্ব্ববৎ স্নেহেন পক্ষপাতী স্যাৎ, অভিসরণেনৈব তেষামপি চিরবিরাগাদিত্যভিপ্রায়ঃ। পরলোকোঽপি নাস্তি, ব্রহ্মহত্যানিমিত্তত্বেন মহাপাতকিত্বাদিতি ভাব। অত্র জাতঃ

পূরণ কর; আমি পীড়িত, তোমার ভক্ত এবং তোমার প্রতি অনুরক্ত; আমি অনাথা, বালিকা, নিরাশ্রয়া ও দুঃখিতা; তুমি ভিন্ন অন্য কেহ আমার রক্ষক নাই এবং আমি কামার্ত্ত; অতএব কেন আমার প্রতি দয়া করিতেছ না? । (ব) বল, আমি কি অপরাধ করিয়াছি? তোমার কোন্ কার্য্যের বা অনুষ্ঠান করি নাই? কোন্ আদেশের বা আদর করি নাই? তোমার অনুকূল কোন্ কার্য্যেই বা আসক্ত থাকি নাই? যে, তুমি কুপিত হইলে। দাসীকে অকারণে পরিত্যাগ করিয়া যাইতেছ—ইহাতে লোকাপবাদের ভয় হয় না কি? । (ভ) আমি, মিথ্যা অনুরাগ দেখাইয়া প্রতারণা করিতে নিপুণ, সকলের পক্ষেই প্রতিকূল এবং পাপিষ্ঠ; সুতরাং আমাদ্বারা প্রয়োজন কি? । (ম) হায়! আমি এখনও জীবিত আছি, হায়! মন্দভাগ্যা আমি বাঁচিয়াও মরিয়াছি! হায়! প্রাণবল্লভ! তুমি আমার হইলে না, পিতাও আমার পক্ষে থাকিলেন না, কুলকন্যার আচারও রহিল না, বন্ধুবর্গও থাকিল না এবং পরলোকও

(১) দাসজনং। (২)...বিপ্রতারণ...। (৩) কথং ন ত্বং জাতঃ।

न तातः, (१) न विनयः, न बन्धुवर्गः, न परलोकः, धिङ्मां दुष्कृतकारिणीम्, यस्याः कृते तवेयमीदृशी दशा वर्त्तते (म)। नास्ति मत्सदृशी नृशंसहृदया, याहमेवंविधं भवन्तमुत्सृज्य गृहं गतवती। किं मे गृहेण, किमम्बया, किंवा तातेन, किं बन्धुभिः, किं परिजनेन। हा कमुपयामि शरणम्? अयि दैव! दर्शय दयाम्, (२) विज्ञापयामि त्वां देहि दयितदक्षिणाम्। भगवति! भवितव्यते! कुरु कृपाम्, पाहि वनितामनाथाम्। भगवत्यो वनदेवताः! प्रसीदत, प्रयच्छतास्य प्राणान्। अम्ब! (३) वसुन्धरे! सकललोकानुग्रहजननि! (४) किमर्थं (५) नानुकम्पसे! तात! कैलासेश! (६) शरणागतास्मि ते दर्शय दयालुताम्" इत्येतानि चान्यानि च व्याक्रोशन्ती कियद्वा स्मरामि ग्रहगृहीतेव आविष्टेव उन्मत्तेव भूतोपहतेव व्यलपम् (य)। उपर्य्युपरि पतितनयनजल-

---

पक्षे स्थित इत्यादीनामनुक्तावपि न न्यूनपदत्वदोषः प्रत्युत गुण एव वदन्त्या विषादमग्नत्वात् "उक्तावानन्दमग्नादेः स्यान्न्यूनपदता गुणः।" इति साहित्यदर्पणात्।

(य) नास्तीति। दयितो वल्लभः कुमार एव दक्षिणा अवश्यदेयं धनं तां देहि। हे भवितव्यते! अदृष्ट! अनाथां वनितां स्त्रियं पाहि, तदीयप्राणवल्लभप्रदानेनेति भावः। सकलेषु लोकेषु अनुग्रहं जनयतीति सा तत्सम्बोधनम्। कैलासेश! शिव। दर्शय दयालुतां वल्लभस्य प्राणप्रदानेनेति भावः। व्याक्रोशन्ती उच्चैः-क्रन्दन्ती। कियद्वा स्मरामि, यत्तानीदानीं ब्रवीमीति भावः। ग्रहगृहीतेव पापग्रहैरधिष्ठितेव, आविष्टेव विकाराश्रितेव, भूतैर्वेतालैः उपहता विकृतीकृतेव। अत्र चतसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः, तथा कियद्वा स्मरामीति वाक्यस्य वाक्यान्तरमध्यगतत्वेऽपि न गर्भितत्वदोषः प्रत्युत गुण एव, आवेगातिशयसूचनेन चमत्कारातिशयात् "गर्भितत्वं गुणः क्वापि" इति साहित्यदर्पणात्।

রহিল না। আমি পাপকারিণী বলিয়া আমাকে ধিক্! কারণ—যাহার জন্য তোমার এইরূপ অবস্থা হইয়াছে! (য) আমার মত নিষ্ঠুরচিত্ত স্ত্রীলোক আর নাই; যে আমি, এই অবস্থায় তোমাকে পরিত্যাগ করিয়া গৃহে চলিয়া গিয়াছিলাম। আমার গৃহ, মাতা, পিতা, বন্ধুবর্গ এবং পরিজনদ্বারা প্রয়োজন কি?। হায়, আমি কাহার শরণ লইব? হে বিধি! দয়া দেখাও, আমি তোমাকে নিবেদন করিতেছি—আমার প্রাণবল্লভকে দান কর। হে মাহাত্ম্যশালি-অদৃষ্ট! কৃপা কর, অনাথা রমণীকে রক্ষা কর। হে মাহাত্ম্যশালি-বনদেবতাগণ! প্রসন্ন হও, ইহার প্রাণ দাও। হে সকললোকানুগ্রহকারিণি! জননি! বসুন্ধরে! কেন দয়া করিতেছ না?। হে পিতঃ! কৈলাসনাথ! আমি তোমার শরণাগত হইয়াছি, আমার প্রতি দয়ালুতা

---

(१) क्वचित् न तात इति नास्ति। (२) अयि दैव! दर्शय दयां, अयि दैव! निर्घृण!…। (३) अव। (४)…जननिरतासि। (५) रजनि! नानुकम्पसे। (६) कैलास!।

ধারানিকরচ্ছলেন বিলীয়মানেব দ্রবতামিব নীয়মানা জলাকারেণাত্মীক্রিয়মাণা, (র) প্রলাপাক্ষরৈরপি দশনময়ূখশিখানুগততয়া সাশ্রুধারৈরিব নিষ্পতদ্ভিঃ শিরোরুহৈরপ্যবিরলবিগলিতকুসুমতয়া (১) মুক্তবাষ্পজলবিন্দুভিরিবাভরণৈরপি প্রসৃত-(২) বিমল-মণি-কিরণাশ্রুতয়া প্ররুদিতৈরিবোপেতা, (ল) তজ্জীবিতায়ৈ-

(র) উপরীতি। উপর্য্যুপরি পতিতানাং নয়নজলানাং ধারানিকরচ্ছলেন প্রবাহসমূহব্যাজেন বিলীয়মানেব ভূমৌ লয়ং প্রাপ্নুবতীব, দ্রবতাং তরলতাং নীয়মানা বিধিনা প্রাপ্যমাণেব, তথা জলাকারেণ আত্মীক্রিয়মাণেব স্বরূপতাং নীয়মানেব অহং মুহুর্মুহুরেবমন্বনর্যামিত্যাদি পরক্রিয়াভিরন্বয়ঃ। অত্র তিস্র এব সাপহ্নবাঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষাস্তাসাঞ্চ মিথো নিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ।

(ল) প্রলাপেতি। প্রলাপাক্ষরৈরপি অচেতনৈর্হাইত্যাদিবিলাপবর্ণৈরপি, দশনানাং দন্তানাং ময়ূখশিখাভিঃ কিরণৈঃ অনুগততয়া উচ্চারণকালে তেষামেবানুসৃততয়া হেতুনা, সাশ্রুধারৈরিব দশনময়ূখশিখানামেবাশ্রুধারাবৎ প্রতীতেরিতি ভাবঃ, নিষ্পতদ্ভির্মুখান্নির্গচ্ছদ্ভিঃ সদ্ভিরুপেতা। অত্র অশ্রুধারাসাহিত্যোৎপ্রেক্ষণাদ্‌গুণোৎপ্রেক্ষা। শিরোরুহৈরপি কেশৈরপি, অবিরলং ঘনং যথা স্যাত্তথা বিগলিতানি কুসুমানি যেভ্য স্তেষাং ভাবস্তয়া হেতুনা, মুক্তাঃ শোকাত্ত্যক্তা বাষ্পজলবিন্দবো যৈস্তাদৃশৈরিব সদ্ভিরুপেতা। অত্র বাষ্পজলবিন্দুমোচনোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। তথা আভরণৈরপি মমালঙ্কারৈরপি, প্রসৃতানি নির্গতানি বিমলমণিকিরণা এবাশ্রূণি যেভ্যস্তেষাং ভাবস্তয়া হেতুনা, প্ররুদিতৈরিব কুমারশোকেন ক্রন্দিতৈরিব সদ্ভিরুপেতা অহম্। অত্র নিরঙ্গকেবলরূপকক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। এতেনাচেতনানামপি বিলাপাক্ষরাদীনাং শোকজননেন সচেতনায়াঃ স্বস্যাঃ শোকাতিশয়ঃ সূচিতঃ।

(ব) তদিতি। তস্য কুমারস্য জীবিতায়েব জীবনলাভায়ৈব আত্মমরণায় স্পৃহয়ন্তী স্বমৃত্যুং বাঞ্ছন্তী, বিধিসমীপে বিনিময়প্রকারেণেতি ভাবঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

দেখাও" এই রকম এবং অন্যান্য অনেক রকম বিলাপ করিতেছিলাম ; তাহার কতই বা স্মরণ করিয়া বলিব, কিন্তু দুষ্টগ্রহ-ধৃতের ন্যায়, বিকারগ্রস্তের ন্যায়, উন্মত্তের ন্যায় এবং ভূতাবিষ্টের ন্যায় কেবলই বিলাপ করিতেছিলাম। (র) নয়ন হইতে অজস্র নিঃসৃত অশ্রুধারাসমূহচ্ছলে ভূমিতেই যেন আমি লীন হইয়া যাইতেছিলাম, সেই ছলে যেন দ্রবীভূত হইতেছিলাম এবং সেই ছলে যেন জলাকারে পরিণত হইতেছিলাম। (ল) মুখ হইতে বিলাপের অক্ষর নির্গত হইতেছিল, তাহার পিছনে পিছনে দন্তের রশ্মিও বহির্গত হইতেছিল তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সেই বিলাপের অক্ষরগুলিও অশ্রুধারার সহিত নির্গত হইতেছে ; কেশকলাপ হইতে পুষ্পসমূহ অনবরত পতিত হইতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যেন, কেশকলাপও অশ্রুজলবিন্দু বর্ষণ করিতেছে ; আমার অলঙ্কার হইতে নির্ম্মল মণিকিরণরূপ অশ্রু নির্গত হইতেছিল, তাহাতেও বোধ হইতেছিল যে, সেই অলঙ্কারগুলিও যেন কাঁদিতেছে। (ব) তাঁহার

(১)…বিগলৎকুসুমতয়া। (২) প্রসূত…।

वात्ममरणाय स्पृहयन्ती, (श) मृतस्यापि सर्वात्मना हृदयं प्रवेष्टुमिवेच्छन्ती, (ष) करतलेन कपोलयोराश्यानचन्दन-श्वेतजटामूले च ललाटे निहित-सरस-विसयोरंसयोर्मलयज-रस लव-लुलित-कमलिनी पलाशावगुण्ठिते च हृदये परामृशन्ती (स) 'पुण्डरीक! निष्ठुरोऽसि, एवमप्यार्त्तां न गणयसि माम्' इत्युपालभमाना मुहुर्मुहुरेनमन्वनयम्, मुहुर्मुहुः पर्य्यचुम्बम्, मुहुर्मुहुः (१) कण्ठे गृहीत्वा व्याक्रोशम् (ह) 'आः पापे! त्वयापि मत्प्रत्यागमनकालं यावदस्यासवो न रक्षिताः' इति तामेकावलीमगर्हयम्। 'अयि भगवन्! प्रसीद, प्रत्युज्जीवयैनम्' इति मुहुर्मुहुः (२) कपिञ्जलस्य पादयोरपतम्। मुहुर्मुहुश्च (३) तरलिकां कण्ठे गृहीत्वा प्रारुदम् (ह)। अद्यापि चिन्तयन्ती न जानामि तस्मिन् काले

(श) मृतस्येति। सर्वात्मना सर्वप्रयत्नेन, मृतस्यापि कुमारस्य हृदयं प्रवेष्टुमिच्छन्तीव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ष) करेति। करतलेन निजपाणिना, कपोलयोः कुमारस्य गण्डयोः, आश्यानेन शुष्केण चन्दनेन श्वेतानि जटानां मूलानि यस्मिन् तादृशे कुमारस्य ललाटे च, तथा निहितानि तापशान्त्यर्थं कपिञ्जलेन स्थापितानि सरसानि आर्द्राणि विसानि मृणालानि ययोस्तयोः, अंसयोः कुमारस्य स्कन्धयोश्च, तथा मलयजरसस्य चन्दनद्रवस्य लवैर्विन्दुभिः लुलितं लाञ्छितं यत् कमलिनीपलाशं पद्मिनीपत्रं तेन अवगुण्ठिते आच्छादिते, हृदये कुमारस्य वक्षसि च परामृशन्ती स्पृशन्ती अहम्।

(स) पुण्डरीकेति। उपालभमाना तिरस्कुर्वाणा। एनं पुण्डरीकं। अन्वनयं अनुनीतवती। व्याक्रोशं उच्चैर्व्यलपम्।

(ह) आ इति। पापे! एकावलि!। अस्यासवः पुण्डरीकस्य प्राणाः, न रक्षिताः मदागमनविज्ञापनात्मकसमाश्वासनेनेति भावः। तामेकावलीं परिवर्ज्जितं मदीयं तं हारम्।

জীবনলাভের নিমিত্তই, যেন নিজের মরণ ইচ্ছা করিতেছিলাম। (শ) তিনি মরিয়া থাকিলেও, সর্ব্বপ্রকারেই যেন তাঁহার হৃদয়ে প্রবেশ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলাম। (ষ) তাঁহার জটাসমূহের মূলদেশ, শুষ্ক চন্দনে শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, স্কন্ধদ্বয়ের উপরে দুইটি আর্দ্র মৃণাল স্থাপিত ছিল, এবং চন্দনবিন্দুলাঞ্ছিত একটি পদ্ম-পত্রদ্বারা বক্ষঃস্থল আচ্ছাদিত ছিল; আমি করতলদ্বারা তাঁহার গণ্ডযুগলে, সেই ললাটে, সেই স্কন্ধযুগলে এবং সেই বক্ষঃস্থলে আমর্শন করিতেছিলাম। (স) 'পুণ্ডরীক! তুমি বড়ই নিষ্ঠুর; যেহেতু—তোমার শোকে আমি এইরূপ যাতনা ভোগ করিতেছি, তথাপি তুমি আমাকে গণনাই করিতেছ না' এইভাবে তিরস্কার করতঃ আমি বারংবার তাঁহার অনুনয় করিয়াছিলাম, বারংবার চুম্বন করিয়াছিলাম এবং বারংবার তাঁহার কণ্ঠ ধারণ করিয়া উচ্চৈঃস্বরে রোদন করিয়াছিলাম। (হ) 'আ পাপিষ্ঠে! একাবলি! আমার ফিরিয়া আসিবার সময় পর্য্যন্ত, তুইও ইহার প্রাণরক্ষা করিলি না' এই বলিয়া সেই এক-

(१) क्वचित् कुत्रापि विवक्षितनास्ति, क्वचित् मीषि विवक्षितः। (२) मुहुः। (३) मुहुः।

कुतस्तान्यचिन्तितान्यशिक्षितान्यनुपदिष्टान्यदृष्टपूर्वाणि मे हतपुण्यायाः कृपणानि चाटुसहस्राणि प्रादुरभवन् (ঙ)। कुतस्ते संलापाः, कुतस्तान्यतिकरुणानि वैक्लव्यरुदितानि, अन्य एव स प्रकारः (क)। प्रलयोर्म्मय इवोदतिष्ठन्नन्तर्बाष्प-वेगानाम्, जलयन्त्राणीवामुच्यन्ताश्रुप्रवाहाणाम्, प्ररोहा इव निरगच्छन् प्रलापानाम्, शिखरिण्यतानीवावर्द्धन्त दुःखानाम्, प्रसूतय इवोदपद्यन्त मूर्च्छानाम्।" (ख)

इत्येवमात्मवृत्तान्तमावेदयन्त्या एव (१) तस्याः समतिक्रान्तं कथमप्यति-कष्टमवस्थान्तरमनुभवन्त्या इव चेतनां जहार मूर्च्छा (ग)। वेगाभिपतन्तीच

(ঙ) अथेति। अदृष्टपूर्वाणि मयापि पूर्वमज्ञातानि। कृपणानि दैन्यसूचकानि। चाटुसहस्राणि प्रियप्रायोक्तिसमूहाः, प्रादुरभवन् मदाननादाविर्भूतानि, अद्य चिन्तयन्त्यपि तन्न जानामि स्मरामीत्यर्थः।

(क) कुत इति। संलापा विलापोक्तयः। वैक्लव्यरुदितानि शोकविह्वलतानिबन्धनरोदनानि। स प्रकारः सा शोकप्रकाशावस्था, अन्य एव सम्पूर्णं विजातीय एव, सुतरामिदानीं तमुदाहर्त्तुमक्षमेति भावः।

(ख) प्रलयेति। बाष्पवेगानां वेगवदश्रूणामित्यर्थः, प्रलयोर्म्मयः प्रलयकालीनतरङ्गा इव अन्तर्नयन-युगलाभ्यन्तरादुदतिष्ठन् उत्पन्नाः, एतेन बाष्पप्रवाहाणामतिस्थूलत्वं सूचितम्। अश्रुप्रवाहाणां जलयन्त्राणि जलोद्गारयन्त्राणीव अमुच्यन्त नेत्राभ्यामिति शेषः। एतेन पतनकाले अश्रूणां शतधारत्वं ध्वनितं। अनशोकतप्ताभि-मुक्तिभिर्दैन्याप्लीनकत्वम्। प्रलापानां विलापानां प्ररोहा अङ्कुरा नवनवप्रकारा इत्यर्थः, मुखान्निरगच्छन्। दुःखानां शिखरिण्यतानीव शृङ्गसमूहा इव अवर्द्धन्त, एतेन दुःखानां पर्वतवद्गुरुत्वं प्रत्यायितम्। मूर्च्छानां प्रसूतयः सन्ताना अविच्छिन्नप्रसवा इवोदपद्यन्त, एतेन मुहुर्मुहुर्मूर्च्छाभूदिति व्यञ्जितम्। अत्र प्रतीकवाक्य एव जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) इतीति। समतिक्रान्तं अतीतं। कथमपि अनिर्वचनीयं, अतिकष्टं अतिकष्टकरं। अनुभवन्त्या इव तदानीमिवानुभवविषयीकुर्वन्त्या इव तस्या महाश्वेतायाः। सा मूर्च्छिता बभूवेत्यर्थः।

লহরী মুক্তার মালা ছড়াকে তিরস্কার করিয়াছিলাম। 'ভগবন্! প্রসন্ন হউন, ইহাকে জীবিত করুন' এই কথা বলিয়া, বারংবার কপিঞ্জলের চরণযুগলে পতিত হইয়াছিলাম। বারংবার তরলিকার কণ্ঠ ধারণ করিয়া রোদন করিয়াছিলাম। (ঙ) অচিন্তিত, অনভ্যস্ত অন্যকর্তৃক অনুপদিষ্ট এবং নিজেরও অজ্ঞাত সেই সকল দুঃখসূচক করুণবাক্য, কোথা হইতে যে, পুণ্যহীন আমার মুখ হইতে সেই সময়ে নির্গত হইয়াছিল আজ চিন্তা করিয়াও তাহা স্মরণ করিতে পারিতেছি না। (ক) সে বিলাপ কোথায়? এবং বিহ্বলতাবশতঃ সেই অতিকরুণ রোদনই বা কোথায়? সে রকমটি যে তখন সম্পূর্ণ অন্যরূপ ছিল। (খ) তখন বেগবান্ অশ্রুজলের প্রলয়-তরঙ্গই যেন নয়নের ভিতর হইতে উঠিতেছিল, নয়নযুগল অশ্রুপ্রবাহের জলযন্ত্রই যেন মুক্ত করিয়া দিয়াছিল, বিলাপের নূতন নূতন অঙ্কুরই যেন নির্গত হইয়াছিল, দুঃখের শতশৃঙ্গই যেন বৃদ্ধি পাইয়াছিল এবং মূর্চ্ছার অবিচ্ছিন্ন সন্তানই যেন জন্মিতেছিল।

(গ) মহাশ্বেতা, এইভাবে নিজের বৃত্তান্ত বলিতে বলিতেই অতীত, অনির্বচনীয় ও দারুণ

(१) निवेदयन्त्या एव,...एव च।

शिलातले तां ससम्भ्रमं प्रसारितकरः (१) परिजन इव जातपीड़श्चन्द्रापीड़ो विधृतवान्। अश्रुजलार्द्रेण च तदीयेनैवोत्तरीयवल्कलप्रान्तेन शनैः शनैर्वीजयन् संज्ञां ग्राहितवान् (घ)। उपजातकारुण्यश्च वाष्पसलिलोत्पीड़ेन प्रक्षाल्यमानकपोलयुगलः (२) लब्धचेतनामवादीत्—"भगवति! मया पापेन तवायं पुनरभिनवतामुपनीतः शोकः, येनेदृशीं दशामुपनीतासि। तदलमनया कथया, संक्षिप्यतामियम्, अहमप्यसमर्थः श्रोतुम्। अतिक्रान्तान्यपि हि सङ्कीर्त्त्यमानानि (३) अनुभवसमां वेदनामुपजनयन्ति सुहृज्जनस्य दुःखानि। तन्नार्हसि कथमपि विधृतानिमानसुलभानसून् पुनः पुनः (४) स्मरणशोकानलेन्धनतामुपनेतुम्" इति। (ङ)

(घ) वेगादिति। ससम्भ्रमं सत्वरं। जातपीड़स्तस्या वृत्तान्तश्रवणेनावस्थादर्शनेन च उत्पन्नदुःखः। संज्ञां ग्राहितवान् चैतन्यं लम्भितवान्।

(ङ) उपेति। किञ्च, उपजातं कारुण्यं शोको यस्य स तादृशश्चन्द्रापीड़ः, वाष्पसलिलानां उत्पीड़ेन स्थूलप्रवाहेण, प्रक्षाल्यमानं कपोलयुगलं यस्य स तादृशः सन्, लब्धचेतनां महाश्वेतामवादीत्। मया वक्तुमनुरुद्धेति भावः। येन हेतुना। इयं कथा संक्षिप्यतां समाप्यताम्। अहमपि श्रोतुमसमर्थः शोकोदयादिति भावः। हि यस्मात्, अतिक्रान्तान्यपि अतीतान्यपि दुःखानि सङ्कीर्त्त्यमानानि सन्ति, सुहृज्जनस्य अनुभवसमां स्वयमनुभूयमानवेदनातुल्यामित्यर्थः वेदनामुपजनयन्ति। कथमपि अतिकष्टेन, विधृतान् इयन्तं कालं यावत् रक्षितान्, असुलभान् अस्मिन् जन्मनि दुर्लभान्, इमान् असून् प्राणान्, स्मरणेन तद्वृत्तान्तस्मृत्या यः शोकानलस्तस्य इन्धनतां काष्ठत्वं उपनेतुं प्रापयितुं नार्हसि, फलाभावादिति भावः। अत्र शोके अनलत्वारोपः प्राणेष्विन्धनत्वारोपस्य निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कारः।

কষ্টজনক সেই অবস্থাই যেন তখন অনুভব করিতে লাগিল; তাই মূর্চ্ছা আসিয়া তাহার চৈতন্য অপহরণ করিল। (ঘ) এবং প্রস্তরখণ্ডের উপরে বেগে পড়িয়া যাইতে লাগিল; তখন দুঃখিতচিত্ত চন্দ্রাপীড়, পরিজনের ন্যায় হস্ত প্রসারণ করিয়া তাড়াতাড়ি তাহাকে ধরিলেন এবং তাহারই অশ্রুজলসিক্ত উত্তরীয় বল্কলপ্রান্তদ্বারা ধীরে ধীরে বায়ু সঞ্চালন করিয়া সংজ্ঞা লাভ করাইলেন। (ঙ) এই ঘটনাতে চন্দ্রাপীড়েরও শোক উপস্থিত হইল এবং অশ্রুজলের প্রবাহে তাঁহার গণ্ডযুগল প্রক্ষালিত হইতে লাগিল; তখন তিনি প্রাপ্তচৈতন্যা মহাশ্বেতাকে বলিলেন,—"ভগবতি! আমি পাপাত্মা; তাই আপনার এই অতীত শোককে পুনরায় নূতন করিয়া তুলিয়াছি; বিশেষতঃ, যে হেতু—আপনাকে এইরূপ অবস্থাতে উপস্থাপিত করিয়াছি। অতএব এই বৃত্তান্ত বলায় আর প্রয়োজন নাই, এইখানেই ইহার উপসংহার করুন, আমিও

(१) ससम्भ्रमप्रसारितकरः। (२)...कपोलयुगला।

(३) अत्र प्रियजनविरहावबन्धनानि इति क्वचिदधिकः पाठः। (४) पुनः।

एवमुक्ता दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य (१) वाष्पायमानलोचना सनिर्वेदमवादीत्—"राजपुत्र ! या (२) तस्यामतिदारुणायां हतनिशायामेभिरतिनृशंसैरसुभिर्न परित्यक्ता, सेदानीं परित्यज्यत इति (३) दूरापेतम्, (४) (च)। नूनमपुण्योपहतायाः पापाया मम भगवानन्तकोऽपि परिहरति दर्शनम् (छ)। कुतश्च मे कठिनहृदयायाः शोकः, सर्वमिदमलीकमस्य दुरात्मनः (५) शठहृदयस्य, सर्वथाहमनेन त्यक्तत्रपेण निरपत्रपाणामग्रेसरीकृता (ज) यया चाधिगतमदनवेदनया

(च) एवमिति। एवमुक्ता चन्द्रापीडेनेति शेषः। वाष्पमुद्वमत इति वाष्पायमाने लोचने यस्याः सा तादृशी महाश्वेता। निर्वेदेन आत्मावमाननया सहेति सनिर्वेदं "तत्त्वज्ञानापदीर्ष्यादेर्निर्वेदः स्वावमानना।" इति साहित्यदर्पणः। या मत्सदृशी व्यक्तिः। इत्येतत् सम्भावनं, दूरापेतं दूरं गतम्।

(छ) नूनमिति। अपुण्यं पुण्यविरोधि जन्मान्तरीयपापं तेन उपहतायाः प्रतिबद्धसर्वसुखायाः, पापाया ब्रह्महत्यानिमित्तत्वादैहिकपापशालिन्याः। अतएव नाशंगतपुनरुक्तादोषः। दर्शनं साक्षात्कारं परिहरति परित्यजतीति नूनं निश्चितम्, अन्यथा दर्शनं दत्त्वा तादृशावसरे मामवश्यमेव नयेदिति भावः। अत्र नूनमित्युपादानाद्वाच्या क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) अथ तथापि पुनः शोकोदयात् संक्रियतामित्यं कथेत्याह कुत इति। विदीर्णतारूपशोकफलादर्शनात् हृदयस्य काठिन्यं शोकाभावश्चेति भावः। इदं पुण्डरीकमरणादिकं, अलीकं मिथ्या मिथ्यावत् प्रतीतिरित्यर्थः। अन्यथा विदीर्येतेति भावः। दुरात्मनो दुष्टहृदयस्य। त्यक्तत्रपेण शठत्वादेव हीनलज्जेन, अनेन शठहृदयेन, अहं निरपत्रपाणां निर्लज्जानां अग्रेसरी कृता प्रधाना विहिता। कथमन्यथा यथायथमाख्यातुमर्हामीति भावः।

আর শুনিতে পারিতেছি না ; কারণ—যে সকল দুঃখ অতীত হইয়া গিয়াছে, তাহারও কীর্ত্তন করিতে আরম্ভ করিলে আত্মীয়লোকের অনুভূয়মান বেদনার তুল্য বেদনা জন্মাইয়া থাকে। আপনি কোন প্রকারে প্রাণধারণ করিয়া রহিয়াছেন, কিন্তু সেই প্রাণ চলিয়া গেলে ইহ জন্মে আর তাহা সুলভ হইবে না, অতএব বারংবার স্মরণ করিয়া সেই প্রাণকে শোকানলের ইন্ধন করা আপনার উচিত নহে।"

(চ) চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিলে মহাশ্বেতার নয়নযুগল, অশ্রু বর্ষণ করিতে লাগিল ; তখন সে, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস ত্যাগ করিয়া নিজের প্রতি অবজ্ঞার সহিত বলিতে লাগিল—"রাজপুত্র ! অত্যন্ত ভয়ঙ্কর সেই পোড়া রাত্রিতে এই নৃশংস প্রাণ যাহাকে পরিত্যাগ করে নাই, এখন যে তাহাকে পরিত্যাগ করিবে—সে ধারণা সুদূর-পরাহত। (ছ) জন্মান্তরীয় পাপে আমার সকল সুখের বাধা দিয়াছে, ইহ জন্মেও আমি পাপিষ্ঠা ; সুতরাং নিশ্চয় ভগবান্ যমও আমার দর্শন পরিত্যাগ করিয়াছেন। (জ) আমার হৃদয় অত্যন্ত কঠিন ; সুতরাং শোক আসিবে কোথা হইতে ? দুরাত্মা ও ধূর্ত্তস্বভাব এই হৃদয়ের নিকট এ সমস্তই অলীক বলিয়া বোধ হইয়াছে

(१) निःश्वस्य। (२) या तदा। (३) तैर्मामिदानीं परित्यजन्तीति। (४) दूरापेतमेतत्।
(५) क्वचित् दुरात्मन इति नास्ति।

वज्रमय्येवेदमनुभूतं, तस्याः का गणना कथनं प्रति? (१) (झ) किंवा परमतः कष्टतरमाख्येयमन्यद्भविष्यति, यन्न शक्यं श्रोतुमाख्यातुं वा। केवलमस्य वज्रपातस्यानन्तरमाश्चर्य्यं यदभूत्तन्निवेदयामि, आत्मनश्च प्राणधारणकारणलव इव (२) अव्यक्तो यः समुत्पन्नः, तञ्च कथयामि। यया दुराशामृगतृष्णिकया गृहीताहमिदमुपरतकल्पं परकीयमिव भारभूतमप्रयोजनमकृतज्ञञ्च हतशरीरं वहामि तदलं श्रूयताम्। (ञ)

ततश्च तथाभूते तस्मिन्नवस्थान्तरे मरणैकनिश्चया (३) बहु विलप्य तरलिकामब्रवम्—(४) "अयि उत्तिष्ठ निष्ठुरहृदये! कियद्रोदिषि? (५) काष्ठान्याहृत्य विरचय चिताम्, अनुसरामि जीवितेश्वरम्" इति। (ट)

(झ) ननु तथापि कथने कथञ्चिन्मन पीडा भवेदेवेत्याह ययेति। किञ्च, अधिगतमदनवेदनया साक्षादनुभूतदारुणकामपीड़या यया वज्रमय्येव वज्रनिर्म्मितयेव स्थितया मया, इदं घटनावृन्दमनुभूतं, तस्या मम कथनं प्रति का गणना, अपि तु कापि नेत्यर्थः। अनुभवजनितपीडापेक्षया कथनोत्पन्नस्मरणजन्यपीडाया नितान्तलघुत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षार्थापत्त्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ञ) अतःपरं कष्टतरमपि नास्तीत्याह किं वेति। वज्रपातस्य वज्रपातरूपस्य दुःखकरस्य अस्य वृत्तान्तस्य। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः। प्राणधारणकारणस्य लवो लेश इव अव्यक्तं अस्पष्टो यो वृत्तान्तः। उपरतकल्पं मृतप्रायं। तदाशाप्रयोजकं महापुरुषवाक्यं अन्यं व्यर्थमपि श्रूयतां। तव तच्छ्रवणे न किमपि फलं तथापि मदनुरोधाच्छ्रूयतामिति भावः।

(ट) तत इति। तथाविधशोकेनापि हृदयस्याविदीर्णत्वात् निष्ठुरहृदयत्वं तरलिकाया इति भावः। अनुसरामि सहमरणं व्रजामि, "मृते भर्त्तरि ब्रह्मचर्य्यं तदन्वारोहणं वा" इति स्मृतेरिति भावः।

এবং এই নির্লজ্জ হৃদয়, আমাকে সকল প্রকারে নির্লজ্জদিগের অগ্রগণ্য করিয়াছে। (ঝ) যে ব্যক্তি, দারুণ কামবেদনা অনুভব করিয়া, আবার বজ্রময়ীর ন্যায় এই সকল ঘটনাও প্রত্যক্ষ করিয়াছিল, তাহার আবার সেই ঘটনা বলিবার বিষয়ে চিন্তা করিবার কি আছে?। (ঞ) ইহার পর, অধিক কষ্টকর আর বলিবারই বা কি আছে? যাহা শুনিতে বা বলিতে পারা যায় না। এই বজ্রপাতের পরে যে আশ্চর্য্য ঘটনা হইয়াছিল, কেবল তাহাই নিবেদন করিতেছি এবং নিজের প্রাণ ধারণ করিবার কারণের কণার ন্যায় অস্পষ্ট যে বৃত্তান্তটি ঘটিয়াছিল, তাহাও বলিতেছি। যে দুরাশা-মৃগতৃষ্ণিকার বশীভূত হইয়া আমি, মৃতপ্রায় এবং পরকীয়ের ন্যায় ভারভূত, প্রয়োজনবিহীন ও অকৃতজ্ঞ এই পোড়া শরীর ধারণ করিতেছি, প্রয়োজন না থাকিলেও তাহা আপনি শ্রবণ করুন।

(ট) তাহার পর, সেইরূপে আমার সেই অবস্থান্তর ঘটিলে আমি, কেবল মরণে কৃত-নিশ্চয় হইয়া বহুতর বিলাপ করিয়া তরলিকাকে বলিলাম,—'হে কঠিনহৃদয়ে! উঠ,

---

(१) का गणना। (२)...कारणमूल इव। (३) अवस्थान्ते मरणैकनिश्चयात्। (४) अब्रुवं। (५) रोदिषि।

অত্রান্তরে ঝটিতি চন্দ্রমণ্ডলবিনির্গতঃ (১) গগনাদবতীর্য্য কেয়ূরকোটি-লগ্নমমৃতফেনপিণ্ডপাণ্ডুরং পবনতরলমংশুকোত্তরীয়মাকর্ষন্, (ঠ) উভয়কর্ণা-ন্দোলিত-কুণ্ডল-মণি-প্রভা-রক্ত-গণ্ডস্থলঃ, (ড) স্থূলমুক্তাফলতয়া তারাগণ-মিব গ্রথিতং অতিতারং হারং (২) উরসা দধানঃ, (ঢ) ধবল-দুকূল-পল্লব-কল্পিতোষ্ণীষগ্রন্থিঃ, (ণ) অলি-কুল-নীল-কুটিল-কুন্তল-নিকর-বিকট-মৌলিঃ, (ত) উৎফুল্ল-কুমুদ-কর্ণপূরঃ, কামিনী-কুচ-কুঙ্কুম-পত্রলতা-লাঞ্ছিতাংস-

---

(ঠ) অর্ষেতি। কেয়ূরস্য কোটৌ অগ্রদেশে লগ্নং, অমৃতস্য ফেনপিণ্ডবৎ পাণ্ডুরং শুভ্রং, পবনতরলং বায়ুনা কম্পিতং, অংশুকোত্তরীয়ং ক্ষৌমবসনোত্তরীয়ং। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

(ড) উভয়েতি। উভয়কর্ণান্দোলিতয়োঃ কুণ্ডলয়োর্মণিপ্রভাভিঃ রক্তে লোহিতে গণ্ডস্থলে কপোলযুগলং যস্য সঃ। বৃত্তিবিষয়ে উভশব্দান্নিত্যময়ট্প্রত্যয়স্তমাদিত্বাৎ।

(ঢ) স্থূলেতি। উরসা বক্ষসা। স্থূলানি মুক্তাফলানি যস্মিংস্তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা, গ্রথিতং তারাগণমিব নক্ষত্রসমূহমিব, অতিতারং অতীবনির্ম্মলং। অত্র উৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। "মুক্তাশুদ্ধৌ চ তারঃ স্যা"দিত্যমরঃ।

(ণ) ধবলেতি। ধবলেন দুকূলপল্লবেন বিস্তৃতসূক্ষ্মবসনেন কল্পিতো নির্ম্মিত উষ্ণীষগ্রন্থির্যেন সঃ।

(ত) অলীতি। অলিকুলবদ্ভ্রমরসমূহবৎ নীলেন কুটিলেন বক্রেণ চ কুন্তলনিকরেণ কেশকলাপেন বিকটো বিশালো মৌলিশ্চূড়া যস্য সঃ। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

(থ) উৎফুল্লেতি। উৎফুল্লে বিকসিতে কুমুদে শ্বেতোৎপলযুগলমিব কর্ণপূরৌ যস্য সঃ। কামিন্যাঃ কুচয়োঃ কুঙ্কুমপত্রলতাভিঃ কুঙ্কুমরচিতপত্রাবলিভিঃ লাঞ্ছিতৌ গাঢ়ালিঙ্গনপূর্ব্বকপার্শ্বশয়নবেলায়াং চিহ্নিতৌ

আর কত রোদন করিবে? কাষ্ঠ আনয়ন করিয়া চিতা নির্ম্মাণ কর; আমি প্রাণেশ্বরের অনুগমন করিব।'

(ঠ—ক্ষ) ইত্যবসরে, মহাপুরুষ-লক্ষণান্বিত ও স্বর্গীয়মূর্ত্তি কোন পুরুষ, চন্দ্রমণ্ডল হইতে নির্গত হইয়া, আকাশ হইতে ভূতলে নামিয়া, বাহুযুগলে মৃত পুণ্ডরীককে উত্তোলন করিয়া দুন্দুভিধ্বনির ন্যায় গম্ভীর স্বরে আমাকে বলিলেন,—"বৎসে! মহাশ্বেতে! তুমি প্রাণ পরিত্যাগ করিও না, ইহার সহিত তোমার পুনর্ব্বারও সম্মিলন হইবে" পিতার ন্যায় আদরপূর্ব্বক এই কথা বলিয়া পুণ্ডরীকের দেহটির সহিতই আকাশে উঠিয়া গেলেন। তিনি আকাশ হইতে নামিবার সময়ে একখানা ক্ষৌম উত্তরীয় বসন আকর্ষণ করতঃ নামিতেছিলেন; সেই বসনখানা বায়ুভরে কম্পিত হইয়া কেয়ূরের অগ্রে সংলগ্ন হইতেছিল এবং অমৃতের ফেনপিণ্ডের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ছিল;—দুই কর্ণে দোদুল্যমান দুইটি কুণ্ডলের মণির প্রভায় তাঁহার গণ্ডযুগল আরক্তবর্ণ হইয়াছিল;—

---

(১)...নির্গতঃ। (২) অতিতারহারং।

देशः, कुमुद-धवल-देहः, महाप्रमाणः, पुरुषो महापुरुषलक्षणोपेतो दिव्याकृतिः, (थ) स्वच्छ-वारि-धवलेन देहप्रभावितानेन क्षालयन्निव दिगन्तराणि, (द) आमोदिना च शरीरतः क्षरता शिशिरेण शीतज्वरमिव जनयता अमृतशीकर-निकरवर्षेण (१) तुषारपटलेनेवानुलिम्पन्, (ध) गोशीर्षचन्दनरस-च्छटाभिरिवासिञ्चन्, (न) ऐरावतकरपीवराभ्यां बाहुभ्यां मृणाल-धवलाङ्गुलिभ्यामतिशीतलस्पर्शाभ्यां (२) तमुपरतमुत्क्षिपन्, (प) दुन्दुभिनादगम्भीरेण (३) स्वरेण

अंसदेशौ स्कन्धदेशौ यस्य सः। कुमुदवत् धवलो देहो यस्य सः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। महत् प्रमाणं परिमाणं दैर्घ्यं यस्य सः। महापुरुषलक्षणैः करचरणादौ ध्वजवज्राङ्कुशादिचिह्नैरुपेतः। दिव्याकृतिः स्वर्गीयमूर्त्तिः।

(द) स्वच्छेति। स्वच्छवारिवत् निर्म्मलजलवत् धवलेन, देहस्य प्रभाया वितानेन समन्तात्प्रसृतप्रभयेत्यर्थः दिशामन्तराणि क्षालयन्निव। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ध) आमोदिनेति। किञ्च, आमोदिना सौरभवता, शरीरतः क्षरता, तुषारपटलेनेव हिमसङ्घेनेव, शिशिरेण शीतलेन, अतएव शीतज्वरं जनयतेव कम्परोमाञ्चकारित्वादिति भावः, अमृतशीकरनिकरवर्षेण सुधाबिन्दुसमूहवृष्ट्या, अनुलिम्पन् दिगन्तराणीति सम्बन्धः अत्र क्रियोत्प्रेक्षाशीतोपमयोर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(न) गोशीर्षेति। गोशीर्षाकारे मलयैकदेशे जातत्वाद्गोशीर्षं तदाख्यं अतिसुरभि यच्चन्दनं तस्य रसच्छटाभिर्द्रवच्छुरणैरासिञ्चन्निव दिगन्तराणीति सम्बन्धः, प्रभाप्रसरणादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) ऐरेति। ऐरावतस्य हस्तिनः करवत् शुण्डावत् पीवराभ्यां स्थूलाभ्यां, मृणालवद्धवला अङ्गुल्यो ययोस्ताभ्यां, तथा अतिशीतलस्पर्शाभ्यां बाहुभ्यां, उपरतं मृतं तं पुण्डरीकं उत्क्षिपन् उत्तोलयन्। अत्र लुप्तोपमयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

বৃহৎ বৃহৎ মুক্তা-নির্ম্মিত বলিয়া, গ্রথিত নক্ষত্রগণের ন্যায় ও অত্যন্ত নির্ম্মল একছড়া হার বক্ষঃস্থলে ধারণ করিতেছিলেন ; ধবল ও বিস্তৃত সূক্ষ্ম বসনদ্বারা উষ্ণীষ বন্ধন করিয়াছিলেন ; ভ্রমর-সমূহের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ও বক্র কেশকলাপে তাঁহার চূড়াটিকে বৃহৎ দেখা যাইতেছিল ; প্রস্ফুটিত দুইটি শ্বেতোৎপল তাঁহার কর্ণের আভরণ ছিল ; কোন রমণীর স্তনলিপ্ত কুঙ্কুমের পত্রলতাচিহ্নে স্কন্ধযুগল চিহ্নিত হইয়াছিল এবং শরীরটি শ্বেতোৎপলের ন্যায় ধবলবর্ণ ও বৃহৎ পরিমাণে ছিল ; এই সকল কারণে তাঁহার আকৃতিটি স্বর্গীয় বলিয়া বোধ হইতেছিল ; নির্ম্মল জলের ন্যায় শুভ্রবর্ণ দেহপ্রভাদ্বারা তিনি যেন দিগ্দিগন্তর প্রক্ষালন করিতেছিলেন ; তুষারবৃষ্টির ন্যায় শীতল ও সুগন্ধ দেহ হইতে নিঃসৃত অমৃতবিন্দুবর্ষণদ্বারা শীতজ্বর জন্মাইয়াই যেন সকল দিক্

---

(১) অমৃতশীকরবর্ষেণ। (২) শীতলস্পর্শাভ্যাং। (৩) দুন্দুভিগম্ভীরেণ।

"वत्से! महाश्वेते! न परित्याज्या: (१) त्वया प्राणा:, पुनरपि तवानेन सह भविष्यति समागम:" इत्येवमाहृत: (२) पितेवाभिधाय सहैवानेन गगनतलमुदपतत्। (फ)

अहन्तु तेन व्यतिकरेण सभया सविस्मया सकौतुका चोन्मुखी किमिदमिति कपिञ्जलमपृच्छम् (ब)। असौ तु ससम्भ्रममदत्त्वैवोत्तरमुदतिष्ठत्। "दुरात्मन्! (३) क्व मे वयस्यमपहृत्य गच्छसि" इत्यभिधायोन्मुख: सञ्जातकोपो बध्नन् सवेगं (४) उत्तरीयवल्कलेन परिकरं, उत्पतन्तं (५) तमेवानुसरन्नन्तरिक्षमुदगात्। पश्यन्त्या एव च मे सर्वं एव ते तारागणमध्यं (६) अविशन्। (भ)

मम तु तेन द्वितीयेनेव प्रियतममरणेन कपिञ्जलगमनेन द्विगुणीकृतशोकाया:

(फ) दुन्दुभीति। दुन्दुभिनादवद्गम्भीरेण, स्वरेण कण्ठध्वनिना। अनेन मृतपुण्डरीकेण। ञ्लुप्तोपमाश्लेषोपमयो: पूर्ववत् संसृष्टि:।

(ब) अहमिति तेन व्यतिकरेण नयनयोस्तद्व्यापारसम्पर्केण। सभयेत्यादौ सर्वत्र अलौकिकाकृतिव्यापारदर्शनादिति भाव:।

(भ) असाविति। असौ कपिञ्जल:। ससम्भ्रमं सत्वरं। परिकरं कटिदेशम्। पश्यन्त्या एव मे पश्यन्तीमेव मामनादृत्येत्यर्थ: "षष्ठी चानादरे" इति षष्ठी। ते पुरुषपुण्डरीककपिञ्जला:।

(म) ममेति। द्वितीयेन प्रियतममरणेनेवेत्यन्वय:, सर्वथा नैराश्यादिति भाव:। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:। सुतरामत्यन्तम्। जानासीति काकु:, जानासि किमित्यर्थ:।

লিপ্ত করিতেছিলেন এবং গোশীর্ষনামক চন্দনরসনিক্ষেপেই যেন সকল দিক্ সিক্ত করিতেছিলেন, এবং তাঁহার সেই বাহুযুগল, ঐরাবত হস্তীর শুণ্ডের ন্যায় স্থূল ও অত্যন্ত শীতস্পর্শ ছিল এবং তাঁহার অঙ্গুলিসমূহ ও মৃণালের ন্যায় ধবলবর্ণ ছিল।

(ব) আমি কিন্তু সেই ঘটনা দেখিয়া ভয় বিস্ময় ও কৌতুকের সহিত উন্মুখ হইয়া কপিঞ্জলকে জিজ্ঞাসা করিলাম,—'এ, ব্যাপারটা কি?'। (ভ) তিনি কিন্তু সে কথার উত্তর না দিয়াই তাড়াতাড়ি উঠিলেন এবং বলিলেন—"দুরাত্মন্! আমার বন্ধুকে অপহরণ করিয়া তুমি কোথায় যাইতেছ?" এই কথা বলিয়া ক্রুদ্ধ হইয়া উত্তরীয়বল্কলদ্বারা তাড়াতাড়ি কটিদেশ বন্ধন করিয়া, উন্মুখ হইয়া, আকাশে উত্থিত সেই পুরুষটার অনুসরণ করত আকাশে উঠিয়া গেলেন; এবং আমি দেখিতেছিলাম, এই অবস্থাতেই তাঁহারা সকলেই নক্ষত্রসমূহের মধ্যে প্রবেশ করিলেন।

(ম) কিন্তু দ্বিতীয় প্রিয়তমের মৃত্যুর ন্যায় কপিঞ্জলের সেই গমনে আমার শোক দ্বিগুণ

(१) त्याज्या:। (२) कश्चित् आहूत इति नास्ति। (३) दुरात्मन्! अलक!।
(४) सावेगं। (५) उत्पत्योत्पतन्तं। (६) तारागणाधिपमध्यं।

सुतरामदीर्य्यत हृदयम्। किङ्कर्त्तव्यतामूढा च तरलिकामब्रवम् (१) 'अयि! जानासि? (२) कथय किमेतदिति' (स) सा तु तदवलोक्य स्त्रीस्वभावकातरतया तस्मिन् क्षणे शोकाभिभाविना भयेनाभिभूता वेपमानाङ्गयष्टिर्मम मरणशङ्कया च वराकी विषण्णहृदया सकरुणमवादीत्—(य) "भर्त्तृदारिके! न जानामि पापकारिणी, किन्तु महदिदमाश्चर्य्यम्, अमानुषाकृतिरेष पुरुषः, समाश्वासिता चानेन गच्छता सानुकम्पं पितेव भर्त्तृदारिका। प्रायेण चैवंविधा दिव्याः स्वप्नेऽप्यविसंवादिन्यो भवन्त्याकृतयः किमुत साक्षात्। (र) न चाल्पमपि, विचारयन्ती कारणमस्य मिथ्याभिधाने पश्यामि, अतो युक्तं विचार्य्यात्मानमस्मात् प्राणपरित्यागव्यवसायान्निवर्त्तयितुम्, अतिमहत् खल्विदमाश्वासस्थानमस्यामवस्थायाम् (ल)। अपि च तमनुसरन् गत एव कपिञ्जलः, तस्माच्च 'कुतोऽयम्,

---

(य) सेति। वराकी शोच्या क्षुद्रेत्यर्थः। तत् तेषां गमनं। शोकाभिभाविना शोकविजयिना शोकात् प्रबलेनेत्यर्थः।

(र) भर्त्त्रिति। सानुकम्पं सदयम्। एवंविधा दिव्याः स्वर्गीयाः आकृतयः स्वप्नेऽपि प्रायेण अविसंवादिन्यः सत्यवचना यभिचारिण्यो भवन्ति स्वप्नेऽपि न मिथ्या भाषन्त इत्यर्थः।

(ल) ननु यदि मिथ्या भाषते तदा किमित्याह न चेति। विचारयन्ती सती, अस्य पुरुषस्य मिथ्याभिधाने अल्पमपि कारणं न पश्यामीत्यन्वयः। प्राणपरित्यागस्य व्यवसाय उद्यमस्तस्मात्। आत्मानं मनः। इदं "न परित्यज्यास्त्वया" इत्यादिकमस्य वाक्यं, आश्वासस्य स्थानं कारणमित्यर्थः।

বঞ্চিত করিল, তাই হৃদয় অত্যন্ত বিদীর্ণ হইতে লাগিল। তখন কিংকর্ত্তব্যবিমূঢ় হইয়া তরলিকাকে বলিলাম – তরলিকে! যদি বুঝিয়া থাকিস্ তবে বল্—এ ব্যাপারটা কি?'। (য) কিন্তু ক্ষুদ্রহৃদয়া তরলিকা, সেই ঘটনা দেখিয়া, স্ত্রীস্বভাবের কাতরতানিবন্ধন শোকবিজয়ী ভয়েই তখন অভিভূত হইয়া পড়িল, তাহার শরীর কাঁপিতে লাগিল এবং আমার মরণের আশঙ্কায় তাহার হৃদয় বিষণ্ণ হইয়া গেল—এই অবস্থায় শোকের সহিত বলিল,—(র) রাজকন্যে! আমি পাপিষ্ঠা, তাই এই ঘটনার কিছুই বুঝিতে পারি নাই। কিন্তু এ ঘটনা বড়ই আশ্চর্য্য। এই ব্যক্তির আকৃতি অলৌকিক; এবং ইনি যাইবার সময়ে পিতার ন্যায় দয়ার সহিত আপনাকে আশ্বস্ত করিয়া গিয়াছেন। এই জাতীয় স্বর্গীয় মূর্ত্তি, প্রায়শঃ স্বপ্নেও মিথ্যা কথা বলেন না, সুতরাং প্রত্যক্ষ মিথ্যা কথা বলিবেন কেন? (ল) আমি বিবেচনা করিয়া, ইহার মিথ্যা কথা বলায় অল্পও কারণ দেখিতেছি না; অতএব বিবেচনা করিয়া আপনারও এই প্রাণপরিত্যাগের উদ্যম হইতে মনকে নিবৃত্তি করা উচিত, বিশেষতঃ এই অবস্থায় উঁহার এই বাক্যটি বড়ই আশ্বাসের কারণ। (ব) আরও দেখুন—কপিঞ্জল ত সেই লোকটার পিছনে পিছনে

---

(१) अब्रुवं। (२) न जानासि।

को वायम्, किमर्थञ्च (१) अनेनायमपगतासुरुत्क्षिप्य नीतः, क्व वा नीतः, कस्माच्चासम्भावनीयेनामुना पुनः समागमाशाप्रदानेन भर्तृदारिका समाश्वासिता' इति सर्वमुपलभ्य (२) जीवितं वा मरणं वा समाचरिष्यसि। अदुर्लभं हि मरण-मध्यवसितं, (३) पश्चादप्येतद्भविष्यति (व)। न च जीवन् कपिञ्जलो भर्तृ-दारिकामदृष्ट्वा स्थास्यति, तेन तत्प्रत्यागमनकालावधयोऽपि तावद्ध्रियन्तामिमे प्राणाः" इत्यभिदधाना पादयोर्मे न्यपतत् (श)। अहन्तु सकललोकादुर्लङ्घ्यतया जीविततृष्णायाः, क्षुद्रतया च स्त्रीस्वभावस्य, तया च तद्वचनोपनीतया दुराशा-

(व) अपीति। तस्माच्च कपिञ्जलात् इतोऽनन्तरं सर्वं उपलभ्य ज्ञात्वेत्यन्वयः। अयं पुरुषः कुत आगत इति शेषः। अनेन पुरुषेण, अपगतासुर्निर्गतप्राणः, अयं पुण्डरीकः, किमर्थञ्च उत्क्षिप्य उत्तोल्य नीतः, हि यस्मात्, अध्यवसितं विधातुमभिप्रेतं मरणं अदुर्लभं न दुष्प्रापं, अतएव एतन्मरणं पश्चादपि भविष्यति, अग्निप्रवेशादिनानोपायसत्त्वादिति भावः। अदुर्लभमित्यत्र प्रधानस्य नञर्थस्य समासे गुणाभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स तु न दुर्लभमिति पाठेनैव समाधेयः।

(श) अथ कपिञ्जलश्चेन्नागच्छेत्तदा कुतो ज्ञास्यामीत्याह न चेति। न च स्थास्यति, सुहृद्भार्य्यायाः सर्वथैव सुहृत्तुल्यत्वेन तेन तवावश्यसमाश्वासनीयत्वादिति भावः। तेन हेतुना, तस्य कपिञ्जलस्य प्रत्यागमनकाल एवावधिर्येषां ते। न्यपतत् तरलिकेति शेषः।

(ष) अहमिति। तस्यास्तरलिकाया वचनेन उक्तवाक्येन उपनीता उपस्थापिता तया, दुराशा विषयासम्भवत्वेऽपि ज्ञातत्वाद्दुष्टा पुण्डरीकस्य पुनः प्राप्त्याशैव मृगतृष्णिका तया। अत्र निरङ्गं केवलरूपकं। तेन च भ्रममूलैवेयं दुराशेति ध्वन्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। उत्सृष्टवती त्यक्तवती। हि यस्मात्, आशया किमिव

গিয়াছেনই; সুতরাং এই লোকটা কোথা হইতে আসিয়াছিল, সে কে, কেনই বা সে মৃত পুণ্ডরীককে তুলিয়া নিয়া গেল, কোথাই বা নিল, কি জন্যই বা অসম্ভাবনায় এই পুনরায় সম্মিলনের আশা প্রদান করিয়া আপনাকে আশ্বস্ত করিয়া গেল, এই সমস্ত বিষয়ই সেই কপিঞ্জলের নিকট জানিয়া, প্রাণ ধারণ বা প্রাণ পরিত্যাগ—ইহার যেটা হয় করিতে পারিবেন; কারণ—যে মরণের জন্য আপনি উদ্যত হইয়াছেন, তাহা দুর্লভ হইবে না, পরেও হইতে পারিবে। (শ) কপিঞ্জল জীবিত থাকিয়া আপনাকে না দেখিয়া অন্যত্র থাকিতে পারিবেন না; অতএব তাঁহার ফিরিয়া আসা পর্য্যন্ত আপনি এই প্রাণ ধারণ করুন"—এই কথা বলিয়া তরলিকা, আমার পায়ের উপর পড়িল। (ষ) কিন্তু জীবনের আশা সকল লোকেরই অলঙ্ঘনীয়, বিশেষত, স্বভাবতই স্ত্রীলোকের হৃদয় ক্ষুদ্র, এবং তরলিকা সেই সকল কথা দ্বারা আমার দুরাশারূপ মৃগতৃষ্ণা উপস্থিত করিয়া দিয়াছিল, আর কপিঞ্জল ফিরিয়া আসিবেন বলিয়া আমার নিজেরও আশা ছিল,—এই সকল কারণে সেই সময়ে জীবন ধারণ করাই যুক্তিসঙ্গত মনে

(१) किमर्थं वा। (२) सर्वमिदमुपलभ्य। (३) अध्यासितं।

मृगतृष्णिकया, कपिञ्जलस्य प्रत्यागमनकाङ्क्षया च, तस्मिन् काले तदेव युक्तं मन्यमाना नोत्सृष्टवती जीवितम्। आशया हि किमिव न क्रियते (ष)। तां च पापकारिणी (१) कालरात्रिप्रतिमां वर्षसहस्रायमाणां यातनामयीमिव दुःखमयीमिव नरकमयीमिव अग्निमयीमिव उत्सन्ननिद्रा तथैव क्षितितले विचेष्टमाना रेणुकणधूसरैरश्रुजलार्द्रकपोलसन्दानितैर्विमुक्तव्याकुलैः शिरोरुहैरुपरुद्धमुखी निर्दयाक्रन्द-जर्जर-स्वर-क्षय-क्षामेण (२) कण्ठेन तस्मिन्नेव सरस्तीरे तरलिकाद्वितीया क्षपां क्षपितवती। (स)

प्रत्युषसि तूत्थाय तस्मिन्नेव सरसि स्नात्वा कृतनिश्चया, तत्प्रीत्या तमेव

न क्रियते लोकैरिति शेषः, अपि त्वाशया सर्वमेव क्रियत इत्यर्थः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः उक्तरूपकार्योपपत्तिभ्यां सङ्कीर्य्यते।

(स) तामिति। किञ्च, उत्सन्ननिद्रा विगतनिद्रा। विचेष्टमाना विशेषेण स्पन्दमाना। रेणुकण-धूलिलवैर्धूसरास्तैः, अश्रुजलैरार्द्रयोः कपोलयोः सन्दानितैः संलग्नैः, विमुक्ताः स्खलिता अतएव व्याकुला विकीर्णास्तैः, शिरोरुहैः केशैः, उपरुद्धमुखी आवृतवदना। निर्दयः अत्युच्चो य आक्रन्दो रोदनं तेन जर्जरो जीर्णो यः स्वरस्तस्य क्षयेण क्रमिकह्रासेन क्षामः क्षीणस्तेन कण्ठेनोपलक्षिता अहं। कालरात्रिप्रतिमां कल्पान्तकालीनरात्रितुल्यां, सर्वाशानिरासात्। वर्षसहस्रायमाणां अतिदीर्घामित्यर्थः, दुःसमयस्य दीर्घताप्रतीतेः स्वाभाविकत्वात्। यातनामयीमिव, अतीवकष्टजनकत्वात्। दुःखमयीमिव, सर्वत एव दुःखानुभवात्। नरकमयीमिव, कष्टमात्रत्वात्। अग्निमयीमिव सर्वतः सन्तापजनकत्वात्। क्षपां रात्रिं, क्षपितवती अतिवाहितवती। अत्र प्रथमा अर्थोपमा द्वितीया च क्यङ्गतोपमा सर्वत्र व्याप्त्यर्थे मयट्प्रत्ययाश्च चतस्र एव क्रियोत्प्रेक्षा इत्येतासां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ह) प्रत्युषसीति। कृतनिश्चया शिवोपासनायामिति शेषः। तस्मिन् पुण्डरीके या प्रीतिः स्नेहस्तया हेतुना। व्यसनोपनिपातानां विपदुपस्थितीनां, अप्रतीकारेण प्रतिविधानासामर्थ्येन या दारुणता तां, निरूप्य

করিয়া আমি জীবন পরিত্যাগ করি নাই ; কারণ-লোকে আশাতে কি না করে ?। (স) আমি পাপিষ্ঠা, তাই সে রাত্রিতে নিদ্রা হইল না, সেই ভাবেই ভূতলে পড়িয়া ছট্‌ফট্ করিতে লাগিলাম, স্খলিত ও ইতস্ততঃ বিক্ষিপ্ত কেশকলাপ ধূলিকণায় ধূসরবর্ণ এবং অশ্রুজল-সিক্ত গণ্ডযুগলে সংলগ্ন হইয়া মুখমণ্ডল আবৃত করিল এবং উচ্চৈঃস্বরে রোদন করায় কণ্ঠের স্বর ক্রমশঃ জীর্ণ, শীর্ণ ও ক্ষীণ হইয়া গেল,—এই অবস্থায় আমি কেবল তরলিকার সহিত, সেই সরোবরের তীরেই কালরাত্রির তুল্য ও সহস্র বৎসরের ন্যায় দীর্ঘ সেই রাত্রিটা অতিবাহিত করিলাম ; তখন সেই রাত্রিটা যেন যাতনাময়ী, দুঃখময়ী, নরকময়ী ও অগ্নিময়ীর ন্যায় বোধ হইতেছিল।

(হ) প্রভাতে গাত্রোত্থান করিয়া, সেই সরোবরেই স্নান করিয়া, শিবের আরাধনায়

---

(१) पापकारिणीं। (२)···क्षामक्षामेण।

কমণ্ডলুমাদায় তান্যেব চ বল্কলানি তামেবাক্ষমালাং গৃহীত্বা, বুদ্ধা নিঃসারতাং সংসারস্য, জ্ঞাত্বা চ মন্দপুণ্যতামাত্মনঃ, (১) নিরূপ্য চাপ্রতীকারদারুণতাং ব্যসনোপনিপাতানাম্, আকলয্য দুর্নিবারতাং শোকস্য, দৃষ্ট্বা চ নিষ্ঠুরতাং দৈবস্য, চিন্তয়িত্বা চাতিবহুলদুঃখতাং স্নেহস্য, ভাবয়িত্বা চানিত্যতাং সর্ব্বভাবানাম্, অবধার্য্য চাকাণ্ডভঙ্গুরতাং সর্ব্বসুখানাম্, অবিগণয্য তাতমম্বাঞ্চ, পরিত্যজ্য সহ পরিজনেন সকল-(২) বন্ধুবর্গম্, নিবর্ত্ত্য বিষয়সুখেভ্যো মনঃ, সংযম্যেন্দ্রিয়াণি, গৃহীতব্রহ্মচর্য্যা দেবং ত্রৈলোক্যনাথমনাথশরণং (৩) ইমং শরণার্থিনী স্থাণুমাশ্রিতা (৪)। (ক)

অপরেদ্যুশ্চ কুতোঽপি সমুপলব্ধবৃত্তান্তস্তাতঃ সহাম্বয়া সহ বন্ধুবর্গেণাগত্য সুচিরং কৃতাক্রন্দস্তৈস্তৈরুপায়ৈঃ, অভ্যর্থনাভিশ্চ বহ্বীভিঃ, (৫) উপদেশৈশ্চানেকপ্রকারৈঃ, সান্ত্বনৈশ্চ (৬) নানাবিধৈঃ, গৃহগমনায় (৭) মে মহান্তং যত্নমকরোৎ। যদা চ

নির্ণীয়। আকলয্য বিবিচ্য। অতিবহুলান্যেব দুঃখানি যস্মিন্ তস্য ভাবস্তা। সর্ব্বভাবানাং আত্মাদিভিন্নসর্ব্বপদার্থানাং। অকাণ্ডে অসময়ে ভঙ্গুরতাং নশ্বরত্বং। ইন্দ্রিয়াণি চক্ষুরাদীনি সংযম্য স্বস্ববিষয়েভ্যো নিরুধ্য। অনাথানাং শরণং রক্ষকং। স্থাণুং শিবং। শরণার্থিনী রক্ষকপ্রার্থিনী।

(খ) অপরেদ্যুরিতি। কুতোঽপি জনাৎ, সমুপলব্ধবৃত্তান্তো জ্ঞাতমদীয়বার্ত্তঃ। কৃতাক্রন্দো বিহিত-

কৃতনিশ্চয় হইয়া, পুণ্ডরীকের প্রতি প্রণয়বশতঃ সেই কমণ্ডলুটি, সেই বাকল কয়খানি ও সেই জপের মালা ছড়া লইয়া, সংসারের অসারতা বুঝিতে পারিয়া, নিজের পুণ্য অল্প জানিয়া, প্রতিবিধান করিতে না পারায় উপস্থিত হইবার সময়ের বিপদ বড়ই ভয়ঙ্কর—ইহা নিশ্চয় বুঝিয়া, চেষ্টা করিয়া শোকের নিবৃত্তি করা যায় না—ইহা বিবেচনা করিয়া, বিধাতার নিষ্ঠুরতা দেখিয়া, স্নেহের ভিতরে বহুপরিমাণেই দুঃখ—ইহা চিন্তা করিয়া, সকল পদার্থেরই অনিত্যতা ভাবিয়া, সকল সুখই অসময়ে বিনষ্ট হইয়া যায়—ইহা স্থির বুঝিতে পারিয়া, পিতা ও মাতাকে গণনা না করিয়া, পরিজনদিগের সহিত সকল বন্ধুবর্গকে পরিত্যাগ করিয়া, বিষয়-সুখ হইতে মনকে নিবৃত্তি করিয়া এবং ইন্দ্রিয়দিগকে সংযত করিয়া, ব্রহ্মচর্য্য-অবলম্বন পূর্ব্বক শরণার্থিনী হইয়া, ত্রিভুবনের অধীশ্বর ও অনাথ-প্রতিপালক এই মহাদেবকে আশ্রয় করিলাম।

(ক) পরদিন পিতা, কোনও লোকের নিকট আমার বৃত্তান্ত জানিতে পাইয়া,—মাতা ও বন্ধুবর্গের সহিত আসিয়া বহুকাল পর্য্যন্ত বিলাপ করিলেন;—পরে হস্তধারণপ্রভৃতি নানাবিধ উপায়, বহুবিধ অনুনয়, নানাপ্রকার উপদেশ ও নানাবিধ সান্ত্বনাবাক্যে আমার

(১) মনসঃ। (২) পরিজনেন মনসা সকল...। (৩)...নাথং শরণ্যং। (৪) আশ্রিতবত্যস্মি। (৫) বহুভিঃ। (৬ পরিসান্ত্বনৈশ্চ। (৭) গৃহাগমনায়।

नेयमस्मादध्यवसायात् कथञ्चिदपि शक्यते व्यावर्त्तयितुमिति निश्चयमधिगतवान्, तदा निराशोऽपि दुस्त्यजतया दुहितृस्नेहस्य, पुनः पुनर्मया विसृज्यमानोऽपि बहून् दिवसान् स्थित्वा, सशोक एवान्तर्दह्यमानहृदयो गृहानयासीत्। (ख)

गते च ताते ततः प्रभृति तस्य जनस्याश्रुमोचमात्रेण (१) कृतज्ञतां दर्शयन्ती, तदनुरागकृशमिदमपुण्यबहुलमस्तमितलज्जममङ्गलभूतमनेकक्लेशायाससहस्रनि-वासं दग्धशरीरकं बहुविधैर्नियमशतैः शोषयन्ती, वन्यैश्च फलमूलवारिभिर्वर्त्तमाना जपव्याजेन तद्गुणगणानिव गणयन्ती, त्रिसन्ध्यमत्र सरसि स्नानमुपस्पृशन्ती, प्रतिदिनमर्च्चयन्ती देवं त्र्यम्बकम्, अस्यामेव गुहायां तरलिकया सह दीर्घं शोकमिममनुभवन्ती सुचिरं न्यवसम् (२)। (क)

विलापः। तैस्तैरुपायैर्गृहगमनादिभिः। अभ्यर्थनाभिरनुनयैः। इयं महाश्वेता, अस्मादध्यवसायात् व्रतावलम्बना-ध्यवसायात्, कथञ्चिदपि केनापि प्रकारेण व्यावर्त्तयितुं निवर्त्तयितुं न शक्यते। निराशोऽपि मम निवृत्तावाशार-हितोऽपि।

(क) गत इति। अश्रुमोचमात्रेण केवलाश्रुजलत्यागेन। तस्य जनस्य पुण्डरीकस्य सम्बन्धे। तस्य पुण्डरीकस्य अनुरागेण अनुरागजनितचिन्तया कृशं, अपुण्यानि पुण्यविरोधीनि पापानि बहुलानि यस्मिन् तत्, [illegible]दिति भावः, अस्तमिता विनष्टा लज्जा यस्य तत्, विकृतवेशधारणादित्याशयः, अमङ्गलभूतं सर्वेषा-ममङ्गलस्वरूपं वैधव्याचरणादित्यभिप्रायः, अनेकेषां क्लेशायासानां कष्टपरिश्रमाणां सहस्रस्य समूहस्य निवास-माश्रयं। दग्धशरीरकमिति कुत्सायां कप्रत्ययः। नियमशतैरुपवासादिव्रतसमूहैः। वर्त्तमाना वृत्तिं जीवन-धारणं कुर्वाणा। तस्य पुण्डरीकस्य गुणगणान् गणयन्तीव। उपस्पृशन्ती धातूनामनेकार्थत्वात् कुर्वती। त्र्यम्बकं त्रिलोचनं शिवम्। अत्र जपव्याजेनेति विशेषणे सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

গৃহগমনের নিমিত্ত গুরুতর যত্ন করিলেন। তাহার পর যখন নিশ্চয় বুঝিতে পারিলেন যে, এই উদ্যম হইতে ইহাকে কোন প্রকারেই নিবারণ করিতে পারা যাইবে না, তখন নিরাশ হইয়াও এবং আমি বার বার বিদায় দিলেও, কন্যার স্নেহ সহজে পরিত্যাগ করা যায় না বলিয়া বহুদিন থাকিয়া, তিনি শোকের সহিতই গৃহে চলিয়া গেলেন, তখন সেই শোকানলে তাঁহার হৃদয় দগ্ধ হইতেছিল।

(ক) পিতা চলিয়া গেলে, আমি সেই অবধি কেবল অশ্রুজল ত্যাগ করিয়া সেই ব্যক্তির প্রতি কৃতজ্ঞতা দেখাইতে লাগিলাম; তাঁহার প্রতি অনুরাগ বশতঃ চিন্তায় চিন্তায় দিন দিন ক্ষীণ, পাপপরিপূর্ণ, লজ্জাবিহীন, সকলের অমঙ্গলস্বরূপ এবং নানাবিধ কষ্ট ও পরিশ্রম সমূহের আশ্রয় এই পোড়া শরীরকে, উপবাসপ্রভৃতি নানাবিধ নিয়মে, শোষণ করিতে থাকিলাম এবং বনের ফল, মূল ও জলদ্বারা জীবন ধারণ করিয়া জপের ছলে তাঁহার গুণগ্রামই যেন গণনা

(१) ईवस्य कृते अश्रुमोचनमात्रेण। (२) शोकमनुभवन्त्यवसम्, शोकं...।

साहमेवंविधा पापकारिणी निर्लक्षणा निर्लज्जा क्रूरा च निःस्नेहा च नृशंसा च (१) गर्हणीया निष्प्रयोजनोत्पन्ना निष्फलजीविता निर्नाथा (२) निरवलम्बना निःसुखा च (ख)। किं मया दृष्टया पृष्टया वा (३) कृतब्रह्मवधमहापातकया करोति महाभागः” इत्युक्त्वा पाण्डुना वल्कलोपान्तेन शशिनमिव शरन्मेघशकलेनाच्छाद्य वदनं दुर्निवारवाष्पवेगमपारयन्ती निवारयितुमुन्मुक्तकण्ठमतिचिरमुच्चैः साऽरोदीत् (४)। (ग)

चन्द्रापीडस्तु प्रथममेव तस्या रूपेण विनयेन दाक्षिण्येन च मधुरालापतया च

(ख) साहमिति। पापकारिणी दारुणयातनाभोगात्। निर्लक्षणा शुभलक्षणहीना बाल्य एव वैधव्यात्। निर्लज्जा स्वयमेवाभिसरणात्। क्रूरा कठिना ईदृशशोकेऽप्यमरणात्। निःस्नेहा पुण्डरीकानुमरणाभावात्। नृशंसा पित्रोरपि दुःखहेतुत्वात्। गर्हणीया दुरदृष्टबाहुल्यात्। निष्प्रयोजनोत्पन्ना कस्याप्युत्पत्तिप्रयोजनस्य साधनाभावात्। निष्फलजीविता सुखभोगासम्भवात्। निर्नाथा पत्यभावात्। निरवलम्बना निराश्रया पत्यभावे पित्रोरपि प्रत्याख्यानाच्च। निःसुखा च अस्य दारुणशोकस्य चिरकालीनत्वादिति च भावः। अत्राभिप्रायविशेषैरेव प्रत्येकविशेषणानामुक्तत्वात् परिकरालङ्कारः

(ग) किमिति। महाभागो विशेषभाग्यशाली भवान्। कृतं निमित्तविधया विहितं ब्रह्मवध एव महापातकं यया तया, मया दृष्टया पृष्टया वा किं करोति करिष्यति, अपि तु किमपि नैवेत्यर्थः। पाण्डुना शुभ्रेण। शरन्मेघस्य शकलेन खण्डेन। अपारयन्ती अशक्नुवती। अत्रोपमालङ्कारः।

(घ) चन्द्रेति। दाक्षिण्येन सरलतया। मधुर आलापो यस्यास्तस्या भावस्तया। निःसङ्गतया सकल-

---

করিতে লাগিলাম এবং তিন বেলা এই সরোবরে স্নান ও প্রতিদিন মহাদেবের অর্চ্চনা করতঃ, দীর্ঘকালব্যাপী এই শোক অনুভব করিতে করিতে এই গুহার ভিতরেই তরলিকার সহিত বহুকাল বাস করিতেছি।

(খ) আমি এই জাতীয় পাপিষ্ঠা, আমার কোন শুভ লক্ষণ নাই, লজ্জা নাই, আমি কঠিন-প্রকৃতি, আমার স্নেহ নাই, আমি নৃশংসা, নিন্দনীয়া, বিনা প্রয়োজনে উৎপন্না এবং আমার জীবনে কোন ফল নাই, পতি নাই, আশ্রয় নাই এবং সুখ নাই। (গ) আমি ব্রহ্ম-হত্যারূপ মহাপাতক করিয়াছি, সুতরাং আমাকে দেখিয়া বা জিজ্ঞাসা করিয়া মহাশয় কি করিবেন” এই কথা বলিয়া মহাশ্বেতা, শরৎকালীয় মেঘখণ্ডদ্বারা চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায়, শুভ্রবর্ণ বল্কল-প্রান্তদ্বারা মুখমণ্ডল আচ্ছাদন করিয়া, দুর্নিবার অশ্রুবেগ নিবারণ করিতে না পারিয়া মুক্তকণ্ঠে উচ্চৈঃস্বরে বহুকাল রোদন করিয়াছিল।

(ঘ) এ দিকে মহাশ্বেতার রূপে, বিনয়ে, সরলতায়, মধুর আলাপে, সকল সংসর্গ-

---

(१) क्वचित् चकारद्वयं नास्ति। (२) क्वचित् निर्नाथेत्यपि न दृश्यते। (३) वानया।

(४) प्रारोदीत्।

निःसङ्गतया चातितपस्वितया च (१) प्रशान्तत्वेन च निरभिमानतया च महानुभावत्वेन च शुचितया चोपारूढगौरवोऽभूत्, तदानीन्तु तेनापरेण दर्शितसद्भावेन स्ववृत्तान्तकथनेन तया च कृतज्ञतया हृतहृदयः सुतरामारोपितप्रीतिरभवत् (घ)। आर्द्रीकृतहृदयश्च शनैः शनैरेनामभाषत—"भगवति! क्लेशभीरुरकृतज्ञः सुखासङ्गलुब्धो लोकः स्नेहसदृशं कर्म्मानुष्ठातुमशक्तो निष्फलेनाश्रुपातमात्रेण स्नेहमुपदर्शयन् रोदिति। त्वया तु कर्म्मणैव सर्वमाचरन्त्या किमिव न प्रेमोचितमाचेष्टितम्, येन रोदिषि (ङ)। तदर्थमाजन्मनः (२) प्रभृति समुपचितपरिचयः प्रेयानप्यसंस्तुत इव (३) परित्यक्तो बान्धवजनः, सन्निहिता अपि तृणावज्ञयावधी-

संसर्गहीनतया। प्रशान्तत्वेन शान्तिमार्गावलम्बनेन। महाननुभावः प्रभावो यस्यास्तस्या भावस्तेन। शुचितया पवित्रतया च हेतुना। उपारूढमुत्पन्नं गौरवं महाश्वेतां प्रति गुरुत्वबोधो यस्य स तादृशः। दर्शितः प्रकाशितः सद्भावः साधुता येन तेन। कृतज्ञतया मृतस्यापि परत्रोपकारार्थं व्रताचरणेनेत्यर्थः। सुतरामत्यन्तं यथा तथा आरोपिता उपस्थापिता प्रीतिः प्रणयो यस्मिन् सः।

(ङ) आर्द्रेति। तया प्रीत्या आर्द्रीकृतहृदयश्च चन्द्रापीडः। एनां महाश्वेतां। क्लेशभीरुर्मृतप्रियजनोपकारार्थं व्रताद्यनाचरणादिति भावः, अतएव चाकृतज्ञः सुखासङ्गलुब्धः केवलसुखभोगाभिलाषी लोकः, स्नेहसदृशं वात्सल्योचितं, कर्म्म मृतस्य पारलौकिकोपकारार्थं व्रततपोत्सर्गादिकं कार्य्यं अनुष्ठातुमशक्तः, क्लेशभीरुत्वादिहेतोरिति भावः। स्नेहमुपदर्शयन् लोकेभ्य इति शेषः। कर्म्मणैव एतेन व्रतादिरूपकार्य्येणैव, सर्वं तदुपकारं। प्रेमोचितं स्नेहयोग्यं आचेष्टितमाचरितम्। कर्म्मणैव तदुपकारस्य पर्य्याप्तत्वान्नास्ति रोदनापेक्षेति भावः।

(च) तादृशं कर्म्म प्रदर्शयितुमाह तदर्थमिति। तदर्थं पुण्डरीकार्थं व्रताचरणेन पुण्डरीकस्य पारलौकिका-

পরিত্যাগে, অতিরিক্ত তপস্যায়, শান্তিপথাবলম্বনে, অহঙ্কার না থাকায়, গুরুতর প্রভাব থাকায় এবং পবিত্রতায় তাহার প্রতি চন্দ্রাপীড়ের প্রথমেই গুরুত্ববোধ জন্মিয়াছিল; কিন্তু তাহার পর আবার সে যে, নিজের বৃত্তান্ত বলিয়াছিল, তাহাতে তাহার বিশেষ সাধুতা প্রকাশ পাইয়াছিল; তাহাতে এবং সেই কৃতজ্ঞতাচরণে চন্দ্রাপীড়ের হৃদয় আকৃষ্ট হইয়াছিল, এবং অত্যন্ত প্রীতি জন্মাইয়াছিল। (ঙ) সুতরাং সেই প্রীতিনিবন্ধন প্রসন্নহৃদয় চন্দ্রাপীড় ধীরে ধীরে মহাশ্বেতাকে বলিলেন,—"ভগবতি! ক্লেশভীরু, অকৃতজ্ঞ এবং কেবল সুখাভিলাষী লোকই স্নেহের উপযুক্ত কার্য্য করিতে না পারিয়া, অনর্থক অশ্রুপাতদ্বারা লোকসমাজে স্নেহ দেখাইবার নিমিত্ত রোদন করে; আপনি কিন্তু কার্য্যদ্বারাই সমস্ত করিতেছেন, অতএব স্নেহের উপযুক্ত কি না করিতেছেন, যে রোদন করেন। (চ) জন্ম হইতে যাহাদের প্রতি স্নেহ বৃদ্ধি পাইয়াছিল, অত্যন্ত প্রিয় হইলেও সেই বান্ধবগণকে আপনি তাঁহার জন্যই, অপরিচিতের

(१) तपस्वितया। (२) आजन्मतः। (३) प्रेयानसंस्तुत इव।

चितामसाववशः (१) नीयते भूमिम्, असावप्यात्मघातिनः केवलमेनसा संयुज्यते(ट) जीवंस्तु जलाञ्जलिदानादिना बहूपकरोत्युपरतस्यात्मनश्च, मृतस्तु नोभयस्यापि (ठ)। स्मर तावत् प्रियामेकपत्नीं रतिं भगवति भर्त्तरि मकरकेतौ सकलाबलाजनहृदयहारिणि हरनयनहुतभुजा(२)दग्धेऽप्यविरहितामसुभिः (ड)। पृथाञ्च वार्ष्णेयीं शूरसेनसुतामभिरूपे सावज्ञविजित-सकल-राजक-मौलि-कुसुम-वासित-पादपीठे (३) पत्यावखिल-भुवन-बलि-भाग-भुजि पाण्डौ किमिन्दममुनि(४)-शापानलेन्धनतामुपगतेऽप्यपरित्यक्तजीविताम् (ढ)। उत्तराञ्च विराटदुहितरं

(ट) प्राणपरित्यागस्य विसदृशमेव फलं दर्शयितुमाह अन्यामिति। असौ अवशो मृतत्वात् पराधीनो जीवः, स्वकर्म्मणो धर्म्माधर्म्मलक्षणस्य फलपरिपाकेन फलतया परिणामेन उपचितामुपस्थापितां भूमिं स्वर्गं नरकं वा नीयते प्राप्यते, तेन कर्म्मणैवेति शेषः। अत्र च असावपि मृतो जीवः, आत्मघातिन एनसा आत्महत्याजनितपापेन केवलं संयुज्यते लिप्यते। इत्येव केवलं प्राणपरित्यागस्य फलमिति भावः।

(ठ) अथ जीवने किं फलमित्याह जीवन्निति। उपरतस्य मृतस्य, आत्मनश्च बहूपकरोति बहुतरमुपकारं विदधाति, मृतस्य तृप्तिजननात् आत्मनश्च विविधधर्म्मार्जनसम्भवादिति भावः। नोभयस्यापि न वा मृतस्य न वा आत्मन इत्यर्थः।

(ड) स्वमतं समर्थयितुं पौराणिकदृष्टान्तान् प्रदर्शयितुमाह स्मरेति। सकलानां अबलाजनानां हृदयहारिणि सौन्दर्य्येण चित्ताकर्षके, इतराबलानामपि हृदयहारित्वे स्वहृदयहारित्वं सुतरामेवेति भावः, भगवति माहात्म्यवति, न पुनस्तुच्छे इति भावः, भर्त्तरि मकरकेतौ कन्दर्पे, हरनयनहुतभुजा महादेवनेत्राग्निना दग्धेपि असुभिः प्राणैरविरहितामत्यक्ताम्, प्रियां तस्मिन् प्रीतिमतीं, न पुनरप्रियां येन तद्विद्वेषादेव शोकाभावेन प्राणान् धारयेदित्याशयः, तथा एक एव पतिर्यस्यास्तामेकपत्नीं सतीं, न पुनरसतीं येन पत्यन्तरग्रहणात् विनोदनलाभेन प्राणान् धारयेदित्यभिप्रायः, रतिं कन्दर्पपत्नीं स्मर। अत्र प्रदर्शिताभिप्रायविशेषैरेव विशेषणानामुक्तत्वात् परिकरालङ्कारः। एकपत्नीमिति "पत्युर्नो यज्ञसंयोगे" इति "नित्यं सपत्न्यादिषु" इति च ईप्रत्ययो नश्च।

नहে, মৃত ব্যক্তির সহিত সাক্ষাৎ করিবার উপায় নহে এবং পরস্পর মিলনের কারণও নহে। (ট) পরাধীন জীব, নিজের কর্ম্মফলানুসারে অন্য কোন স্থানেই নীত হইয়া থাকে; কিন্তু সেখানে সে, আত্মঘাতীর পাপে কেবল লিপ্ত হয় (প্রাণত্যাগের ইহাই মাত্র ফল) (ঠ) কিন্তু মানুষ জীবিত থাকিয়া জলাঞ্জলিদানপ্রভৃতি দ্বারা মৃতব্যক্তির ও আপনার বহুতর উপকার করিতে পারে; আর মরিয়া গেলে মৃতেরও নহে, নিজেরও নহে। (ড) আপনি স্মরণ করিয়া দেখুন—রূপে সকল রমণীগণের হৃদয়াকর্ষণকারী ও মাহাত্ম্যশালী ভর্ত্তা কামদেব,—মহাদেবের নয়নাগ্নিতে দগ্ধ হইলেও, তাঁহার প্রিয়তমা পরমসতী রতিদেবী প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন

(१)...फलपाकोपचिता,...अवशो। (२) हरहुतभुग्दग्ध।
(३)...वासिताशेषपादपीठे। (४) किन्दममुनि...।

बालां बालशशिनीव नयनानन्ददायिनी (१) विनयवति विक्रान्ते च पञ्चत्वमभिमन्यावुपगतेऽपि (२) धृतदेहाम् (ण)। दुःशलाञ्च (३) धृतराष्ट्रदुहितरं स्त्रात्मशतोत्सङ्गलालितामतिमनोहरे हर-वर-प्रदान-वर्द्धित-महिम्नि सिन्धुराजे

(ढ) ननु देवानां सर्वमेवाचरितमलौकिकमिति तत्र का कथेत्याह पृथामिति। अभिरूपे सुन्दरे, अतएव प्रियतमे इति भावः, सावज्ञं विजितं यत् सकलं राजकं राजगणस्तस्य मौलिकुसुमैर्वासितं प्रणामकालीनसम्पर्केण सुरभीकृतं पादपीठं यस्य तस्मिन्, अतएवाखिलस्य भुवनस्य बलिभागं राजग्राह्यं करं भुनक्तीति तस्मिन् महावीरे सार्वभौमे च न पुनस्तुच्छे इति भावः, पत्यौ पाण्डौ, किन्दमाख्यमुनेः शापानलस्य इन्धनतां काष्ठत्वं उपगतेऽपि, अपरित्यक्तजीविता, वृष्णेरपत्यं स्त्रीति वार्ष्णेयी तां वृष्णिकुलोत्पन्नां, न पुनर्दुष्कुलोत्पन्नां येनाशिष्टतया जीवनं धारयेदित्याशयः, शूरसेनस्य राजर्षेः सुतां, न पुनर्यस्य कस्यचित् तुच्छस्य सुतां येन पितृवद् विनीततया जीवनं धारयेदित्यभिप्रायः, पृथां कुन्तीञ्च स्मर। अत्र शापे अनलत्वारोपः पाण्डाविन्धनत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकं पूर्ववत् परिकरश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

पुरा किल किन्दमो नाम मुनिर्मृगरूपं दधानो मृगीभिर्वने रममाणः पाण्डुना मृगयाकारिणा शरेण ताडितस्तं शशाप—'यस्त्वं मामेवं रममाणं निहतवान्, अतस्त्वमपि रममाण एव मरिष्यसीति।' अथ कदाचिदसौ पाण्डुर्माद्रीं रमयन्नेव तच्छापप्रभावान्ममार, माद्री तु तमनुमृतवती, कुन्ती तु जीवन्ती युधिष्ठिरादीन् पालयामासेति महाभारतादिपर्ववार्त्ता।

(ण) अथ प्रौढ़ाभ्यां रतिकुन्तीभ्यां सह बालिकाया मे तुलना नोपपद्यत इत्याह उत्तरामिति। बालशशिनीव नवोदितचन्द्र इव नयनानन्ददायिनी, अतएव प्रियतम इत्याशयः, विनयवति, न पुनरुद्धतस्वभावे येन विरागात् देहं धारयेदित्यभिप्रायः, तथा विक्रान्ते विक्रमशालिनि, न पुनर्दुर्बले येनावज्ञया देहं रक्षेदिति भावः, अभिमन्यौ पत्यौ पञ्चत्वमुपगतेऽपि, धृतदेहां, बालां त्वत्सदृशीमपूर्णकामपिपासामिति भावः, विराटस्य राजर्षेर्दुहितरं न पुनरविनीतस्य दुहितरं येनाविनयाद्देहं धारयेदित्याशयः, उत्तराञ्च स्मर। अत्र पूर्णोपमापरिकरयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) अथ तथापि मादृशी बाल्यवादिनी सतीदृशी हतभागा काचिदपरा दृष्टा श्रुता वा किमित्याह दुःशलामिति। हरस्य शिवस्य वरप्रदानेन वर्द्धितो महिमा यस्य तस्मिन्, अतएव विशेषप्रीतिभाजने नतु तुच्छे

না। (ঢ) এবং অবহেলায় বিজিত সমস্ত রাজগণ, নমস্কার করিবার সময়ে মস্তক হইতে নিপতিত পুষ্পদ্বারা যাঁহার পাদপীঠ সুগন্ধ করিয়া দিতেন এবং যিনি সমস্ত পৃথিবীর কর গ্রহণ করিতেন ও পরম সুন্দর ছিলেন, নিজের পতি সেই মহারাজ পাণ্ডু, 'কিন্দম'-মুনির শাপানলে দগ্ধ হইলেও, বৃষ্ণিকুলোৎপন্না শূরসেনের কন্যা কুন্তীদেবী, জীবন পরিত্যাগ করেন নাই। (ণ) এবং নবোদিত চন্দ্রের ন্যায় নয়নের আনন্দজনক, বিনীতস্বভাব ও বিক্রমশালী অভিমন্যু যুদ্ধে নিহত হইলেও, বিরাটরাজ-কন্যা বালিকা উত্তরাও, শরীর ধারণই করিয়াছিলেন। (ত) মহাদেবের বরদানে যাঁহার মাহাত্ম্য বর্দ্ধিত করিয়াছিল এবং যিনি পরমসুন্দরাকৃতি

(१) जननयनानन्ददायिनी। (२) आगतेऽपि। (३) दुःशलाञ्च।

जयद्रथे (१) अर्जुनेन लोकान्तरमुपनीतेऽप्यकृतप्राणपरित्यागाम् (त)। अन्याश्च वत्स: सुरासुर-मुनि-मनुज-सिद्ध-गन्धर्व-कन्यका भर्तृरहिता: श्रूयन्ते सहस्रशो विधृतजीविता:। (थ)

प्रोन्मुच्येतापि जीवितं सन्दिग्धोऽप्यस्य समागमो यदि स्यात्। भगवत्या तु तत: पुन: स्वयमेव समागमसरस्वती समाकर्णिता, अनुभवे च को विकल्प: (द)। कथञ्च तादृशानामप्राकृताकृतीनां महात्मनामवितथगिरां गरीयसापि कारणेन

येनावज्ञया प्राणधारणं स्यादिति भाव:, अतिमनोहरे, न तु कुरूपे येन विरागात् प्राणान् धारयेदित्याशय:, सिन्धुराजे, न तु सामान्यमानवे येन तुच्छताबोधात् प्राणधारणमुपपद्यत इत्यभिप्राय:, जयद्रथे, अर्जुनेन लोकान्तरमुपनीतेऽपि अकृतप्राणपरित्यागां, भ्रातृशतस्य दुर्योधनादिकस्य सङ्केषु क्रोडेषु लालितां, भवादृशामेव बान्धवादरिणीमिति भाव:, धृतराष्ट्रस्य दुहितरं, न तु यस्य कस्यचित्तुच्छस्य दुहितरं येनाश्लिष्टतया प्राणान् धारयेदिति भाव:, दु:शलाञ्च तदाख्यामबलाञ्च स्मर। अत्रापि परिकरालङ्कार:।

अहो! एतेन युक्तिपूर्णसन्दर्भनिचयेन इदानीमिव तदानीं सहमरणादिविधि: कवेरपि नाभिमत आसीदिति प्रतीयते।

(थ) अन्या इति। श्रूयन्ते पुराणवृद्धमुखादिभ्य इति शेष:

(द) प्रेति। तदापि जीवितं प्रोन्मुच्येत परित्यज्येत, यदि अस्य मृतस्य समागम: सङ्गमं सन्दिग्धोऽपि स्यात् भविष्यति न भविष्यति वेति संशयितोऽपि स्यात्। किन्तु स समागमो न सन्दिग्ध:, अपि तु सन्देहासम्भावनीय:, सुतरां तदर्थं जीवनत्याग: कथमपि नोपपद्यत इति भाव:। तु किन्तु भगवत्या त्वया स्वयमेव ततो महापुरुषात् पुन: समागमसरस्वती "पुनरपि तवानेन सह भविष्यति समागम:" इति सम्मेलनविषया वाणी समाकर्णिता, सुतरामनुभवे च आत्मन एव प्रत्यक्षे च को विकल्प: संशय: स्यात्, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थ:। अत: समागमावश्यम्भावात्तदर्थं तवावश्यं जीवनधारणं कर्त्तव्यमिति भाव:।

(ध) ननु सा यदि मिथ्या स्यादित्याह कथमिति। अप्राकृताकृतीनाम् अलौकिकाकाराणां, अतएव

ছিলেন, সিন্ধুরাজ সেই জয়দ্রথ, অর্জ্জুনকর্ত্তৃক নিহত হইলেও, দুর্য্যোধন প্রভৃতি শত ভ্রাতার ক্রোড়ে লালিত, ধৃতরাষ্ট্র-কন্যা দুঃশলাও, প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন না। (থ) এবং দেব, দানব, মুনি, রাক্ষস, মনুষ্য, সিদ্ধ ও গন্ধর্ব্বদিগের মধ্যে অন্য সহস্র সহস্র কন্যাও, বিধবা হইয়া জীবন ধারণ করিয়াছিলেন—ইহা শুনা যায়।

(দ) মৃত ব্যক্তির সহিত পুনরায় মিলন হইতেও পারে, না হইতেও পারে—এরূপ সংশয়ও যদি থাকিত, তাহা হইলেও প্রাণ পরিত্যাগ করা চলিত। কিন্তু আপনি নিজেই, সেই মহাপুরুষের মুখে পুনরায় মিলন হইবার কথা শুনিয়াছেন, সুতরাং নিজের প্রত্যক্ষীকৃত বিষয়ে আবার সংশয় কি? (ধ) বিশেষতঃ, কোন গুরুতর কারণ থাকিলেও, সেইরূপ অলৌকিকা-

(১) ক্বচিৎ জয়দ্রথে ইতি পাঠো ন দৃশ্যতে।

গিরি বৈতথ্যমাস্পদং কুর্য্যাৎ (ধ)। উপরতেন চ সহ জীবন্ত্যাঃ কীদৃশী সমাগতিঃ, অতো নিঃসংশয়মসাবুপজাতকারুণ্যো মহাত্মা পুনঃ প্রত্যুজ্জীবনার্থমেবৈনমুৎক্ষিপ্য সুরলোকং নীতবান্ (ন)। অচিন্ত্যো হি মহাত্মনাং প্রভাবঃ, বহুপ্রকারাশ্চ সংসারবৃত্তয়ঃ, (১) চিত্রঞ্চ দৈবম্, আশ্চর্য্যাতিশয়যুক্তাশ্চ তপঃসিদ্ধয়ঃ, অনেকবিধাশ্চ কর্ম্মণাং শক্তয়ঃ (প)। অপি চ সুনিপুণমপি বিমৃশদ্ভিঃ কিমিবান্যত্তদপহরণে কারণমাশঙ্ক্যতে জীবিতপ্রদানাদৃতে (ফ)। ন চাসম্ভাব্যমিদমবগন্তব্যং ভগবত্যা, (২) চিরপ্রবৃত্ত এষ পন্থাঃ (ব)। তথাহি বিশ্বাবসুনা গন্ধর্ব্বরাজেন

মহাত্মনাং, সুতরামেব চ অবিতথগিরাং অমিথ্যাবাচাং। গিরি বাক্যে, গরীয়সাপি কারণেন বৈতথ্যং মিথ্যাত্বং কর্ত্তৃ, কথং আস্পদং প্রতিষ্ঠাং কুর্য্যাৎ, অপি তু কথমপি নেত্যর্থঃ। অতো ধ্রুবমেব সমাগমো ভবিষ্যতীতি ভাবঃ।

(ন) মৃতজীবিতয়োশ্চ সমাগমো ন সম্ভবতীত্যাহ উপেতি। উপরতেন মৃতেন। জীবন্ত্যাস্তব। উপজাতকারুণ্য উৎপন্নদয়ঃ। এনং পুণ্ডরীকং। নীতবান্ ইত্যনুমীয়ত ইতি ভাবঃ।

(প) ননু প্রত্যুজ্জীবনে তস্য কা নাম শক্তিরিত্যাহ অচিন্ত্য ইতি। স মহাত্মা স্বপ্রভাবেণৈবৈনমুজ্জীবয়েদিত্যাশয়ঃ। সংসারবৃত্তয়ো জগদ্ব্যাপারাশ্চ বহুপ্রকারাঃ, ততোঽপ্যস্য জীবনসম্ভাবনেতি ভাবঃ। দৈবঞ্চ চিত্রমাশ্চর্য্যশক্তিকং, ইতোঽপ্যয়ং জীবেদিত্যভিপ্রায়ঃ। তপঃসিদ্ধয়শ্চ আশ্চর্য্যাতিশয়যুক্তাঃ, আত্মন এব তস্য তৎসমুজ্জীবনসম্ভাবনেতি ভাবঃ। কর্ম্মণাং ধর্ম্মাধর্ম্মাণাং শক্তয়শ্চানেকবিধাঃ, ততোঽপ্যয়ং জীবনং লভেতেত্যাশয়ঃ।

হন্ত! একমেবার্থমাদায় নাতিভিন্নার্থবহুতরবাগ্বিন্যাসঃ কালিদাসেতরকবীনাং স্বভাবঃ।

(ফ) অথ প্রয়োজনান্তরাপেক্ষয়াপি তদপহরণং সম্ভাব্যত ইতি চেত্তত্রাহ অপি চেতি। সুনিপুণমতীবসূক্ষ্মং বিমৃশদ্ভিরপি মনসা বিতর্কয়দ্ভিরপি অস্মাভিঃ। জীবিতপ্রদানাদৃতে জীবনদানং বিনা।

(ব) ননু মৃতস্য পুনর্জীবনমসম্ভবমেবেত্যাহ। ন চেতি। ইদং পুনর্জীবনং। পন্থা জীবনপ্রাপ্তিপদ্ধতিঃ, চিরপ্রবৃত্তশ্চিরাদেব প্রচলিতঃ। অতো নাসম্ভাব্যমিতি ভাবঃ।

কৃতি ও সত্যবাদী মহাপুরুষদিগের বাক্যে, মিথ্যাভাব আসিয়া প্রতিষ্ঠা লাভ করিবে কিরূপে ?। (ন) পুণ্ডরীক মরিয়াছেন, আপনি জীবিত আছেন, সুতরাং মৃতব্যক্তির সহিত জীবিত ব্যক্তির মিলন হইবে কিরূপে ? অতএব, এ বিষয়ে কোনই সন্দেহ নাই যে, আপনার দুঃখ দেখিয়া সেই মহাপুরুষের দয়া জন্মিয়াছিল ; তাই তিনি, পুনরায় জীবিত করিয়া দিবার নিমিত্তই পুণ্ডরীককে তুলিয়া স্বর্গে নিয়া গিয়াছেন। (প) কারণ, মহাপুরুষদিগের প্রভাব, চিন্তার অগোচর ; সংসারের বৃত্তান্তও নানাবিধ, দৈবের শক্তিও বিচিত্র ; তপস্যার সিদ্ধিও অত্যন্ত আশ্চর্য্য এবং ধর্ম্ম ও অধর্ম্মের শক্তিও নানাপ্রকার। (ফ) আমরা অত্যন্ত সূক্ষ্ম বিচার করিয়াও, তাঁহার অপহরণ-বিষয়ে জীবন-দান-ভিন্ন অন্য কোন্ কারণের আশঙ্কা করিতে পারি ?। (ব) মৃত ব্যক্তির পুনরায় জীবনদান করাটা আপনি অসম্ভব মনে করিবেন না ; কারণ—এই পদ্ধতি চিরকালই চলিয়া আসিতেছে। (ভ) দেখুন—গন্ধর্ব্বরাজ বিশ্বাবসু,

---

(১) ..প্রবৃত্তয়ঃ। (২) অত্র সর্ব্বথেতি ক্বচিদধিকঃ পাঠঃ।

मेनकायामुत्पन्नां प्रमद्वरां नाम कन्यकामाशीविषविलुप्तजीवितां स्थूलकेशाश्रमे भार्गवस्य च्यवनस्य (१) नप्ता प्रमतितनयो मुनिकुमारको रुरुर्नाम स्वायुषोऽर्द्धेन योजितवान् (भ)। अर्जुनञ्चाश्वमेधतुरगानुसारिणं आत्मजेन बभ्रुवाहननाम्ना समरशिरसि शरापहृतप्राणम्, (२) उलूपी (३) नाम नागकन्यका सोच्छ्वासमकरोत् (म)। अभिमन्युतनयञ्च परीक्षितं (४) अश्वत्थामास्त्रपावकपरिप्लुष्टं, उदरादुपरतमेव विनिर्गतम्, * उत्तराप्रलापोपजनितकृपो भगवान् वासुदेवो दुर्लभानसून् प्रापितवान् (य) उज्जयिन्याञ्च सान्दीपनि-(५) द्विज-तनयमन्तक-पुरादपहृत्य त्रिभुवनवन्दितचरणः स एवानीतवान् (र)। अत्रापि कथञ्चिदेव-

(भ) अथ तद्दृष्टं श्रुतं वा चेदुदाहरेत्याह तथाहीति। आशीविषेण सर्पेण विलुप्तं विनाशितं जीवितं यस्यास्ताम्। स्थूलकेशस्य मुनेराश्रमे। भार्गवस्य भृगुनन्दनस्य। नप्ता पौत्रः। प्रमतेस्तदाख्यस्य मुनेस्तनयः। स्वायुषोऽर्द्धेन योजितवान् निजायुषोऽर्द्धं योजयित्वा जीवितवानित्यर्थः। इदमुपाख्यानं महाभारतादिपर्वण्यनुसन्धेयम्।

(म) अर्जुनमिति। शरेण शरताडनेन अपहृता विनाशिताः प्राणा यस्य तं। उलूपी अर्जुनपरिणीता-बभ्रुवाहनमाता। सोच्छ्वासं सञ्जीवनमणिस्पर्शनेन सञ्जीवनम्। इदमुपाख्यानमश्वमेधपर्वण्यनुसन्धेयम्।

(य) अभीति। अश्वस्येव स्थाम शौर्य्यमस्येति अश्वत्थामा द्रोणपुत्रः, पृषोदरादित्वात् साधुः। तस्य अस्त्रपावकेन अस्त्रानलेन परिप्लुष्टं सर्वतो दग्धं। उपरतमेव मृतमेव। उत्तरायाः प्रलापेन विलापेन जनिता कृपा यस्य सः। असून् प्राणान् परीक्षितं प्रापितवान्। इदमुपाख्यानमप्यश्वमेधपर्वणि द्रष्टव्यं।

(र) उज्जेति। स एव वासुदेव एव। सन्दीपयति यज्ञाग्निमिति सन्दीपनस्तस्यापत्यमिति सान्दीपनिः तदाख्यः कश्चिद्द्विजस्तस्य तनयं। अन्तकस्य यमस्य पुरात्।

মেনকার গর্ভে প্রমদ্বরা নামে একটি কন্যা উৎপাদন করেন; সেই প্রমদ্বরা, মহর্ষি স্থূলকেশের আশ্রমে খেলা করিতেছিল—এমন সময়ে তাহাকে সর্পে দংশন করিয়া বিনষ্ট করে; তখন ভৃগুনন্দন চ্যবনের পৌত্র, প্রমতির পুত্র রুরু নামে মুনিকুমার, নিজের আয়ুর অর্দ্ধ দিয়া তাহাকে বাঁচাইয়া দেন। (ম) মহাবীর অর্জ্জুন, অশ্বমেধীয় অশ্বের অনুসরণ করতঃ মণিপুরে উপস্থিত হইয়াছিলেন, তখন বভ্রুবাহন নামে তাঁহারই পুত্র, যুদ্ধে শরপ্রহারে তাঁহার প্রাণ অপহরণ করিয়াছিলেন, তখন অর্জ্জুনভার্য্যা নাগকন্যা উলূপী, সঞ্জীবন-মণি স্পর্শ করাইয়া তাঁহাকে জীবিত করিয়াছিলেন। (য) অভিমন্যুর পুত্র পরীক্ষিৎ, অশ্বত্থামার অস্ত্রানলে সর্ব্বতোভাবে দগ্ধ হইয়া মৃত অবস্থাতেই উদর হইতে নির্গত হইয়াছিলেন, তাহার পর উত্তরার বিলাপে ভগবান্ কৃষ্ণের দয়া জন্মিল, তাই তিনি পুনরায় পরীক্ষিতের দুর্লভ প্রাণ দান করিয়াছিলেন। (র) এবং ত্রিভুবনের পূজনীয় সেই ভগবান্ কৃষ্ণই, উজ্জয়িনী নগরীতে সান্দীপনিনামক এক ব্রাহ্মণের

* निर्गतम्।

(१) क्वचित् च्यवनस्येति नास्ति। (२) शरेण हृतप्राणं। (३) उलुपा। (४) परिक्षितं। (५) सन्दीपनि...।

मेव भविष्यति। तथापि किं क्रियते, क उपालभ्यते। प्रभवति हि भगवान् विधिः, बलवती च नियतिः, आत्मेच्छया न शक्यमुच्छ्वसितुमपि, अतिपिशुनानि चास्यैकान्तनिष्ठुरस्य दैवहतकस्य विलसितानि (१) न क्षमन्ते (२) दीर्घकालमव्याजरमणीयं प्रेम (ल)। प्रायेण च निसर्गत एवानायत-(३) स्वभावभङ्गुराणि सुखानि, आयत-(४) स्वभावानि च दुःखानि (व)। तथाहि कथमप्येकस्मिन् जन्मनि समागमः, जन्मान्तरसहस्राणि च विरहः प्राणिनाम् (श)। अतो नार्हस्यनिन्द्यमात्मानं निन्दितुम्, आपतन्ति हि संसारपथमतिगहनमवतीर्णाना-

पुरा किल लब्धविद्याभ्यां रामकृष्णाभ्यां गुरुदक्षिणार्थमनुरुद्धो गुरुः सान्दीपनिः पञ्चजनदैत्यहृतस्य निजपुत्रस्य समुद्धरणं ययाचे। अथ भगवान् वासुदेवः सागरं प्रविश्य पञ्चजनं विनाश्य, ततालब्धं गुरुपुत्रं यमपुरादानीय गुरवे समर्पितवान्। इति हरिवंशवार्त्ता। उपाख्यानान्तराणि तु स्वयमेव प्रायेणाभिहितानि सुप्रसिद्धानि चेति न पुनरुक्तानि।

(ल) अत्रेति। अत्रापि अस्मिन् पुण्डरीकवृत्तान्तेऽपि। क उपालभ्यते निन्द्यते। विधिर्विधाता, प्रभवति सर्वं कर्त्तुं शक्नोति, बलवती नियतिश्च तथा प्रभवति। उच्छ्वसितुमपि श्वासप्रश्वासौ कर्त्तुमपि। अतिपिशुनानि नितान्तखलानि। विलसितानि चरित्राणि कर्त्तृणि, अव्याजमतएव रमणीयं प्रेम दीर्घकालं न क्षमन्ते न सहन्ते।

(व) प्रायेणेति। निसर्गत एव स्वभावत एव, अनायतस्वभावानि अदीर्घाणि च तानि भङ्गुराणि नश्वराणि चेति तानि। आयतस्वभावानि दीर्घाणि स्थायीनि च। तथा च मुक्तिवादे गदाधरभट्टाचार्य्याः—"अस्मिन् संसारकान्तारे कियन्ति दुःखदुर्द्दिनानि कियती वा सुखखद्योतिकेति।"

(श) तथाहीति। कथमपि अतिकष्टेन। समागमः सम्मेलनम्।

(ष) प्रकृतं सान्त्वनमुपसंहरति अत इति। हि यस्मात्, एते वृत्तान्ता एवम्भूता विपद्व्यापाराः, अतिगहनं नितान्तभयङ्करं संसारपथं अवतीर्णानां जनानामन्तिक इत्यर्थः, आपतन्ति उपस्थिता भवन्ति, तत्र तु धीरा हि

পুত্রকে যমের বাড়ী হইতে আনিয়া দিয়াছিলেন। (ল) অতএব এই ঘটনায়ও এইরূপই কিছু হইবে। তথাপি করিবেন কি, কাহাকেই বা নিন্দা করিবেন। ভগবান্ বিধাতাই সমস্ত করিতে পারেন, আর পারে প্রবল নিয়তি; কিন্তু কেহই নিজের ইচ্ছায় শ্বাসপ্রশ্বাসও করিতে পারে না; বিশেষতঃ—অত্যন্ত নিষ্ঠুর পোড়া দৈবের চরিত্রগুলিও অত্যন্ত খল; সুতরাং সে, অকৃত্রিম-মনোহর প্রেমকে দীর্ঘকাল সহ্য করিতে পারে না। (ব) প্রায়শই দেখা যায়—সুখ, অল্প ও অল্পকালস্থায়ী; কিন্তু দুঃখ বিস্তৃত ও দীর্ঘকালস্থায়ী। (শ) দেখুন—প্রাণিগণের কোন এক জন্মে কোন প্রকারে মিলন হয়, কিন্তু বিরহটা অন্য সহস্র সহস্র জন্মে হইয়া থাকে। (ষ) অতএব আপনি অনিন্দনীয় আত্মাকে নিন্দা করিতে পারেন না; কারণ যাঁহারা অত্যন্ত

(१) विलासितानि। (२) क्षमते। (३) अनायुक्त...। (४) अनायुक्त...।

मेते वृत्तान्ताः, धीरा हि तरन्त्यापदम्" (घ) इत्येवंविधैरन्यैश्च मृदुभिरुपसान्त्वनैः संस्थाप्य तां पुनरपि निर्झरजलेनाञ्जलिपुटोपनीतेनानिच्छन्तीमपि बलात् प्रक्षालितमुखीमकारयत्। (ङ)

अत्रान्तरे च श्रुतमहाश्वेतावृत्तान्तोपजातशोक इव समुत्सृष्टदिवसव्यापारो रविरपि भगवानधोमुखतामयासीत् (च)। अथ क्षीणे दिवसे, परिणत प्रियङ्गु-मञ्जरी-रजोनिभेन (१) पिञ्जरिम्णा रज्यमाने विलम्बिनि व्रध्नमण्डले, (छ)

धैर्य्यवन्त एव आपदं तरन्ति, न पुनरधीरा इत्यर्थः। अतएव धैर्य्यमवलम्ब्य कालं प्रतीक्षस्वेति भावः। अत्र—सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ङ) इत्येवमिति। उपसान्त्वनैराश्वासवाक्यैः संस्थाप्य प्रकृतिस्थां कृत्वा, चन्द्रापीडः अञ्जलिपुटोपनीतेन निर्झरजलेन, अनिच्छन्तीमपि मुखप्रक्षालनमनभिलषन्तीमपि तां महाश्वेतां बलात् पुनरपि प्रक्षालितमुखीमकारयदित्यन्वयः।

(च) अत्रेति। किञ्च, अत्रान्तरे अस्मिन्नवसरे, श्रुतेन महाश्वेताया वृत्तान्तेन उपजातः शोको यस्य स तादृश इव सन्, समुत्सृष्टः परित्यक्तो दिवसव्यापारो दिनकार्य्यं आलोकदानरूपं गृहकार्य्यरूपञ्च येन सः। अन्योऽपि सञ्जातशोको गृहकार्य्यमपहाय अधोमुखतां याति। अतएवात्र कार्य्येण रवौ शोकार्त्तजनव्यवहार-समारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः शोकजन्मानुत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(छ) अथेति। परिणता पक्वा या प्रियङ्गुमञ्जरी तस्या रजोनिभेन परागतुल्येन, पिञ्जरस्य भाव इति पिञ्जरिमा तेन पिङ्गलवर्णेन रज्यमाने, व्रध्नमण्डले सूर्य्यबिम्बे, विलम्बिनि आकाशावरोहिणि सति। अत्रार्थोपमालङ्कारः।

ভয়ঙ্কর সংসারমার্গে অবতীর্ণ হইয়াছেন, তাঁহাদের এই জাতীয় বিপদ্ঘটনা অবশ্যই উপস্থিত হইয়া থাকে ; তবে তাঁহাদের মধ্যে ধীর-প্রকৃতিরাই সেই বিপদ্ হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারেন" (ঙ) চন্দ্রাপীড়, এইরূপ ও অন্যান্যরূপ কোমল সান্ত্বনাবাক্যে মহাশ্বেতাকে প্রকৃতিস্থ করিয়া, অঞ্জলিপুটে নির্ঝরের জল আনয়ন করিয়া, মহাশ্বেতা ইচ্ছা না করিলেও বলপূর্ব্বক পুনরায় তাহাকে মুখ প্রক্ষালন করাইলেন।

(চ) এই সময়ে, মহাশ্বেতার বৃত্তান্ত শ্রবণ করিয়া ভগবান্ সূর্য্যেরও যেন শোক জন্মিয়াছিল ; তাই তিনি দিনের কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া অধোমুখ হইলেন। (ছ) তাহার পর, দিন শেষ হইয়া আসিল ; সূর্য্যমণ্ডল, প্রিয়ঙ্গুলতার পক্বমঞ্জরীর রেণুর ন্যায় পিঙ্গলবর্ণে রঞ্জিত হইয়া নীচের দিক্ ঝুলিয়া পড়িল। (জ) কুসুম ফুলের রসে রঞ্জিত ও ঘন সূক্ষ্ম বসনের

(१)…रजोनिभे।

अविरल-कुसुम्भ-कुसुम-रस-रक्त-दुकूल-कोमलेन चास्तातपेन मुच्यमानेषु दिङ्मुखेषु, (क) चकोर-नयन-तारका-कान्तिना च (१) पिङ्गलिम्ना विलिप्यमाने तिरोहितनीलिम्नि व्योम्नि, (ख) कोकिलविलोचन-च्छवि-बभ्रुणि चारुणयति (२) सान्ध्ये भुवनमर्चिषि, (ग) यथाप्रधानमुन्मिषत्सु ग्रहग्रामेषु, (घ) वन-महिषमलीमसवपुषि (३) च लोचनमुषि (४) मुषित-तारकापथ-प्रथिम्नि कालिमानमातन्वति शार्वरे तमसि, (ङ) अतनु तिमिर-तिरोहित-हरितभासु (५) गहनतां यान्तीषु तरुराजिषु, (च) रजनि-जल-विन्दु-जाल-जनित-जड़िम्नि बहल-

---

(क) अविरलेति। किञ्च दिङ्मुखेषु, अविरलं घनं यत् कुसुम्भकुसुमानां रसेन द्रवेण रक्तं रञ्जितं दुकूलं सूक्ष्मवसनं तद्वत् कोमलेन सुखस्पर्शेन, अस्तातपेन अस्तकालीनसूर्य्यालोकेन, मुच्यमानेषु क्रमशः परित्यज्यमानेषु सत्सु। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ख) चकोरेति। किञ्च तिरोहितः सन्ध्यालोकप्रसरणादन्तर्हितो नीलिमा यस्य तस्मिन् व्योम्नि आकाशे, चकोरस्य पक्षिणो नयनतारकावत् कान्तिर्यस्य तादृशेन, पिङ्गलिम्ना पिङ्गलवर्णेन विलिप्यमाने सति। लुप्तोपमा।

(ग) कोकिलेति। किञ्च, कोकिलस्य विलोचनच्छविरिव नयनकान्तिरिव बभ्रु पिङ्गलं तस्मिन् सान्ध्ये सन्ध्याकालीये अर्चिषि तेजसि, भुवनं अरुणयति आरक्तं कुर्वति सति। लुप्तोपमा।

(घ) यथेति। ग्रहग्रामेषु नक्षत्रात्मकशुक्रादिग्रहगणेषु, यथाप्रधानं प्रधानमनुसृत्य प्रधानानामुदयानुक्रमेणेत्यर्थः, उन्मिषत्सु उदयेन प्रकाशमानेषु सत्सु।

(ङ) वनेति। वनमहिषस्येव मलीमसं मलिनं वपुराकारो यस्य तस्मिन्। लोचनं मुष्णाति दृष्टिशक्तिमपहरतीति तस्मिन्, एतेन गाढ़त्वं प्रतिपादितम्। मुषितः अपहृतो व्याप्त्या दृष्टिनिरोधनात्लुप्तवत् प्रत्यायितः तारकापथस्य गगनस्य प्रथिमा विस्तारो येन तस्मिन्, एतेन सर्वव्यापित्वं सूचितम्। शर्वर्य्या रात्रेरिदमिति शार्वरं तस्मिन्, तमसि अन्धकारे, कालिमानं जगतः कृष्णत्वं आतन्वति विस्तारयति सति। अत्र लुप्तोपमावृत्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः।

(च) अतन्विति। अतनुभिर्घनैस्तिमिरैस्तिरोहिता आवृताः हरिता हरिद्वर्णाः भा दीप्तयो यासां तासु, तरुराजिषु गहनतां अन्तरालादर्शनेन निविड़तां यान्तीषु सतीषु। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

ন্যায় কোমল অস্তকালীন সূর্য্যালোক, ক্রমে সমস্ত দিঙ্মণ্ডল পরিত্যাগ করিতে লাগিল। (খ) আকাশের নীলবর্ণ লুকাইয়া গেল, ক্রমে চকোর পক্ষীর নয়নের তারার ন্যায় কান্তিসম্পন্ন পিঙ্গলবর্ণে সমস্ত আকাশ লিপ্ত হইল। (গ) কোকিলের নয়নের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ সন্ধ্যার আলোক, জগৎ আরক্তবর্ণ করিল। (ঘ) নক্ষত্রসমূহ প্রধান অনুক্রমে উদয় পাইতে লাগিল। (ঙ) বন্য মহিষের ন্যায় মলিনবর্ণ রাত্রির অন্ধকার, লোকের দৃষ্টিশক্তি লোপ করিয়া, আকাশের বিস্তার কমাইয়া, জগতের সর্ব্বত্র কালিমা বিস্তার করিল। (চ) গাঢ় অন্ধকারে বৃক্ষসমূহের হরিতবর্ণ তিরোহিত হইল; সুতরাং তাহা আরও ঘন হইয়া উঠিল।

---

(१)...तारकाकारकान्तिना। (२) अरुणायति।

(३) वनमलीमसवपुषि। (४) क्वचिदयं पाठो नास्ति। (५)...हरितत्तासु।

वन-कुसुम-परिमलानुमित-गमने चलित-लता-विटप-गहनेप्रवृत्ते च पवने (छ) निद्रा-निभृत-पतत्त्रिणि त्रियामामुखे, (ज) महाश्वेता मन्दं मन्दमुत्थाय भगवतीमुपास्य पश्चिमां सन्ध्यां, कमण्डलुजलेन प्रक्षालितचरणा वल्कलशयनीये सखेदमुष्णञ्च (१) निःश्वस्य निषसाद (झ)। चन्द्रापीडोऽप्युत्थाय सकुसुमं प्रस्रवणजलाञ्जलिमवकीर्य्य कृतसन्ध्याप्रणामस्तस्मिन् द्वितीये शिलातले मृदुभि-र्लतापल्लवैः शय्यामकल्पयत् (ञ)। उपविष्टश्च तस्यां पुनः पुनः (२) तमेव मनसा महाश्वेतावृत्तान्तमन्वभावयत्। आसीच्चास्य मनसि—'एवं नामायं (३)

(छ) रजनीति। रजनिजलबिन्दुजालेन तुषारकणसमूहेन जनितो जडिमा शीतलता यस्य तस्मिन् बहलैः प्रचुरैः वनकुसुमानां परिमलैः सौरभैः अनुमितं प्रत्यायितं गमनं यस्य तस्मिन्, तथा चलितं स्पन्दितं लताविटपानां वल्लीपल्लवानां गहनं वनं समूहो येन तस्मिन्, पवने वायौ च प्रवृत्ते वहति सति। विशेषणत्रयेण क्रमाद्वायोः शैत्यं सौगन्ध्यं मान्द्यञ्चेति गुणत्रयमभिहितम्। अत्र वृत्त्यनुप्रास-च्छेकानुप्रासान्त्यानुप्रासा यथा-योगमुन्नेयाः।

(ज) निद्रेति। निद्रया निभृता निःशब्दाः पतत्त्रिणो विहङ्गा यस्मिन् तत्र, त्रियामामुखे प्रदोषकाले प्रवृत्ते सति।

(झ) महेति। भगवतीं माहात्म्यवतीं। पश्चिमां सन्ध्यां सायंसन्ध्यां। निषसाद उपविवेश।

(ञ) चन्द्रेति। अवकीर्य्य सूर्य्योद्देशेनार्घ्यत्वेन निक्षिप्य। कृतौ सन्ध्याप्रणामौ सन्ध्येष्टदेवतानमस्कारौ येन सः।

(ट) उपेति। तस्यां शय्यायां। अन्वभावयदचिन्तयत्। अयं कुसुमायुधः, एवं नाम इत्थं किल, अप्रतीकारः अतएव दारुणः, दुर्विषहो वेगो यस्य सः, तथा कष्टः कष्टकरः। यद्यस्मात्, अनेन कुसुमायुधेन

(ছ) তখন যে বায়ু বহিত হইতেছিল, রাত্রির শিশিরবিন্দুসমূহে তাহার শীতলতা জন্মাইয়াছিল, বন্য পুষ্পের প্রচুর সৌরভে তাহার গমন সূচিত হইতেছিল এবং সেই বায়ুভরে লতার পল্লবগুলি কাঁপিতেছিল। (জ) এই ভাবে প্রদোষকাল উপস্থিত হইল, পক্ষিগণ নীরব হইয়া গেল। (ঝ) এমন সময়ে মহাশ্বেতা, ধীরে ধীরে উঠিয়া মাহাত্ম্যশালী সায়ংসন্ধ্যার উপাসনা করিয়া কমণ্ডলুর জলে চরণযুগল প্রক্ষালন করিয়া, বিষাদের সহিত উষ্ণ নিশ্বাস ত্যাগ করিয়া, বল্কলময় শয্যার উপরে উপবেশন করিল। (ঞ) এ দিকে চন্দ্রাপীড়ও উঠিয়া অঞ্জলিপুটে পুষ্পের সহিত ঝরণার জল লইয়া সূর্য্যের উদ্দেশে তাহা নিক্ষেপ করিলেন, পরে সন্ধ্যা ও ইষ্টদেবতার নমস্কার করিয়া, কোমল লতা-পল্লবদ্বারা সেই দ্বিতীয় প্রস্তরখণ্ডের উপরে শয্যা নির্ম্মাণ করিলেন। (ট) তাহার পর সেই শয্যার উপরে উপবেশন করিয়া মনে মনে সেই মহাশ্বেতার বৃত্তান্তই

(१) उष्णं निःश्वस्य। (२) क्वचित् द्विरुक्तिर्नास्ति। (३) एवमयं।

अप्रतीकार-दारुणो दुर्विषह्यवेगः कष्टः कुसुमायुधः, यदनेनाभिभूता महान्तोऽपेवमनपेक्षितकालक्रमाः समुत्सारितधैर्य्याः (१) सद्यो जीवितं जहति । सर्वथा नमो भगवते त्रिभुवनाभ्यर्च्चितशासनाय मकरकेतनाये”ति (ट)।

पुनः पप्रच्छ चैनाम्—“भगवति ! सा तव परिचारिका वनवासव्यसनमित्रं दुःखसब्रह्मचारिणी तरलिका क्व गता” इति । (ठ)

अथ साऽकथयत्—“महाभाग ! यत्तन्मया कथितममृतसम्भवमप्सरसां कुलम्, तस्मान्मदिरेति नाम्ना मदिरायतेक्षणा कन्यकाभूत् (ड)। तस्याश्चासौ सकल-गन्धर्व-कुल-मुकुट-कुड्मल-पीठ-प्रतिष्ठित-चरणो देवश्चित्ररथः पाणिमग्रहीत् (ढ)।

अभिभूता आक्रान्ताः, महान्तोऽपि जनाः, अनपेक्षितकालक्रमा असोढ़समयक्षेपाः तथा समुत्सारितं कुसुमायुधेनैव दूरीकृतं धैर्य्यं येषां ते तथाभूताः सन्तः । जहति परित्यजन्ति । त्रिभुवनेन त्रिजगद्वासिना जनेन अभ्यर्च्चितं शासनमादेशो यस्य तस्मै, मकरकेतनाय कन्दर्पाय ।

कादम्बर्य्यां खलु महाश्वेतावृत्तान्त एव पताकास्थानपातीति मन्तव्यम् “व्यापि प्रासङ्गिकं वृत्तं पताकेत्यभिधीयत” इति साहित्यदर्पणात् ।

(ठ) कादम्बरीवृत्तान्तमवतारयितुं पुनः प्रश्नं प्रवर्त्तयति पुनरिति । एनां महाश्वेतां । वनवास एव व्यसनं विपत्तिस्तत्र मित्रं सहायीभूता, तथा दुःखे सब्रह्मचारिणी सतीर्था समानदुःखभोगिनीत्यर्थः ।

(ड) अथेति । मदिरा मद्यं रूपेण तद्वन्मनोमादकत्वान्मदिरेति नाम । मदिरावत् मत्तखञ्जनवत् आयते दीर्घे ईक्षणे चक्षुषी यस्याः सा । “मदिरा (स्त्री) मत्तखञ्जनः ... मद्यं ।” इति शब्दकल्पद्रुमः ।

(ढ) तस्या इति । किञ्च, असौ प्रसिद्धः, सकलस्य गन्धर्वकुलस्य मुकुटकुड्मलं किरीटाग्रमेव पीठं तत्र प्रतिष्ठितौ चरणौ यस्य सः, सकलगन्धर्वराजचक्रवर्त्तीत्यर्थः, देवश्चित्ररथः, तस्या मदिरायाः पाणिमग्रहीत् ।

বারংবার ভাবিতে লাগিলেন। আবার উঁহার মনে হইল—‘কামদেব এইরূপই বটেন, ইঁহার প্রতীকার নাই, তাই ইনি ভয়ঙ্কর ; ইঁহার বেগ সহ্য করা যায় না, সুতরাং ইনি অত্যন্ত কষ্টদায়ক ; যে হেতু—ইনি আক্রমণ করিলে প্রধান ব্যক্তিরাও, কালবিলম্ব সহ্য করিতে পারেন না, তাঁহাদেরও ধৈর্য্য নষ্ট হইয়া যায় ; তখন তাঁহারা সত্বই জীবন ত্যাগ করেন। অতএব ত্রিজগতের লোক যাঁহার আদেশের পূজা করে, সেই ভগবান্ কামদেবকে সর্ব্বপ্রকারে নমস্কার করি।’ (ঠ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় পুনরায় মহাশ্বেতাকে জিজ্ঞাসা করিলেন—“ভগবতি ! আপনার বনবাস-বিপদের সহায় ও দুঃখভোগের সহচরী পরিচারিকা সেই তরলিকা কোথায় গিয়াছে ?।”

(ড) তাহার পর মহাশ্বেতা কহিল,—“মহাশয় ! আমি পূর্ব্বে যে সেই অমৃত হইতে উৎপন্ন অপ্সরার বংশের কথা বলিয়াছি, সেই বংশ হইতে মদিরায়তনয়না মদিরা নামে একটি কন্যা জন্ম গ্রহণ করেন। (ঢ) সমস্ত গন্ধর্ব্বগণের মুকুটাগ্র-পীঠে যাঁহার চরণযুগল প্রতিষ্ঠিত

---

(१) समवधारितधैर्य्याः ।

अपरिमितगुणाकृष्टहृदयश्चान्यवनितादुर्लभेन (१) अधःकृताशेषान्तःपुरेण हेमपट्टलाञ्छनेन छत्र-वेत्र-चामर-चिह्नेन महादेवीशब्देन परं प्रीतः प्रसादमकरोत् (ण)। अन्योन्यप्रेमसंवर्द्धनपरयोश्च तयो र्यौवनसुखानि सेवमानयोः कालेनाश्चर्य्यभूतमेकजीवितमिव पित्रोः, अथवा सर्व्वस्यैव गन्धर्व्वकुलस्य वा जीवलोकस्य, दुहितृरत्नमुदपादि कादम्बरीति नाम्ना (त)। सा च मे जन्मतः (२) प्रभृत्येकासन-शयन-पानाशना परं प्रेमस्थानमखिलविस्रम्भधाम द्वितीयमिव हृदयं बालमित्रम् (थ)।

(ण) अपरेति। किञ्च, अपरिमितैर्गुणैर्मदिरायाः सौन्दर्य्यविनयादिभिराकृष्टं हृदयं यस्य स तादृशश्चित्ररथः, परं प्रीतः सन्। अधःकृतं न्यूनीकृतं अशेषं समस्तं अन्तःपुरं अन्तःपुरस्थस्त्रीजनो येन तेन, हेमपट्टः स्वर्णफलकं उपवेशनाय तद्दानमित्यर्थः लाञ्छनं चिह्नं यस्य तेन, छत्रं वेत्रं चामरञ्च परिचर्य्यार्थं भृत्यसमेतं तद्दानमित्यर्थः चिह्नं यस्य तेन, महादेवीशब्देन महिषीबोधकमहादेवीत्युपाधिदानेन प्रसादमनुग्रहमकरोत्।

(त) अन्योन्येति। अन्योन्यस्य परस्परप्रणयस्य संवर्द्धने परौ परस्परानुकूल्याचरणेन यत्नवन्तौ तयोः सतोः, तयोः मदिराचित्ररथयोः। पित्रोर्मातापित्रोः, अथवा सर्व्वस्यैव गन्धर्व्वकुलस्य, वा अथवा सर्व्वस्यैव जीवलोकस्य, एकजीवितमिव अद्वितीयं जीवनमिव, अलौकिकसौन्दर्य्यादिसकलगुणाकरत्वादिति भावः। कादम्बरी मद्यं तद्वत् तज्जनोन्मादकत्वात् कादम्बरीति नाम। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) सेति। एकमभिन्नस्थानगतं आसनमुपवेशनं शयनं पानं अशनं भोजनञ्च यस्याः सा, परं प्रेमस्थानं अतीव प्रणयपात्रम्, अखिलविस्रम्भधाम समस्तविश्वासभाजनम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

হইয়াছে, সেই সুপ্রসিদ্ধ গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথ, সেই মদিরার পাণিগ্রহণ করেন। (ণ) এবং মদিরার অনন্তগুণে আকৃষ্টচিত্ত গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথ অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া তাঁহাকে 'মহাদেবী' উপাধি দান করিয়া অনুগ্রহ করেন; সেই মহাদেবী শব্দ, অন্য রমণীর পক্ষে দুর্লভ ছিল, এবং তাহাতে অন্তঃপুরের অন্যান্য রমণী, মদিরা হইতে নীচে পড়িয়া গেল এবং গন্ধর্ব্বরাজ সেই উপাধির সঙ্গে সঙ্গে একখানা স্বর্ণফলক দান করিলেন এবং মদিরার জন্য ছত্রধারী, বেত্রধারী ও চামরধারী ভৃত্য নিযুক্ত করিলেন। (ত) তাঁহারা পরস্পর, পরস্পরের প্রণয় বৃদ্ধি করিতে যত্নবান্ থাকিয়া যৌবনের সমস্ত সুখ ভোগ করিতে লাগিলেন; কালক্রমে কাদম্বরী নামে তাঁহাদের একটি আশ্চর্য্য কন্যারত্ন জন্ম গ্রহণ করিল; সে, পিতা-মাতার অথবা সমস্ত গন্ধর্ব্বগণের, কিংবা সমগ্র জীবলোকেরই যেন একমাত্র জীবন ছিল। (থ) জন্মকাল হইতে, কাদম্বরী আর আমি, একস্থানে উপবেশন, শয়ন, পান ও ভোজন করিতাম; তাহাতে সে আমার অত্যন্ত প্রণয়ের পাত্র ও সমস্ত বিশ্বাসভাজন দ্বিতীয় হৃদয়ের ন্যায় বাল্য-সখী। (দ) সে আর আমি,

(१) वनितादुर्लभेन। (२) जन्मनः।

एकत्र तया मया च नृत्यगीतादिकलासु (१) कृताः परिचयाः, शिशुजनोचिताभिश्च क्रीडाभिरनियन्त्रणनिर्भरमपनीतो बालभावः (द)। सा चामुनैव मदीयेन वृत्त-वृत्तान्तेन समुपजातशोका निश्चयमकार्षीत्—"नाहं कथञ्चिदपि सशोकायां महा-श्वेतायामात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि" इति। सखीजनस्य परतः—सशपथमभि-हितवती च—"यदि कथमपि मामनिच्छन्तीमपि बलात्तातः कदाचित् कस्मै-चिद्दातुमिच्छति, तदाहमनशनेन वा हुताशनेन वा रज्ज्वा वा विषेण वा नियत-मात्मानमुत्स्रक्ष्यामि" इति (ध)। सर्वञ्च तदात्मदुहितुः कृतनिश्चयं निश्चल-भाषितं कर्णपरम्परया परिजनसकाशाद्गन्धर्वराजश्चित्ररथः स्वयमशृणोत्। गच्छति काले समुपारूढनिर्भरयौवनामालोक्य सुतां (२) बलवदुपतापपरवशः (३) क्षणमपि न धृतिमलभत। एकापत्यतया चातिप्रियतया च न शक्तः किञ्चिदपि

(द) एकत्रेति। परिचया अभ्यासाः। नियन्त्रणस्य बाधाया अभावः अनियन्त्रणं तस्य निर्भरः अतिशयो यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा अत्यन्तनिर्बाधमित्यर्थः। बालभावः शैशवं, अपनीतः अतिवाहितः।

(ध) सेति। महाश्वेतायां शोकनिवृत्तौ तु पाणिं ग्राहयिष्यामीत्यभिप्रायः। अनशनेन अभोजनेन, हुताशनेन तत्र प्रवेशेन, रज्ज्वा उद्बन्धनेन, विषेण विषभक्षणेन। नियतं निश्चितं, आत्मानं स्वदेहं, उत्स्रक्ष्यामि परित्यक्ष्यामि।

(न) सर्वमिति। निश्चलभाषितं शपथवाक्यम्। सुतां कन्यां कादम्बरीं, समुपारूढं समुत्पन्नं निर्भरमतिमात्रं यौवनं यस्यास्ताम्। बलवतो महत उपतापस्य सन्तापस्य परवशः आयत्तः। धृतिं धैर्य्यम्।

একত্র নৃত্যগীতাদি কলাবিদ্যা অভ্যাস করিয়াছি এবং বালকের উপযুক্ত নানাবিধ খেলা করিয়া অবাধে বাল্যকাল অতিবাহিত করিয়াছি। (ধ) কিন্তু আমার এই শোকের বৃত্তান্তে তাহারও শোক জন্মিয়াছিল, তাই সে, স্থির করিয়াছে যে—'মহাশ্বেতা শোকাতুর থাকিতে আমি কোন প্রকারেও নিজের পাণিগ্রহণ করাইব না'। এবং সখীগণের সম্মুখে শপথ করিয়াছে যে—'আমার অনিচ্ছাসত্ত্বেও পিতা যদি বলপূর্ব্বক আমাকে কখনও কাহারও হস্তে দান করিতে ইচ্ছা করেন, তাহা হইলে আমি অনশন অথবা অগ্নিপ্রবেশ কিংবা উদ্বন্ধন অথবা বিষভক্ষণ করিয়া নিশ্চয়ই প্রাণ পরিত্যাগ করিব।' (ন) তাহার পর গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথ, নিজ কন্যার মনে মনে কৃত-নিশ্চয় ও শপথ-বাক্য—এ সমস্তই কর্ণপরম্পরায় কোন পরিজনের নিকট নিজেই শুনিতে পাইলেন। কিছুকাল অতীত হইল, তাহার পর কন্যা কাদম্বরীর পূর্ণ যৌবনকাল উপস্থিত দেখিয়া, অত্যন্ত সন্তপ্ত হইয়া ক্ষণকালের জন্যও ধৈর্য্যলাভ করিতে পারেন নাই, এবং কাদম্বরী একমাত্র সন্তান, তাহাতে আবার অত্যন্ত প্রিয়; সুতরাং নিজে, তাহাকে কিছুই বলিতে

(१) गीतनृत्यकलासु। (२) सुतां। (३) बलवद्दूयमानः।

মামভিধাতুম্ (ন)। অপশ্যংশ্চান্যদুপায়ান্তরম্, ইদমত্র প্রাপ্তকালমিতি মত্বা, তয়া মহাদেব্যা মদিরয়া সহাবধার্য্য ক্ষীরোদনামানং কঞ্চুকিনং (১) "বৎসে! মহাশ্বেতে! ত্বদ্ব্যতিকরেণৈব (২) দগ্ধহৃদয়ানামিদমপরমস্মাকমুপস্থিতম্, ইদানীন্তু কাদম্বরীমনুনেতুং (৩) ত্বং শরণম্" ইতি সন্দিশ্য মৎসমীপমদ্যৈব (৪) প্রত্যুষসি প্রেষিতবান্ (প)। ততো ময়া গুরুবচন-গৌরবেণ সখীপ্রেম্ণা চ ক্ষীরোদেন সার্দ্ধং সা তরলিকা "সখি! কাদম্বরি! কিং দুঃখিতমপি জনমতিতরাং দুঃখয়সি। জীবন্তীমিচ্ছসি চেন্মাং তৎ কুরু গুরুবচনমবিতথম্" ইতি সন্দিশ্য বিসর্জিতা (ফ)। নাতিচিরং গতায়াঞ্চ তস্যামনন্তরমেবেমাং ভূমিমনুপ্রাপ্তো মহাভাগঃ" ইত্যভিধায় তূষ্ণীমভবৎ। (ব)

(প) অপশ্যন্নিতি। অত্র অন্যান্তরশব্দয়োরেকার্থতয়া অর্থগতপুনরুক্ততাদোষঃ স চ অন্যমুপায়মিতি পাঠেন সমাধেয়ঃ। প্রাপ্তকালমুচিতম্। অবধার্য্য আলোচনয়া নির্ণীয়। কঞ্চুকিনমিতি প্রেষিতবানিতি পরক্রিয়ায়াঃ কর্ম্ম। ত্বদ্ব্যতিকরেণৈব তব বৃত্তান্তেনৈব দগ্ধং শোকানলেন প্লুষ্টং হৃদয়ং যেষাং তেষাং অস্মাকং, ইদমপরং দুঃখমুপস্থিতং, কাদম্বর্য্যা আত্মপাণিগ্রহণে অসম্মতিজনিতমিতি ভাবঃ। অনুনেতুং অনুনয়েন পাণিগ্রহণে সম্মতীকর্ত্তুং ত্বমেব শরণমস্মাকমাশ্রয়ঃ. ত্বন্নিমিত্তমেবেদৃশশপথকরণাৎ ত্বদ্বচনাধীনত্বাচ্চেতি ভাবঃ।

(ফ) তত ইতি। সা তরলিকা বিসর্জিতেতি পরেণান্বয়ঃ। জনং মামিত্যর্থঃ। দুঃখয়সি আত্মপাণিগ্রহণে শপথপূর্ব্বকাসম্মত্যেতি ভাবঃ। তত্তদা, গুরুবচনং পিতুরাদেশবাক্যং অবিতথং কুরু আত্মপাণিগ্রহণে সম্মতিদানেন সত্যং প্রতিপাদয়, অন্যথাহং জীবনং পরিত্যক্ষ্যামীতি ভাবঃ। অত্র তর্হীত্যর্থে তদিত্যবাচকমিত্যবাচকত্বদোষঃ, স চ তর্হীতি পাঠেনৈব সমাধেয়ঃ।

(ব) নাতীতি। তস্যাং তরলিকায়াং। নাতিচিরং নাতিপূর্ব্বং। মহাভাগো ভবান্।

পারেন নাই। (প) অতএব অন্য উপায় না দেখিয়া 'এখনে ইহাই উচিত' এইরূপ মনে করিয়া. সেই মহাদেবী মদিরার সহিত আলোচনা পূর্ব্বক স্থির করিয়া, অদ্যই প্রাতঃকালে আমার নিকটে ক্ষীরোদনামে কোন্ কঞ্চুকীকে এই কথা বলিয়া পাঠাইয়া দিয়াছিলেন যে,— "বৎসে! মহাশ্বেতে! কেবল তোমার ঘটনাতেই শোকানলে আমাদের হৃদয় দগ্ধ হইয়া গিয়াছে, তাহার পর আবার এই আর এক দুঃখ, উপস্থিত; অতএব এখন অনুনয়বাক্যে কাদম্বরীকে সম্মত করিতে একমাত্র তুমিই আমাদের আশ্রয়।" (ফ) তাহার পর আমি, গুরুজনের আদেশের প্রতি গৌরব ও সখীর প্রতি প্রণয়বশতঃ, এই কথা বলিয়া ক্ষীরোদের সঙ্গে তরলিকাকে পাঠাইয়া দিয়াছি যে—'সখি! কাদম্বরি! তুমি দুঃখিত ব্যক্তিকে আরও দুঃখিত করিতেছ কেন? তুমি যদি আমাকে জীবিত দেখিতে ইচ্ছা কর, তাহা হইলে পিতার বাক্য সত্য কর।' (ব) তরলিকা অনতিপূর্ব্বে চলিয়া গেলে, তাহার পরই আপনি এখানে উপস্থিত হইয়াছেন" এই কথা বলিয়া মহাশ্বেতা নীরব হইল।

(১) ক্বচিৎ 'বুদ্ধি গত্বা' ইত্যধিকঃ পাঠঃ। (২) তদ্ব্যতিরেকেণৈব। (৩) কাদম্বরীব্যতিকরে।
(৪) ক্বচিৎ 'অদ্যৈব' ইতি পাঠো নাস্তি।

अत्रान्तरे लाञ्छनच्छलेन विडम्बयन्निव शोकानलदग्धमध्यं महाश्वेताहृदयम्, उद्वहन्निव मुनिकुमारवधमहापातकम्, दर्शयन्निव चिरकाललग्नं दक्षशापानल-दाहचिह्नम्, अविरलभस्माङ्गरागधवलः कृष्णमृगाजिन-(१) प्रावृतार्द्धो वामस्तन इवाम्बिकायाः, धूर्जटिजटामण्डलचूडामणिर्भगवानुदगात्तारकाराजः। (भ)

क्रमेण चोन्नते गगनमहापयोधिपुलिने सप्तलोकनिद्रामङ्गलकलसे कुमुदबान्धवे विघटितकुमुदवने धवलितदशदिशि शङ्खश्वेते श्वेतातपत्रायमाणे (२) मानिनी-

(भ) अत्रेति। अत्रान्तरे अस्मिन्नवसरे। धूर्भारभूता जटा यस्य अथवा धूरिव जटाऽस्येति धूर्जटिः शिवस्तस्य जटामण्डलरूपा या चूडा तस्या मणिः। एतेन माहात्म्यशालित्वमस्य सूचितं। भगवान् तारकाराजश्चन्द्रः, लाञ्छनच्छलेन क्रोडस्थमृगाङ्कव्याजेन, शोकानलेन दग्धं मध्यमभ्यन्तरं यस्य तत्तादृशं महाश्वेताया हृदयं विडम्बयन्निव अनुकुर्वन्निव, लाञ्छनच्छलेन मुनिकुमारस्य पुण्डरीकस्य वधो मदनसहायभावेन हत्यैव महापातकं तत् उद्वहन्निव वक्षसि धारयन्निव "मालिन्यं व्योम्नि पापे" इत्यादि कविसमयप्रसिद्धेर्महापातकस्य मालिन्यवर्णनेति बोध्यम्। तथा लाञ्छनच्छलेन चिरकाललग्नं दक्षशापानलेन यो दाहस्तस्य चिह्नं दर्शयन्निव लोकानिति शेषः, अविरलेन घनेन भस्मनेव अङ्गरागेण धवलः श्वेतः तथा कृष्णमृगस्य कृष्णसारस्य अजिनेन चर्म्मणा प्रावृतं आच्छादितं अर्द्धं यस्य स तादृशः, चन्द्रस्यैकांशे शुभ्रत्वादपरांशे च कलङ्कमालिन्यात्तत्साम्यप्रतिपादनार्थमिदं विशेषणद्वयम्। अम्बिकायाः पार्वत्याः वामस्तन इव उदगात्। पार्वत्या अर्द्धनारीश्वरकाले दक्षिणस्तनस्य शिव-देहान्तर्भावेनादर्शनात् वामस्तन इति स्वरूपमात्रमुक्तम्। अत्र प्रथमास्तिस्रः सापह्नवाः क्रियोत्प्रेक्षाः, परा च श्रौतोपमा इत्यासां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

पुरा किल चन्द्रः अश्विन्यादिसप्तविंशतिदक्षकन्याः परिणीय तासु च रोहिण्यामेव बद्धभावो बभूव। यदा तु इतरासामनुरोधाद्दक्षेण सर्वास्वेव समरागो भवितुमुपदिष्टोऽपि चन्द्रस्तथा न चकार, तदा तु 'त्वं यक्ष्मरोगी भवेति दक्षस्तं शशाप इति पद्मपुराणवार्त्ता।

(म) क्रमेणेति। किञ्च, गगनमेव महापयोधिः असीमस्वच्छनीलत्वसाम्यान्महासमुद्रस्तस्य पुलिनं शुभ्रत्व-साम्यात्तोयोत्थितवालुकामयप्रदेशस्तस्मिन्। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। सप्तानां लोकानां भूरादीनां

(ভ) এই সময়ে, মহাদেবের চূড়ার মণি ও মহাত্ম্যশালী চন্দ্র উদয় পাইলেন;—তিনি কলঙ্কচ্ছলে, শোকানলদগ্ধ মহাশ্বেতার হৃদয়েরই যেন অনুকরণ করিতেছিলেন, মুনিকুমার-হত্যার মহাপাতকই যেন ধারণ করিতেছিলেন এবং দক্ষের শাপানলে যে দগ্ধ হইয়াছিলেন, চিরকাল-সংলগ্ন সেই চিহ্নই যেন দেখাইতেছিলেন এবং ঘন-ভস্ম-লেপনে শুভ্রবর্ণ ও কৃষ্ণসারের চর্ম্মে অর্দ্ধ-আবৃত পার্ব্বতীর বামস্তনটির ন্যায় বিরাজ করিতেছিলেন।

(ম) তাহার পর, আকাশরূপ মহাসমুদ্রের পুলিনস্বরূপ, ভূপ্রভৃতি সপ্ত লোকের মাঙ্গলিক নিদ্রাকলসস্বরূপ, কুমুদগণের বন্ধু, শঙ্খের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ও মানিনীগণের মানভঙ্গকারী

(१) मृगाजिन...। (२) श्वेतिमानमातन्वति।

मानग्रन्थौ (१) शुचिशोचिषि (२) शशाङ्कमण्डले, (म) शशिकरकलापकलितासु (३) व्रजन्तीषु (४) कृशिमानमौडुशीषु प्रभासु, (य) प्रस्रवत्सु च कैलासशशिमणिशिलानां सर्वतः स्रोतःस्राविषु प्रस्रवणेषु, (र) मृणालकन्दलिनि चावस्कन्दपतितचन्द्रकर इव विलुप्तकमलवनशोभे भाल्यच्छोदसरःपयसि, (ल)

निद्रार्थी मङ्गलकलशो निद्रामङ्गलकलशस्तत्स्वरूपे, निद्राकालीनावस्थानात् शुभत्वाद्वर्त्तुलत्वाच्चेति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। कुमुदानां बान्धवे उत्फुल्लताविधानाद्बन्धुभूते। विघटितं विकासितं कुमुदवनं येन तस्मिन्। अत्र कुमुदशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च विघटितवद्वन इति पाठेन समाधेयः। धवलिता ज्योत्स्नया शुभ्रीकृता दश दिशो येन तस्मिन्। श्वेतवत् शुभ्र इति लुप्तोपमा। श्वेतातपत्रवदाचरतीति श्वेतातपत्रायमाणं तस्मिन्। अत्र क्यङ्गतोपमालङ्कारः। मानिनीनां रमणीनां मानग्रन्थौ अतीवोद्दीपकत्वान्मानभङ्गकारिणि। तथा शुचीनि शुभ्राणि शोचींषि प्रभा यस्य तस्मिन्। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः। ईदृशे शशाङ्कमण्डले, क्रमेण उद्गगने उपरि उत्तिष्ठति सति।

(य) शशीति। शशिकरैश्चन्द्रकिरणैः कलितासु आच्छादितासु, उडूनां नक्षत्राणामिमा इति औडुश्यस्तासु प्रभासु, कृशस्य भाव इति कृशिमा तं अन्यत्र व्रजन्तीषु प्राप्नुवतीषु सतीषु। अत्र कृशत्वप्राप्तिं प्रति चन्द्रकिरणावृतत्वं हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(र) प्रस्रेति। किञ्च। सर्वतः समन्ततः स्रोतांसि स्रावयन्ति चन्द्रकिरणस्पर्शात् निःसारयन्तीति तेषु, कैलासस्य गिरेः शशिमणिशिलानां चन्द्रकान्तमणीनां प्रस्रवणेषु निर्झरेषु, प्रस्रवत्सु पतत्सु सत्सु। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः, तथा 'कैलासशशिमणिशिलानां प्रस्रवणेषु सर्वतः स्रोतःस्राविषु' इत्यनेनैवोपपत्तौ पुनः प्रस्रवत्स्वित्यभिधानादर्थगतपुनरुक्ततादोषः, स च प्रस्रवत्स्वित्यस्य परित्यागेनैव समाधेयः।

(ल) मृणालेति। किञ्च। मृणालानां कन्दलानि नवाङ्कुरा अस्य सन्तीति तस्मिन्, अवस्कन्दाय पद्मानामाक्रमणाय पतितश्चन्द्रस्य करः किरणो हस्तश्च यस्मिन् तस्मिन् तादृश इव, अतएव विलुप्ता सङ्कोचाद्विनष्टा कमलवनशोभा यस्य तस्मिन्, अच्छोदसरसः पयसि जले, भाति सति। अत्र अवस्कन्दाय चन्द्रकरपतनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। 'कन्दलन्तु कपाले स्यादुपरागे नवाङ्कुरे।" इति विश्वः।

শুভ্রকিরণ চন্দ্রমণ্ডল, কুমুদবন প্রকাশ করিয়া, দশদিক্ শুভ্রবর্ণ করিয়া এবং শ্বেতচ্ছত্রের ন্যায় শোভিত হইয়া ক্রমে উপরে উঠিতে লাগিল; (য) নক্ষত্রের আলোক, চন্দ্রের কিরণে আবৃত হইয়া ক্রমে ক্ষীণ হইয়া গেল। (র) সকল দিকেই স্রোতোনিঃসারণকারী কৈলাস-পর্ব্বতস্থ চন্দ্রকান্তমণি হইতে নির্ঝরের জল পতিত হইতেছিল। (ল) অচ্ছোদসরোবরের জলে নূতন নূতন মৃণালের অঙ্কুর ছিল এবং পদ্মগণকে আক্রমণ করিবার জন্যই যেন তাহার উপরে চন্দ্রের কিরণ পড়িয়াছিল, তাহাতে পদ্মবনের শোভা বিলুপ্ত হইয়াছিল। (ব) রাত্রি

---

(१)...मानदस्यौ। (२) क्वचिदयं पाठो नास्ति। (३) शशिकरकलितासु। (४) आतन्वतीषु।

समुपोढमोहनिद्रे च द्राघीयोवीचिविचलितवपुषि विरुवति विरहिणि चक्रवाक-चक्रवाले, (व) निर्वृत्ते च (१) चन्द्रोदये विद्रुते हर्ष-नयनजलकण-नीहारिणि वियद्विहारिणि मनोहारिणि विद्याधराभिसारिकाजने, (श) चन्द्रापीड़ः सुप्तामालोक्य महाश्वेतां पल्लवशयने शनैः शनैः (२) समुपाविशत्। 'अस्यां वेलायां किंनु खलु मामन्तरेण चिन्तयति वैशम्पायनः, किंवा वराकी पत्रलेखा, किंवा राजपुत्रलोकः' इति चिन्तयन्नेव निद्रां ययौ। (ष)

अथ क्षीणायां क्षपायामुषसि सन्ध्यामुपास्य शिलातलोपविष्टायां पवित्राण्य-घमर्षणानि जपन्त्यां महाश्वेतायां, निर्वर्त्तितप्राभातिकविधौ चन्द्रापीड़े, (स)

(व) समुपोढेति। किञ्च। विरहिणि निशागमे चक्रवाकदम्पत्योर्विरहस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः, अतएव समुपोढा उत्पन्ना मोहनिद्रा दुःखान्मूर्च्छारूपा निद्रा यस्य तस्मिन् तथा द्राघीयसीभिरत्यन्तदीर्घाभिः वीचिभिरच्छोदसरस्तरङ्गैः विचलितं कम्पितं वपुर्यस्य तस्मिन्, चक्रवाकानां पक्षिणां चक्रवाले मण्डले समूहे, विरुवति रवं कुर्वति सति। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः।

(श) निर्वृत्त इति। किञ्च चन्द्रोदये निर्वृत्ते निष्पन्ने चन्द्रोदयेन तिमिरापगम इति भावः, हर्षनयन-जलकणा आनन्दाश्रुबिन्दव एव नीहाराम्बुधारा अस्य सन्तीति तस्मिन्, वियद्विहारिणि आकाशचारिणि, मनोहारिणि परमसुन्दरे, विद्याधराभिसारिकाजने विद्रुते अन्यदर्शनभयात् पलायिते सति। अत्र हर्षेत्यादिपदे निरङ्गं केवलरूपकं, तथा हारिणीत्यस्य एकक्रमेणावृत्तेर्यमकञ्चानयोः संसृष्टिः।

(ष) चन्द्रेति। सुप्तां निद्रिताम्। मामन्तरेण विना। वराकी क्षुद्रा।

(स) अथेति। क्षपायां रात्रौ क्षीणायां क्षयमुपगतायां उषसि प्रभातकाले। अघमर्षणानि "ऋतञ्च सत्यञ्चे"त्यादिमन्त्रान्। चन्द्रापीड़े च निर्वर्त्तितो निष्पादितः प्राभातिकविधिः प्रातःकृत्यं येन तस्मिन् सति।

উপস্থিত হওয়ায় চক্রবাকদম্পতিগণ, পরস্পর বিচ্ছিন্ন ও মোহ-নিদ্রায় অভিভূত হইয়া রব করিতেছিল, এদিকে অচ্ছোদসরোবরের বৃহৎ বৃহৎ তরঙ্গ তাহাদিগকে কাঁপাইতেছিল। (শ) আকাশচারী পরমসুন্দর বিদ্যাধররমণীগণ শিশিরের ন্যায় আনন্দাশ্রু বিসর্জ্জন করতঃ অভিসারে যাইতেছিল, কিন্তু চন্দ্রের উদয়ে অন্ধকার দূরীভূত হওয়ায় তাহারা ইতস্ততঃ পলায়ন করিতে লাগিল। (ষ) এমন সময়ে চন্দ্রাপীড়, মহাশ্বেতাকে নিদ্রিত দেখিয়া ধীরে ধীরে পল্লবময় শয্যার উপরে উপবেশন করিলেন এবং চিন্তা করিতে লাগিলেন যে,—'এই সময়ে বৈশম্পায়ন আমাকে না দেখিয়া কি চিন্তা করিতেছেন,—বালিকা পত্রলেখাই বা কি ভাবিতেছে এবং রাজপুত্রগণই বা কি মনে করিতেছেন' এইরূপ চিন্তা করিতে করিতে নিদ্রিত হইয়া পড়িলেন।

(স) তদনন্তর রাত্রি অতীত হইলে প্রভাতকালে, মহাশ্বেতা সন্ধ্যাবন্দন শেষ করিয়া

(१) निवृत्ते च। (२) क्वचित् शिवशिलासि।

तरलिका षोड़शवर्षवयसा, सावष्टम्भाकृतिना, मद-खेदालस-गजराज गमन-गुरूणि (१) पदानि निक्षिपता, (ङ) पर्य्युषितचन्दनाङ्गराग-धूसरोरुदण्डद्वयेन, कुङ्कुम-राग-पिञ्जरारुणेन, चामीकर-शृङ्खला-कलाप-निविड़-नियमितं कक्षाबन्धा-तिरिक्त-प्रेङ्खत्पल्लवमधरवास एव केवलं वसानेन, (च) निरुदरतया विभक्त-मध्येन, विपुलवक्षसा, दीर्घानुवृत्तपीनबाहुना, (क) वामप्रकोष्ठदोलायमान-माणिक्यवलयेन, कर्णाभरणमणेर्विप्रकीर्य्यमाणमधोमुखकिरणेन्द्रायुधजालं वर्णां-

(ङ) तरेति। प्रत्यूषस्येव केयूरकनाम्ना गन्धर्वदारकेणानुगम्यमाना तरलिका प्रादुरासीदिति परेणान्वयः। अत्र तृतीयैकवचनान्तपदानि गन्धर्वदारकेणेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। षोड़शवर्षाणि वयो यस्य तेन। सावष्टम्भा सबला आकृतिर्यस्य तेन। मदखेदेन मदवहनपरिश्रमेण अलसो मन्दगामी यो गजराजस्तस्येव गमने गुरूणि मन्थराणि, पदानि पदन्यासान्, निक्षिपता कुर्वता। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(च) पर्य्युषितेति। पर्य्युषितेन पूर्वदिनकृतत्वादुद्गतरसेन शुष्केण चन्दनाङ्गरागेण धूसरं ऊरुदण्डद्वयं यस्य तेन। कुङ्कुमरागेण कुङ्कुमरसकृताङ्गरागेण पिञ्जरः कस्मिंश्चिदंशे शुष्कत्वात् पिङ्गलवर्णश्चासौ कस्मिंश्चिदंशे अरुणस्तदानीमप्यशुष्कत्वात् रक्तवर्णश्चेति तेन। चामीकरस्य स्वर्णस्य शृङ्खलानां कलापेन आवल्या निविड़ं दृढ़ं यथा तथा नियमितं बद्धं, तथा कक्षाबन्धात् कटिबन्धादतिरिक्तं अधिकभूतं अतएव प्रेङ्खत् वायुना चलत् पल्लव-मञ्चलं यस्य तत्, केवलं अधरवास एव अधोवस्त्रमेव वसानेन परिदधता, न पुनरुत्तरीयवसनं धारयतेति भावः।

(क) निरिति। निरुदरतया कृशोदरतया अनुदरा कन्येतिवदल्पार्थे निःशब्दः। विभक्तमध्येन क्षीणकटिना। दीर्घौ आयतौ, अनुवृत्तौ सुगोलौ, पीनौ स्थूलौ च बाहू यस्य तेन।

(ख) वामेति। वामे प्रकोष्ठे मणिबन्धादूर्द्ध्वदेशे दोलायमानं भुजान्दोलनाच्चञ्चलं माणिक्यवलयं रत्नकटकं

একখানি প্রস্তরখণ্ডের উপরে উপবেশন করিয়া পবিত্র অঘমর্ষণমন্ত্র জপ করিতেছিল, চন্দ্রাপীড়ও প্রাতঃকৃত্য সমাপন করিয়া অবস্থান করিতেছিলেন (ঙ) এমন সময়ে কেয়ূরক নামে একটি গন্ধর্ববালকের সহিত তরলিকা আসিয়া সেই প্রভাতকালেই সেখানে উপস্থিত হইল; সেই বালকটির বয়স ষোড়শ বর্ষ বলিয়া বোধ হইতেছিল, আকৃতিও সবল ছিল এবং সে, মদপরিশ্রমে মন্দগামী গজরাজের ন্যায় ধীরে ধীরে পদক্ষেপ করিয়া আসিতেছিল, (চ) শুষ্ক চন্দনের অঙ্গরাগে তাহার ঊরুযুগল ধূসরবর্ণ ছিল এবং কুঙ্কুমের অঙ্গরাগে কোন স্থান পিঙ্গলবর্ণ ও কোন স্থান রক্তবর্ণ ছিল; সে কেবল পরিধেয় বস্ত্রই পরিধান করিয়াছিল, সেই বস্ত্রখানা স্বর্ণ-শৃঙ্খলা-বলীতে দৃঢ়বদ্ধ ছিল, এবং তাহার কটিবন্ধনের অতিরিক্ত অঞ্চলটুকু বায়ুভরে কাঁপিতেছিল; (ক) তাহার উদর কৃশ ছিল বলিয়া কটিদেশও কৃশ ছিল, বক্ষঃস্থল বিস্তৃত ছিল এবং বাহুযুগল দীর্ঘ, সুগোল ও স্থূল ছিল; (খ) বাম হস্তে একটি রত্ন-বলয় দুলিতেছিল, কর্ণালঙ্কারের মণি হইতে ইন্দ্রধনুর ন্যায় নানাবর্ণের কিরণজাল নীচের দিকে পড়িতেছিল, তাহাতে বোধ

(१) मन्दखेदालस......गजगमनगुरूणि।

ग्रुकोत्तरीयमिवैकस्कन्धन्यस्तमुद्वहता, (ख) चूतपल्लवकोमलमनवरतताम्बूल-बद्ध-रागान्धकारमधरं दधता, (ग) कर्णान्तायतस्य स्वभावधवलस्य धवलिम्ना लोचनयुगलस्य धवलयतेव दिगन्तराणि कुमुदवनानीव वर्षता पुण्डरीकमयमिव दिवसं कुर्वता, (घ) कनकपट्ट पृथु-ललाटेन, अलि-कुल नील-सरल शिरसिजेन, अग्राम्याकृतिना, राजकुल-सम्पर्क-चतुरेण, गन्धर्वदारकेण केयूरकनाम्नानुगम्यमाना प्रत्यूषस्येव प्रादुरासीत् (ङ)। आगत्य च कोऽयमित्युपजातकुतूहला

यस्य तेन। कर्णाभरणे कर्णालङ्कारे यो मणिस्तस्मात्, विप्रकीर्य्यमाणं कर्णाभरणेनाधो विक्षिप्यमाणं, अधोमुखाः किरणा इन्द्रायुधानि नानावर्णत्वादिन्द्रचापानीव तेषां जालं समूहं, एकस्मिन् स्कन्धे विन्यस्तमर्पितं, वर्णो रक्तवर्णस्तेन रञ्जितमंशुकं वर्णांशुकं तद्रूपमुत्तरीयमिव उद्वहता दधता। अत्र लुप्तोपमाजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ग) चूतेति। चूतस्य आम्रस्य पल्लववत् कोमलं, तथा अनवरतेन ताम्बूलेन ताम्बूलचर्वणेन बद्धो धृतः रागो रक्तिमा अन्धकारः अशविग्रषे मालिन्यञ्च यस्मिन् तं। अधिकताम्बूलचर्वणेनाधरे मालिन्यमपि जायत इति द्रष्टव्यम्। अधरं दधता ओष्ठं धारयता। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(घ) कर्णेति। कर्णान्तायतस्य स्वभावधवलस्य लोचनयुगलस्य धवलिम्ना धवलतया दिगन्तराणि धवलयतेव, अतएव कुमुदवनानि वर्षतेव, दिवसं पुण्डरीकमयं श्वेतपद्मव्याप्तं कुर्वतेव, लोचनयुगलस्य धवलप्रभाप्रसरणात् कुमुदपुण्डरीकयोश्च धवलत्वादिति भावः। अत्र तिस्र एव क्रियोत्प्रेक्षा वाक्यार्थहेतुकमेकं काव्यलिङ्गञ्चेत्येषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, तथा धवलपदस्य वारं वारमुपादानादनवीकृतत्वदोषः, स च 'स्वभावधवलस्य लोचनयुगलस्य प्रभया दिगन्तराणि लिम्पतेव' इति पाठेन समाधेयः।

(ङ) कनकेति। कनकपट्टवत् स्वर्णफलकवत् पृथु विस्तृतं ललाटं यस्य तेन। अलिकुलवत् भ्रमरसमूहवत् नीलाः कृष्णाः शिरसिजाः केशा यस्य तेन। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अग्राम्या नागरीया भद्रोचिता आकृतिर्यस्य तेन। तथा राजकुले गन्धर्वराजवाट्यां सम्पर्केण सर्वदावस्थानसम्बन्धेन चतुरस्तेन, नानाविधजननानाविधालापकार्य्याचरणादिति भावः। प्रादुरासीदुपस्थिताऽभवत्।

হইতেছিল যে,—সে যেন এক স্কন্ধে অর্পিত একখানা রক্তবর্ণ উত্তরীয় বসন ধারণ করিতেছে; (গ) আমের পল্লবের ন্যায় কোমল ও সর্ব্বদা তাম্বূল চর্ব্বণ করায় রক্ত ও মলিনবর্ণ ওষ্ঠযুগল ধারণ করিতেছিল; (ঘ) আকর্ণবিস্তৃত এবং স্বভাবতই ধবলবর্ণ নয়নযুগলের ধবলপ্রভাদ্বারা সে যেন দিগ্‌দিগন্তর ধবলবর্ণ করিতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সে যেন, শ্বেতোৎপল-সমূহ বর্ষণ করিতেছে এবং দিনটাকে যেন শ্বেতপদ্মময় করিতেছে; (ঙ) তাহার ললাটদেশ, স্বর্ণফলকের ন্যায় বিস্তৃত ছিল; কেশকলাপ, ভ্রমরসমূহের ন্যায় কৃষ্ণবর্ণ ও সরল ছিল এবং আকৃতিটিও ভদ্রলোকের মতনই ছিল; আর সে, রাজবাটীতে বাস করায় বেশ চতুর ছিল।

चन्द्रापीड़ं सुचिरमालोक्य (१) महाश्वेतायाः समीपमुपसृत्य कृतप्रणामा सविनयमुपाविशत्। (च)

अनन्तरञ्चातिदूरानतेनोत्तमाङ्गेन प्रणम्य केयूरकोऽपि महाश्वेतादृष्टिनिसृष्टं नातिसमीपवर्त्ति शिलातलं भेजे (छ)। समुपविष्टश्च (२) तमदृष्टपूर्वमधःकृत-कुसुमायुधमुपहसितसुरासुरगन्धर्वविद्याधररूपं रूपातिशयं चन्द्रापीड़स्य दृष्ट्वा विस्मयमापेदे। (ज)

परिसमाप्तजपा तु महाश्वेता पप्रच्छ तरलिकाम्—"किं त्वया दृष्टा प्रियसखी कादम्बरी कुशलिनी? करिष्यति वा तदस्मद्वचनम्?" इति। (झ)

(च) आगत्येति। अयमपूर्वः पुरुषः क इत्युपजातं कुतूहलं यस्याः सा, तरलिकेति शेषः।

(छ) अनेति। अतिदूरानतेन अत्यन्तावनतेन उत्तमाङ्गेन मस्तकेन। प्रणम्य महाश्वेतामित्यर्थः। महाश्वेतया दृष्ट्या दृष्टिभङ्ग्या निसृष्टं अर्पितं निर्द्दिष्टमित्यर्थः शिलातलं भेजे आश्रित्य तत्रोपविवेशेत्यर्थः।

(ज) समुपेति। समुपविष्टश्च केयूरकः। अधःकृतः पराजितः कुसुमायुधः कन्दर्पो येन तम्, तथा उपहसितं स्वापेक्षयानत्वादुपहास्यतां नीतं सुरासुरगन्धर्वविद्याधराणां रूपं येन तम्, रूपातिशयं सौन्दर्य्यातिरेकम्।

(झ) परीति। अस्मद्वचनं मम वचनानुरूपं कार्य्यं आत्मपाणिग्राहणमित्यर्थः।

(চ) আসিয়া চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া তরলিকার 'ইনি কে?' এইরূপ কৌতূহল জন্মিল; তাই সে, বহুকাল পর্য্যন্ত চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া, মহাশ্বেতার নিকটে যাইয়া, তাহাকে সবিনয়ে নমস্কার করিয়া উপবেশন করিল।

(ছ) তাহার পর কেয়ূরকও অত্যন্ত অবনত মস্তকে মহাশ্বেতাকে প্রণাম করিল, পরে মহাশ্বেতা, তাহার বসিবার জন্য অনতিনিকটবর্ত্তী একখানা প্রস্তরখণ্ডকে নয়নভঙ্গীদ্বারা নির্দ্দিষ্ট করিয়া দিল; কেয়ূরক তাহার উপরে উপবেশন করিল। (জ) কেয়ূরক উপবেশন করিয়া চন্দ্রাপীড়ের সেই অলৌকিক সৌন্দর্য্য দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইল; কারণ—সেরূপ সৌন্দর্য্য পূর্ব্বে আর দেখে নাই, এবং সে সৌন্দর্য্য কামদেবের সৌন্দর্য্যকেও পরাস্ত করিয়াছিল এবং দেবতা, দানব, গন্ধর্ব্ব ও বিদ্যাধরগণের সৌন্দর্য্যকেও উপহাস করিতেছিল।

(ঝ) এদিকে মহাশ্বেতা জপ সমাপন করিয়া তরলিকাকে জিজ্ঞাসা করিল,—'তরলিকে! তুই আমার প্রিয়সখী কাদম্বরীকে ভাল দেখিয়াছিস্ ত? সে আমার কথামত কাজ করিবে ত?।"

---

(१) अवलोक्य। (२) उपविष्टश्च।

अथ सा तरलिका विनयावनतमौलिरीषदालम्बित-(१) कर्णपाशमतिमधुरया गिरा व्यजिज्ञपत्—"भर्त्तृदारिके! दृष्टा खलु मया भर्त्तृदारिका कादम्बरी सर्वतः कुशलिनी। विज्ञापिता च निखिलं भर्त्तृदुहितुः सन्देशम्। आकर्ण्य च यत्तया सन्तत-मुक्त-मुक्ता-स्थूलाम्बु-(२) विन्दुवर्षं रुदित्वा प्रतिसन्दिष्टम्, तदेष तयैव विसर्जितस्तस्या एव वीणावाहकः (३) केयूरकः कथयिष्यति इत्युक्त्वा विरराम। (ञ)

विरतवचसि तस्यां केयूरकोऽब्रवीत्—"भर्त्तृदारिके! महाश्वेते! देवी कादम्बरी दृढ़दत्तकण्ठग्रहा त्वां विज्ञापयति—'यदियमागत्य मामवदत्तरलिका, तत् कथय किमयं गुरुजनानुरोधः? किमिदं मच्चित्तपरीक्षणम्? किं गृह-निवासापराधनिपुणोपालम्भः? किं प्रेमविच्छेदाभिलापः? किं भक्तजन-परित्यागोपायः? किंवा प्रकोपः? (ट)। जानास्येव मे सहज-प्रेम-निस्यन्द-(४)निर्भरं

(ञ) अथेति। विनयेन अवनतो मौलिर्मुण्डो यस्याः सा। ईषदालम्बितौ मस्तकनमनेन किञ्चिदवनतौ कर्णपाशौ सुन्दरकर्णयुगलं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। भर्त्तृदुहितुस्तव। तया कादम्बर्य्या, सन्ततं अविच्छिन्नधारं यथा तथा मुक्तानि त्यक्तानि मुक्तावत् स्थूलानां अम्बुविन्दूनां वर्षाणि यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा रुदित्वा यत् प्रतिसन्दिष्टं, तदेष केयूरकः कथयिष्यतीति सम्बन्धः।

(ट) विरतेति। दृढं दत्तः कण्ठग्रह आलिङ्गनं यया सा। गृहे निवासः स्थितिरेवापराधस्तस्मिन् निपुणोपालम्भ उपयुक्ततिरस्कारः त्वयि वने वसन्त्यामहं यद्गृहे वसामि तस्यापराधस्य योग्यतिरस्कारः किमित्यर्थः। प्रेमविच्छेदाय आवयोः प्रणयभङ्गाय अभिलाप उक्तिः। भक्तजनस्य अनुरक्तायाः ममेत्यर्थः परित्यागोपायः किं।

(ঞ) তাহার পর তরলিকা, মস্তক অবনত করিয়া, সুন্দর কর্ণযুগল ঈষৎ নোয়াইয়া, অতিমধুর বাক্যে জানাইল—"রাজকন্যে! আমি, রাজকন্যা কাদম্বরীকে সকল রকমেই ভাল দেখিয়া আসিয়াছি এবং আপনার সকল কথাই তাঁহাকে জানাইয়াছি। তিনি অবিচ্ছিন্ন ধারায় মুক্তার ন্যায় স্থূল অশ্রু-বিন্দু-বর্ষণপূর্ব্বক রোদন করিয়া যে প্রত্যুত্তর দিয়াছেন, তাহা এই কেয়ূরক বলিবে, এ তাঁহারই বীণাবাহক এবং তিনিই ইহাকে পাঠাইয়াছেন।" এই কথা বলিয়া তরলিকা বিরত হইল।

(ট) সে বিরত হইলে কেয়ূরক বলিতে লাগিল,—"রাজকন্যে! মহাশ্বেতে! কাদম্বরী দেবী, আপনার কণ্ঠে গাঢ় আলিঙ্গন করিয়া জানাইতেছেন যে—'এই তরলিকা আসিয়া আমাকে যে বলিল,—সে বিষয়ে তুমি বল দেখি,—'এটা কি গুরুজনের অনুরোধ? না—আমার মন পরীক্ষা করা? কিংবা আমি যে গৃহে বাস করিতেছি, এই অপরাধের উপযুক্ত তিরস্কার?

(१) अवलम्बित…। (२) सन्ततमुक्तास्थूलाम्बु…। (३) वीणावाहकः। (४)…निष्यन्द।

हृदयम्, एवमतिनिष्ठुरं सन्दिशन्ती कथमसि न लज्जिता ? तथामधुरभाषिणी केनासि शिक्षिता वक्तुमप्रियं परुषमभिधातुं वा ? (ठ) स्वस्थोऽपि तावत् क इव सहृदयः कनीयस्यवसानविरसे कर्म्मणीदृशे मतिमुपसर्पयेत् ? किमुतातिदुःखाभिहतहृदयोऽस्मद्विधो जनः (ड)। सुहृद्दुःखखेदिते हि मनसि केव सुखाशा ? कैव निर्वृतिः ? कीदृशाः सम्भोगाः ? कानि वा हसितानि ? (ढ)। येनेदृशीं दशामुपनीता प्रियसखी कथमतिदारुणं तमहं विषमिवाप्रियकारिणं

(ठ) जानासीति। सहजं स्वाभाविकं यत् प्रेम तस्य निस्यन्देन रसेन निर्भरं परिपूर्णं मे मम हृदयं त्वं जानास्येव, तथापि एवमतिनिष्ठुरं पाणिग्रहणोपदेशरूपं सन्दिशन्तीत्यन्वयः।

(ड) ननु पाणिग्रहणे को नाम दोषः, येनैवं वैमत्यं द्योतयसीत्याह स्वस्थ इति। स्वस्थोऽपि सुखशान्त्यादिना सर्व्वथा सुस्थचित्तोऽपि क इव सहृदयो हिताहितविवेकसमर्थो जनः, ईदृशे कनीयसि अत्यल्पे तुच्छे, अवसानविरसे परिणामदुःखदायिनि, तवैव विरहादिनेति भावः, कर्म्मणि पाणिग्रहणे मतिमुपसर्पयेत् बुद्धिमर्पयेत्, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः। सुतरां बलवदवस्थानां मादृशानान्तु का कथेत्याह किमुतेति। तव दारुणदुःखजनितातिदुःखेनैव मे हृदयमभिहतमिति भावः।

(ढ) ननु सत्यप्यवसानविरसे कर्म्मण्यस्मिन् सुखादिकमपि दृश्यत इत्याह सुहृदिति। सुहृद्दुःखखेदिते बन्धुजनदुःखजनितदुःखभाराक्रान्ते। निर्वृतिः शान्तिः। दुःखभाराक्रान्ते हि मनसि सुखादीनां प्रवेशावकाश एव नास्तीति भाव।

(ण) अथ तथापि यौवनकामः सर्व्वथैव सकामः करणीय इत्याह येनेति। येन कामेन प्रियसखी त्वं ईदृशीं दशां अतीवदारुणशोकातुरावस्थां उपनीता प्रापिता, विषमिव अप्रियकारिणं अतिदारुणं तं कामं कथमहं सकामं पतिसमागमेन पूर्णमनोरथं कुर्य्यां कर्त्तुं शक्नुयाम्, अपि तु कथमपि न, तव वैरत्वेन ममापि वैर-

অথবা প্রণয় ভঙ্গ করিবার জন্য একটা কথা মাত্র ? না অনুরক্ত লোককে পরিত্যাগ করার একটা উপায় ? অথবা কোন কারণ-জনিত ক্রোধ ? (ঠ) তুমি ত জানই যে, আমার হৃদয় তোমারই অকৃত্রিম প্রেমে পরিপূর্ণ ; তথাপি তুমি, এই জাতীয় অত্যন্ত নিষ্ঠুর খবর পাঠাইতে লজ্জিত হও নাই কেন ? তুমি সেইরূপ মধুরভাষিণী ছিলে, কিন্তু এখন অপ্রিয় ও নিষ্ঠুর কথা বলিতে তোমাকে কে শিখাইল ?। (ড) দেখ, সুস্থচিত্ত হইয়াও কোন্ বুদ্ধিমান্ ব্যক্তি, তুচ্ছ ও পরিণামে দুঃখজনক এইরূপ কার্য্যে মন অর্পণ করে ? সুতরাং আমাদের মত অত্যন্ত-দুঃখিতচিত্ত লোকের কথা আর বলিব কি ?। (ঢ) আর যে চিত্ত, সর্ব্বদাই বন্ধুর দুঃখে দুঃখিত তাহাতে আবার সুখের আশা কি ? শান্তিই বা কি ? সম্ভোগই বা কি ? এবং হাস-পরিহাসই বা কি ?। (ণ) বিশেষতঃ, যে কন্দর্প, তোমাকে এইরূপ দশায় উপনীত করিয়াছে, অত্যন্ত ভয়ঙ্কর ও বিষের ন্যায় অপ্রিয়কারী সেই কন্দর্পের অভিলাষ আমি কি করিয়া পূর্ণ করিতে পারি ? দেখ—সূর্য্য অস্তগমন করায় পদ্মিনী তাঁহার বিরহে বিহ্বল হইয়া পড়িলে,

कामं सकामं कुर्य्याम् ? दिवसकरास्तमयविधुरासु नलिनीसु सहवासपरिचया-च्चक्रवाकयुवतिरपि पतिसमागमसुखानि परित्यजति (१) किमुत नार्य्यः (ण)। अपि च (२) यत्र भर्त्तृविरहविधुरा परिहृतपरपुरुषदर्शना दिवानिशं निवसति प्रियसखी, कथमिव तन्मम हृदयमपरः प्रविशेज्जनः ? (त)। यत्र च भर्त्तृविरह-विधुरा तीव्र-व्रत-(३) कर्षिताङ्गी प्रियसखी महत् कृच्छ्रमनुभवति, तत्राहमवगण-य्यैतत् कथमात्मसुखार्थिनी पाणिं ग्राहयिष्यामि ! कथं वा मम सुखं भविष्यति ?(थ) त्वत्प्रेम्णा चास्मिन् वस्तुनि मया (४) कुमारिकाजनविरुद्धं स्वातन्त्र्यमालम्ब्याङ्गी-

शत्त्वादिति भावः। तथा च नलिनीषु दिवसकरस्य सूर्य्यस्य अस्तमयेन अस्तगमनेन विधुरासु सतीसु। सहवास-परिचयात् एकसरोवरवासप्रणयात्। यत्र तिर्य्यग्जातिरप्येवमाचरति तत्र किमुत नार्य्य इत्यर्थः। सुतरां त्वयि पतिविरहविधुरायां सत्यां मयापि पतिसमागमसुखं त्याज्यमेवेति भावः। अत्र दृष्टान्तोलङ्कारः।

(त) अपि चेति। यत्र हृदये। प्रियसखी त्वमित्यर्थः। निवसति सततचिन्तावशादिति भावः। अपरो जनः पतिरित्यर्थः, कथं प्रविशेत् कथमपि नेति तात्पर्य्यं, तत्रत्यायास्तव परपुरुषदर्शनाशङ्कया सर्वैव निषिद्धादिति भावः।

(थ) यत्रेति। यत्र यदा। तीव्रव्रतेन उग्रतपसा कर्षितानि शोषितानि अङ्गानि यया सा। प्रियसखी त्वमित्यर्थः। तत्र तदा। एतत्तव महत् कृच्छ्रं। कथं पाणिं ग्राहयिष्यामि कथमपि नेत्यर्थः, समानसुख-दुःखयोः सख्योर्वैषम्यप्रसङ्गादिति भावः। कथं वा सुखं भविष्यति कथमपि नेति तात्पर्य्यं, दुःखपूर्णचित्त त्वादिति भावः।

(द) त्वदिति। अस्मिन् वस्तुनि पाणिग्रहणविषये। विनयः शिक्षागुणः समवधीरितः अवज्ञातः। गुरुवचनं पितृवाक्यं। सहजमाभरणं स्वाभाविकालङ्काररूपा लज्जा समुत्सृष्टा परित्यक्ता। सा कादम्बरी।

তাহার সহিত একত্র বাস করায় প্রণয়বশতঃ যুবতি চক্রবাক পক্ষিণীও পতির সহিত সম্মিলনসুখ পরিত্যাগ করে ; এ অবস্থায় রমণীগণের কথা আর বলিবার কি আছে ? । (ত) বিশেষতঃ, তুমি পতি-বিরহে আকুল হইয়া পর-পুরুষের দর্শন পর্য্যন্ত পরিত্যাগ করিয়া যে হৃদয়ে দিবারাত্রি বাস করিতেছ, আমার সেই হৃদয়ে অন্য লোক প্রবেশ করিবে কিরূপে ? (থ) আর তুমি যখন ভর্ত্তার বিরহে বিহ্বল হইয়া, গুরুতর ব্রতাবলম্বনে শরীরকে শোষণ করিতে থাকিয়া গুরুতর কষ্ট অনুভব করিতেছ, তখন আমি তাহা অগ্রাহ্য করিয়া কেবল নিজের সুখাভিলাষিণী হইয়া কিরূপে পাণিগ্রহণ করাইব ? কিরূপেই বা তাহাতে আমার সুখ হইবে ? । (দ) আমি তোমার প্রণয়বশতই এই বিষয়ে স্বাধীনতা অবলম্বন করিয়া নিন্দা স্বীকার করিয়াছি, বিনয়কে অবজ্ঞা করিয়াছি, পিতৃবাক্য লঙ্ঘন করিয়াছি, লোকাপবাদ অগ্রাহ্য করিয়াছি এবং স্ত্রীলোকের

(१) त्यजति। (२) क्वचित् अपि चेति नास्ति। (३) क्वचित् तीव्रपदं न दृश्यते।

(४) क्वचित् मयेति नास्ति।

क्षतमयशः, समवधीरितो विनयः, गुरुवचनमतिक्रान्तम्, (१) न गणितो लोकापवादः, वनिताजनस्य सहजमाभरणमुत्सृष्टा लज्जा, सा कथय कथमिव पुनरत्र प्रवर्त्तते ? (द)। तदयमञ्जलिरुपरचितः, प्रणामोऽयम्, इदञ्च पादग्रहणम्, अनुगृहाण माम्, वनमितो गतासि मे जीवितेन सहेति मा कृथाः स्वप्नेऽपि पुनरिममर्थं मनसि" इत्यभिधाय तूष्णीमभूत् (ध)।

महाश्वेता तु तच्छ्रुत्वा सुचिरं विचार्य्य "गच्छ, स्वयमेवाहमागत्य यथार्हमाचरिष्यामि" इत्युक्त्वा केयूरकं प्राहिणोत् (न)। गते च केयूरके चन्द्रापीड़मुवाच—"राजपुत्र ! रमणीयो हेमकूटः, चित्रा च चित्ररथराजधानी, बहुकुतूहलः किम्पुरुषविषयः, पेशलो गन्धर्वलोकः, सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी, यदि नातिखेदकरमिव गमनं कलयसि, नावसीदति वा गुरुप्रयोजनम्,

अव पाणिग्रहणे। अत्र कथयेति वाक्यान्तरपदस्य सेत्यादिवाक्यान्तरे प्रवेशात् सङ्कीर्णता दोषः, स तु कथयेत्यस्य प्राक्पाठात् समाधेयः।

(ध) तदिति। इति हेतोः। स्वप्नेऽपि मनसि इममर्थं मत्पाणिग्रहणोपदेशरूपं विषयं पुनर्मा कृथा न कुर्य्याः। तूष्णीमभूत् केयूरक इति शेषः।

(न) महेति। आगत्य गत्वा। यथार्हं यथायोग्यं। अत्र आङ्पूर्व्वो गमधातुर्गमनार्थे अवाचक इत्यवाचकत्वदोषः, स च गत्वेति पाठेनैव समाधेय इति वदन्ति।

(प) गत इति। चित्रा आश्चर्य्या। किम्पुरुषविषयः किन्नरदेशः, बहूनि कुतूहलानि कौतुकोद्दीपक वस्तूनि यस्मिन् सः। पेशलः सुन्दरः। "चारौ दक्षे च पेशलः।" इत्यमरः। यदि त्वं गमनं अतिखेदकरमिव

স্বাভাবিক অলঙ্কার লজ্জাও পরিত্যাগ করিয়াছি; অতএব বল দেখি—সেই কাদম্বরী কি করিয়া আবার এই বিষয়ে প্রবৃত্ত হইবে ? । (ধ) অতএব আমি এই হাত জোড় করিতেছি, এই প্রণাম করিতেছি এবং এই চরণ ধারণ করিতেছি, তুমি আমার প্রতি অনুগ্রহ কর; তুমি এ স্থান হইতে আমার জীবনের সহিতই বনে গিয়াছ; অতএব স্বপ্নেও যেন আবার এ বিষয় মনে করিও না" এই কথা বলিয়া কেয়ূরক নীরব হইল।

(ন) কিন্তু মহাশ্বেতা সেই সকল কথা শুনিয়া বহু সময় বিবেচনা করিয়া বলিল,—"কেয়ূরক ! তুমি চলিয়া যাও; আমি নিজেই আসিয়া যাহা উপযুক্ত হয়, তাহা করিব" এই কথা বলিয়া কেয়ূরককে বিদায় করিল। (প) এবং কেয়ূরক চলিয়া গেলে মহাশ্বেতা চন্দ্রাপীড়কে কহিল,—"রাজপুত্র ! হেমকূট পর্ব্বত অত্যন্ত মনোহর, গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথের রাজধানীও বড়ই আশ্চর্য্য, কিন্নরদেশেও বহুতর কৌতূহলোদ্দীপক বস্তু রহিয়াছে, গন্ধর্ব্বলোকও বেশ সুন্দর;

(१) अतिक्रामितं।

अदृष्टचरविषयकुतूहलि वा चेतः, मद्वचनमनुरुध्यते वा भवान् (१) सुखदायि वा (२) आश्चर्य्यदर्शनम्, (३) अर्हामि वा प्रणयम् (४) इममप्रत्याख्यानयोग्यं वा जनं मन्यसे, समारूढो वा परिचयलेशः, अनुग्राह्यो वाऽयं जनः ततो नार्हसि निष्फलां कर्त्तुमभ्यर्थनामिमाम् (प)। मयैव सह गत्वा हेमकूटमतिरमणीयतानिधानं, तत्र दृष्ट्वा च मन्निर्विशेषां कादम्बरीम्, अपनीय तस्याः कुमतिमनोमोहविलसितम्, एकमहोविश्रम्य श्वोभूते प्रत्यागमिष्यसि (फ)। मम हि निष्कारणबान्धवं भवन्तमालोक्यैव दुःखान्धकारभाराक्रान्तेन महतः कालादुच्छ्-

अधिकपरिश्रमजनकमिव, न कलयसि न मन्यसे। नावसीदति न व्याहतं भवति। अदृष्टो भूतपूर्व इत्यदृष्टचरः "भूतपूर्व्वेचरट्" इति चरट्प्रत्ययः। अदृष्टचरोऽनवलोकितपूर्वो यो विषयो देशस्तस्मिन् तद्दर्शन इत्यर्थः कुतूहलमस्यास्तीति तत्। अनुरुध्यते रक्षितुमिच्छति, रुधिर्दैवादिक इच्छार्थः। प्रणयं वा अर्हामि तव प्रणययोग्या वा भवामि। इमं मल्लक्षणं जनं। समारूढ उत्पन्नः। अभ्यर्थनां तत्र गमनप्रार्थनाम्।

(फ) मयेति। अतिरमणीयताया निधानमाश्रयम्। मन्निर्विशेषां सर्वथैव मम समानां। कुमत्या कुत्सितविचारेण यो मनोमोहश्चित्तभ्रमः 'त्वयि सशोकायां नाहं पाणिं ग्राहयिष्यामि' इत्येवंरूपस्तस्य विलसितं आचरितं अपनीय उपदेशेन दूरीकृत्य, एकं अहो दिवसं विश्रम्य, श्वोभूते परदिने।

(ब) ममेति। हि निश्चितं। निष्कारणबान्धवं मद्दुःखश्रवणेन दुःखितचित्तत्वादुपदेशमाङ्गीकाराच्चेति भावः, भवन्तमालोक्यैव विद्यमानाया मम दुःखान्धकारभाराक्रान्तेन चेतसा, महतो दीर्घात् कालात् परं उच्छ्वसित-

আর কাদম্বরীও সরলচিত্তা ও অত্যন্ত উদার-প্রকৃতি; অতএব সে স্থানে গমন করাটা যদি অত্যন্ত পরিশ্রমকর বিবেচনা না করেন, কিংবা কোন গুরুতর কার্য্যের ব্যাঘাত না হয়, অথবা পূর্ব্বে যে দেশ দেখেন নাই, তাহা দেখিবার জন্য আপনার মনে যদি কৌতূহল থাকে, কিংবা আপনি যদি আমার অনুরোধ রক্ষা করিতে ইচ্ছা করেন, কিংবা কোন আশ্চর্য্য দর্শন করা যদি আপনার সুখ জন্মায়, অথবা আমি যদি আপনার প্রণয়ের যোগ্য হই, কিংবা যদি এই ব্যক্তিকে প্রত্যাখ্যান করা অনুচিত মনে করেন, অথবা আপনার সহিত আমার যদি পরিচয়ের লেশও জন্মিয়া থাকে, কিংবা এই ব্যক্তি যদি আপনার অনুগ্রহের যোগ্য হয়, তাহা হইলে আপনি আমার এই প্রার্থনা নিষ্ফল করিতে পারিবেন না। (ফ) অত্যন্ত সৌন্দর্য্যের আবাসভূমি সেই হেমকূট পর্ব্বতে আমারই সহিত গমন করিয়া, সেখানে আমারই মতন কাদম্বরীকে দেখিয়া, তাহার কু-সংস্কার-জনিত চিত্তভ্রমের আচরণ দূর করিয়া এবং একটি দিনমাত্র সেখানে বিশ্রাম করিয়া আবার পরদিন ফিরিয়া আসিবেন। (ব) আপনি বিনা কারণেই আমার বন্ধু হইয়াছেন; সুতরাং আপনাকে দেখিয়াই আমার চিত্ত দুঃখান্ধকারে পরিপূর্ণ হইলেও বহুকালের

(१) भवन्मतिः। (२) अतिसुखदायि वा। (३) अत्याश्चर्यदर्शनम्।

(४) अर्हसि वा प्रणयम्,...प्रणयमिमम्।

सितमिव चेतसा, श्रावयित्वा स्ववृत्तान्तमिमं सह्यतामिव गतः शोकः। दुःखितमपि जनं रमयन्ति सज्जनसमागमाः (ब)। परसुखोपपादनपराधीनश्च भवादृशां गुणोदयः" (भ)। इत्युक्तवतीश्चैनां चन्द्रापीड़ोऽब्रवीत्—"भगवति ! दर्शनात्-प्रभृति परवानयं जनः कर्त्तव्येषु यथेष्टमशङ्कितया नियुज्यताम्" इत्यभिधाय तया सहैवोदचलत् (म)।

क्रमेण च गत्वा हेमकूटमासाद्य गन्धर्वराजकुलं, समतीत्य काञ्चनतोरणानि सप्तकक्षान्तराणि कन्यान्तःपुरद्वारमवाप (य)। महाश्वेतादर्शनप्रधावितेन दूरादेव कृतप्रणामेन कनकवेत्रलताहस्तेन प्रतीहारजनेनोपदिश्यमानमार्गः

मिव प्रार्थितमिव, इयन्तं कालं यावन्मृतमिवासोदिति भावः, तथा इमं स्ववृत्तान्तं श्रावयित्वा विद्यमानाया मम शोकः सह्यतां गत इव, "शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्य्यते" इति न्यायादिति भावः। ननु कुत एतदित्याह दुःखितमिति। सज्जनसमागमा दुःखितमपि जनं रमयन्ति आनन्दयन्ति, दर्शनेनैव नवसुखसम्पादनद्वारा चिरन्तनदुःखविध्वंसनादिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(भ) विशेषतश्चाह परेति। भवादृशां गुणोदयो दयादाक्षिण्यादीनां गुणानामभ्युदयः परेषां सुखोपपादनपराधीनः सुखोत्पादनपरायण इत्यर्थः, सुतरां मया सह तत्र गत्वा मामवश्यमेव सुखयिष्यसीति भावः। चन्द्रापीड़स्य रूपादिगुणग्राममवलोक्यावश्यमेव कादम्बरी परिमुह्यन्ती कृतमपि शपथं परिहरिष्यतीति मत्वा चन्द्रापीड़ं तत्र नेतुमेतावान् महाश्वेतायाः प्रयत्न इति बोध्यम्।

(म) इतीति। एनां महाश्वेताम्। परवान् पराधीनः सौजन्यातिशयात्तवाधीन इत्यर्थः।

(य) क्रमेणेति। किञ्च, चन्द्रापीड़ो गत्वा, गन्धर्वराजस्य चित्ररथस्य कुलं वाटी यत्र तादृशं हेमकूटं पर्वतमासाद्य, काञ्चनानां तोरणानि येषु तादृशानि सप्तकक्षान्तराणि समतीत्येत्यन्वयः।

(र) महेति। महाश्वेताया दर्शनेन प्रधाविता द्रुतमागतस्तेन। कनकवेत्रलताः स्वर्णखचितवेत्रयष्टयो हस्तेषु यस्य तेन, प्रतीहारजनेन दौवारिकगणेन उपदिश्यमानो मार्गः पन्था यस्य सः, कुमारश्चन्द्रापीड़ः,

---

পর যেন উচ্ছ্বসিত হইয়া উঠিয়াছে এবং আপনাকে নিজের এই বৃত্তান্ত শুনাইয়া সেই শোকটা যেন সহ্য হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছে ; কারণ, সজ্জনের সহিত সংসর্গ দুঃখিত ব্যক্তিকেও আনন্দিত করিয়া থাকে। (ভ) বিশেষতঃ, ভবাদৃশ ব্যক্তিদের গুণগ্রাম, সর্ব্বদাই পরের সুখ-সম্পাদনে প্রবৃত্ত থাকে।" মহাশ্বেতা এই কথা বলিলে চন্দ্রাপীড় তাহাকে বলিলেন,—"ভগবতি ! আপনার সন্দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়া এই ব্যক্তি আপনার অধীন হইয়া পড়িয়াছে ; সুতরাং আপনি নিঃশঙ্কচিত্তে ইচ্ছানুসারে এই ব্যক্তিকে কর্ত্তব্য কার্য্যে নিযুক্ত করিতে পারেন।" এই কথা বলিয়া চন্দ্রাপীড় মহাশ্বেতার সঙ্গেই চলিলেন।

(য) ক্রমে যাইয়া, গন্ধর্ব্বরাজের রাজধানী হেমকূট পর্ব্বতে উপস্থিত হইয়া, স্বর্ণ-তোরণ-সমন্বিত সাতটি কক্ষা অতিক্রম করিয়া কন্যাপুরের দ্বারে উপস্থিত হইলেন। (র) তখন স্বর্ণ-খচিত-বেত্রযষ্টিধারী দৌবারিকগণ, মহাশ্বেতাকে দেখিয়া দ্রুত আসিয়া দূর হইতেই প্রণাম করিয়া,

प्रविश्य (र) असंख्येयनारीशतसहस्रसम्बाधम्, (१) स्त्रीमयमपरमिव जीवलोकम्, (ल) इयत्तां ग्रहीतुमेकत्र त्रैलोक्यस्त्रैणमिव संगृहीतम्, (२) (व) अपुरुषमिव सर्गान्तरम्, (श) अङ्गनाद्वीपमिवापूर्वमुत्पन्नम्, (ष) पञ्चममिव नारीयुगावतारम्, (स) अपरमिव पुरुषद्वेषिप्रजापतिनिर्म्माणम्, (ह) अनेककल्प-कल्पनार्थमुत्पाद्य स्थापितमिवाङ्गनाकोषम्, (३) (क्ष) अतिविस्तारिणा

कुमारीपुराभ्यन्तरं ददर्शेति परेणान्वयः। अत्र क्लीवलिङ्गद्वितीयैकवचनान्तपदानि कुमारीपुराभ्यन्तरमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। महाश्वेताप्रत्ययाच्चन्द्रापीडं न कश्चिन्निवारयामासेति बोध्यम्।

(र) असमिति। असंख्येयानि संख्यातुमशक्यानि नारीणां शतसहस्राणि लक्षाणि तैः सम्बाधं सङ्कीर्णं व्याप्तम्। इदञ्च अङ्गनाकोषमित्यन्तं यावत् प्रत्येकविशेषणं प्रत्येव हेतुरिति बोध्यम्। तथा च अतएव स्त्रीमयमपरं जीवलोकमिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) इयत्तामिति। इयत्तां ग्रहीतुं एतावत्यो नार्य्य इति संख्यां ज्ञातुं विधिना एकत्र संगृहीतमानीतं त्रैलोक्यस्य त्रिभुवनस्य स्त्रैणं स्त्रीसमूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा।

(व) अपुरुषमिति। अपुरुषं सर्गान्तरमिव पुरुषवर्जितामन्यां विधेः सृष्टिमिव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा।

(श) अङ्गनेति। अपूर्वं नूतनमुत्पन्नं अङ्गनानां स्त्रीणां द्वीपमिव। जात्युत्प्रेक्षा।

(ष) पञ्चममिति। पञ्चमं नारीयुगावतारमिव। चत्वारः सत्यादियुगावतारास्तु सन्त्येव किन्त्वसौ नारीमयस्तत्पञ्चम इव प्रतीत इति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा।

(स) अपरमिति। अपरमन्यत् पुरुषद्वेषिणः प्रजापतेर्विधातुर्निर्म्माणं सृष्टिमिव। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। पुरुषद्वेषिपदेन केवलस्त्रीनिर्म्माणमेव सूचितम्।

(ह) अनेकेति। अनेककल्पेषु कल्पनार्थं स्त्रीजातिसृष्ट्यर्थं उत्पाद्य विधिना निर्म्माय स्थापितं अङ्गनाकोषं स्त्रीभाण्डागारमिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षा।

অগ্রে অগ্রে পথ বলিয়া দিতে দিতে চলিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিয়া কন্যাপুরের অভ্যন্তরদেশ দেখিতে পাইলেন। (র) দেখিলেন, সেই কন্যাপুর, লক্ষ লক্ষ রমণীগণে পরিপূর্ণ রহিয়াছে; তাহাতে, স্ত্রীময় আর একটি জীবলোকের ন্যায় বোধ হইতে লাগিল; (ল) ত্রিভুবনে কত স্ত্রীলোক আছে তাহার সংখ্যা জানিবার জন্য, বিধাতা যেন ত্রিভুবনের সমস্ত, স্ত্রীলোক একত্র সংগ্রহ করিয়াছিলেন; (শ) পুরুষবর্জ্জিত আর একটি সৃষ্টি বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; (ষ) স্ত্রীলোকময় নূতন আর একটি দ্বীপ যেন উৎপন্ন হইয়াছিল; (স) পঞ্চম নারীযুগ যেন অবতীর্ণ হইয়াছিল; (হ) পুরুষবিদ্বেষী বিধাতার অন্য আর একটি সৃষ্টি বলিয়া বোধ হইতেছিল; (ক্ষ) বিধাতা অন্যান্য কল্পে স্ত্রীলোক সৃষ্টি করিবেন বলিয়া, আগেই তাহার কতকগুলি সৃষ্টি করিয়া স্ত্রীলোকের একটা ভাণ্ডার যেন সেখানে রাখিয়া দিয়া-

---

(१)…सम्बाधः। (२) संगृहीतम्। (३)…कोशम्।

युवतिजन-लावण्यप्रभापूरेण प्लावितदिगन्तरेण सिञ्चतेवामृतरसविसरेण दिवस-मार्द्रीकुर्वतेव भुवनान्तरालं बहुल-(१) प्रभावर्षिणा मरकतमणिमयेन सर्वतः परिगततया तेजोमयमिव, चन्द्रमण्डलसहस्रैरिव निर्म्मितसंस्थानम्, ज्योत्स्नयेव घटितसन्निवेशम्' आभरणप्रभाभिरिव निष्पादितदिगन्तरम्, (क) विभ्रमैरिव कृतसर्व्वोपकरणम्, (ख) यौवनविलासैरिवोत्पादितावयवम्, (ग) रतिविल-सितैरिव रचित-(२) सञ्चयम्, (घ) मन्मथाचरितैरिव कल्पितावकाशम्, (ङ)

(क) अतीति। अतिविस्तारिणा अतिबहुता, प्लावितानि व्याप्तानि दिगन्तराणि येन तेन, अतएव अमृत-रसविसरेण पीयूषद्रवविताने‍न करणेन दिवसं सिञ्चतेव, तथा अमृतरसविसरेणैव भुवनान्तरालमार्द्रीकुर्व्वतेव स्थितेन, युवतिजनानां लावण्यस्य यः प्रभापूरः कान्तिप्रवाहस्तेन कर्त्रा, तथा बहुलप्रभावर्षिणा मरकतमणिमयेन भूषणेन च कर्त्रा, सर्व्वतः समन्तात् परिगतं व्याप्तं तस्य भावस्तया हेतुना, तेजोमयमिव केवलतेजसा निर्म्मितमिव, चन्द्रमण्डलसहस्रैर्निर्म्मितं संस्थानमाकारो यस्य तदिव, तथा ज्योत्स्नया घटितो निर्म्मितः सन्निवेश आकृति-र्यस्य तदिव, लावण्यप्रभाचन्द्रमण्डलज्योत्स्नानां पाण्डुतासाम्यादिति भावः। तथा आभरणप्रभाभिर्निष्पादितानि दिगन्तराणि यस्य तदिव, भूषणस्य बहुलप्रभावर्षणादिति भाव। अत्र सिञ्चतेव आर्द्रीकुर्व्वतेवेति द्वे क्रियोत्प्रेक्षे तथा तेजोमयमिवेति निष्पादक्रियार्थे मयट्प्रत्ययात्तस्याप्युत्प्रेक्षणात् निर्म्माणघटननिष्पादनानामपि क्रियाणामेवोत्-प्रेक्षणात्ता अपि चतस्रः क्रियोत्प्रेक्षास्तासाञ्च परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ख) विभ्रमैरिति। विभ्रमैर्विलासैः कृतानि सर्व्वाणि उपकरणानि सामग्री यस्य तदिव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ग) यौवनेति। यौवनविलासैरुत्पादिता अवयवाः प्रदेशा यस्य तदिव। क्रियोत्प्रेक्षा। पूर्व्वविभ्रमाः कृत्रिमाः, अत्र तु यौवनविलासाः स्वाभाविका इति भेद।

(घ) रतीति। रतेः कामभार्य्यायाः विलसितैर्विलासैः रचितो निर्म्मितः सञ्चयो व्यापारसमूहो यस्य तदिव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ङ) मन्मथेति। मन्मथाचरितैर्मदनाचरणैः कल्पितावकाशं निर्म्मितप्रदेशमिव। क्रियोत्प्रेक्षा।

ছিলেন ; (ক) যুবতিগণের লাবণ্যকান্তির বিস্তৃত প্রবাহ দিগ্‌দিগন্তর প্লাবিত করিয়া, অমৃত রসের ধারাতেই যেন দিনটাকে সিক্ত করিতেছিল এবং জগতের মধ্যস্থান সকল যেন আর্দ্র করিতে-ছিল এবং মরকতমণিময় আভরণ হইতে প্রচুর প্রভা নির্গত হইতেছিল ; সুতরাং সেই লাবণ্য কান্তির প্রবাহে এবং সেই অলঙ্কারের আলোকে সকল দিক ব্যাপ্ত ছিল বলিয়া, সেই কন্যাপুরের ভিতরটা যেন আলোকময় বলিয়া বোধ হইতে লাগিল, এবং তাহার অংশগুলিকে বিধাতা যেন সহস্র চন্দ্রমণ্ডলদ্বারা নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন ; সমস্ত স্থানটাই যেন জ্যোৎস্নাদ্বারা প্রস্তুত করিয়াছিলেন এবং অলঙ্কারের আলোকেই যেন দিগ্‌দিগন্তর সৃষ্টি করিয়াছিলেন বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল ; (খ) কৃত্রিম হাব-ভাবেই যেন তাহার সমস্ত সামগ্রী তৈয়ার করা হইয়াছিল ; (গ) স্বাভাবিক যৌবনবিলাসেই যেন তাহার সমস্ত অংশ নির্ম্মিত হইয়াছিল ; (ঘ) রতিদেবীর বিভ্রমদ্বারাই যেন কার্য্যকলাপ সৃষ্টি করা হইয়াছিল ; (ঙ) কামদেবের আচরণেই যেন ভিতরটা

(१) बहुल…। (२) विरचित…।

अनुरागेणेवानुलिप्तसकलप्रदेशम्, (१) (च) शृङ्गारमयमिव, सौन्दर्य्यमयमिव, सुरताधिदैवतमयमिव, कुसुमशरमयमिव, कुतूहलमयमिव, आश्चर्य्यमयमिव, सौकुमार्य्यमयमिव, कुमारः कुमारीपुराभ्यन्तरं ददर्श। (छ)

अतिबहुलतया च तस्य कन्यकाजनस्य समन्तादाननद्युतिभिरिन्दुबिम्बवृष्टिमिव पतन्तीम्, (ज) अपाङ्गविक्षेपैस्खलितकुवलयवनमयीमिव क्रियमाणामवनीम्, (झ) अनिभृत-(२) भ्रूलताविभ्रमैः काम-कार्म्मुक-विलास-शतानीव (३) प्रचलितानि, (ञ) शिरसिजकलापान्धकारैर्बहुलपक्ष-प्रदोष-सार्थानिव सम्ब-

---

(च) अन्विति। अनुरागेणानुलिप्तसकलप्रदेशमिव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(छ) शृङ्गारेति। अत्र तु सर्वत्र व्याप्तौ मयट्प्रत्ययात्तस्याश्च क्रियारूपत्वात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) अतीति। किञ्च, चन्द्रापीडः, तस्य कन्यकाजनस्य अतिबहुलतया नितान्तप्रचुरतया हेतुना, आननद्युतिभिस्तस्यैव कन्यकाजनस्य वदनकान्तिभिः करणे, समन्तात् पतन्तीं इन्दुबिम्बवृष्टिमिव अद्राक्षीदिति परेणान्वयः, एवमन्यत्रापि। अत्र मुखकान्तिप्रसरणेषु चन्द्रमण्डलवर्षणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च मुखानां चन्द्रमण्डलोपमा व्यज्यते इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः, अन्यत्राप्येवं ध्वनिरूह्यः।

(झ) अपाङ्गेति। अपाङ्गविक्षेपैः कटाक्षपातैः, अवनीं भूमिं, चलितं यत् कुवलयवनं नीलोत्पलसमूहस्तन्मयीं क्रियमाणामिव। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) अनीति। अनिभृताः स्पष्टा ये भ्रूलतयोर्विभ्रमा नर्त्तनानि तैः, प्रचलितानि बाणक्षेपाय स्पन्दनलक्षणानि, कामकार्म्मुकस्य विलासशतानीव विभ्रमसमूहानिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) शिरसीति। शिरसिजकलापाः केशपाशा एव कृष्णत्वसाम्यादन्धकारास्तैः सम्बध्नतः सम्मिलतः, बहुलपक्षाणां कृष्णपक्षाणां प्रदोषसार्थान् प्रदोषकालसमूहानिव। अत्र निरङ्गकेवलरूपकजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "सार्थौ वणिक्समूहे स्यादपि सङ्घातमात्रके।" इति मेदिनी।

निर्म্মাণ করা হইয়াছিল ; (চ) এবং অনুরাগদ্বারাই যেন সকল স্থান লেপিয়া দেওয়া হইয়াছিল ; (ছ) এবং সেই কন্যাপুরের মধ্যস্থানটা যেন শৃঙ্গারময়, সৌন্দর্য্যময়, ... মদনবাণময়, কৌতুকময়, আশ্চর্য্যময় ও কোমলতাময় ছিল।

(জ) চন্দ্রাপীড় আরও দেখিলেন যে,—সেখানে কন্যারা খুব বেশী সংখ্যায় ছিল বলিয়া, সকল দিকেই তাহাদের মুখের শোভা প্রকাশ পাইতে থাকায় যেন চন্দ্রমণ্ডলের বর্ষা হইতেছিল ; (ঝ) তাহারা কটাক্ষপাত করিয়া ভূতলটাকে যেন নীলোৎপলবনময় করিতেছিল ; (ঞ) প্রকাশ্যভাবে ভ্রূক্ষেপ হইতে থাকায়, বহুতর কামধনুই যেন ঘূর্ণিত হইতেছিল ; (ট) কেশকলাপরূপ অন্ধকার থাকায়, কৃষ্ণপক্ষের অসংখ্য প্রদোষকালই যেন সম্মিলিত

---

(১)...प्रदेशम्। (२) अभिनिभृत...। (३) कामकार्म्मुकवल्लानीव।

মতঃ, (ট) স্মিতপ্রভাভিরুৎফুল্লকুসুম-ধবলানিব বসন্তদিবসান্ সঞ্চরতঃ, (ঠ) শ্বসিতানিলপরিমলৈর্মলয়মারুতানিব পরিভ্রমতঃ, (ড) কপোলমণ্ডলালোকৈর্মাণিক্যদর্পণসহস্রাণীব স্ফুরিতানি, (ঢ) করতলরাগেণ রক্তকমলবনবর্ষিণমিব জীবলোকম্, (ণ) করনখকিরণস্ফুরণেন (১) কুসুমায়ুধশরসংহতৈরিব সংচ্ছাদিতানি দিগন্তরাণি, (২) (ত) আভরণকিরণেন্দ্রায়ুধজালকৈরুড্ডীয়মানানীব ভবন-(৩) ময়ূরবৃন্দানি, (থ) যৌবনবিকারৈরুৎপাদ্যমানানীব মন্মথসহস্রাণ্যদ্রাক্ষীৎ। (দ)

উচিতব্যাপারব্যপদেশেন কুমারিকাণাং সখীহস্তাবলম্বেষু পাণিগ্রহণানি,

(ঠ) স্মিতেতি। স্মিতপ্রভাভিঃ, সঞ্চরত উৎফুল্লকুসুমধবলান্ বসন্তদিবসানিব। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ড) শ্বসিতেতি। শ্বসিতানিলপরিমলৈর্নিশ্বাসবায়ুসৌরভৈঃ, পরিভ্রমতো মলয়মারুতানিব। জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ঢ) কপোলেতি। কপোলমণ্ডলানামালোকৈর্দীপ্তিভিঃ স্ফুরিতানি মাণিক্যদর্পণসহস্রাণীব। জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ণ) করেতি। করতলানাং রাগেণ রক্তিম্না, জীবলোকং রক্তকমলবর্ষিণমিব। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ত) করেতি। করনখানাং নখানাং কিরণস্ফুরণেন প্রভাপ্রসরণেন, দিগন্তরাণি কুসুমায়ুধস্য মদনস্য শরসংহতৈঃ সংচ্ছাদিতানীব। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(থ) আভেতি। আভরণকিরণা ইন্দ্রায়ুধানীব অথবা আভরণকিরণা এবেন্দ্রায়ুধানি তেষাং জালকৈরুৎপতিতৈঃ সমূহৈঃ, উড্ডীয়মানানি ভবনময়ূরবৃন্দানীব, তদ্বন্নানাবর্ণবিচিত্রত্বাদিতি ভাবঃ। অত্রোপমারূপকয়োঃ সন্দেহসঙ্করেণ সঙ্কীর্ণো জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(দ) যৌবনেতি। যৌবনবিকারৈঃ কন্যকাজনৈরুৎপাদ্যমানানি মন্মথসহস্রাণীব। জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ধ) উচিতেতি। চন্দ্রাপীড়ঃ, উচিতব্যাপারব্যপদেশেন কর্ত্তব্যকার্য্যকরণচ্ছলেন অতিরিক্তং সুরত-

হইয়াছিল; (ঠ) ঈষৎ হাস্যের প্রভা প্রকাশ পাইতে থাকায়, কতকগুলি বসন্তকালের দিনই যেন প্রস্ফুটিত পুষ্পে ধবলবর্ণ হইয়া বিচরণ করিতেছিল; (ড) নিশ্বাসবায়ুর সৌরভ বহিতেছিল বলিয়া, মলয়বায়ুই যেন পরিভ্রমণ করিতেছিল; (ঢ) কপোলমণ্ডলের প্রভা প্রকাশিত হওয়ায়, অসংখ্য মণিময় দর্পণই যেন দীপ্তি পাইতেছিল; (ণ) পাণিতলের রক্তিমা প্রকাশ পাইতে থাকায়, জগৎসংসার যেন রক্ত পদ্ম বর্ষা করিতেছিল; (ত) নখের কিরণ প্রসারিত হওয়ায়, দিগ্‌দিগন্তর যেন সহস্র সহস্র কামবাণে আবৃত হইয়াছিল; (থ) ইন্দ্রধনুর ন্যায় অলঙ্কারের কিরণসমূহ উত্থিত হইতে থাকায়, গৃহপালিত ময়ূরগণই যেন উড়িতেছিল; (দ) এবং সেই কন্যাগণ যৌবনবিকারেই যেন সহস্র সহস্র কামদেব সৃষ্টি করিতেছিল।

(১) করনখস্ফুরণেন। (২) সংচ্ছাদিতদিগন্তরাণি, সংচ্ছাদিতসমস্তদিগন্ত। (৩) ভুবন…।

वेणुवाद्येषु चुम्बनव्यतिकरान्, वीणासु करहवव्यापारान्, कन्दुकक्रीड़ासु करतलप्रहारान्, भवन-(१) लता-सेक-कलस-कण्ठेषु भुजलतापरिष्वङ्गान् लीलादोलासु नितम्ब-स्तन-(२) प्रेङ्खितानि, ताम्बूलवीटिकावखण्डनेषु दशनोपचारान्, वकुलविटपेषु मधुगण्डूषप्रचारान्, अशोकतरुताड़नेषु चरणाभिघातान्, उपहारकुसुमस्खलनेषु सीत्कारान्, (३) अतिरिक्तं सुरतमिवाभ्यस्यन्तीनामपश्यत्। (ध)

यत्र च (४) कन्यकाजनस्य कपोलतललोक एव मुखप्रक्षालनम्, लोचनान्येव कर्णोत्पलानि, हसित-च्छवय एवाङ्गरागाः, निश्वासाः (५) एवाधिवासगन्धप्रयुक्तयः, अधरद्युतिरेव कुङ्कुमानुलेपनम्, (६) आलापा एव तन्त्रीनिनादाः, भुजलता एव चम्पकमालाः, (७) करतलान्येव लीलाकमलानि, स्तना एव

मभ्यस्यन्तीमामिव तासां कुमारिकाणामेतान्याचरणान्यपश्यदित्यन्वयः। तान्येव सुरतकालीनाचरणानि प्रदर्शयितुमाह सखीत्यादि। सखीहस्तावलम्बेषु सखीकर्त्तृकहस्तधारणेषु, पाणिग्रहणानि सुरतकालीनवल्लभकर्त्तृकहस्तधारणानि। वेणुवाद्येषु वंशीवादनेषु चुम्बनव्यतिकरान् चुम्बनव्यापारान्। वीणासु वीणावादनेषु, करकरुहव्यापारान् नखक्षतानि। कन्दुकक्रीड़ासु गेण्डुकखेलासु। भवनलतानां ये सेककलसाः सेचनकुम्भास्तेषां कण्ठेषु, भुजलताभ्यां परिष्वङ्गानालिङ्गनानि। लीलादोलासु तत्र दोलनेष्वित्यर्थः, नितम्बयोः स्तनयोश्च प्रेङ्खितानि आस्फालनानि। ताम्बूलवीटिकानां अवखण्डनेषु चर्वणेषु, दशनोपचारान् दन्तव्यापारणानि। वकुलविटपेषु वकुलवृक्षेषु, मधुगण्डूषप्रचारान् तत्कुसुमविकासनाय मुखपूर्णमद्यप्रक्षेपान्। उपहाराय कुसुमानि उपहारकुसुमानि शोभासम्पादनाय भूतलन्यस्तानि पुष्पाणि तेषु स्खलनेषु पतनेषु, दृढतरदन्तप्रहारादिषु पीड़ाव्यञ्जकाः 'सीत्' इत्येवं शब्दाः सीत्कारास्तान्। उपहारकुसुमस्खलनेषु तु भूतलपातसम्भावनाभयात् सीत्कारप्रयोग इति बोध्यम्। अत्र सापह्नवक्रियोत्प्रेक्षालङ्कार इति दिक्।

(न) यत्रेति। कपोलतललोक एव गण्डस्थलप्रभैव, मुखं प्रक्षाल्यते अनेनेति मुखप्रक्षालनं तदुपयोगिजलस्वरूपम्। एतेन कपोलतलानां लावण्यातिशयो व्यज्यते। लोचनान्येव कर्णोत्पलानि, इत्यनेन लोचनानां नीलत्वं दीर्घत्वञ्च सूच्यते। हसितच्छवय एव हास्यद्युतय एव अङ्गरागाः। एतेन हसितच्छवीनामतीव वैशद्यं द्योत्यते। निश्वासा एव अधिवासगन्धप्रयुक्तयः शरीरसंस्काराय गन्धप्रयोगाः। "संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासन"मित्यमरः। एतेन निश्वासानामतीव सौगन्ध्यं ध्वन्यते। अधरेत्यादिना तयोरतीव

(ध) ... ... ।

(न) এবং যেখানে কন্যাগণের গণ্ডস্থলের লাবণ্যই মুখপ্রক্ষালনের জল, নয়নযুগলই কর্ণের উৎপল, হাস্যের শোভাই অঙ্গরাগ, নিশ্বাসবায়ুই শরীর-সংস্কারে গন্ধপ্রয়োগ, ওষ্ঠের প্রভাই কুঙ্কুম-লেপন, পরস্পর আলাপই তন্ত্রীর ঝঙ্কার, ভুজলতাই চম্পকপুষ্পের মালা, পাণিতলই

---

(१) भुवन...। (२)...स्थल...। (३) शीत्कारान्। (४) यस्य च। (५) निःश्वासाः।
(६) कुङ्कुमसुखानुलेपनं। (७) चम्पकवैकक्ष्यमालाः।

दर्पणाः, निजदेहप्रभैवांशुकावगुण्ठनम् जघनस्थलान्येव विलासमणिशिलातलानि, कोमलाङ्गुलिराग एव चरणालक्तकरसः, नखमणिमरीचय एव कुट्टिमोपहार-कुसुमप्रकराः। (न)

यत्र चालक्तकरसोऽपि चरणातिभारः, वकुलमालिकामेखलाकलनमपि गमन-विघ्नकरम्, अङ्गरागगौरवमप्यधिकश्वासनिमित्तम्, अंशुकभारोऽपि ग्लानिकारणम्, मङ्गलप्रतिसरवलयविधृतिरपि करतलविधुतिहेतुः, अवतंसकुसुमधारणमपि श्रमः, कर्णपूर-कमल-मधुकर-पक्ष-पवनोऽप्यायासकरः। (प)

रक्तत्वं सूच्यते। आलापा इत्यादिना तेषां परममधुरस्वरत्वं द्योत्यते। भुजलतेत्यादिना तासां नितान्त-कोमलगौरत्वं प्रत्याय्यते। लीलार्थानि कमलानि लीलाकमलानि। एतेन करतलानामारक्तत्वं गम्यते। स्तना इत्यादिना तेषां स्वच्छत्वं व्यज्यते। अंशुकावगुण्ठनं वस्त्रावरणम्। एतेन देहप्रभाप्राचुर्य्यं सूच्यते। जघनेत्यादिना तेषां विस्तीर्णता उज्ज्वलता निर्म्मलता च ध्वन्यते। कोमलानामङ्गुलीनामर्थाच्चरणाङ्गुलीनां रागः स्वाभाविकरक्तिमैव चरणालक्तकरसः। एतेन रागातिशयो व्यज्यते। नखमणीनां चरणनखार्पितां भरणरत्नानां मरीचय किरणा एव कुट्टिमेषु बद्धभूतलेषु उपहारकुसुमप्रकराः शोभासम्पादनाय विकीर्णपुष्प-निवहा। एतेन नखमणिमरीचीनां पदे पदे पुञ्जीभावो धन्यते। सर्व्वत्र यथासम्भवमासीदासन्निति वा क्रियापदं योज्यम्। अत्र प्रत्येकवाक्य एव "मुखं तव कुरङ्गाक्षि! सरोजमिति नान्यथा" इति साहित्यदर्पणो-दाहृतवत् समासाभावेऽपि निरङ्गकेवलरूपकमलङ्कारः।

(प) यत्रेति। अलक्तकरसोऽपि चरणयोरलक्तकरसलेपोऽपि। वकुलमालिका वकुलकुसुममालेव मेखला काञ्ची तस्याः कलनमपि कट्यां धारणमपि गमनविघ्नकरं, नितान्तभारबोधादिति भावः। अङ्ग-रागगौरवमपि गात्रलिप्ताङ्गरागद्रव्यभारोऽपि अधिकश्वासनिमित्तम्, परिश्रमजनकत्वादित्याशयः। अंशुकभारोऽपि परिहितसूक्ष्मवसनभारोऽपि। मङ्गलप्रतिसरो माङ्गलिकहस्तसूत्रमेव वलयं तस्य विधृतिर्धारणमपि करतल-विधुतिहेतुः हस्तकम्पनकारणम्, भारातिशयानुभवादित्यभिप्रायः। श्रमः श्रमजनकं, भारबोधादिति भावः। कर्णपूरकमलेषु कर्णाभरणीभूतपद्मेषु ये मधुकरास्तेषां पक्षपवनोऽपि पक्षकम्पनजनितवायुरपि आयासकरः, आधिक्यबोधादित्याशयः। सर्व्वत्र आसीदिति शेषः। अत्र प्रत्येकवाक्य एव असम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्ति-रलङ्कारः। तेन च तासां कुमारीणामतीव सौकुमार्य्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

লীলাপদ্ম, স্তনমণ্ডলই দর্পণ, নিজদেহের কান্তিই বস্ত্রাবরণ, নিতম্বমণ্ডলই বিলাসের মণিশিলা, কোমল অঙ্গুলী সমূহের রক্তিমাই চরণের অলক্তক রস এবং নখের উপরে প্রদত্ত রত্নের কিরণই ভূতল-বিক্ষিপ্ত পুষ্প ছিল।

(প) আর যেখানে, আলতার রসও পায়ে ভার বোধ হইত, বকুলফুলের মালার চন্দ্রহার ধারণও গমনের বিঘ্ন করিত, অঙ্গরাগের ভারও অত্যন্ত শ্বাসের কারণ ছিল, সূক্ষ্ম বস্ত্রের ভারও গ্লানির কারণ হইত, মাঙ্গলিক হস্তসূত্র ধারণও হস্ত কম্পনের হেতু ছিল, মস্তকে পুষ্পধারণও

तथा च यत्र सखीदर्शनेष्वकृतहस्तावलम्बनमुत्थानमतिसाहसम्, प्रसाधनेषु हारभारसहिष्णुता स्तनकार्कश्यप्रभावः, कुसुमावचयेषु द्वितीयकुसुम-(१) ग्रहणमप्ययुवतिजनोचितम्, कन्यकाविज्ञानेषु माल्यग्रथनम् (२) असुकुमारजनव्यापारः, देवताप्रणामेषु मध्यभागभङ्गो नातिविस्मयकरः। (फ)

(फ) अथ प्रकारान्तरैरपि तासामतिसौकुमार्य्यं प्रतिपादयितुमाह तथाचेति। तथा च अपि चेत्यर्थः। सखीदर्शनेषु नवागतासु सखीषु दृष्टास्वित्यर्थः, न कृतं सत्वरत्वेनावसराभावान्न विहितं हस्तावलम्बनं परिचारिकाया हस्तधारणं यस्मिन् तत्तादृशं यदुत्थानं अभ्यर्थनार्थं गात्रोत्थानं तदप्यतिसाहसं हठकारित्वम्। एतेन दाक्षिण्यातिशयः सौकुमार्य्यातिशयश्च ध्वन्यते। प्रसाधनेषु अलङ्करणेषु, या हारस्य मुक्तामालाया भारसहिष्णुता सा स्तनकार्कश्यप्रभावः केवलयोः स्तनयोरेव कठिनताया माहात्म्यं, न पुनरन्याङ्गानामिति भावः। एतेनान्येषामङ्गानां कोमलतातिशयः स्तनयोः काठिन्यातिशयश्च व्यज्यते। कुसुमावचयेषु पुष्पचयनव्यापारेषु, द्वितीयकुसुमग्रहणं एकस्मात् परं अपरं पुष्पचयनमपि अयुवतिजनोचितं, अपि तु कठिनपुरुषोचितमेवेत्यर्थः। एतेन मार्द्दवातिशयो द्योत्यते। कन्यकाविज्ञानेषु तत्रत्यकन्याजनोचितशिल्पकलासु मध्य यन्माल्यग्रथनं पुष्पमालामात्रगुम्फनं तदपि असुकुमारजनव्यापारः कठिनजनकार्य्यम्। एतेनापि सौकुमार्य्यातिशयः सूच्यते। देवताप्रणामेषु देवताभ्यो नमस्कारकालेषु, मध्यभागभङ्गः कटिदेशस्य द्वैधीभावो यन्नाभवत्, स द्वैधीभावाभावः अतिविस्मयकरः, तासां कटिदेशा ईदृशक्षीणा आसन्, यन्नमस्कारवेलायां मस्तकनमने तद्भङ्गसम्भावनैवासीत्, सुतरां यत्तद्भङ्गो न बभूव तदतिविस्मयकरमेवेति भावः। अथवा मध्यभागभङ्गः कटिदेशद्वैधीभावः, नातिविस्मयकरो नाधिकाश्चर्य्यजनकः, अतिकृशत्वेन सम्भवपरत्वात्, नमनमात्रेण शरीरस्यैव भङ्ग इति कियद्विस्मयकरत्वभवदेवेति भावः, अतएव अतिशब्दप्रयोगोऽपि सङ्गच्छते। एतेन कटिदेशानामतीव क्षीणत्वं ध्वन्यते। अत्रापि प्रत्येकवाक्य एव यथायोगमसम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्तिरलङ्कारः।

পরিশ্রম জন্মাইত এবং কর্ণালঙ্কার-পদ্মের উপরে উপবিষ্ট ভ্রমরগণের পক্ষবায়ুও কন্যাগণের ক্লেশ জন্মাইত।

(ফ) এবং যেখানে কোন কোন কন্যা নবাগত সখীদিগকে দেখিয়া পরিচারিকাদের হস্ত ধারণ না করিয়াই যে গাত্রোত্থান করিত, তাহা অত্যন্ত সাহসের কার্য্য করিয়াছে, বলিয়া অন্যান্যে বিবেচনা করিত। অলঙ্কার পরিবার সময় যে মুক্তামালার ভার সহ্য করিতে পারিত তাহা কেবল স্তনযুগলের কঠিনতার প্রভাবে। ফুল তুলিবার সময় যে একটি ফুল তুলিয়া আর একটি ফুল তোলা, তাহাও যুবতীদের পক্ষে অসম্ভব ছিল। কন্যাদের শিল্পকার্য্যের মধ্যে, কেবল যে মালা গাঁথা, তাহাও কঠিন লোকের কার্য্য বলিয়াই বিবেচিত হইত। আর দেবতাদের নমস্কার করিবার সময় যে, সেই কন্যাগণের কটিদেশ একেবারে ভাঙ্গিয়া যাইত না, তাহা অত্যন্ত আশ্চর্য্যজনক বলিয়া বোধ হইত।

---

(१)...पुष्प...। (२) माल्यग्रन्थनं।

तस्य चैवंविधस्य किञ्चिदभ्यन्तरमतिक्रम्य इतस्ततश्च परिभ्रमतः कादम्बरी-प्रत्यासन्नस्य परिजनस्य शुश्राव तांस्तानतिमनोहरानालापान् (ब)। तथाहि "लवलिके! कल्पय केतकीधूलिभिर्लवलीलतालवालमण्डलानि (भ)। सागरिके! गन्धोदक-कनक-दीर्घिकासु (१) विकिर रत्नवालुकाम् (म)। मृणालिके! कृत्रिमकमलिनीषु कुङ्कुमरेणुमुष्टिभिश्छुरय यन्त्रचक्रवाकमिथुनानि (२) (य)। मकरिके! कर्पूरपल्लवरसेनाधिवासय गन्धपात्राणि (र)। रजनिके! तमाल-(३) वीथिकान्धकारेषु निधेहि मणिप्रदीपान् (४) (ल)। कुमुदिके! स्थगय शकुनि-कुलरक्षणाय मुक्ताजालैर्दाडिमीफलानि (व)। निपुणिके! लिख (५) मणि-

(ब) तस्येति। तस्य कुमारीपुरस्य। कादम्बर्याः प्रत्यासन्नस्य सर्वदा सन्निहितस्य।

(भ) तथाहीति। लवलिक इति कस्याश्चित् सम्बोधनम्। एवमन्यत्रापि। केतकीधूलिभिः केतकी-कुसुमपरागैः, लवलीलतानां यान्यालवालानि तेषां मण्डलानि उपरि वेष्टनानि कल्पय रचय।

(म) सागेति। गन्धोदककनकदीर्घिकासु सुरभिजलपूर्ण-स्वर्णपट्टवेष्टितखातवापीषु।

(य) मृणेति। कृत्रिमकमलिनीषु कृत्रिमपद्ममयवापीषु। यन्त्रचक्रवाकमिथुनानि कृत्रिमयन्त्रात्मक-चक्रवाकपक्षिदम्पतिगणान्। छुरय रञ्जय।

(र) मकेति। कर्पूरपल्लवयो रसेन द्रवेण, अधिवासय अधिकसुरभीणि कुरु।

(ल) रजेति। तमालवीथिकानां तमालतरुश्रेणीनां अन्धकारेषु देशेषु। निधेहि स्थापय।

(व) कुमुदिक इति। शकुनिकुलेभ्यः पक्षिगणेभ्यो रक्षणाय। स्थगय आवृणु।

(ब) এই জাতীয় সেই কন্যাপুরের মধ্যে, চন্দ্রাপীড় কিছু দূর অতিক্রম করিয়া, ইতস্ততঃ বিচরণকারী কাদম্বরীর আসন্ন পরিচারিকাগণের নানাবিধ মনোহর আলাপ শুনিতে পাইলেন। (ভ) যথা—"লবলিকে! কেতকীপুষ্পের রেণুদ্বারা লবলীলতার আলবালগুলির উপরে মণ্ডল (গোলাকার ভিত্তি) নির্ম্মাণ কর। (ম) সাগরিকে! সুগন্ধিজলে পরিপূর্ণ সোণার দীঘিগুলিতে রত্নের বালি ছড়াইয়া দাও। (য) মৃণালিকে! কৃত্রিম-পদ্মময় সরোবরে যে সকল যন্ত্রময় (কলের) চক্রবাক ও চক্রবাকী আছে, তাহাদিগকে মুটে মুটে কুঙ্কুমরেণু দিয়া রঞ্জিত কর। (র) মকরিকে! কর্পূরের জল ও পল্লবের রস দিয়া গন্ধদ্রব্যের পাত্রগুলিকে সুবাসিত কর। (ল) রজনিকে! তমালতরুশ্রেণীর অন্ধকারে মণিময় দীপগুলিকে রাখিয়া দাও। (ব) কুমুদিকে! পক্ষিগণ হইতে রক্ষা করিবার নিমিত্ত দাড়িমফলগুলিকে মুক্তাময় জালে আচ্ছাদিত কর। (শ) নিপুণিকে! মণিময় পুত্তলিকাগুলির স্তনমণ্ডলে

(१) गन्धोदकदीर्घिकासु। (२) क्वचित् यन्त्रपदं नास्ति। (३) भवनतमाल...।
(४) मणिदीपान्। (५) लिखय।

शालभञ्जिकास्तनेषु कुङ्कुमरसपत्रभङ्गान् (श)। उत्पलिके! परामृश कनक-सम्मार्जनीभिः (१) कदलीगृहमरकतवेदिकाम् (ष)। केसरिके! सिञ्च मदिरारसेन वकुलकुसुममालागृहाणि (स)। मालतिके! पाटलय सिन्दूर-रेणुना कामदेवगृहदन्तवलभिकाम् (ह)। नलिनिके! पायय कमलमधुरसं भवनकलहंसान् (क्ष)। कदलिके! नय धारागृहं गृहमयूरान् (क)। कमलिनिके! प्रयच्छ चक्रवाकशावकेभ्यो मृणालक्षीररसम् (ख)। चूतलतिके! देहि पञ्जरपुंस्कोकिलेभ्यश्चूतकलिकाङ्कुराहारम् (ग)। पल्लविके! भोजय मरिचाग्रपल्लवदलानि भवनहारीतान् (घ)। लवङ्गिके! विक्षिप (२) चकोर-

(श) निपुणिके इति। मणिशालभञ्जिकानां मणिनिर्म्मितस्त्रीपुत्तलिकानां स्तनेषु कुङ्कुमरसैः पत्रभङ्गान् पत्रावलीः, लिख चित्रय।

(ष) उत्पलिके इति। कदलीगृहस्य उद्यानस्थरम्भामण्डपस्य मरकतवेदिकां, परामृश मार्जय।

(स) केसेति। मदिरारसेन मद्यद्रवेण, वकुलकुसुममालागृहाणि वकुलपुष्पमाल्यालङ्कृतभवनानि।

(ह) मालेति। कामदेवगृहस्य दन्तवलभिका गजदन्तनिर्म्मितचूडा ताम्, पाटलय आरक्तीकुरु।

(क्ष) नलीति। कमलमधुरसं पद्ममकरन्दद्रवम्।

(क) कदेति। धारागृहं जलोद्गारयन्त्रसमन्वितं भवनम्।

(ख) कमेति। मृणालक्षीररसं पद्ममृणालनिर्य्यासम्।

(ग) चूतेति। पुमांसश्च ते कोकिलाश्चेति पुंस्कोकिलाः, पञ्जरवर्त्तिनः पुंस्कोकिलाः पञ्जरपुंस्कोकिला-स्तेभ्यः, चूतकलिकाङ्कुराहारं आम्रकोरकाङ्कुरमयं खाद्यम्।

(घ) पल्लेति। भवनहारीतान् गृहपालितपक्षिविशेषान्।

(ङ) लवेति। पिप्पलीनां तण्डुलशकलानि अभ्यन्तरस्थबीजखण्डानि।

কুঙ্কুম দিয়া পত্রাবলী চিত্র করিয়া দাও। (ষ) উৎপলিকে! স্বর্ণসম্মার্জ্জনীদ্বারা কদলীগৃহের মরকত-বেদিকাটিকে পরিষ্কার কর। (স) কেসরিকে! মদের জল দিয়া, বকুলফুলের মালার ঘর গুলিকে সিক্ত কর। (হ) মালতিকে! সিন্দূরের রেণু দ্বারা, কামদেবের ঘরের চূড়াটিকে রঞ্জিত করিয়া দাও। (ক্ষ) নলিনিকে! গৃহপালিত কলহংসদিগকে পদ্মমধু পান করাও। (ক) কদলিকে! গৃহপালিত ময়ূরগুলিকে ধারাগৃহে লইয়া যাও। (খ) কমলিনিকে! চক্রবাকশাবকদিগকে মৃণালের রস দাও। (গ) চূতলতিকে! পঞ্জরস্থিত কোকিলদিগকে আম্রকলিকাময় খাদ্য দান কর। (ঘ) পল্লবিকে! গৃহপালিত হারিত পক্ষিগুলিকে মরিচ-পল্লবের দলাগ্র ভোজন করাও। (ঙ) লবঙ্গিকে! চকোরপক্ষীর

(१) कनकसम्मार्जनीभिः। (२) निक्षिप।

पञ्जरेषु पिप्पलीतण्डुलशकलानि (ङ)। मधुकरिके! विरचय कुसुमाभरणकानि (च)। मयूरिके! सङ्गीतशालायां विसर्जय किन्नरमिथुनानि (छ)। कन्दलिके! समारोहय क्रीड़ापर्व्वतशिखरं जीवञ्जीवमिथुनानि (ज)। हरिणिके! देहि पञ्जरशुकसारिकाणामुपदेशम्" (१) इत्येतानि (२) अन्यानि च परिहासजल्पितान्यश्रौषीत् (झ)। तथाहि "चामरिके! मिथ्यामुग्धतां प्रकटयन्ती कमभिसन्धातुमिच्छसि? (ञ)। अयि यौवनविलासैरुन्मत्तीकृते! विज्ञातासि, या त्वं स्तन-कलस-भारावनम्यमानमूर्त्तिर्मणिस्तम्भमयूरानालम्बसे (ट)। परिहासकाङ्क्षिणि! रत्नभित्तिपतितमात्मप्रतिबिम्बमालपसि (ठ)। पवनहृतो-

(च) मध्विति। कुसुमाभरणकानि पुष्पमयानलङ्कारान्। अनुकम्पायां कप्रत्ययः।

(छ) मयूरिक इति। विसर्जय गानकरणार्थं प्रेरय।

(ज) कन्देति। जीवञ्जीवमिथुनानि चकोरपक्षियुगलानि।

(झ) हरीति। इत्येतानि आदेशवचनानि, अन्यानि च परिहासजल्पितानि नर्म्मभाषितानि। एतत् खलु कन्यापुराध्यक्षा सम्बोध्य सम्बोध्य सर्वाः परिचारिकाः स्वे स्वे कर्म्मणि नियोजयतीति बोध्यम्। आसाञ्च प्रायेणैव नामः सार्थकत्वमुपलभ्यते। एतेन कादम्बर्य्या महती खलु विलाससामग्रीसम्पत्तिः सूचिता।

(ञ) परिहासजल्पितानि प्रदर्शयति तथाहीति। मिथ्यामुग्धतामलीकसरलताम्। अभिसन्धातुं भावप्रदर्शनेन प्रतारयितुम्। एतेन कस्मिंश्चित् कटाक्षपातादिकं सूचयित्वा परिहसितम्।

(ट) अयीति। विज्ञातासि यथार्थरूपेण त्वं मयावगतासि। स्तनकलसयोर्भारेण अवनम्यमाना मूर्त्तिर्यस्यास्तादृशी त्वं मणिस्तम्भेषु ये मयूरा मणिनिर्म्मिता एव शिखिनस्तानालम्बसे आश्लिष्यसि। एतेन स्तनकण्डूयानिवृत्तये त्वं मणिमयूरानप्याश्लिष्यसीति परिहसितम्।

(ठ) परीति। आलपसि परभमिणीति भावः। एतेन त्वं कस्यचिच्चिन्तया बाह्यज्ञानरहितासीति परिहसितम्। अत्रात्मप्रतिबिम्बे अन्ययुवतिभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

পিঞ্জরে পিপ্পলীর বীজখণ্ড সকল নিক্ষেপ কর। (চ) মধুকরিকে! পুষ্পময় আভরণ নির্ম্মাণ কর। (ছ) ময়ূরিকে! কিন্নরদম্পতিগুলিকে সঙ্গীতশালায় ছাড়িয়া দাও। (জ) হে কন্দলিকে! চকোর ও চকোরীদিগকে ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গে আরোহণ করাইয়া দাও। (ঝ) হে হরিণিকে! পঞ্জরস্থিত শুক ও সারিকাগণকে শিক্ষা দাও।" চন্দ্রাপীড়, এই সমস্ত বাক্য এবং অন্যান্য পরিহাসবাক্যও শুনিতে পাইলেন। (ঞ) যথা—"হে চামরিকে! তুমি মিথ্যা মুগ্ধতা প্রকাশ করিয়া, কাহাকে বঞ্চনা করিতে ইচ্ছা করিতেছ? । (ট) হে যৌবনবিলাসোন্মত্তে! তোমাকে বুঝিতে পারিয়াছি, কলসতুল্য স্তনযুগলের ভারে তোমার শরীর অবনত হইয়া পড়িয়াছে, তাই তুমি মণিস্তম্ভের ময়ূরগুলিকে আলিঙ্গন করিতেছ। (ঠ) হে পরিহাসকাঙ্ক্ষিণি! মণিময় ভিত্তিতে তোমার নিজেরই প্রতিবিম্ব পড়িয়াছে, তুমি তাহার

(१)...सारिकोपदेशं। (२) एतानि।

त्तरीयांशुके ! हारप्रभामायासितकरतला सङ्कलयसि (१) (ङ)। मणिकुट्टि-मेषूपहारकमलस्खलनभीते ! निजमुखप्रतिबिम्बकानि परिहरसि (ढ)। निज-सौकुमार्य्य-गर्व्व-खर्व्वित-बिसप्रसून-सौभाग्ये ! (२) जालवातायनपतितपद्मरागा-लोकं प्रति बालातपशङ्कया करतलमातपत्रीकरोषि (ण)। खेद-स्रस्त-(३)

(ङ) पवनेति। पवनेन वायुना हृतं उत्तरीयांशुकं यस्यास्तत्सम्बोधनम्। आयासितकरतला परिश्रमितहस्ता, उत्तरीयांशुकमादातुं मुहुर्मुहुः प्रसारणादिति भावः, हारप्रभां सङ्कलयसि उत्तरीयांशुकं मन्यसे। एतेन हारप्रभायामुत्तरीयांशुकभ्रान्तिं सूचयित्वा परिहसितम्। अतएवात्रापि भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

(ढ) मणीति। उपहारकमलानि शोभासम्पादनाय भूतले विकीर्णानि पुष्पाणि तेषु स्खलनभीता पतनत्रस्ता तत्सम्बोधनम्। मणिकुट्टिमेषु मणिबद्धभूतलेषु, निजमुखप्रतिबिम्बकानि परिहरसि परित्यज्य गच्छसि, तदुपहारकमलभ्रमादिति भावः। एतेनात्ममुखप्रतिबिम्बेषु उपहारकमलभ्रमसूचनेन शून्यहृदयत्वं सूचयित्वा परिहसितं। अत्रापि भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

(ण) निजेति। निजसौकुमार्य्यगर्व्वेण खर्व्वितं न्यूनीकृतं बिसप्रसूनस्य पद्मस्य सौभाग्यं सौकुमार्य्यं यया तत्सम्बोधनम्, अतएव सौकुमार्य्यातिशयाद्बालातपशङ्कयापि आतपत्रीकरणप्रयोजनमुपस्थितमिति भावः। "बिसप्रसूनराजीव-पुष्कराम्भोरुहाणि च" इत्यमरः। जालवातायने जालरूपे गवाक्षे पतितो यः पद्मरागस्य मणेरालोकस्तं प्रति तद्विषये, बालातपशङ्कया नवोदितसूर्य्यालोकभ्रमेण करतलं निजहस्तमेव आतपत्री-करोषि तन्निवारणेच्छया छत्रीकरोषि। अत्र पद्मरागालोके बालसूर्य्यालोकभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः। असम्भव-भ्रान्तिवशाच्चोपहासप्रतीतिः।

সহিতই আলাপ করিতেছ। (ড) হে শূন্যহৃদয়ে ! বায়ু তোমার উত্তরীয় বসন অপহরণ করিয়া নিয়াছে ; এ দিকে তুমি হারের কিরণগুলিকে উত্তরীয় বসন মনে করিয়া তাহা ধরিবার জন্য, হাত খানিকে পরিশ্রান্ত করিতেছ। (ঢ) হে বাহ্যজ্ঞানশূন্যে ! তুমি ভূতল-বিক্ষিপ্ত পদ্মের উপরে পড়িয়া যাইবার ভয় করিতেছ ; সুতরাং মণিময় ভূতলে নিজমুখের যে সকল প্রতিবিম্ব পড়িয়াছে, সে গুলিকেই ঐ সকল পদ্ম মনে করিয়া তাহা পরিত্যাগ করিয়া যাইতেছ। (ণ) হে কোমলাঙ্গি ! তুমি নিজের কোমলতার অভিমানে পদ্মের কোমলতাকেও খর্ব্ব করিয়াছ ; সুতরাং গবাক্ষজালে যে পদ্মরাগমণির আলোক পড়িয়াছে, তাহাকেই নবোদিত সূর্য্যালোক মনে করিয়া তাহা নিবারণ করার জন্য নিজ করতলকে ছত্র করিতেছ। (ত) হে

---

(१) आकलयसि। (२) क्वचिद् इदं सम्पूर्णं सम्बोधनमेव नास्ति।

(३) स्वेदयत्न...।

হস্ত-গলিত-চামরে ! (১) নখমণিময়ূখকলাপমাধুনোষি" ইত্যেতান্যন্যানি চ শৃণ্বন্নেব কাদম্বরীভবনসমীপম্ (২) উপযযৌ (৩)। (ন)

পুলিনায়মানমুপবনলতা-গলিত-কুসুম-রেণু-পটলৈঃ, (থ) দুর্দ্দিনায়মানমনিভৃত-পরভৃত-নখ-ক্ষতাঙ্গ-(৪) সহকারফল-রস-বর্ষৈঃ, (দ) নীহারায়মাণমনিল-বিপ্রকীর্ণবকুল-সেক-সীধু-ধারা-ধূলিভিঃ, (ধ) কাঞ্চনদ্বীপায়মানং

(ন) খেদেতি। খেদেন আন্দোলনপরিশ্রমেণ অলসাৎ শিথিলাৎ হস্তাৎ গলিতং পতিতং চামরং যস্যাস্তৎসম্বোধনম্। অতএব চামরভ্রমেণ নখমণিকিরণজালান্দোলনমিতি ভাবঃ। নখমণীনাং নখরাপিত-ভূষণরত্নানাং ময়ূখকলাপং কিরণজালং আধুনোষি চামরভ্রমেণান্দোলয়সি। অত্র তু বাচকপদাভাবাদ্ভ্রান্তি-মানালঙ্কারো ব্যঙ্গ্যঃ। তাদৃশভ্রমমাশ্রায়মুপহাসঃ। উপযযৌ চন্দ্রাপীড় ইতি শেষঃ।

(থ) পুলিনেতি। উপবনস্য পার্শ্বস্থোদ্যানস্য লতাভ্যো গলিতানি যানি কুসুমরেণুপটলানি তৈঃ, পুলিনায়মানং শুভ্রতাসাম্যাৎ সিকতাময়বদাচরন্তম্। ইতো দ্বিতীয়ান্তপদানি মার্গমদ্রাক্ষীদিতি বক্ষ্যমাণস্য মার্গমিত্যস্য বিশেষণানি। ইদমারভ্য হরিতায়মানমিত্যন্তং যাবৎ প্রত্যেকবিশেষণ এব ক্যঙ্গতোপমালঙ্কারঃ।

(দ) দুর্দ্দিনেতি। অনিভৃতাশ্চপলা যে পরভৃতাঃ কোকিলাস্তেষাং নখৈঃ ক্ষতানি বিদীর্ণানি অঙ্গানি যেষাং তাদৃশানাং সহকারফলানাং পার্শ্ববর্ত্তিনামাম্রফলানাং রসবর্ষৈঃ, দুর্দ্দিনায়মানং বৃষ্টিদিনবদাচরন্তম্।

(ধ) নীহারেতি। অনিলবিপ্রকীর্ণৈর্বায়ুবিক্ষিপ্তৈঃ, বকুলানাং তরূণাং সেকে পুষ্পবিকাসনায় সেচনসময়ে সীধুধারাণাং রমণীমুখমদ্যপ্রবাহাণাং ধূলিভিঃ কণৈঃ, নীহারায়মাণং শুভ্রত্বসাম্যাৎ তুষাররাশিবদাচরন্তম্। "দ্বিরদঘটাকুম্ভভিত্তিসম্ভবেন ধাতুধূলিনেতি প্রয়োগাৎ ধূলিঃ পুংস্যপি" ইত্যমরটীকায়াং রঘুনাথঃ।

(ন) কাঞ্চনেতি। চম্পকানাং পুষ্পাণাং যানি দলানি পত্রাণি তেষামুপহারৈঃ শোভাসম্পাদনায় নিক্ষেপৈঃ, কাঞ্চনদ্বীপায়মানং পীতত্বসাম্যাৎ স্বর্ণদ্বীপবদাচরন্তম্।

অবশে ! চামর আন্দোলন করার পরিশ্রমে তোমার হাতখানি অবশ হইয়াছে, তাই চামরটি পড়িয়া গিয়াছে; সুতরাং তুমি সেই চামর মনে করিয়া নখমণির কিরণগুলিকে আন্দোলিত করিতেছ" এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম আলাপ শুনিতে শুনিতেই চন্দ্রাপীড় যাইয়া কাদম্বরীর বাড়ীর নিকট উপস্থিত হইলেন।

(থ) সেখানে উপস্থিত হইয়া একটি পথ দেখিতে পাইলেন; পার্শ্ববর্ত্তী উদ্যানের লতা হইতে নিপতিত পুষ্পের রেণুসমূহে সে পথটি বালুকাময় চড়ার ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; (দ) চঞ্চল কোকিলগণ নখদ্বারা আমগুলিকে ক্ষত বিক্ষত করিয়াছিল; সুতরাং তাহার রসবৃষ্টিতে সেই পথটিকে বৃষ্টির দিনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ধ) রমণীগণ, পুষ্প-বিকাসের নিমিত্ত বকুল বৃক্ষে মুখমদ্য সেচন করিতেছিল; বায়ু তাহার কণাগুলিকে ইতস্ততঃ ছড়াইয়া দিতেছিল; সুতরাং সেই পথটিকে তুষাররাশির ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ন) চম্পক-

(১)...চমরা। (২) ভবনং। (৩) আযযৌ। (৪)...ক্ষতাঙ্কন...।

चम्पकदलोपचारैः, (१) (प) नीलाशोक(२)वनायमानं कुसुम-प्रकर-पतित-मधुकर-वृन्दान्धकारैः, (फ) तथा च सञ्चरतः स्त्रीजनस्य रागसागरायमाणं चरणालक्तकरसविसरैः, (ब) अमृतोत्पत्तिदिवसायमानमङ्गरागामोदैः (भ) चन्द्रलोकायमानं दन्तपत्रप्रभामण्डलैः, (म) प्रियङ्गुवनायमानं कृष्णागुरुपत्र-भङ्गैः, (३) (य) लोहितायमानं कर्णपूराशोकपल्लवैः, (४) (र) धवलायमानं चन्दनरसविलेपनैः, (ल) हरितायमानं शिरीषकुसुमाभरणैः, (व) अथ

(प) नीलेति। कुसुमप्रकरेषु पतितानि मधुकरवृन्दान्येवान्धकारास्तैर्नीलाशोकवनायमानम्।

(फ) तथेति। तथा च अपि चेत्यर्थः। सञ्चरतः स्त्रीजनस्य चरणालक्तकरसानां विसरैः प्रसरणैः, रागसागरायमाणं रक्तिम्नः समुद्रवदाचरन्तम्।

(ब) अमृतेति। अङ्गरागाणामामोदैः सौरभैः, अमृतोत्पत्तिदिवसवदाचरन्तम्।

(भ) चन्द्रेति। दन्तपत्राणां हस्तिदन्तनिर्म्मितपत्राकारकर्णाभरणानां प्रभामण्डलैः चन्द्रलोकायमानं ज्योत्स्नालोकप्रसरणसाम्याच्चन्द्रलोकवदाचरन्तम्।

(म) प्रियङ्गिति। कृष्णागुरोः पत्रभङ्गैः पत्राकारतिलकविशेषैः, प्रियङ्गुवनायमानं कृष्णत्वसाम्यात् प्रियङ्गुलतावनवदाचरन्तम्।

(य) लोहितेति। कर्णपूरभूता ये अशोकपल्लवास्तैः, लोहितायमानम्।

(र) धवलेति। चन्दनरसविलेपनैश्चन्दनद्रवाङ्गरागैः, धवलायमानम्।

(ल) हरितेति। शिरीषकुसुमाभरणैः, हरितायमानं हरिद्वर्णविशिष्टवदाचरन्तम्।

পুষ্পের দল সকল বিক্ষিপ্ত থাকায় সে পথটি, স্বর্ণময় একটি দ্বীপের ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; (প) নানাস্থানে বিক্ষিপ্ত অন্যান্য পুষ্প সমূহের উপরে ভ্রমরগণ বসিয়া অন্ধকার করিয়াছিল, তাহাতে সেই পথটি নীলবর্ণ অশোকবনের ন্যায় শোভা পাইতেছিল; (ফ) রমণীগণ সর্ব্বদাই বিচরণ করিতেছিল; সুতরাং তাহাদের চরণের অলক্তকরসে সেই পথটিকে রক্তিমার সমুদ্রের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ব) অঙ্গরাগের সৌরভে অমৃতোৎপত্তি-দিনের ন্যায় বোধ হইতেছিল; (ভ) হস্তি-দন্ত-নির্ম্মিত কর্ণভূষণের আলোকে, চন্দ্রলোকের ন্যায় প্রতীতি হইতেছিল; (ম) স্তন-কপোলাদি স্থানে কৃষ্ণাগুরুর পত্রাবলী অঙ্কিত থাকায় প্রিয়ঙ্গুবনের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (য) অশোক-পল্লবের কর্ণভূষণে রক্তবর্ণ বলিয়া বোধ হইতেছিল; (র) চন্দনময় অঙ্গরাগে ধবলবর্ণের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; (ল) আর শিরীষপুষ্পের অলঙ্কারে হরিদ্বর্ণের ন্যায় প্রতীতি হইতেছিল; (ব) তাহার পর, কাদম্বরীর পরিচর্য্যা

---

(१) चम्पकोपचारैः। (२) नीलाशोक...। (३) प्रियङ्गुवनायमानं नीवनातिलकभक्तिभिः, नीलाय-मानं कृष्णागुरुपत्रभङ्गैः। (४) कर्णाशोकपल्लवैः।

सेवार्थमागतेनोभयत ऊर्द्धस्थितेन स्त्रीजनेन प्राकारेणेव लावण्यमयेन कृतदीर्घ-रथ्यामुखाकारं मार्गमद्राक्षीत् (व)। तेन चान्तर्निपतन्तं (१) आभरणकिरणालोकं सम्पिण्डितं नदीवेणिकाजलप्रवाहमिव वहन्तमपश्यत् (श)। तन्मध्ये च प्रति-स्रोत इव गत्वा प्रतीहारीमण्डलाधिष्ठितपुरोभागं श्रीमण्डपं ददर्श। (ष)

तत्र च मध्यभागे पर्य्यन्तरचितमण्डलेनाध उपविष्टेन (२) चानेकसहस्रसंख्येन परिस्फुरदाभरणसमूहेन कल्पलतानिवहेनेव कन्यकाजनेन परिवृताम्, (स)

(व) अथेति। अथानन्तरं। उभयत उभयपार्श्वयोः, लावण्यमयेन प्राकारेणेव प्राचीरेणेव ऊर्द्धस्थितेन दण्डायमानेन स्त्रीजनेन, कृतो दीर्घरथ्यामुखस्येवाकारो यस्य तम्। प्रायेण ग्राम्यदीर्घरथ्यामुखस्योभयपार्श्वयोः प्राचीरं वर्त्तत इति द्रष्टव्यम्। अद्राक्षीत्महाश्वेतया सह गच्छंश्चन्द्रापीड इति शेषः। अत्र काव्योत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(श) तेनेति। वहन्तं प्रचलन्तं, नद्या वेणिकावत् केशपाशवेणीवत् सरल इत्यर्थः यो जलप्रवाह-स्तमिव, तेन मार्गेण, अन्तर्निपतन्तमभ्यन्तरान्निर्गच्छन्तं सम्पिण्डितं पुञ्जीभूतं आभरणकिरणालोकं अपश्यत्। श्रौतोपमालङ्कारः।

(ष) तदिति। किञ्च, तस्य आभरणकिरणालोकस्य मध्ये प्रतिस्रोत इव गत्वा स्रोतसि तदाभिमुख्येन स्रोतोऽन्तरमिव गत्वा चन्द्रापीडः, प्रतीहारीमण्डलेन अधिष्ठितः पुरोभागः सम्मुखदेशो यस्य तं तादृशं, श्रीयुक्तो मण्डपः श्रीमण्डपस्तं नानाविधालौकिकशोभाशोभितमेकं गृहमित्यर्थः ददर्श। अत्राप्युपमालङ्कारः।

(स) तत्रेति। किञ्च चन्द्रापीडः, तत्र श्रीमण्डपे मध्यभागे कादम्बरीं ददर्शेत्यतिदूरवर्त्तिन्या क्रियया ऽन्वयः। अथ स्त्रियां द्वितीयैकवचनान्तपदानि कादम्बरीमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। पर्य्यन्तेषु पर्य्यङ्कप्रान्तभागेषु रचितं कृतं मण्डलं मण्डलाकारेणावस्थानं येन तेन, अधः पर्य्यङ्कनिम्नदेशे उपविष्टेन, अनेकानि सहस्राणि संख्या यस्य तेन, परिस्फुरन् दीप्यमान आभरणसमूहो यस्य तेन, तथा कल्पलतानां निवहेन समूहेनेव स्थितेन च कन्यकाजनेन परिवृताम्। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

করিবার নিমিত্ত উপস্থিত রমণীগণ দুই পার্শ্বেই লাবণ্যময় প্রাচীরের ন্যায় দণ্ডায়মান থাকিয়া সেই পথটির আকৃতিকে কোন দীর্ঘরথ্যার সম্মুখভাগের আকৃতির ন্যায় করিয়াছিল। (শ) চন্দ্রাপীড় আরও দেখিলেন—চুলের বেণীর ন্যায় সরল নদীর স্রোত যেমন প্রবাহিত হয়, সেইরূপ পুঞ্জীভূত অলঙ্কারের কিরণ, সেই পথ দিয়া, ভিতর হইতে নির্গত হইতেছে। (ষ) চন্দ্রাপীড়, প্রতিস্রোতের ন্যায় সেই কিরণপুঞ্জের মধ্য দিয়া যাইয়া, একখানি শ্রীমণ্ডপ দেখিতে পাইলেন ; প্রতীহারীগণ তাহার সম্মুখভাগে অবস্থান করিতেছিল।

(স) চন্দ্রাপীড়, সেই শ্রীমণ্ডপের মধ্যভাগে কাদম্বরীকে দেখিতে পাইলেন ; তাঁহার-পর্য্যঙ্কের প্রান্তভাগে নীচে কল্পলতাসমূহের ন্যায় মণ্ডলাকারে উপবিষ্ট ও দীপ্যমান-অলঙ্কার

---

(१) निपतित। (२)...मण्डलोपविष्टेन।

नीलांशुकप्रच्छदपटप्रावृतस्य नातिमहतः (१) पर्य्यङ्कस्योपाश्रये (२) धवलोपधान-न्यस्त-द्विगुण-भुजलतावष्टम्भेनावस्थिताम्, महावराहदंष्ट्रावलम्बिनीव महीम्, (ङ) विस्तारिणि देहप्रभाजालजले भुजलताविक्षेपपरिभ्रमैः प्रतरन्तीभिरिव चामर-ग्राहिणीभिरुपवीज्यमानाम्, (च) निपतितप्रतिबिम्बतयाधस्तान्मणिकुट्टिमेषु नागैरिवापह्रियमाणाम्, उपान्ते च रत्नभित्तिषु दिक्पालैरिव पृथक् पृथक् (३) नीयमानाम् उपरि मणिमण्डपेष्वमरैरिवोत्क्षिप्यमाणाम्, (छ) हृदयमिव

(ङ) नीलेति। नीलांशुकमेव प्रच्छदपट आस्तरणवस्त्रं तेन प्रावृतस्य उपर्य्याच्छादितस्य, नाति-महतः अनतिबृहतः पर्य्यङ्कस्य उपाश्रये उपरिभागे, धवलं यदुपधानं तस्मिन् न्यस्ता स्थापिता द्विगुणा कफोणिभुग्नतया द्विरावृत्ता या भुजलता वामबाहुवल्ली तस्या अवष्टम्भेन अवलम्बनेन अवस्थितां, अतएव महावराहस्य नारायणवतीयावतारस्य दंष्ट्रावलम्बिनीं महीमिव स्थिताम्, द्विगुणीकृतभुजलताया दंष्ट्रासादृश्या-दिति भावः। अत्रापि श्रौतोपमालङ्कारः।

(च) विस्तेति। विस्तारिणि समन्तात् प्रसारिणि, कादम्बर्य्या देहप्रभाजालमेव जलं तस्मिन्, भुजलताश्चामरग्राहिणीनां बाहुलता एव विक्षेपाः क्षेपणीदण्डास्तेषां परिभ्रमैः सञ्चालनैः, प्रतरन्तीभिर्विच-रन्तीभिरिव स्थिताभिः, चामरग्राहिणीभिः परिचारिकाभिरुपवीज्यमानाम्। अत्र परम्परितरूपकक्रियोत्प्रेक्षयो रङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(छ) निपतितेति। अधस्तान्मणिकुट्टिमेषु निपतितप्रतिबिम्बतया हेतुना, नागैरधोभुवनवासिभिः सर्पैरधस्तादपह्रियमाणामिव। एतेन सौन्दर्य्यातिशयादस्यां नागानामप्यासक्तिः सूचिता। किञ्च, उपान्ते समीपे रत्नभित्तिषु निपतितप्रतिबिम्बतया हेतुना, दिक्पालैरिन्द्रादिभिर्दशभिर्दिगधीश्वरैः, पृथक् पृथक् नीयमानामिव, समन्तादेव प्रतिबिम्बपतनादिति भावः। एतेनास्यां दिक्पालानामप्यनुरागो ध्वनितः। उपरि मणिमण्डपेषु ऊर्द्ध्वस्थमणिमयच्छदिःषु निपतितप्रतिबिम्बतया हेतुना, अमरैः उत्क्षिप्यमाणामिव उत्तोल्य नीयमानामिव। एतेनास्याममराणामपि भावावेशो द्योतितः। अत्र प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

শোভিত সহস্র সহস্র কন্যাগণ, তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (ঙ) অনতিবৃহৎ একখানি পর্য্যঙ্ক, তাহার উপর নীলবর্ণের একখানি আস্তরণ বস্ত্র আস্তৃত, আবার তাহার উপর একটি শ্বেতবর্ণ বালিশ, তাহার উপরে বাম বাহুলতা বক্র করিয়া রাখিয়া, তদবলম্বনে কাদম্বরী অবস্থান করিতেছিলেন ; সুতরাং তখন তাঁহাকে, আদিবরাহের দন্তাবলম্বিনী পৃথিবীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (চ) চামরধারিণী পরিচারিকাগণ, কাদম্বরী-শরীরের কান্তি-জলে নিজ নিজ ভুজলতারূপ ক্ষেপণীদণ্ড (লগি, চৈড়) সঞ্চালনপূর্ব্বক বিচরণ করিতে থাকিয়াই যেন চামর আন্দোলন করিতেছিল। (ছ) নীচের মণিময় ভূমিতে (মেঝে) কাদম্বরীর প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া, পাতালবাসী নাগগণই যেন তাঁহাকে নীচের দিকে অপহরণ করিয়া লইয়া

---

(१) महतः। (२) आश्रये, अपाश्रये। (३) क्वचित् पृथक् पृथगिति नास्ति।

प्रवेशितां महामणिस्तम्भैः, आपीतामिव भवनदर्पणैः, अधोमुखेन श्रीमण्डपमध्योत्कीर्णेन विद्याधरलोकेन गगनतलमिवारोप्यमाणाम्, (ख) चित्रकर्मच्छलेनावलोकनकुतूहलसम्पुञ्जितेन त्रिभुवनेनेव परिवृताम्, (ग) भूषण-रव-प्रनृत्त-शिखि-शत-चित्र-चन्द्रकेण भवनेनापि कौतुकोत्पादितलोचनसहस्रेणेव दृश्यमानाम्, (घ) आत्मपरिजनेनापि दर्शनलोभादुपार्जितदिव्यचक्षुषेवानिमिष-

---

(ख) हृदयमिति। महामणिस्तम्भैः हृदयं प्रवेशितामिव, तेष्वपि प्रतिबिम्बपतनादित्याशयः। भवनदर्पणैर्भित्तिलग्नमुकुरैः, आपीतां गलाधःकृतामिव, तेष्वपि प्रतिबिम्बपतनादिति भावः। तथा अधोमुखेन, श्रीमण्डपस्य मध्ये छदिषि उत्कीर्णेन मणिशिलां निखन्य निर्म्मितेन, विद्याधरलोकेन विद्याधरपुत्तलिकाभिः गगनतलमारोप्यमाणामिव, तेष्वपि प्रतिबिम्बपतनादित्यभिप्रायः। एतेनाचेतनानामपि भावावेशसूचनादस्याः सौन्दर्य्यातिशयः सूचितः। अत्रापि प्रत्येकविशेषणे क्रियोत्प्रेक्षा।

(ग) चित्रेति। चित्रकर्म्मच्छलेन चित्रितमूर्त्तिव्याजेन, अवलोकनकुतूहलात् कादम्बर्य्या एव दर्शनकौतुकात् सम्पुञ्जितेन सञ्जातराशिभावेन, त्रिभुवनेन त्रिभुवनगतसकलपदार्थेन, परिवृतामिव। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षा। एतेन तत्र नानाविधं चित्रं तस्याश्च सौन्दर्य्यातिशयो व्यज्यते।

(घ) भूषणेति। भूषणानां रवेण प्रनृत्तं नर्त्तनाय प्रवृत्तं यत् शिखिशतं मयूरसमूहस्तस्य चित्रचन्द्रका विचित्रमेचका यस्मिन् तेन, भवनेनापि तेन श्रीमण्डपेनापि, कौतुकेन कादम्बरीदर्शनकुतूहलेन उत्पादितं लोचनसहस्रं येन तादृशेनेव सता, चन्द्रकाणां लोचनसदृशत्वादिति भावः, दृश्यमानामिव। क्रियोत्प्रेक्षा। एतेन तस्या मयूरसम्पत्तिः सौन्दर्य्यातिरेकश्च सूच्यते।

(ङ) आत्मेति। आत्मनः परिजनेनापि, तस्या एव दर्शनलोभात् उपार्जितानि तपसा लब्धानि दिव्यानि निर्निमेषत्वात् स्वर्गीयाणि चक्षूंषि येन तादृशेनेव, अनिमिषनयनेन सता, निर्वर्ण्यमानां दृश्यमानाम्। अतोपार्जनक्रियोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा। अस्याः सौन्दर्य्यातिशयश्च व्यज्यते।

যাইতেছিল এবং নিকটবর্ত্তী মণিময় ভিত্তিতে তাঁহার প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া, ইন্দ্রাদি দিক্‌পালগণই যেন তাঁহাকে পৃথক পৃথক্‌ভাবে লইয়া যাইতেছিলেন; উপরের মণিময় ছাদে প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া, অন্যান্য দেবগণই যেন তাঁহাকে তুলিয়া নিতেছিলেন। (খ) বৃহৎ বৃহৎ মণিময় স্তম্ভগুলি যেন কাদম্বরীকে হৃদয়ের ভিতরে প্রবেশ করাইয়াছিল; গৃহের দর্পণগুলি যেন তাঁহাকে পান করিয়াছিল এবং ছাদে খোদিত অধোমুখ বিদ্যাধরমূর্ত্তিগুলি যেন তাঁহাকে আকাশে তুলিয়াছিল। (গ) চিত্রিত প্রতিমূর্ত্তিচ্ছলে ত্রিভুবনই যেন দর্শন কৌতুকবশতঃ পুঞ্জীভূত হইয়া তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (ঘ) অলঙ্কারের শব্দে বহুতর ময়ূর আসিয়া নৃত্য করিতেছিল, তাহাতে তাহাদের বিচিত্র পুচ্ছদেশ সেখানে বিরাজ করিতেছিল, সুতরাং সেই শ্রীমণ্ডপও যেন কৌতুকবশতঃ নিজের বহুতর নয়ন সৃষ্টি করিয়া কাদম্বরীকে দেখিতেছিল। (ঙ) নিজের পরিজনবর্গও, দর্শনের লোভেই যেন দিব্য চক্ষু

নয়নেন নির্ব্বর্ণ্যমানাম্, (ঙ) লক্ষণৈরপি রাগাবিষ্টৈরিবাধিষ্ঠিত-সর্ব্বাঙ্গীম্, (১) (চ) অকৃতপুণ্যমিব মুঞ্চন্তীং বালভাবম্, (ছ) অদত্তামপি মন্মথাবেশ-পরবশেনেব গৃহ্যমাণাং যৌবনেন, (জ) অবিচলিত-চরণরাগ-দীধিতিভিরিব নির্গতাভিঃ অলক্তকরসপাটলিত-লাবণ্যজল-বেণিকাভিরিব গলিতাভিঃ, নিবসিত-(২) রক্তাংশুক-দশা-শিখাভিরিব (৩) অবলম্বিতাভিঃ, পাদাভরণ-রত্নাংশুলেখা-সন্দেহ-দায়িনীভিঃ, অতিকোমলতয়া নখবিবরেণ বমন্তীভিরিব (৪) রুধিরধারাবর্ষ-

---

(চ) লক্ষণৈরিতি। লক্ষণৈরপি ধ্বজবজ্রাদিভিঃ শুভচিহ্নৈরপি রাগাবিষ্টৈরিব তস্যামাসক্তিযুক্তৈরিব স্থিতৈঃ, অধিষ্ঠিতানি সর্ব্বাণ্যঙ্গানি যস্যাস্তাম্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। এতেন সর্ব্বসুলক্ষণসম্পত্তিঃ সূচিতা।

(ছ) অকৃতেতি। ন কৃতং পুণ্যং যেন তমিব, বালভাবং শৈশবং মুঞ্চন্তীং ত্যজন্তীম্। অত্রাভাবাভিমানিনী ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। পুণ্যং বিনাস্যাঃ শরীরস্পর্শোঽপি ন জায়ত ইতি ধ্বনিতম্।

(জ) অদত্তামিতি। অদত্তামপি পিত্রাদিভিরনর্পিতামপি, মন্মথাবেশপরবশেনেব সতা যৌবনেন স্বয়মেব গৃহ্যমাণাম্। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষা। যৌবনারম্ভশ্চ সূচিতঃ।

(ঝ) অবিচলিতেতি। অত্র তৃতীয়াবহুবচনান্তপদানি অঙ্গুলীভিরিতি বক্ষ্যমাণস্য বিশেষণানি। নির্গতাভিশ্চরণরাগাদেবাবির্ভূতাভিঃ, অবিচলিতা নিশ্চলাঃ চরণয়ো রাগস্য রক্তিম্ণো যা দীধিতয়ঃ কিরণাস্তাভিরিব স্থিতাভিঃ, সর্ব্বত্র রক্ততাসাম্যাদিতি ভাবঃ। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষা। গলিতাভিশ্চরণযুগলাদেব চ্যুতাভিঃ, অলক্তকরসেন পাটলিতং আরক্তীকৃতং যৎ লাবণ্যমেব জলং তস্য বেণিকাভির্ধারাভিরিব স্থিতাভিঃ। অত্র নিরঙ্গকেবলরূপকসঙ্কীর্ণা জাত্যুৎপ্রেক্ষা। অবলম্বিতাভির্লম্বমানাভিঃ, নিবসিতং পরিহিতং যৎ রক্তাংশুকং লোহিতবস্ত্রং তস্য দশাশিখাভির্বর্ত্তিকাগ্রৈরিব। জাত্যুৎপ্রেক্ষা। পাদাভরণানাং যা রত্নাংশুলেখা লোহিতকিরণাবলী তস্যাঃ সন্দেহং ভ্রমং দদতীতি তাভিঃ। অত্র ভ্রান্তিমানলঙ্কারঃ। অতিকোমলতয়া হেতুনা নখবিবরেণ করণেন রুধিরধারাবর্ষং বমন্তীভিরুদ্গিরন্তীভিরিব স্থিতাভিঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। ঈদৃশীভিরঙ্গুলীভিরুপেতাভ্যাং, ক্ষিতিতলস্য তারাগণমিব গোলোজ্জ্বলত্বসাম্যাদিতি ভাবঃ, নখমণিমণ্ডলং নখাভরণী-

---

লাভ করিয়া নির্নিমেষ নয়নে তাঁহাকে দেখিতেছিল। (চ) সমস্ত শুভলক্ষণও, রাগাবিষ্ট হইয়াই যেন কাদম্বরীর সমস্ত অঙ্গে অধিষ্ঠান করিতেছিল। (ছ) শৈশবকাল পুণ্য করে নাই বলিয়াই যেন কাদম্বরী তাহাকে পরিত্যাগ করিয়াছিল। (জ) পিতা বা মাতা কাদম্বরীকে দান না করিলেও, যৌবনকাল কামাবিষ্ট হইয়াই যেন নিজেই তাঁহাকে গ্রহণ করিয়াছিল। (ঝ) কাদম্বরী নিজ-চরণযুগলদ্বারা যেন প্রবাল-মণির রসের একটি নদী সৃষ্টি করিয়াছিলেন; কারণ, সেই চরণযুগল, ভূতলের নক্ষত্রসমূহের ন্যায় নখের উপরে রক্তবর্ণ মণিসমূহ ধারণ করিতেছিল এবং তাহার অঙ্গুলীগুলিকে বোধ হইতেছিল যে,—চরণযুগলের রক্তিমা হইতে কতকগুলি কিরণ যেন নির্গত হইয়া স্থিরভাবে রহিয়াছে; আলতার রসে রঞ্জিত লাবণ্য-জলের

---

(১)...সর্ব্বাঙ্গাম্। (২) নির্ব্বসিত...। (৩)...দশাভিরিব। (৪) বর্ষন্তীভিরিব।

मञ्जुलीभिरुपेताभ्यां स्थगिततलतारागणमिव नखमणिमण्डलमुद्वहद्भ्यां विद्रुमरस-नदीमिव चरणाभ्यां प्रवर्त्तयन्तीम्, (ञ) नूपुर-मणि-किरण-चक्रवालेन गुरु-नितम्ब-भर-खिन्नोरुयुगल-सहायतामिव कर्त्तुमुद्गच्छता स्पृश्यमानजघनभागाम्, (ट) प्रजापति-कर-दृढ़-निपीड़ित-(१) मध्यभाग-गलितं जघन-शिलातल-प्रतिघाता-ल्लावण्यस्रोत इव द्विधागतमूरुद्वयं दधानाम्, (ठ) सर्व्वतः प्रसारित-दीर्घ-मयूख-मण्डलेनेर्ष्यया परपुरुषदर्शनमिव निरुन्धता (२) कुतूहलेन विस्तारमिव तन्वता

भूतरवसमूहं, उद्वहद्भ्यां धारयद्भ्यां, चरणाभ्यां करणाभ्यां, विद्रुमरसस्य प्रवालद्रवस्य नदीं प्रवर्त्तयन्तीमव-तारयन्तीमिव स्थितां काद्म्बरीम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) नूपुरेति। गुर्व्वोर्विशालयोर्नितम्बयोर्भरेण भारेण खिन्नं क्लान्तं यदूरुयुगलं तस्य सहायतां आधिक्यनितम्बभारवहनेन साहाय्यं, कर्त्तुमिव उद्गच्छता, नूपुरयोर्मणिकिरणानां चक्रवालेन मण्डलेन स्पृश्य-मानौ जघनभागौ यस्यास्ताम्। अत्र क्रियारूपफलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) प्रजेति। प्रजापतेः स्रष्टुः कराभ्यां पाणिभ्यां दृढ़निपीड़ितो निर्म्माणकाले अतीवकृशतावि\-धानाय नितान्तनिष्पीड़ितो यो मध्यभागः कटिदेशस्तस्मात् गलितं, अथ च जघनमेव शिलातलं विशालत्वात् कठिनत्वाच्चेति भावः, तेन प्रतिघातात्तु तौ: द्विधागतं द्विधाविभक्तं लावण्यस्रोत इव, ऊरुद्वयं दधानाम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च कटिदेशस्य नितान्तकृशत्वं, जघनदेशस्य विशालत्वं कठिनत्वञ्च, ऊरुयुगलस्य च लावण्यमयत्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ठ) सर्व्वत इति। सर्व्वतः प्रसारितं समन्ताद्विस्तारितं मयूखमण्डलं येन तेन, अतएव ईर्ष्यया परपुरुषदर्शनं निरुन्धतेव स्वावरणादिति भावः, कुतूहलेन विस्तीर्णस्यापि विस्तारं तन्वता कुर्व्वतेव स्वकिरणै-रिति भावः, तथा स्पर्शसुखेन रोमाञ्चं मुञ्चता त्यजतेव स्वकिरणेषु रोमाञ्चभ्रमं जनयतेत्यर्थः, काञ्चीदाम्ना

ধারা যেন পড়িতেছে এবং পরিহিত রক্তবর্ণ বস্ত্রের দশাগুলির অগ্রভাগ যেন লম্বিত হইয়া রহিয়াছে ; আর সেই অঙ্গুলীগুলি, চরণালঙ্কারের রক্তবর্ণ কিরণমালার ভ্রম জন্মাইতেছিল এবং অত্যন্ত কোমল বলিয়া নখরন্ধ্রদ্বারা যেন রুধির-ধারা বমন করিতেছিল। (ঞ) তাহার উরু-যুগল, বিশাল নিতম্বযুগলের ভারে ক্লান্ত হইয়া পড়িয়াছিল ; সুতরাং তাহাদের সহায়তা করিবার নিমিত্তই যেন নূপুরমণি হইতে কিরণমণ্ডল উত্থিত হইয়া, জঘন-স্থল স্পর্শ করিতেছিল। (ট) কাদম্বরীকে নির্ম্মাণ করিবার সময়ে বিধাতা, হস্তদ্বারা তাহার কটিদেশটিকে দৃঢ়ভাবে নিপীড়িত করিয়াছিলেন ; সুতরাং তাহা হইতে বিগলিত এবং জঘনরূপ শিলাতলের প্রতিঘাতে দুইভাগে বিভক্ত লাবণ্যস্রোতের ন্যায় উরুযুগল তিনি ধারণ করিতেছিলেন। (ঠ) এক ছড়া চন্দ্রহারে কাদম্বরীর নিতম্বমণ্ডল পরিবেষ্টিত ছিল ; তাহা হইতে আয়ত কিরণশ্রেণী চতুর্দ্দিকে প্রসারিত হইয়াছিল ; সুতরাং সেই চন্দ্রহার যেন ঈর্ষ্যাবশতঃ পরপুরুষের দর্শন নিবারণ করিতে-

---

(१)...निष्पीड़ित...। (२) रुन्धता।

अर्धसुखेन रोमाञ्चमिव मुञ्चता काञ्चीदाम्ना नितम्बबिम्बस्य विरचित-परिवेषाम्, (ढ) निपतित-सकल-लोक-हृदय-भरेणेवातिगुरुनितम्बाम्, (ड) उन्नतकुचान्तरित-मुख-दर्शन-दुःखेनेव क्षीयमाण-मध्यभागाम्, (ढ) प्रजापतेः स्पृशतोऽतिसौकुमार्य्यात् (१) अङ्गुलीमुद्रामिव निमग्नां नाभिमण्डलीं (२) आवर्त्तिनीमुद्वहन्तीम्, (ण) त्रिभुवन-विजय-प्रशस्ति-वर्णावलीमिव लिखितां मन्मथेन रोमराजि-मञ्जरीं बिभ्राणाम्, (त) अन्तःप्रविष्ट-कर्ण-पल्लव-प्रतिबिम्बेनातिभर-(३) खिद्यमान हृदय-करतल-प्रेर्य्यमाणेनेव निष्पतता मकरकेतु-

रशनागुणेन नितम्बबिम्बस्य विरचितः कृतः परिवेषः परिवेष्टनं यस्यास्ताम्। अत्र निश्च एव क्रियोत्प्रेक्षाः, रोमाञ्चमित्यादौ वृत्त्यनुप्रासश्छेकानुप्रासश्लेषेनैषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ड) निपतितेति। निपतितानि परममन्दरत्वादारूढानि सकलानां लोकानां यानि हृदयानि मनांसि तेषां भरेण भारेणेव अतिगरू नितम्बौ यस्यास्ताम्। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) उन्नतेति। उन्नताभ्यां कुचाभ्यां अन्तरितं व्यौमव्याद्यावहितं यन्मुखदर्शनं तस्य दुःखेनेव हेतुना क्षीयमाणो मध्यभागः कटिदेशो यस्यास्ताम्। अत्रापि पूर्ववदेव हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) प्रजेति। अतिसौकुमार्य्यात् कादम्बरीशरीरस्य नितान्तकोमलत्वाद्धेतोः, स्पृशतो निर्म्माणकाले धारयतः प्रजापतेर्विधातुः निमग्नां शरीरे प्रविष्टां अङ्गुल्या अङ्गुष्ठस्य मुद्रां चिह्नमिव आवर्त्तिनीं आवर्त्तवन्मध्यगर्त्तां नाभिमण्डलीं उद्वहन्तीं धारयन्तीम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) त्रिभुवनेति। मन्मथेन लिखितां आत्मनस्त्रिभुवनविजयस्य प्रशस्तिवर्णावलीं ख्यातिसूचकाक्षरश्रेणीमिव रोमराजिमञ्जरीं बिभ्राणां दधानाम्। जात्युत्प्रेक्षा।

(थ) अन्तरिति। अन्तःप्रविष्टं स्वच्छत्वादन्तर्गतं कर्णपल्लवप्रतिबिम्बं यस्य तेन, एतदेव प्रतिबिम्बं हृदयस्य हस्तस्थानीयमिति कवेरभिप्रायः। अतिभरेण स्तनयोरत्यन्तभारेण खिद्यमानं यत् हृदयं वक्षस्तेन

ছিল; কৌতুকবশতঃ সেই নিতম্বমণ্ডলের আরও যেন বিস্তার জন্মাইতেছিল এবং স্পর্শসুখদ্বারা রোমাঞ্চই যেন উৎপাদন করিতেছিল। (ড) সকল লোকের মন যাইয়া আরোহণ করিয়াছিল বলিয়া সেই ভারেই যেন কাদম্বরীর নিতম্বমণ্ডল, অত্যন্ত ভারী হইয়াছিল। (ঢ) উন্নতস্তনমণ্ডলে মুখদর্শনের ব্যবধান করিয়াছিল বলিয়া, সেই দুঃখেই যেন কাদম্বরীর কটিদেশ ক্ষীণ হইতেছিল। (ণ) কাদম্বরী, নদীর জলাবর্ত্তের ন্যায় যে নাভিমণ্ডল ধারণ করিতেছিলেন; তাহা দেখিয়া, বোধ হইত যে,—তাঁহার শরীর অত্যন্ত কোমল ছিল বলিয়া, বিধাতা যখন তাঁহাকে নির্ম্মাণ করিতেছিলেন, তখন তাঁহার অঙ্গুষ্ঠের চিহ্নই যেন নিমগ্ন হইয়াছিল; (ত) কাদম্বরী, যে লোমশ্রেণী ধারণ করিতেছিলেন; সে গুলিকে বোধ হইত, যেন, কামদেব নিজের ত্রিভুবনবিজয়ের কীর্ত্তিসূচক বর্ণাবলী লিখিয়া রাখিয়াছেন। (থ) কাদম্বরীর স্তনমণ্ডলের ভিতরে, কর্ণপল্লবের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, এবং সেই স্তনমণ্ডল, কামদেবের পাদপীঠের

(१) सौकुमार्य्यात्। (२) नाभिमण्डलं, नाभिस्थलीं। (३)...भर...।

पादपीठेन स्तनभरेण भूषिताम्, (थ) अधोमुख-कर्णाभरण-मयूखाभ्यामिव प्रसृताभ्याममल-लावण्य-जल-मृणाल-काण्डाभ्यां (१) बाहुभ्यां नख-किरण-विसर-वर्षिणा च माणिक्यवलयगौरवश्रमवशात् स्वेदजल-धाराजालकमिव मुञ्चता कर-युगलेन समुद्भासिताम्, (द) स्तनभारावनम्यमानमाननमिवोन्नमयता हारि-णोर्घैः (२) करैर्गृहीत-चिबुकदेशाम्, (ध) अभिनवयौवनपवनक्षोभितस्य राग-

---

कर्षां करतलेन करणेन प्रेर्यमाणेन नोद्यमानेन, अतएव च निष्पतता निर्गच्छता, मकरकेतोर्मदनस्य पादपीठेनेव स्थितेन स्तनभरेण भारवत् कुचमण्डलेन भूषिताम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च स्तनयोः स्वच्छत्वं मदनोद्दीपकत्वं गुरुत्वञ्च व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(द) अधोमुखेति। प्रसृताभ्यां बहुदूरं यावद्विस्तृताभ्यां, अधोमुखयोः कर्णाभरणयोः स्वर्णनिर्मित-कर्णालङ्कारयोः मयूखाभ्यां स्थूलकिरणाभ्यामिव स्थिताभ्यां। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च बाह्वोः स्वच्छत्वं व्यज्यते। तथा अमलं यत् लावण्यमेव जलं तस्य मृणालकाण्डाभ्यां मृणालदण्डरूपाभ्यां बाहुभ्यां समुद्भासितामित्यन्वयः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। तेन च बाह्वोः कोमलत्वं व्यज्यते। तथा नख-किरणानां विसरं समूहं वर्षतीति तेन, अतएव माणिक्यवलययोर्मणिमयकटकयोः गौरवेण भारेण यः श्रम-स्तद्वशात् एतेन सौकुमार्य्यातिशयो व्यज्यते, स्वेदजलधाराणां जालकं समूहमिव मुञ्चता करयुगलेन च समुद्भासितां शोभिताम्। अत्र नखकिरणविसरे स्वेदजलधाराजालकत्वमुत्प्रेक्षितमिति जात्युत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(ध) स्तनेति। स्तनयोर्भारेणावनम्यमानं आननं वदनं उन्नमयतेव स्थितेन, हारिणा कान्तेन, अर्घे-रुज्ज्वलैः, करैः किरणैरेव हस्तैः करणैः, गृहीतश्चिबुकदेशः अधराधोभागो यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्-प्रेक्षा करशब्दश्लेषाभेदाध्यवसायमूलातिशयोक्त्योरनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

স্তার ভারী ছিল ; সুতরাং তাহার অত্যন্ত ভারে পরিশ্রান্ত হইয়া হৃদয় যেন হস্তদ্বারা সেই পাদপীঠ খানাকে ঠেলিয়া দিতেছিল ; তাহাতে সেই পাদপীঠ খানা যেন ক্রমে নির্গত হইতেছিল। (দ) কাদম্বরীর বাহু দুইটি যেন, তাহার অধোমুখ কর্ণাভরণের বিস্তৃত দুইটি কিরণপুঞ্জ এবং নির্ম্মল লাবণ্য-জলের দুইটি মৃণালস্বরূপ বোধ হইতেছিল ; আর তাহার করযুগল, নখের কিরণ ছড়াইতেছিল ; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন মণিময় বলয়ের ভারে যে পরিশ্রম হইয়াছিল, তাহাতেই সেই করযুগল ঘর্ম্মজল বর্ষণ করিতেছে ; সেই বাহুযুগল ও করযুগলে কাদম্বরী বিশেষ শোভা পাইতেছিল। (ধ) স্তনযুগলের ভারে কাদম্বরীর মুখমণ্ডল, অবনত হইয়াছিল ; সুতরাং তাহার হার ছড়া যেন সেই মুখমণ্ডল পুনরায় উন্নত করিবার নিমিত্ত, কিরণময় হস্ত উত্তোলন করিয়া, তাহার চিবুকদেশ ধারণ করিয়াছিল। (ন) কাদম্বরীর ওষ্ঠযুগল; প্রবালের

---

(१)...मृणालकाण्डाभ्यामिव। (२) अर्घैः।

सागरस्य तरङ्गाभ्यामिवोद्गताभ्यां विद्रुमलतालोहिताभ्यामधराभ्यां रक्तावदात-स्वच्छकान्तिना च मदिरारसपूर्णमाणिक्य-शुक्तिसम्पुटच्छविना कपोलयुगलेन रति-परिवादिनी-रत्नकोण-चारुणा नासावंशेन च विराजमानाम्, (न) गति-प्रसरनिरोधिश्रवणकोपादिव किञ्चिदारक्तापाङ्गेन निजमुखलक्ष्मीनिवासदुग्धो-दधिना लोचनयुगलेन लोचनमयमिव जीवलोकं कर्त्तुमुद्यताम्, (प) उन्मद-

---

(न) अभीति। अभिनवं यौवनमेव पवनश्चाञ्चल्यहेतुत्वाद्वायुस्तेन क्षोभितस्य उद्वेलितस्य, रागोऽनुराग एव सागरस्तस्य, उद्गताभ्यामुत्थिताभ्यां तरङ्गाभ्यामिव, तथा विद्रुमलतावत् प्रवालवल्लीवत् लोहिताभ्यामधराभ्यां ओष्ठाभ्यां विराजमानामित्यन्वयः। अत्र प्रथमविशेषणे शाब्दसम्बन्धा लुप्तोपमा चैतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "रक्तौ च क्रोधरागौ" इति कविसमयादनुरागसागरस्य रक्तत्वेन तत्तरङ्गयोरपि रक्तत्वमवगन्तव्य-मिति तरङ्गाभ्यामित्यस्य रक्तविशेषणाभावेऽपि न न्यूनपदत्वदोषावकाशः। तथा रक्ता च अवदाता शुभ्रा च स्वच्छा च कान्तिर्यस्य तेन, अतएव मदिरारसेन पूर्णं यन्माणिक्यशुक्तिसम्पुटं मणिमयशुक्तिपुटं तद्वत् छविः कान्तिर्यस्य तेन, कपोलयुगलेन च विराजमानाम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। तथा रतेः कामभार्याया या परिवादिनी सप्ततन्त्रीविशिष्टा वीणा तस्या रत्नकोणवत् मणिमयवादनदण्डवत् चारुणा मनोहरेण, मदनो-द्दीपनासूचनाय "रतिपरिवादिनी"त्युक्तम्। नासावंशेन नासिकादण्डेन च विराजमानाम्। अत्रापि लुप्तोपमा-लङ्कारः।

(प) गतीति। गतिप्रसरनिरोधिनोः श्रवणयोः कोपादिव आत्मनो गमनवेगनिरोधजनितो यः कर्ण-युगलं प्रति क्रोधस्तस्मादिवेत्यर्थः, किञ्चिदारक्तौ अपाङ्गौ प्रान्तभागौ यस्य तेन। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च लोचनयुगलस्य कर्णान्तायतत्वं व्यज्यते इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। निजं स्वसम्बन्धि यन्मुखं तत्र या लक्ष्मीः शोभैव श्रीः तस्या निवासो दुग्धोदधिना क्षीरोदसागरेण। अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकमलङ्कारः, तेन च लोचनयोरेव मुखशोभाजनकत्वं व्यज्यते। ईदृशेन लोचनयुगलेन जीवलोकं लोचनमयमिव स्वदर्शनाय कौतुकनयनव्याप्तमिव कर्त्तुमुद्यताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च लोचनयुगलस्यातुलनीयसौन्दर्य्यं व्यज्यते, तथा लोचनपदस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च लोचनमयमिवेत्यत्र तन्मयमिवेति पाठेन समाधेयः।

ন্যায় রক্তবর্ণ ছিল এবং নবযৌবনরূপ বায়ু-বেগে উদ্বেলিত অনুরাগ-সাগরের দুইটি তরঙ্গের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; কাদম্বরীর গণ্ডযুগলের শোভা, নির্ম্মল ও শ্বেতরক্তমিশ্রিত ছিল; সুতরাং সেই গণ্ডযুগল, মদ্যে পরিপূর্ণ মণিময় ঝিনুকের ন্যায় দীপ্তি পাইতেছিল। আর কাদম্বরীর নাসিকাটি, রতিদেবীর বীণাযন্ত্রের রত্নময় ছড়িটির ন্যায় দেখা যাইতেছিল; সুতরাং এই সকলে কাদম্বরী বিশেষ শোভা পাইতেছিলেন। (প) কাদম্বরীর নয়নযুগল, আরও দীর্ঘ হইবার নিমিত্ত বেগে গমন করিতেছিল, কিন্তু কর্ণযুগলে সেই গমন-বেগ রোধ করায়, তাহাদের প্রতি ক্রোধবশতই যেন সেই নয়নযুগলের প্রান্তভাগ ঈষৎ আরক্তবর্ণ হইয়াছিল; আর সেই নয়নযুগল স্বকীয় মুখলক্ষ্মীর বাসস্থান ক্ষীরোদসমুদ্রস্বরূপ ছিল; কাদম্বরী সেই নয়নযুগলদ্বারা সমস্ত জীবলোককে যেন নয়নময় করিতে উদ্যত হইয়াছিলেন।

যৌবনকুঞ্জরমদরাজিভ্যাং মনঃশিলাপঙ্কলিখিতেন চ রাগাবিষ্টেন মন্মথহৃদয়েনেব বদনলগ্নেন তিলকবিন্দুনা বিদ্যোতিতললাটপট্টাম্, (ফ) উত্কৃষ্টহেমতালী-পত্রাভরণময়মামুক্তকর্ণোত্পলচ্যুতমধুধারাসন্দেহকারিণং কর্ণপাশং দোলায়মান-পত্রমকর-(১) মাণিক্যকুণ্ডলং দধতীম্, (ব) পাটলীকৃতললাটেন সীমন্ত-চুম্বিনশ্চূড়ামণেঃ খরতাংশুজালেন মদিরারসেনেব প্রক্ষাল্যমানদীর্ঘকেশকলাপাম্, (ভ) দেহার্দ্ধপ্রবিষ্টহরগর্ব্বিত-গৌরী-বিজিগীষয়েব সর্ব্বাঙ্গানুপ্রবিষ্ট-মন্মথ-দর্শিত-সৌভাগ্য-

(ফ) উন্মদেতি। যৌবনমেব কুঞ্জরো দুর্নিবারবেগত্বাদ্গজ ইতি যৌবনকুঞ্জরঃ, উন্মদো যো যৌবন-কুঞ্জরস্তস্য মদরাজিভ্যাং দানজলরেখারূপাভ্যাং ভ্রূলতাভ্যাং। অত্র পুরম্পরিতরূপকমলঙ্কারঃ। মনঃশিলায়াঃ তন্নামপ্রসিদ্ধস্য ধাতুবিশেষস্য পঙ্কেন দ্রবেণ লিখিতশ্চিত্রিতস্তেন, রাগাবিষ্টেন অনুরাগান্বিতেন, মন্মথস্য হৃদয়েনেব, "অশোকপত্রাকৃতয়ো বশ্যাত্বমিষ্যতে" ইতি ভাষাপরিচ্ছেদোক্তেহৃদয়স্যাপি বিন্দুরূপত্বাদিতি ভাবঃ, বদনলগ্নেন তিলকবিন্দুনা বিদ্যোতিত উদ্ভাসিতঃ ললাটপট্টো ভালফলকং যস্যাস্তাম্। অত্র আর্থোৎ-প্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ব) উত্কৃষ্টেতি। উত্কৃষ্টং যত্ হেম. স্বর্ণস্য তালীপত্রবত্ তালীপত্রবত্ আভরণং তন্ময়ং তত্প্রায়ং অনএব আমুক্তাত্ পরিহিতাত্ কর্ণোত্পলাত্ চ্যুতা গলিতা যা মধুধারা তস্যাঃ সন্দেহং ভ্রমং করোতি শীলং যস্য তং, তন্মধুধারায়া অপি পীতত্বাদিতি ভাবঃ, তথা দোলায়মানং পত্রমকরমাণিক্যকুণ্ডলং অংশভেদেন পত্রা-কারমকরাকারকমণিময়কুণ্ডলং যত্র তং, কর্ণপাশং প্রশস্তকর্ণৌ দধতীম্। অত্র ভ্রান্তিমানলঙ্কারঃ।

(ভ) পাটলীতি। সীমন্তং চুম্বতি স্পৃশতীতি তস্মাত চূড়ামণেঃ খরতা পততা, তথা পাটলীকৃত-মারক্তীকৃতং ললাটং যেন তেন, মদিরারসেনেব স্থিতেন রক্ততামাত্ত্বাদিতি ভাবঃ, অংশুজালেন, প্রক্ষাল্যমানঃ স্পৃশ্যমানো দীর্ঘঃ কেশকলাপো যস্যাস্তাম্। লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

(ম) দেহার্দ্ধেতি। দেহস্যার্দ্ধমাত্রে প্রবিষ্টেন হরেণ গর্ব্বিতা যা গৌরী পার্ব্বতী তস্যা বিজিগীষয়েব বিজেতুমিচ্ছয়েব, সর্ব্বাঙ্গেষু অনুপ্রবিষ্টেন হরবিরোধিনা মন্মথেন দর্শিতঃ প্রকটিতঃ সৌভাগ্যবিশেষঃ পার্ব্বতীতঃ

(ফ) কাদম্বরীর ভ্রূ দুইটি মদমত্তযৌবন-হস্তীর দুইটি মদজল-রেখা-স্বরূপ ছিল; আর তাহারই প্রতি অনুরক্ত কামদেবের হৃদয়ের ন্যায় ছোট একটি তিলক, তরল মনঃশিলাদ্বারা মুখমণ্ডলে চিত্রিত ছিল; তাহাতে তাহার ললাটদেশ, বিশেষ শোভা পাইতেছিল। (ব) কাদম্বরীর সুন্দরকর্ণযুগল, তাড়িয়াতের পাতার আকৃতি উৎকৃষ্ট সোনার অলঙ্কারে পরিপূর্ণ ছিল; সুতরাং সেই কর্ণযুগল, পরিহিত-কর্ণোৎপল হইতে বিগলিত মধুধারার ভ্রম জন্মাইতে-ছিল; আর তাহাতে, পত্র ও মকরাকৃতি দুইটি মণিময় কুণ্ডল দুলিতেছিল। (ভ) কাদম্বরীর সীমন্তে একটি মণি ছিল, তাহা হইতে মদিরার ন্যায় রক্তবর্ণ কিরণজাল নির্গত হইয়া ললাটদেশ রক্তবর্ণ করিয়া দীর্ঘকেশকলাপকে বিধৌত করিতেছিল; (ম) মহাদেব, দেহের কেবল অর্দ্ধাংশে প্রবেশ করিয়াছিলেন বলিয়াই পার্ব্বতীর গর্ব্ব জন্মিয়াছিল; তাই তাঁহাকে

(১)...মরকত...।

विशेषाम्, (म) उरःसमारोपितैकलक्ष्मी-(१) मुदित-नारायणावलेपहरणाय प्रतिबिम्बकैर्निजरूपतो लक्ष्मीशतानीव सृजन्तीम्, (य) उत्तमाङ्गनिहितैकचन्द्र-विस्मितहराभिमाननाशाय विलासस्मितैश्चन्द्रसहस्राणीव दिक्षु विक्षिपन्तीम्, (र) निर्दयदग्धैकमन्मथप्रमथनाथरोषेणेव प्रतिहृदयं मन्मथायुतान्युत्पादयन्तीम्, (ल) रजनी-जागरखिन्नस्य परिचितचक्रवाकमिथुनस्य स्वप्तुं क्रीडानदिकासु कमल-

---

स्वभाहृष्टाधिक्यं यस्यास्ताम्, ईश्वरार्द्धप्रविष्टदेव्यपेक्षया सर्वाङ्गप्रविष्टदेवायाः सर्वथैव सौभाग्यविशेषः सम्भवतीति भावः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) उर इति। उरसि वक्षसि समारोपितया स्थापितया एकया लक्ष्म्या मुदितस्य हृष्टस्य नारायणस्य यः अवलेपस्तल्लक्ष्मीसमारोपणजनितो गर्वस्तस्य हरणाय दूरीकरणाय, प्रतिबिम्बकैर्भित्त्यादिष्वात्मनः प्रतिमाभि, निजरूपतः स्वकीयाकारात् लक्ष्मीणां शतानि समूहान् सृजन्तीमिव, एकैकप्रतिबिम्बस्यैवैकैकलक्ष्मीरूपत्वादिति भाव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन चास्या लक्ष्मीतुल्यसौन्दर्यं व्यज्यते।

(र) उत्तमेति। उत्तमाङ्गे शिरसि निहितेन एकेनैव चन्द्रेण विस्मितस्य आत्मनस्तन्निधाने विस्मयापन्नस्य हरस्य यः अभिमानश्चन्द्रनिधानजनितोऽहङ्कारस्तस्य नाशाय विलासस्मितैः दिक्षु चन्द्राणां सहस्राणि समूहान् विक्षिपन्तीमिव एकैकस्यैव स्मितस्य एकैकचन्द्रतुल्यत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ल) निर्दयेति। निर्दयं यथा स्यात्तथा दग्ध एको मन्मथो येन तादृशे प्रमथनाथे शिवे यो रोषः क्रोधस्तेनेव हेतुना, नृणां प्रतिहृदय मन्मथानां अयुतानि दशसहस्राणि समूहानित्यर्थः, उत्पादयन्तीं, कटाक्षादिनेति शेषः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। एतेन चास्याः सर्वेषामेव कामोद्दीपकत्वं सूचितम्।

(व) रजनीति। रजन्यां जागरेण परस्परविरहदुःखाज्जागरणेन खिन्नस्य क्लान्तस्य, परिचितं यच्चक्रवाकमिथुनं तस्य। इयन्तु कर्त्तरि सम्बन्धविवक्षया षष्ठी तुमुन्योगे षष्ठीनिषेधात्। स्वप्तुं निद्रातुं। कमल-

---

জয় করিবার নিমিত্তই যেন কামদেব, কাদম্বরীর সকল অঙ্গে প্রবেশ করিয়া, পার্ব্বতী অপেক্ষায় কাদম্বরীর অতিরিক্ত সৌভাগ্য প্রকাশ করিতেছিলেন। (য) একটি মাত্র লক্ষ্মীকে বক্ষে ধারণ করিয়াই আনন্দিতচিত্ত নারায়ণের যে অহঙ্কার জন্মিয়াছিল, তাহা দূর করিবার নিমিত্ত, কাদম্বরী যেন নিজের আকৃতি হইতে প্রতিবিম্বদ্বারা শত শত লক্ষ্মী সৃষ্টি করিতেছিলেন। (র) একটিমাত্র চন্দ্রকে মস্তকে স্থাপন করিয়া, তাহাতেই বিস্ময়াপন্ন মহাদেবের যে অহঙ্কার হইয়াছিল, তাহা বিনষ্ট করিবার নিমিত্ত, কাদম্বরী যেন বিলাসময় ঈষৎ হাস্যদ্বারা সকল দিকে সহস্র সহস্র চন্দ্র নিক্ষেপ করিতেছিলেন। (ল) মহাদেব, নির্দ্দয়ভাবে একটিমাত্র কামদেবকে দগ্ধ করিয়াছিলেন, তাঁহার প্রতি সেই ক্রোধবশতই যেন কাদম্বরী, প্রত্যেক হৃদয়ে সহস্র সহস্র কামদেব সৃষ্টি করিতেছিলেন। (ব) পরস্পরবিরহনিবন্ধন রাত্রিতে জাগরণ করায় ক্লান্ত পরিচিত চক্রবাকদম্পতির নিদ্রার নিমিত্ত, ক্রীড়ানদীগুলির ভিতরে পদ্মরেণুরূপ বালুকাদ্বারা

---

(१) उरःसमारोपितलक्ष्मी...।

धूलिवालुकाभिर्बालपुलिनानि कारयन्तीम्, (व) "परिजननूपुररवप्रस्थितं वल्लभस्य (१) हंसमिथुनं मृणालनिगडेन बद्धानय" इति हंसपालीमादिशन्तीम्, (श) आभरणमरकतमयूखान् लिहति (२) भवनहरिण-(३) शावकाय सखीश्रवणाद्-पनीय यवाङ्कुरप्रसरं-(४) प्रयच्छन्तीम्, (ष) आत्मसंवर्द्धित-(५) लता-प्रथम-कुसुम-निर्गम-निवेदनागतामुद्यानपालीमशेषाभरणदानेन सम्मानयन्तीम्, (स) उपनीत-विविध-वन-कुसुम-फल-पूर्ण-पत्रपुटामविज्ञायमानालापतया शबरीं तु पुनः

धूलयः पद्मपरागा एव वालुकास्ताभिः, बालपुलिनानि क्षुद्रसैकतानि, कारयन्तीं परिचारिकाभिरिति शेषः। एतेन तस्याः परिचितेषु वात्सल्यातिशयः कमलसम्पच्च व्यज्यते।

(श) परीति। परिजनस्य प्रस्थितायाः कस्याश्चित् परिचारिकायाः, नूपुररवेण तदनुसरणेनेत्यर्थः प्रस्थितं इतो गतं, वल्लभं मम प्रियञ्च। मृणालनिगडेन मृणालात्मकशृङ्खलया। हंसपालीं आत्मनो हंसरक्षिणीं काञ्चित् परिचारिकां। एतेन हंसमिथुनवात्सल्यमस्याः सूचितम्।

(ष) आभेति। आभरणभूता ये मरकतमणयस्तेषां मयूखान् श्यामकिरणान् लिहति तृणभ्रमेण रसनया ग्रसते। यवाङ्कुरप्रसरं आयतयवपल्लवम्। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते। आभरणेत्याद्यनुरूपभावः श्लोको यथा शिशुपालवधे—

"तृणवाञ्छया मुहुरवाञ्छितताननान् निचयेषु यत्र हरिताश्मवेश्मनाम्।
रसनावलम्बिकिरणाङ्कुरान् जनो हरिणान् गृहीतकवलानिवैक्षत॥"

(स) आत्मेति। आत्मसंवर्द्धितायाः जलसेकादिना स्वयंपरिपोषितायाः लतायाः प्रथमो यः कुसुमनिर्गमस्तस्य निवेदनाय आगतां, उद्यानपालीमुपवनरक्षिकाम्।

(ह) उपेति। उपनीतमानीतं विविधैर्वनकुसुमफलैः पूर्णं पत्रपुटं यया तां, अविज्ञायमाना अनि-

---

কাদম্বরী ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পুলিন নির্ম্মাণ করাইতেছিলেন! (শ) 'আমার প্রীতিভাজন হংস দুইটি, কোন পরিচারিকার নূপুরের রব অনুসরণ করিয়া, এস্থান হইতে চলিয়া গিয়াছে; সুতরাং তুমি তাহাদিগকে মৃণালরজ্জুদ্বারা বন্ধন করিয়া আনয়ন কর" এই ভাবে কাদম্বরী, হংসরক্ষিণী পরিচারিকাকে আদেশ করিতেছিলেন। (ষ) গৃহপালিত একটি হরিণ-শাবক, তৃণ মনে করিয়া মরকতমণিময় আভরণের কিরণগুলিকে লেহন করিতেছিল; তাই কাদম্বরী. কোন সখীর কর্ণ হইতে একটি যবের পল্লব আনয়ন করিয়া সেই হরিণশাবকটিকে দিতেছিলেন। (স) কাদম্বরী নিজেই যে লতাটিকে পরিবর্দ্ধিত করিয়াছিলেন, সেই লতাটিতে প্রথমপুষ্প নির্গত হইয়াছে, এই সংবাদ বলিবার নিমিত্ত, উদ্যানপালিকা আসিয়াছিল, তাই কাদম্বরী তাহাকে নানাবিধ অলঙ্কার দিয়া সন্তুষ্ট করিতেছিলেন। (হ) ক্রীড়াপর্ব্বত রক্ষা করিবার নিমিত্ত, কাদম্বরী যাহাকে নিযুক্ত করিয়াছিলেন; সেই শবরী (ম্লেচ্ছবিশেষ), নানাবিধ বন্য পুষ্প ও ফলে পরিপূর্ণ একটি

---

(१) दुर्लभस्य। (२) लिहति च। (३) भवनहरिण...। (४)...प्रसवम्। (५) आत्मवर्द्धित।...

पुनः क्रीडापर्वत-पाल-(१) शबरीमालापयन्तीम्, (ङ) करतलविनिहतैः (२) मुहुर्मुहुरुत्पतद्भिश्च मुखपरिमलान्धैर्नीलकन्दुकैरिव (३) मधुकरैः क्रीडन्तीम्, (च) पञ्जरहारीतक-कृत-श्रवण-जात-दुष्ट-स्मितां चामरग्राहिणीं विहस्य लीलाकमलेन शिरसि विघट्टयन्तीम् (छ) मुक्ताफल-खचित-चन्द्रलेखिका-संक्रान्तप्रतिमां स्वेद-जल-(४) बिन्दुजाल-चित-नख-पदाभिप्रायेण ताम्बूलकरङ्कवाहिनीं पयोधरे

विसदृशशब्दमयत्वाद्विशेषेणाबुध्यमानार्थका आलापा भाषा यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, हासहेतुं कौतुकेन हासकारणीभूतां, क्रीडापर्वतं पाति रक्षतीति क्रीडापर्वतपाली सा चासौ शबरी पुलिन्दा चेति तां, पुनः पुनरालापयन्तीं कौतुककरणाय वारं वारं स्वभाषां भाषयन्तीम्। एतेन कादम्बर्या अतीवकौतुकप्रियत्वं व्यज्यते।

(ङ) करेति। नीलकन्दुकैः कृष्णवर्णगेण्डुकैरिव करतलाभ्यां विनिहतैरपसारणाय कम्पीलनाय च ताड़ितैः, अतएव मुहुर्मुहुरुत्पतद्भिरुड्डयमानैः, मुखस्य परिमलेन सौरभेण अन्धैर्मत्तैः, मधुकरैर्भ्रमरैः क्रीडन्तीम्। अत्र ताड़ृशमधुकरैः क्रीड़ासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरुपमया सङ्कीर्यते। तया च तन्मुखस्य परिमलातिशयवत्त्वं व्यज्यते।

(च) पञ्जरेति। पञ्जरे स्थितो यो हारीतकः पक्षिविशेषस्तस्य कृतश्रवणेन जातं दुष्टं निन्दाव्यञ्जकं स्मितं यया तां। विघट्टयन्तीम् ताड़यन्तीम्। एतेन परनिन्दया तस्या विरक्तिः सूचिता।

(छ) मुक्तेति। मुक्ताफलैः खचिता उपरिसम्बद्धा या चन्द्रलेखिका क्षुद्रचन्द्ररेखाकार आभरणविशेषस्तस्याः सङ्क्रमात् संक्रान्ता पयोधर एव पतिता प्रतिमा प्रतिबिम्बं यस्यास्तां, ताम्बूलकरङ्कवाहिनीं, स्वेदजलबिन्दुजालेन चितं व्याप्तं यन्नखपदं नायककृतनखक्षतं तदभिप्रायेण तत्सम्भावना सूचयित्वेत्यर्थः, पटवासमुष्टिना मुष्टिपरिमितलोहितपिष्टातकचूर्णनिक्षेपेणेत्यर्थः, पयोधरे स्तनमण्डले ताड़यन्तीम्, तच्चिह्नगोपनार्थमेनेति भावः। चन्द्रलेखाप्रतिबिम्बं नखचिह्नाकारं क्षुद्रमुक्ताप्रतिबिम्बानि च घर्मजलबिन्दुजालाकाराणीति कवेराशयः। एतेनाप्यतीव कौतुकप्रियत्वमस्या व्यज्यते।

পত্রপটক (পাতার ঠোঙা) লইয়া উপস্থিত হইয়াছিল, তাহার কথার অর্থ বুঝা যাইত না বলিয়া সে-ই হাসের কারণ হইয়াছিল, তাই কাদম্বরী জিজ্ঞাসা করিয়া করিয়া বার বার তাহাকে কথা বলাইতেছিলেন। (ঙ) কতকগুলি ভ্রমর, কাদম্বরীর মুখের সৌরভে তাহার উপরে পড়িতেছিল, তাই কাদম্বরী হস্ত-তাড়ন করায় সেগুলি, আবার বার বার উড়িতেছিল; সুতরাং কাদম্বরী কন্দুকের ন্যায় (গেড়ুয়ার মত) সেই ভ্রমরগুলিদ্বারা খেলা করিতেছিলেন। (চ) পঞ্জরস্থিত হারিতপক্ষীর রব শুনিয়া কোন চামরধারিণী, নিন্দাসূচক হাস্য করিয়াছিল, তাই কাদম্বরীও হাস্য করিয়া লীলাপদ্মদ্বারা তাহার মস্তকে তাড়ন করিতেছিলেন। (ছ) তাম্বুলকরঙ্কবাহিনীর স্তনমণ্ডলে তাহারই মুক্তাখচিত চন্দ্রলেখার প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহাতেই কাদম্বরী, ঘর্মবিন্দুতে

---

(१) ..पाल...। (२)...विनिहितैः। (३) नीलकन्दुकैरिव। (४)...प्रतिमां च स्वेद...।

पटवासमुष्टिना ताड़यन्तीम्, (ग) रत्नकुण्डलप्रतिबिम्ब-सान्द्र-दत्त-नव-नख-पद-मण्डलाशङ्कया चामरग्राहिण्याः विहस्य कपोले प्रसादव्याजेन दत्तेन (१) आत्मकर्णपूरपल्लवेनाच्छादयन्तीम्, (घ) पृथिवीमिव समुत्सारित-महाकुल-भूभृद्व्यतिकर-शेषभोगनिषण्णाम्, (२) (ङ) मधुमासलक्ष्मीमिव षट्पद-पट-

(ग) रत्नेति। रत्नकुण्डलस्य प्रतिबिम्बे चामरग्राहिण्या एव कपोलपतिते तदीयलोहितमणिमयकर्ण-कुण्डलप्रतिबिम्ब इत्यर्थः, सान्द्रं गाढं यथा तथा दत्तं रमणसमये नायकेन अर्पितं नवं यन्नखपदमण्डलं वर्त्तुलाकारनखचिह्नं तस्य आशङ्कया तत्संशयं सूचयित्वेत्यर्थः, विहस्य, प्रसादव्याजेन अनुग्रहच्छलेन, दत्तेन स्वयमर्पितेन, आत्मनः कर्णपूरपल्लवेन, कपोले चामरग्राहिण्याः आच्छादयन्तीं चामरधारिण्या गण्डदेशमावृण्वती-मित्यर्थः, परैरामवगतिभिया तद्गोपनाभिप्रायेणेति भावः। वास्तविकभ्रमाभावादनयोर्न भ्रान्तिमानलङ्कारः। "कक्षस्थले च कर्णान्ते कपोले बाहुमूलके। ग्रीवायां कण्ठदेशे च नखाघातं समाचरेत्।" इति काम-शास्त्रप्रसिद्धत्वात् "अधरे करजक्षतं मृगाक्ष्याः" इति दर्पणोदाहृतवन्नात्र विद्याविरुद्धतादोषः।

(घ) पृथिवीमिति। पृथिवीमिव, समुत्सारितो दूरीकृतः "नाहं कथञ्चिदपि सखीकायां महाश्वेताया-मात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि" इति पूर्व्वोक्तप्रतिज्ञयेति भावः, महाकुलभूभृद्वरस्य उच्चवंशोत्पन्नस्य कस्यचित् राजरूपस्य पत्युर्यो व्यतिकरः संसर्गसुखं तस्माच्छेषेषु अवशिष्टेषु भोगेषु स्रक्चन्दनधारणादिमात्रजनितसुखेषु निषण्णां स्थिताम्, पूर्वोक्तप्रतिज्ञावशात् पतिसंसर्गसुखेतरसुखभोगिनीमिति सरलार्थः। पृथिवीपक्षे तु समुत्-सारित, सम्यक् उन्नतः महद्भिः प्रशस्तैः कुलभूभृद्भिर्महेन्द्रादिकुलपर्वतश्रेष्ठैः व्यतिकरः सम्बन्धो, यया सा तथोक्ता चासौ शेषभोगेषु अनन्तनागफणासु निषण्णा स्थिता चेति सा तथोक्ता ताम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। नच "सृ गतौ"इति धात्वर्थानुसरणेऽपि समुत्सारितपदस्य प्रागुक्तार्थे प्रयोगाभावादप्रयुक्ततादोष इति वाच्यं "श्लेषादावदोषौ तौ" इति साहित्यदर्पणात्।

(ङ) मध्विति। मधुमासलक्ष्मीं चैत्रमासश्रियमिव, षट्पदपटलेन भ्रमरगणेन अपक्रियमाणानि स्वकीय-मालादिभ्यो नीयमानानि यानि कुसुमरजांसि पुष्परेणवस्तैस्तत्पतनैरित्यर्थः, धूसर. पादयोः पराग उपरागो

পরিপূর্ণ নখের চিহ্ন মনে করিয়া আবীরচূর্ণ নিক্ষেপ করিয়া তাহার স্তনমণ্ডলে তাড়ন করিতে-ছিলেন। (গ) চামরধারিণীর গণ্ডদেশে, তাহারই মণিময় কুণ্ডলের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল; কাদম্বরী সেই প্রতিবিম্বকেই, নায়কদত্ত গোলাকার নখচিহ্ন ভাবিয়া হাস্য করিয়া, অনুগ্রহচ্ছলে নিজের কর্ণ-পল্লবদ্বারা তাহার গণ্ডদেশ আচ্ছাদন করিতেছিলেন। (ঘ) পৃথিবী যেমন বৃহৎ বৃহৎ কুলপর্ব্বত-গণের সহিত, অনন্তনাগের ফণাসমূহে অবস্থান করিতেছে, কাদম্বরীও তেমন পতি-সংসর্গ-সুখ ভিন্ন অন্যান্য সুখভোগে অবস্থান করিতেছিলেন। (ঙ) চৈত্রমাসে ভ্রমরগণ যখন পুষ্পের রেণু অপহরণ করে, তখন তাহা পতিত হইয়া বৃক্ষ সকলের বর্ণ যেমন ধূসর করে, সেখানেও তেমন ভ্রমরগণ যখন কাদম্বরীর মালা হইতে পুষ্পের রেণু সকল অপহরণ করিতেছিল, তখন তাহা

(१)...व्याजदत्तेन। (२)...भूभृद्व्यतिकरां,...भूभृद्व्यतिकरा शेष...।

লাপক্ষিয়মাণ-কুসুম-রজোধূসর-পাদপরাগাম্, (ঙ) শরদমিবোৎপাদিতমানস-জন্মপক্ষিরবাপনীতনীলকণ্ঠমদাম্, (চ) গৌরীমিব শ্বেতাংশুকরচিতোত্তমাঙ্গাভরণাম্, (ছ) উদধিবেলাবন-(১) লেখামিব মধুকরকুলনীলতমালকাননাম্, (জ) ইন্দুমূর্ত্তিমিবোদ্দাম-মন্মথ-বিলাস-গৃহীত-গুরু-কলত্রাম্, (ঝ)

যস্যাস্তাম্। অন্যত্র তু তাদৃশরজোভির্ধূসরাঃ পাদপানাং বৃক্ষাণাং রাগা বর্ণা যস্যাস্তাম্। পূর্ণোপমা। "পরাগঃ কৌসুমে রেণৌ গিরৌ খ্যাত্যুপরাগয়োঃ।" ইতি হৈমঃ।

(ঙ) শরদমিতি। শরদং শরৎকালমিব, উৎপাদিতস্য আত্মসৌন্দর্য্যেণৈব পুনর্জ্জনিতস্য মানসজন্মনো মনোভুবঃ কামস্য পক্ষিণাং কঙ্কপত্রান্বিতানাং বাণানাং রবেণ ধ্বনিনা অপনীতো দূরীকৃতো নীলকণ্ঠস্য শিবস্য মদঃ কামদাহজনিতোঽহঙ্কারো যয়া তাম্। অন্যত্র তু উৎপাদিতৈঃ শরদৈব জনিতৈঃ, মানসজন্মপক্ষিণাং হংসানাং রবৈরপনীতো নীলকণ্ঠানাং ময়ূরাণাং মদঃ স্বরমাধুর্য্যাহঙ্কারো যয়া তাম্। পূর্ণোপমা।

(চ) গৌরীমিতি। গৌরীং পার্ব্বতীমিব, শ্বেতমংশুকং বসনং যস্যাঃ সা চাসৌ রচিতং ধৃতং উত্তমাঙ্গাভরণং মস্তকভূষণং যয়া সা চেতি তাম্। গৌরীপক্ষে তু শ্বেতাংশোঃ শিবশিরঃস্থিতচন্দ্রস্য করৈঃ কিরণৈঃ রচিতং অর্দ্ধনারীশ্বরতয়া একশরীরত্বাৎ ব্যাপ্তং উত্তমাঙ্গাভরণং মস্তকভূষণং যস্যাস্তাম্। পূর্ণোপমা।

(ছ) উদধীতি। উদধেঃ সমুদ্রস্য বেলাবনলেখা তীরস্থবনশ্রেণী তামিব, মধুকরকুলবদ্ভ্রমরসমূহবৎ নীলতমা অতীবকৃষ্ণা অলকাঃ চূর্ণকুন্তলা যস্মিন্ তথাভূতমাননং যস্যাস্তাম্। অন্যত্র তু মধুকরকুলবৎ নীলং তমালকাননং তমালবনং যস্যাং তাম্। পূর্ণোপমা।

(জ) ইন্দ্বিতি। ইন্দুমূর্ত্তিং চন্দ্রদেহমিব, উদ্দামমন্মথবিলাসৈরত্যন্তকামবিভ্রমৈঃ গৃহীতমাশ্রিতং গুরু বিশালং কলত্রং নিতম্বমণ্ডলং যস্যাস্তাম্। অন্যত্র তু উদ্দামমন্মথবিলাসেন উৎকটকামচেষ্টিতেন গৃহীতমপহৃতং গুরোর্বৃহস্পতেঃ কলত্রং ভার্য্যা যয়া তাম্। পূর্ণোপমা। "কলত্রং শ্রোণিভার্য্যয়োঃ"ইত্যমরঃ। পুরা কিল চন্দ্রো রাজসূয়যজ্ঞং বিধায় বলাত্তস্তারাং নাম বৃহস্পতিভার্য্যামপহৃতবানিতি হরিবংশপঞ্চবিংশাধ্যায়বার্ত্তা।

পতিত হইয়া কাদম্বরীর চরণের বর্ণ ধূসর করিয়াছিল। (ঙ) শরৎকাল যেমন হংসগণের রবে, ময়ূরের স্বরমাধুর্য্যের অহঙ্কার দূর করে, কাদম্বরীও তেমন পুনরুজ্জীবিত মদনের বাণের শব্দে, মহাদেবের অহঙ্কার দূর করিয়াছিল। (চ) পার্ব্বতীর মস্তকের অলঙ্কার যেমন অর্দ্ধনারীশ্বর শিবের মস্তকস্থিত চন্দ্রের কিরণে ব্যাপ্ত থাকে; কাদম্বরীরও তেমন পরিধানে পরিষ্কৃত বস্ত্র ছিল এবং মস্তকের অলঙ্কার সজ্জিত ছিল। (ছ) সমুদ্রতীরস্থ বনশ্রেণীর ভিতরে যেমন ভ্রমরগণের ন্যায় নীলবর্ণ তমালবন থাকে; কাদম্বরীরও তেমন ভ্রমরগণের ন্যায় অত্যন্ত কৃষ্ণবর্ণ-কেশকলাপে শোভিত মুখমণ্ডল ছিল। (জ) চন্দ্র যেমন কামাবেশবশতঃ বৃহস্পতির ভার্য্যাকে গ্রহণ করিয়াছিলেন; কাদম্বরীর নিতম্বদেশকেও তেমন মদনবিভ্রমে গ্রহণ করিয়া-

---

(১)...বন...।

वनराजिमिव पाण्डुश्यामलवलीलतालङ्कृतमध्याम्, (ञ) दिनमुखलक्ष्मीमिव (१) भास्वन्मुक्तांशु-भिन्न-पद्मराग-प्रसाधनाम्, (ट) आकाशकमलिनीमिव स्वच्छाम्बर-दृश्यमान-मृणाल-कोमलोरुमूलाम्, (ठ) मयूरावलीमिव नितम्ब-चुम्बि-शिखण्ड-भार-विस्फुरच्चन्द्रकान्ताम्, (ड) कल्पतरुलतामिव कामफलप्रदाम्, (ढ)

(ञ) वनेति। वनराजिमिव, पाण्डुरपरिभागे पाण्डुवर्णा श्यामला गर्भांशे च श्यामवर्णा तथैव दृश्यमानत्वादिति भावः, या वलीलता त्रिवलीलता तया अलङ्कृतो मध्यः शरीरमध्यभागो यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु पाण्डुः श्यामा च या लवलीलता तया अलङ्कृतो मध्यो देशो यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ट) दिनेति। दिनमुखलक्ष्मीमिव प्रभातश्रियमिव, भास्वतीनां दीप्तिमतीनां मुक्तानां मौक्तिकानां अंशुभिः किरणैः भिन्नानि सम्मिश्राणि पद्मरागप्रसाधनानि पद्मरागमणिनिर्म्मिताभरणानि यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु भास्वता सूर्य्येण मुक्तैर्विक्षिप्तैरंशुभिः किरणैः भिन्नानि प्रकाशितानि यानि पद्मानि तेषां रागो लौहित्यमेव प्रसाधनं भूषणं यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ठ) आकाशेति। आकाशकमलिनीमिव मन्दाकिनीस्थपद्मिनीमिव, स्वच्छाम्बरेण निर्म्मलवसनाभ्यन्तरेण दृश्यमानं मृणालवत् कोमलं ऊरुमूलं यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु स्वच्छाम्बरे निर्म्मलाकाशे दृश्यमानं मृणालस्य कोमलं उरु विशालञ्च मूलं प्रान्तदेशो यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ड) मयूरेति। मयूरावलीमिव, नितम्बचुम्बी नितम्बस्पर्शी शिखण्डभारः केशपाशो यस्याः सा चासौ विस्फुरच्चन्द्रवत् दीप्यमानशशिवत् कान्ता मनोहरा चेति ताम्। अन्यत्र तु नितम्बचुम्बिनि शिखण्डभारे पिच्छ-समूहे विस्फुरन्तो देदीप्यमानाश्चन्द्रकाणां मेचकानामन्ताः प्रान्तदेशा यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ढ) कल्पेति। कल्पतरुलतामिव, कामफलं मदनविकारफलं अभिलषितपदार्थञ्च प्रददातीति सा तथोक्ता ताम्। पूर्णोपमा।

ছিল। (ঞ) বনশ্রেণীর অভ্যন্তর যেমন শ্বেত ও শ্যামবর্ণ লবলীলতাতে শোভিত থাকে, কাদম্বরীর দেহের মধ্যভাগও তেমন পাণ্ডু ও শ্যামবর্ণ ত্রিবলীতে (থরে) শোভিত ছিল। (ট) সূর্য্যকিরণে প্রস্ফুটিত পদ্মের রক্তিমাই যেমন প্রভাতকালীন শোভার অলঙ্কার; কাদম্বরীরও তেমন দীপ্যমান মুক্তার কিরণ-মিশ্রিত পদ্মরাগমণিময়ই অলঙ্কার ছিল। (ঠ) স্বর্গগঙ্গাতে উৎপন্ন পদ্মিনী-মৃণালের কোমল ও বিস্তৃত মূলদেশ যেমন নির্ম্মল আকাশে দেখা যায়; কাদম্বরীরও তেমন মৃণালের ন্যায় কোমল উরুযুগলের মূলদেশ, নির্ম্মল বস্ত্রের ভিতর দিয়া দেখা যাইতেছিল। (ড) ময়ূরগণের নিতম্বস্পর্শী পুচ্ছদেশে যেমন চন্দ্রাকৃতি চিহ্নগুলির প্রান্তভাগ শোভা পাইতে থাকে, কাদম্বরীর মনোহর আকৃতিও তেমন চন্দ্রের ন্যায় শোভা পাইতেছিল এবং কেশকলাপ, নিতম্ব পর্য্যন্ত লম্বিত ছিল। (ঢ) কল্পতরুর লতা যেমন অভিলষিত ফল দান করে, কাদম্বরীও তেমন কামফল দান করিত। (ণ) এবং কেয়ূরক

---

(१) दिनमुखमिव।

शयनसमीपे (१) सम्मुखोपविष्टम् "कोऽसौ, कस्य वापत्यम्, किमभिधानो वा, कीदृशमस्य रूपम्, कियद्वा वयः, किमभिधत्ते, भवता किमभिहितः,(२) कियच्चिरं दृष्टस्त्वया, कथञ्चास्य महाश्वेतया सह परिचय उपजातः, किमयमत्रागमिष्यति" इति मुहुर्मुहुश्चन्द्रापीडसम्बद्धमेवालापं तद्रूपवर्णनामुखरं केयूरकं पृच्छन्तीं कादम्बरीं ददर्श। (ण)

तस्य तु दृष्टकादम्बरीवदनचन्द्रलेखालक्ष्मीकस्य सागरस्येवामृतमुल्लास हृदयम् (त)। आसीच्चास्य मनसि—'शेषेन्द्रियाण्यपि मे वेधसा किमिति लोचनमयान्येव न कृतानि। किंवानेन कृतमवदातं कर्म चक्षुषा, यदनिवारितमेनां पश्यति (थ)। अहो चित्रमेतदुत्पादितं वेधसा सर्वरमणीयानामेकं

(ण) शयनेति। शयनस्य शय्यायाः समीपे, सम्मुखमभिमुखं यथा स्यात्तथा उपविष्टम्, केयूरकमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणमेतत्। असौ युवा। तस्य चन्द्रापीडस्य रूपवर्णनायां मुखरं अश्रान्तवक्तारम्।

(त) तस्येति। कादम्बर्या वदनं चन्द्रलेखेवेत्युपमितसमास एव सागरस्येवेत्युपमासाङ्गत्यात्। दृष्टा कादम्बरीवदनचन्द्रलेखाया लक्ष्मीः शोभा येन तस्य, तस्य चन्द्रापीडस्य हृदयं कर्तृ, दृष्टचन्द्रलेखालक्ष्मीकस्य सागरस्य, अमृतं जलमिव, उल्लास उच्छ्वसितं बभूव। अत्र लुप्तोपमाश्लेषोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, तथा सागरस्यामृतमुल्लसति तस्य हृदयन्तु उल्लासेति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'सागरस्यामृतं यथोल्लसति तथोल्लास हृदय'मिति पाठेन समाधेयः।

(थ) आसीदिति। न कृतानीति, तथा सति दर्शनस्य पूर्णता भवेदिति भावः। अनेन मम चक्षुषा। अवदातं कर्म पुण्यं कार्य्यम्। एतेनातुलनीयं सौन्दर्य्यं व्यज्यते।

(द) अहो इति। चित्रमाश्चर्य्यम्। धाम आश्रयः। रूपातिशयस्य असाधारणसुन्दराकृतेः परमावध

কাদম্বরীর শয্যার নিকটে সম্মুখীন হইয়া উপবিষ্ট ছিল ; আর কাদম্বরী, চন্দ্রাপীড়-সম্বন্ধীয় কথাই বার বার তাহাকে জিজ্ঞাসা করিতেছিলেন যে,—"উনি কে ? কাহারই বা পুত্র ? উঁহার নামই বা কি ? উঁহার রূপটি কেমন ? বয়সই বা কত ? উনি কি বলিলেন ? তুমিই বা কি বলিলে ? তুমি কত কাল উঁহাকে দেখিয়াছ ? মহাশ্বেতার সহিত উঁহার পরিচয় হইল কি ভাবে ? এবং উনি কি এখানে আসিবেন ?"—এই জিজ্ঞাসায় কেয়ূরক কেবল চন্দ্রাপীড়ের রূপের বর্ণনাই বেশী করিতেছিল।

(ত) চন্দ্র দেখিয়া সমুদ্রের জল যেমন উচ্ছ্বসিত হয়, কাদম্বরীর মুখ দেখিয়া চন্দ্রাপীড়ের হৃদয়ও তেমন আনন্দে উচ্ছ্বসিত হইয়াছিল। (থ) তখন চন্দ্রাপীড়ের মনে হইতে লাগিল যে,—'বিধাতা, আমার অবশিষ্ট ইন্দ্রিয়গুলিকেও কেন নয়নময় করিলেন না ? আমার এই নয়নেই বা কি পুণ্য কার্য্য করিয়াছিল যে, অবাধে ইঁহাকে দেখিতে পারিতেছে। (দ) বিধাতা,

(१) पुरःसमीपे। (२) अभिहितम्।

धाम। कुत एते रूपातिशयपरमाणवः समासादिताः (द)। तच्चूनमेनामुत्पादयतो विधेः करतल-परामर्शक्लेशेन ये विगलिता लोचनयुगलादश्रुबिन्दवस्तेभ्य एतानि जगति कुमुद-कमल-कुवलय-सौगन्धिकवनान्युत्पन्नानि' इत्येवं चिन्तयत एवास्य तस्या नयनयुगले निपपात चक्षुः (ध)। तदा तस्या अपि 'नूनमयं स केयूरकेणावेदित' इति चिन्तयन्त्या रूपातिशयविलोकनविस्मयस्मेरं निश्चलनिबद्धलक्ष्यं (१) चक्षुस्तस्मिन् सुचिरं पपात (न)। लोचनप्रभाधवलितस्तु कादम्बरीदर्शनविह्वलो बल इव (२) तत्क्षणमराजत चन्द्रा-

---

उपादानीभूताणुद्रव्याणि। परमाणुतो द्व्यणुकादिक्रमेण स्थूलोत्पत्तिरिति न्यायवैशेषिकमतमवलम्ब्येदमुक्तमिति बोध्यम्।

(ध) तदिति। करतलपरामर्शक्लेशेन निर्माणकालीनहस्तामर्शनकष्टेन। अश्रुबिन्दवः कादम्बर्या एवेत्यर्थः। अस्य चन्द्रापीडस्य चक्षुः। तस्याः कादम्बर्याः। अत्र नूनमित्युपादानाद्वाच्या भावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षा, तया च कादम्बर्याः सौकुमार्यातिशयो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(न) तदेति। रूपातिशयविलोकनेन यो विस्मय आश्चर्यं तेन स्मेरं प्रफुल्लं, तथा निश्चलं यथा स्यात्तथा निबद्धं गृहीतं लक्ष्यं येन तत्तादृशम्।

(प) लोचनेति। लोचनप्रभया कादम्बर्याः स्वस्य च नयनालोकेन धवलितः शुभ्रीकृतश्चन्द्रापीडः, तत्क्षणं बलो बलराम इव, कादम्बर्यास्तस्याः कन्यायाः मदिरायाश्च दर्शनेन विह्वलो मदनाकुलः पानायाधीरश्च सन् अराजत। बलरामो मदिरापरायण आसीदिति पुराणप्रवादः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

এই একটি আশ্চর্য্য, সমস্ত সৌন্দর্য্যের আধার সৃষ্টি করিয়াছেন; তিনি কোথা হইতে, এই সৌন্দর্য্য-নির্ম্মাণের পরমাণু সকল আনয়ন করিলেন। (ধ) অতএব বিধাতা যখন ইঁহাকে নির্ম্মাণ করিতেছিলেন, তখন তাঁহার হস্তের ঘর্ষণে নিশ্চয়ই ইঁহার কষ্ট হইতেছিল; সুতরাং তখন ইঁহার নয়নযুগল হইতে যে সকল অশ্রুবিন্দু পতিত হইয়াছিল; তাহা হইতেই জগতে এই সকল শ্বেতোৎপল, পদ্ম, নীলোৎপল ও রক্তোৎপল উৎপন্ন হইয়াছে,'—চন্দ্রাপীড় এইরূপ চিন্তা করিতেছিলেন, এমন সময়ে তাঁহার নয়নযুগল, কাদম্বরীর নয়নযুগলের উপরে পতিত হইল। (ন) তখন কাদম্বরীও, ভাবিতেছিলেন যে, 'কেয়ূরক যাঁহার কথা বলিয়াছে, নিশ্চয়ই ইনিই সেই যুবা পুরুষ', তখন চন্দ্রাপীড়ের অত্যন্ত সৌন্দর্য্য দেখিয়া বিস্ময়বশতঃ কাদম্বরীর নয়নযুগল বিস্ফারিত হইয়া উঠিল এবং নিশ্চলভাবে লক্ষ্য করিয়া বহুকাল যাবৎ চন্দ্রাপীড়ের উপরেই রহিল। (প) স্বকীয়-নয়ন-প্রভায় শুভ্রবর্ণ বলরাম, যেমন মদিরা দেখিয়া বিহ্বল হইয়া পড়িতেন, তখন চন্দ্রাপীড়ও তেমন কাদম্বরীর নয়ন-প্রভায় শুভ্রবর্ণ হইয়া তাহাকে দেখিয়া একেবারে

---

(१)...लक्ष्यं। (२) अचल इव।

पीड़ः (प)। दृष्ट्वा च तं (१) प्रथमं रोमोद्गमः, ततो भूषणरवः, तदनु कादम्बरी समुत्तस्थौ (फ)।

अथ तस्याः कुसुमायुध एव स्वेदमजनयत्, ससम्भ्रमोत्थानश्रमो व्यपदेशोऽभवत् (ब)। ऊरुकम्प एव (२) गतिं रुरोध, नूपुररवाकृष्टहंसमण्डलमयशो लेभे (भ)। निश्वासप्रवृत्तिरेव (३) अंशुकं चलं चकार, चामरानिलो निमित्ततां ययौ (म)। अन्तःप्रविष्ट-चन्द्रापीड़-स्पर्श-लोभेनैव निपपात हृदये हस्तः, स एव (४) स्तनावरणव्याजो बभूव (य)। आनन्द एवाश्रुजलमपातयत्,

(फ) दृष्ट्वेति। किञ्च, तं चन्द्रापीड़ं दृष्ट्वा विद्यमानायाः कादम्बर्य्याः प्रथमं रोमोद्गमो रोमाञ्चः समुत्तस्थौ, कामविकारोदयादिति भावः, ततो भूषणरवः समुत्तस्थौ, उत्थानवेगादित्याशयः, तदनु च कादम्बरी समुत्तस्थौ, अभ्यागतस्य सम्मानप्रदर्शनार्थमित्यभिप्रायः। अत्र समुत्तस्थावित्येकया क्रियया बहूनां कर्त्तॄणामभिसम्बन्धात् तुल्ययोगितालङ्कारः।

(ब) अथेति। स्वेदं घर्म्मं। व्यपदेशश्छलं। अत्रायमभिप्रायः—कामविकारवशादेव कादम्बर्य्या घर्म्मोऽभवत्, किन्तु सा समुत्थानपरिश्रमादेवायं मम घर्म्म इति छलेन सखीनां पुरः कारणगोपनं कृतवतीति। अतएवात्र व्याजोक्तिरलङ्कारः।

(भ) ऊर्व्विति। ममायं गतिरोधो नोरुकम्पात्, अपि तु नूपुररवाकृष्टेन हंसगणेन चरणनिरोधादिति भावः। पूर्व्ववदत्रापि व्याजोक्तिः कार्य्यकारणयोर्वैयधिकरण्यादसङ्गतिश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(म) निश्वासेति। निश्वासप्रवृत्तिरेव प्रमाणाधिकश्वासारम्भ एव, अंशुकं स्तनवसनं, चलं चञ्चलं। चामरानिल एवेदं वसनं चालयति न पुनः श्वासारम्भ इति कृत्वा प्रकृतकारणगोपनं कृतवतीति भावः। व्याजोक्तिः।

(य) अन्तरिति। अन्तःप्रविष्टस्य अतुलनीयसौन्दर्य्यात्तत्क्षणादेव हृदयं गतस्य चन्द्रापीड़स्य स्पर्शलोभेनैव। स एव हस्त एव। तथा च अकस्मादुत्थानेन स्तनयोरावरणापसरणात् पुनस्तयोरावरणार्थमेव हृदये हस्तो दत्तः, न पुनरस्य हृदयं गतस्य स्पर्शलोभेनेति छलेन सखीनां पुरः प्रकृतकारणगोपनं कृतवतीत्याशयः। व्याजोक्तिः।

বিহ্বল হইয়া পড়িলেন। (ফ) এ দিকে চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া প্রথমতঃ কাদম্বরীর রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইল, তাহার পর অলঙ্কারের শব্দ উঠিল এবং তাহার পর কাদম্বরী গাত্রোত্থান করিলেন।

(ব) তদনন্তর কামদেবই কাদম্বরীর ঘর্ম্ম জন্মাইলেন, কিন্তু সখীগণের নিকট, সত্বর গাত্রোত্থান করার পরিশ্রম তাহার ছল হইল। (ভ) উরুকম্পনেই কাদম্বরীর গতিরোধ করিল, কিন্তু নিন্দাভাজন হইল নূপুরের রবে আকৃষ্ট হংসগণ। (ম) শ্বাস-আরম্ভই স্তনের বস্ত্র কম্পিত করিতে লাগিল, কিন্তু অন্যের নিকট নিমিত্ত হইল চামরের বায়ু। (য) হৃদয়ে প্রবিষ্ট চন্দ্রাপীড়ের স্পর্শের ইচ্ছাতেই হৃদয়ের উপরে হাতখানা পড়িল, কিন্তু সেই হাতখানাই

(१) क्वचित् तमिति नास्ति। (२) ऊरुस्तम्भ एव। (३) निश्वासप्रवृत्तिरेव। (४) हस्तपल्लवः, स एव करः।

चलितकर्णावतंसकुसुमरजो व्याज आसीत् (१) (र)। लज्जैव वक्तुं न ददौ, मुखकमलपरिमलागतालिवृन्दं द्वारतामगात् (२) (ल)। मदनशरप्रथम-प्रहारवेदनैव सीत्कारम् (३) अकरोत्, कुसुमप्रकरकेतकीकण्टकक्षतिः साधारण-तामवाप (व)। वेपथुरेव करतलमकम्पयत्, निवेदनोद्यतप्रतीहारीनिवारणं कपटमभूत्। (श)

तदा च कादम्बरीं विशतो मन्मथस्यापि मन्मथ इवाभूद्द्वितीयः, तया सह

(र) आनन्द इति। चलितस्य चामरानिलेन उत्थानवेगेन वा कम्पितस्य कर्णावतंसकुसुमस्य रजः परागः। कुसुमरज एव ममाश्रुजलमपातयत्, नत्वानन्द इति भावः। व्याजोक्तिः।

(ल) लज्जेति। मुखकमलस्य परिमलेन सौरभेण आगतस्य तत् अलिवृन्दं भ्रमरगणश्चेति तत्। द्वारतां गोपनसाधनताम्। भ्रमरगण एव वक्तुं प्रतिबध्नाति न पुनर्लज्जेति भावः। व्याजोक्तिः।

(व) मदनेति। अकरोदजनयत्। कुसुमप्रकरेषु उपहारपुष्पसमूहेषु मध्ये या केतकी केतकीपुष्पं तस्याः कण्टकक्षतिः कण्टकेन चरणविदारणं साधारणतां सीत्कारसाधारणहेतुताम्। केतकीकण्टकक्षतिरेव मे सीत्कारमिममजनयत्, नतु मदनशरप्रहारवेदनेति व्याजीकृत्य प्रकृतगोपनं कृतवतीति भावः। व्याजोक्तिः।

(श) वेपथुरिति। वेपथुरेव कामावेशजनितकम्प एव। निवेदनाय विषयविशेषविज्ञापनाय उद्यता या प्रतीहारी तस्या निवारणं करकम्पनेन निषेधनम्। प्रतीहारीनिवारणव्याजेनोद्भिन्नमपि वेपथुमगोपयदिति भावः। व्याजोक्तिः।

(ष) कादम्बर्य्या भावावेशमभिधाय चन्द्रापीडस्यापि तमभिधातुमाह तदेति। कादम्बरीं विशतो मन्मथस्यापि द्वितीयः स्वसमानोऽपरः मन्मथ इवाभूत्, यस्तया कादम्बर्य्या सह चन्द्रापीडहृदयं विवेशेत्यन्वयः। अन्यथैकस्यैव युगपदुभयत्र प्रवेशासम्भवादिति भावः। तथा च यथा चन्द्रापीडदर्शनानन्तरमेव तेन सह मन्मथः कादम्बरीहृदयं विवेश, तथैव कादम्बरीदर्शनानन्तरमपि तया सह मन्मथश्चन्द्रापीडहृदयमपि विवेशेति सरलार्थः।

স্তনযুগলের আবরণের ছল হইয়া দাঁড়াইল। (র) আনন্দই বাস্তবিক অশ্রুপাত করাইল, কিন্তু বাহিরে, কম্পিত-কণ্ঠাভরণ-পুষ্পের রেণু, তাহার ছল হইল। (ল) লজ্জাই বাস্তবিক বলিতে দিল না, কিন্তু মুখপদ্মের সৌরভে আগত ভ্রমরগণ, তাহার কারণ হইয়া দাঁড়াইল। (ব) প্রথম মদন-শর-প্রহারে কাদম্বরীর যে বেদনা হইয়াছিল, বস্তুতঃ সেই বেদনাই সীৎকার জন্মাইল, কিন্তু ভূতল-বিক্ষিপ্ত পুষ্পসমূহের মধ্যে যে কেতকীপুষ্প ছিল, তাহার কণ্টকের আঘাত, বাহিরে সেই সীৎকারের কারণ হইল। (শ) বেপথু (কামকম্প) উপস্থিত হইয়া কাদম্বরীর হস্ত কম্পিত করিল, কিন্তু কোন বিষয় জানাইবার জন্য উদ্যত প্রতীহারীকে নিবারণ করা সেই হস্ত-কম্পনের ছল হইল।

(ষ) তখন কাদম্বরীর সহিত যে কন্দর্প চন্দ্রাপীড়ের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়াছিলেন, তিনিই

---

(१) आजगामीत्, व्यपदेशतामयासीत्। (२) हारपाशता। (३) सीत्कारं।

यो विवेश चन्द्रापीड़हृदयम् (ष)। तथाहि असावपि तस्या रत्नाभरणद्युतिमपि तिरोधानममंस्त, हृदयप्रवेशमपि परिग्रहमगणयत्, भूषणरवमपि सम्भाषणममन्यत, सर्वेन्द्रियाहरणमपि प्रमादमचिन्तयत्, देहप्रभासम्पर्कमपि सुरतसमागमसुखमकल्पयत् । (स)

कादम्बरी तु कृच्छ्रादिव दत्तकतिपयपदा महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं चिरदर्शनजातोत्कण्ठा (१) सोत्कण्ठं कण्ठे जग्राह (ह)। महाश्वेतापि दृढ़तरदत्त-

अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा "आत्मा जानाति यत् पाप" मित्यादिवत् यच्छब्दस्य परवाक्यगतत्वेन तच्छब्दानपेक्षणान्न विधेयाविमर्शदोषः ।

(स) उक्तमर्थं समर्थयितुमाह तथाहीति। असौ चन्द्रापीड़ोऽपि तस्याः कादम्बर्याः, रत्नाभरणद्युतिमपि तिरोधानं व्यवधानसाधनममंस्त। अत्र प्रकाशरूपया द्युत्या व्यवधानासम्भवाद्विरोधः, नयनावरकत्वेन च तत्सम्भवात् समाधानमिति विरोधाभासोऽलङ्कारः। परिग्रहं पतित्वेन ग्रहणरूपमगणयत्, "कामः स्वतो पश्यति" इति न्यायादिति भावः। अत्र निरङ्ग केवलरूपकमलङ्कारः। सम्भाषणं अभ्यर्थनालापरूपं। अत्रापि पूर्व्ववद्रूपकम्। सर्व्वेषामिन्द्रियाणां मनोनयनादीनां आहरणमाकर्षणमपि, प्रसादमनुग्रहमचिन्तयत्। अत्र स्ववस्तुहरणस्यानिष्टत्वेन प्रसादत्वासम्भवाद्विरोधः, भावाभिव्यक्तिपूर्व्वकेन्द्रियहरणाच्च परमाभीष्टत्वेन तत्सम्भवात् समाधानमिति पूर्व्ववद्विरोधाभास एवालङ्कारः। सुरतसमागमसुखं रमणाय सम्मेलनजनितसुखरूपं। अत्रापि पूर्व्ववद्रूपकम्।

(ह) कादम्बरीति। स्नेहनिर्भरं प्रेम्णा गाढ़ं, चिरदर्शनात् बहुकालात् परं साक्षात्कारात् जाता उत्कण्ठा यस्याः सा सोत्कण्ठं सौत्सुक्यं, कण्ठे जग्राह आलिङ्गनं चकारेत्यर्थः। अत्र हेतूत्प्रेक्षाछेकानुप्रासयोः संसृष्टिः, तथा उत्कण्ठाशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च सोत्कण्ठमित्यस्य परित्यागेनैव समाधेयः।

যেন কাদম্বরী-হৃদয়-প্রবিষ্ট কন্দর্পের দ্বিতীয় হইয়া দাঁড়াইলেন। (স) কারণ—চন্দ্রাপীড়ও, কাদম্বরীর রত্নালঙ্কারের কিরণগুলিকেও, তাহার ব্যবধানের কারণ বলিয়া মনে করিতে লাগিলেন; কাদম্বরী, যে নিজের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়াছিল, তাহাই পতিত্বে বরণ করাস্বরূপ গণনা করিলেন; অলঙ্কারের শব্দকেও, সম্ভাষণ বলিয়া মনে করিলেন; নিজের সকল ইন্দ্রিয় হরণ করাটাকেও অনুগ্রহ বলিয়া ভাবিলেন এবং কাদম্বরীর দেহের প্রভামাত্র লাভ করাটাকেও সম্মেলনসুখস্বরূপ মনে মনে কল্পনা করিলেন।

(হ) বহুকালের পর মহাশ্বেতাকে দেখিয়া কাদম্বরীর উৎকণ্ঠা জন্মিল, তাই তিনি, কষ্টবশতই যেন কতিপয় পদক্ষেপ করিয়া যাইয়া, স্নেহবশতঃ উৎকণ্ঠার সহিত মহাশ্বেতার কণ্ঠে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন। (ক) মহাশ্বেতাও, আবার কাদম্বরীকে গাঢ়তর আলিঙ্গন

(१) ...जातोत्कण्ठं।

कण्ठग्रहा तामवादीत्—"सखि ! कादम्बरि ! भारते वर्षे राजा अनेक-वर-तुरग-खुर-मुखोल्लेखदत्त-चतुः-समुद्र-मुद्रो रक्षितप्रजापीडस्तारापीडो नाम, (च) तस्यायं निज-भुज-शिलास्तम्भ-विश्रान्त-विश्व-विश्वम्भरापीडः (१) चन्द्रापीडो नाम सूनुर्दिग्विजयप्रसङ्गेनागतः (२) भूमिमिमाम् (क)। एष च दर्शनात् प्रभृति प्रकृत्या मे निष्कारणबन्धुतां गतः, परित्यक्तसकलासङ्गनिष्ठुरामपि मे सविशेष-स्वभावसरलैर्गुणैराकृष्य चित्तवृत्तिं वर्त्तते, दुर्लभो हि दाक्षिण्यपरवशो निर्निमित्त-मित्रमकृत्रिमहृदयो विदग्धजनः (ख)। यतो दृष्ट्वैवेमं (३) अहमिव त्वमपि

(च) मद्धेति। दृढ़तरं यथा स्यात्तथा दत्तः कण्ठग्रह आलिङ्गनं यया सा। अनेके बहवः, वरा उत्तमाः, ये तुरगा घोटकाः, तेषां खुरमुखैः उल्लेखेन भूमिविदारणेन दत्ताश्चतुर्षु समुद्रेषु मुद्रा जयचिह्नानि येन सः। रक्षिता सुशासनादिभिर्निवारिता प्रजानां पीड़ा येन सः। अत्र च्छेकानुप्रासोऽलङ्कारः।

(क) तस्येति। अयं तस्य सूनुरिति सम्बन्धः। निजौ भुजावेव दृढ़त्वसाम्यात् शिलास्तम्भौ तत्र विश्रान्ता सुखेनावस्थिता विश्वा सर्वा विश्वम्भरा धरैव पीड़ा अनायासधार्य्यत्वसाम्यादुत्तंसो भूषणविशेषो यस्य सः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकद्वयच्छेकानुप्रासयोः संसृष्टिः। "पीड़ापीड़मह्यौ नोत्तंसकृपायु सरलद्रुमे।" इति हैमः।

(ख) एष इति। प्रकृत्या स्वभावेन। सविशेषाः सातिरेका लोकोत्तरा इत्यर्थः ते च ते स्वभाव-सरलाश्चेति तैः, गुणैर्दाक्षिण्यादिभिः करणैः, परित्यक्तैः सकलासङ्गैः सर्वसंसर्गैः निष्ठुरा कठिना तां तथाविधामपि मे मम चित्तवृत्तिं आकृष्य वर्त्तते। हि यस्मात्, दाक्षिण्यपरवशः सर्वेषामेवानुकूलव्यवहारीत्यर्थः, निर्निमित्तमित्रं अकारणबन्धुः, अकृत्रिमहृदयः प्रतारणाहीनचित्तः, विदग्धजनो विचक्षणलोको दुर्लभः। अतएवैष विदग्धो मम चित्तवृत्तिमाकृष्य वर्त्तत इति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासो-ऽलङ्कारः।

করিয়া বলিল—"সখি ! কাদম্বরি ! ভারতবর্ষে তারাপীড় নামে এক রাজা আছেন ; তিনি বহুতর উৎকৃষ্ট অশ্বের খুরাগ্রের বিদারণে চারি সমুদ্রের তীরেই নিজের বিজয়চিহ্ন স্থাপন করিয়াছেন এবং সুশাসনের গুণে প্রজাগণের সমস্ত কষ্টই নিবারণ করিয়াছেন ; (ক) ইনি তাঁহারই পুত্র ; ইঁহার নাম চন্দ্রাপীড় ; ইঁহার বাহুযুগলরূপ শিলাস্তম্ভের উপরে সমগ্র পৃথিবীরূপ ভূষণ সুখে অবস্থান করিতেছে ; ইনি দিগ্বিজয়প্রসঙ্গে এই স্থানে আসিয়াছেন। (খ) সাক্ষাৎকার হইতে স্বভাবতই ইনি আমার অকারণ বন্ধু হইয়াছেন এবং সকল আসক্তি পরিত্যাগ করায় আমার চিত্তবৃত্তি নিষ্ঠুর হইলেও, ইনি, লোকাতীত ও স্বভাব-সরল গুণগ্রামে আমার সেই চিত্তবৃত্তিকে আকর্ষণ করিয়া অবস্থান করিতেছেন ; কারণ—সকলেরই আনুকূল্যে নিরত, অকারণ-বন্ধু ও অকৃত্রিমচিত্ত এইরূপ বিচক্ষণলোক জগতে দুর্লভ। (গ) যে হেতু—আমার

(१)...विश्रान्तविश्वम्भरापीडः। (२) अनुगतः। (३) दृष्ट्वा चैनं, दृष्ट्वेमं।

निर्म्माणकौशलं प्रजापतेः, निःसपत्नताञ्च रूपस्य, स्थानाभिनिवेशित्वञ्च लक्ष्म्याः, सद्भर्तृतासुखञ्च पृथिव्याः, सुरलोकातिरिक्ततञ्च मर्त्त्यलोकस्य, सफलताञ्च मानुषीलोचनानाम्, एकस्थानसमागमञ्च सर्वकलानाम्, ऐश्वर्य्यञ्च सौभाग्यस्य, अग्राम्यताञ्च मनुष्याणां ज्ञास्यसीति बलादानीतोऽयम् (ग)। कथिता चास्य मया बहुप्रकारं (१) प्रियसखी। तदपूर्वदर्शनोऽयमिति विमुच्य लज्जाम्, अनुपजातपरिचय इत्युत्सृज्य अविस्रम्भताम्, अविज्ञातशील इत्यपहाय शङ्काम्, यथा

(ग) यत इति। यतस्त्वमपि ज्ञास्यसीति सम्बन्धः। रूपस्य सौन्दर्य्यस्य निःसपत्नतां प्रतिस्पर्द्धिराहित्यं अतुलनीयतामित्यर्थः। लक्ष्म्या राजश्रियः स्थाने यथास्थले अभिनिवेशित्वं स्थातुमाग्रहवत्त्वं पृथिव्याः सद्भर्त्तृतया उत्कृष्टाधिपतिकतया सुखं। मर्त्त्यलोकस्य सुरलोकात् स्वर्गात् अतिरिक्ततामुत्कर्षं अस्याधिष्ठानादिति भावः। एतेनेन्द्रादपि चन्द्रापीड़स्योत्कर्षो व्यज्यते। मानुष्यो मनुष्यजातीयाः स्त्रियस्तासां लोचनानां, सततमस्यावलोकनादिति भावः। सर्वकलानां सकलकलाविद्यानां नृत्यगीतादीनां, एकस्थाने समागमं सम्मेलनं। एतेन सकलकलाविद्यावत्त्वं सूच्यते। सौभाग्यस्य भाग्यवत्तायाः, ऐश्वर्य्यं महासम्पदम्, अस्य लाभादिति भावः। एतेनायं सर्वस्यैव दुर्लभ इति ध्वन्यते। अग्राम्यताममन्दतां। एतेनास्य देवादिभ्योऽपि वैलक्षण्यं द्योत्यते। अत्र निर्म्माणकौशलमित्यादीनां ज्ञास्यसीत्येकया क्रियया कर्म्मतयाऽभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(घ) कथितेति। अस्य कुमारस्य समीपे, प्रियसखी त्वम्, बहवः प्रकारा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा कथिता वर्णिता। अयं कुमारः, अपूर्वं नूतनं दर्शनं यस्य स तादृश इति कृत्वेत्यं सर्वत्र योजना। न विद्यते विस्रम्भो विश्वासो यस्मिन् सः, तस्य भावस्ताम्। अत्रापि अस्मिन् कुमारेऽपि वर्त्तितव्यं त्वया व्यवहर्त्तव्यम्, सर्वगुणाकरत्वान्न तव दोष आशङ्कनीय इति भावः।

ন্যায়, তুমিও, ইঁহাকে দেখিয়াই বিধাতার নির্ম্মাণ-নৈপুণ্য, সৌন্দর্য্যের অতুলনীয়তা, রাজলক্ষ্মীর যথাস্থানে থাকিবার আগ্রহ, উৎকৃষ্ট পতিলাভনিবন্ধন পৃথিবীর সুখ, স্বর্গলোক অপেক্ষা মর্ত্ত্যলোকের উৎকর্ষ, মনুষ্যরমণীগণের নয়নের সার্থকতা, একস্থানে সমস্ত কলাবিদ্যার সম্মেলন, সৌভাগ্যের সম্পদ এবং মনুষ্যদিগের ভদ্রতা—এই সমস্তই জানিতে পারিবে; এই জন্যই ইঁহাকে আমি বলপূর্ব্বক আনয়ন করিয়াছি। (ঘ) এবং ইঁহার নিকট আমি বহু রকমে তোমার পরিচয় দিয়াছি; অতএব, 'ইঁহার সহিত এই প্রথম সাক্ষাৎ' এই ধারণাবশতঃ যে লজ্জা হইতে পারে, তাহা ত্যাগ করিয়া, পরিচয় হয় নাই বলিয়া যে অবিশ্বাস আসিতে পারে, তাহাও পরিত্যাগ করিয়া এবং অজ্ঞাত-স্বভাব বলিয়া যে আশঙ্কা জন্মিতে পারে, তাহাও না করিয়া, তুমি আমার সঙ্গে যেরূপ ব্যবহার কর, ইঁহার সঙ্গেও সেইরূপ ব্যবহারই করিবে। (ঙ) ইনি

(१) बहुधा।

मयि तथाचापि वर्त्तितव्यम्, (१) (घ)। एष ते मित्रञ्च बान्धवश्च परिजनश्च” इत्यावेदिते तया, चन्द्रापीड़: प्रणाममकरोत्। (ङ)

कृतप्रणामस्य तं तदा कादम्बर्य्यास्तिर्य्यग्विलोकयन्त्या: सस्नेहमतिदीर्घलोचनापाङ्गभागं गच्छतस्तारकस्य (२) श्रम-सलिल-लव-विसर इवानन्दवाष्पजल-बिन्दुनिकरो निपपात (च)। त्वरितमभिप्रस्थितस्य धूलिरिव सुधाधवला स्मितज्योत्स्ना विससार (छ)। सम्मान्यतामयं हृदयरुचिरो जन: प्रतिप्रणामेनेति शिरो वक्तुमिवैका भ्रूलता समुन्ननाम (ज)। अङ्गुलिविवरविनि:सृतमरकता-

(ङ) एष इति। मित्रञ्चेत्यादिना सर्व्वथैवायमेव पतित्वेन बरणीय इति व्यज्यते तया महाश्वेतया, इति पूर्व्वोक्तविषये आवेदिते सति। गन्धर्व्वाणां देवयोनित्वेन तत्कन्यायै कादम्बर्य्यै मानुषस्य चन्द्रापीड़स्य नमस्कारो युज्यत एवेति बोध्यम्।

(च) कृतेति। तदा कृतप्रणामस्य तं चन्द्रापीडं सस्नेहं सानुरागं तिर्य्यक् विलोकयन्त्या: कादम्बर्य्या:, अतिदीर्घलोचनस्य अपाङ्गभागं प्रान्तदेशं गच्छतस्तारकस्य ताराया:, श्रमस्तावद्गमनेनापि य: खेदस्तस्य ये सलिललवास्तज्जनिता घर्म्मविन्दवस्तेषां विसरं समूह इव। अत्रोपमालङ्कार:। “कनीनिकायां नक्षत्रे तारकं तारकेति च।” इति विश्व:।

(छ) त्वरितमिति। अभिप्रस्थितस्य सुखवर्त्मना चन्द्रापीडं प्रति चलितस्य हृदयस्य कादम्बर्य्या मनस:, धूलि: पादरज इव, सुधाधवला स्मितज्योत्स्ना मन्दहास्यप्रभा, विससार विस्तृता बभूव। भावावेशेन कादम्बरी स्मितमकरोदिति भाव.। अत्र लुप्तोपमाजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:।

(ज) सम्मान्यतामिति। रुचिं राति ददातीति रुचिर:, हृदयरुचिरं अतुलनीयसौन्दर्य्यान्मनसो रुचिजनक: सर्व्वथैव मनोमत इत्यर्थ:। शिरो वक्तुमिव शिरसे कथयितुमिव। अत्र फलोत्प्रेक्षालङ्कार:।

তোমার সুহৃৎ, বন্ধু ও পরিজন বলিয়া জানিবে” মহাশ্বেতা এইরূপ জানাইলে চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীকে নমস্কার করিলেন।

(চ) তখন কাদম্বরী কটাক্ষপাত করিয়া স্নেহের সহিত চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন, তাঁহার নয়নের তারা সুদীর্ঘ নয়নের প্রান্তভাগে যাইয়া উপস্থিত হইল এবং তাহা হইতে পরিশ্রমবশতঃ ঘর্ম্মবিন্দু-সমূহের ন্যায় আনন্দাশ্রুবিন্দুসমূহ পতিত হইতে লাগিল। (ছ) কাদম্বরীর হৃদয়, চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দ্রুত প্রস্থান করিয়াছিল; সুতরাং সেই হৃদয়ের চরণধূলির ন্যায় অমৃততুল্য শুভ্রবর্ণ ঈষৎ হাস্যের প্রভা ছড়াইয়া পড়িল। (জ) “প্রতিনমস্কার করিয়া এই মনোমত লোকটিকে সম্মানিত কর” এই কথা মস্তককে বলিবার জন্যই যেন কাদম্বরীর একটি ভ্রূ, উপরের দিকে উঠিল। (ঝ) হাই তুলিতে আরম্ভ করায় কাদম্বরীর মুখমণ্ডল কথা

(१) प्रवर्त्तितव्यं।

(२) अतिदीर्घलोचनाया अपाङ्गभागं गच्छतस्तारतारकस्य लोचनस्य अतिदीर्घलोचनयोरपाङ्गभागं।

ङ्गुलीयकमयूखलेखो विभ्रमगृहीतताम्बूलवीटिक इव (१) करो जृम्भारम्भमन्थरं मुखमुत्ससर्प (झ)। स्रवत्स्वेदजलधौतलावण्यनिर्म्मलेषु चास्याः संक्रान्त-(२) प्रतिबिम्बतया सञ्चरन्मूर्त्तिर्मकरकेतुरिवावयवेष्वदृश्यत चन्द्रापीड़ः (ञ)। तथाहि शिञ्जन्मणिनूपुरपुटेन भुवं (३) आलिखताङ्गुष्ठेनाहूत इव चरणनखेषु निपपात (ट)। दर्शनातिरभसप्रधावितेन गत्वा हृदयेनानीत इव स्तनाभ्यन्तरे

(झ) अङ्गुलीति। अङ्गुलीविवरेभ्यो विनिःसृता मरकताङ्गुलीयकानां मयूखलेखा किरणराजिर्यस्य सः, अतएव विभ्रमेण विलासेन गृहीता ताम्बूलवीटिका येन सः, मरकतमणिनिर्म्मिताङ्गुरीयकाणां मयूखलेखायास्ताम्बूलवीटिकावत् श्यामवर्णत्वादिति भावः। करो हस्तः। जृम्भाया आरम्भेण मन्थरं जड़ं मुखं उत्ससर्प उज्जगाम। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तन्मयूखलेखायास्ताम्बूलवीटिकात्वेनोत्प्रेक्षणाच्चोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ञ) स्रवदिति। किञ्च, स्रवता भावोदयादगलता स्वेदजलेन धौतं यल्लावण्यं तेन निर्म्मलेषु। एतेन प्रतिबिम्बपतनयोग्यत्वं सूचितम्। अस्याः कादम्बर्य्याः अवयवेषु अङ्गेषु, चन्द्रापीडः संक्रान्तप्रतिबिम्बतया स्वस्यैव सञ्चरितप्रतिमूर्त्तिकतया हेतुना, सञ्चरन्मूर्त्तिर्मकरकेतुर्मदन इवादृश्यत सखीभिरिति शेषः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च कादम्बर्य्याः कामातुरत्वं चन्द्रापीडस्य च मदनतुल्यसौन्दर्य्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ट) उक्तमेवार्थं विवृण्वन्नाह तथाहीति। भुवं आलिखता किञ्चित् किञ्चित् कर्षता, अतएव शिञ्जत् अव्यक्तशब्दं कुर्वन् मणिनूपुरपुटं यत्र तादृशेन अङ्गुष्ठेन आहूत इव नूपुररवेणामन्त्रित इव चन्द्रापीडः कादम्बर्य्याश्चरणनखेषु निपपात। तेषु तस्य प्रतिबिम्बं पपातेत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) दर्शनेति। दर्शनाय चन्द्रापीडस्यैवावलोकनाय अतिरभसमतिद्रुतं प्रधावितेन हृदयेन गत्वा आनीत इव चन्द्रापीड़ः कादम्बर्य्याः स्तनाभ्यन्तरे सखीभिः समदृश्यत। क्रियोत्प्रेक्षा।

বলিতে অক্ষম হইল, দক্ষিণ হস্ত যাইয়া তাহার উপরে উঠিল; সেই দক্ষিণ হস্তের অঙ্গুলীবিবর হইতে মরকতমণিময় অঙ্গুরীয়কসমূহের কিরণশ্রেণী নির্গত হইতে লাগিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সেই দক্ষিণহস্ত একটি তাম্বূল-বীটিকা (পানের বীড়ি) ধারণ করিয়াছে। (ঞ) ঘর্ম্মজল নির্গত হইয়া কাদম্বরীর অঙ্গ-লাবণ্যকে প্রক্ষালন করিতেছিল, তাহাতে তাহার অঙ্গগুলি আরও নির্ম্মল হইয়াছিল; সুতরাং সেই অঙ্গে চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব পতিত হওয়ায় দেখা যাইতে লাগিল যেন কাদম্বরীর সমস্ত অঙ্গে কামদেব বিচরণ করিতেছেন। (ট) কাদম্বরী চরণাঙ্গুষ্ঠদ্বারা একটু একটু করিয়া ভূতল কর্ষণ করিতেছিল, তাহাতে মণিময় নূপুর বাজিতেছিল, সুতরাং বোধ হইতেছিল যে, সেই চরণাঙ্গুষ্ঠকর্ত্তৃক আহূত হইয়াই যেন চন্দ্রাপীড় তাহার চরণের নখসমূহে পতিত হইয়াছেন। (ঠ) কাদম্বরীর হৃদয়, চন্দ্রাপীড়কে দেখিবার জন্য অতিদ্রুত যাইয়া তাঁহাকে যেন আনয়ন করিল, তাই কাদম্বরীর স্তনযুগলের ভিতরে চন্দ্রাপীড়কে

(१) ...लेखाविभ्रम...। ...अङ्गुलीयकलेखः...। (२) सम्यसंक्रान्त...। (३) मणिभवं।

समदृश्यत (ठ)। विकचकुवलयदामदीर्घया च दृष्ट्या निपीत इव कपोलतले समलक्ष्यत (ड)। सर्वासामेव च तदा तासां कन्यकानां तिर्य्यक् पश्यन्तीनां तं कुतूहलादपाङ्गचुम्बिन्यो निर्गन्तुकामा इव (१) कर्णपूरमधुकरैः समं बभ्रमुस्तरलास्तारकाः (ढ)।

कादम्बरी तु सविभ्रमकृत-प्रतिप्रणामा (२) महाश्वेतया सह पर्य्यङ्के निषसाद (ण)। ससम्भ्रमं परिजनोपनीतायाञ्च (३) शयनशिरोभागनिवेशितायां धवलांशुकप्रच्छदपटायां हेमपादाङ्कितायां (४) पीठिकायां चन्द्रापीडः समुपाविशत् (त)। महाश्वेतानुरोधेन च विदितकादम्बरीचित्ताभिप्रायाः

(ड) विकचेति। विकचकुवलयदामवत् प्रस्फुटितनीलोत्पलमालावत् दीर्घया अनवरतकटाक्षपातादिति भावः, दृष्ट्या निपीतो निगीर्ण इव चन्द्रापीडः कादम्बर्य्याः कपोलतले। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ढ) सर्वासामिति। कुतूहलात्तं चन्द्रापीडं तिर्य्यक् पश्यन्तीनां सर्वासामेव तासां कन्यकानां अपाङ्गचुम्बिन्यो नयनप्रान्तवर्त्तिन्यः, तरलाश्चञ्चलास्तारकाः, निर्गन्तुकामा इव सत्यः, कर्णपूरमधुकरैः समं कर्णाभरणीभूतपुष्पगतभ्रमरैः सह बभ्रमुः। अत्र गुणोत्प्रेक्षासहोक्त्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) कादम्बरीति। सविभ्रमं सविलासं कृतः प्रतिप्रणामश्चन्द्रापीडाय प्रतिनमस्कारो यया सा।

(त) ससेति। किञ्च, चन्द्रापीडः ससम्भ्रमं सत्वरं परिजनेन उपनीतायामुपस्थापितायां, शयनस्य शय्यायाः शिरोभागे निवेशितायां, धवलांशुकमेव प्रच्छदपट आस्तरणवस्त्रं यस्यास्तस्यां, हेमपादैः स्वर्णनिर्म्मितपादैरङ्कितायां पीठिकायां क्षुद्रपीठे समुपाविशत्।

(थ) महेति। किञ्च, विदितकादम्बरीचित्ताभिप्रायाः प्रतीहार्य्यः, महाश्वेताया अनुरोधेन, संवृतेषु

দেখা যাইতে লাগিল। (ড) এবং প্রস্ফুটিত নীলোৎপলমালার ন্যায় সুদীর্ঘ কাদম্বরীর নয়নযুগল চন্দ্রাপীড়কে যেন পান করিল, সুতরাং তিনি কাদম্বরীর কপোলমণ্ডলেও দৃষ্টিগোচর হইতে লাগিলেন। (ঢ) আর তখন সমস্ত কন্যাগণই কৌতুকবশতঃ চন্দ্রাপীড়কে বক্র দৃষ্টিতে দর্শন করিতেছিল, তাই তাহাদের চঞ্চল নয়ন-তারা, প্রান্ত-ভাগে যাইয়া নির্গত হইতে ইচ্ছা করিয়াই যেন কর্ণাভরণ-কুসুমের ভ্রমরগণের সহিত ঘুরিতে লাগিল।

(ণ) কাদম্বরীও, নানাবিধ বিলাসের সহিত চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিয়া, মহাশ্বেতার সহিত পর্য্যঙ্কের উপরে যাইয়া উপবেশন করিল। (ত) এদিকে কোন পরিচারিকা তাড়াতাড়ি একখানি ক্ষুদ্র পীঠ আনিয়া কাদম্বরীর শয্যার শিয়রের দিকে সংস্থাপন করিল, তাহার উপরে শুভ্রবর্ণ একখানি আস্তরণ বস্ত্র পাতা ছিল এবং তাহার পায়াগুলি স্বর্ণময় ছিল; চন্দ্রাপীড় তাহার উপরে উপবেশন করিলেন। (থ) প্রতীহারীরা কাদম্বরীর মনের অভিপ্রায়

(१) अपाङ्गचुम्बिन्या दृष्ट्या निर्गन्तुकामा इव। (२)...कृतप्रणामा।
(३) ससम्भ्रमपरिजनोपनीतायाञ्च। (४) अत्र विविधरत्नप्रभाभासितायामिति क्वचित् पाठः।

संवृत-मुख-न्यस्त-हस्त-दत्त-शब्द-निवारण-संज्ञाः प्रतीहार्य्यो वेणुरवान् वीणाघोषान् गीतध्वनीन् मागधीजयशब्दांश्च सर्वतो निवारयाञ्चक्रुः (थ)। त्वरितपरिजनोपनीतेन च सलिलेन कादम्बरी स्वयमुत्थाय महाश्वेतायाश्चरणौ प्रक्षाल्योत्तरीयांशुकेनापमृज्य पुनः पर्य्यङ्कमारुरोह। चन्द्रापीडस्यापि कादम्बर्य्याः सखी रूपानुरूपा जीवितनिर्विशेषा सर्वविस्रम्भभूमिर्मदलेखेति नाम्ना बलादनिच्छतोऽपि प्रक्षालितवती चरणौ (द)। महाश्वेता तु कर्णाभरणप्रभावर्षिण्यंसदेशे (१) सप्रेम पाणिना स्पृशन्ती, मधुकर-भर-पर्य्यस्तञ्च कर्णावतंसमुत्क्षिपन्ती, चामरपवन-विधुति-(२) पर्य्यस्ताञ्च (३) अलकवल्लरीमनुष्वजमाना कादम्बरीमनामयं

मुद्रितेषु मुखेषु न्यस्तैर्हस्तैः, दत्ता शब्दनिवारणसंज्ञा शब्दकरणनिवृत्तिसङ्केतो याभिस्तास्तथाभूताः सत्यः। मागधीनां स्तुतिपाठिकानां ये जयशब्दास्तांश्च।

(द) त्वरितेति। रूपेण सौन्दर्य्येण अनुरूपा स्वसदृशी। जीवितनिर्विशेषा अतीवस्नेहभाजनमित्यर्थः, सर्वविस्रम्भभूमिः सकलप्रकारविश्वासपात्रम्। मदेन स्वसौन्दर्य्याभिमानतया लिखति अङ्कयति यूनां चित्तमिति मदलेखा लिखतेः पचादित्वादच्।

(ध) महेति। कर्णाभरणप्रभाया वर्षं वृष्टिरस्यास्तीति तस्मिन्, अंसदेशे कादम्बर्य्याः स्कन्धदेशे। मधुकराणां भरेण पर्य्यस्तं स्खलितं कर्णावतमं कादम्बर्य्याः कर्णाभरणीभूतं पुष्पं, उत्क्षिपन्ति पुनर्यथास्थानमुत्तोलयन्ती। तथा चामरपवनेन या विधुतिः सञ्चालनं तेन पर्य्यस्ताम् इतस्ततो विकीर्णाम्, अलकवल्लरीं कादम्बर्य्याः कुन्तलकलापाग्रदेशमित्यर्थः, अनुष्वजमाना हस्तेनामर्शन्ती। अनामयमारोग्यम्। प्रच्छधातुर्द्विकर्म्मकः।

বুঝিয়া এবং মহাশ্বেতার অনুরোধে, মুদ্রিত মুখমণ্ডলের উপরে হস্ত সংস্থাপন পূর্ব্বক, শব্দ করিতে নিষেধের সঙ্কেত জানাইয়া, সকল দিকের বংশীর রব, বীণার ঝঙ্কার, গীতের শব্দ ও স্তুতিপাঠিকাদিগের জয়ধ্বনি নিবারণ করিল। (দ) কোন পরিচারিকা তাড়াতাড়ি জল আনিয়া দিল, কাদম্বরী নিজেই উঠিয়া তাহা দ্বারা মহাশ্বেতার চরণযুগল প্রক্ষালনপূর্ব্বক উত্তরীয় বসনদ্বারা মার্জ্জনা করিয়া পুনরায় যাইয়া পর্য্যঙ্কের উপর উঠিলেন। এদিকে সৌন্দর্য্যে কাদম্বরীর অনুরূপ, ভালবাসায় তাহার জীবনের তুল্য এবং সকলপ্রকার বিশ্বাসের পাত্র মদলেখা নামে কাদম্বরীর কোন সখী, চন্দ্রাপীড় ইচ্ছা না করিলেও, বলপূর্ব্বক তাঁহারও চরণযুগল প্রক্ষালন করিয়া দিল। (ধ) তাহার পর মহাশ্বেতা হস্তদ্বারা, কর্ণালঙ্কারের প্রভায় আলোকিত কাদম্বরীর স্কন্ধদেশে স্নেহের সহিত স্পর্শ করিতে লাগিল; ভ্রমরের ভরে কাদম্বরীর কাণের ফুলটি পড়িয়া গিয়াছিল, মহাশ্বেতা তাহা আবার তুলিয়া দিল; চামরের বায়ুতে

---

(१)...अपाङ्गदेशे। (२)...विधूनि...। (३)...पर्य्यस्तालक...।

पप्रच्छ (ध)। सा तु सखीप्रेम्णा गृहनिवासेन कृतापराधेवानामयेनैव लज्जमाना कृच्छ्रादिव कुशलमाचचक्षे (न)। (१) समुपजातशोकापि च तस्मिन् काले महाश्वेतामुखनिरीक्षणतत्परापि मुहुर्मुहुरपाङ्ग-विक्षेप-प्रचलित-तरल-तर-तार-शारोदरं (२) चक्षुर्मण्डलितचापेन भगवता कुसुमधन्वना बलान्नीयमानं चन्द्रापीडपीडनायेव (३) न शशाक निवारयितुम् (प)। तेनैव क्षणेन तेनासन्नसखीकपोलसंक्रान्तेनेर्ष्यां, (४) रोमाञ्च-भिद्यमान-कुच-तट-नश्यत्-प्रतिबिम्बेन विरह-

(न) सेति। सा कादम्बरी। अनामयेनैव अनामयावस्थानेनैव लज्जमाना, सखित्वेन समानसुखदुःखभोगीचित्यादिति भावः।

(प) समुपेति। किञ्च, कादम्बरी समुपजातशोकापि, महाश्वेताया दर्शनेन तच्छोकस्मरणादिति भावः। अपाङ्गे प्रान्तभागे विक्षेपेण चन्द्रापीडं प्रति कटाक्षपातवेलायां सञ्चालनेन प्रचलिता अतएव तरलतरा अत्यन्तचञ्चला तारा यस्य तत्तथोक्तञ्च तत्, तत एव च शारं विचित्रं उदरमभ्यन्तरं यस्य तत्तथोक्तञ्चेति तत्ताद्दशम्। मण्डलितचापेन आकृष्टकार्म्मुकेण भगवता कुसुमधन्वना मदनेन चन्द्रापीडपीडनायेव, बलात्तं प्रतिनीयमानं चक्षुः, निवारयितुं न शशाक। अत्र फलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) तेनेति। सा कादम्बरी, तेन चन्द्रापीडेन, आसन्नायाः सख्याः कपोले संक्रान्तेन प्रतिबिम्बितेन हेतुना ईर्षामभजत, स्वप्राणनाथस्य युवत्यन्तरगामित्वादिति भावः। रोमाञ्चैर्भिद्यमाने युज्यमाने कुचतटे आत्मनः स्तनमण्डले नश्यत् रोमाञ्चैरुच्चावचीभूतत्वादेव लोपं गच्छत् प्रतिबिम्बं यस्य तेन तादृशेन चन्द्रापीडेन हेतुना, विरहव्यथामभजत, प्रतिबिम्बाभावादिति भावः। स्वेदार्द्रे घर्म्माक्तस्य वक्षःस्थले घटिता स्वेदेरैव

কাদম্বরীর কেশকলাপ আলুলায়িত হইয়াছিল, মহাশ্বেতা তাহা আবার সমান করিয়া দিল, এই অবস্থায় সে, কাদম্বরীকে তাহার মঙ্গল জিজ্ঞাসা করিল। (ন) কাদম্বরী কিন্তু গৃহে বাস করায় মহাশ্বেতার নিকট যেন অপরাধ করিয়াছিলেন, সুতরাং নিজে মঙ্গলে থাকায় লজ্জিত হইয়া, তাহার প্রতি প্রণয়বশতঃ কষ্টেই যেন নিজের মঙ্গল সংবাদ বলিলেন। (প) মহাশ্বেতাকে দেখিয়া কাদম্বরীরও শোক উপস্থিত হইয়াছিল এবং তিনি, মহাশ্বেতার মুখের দিকেই নিরীক্ষণ করিয়া রহিয়াছিলেন; তথাপি ভগবান্ কামদেব, নিজের ধনুক মণ্ডলীকৃত করিয়া চন্দ্রাপীড়কে পীড়ন করিবার জন্যই যেন কাদম্বরীর নয়নযুগলকে বলপূর্ব্বক চন্দ্রাপীড়ের দিকে লইয়া যাইতেছিলেন, সুতরাং বারংবার তারা দুইটিকে নয়নযুগলের প্রান্তভাগে প্রেরণ করায় তাহারা অত্যন্ত চঞ্চল হইয়াছিল, তাহাতে নয়নযুগলের মধ্যস্থান বিচিত্র হইয়াছিল; কিন্তু কাদম্বরী সেই নয়নযুগলকে নিবারণ করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন না। (ফ) সেই সময়েই নিকটবর্ত্তিনী কোন সখীর কপোলমণ্ডলে চন্দ্রাপীড়ের প্রতিমূর্ত্তি পতিত হওয়ায় কাদম্বরীর ঈর্ষ্যা জন্মিল; রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইয়া কাদম্বরীর স্তনমণ্ডলকে উচু-নীচু করিয়াছিল, সুতরাং সে স্থান হইতে

(१)...तदा समुप···। (२)...सारोदरं। (३)···पीडनयेव। (४) ईर्षया।

व्यथां, स्वेदार्द्र-(१) वक्षःस्थल-घटित-शालभञ्जिका-प्रतिमेन सपत्नीरोषं (२) निमिषता दौर्भाग्यशोकं, आनन्दजलतिरोहितेनान्धतादुःखमभजत सा (फ)।

मुहूर्त्तापगमे च ताम्बूलदानोद्यतां महाश्वेता तामभाषत—"सखि! कादम्बरि! सम्प्रतिपन्नमेव (३) सर्वाभिरेवास्माभिः (४) अयमभिनवागतश्चन्द्रापीड आराधनीयः, तदस्मै तावद्दीयतां ताम्बूलम्" इत्युक्ता च किञ्चिद्विवर्त्तितावनमित-मुखी (५) शनैरव्यक्तमिव "प्रियसखि! लज्जेऽहमनुपजातपरिचया प्रागल्भ्येनानेन, गृहाण, त्वमेवास्मै प्रयच्छ" इत्युवाच (६) (ब)। (७) पुनःपुनरभिधीयमाना

रचिता या शालभञ्जिका पुत्तलिका तस्यां प्रतिमा प्रतिबिम्बं यस्य तेन तादृशेन चन्द्रापीडेन हेतुना, सपत्नी-रोषमभजत, चन्द्रापीडप्रतिबिम्बग्राहिण्याः शालभञ्जिकाया अपि स्त्रीत्वादिति भावः। निमिषता आत्मानं पश्य-तापि नयनयोर्निमेषं कुर्वता चन्द्रापीडेन हेतुना, दौर्भाग्यशोकं आत्मनो दुर्भगतादुःखमभजत, निमेषकरणेन स्वदर्शने तादृशौत्सुक्याभावप्रत्यायनादिति भावः। तथा आनन्दजलेन स्वनयनत एवानन्दाश्रुपातेन तिरोहितो नयनावरणादिवावृतस्तेन चन्द्रापीडेन हेतुना, अन्धतादुःखमभजत, दर्शनव्याघातादिति भावः। एतेनानुरागा-तिशयो व्यज्यते। अत्र अभजतेत्येकया क्रियया ईर्ष्यामित्यादीनामनेकेषां कर्मतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(ब) मुहूर्त्तेति। महाश्वेतार्थे ताम्बूलदानायोद्यतां तां कादम्बरीम्। सम्प्रतिपन्नमेव युक्तियुक्तमेव यथा स्यात्तथा आराधनीयः, "सर्वत्राभ्यागतो गुरु"रिति स्मृतेरिति भावः। इत्युक्ता महाश्वेतया इत्थमभिहिता च कादम्बरी, किञ्चिद्विवर्त्तितमवनमितञ्च मुखं यया सा तादृशी सती, अव्यक्तमिवास्फुटमिव इत्युवाचेत्यन्वयः।

চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব লুপ্ত হইয়া গিয়াছিল, তাহাতেই কাদম্বরীর বিরহবেদনা উপস্থিত হইল; কাদম্বরীর বক্ষঃস্থলে ঘর্ম্মজল উৎপন্ন হইয়া একটি পুত্তলিকা আকারে পরিণত হইয়াছিল, তাহার উপরে চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহাতেই কাদম্বরীর সপত্নীবিদ্বেষ জন্মিল; কাদম্বরীকে দেখিবার সময়ে চন্দ্রাপীড় নয়নের নিমেষ দিতেছিলেন, ইহাতেই কাদম্বরীর নিজের দৌর্ভাগ্যশোক উপস্থিত হইল; কাদম্বরীর নয়ন হইতে আনন্দাশ্রু পতিত হইতে থাকিয়া দর্শনের ব্যাঘাত জন্মাইতেছিল, তাই তখন কাদম্বরী অন্ধতার দুঃখ অনুভব করিতেছিলেন।

(ব) এই ভাবে কিছু কাল অতীত হইলে, কাদম্বরী মহাশ্বেতাকে তাম্বূল দান করিতে উদ্যত হইলেন, তখন মহাশ্বেতা তাঁহাকে কহিল—"সখি! কাদম্বরি! চন্দ্রাপীড় নূতন আসিয়াছেন, সুতরাং আমাদের সকলেরই উঁহাকে আদর করা উচিত; অতএব তুমি উঁহাকেই তাম্বূল দান কর" এই কথা বলিলে কাদম্বরী, মুখখানা কিছু ফিরাইয়া ও অবনত করিয়া ধীরে ধীরে অব্যক্তভাবে বলিলেন—"প্রিয়সখি! উঁহার সহিত আমার পরিচয় হয় নাই, সুতরাং এই জাতীয় ধৃষ্টতা আচরণে আমি লজ্জিত হইতেছি; অতএব ধর, তুমিই উঁহাকে তাম্বূল দান কর।"

---

(१) विरहव्यथां स्वेदार्द्र...। (२) सपत्नीरोषात्। (३) क्वचिदेष पाठो नास्ति।
(४) सर्वाभिरस्माभिः। (५)...वनमितमुखी। (६) सा ताम्। (७) कादम्बरी तु।

च तया कथमपि ग्राम्येव चिराद्दानाभिमुखं मनश्चक्रे। महाश्वेतामुखादनाकृष्टदृष्टिरेव (१) वेपमानाङ्गयष्टिराकुललोचना (२) स्थूलस्थूलं निश्वसती (३) निजशरप्रहारमूर्च्छिता मन्मथेन स्नपितेव स्वेदजलविसरैः, स्वेदजलविसरनिमज्जनभयेन च हस्तावलम्बनमिव याचमाना, साध्वस-परवशा, पतामीति लगितुमिव (४) कृतप्रयत्ना प्रसारयामास ताम्बूलगर्भं हस्तपल्लवम् (भ)। चन्द्रापीडस्तु जयकुञ्जरकुम्भ-स्थलास्फालन-संक्रान्त-सिन्दूरमिव स्वभावपाटलम्, (म) धनुर्गुणाकर्षणकृत-

(भ) पुनरिति। किञ्च, तया महाश्वेतया, चन्द्रापीडाय ताम्बूलं दातुं पुनः पुनरभिधीयमाना कादम्बरी, ग्राम्येव ग्रामभवा रमणीव। सा हि नागरिकवदुचितमनुचितं वा नावबुध्यते। उपमालङ्कारः। आकुले अधीरे लोचने यस्याः सा। मन्मथेन कर्त्रा स्वेदजलविसरैर्घर्म्मवारिसमूहैः करणैर्निजशराणां प्रहारैः मूर्च्छिता सुतरां स्नपितेव, मूर्च्छापनोदनायेति भावः। अन्योऽपि हिंस्रो जनो मूर्च्छितमात्मीयं स्नपयति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। किञ्च, तस्मिन्नेव स्वेदजलविसरे निमज्जनभयेन हस्तावलम्बनं याचमानेव। अन्योऽपि निमज्जनभयेन हस्तं प्रसारयन् कस्यचित् हस्तावलम्बनं याचते। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा साध्वसपरवशा भयाधीनाहं पतामि इति हेतोः लगितुम् चन्द्रापीडदेहे संसक्तुं कृतप्रयत्नेव। अन्योऽपि पतन् हस्तं प्रसार्य्य कस्मिंश्चिल्लगति। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। ताम्बूलगर्भं हस्तपल्लवं प्रसारयामास कादम्बरीति सम्बन्धः।

(म) चन्द्रेति। चन्द्रापीडस्तु पाणिं प्रसारितवानित्यन्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि पाणिमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। स्वभावपाटलं स्वभावत एव श्वेतरक्तं, अतएव जयकुञ्जरस्य विजयसाधनहस्तिनः कुम्भस्थले आस्फालनेन प्रोत्साहनाय सम्मर्द्दनेन संक्रान्तं संलग्नं सिन्दूरं यस्मिन् तमिव। अत्र सिन्दूरसंक्रमणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ভ) তখন মহাশ্বেতা বার বার বলিতে লাগিল, তাই কাদম্বরী গ্রাম্য রমণীর ন্যায় বহু কালের পর কোন রকমে তাম্বূল দান করিতে মনকে অভিলাষী করিলেন। তাহার পর কাদম্বরী মহাশ্বেতার মুখ হইতে দৃষ্টি আকর্ষণ না করিয়াই, তাম্বূলযুক্ত হস্তপল্লব প্রসারিত করিলেন; তখন তাঁহার শরীর কাঁপিতেছিল, নয়নযুগল অধীর হইয়াছিল, এবং বড় বড় নিশ্বাস নির্গত হইতেছিল; আর নিজের শরপ্রহারেই কাদম্বরী মূর্চ্ছিত হইয়াছেন—এই জন্যই কামদেব যেন তাঁহাকে ঘর্ম্মজলে স্নান করাইতেছিলেন; এবং কাদম্বরী ঘর্ম্মজলে নিমগ্ন হইবার ভয়েই যেন হস্ত প্রসারণ করিয়া কাহারও হস্তাবলম্বন প্রার্থনা করিতেছিলেন; আর 'আমি ভয়বশতঃ পড়িয়া যাইতেছি' এই জন্যই যেন হস্ত প্রসারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়ের দেহে সংলগ্ন হইবার জন্য যত্ন করিতেছিলেন। (ম) এ দিকে চন্দ্রাপীড়ও সেই তাম্বূল গ্রহণ করিবার জন্য হস্ত প্রসারণ করিলেন; তাঁহার সেই হাতখানি স্বভাবতই আরক্তবর্ণ ছিল; সুতরাং বোধ হইতেছিল যে, বিজয়-হস্তীর কুম্ভস্থল আমর্দ্দন করায় তাহার সিন্দূর যেন তাহাতে লাগিয়া রহিয়াছে।

(१) अनाकर्षितदृष्टिरेव। (२) आकुञ्चितलोचना, आकुलितलोचना। (३) निःश्वसन्ती।
(४) लगितुमिव।

কিণশ্যামলম্, কচগ্রহাকৃষ্টি-রুদিতারিলক্ষ্মী-লোচন-পরামর্শ-লগ্নাঞ্জনবিন্দুমিব, (য) বিসর্পন্নখ-কিরণতয়া অতিরভসেন প্রধাবিতাভিরিব বিবর্দ্ধিতাভিরিব প্রহসিতাভিরিবাঙ্গুলীভিরুপেতম্, (র) স্পর্শলোভাচ্চ তৎকালকৃত-সন্নিবেশাঃ সরাগাঃ পঞ্চাপীন্দ্রিয়বৃত্তীরপরা ইবাঙ্গুলীরুদ্বহন্তম্, (১) প্রসারিতবান্ পাণিম্ (ল)। তত্র চ সা তৎকাল-সুলভ-বিলাস-দর্শন-কুতূহলিভিরিব কুতোঽ-

---

(য) ধনুরিতি। ধনুর্গুণাকর্ষণেন কৃতো যঃ কিণশ্চিহ্নং তেন শ্যামলং, অতএব কচগ্রহাকৃষ্ট্যা কেশগ্রহণপূর্ব্বকাকর্ষণেন রুদিতা যা অরিলক্ষ্মীঃ শত্রুশ্রীস্তস্যা লোচনয়োঃ পরামর্শেন দয়য়া অশ্রু মার্জ্জয়িতুং পুনরামর্শনেন লগ্না অঞ্জনবিন্দবঃ কজ্জলকণা যত্র তমিব। অত্রাপি পূর্ব্ববদুৎপ্রেক্ষা।

(র) বিসর্পদিতি। বিসর্পন্তঃ প্রসরন্তো নখকিরণা যস্য তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা। অতিরভসেন নিতান্তবেগেন। নখকিরণৈরেব বিবর্দ্ধিতাভিরিবেত্যর্থঃ। প্রহসিতাভিরিব, প্রসৃতনখকিরণানাং হাসস্য চ সমানগুণত্বাদিতি ভাবঃ। অত্র তিসৃণামেব ক্রিয়োৎপ্রেক্ষাণাং মিথোনিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ।

(ল) স্পর্শেতি। কিঞ্চ, কাদম্বর্য্যাঃ স্পর্শলোভাৎ, তস্মিন্ কালে কৃতঃ সন্নিবেশ উপস্থিতির্যাভিস্তাঃ, সরাগাঃ সানুরাগাঃ সলৌহিত্যাশ্চ, অপরাঃ পঞ্চ অঙ্গুলীরিব, পঞ্চাপি ইন্দ্রিয়বৃত্তীঃ তদ্দর্শন-তৎকথাশ্রবণ-তদ্বদন-ঘ্রাণ-তদধররসন-তৎস্পর্শলক্ষণান্ চক্ষুরাদীনাং পঞ্চানাং জ্ঞানেন্দ্রিয়াণাং ব্যাপারান্ তাসামিচ্ছামিত্যর্থঃ; উদ্বহন্তং জনকতাসম্বন্ধেন ধারয়ন্তম্ জনয়ন্তমিতি তাৎপর্য্যম্। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ব) তত্রেতি। কিঞ্চ, তত্র তাম্বূলদানসময়ে, তস্মিন্ কালে সুলভা অনায়াসপ্রাপ্যা যে বিলাসাঃ কাদম্বর্য্যা বিভ্রমাস্তেষাং দর্শনে কুতূহলমেষামস্তীতি তৈরিব সর্ব্বরসৈঃ সকলপ্রকারানুরাগৈঃ, কুতোঽপ্যাগত্য, সা কাদম্বরী অধিষ্ঠিতা আশ্রিতা। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। "শৃঙ্গারাদৌ বিষে বীর্য্যে গুণে রাগে দ্রবে রসঃ।" ইত্যমরঃ। কেচিত্তু "সর্ব্বরসৈঃ শৃঙ্গারাদিভি"রিতি ব্যাচক্ষতে, তদসৎ রসস্য স্বশব্দোক্তিদোষপ্রসঙ্গাৎ তদানীং কাদম্বর্য্যা বীরবীভৎসাদিরসানাং সর্ব্বথৈবাধিষ্ঠানাসম্ভবাচ্চ।

(য) ধনুর গুণ আকর্ষণ করায় কতকগুলি চিহ্ন হইয়া সেই হাতখানি আবার শ্যামবর্ণ করিয়াছিল; তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল, যে—কেশধারণপূর্ব্বক আকর্ষণ করায় শত্রুপক্ষীয় লক্ষ্মী রোদন করিতেছিলেন, তাই আবার দয়া করিয়া তাঁহার অশ্রু মার্জ্জনা করিবার জন্য নয়নে হস্তামর্শন করায় তাহাতে সেই নয়নের কাজল লাগিয়া রহিয়াছে। (র) নখের কিরণ ছড়াইয়া পড়িয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল যে, অঙ্গুলীসমূহ যেন হাসিতেছে, অতিবেগে ধাবিত হইয়াছে এবং সেই নখের কিরণেই তাহাদিগকে যেন বর্দ্ধিত করিতেছে। (ল) এবং চন্দ্রাপীড়ের সেই হাতখানি কাদম্বরীকে স্পর্শ করিবার লোভে, অপর পাঁচটি আঙ্গুলের ন্যায়, অনুরাগের সহিত সেই সময়ে উপস্থিত পাঁচটি ইন্দ্রিয়বৃত্তিকেই ধারণ করিতেছিল। (ব) এবং তখন সকলপ্রকার অনুরাগ, সেই সময়ে অনায়াসলভ্য কাদম্বরীর বিলাস দেখিবার জন্য কৌতুকী

---

(১) অপরাঙ্গুলীঃ,...বৃত্তীরিবাঙ্গুলীঃ...।

प्यागत्य सर्वरसैरधिष्ठिता (व)। तेनानिबद्धलक्ष्यतया शून्यप्रसारितेन, चन्द्रापीडहस्तान्वेषणायेव पुरःप्रवर्त्तित-नखांशुनिवहेन, वेपथुचलितवलयावलीवाचालेन सम्भाषणमिव कुर्वता हस्तेन, स्वेदसलिलपातपूर्वकं "गृह्यतामयं मन्मथेन दत्तो दासजनः" इत्यात्मानमिव प्रतिग्राहयन्ती, "अद्य प्रभृति भवतो हस्ते वर्त्तते" इति जीवितमिव स्थापयन्ती, ताम्बूलमदात् (श)। आकर्षन्ती च करकिसलयं भुजलतानुसारेण स्पर्शतृष्णागतमनङ्गशरभिन्नमध्यं हृदयमिव पतितमपि रत्नवलयं नाज्ञासीत्। गृहीत्वा चापरं ताम्बूलं महाश्वेतायै प्रायच्छत् (ष)।

(श) तेनेति। न निबद्धं न कृतं लक्ष्यं स्थाननिश्चयो येन तस्य भावस्तया हेतुना शून्ये चन्द्रापीडहस्तव्यतिरिक्तस्थाने प्रसारितेन, अतएव चन्द्रापीडहस्तस्य अन्वेषणायेव पुरःप्रवर्त्तितः अग्रतः प्रेरितो नखांशुनिवहो नखकिरणसमूहो येन तेन। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। वेपथुना कम्पेन चलितया स्पन्दितया वलयावल्या कङ्कणश्रेण्या वाचालेन शब्दायमानेन, अतएव सम्भाषणं कुर्वतेव स्थितेन तेन हस्तेन। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। स्वेदसलिलपातपूर्वकं, सम्प्रदानकाले जलपातस्य शास्त्रीयत्वादिति भावः। मन्मथेन दत्तः अयं मल्लक्षणो दासजनस्त्वया गृह्यतां इतीत्थं आत्मानं प्रतिग्राहयन्तीव। क्रियोत्प्रेक्षा। तथा 'अद्य प्रभृति मम जीवितं भवतो हस्ते वर्त्तते' इतीत्थं जीवितं स्थापयन्तीव कादम्बरी ताम्बूलमदात्। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ष) आकर्षन्तीति। किञ्च, करकिशलयं हस्तपल्लवं आकर्षन्ती प्रत्यानयन्ती कादम्बरी, भुजलतानुसारेण प्रसारितां स्वभुजलतामनुसृत्य तया सहेत्यर्थः, चन्द्रापीडस्य स्पर्शतृष्णया गतं प्रस्थितं, अनङ्गशरेण भिन्नं विदीर्णं मध्यं यस्य तत्तादृशं आत्मनो हृदयमिव पतितमपि हस्तात् प्रभ्रष्टमपि रत्नवलयं नाज्ञासीत्। एतेन तन्मयता सूचिता। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

হইয়াই যেন কোন অনির্দ্দিষ্ট স্থান হইতে আসিয়া তাহার হৃদয়ে অধিষ্ঠান করিল। (শ) এই অবস্থায় কাদম্বরী হস্ত প্রসারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়ের হস্তে তাম্বূল দান করিলেন; তখন কাদম্বরী লক্ষ্য না করিয়া শূন্য স্থানে হস্ত প্রসারণ করিয়াছিলেন; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে,—সেই হস্ত চন্দ্রাপীড়ের হস্তকে অন্বেষণ করিবার জন্যই যেন সম্মুখে নখের কিরণগুলিকে প্রেরণ করিয়াছে। কম্প উপস্থিত হওয়ায় কঙ্কণগুলি চলিতেছিল, তাই হস্ত হইতে শব্দ হইতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যে—সেই হাতখানা যেন চন্দ্রাপীড়কে সম্ভাষণ করিতেছে। 'কামদেব দান করিয়াছেন, অতএব আপনি এই দাসীকে গ্রহণ করুন" এই ভাবে কাদম্বরী যেন ঘর্ম্মজলপাতপূর্ব্বক আপনাকে আপনি প্রতিগ্রহ করাইতেছিলেন, এবং 'আজ হইতে আপনার হাতে আমার জীবন রহিল' এই ভাবে চন্দ্রাপীড়ের হাতে নিজের জীবনই যেন স্থাপন করিতেছিলেন। (ষ) কাদম্বরী তাম্বূল দান করিয়া করপল্লব আকর্ষণ করিয়া আনিলেন বটে, কিন্তু পূর্ব্বেই তাঁহার হৃদয়, চন্দ্রাপীড়কে স্পর্শ করিবার লোভে বাহুলতা অনুসরণ করিয়া গিয়াছিল মদনশর-বিদীর্ণ সেই হৃদয়ের ন্যায় একটি রত্নবলয় পড়িয়া গিয়াছিল, তাহা তিনি বুঝিতে পারিয়াছিলেন না। তাহার পর কাদম্বরী আর একটি পান ধরিয়া মহাশ্বেতাকে দিলেন।

अथ सहसैव त्वरितगतिः, त्रिवर्णरागमिन्द्रायुधमिव कुण्डलीकृतं कण्ठेन वहता विद्रुमाङ्कुरानुकारिचञ्चुपुटेन (१) मरकतद्युतिपक्षतिना मन्थरगतिना शुकेनानुबध्यमाना, कुमुदकेसर-पिञ्जरतया चरणयुगलस्य, चम्पककलिकाकारतया च मुखस्य, कुवलयदलनीलतया च पक्षद्युतीनां, कुसुममयीवागत्य सारिका सक्रोधमवादीत्—(स) "भर्त्तृदारिके! कादम्बरि! कस्मान्न निवारयस्येनमलीकसुभगाभिमानिनमतिदुर्विनीतं (२) मामनुबध्नन्तं विहङ्गापसदम्। यदि मामनेन परिभूयमानामुपेक्षसे ततोऽहं नियतमात्मानमुत्स्रक्ष्यामि। सत्यं शपामि ते पादपङ्कजस्पर्शेन" इत्येवमभिहिता च तया कादम्बरी स्मित-

(स) अथेति। अथानन्तरं त्वरिता गतिर्यस्याः सा सारिका सहसैवागत्य सक्रोधमवादीदित्यन्वयः। कण्ठेन गलदेशेन इन्द्रायुधं शक्रधनुरिव कुण्डलीकृतं वर्त्तुलीकृतं, त्रयाणां वर्णानां नीलपीतलोहितानां रागं रञ्जनं रेखामिति यावत् वहता। विद्रुमाङ्कुरानुकारि प्रवालखण्डसदृशं लोहितमित्यर्थः चञ्चुपुटं यस्य तेन। मरकतस्य द्युतिरिव द्युतिर्ययोस्तादृश्यौ पक्षती पक्षयोर्मूलद्वयं यस्य तेन। मन्थरगतेन मन्दगामिना, शुकेन पक्षिणा अनुबध्यमाना अनुगम्यमाना सारिका। अत्र प्रथमा श्रौतोपमा, द्वितीया आर्थोपमा, तृतीया च लुप्तोपमा इत्येतासां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा चरणयुगलस्य कुमुदकेशरवत् श्वेतोत्पलकिञ्जल्कवत् पिञ्जरतया पिङ्गलवर्णतया, मुखस्य च चम्पककलिकाकारतया, पक्षद्युतीनाञ्च कुवलयदलवन्नीलतया हेतुना, कुसुममयीव पुष्पनिर्म्मितेव सारिका। अत्र तिसृभिरुपमाभिः सङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) भर्त्रिति। अलीकं मिथ्या सुभगं भार्य्यावल्लभमात्मानं अभिमन्यत इति तं। एतेनात्मनस्तस्मिन् वाल्लभ्यं नास्तीति सूचितम्। अनुबध्नन्तमनुसरन्तं। विहङ्गापसदं विहगाधमम्। परिभूयमानां खलु बलादाक्रम्यमाणां। नियतं निश्चितं। उत्स्रक्ष्यामि परित्यक्ष्यामि। तया सारिकया।

(স) তদনন্তর সহসাই দ্রুতগতিতে একটি সারিকা আসিয়া উপস্থিত হইল; তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ অপেক্ষাকৃত মন্দগতিতে একটি শুকও উপস্থিত হইল; সেই শুকটির কণ্ঠদেশে ইন্দ্রধনুর ন্যায় মণ্ডলাকারে নীল, পীত ও লোহিতবর্ণের তিনটি রেখা ছিল; চঞ্চুপুট প্রবালখণ্ডের অনুকরণ করিতেছিল এবং মরকতমণির ন্যায় পক্ষযুগলের প্রভা প্রকাশ পাইতেছিল; আর সেই সারিকাটিরও চরণযুগল শ্বেতোৎপলের কেসরের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, মুখভাগ চম্পকপুষ্পের কলিকার ন্যায় পীতবর্ণ এবং পক্ষের প্রভা নীলোৎপলপত্রের ন্যায় নীলবর্ণ ছিল বলিয়া, তাহাকে যেন বিধাতা পুষ্পদ্বারা নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন; সেই সারিকাটি ক্রোধের সহিত বলিল,—(হ) "রাজকন্যে! কাদম্বরি! পক্ষীর মধ্যে অধম এই শুকটা, আপনাকে আপনি ভাগ্যবান্ বলিয়া মিথ্যা মনে করে এবং অত্যন্ত দুর্বিনীত-স্বভাব; তাই আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিয়াছে; কিন্তু আপনি ইহাকে বারণ করিতেছেন না কেন? এ, আমাকে আক্রমণ করিলে আপনি

(१)...अनुकारिणा चञ्चुपुटेन। (२) दुर्विनीतं।

मकरोत् (ङ)। अविदितवृत्तान्ता तु महाश्वेता "किमियं वदति" इति मदलेखां पप्रच्छ। सा चाकथयत्—"एषा भर्त्तृदुहितुः सखी (१) कादम्बर्य्याः कालिन्दीति नाम्ना सारिका, एतस्य परिहासनाम्नः शुकस्य भर्त्तृदारिकयैव पाणिग्रहणपूर्वकं जायापदं ग्राहिता। अद्य चायमनया प्रत्यूषसि कादम्बर्य्यास्ताम्बूलकरङ्कवाहिनीमिमां तमालिकामेकाकिनीं किमपि पाठयन् दृष्टो यतः, ततः प्रभृति सञ्जातेर्ष्या कोपपराङ्मुखी नैनमुपसर्पति, नालपति, न स्पृशति, न विलोकयति, सर्वाभिरस्माभिः प्रसाद्यमानापि न प्रसीदतीति।" (२) (ख)

एतदाकर्ण्य स्फुटस्फुरितकपोलोदरश्चन्द्रापीडो मन्दं मन्दं विहस्याब्रवीत्—"अस्त्येषा कथा, श्रूयत एवैतद्राजकुले कर्णपरम्परया, परिजनोऽप्येवं मन्त्रयते (३),

---

(ख) अविदितेति। इयं सारिका। भर्त्तृदुहितुः कादम्बर्य्याः सखीत्यन्वयः। पाणिग्रहणं पूर्वं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, जायापदं भार्य्यास्थानं भार्य्यात्वमिति यावत्। अद्य यतः कालात् प्रभृति। अनया सारिकया, अयं शुकः। तमालिका तमालिकानाम्नी। पाठयन् मन्त्रयन्।

(क) एतदिति। स्फुटं स्पष्टं स्फुरितं हास्यागमात् स्पन्दितं कपोलयोरुदरमभ्यन्तरं यस्य सः। न वेत्ति तन्मयत्वादिति भावः। अयं शुकः। वामः स्वभार्य्यां प्रति प्रतिकूलः, आचारो व्यवहारो यस्य सः। निस्त्रपया

যদি উপেক্ষা করেন, তাহা হইলে আমি নিশ্চয়ই প্রাণ পরিত্যাগ করিব; আপনার পাদপদ্ম স্পর্শ করিয়া আমি এই যথার্থই প্রতিজ্ঞা করিলাম" সেই সারিকাটি এই কথা বলিলে কাদম্বরী ঈষৎ হাস্য করিলেন। (ঙ) কিন্তু মহাশ্বেতা, বৃত্তান্ত জানিত না বলিয়া মদলেখাকে জিজ্ঞাসা করিল,—"এ, বলিতেছে কি?" তখন মদলেখা কহিল,—"এই সারিকাটি, রাজকন্যা কাদম্বরীর সখী এবং ইহার নাম কালিন্দী; আর এই শুকটির নাম পরিহাস। কাদম্বরীই বিবাহ করাইয়া কালিন্দীকে পরিহাসের ভার্য্যা করিয়াছেন। কিন্তু আজ প্রাতঃকালে কাদম্বরীর তাম্বূলকরঙ্ক-বাহিনী এই তমালিকাকে একাকিনী অবস্থায় পরিহাস কোন কথা বলিতেছিল; ইহা কালিন্দী যে সময় হইতে দেখিয়াছে, তদবধি ইহার ঈর্ষ্যা জন্মিয়াছে এবং এ, মান করিয়া পরিহাসের প্রতি বিমুখ হইয়াছে; তাই পরিহাসের নিকট যাইতেছে না, উহার সঙ্গে আলাপ করিতেছে না, উহাকে স্পর্শ করিতেছে না, এমন কি, উহার প্রতি দৃষ্টিপাতও করিতেছে না; কিন্তু আমরা সকলেই উহাকে প্রসন্ন করিবার জন্য চেষ্টা করিয়াছিলাম, তথাপি, ও প্রসন্ন হয় নাই।"

(ক) এই কথা শুনিয়া চন্দ্রাপীড়ের হাস্য উপস্থিত হওয়ায় কপোলযুগলের মধ্যস্থান স্পষ্টতই স্পন্দিত হইয়া উঠিল; তখন তিনি অল্প অল্প হাস্য করিয়া বলিলেন—"এ কথা সত্য বটে, কারণ—এই রাজবাটীতেই কর্ণপরম্পরায় এ কথা শুনা যায়, পরিজনবর্গও এইরূপ বলিয়া

---

(१) क्वचित् सखीति नास्ति। (२) क्वचित् इतिशब्दो न दृश्यते। (३) आमन्त्रयते।

বহিরপি জনাঃ কথয়ন্তি, এবং দিগন্তরেষ্বপ্যয়মালাপো বর্ত্তত এব, (১) অস্মাভিরপ্যেতদাকর্ণিতমেব, 'যথা কিল দেব্যাঃ কাদম্বর্য্যাস্তাম্বূলদায়িনীং তমালিকাং কাময়মানঃ পরিহাসনামা শুকো মদনপরবশো গতান্যপি দিনানি ন বেত্তীতি'। তদয়মাস্তাং তাবদ্বামাচারঃ, পরিত্যক্তনিজকলত্রো নিস্ত্রপয়া (২) অনয়া সহ, দেব্যাস্তু কাদম্বর্য্যাঃ কথমেতদ্ যুক্তং যন্ন নিবারয়তীমাং চপলাং দুষ্টদাসীম্ (ক)। অথবা দেব্যাপি কথিতৈব নিঃস্নেহতা (৩) প্রথমমেব বরাকীমিমাং কালিন্দীমীদৃশায় দুর্ব্বিনীতায় বিহঙ্গায় প্রযচ্ছন্ত্যা (খ)। কিমিদানীমিয়ং করোতু, যদেতৎ সাপত্ন্যকরণং নারীণাং প্রধানং কোপকারণম্, অগ্রণীর্বিরাগহেতুঃ, পরং পরিভবস্থানম্ (গ)। ইয়মেব কেবলমতিধীরা, যদনয়ানেন দৌর্ভাগ্যগরিম্ণা জাতবৈরাগ্যয়া বিষং বা নাস্বাদিতং, অনলো বা নাসাদিতঃ, অনশনং বা নাঙ্গী-

---

নির্লজ্জয়া পক্ষিণং প্রত্যপি কামাবেশাদিতি ভাবঃ। অনয়া তমালিকয়া। দুষ্টদাসীং তমালিকাম্। কথমেতদ্ যুক্তং, অপি তু ন যুক্তমেবেত্যর্থঃ। অত্র যচ্ছব্দান্বিতবাক্যস্য পরপাঠাৎ "ন্যক্কারো হ্যয়মেব মে যদরয়" ইত্যাদিদর্শিতোদাহরণবদ্বাক্যগতবিধেয়াবিমর্শদোষঃ, স তু তস্য প্রাক্পাঠেন সমাধেয়ঃ।

(খ) অথবেতি। বরাকীং শোচ্যাং। দেব্যাপি কাদম্বর্য্যা, প্রথমমেব নিঃস্নেহতা কালিন্দীং প্রতি বাৎসল্যহীনতা কথিতৈব সূচিতৈব, অন্যথৈনামীদৃশায় ন প্রযচ্ছেদিতি ভাবঃ।

(গ) কিমিতি। ইয়ং কালিন্দী, পরিহাসং প্রতি কোপং বিনা কিং করোত্বিত্যর্থঃ। এতদেব সমর্থয়িতুমাহ যদেতদিতি। যদেতৎ সাপত্ন্যকরণং তদিতি শেষঃ। অগ্রণীঃ শ্রেয়ান্। পরং অত্যন্তম্।

(ঘ) ইয়মিতি। অনয়া কালিন্দ্যা, অনেন স্বয়মনুভূয়মানেন, পত্যা অবজ্ঞাতা স্ত্রী দুর্ভগা তস্যা ভাবো

থাকে, বাহিরেও লোকে কহিয়া থাকে এবং দিগ্‌দিগন্তরেও এ আলোচনা হইয়া থাকে, আর আমরাও ইহা শুনিয়াছি যে, 'পরিহাসনামক শুক, কাদম্বরী দেবীর তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী তমালিকাকে ইচ্ছা করতঃ কামার্ত্ত হইয়া, দিনগুলি যে চলিয়া যাইতেছে, তাহাও বুঝিতেছে না।' অতএব প্রতিকূলস্বভাব এই পরিহাস, নিজের ভার্য্যাকে পরিত্যাগ করিয়া এই নির্লজ্জা তমালিকার সহিত থাকে, থা'ক ; কিন্তু দেবী কাদম্বরীর ইহা সঙ্গত হইতেছে কিরূপে, যে, উনি এই চঞ্চলা দুষ্ট দাসীকে নিবারণ করিতেছেন না। (খ) অথবা দেবী কাদম্বরীও, এই ভাগ্যহীনা কালিন্দীকে এইরূপ দুর্বিনীতস্বভাব পক্ষীর হস্তে প্রদান করিয়া ইহার প্রতি নিজের স্নেহের অভাব পূর্ব্বেই জানাইয়াছেন। (গ) এখন এ করিবে কি? কারণ—এই যে সপত্নী করা, এটা, রমণীগণের পক্ষে ক্রোধের প্রধান কারণ, গুরুতর বিরাগের হেতু এবং অত্যন্ত অবজ্ঞার স্থান। (ঘ) এই কালিন্দীই কেবল অত্যন্ত ধীরপ্রকৃতি ; যে হেতু—এ, এই গুরুতর দৌর্ভাগ্যবশতঃ বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়া বিষপান করে নাই, কিংবা অগ্নিতেও প্রবেশ করে নাই, অথবা

---

(১) এবং। (২) নিস্ত্রপঃ। (৩) নিঃস্নেহতা।

क्तम्। न ह्येवंविधं (१) अपरमस्ति योषितां लघिम्नः कारणम् (घ)। यदि चेयमीदृशेऽप्यपराधे अनुनीयमाना अनेन प्रत्यासत्तिमेष्यति, तदा धिगिमाम्, अलमनया, दूरतो वर्जनीयेयम्, अभिभवनिरास्या (२) (ङ)। क एनां पुनरालापयिष्यति, को वावलोकयिष्यति, को वास्या नाम ग्रहीष्यति" इत्येवमभिहितवति तस्मिन् सर्वास्ताः सह कादम्बर्या क्रीड़ालापभाविताः (३) जहसुरङ्गनाः। (च)

परिहासस्तु तस्य नर्म्मभाषितमाकर्ण्य जगाद—"धूर्त्त! राजपुत्र! निपुणेयम्, न त्वयान्येन वा लोलापि प्रतारयितुं शक्यते। एषापि बुध्यत एवैतावतीर्वक्रोक्तीः, इयमपि जानात्येव परिहासजल्पितानि, अस्या अपि राजकुलसम्पर्कचतुरा मतिः। विरम्यताम्, अभूमिरेषा भुजङ्ग-भङ्गि-भाषितानाम्, इयमेव हि

दौर्भाग्यं तस्य गरिम्णा गुरुत्वेन अतिरेकेण हेतुना, जातवैराग्यया अनया कालिन्द्या। अनलो वा नासादितः अग्नौ वा न प्रविष्ट इत्यर्थः। अनशनं अनशनेन मरणम्।

(ङ) यदीति। अनेन शुकेन सह, प्रत्यासत्तिं पुनःसमागमं, एष्यति प्राप्स्यति। अभिभवेन तिरस्कारेण निरास्या दूरीकरणीया।

(च) क इति। एनां कालिन्दीं। क्रीड़ालापेन नर्म्मभाषणेन भाविता वासिता आनन्दिता इत्यर्थः।

(छ) परीति। परिहासः परिहासनामा शुकः। लोलापि चपलापि अगभीर-बुद्धिरपि। वक्रोक्तीः कूटकथाः प्रतारणवचनानि। राजकुले सम्पर्केण चतुरा विदग्धा। एषा सारिका, भुजङ्गा नागरिकास्तेषां

অনশনে আত্মহত্যা করে নাই। স্ত্রীলোকদের পক্ষে এইরূপ আর লঘুতার কারণ নাই। (ঙ) এইরূপ অপরাধ সত্ত্বেও, কেবল অনুনয় করাতেই কালিন্দী যদি পুনরায় এই পরিহাসের সহিত সম্মিলিত হয়, তাহা হইলে ইহাকে ধিক্, ইহা দ্বারা কোনই প্রয়োজন নাই, দূর হইতেই ইহাকে পরিত্যাগ করা উচিত এবং তিরস্কার করিয়া ইহাকে তাড়াইয়া দেওয়া সঙ্গত। (চ) এবং তাহা হইলে কালিন্দীর সঙ্গে কে আলাপ করিবে? কেই বা উহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিবে? এবং কোন্ ব্যক্তিই বা উহার নাম লইবে।" চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিলে কাদম্বরীর সহিত সমস্ত কন্যাগণই, সেই পরিহাসবাক্যে আনন্দিত হইয়া হাস্য করিল।

(ছ) কিন্তু পরিহাস (শুক), চন্দ্রাপীড়ের পরিহাসবাক্য শুনিয়া বলিল,—"ধূর্ত্ত! রাজপুত্র! এও, চতুরা; সুতরাং চপলা হইলেও, তুমি বা অন্যে ইহাকে প্রতারণা করিতে পারিবে না। কারণ—এও, এই সকল ব্যঙ্গোক্তি অবশ্যই বুঝিয়াছে; এও পরিহাসের কথা বলিতে জানে এবং রাজকুলে সম্পর্ক থাকায় ইহার বুদ্ধিও সমস্ত বিষয়েই নিপুণ। অতএব তুমি বিরত হও; এ নাগরিকদের ব্যঙ্গোক্তির পাত্র নহে; আর মধুরভাষিণী এই সারিকাও, কিসে

---

(१) नर्म्मकर्म। (२) अभिभवनिरास्या, अभिभवनिरस्या। (३)···भाविताः।

वेत्ति मन्त्रभाषितो कालस्य कारणस्य प्रमाणस्य विषयस्य प्रस्तावस्य कोपप्रसादयोः" इति। (छ)

अत्रान्तरे चागत्य कञ्चुकी महाश्वेतामवोचत्—"आयुष्मति! देवश्चित्ररथो देवी च मदिरा त्वां द्रष्टुमाह्वयति"। एवमभिहिता च गन्तुकामा "सखि! चन्द्रापीडः क्वास्ताम्" इति कादम्बरीमपृच्छत्। असौ तु "न पर्य्याप्तमनेककामिनीहृदयसहस्रावस्थानेन?" (१) इति मनसा विहस्य प्रकाशमवदत्—"सखि! महाश्वेते! किं त्वमेवमभिदधासि, दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः, किमुत भवनस्य विभवस्य परिजनस्य वा, यत्रास्मै रोचते (२) प्रियसखीहृदयाय वा, तत्रायमास्ताम्" इति (ज)। तच्छ्रुत्वा महाश्वेतावदत्—"अत्रैव त्वत्प्रासाद-

मन्त्रिभाषितानि कूटकथालापा, अभूमिरपात्रम्। कोपप्रसादयोः, कालं समयं, कारणं हेतुं, प्रमाणमियत्तां, विषयं स्थानं, प्रस्तावं प्रसङ्गञ्च।

(ज) अत्रेति। एवमभिहिता च महाश्वेतेति शेषः। असौ कादम्बरी। अनेकं बहुतरं यत् स्त्रीहृदयसहस्रं नारीचित्तसमूहस्तत्र अवस्थानं अवस्थितियोग्यं स्थानं तेन, न पर्य्याप्तं नास्य यथेष्टं जातं किमिति काकुः, येनावस्थानाय स्थानान्तरचिन्ता क्रियत इति भावः। अयं राजपुत्र एव प्रभुः, सौजन्येन वशीकरणादिति बहिर्भावः, चिराय जीवितेश्वरकरणादिति त्वान्तरिकभावः। एतेनात्मनापि सौजन्यातिशयो ध्वनितः। विभवस्य धनसम्पत्तेः। यत्रावस्थानं कर्त्तुं, अस्मै राजपुत्राय रोचते, प्रियसख्यास्तव हृदयाय वा रोचत इति सम्बन्धः।

ক্রোধ হয়, কিসেই বা প্রসন্নতা জন্মে—তাহার অবসর, কারণ, পরিমাণ, স্থান ও প্রসঙ্গ—এ সমস্তই জানে।"

(জ) এই সময়ে কঞ্চুকী আসিয়া মহাশ্বেতাকে বলিল—"আয়ুষ্মতি! মহারাজ চিত্ররথ এবং মহারাণী মদিরা আপনাকে দেখিবার জন্য ডাকিয়াছেন।" এই কথা বলিলে মহাশ্বেতা সেখানে যাইতে ইচ্ছা করিয়া কাদম্বরীকে জিজ্ঞাসা করিল—"সখি! চন্দ্রাপীড় কোথায় থাকিবেন?।" তখন কাদম্বরী হাস্য করিয়া মনে মনে বলিলেন,—"অসংখ্য স্ত্রীলোকের হৃদয়ে অবস্থান করিয়াও ইহার আশা মিটে নাই?" তাহার পর প্রকাশ্যে বলিলেন—"সখি! মহাশ্বেতে! তুমি এরূপ বলিতেছ কেন? দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়াই ইনি সৌজন্যগুণে আমার শরীরেরও প্রভু হইয়াছেন, সুতরাং গৃহ, ধনসম্পত্তি ও পরিজনদিগের কথা আর বলিব কি। অতএব যেখানে ইহার অভিরুচি হয়, অথবা তোমার যেখানে অভিপ্রায় হয়, সেই-খানেই ইনি থাকুন।" (ঝ) তাহা শুনিয়া মহাশ্বেতা বলিল,—"তবে তোমার অট্টালিকার

(१) ननु पर्य्याप्तमिवानेककामिनीहृदयसहस्रावस्थानेन।

(२)...शरीरस्याप्ययं न विभुः किमुत भवनस्य परिजनस्य वा। यत्रासौ रोचते...।

समीपवर्त्तिनि प्रमदवने क्रीड़ापर्व्वतकमणिवेश्मन्यास्ताम्" इत्यभिधाय गन्धर्वराजं द्रष्टुं ययौ। चन्द्रापीड़ोऽपि तयैव सह निर्गत्य विनोदनार्थं वीणावादिनीभिश्च वेणुवाद्यनिपुणाभिश्च गीतकलाकुशलाभिश्च दुरोदरक्रीड़ारागिणीभिश्च अष्टापद-परिचयचतुराभिश्च चित्रकर्म्मकृतश्रमाभिश्च सुभाषितपाठिकाभिश्च (१) कादम्बरी-समादिष्ट-प्रतिहारी-प्रेषिताभिः कन्याभिरनुगम्यमानः पूर्वदृष्टेन केयूरकेणोपदि-श्यमानमार्गः क्रीड़ापर्वतमणिमन्दिरमगात्। (झ)

गते च तस्मिन् गन्धर्वराजपुत्री विसर्ज्य सकलं सखीजनं परिजनञ्च (२) परिमित-परिचारिकाभिरनुगम्यमाना प्रासादमारुरोह। तत्र च शयनीये निपत्य दूर-(३) स्थिताभिर्विनयनिभृताभिः परिचारिकाभिर्विनोद्यमाना कुतोऽपि प्रत्या-गतचेतना चैकाकिनी तस्मिन् काले 'चपले! किमिदमारब्धम्' इति निगृहीतेव

(झ) तदिति। दुष्टं आ समन्तादुदरमभ्यन्तरं यस्य तद्दुरोदरं द्यूतं तत्-क्रीड़ायां रागिणीभिरभिरुचि-शालिनीभिः। अष्टापदं शारिफलं तस्य परिचये विज्ञाने चतुराभिर्निपुणाभिः। चित्रकर्म्मसु कृतः श्रमः शिक्षार्थायासो याभिस्ताभिः कादम्बर्य्या समादिष्टा या प्रतिहारी तया प्रेषिताभिः।

(ञ) गत इति। गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी। शयनीये शय्यायां निपत्य स्रस्ताङ्गी सती स्थित्वा। विनयेन निभृताभिस्तूष्णीम्भूताभिः। प्रत्यागता पुनरुपस्थिता चेतना चैतन्यं यस्याः सा। चन्द्रापीड़दर्शनक्षणे नीरु एवासीदिति भावः। हे चपले! कादम्बरि!। निगृहीतेव निर्यातितेव। उपालब्धेव तिरस्कृतेव।

নিকটবর্ত্তী এই প্রমদবনে ক্রীড়াপর্ব্বতের মণিমন্দিরে অবস্থান করুন" এই কথা বলিয়া গন্ধর্ব্ব-রাজের সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত চলিয়া গেল। চন্দ্রাপীড়ও, তাহারই সহিত নির্গত হইয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতস্থিত মণিমন্দিরে চলিয়া গেলেন; পূর্ব্বপরিচিত কেয়ূরক পথ বলিয়া দিতে দিতে চন্দ্রাপীড়ের সঙ্গে গিয়াছিল এবং কাদম্বরী চন্দ্রাপীড়ের চিত্তবিনোদনের নিমিত্ত, কতকগুলি কন্যাকে পাঠাইবার জন্য প্রতিহারীকে আদেশ করিয়াছিলেন; তাই প্রতিহারী বীণাবাদক, বংশীবাদ্যে নিপুণ, গানবিদ্যায় দক্ষ, দ্যূতক্রীড়ায় অনুরাগী, পাশার ছক্ বুঝিতে সুচতুর, চিত্রকার্য্যে শিক্ষিত এবং সুন্দরপ্রবন্ধ পাঠ করিতে নিপুণ—এইরূপ কতকগুলি কন্যাকে পাঠাইয়াছিল, তাহারাও চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গিয়াছিল।

(ঞ) চন্দ্রাপীড় চলিয়া গেলে কাদম্বরী সকল সখীজন ও পরিজনকে বিদায় দিয়া, কতিপয় পরিচারিকার সঙ্গে যাইয়া অট্টালিকায় আরোহণ করিলেন। সেখানে যাইয়া শয্যার উপরে পতিত হইলে, সেই পরিচারিকারা বিনয়বশতঃ নীরব হইয়া দূরে থাকিয়াই তাঁহার চিত্তবিনোদন করিতে লাগিল, তখন কোথাও হইতে তাঁহার চৈতন্য আসিয়া উপস্থিত হইল;

(१) दुरोदरेत्यादिः पाठिकाभिश्च त्यन्तः पाठः क्वचिन्नास्ति। (२) सकलसखीजनञ्च। (३) अदूर...।

लज्जया, 'गन्धर्व्वराजपुत्रि! कथमेतदयुक्तम्?' इत्युपालब्धेव विनयेन, 'अयमसावद्युत्पन्नो बालभावः क्व गतः' इत्युपहसितेव मुग्धतया, 'स्वैरिणि! मा कुरु यथेष्टमेकाकिन्यविनयम्' इत्यामन्त्रितेव कुमारभावेन, 'भीरु! नायं कुलकन्यकानां क्रमः' इति गर्हितेव महत्त्वेन, 'दुर्विनीते! रक्षाविनयम्' इति तर्जितेवाचारेण, 'मूढ़े! मदनेन (१) लघुतां नीतासि' इत्यनुशासितेवाभिजात्येन, 'कुतस्तवेयं तरल-हृदयता' इति (२) धिक्कृतेव धैर्य्येण, 'स्वच्छन्दचारिणि! अप्रमाणीकृताहं त्वया' इति निन्दितेव कुलस्थित्या, अतिगुर्व्वीं लज्जामुवाह। (ज)

अयमसौ सोऽयमित्यर्थः, अव्युत्पन्नो यौवनकालीयशृङ्गाररसानभिज्ञः, बालभावः शिशुस्वभावस्तव क्व गतः, इति कृत्वा मुग्धतया नवागतेन मुग्धाख्यनायिकाविशेषभावेन उपहसितेव, मुग्धाभावेन बालभावनिरासादिति भावः। मुग्धामाह साहित्यदर्पणः—"प्रथमावतीर्णयौवनमदनविकारा रतौ वामा। कथिता मृदुश्च माने समधिकलज्जावती मुग्धा।" हे स्वैरिणि! स्वेच्छाचारिणि!। अविनयं अशिष्टव्यवहारं। नायकेन सहाविनयं कर्त्तुमर्हसि न मम दोष इति द्योतयितुमेकाकिनीपदं प्रयुक्तम्। कुमारभावेन कन्यकावस्थया, आमन्त्रितेव आमन्त्र्य उपदिष्टेव। क्रमो रीतिः। महत्त्वेन औदार्य्येण। अविनयं अशिष्टव्यवहारं, रक्ष निवारय। आचारेण सद्व्यवहारेण। आभिजात्येन कौलिन्येन, अनुशासितेव शिक्षितेव। तरलहृदयता चञ्चलचित्तता। अहं कुलस्थितिः, अप्रमाणीकृता अवज्ञाता। कुलस्थित्या वंशमर्य्यादया। अत्र निगृहीतेवेत्यादितः प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

তাই সেই সময়ে তিনি একাকিনী গুরুতর লজ্জা অনুভব করিতে লাগিলেন; কারণ—'চঞ্চলে! তুমি, এ, কি আরম্ভ করিয়াছ' এই কথা বলিয়া লজ্জা যেন তাঁহাকে যাতনা দিতে লাগিল; 'গন্ধর্ব্বরাজকন্যে! ইহা কি তোমার সঙ্গত হইয়াছে?' এই কথা বলিয়া বিনয় যেন কাদম্বরীকে তিরস্কার করিতে লাগিল। 'তোমার সেই অনভিজ্ঞ বালকস্বভাব কোথায় গেল?' এই কথা বলিয়া মুগ্ধতা যেন তাঁহাকে তিরস্কার করিতে লাগিল। 'হে স্বেচ্ছাচারিণি! তুমি কেবল একাকিনী ইচ্ছানুসারে অশিষ্ট ব্যবহার করিও না' সম্বোধনপূর্ব্বক এই কথা বলিয়া কন্যাবস্থা যেন তাঁহাকে উপদেশ দিতে লাগিল। 'ভয়শীলে! কুলকন্যাগণের এই রীতি নহে' এই কথা বলিয়া ঔদার্য্য যেন নিন্দা করিতে লাগিল। 'দুর্ব্বিনীতে! নিজের অশিষ্ট ব্যবহার নিবারণ কর' এই কথা বলিয়া আচার যেন ভর্ৎসনা করিতে লাগিল। 'হে মূঢ়ে! কামদেব তোমাকে হাল্কা করিয়া ফেলিয়াছেন' এই কথা বলিয়া কৌলীন্য যেন শাসন করিতে লাগিল। 'তোমার এই চপলতা আসিল কোথা হইতে?' এই কথা বলিয়া ধৈর্য্য যেন ধিক্কার দিতে লাগিল। 'হে স্বচ্ছন্দচারিণি! তুমি আমাকে অবজ্ঞা করিলে' এই কথা বলিয়া বংশমর্য্যাদা যেন নিন্দা করিতে লাগিল।

---

(१) मूढ़े! निगृहीतासि मदनेन। (२) तरलता।

समचिन्तयच्चैवम्—'अगणितसर्वशङ्कया तरलहृदयतां दर्शयन्त्या अद्य मया किं कृतमिदं मोहान्धया (१) (ट)। तथाहि, अदृष्टपूर्वोऽयमिति साहसिकया (२) मया न शङ्कितम्। लघुहृदयां मां लोकः (३) कलयिष्यतीति निर्लज्जया नाकलितम्। कास्य चित्तवृत्तिरिति मूढया (४) न परीक्षितम्। दर्शनानुकूलाऽहमस्य नेति वा तरलया न कृतो विचारक्रमः (ठ)। प्रत्याख्यानवैलक्ष्याच्च भीतम्, गुरुजनाच्च त्रस्तम्, लोकापवादान्नोद्विग्नम्। तथा च महाश्वेताऽतिदुःखितेति (५) निर्दाक्षिण्यया (६) नापेक्षितम्, आसन्नवर्तिसखीजनोऽप्युपलक्षयतीति मन्दया न लक्षितम्, पार्श्वस्थितः परिजनः पश्यतीति नष्टचेतनया न

(ट) अगणितेति। न गणिता सर्वेभ्यः पित्रादिभ्यः शङ्का यया तया।

(ठ) तथाहीति। साहसिकया हठकारिण्या अविमृश्यकारिण्येत्यर्थः। अयं कुमारः अदृष्टपूर्व इति न शङ्कितं अदृष्टपूर्वत्वेन स्वभावापरिचयात् प्रतारयितुमपि शक्नोतीति न चिन्तितमित्यर्थः। कलयिष्यति निरूपयिष्यति, इति निर्लज्जया निर्लज्जया मया नाकलितं न विभावितम्। का कीदृशी। दर्शनानुकूला दृष्टिसुभगा। विचारक्रमो विवेचनपरम्परा।

(ड) प्रत्याख्यानेति। प्रत्याख्यानेन कुमारकर्त्तृककामनप्रणयनिराकरणेन यद्वैलक्ष्यं व्याकुलीभावस्तस्मात्। तथा च अपि च। अतिदुःखिता वैधव्यादिति भावः। निर्दाक्षिण्यया औदार्य्यहीनया मया। "महाश्वेतायां सशोकायां नाहमात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामी"ति प्रतिज्ञया यदौदार्य्यं जातमिदानीं पाणिग्रहणे तु तन्नश्यतीति भावः। मन्दया मूढया मया। नष्टचेतनया विलुप्तविवेकयेत्यर्थः।

(ট) তাহার পর কাদম্বরী এইরূপ চিন্তা করিতে লাগিলেন—'আমি আজ মোহান্ধ হইয়া, সকলের আশঙ্কা অগ্রাহ্য করিয়া, মনের চঞ্চলতা দেখাইয়া, এ কি করিলাম। (ঠ) আমি অবিবেচকতানিবন্ধন 'ইঁহাকে পূর্ব্বে দেখি নাই' এ আশঙ্কাও করিলাম না। 'লোকে আমাকে লঘুচিত্ত মনে করিবে' নির্লজ্জতাবশতঃ এ বিবেচনাও করিলাম না। 'ইঁহার চিত্তবৃত্তি কিরূপ' মূঢ়তাবশতঃ তাহাও পরীক্ষা করিলাম না। 'আমি উঁহার দৃষ্টিতে ভাল লাগিব কি না' চঞ্চলতাবশতঃ ইহারও বিবেচনা করিলাম না। (ড) 'উনি প্রত্যাখ্যান করিলে একেবারে আকুল হইয়া পড়িব' এ ভয়ও করিলাম না, গুরুজন হইতেও ভীত হইলাম না এবং লোকাপবাদেরও আশঙ্কা করিলাম না। আর মহাশ্বেতা অত্যন্ত দুঃখিত হইয়া কালযাপন করিতেছে, অনুদারতানিবন্ধন তাহারও অপেক্ষা করিলাম না, নিকটবর্ত্তী সখীগণও লক্ষ্য করিতেছে, মূঢ়তাবশতঃ আমি তাহাও লক্ষ্য করিলাম না এবং পার্শ্ববর্ত্তী পরিজনেরা যে দেখিতেছে, চৈতন্যলোপ হওয়ায় আমি তাহাও দেখিলাম না। (ঢ) যাহারা স্থূলবুদ্ধি, তাহারাও আমার সেই

---

(१) मोहान्धया हताशया। (२) साहसिकतया। (३) अयं (४) मया।

(५) दुःखितेति। (६) दाक्षिण्यया।

दृष्टम् (ड)। स्थूलबुद्धयोऽपि तादृशीं विनयच्युतिं विभावयेयुः, किमुतानुभूतमदनवृत्तान्ता महाश्वेता सकलकलाकुशलाः सख्यो वा राजकुलसञ्चारचतुरो वा नित्यमिङ्गितज्ञः परिजनः (ढ)। ईदृशेष्वतिनिपुणतरदृष्टयोऽन्तःपुरदास्यः (ण)। सर्वथा हतास्मि मन्दपुण्या, मरणं मेऽद्य श्रेयो न लज्जाकरं जीवितम्। श्रुत्वैतं वृत्तान्तं किं वक्ष्यत्यम्बा, तातो वा, गन्धर्वलोको वा। किं करोमि, कोऽत्र प्रतीकारः, केनोपायेन स्खलितमिदं प्रच्छादयामि, कस्य वा चापलमिदमेतेषां दुर्विनीतानामिन्द्रियाणां कथयामि, क्व वानेन दग्धहृदयेन पञ्चबाणेन न खलु जानामि गृहीता गच्छामि (१) (त)। तथा महाश्वेताव्यतिकरेण प्रतिज्ञा कृता, तथा प्रियसखीनां पुरो मन्त्रितम्, तथा च केयूरकस्य हस्ते सन्दिष्टम् (थ)।

(ढ) स्थूलेति। विनयच्युतिं मम धैर्य्यस्खलनमित्यर्थः, विभावयेयुर्बुध्येरन्। इङ्गितं मनोभावसूचककटाक्षादिशरीरचेष्टां जानातीति इङ्गितज्ञः। अर्थापत्तिरलङ्कारः।

(ण) ईदृशेष्विति। अन्तःपुरदास्यः, ईदृशेषु प्रेमचेष्टितेषु, अतिनिपुणतरा प्रकृतभावं बोधयितुमतिदक्षा दृष्टिर्यासां ताः। सुतरां ता अपि मदीयं तं भावमवगता एवेति भावः।

(त) सर्वथेति। स्खलितं धैर्य्यच्युतिं, प्रच्छादयामि गोपयामीत्यर्थः। दग्धं हृदयं येन तेनानेन पञ्चबाणेन मदनेन गृहीता आविष्टा, क्व गच्छामि, इति न खलु जानामीत्यन्वयः। अत्र वितर्काख्यभावो विषादभावस्याऽऽसमिति [illegible]नामालङ्कारः, तथा 'न खलु जानामि' इति वाक्यस्य वाक्यान्तरे प्रवेशेऽपि न गर्भिततादोषः, प्रत्युत चमत्कारातिशयद्योतनाद्गुण एव "गर्भितत्वं गुणः क्वापि" इति साहित्यदर्पणात्।

(थ) तथेति। महाश्वेताया व्यतिकरेण सखित्वसम्बन्धेन, तथा "सशोकायां महाश्वेतायां नाहमात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि" इत्येवंरूपा, प्रतिज्ञा कृता। प्रियसखीनां पुरोऽपि तथा तत्प्रतिज्ञावत् मन्त्रित-

ধৈর্য্যচ্যুতি বুঝিতে পারে; সুতরাং যে নিজে কামবৃত্তান্ত অনুভব করিয়াছে, সেই মহাশ্বেতা, সকল কলাবিদ্যায় নিপুণ সখীগণ এবং সর্ব্বদা রাজকুলে বিচরণ করায় সকল বিষয়ে সুচতুর পরিজনগণ—ইহাদের কথা আর বলিব কি। (ণ) বিশেষতঃ অন্তঃপুরস্থ দাসীগণের দৃষ্টি, এইরূপ ঘটনায় বিশেষ নিপুণ। (ত) আমার পুণ্য অল্প, তাই আমি সকল রকমেই গোল্লায় গিয়াছি; আজ আমার মরণই মঙ্গল, কিন্তু লজ্জাকর জীবন ধারণ নহে; কারণ—এই বৃত্তান্ত শুনিয়া মা কি বলিবেন, বাবাই বা কি বলিবেন আর গন্ধর্ব্বগণই বা কি বলিবে। এখন আমি কি করি, ইহার প্রতীকার কি, কোন্ উপায়ে এই দোষ ঢাকি, কাহার নিকটেই বা এই দুরন্ত ইন্দ্রিয়গণের এই চপলতার কথা বলি, এবং হৃদয়দাহকারী এই কন্দর্পকর্ত্তৃক ধৃত হইয়া কোথায় যাই—ইহার কিছুই ত বুঝিতে পারিতেছি না। (থ) মহাশ্বেতার সহিত সম্পর্ক থাকায় সেইরূপ প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, সখীদের নিকটেও সেইরূপ বলিয়াছি এবং কেয়ূরকের

(१)...दग्धहृदयेन गृहीता गच्छामि,...दग्धहृदया पञ्चबाणेन गच्छामि।

न खलु जानामि मन्दभागिनो शठविधिना वा, उत्सन्नमन्मथेन वा, पूर्वकृता-पुण्यसञ्चयेन वा, मृत्युहतकेन वा, अन्येन वा केनाप्ययमानीतो मम विप्रलम्भक-श्चन्द्रापीड़ः (द)। कोऽपि वा न कदाचिद्दृष्टो नानुभूतो न श्रुतो न चिन्तितो नोत्प्रेक्षितो मां विडम्बयितुमुपागतः, (१) यस्य दर्शनमात्रेणैव संयम्य दत्ते-वेन्द्रियैः, शरपञ्जरे निक्षिप्य समर्पितेव मन्मथेन, दासीकृत्योपनीतेवानुरागेण, गृहीतगुणपणेन (२) विक्रीतेव हृदयेन, उपकरणीभूतास्मि (ध)। न मे कार्य्यं तेन चपलेनेति क्षणमिव सङ्कल्पमकरोत्। कृतसङ्कल्पा च, अन्तर्गतेन 'मिथ्या-

---

सुकाम्। अपि च केयूरकस्य हस्ते तथा सन्दिष्टं मद्दाम्बेताम्लिके प्रतिज्ञानुरूपं वाचिकं प्रेषितम्। इदानीं पाणिग्रहणे तु सर्वत्र मिथ्यावादित्वप्रसङ्गो लज्जातिशयश्चेति भावः।

(द) नेति। उत्सन्नमन्मथेन कन्दर्पहतकेनेत्यर्थः। पूर्वकृतो यः अपुण्यसञ्चयः पापसमूहस्तेन। मृत्युहतकेन खलस्वभावेन यमेन, येनैतद्दर्शनेन यथा तथा मम मरणमेव सम्भावयिष्यत इति भावः। विप्रलम्भकः प्रतारकः।

(ध) कोऽपीति। नोत्प्रेक्षितः पूर्वमसम्भावितः। कोऽपि वा अनिर्वचनीयो जनः। इन्द्रियैर्मनः-प्रभृतिभिः संयम्य बद्ध्वा चन्द्रापीड़ाय दत्तेव। इतःप्रभृति प्रत्येकवाक्ये एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। गृहीता गुणाश्चन्द्रापीड़स्य सौन्दर्य्यादय एव पणा मूल्यानि येन तेन हृदयेन चन्द्रापीड़ाय विक्रीतेव। अत्र परिवृत्ति-रलङ्कारः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। यस्य उपकरणीभूतास्मि व्यवहार्यद्रव्यीभूतास्मि।

(न) नेति। चपलेन तेन कुमारेण मे मम कार्य्यं प्रयोजनं नास्ति, इति सङ्कल्पं क्षणमिवाकरो-दित्यन्वयः। अन्तर्गतेन भावनावशाच्चित्तस्थितेन, हृदयस्य कादम्बर्य्या एव चित्तस्य य उत्कम्पश्चन्द्रापीड़गमन-

---

হাতেও সেইরূপ খবরই পাঠাইয়াছি। (দ) আমার ভাগ্য মন্দ, তাই বুঝিতে পারিতেছি না যে—ধূর্ত্ত বিধাতা, কিংবা পোড়া কামদেব, অথবা পূর্ব্বজন্মকৃত পাপসমূহ, কিংবা পোড়া যম, অথবা অন্য কেহ, আমার প্রতারক এই চন্দ্রাপীড়কে আনয়ন করিয়াছে। (ধ) অথবা, যাহাকে কখনও দেখি নাই বা অন্যভাবে অনুভব করি নাই এবং যাহার নাম শুনি নাই, যাহাকে চিন্তা করি নাই, কিংবা যাহার সম্ভাবনাও করি নাই, সেইরূপ কোন অনির্ব্বচনীয় লোক আমাকে প্রতারণা করিতে আসিয়াছে; যাহার দর্শনমাত্রেই ইন্দ্রিয়গণ যেন আমাকে বন্ধন করিয়া দান করিয়াছে, কামদেব যেন নিজের শরময় পিঞ্জরে আবদ্ধ করিয়া সমর্পণ করিয়াছেন, অনুরাগ যেন আমাকে দাসী করিয়া উপহার দিয়াছে এবং হৃদয় যেন উহার নিকট হইতে গুণরূপ মূল্য গ্রহণ করিয়া আমাকে বিক্রয় করিয়াছে; তাই আমি উহার ব্যবহারের সামগ্রী হইয়া পড়িয়াছি। (ন) 'যাহা হউক, সেই চপলস্বভাব কুমারের দ্বারা আমার প্রয়োজন নাই' কাদম্বরী মনে মনে ক্ষণকাল এইরূপ সঙ্কল্প করিলেন। এইরূপ সঙ্কল্প করিলে তাঁহার হৃদয়স্থিত চন্দ্রাপীড়, সেই

---

(१) उपगतः। (२) गृहीतमूल्येन गुणगणेन, गुणपणेन।

विनीते! यदि मया न कृत्यम्, एष गच्छामि' इति हृदयोत्कम्पचलितेन परिहसितेव चन्द्रापीडेन, तत्परित्यागसङ्कल्प-समकालप्रस्थितेन कण्ठलग्नेन पृष्टेव जीवितेन, 'अविशेषज्ञे! पुनरपि प्रक्षालितलोचनया दृश्यतामसौ जनः प्रत्याख्यानयोग्यो न वे'ति तत्कालागतेनाभिहितेव वाष्पेण, 'अपनयामि ते सहासुभिर्धैर्य्यावलेप'मिति निर्भर्त्सितेव मनोभुवा, पुनरपि तथैव चन्द्रापीडाभिमुखहृदया बभूव। (न)

त्रासादुत्पन्नं कम्पनं तेन चलितो हृदयात् प्रस्थितः, तदुत्कम्पनेन यथा तत्स्थः पक्षी प्रतिष्ठते तद्वदिति भावः, तेन तथाविधेन चन्द्रापीडेन 'हे मिथ्याविनीते! कादम्बरि! यदि मया चन्द्रापीडेन तव कृत्यं प्रयोजनं नास्ति, तदा एषोऽहं गच्छामि' इत्युक्त्वा परिहसितेव। हृदये मां गाढं स्थापयसि अथ च सङ्कल्पयसि 'तेन चपलेन न मे कार्य्यमिति' परिहासः सम्भवत्येवेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तस्य चन्द्रापीडस्य परित्यागसङ्कल्पसमकाले प्रस्थितेन देहं विहाय चलितेन, अतएव कण्ठलग्नेन, जीवितेन जीवनेन, पृष्टेव 'अहमपि गच्छामि' इत्यामन्त्रितेव। अन्योऽपि प्रस्थातुकामः प्रियतमः कण्ठमालिङ्ग्य स्वप्रस्थानं पृच्छति। क्रियोत्प्रेक्षा, तया च चन्द्रापीडपरित्यागे जीवनमपि परित्यक्तं भवेदित्यनुरागस्य पराकाष्ठा व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। तत्काले चन्द्रापीडपरित्यागसङ्कल्पकरणसमये आगतेन शोकोदयादाविर्भूतेन वाष्पेण 'हे अविशेषज्ञे! तारतम्यानभिज्ञे! कादम्बरि! त्वया मद्द्वारा प्रक्षालितलोचनया सत्या पुनरपि दृश्यतां, यदसौ जनश्चन्द्रापीडस्तव प्रत्याख्यानयोग्यो न वा' इति अभिहितेव उक्तेव। क्रियोत्प्रेक्षा, तया च सर्वथैव प्रत्याख्यानायोग्य इति व्यज्यत इति पूर्ववत् ध्वनिः। तथा मनोभुवा मदनेन "ते तव असुभिः प्राणैः सह धैर्य्यावलेपं 'न मे कार्य्यं तेन चपलेन' इति धैर्य्याहङ्कारं अपनयामि" इति निर्भर्त्सितेव। क्रियोत्प्रेक्षा, तया च तदानीं धैर्य्यलोपः प्राणगमनोपक्रमश्च सञ्जात इति द्योत्यत इति पूर्ववत् ध्वनिः। अतएव तथैव पूर्ववदेव पुनरपि चन्द्रापीडाभिमुखं तदाकाङ्क्षि हृदयं यस्याः सा तादृशी बभूव।

হৃদয়ের কম্পন বশতঃ বিচলিত হইয়া যেন পরিহাস করিয়া বলিলেন—'যদি আমাদ্বারা তোমার প্রয়োজন না থাকে, তবে আমি এই চলিলাম।" চন্দ্রাপীড়কে পরিত্যাগ করার সঙ্কল্প করিবার সময়ে কাদম্বরীর জীবনও, যেন প্রস্থান করিবার জন্য কণ্ঠলগ্ন হইয়া তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিল—('তবে, আমিও যাই?')। সেই সময়ে অশ্রুজল আবির্ভূত হইয়া কাদম্বরীকে যেন বলিল—"হে তারতম্যানভিজ্ঞে! তুমি নয়নযুগল প্রক্ষালন করিয়া আবারও দেখ যে, ঐ লোকটি তোমার প্রত্যাখ্যান করার যোগ্য কি না।" এবং কামদেব যেন তিরস্কার করিয়া বলিলেন—"কাদম্বরি! তোমার প্রাণের সহিত ধৈর্য্যের অহঙ্কার, আমি দূর করিতেছি।" সুতরাং কাদম্বরীর হৃদয়, আবারও পূর্ব্বের ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের অভিমুখীন হইল।

तदेवमस्तमितप्रतिसमाधानबला (१) बलात् प्रेमावेशेनास्वतन्त्रीकृता परवशे-वोत्थाय जालवातायनेन तमेव क्रीड़ापर्वतं (२) अवलोकयन्त्यतिष्ठत् (प)। तत्रस्था च सा तमानन्दजलव्यवधानोद्विग्नेव स्मृत्या ददर्श, न चक्षुषा (फ)। अङ्गुलीगलितस्वेदपरामर्शभीतेव चिन्तया लिलेख, न चित्रतूलिकया (ब)। रोमाञ्चतिरोधानशङ्कितेव हृदयेनालिलिङ्ग, न वक्षसा (भ)। तत्सङ्गम-कालातिपातासहेव मनो गमागमाय (३) नियुक्तवती, न परिजनम्। (म)

(प) तदिति। एवमनेन प्रकारेण अस्तमितं विलुप्तं प्रतिसमाधानबलं धैर्य्यावलम्बनसामर्थ्यं यस्याः सा तादृशी कादम्बरी, प्रेमावेशेन बलादस्वतन्त्रीकृता, अतएव परवशेव। अत्र गुणोत्प्रेक्षा।

(फ) तत्रस्थेति। आनन्दजलेन चक्षुषा दर्शने आनन्दाश्रुपातेन यद्व्यवधानं तस्मादुद्विग्नेव सती, स्मृत्या चिन्तया तं चन्द्रापीड़ं ददर्श अपश्यत्, न तु चक्षुषा। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा शाब्दी परिसंख्या चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ब) अङ्गुलीति। हस्तधृतया चित्रतूलिकया चित्रणे, अङ्गुलीभ्यो गलितैः स्वेदैर्घर्म्मैः परामर्शः संसर्गस्तेनान्यथाभाव इत्यर्थः तस्माद्भीतेव सती, चिन्तया लिलेख चित्ते चन्द्रापीड़ं चित्रयामास, न तु चित्र-तूलिकया। पूर्व्ववदलङ्कारः।

(भ) रोमाञ्चेति। वक्षसा आलिङ्गने, रोमाञ्चैर्यत्तिरोधानं व्यवधानं तस्मात् शङ्कितेव सती, हृदयेन मनसा चन्द्रापीड़ं आलिलिङ्ग, न तु वक्षसा। पूर्व्ववदलङ्कारः।

(म) तदिति। गमागमाय परिजननियोगे, तस्य चन्द्रापीड़स्य सङ्गमे यः कालातिपातो विलम्बस्तं न सहत इति सा तादृशी सतीव, गमागमाय चन्द्रापीड़ान्तिके यातायाताय मनश्चित्तं नियुक्तवती, न तु कञ्चित् परिजनम् सर्वापेक्षया मनसो द्रुतगामित्वादिति भावः। पूर्व्ववदलङ्कारः। वस्तुतस्तु मणिमन्दिरभित्ति-व्यवधानेन साक्षाद्द्रष्टुमशक्नुवती चन्द्रापीड़ं केवलमेव चिन्तयामासेति निष्कर्षः।

(প) এই ভাবে কাদম্বরীর ধৈর্য্যাবলম্বন করিবার শক্তি বিনষ্ট হইলে প্রেমাবেশ আসিয়া বলপূর্ব্বক তাঁহাকে অবশ করিয়া ফেলিল, তাই তিনি পরাধীনের স্থায় উঠিয়া গবাক্ষদ্বার দিয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের দিকে নিরীক্ষণ করিয়া রহিলেন। (ফ) সেখানে থাকিয়া কাদম্বরী, আনন্দাশ্রুজলে ব্যবধান করিবে,এই আতঙ্কেই যেন স্মৃতিদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন; কিন্তু নয়নদ্বারা নহে। (ব) অঙ্গুলী হইতে নিঃসৃত ঘর্ম্ম সংলগ্ন হইবে, এই ভয়েই যেন চিন্তাদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে চিত্র করিতে লাগিলেন; কিন্তু চিত্রতুলিকাদ্বারা নহে। (ভ) রোমাঞ্চে ব্যবধান করিবে—এই আশঙ্কায়ই যেন মনে মনে আলিঙ্গন করিতে লাগিলেন; কিন্তু বক্ষোদ্বারা নহে। (ম) চন্দ্রাপীড়ের সহিত সম্মিলনের বিলম্ব সহ্য করিতে না পারিয়াই যেন যাতায়াতের জন্য মনকে নিযুক্ত করিলেন; কিন্তু কোন পরিজনকে নহে।

---

(१)...बलात् प्रेमाविष्टेन। (२) क्रीड़ापर्वतकं। (३) गमाय।

चन्द्रापीड़ोऽपि प्रविश्य स्वच्छन्दं कादम्बरीहृदयमिव द्वितीयं मणिगृहं, शिलातलास्तीर्णायामुभयत उपर्य्युपरि निवेशितबहूपधानायां कुथायां निपत्य केयूरकेणोत्सङ्गे (१) गृहीतचरणयुगलस्ताभिर्यथादिष्टेषु भूमिभागेषूपविष्टाभिः कन्यकाभिः परिवृतो दोलायमानेन चेतसा चिन्तां विवेश (य)। किं तावदस्या गन्धर्व्वराजदुहितुः कादम्बर्य्याः सहभुव एते विलासा एवेदृशाः सकललोकहृदय-हारिणः, आहोस्विदनाराधितप्रसन्नेन भगवता मकरकेतुना मयि नियुक्ताः, येन मां सास्रेण सरागेणाकूणितत्रिभागेण हृदयान्तःपतत्-स्मर-शर-कुसुम-रजोरूषिते-

अहो! परमचमत्कारिणी खल्वियं रचनाचातुरी कविचूड़ामणेः।

(य) अथ नायिकागतभावानभिधाय नायकगतानभिधातुमाह चन्द्रेति। सुन्दरत्वसाम्यात् प्रवेशस्यानन्दजनकत्वसाम्याद्वा द्वितीयं कादम्बरीहृदयमिव मणिगृहं, स्वच्छन्दं निर्बाधं प्रविश्येत्यन्वयः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः। उभयतः पार्श्वयोः उपर्य्युपरि निवेशितानि स्थापितानि बहूनि उपधानानि यस्यां तथाविधायां, कुथायां चित्रकम्बले, निपत्य स्रस्ताङ्गः सन्नवस्थाय। उत्सङ्गे क्रोड़े। दोलायमानेन सन्देहविचलितेन।

(र) किमिति। सहभुवः सहजाः। सरागेण सानुरागेण, आकूणित ईषत् सङ्कोचितः त्रिभागस्तृतीयो भागो यस्य तेन, वृत्तिविषये संख्याशब्दानां पूरणार्थत्वमिति तूक्तमेव। हृदयस्य अन्तर्मध्ये पतता स्मरस्य मदनस्य शरकुसुमानां शरीभूतपुष्पाणां रजोभिः परागैः रूषितं विच्छुरितं तेनेव चक्षुषा तिर्य्यग्वक्रं विलोकयति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पूर्वं प्रत्यक्षदर्शनवेलायां ये ये भावाः सञ्जातास्तानधिकृत्यैतानि ब्रवीति, अतो विलोकयतीत्यतीतसामीप्ये वर्त्तमाना। इत्यमुत्तरवाक्येष्वपि बोध्यम्।

(য) চন্দ্রাপীড়ও, আর একটি কাদম্বরী-হৃদয়ের ন্যায় সেই মণিময় গৃহে যাইয়া অবাধে প্রবেশ করিলেন; সেখানে মণিময় শিলার উপরে একখানি বিচিত্র কম্বল পাতা ছিল, তাহার দুই দিকে ঘন ঘন বহুতর বালিস রাখিয়াছিল; চন্দ্রাপীড় তাহার উপরে শয়ন করিলেন; তখন কেয়ূরক আসিয়া তাঁহার চরণযুগল ক্রোড়ে সংস্থাপন করিয়া সংবাহন করিতে লাগিল এবং সেই কন্যাগণ আসিয়া নির্দ্দিষ্ট স্থানে উপবেশন করিয়া তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সন্দেহাকুলচিত্তে চিন্তা করিতে লাগিলেন। (র) এই গন্ধর্ব্বরাজকন্যা কাদম্বরীর এই সমস্ত হাবভাব কি স্বভাবতই এইরূপ সকল লোকের হৃদয়াকর্ষী? না,—আরাধনা না করিলেও, ভগবান্ কামদেব আপনা আপনিই প্রসন্ন হইয়া আমার প্রতিই করাইয়াছেন? যে হেতু, কাদম্বরী আমাকে যখন বক্রভাবে দেখিতেছিলেন, তখন তাঁহার আনন্দাশ্রু নির্গত হইতেছিল, দৃষ্টির ভাব অনুরাগের সূচনা করিতেছিল এবং তিনি নয়নের তৃতীয়ভাগ সঙ্কুচিত করিয়াছিলেন; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, হৃদয়ের ভিতরে কামদেবের যে সকল পুষ্পময় বাণ পড়িতেছিল, তাহার রেণুতেই যেন নয়নটিকে কলুষিত করিয়াছে। (ল) আবার আমি যখন তাঁহার দিকে

(१) अनुषङ्गेण।

नेव चक्षुषा तिर्य्यग्विलोकयति (र)। मद्विलोकिता च धवलेन स्मितालोकेन दुकूलेनेव लज्जयात्मानमावृणोति (ल)। मल्लज्जाविवर्त्तमानवदना च प्रतिबिम्बप्रवेशलोभेनेव कपोलदर्पणमर्पयति (व)। मदवकाशदायिनो हृदयस्य प्रथमाविनयलेखामिव कररुहेण शयनाङ्के लिखति (श)। मत्ताम्बूलवीटिकोपनयन-खेद-विधूतेन (१) रक्तोत्पल-भ्रम-भ्रमद्भ्रमरवृन्देन (२) करतलेन खिन्नं मुखमिव (३) गृहीततमालपल्लवेनेव वीजयति (ष)।' पुनश्चाचिन्तयत्—'प्रायेण मानुष्यकसुलभा लघुता मिथ्यासङ्कल्पसहस्रैरेवमायास्य मां (४) विप्रलभते,

(ल) मदिति। किञ्च मया विलोकिता सती, लज्जया, दुकूलेनेव धवलेन स्मितालोकेन स्वकीयमन्दहास्यप्रभया आत्मानं स्वदेहमावृणोति। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) मदिति। किञ्च, मल्लज्जया विवर्त्तमानं वदनं यस्याः सा, प्रतिबिम्बप्रवेशलोभेनेव मम प्रतिमूर्त्तिं पतनेच्छयेव, कपोल एव दर्पणस्तमर्पयति। वदनविवर्त्तनेन कपोलस्य ममाभिमुख्यादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षानिरङ्गकेवलरूपकयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) मदिति। कररुहेण नखेन, शयनाङ्के शय्याक्रोड़े, मदवकाशदायिनो ममावस्थितिस्थानदायिनः स्वस्य हृदयस्य, प्रथमा या अविनयलेखा अशिष्टाचाररेखा तां लिखतीव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ष) मदिति। मह्यं ताम्बूलवीटिकाया उपनयने दानार्थोपस्थापने यः खेदः परिश्रमस्तेन विधूतेन कम्पितेन, तत्करतले रक्तोत्पलभ्रमेण भ्रमत्भ्रमरवृन्दं यस्मिन् तेन, अतएव गृहीततमालपल्लवेनेव स्थितेन भ्रमरवृन्दस्य तमालपल्लववत् कृष्णवर्णत्वादिति भावः, करतलेन पाणिना, खिन्नं घर्म्माक्तं मुखं वीजयतीव। अत्रैकौ भ्रान्तिमान् द्वे च क्रियोत्प्रेक्षे इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, स पुनर्भ्रमेत्यादौ वृत्त्यनुप्रासेन संसृज्यते।

(स) पुनरिति। मानुष्यकेण मनुष्यतया सुलभा अनायासप्राप्या लघुता अगाम्भीर्य्यं। एवमित्थं,

দৃষ্টিপাত করিয়াছি, তখন লজ্জাবশতঃ সূক্ষ্মবস্ত্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মন্দ হাস্যের আলোকে নিজের দেহ আবৃত করিয়াছেন। (ব) এবং লজ্জায় আমার দিক্ হইতে মুখ ফিরাইয়া, আমার প্রতিবিম্ব প্রবেশ করাইবার ইচ্ছায়ই যেন, নিজের গণ্ডরূপ দর্পণ আমার দিকে সমর্পণ করিয়াছেন। (শ) কাদম্বরীর হৃদয়, আমাকে থাকিবার জায়গা দিয়াছিল, সুতরাং তাহার সেই প্রথম অন্যায় আচরণের রেখাই যেন নখদ্বারা শয্যার উপরে তিনি অঙ্কিত করিতেছিলেন। (ষ) যখন তিনি আমাকে দিবার জন্য সেই পানের বীড়িটি উপস্থিত করিয়াছিলেন, তখন সেই পরিশ্রমে তাঁহার হাতখানি কাঁপিতেছিল এবং সেই হাতখানিকে রক্তোৎপল মনে করিয়া কতকগুলি ভ্রমর তাহার উপরে ঘুরিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, তিনি একটি তমালের পল্লব ধারণ করিয়াছেন; এইরূপ হস্তদ্বারা তিনি নিজের ঘর্ম্মাক্ত মুখমণ্ডলে বাতাস করিতেছিলেন।' (স) চন্দ্রাপীড় পুনরায় চিন্তা করিলেন— প্রায়শই মনুষ্যের স্বভাব-সুলভ লঘুতাই এইরূপ মিথ্যা ভাবনাসমূহে আমাকে

(१)...विधुतेन। (२) रक्तोत्पलभ्रमद्भ्रमरवृन्देन। (३) सुखमिव। (४) एवं मां।

লুপ্তবিবেকো যৌবনমদো মদয়তি মদনো বা (স)। যতস্তিমিরোপহতেব যূনাং দৃষ্টিরল্পমপি কালুষ্যং (১) মহৎ পশ্যতি (হ)। স্নেহলবোঽপি বারিণেব যৌবনমদেন দূরং বিস্তার্য্যতে (ক্ষ) স্বয়মুৎপাদিতানেকচিন্তাশতাকুলা কবিমতিরিব তরলতা ন কিঞ্চিন্নোৎপ্রেক্ষতে (ক)। নিপুণমন্মথ-(২) গৃহীতা চিত্রবর্ত্তিকেব

আয়াস্য খেদয়িত্বা, মাং বিপ্রলভতে বঞ্চয়তি। লুপ্তো বিবেকো যস্মিন্ স তাদৃশো যৌবনমদো মদনো বা মদয়তি মত্তং করোতি।

(হ) উক্তমর্থং সমর্থয়িতুমাহ যত ইতি। যতো হেতোঃ। যূনাং দৃষ্টিশ্চিত্তবৃত্তিরেব নয়নং, তিমিরেণ নেত্ররোগবিশেষেণ উপহতা ক্ষপিতশক্তিরিব সতী, অল্পমপি কালুষ্যং আলম্বনীভূতনায়িকাচিত্তবিকারং পদার্থানামাবিলতাঞ্চ, মহৎ পশ্যতি সম্ভাবয়তি অবলোকতে চ। অত্র চিত্তবৃত্তিনয়নয়োর্ভেদেঽপি শ্লেষেণাভেদাধ্যবসায়াদতিশয়োক্তিঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা চানয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(ক্ষ) স্নেহেতি। বারিণা জলেনেব যূনাং যৌবনমদেন, স্নেহলবোঽপি নায়িকায়া অনুরাগলেশোঽপি পক্ষে তৈলাদিস্নেহপদার্থবিন্দুরপি, দূরং বিস্তার্য্যতে অত্যন্তবিস্তৃতত্বেন জ্ঞাপ্যতে পক্ষে অতীব প্রসার্য্যতে। অত্র পূর্ণোপমালঙ্কারঃ।

(ক) স্বয়মিতি। কবিমতিরিব তরলতা যূনাং চিত্তচাঞ্চল্যং, স্বয়মাত্মনৈব উৎপাদিতৈরনেকচিন্তাশতৈরাকুলা সতী, কিঞ্চিন্ন উৎপ্রেক্ষতে ন সম্ভাবয়তি ইতি ন, অপি তু সর্ব্বমেবোৎপ্রেক্ষত ইত্যর্থঃ। কবীনাং মতির্যথা বর্ণনীয়বিষয়কনানাবিধচিন্তাভিরাকুলা সতী সর্ব্বমেবোৎপ্রেক্ষালঙ্কারেণালঙ্কৃতং করোতি, তথা যূনাং চঞ্চলা চিত্তবৃত্তিরপি নায়িকাবিষয়কনানাবিধচিন্তাভিরাকুলা সতী, সর্ব্বমেব সঙ্গমাদিকং সম্ভাবয়তীতি সরলার্থঃ। পূর্ণোপমা।

(খ) নিপুণেতি। চিত্রনিপুণজনগৃহীতা চিত্রবর্ত্তিকেব চিত্রতূলিকেব তরুণানাং চিত্তবৃত্তিঃ, নিপুণেন উত্তেজনাদক্ষেণ মন্মথেন গৃহীতা আবিষ্টা সতী, কিঞ্চিন্নালিখতি নাঙ্কয়তি ইতি ন, অপি তু জগচ্চিত্রবৎ সর্ব্বমেব নায়িকাসঙ্গমাদিকং চিত্তে অঙ্কয়তীত্যর্থঃ। পূর্ণোপমা।

পরিশ্রান্ত করিয়া শেষে প্রতারণা করিতেছে, অথবা যৌবনমদ কিংবা কন্দর্প আমাকে উন্মত্ত করিয়া তুলিয়াছে। (হ) কারণ—যুবকগণের দৃষ্টি তিমিররোগে আক্রান্ত হইয়াই যেন, নায়িকাদিগের মনের বিকার অল্প হইলেও, তাহাকে গুরুতরভাবে দেখিয়া থাকে। (ক্ষ) জল যেমন ক্ষুদ্র তৈলবিন্দুকেও অত্যন্ত বিস্তৃত করে; সেইরূপ যুবকদিগের যৌবনমদ, নায়িকাদিগের অনুরাগের কণাকেও অত্যন্ত অধিক বলিয়া বুঝাইয়া দেয়। (ক) কবিদিগের বুদ্ধি যেমন নিজেরই উৎপাদিত নানাবিধ চিন্তায় আকুল হইয়া সমস্তই উৎপ্রেক্ষালঙ্কারে অলঙ্কৃত করে; যুবকগণের মনের চঞ্চলতাও তেমন নিজেরই উৎপাদিত নানাবিধ চিন্তায় আকুল হইয়া, নায়িকার বিষয়ে সমস্তই সম্ভাবনা করে। (খ) উৎকৃষ্ট চিত্রকরের হস্তধৃত চিত্রতূলিকা যেমন সকলই চিত্র

---

(১) কালুষং। (২)...মদন...।

तरुणचित्तवृत्तिर्न किञ्चिन्नालिखति (ख)। सञ्जातरूपाभिमाना कुलटेवात्मसम्भावना न क्वचिन्नात्मानमर्पयति (ग)। स्वप्न इवाननुभूतमपि (१) मनोरथो दर्शयति (घ)। इन्द्रजालपिच्छिकेवासम्भाव्यमपि प्रत्याशा पुरः स्थापयति (ङ)। भूयश्च चिन्तितवान् 'किमनेन वृथैव मनसा खेदितेन, यदि सत्यमेवेयं धवलेक्षणा मय्येवं जातचित्तवृत्तिः (२) तदा न चिरात् स एवैनामप्रार्थितानुकूलो मन्मथः प्रकटीकरिष्यति, स एवास्य संशयस्य च्छेत्ता भविष्यति' इत्यवधार्य्योत्थायोपविश्य च ताभिः कन्यकाभिः सहाक्षैर्गेयैश्च (३) विपञ्चीवाद्यैश्च पाणविकैश्च स्वरसन्देहविवादैश्च सुभाषित-गोष्ठीभिश्चान्यैश्च (४) तैस्तैरालापैः सुकुमारैः कलाविलासैः

(ग) सञ्जातेति। कुलटेवात्मसम्भावना आत्मश्लाघा, सञ्जातो रूपाभिमानः सौन्दर्य्यगर्वो यस्याः सा तादृशी सती, क्वचिन्नायिकायां नायके च, आत्मानं मनः स्वदेहञ्च नार्पयति इति न, अपि तु सर्व्वत्रैवात्मानमर्पयतीत्यर्थः। पूर्णोपमा।

(घ) स्वप्न इति। स्वप्न इव यूनां मनोरथः, सर्व्वमननुभूतमपि नायिकानुरागादिकं द्रव्यजातञ्च, दर्शयति सम्भावयति दृष्टिगोचरीकरोति च। पूर्णोपमा।

(ङ) इन्द्रेति। इन्द्रजालस्य पिच्छिकेव यूनां प्रत्याशा, असम्भाव्यमपि नायिकासङ्गमादिकं अद्भुतपदार्थञ्च, पुरः स्थापयति। पूर्णोपमा।

(च) भूय इति। एवं जातचित्तवृत्तिरनुरक्तेत्यर्थः। अक्षैर्द्यूतक्रीडाभिः, गेयैर्गानैश्च, विपञ्ची सप्ततन्त्रीविशिष्टा वीणा तस्या वाद्यैश्च, पणवा वाद्ययन्त्रविशेषास्तत्संसृष्टानि वाद्यानीति पाणविकानि तैश्च, स्वरा निषादादयस्तेषां सन्देहे संशये विवादैर्विविधतर्कैश्च, सुभाषितानि नानाविधमधुरवचनानि तेषां गोष्ठीभिः संलापैश्च, "गोष्ठी सभासंलापयोः स्त्रियां" इति मेदिनी। सुकुमारैः कोमलैः कलाविलासैर्माल्यग्रथनादिकलाविद्याव्यापारैः।

করে; যুবকগণের চিত্তবৃত্তিও তেমন উত্তেজনানিপুণ কন্দর্পকর্ত্তৃক আক্রান্ত হইয়া সকলই অঙ্কিত করে। (গ) সৌন্দর্য্যাভিমানিনী কুলটা যেমন সকল পুরুষেই দেহ সমর্পণ করে; সৌন্দর্য্যাভিমানী যুবাদিগের আত্মশ্লাঘাও তেমন সকল নায়িকাতেই মন সমর্পণ করে। (ঘ) স্বপ্নের ন্যায় যুবাদের অভিলাষ অননুভূত পদার্থও দেখাইয়া থাকে। (ঙ) এবং ইন্দ্রজালের পিচ্ছির ন্যায় যুবকদিগের আশা, অসম্ভাবনীয় বস্তুকেও সম্মুখে উপস্থিত করে।' (চ) চন্দ্রাপীড় আবার চিন্তা করিলেন—'অনর্থক এইরূপ চিন্তা করিয়া মনকে পরিশ্রান্ত করায় ফল কি, যদি সত্যই ধবলনয়না কাদম্বরীর চিত্ত আমার প্রতি এইরূপ অনুরক্ত হইয়া থাকে; তাহা হইলে, অযাচিত অবস্থায় অনুকূল সেই কামদেবই অচিরকালমধ্যে ইহাকে ব্যক্ত করিবেন এবং তিনিই এই সংশয় ছেদন করিবেন' মনে মনে এইরূপ স্থির করিয়া চন্দ্রাপীড় উঠিয়া বসিয়া, সেই

(१) अननुभूतमपि। (२) जातवृत्तिः।

(३) गयैश्च। (४) क्वचित् "सुभाषितगोष्ठीभिश्चान्यैश्च" इति पाठो नास्ति।

क्रीड़यासाञ्चक्रे (च)। मुहूर्त्तञ्च स्थित्वा निर्गत्योपवनालोकनकुतूहलाक्षिप्त-चित्तः क्रीड़ापर्वतकशिखरमारुरोह। (छ)

कादम्बरी तु तं (१) दृष्ट्वा चिरयतीति महाश्वेतायाः किल वर्त्मावलोकयितुं विसृज्य तं गवाक्षं (२) अनङ्गाक्षिप्तचित्ता सौधस्योपरितनं शिखरमारुरोह (ज)। तत्र च विरलपरिजना सकलशशिमण्डलपाण्डुरेणातपत्रेण हेमदण्डेन निवार्य्य-माणातपा, चतुर्भिर्बालव्यजनैश्च फेनशुचिभिरुद्धूयमानैरुपवीज्यमाना, शिरसि कुसुमगन्धलुब्धेन भ्रमता भ्रमरकुलेन दिवापि नीलावगुण्ठनेनेव (३) चन्द्रापीड़ा-भिसरणवेशाभ्यासमिव कुर्वती, (४) मुहुश्चामरशिखां समासज्य, मुहुश्छत्रदण्डम-

(छ) मुहूर्त्तमिति। उपवनालोकनस्य कुतूहलेन क्षिप्तमुद्वेलितं चित्तं यस्य सः।

(ज) कादम्बरीति। तं क्रीड़ापर्वतशिखरस्थं चन्द्रापीड़ं। चिरयति महाश्वेता विलम्बते, इति हेतोः। किलेत्यलीके; महाश्वेतायाः किल वर्त्मावलोकयितुं मिथ्या महाश्वेतायाः प्रत्यावर्त्तनपथं द्रष्टुं, यथार्थतश्चन्द्रापीड़ं द्रष्टुमिति भावः। अनङ्गाक्षिप्तचित्ता कामोद्वेलितहृदया।

(झ) तत्रेति। विरला अल्पाः परिजना यस्याः सा। कलाभिः सहेति सकलं षोड़शकलापरिपूर्णं यत् शशिमण्डलं तद्वत् पाण्डुरेण। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। हैमो दण्डो यस्य तेन तादृशेन आतपत्रेण छत्रेण, निवार्य्यमाण आतपो यस्याः सा। उद्धूयमानैः परिचारिकाभिरान्दोल्यमानैः, फेनवत् शुचिभिः शुभ्रैः। अत्रापि लुप्तोपमा। बालव्यजनैश्चामरैः। कुसुमगन्धलुब्धेन सता शिरसि भ्रमता, अतएव नीलावगुण्ठनेनेव,

কন্যাগণের সহিত পাশা খেলা, গান, বীণা ও পণবের বাদ্য, কোন স্বরের সন্দেহ হইলে সে বিষয়ে নানাবিধ বিতর্ক, মধুর বাক্যে কথোপকথন, অন্যান্য নানাবিধ আলাপ এবং মালাগাঁথা প্রভৃতি কোমল কলাবিদ্যার ব্যবহারে চিত্তবিনোদন করতঃ অবস্থান করিতে লাগিলেন। (ছ) সেই মণিমন্দিরে কিছুকাল সেই ভাবে থাকিয়া, তথা হইতে নির্গত হইয়া উদ্যান-দর্শনের কৌতুকে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গে আরোহণ করিলেন।

(জ) কাদম্বরী কিন্তু সেখানে চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া, 'মহাশ্বেতা বিলম্ব করিতেছে' তাই তাহার ফিরিয়া আসিবার পথ দেখিবার ভাণ করিয়া, সেই গবাক্ষদ্বার পরিত্যাগপূর্ব্বক কামাবিষ্টচিত্তে অট্টালিকার উপরে যাইয়া আরোহণ করিলেন। (ঝ) সেখানে কাদম্বরীর সঙ্গে অল্পই পরিজন ছিল; ষোড়শকলায় পরিপূর্ণ চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় শুভ্রবর্ণ এবং স্বর্ণদণ্ডসংযুক্ত একটি ছত্রদ্বারা কোন পরিচারিকা তাঁহার রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল; চারিজন পরিচারিকা সমুদ্র-ফেনের ন্যায় ধবলবর্ণ চারিটি চামর আন্দোলন করিয়া তাঁহাকে বাতাস করিতেছিল; নীলবর্ণ অবগুণ্ঠনের ন্যায় কতকগুলি ভ্রমর, পুষ্পের সৌরভলোভে কাদম্বরীর মস্তকের উপরে

(१) तातं। (२) विसृज्यता गवाक्षमित्युक्ता। (३) नीलावगुण्ठनेव।

(४)...वेशाभ्यसन्ती,...वेशाभ्यासं कुर्वती, कैलासशिखर इव गौरी इत्यपि क्वचिदधिकः पाठः।

वलम्बा, मुहुस्तमालिकास्कन्धे करौ विन्यस्य, मुहुर्मदलेखां परिष्वज्य, (१) मुहुः परिजनान्तरितसकलदेहा नेत्रत्रिभागेण, (२) मुहुरावलितत्रिवलीवलया परिवृत्य, मुहुः प्रतीहारीवेत्रलताशिखरे कपोलं निधाय, मुहुर्निश्चलकरविधृताम-धरपल्लवे वीटिकां विनिवेश्य, (३) मुहुरुद्गीर्णोत्पल-(४) प्रहार-पलायमान-परिजनानुसरण-दत्त-कतिपयपदा विहस्य, तं विलोकयन्ती तेन च विलोक्यमाना, महान्तमपि कालमतिक्रान्तं नाज्ञासीत् (झ)। आरुह्य च प्रतीहार्या निवेदितमहाश्वेताप्रत्यागमना तस्मादवततार (ञ)। स्नानादिषु मन्दादरापि

भ्रमरकुलेनेत्यन्वयः। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः। चन्द्रापीडस्य अभिसरणवेशाभ्यासं कुर्वतीव, परेषां दर्शनभिया तत्र शीघ्रावगुण्ठनस्यावश्यकत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। चामरशिखां बालव्यजनाग्रदेशं समासज्य अवलम्ब्य। परिजनेन अन्तरितस्तिरोहितः सकलो देहो यस्याः सा तादृशी सती, नेत्रस्य त्रिभागेण एककोणेन, तं विलोकयन्तीति परेणान्वयः। आवलितं परिवर्त्तनवेलायां वसनापसरणेनाविष्कृतं त्रिवलीवलयं उदरोपरिस्थवलित्रयमण्डलं यया सा। वीटिकां ताम्बूलस्येति शेषः। उद्गीर्णं कर्णात् प्रच्यावितं यदुत्पलं तस्य प्रहारेण पलायमानो यः परिजनस्तस्य अनुसरणे दत्तानि कतिपयानि पदानि पदक्षेपा यया सा। तं चन्द्रापीडं। तेन चन्द्रापीडेन।

(ञ) आरुह्येति। आरुह्य तत्प्रासादशिखरमिति शेषः। निवेदितं महाश्वेतायाः प्रत्यागमनं यस्यै सा कादम्बरी। तस्मात् प्रासादशिखरात्।

ভ্রমণ করিতেছিল; তাহাতে তিনি যেন চন্দ্রাপীড়ের প্রতি অভিসারে যাইবার বেশ শিক্ষা করিতেছিলেন—এই অবস্থায় কাদম্বরী বারংবার চামরের অগ্রদেশ ধারণ করিয়া, বারংবার ছত্রদণ্ড গ্রহণ করিয়া, বারংবার তমালিকার স্কন্ধে হস্তযুগল সংস্থাপন করিয়া, বারংবার মদলেখাকে আলিঙ্গন করিয়া, বারংবার কোন পরিচারিকার দেহের অন্তরালে থাকিয়া, নয়নের তৃতীয় ভাগদ্বারা, বারংবার উদরের থর তিনটি বাহির করিয়া ফিরিয়া ফিরিয়া, বারংবার প্রতীহারীর বেত্রযষ্টির উপরে গণ্ডদেশ স্থাপন করিয়া, বারংবার নিশ্চল হস্তে গ্রহণপূর্ব্বক তাম্বূলবীটিকা (পানের বীড়ি) ওষ্ঠপল্লবে বিন্যস্ত করিয়া এবং কর্ণ হইতে একটি উৎপল আনয়নপূর্ব্বক তাহা দ্বারা তাড়ন করায় কোন পরিচারিকা পলায়ন করিতে লাগিলে তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ কতিপয় পদক্ষেপপূর্ব্বক বারংবার হাস্য করিয়া চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন এবং চন্দ্রাপীড়ও তাঁহাকে দেখিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় যে বহুসময় চলিয়া গেল, তাহা কাদম্বরী জানিতে পারিলেন না। (ঞ) তাহার পর প্রতীহারী সেই অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিয়া মহাশ্বেতার প্রত্যাগমনের সংবাদ জানাইলে কাদম্বরী তথা হইতে অবতরণ

---

(१)...सखीं परिष्वज्य। (२)...नेत्रत्रिभागेणावलोक्य। (३) निवेश्य। (४) उद्दत्तकर्णोत्पल...।

महाश्वेतानुरोधेन दिवसव्यापारमकरोत् (ट)। चन्द्रापीडोऽपि तस्मादवतीर्य्य प्रथमविसर्जितेनैव कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्त्तित-(१) स्नानविधिर्निरुपहत-शिला-तलार्च्चिताभिमतदैवतः (२) क्रीड़ापर्वतक एव सर्वमाहारादिकमहःकर्म्म चक्रे। (ठ)

क्रमेण च कृताहारः क्रीड़ापर्वतकप्राग्भागभाजि, मनोहराणि, हारीतहरिते, हरिणी-(३) रोमन्थफेनशीकरासारे, सीरायुध-हल-भय-निश्चलकालिन्दी जल-त्विषि, तरुणी-चरणालक्तक-रस-शोण-शोचिषि, कुसुमरजः-सिकतिल-तले, लता-मण्डपोपगूढ़े, शिखण्डि-ताण्डव-सङ्गीतगृहे, मरकत-शिलातले समुपविष्टः (४)

(ट) स्नानेति। मन्दरापि चन्द्रापीडोत्कण्ठावशादल्पाग्रहापि।

(ठ) चन्द्रेति। तस्मात् क्रीड़ापर्वतशृङ्गात्। प्रथमविसर्जितेनैव पूर्वप्रेरितेनैव। निर्वर्त्तितो निष्पादितः स्नानविधिर्येन सः। निरुपहते छिद्रादिभिरदुष्टे, शिलातले पाषाणोपरि अर्च्चितं पूजितं अभिमत-दैवतं इष्टदेवता येन सः। अहःकर्म्म दिवसकार्य्यम्।

(ड) क्रमेणेति। किञ्च कृताहारश्चन्द्रापीड़ः। क्रीडापर्वतकस्य प्राग्भागं पूर्वांशं भजत इति तस्मिन्। हारीतः पक्षिविशेषस्तद्वत् हरिते हरिद्वर्णे। अत्र लुप्तोपमा। हरिणीनां रोमन्थश्चर्वितचर्वणं तेन ये फेना-स्तेषां शीकरासारो बिन्दुवृष्टिर्यस्मिन् तत्र। सीरायुधस्य बलरामस्य हलभयेन निश्चलं यत् कालिन्दीजलं यमुनातोयं तस्य त्विड़िव त्विट् प्रभा यस्य तस्मिन्। अत्रापि लुप्तोपमा। तरुणीनां चरणयोरलक्तकरसेन शोणं रक्तवर्णं शोचिः कान्तिर्यस्य तस्मिन्। कुसुमानां रजोभिः परागैः सिकतिलं बालुकामयं तलमुपरिभागो यस्य तस्मिन्। लतामण्डपैः उपगूढे संश्लिष्टे परिवेष्टित इत्यर्थः। शिखण्डिनां मयूराणां ताण्डवं नृत्यं यत्र तत्ताहृशं सङ्गीतगृहं यस्मिन् तत्र। एवंविधे मरकतशिलातले समुपविष्टः सन्, वक्ष्यमाणानि दृष्टवान्।

করিলেন। (ট) এবং স্নানপ্রভৃতি কার্য্যে অল্প আগ্রহ থাকিলেও মহাশ্বেতার অনুরোধে সে সমস্তই সম্পাদন করিলেন। (ঠ) এদিকে চন্দ্রাপীড়ও ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে অবতরণ করিয়া, পূর্ব্বপ্রেরিত কাদম্বরীর পরিজনগণের সাহায্যে স্নানকার্য্য সম্পাদন করিয়া, নির্দ্দোষ একখানি প্রস্তরখণ্ডের উপরে ইষ্টদেবতার পূজা করিয়া, সেই ক্রীড়াপর্ব্বতেই আহারাদি দিনের সমস্ত কার্য্য করিলেন।

(ড) সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের পূর্ব্বদিকে হারিল পক্ষীর ন্যায় হরিদ্বর্ণ মনোহর একখানি মরকতমণির প্রস্তর ছিল; চর্ব্বিত চর্ব্বণ করিবার সময়ে হরিণীগণের মুখ হইতে ফেনবিন্দুসমূহ, তাহার উপরে পড়িয়াছিল; বলরামের লাঙ্গলের ভয়ে নিশ্চল যমুনাজলের ন্যায় তাহার প্রভা প্রকাশ পাইতেছিল; যুবতীদিগের পায়ের আল্‌তার রসে তাহার দীপ্তি রক্তবর্ণ হইয়াছিল;

---

(१) निवर्त्तित…। (२)…शिलार्च्चित…। (३) हरिण…। (४) उपविष्टः।

দৃষ্টবান্ (ড) সহসৈবাতিবহলধাম্না ধবলেনালোকেন জলেনেব নির্ব্বাপ্যমাণং দিবসম্, মৃণালবলয়েনেব (১) পীয়মানমাতপম্, ক্ষীরোদেনেব প্লাব্যমানাং মহীম্, চন্দনরসবর্ষেণেব সিচ্যমানান্ দিগন্তান্, সুধয়েব বিলিপ্যমানমম্বরতলম্ (ঢ)। আসীচ্চাস্য মনসি কিন্নু খলু ভগবানোষধিপতিরকাণ্ড এব শীতাংশুরুদিতো ভবেৎ, উত যন্ত্রবিক্ষেপ-বিশীর্য্যমাণ-পাণ্ডুর-জল-ধারা-সহস্রাণি (২) ধারাগৃহাণি মুক্তানি, আহোস্বিদনিল-বিকীর্য্যমাণ-শীকর-ধবলিত-ভুবনাম্বরসিন্ধুর্ধরাতলমবতীর্ণেতি (৩) (ণ)”।

(ঢ) সহসেতি। দিবসং অতিবহলং নিতান্তপ্রচুরং ধাম তেজো যস্য তেন ধবলেনালোকেন জলেনেব স্থিতেন সতা, নির্ব্বাপ্যমাণং বিলুপ্যমানমিব দৃষ্টবান্। অত্র শ্রৌতোপমাপ্রতীয়মানক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। আতপং সূর্য্যালোকং মৃণালবলয়েন পীয়মানমন্তর্গতীক্রিয়মাণমিব দৃষ্টবান্। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। মহীং ভূমিং ক্ষীরোদেন সাগরেণ প্লাব্যমানামিব দৃষ্টবান্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। দিগন্তান্ চন্দনরসবর্ষেণ সিচ্যমানানিব দৃষ্টবান্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। তথা অম্বরতলমাকাশং সুধয়া বিলিপ্যমানমিব দৃষ্টবান্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। সর্ব্বত্র আনীয়মানহারকিরণব্যাপ্তত্বাদিতি ভাবঃ।

(ণ) আসীদিতি। অস্য চন্দ্রাপীড়স্য। অকাণ্ড এব অসময় এব। শীতাংশুশ্চন্দ্রঃ। অত্র ওষধিপতিপদস্য মুখ্যানুপকারিত্বাদপুষ্টার্থত্বদোষঃ, স চ তৎপরিত্যাগেনৈব সমাধেয়ঃ। যন্ত্রাণাং বিক্ষেপেণ বিঘূর্ণনেন বিশীর্য্যমাণানি সমন্তাদ্বিক্ষিপ্যমাণানি পাণ্ডুরাণি শুভ্রাণি জলধারাণাং সহস্রাণি যেষাং তানি ধারাগৃহাণি মুক্তানি উত। আহোস্বিৎ কিংবা, অনিলেন বায়ুনা বিকীর্য্যমাণৈঃ সর্ব্বতো বিক্ষিপ্যমাণৈঃ শীকরৈর্জলবিন্দুভিঃ, ধবলিতং শুভ্রীকৃতং ভুবনং যয়া সা, অমরসিন্ধুর্মন্দাকিনী ধরাতলমবতীর্ণা। কথমন্যথা সর্ব্বত এবৈতাদৃশী শুভ্রতা প্রসরতীতি ভাবঃ। অত্র শুদ্ধসন্দেহোঽলঙ্কারঃ।

পুষ্পের রেণুতে তাহার উপরিভাগ বালুকাময় হইয়াছিল; লতামণ্ডপে তাহার চারিদিক্ বেষ্টিত ছিল এবং তাহার মধ্যে ময়ূরগণের নৃত্য ও সঙ্গীত হইত; চন্দ্রাপীড় আহার করিয়া সেই শিলার উপরে উপবিষ্ট হইয়া ক্রমে দেখিতে পাইলেন যে, (ঢ) সহসাই অত্যন্ত তেজস্বী ও জলের ন্যায় শুভ্রবর্ণ আলোকমালায় সেই দিনটাকে যেন নির্ব্বাণ করিয়া দিতেছে, সূর্য্যমণ্ডল যেন রৌদ্রটাকে পান করিতেছে, ক্ষীরোদসাগর যেন ভূতল প্লাবিত করিতেছে, চন্দনজলের বৃষ্টি যেন দিগ্‌দিগন্ত সিক্ত করিতেছে এবং সুধা যেন আকাশতলকে লিপ্ত করিতেছে। (ণ) তখন চন্দ্রাপীড়ের মনে হইল যে, ‘ওষধিপতি ভগবান্ চন্দ্র, কি অসময়েই উদিত হইলেন? না কেহ ধারাগৃহগুলিকে উন্মুক্ত করিয়া দিয়াছে, তাহাতে যন্ত্রগুলি ঘুরিতে থাকায় তাহা হইতে শুভ্রবর্ণ জলধারাসমূহ সকল দিকে বিক্ষিপ্ত হইতেছে? অথবা মন্দাকিনী ভূতলে অবতরণ করিয়াছেন, তাহার জলবিন্দুসমূহ বায়ুবেগে বিক্ষিপ্ত হইয়া ভুবনমণ্ডল শুভ্রবর্ণ করিয়াছে”?।

---

(১) মৃণালবল্লীনৈব। (২) পাণ্ডুরধারাসহস্রাণি। (৩) শুভ্রশুভ্রাম্বরাতলম্।

कुतूहलाच्च (१) आलोकानुसारप्रहितचक्षुरद्राक्षीत् (त) अनल्पकन्यका-कदम्बपरिवृतां ध्रियमाणधवलातपत्रामुद्धूयमानचामरद्वयां कादम्बरीप्रतीहार्य्या (२) वामपाणिना वेत्रलतागर्भेणार्द्रवस्त्रशकलावच्छन्नमुखं चन्दनानुलेपनसनाथं नारिकेल-(३) समुद्गकमुद्वहन्त्या दक्षिणकरेण दत्तहस्तावलम्बां, केयूरकेण च निश्वासहार्य्ये (४) निर्म्मोकशुचिनी धौते कल्पलतादुकूले दधता निवेद्यमानमार्गां, मालतीकुसुमदामाधिष्ठित-करतलया च तमालिकयानुगम्यमानामागच्छन्तीं मदलेखां तस्याश्च समीपे तरलिकाम्, (थ) तया च सितांशुकोपच्छदे पटलके

(त) कुतूहलादिति। किञ्च, कुतूहलात् आलोकानुसारेण तमालोकं लक्ष्यीकृत्येत्यर्थः प्रहितं प्रेरितं चक्षुर्येन स तादृशश्चन्द्रापीडः, आगच्छन्तीं मदलेखां, तस्याश्च समीपे तरलिकां, तया च गृहीतं हारमद्राक्षीदित्यन्वयः।

(थ) प्रथमं मदलेखां विशेषयन्नाह अनल्पेति। अनल्पैर्बहुभिः कन्यकानां कदम्बैः समूहैः परिवृताम्। ध्रियमाणं धवलातपत्रं छत्रं यस्यास्ताम्। उद्धूयमानं आन्दोल्यमानं चामरद्वयं यस्यास्ताम्। कादम्बर्य्याः प्रतीहार्य्या, वेत्रलतागर्भेण वेत्रयष्टिधारिणा वामपाणिना, आर्द्रवस्त्रशकलेन छिन्नवसनखण्डेन अवच्छन्नमावृतं मुखं यस्य तत्तादृशं, तथा चन्दनानुलेपनेन सनाथं संयुक्तं नारिकेलस्य समुद्गकं सम्पुटकं उद्वहन्त्या, धारयन्त्या सत्या, दक्षिणकरेण दत्तो हस्तावलम्बो यस्यास्ताम्। किञ्च, निश्वासेन हार्य्ये हर्त्तुं शक्ये अतिलघुनी इत्यर्थः, निर्म्मोकवत् सर्पकञ्चुकवत् शुचिनी शुभ्रे, धौते प्रक्षालिते, कल्पलतायाः दुकूले सूक्ष्मवसनयुगलं, दधता धारयता केयूरकेण निवेद्यमानो मार्गः पन्था यस्यास्ताम्। तथा मालतीकुसुमानां दाम्ना मालया अधिष्ठितं आश्रितं करतलं यस्यास्तया तथोक्तया, तमालिकया चानुगम्यमानाम्।

(ত—থ) চন্দ্রাপীড় কৌতুকবশতঃ সেই আলোকের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেন—বহুতর কন্যাগণে পরিবেষ্টিত হইয়া মদলেখা আসিতেছে; কোন পরিচারিকা তাহার মস্তকের উপরে শ্বেতচ্ছত্র ধারণ করিয়াছে; আর দুই জন পরিচারিকা তাহার দুই দিকে দুইটি চামর আন্দোলন করিতেছে; কাদম্বরীর প্রতীহারী, বেত্রযষ্টিযুক্ত বামহস্তে, আর্দ্রবসনে আবৃতমুখ ও চন্দনানুলেপন-সংযুক্ত একটি নারিকেলপুটক ধারণ করিয়া, দক্ষিণ হস্তে মদলেখার হস্তধারণপূর্ব্বক আসিতেছে; আর নিশ্বাসবায়ুতেও উড়াইয়া নিতে পারে এবং সাপের খোলসের ন্যায় সাদা—এইরূপ দুইখানি কল্পলতার কাপড় লইয়া কেয়ূরক মদলেখার পথ বলিয়া দিতে দিতে আসিতেছে; তমালিকাও এক ছড়া মালতীফুলের মালা লইয়া মদলেখার পিছনে পিছনে আসিতেছে এবং তরলিকাও মদলেখার সঙ্গে সঙ্গে আসিতেছে। (দ) সেই তরলিকা, শুভ্রবর্ণ

(१) क्वचित् कुतूहलादिति नास्ति। (२) कादम्बरीं प्रतीहार्य्या। (३) नारिकेर...।
(४) निःश्वासहार्य्ये।

गृहीतं धवलताकारणमिव क्षीरोदस्य, सहभुवमिव चन्द्रमसः, मृणालदण्डमिव नारायणनाभिपुण्डरीकस्य, मन्दरक्षोभविक्षिप्तमिवामृतफेन-पिण्डनिकरम्, वासुकि-निर्मोकमिव मन्थनश्रमोज्झितम्, हासमिव श्रियः (१) कुलगृहवियोगगलितम्, मन्दर-मथन-विखण्डिताशेष-शशि-कला-खण्ड-सञ्चयमिव संहृतम्, प्रतिमागत-तारागणमिव (२) जलधि-(३) जलादुद्धृतम्, दिग्गज-कर-शीकरासारमिव पुञ्जी-भूतम्, नक्षत्रमालाभरणमिव मदनद्विपस्य, शरन्मेघशकलैरिव कल्पितम्,

(८) हारं वर्णयितुमाह तथेति। किञ्च, तया तरलिकया, सितांशुकं शुभ्रवसनं उपच्छदं आवरणं यस्य तस्मिन्, पटलकमञ्जूषायां, गृहीतं धृतं। क्षीरोदस्य सागरस्य धवलतायाः कारणमिव, तत्र स्थितत्वादिति भावः। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः। चन्द्रमसः सहभुवं सहोदरमिव। उत्प्रेक्षा। नारायणनाभिपुण्डरीकस्य मृणालदण्डमिव। उत्प्रेक्षा। मन्दरस्य पर्वतस्य क्षोभेण समुद्रमथनवेलायां देवदानवैराकर्षणात् सञ्चलनेन विक्षिप्तं अमृतफेनपिण्डस्य निकरं समूहमिव। उत्प्रेक्षा। मन्थनश्रमेण समुद्रमथनायासेन उज्झितं त्यक्तं, वासुकी रज्जुरूपस्य अनन्तनागस्य निर्मोकं कञ्चुकमिव। उत्प्रेक्षा। कुलगृहस्य पितृ-भवनस्य सागरालयस्य वियोगेन विरहकष्टेन गलितं मुखाद्विच्युतं श्रियो लक्ष्म्याः हासं हास्यमिव। क्रियोत्प्रेक्षा। संहृतं एकत्र समवर्तीकृतं मन्दरस्याचलस्य मथनेन विखण्डिताश्चूर्णीकृताः अशेषाः समग्रा याः शशिकलास्तासां खण्डसञ्चयं अंशसमूहमिव। उत्प्रेक्षा। जलधिजलादुद्धृतं प्रतिमागततारागणमिव तत्रैव प्रतिबिम्बितनक्षत्रसमूहमिव। उत्प्रेक्षा। पुञ्जीभूतं दिग्गजानां ये कराः शुण्डास्तेषां शीकरासारं जलबिन्दुधारासम्पातमिव। क्रियोत्प्रेक्षा। मदनस्य यो द्विपो हस्ती तस्य नक्षत्रमालाभरणमिव सप्तविंशति-संख्यकमुक्तामालालङ्कारमिव। उत्प्रेक्षा। शरन्मेघानां शकलैः खण्डैः कल्पितं रचितमिव। क्रियोत्प्रेक्षा। कादम्बर्याः रूपेण सौन्दर्येण वशीकृतानि यानि मुनिजनानां हृदयानि तैर्निर्मितमिव, तेषामपि

বসনে আবৃত একটি পেটিরার ভিতরে একছড়া হার লইয়া আসিতেছিল, সেই হারছড়াই যেন ক্ষীরোদসাগরের ধবলতার কারণ বলিয়া বোধ হইতেছিল, চন্দ্রের যেন সহোদর ছিল, নারায়ণের নাভিপদ্মের মৃণালের ন্যায় দীপ্তি পাইতেছিল, মন্দরপর্ব্বতের ঘূর্ণনে বিক্ষিপ্ত অমৃত-ফেন-পিণ্ড-সমূহের ন্যায় শোভা পাইতেছিল, সমুদ্র-মন্থনের পরিশ্রমে গাত্র হইতে পরিত্যক্ত অনন্তনাগের কঞ্চুকের (খোলসের) ন্যায়, এবং পিতৃগৃহের সহিত বিচ্ছেদানবন্ধন মুখমণ্ডল হইতে নিপতিত লক্ষ্মীদেবীর হাস্যের ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; আর সেই হার ছড়া দেখিয়া বোধ হইতেছিল যে,—সমুদ্র-মন্থনের সময় চন্দ্রের সমস্ত কলাগুলিই চূর্ণ-বিচূর্ণ হইয়া গিয়াছিল, সেই খণ্ডগুলিকে যেন একত্র সংগ্রহ করা হইয়াছিল, আকাশ হইতে প্রতিবিম্বিত নক্ষত্রসমূহকেই যেন সমুদ্রের জল হইতে তোলা হইয়াছিল; দিগ্হস্তীর শুণ্ড হইতে নিঃসৃত জলবিন্দুসমূহকেই যেন রাশীকৃত করা হইয়াছিল; আর সেই হার ছড়াকে কামদেবের হস্তীর মুক্তামালার ন্যায় দেখা যাইতেছিল,

(१) श्रियः स्मित इति पाठः। (२) प्रतिमागततारागणमिव, तारागणमिव। (३) जलनिधि...।

कादम्बरी-रूप-वशीकृत-मुनिजन-हृदयैरिव निर्म्मितम्, गुरुमिव सर्व्वरत्नानाम्, यशोराशिमिवैकत्र घटितं सर्व्वसागराणाम्, (१) प्रतिपक्षमिव चन्द्रमसः जीवित-मिव ज्योत्स्नायाः, (२) (द) लक्ष्मीहृदयमिव नलिनी दल-गलज्जलविन्दु-विलास-तरलम्, (ध) उत्कण्ठितमिव मृणालवलयधवलकरम्, (न) शरच्छशिनमिव घनमुक्तांशु-निवह-धवलित-दिङ्मुखं, (प) मन्दाकिनीप्रवाहमिव (३) सुर-युवतिकुचपरिमलवाहिनं, प्रभावर्षिणमतितारं हारम्। (फ)

तपसा परमपवित्रत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा। सर्व्वरत्नानां गुरुं श्रेष्ठमिव। गुणोत्प्रेक्षा। एकत्र घटितं समवेतीकृतं सर्व्वसागराणां यशोराशिमिव। गुणोत्प्रेक्षा। अस्य हारस्य सागरोत्पन्नत्वात् सर्व्वसागराणामित्युक्तम्। चन्द्रमसः प्रतिपक्षं प्रतिस्पर्द्धिनमिव। जात्युत्प्रेक्षा। ज्योत्स्नाया जीवितं जीवनमिव। जात्युत्प्रेक्षा। परम-निर्म्मलशुभ्रत्वादिति सर्व्वत्र भावः।

(ध) लक्ष्मीति। लक्ष्म्या हृदयमिव, नलिनीदलाद्‌गलतो जलविन्दोर्व्विलास इव विलासो दीप्तिर्यस्य स तादृशस्तरलो मध्यमणिर्यस्य तम्, अन्यत्र तु नलिनीदलाद्‌गलन् जलविन्दुरिव विलासेन स्वभावस्थाननत्यागरूपेण तरलं चञ्चलम्। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णापूर्णोपमालङ्कारः। "तरलस्त्रि चले पिङ्गे हारमध्यमणावपि।" इति विश्वः।

(न) उत्कण्ठितमिति। उत्कण्ठितं कामोत्तेजनया प्रियजनाय उत्सुकं जनमिव, मृणालवलयस्येव धवलाः कराः किरणा यस्य तम्, अन्यत्र तु मृणालवलयेन सन्तापशान्तये तद्धारणेनेत्यर्थः धवलौ करौ हस्तौ यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(प) शरदिति। शरच्छशिनं शरदश्चन्द्रमिव, घनो निविड़ो यो मुक्तानां मौक्तिकानां अंशुनिवहः, घनैर्म्मेघैर्मुक्तः परित्यक्तो यः अंशुनिवहस्तेन धवलितानि दिङ्मुखानि येन तम्। पूर्णोपमा।

(फ) मन्देति। मन्दाकिन्याः स्वर्गगङ्गायाः प्रवाहमिव, सुरयुवतीनां कुचयोः परिमलं सौरभं वहतीति तम्, एकत्र तत्र धारणादन्यत्र तत्रावगाहनादिति भावः। अतितारं अतीवविशुद्धम्।

শরৎকালের মেঘখণ্ডদ্বারাই যেন তাহা প্রস্তুত করা হইয়াছিল এবং কাদম্বরীর রূপে বশীকৃত মুনিগণের হৃদয়দ্বারাই যেন নির্ম্মাণ করা হইয়াছিল, সমস্ত রত্নের মধ্যে যেন শ্রেষ্ঠ ছিল, সকল সমুদ্রের যশোরাশিকে যেন একত্র করা হইয়াছিল, আর চন্দ্রের যেন প্রতিদ্বন্দ্বী এবং জ্যোৎস্নার যেন জীবন বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ধ) লক্ষ্মীর চিত্ত যেমন পদ্মপত্র হইতে নিপতিত জলবিন্দুর ন্যায় চঞ্চল; সেই হার ছড়ার মধ্যের মণিটিও তেমন পদ্মপত্র হইতে নিপতিত জলবিন্দুর ন্যায় দীপ্তিমান্ ছিল। (ন) উৎকণ্ঠিত ব্যক্তির হস্তদ্বয় যেমন মৃণালবলয়দ্বারা ধবলবর্ণ হয়, সেই হারছড়ার কিরণগুলিও তেমন মৃণালের ন্যায় ধবলবর্ণ ছিল। (প) শরৎকালের চন্দ্র যেমন মেঘযুক্ত কিরণসমূহদ্বারা দিঙ্মণ্ডল শুভ্রবর্ণ করে, সেই হারছড়াও তেমন মুক্তাসমূহের নিবিড় কিরণজালে দিঙ্মণ্ডল শুভ্রবর্ণ করিয়াছিল। (ফ) মন্দাকিনীর প্রবাহের ন্যায় সেই

---

(१) क्वचित् सर्व्वसागराणामिति न दृश्यते। (२) ज्योत्स्निकायाः। (३) मन्दाकिनीमिव।

दृष्ट्वा चायमस्य चन्द्रापीड़श्चन्द्रातपद्युतिमुषः (१) धवलिम्नः कारणमिति मनसा निश्चित्य दूरादेव प्रत्युत्थानादिना समुचितोपचारक्रमेण (२) मदलेखामापतन्तीं प्रतिजग्राह (३) (ब)। सा तु तस्मिन्नेव मरकतशिलातले मुहूर्त्तमुपविश्य स्वयमुत्थाय तेन चन्दनाङ्गरागेणानुलिप्य ते च द्वे दुकूले परिधाप्य तैश्च मालतीकुसुमदामभिरारचितशेखरं कृत्वा तं हारमादाय चन्द्रापीड़मुवाच—(भ) "कुमार! तवेयमपहस्तिताहङ्कारकान्ता (४) पेशलता प्रीतिपरवशं जनं कमिव न कारयति? प्रश्रय एव ते ददात्यवकाशमेवंविधानाम्। अनया चाकृत्या कस्यासि न जीवित-

(ब) दृष्ट्वेति। किञ्च, तं हारं दृष्ट्वा चन्द्रापीडं, अयं हार एव, चन्द्रातपस्य चन्द्रालोकस्य द्युतिं कान्तिं मुष्णाति अपहरतीति तस्य, अस्य वितर्कितपूर्वस्य धवलिम्नः शुभ्रतायाः कारणमिति मनसा निश्चित्येत्यन्वयः। समुचितोपचारक्रमेण उपयुक्तव्यवहारपरिपाट्या। आपतन्तीमागच्छन्ती। प्रतिजग्राह अभ्यर्थितवान्।

(भ) सेति। सा मदलेखा। मरकतशिलातले मरकतात्मकपाषाणे। तेन नारिकेलसमुद्गकसमानीतेन। अनुलिप्य परिधाप्य चन्द्रापीड़मिति सम्बन्धः। आरचितो विहितः शेखरः शिरोभूषणं यस्य तम्।

(म) कुमारेति। अपहस्तितो दूरीकृतः अहङ्कारः सर्वेषामेव सौन्दर्यगर्वो यया सा चासौ कान्ता सर्वेषामेव वाञ्छनीया चेति सा तथोक्ता। पेशलता सौन्दर्यं, कमिव जनं न प्रीतिपरवशं कारयति? अपि तु सर्वमेव जनं प्रीतिपरवशं कारयतीत्यर्थः। सुतरामस्मानपि प्रीतिपरवशाः कारित इति भावः। अतएवात्र सामान्यादप्रस्तुतात् प्रस्तुतस्य विशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः अर्थापत्त्या सङ्कीर्यते। भवद्गुणा ह्यत्यन्त

হারছড়াও, দেবযুবতিগণের স্তনমণ্ডলের সৌরভ বহন করিতেছিল, প্রভা বর্ষণ করিতেছিল ও অত্যন্ত নির্ম্মল ছিল

(ব) চন্দ্রাপীড় সেই হারছড়া দেখিয়া মনে মনে স্থির করিলেন যে—'এই হারছড়াই, এই চন্দ্রকিরণের সৌন্দর্য্যাপহারী ধবলতার কারণ'। তাহার পর গাত্রোত্থানপ্রভৃতি উপযুক্ত আচরণদ্বারা আগত মদলেখার অভ্যর্থনা করিলেন। (ভ) তখন মদলেখা সেই মরকতমণির প্রস্তরের উপরেই কিছুকাল উপবেশন করিয়া, নিজেই উঠিয়া, সেই চন্দনাঙ্গরাগে চন্দ্রাপীড়কে লিপ্ত করিয়া, সেই সূক্ষ্ম বস্ত্র দুইখানি তাঁহাকে পরিধান করাইয়া এবং সেই মালতীফুলের মালাগুলিদ্বারা তাঁহার মস্তক অলঙ্কৃত করিয়া, সেই হারছড়া হাতে লইয়া চন্দ্রাপীড়কে বলিল—(ম) "রাজকুমার! আপনার এই সৌন্দর্য্য, সকলেরই সৌন্দর্য্যের অহঙ্কার দূর করিয়াছে এবং সকলেরই বাঞ্ছনীয়, তাই কোন্ ব্যক্তিকে আনন্দিত না করায়? আপনার বিনয়ই, এই জাতীয় লোকদিগের উপস্থিত হইবার অবসর দিয়া থাকে। এই আকৃতিদ্বারা আপনি কাহার জীবনের অধীশ্বর হ'ন নাই? বিনা কারণে বাৎসল্যপ্রকাশকারী এই চরিত্রদ্বারা আপনি

(१)...मुषः। (२) समुचितेन...। (३) जग्राह। (४) अपहस्तिताहङ्कारकान्ता।

स्वामी? अनेन चाकारणाविष्कृतवात्सल्येन चरितेन कस्य न बन्धुत्वमध्यारोपयसि? एषा च ते प्रकृतिमधुरा व्यवहृतिः कस्य न वयस्यतामुत्पादयति? कं वा न समाश्वासयन्त्यमी (१) स्वभावसुकुमारवृत्तयो भवद्गुणाः? (म)। त्वन्मूर्त्तिरेवात्रोपालम्भमर्हति, या प्रथमदर्शन एव विस्रम्भमुपजनयति (य)। इतरथा हि त्वद्विधे सकलभुवनप्रथितमहिम्नि प्रयुज्यमानं सर्वमेवानुचितमिवाभाति (र)। तथाहि, सम्भाषणमप्यधःकरणमिवापतति, आदरोऽपि प्रभुताभिमानमिवानुमापयति, स्तुतिरप्यात्मोत्सेकमिव सूचयति, उपचारोऽपि चपलता-

प्रत्येकवाक्य एवायमलङ्कार इत्थं भावयोन्नेयः। ते तव प्रश्रयो विनय एव, एवंविधानां प्रीतिपरवशानां जनानां, अवकाशमुपसर्पणावसरं ददाति। जीवितस्वामी जीवनाधीश्वरः। अकारणं आविष्कृतं वात्सल्यं स्नेहो येन तेन। प्रकृतिमधुरा स्वभावमनोहरा, व्यवहृतिर्व्यवहारः। वयस्यतां सख्यत्वम्। स्वभावेन सुकुमाराः कोमला वृत्तयो व्यवहारा येभ्यस्ते, अमी भवद्गुणाः।

(य) ननु मत्प्रार्थनाभावेऽपि कथमेवं जनाः प्रीतिपरवशतादिकमङ्गीकुर्वन्तीत्याह त्वदिति। अत्र प्रीतिपरवशतादौ। उपालम्भं तिरस्कारम्। विस्रम्भं सर्वविषयेषु विश्वासमुपजनयति, परमशान्तसुन्दरत्वादिति भावः। अत्र निन्दया स्तुतेर्गम्यतया व्याजस्तुतिरलङ्कारः।

(र) इतरथेति। इतरथा विस्रम्भजननाभावे हि, सकलेषु भुवनेषु प्रथितो महिमा यस्य तस्मिन् त्वद्विधे जने प्रयुज्यमानमनुष्ठीयमानं सर्वमेव सम्भाषणादिकं अनुचितमिव आभाति प्रकाशते सर्वैः प्रतीयत इत्यर्थः। विस्रम्भजननाभावेऽपि अतुलनीयमहिम्नो भवादृशस्य सम्भाषणादिकरणे धृष्टतोदयादिति भावः। एतेनात्मनान्तु विस्रम्भजननेन सम्भाषणादौ नास्त्यनौचित्यमिति ध्वनितम्।

(ल) सर्वेषामेवानौचित्यं प्रदर्शयितुमाह तथाहीति। सम्भाषणं मधुरालापोऽपि अधःकरणं तिरस्कार इव आपतति उपस्थितो भवति, सम्भाषणस्य यथायथं कर्त्तुमशक्यत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आदरोऽपीति, समानेनैव समानस्यादरणीयत्वेन प्रभोस्तवादरणे आदर्त्तुरपि प्रभुताभिमानः परैरनुमातव्य एवेत्याशयः। क्रियोत्प्रेक्षा। स्तुतिः प्रशंसावादोऽपि आत्मनः स्तोतुः उत्सेकं प्रशंसाकरणे सामर्थ्यगर्वं-

কাহারই বা বন্ধুতা জন্মান না? আপনার এই স্বভাবসুন্দর ব্যবহার, কাহার সহিত সখিত্ব উৎপাদন করে না? এবং স্বভাবতই কোমল আপনার এই গুণগুলি, কাহাকেই বা আশ্বস্ত করে না? (য) এ বিষয়ে আপনার এই আকৃতিই তিরস্কারের যোগ্য; যে আকৃতি প্রথম দর্শনেই বিশ্বাস জন্মাইয়া থাকে। (র) না হইলে, সমস্ত জগতে যাহার মহিমা বিখ্যাত হইয়াছে, এইরূপ আপনার ন্যায় লোকের প্রতি যাহা কিছু করা যায়, সে সমস্তই যেন অনুচিত বলিয়া বোধ হয়। (ল) দেখুন—সম্ভাষণ করাও যেন তিরস্কারের ন্যায় প্রতীতি হয়; আদর করাও যেন আধিপত্যের অহঙ্কার অনুমান করায়, প্রশংসা করাও যেন নিজের গর্ব্ব সূচনা করে;

(१) समाश्वासयन्त्यमी।

মিব প্রকাশয়তি, প্রীতিরপ্যনাত্মজ্ঞতামিব জ্ঞাপয়তি, বিজ্ঞাপনাপি প্রাগল্‌ভ্যমিব জায়তে, সেবাপি চাপলমিব দৃশ্যতে, দানমপি পরিভব ইতি ভবতি (ল)। অপি চ স্বয়ংগৃহীতহৃদয়ায় কিং দীয়তে, জীবিতেশ্বরায় (১) কিং প্রতিপাদ্যতে, প্রথমকৃতাগমনমহোপকারস্য কা তে প্রত্যুপক্রিয়া, দর্শনদত্তজীবিতফলস্য সফলমাগমনং কেন তে ক্রিয়তে (ব)। প্রণয়িতাস্যানেন ব্যপদেশেন দর্শয়তি কাদম্বরী,

---

সূচয়তীব, মহামহতঃ স্তবে অযজ্ঞস্য প্রবৃত্ত্যসম্ভবাদিত্যভিপ্রায়ঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। উপচারোঽপি অভ্যুত্থানাদ্যাচারোঽপি চপলতাং প্রকাশয়তীব, তাদৃশোপচারেঽপ্যাত্মনো যোগ্যত্বাভাবাদিতি ভাবঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। প্রীতিঃ সৌহার্দ্দমপি অনাত্মজ্ঞতাং আত্মনঃ পরিমাণানভিজ্ঞতাং জ্ঞাপয়তীব, সমানেষ্বেব সৌহার্দ্দৌচিত্যাদিত্যাশয়ঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা। বিজ্ঞাপনাপি বিষয়বিশেষনিবেদনমপি প্রাগল্‌ভ্যং বাচালতেব জায়তে, তত্রাপি সাহসাদিত্যভিপ্রায়ঃ গুণোৎপ্রেক্ষা। সেবাপীতি, তত্রাপ্যনধিকারাদিতি ভাবঃ। গুণোৎপ্রেক্ষা। দানমপি পরিভব ইব ভবাদৃশপাত্রস্য সম্পত্তেরবমাননেব ভবতি, প্রায়শ এব দানেন পাত্রস্য দরিদ্রতাসূচনাদিত্যাশয়ঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ব) প্রিয়বচনান্তরমবতারয়িতুমাহ অপি চেতি। স্বয়মাত্মনৈব গৃহীতং হৃদয়ং যেন তস্মৈ ভবতে, কিং দীয়তে দাতুং শক্যতে, অপি তু কিমপি নেত্যর্থঃ, দেয়স্য হৃদয়াবধিত্বাত্তস্যাপ্যাত্মনৈব গ্রহণেন দেয়ান্তরাভাবাদিতি ভাবঃ। জীবিতেশ্বরায় সদ্ব্যবহারাদিনা জীবনস্বামিনে ভবতে, কিং প্রতিপাদ্যতে প্রতিপাদ্য স্বামীকর্ত্তুং শক্যতে, অপি তু কিমপি নেত্যর্থঃ। প্রতিপাদ্যবস্তূনামপি জীবনান্তর্গতত্বাদিতি পূর্ব্ববদ্ভাবঃ। প্রথমং কৃত আগমনমেব মহোপকারো যেন তস্য তে তব আগমনং কেন করণেন সফলং ক্রিয়তে কর্ত্তুং শক্যতে অপি তু কেনাপি নেত্যর্থঃ, সর্ব্বফলাপেক্ষয়ৈব জীবনফলমুত্তমং তত্তু ত্বয়া দর্শনেনৈব দত্তং সুতরাং তদুৎকৃষ্টমস্মাভিঃ কিং ফলং দাতব্যমস্তি যেন তবাগমনং তত্তুল্যফলবৎ স্যাদিতি ভাবঃ। অত্র প্রত্যেকবাক্যে অর্থাপত্তিরলঙ্কারঃ।

(শ) তর্হি কিমর্থমিদং তবোপহারানয়নমিত্যাহ প্রণয়িতামিতি। কাদম্বরী অনেন ব্যপদেশেন উপহারপ্রদানচ্ছলেন প্রণয়িতাং ত্বাং প্রতি সৌহার্দ্দং দর্শয়তি, ন বিভবং ন তু ধনসম্পদম্। হি যস্মাৎ, সজ্জন-

---

গাত্রোত্থান প্রভৃতি আচরণও যেন চঞ্চলতা প্রকাশ করে ; সৌহার্দ্দও যেন নিজের যোগ্যতার অনভিজ্ঞতা জ্ঞাপন করে ; কোন বিষয় নিবেদন করাও যেন প্রগল্‌ভতা হইয়া পড়ে ; পরিচর্য্যা করাও যেন চপলতার ন্যায় দেখা যায় এবং দান করাটাও যেন তিরস্কার করার ন্যায় হয়। (ব) আরও দেখুন—আপনি নিজেই আমাদের হৃদয় গ্রহণ করিয়াছেন, সুতরাং আপনাকে কি দিতে পারি ? আপনি জীবনেরই অধীশ্বর হইয়াছেন; অতএব আপনাকে কি দিয়া তাহার অধীশ্বর করিব ? আপনি প্রথম আগমন করিয়া যে গুরুতর উপকার করিয়াছেন ; তাহার উপযুক্ত প্রত্যুপকার কি আছে ? এবং আপনি দর্শনদ্বারা আমাদের জীবনের ফলদান করিয়াছেন, সুতরাং আপনার আগমনকে আমরা কি দিয়া সফল করিব ? (শ) তবে কাদম্বরী, এই উপহারপ্রদানচ্ছলে আপনার সহিত সৌহার্দ্দ দেখাইতেছেন, কিন্তু ঐশ্বর্য্য নহে ; কারণ—

---

(১) আয়ত্তজীবিতায়।

न विभवम्। अप्रतिपाद्या हि परस्वता सज्जनविभवानाम् (श)। आस्तां तावद्विभवः, भवादृशस्य दास्यमप्यङ्गीकुर्वाणा नाकार्य्यकारिणीति नियुज्यते, (१) दत्त्वात्मानमपि वञ्चिता न भवति, जीवनमप्यर्पयित्वा न पश्चात्तप्यते (ष)। प्रणयिजनप्रत्याख्यानपराङ्मुखी च दाक्षिण्यपरवती महत्ता सताम् (२) (स)। न च तादृशी भवति याचमानानां, यादृशी ददतां लज्जा, यत् सत्यं (३) अमुना व्यतिकरेण कृतापराधमिव त्वय्यात्मानमवगच्छति कादम्बरी (ह)। तदयम-

विभवानां साधुलोकधनसम्पदां परस्वता परकीयता अप्रतिपाद्या दानादिना न सम्पादनीया, अपि तु परोपकारफलकत्वेन स्वतःसिद्धैवेति भावः। एतेन कादम्बर्य्या विभवे तवापि स्वत्वमस्तीति प्रणयितामात्रप्रदर्शनमेव प्रयोजनं दानस्येति द्योतितम्। अत्र शाब्दी परिसंख्या सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, तथा अप्रतिपाद्येति प्रधानस्य नञर्थस्य समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स च न प्रतिपाद्येति पाठेनैव समाधेयः।

(ष) आस्तामिति। आस्तां दूरे इति शेषः। नियुज्यते व्यपदिश्यते कादम्बरीति शेषः। न पश्चात्तप्यते नानुतप्यते। अत्र चन्द्रापीडस्य प्राधान्यप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बहुकारणोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः।

(स) अथ कादम्बर्य्या दत्तोऽप्युपहारः कथं मया ग्रहीतव्य इत्याह प्रणयीति। सतां महत्ता महिमा चित्तस्य वृत्तिप्रसार इत्यर्थः, प्रणयिजनस्य तद्दत्तद्रव्यस्येति तात्पर्य्यं प्रत्याख्याने पराङ्मुखी, विशेषतश्च दाक्षिण्यपरवती औदार्य्याधीना। सुतरामवश्यमेवायमुपहारो भवता ग्रहीतव्य इति भावः।

(ह) नन्विममुपहारं ग्रहीतुं मे उदासीनत्वाल्लज्जा जायत इत्याह न चेति। याचमानानां पात्राणामित्यर्थः। तादृशी लज्जेति शेषः। यत्सत्यमित्यव्ययमेतन्निश्चयार्थं। अतएव कादम्बरी, अमुना व्यतिकरेण दानसम्बन्धेन आत्मानं त्वयि कृतापराधमिवावगच्छति, दातृत्वादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः, तथा यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठाद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स चास्य पूर्वपाठात् परिहरणीयः।

সজ্জনের ধনসম্পত্তিতে স্বভাবতই পরের স্বত্ব আছে, সুতরাং তাহাতে আর স্বত্ব জন্মাইতে হয় না। (ষ) ধনসম্পত্তি দূরে থা'ক; কাদম্বরী ভবাদৃশ ব্যক্তির দাসত্ব স্বীকার করিলেও, কেহ তাহাকে অকার্য্যকারিণী বলিবে না, কিংবা আত্মসমর্পণ করিলেও বঞ্চিত হইবে না, অথবা জীবন সমর্পণ করিলেও অনুতাপ করিবে না। (স) সৎলোকের চিত্তবৃত্তি, প্রণয়ীজনকে প্রত্যাখ্যান করিতে অনিচ্ছুক, বিশেষতঃ উদারতার অধীন। (হ) দাতাদিগের যেরূপ লজ্জা হয়, যাচকদিগের সেরূপ লজ্জা হয় না; অতএব কাদম্বরী এই উপহারদান সম্পর্কে নিশ্চয়ই আপনার নিকট আত্মাকে অপরাধী বলিয়া মনে করিতেছেন। (হ) সমুদ্রমন্থনে সকল রত্নই উঠিয়াছিল, কেবল এই হারছড়াই অবশিষ্ট ছিল, তাই ইহার নাম 'শেষ'

(१) युज्यते। (२) महताम्। (३) यत्तु सत्यं।

मृतमथनसमुद्भूतानां सर्वरत्नानामेकः शेष इति (१) शेषनामा हारोऽमुनैव हेतुना बहुमतो भगवता अम्भसाम्पत्या गृहमुपगताय प्रचेतसे दत्तः, पाशभृतापि गन्धर्वराजाय, गन्धर्वराजेनापि कादम्बर्य्यै, तयापि त्वद्वपुरस्यानुरूपमाभरणस्येति विभावयन्त्या नभस्तलमेवोचितं सुधासूतेर्धाम (२) न धरेत्यवधार्य्यानुप्रेषितः (ख)। यद्यपि निजगुण-(३) गणाभरणभूषिताङ्गयष्टयो भवादृशाः क्लेशहेतुमितरजनबहुमतमाभरणभारमङ्गेषु नारोपयन्ति, तथापि कादम्बरी-प्रीतिरत्र कारणम्। किं न कृतमुरसि शिलाशकलं कौस्तुभाभिधानं लक्ष्म्याः सहजमिति बहुमानमाविष्कुर्वता भगवता शार्ङ्गपाणिना? (क)। न च नारायणोऽत्रभवन्तमति-

---

(ख) तदिति। शेषोऽवशिष्ट इति हेतोरेव शेषनामा। अमुनैव हेतुना शेषत्वेन, भगवता अम्भसाम्पत्या समुद्रेण बहुमतस्तदन्याभावादुत्कर्षाश्चाहृतः। प्रचेतसे वरुणाय। पाशभृतापि वरुणेनापि। अत्र प्रचेतस इत्यभिधाय पाशभृतेत्यभिधानाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च प्रचेतसेति पाठेनैव समाधेयः। तयापि कादम्बर्य्या। विभावयन्त्या चिन्तयन्त्या। तथा सुधासूतेश्चन्द्रस्य नभस्तलमाकाशमेव उचितं स्वच्छत्वादुज्ज्वलत्वाच्च स्वयोग्यं धाम आश्रयः, न धरा भूतलमित्यवधार्य्य मनसा निश्चित्य, चन्द्रापीड़ एवास्य हारस्य योग्य आश्रयो न तु कादम्बरीति भावः। अनुप्रेषितस्त्वत्सकाशं प्रेरितः। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः।

(क) यद्यपीति। निजा गुणगणा विद्याविनयादय एवाभरणानि तैर्भूषिता अङ्गयष्टयो येषां ते। क्लेशहेतुं भारवशात् दुःखकारणं, इतरैर्निर्गुणैर्जनैर्बहुमतमादृतं। अत्र हारधारणे। कुं पृथिवीं स्तुभ्नाति व्याप्नोतीति कुस्तुभः समुद्रः तत्र भव इति कौस्तुभः स एव अभिधानं नाम यस्य तत्तादृशं शिलाशकलं प्रस्तरखण्डं लक्ष्म्या निजप्रियतमाया इति भावः, सहजं एकसमुद्रजातत्वात् सहोदरमिति हेतोर्बहुमानमत्यादरं आविष्कुर्वता भगवता शार्ङ्गपाणिना नारायणेन, किं उरसि वक्षसि न कृतं नार्पितं, अपि तु कृतमेवेत्यर्थः। अतएव कादम्बर्य्याः प्रीतिवशात्त्वयाप्ययं हारो वक्षसि धारणीय एवेति भावः। अत्रापि दृष्टान्तोऽलङ्कारः, तेन च तवापि प्रियतमा कादम्बरीति वस्तु व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

এবং এই কারণেই সমুদ্র ইহাকে অত্যন্ত আদর করিতেন এবং গৃহস্থিত বরুণকে দান করিয়াছিলেন; বরুণও গন্ধর্ব্বরাজকে দিয়াছিলেন, গন্ধর্ব্বরাজও কাদম্বরীকে দিয়াছেন, কাদম্বরীও 'আপনার শরীরই এই অলঙ্কারের উপযুক্ত' ইহা ভাবিয়া এবং 'চন্দ্রের পক্ষে আকাশই উপযুক্ত স্থান, কিন্তু ভূতল নহে' ইহা স্থির করিয়া এই হার আপনার নিকট পাঠাইয়া দিয়াছেন। (ক) নিজের গুণগ্রামস্বরূপ অলঙ্কারেই সমস্ত অঙ্গ অলঙ্কৃত থাকে বলিয়া আপনার ন্যায় লোকেরা, ক্লেশের কারণ ও নির্গুণ লোকেরই আদৃত অলঙ্কারের ভার যদিও অঙ্গে ধারণ করেন না; তথাপি আপনার এই হার ধারণ করার বিষয়ে কাদম্বরীর সন্তোষই কারণ। কৌস্তুভনামক প্রস্তরখণ্ড, লক্ষ্মীর সহোদর বলিয়া বিশেষ আদর করিয়া ভগবান্ নারায়ণ

---

(१) एकशेष इति। (२) सुधासूतो धाम। (३) गुण...।

रिच्यते, नापि कौस्तुभमणिरणुनापि गुणलवेन शेषमतिशेते, न चापि कादम्बरी-माकारानुकृतिकलयाप्यल्पीयस्या लक्ष्मीरनुगन्तुमलम् (ख)। अतोऽर्हतीयमिमं बहुमानं त्वत्तः। न चाभूमिरेषा प्रीतिप्रसरस्य। नियतञ्च भवता भग्नप्रणया (१) महाश्वेतामुपालम्भसहस्रैः खेदयित्वात्मानमुत्स्रक्ष्यति (ग)। अतएव महाश्वेता तरलिकामपीमं हारमादाय त्वत्सकाशं प्रेषितवती। तयापि कुमारस्य सन्दिष्ट-मेव "न खलु महाभागेन मनसापि कार्य्यः कादम्बर्य्याः प्रथमप्रणयप्रसरभङ्गः" इत्युक्त्वा च ताराचक्रमिव चामीकराचलस्य तटे तं तस्य वक्षःस्थले बबन्ध। (घ)

(ख) अथ ते सर्व्वं एवास्मदादिभ्यः प्रधानाः सुतरां तेषां चरितमप्यलौकिकमिति चेत्तत्राह न चेति। अतभवन्तं माननीयं त्वां, अतिरिच्यते गुणैरतिशयितो भवति। अणुना अल्पेनापि गुणलवेन उत्कर्षलेशेन शेषं तदाख्यमिमं हारं न अतिशेते न अतिक्रामति। अल्पीयस्यापि आकारानुकृतिकलया आकृत्यनुकरण-लेशेन, कादम्बरीमनुगन्तुमनुसर्त्तुं नालं न समर्था, लक्ष्मीतः कादम्बरी सौन्दर्य्येण गरीयसीति तात्पर्य्यम्। सुतरां तत्प्रीत्या हारोऽयं भवता धारणीय एवेति भावः। अत्र लक्ष्मीतः कादम्बर्य्याः प्राधान्यप्रतिपादनात् व्यतिरेकोऽलङ्कारः।

(ग) अत इति। इयं कादम्बरी, त्वत्तस्त्वत्सकाशात् इमं हारधारणरूपं बहुमानमादरं अर्हति प्राप्तुं योग्या भवति। एषा कादम्बरी, प्रीतिप्रसरस्य भवतः प्रणयातिरेकस्य अभूमिरपात्रं न, अपि तु पात्र-मेवेत्यर्थः। भग्नप्रणया हारप्रत्याख्यानेन खण्डितानुरोधा कादम्बरी, उपालम्भसहस्रैः 'ईदृशेन निष्ठुरहृदयेन सह त्वया मैत्री कृता, स एव चानीतः' ईदृशैस्तिरस्कारसमूहैः, महाश्वेतां खेदयित्वा विषाद्य नियतं निश्चितं आत्मानं उत्स्रक्ष्यति परित्यक्ष्यति।

(घ) अत इति। हारमादाय स्थितामिति स्थितपदाध्याहारान्नैकर्त्तृकत्वहानिः। प्रेषितवतीति हारग्रहणे महाश्वेताया अपि महाननुरोध इति प्रत्येतव्यं, अन्यथा तरलिकामपहाय कादम्बर्य्याः काचित् परिचारिकैवाग-च्छेदिति भावः। तया महाश्वेतयापि, कुमारस्य भवतः समीपे। महाभागेन भवता। प्रथमप्रणयस्य

কি তাহা বক্ষে ধারণ করেন নাই? (খ) আপনা হইতে নারায়ণ প্রধান নহেন; কৌস্তুভমণিও, অল্পমাত্র গুণদ্বারাও এই হার হইতে উৎকৃষ্ট নহে এবং লক্ষ্মীদেবীও, আকৃতির অল্পমাত্র অনুকরণ দ্বারাও কাদম্বরীর অনুসরণ করিতে পারেন না। (গ) অতএব কাদম্বরী আপনার নিকট এই আদর পাইবার যোগ্য; কারণ তিনি আপনার প্রণয়ের অপাত্র নহেন। বিশেষতঃ আপনি এই অনুরোধ রক্ষা না করিলে কাদম্বরী, বহুতর তিরস্কার দ্বারা মহাশ্বেতাকে দুঃখিত করিয়া নিশ্চয়ই প্রাণ পরিত্যাগ করিবেন। (ঘ) এই জন্যই মহাশ্বেতা, তরলিকাকেও এই হার লইয়া আপনার নিকট পাঠাইয়া দিয়াছেন, এবং তিনিও, আপনার নিকট খবর দিয়াছেন যে—"মহাশয়! আপনি মনে মনেও যেন, কাদম্বরীর এই প্রথম প্রণয় ভঙ্গ না করেন"

(१) जातप्रणया।

चन्द्रापीड़स्तु विस्मयमानः प्रत्यवादीत्—"मदलेखे! किमुच्यते, (১) निपुणासि, जानासि ग्राहयितुम्, उत्तरावकाशमपहरन्त्या ज्ञातं वचसि कौशलम् (ङ)। अयि मुग्धे! के वयमात्मनः? के वा वयं ग्रहणस्याग्रहणस्य (২) वा? गता खल्वियमस्तं कथा (च)। सौजन्यशालिनीभिर्भवतीभिरुपकरणी-कृतोऽयं जनो यथेष्टमिष्टेष्वनिष्टेषु वा (৩) व्यापारेषु विनियुज्यताम् (छ)। अतिदक्षिणायाः खलु देव्याः कादम्बर्या निर्दाक्षिण्यमपि (৪) गुणा न कञ्चिन्न दासीकुर्वन्ति" इत्युक्त्वा च कादम्बरीसम्बद्धाभिरेव कथाभिः सुचिरं स्थित्वा विसर्जयाम्बभूव मदलेखाम्। (ज)

प्रसरभङ्गः प्राप्तिनिरासः। न कार्यो हारप्रत्याख्यानेन न विधेयः। चामीकराचलस्य सुमेरुपर्वतस्य तटे ऊर्ध्वदेशे ताराचक्रं नक्षत्रसमूहमिव। तस्य चन्द्रापीड़स्य। बबन्ध मदलेखेति सम्बन्धः। अत्रोपमालङ्कारः।

(ङ) चन्द्रेति। विस्मयमानो मदलेखाया वाक्पटुतया विस्मयापन्नः। किमुच्यते किं मया वक्तव्यम्।

(च) अयीति। आत्मनः स्वस्य के? अपि तु केऽपि नेत्यर्थः। युष्माकं व्यवहारेण वयं युष्मदीया एव सञ्जाता इति भावः। के वेति युष्माकमिच्छयैव ग्रहणमग्रहणं वा मम सम्पद्येतेति भावः। उभयत्रापि वयमिति "अस्मदश्चेति बहुवचनम्। इयं कथा अस्माकं स्वाधीनताप्रस्तावः, अस्तंगता, युष्माकं व्यवहारेण सर्वथैव वशीकृतत्वादित्यभिप्रायः।

(छ) सौजन्येति। उपकरणीकृतः सेवकीकृतः, अतएवाह यथेष्टमित्यादि।

(ज) अतीति। अतिदक्षिणाया अत्युदारायाः, देव्याः कादम्बर्या गुणाः सौजन्य-सौन्दर्यादयः, निर्दा-क्षिण्यमपि औदार्यविहीनमपि कञ्चिज्जनं न दासीकुर्वन्ति इति न, अपि तु सर्वमेव दासीकुर्वन्तीत्यर्थः। अतएव ममोपकरणीकरणे किमपि नाश्चर्यमिति भावः। विसर्जयाम्बभूव चन्द्रापीड़ इति सम्बन्धः।

এই কথা বলিয়া মদলেখা, সুমেরুর শৃঙ্গে নক্ষত্রসমূহের ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের বক্ষঃস্থলে সেই হারছড়া পরাইয়া দিল।

(ঙ) চন্দ্রাপীড় কিন্তু মদলেখার বাক্‌পটুতায় বিস্ময়াপন্ন হইয়া প্রত্যুত্তর করিলেন—"মদলেখে! আমার বলিবার কি আছে? তুমি চতুরা, কি ভাবে গ্রহণ করাইতে হয়, তাহাও জান এবং আমার উত্তর দিবার অবকাশপর্য্যন্ত না দিয়া বিশেষ বাক্‌পটুতা প্রকাশ করিয়াছ। (চ) হে মুগ্ধে! আমি নিজের কে? কিংবা গ্রহণ করিতে বা গ্রহণ না করিতেই বা কে? আমার স্বাধীনতার কথা অস্তমিত হইয়াছে। (ছ) কারণ—তোমরা অত্যন্ত সৌজন্য-শালিনী, তাই আমাকে একেবারে দাস করিয়া ফেলিয়াছ; অতএব ইষ্টই হউক বা অনিষ্টই হউক, যে কোন কার্য্যে এই ব্যক্তিকে ইচ্ছানুসারে নিযুক্ত করিতে পার। (জ) অত্যন্ত-উদার-প্রকৃতি কাদম্বরীদেবীর গুণগ্রাম, ঔদার্য্যবিহীন ব্যক্তিকেও যে বশীভূত করে না—ইহা

---

(১) उच्यते। (২) ग्रहणाग्रहणयोः। (৩) अनभीष्टेषु वा। (৪) निर्दाक्षिण्या अपि।

अनतिदूरं गतायाञ्च तस्यां क्रीड़ापर्वतकगतं (१) उदयगिरिगतमिव चन्द्रमसं चन्दनदुकूलहारधवलं चन्द्रापीड़ं द्रष्टुं समुत्सारित-(२) वेत्र-छत्र-चामर-चिह्ना-निषिद्धाशेषपरिजनानुगमना (३) तमालिकाद्वितीया चित्ररथसुता पुनरपि तदेव सौधशिखरमारुरोह (झ)। ततस्था च पुनस्तथैव विविध-विलास-तरङ्गितैर्विकारि-विलोकितैः (४) जहारास्य मनः (ञ)। तथाहि मुहुर्नितम्बबिम्बन्यस्तवामहस्त-पल्लवा प्राहृतांशुकानुसार-(५) प्रसारित-दक्षिणकरा निश्चलतारका लिखितेव, (ट)

(झ) अनतीति। तस्यां मदलेखायाम्। उदयगिरिगतं चन्द्रमसमिव चन्दनेन मदलेखाकृत-चन्दनाङ्गरागेण दुकूलाभ्यां तत्परिधापिताभ्यां सूक्ष्मवसनाभ्यां हारेण च श्लेषाख्येन धवलं, अन्यत्र तु चन्दन-दुकूलहारवदुज्ज्वलम्। समुत्सारितानि दूरीकृतानि वेत्रच्छत्रचामराण्येव चिह्नानि यया सा, वेत्रयष्टिधारिण्यौ प्रतीहार्यौ छत्रधारिण्यौ चामरधारिण्यौश्च परिचारिकामागन्तुं निषिध्येत्यर्थः, निषिद्धं अशेषाणां सर्वेषां परिजनानां अनुगमनं यया सा, तथा तमालिकैव द्वितीया यस्याः सा, चित्ररथसुता कादम्बरी। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(ञ) ततस्थेति। तथैव पूर्व्ववदेव। विविधा ये विलासा भ्रूसङ्कोचादयस्तैस्तरङ्गितानि चञ्चलीकृतानि तैः, विकारीणि विकारजनकानि च तानि विलोकितानि दृष्टिपाताश्चेति तैः। अस्य चन्द्रापीड़स्य।

(ट) विविधविलासानेव प्रदर्शयति तथाहीति। नितम्बबिम्बे न्यस्तं स्थापितं वामहस्तपल्लवं यया सा, प्राहृतस्य परिहितस्य अंशुकस्य वसनस्य अनुसारेण वायुनापहृतस्यानुसरणेनेत्यर्थः प्रसारितो दक्षिणकरो यया सा, तथा निश्चले तारके कनीनिकाद्वयं यस्याः सा, लिखिता चित्रितेव सती कादम्बरी, विलोकयन्ती तावदवतस्थे इति वक्ष्यमाणेनान्वयः। उत्तरत्राप्येवमन्वयो बोध्यः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

বলা যায় না" এই কথা বলিয়া চন্দ্রাপীড়, কাদম্বরীসম্বন্ধীয় কথোপকথনে বহু সময় থাকিয়া মদলেখাকে বিদায় দিলেন।

(ঝ) মদলেখা কিছু দূর চলিয়া গেলে, কাদম্বরী প্রতীহারী, ছত্রধারিণী ও চামরধারিণী পরিচারিকাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া, অন্যান্য সকল পরিজনদিগকেও সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, কেবল তমালিকার সহিত যাইয়া, উদয়পর্ব্বতস্থিত চন্দ্রের ন্যায় ক্রীড়াপর্ব্বতস্থিত এবং চন্দন, সূক্ষ্মবসন ও হার ধারণ করায় ধবলবর্ণ চন্দ্রাপীড়কে দেখিবার নিমিত্ত, পুনরায় সেই অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিলেন। (ঞ) সেখানে থাকিয়া পুনরায় সেই ভাবেই, নানাবিধ বিলাস-বশতঃ চঞ্চল ও বিকারজনক দৃষ্টিপাতদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের মন হরণ করিতে লাগিলেন। (ট) নিতম্ব-মণ্ডলে বামহস্ত বিন্যস্ত করিয়া এবং বায়ুতে পরিধানের বস্ত্র উড়াইয়া নিলে তদনুসারে দক্ষিণ হস্ত প্রসারণ করিয়া ও নয়নের তারা দুইটি নিশ্চল রাখিয়া চিত্রিতের ন্যায় থাকিয়া বার বার দেখিতে লাগিলেন। (ঠ) কখনও হাই তুলিতে আরম্ভ করিবার সময়ে মুখের উপরে

---

(१) क्रीड़ापर्वतगतं। (२) उत्सारित...। (३)...परिजना। (४)...तरङ्गितैर्विलोकितैः।
(५) अंशुसाहृत...।

মুহুর্জৃম্ভিকারম্ভদত্তোত্তানকরতলতয়া তদ্গোত্রস্খলনভিয়া নিরুদ্ধবদনেব, (ঠ) মুহুরংশুকপল্লব তাড়িত-নিশ্বাসামোদ-(১) লুব্ধ-মধুকর-মুখরতয়া প্রস্তুতাহ্বানেব,(ড) মুহুরনিল-গলিতাংশুক-সম্ভ্রম-(২) দ্বিগুণীকৃত-ভুজযুগল-প্রাবৃত-পয়োধরতয়া দত্তা-লিঙ্গনসংজ্ঞেব, (ঢ) মুহুঃ কেশপাশাকৃষ্ট-কুসুম-পূরিতাঞ্জলি-সমাঘ্রাণ-লীলয়া কৃতনমস্কারেব, (ণ) মুহুরুভয় তর্জ্জনী-ভ্রমিত-মুক্তাপ্রালম্বতয়া (৩) নিবেদিত-

(ঠ) মুহুরিতি। জৃম্ভিকায়া গাত্রভঙ্গস্য আরম্ভে দত্তং ব্যাত্তমুখোপরি স্থাপিতং উত্তানং করতলং যয়া তস্যা ভাবস্তয়া হেতুনা, তস্য চন্দ্রাপীড়স্য যদ্গোত্রস্খলনং ভ্রান্ত্যা নামোচ্চারণং তদ্ভিয়েব নিরুদ্ধবদনা পিহিতমুখী। ইত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ড) মুহুরিতি। অংশুকপল্লবেন বসনাঞ্চলেন তাড়িতাঃ নিশ্বাসস্য আমোদেন সৌরভেণ লুব্ধা যে মধুকরা ভ্রমরাস্তৈর্মুখরতয়া শব্দায়মানতয়া, প্রস্তুতমারব্ধং আহ্বানং যয়া সেব। আহ্বানপ্রস্তাবোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ঢ) মুহুরিতি। অনিলেন বায়ুনা গলিতে স্তনমণ্ডলাৎ পতিতে অংশুকে উত্তরীয়বসনে সম্ভ্রমেণ ত্বরয়া দ্বিগুণীকৃতং উপর্য্যধোভাবেন বক্ষসি স্থাপিতং যদ্ভুজযুগলং তেন প্রাবৃতৌ আচ্ছাদিতৌ পয়োধরৌ স্তনৌ যয়া তস্যা ভাবস্তয়া হেতুনা, দত্তা আলিঙ্গনায় সংজ্ঞা সঙ্কেতো যয়া সেব, ভুজযুগলেন আলিঙ্গনপ্রকারকরণাদিতি ভাবঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ণ) মুহুরিতি। কেশপাশাদাকৃষ্টৈরানীতৈঃ কুসুমৈঃ পূরিতস্য অঞ্জলেঃ সমাঘ্রাণস্য লীলয়া বিলাসেন কৃতনমস্কারেব, প্রায়েণ করকপালসংযোগাদিতি ভাবঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ত) মুহুরিতি। উভয়তর্জ্জনীভ্যাং ভ্রমিতং মুক্তাপ্রালম্বং মৌক্তিকহারো যয়া তস্যা ভাবস্তয়া হেতুনা, নিবেদিতো হৃদয়স্য উৎকলিকোদ্গমঃ সমাগমোৎকণ্ঠোৎপত্তির্যয়া সেব, হারভ্রমণেন উৎকণ্ঠয়া হৃদয়ভ্রমণস্য সূচনাদিতি ভাবঃ। "প্রালম্বমৃজুলম্বি স্যা" দিত্যমরঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

উত্তানভাবে করতল সংস্থাপন করায়, ভ্রমবশতঃ চন্দ্রাপীড়ের নামোচ্চারণ হইবার ভয়েই যেন মুখমণ্ডল আবৃত করিয়া, বারংবার চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ড) কখনও নিশ্বাসের সৌরভলোভে আগত ভ্রমরগণ বস্ত্রাঞ্চলদ্বারা বিতাড়িত হওয়ায় রব করিতেছিল বলিয়া, কাদম্বরী যেন চন্দ্রাপীড়কে আহ্বান করিতে আরম্ভ করিয়া, বারংবার দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ঢ) কখনও বায়ুবেগে উত্তরীয় বসন পতিত হইলে, তাড়াতাড়ি ভুজযুগল দ্বিগুণ করিয়া তাহাদ্বারা স্তনযুগল আবৃত করায়, আলিঙ্গনের জন্য সঙ্কেত জানাইয়াই যেন বার বার চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ণ) কখনও কেশকলাপ হইতে কুসুমসমূহ আনয়নপূর্ব্বক তাহা দ্বারা অঞ্জলি পূর্ণ করিয়া তাহার আঘ্রাণ করার ছলে নমস্কার করিতে থাকিয়াই যেন বার বার চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন। (ত) কখনও দুইটি তর্জ্জনী অঙ্গুলীদ্বারা মুক্তার হার ভ্রমণ করাইতে থাকায়, মনের উৎকণ্ঠা জানাইয়াই যেন বারংবার চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দৃষ্টিপাত

(১)...নিঃশ্বাসামোদ...। (২)...অংশুকসংবরণসম্ভ্রম...। (৩) প্রলম্বতয়া।

हृदयोत्कलिकोद्गमेव, (त) मुहुरुपहारकुसुमस्खलन-विधुत-करतलतया कथित कुसुमायुधशरप्रहारवेदनेव, (थ) मुहुर्गलित-रशना-निगड़-(१) नियमित-(२) चरणतया संयम्यार्पितेव मन्मथेन, (द) मुहुश्चलितोरुविधुतदुकूला क्षिति-तलदोलायमानांशुकैकदेशाच्छादितकुचा, चकित-परिवर्त्तन-व्यञ्जितवलीलता, अंसस्रस्त-(३) चिकुरकलाप-सङ्कलनाकुल-करकमला, कटाक्ष-क्षेप-धवलीकृत-कर्णोत्पलं विलक्ष-(४) स्मित-सुधाधूलि-धूसरितकपोलं साचीकृत्य, (५) वदन-

(थ) मुहुरिति। उपहारकुसुमेषु विकीर्णपुष्पेषु स्खलनेन विधुतं कम्पितं करतलं यया तस्या भावस्तया हेतुना, कथिता सूचिता कुसुमायुधशरप्रहारस्य वेदना यया सेव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(द) मुहुरिति। गलिता कटिदेशात् पतिता रशना काञ्चीदामैव निगड़ः शृङ्खला तया नियमितौ बद्धौ चरणौ यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, मन्मथेन संयम्य बद्ध्वा चन्द्रापीड़ाय अर्पितेव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ध) मुहुरिति। चलिताभ्यां कम्पिताभ्यां ऊरुभ्यां विधुतं दुकूलं गलितप्रायवसनं यया सा। क्षितितले दोलायमानेन अंशुकैकदेशेन वस्त्राञ्चलेन पुनरुत्थापितेनेत्यर्थः आच्छादितौ कुचौ यया सा। चकितं ससम्भ्रमं यत् परिवर्त्तनं तेन व्यञ्जिता चर्म्मप्रसारणान्नश्यन्ती त्रिवलीलता यस्याः सा। अंसयोः स्कन्धयोः स्रस्तो विगलितो यश्चिकुरकलापः केशपाशस्तस्य सङ्कलने पुनरेकत्र करणे आकुलं व्यग्रं करकमलं यस्याः सा। कटाक्षक्षेपेण तस्य प्रभयेत्यर्थः धवलीकृतं कर्णोत्पलं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। अत्र धवलीकरणा-सम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। विलक्षेण लज्जया युक्तं यत् स्मितं मन्दहास्यमेव सुधाधूलिर्धवलत्व-साम्यात् चूर्णपरागः विलक्षस्मितं सुधाधूलिरिवेति वा तया धूसरितौ धूसरवर्णीकृतौ कपोलौ यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। अत्रोपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः पूर्ब्बवदतिशयोक्तिस्थानयोः पुनरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा अनेका विविधाः या रसभङ्गयः अनुरागेण रचनाविशेषास्ताभिर्भङ्गुरं वक्रं यथा स्यात्तथा, वदनं साचीकृत्य वक्रं

করিতে লাগিলেন। (থ) কখনও বিক্ষিপ্ত কুসুমসমূহের উপরে পতননিবন্ধন করকমল কম্পিত করিতে থাকায়, মদন-শর-প্রহারের বেদনা প্রকাশ করিয়াই যেন বারংবার চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন। (দ) কখনও কটিদেশ হইতে নিপতিত চন্দ্রহাররূপ শৃঙ্খলে চরণযুগল বদ্ধ হওয়ায়, কামদেবকর্ত্তৃক বন্ধনপূর্ব্বক প্রদত্ত হইয়াই যেন বার বার দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ধ) কখনও, পতিতপ্রায় পরিধানের বস্ত্র, কম্পিত উরুযুগল দ্বারা ধারণ করিয়া, কখনও ভূতললুণ্ঠিত বস্ত্রাঞ্চল তুলিয়া তাহা দ্বারা স্তনযুগল আবৃত করিয়া, কখনও তাড়াতাড়ি ফিরিয়া দাঁড়াইলে পেটের উপরের থরগুলিকে লুপ্ত করিয়া, কখনও স্কন্ধের উপরে আলুলায়িত কেশ-গুলিকে একত্র করিবার জন্য হস্ত প্রসারণ করিয়া, কখনও মুখমণ্ডল বক্র করিয়া, অনুরাগবশতঃ নানাবিধ ভঙ্গীতে বক্রভাবে চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন; তখন কটাক্ষের আলোকে তাঁহার

(१)...निविड़...। (२)...पतित...। (३) स्रस्त...।
(४) विलक्ष्य, विलक्ष्यमाण...। (५) साचीकृतवदनं...।

मनेकरस भङ्गि-भङ्गुरं विलोकयन्ती, तावदवतस्थे यावदुपसंहृतालोको दिवसो बभूव । (ध)

अथ हृदयस्थितकमलिनीरागेणेव रज्यमाने राजीवजीवितेश्वरे सकल-लोक-चक्रवाल-चक्रवर्त्तिनि (१) भगवति पूष्णि, (न) क्रमेण च दिनपरिलम्बनरोष-रक्ताभिः कामिनीदृष्टिभिरिव संक्रमितशोणिम्नि व्योम्नि, (प) संहृतशोचिषि जाते जरठ-हारीत-हरित-हये हरितवाजिनि, (फ) रवि-(२) विरह-मीलित-

---

विधाय चन्द्रापीडं विलोकयन्ती सती तावदवतस्थे, यावत् उपसंहृतः रविणा सङ्कोचित आलोको यस्य तादृशो दिवसो बभूव ।

(न) अथेति । राजीवानां पद्मानां जीवितेश्वरे प्रकाशेनेवोज्जीवनात् जीवननियन्तरि, सकललोकचक्रवालस्य समस्तभुवनमण्डलस्य चक्रवर्त्तिनि सार्वभौमे अधीश्वरे, भगवति पूष्णि सूर्य्ये आत्मनो हृदयस्थितो यः कमलिनीरागः पद्मिनीं प्रत्यनुरागः स एव रागो रक्तिमा तेन रज्यमाने आरक्तीक्रियमाण इव सति । अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां कमलिनीसूर्य्ययोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः, अनुरागरक्तिम्नोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करश्छेकानुप्रासेन पुनः संसृज्यते ।

(प) क्रमेणेति । किञ्च व्योम्नि आकाशे, दिनस्य परिलम्बने परिणामे यो रोषो दत्तसङ्केतस्यापि नायकस्यानागमनात् कोपस्तेन रक्ताभिर्लोहिताभिः कामिनीनां दृष्टिभिर्नयनैः, संक्रमित आसञ्जितः शोणिमा लौहित्यं यस्मिन् तस्मिन्निव सति । अत्रापि शोणिम्नः संक्रमणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा ।

(फ) संहृतेति । जरठः परिणतो वृद्धो यो हारीतः पक्षिविशेषस्तद्वत् हरिताः पालाशवर्णा हया अश्वा यस्य तस्मिन्, हरितवाजिनि हरिदश्वे सूर्य्ये, संहृतानि सङ्कोचितानि शोचींषि प्रभा येन तस्मिन् सति । अत्र लुप्तोपमाछेकानुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः, तथा जरठेत्यादिपदयोरर्थगतपुनरुक्ततादोषः, किञ्च जरठेत्यादिविशेषणस्य मुख्यानुपकारित्वादपुष्टार्थतादोषश्च, तेन जरठेत्यादिविशेषणत्यागेनैव तयोः समाधानं विधेयम् ।

কর্ণোৎপলকে ধবলবর্ণ করিয়াছিল এবং লজ্জাযুক্ত ঈষৎ হাস্যরূপ চূর্ণরেণু তাঁহার গণ্ডযুগলকে ধূসরবর্ণ করিয়াছিল—এই অবস্থায় কাদম্বরী তত কাল সেখানে অবস্থান করিলেন, যত কাল দিনের আলোক রহিল।

(ন) তাহার পর, পদ্মগণের জীবিতেশ্বর ও সমগ্র ভুবনমণ্ডলের সম্রাট্ ভগবান্ সূর্য্যদেব পদ্মিনীর প্রতি মনের অনুরাগেই যেন আরক্তবর্ণ হইয়া উঠিলেন। (প) ক্রমে, দিবাবসানে সঙ্কেতকারী নায়কের অনুপস্থিতিনিবন্ধন ক্রোধে আরক্তবর্ণ কামিনীগণের দৃষ্টিই যেন আকাশে রক্তিমা সঞ্চারিত করিল; (ফ) বৃদ্ধ হারিল পক্ষীর ন্যায় হরিতবর্ণ অশ্ব-সমন্বিত সূর্য্য,

---

(१) सकललोकचक्रवालहृदयचक्रवर्त्तिनि । (२) हरितवाजि... ।

सरोज-संहतिषु हरितायमानेषु कमलवनेषु, (ब) श्वेतायमानेषु कुमुदषण्डेषु (१) लोहितायमानेषु दिङ्मुखेषु (२) नीलायमाने शर्वरीमुखे, (भ) शनैः शनैश्च पुनर्दिनश्री-समागमाशाभिरिवानुरागिणीभिः सहैव दीधितिभिरदर्शनतामुपगते भगवति गभस्तिमालिनि, (म) तत्कालविजृम्भितेन च कादम्बरीहृदयराग-सागरेणेव (३) आपूरिते सन्ध्यारागेण जीवलोके, (य) कुसुमायुधानल-दह्यमान-हृदय-(४) सहस्रधूम इव जनितमानिनीनयनवारिणि (५) विस्तीर्य्यमाणे तरुण-

(ब) रवीति। रविविरहेण मीलिता मुद्रिता सरोजसंहतिः पद्मसमूहो येषां तेषु तथोक्तेषु, कमलवनेषु हरितायमानेषु पद्ममुद्रणादेव हरिद्वर्णायमानेषु सत्सु।

(भ) श्वेतेति। कुमुदानां षण्डेषु समूहेषु, श्वेतायमानेषु सत्सु, प्रकाशादिति भावः। दिङ्मुखेषु लोहितायमानेषु सत्सु, सन्ध्यारागादित्याशयः। शर्वरीमुखे प्रदोषे नीलायमाने सति, अन्धकारागमादित्यभिप्रायः।

(म) शनैरिति। किञ्च, भगवति गभस्तिमालिनि सूर्य्ये, पुनरपि दिनश्रियः समागमाशाभिः सम्मेलना-काङ्क्षाभिरिव अनुरागिणीभिरासक्तिमतीभिर्लोहिताभिश्च दीधितिभिः किरणैः सहैव अदर्शनतां दर्शनायोग्यता-मुपगते सति। अत्र लिङ्गेन रविदिनश्रियोर्नायकनायिकाव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः पूर्णोपमा चानयोरङ्गा-ङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) तदिति। किञ्च, तस्मिन् काले विजृम्भितेन उद्वेलितेन, कादम्बर्य्या हृदयस्य रागसागरेणेव चन्द्रापीडं प्रत्यनुरागसमुद्रेणेव सन्ध्यारागेण, जीवलोके आपूरिते सति। अत्र निरङ्गकेवलरूपकश्रौतोपमयो-रेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(र) कुसुमेति। कुसुमायुधो मदन एवानलस्तेन दह्यमानं यत् हृदयसहस्रं विरहिजनमनःसमूहस्तस्य धूमे वाष्प इव, जनितानि पतिविच्छेदादुत्पादितानि मानिनीनां नयनवारीणि अश्रूणि येन तस्मिन्, तथा तरुणतमाल-स्येव नवीनतमालतरोरिव त्विट् प्रभा यस्य तस्मिन्, तिमिरे अन्धकारे, विस्तीर्य्यमाणे सति। अत्र निरङ्गकेवल-रूपकजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, स पुनलुप्तोपमया संसृज्यते। विस्तीर्य्यमाण इति कर्म्मकर्त्तरि प्रयोगः।

কিরণজাল সঙ্কুচিত করিলেন। (ব) সূর্য্যের বিরহে পদ্মসমূহ মুদ্রিত হইলে পদ্মবন হরিতবর্ণ হইয়া উঠিল। (ভ) কুমুদবন শ্বেতবর্ণ হইতে লাগিল, দিঙ্মণ্ডল রক্তবর্ণ হইল, এবং প্রদোষ-কাল কৃষ্ণবর্ণ ধারণ করিল। (ম) ভগবান্ সূর্য্যদেব, পুনরায় দিনলক্ষ্মীর সহিত সম্মেলনের আশার ন্যায় রাগসমন্বিত কিরণজালের সহিত ধীরে ধীরে অদৃশ্য হইয়া গেলেন। (য) কাদম্বরীর মনের অনুরাগসাগরের ন্যায় সেই সময়ে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত সন্ধ্যারাগে জগৎ-সংসার পরিপূর্ণ করিল। (র) কামানলে দহ্যমান বিরহীদিগের মনের ধূমের ন্যায় এবং নূতন তমাল-বৃক্ষতুল্য-প্রভাসম্পন্ন অন্ধকার, মানিনীগণের অশ্রুজল জন্মাইয়া বিস্তার পাইতে লাগিল।

(१) तत्कालनिर्गतसंघोपानभुजसहस्रविस्तारितसर्वपुरस्कृतगजवर्म्मणीव।

(२) निजसुहृदम्बरमूर्त्तिसमालोकनाशया मध्वर्षसन्दर्शितमित्रैर्विवीक्षमुखेषु धवलायमानेषु।

(३)...रागरससागरेणेव। (४)...चक्रवाकहृदय...। (५)...नयनासारवारिणि।

তমালত্বিষি তিমিরে, (র) দিক্করি-করাবকীর্ণ-(১) শীকরাসার ইব শ্বেতায়মানতারাগণে গগনে, (ল) জাতায়াঞ্চাদর্শনক্ষমায়াং বেলায়াং সৌধশিখরাদবততার কাদম্বরী, ক্রীড়াপর্ব্বতকনিতম্বাচ্চ চন্দ্রাপীড়ঃ (ব)। ততোঽচিরাদিব (২) গৃহীতপাদঃ প্রসাদ্যমান ইব কুমুদিনীভিঃ, (শ) কলুষমুখীঃ কুপিতা ইব প্রসাদয়ন্নাশাঃ, (ষ) প্রবোধাশঙ্কয়েব পরিহরন্ সুপ্তাঃ কমলিনীঃ, (স) লাঞ্ছনচ্ছলেন নিশামিব হৃদয়েন সমুদ্বহন্, (হ) রোহিণীচরণতাড়নলগ্ন-

(ল) দিগিতি। গগনে, দিক্করিভির্দিগ্‌হস্তিভিঃ করৈঃ শুণ্ডাভিরবকীর্ণো বিক্ষিপ্তঃ শীকারাসারো জলবিন্দুধারা যস্মিন্ তস্মিন্নিব, শ্বেতায়মানস্তারাগণো যত্র তাদৃশে সতি, শীকরাসারতারাগণয়োঃ সাদৃশ্যাদিতি ভাবঃ। অত্র শীকরাসারবিক্ষেপোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ব) জাতায়ামিতি। কিঞ্চ, অদর্শনক্ষমায়াং পরস্পরদর্শনাযোগ্যায়াং, বেলায়াং সময়ে।

(শ) তত ইতি। ততঃ কুমুদিনীভিঃ, গৃহীতো ধৃতঃ পাদঃ কিরণশ্চরণশ্চ যস্য সঃ প্রসাদ্যমানঃ প্রসন্নীক্রিয়মাণ ইব সন্ সুধামূর্ত্তিশ্চন্দ্রঃ অচিরাদিব উদগাদিতি পরেণান্বয়ঃ। অত্র লিঙ্গেন কার্য্যেণ চ কুমুদিনীষু মানিনীব্যবহারসমারোপাৎ শ্লেষগর্ভা সমাসোক্তিঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা চানয়োরেকাশ্রয়ানুপ্রবেশরূপঃ সঙ্করঃ।

(ষ) কলুষেতি কলুষমুখীরন্ধকারাচ্ছন্নাগ্রভাগাঃ ক্রোধেন মলিনবদনাশ্চ কুপিতা ইব আশা দিশঃ প্রসাদয়ন্ কিরণৈর্ধবলীকুর্ব্বন্ শান্তাশ্চ। অত্রাপি পূর্ব্ববদলঙ্কারঃ।

(স) প্রবোধেতি। প্রবোধাশঙ্কয়েব জাগরণাতঙ্কেনেব, সুপ্তা মুদ্রিতা নিদ্রিতাশ্চ কমলিনীঃ পদ্মিনীঃ ভার্য্যান্তরাণি চ পরিহরন্ পরিত্যজন্। অত্র লিঙ্গেন কার্য্যেণ চ চন্দ্রে শঠব্যবহারসমারোপাৎ শ্লেষগর্ভা সমাসোক্তিগুণোৎপ্রেক্ষা চানয়োরপি পূর্ব্ববৎ সঙ্করঃ।

(হ) লাঞ্ছনেতি লাঞ্ছনচ্ছলেন কলঙ্কব্যাজেন হৃদয়েন নিশামুদ্বহন্নিব। অত্র সাপহ্নবা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ল) আকাশে শ্বেতবর্ণ নক্ষত্র প্রকাশ পাইলে বোধ হইতে লাগিল যেন, দিগ্‌হস্তিগণ শুণ্ডদ্বারা জলবিন্দু বিক্ষিপ্ত করিতেছে। (ব) এবং অন্ধকার উপস্থিত হওয়ায় পরস্পর দর্শন করিবার অযোগ্য সময় উপস্থিত হইল, এমন সময়ে কাদম্বরী অট্টালিকার উপর হইতে অবতরণ করিলেন, চন্দ্রাপীড়ও ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে নামিলেন। (শ) তাহার পর অচিরকালমধ্যেই নয়নানন্দকারী ভগবান্ চন্দ্র উদয় পাইলেন; তখন কুমুদিনীগণ যেন তাঁহার পাদ ধারণ করিয়া তাঁহাকে প্রসন্ন করিতে লাগিল; (ষ) তিনি, কুপিতের ন্যায় মলিনমুখ দিঙ্মণ্ডলকে প্রসন্ন করিলেন; (স) জাগিবার আশঙ্কায়ই যেন সুপ্ত পদ্মিনীগণকে পরিত্যাগ করিলেন; (হ) কলঙ্কচ্ছলে রাত্রিকেই যেন বক্ষে ধারণ করিলেন। (ক্ষ) রোহিণীদেবীর চরণপ্রহারের সময় তাহা হইতে সংলগ্ন আলতার রসের ন্যায় উদয়কালের রক্তিমা ধারণ করিলেন।

(১)...আকীর্ণ...। (২) নচিরাদিব।

अलक्तकरसमिवोदयरागं दधानः, (अ) तिमिरनीलाम्बरां दिवमभिसारिकामिवोपसर्पन्, (क) अतिवल्लभतया विकिरन्निव सौभाग्यम्, (ख) उदगाज्जगदीक्षणोत्सवः सुधासूतिः (ग) उच्छ्रिते च (१) कुसुमायुधाधिराज्यैकातपत्रे कुमुदिनीवधूवरे विभावरीविलासदन्तपत्रे श्वेतभानौ धवलितदिशि, (घ) दन्तिदन्तादिवोत्कीर्णे भुवने, (ङ) चन्द्रापीडश्चन्द्रातपनिरन्तरतयैव कुमुद-

---

(अ) रोहिणीति। रोहिण्याः स्वभार्य्यायाश्चरणताड़नेन लग्नं अलक्तकरसमिव उदयरागं उदयकालीनरक्तिमानं दधानो धारयन्। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) तिमिरेति। अभिसारिकां प्रागुक्तलक्षणां नायिकामिव, तिमिरेण नीलं अम्बरं आकाशं दृष्टिगोचरं आकाशैकदेशं इत्यर्थः यस्य तां, अन्यत्र तु तिमिरवन्नीलं अम्बरं वसनं यस्यास्ताम्, दिवमाकाशं उपसर्पन् अभिगच्छन्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ख) अतीति। अतिवल्लभतया लोकानामतीवप्रियतया सौभाग्यं तेषु प्रीतिं विकिरन् विक्षिपन्निव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) उदगादिति। ईक्षणोत्सवो नयनानन्दहेतुरित्यर्थः। सुधायाः सूतिरुत्पत्तिर्यस्मात् स सुधासूतिश्चन्द्र उदगात्। अत्र कारणस्य सुधासूतेः कार्य्येणेक्षणोत्सवेन सहाभेदेनाभिधानात् हेतुर्नामालङ्कारः।

(घ) उच्छ्रित इति। किञ्च, कुसुमायुधस्य मदनस्य यदधिराज्यं साम्राज्यं तस्य एकातपत्रे अद्वितीयच्छत्रस्वरूपे। अत्र चन्द्रे आतपत्रत्वारोपः शाब्दः कुसुमायुधे राजत्वारोपस्त्वार्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकमलङ्कारः। कुमुदिन्येव वधूस्तस्या वरे भर्त्तरि। अत्र परम्परितरूपकम्। विभावर्य्या रात्रेर्विलासाय दन्तपत्रं गजदन्तनिर्म्मितकर्णालङ्कारस्वरूपस्तस्मिन्। अत्रापि चन्द्रे दन्तपत्रत्वारोपः शाब्दः विभावर्य्यां विलासिस्त्रीत्वारोपस्त्वार्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्। धवलिताः किरणैः शुभ्रीकृता दिशो येन तस्मिन्। श्वेतभानौ चन्द्रे उच्छ्रिते उपर्य्युत्थिते सति।

(ङ) दन्तीति। भुवने दन्तिदन्तादुत्कीर्णे तं निष्कास्य निर्म्मित इव सति, चन्द्रकिरणैः शुभ्रत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) चन्द्रेति। चन्द्रस्य आतपेन आलोकेन निरन्तरतया घनतया सर्वतो व्याप्ततयेत्यर्थः, कुमुद-

---

(ক) অভিসারিকা নায়িকার ন্যায় অন্ধকারে নীলবর্ণ একদেশবিশিষ্ট (পক্ষে অন্ধকারের ন্যায় নীলাম্বরধারিণী) আকাশের দিকে যাইতে লাগিলেন। (খ) এবং লোকের অত্যন্ত-প্রিয় বলিয়া তাহাদের প্রতি যেন প্রীতি বর্ষণ করিতে লাগিলেন। (ঘ) ক্রমে, কন্দর্প সাম্রাজ্যের অদ্বিতীয় ছত্র, কুমুদিনী-বধূর বর এবং রজনী-নায়িকার বিলাসের গজদন্তাভরণ চন্দ্র, সকল দিক্ ধবলবর্ণ করিয়া উপরে উঠিলেন। (ঙ) ভুবনমণ্ডল যেন গজদন্ত হইতে খোদিত করিয়া বাহির করা হইল। (চ) এমন সময়ে চন্দ্রাপীড়, গৃহের নিকটবর্ত্তী কুমুদপূর্ণ সরোবরের

---

(१) उदिते च।

मग्ना इव (१) गृहकुमुदिन्याः कल्लोल-धौत-सुधा-धवल-सोपाने तनु-तरङ्ग-ताल-वृन्त-वात-वाहिनि सुप्तहंसमिथुने, विरह-वाचाल-(२) चक्रवाकयुगले तीरे, (च) कुमुददलावलीभिः पर्य्यन्त-लिखित-दन्तपत्र-लतम्, (३) अवदातसिन्दुवारदामो-पहारम्, हरिचन्दनरसैः प्रक्षालितम्, कादम्बरीपरिजनोपदिष्टम्, मुक्ताशिलापट्टं चन्द्रशीतलमधिशिश्ये (छ)। ततस्तस्य चास्यागत्याकथयत् केयूरकः "देवी कादम्बरी देवं द्रष्टुमागता" इति। (ज)

मग्ना इव विरलकुमुदाया अपि कुमुदैः पूर्णाया इव, चन्द्रातपस्यैव कुमुदवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। गृहकुमुदिन्या भवनसन्निहितकुमुदयुक्तसरोवरस्य तीरे इति सम्बन्धः। कल्लोलैस्तस्या एव बृहत्तरङ्गैः धौतानि क्षालितानि सुधाधवलानि चूर्णलेपनेन शुभ्राणि सोपानानि यस्मिन् तत्र। तनवः क्षुद्रास्तरङ्गा एव तालवृन्तानि व्यजनानि तेषां वातं वायुं वहति दधातीति तस्मिन्। अत्र निरङ्गकेवल-रूपकमलङ्कारः। सुप्तानि हंसमिथुनानि यस्मिन् तत्र। तथा विरहेण रात्रिवशात् परस्परविच्छेदेन वाचा-लानि विषादवशेन मुखराणि चक्रवाकानां युगलानि दम्पतयो यत्र तस्मिन् तीरे।

(छ) कुमुदेति। कुमुददलावलीभिः कैरवपत्रश्रेणीभिः पर्य्यन्तेषु प्रान्तदेशेषु लिखिता विहिता दन्त-पत्रलता लतावल्लम्बमानपत्रावल्यो यस्य तम्। अवदातानि शुभ्राणि सिन्दुवारकुसुमानां दामानि माल्यानि उपहाराः शोभार्थं समन्ताद्विन्यस्तानि यस्य तम्। हरिचन्दनरसैः श्वेतचन्दनजलैः। चन्द्रवत् शीतलमिति चन्द्रशीतलं। मुक्तावत् शिलापट्टो मुक्ताशिलापट्टं शुभ्रमेकं शिलाखण्डमित्यर्थः। अधिशिश्ये आश्रित्य शयितवान्।

(ज) तत्रेति। अस्य चन्द्रापीडस्य समीपे। देवं भवन्तम्।

তীরে একখানি প্রস্তরখণ্ডের উপরে শয়ন করিলেন; সেই সরোবরটির উপরে চন্দ্রের নিবিড় আলোক পড়িয়াছিল বলিয়া, সেটিকে যেন কুমুদপূর্ণ বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; বৃহৎ বৃহৎ তরঙ্গে তাহার শুভ্রবর্ণ সোপানগুলি প্রক্ষালিত হইতেছিল; ক্ষুদ্রতরঙ্গরূপ তালবৃন্তের বায়ু বহিত হইতেছিল; সেই তীরদেশে বহুতর হংসদম্পতি শয়ন করিয়াছিল এবং পরস্পর বিরহ-বশতঃ চক্রবাকদম্পতিগণ রব করিতেছিল। (ছ) আর সেই প্রস্তরখণ্ডের চারিদিকে শ্বেতোৎপল-দল সমূহদ্বারা পত্রলতা নির্ম্মাণ করিয়া দিয়াছিল, শ্বেতবর্ণ নিসিন্দাফুলের মালাদ্বারা চারিদিক্ বেষ্টন করিয়া রাখিয়াছিল, শ্বেতচন্দনের জলে প্রক্ষালন করিয়াছিল এবং সেই প্রস্তরখণ্ডখানি মুক্তার ন্যায় শুভ্রবর্ণ ও চন্দ্রের ন্যায় শীতল ছিল; আর কাদম্বরীর পরিজনেরা তাঁহাকে তাহার উপরে শয়ন করিতে বলিয়া দিয়াছিল। (জ) চন্দ্রাপীড় সেই শিলাখণ্ডের উপরে অবস্থান করিতে লাগিলেন—এমন সময় কেয়ূরক আসিয়া তাঁহার নিকট বলিল—"কাদম্বরীদেবী আপনার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিয়াছেন।"

---

(१) कुमुद इव। (२)...वाचालित...। (३)...लतादन्तुरं।

अथ चन्द्रापीडः ससम्भ्रममुत्थायागच्छन्तीम्, अल्पसखीजनपरिवृताम्, अपनीताशेषराजचिह्नाम्, इतरामिव, एकावलीमात्राभरणाम्, अच्छाच्छेन चन्दनरसेन धवलीकृततनुलताम्, एककर्णावसक्तदन्तपत्राम्, इन्दुकलाकलिकाकोमलं कर्णपूरीकृतं कुमुददलं दधानाम्, ज्योत्स्नाशुचिनी कल्पद्रुमदुकूले बिभ्रतीम्, तत्कालरमणीयेन वेशेन साक्षादिव चन्द्रोदयदेवताम्, मदलेखया दत्तहस्तावलम्बां कादम्बरीमपश्यत् (झ)। आगत्य च सा प्रीतिपेशलतां दर्शयन्ती प्राकृतेव (१) परिजनोचिते भूतले समुपाविशत्। चन्द्रापीडोऽपि "कुमार! अध्यास्यतां शिलातलमिव" इत्यसकृदनुबध्यमानोऽपि मदलेखया भूमिमेवाभजत। (ञ)

(झ) अथेति। अपनीतानि परित्यक्तानि अशेषाणि समस्तानि राजचिह्नानि तदुपयुक्तवेशाभरणच्छत्रचामरादीनि यया ताम्, अतएव इतरामपरामिव दृश्यमानाम्, एकावलीमात्रं एकश्रेणीकहारमात्रमाभरणं यस्यास्ताम्। अच्छाच्छेन अत्यन्तनिर्म्मलेन। एकस्मिन् कर्णे अवसक्तं लग्नं दन्तपत्रं गजदन्तनिर्म्मितपत्राकारालङ्कारो यस्यास्ताम्। इन्दुकलेव कलिका अथवा इन्दुकला च कलिका च तद्वत् कोमलम्। ज्योत्स्नावत् शुचिनी शुभ्रवर्णे, कल्पद्रुमदुकूले कल्पवृक्षजातसूक्ष्मवसनयुगलं। साक्षात् प्रत्यक्षगतां चन्द्रोदयदेवतामिव। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः। दत्तो हस्तावलम्बः स्वहस्तावलम्बनं यस्यास्ताम्।

(ञ) आगत्येति। प्रीतिपेशलता स्नेहस्य सौन्दर्य्यं। प्राकृतेव साधारणस्त्रीव। अध्यास्यतां अधिष्ठीयताम् अनुबध्यमानोऽपि अनुरुध्यमानोऽपि। भूमिमेवाभजत भूतल एवोपाविशदित्यर्थः।

(ঝ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় তাড়াতাড়ি গাত্রোত্থান করিয়া কাদম্বরীকে আসিতে দেখিলেন; তখন কাদম্বরী অল্প কয়েকটি সখীজনে পরিবেষ্টিত হইয়া আসিতেছিলেন এবং সকল রাজচিহ্নই পরিত্যাগ করিয়াছিলেন, তাহাতে তাঁহাকে অন্যের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; একছড়া একলহরী হারমাত্র অলঙ্কার ছিল, অত্যন্ত নির্ম্মল চন্দনে কোমল দেহখানি শুভ্রবর্ণ করিয়াছিল, এক কর্ণে একটি দন্তপত্র সংলগ্ন ছিল, অপর কর্ণে চন্দ্রকলা ও পুষ্পকলিকার ন্যায় কোমল একটি কুমুদ-দল ধারণ করিতেছিলেন, জ্যোৎস্নার ন্যায় শুভ্রবর্ণ কল্পবৃক্ষ হইতে উৎপন্ন দু'খানি সূক্ষ্মবস্ত্র পরিধান করিয়াছিলেন; সেই সময়ের সেই মনোহর বেশে কাদম্বরীকে সাক্ষাৎ চন্দ্রোদয়ের দেবতার ন্যায় দেখা যাইতেছিল; আর তিনি মদলেখার হস্ত ধারণ করিয়া আসিতেছিলেন। (ঞ) কাদম্বরী আসিয়া স্নেহের সৌন্দর্য্য দেখাইয়া সাধারণ স্ত্রীলোকের ন্যায় ভূতলে উপবেশন করিলেন। "রাজকুমার! আপনি প্রস্তরখণ্ডের উপরেই উপবেশন করুন" মদলেখা এইরূপ বারংবার অনুরোধ করিলেও, চন্দ্রাপীড়ও ভূতলেই উপবেশন করিলেন।

---

(১) प्राकृती।

अथ (१) सर्वासु आसीनासु तासु मुहूर्त्तमिव स्थित्वा वक्तुमुपचक्रमे चन्द्रापीडः—"देवि! दृष्टिपातमात्रप्रीते (२) दासजने सम्भाषणादिकस्यापि प्रसादस्य नास्त्यवकाशः, किमुतैतावतोऽनुग्रहस्य। न खलु चिन्तयन्नपि निपुणं तमात्मनो गुणलवमवलोकयामि, यस्यायमनुरूपोऽनुग्रहातिरेकः (ट)। अतिसरला सर्वेयमपगताभिमानमधुरा च सुजनता, यदभिनवसेवकजनेऽप्येवमनुबध्यते (ठ)। प्रायेण मामुपचारकार्य्यमदक्षिणं देवी मन्यते (ड) धन्यः खलु परिजनस्ते, यस्योपरि नियन्त्रणा स्यात् (ढ)। आज्ञासंविभागकरणोचिते

(ट) अथेति। दासजने मयीति तात्पर्य्यम्। प्रसादस्य अनुग्रहस्य। एतावतः सम्भाषणाद्यागमनपर्य्यन्तस्य। निपुणं सविशेषम्। गुणलवं गुणलेशम्।

(ठ) अतीति। सर्वेयं सुजनता सौजन्यं, अतिसरला कापट्यरहिता, अपगतो दूरीभूतः अभिमानो यस्याः सा चासौ अतएव मधुरा चेति सा। अनुबध्यते अनुसरति प्रवर्त्तते सा सुजनतेत्यर्थः। अवशास्थानेऽपि प्रयुक्तायाः सुजनताया माधुर्य्यं स्यादेवेति भावः।

(ड) प्रायेणेति। देवी भवती कादम्बरी, मां उपचारेण सम्भाषणादिवाक्यव्यवहारेण कार्य्यं वशीकर्त्तुं योग्यं, अतएव अदक्षिणमनुदारप्रकृतिमगुणज्ञमिति यावत्। अन्यथैवमुपचाराय न यतेतेति भावः। एतेनाहं दाक्षिण्यवशाद्युष्माकं गुणेनैव वशीभूतोऽस्मीति व्यज्यते।

(ढ) धन्य इति। नियन्त्रणा दुष्करकार्य्यभारार्पणेन यातना। तादृशनियन्त्रणाभावादहमधन्य इति भावः।

(ण) आज्ञेति। आज्ञायाः संविभागकरणे सम्यग्विभज्यार्पणे उचिते योग्यजने, भृत्यजने क इवादरः को बहुमानः, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः। अतएव मम सम्भाषणायागमनस्य किमपि प्रयोजनं नासीदिति भावः।

(ট) তাহার পর তাহারা সকলেই উপবেশন করিলে চন্দ্রাপীড় বলিতে আরম্ভ করিলেন—"দেবি! কেবল দৃষ্টিপাত করিলেই যে ব্যক্তি সন্তুষ্ট হইয়া থাকে, সেই দাসের প্রতি সম্ভাষণ-প্রভৃতি অনুগ্রহেরও প্রয়োজন নাই; সুতরাং এত অনুগ্রহের কথা আর কি বলিব। আমি বিশেষ চিন্তা করিয়াও, নিজের সেরূপ গুণের লেশও দেখিতেছি না,—যাহার উপযুক্ত মনে করিয়া আপনি এইরূপ অত্যন্ত অনুগ্রহ করিয়াছেন। (ঠ) আপনার এই সৌজন্য অত্যন্ত সরল ও অভিমান নাই বলিয়া বড়ই মধুর; যেহেতু, নূতন সেবকের প্রতিও এইভাবে উপস্থিত হইয়াছে। (ড) সম্ভবতঃ আপনি আমাকে অনুদারস্বভাব ও বাহিরের ব্যবহারেই বশ করার যোগ্য বলিয়া মনে করেন। (ঢ) আপনার পরিজনবর্গই ধন্য, যাহাদের উপরে আপনার আজ্ঞাপ্রয়োগ হইয়া থাকে। (ণ) পৃথক্ পৃথক ভাবে আজ্ঞা করিবার যোগ্য ভৃত্য-

(१) क्वचित् 'अथ' इति नास्ति। (२) दृष्टिमात्रप्रीते।

भृत्यजने क इवादरः (ण)। परोपकारोपकरणं शरीरम्, तृण-लव-लघु च जीवितमपचपे (१) त्वत्प्रतिपत्तिभिरुपायनीकर्त्तुमागतायास्ते (२) (त)। वयमेते शरीरमिदमेतज्जीवितमेतानीन्द्रियाणि, एतेषामन्यतरदारोपय परिग्रहेण गरीयस्त्वम्" इति। (थ)

अथैवंवादिनोऽस्य वचनमाक्षिप्य मदलेखा सस्मितमवादीत्—"कुमार! भवतु, अतियन्त्रणया खिद्यते खलु सखी कादम्बरी,(३) किमर्थमेवमुच्यते, सर्वमिदमन्तरेणापि वचनमनया परिगृहीतम्, किं पुनरमुनोपचारफल्गुना वचसा सन्देह-

(त) परेति। आगताया अत्रोपस्थितायास्ते तव समीपे, त्वत्प्रतिपत्तिभिस्त्वां प्रति भक्तिभिः, परोपकारस्य उपकरणं साधनं इदं शरीरं, तथा तृणस्य लववत् कणवत लघु इदं जीवितञ्च, उपायनीकर्त्तुं उपहारभावेन दातुं, अहमपत्रपे लज्जे, शरीरस्य स्वभावत एव यस्य कस्यापि परस्योपकारसाधनत्वेन त्वयि विशेषाभावात् जीवनस्य च तृणलवलघुत्वेन तुच्छतया तद्दानेन गौरवप्रदर्शनाभावादिति भावः।

(थ) वयमिति। एते वयं, इदं शरीरं, एतज्जीवितं, एतानि इन्द्रियाणि परिग्रहेण ग्रहणेन एतेषां मध्ये अन्यतरत् एकतमदित्यर्थः गरीयस्त्वं महागौरवं भवतीति भावः। वयमिति "वास्मदश्च" इति बहुवचनम्। अत्रान्यतरदिति दर्शनाद्बहूनामेकतमप्रत्यायनेऽपि डतरप्रत्यय इति दुर्गमतम्।

(द) अथेति। अस्य चन्द्रापीडस्य। आक्षिप्य बाधित्वा। अतियन्त्रणया अत्यन्तस्तुतिवादबाधया। खिद्यते आत्मनि तादृशगुणाभावेनोपहासप्रतीतेरिति भावः। इदं वचनमन्तरेणापि भवतोक्तं "वयमेते" इत्यादि वाक्यं विनापि, अनया कादम्बर्या सर्वं त्वदादिकं परिगृहीतमिति परिहसितं, अथ च पतित्वेन मनसा परिगृहीतमिति ध्वनितम्। अतएव उपचारे बहिर्व्यवहारे फल्गुना असारेण निरर्थकेन अमुना वयमित्यादिना वचसा किं पुनः सन्देहदोलामारोप्यते कादम्बरी संशयाकुला क्रियते। निर्दिष्टविषये पुन निर्बन्धेन संशयोदयस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः।

জনের প্রতি আবার আদর কি? (ত) এই শরীর, স্বভাবতই পরের উপকারের জন্য, জীবনও তৃণবিন্দুর ন্যায় লঘু; সুতরাং আপনার প্রতি ভক্তিবশতঃ সেই শরীর ও সেই জীবন আপনাকে উপহার দিতে আমি লজ্জিত হইতেছি। (থ) এই আমি, এই শরীর, এই জীবন এবং এই ইন্দ্রিয় সকল—ইহার মধ্যে যে কোন একটিকে আপনি গ্রহণ করিয়া তাহাকে অত্যন্ত-গৌরবান্বিত করুন।"

(দ) চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিতেছিলেন, তখন তাঁহার বাক্যে বাধা দিয়া মদলেখা ঈষৎ হাস্য করিয়া বলিল—"রাজপুত্র! হউক, আপনার অত্যন্ত স্তুতিবাদের যন্ত্রণায় সখী কাদম্বরী গ্লানি ভোগ করিতেছেন; আপনি কেনই বা এরূপ বলিতেছেন; আপনার এই সকল বাক্য ব্যতীতও ইনি সমস্তই গ্রহণ করিয়াছেন; অতএব বাহিরের ব্যবহারের অনর্থক বাক্যে কেন আবার

(१) अपत्रपे। (२) तत्प्रतिपत्तिभिरुपायनीकर्त्तुमागतास्मि। (३) सखी कादम्बरी।

दोलामारोप्यते" इति (द) स्थित्वा च कञ्चित् कालं कृतप्रस्तावा "कथं राजा तारापीड़ः, कथं देवी विलासवती, कथमार्य्यः शुकनासः, कीदृशी चोज्जयिनी, कियत्यध्वनि सा च, कीदृग्भारतं वर्षम्, रमणीयो वा मर्त्त्यलोकः" इत्यशेषं पप्रच्छ (ध) एवंविधाभिश्चान्याभिः कथाभिः सुचिरं स्थित्वोत्थाय कादम्बरी केयूरकं चन्द्रापीड़-समीपशायिनं समादिश्य परिजनञ्च, शयनसौधशिखर-मारुरोह (न)। तत्र च सितदुकूलवितानतलास्तीर्णं शयनीयमलञ्चकार। चन्द्रापीड़ोऽपि तस्मिन्नेव शिलातले निरभिमानतामभिरूपतामतिगम्भीरताञ्च कादम्बर्य्याः, निष्कारणवत्सलताञ्च महाश्वेतायाः, सुजनताञ्च मदलेखायाः, महानुभावताञ्च परिजनस्य, अतिसमृद्धिञ्च गन्धर्वराजलोकस्य, रम्यताञ्च किम्पुरुष-देशस्य मनसा भावयन् केयूरकेण संवाह्यमानचरणः क्षणादिव क्षणदां क्षपित-वान्। (प)

(ध) स्थित्वेति। कृतप्रस्तावा जिज्ञासायां गृहीतावसरा मदलेखा। कथं कीदृश इत्यर्थः। सा उज्जयिनी कियत्यध्वनि इतः कियद्दूर इत्यर्थः।

(न) एवमिति। चन्द्रापीड़स्य समीपशायिनं समीपे शयितुमित्यर्थः। परिजनञ्च सेवितुं समादिश्ये-त्यन्वयः। शयनसौधस्य शिखरं उपरितलम्।

(प) तत्रेति। सितं शुभ्रं यद्दुकूलस्य वितानं क्षौमवसनस्य चन्द्रातपस्तस्य तले अधोदेशे आस्तीर्णं पातितं शयनीयं शय्यां अलञ्चकार शयनेनेति शेषः। अभिरूपता सौन्दर्य्यम्। अतिगम्भीरता अत्यन्तदुर्बोध-स्वभावताम्। महानुभावतां उदारस्वभावताम्। क्षणदां रात्रिम्। क्षपितवान् अतिवाहितवान्।

ইহাকে সন্দেহদোলায় আরোহণ করাইতেছেন।" (ধ) তাহার পর কিছুকাল থাকিয়া জিজ্ঞাসা করিবার প্রস্তাব করিয়া মদলেখা এই সমস্ত জিজ্ঞাসা করিল—'মহারাজ তারাপীড় কেমন, মহারাণী বিলাসবতীই বা কেমন, মাননীয় শুকনাস কিরূপ, উজ্জয়িনী কি রকম, এখান হইতে উজ্জয়িনী কত দূরে, ভারতবর্ষটি কেমন এবং মর্ত্ত্যলোকই বা সুন্দর কি না। (ন) কাদম্বরী, এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম কথাবার্ত্তায় বহু সময় সেখানে থাকিয়া, উঠিয়া, কেয়ূরককে চন্দ্রাপীড়ের নিকটে শয়ন করিতে এবং পরিজনদিগকে তাঁহার পরিচর্য্যা করিতে আদেশ করিয়া, শয়নের অট্টালিকার উপরে যাইয়া আরোহণ করিলেন। (প) সেখানে শুভ্রবর্ণ পট্টবসননির্ম্মিত চন্দ্রাতপের নীচে একখানি শয্যা পাতিত ছিল, কাদম্বরী শয়ন করিয়া, সেখানিকে অলঙ্কৃত করিলেন। চন্দ্রাপীড়ও, কাদম্বরীর নিরহঙ্কারতা, সৌন্দর্য্য ও গাম্ভীর্য্য, মহাশ্বেতার অকারণবাৎসল্য, মদলেখার সৌজন্য, পরিজনবর্গের উদার স্বভাব, গন্ধর্ব্বরাজের অত্যন্ত সমৃদ্ধি এবং কিন্নরদেশের রমণীয়তা ভাবিতে লাগিলেন, এদিকে কেয়ূরক তাঁহার চরণ-

अथ क्रमेण कादम्बरीदर्शन-प्रजागरखिन्नः स्वप्तुमिव ताल-तमाल-ताली-कदली-कन्दलिनीं प्रविरल-कल्लोलानिल-शीतलां वेलावनराजिमवततार तारापतिः (फ)। अभ्यर्णविरहविधुरस्य च कामिनीजनस्य निश्वसितैरिव (१) उष्णैर्म्लानिमनीयत चन्द्रिका (ब)। चन्द्रापीड-विलोकनारूढमदनेव कुमुददलोदरनीतनिशा पङ्कजेषु निपपात लक्ष्मीः (भ)। क्षणदापगमे च स्मृत्वा कामिनीकर्णोत्पल-प्रहाराणां (२) उत्कण्ठितेष्विव क्षामतां व्रजत्सु पाण्डुतनुषु वासगृह-

(फ) अथेति। कादम्बर्या दर्शनेन यः प्रजागरः कामोत्कण्ठया जागरणं तेन खिन्नः क्लान्तः, तारापतिश्चन्द्रः, स्वप्तुं निद्रातुमिव, तालतमालतालीकदलीनां कन्दलं समूहः अस्या अस्तीति ताम्, प्रविरलैरल्पाल्पैः कल्लोलानिलैः सागरस्य क्षुद्रतरङ्गवातैः शीतलां, वेलावनराजिं तीरस्थवनश्रेणीं अवततार अस्तोन्मुखो बभूवेत्यर्थः। अन्योऽपि जागरणक्लान्तो निद्रातुं निभृतशीतलदेशमवलम्बते। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) अभ्यर्णेति। चन्द्रिका ज्योत्स्ना, अभ्यर्णेन दिनोपस्थितेर्निकटवर्त्तिना विरहेण प्रियविच्छेदेन विधुरस्य विह्वलस्य कामिनीजनस्य, उष्णैर्निःश्वसितैर्म्लानिमनीयतेव। उष्णवायुना कोमलपल्लववदिति भावः। दिनागमात् ज्योत्स्नाया उज्ज्वलता विलुप्तेत्यर्थः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(भ) चन्द्रेति। चन्द्रापीडस्य विलोकनेन आरूढ उपस्थितो मदनो यस्यां सा तादृशीव, लक्ष्मीः शोभा कापि नायिका च, कुमुददलानां उदरेषु अभ्यन्तरेषु नीता अतिवाहिता निशा यया सा तादृशी सती, पङ्कजेषु पद्मेषु निपपात अधितष्ठौ। अन्यापि कामोन्मत्ता शैत्यसेवनाय कुमुदेषु क्वचित् पद्मेषु च निपतति। रात्रौ कुमुदानां विकाशात्तेषु शोभासीत्,, दिनागमे तु मुद्रिततया तानि विहाय विकसत्सु पङ्कजेषु गतेति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(म) क्षणदेति। किञ्च, रिरंसुना वल्लभेन समाकृष्यमाणे वसने कामिन्यो लज्जया कर्णोत्पलप्रहारेण प्रदीपान्निर्वापयन्तीति प्रसिद्धिः। सुतरां क्षणदापगमे रात्रिशेषे, पाण्डुतनुषु, क्रमेण दिवालोकप्रकाशाद्विरहाच्चेति

যুগল সংবাহন করিতে লাগিল,—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সেই প্রস্তরখণ্ডের উপরে থাকিয়াই, ক্ষণকালের ন্যায় সেই রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

(ফ) তাহার পর চন্দ্র, কাদম্বরীর দর্শনে উৎকণ্ঠাবশতঃ জাগরণ করায় ক্লান্ত হইয়া নিদ্রা যাইবার জন্যই যেন, তাল, তমাল, তাড়িয়াৎ ও কদলীবৃক্ষে পরিপূর্ণ এবং অল্প অল্প তরঙ্গবায়ুতে শীতল সমুদ্রতীরস্থ বনশ্রেণীর ভিতর ক্রমে ক্রমে নামিতে লাগিলেন। (ব) আসন্ন বিরহে বিহ্বল কামিনীগণের উষ্ণ নিশ্বাসেই যেন জ্যোৎস্নাকে মলিন করিল। (ভ) চন্দ্রাপীড়কে দর্শন করায় কামসন্তপ্ত হইয়াই যেন শোভা, কুমুদপত্রের মধ্যে রাত্রি অতিবাহিত করিয়া, সেই সময়ে পদ্মের উপরে পতিত হইতে লাগিল। (ম) রাত্রিশেষে বাসগৃহের প্রদীপগুলি, কামিনীগণের কর্ণোৎপলের প্রহার স্মরণ করিয়া উৎকণ্ঠিত হইয়াই যেন পাণ্ডুশরীরে ক্ষীণ হইতে

(१) निःश्वसितैरिव। (२)...प्रहारान्।

प्रदीपेषु, (म) अनवरत-शर-क्षेप-खिन्नानङ्ग-निश्वास-(१) विभ्रमेषु वहत्सु तरुलता-(२) कुसुम-परिमलेषु प्रभातमातरिश्वसु, (य) मन्दरगिरिलतागृह-गमनानि च (३) भियेव भजन्तीष्वरुणोदयोपप्लविनीषु तारकासु, (र) क्रमेण च समुद्गते चक्रवाक-(४) हृदय-निवास-लग्नानुरागमिवालोहितं (५) मण्डलमुद्वहति सवितरि, (ल) चन्द्रापीड़ः शिलातलादुत्थाय प्रक्षालितमुखकमलः कृत-सन्ध्यानमस्कृतिर्गृहीतताम्बूलः (६) "केयूरक! विलोकय देवी कादम्बरी प्रबुद्धा न वा, क्व वा तिष्ठति" इत्यवोचत्। (व)

भावः, वासगृहप्रदीपेषु कामिनीनां कर्णोत्पलैर्यं प्रहारास्तेषां स्मृत्वा तान् विचिन्तयत्स्वर्थः। "स्मृत्यर्थकर्मणी"ति कर्म्मणि षष्ठी। उत्कण्ठितेष्विव पुनस्तदर्थं सञ्जातोत्कण्ठेष्विव, श्यामतां क्षीणत्वं व्रजत्सु सत्सु। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अनेति। अनवरतशरक्षेपेण रात्रौ कामुकान् प्रति अजस्रबाणवर्षेण खिन्नस्य परिश्रान्तस्य अनङ्गस्य मदनस्य ये निश्वासास्तेषां विभ्रमा इव विभ्रमा विलासा येषां तेषु, तरुलताकुसुमानां परिमला विमर्द्दगन्धा येषु तेषु, प्रभातमातरिश्वसु प्रत्यूषवायुषु वहत्सु सत्सु। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(र) मन्दरेति। किञ्च, अरुणोदयेन उपप्लवस्तेजोविनाशाद्विपदासामस्तीति तासु, तारकासु नक्षत्रेषु, भियेव सूर्य्योदयभयेनेव, मन्दरगिरेर्लतागृहेषु गमनानि भजन्तीषु कुर्वतीषु सतीषु। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। मन्दरस्य प्राच्यां स्थितत्वात्तत्रताराणां प्रायेण तस्यामेवास्तगमनादियमुक्तिरिति बोध्यम्।

(ल) क्रमेणेति। किञ्च, चक्रवाकानां रात्रिविरहिणां चक्रवाकदम्पतीनां हृदये निवासेन स्वोदये तेषां पुनःसंयोगस्य भावित्वेन रात्रौ सततमेव तैः स्वस्य भावितत्वादिति भावः, लग्नस्तेषां हृदयादेव संसक्तः अनुरागः सूर्य्यं प्रति स्नेह एवानुरागो लौहित्यं यत्र तदिव, आलोहितं आरक्तवर्णं मण्डलं उद्वहति धारयति सवितरि सूर्य्ये, क्रमेण समुद्गते सति। अत्र स्नेहलौहित्ययोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) चन्द्रेति। कृते सन्ध्यानमस्कृती सन्ध्यावन्दनाभीष्टदेवतानमस्कारौ येन सः। प्रबुद्धा जागरिता।

লাগিল। (য) রাত্রিতে কামুকগণের প্রতি অবিশ্রান্ত বাণ বর্ষণ করায় পরিশ্রান্ত কামদেবের নিশ্বাস-বায়ুর ন্যায় বিলাসসম্পন্ন এবং তরু-লতা-জাত পুষ্পের সৌরভবাহী প্রভাত বায়ু বহিতে হইতে লাগিল। (র) অরুণোদয়ে বিপন্ন নক্ষত্রগণ, ভয়বশতই যেন মন্দরপর্ব্বতের লতাগৃহে প্রবেশ করিতে লাগিল। (ল) এবং চক্রবাকদম্পতিগণের হৃদয়ে নিবাসবশতঃ তাহা হইতে রাগ সংলগ্ন হওয়াই যেন আরক্তবর্ণ মণ্ডল ধারণ করিয়া সূর্য্যদেব, ক্রমে উদয় পাইলেন। (ব) এমন সময়ে চন্দ্রাপীড় সেই শিলার উপর হইতে উঠিয়া, মুখকমল প্রক্ষালন সন্ধ্যাবন্দন,

---

(१)...निःश्वास...। (२) लता...। (३)...गमनानि च।
(४) समुद्गतचक्रवाक..। (५) लौहित्यं। (६) आवद्धमेखरो गृहीत

गतप्रतिनिवृत्तेन च तेन "मन्दरप्रासादस्याधस्तादङ्गनसौध-वेदिकायां महाश्वेतया सहावतिष्ठते" इत्यावेदिते गन्धर्वराज-तनयामालोकयितुमाजगाम (श)। ददर्श च धवलभस्मकृतललाटिकाभिः (१) अक्षमालिका-(२) परिवर्त्तन-प्रचल-करतलाभिः पाशुपतव्रतचारिणीभिर्धातुरागारुणाम्बराभिश्च परिव्राजिकाभिः,(ष) परिणत-तालफल-वल्कल-लोहित-वस्त्राभिश्च रक्तपटव्रतवाहिनीभिः सित-वसन-निविड़-निबद्ध-स्तन-परिकराभिश्च श्वेतपटव्यजनाभिः (३) जटाजिन-मौञ्जी-वल्कलाषाढ़धारिणीभिर्वर्णिचिह्नाभिस्तापसीभिः, साक्षादिव मन्त्रदेवताभिः

(श) गतेति। आदौ गतः अनन्तरं प्रतिनिवृत्त इति तेन तथोक्तेन, तेन केयूरकेण। मन्दरनामकः प्रासादो मन्दरप्रासादस्तस्य, अङ्गने चत्वरे या सौधवेदिका सुधाशुभ्रचूर्णलिप्तबद्धभूमिस्तस्याम्।

(ष) ददर्शेति। चन्द्रापीड़ो महाश्वेतां कादम्बरीञ्च ददर्श चेत्यन्वयः। प्रथमं महाश्वेतां विशेषयन्नाह धवलेति। धवलभस्मभिः कृता ललाटिका ललाटे क्षुद्रतिलकविशेषा याभिस्ताभिः। अक्षमालिकानां जपमालानां परिवर्त्तने प्रचलानि चलितानि करतलानि यासां ताभिः। पाशुपतव्रतचारिणीभिः शैवव्रतानुष्ठायिनीभिः तथा धातुरागेण गैरिकरञ्जनेन अरुणानि रक्तवर्णानि अम्बराणि वसनानि यासां ताभिश्च, परिव्राजिकाभिः सन्न्यासिनीभिः, उपास्यमानामिति परेणान्वयः।

(स) परीति। किञ्च, परिणतं पक्वं यत्तालफलं तस्य वल्कलवत् लोहितं वस्त्रं यासां ताभिः। रक्तपटः शाक्यभिक्षुविशेषस्तस्य व्रतं नियमं वहन्ति धारयन्तीति ताभिः। सितवसनैः शुभ्रवस्त्रैर्निविड़ं दृढ़ं निबद्धाः स्तनपरिकराः स्तनमण्डलानि याभिस्ताभिः। श्वेतपट एव व्यजनं यासां ताभिः। जटा, अजिनं कृष्णसारचर्म्म, मौञ्जी मेखला, वल्कलं, आषाढं दण्डञ्च धारयन्तीति ताभिः। वर्णिनो ब्रह्मचारिणश्चिह्नं लक्षणं

ইষ্টদেবতা নমস্কার ও তাম্বূলচর্ব্বণ করিয়া বলিলেন—"কেয়ূরক! দেখ দেখি, কাদম্বরীদেবী জাগিয়াছেন কি না এবং কোথাই বা আছেন।"

(শ) কেয়ূরক যাইয়া পুনরায় ফিরিয়া আসিয়া জানাইল যে—"দেব! তিনি মন্দর-দালানের নীচে উঠানের রোয়াকের উপরে মহাশ্বেতার সহিত অবস্থান করিতেছেন।" তাহার পর চন্দ্রাপীড়, কাদম্বরীর সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্য সেখানে আসিলেন। (ষ) আসিয়া, মহাশ্বেতা ও কাদম্বরীকে দেখিতে পাইলেন; কতকগুলি পরিব্রাজিকা মহাশ্বেতার সন্তোষ-বিধান করিতেছিল; তাহারা শুভ্রবর্ণ ভস্মদ্বারা ললাটে তিলক করিয়াছিল, জপের মালা ফিরাইতে থাকায় তাহাদের করতল চলিতেছিল, তাহারা শৈবব্রত আচরণ করিতেছিল এবং তাহাদের পরিধানে গৈরিকরাগে রঞ্জিত রক্তবর্ণ বস্ত্র ছিল। (স) কতকগুলি তপস্বিনীও মহাশ্বেতার সেবা করিতেছিল; তাহারা পক্বতালফলের বল্কলের ন্যায় রক্তবর্ণ বস্ত্র পরিধান করিয়াছিল, শাক্যভিক্ষুর ব্রত আচরণ করিতেছিল, শুভ্রবর্ণ বস্ত্র দ্বারা দৃঢ়ভাবে স্তনমণ্ডল বন্ধন

---

(१) धवलभस्मललाटिकाभिः। (२) अक्षमाला···। (३)···व्यजनाभिः।

पठन्तीभिर्भगवतस्त्र्यम्बकस्याम्बिकायाः कार्त्तिकेयस्य विष्टरश्रवसः (१) कृष्णस्य (२) आर्यावलोकितेश्वरस्यार्हतो विरिञ्चस्य (३) पुण्याः स्तुतीरुपास्यमानाम्, (ङ) अन्तःपुराभ्यर्हिताश्च सादरं नमस्कारैराभाषणैरभ्युत्थानैरासन्नवेत्रासनदानैश्च दर्शनागत-गन्धर्वराजबान्धववृद्धाः (४) सम्मानयन्तीं महाश्वेताम्, (च) पृष्ठतश्च समुपविष्टेन किन्नरमिथुनेन मधुकरमधुराभ्यां वंशाभ्यां दत्ते ताने (५) कलगिरा गायन्त्या नारददुहित्रा पठ्यमाने च सर्वमङ्गलमहीयसि महाभारते दत्ताव-

---

वाढ ताभिः। साक्षान्मन्त्रदेवताभिरिव स्थिताभिः। त्र्यम्बकस्य शिवस्य, अम्बिकाया दुर्गायाः, कार्त्तिकेयस्य, विष्टरश्रवसो नारायणस्य, कृष्णस्य वासुदेवस्य, आर्यावलोकितेश्वरस्य बौद्धस्य, अर्हतस्तीर्थकरस्य, विरिञ्चस्य ब्रह्मणश्च, पुण्याः पवित्राः स्तुतीः स्तवान् पठन्तीभिस्तापसीभिश्च, उपास्यमानां सेव्यमानाम्। अत्र साक्षान्मन्त्रदेवताभिरिवेति जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) अन्तरिति। किञ्च, अन्तःपुरेषु मध्ये या अभ्यर्हिता पूजनीयास्ताः। आसन्ने समीपे वेत्रासनदानैः। दर्शनायागता या गन्धर्वराजस्य चित्ररथस्य बान्धववृद्धा ज्ञातिवृद्धा योषितः।

(च) पृष्ठत इति। किञ्च, पृष्ठतः कादम्बर्या एव पश्चाद्भागे। मधुकरमधुराभ्यां भ्रमररववत् सुश्राव्यस्वराभ्यां वंशाभ्यां वेणुभ्यां, ताने अविच्छिन्नस्वर-प्रवाहे, दत्ते गानस्वरमिश्रणार्थं विहिते "गाता यं यं स्वरं गायेत्तं वंशेन तानयेत्" इति भरतोक्तिः। कलगिरा मधुरवाक्यया। नारददुहित्रा भद्रानामिकया नारदस्य धर्म्मकन्यया, पाठ्यमाने व्याख्यायमाने उच्चार्य्यमाणे वा, सर्वेभ्यो मङ्गलेभ्यो मङ्गलजनकेभ्यो ग्रन्थेभ्यः महीयसि अतीवप्रधाने महाभारते ग्रन्थे दत्तावधानामिति कादम्बरीमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्।

করিয়াছিল, শুভ্রবসনের ব্যঞ্জন ধারণ করিতেছিল ; জটা, কৃষ্ণসারের চর্ম্ম, মুঞ্জমেখলা, বল্কল ও দণ্ড ধারণ করিতেছিল এবং তাহাদের সমস্তই ব্রহ্মচারীর লক্ষণ ছিল ; আর তাহাদের মধ্যে কেহ ভগবান্ মহাদেবের, কেহ দুর্গার, কেহ কার্ত্তিকের, কেহ নারায়ণের, কেহ কৃষ্ণের, কেহ বৌদ্ধের, কেহ তীর্থকরের (জৈনবিশেষের) এবং কেহ ব্রহ্মার স্তব পাঠ করিতেছিল এবং তাহাদিগকে সাক্ষাৎ মন্ত্রদেবতার ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ঙ) আবার গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথের জ্ঞাতিবর্গের মধ্যে প্রাচীন এবং অন্তঃপুরের মধ্যে প্রধান এইরূপ কতকগুলি স্ত্রীলোক, সাক্ষাৎ করিবার জন্য আসিয়াছিলেন ; মহাশ্বেতা তাঁহাদিগকে নমস্কার, সম্ভাষণ, গাত্রোত্থান ও নিকটে বেত্রাসন-প্রদান দ্বারা, সম্মানিত করিতেছিল। (চ) এদিকে দুইটি কিন্নর, কাদম্বরীর পিছনে বসিয়া ভ্রমরধ্বনির ন্যায় সুমধুর বংশীস্বরে তান দিতেছিল ; আর নারদের ধর্ম্মকন্যা মধুরভাষিণী ভদ্রাদেবী গান করতঃ, সমস্ত মাঙ্গলিক গ্রন্থের মধ্যে উৎকৃষ্ট মহাভারত গ্রন্থ পাঠ করিতেছিলেন ; কাদম্বরী একাগ্রচিত্তে তাহা শুনিতেছিলেন। (ছ) আর কোন পরিচারিকা,

---

(१) विश्रवसः। (२) अर्ज्जुनस्य, जिनस्य। (३) वैश्वदेवस्य मार्त्तण्डस्य विरिञ्चस्य।
(४) क्वचित् दर्शनागतेति पाठो नास्ति। (५) तानि।

धानाम् (च) पुरोधृते च मणिदर्पणे (१) ताम्बूलराग-(२) बहलकृष्णिकान्धकारिताभ्यन्तरं दशन-ज्योत्स्ना-सिक्तमुन्मृष्ट-(३) मधूच्छिष्ट-पट्ट-पाटलमधरं विलोकयन्तीम्, (क) शैवालतृष्णया कर्णपूर-शिरीष-प्रेषितोत्तान-विलोचनेन बद्ध-मण्डलं भ्रमता भवनकलहंसेन प्रभातशशिनेव क्रियमाण-गमन-प्रणाम-प्रदक्षिणां कादम्बरीञ्च (ख)। समुपसृत्य कृतनमस्कारस्तस्यामेव सुधावेदिकायां विन्यस्तमासनं भेजे (ग) स्थित्वा च कञ्चित् कालं महाश्वेताया वदनं विलोक्य स्फुरितकपोलोदरं मन्दस्मितमकरोत् (घ)। असौ तु तावतैव विदिताभि-

---

(क) पुर इति। किञ्च, पुरोधृते कयापि परिचारिकया सम्मुखे रक्षिते। ताम्बूलरागेण बहला कृता या कृष्णिका श्यामता तया अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं मलिनीकृतमभ्यन्तरं यस्य तम्। दशनज्योत्स्नया दन्तकान्त्या सिक्तं धौतं। तथा उन्मृष्टो घृष्टो यो मधूच्छिष्टपट्टः सिक्थकपिण्डं तद्वत् पाटलं श्वेतरक्तमधरं विलोकयन्तीं कादम्बरीम्। 'मधूच्छिष्टन्तु सिक्थकम्'' इत्यमरः।

(ख) शैवलेति। शैवलतृष्णया शैवाललोभेन तद्भ्रमेणेत्यर्थः कर्णपूरशिरीषे कादम्बर्याः कर्णाभरणीकृतशिरीषपुष्पं प्रति प्रेषिते चालिते उत्ताने ऊर्द्धमुखे विलोचने चक्षुषी येन तेन, प्रभातशशिनेव बद्धं मण्डलं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा भ्रमता, भवनकलहंसेन, क्रियमाणानि गमनं समीपोपस्थितिः प्रणामो नमस्कारः प्रदक्षिणञ्च तानि यस्यास्ताम्। अत्र कर्णपूरशिरीषे शैवलभ्रमाद्भ्रान्तिमानुपमा चानयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ग)। समुपेति। समुपसृत्य कादम्बर्याः समीपं गत्वा। भेजे अध्यासामास चन्द्रापीड इति सम्बन्धः।

(घ) स्थित्वेति। स्फुरितं स्पन्दितं कपोलयोरुदरं मध्यभागो यस्मिन् तत्।

সম্মুখে একখানি মণিময় দর্পণ ধরিয়া রাখিয়াছিল; কাদম্বরী তাহাতে নিজের ওষ্ঠযুগল দেখিতেছিলেন; তাম্বূল চর্ব্বণ করায় শ্যামতা জন্মিয়া সেই ওষ্ঠযুগলের মধ্যস্থান শ্যামবর্ণ করিয়াছিল, দন্তের প্রভায় তাহা আবার পরিষ্কার দেখা যাইতেছিল এবং আবীর-চূর্ণের ন্যায় পাটলবর্ণ ছিল। (খ) এবং গৃহপালিত একটি কলহংস, শৈবাল (সেওলা) মনে করিয়া, কাদম্বরীর কর্ণাভরণ শিরীষপুষ্পের দিকে ঊর্দ্ধ-নয়নে চাহিতেছিল এবং প্রভাত-চন্দ্রের ন্যায় মণ্ডলাকারে ভ্রমণ করতঃ, কাদম্বরীর নিকটে যাইতেছিল, নমস্কার করিতেছিল ও প্রদক্ষিণ করিতেছিল। (গ) এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর নিকটে যাইয়া নমস্কার করিয়া, সেই শুভ্র বেদিকার উপরেই সংস্থাপিত একখানি আসনে উপবেশন করিলেন। (ঘ) এবং কিছুকাল থাকিয়া মহাশ্বেতার মুখ নিরীক্ষণ করিয়া ঈষৎ হাস্য করিলেন; তাহাতে তাঁহার গণ্ডযুগলের মধ্যভাগ স্পন্দিত হইল। (ঙ) কিন্তু মহাশ্বেতা সেই ঈষৎ হাস্যেই চন্দ্রাপীড়ের

---

(१) दर्पणे। (२) बहलताम्बूलराग...। (३) उन्मृष्ट...।

प्राया कादम्बरीमब्रवीत् "सखि! भवत्या गुणैश्चन्द्रापीडश्चन्द्रकान्त इव चन्द्रमयूखैरार्द्रीकृतो न शक्नोति वक्तुम् (ङ)। जिगमिषति खलु कुमारः, पृष्ठतो दुःखमविदितवृत्तान्तं राजचक्रमास्ते (च)। अपि च युवयोर्दूरस्थितयोरपि स्थितेयमिदानीं कमलिनीकमलबान्धवयोरिव कुमुदिनीकुमुदनाथयोरिव प्रीतिरा-प्रलयात्। अतोऽभ्यनुजानातु भवती" इति (छ)

अथ कादम्बरी "सखि! महाश्वेते! स्वाधीनोऽयं सपरिजनो जनः कुमारस्य स्व इवान्तरात्मा, क इवात्रानुरोधः" इत्यभिधाय गन्धर्वकुमारानाहूय "प्रापयत कुमारं स्वां भूमिम्" इत्यादिदेश (ज)। चन्द्रापीडोऽप्युत्थाय प्रणम्य प्रथमं

(ङ) असाविति। असौ महाश्वेता। तावतैव मन्दस्मितेनैव, विदिताभिप्राया अवगतचन्द्रापीड-मनोवृत्तिः सती। आर्द्रीकृत एकत्र जलनिर्गमात् क्लिन्नः, अन्यत्र वशीकृतः। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(च) किं वक्तव्यमित्याह जिगमिषतीति। तत्र हेतुमाह पृष्ठत इति। न विदितो वृत्तान्तश्चन्द्रा-पीडवार्त्ता येन तत्, राजचक्रं सैनास्थराजगणः, दुःखमास्ते दुःखाकुलं वर्त्तते।

(छ) अपीति। कमलिनीकमलबान्धवयोः पद्मिनीसूर्य्ययोः। कुमुदिनीकुमुदनाथयोः कैरविणीचन्द्रयो-रिव। अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां पद्मिनीसूर्य्ययोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः श्रौतोपमा चानयो-रेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः, अपरोऽपि तद्वदेव सङ्करः, तयोश्च पुनर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः, तया च कादम्बरीचन्द्रापीडयोरपि नायिकानायकभावो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ज) अथेति। सपरिजनः अयं मल्लक्षणो जनः, कुमारस्य स्वः अन्तरात्मेव स्वस्य अधीनः, अतएवात्र गमनविषये क इवानुरोधो ममाभ्यनुज्ञाग्रहणाग्रहः, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः, भृत्यात् प्रभोरनुमति-ग्रहणापेक्षाभावादिति भावः। श्रौतोपमा वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

অভিপ্রায় বুঝিয়া কাদম্বরীকে কহিল—"সখি! চন্দ্রের কিরণে চন্দ্রকান্তমণির ন্যায় তোমার গুণে চন্দ্রাপীড় একেবারে গলিয়া গিয়াছেন; তাই নিজে বলিতে পারিতেছেন না। (চ) মোট কথা—রাজকুমার যাইতে ইচ্ছা করিতেছেন; কারণ—পিছনের দিকে রাজগণ রাজকুমারের বৃত্তান্ত না জানায় দুঃখিত হইয়া অবস্থান করিতেছেন। (ছ) আরও দেখ—পদ্মিনী ও সূর্য্যের ন্যায় এবং কুমুদিনী ও চন্দ্রের ন্যায় তোমরা পরস্পরের দূরে থাকিলেও তোমাদের এই প্রণয় এখন হইতে প্রলয় পর্য্যন্ত থাকিবে; অতএব যাইবার জন্য কুমারকে অনুমতি কর।"

(জ) তাহার পর কাদম্বরী কহিলেন—"সখি! মহাশ্বেতে! নিজের অন্তরাত্মার ন্যায় পরিবারবর্গের সহিত এই ব্যক্তি কুমারের অধীন; অতএব এ বিষয়ে একটা অনুরোধ কি?" এই কথা কহিয়া গন্ধর্ব্বকুমারদিগকে ডাকিয়া—"তোমরা রাজপুত্রকে নিজের জায়গায় রাখিয়া আইস" এইরূপ আদেশ করিলেন। (ঝ) চন্দ্রাপীড়ও উঠিয়া প্রথমে মহাশ্বেতাকে, তাহার

मभ्यर्च्य तां, ततः कादम्बरीं, तस्याश्च प्रेमस्निग्धेन चक्षुषा मनसा च गृह्यमाणः— "देवि! किं ब्रवीमि, बहुभाषिणः (१) न श्रद्दधाति लोकः, स्मर्त्तव्योऽस्मि परिजनकथासु" इत्यभिधाय कन्यकान्तःपुरान्निर्जगाम (झ)। कादम्बरीवर्ज्जः (२) अशेषः कन्यकाजनो गुणगौरवाकृष्टः परवश इव तं व्रजन्तमावहिस्तोरणादनुवव्राज। (ञ)

निवृत्ते च कन्यकाजने केयूरकेणोपनीतं वाजिनमारुह्य गन्धर्वकुमारकैस्तैरनुगम्यमानो हेमकूटात् प्रवृत्तो गन्तुम् (ट)। गच्छतश्चास्य चित्ररथतनया न केवलमन्तर्बहिरपि सैव सर्वाशानिबन्धनमासीत् (ठ)। तथाहि, तन्मयेन मानसेनासह्यविरहदुःखानुशयलग्नामिव पृष्ठतः, कृतमार्गगमननिरोधामिव

(झ) चन्द्रेति। प्रेमस्निग्धेन अनुरागार्द्रेण। गृह्यमाणो विषयीक्रियमाणः सन्। श्रद्दधाति विश्वसिति, अतोऽल्पाक्षरैव ब्रवीमीति भावः। किन्तद्वक्तव्यमित्याह स्मर्त्तव्य इति। एतेनात्मनः परिजनत्वं सूचितम्।

(ञ) काद्वेति। कादम्बरीं वर्जयतीति सः, कादम्बरीव्यतिरिक्त इत्यर्थः। परवश इव चन्द्रापीडायत्त इव। तं चन्द्रापीडम्। आवहिस्तोरणात् वहिर्द्वारं यावत्।

(ट) निवृत्त इति। उपनीतमुपस्थापितं, वाजिनमश्वम्। गन्तुं प्रवृत्तोऽभूदिति शेषः।

(ठ) गच्छत इति। अस्य, अस्य चन्द्रापीडस्य। अन्तरन्तःकरणे सर्वासामाशानामाकाङ्क्षाणां निबन्धनं कारणं, तथा बहिरपि सर्वासामाशानां दिशां निबन्धनं निरोधहेतुः।

(ड) बहिर्निरोधहेतुत्वं प्रतिपादयितुमाह तथाहीति। तन्मयेन कादम्बरीमयेन मानसेन चित्तेन हेतुना, पृष्ठतः पश्चात्, असह्यं यद्विरहदुःखं तेन योऽनुशयोऽनुसरणं तेन लग्नां संसक्तामिव। एतेन

পরে কাদম্বরীকে নমস্কার করিয়া, কাদম্বরীর প্রীতিপূর্ণ নয়ন ও মনের লক্ষ্য হইয়া বলিলেন— "দেবি! বলিব কি, লোকে বহুভাষী ব্যক্তিকে বিশ্বাস করে না; তাই অল্পাক্ষরে বলিতেছি যে, পরিজনের কথার মধ্যে আমাকেও যেন স্মরণ করেন" এই কথা বলিয়া কন্যান্তঃপুর হইতে নির্গত হইলেন। (ঞ) তখন কাদম্বরীভিন্ন অন্য সমস্ত কন্যাগণই চন্দ্রাপীড়ের গুণগৌরবে আকৃষ্ট হইয়া পরাধীনের ন্যায় বহির্দ্বার পর্য্যন্ত তাঁহার অনুগমন করিল।

(ট) তাহার পর কন্যাগণ নিবৃত্তি পাইলে, কেয়ূরক একটি অশ্ব আনিয়া উপস্থিত করিল, চন্দ্রাপীড় তাহাতে আরোহণ করিয়া হেমকূট হইতে যাইতে লাগিলেন, তখন সেই গন্ধর্ব্বকুমারগণও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল। (ঠ) তখন কাদম্বরী, চন্দ্রাপীড়ের কেবল অন্তঃকরণের সকল আকাঙ্ক্ষার কারণ হইয়াছিলেন না, কিন্তু বাহিরেও সেই কাদম্বরীই সকল দিক্‌অবরোধের কারণ হইয়াছিলেন। (ড) কারণ—চন্দ্রাপীড়ের হৃদয় একেবারে তন্ময় হইয়াছিল;

(१) बहुभाषिणे। (२)···वर्जं।

पुरस्तात्, वियोगाकुलहृदयोत्कलिकावेशोत्क्षिप्तामिव (१) नभसि, सम्यगालो- कयितुं वदनं विरहातुरमानसामिवावस्थितामुरःस्थले, तामेव मृगलोचनां ददर्श (ङ)। क्रमेण च प्राप्य महाश्वेताश्रममच्छोदसरस्तीरे सन्निविष्टमिन्द्रायुध- खुरपुटानुसारेणैवागतमात्मस्कन्धावारमपश्यत् (ढ)। निवर्त्तिताशेषगन्धर्व- कुमारश्च सानन्देन सकुतूहलेन सविस्मयेन च स्कन्धावारवर्त्तिना जनेन प्रणम्य- मानः स्वभवनं विवेश। सम्मानिताशेषराजलोकश्च (२) वैशम्पायनेन पत्रलेखया च सह 'एवं महाश्वेता, एवं कादम्बरी, एवं मदलेखा, एवं तमालिका, एवं केयूरकः' इत्यनयैव कथया प्रायो दिवसमनैषीत् (ण)। कादम्बरीरूपदर्शन-

पृष्ठतो निरोधहेतुत्वमुक्तम्। "भवेदनुशयो द्वेषे पश्चात्तापानुबन्धयोः।" इति मेदिनी। तन्मयेन मानसेन हेतुना, पुरस्तादग्रतः, क्रतौ मार्गगमने निरोधो यथा तामिव। अनेन सम्मुखतो निरोधहेतुत्वमभिहितम्। तन्मयेन मानसेन हेतुना, नभसि आकाशे, वियोगाकुलं यद्धृदयं तत्र य उत्कलिकावेश उत्कण्ठाविर्भाव- स्तेन उत्क्षिप्तामिव। एतेनोपरि निरोधहेतुत्वं प्रतिपादितम्। तथा तन्मयेन मानसेन हेतुना, वदनं आत्मनो मुखं सम्यगालोकयितुं उरःस्थले आत्मनो वक्षसि अवस्थितामिव, विरहातुरमानसां मृगलोचनां तामेव कादम्बरीं ददर्श। वक्ष्यस्यवस्थाय धारणेन सर्वत एव निरोधसम्पादनेन दिगन्तरेषु निरोधहेतुत्वं सूचितम्। अत्र उतसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ढ) क्रमेणेति। इन्द्रायुधस्य स्वकीयाश्वस्य खुरपुटानुसारेण खुरपुटचिह्नानुसरणक्रमेण। स्कन्धावारं सैन्यम्।

(ण) निवर्त्तितेति। निवर्त्तिता अशेषाः समस्ता गन्धर्वकुमारा येन सः। स्वभवनं पटमण्डपम्। सम्मानिताः प्रत्यभिवादनादिना अभ्यर्च्चिता अशेषा राजलोका येन सः। प्रायो बाहुल्येन अनयैव कथया।

সুতরাং অসহ্য-বিরহ-দুঃখে কাদম্বরী যেন অনুসরণ করিয়া তাঁহার পৃষ্ঠে সংলগ্ন হইয়াছিল; সম্মুখের দিকে গমন করিবার পথ যেন অবরুদ্ধ করিয়াছিল; বিরহাকুল চিত্তে উৎকণ্ঠা আবি- র্ভূত হইয়া কাদম্বরীকে যেন আকাশে নিক্ষেপ করিয়াছিল এবং সম্পূর্ণরূপে নিজের মুখ দেখিবার নিমিত্ত কাদম্বরী যেন বক্ষঃস্থলে অবস্থান করিতেছিল - এই ভাবে সেই হরিণনয়না বিরহার্ত্ত- হৃদয়া কাদম্বরীকেই দেখিতে লাগিলেন। (ঢ) ক্রমে মহাশ্বেতার আশ্রমে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন—নিজের সৈন্যগণ, ইন্দ্রায়ুধের খুরের চিহ্ন অনুসরণ করিয়া আচ্ছোদসরোবরের তীরে আসিয়া অবস্থান করিতেছে। (ণ) তখন সমস্ত গন্ধর্ব্বকুমারদিগকে ফিরাইয়া দিলেন; এদিকে সেনান্তর্গত সমস্ত লোকই আনন্দ, কৌতুক ও বিস্ময়ের সহিত নমস্কার করিতে লাগিল—এই অবস্থায় তিনি নিজের পটমণ্ডপে (তাঁবুতে) প্রবেশ করিলেন। প্রবেশ করিয়া প্রত্যভিবাদন দ্বারা সকল রাজগণকে সম্মানিত করিয়া, বৈশম্পায়ন ও পত্রলেখার সহিত 'এইরূপ মহাশ্বেতা,

(१)...आवेशक्षिप्तामिव। (२) सम्मानितप्रत्यर्चितामेष...।

विद्वेषेव (१) नास्य पुरेव (२) प्रीतिमकरोत् राजलक्ष्मीः (त)। तामेव च धवलेक्षणामावरणरणकेन चेतसा चिन्तयतो जाग्रत एवास्य सा (३) जगाम रात्रिः (थ)। अपरेद्युश्च समुत्थिते भगवति रवौ, आस्थानमण्डपगतस्तद्गतेनैव मनसा सहसैव प्रतीहार्या सह प्रविशन्तं केयूरकं ददर्श। दूरादेव च क्षितितलस्पर्शिना मौलिना कृतपादपतनम्, "एह्येहि" इत्युक्त्वा प्रथममपाङ्गविसर्पिणा चक्षुषा, ततो हृदयेन, ततो रोमोद्गमेन, पश्चाद्भुजाभ्यां प्रधावितः प्रसृतं (४) आलिलिङ्ग गाढम् (द)। उपावेशयच्चैनमात्मनः समीप एव, पप्रच्छ च स्मितसुधाधवलीकृताक्षरं क्षरत्प्रीतिद्रवमयमिव वचनमादृतः "केयूरक! कथय कुशलिनी देवी ससखीजना

(त) कादेति। कादम्बर्य्या रूपदर्शने चन्द्रापीडकर्त्तृकसौन्दर्य्यावलोकने या विद्विर्विद्वेषस्तस्येव हेतुना। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। एतेन राजलक्ष्म्याः सपत्नीभावो ध्वनितः।

(थ) तामिति. आवक्री धृतो रणरणक उत्कण्ठा येन तेन। तां कादम्बरीमेव चिन्तयतः।

(द) अपेति। आस्थानमण्डपगतः सभामण्डपस्थितः, तद्गतेनैव कादम्बरीं प्रति धावितेनैव मनसा उपलक्षितः। प्रतीहार्य्या दौवारिकेण। कृतं पादयोः पतनं येन तम्। अपाङ्गविसर्पिणा प्रान्तगामिना। प्रसृतमागतं केयूरकम्।

(ध) उपेति। स्मितमेव सुधा लेपविशेषस्तेन धवलीकृतानि अक्षराणि यस्य तत्, तथा क्षरन् निःसरन् यः प्रीतिद्रवः प्रेमरसस्तन्मयं तेन व्याप्तमिव वचनमुच्चारयन्, आदृत आदरवान् पप्रच्छ। अत्र निरङ्ग

এইরূপ কাদম্বরী, এইরূপ মদলেখা, এইরূপ তমালিকা এবং এইরূপ কেয়ূরক' প্রায়শঃ এই আলাপেই দিন অতিবাহিত করিলেন। (ত) চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর রূপ দর্শন করিয়াছেন, এই বিদ্বেষ বশতই যেন রাজলক্ষ্মী, পূর্ব্বের স্থায় আর তাঁহার প্রীতি জন্মাইলেন না। (থ) চন্দ্রাপীড় উৎকণ্ঠিত-চিত্তে ধবলনয়না কাদম্বরীকেই চিন্তা করতঃ জাগিয়া রহিলেন— এই অবস্থায়ই তাঁহার সেই রাত্রি অতীত হইল। (দ) পরদিন ভগবান্ সূর্য্য উদয় পাইলে, সভামণ্ডপে তদ্গতচিত্তেই অবস্থান করতঃ সহসাই দৌবারিকের সঙ্গে কেয়ূরককে প্রবেশ করিতে দেখিলেন। কেয়ূরক, দূর হইতেই ভূতলে মস্তক অবনত করিয়া চন্দ্রাপীড়ের চরণের উপর পতিত হইল; চন্দ্রাপীড় "এস, এস" বলিয়া, প্রথমে প্রান্তগামী নয়নদ্বারা, তাহার পর মনে মনে, তদনন্তর রোমাঞ্চদ্বারা, তাহার পর ধাবিত হইয়া বাহুযুগলদ্বারা, উপস্থিত কেয়ূরককে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন (ধ) এবং তাহাকে নিজের নিকটেই বসাইলেন; আর যে বাক্য উচ্চারণ করিলেন, তাহার অক্ষরগুলিকে ঈষৎহাস্যরূপ সুধালেপে ধবলবর্ণ করিল এবং সে বাক্য যেন বিগলিত প্রেমরসে ব্যাপ্ত ছিল—এই অবস্থায় আদরের সহিত জিজ্ঞাসা

(१)…विद्विष्टे व। (२) पुरे। (३) क्षपित् वीति नास्ति। (४) प्रथितं, प्रथितं तं।

सपरिजना कादम्बरी, भगवती महाश्वेता च" इति (ध)। असौ तु तेन राजसूनोः प्रीतिप्रकर्षजन्मना स्मितेनैव स्नपित इवानुलिप्त इव सद्य एवापगताध्वखेदः प्रणम्याहततरमवोचत्-(१) (न) "अद्य कुशलिनी, यामेवं देवः पृच्छति" इत्यभिधायापनीयार्द्रवस्त्रावगुण्ठितं (२) विससूत्रसंयतमुखमार्द्रचन्दन-पङ्क-न्यस्त-बाल-मृणाल-वलय-मुद्रं नलिनीपत्रपुटमदर्शयत् (प) उद्घाट्य च तत्र कादम्बरी-प्रहितान्यभिज्ञानान्यदर्शयत्—तद्यथा मरकतहरिन्ति व्यपनीतत्वञ्चि चारु-मञ्जरीभाञ्जि क्षीरीणि पूगीफलानि, शुककामिनीकपोलपाण्डूनि ताम्बूली-

---

वेल्लदलानि, धवलीकरणासमर्थे ऽपि तत्रत्यानोकेलतिमिरपोलिपदयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः; क्रियोत्प्रेक्षया पुनः संसृज्यते।

(न) असाविति। असौ केयूरकः, राजसूनोश्चन्द्रापीडस्य, प्रीतिप्रकर्षजन्मना प्रणयातिरेकाज्जातेन। अपगताध्वखेदो निवृत्तमार्गश्रमः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(प) अद्येति। आर्द्रवस्त्रेण अवगुण्ठितं वेष्टितं, विससूत्रेण मृणालतन्तुना संयतं बद्धं मुखं यस्य तत्, आर्द्रे चन्दनपङ्के न्यस्ता अर्पिता बालमृणालवलयस्य मुद्रा चिह्नं यस्मिन् तत्, नलिनीपत्रपुटं, अपनीय तद्वस्त्रावगुण्ठनं अपसार्य्य अदर्शयत्।

(फ) उद्घाट्येति। कादम्बर्य्या प्रहितानि प्रेरितानि, अभिज्ञायते अवबुध्यते, प्रेम एभिरिति अभिज्ञानानि प्रेमसूचकचिह्नानि। मरकतवत् हरिन्ति हरिद्वर्णानि, व्यपनीता दूरीकृताः त्वचो वल्कलानि येषां तानि, चार्वीर्मञ्जरीर्भजन्त इति तानि, तथा क्षीरीणि सरसानि, पूगीफलानि क्रमुकाणि। शुककामिन्याः सारिकायाः कपोलवत् गण्डवत् पाण्डूनि पाण्डुरवर्णानि, ताम्बूल्या दलानि पर्णानि। हरस्य शिवस्य चन्द्रखण्डवत्

করিলেন—'কেয়ূরক! বল, সখীজন ও পরিজনবর্গের সহিত কাদম্বরীদেবী ও ভগবতী মহাশ্বেতা ভাল আছেন ত?" (ন) বিশেষ প্রণয় হইতে উৎপন্নরাজপুত্রের সেই ঈষৎহাস্যে কেয়ূরক যেন স্নপিত ও অনুলিপ্ত হইল এবং তৎক্ষণাৎ-ই তাহার পথের পরিশ্রম দূরীভূত হইল—এই অবস্থায় সে প্রণাম করিয়া বিশেষ আদরের সহিত বলিল (প)—'আজ তিনি ভাল আছেন, যাঁহার সম্বন্ধে আপনি এইরূপ জিজ্ঞাসা করিতেছেন" এই কথা বলিয়া বস্ত্রাবরণ দূর করিয়া একটি পদ্মপত্রের পুটক দেখাইল; সেই পুটকটি পূর্ব্বে আর্দ্র বস্ত্রে আবৃত ছিল, মৃণালের সূত্রে তাহার মুখভাগ বদ্ধ ছিল এবং তাহার আর্দ্র চন্দন-লেপের উপরে নূতন মৃণাল-বলয়ের ছাপ দেওয়া ছিল। (ফ) তাহার পর সেই পুটকটি উদ্ঘাটন করিয়া তাহার ভিতরে কাদম্বরীর প্রেরিত অভিজ্ঞান সকল দেখাইল—সেই অভিজ্ঞান যথা -মরকতমণির ন্যায় হরিদ্বর্ণ, বল্কলবিহীন, সুন্দরমঞ্জরীসমন্বিত ও ক্ষীরপরিপূর্ণ কতকগুলি গুবাকফল, সারিকার গণ্ডস্থলের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ তাম্বূল, শিবের মস্তকস্থিত চন্দ্রখণ্ডের ন্যায় বৃহৎ একখণ্ড

---

(১) আহততরমিবাবোচত্। (২) আর্দ্রকর্পটাবগুণ্ঠিতং, আর্দ্রবস্ত্রকর্পটাবগুণ্ঠিতং।

दलानि, हरचन्द्रखण्डस्थूलशकलञ्च कर्पूरम्, अतिबहल-मृगमदामोदमनोहरञ्च मलयजविलेपनम् (फ)। अब्रवीच्च—"चूड़ामणिचुम्बिना कोमलाङ्गुलिविवर-विनिर्गत-लोहितांशुजालेनाञ्जलिना देवमर्च्चयति देवी कादम्बरी, महाश्वेता च सकण्ठग्रहेण कुशलवचसा, पर्य्यस्त-शिखण्ड-माणिक्य-ज्योत्स्ना-स्नपित-ललाटेन च नमस्कारेण मदलेखा क्षितितल-घटित-सीमन्त-मकरिका-कोटि-कोणेन सकल-कन्यालोकश्च, सचरणरजःस्पर्शेन च पादप्रणामेन तमालिका (ब) सन्दिष्टञ्च तव महाश्वेतया—"धन्याः खलु ते, येषां न गतोऽसि चक्षुषोर्विषयं (१) तथा नाम समर्च्चं भवतस्ते तुहिनशीतलाश्चन्द्रमया इव गुणा विरहे विवस्वन्मया इव

स्थूलानि शकलानि खण्डानि यस्य तत्तादृशं कर्पूरञ्च। तथा अतिबहलैर्नितान्तप्रचुरैः मृगमदानां कस्तूरीणा आमोदैः सौरभैर्मनोहरं, मलयजविलेपनं चन्दनानुलेपनञ्च। अत्र लुप्तोपमावयस्य परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ब) अब्रवीदिति। चूड़ामणिं चुम्बति स्पृशतीति तेन, कोमलानामङ्गुलीनां विवरेभ्यो विनिर्गतं लोहितं अंशुजालं करतलकिरणसमूहो यस्य तेन, देवं भवन्तं, अर्च्चयति सम्मानयतीति सर्व्वत्र सम्बध्यते। सकण्ठ-ग्रहेण प्रणयालिङ्गनसहितेन। पर्य्यस्तस्य शिरोनमनाल्लम्बितस्य शिखण्डमाणिक्यस्य चूड़ारत्नस्य ज्योत्स्नया प्रभया स्नपितं परिष्कृतं ललाटं यस्मिन् तेन। क्षितितलेन घटितः स्पृष्टः सीमन्तमकरिकायाः सीमन्तवर्त्तिमकराका-राभरणस्य कोटिकोणः अग्रमार्गैकदेशो यस्मिन् तेन नमस्कारेण सकलकन्यालोकश्च। तथा चरणरजसः पादधूलेः स्पर्शेन सहेति तेन। अत्र अर्च्चयतीत्येकया क्रियया बहूनां कर्त्तृतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(भ) सन्दिष्टमिति। धन्यत्वे हेतुमाह तथेति। भवतस्ते प्रसिद्धा गुणा रूपादयः, समर्च्चं चन्द्रमया-श्चन्द्रनिष्पन्ना इव तुहिनशीतलास्तुषारवत् शीतला आसन्, इदानीन्तु विरहे विवस्वन्मयाः सन्तापकत्वात् सूर्य्य-निष्पन्ना इव अस्माकं संवृत्ताः अतएवेदृशविरहसन्तापाभावादेव ते धन्या इति भावः। अत्र द्वे क्रियोत्प्रेक्षे एका च लुप्तोपमा इत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

কর্পূর এবং কস্তূরীর অতিপ্রচুর সৌরভে মনোহর চন্দনানুলেপন। (ব) তাহার পর কেয়ূরক বলিল—"কাদম্বরী দেবী, কোমল অঙ্গুলি-বিবর হইতে নির্গত রক্তবর্ণ কিরণজালবর্ষী চূড়ামণি-স্পর্শী অঞ্জলি দ্বারা আপনার পূজা করিতেছেন; মহাশ্বেতাদেবী প্রণয়ালিঙ্গনের সহিত মঙ্গলবার্ত্তা জিজ্ঞাসা করিয়া আপনার সম্মান করিতেছেন; মদলেখা অবনত-শিরোরত্নের প্রভায় ললাটদেশ পরিষ্কৃত করিয়া নমস্কার দ্বারা আপনার সম্মান বর্দ্ধন করিতেছেন; সকল কন্যাগণও, সীমন্তের (সিঁথির) মকরাকার অলঙ্কারের অগ্রদেশ দ্বারা ভূতল স্পর্শ করিয়া নমস্কার দ্বারা আপনার সম্মান বর্দ্ধিত করিতেছেন এবং তমালিকা আপনার চরণ-ধূলি-স্পর্শের সহিত চরণে প্রণাম করিয়া অর্চ্চনা করিতেছে। (ভ) আর মহাশ্বেতা আপনার নিকট বলিতে বলিয়াছেন যে, "সেই সকল লোকই ধন্য; আপনি যাহাদের দৃষ্টিপথে পতিত হ'ন নাই। কারণ, আপনার

---

(১) अविषयं।

संवृत्ताः (१) (भ)। स्पृहयन्ति खलु जनाः कथमपि दैवोपपादितायामृतोत्पत्ति-वासरायेवातीतदिवसाय (म)। त्वया वियुक्तं निवृत्त-(२) महोत्सवालसमिव वर्त्तते गन्धर्वराजनगरम् (य)। जानासि च मां कृतसकलपरित्यागाम्, तथाप्य-कारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुमिच्छत्यनिच्छन्त्या अपि मे बलादिव हृदयम्। अपि च बलवदस्वस्थशरीरा कादम्बरी, स्मरति च स्मेराननं स्मरकल्पं त्वाम्, अतः पुनरागमनगौरवेणार्हसीमां गुणवदभिमानिनीं कर्त्तुम्। उदारजनादरो हि बहुमानमारोपयति (र)। अवश्यं सोढ़व्या चेयमस्मद्विधजन-परिचय-कदर्थना कुमारेण, भवत्सुजनतैव जनयत्यनुचितसन्देशप्रागल्भ्यम्। एष देवस्य

(म) स्पृहीति। कथमपि दैवेन भाग्येन उपपादिताय सम्पादिताय, यस्मिन् वासरे अमृतोत्पत्तिरासीत् तस्मै अमृतोत्पत्तिवासरायेव, अतीतो गतो यो दिवसस्तस्मै यत्र तव समागमोऽभवत् तस्मै इत्यर्थः। जना अत्रत्या लोकाः। यथोपमालङ्कारः। "स्पृहेरीप्सित"मिति सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी।

(य) त्वयेति। निवृत्तेन महोत्सवेन अलसं मन्दमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) जानासीति। स्मरकल्पं मदनतुल्यम्। पुनरागमनमेव गौरवं गुरुतासम्पादकं तेन। इमां कादम्बरीम्। गुणवन्तमात्मानमभिमन्यत इति ताम्। हि यस्मात्, उदारस्य महतो जनस्य आदरः, बहुमान-मात्मन्यादरं। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(ल) अथ तव पुनर्गमने परिश्रमः स्यादित्याह अवश्यमिति। कुमारेण त्वया। अस्मद्विधानां दीनाना-मिति भावः जनानां परिचयेन कदर्थना यातना। शयनीये त्वयैव व्यवहृतायां शय्यायां।

গুণগ্রাম, সমক্ষে চন্দ্রনির্ম্মিত বলিয়াই যেন শিশিরের ন্যায় শীতল ছিল; আর এখন বিচ্ছেদের সময় সূর্য্যনির্ম্মিত বলিয়াই যেন আমাদের সন্তাপজনক হইয়াছে। (ম) এস্থানের সকল লোকই অমৃতোৎপত্তি-দিনের ন্যায় কোন প্রকারে, দৈববশতঃ সঙ্ঘটিত গত দিনের জন্য আকাঙ্ক্ষা করিতেছে। (য) এই গন্ধর্ব্বরাজধানী আপনার বিরহে, মহোৎসব-নিবৃত্তির পর নিস্তব্ধের ন্যায় হইয়া পড়িয়াছে। (র) আমি সকলই পরিত্যাগ করিয়াছি—ইহা আপনি জানেন, তথাপি আপনি অকারণ পক্ষপাতী বলিয়া, অনিচ্ছা সত্ত্বেও আমার হৃদয়, বলপূর্ব্বকই যেন আপনাকে দেখিতে ইচ্ছা করিতেছে। বিশেষতঃ কাদম্বরীর শরীর অত্যন্ত অসুস্থ এবং সে, সহাস্যবদন ও কন্দর্পতুল্য আপনাকে স্মরণ করিতেছে; অতএব আপনি পুনরায় গৌরব-সম্পাদক আগমন দ্বারা কাদম্বরীকে নিজের গুণের অভিমানিনী করিবেন; কারণ—প্রধান লোকের সমাদর, মানুষের হৃদয়ে অভিমানের সঞ্চার করিয়া থাকে। (ল) আমাদের ন্যায় লোকের সঙ্গে পরিচয় হইয়াছে বলিয়া এইরূপ যাতনা, আপনার অবশ্যই সহ্য করিতে হইবে; আপনার সৌজন্যই, এই অনুচিত খবর পাঠাইবার প্রগল্‌ভতা জন্মাইয়াছে। আপনি বিস্মরণবশতঃ এই হারছড়া

---

(१) वृत्ताः। (२) विनिवृत्त...।

शयनीये विस्मृतः शेषो हारः प्रहितः” (१) (ल) इत्युत्तरीयपटान्तसंयतं सूक्ष्मसूत्रविवर-(२) निःसृतैरंशुसन्तानैः संसूच्यमानं विमुच्य चामरग्राहिण्याः करे समर्पितवान्। (व)

अथ चन्द्रापीडः “महाश्वेताचरणाराधनतपःफलमिदं यदेवं परिजनेऽप्यनुस्मरणादिकं प्रसादभारमतिमहान्तमारोपयति देवी कादम्बरी” इत्युक्त्वा तत्सर्वं शिरसि कृत्वा स्वयमेव जग्राह (श)। तेन च कादम्बर्याः कपोललावण्येनेव गलितेन, स्मितालोकेनेव (३) रसतामुपनीतेन, हृदयेनेव द्रुतेन, गुणगणेनेव निस्यन्दितेन, (४) स्पर्शवता ह्लादिना सुरभिणा च विलेपनेन विलिप्य तमेव कण्ठे

(व) इतीति। उत्तरीयपटान्तेन उत्तरीयवसनाञ्चलेन संयतं बद्धं, सूक्ष्मसूत्राणां विवरेभ्यो निःसृतैः, अंशुसन्तानैः किरणप्रवाहैः, संसूच्यमानं ज्ञाप्यमानं, विमुच्य वस्त्राञ्चलादुन्मुच्य।

(श) अथेति। महाश्वेताचरणाराधनमेव तपस्तस्य फलम्। परिजनेऽपि मयीति शेषः। प्रसादभारमनुग्रहभारम्। तत् सर्वं पूगीफलादिकमुपायनम्।

(ष) तेनेति। गलितेन कादम्बर्याः कपोललावण्येनेव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। रसतां द्रवतां उपनीतेन कादम्बर्याः स्मितालोकेनेव मन्दहास्यप्रभयेव। उत्प्रेक्षा। द्रुतेन द्रवीभूतेन कादम्बर्या हृदयेनेव। उत्प्रेक्षा। निस्यन्दितेन प्रस्रुतेन कादम्बर्या गुणगणेनेव। उत्प्रेक्षा। स्पर्शवता प्रशस्तस्पर्शशालिना, ह्लादिना आह्लादजनकेन, सुरभिणा नासिकाप्रीतिकारिणा च तेन विलेपनेन, चन्दनेन विलिप्य अङ्गानीति शेषः।

শয্যার উপরে ফেলিয়া গিয়াছেন, সুতরাং শেষনামক সেই হার এই পাঠাইলাম” এই কথা বলিয়া কেয়ূরক, উত্তরীয়-বস্ত্রাঞ্চলে বদ্ধ ও সূক্ষ্ম-সূত্র-বিবর হইতে নির্গত কিরণজালে সংসূচিত সেই হারছড়া খুলিয়া, চন্দ্রাপীড়ের চামরধারিণীর হস্তে সমর্পণ করিল।

(শ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় বলিলেন —“ইহা, মহাশ্বেতার চরণারাধনরূপ তপস্যার ফল যে, কাদম্বরী দেবী আমার মত পরিজনের প্রতিও, অনুস্মরণ প্রভৃতি এইরূপ অত্যন্ত গুরুতর অনুগ্রহভার আরোপ করিয়াছেন” এই কথা বলিয়া সেই সকল উপহার-দ্রব্য নিজেই মস্তকে ধারণ করিয়া গ্রহণ করিলেন। (ষ) এবং কাদম্বরীর গণ্ডস্থল হইতে বিগলিত লাবণ্যের ন্যায়, তাঁহার দ্রবীভূত মন্দ হাস্যের ন্যায়, বিগলিত হৃদয়ের ন্যায় ও প্রবাহিত গুণগ্রামের ন্যায়, সুখস্পর্শ, আহ্লাদজনক এবং নাসিকার তৃপ্তিকারী সেই চন্দনদ্বারা সমস্ত অঙ্গ লেপন করিয়া, সেই হারছড়া

---

(१) क्वचित् प्रहित इति नास्ति। (२) सूक्ष्मवस्त्रविवर…।
(३) स्मितावलोकेनेव (४) विस्यन्दितेन।

ष्ठारमकरोत् (ष)। आगृहीततांम्बूलश्च मुहूर्त्तादिवोत्थाय वामबाहुना स्कन्ध-देशे समवलम्ब्य (१) केयूरकं, ऊर्द्ध स्थित एव कृतयथाक्रियमाणसम्मानमुदितं प्रधानराजलोकं विसृज्य शनैः शनैर्गन्धमादनं करिणं द्रष्टुमयासीत् (स)। तत्र च स्थित्वा क्षणमिव तस्मै स्वयमेव निजनखांशुजालजटिलं समृणालमिव शुष्क-कवलमवकीर्य्य वल्लभतुरङ्ग-(२) मन्दुराभिमुखः प्रतस्थे, गच्छंश्चोभयतः किञ्चित् किञ्चिदिव तिर्य्यग्वलितवदनः परिजनं विलोकयाम्बभूव। (ह)

अथ चित्तज्ञैः प्रतीहारैः प्रतिषिद्धानुगमने निखिले समुत्सारिते परिजने केयूरकद्वितीय एव मन्दुरां प्रविवेश (क्ष)। उत्सारणभयसम्भ्रान्तलोचनेषु प्रणम्यापसृतेषु मन्दुरापालेषु, इन्द्रायुधस्य पृष्ठावगुण्ठनपटं किञ्चिदेकपार्श्वे

(स) आगृहीतेति। ऊर्द्ध स्थित एव दण्डायमान एव। क्रियमाणं प्रधानराजलोकैः प्रथमं विधीय-मानमभिवादनादिकमनतिक्रम्य स्थितमिति यथाक्रियमाणं, कृतेन यथाक्रियमाणेन सम्मानेन प्रत्यभिवादनादिना मुदितं सन्तुष्टं। प्रधानराजलोकं सामन्तगणं। गन्धमादनं तन्नामानम् गन्धगजम्।

(ह) तत्रेति। निजनखांशुजालेन जटिलो विषमीकृतस्तम्, अतएव समृणालमिव मृणालसंयुक्तमिव, नखांशुजालस्य मृणालतुल्यत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। तस्मै गन्धमादनाय, अवकीर्य्य भक्षणाय विक्षिप्य। वल्लभानां तुरङ्गाणां या मन्दुरा शाला तदभिमुखः सन्। उभयत उभयपार्श्वयोः। तिर्य्यग्वलितं पार्श्वयोः प्रवर्त्तितं वदनं येन सः, परिजनादीनामपसरणार्थमिति भावः।

(क्ष) अथेति। चित्तज्ञैरभिप्रायाभिज्ञैरित्यर्थः। प्रतिषिद्धमनुगमनं राजपुत्त्रानुसरणं यस्य तस्मिन्। समुत्सारिते समीपादपसारिते सति। मन्दुरामश्वशालां।

(क) उत्सारणेति। उत्सारणभयेन प्रतीहारकर्त्तृकवेत्रताडनभयेन सम्भ्रान्तानि चकितानि लोचनानि

কণ্ঠে ধারণ করিলেন। (স) এবং সেই তাম্বূলটি লইয়া কিছু কালের পর গাত্রোত্থান করিয়া, বামবাহুদ্বারা কেয়ূরকের স্কন্ধদেশ ধারণপূর্ব্বক দণ্ডায়মান থাকিয়াই, অভিবাদনকারী প্রধান রাজগণকে প্রত্যভিবাদন সম্মানে সন্তুষ্ট করিয়া বিদায় দিয়া, ধীরে ধীরে গন্ধমাদন হস্তীকে দেখিতে গেলেন। (হ) এবং সেখানে কিছুকাল থাকিয়াই নিজেই, নখকিরণজালে উদ্ভাসিত, সুতরাং মৃণালযুক্তের ন্যায় দৃশ্যমান কতকগুলি শুষ্ক ঘাস, সেই গন্ধমাদনের সম্মুখে নিক্ষেপ করিয়া, প্রীতিভাজন অশ্বসমূহের গৃহাভিমুখে প্রস্থান করিলেন। যাইবার সময়ে চন্দ্রাপীড় দুই পার্শ্বেই অল্প অল্প মুখ ফিরাইয়া পরিচারকদিগের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন।

(ক্ষ) তাহার পর দৌবারিকগণ চন্দ্রাপীড়ের মনের অভিপ্রায় বুঝিয়া, সকল পরিচারক-দিগকে তাঁহার অনুসরণ করিতে নিষেধ করিয়া সরাইয়া দিলে, তিনি কেবল কেয়ূরকের সহিতই যাইয়া অশ্বশালায় প্রবেশ করিলেন। (ক) তখন অশ্বশালারক্ষকগণ, দৌবারিক-

(१) अवलम्ब्य। (२)...तुरङ्गम...।

गलितं (१) समीकुर्वन्नुत्सारयंश्च कूणितनेत्रत्रिभागस्य (२) दृष्टिनिरोधिनीं कुङ्कुमकपिलां केसरसटां खुरधारिणी-(३) विन्यस्तचरणो लीलामन्दं मन्दुरादारु-दत्तदेहभरः सकुतूहलमुवाच—(क) "केयूरक ! कथय, मन्निर्गमादारभ्य को वा वृत्तान्तो गन्धर्वराजकुले ? केन वा व्यापारेण वासरमतिनीतवती (४) गन्धर्व-राजपुत्री ? किं वाकरोन्महाश्वेता ? किमभाषत वा मदलेखा ? के वाभवन्नालापाः परिजनस्य ? भवतो वा को व्यापार आसीत् ? आसीद्वा काचिदस्मदाश्रयिणी कथा ?।" (ख)

केयूरकस्तु सर्वमाचचक्षे—"देव ! श्रूयताम्, निर्गते त्वयि हृदय-सहस्र-

---

यैर्ता तेषु तादृशेषु, मन्दुरापालेषु अश्वशालारक्षकेषु प्रणम्य अपसृतेषु सत्सु। एकपार्श्वे किञ्चिद्गलितं इन्द्रायुधस्य पृष्ठावगुण्ठनपटं समीकुर्वन्नित्यन्वयः। कूणितः केसरपतनात् सङ्कोचितो नेत्रस्य त्रिभागस्तृतीयभागो येन तस्य तथोक्तस्य इन्द्रायुधस्य दृष्टिनिरोधिनीं, कुङ्कुमवत् कपिलां पिङ्गलवर्णां, केसरस्य सटा गुच्छीभूतत्वाज्जटा तां, उत्सारयन् नेत्रादपसारयन्। खुरधारिण्यां इन्द्रायुधखुराधारभूतकाष्ठपट्टिकायां विन्यस्तौ चरणौ येन सः, तथा लीलया मन्दं शनैर्यथा स्यात्तथा मन्दुरादारुणि अश्वशालास्थकाष्ठविशेषे दत्तो देहभरो येन सः।

(ख) केयूरकेति। गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी, वासरं दिनं, अतिनीतवती अतिवाहितवती।

(ग) केयूरक इति। सर्वमाचचक्षे बालकत्वेन सरलचित्तत्वादिति भावः। कन्यकान्तःपुरे, नूपुरचक्रस्य

গণের বেত্র-তাড়নের ভয়ে চকিত-নয়নে প্রণাম করিয়া সরিয়া গেলে, চন্দ্রাপীড় ইন্দ্রায়ুধের পিঠের আবরণ-বস্ত্রখানা একপাশে কিছু বেশী সরিয়া যাওয়ায় তাহা সমান করিয়া দিলেন এবং নয়নের উপর আসিয়া কেসর পড়ায় ইন্দ্রায়ুধ সেই নয়নের তৃতীয়ভাগ সঙ্কুচিত করিতেছিল; তাই চন্দ্রাপীড় দৃষ্টি-নিরোধী ও কুঙ্কুমের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ সেই কেসরগুলিকে সরাইয়া দিলেন; তাহার পর খুরের আধার কাষ্ঠফলকের উপরে চরণযুগল বিন্যস্ত করিয়া, লীলাসহকারে ধীরে ধীরে অশ্বশালার কোন কাষ্ঠখণ্ডে দেহের ভর রাখিয়া কৌতুকের সহিত বলিলেন—(খ) "কেয়ূরক! বল, আমি নির্গত হইয়া আসিলে পর গন্ধর্ব্বরাজ-বাটীতে কি ঘটনা হইয়াছিল! গন্ধর্ব্বরাজনন্দিনী কাদম্বরীই বা কোন্ কার্য্যে দিন অতিবাহিত করিলেন? মহাশ্বেতাই বা কি করিলেন? মদলেখাই বা কি বলিলেন? পরিজনবর্গেরই বা কি আলাপ হইল? তোমারই বা কোন্ কার্য্য ছিল? এবং আমার সম্বন্ধে কোন কথা হইয়াছিল কি না?"

(গ) কেয়ূরক কিন্তু বালক বলিয়া সকলই বলিয়া ফেলিল; বলিল—"রাজপুত্র! শ্রবণ করুন,—আপনি নির্গত হইলে, কন্যাগণের হৃদয় আপনার সহিত প্রস্থান করিতে লাগিল;

---

(१) इन्द्रायुधपृष्ठावगुण्ठनपटं किञ्चिदेकपार्श्वं गलितं। (२) कूणितनेत्रत्रिभागां।

(३) खुरधोरणी...। (४) अवसरमतिनीतवती।

प्रयाण-पटह-कलकलमिव नूपुरचक्र-(१) क्वणितेन कन्यकान्त:पुरे कुर्वति, (२) देवी कादम्बरी सपरिजना सौधशिखरमारुह्य तुरगधूलिरेखाधूसरं देवस्यैव गमन-मार्गमालोकितवती (ग)। तिरोहितदर्शने च देवे, मदलेखा-स्कन्धनिहित-मुखी प्रीत्या तं दिगन्तं दुग्धोदधिधवलै: प्लावयन्तीव दृष्टिपातै:, सितातपत्रापदेशेन शशिनेर्ष्यया निवार्य्यमाणरविकरस्पर्शा (३) सुचिरं तत्रैव स्थितवती (घ)। तस्माच्च कथमपि सखेदमवतीर्य्य क्षणमिवावस्थानमण्डपे (४) स्थित्वोत्थाय स्खलनभियेव निवेद्यमानोपहारकुसुमा शब्दायमानैर्मधुकरै:, जलधारा-धवल-

कन्यकानां मञ्जीरसमूहस्य क्वणितेन शब्देन, हृदयसहस्रस्य कन्यकानामेव चित्तसमूहस्य यत् प्रयाणं भवता सह प्रस्थानं तस्य पटहकलकलो ढक्काशब्दकोलाहलस्तं कुर्वतीव सति। तुरगस्य भवदश्वस्य धूलिरेखया धूलिपटलेन धूसरं, देवस्यैव भवत एव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(घ) तिरोहितेति। किञ्च, देवे भवति तिरोहितदर्शने सति, मदलेखाया: स्कन्धे निहितं स्थापितं मुखं यया सा तादृशी कादम्बरी, प्रीत्या भवदनुरागेण, दुग्धोदधिवत् क्षीरोदसागरवत् धवलैर्दृष्टिपातैस्तं दिगन्तं प्लावयन्तीव सती, तादृशदृष्टिपातानामविरतत्वादिति भाव:। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:। तथा ईर्ष्यया रविं प्रति स्पर्द्धया हेतुना, सितातपत्रापदेशेन श्वेतच्छत्रच्छलेन शशिना चन्द्रेण, निवार्य्यमाणो रवि-करस्पर्शो यस्या: सा तादृशी च सती, तत्र सौधशिखर एव सुचिरं स्थितवती। अत्र श्वेतच्छत्रमपह्नुत्य चन्द्रस्थापनादपह्नुतिरलङ्कार:।

(ङ) तस्मादिति। किञ्च, तस्मात् सौधशिखरात्, कथमपि कष्टेन, सखेदं भवद्विरहेण सकष्टं अवतीर्य्य, अवस्थानमण्डपे वासगृहे क्षणमिव स्थित्वा, उत्थाय, स्खलनभियेव अत्यन्तोन्मनस्कतया अलक्ष्यमाणत्वा-देषूपहारकुसुमेषु कादम्बरी स्खलित्वा पतिष्यतीति भयेनेव, शब्दायमानैर्मधुकरै: निवेद्यमानानि स्वकीयरवैरेव विज्ञाप्यमानानि उपहारकुसुमानि यस्यै सा। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कार:। तथा केकारवेण तेषां मयूराणामिव

তাই কন্যান্তঃপুরটি নূপুরসমূহের শব্দে ঢক্কার কোলাহলই যেন করিতে লাগিল;—এমন সময়ে কাদম্বরীদেবী পরিজনবর্গের সহিত অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিয়া, অশ্বের ধূলিতে ধূসরবর্ণ আপনারই গমন পথ দেখিতে লাগিলেন। (ঘ) তাহার পর যখন আপনাকে আর দেখা যাইতে লাগিল না, তখন কাদম্বরীদেবী মদলেখার স্কন্ধে, মুখমণ্ডল সংস্থাপন করিয়া, আপনার প্রতি স্নেহবশতঃ, ক্ষীরোদসাগরের ন্যায় ধবলবর্ণ দৃষ্টিপাতে সেই দিকটাকে যেন প্লাবিত করিতে লাগিলেন এবং সূর্য্যের প্রতি ঈর্ষ্যাবশতঃ চন্দ্র, শ্বেত-ছত্র-ছলে তাঁহার রৌদ্র নিবারণ করিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় তিনি, বহুকাল যাবৎ সেই অট্টালিকার উপরেই অবস্থান করিতে লাগিলেন। (ঙ) তাহার পর তিনি কোন প্রকারে কষ্টের সহিত অট্টালিকার উপর হইতে অবতীর্ণ হইয়া, কিছুকাল বাসগৃহে অবস্থান করিয়া উঠিলেন; তাহার পর 'কাদম্বরী অন্যমনস্ক

(१)…नव…। (२) कुर्वन्ती। (३)…किरणस्पर्शा। (४) आस्थानमण्डपे।

নখ-ময়ূখোন্মুখানামনুগলং (১) গলদ্ভির্বলয়ৈঃ কণ্ঠবন্ধানিবোপপাদয়ন্তী কেকারবোদ্বিগ্না ভবনশিখণ্ডিনাম্, পদে পদে চ কুসুমধবলান্ করেণ গৃহলতা-পল্লবান্ (২) মনসা চ দেবস্য গুণগণানবলম্বমানা তমেব ক্রীড়াপর্বতকমাগতবতী, যত্র স্থিতবান্ দেবঃ (ঙ)। তমুপেত্য চ 'দেবেনাত্র মরকতশিলা-মকরিকা-প্রণাল-প্রস্রবণ-সিচ্যমান-হরিত-লতামণ্ডপে শীকরিণি (৩) শিলাতলে স্থিতম্, অত্র গন্ধোদক-পরিমল-লীনালিজাল-জটিল-শিলাপ্রদেশে স্নাতম্, অত্র কুসুম-ধূলি-সিকতিলে গিরি-নদিকা-তটে (৪) ভগবানর্চ্চিতঃ শূলপাণিঃ, অত্র ক্ষেপিত-

---

কেকাশব্দেন উদ্বিগ্না কাদম্বরী, অতএব জলধারাসদৃশবলা যে নখময়ূখাঃ কাদম্বর্য্যা এব নখকিরণাস্তেষু উন্মুখানাং জলধারাভ্রমেণ উন্নমিতবদনানাং। অত্র ভ্রান্তিমানলঙ্কারো ব্যজ্যতে। ভবনশিখণ্ডিনাং গৃহপালিত-ময়ূরাণাং, গলেষু কণ্ঠে ইত্যনুগলং বিভক্ত্যর্থে অব্যয়ীভাবঃ, গলদ্ভিঃ সমর্পণমাত্রেণৈবাধঃ পতদ্ভিঃ বলয়ৈঃ কটকৈঃ, কণ্ঠবন্ধান্ উপপাদয়ন্তী কুর্ব্বতীব, সতি সামর্থ্যে উদ্বেজকানাং নিগ্রহস্য যুক্তত্বাদিতি ভাবঃ। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। কিঞ্চ পদে পদে প্রতিপদক্ষেপং করেণ হস্তেন, কুসুমৈর্ধবলান্ গৃহলতাপল্লবান্ ভবনসংসৃষ্টবল্লীকিসলয়ানি অবলম্বমানা দধানা, তথা মনসা চ কুসুমবদ্ধবলান্ দেবস্য ভবতো গুণগণান্ অবলম্বমানা দধানা চিন্তয়ন্তী।

(ঙ) তমিতি। কিঞ্চ, কাদম্বরী তং ক্রীড়াপর্ব্বতকমুপেত্য দিবসং ক্ষপিতবতীত্যন্বয়ঃ। মরকতশিলায়া যো মকরিকাপ্রণালী মকরাকারজলনিঃসরণযন্ত্রং তস্মাৎ প্রস্রবণেন জলনির্গমেন সিচ্যমানঃ, হরিতো হরিদ্বর্ণঃ লতামণ্ডপো যস্মিন্ তত্র, অতএব শীকরিণি জলবিন্দুবতি অত্র শিলাতলে, দেবেন চন্দ্রাপীড়েন স্থিতম্। গন্ধোদক-পরিমলৈঃ সুগন্ধজলসৌরভৈঃ লীনং সংসক্তং যদলিজালং ভ্রমরসমূহস্তেন জটিলো বিষমীকৃতো যঃ শিলাপ্রদেশঃ

বলিয়া লক্ষ্য না করায় পুষ্পের উপরে পড়িয়া যাইবেন'—এই ভয়েই যেন ভ্রমরগণ শব্দ করিয়া তাঁহাকে বিক্ষিপ্ত পুষ্পগুলি জানাইয়া দিল; আবার তিনি গৃহপালিত ময়ূরগণের কেকারবে উদ্বিগ্ন হইয়া শাসনের নিমিত্ত তাহাদের গলদেশে বলয় অর্পণ করিয়া যেন গল-বন্ধন করিয়া দিলেন, তখন সেই বলয়গুলি নীচের দিকে সরিয়া পড়িতে লাগিল এবং সেই ময়ূরগণ জলধারার ন্যায় শুভ্রবর্ণ নখের কিরণের দিকে মুখ উত্তোলন করিতে লাগিল। এবং কাদম্বরীদেবী প্রত্যেক পদক্ষেপে, পুষ্প থাকায় ধবলবর্ণ গৃহলতার পল্লবগুলিকে হস্তে ধারণ করিয়া এবং পুষ্পের ন্যায় ধবলবর্ণ আপনার গুণগ্রাম মনে মনে চিন্তা করিয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতে আসিলেন, যেখানে আপনি অবস্থান করিয়াছিলেন। (চ) সেখানে আসিলে পর, 'মরকতমণির মকরাকার জলযন্ত্র হইতে জলনিঃসরণে যাহার হরিতবর্ণ লতামণ্ডপটিকে সিক্ত করিয়াছিল এবং যেখানে জলবিন্দুসমূহ ছড়াইয়া পড়িতেছিল, এই সেই শিলাতল; এইখানে রাজপুত্র অবস্থান করিয়াছিলেন, ভ্রমরগণ গন্ধজলের সৌরভে সংলগ্ন হইয়া যাহাকে উচু নিচু করিয়াছিল, এই

---

(১) অনুপলং। (২) ক্বচিদ্গৃহপদং নাস্তি। (৩) শীকরিণি। (৪) গিরিনদীকাননতটে।

शशधर-रोचिषि स्फाटिक-(१) शिलातले भुक्तम्, अत्र संक्रान्त-चन्दन-रस-लाञ्छने मुक्ताशैलशिलापट्टे सुप्तम्' इति परिजनेन पुनरुक्तं निवेद्यमानानि देवस्यैव स्थान-चिह्नानि पश्यन्ती क्षपितवती दिवसम् (च)। दिवसावसाने च कथमपि महाश्वेता प्रयत्नादनभिमतमपि तस्मिन्नेव स्फटिकमणिशिलावेश्मन्याहारमकरोत्। अस्तमुपगते भगवति रवौ, उदिते चन्द्रमसि, तत्रैव कञ्चित् कालं स्थित्वा चन्द्र-कान्तमयीव चन्द्रोदये प्रत्यार्द्रीकृततनुश्चन्द्रबिम्ब-प्रवेशभयेनेव करौ कपोलयोः कृत्वा किमपि चिन्तयन्ती, मुकुलितेक्षणा क्षणमात्रं स्थित्वोत्थाय विमल-नख-निपतित-शशि-प्रतिमाभर-गुरूणीव कृच्छ्रादुत्क्षिपन्ती, लीला-मन्थर-गमन-पटूनि

पाषाणमयस्थानं तस्मिन्। कुसुमधूलिभिः पुष्पपरागैः सिकतिले सञ्जातसैकते अत्र गिरिनदिकातटे पार्वत्यक्षुद्र-सरित्तीरे। क्षेपितं क्षियं प्रापितं शशधररोचिश्चन्द्रालोको येन तस्मिन् चन्द्रादपि शुभ्रे इत्यर्थः। संक्रान्तं संलग्नं चन्दनरस एव लाञ्छनं चिह्नं यत्र तस्मिन्, मुक्ताशैलशिलापट्टे मुक्तातुल्यशुभ्रपार्वत्यपाषाणखण्डे। इतीत्थं परिजनेन पुनरुक्तं असकृद्यथा स्यात्तथा निवेद्यमानानि, देवस्य भवत एव। क्षपितवती अतिवाहितवती।

(छ) दिवसेति। चन्द्रापीडो यस्मिन् भुक्तवान् तस्मिन्नेवेत्यर्थः। चन्द्रकान्तमयीव चन्द्रकान्तमणिनिष्पन्नेव चन्द्रोदये प्रत्यार्द्रीकृता स्वतो जलनिर्गमाद्धर्माविर्भावाच्च क्लिन्ना तनुः शरीरं यस्याः सा। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। केचित्तु चन्द्रकान्तमयी पुत्तलिकेवेति विग्रहयन्तः पूर्णोपमामाचक्षते। कृत्वा अर्पयित्वा, कामोद्दीपक-चन्द्रबिम्बप्रवेशबाधनायेति भावः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। मुकुलितेक्षणा मुद्रितनयना। विमलेषु नखेषु चरणयोरिव नखरेषु निपतिता याः शशिप्रतिमाश्चन्द्रप्रतिबिम्बानि तासां भरेण भारेण गुरूणीव भारवन्तीव, अन्यथा कृच्छ्रादुत्क्षेपणं नोपपद्यत इति भावः। लीलया विलासेन मन्थरगमने मन्दसञ्चरणे पटूनि दक्षाणि, पदानि चरणौ। न्यासानां बहुत्वेन बहुवचनमुपचारादिति दिक्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

সেই প্রস্তরময় স্থান; এইখানে রাজপুত্র স্নান করিয়াছিলেন। এই একটি ক্ষুদ্র পার্ব্বত্য-নদীর তীর, ইহা পুষ্পের রেণুতে বালুকাময় হইয়াছিল; এইখানে রাজপুত্র ভগবান্ শিবের পূজা করিয়াছিলেন। চন্দ্রকিরণেরও লজ্জাজনক এই স্ফটিকময় শিলাখণ্ডের উপরে চন্দ্রাপীড় ভোজন করিয়াছিলেন। এবং যাহার উপরে চন্দনের চিহ্ন পড়িয়াছিল, এই সেই মুক্তার ন্যায় শুভ্রবর্ণ পার্ব্বত্যশিলাখণ্ড; এইখানে রাজপুত্র শয়ন করিয়াছিলেন' এইভাবে পরিজনগণ বারংবার আপনারই অবস্থানের চিহ্নগুলি দেখাইয়া দিতে লাগিল, কাদম্বরী তাহা দেখিতে দেখিতে দিন অতিবাহিত করিলেন। (ছ) দিনের শেষভাগে মহাশ্বেতার চেষ্টায় কোন প্রকারে অনভিমত হইলেও সেই স্ফটিকমণিময় গৃহেই ভোজন করিলেন। তাহার পর ভগবান্ সূর্য্য অস্তমিত হইলে ও চন্দ্র উঠিলে সেই গৃহেই কিয়ৎকাল অবস্থান করিয়া, চন্দ্রোদয়ে চন্দ্রকান্ত-মণি-নির্ম্মিতের ন্যায় আর্দ্রদেহে, চন্দ্রমণ্ডলের প্রবেশের ভয়েই যেন গণ্ডযুগলের উপরে করযুগল

---

(১) স্ফটিক...।

পদানি শয্যাগৃহমগাৎ (ছ)। শয়ন-নিক্ষিপ্ত-গাত্রযষ্টিশ্চ, ততঃ প্রভৃতি প্রবলয়া শিরোবেদনয়া বিচেষ্টমানা, দারুণেন চ দাহরূপিণা জ্বরেণাভিভূয়মানা কেনাপ্যাধিনা মঙ্গলপ্রদীপৈঃ কুমুদাকরৈশ্চক্রবাকৈশ্চ সার্দ্ধমনিমীলিতলোচনা দুঃখদুঃখেন ক্ষণদামনৈষীৎ (জ)। উষসি চ মামাহূয় দেবস্য বার্ত্তাব্যতিকরোপলম্ভায় (১) সোপালম্ভমাদিষ্টবতী। (ঝ)

চন্দ্রাপীড়স্তদাকর্ণ্য জিগমিষুঃ "অশ্বোঽশ্বঃ" ইতি বদন্ ভবনান্নির্যযৌ। আরোপিতপর্য্যাণঞ্চ ত্বরিত-তুরগ-পরিচারকোপনীতমিন্দ্রায়ুধমারুহ্য, পশ্চাদারোপ্য

(জ) শয়নেতি। কিঞ্চ, শয়নে শয্যায়াং নিক্ষিপ্তা স্থাপিতা গাত্রযষ্টির্যয়া সা। ততঃ প্রভৃতি শয়নাদবধি। বিচেষ্টমানা স্পন্দমানা। কেনাপ্যনির্ব্বচনীয়েন আধিনা মনোব্যথয়া। মঙ্গলপ্রদীপৈঃ শয়নগৃহবর্ত্তিভিরিতি শেষঃ। অনিমীলিতলোচনা অমুদ্রিতনয়না সতী। রাত্রৌ প্রদীপানাং স্বত এব প্রকাশাৎ কুমুদানাং চন্দ্রোদয়েন বিকাশাৎ চক্রবাকানাঞ্চ বিশ্লেষভয়াদনিমীলিতলোচনত্বমিতি ভাবঃ। দুঃখদুঃখেন গুরুতরকষ্টেন ক্ষণদাং রাত্রিং অনৈষীৎ অতিবাহিতবতী। অত্র প্রদীপকুমুদয়োরনিমীলিতলোচনত্বং প্রকাশমাত্রং কাদম্বরীচক্রবাকয়োস্তু নয়নমুদ্রণাভাব ইতি ভেদেঽপ্যভেদাধ্যবসায়াদতিশয়োক্তিস্তন্মূলা চ সহোক্তিরলঙ্কারঃ।

(ঝ) উষসীতি। দেবস্য ভবতঃ, বার্ত্তাব্যতিকরোপলম্ভায় কর্ণে বার্ত্তাসম্পর্কপ্রাপ্তয়ে বৃত্তান্তশ্রবণায়েত্যর্থঃ। সোপালম্ভং সতিরস্কারম্। ত্বং খলু মে বিবেনকঃ প্রিয়ভৃত্যঃ সন্নপি মমৈবাতিথিভূতস্য রাজপুত্রস্যেদানীমপি সুখসুপ্তিবার্ত্তামাদাতুং ন গচ্ছসীতি তিরস্কারপ্রকারঃ।

(ঞ) চন্দ্রেতি। আরোপিতং যথাস্থানমর্পিতং পর্য্যাণং পল্যয়নং যস্য তং, ত্বরিতেন সত্বরেণ তুরগপরিচারকেণ অশ্বরক্ষকেণ উপনীতমুপস্থাপিতং। পশ্চাৎ স্বস্যৈব পশ্চাদ্ভাগে। হারপাত্রস্য অর্পিতস্তুরঙ্গ ইন্দ্রায়ুধো

স্থাপন করিয়া কোন বিষয় ভাবিতে লাগিলেন এবং মুদ্রিতনয়নে ক্ষণকাল থাকিয়া আবার উঠিলেন, নির্ম্মল নখসমূহের উপরে চন্দ্রের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহার ভারে তাঁহার চরণযুগলও যেন ভারী হইয়া পড়িল ; সুতরাং বিলাস-মন্দ-গমনে দক্ষ সেই চরণযুগলকে কষ্টক্রমে উত্তোলন করিতে করিতে শয়নগৃহে গমন করিলেন। (ছ) তাহার পর শয্যার উপরে দেহখানি রাখিলেন এবং তদবধি অত্যন্ত শিরোবেদনায় ছটফট্ করিতে লাগিলেন ও দারুণ দাহ-জ্বরে আক্রান্ত হইলেন—এই অবস্থায় অনির্ব্বচনীয় মনঃপীড়ায়, মাঙ্গলিক প্রদীপ, কুমুদ ও চক্রবাকগণের সহিত অমুদ্রিতনয়নে ও অত্যন্ত দুঃখে রাত্রি অতিবাহিত করিলেন। (ঝ) এবং প্রাতঃকালে আমাকে ডাকিয়া তিরস্কার করিয়া আপনার বৃত্তান্ত জানিবার জন্য আদেশ করিলেন।

(ঞ) চন্দ্রাপীড় সেই কথা শুনিয়া কাদম্বরীর বাড়ী যাইতে ইচ্ছা করিলেন এবং "অশ্ব অশ্ব" এই কথা বলিতে বলিতে গৃহ হইতে নির্গত হইলেন। কোন অশ্বরক্ষক তাড়াতাড়ি পালান লাগাইয়া ইন্দ্রায়ুধকে আনিয়া উপস্থিত করিল ; চন্দ্রাপীড় তাহাতে আরোহণ করিয়া

(১)...উপালম্ভায়।

পত্রলেখাম্, স্কন্ধাবারে স্থাপয়িত্বা (১) বৈশম্পায়নম্, অশেষং পরিজনং (২) নিবর্ত্ত্য চ অন্যতুরগারূঢ়েনৈব কেয়ূরকেণানুগম্যমানো হেমকূটং যযৌ। আসাদ্য চ কাদম্বরী-ভবনদ্বারমবততার (৩) অবতীর্য্য চ (৪) দ্বারপালার্পিততুরঙ্গঃ কাদম্বরী-প্রথম-দর্শন-কুতূহলিন্যা চ পত্রলেখয়া চানুগম্যমানঃ প্রবিশ্য "ক্ব দেবী কাদম্বরী তিষ্ঠতি" ইতি সম্মুখাগতমন্যতমং বর্ষবরং (৫) অপ্রাক্ষীৎ (ঞ)। কৃতপ্রণামেন চ তেন "দেব! মত্তময়ূরস্য ক্রীড়াপর্ব্বতকস্যাধস্তাৎ কমলবনদীর্ঘিকাতীরে বিরচিতং হিমগৃহমধ্যাস্তে" ইত্যাবেদিতে কেয়ূরকেণোপদিশ্যমানবর্ত্মা প্রমদবন-মধ্যেন গত্বা কিঞ্চিদধ্বানং, মরকতহরিতানাং কদলীবনানাং প্রভয়া শষ্পীকৃতরবি-

---

থেন সঃ। কাদম্বর্য্যাঃ প্রথমদর্শনে কুতূহলমস্যা অস্তীতি তয়া পত্রলেখয়া, চকারাৎ কেয়ূরকেণ চানুগম্যমানঃ। বর্ষবরং নপুংসকম্। মহাশ্বেতয়া প্রাগেব রাজ্ঞঃ সম্মতীকৃতত্বাত্তদনুমোদনেন চ প্রবিশন্তং চন্দ্রাপীড়ং ন কশ্চিন্নিবারয়ামাসেতি বোধ্যম্।

(ট) কৃতেতি। মত্তা ময়ূরা যস্মিন্ তস্য। কমলবনেন পূর্ণা দীর্ঘিকা কমলবনদীর্ঘিকা তস্যাস্তীরে, বিরচিতং নির্ম্মিতং হিমগৃহং জলোদ্গারযন্ত্রসত্ত্বাৎ শীতলং বেশ্ম, অধ্যাস্তে অধিতিষ্ঠতি। "আধারোঽধিশীঙাসস্থাং শৌব্যে" ইত্যধিকরণস্য কর্ম্মত্বম্। মরকতবৎ হরিতা হরিদ্বর্ণাস্তেষাং। শষ্পীকৃতা নূতন-তৃণবদ্দৃশ্যমানীকৃতা রবিকিরণা যত্র তং, অতএব হরিতায়মানং হরিদ্বর্ণীভূতং। অত্র শষ্পীকরণাসম্বন্ধেঽপি তৎসম্বন্ধোক্তেরতিশয়োক্তিরলঙ্কারো লুপ্তোপময়া সঙ্কীর্য্যতে।

পত্রলেখাকে পিছনের দিকে উঠাইয়া, বৈশম্পায়নকে শিবিরে রাখিয়া এবং ভৃত্যদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, হেমকূটপর্ব্বতে প্রস্থান করিলেন; কেয়ূরক অন্য কোন অশ্বে আরোহণ করিয়া তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল। এই ভাবে চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর বাটীর দ্বারে উপস্থিত হইয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন এবং অবতরণ করিয়া কোন দ্বারপালের নিকট অশ্বটি রাখিয়া ভিতরে প্রবেশ করিলেন, কাদম্বরীকে প্রথম দেখিবার নিমিত্ত কৌতুকবতী পত্রলেখা এবং কেয়ূরকও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রবেশ করিতে লাগিল; পরে কোন নপুংসক সম্মুখে উপস্থিত হইলে চন্দ্রাপীড় তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন—"কাদম্বরী-দেবী কোথায় আছেন?" (ট) সে প্রণাম করিয়া জানাইল—"রাজকুমার! মত্ত ময়ূরগণ যাহাতে অবস্থান করে, সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের নীচে পদ্মবন-পরিপূর্ণ দীর্ঘিকার তীরে একখানি শীতল গৃহ নির্ম্মিত আছে; কাদম্বরীদেবী তাহাতে অবস্থান করিতেছেন। তাহার পর কেয়ূরক পথ বলিয়া দিতে দিতে চলিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় প্রমদউদ্যানের মধ্য দিয়া কিছু পথ যাইয়া,

---

(১) সংস্থাপয়িত্বা। (২) অশেষপরিজনং। (৩) অবততার তুরগাৎ।
(৪) ক্বচিৎ চকারো নাস্তি। (৫) বর্ষধরং।

किरणं हरितायमानं दिवसं ददर्श (ट)। तेषाञ्च मध्ये निरन्तर-नलिनीदल-छन्नं हिमगृहमपश्यत् (ठ)। तस्माच्च निष्पतन्तमार्द्रांशुककञ्चुलेनाच्छोदजलेनेव संवीतम्, (ड) बाहुलताविधृतैर्मृणालवलयैराभरणकैरिव धवलितावयवम्, (ढ) आपाण्डुभिश्चैकश्रवणाश्रयैस्ताडङ्कीकृतैः(१) केतकीगर्भदलैरुपहसितदन्तपत्त्रम्,(ण) आलिखितचन्दनललाटिकानि मुखारविन्दानि बद्धसौभाग्यपदानीव (२) दधानम् (त) कृतचन्दनविन्दुविशेषकांश्च दिवापि स्वर्गलोभस्थितेन्दुप्रतिबिम्बानिव

(ठ) तेषामिति। तेषां कदलीवनानां। निरन्तरैर्घनैः, नलिनीदलैरानीतैः पद्मपत्रैः, छन्नमावृतम्।

(ड) तस्मादिति। किञ्च, तस्मात् हिमगृहात् निष्पतन्तं निर्गच्छन्तं, आर्द्रांशुककञ्चुलेन स्तिमित-वसनव्याजेन, अच्छोदस्य सरसो जलेनेव संवीतमावृतदेहम्। आर्द्रांशुकाच्छोदजलयोः शुभ्रतासाम्यादिति भावः। अत्र सापह्नुत्प्रेक्षालङ्कारः। इतो द्वितीयैकवचनान्तपदानि परिजनमद्राक्षीदिति वक्ष्यमाणस्य परिजन-मित्यस्य विशेषणानि।

(ढ) बाह्विति। आभरणकैरिव रजतालङ्कारैरिव बाहुलताविधृतैर्मृणालवलयैः धवलिताः शुभ्रीकृताः, अवयवा अङ्गानि यस्य तम्। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(ण) आपेति। किञ्च, आपाण्डुभिरतीवपाण्डुरैः, एकं श्रवणं कर्णं आश्रयो येषां तैः, ताडङ्कीकृतैः कर्णभूषणीकृतैः केतक्याः पुष्पस्य गर्भदलैः, उपहसितं स्वसौन्दर्य्यातिरेकात् परिहसितं दन्तपत्रं गजदन्त-निर्म्मितपत्राकाराभरणं यस्य तम्। अत्रोपहसितमित्यनेन सादृश्याक्षेपादार्थोपमालङ्कारः।

(त) आलीति। आलिखिताश्चित्रिताः चन्दनस्य ललाटिकास्तिलकविशेषा येषु तानि, अतएव बद्धानि निर्म्मितानि सौभाग्यपदानि भर्त्तृप्रियतासूचकचिह्नानि येषु तानीव स्थितानि, मुखारविन्दानि दधानम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालुप्तोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(थ) कृतेति। कृताश्चन्दनविन्दव एव विशेषकास्तिलकानि येषु तान्, अतएव दिवापि रात्रौ तु

মরকতমণির ন্যায় হরিদ্বর্ণ কদলীবনের প্রভায় সূর্য্যের কিরণগুলিকে নূতন তৃণের ন্যায় করায়, সে স্থানে দিনটিকে হরিদ্বর্ণ দেখিলেন। তাহার পর সেই কদলীবনের মধ্যে ঘন ঘন পদ্মপত্রে আচ্ছাদিত সেই হিমগৃহ দর্শন করিলেন। (ড) আরও দেখিলেন—কাদম্বরীর কতকগুলি পরিচারিকা সেই হিমগৃহ হইতে নির্গত হইতেছে, আর্দ্রবসনচ্ছলে অচ্ছোদ-সরোবরের জলেই যেন তাহাদের দেহ আবৃত করিয়াছে। (ঢ) অলঙ্কারের ন্যায় ভুজলতা-ধৃত কতকগুলি মৃণালবলয় তাহাদের অঙ্গপ্রত্যঙ্গ ধবলবর্ণ করিয়াছে। (ণ) পাণ্ডুবর্ণ ও কর্ণাভরণ কেতকী-পুষ্পের ভিতরের পত্রগুলি এক কর্ণে থাকিয়া গজদন্ত নির্ম্মিত পত্রাকার কর্ণালঙ্কারকে উপহাস করিতেছে। (ত) তাহাদের মুখপদ্মে সৌভাগ্যসূচক চিহ্নের ন্যায় চন্দন দ্বারা টিপ্ চিত্র করা ছিল। (থ) কপোলদেশে চন্দনবিন্দুর তিলক ছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে,

(१) ताडङ्कीकृतैः। (२)...पदानीव।

কপোলানুবদ্ধন্তম্, (থ) অপহৃতাশেষশিরীষসৌভাগ্যাভিঃ শৈবলমঞ্জরীভিঃ কৃতকর্ণপূরম্, (দ) কর্পূরধূলিধূসরেষু মলয়জ-রস-লব-লুলিতেষু বকুলাবলী-বলয়েষু স্তনেষু ন্যস্তনলিনীপত্রপ্রাবরণম্, (ধ) অনবরত-চন্দন-চর্চ্চা-প্রণয়ন-পাণ্ডুরৈঃ সন্তাপ-রোষ-মৃদিত-চন্দ্র-করৈরিব (১) করৈঃ কল্পিতমৃণালদণ্ডানি বিসতন্তুময়ানি চামরাণি বিভ্রাণম্, (ন) উন্নালৈশ্চ কমলৈঃ কুমুদৈঃ কুবলয়ৈঃ কিসলয়ৈঃ কদলীদলৈঃ কমলিনীপলাশৈঃ কুসুমস্তবকৈশ্চাতপত্রীকৃতৈর্নিবারিতা-

---

চন্দ্রোদয়াত্তৎপ্রতিবিম্বানি সম্ভবন্ত্যেব কিন্তু দিবসেঽপীত্যর্থঃ, স্পর্শলোভেন স্থিতানি ইন্দোশ্চন্দ্রস্য প্রতিবিম্বানি যেষু তানিব স্থিতান্, চন্দনবিন্দুচন্দ্রপ্রতিবিম্বানাং সাম্যাদিতি ভাবঃ। কপোলানুবদ্ধন্তং গণ্ডদেশান্ ধারয়ন্তম্। অত্র চন্দ্রপ্রতিবিম্বস্থিত্যুৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(দ) অপেতি। অপহৃতানি অশেষাণি সমস্তানি শিরীষস্য পুষ্পস্য সৌভাগ্যানি শ্বেতলকোমলত্ব-শীতলত্বানি যাভিস্তাভিঃ। অত্রান্যনান্যসৌভাগ্যাপহরণাসম্ভবাদ্বস্তুসম্বন্ধোঽসম্ভবন্ সৌভাগ্যসাদৃশ্যমাক্ষি-পতীত্যসম্ভবদ্বস্তুসম্বন্ধা নিদর্শনালঙ্কারঃ।

(ধ) কর্পূরেতি। কর্পূরস্য ধূলিভিঃ পরাগৈর্ধূসরেষু, মলয়জরসস্য চন্দনদ্রবস্য লবৈর্বিন্দুভিঃ লুলিতেষু বিচ্ছুরিতেষু, তথা বকুলাবলীনাং বকুলকুসুমমালানাং বলয়ানি মণ্ডলানি যেষু তেষু, স্তনেষু ন্যস্তানি অর্পিতানি নলিনীপত্রপ্রাবরণানি পদ্মপত্রাবরণানি যস্য তম্।

(ন) অনেতি। অনবরতং চন্দনচর্চ্চায়াশ্চন্দনলেপনস্য প্রণয়নেন করণেন পাণ্ডুরাঃ শুভ্রাস্তৈঃ, অতএব সন্তাপেন উদ্দীপকতয়া সন্তাপজননেন যো রোষশ্চন্দ্রং প্রতি ক্রোধস্তেন হেতুনা মৃদিতাঃ পিষ্টা যে চন্দ্রস্য করাঃ কিরণাস্তৈরিব, করৈর্হস্তৈঃ, কল্পিতৌ বিহিতৌ মৃণালমেব দণ্ডৌ যেষাং তানি, বিসতন্তুময়ানি মৃণালসূত্র-নির্ম্মিতানি চামরাণি, বিভ্রাণং ধারয়ন্তম্। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(প) উন্নালৈরিতি। ক্রিয়া। উদ্গতমুপরি স্থিতং নালং যেষাং তৈরিতি সর্ব্বত্র যোজ্যম্। নালমত্র বৃন্তং শাখাদণ্ডশ্চ যথাসম্ভবং জ্ঞেয়ম্। কমলিনীপলাশৈঃ পদ্মিনীপত্রৈঃ। আতপত্রীকৃতৈশ্ছত্রীকৃতৈর্মস্তকোপরি-ধৃতৈরিত্যর্থঃ। নিবারিত আতপঃ সূর্য্যালোকো যস্য তম্।

তাহাদের স্পর্শের লোভেই যেন দিনের বেলায়ও চন্দ্রের প্রতিবিম্ব আসিয়া অবস্থান করিতেছে। (দ) তাহারা সমস্ত শিরীষকুসুমের সৌন্দর্য্যাপহারী শৈবালমঞ্জরী দ্বারা কর্ণালঙ্কার করিয়াছিল। (ধ) তাহাদের স্তনমণ্ডল কর্পূররেণুতে ধূসরবর্ণ ও চন্দন-বিন্দুতে পরিপূর্ণ ছিল, তাহার উপরে আবার বকুলফুলের মালা দুলিতেছিল এবং পদ্মপত্রের আবরণ ছিল। (ন) তাহাদের হাতগুলি নিরন্তর চন্দন লেপন করায় শুভ্রবর্ণ ছিল, তাহাতে, চন্দ্র সন্তাপ জন্মাইয়া থাকেন বলিয়া, তাঁহার প্রতি ক্রোধবশতঃ তাঁহারই নিষ্পিষ্ট কিরণসমূহের ন্যায় সেই হাতগুলিকে দেখা যাইতেছিল; সেই হস্ত সমূহদ্বারা তাহারা মৃণাল-দণ্ডসমন্বিত ও মৃণালসূত্রেই নির্ম্মিত কতকগুলি চামর ধারণ করিতেছিল। (প) এবং সেই পরিচারিকাদিগের মধ্যে কেহ পদ্ম, কেহ শ্বেতোৎপল, কেহ

---

(১)...আরক্তচন্দ্রকরৈরিব, সন্তাপরোষপ্রকটিত...।

तपत्रम्, (प) जलदेवतानामिव समूहम्, वरुणश्रियामिव समागमम्, शरदामिव समाजम्, सरसीनामिव गोष्ठीबन्धम्, (फ) शिशिरोपचारनिपुणं कादम्बर्याः शरीरपरिचारकं शरीरप्रायं परिजनमद्राक्षीत्। (ब)

तेन च प्रणम्यमानः पादनखपतनभयादिव (१) त्वरितापसृतेन दीयमानमार्गः (भ) चन्दनपङ्कलिप्तवेदिकानां पुण्डरीककलिकाघटितघण्टिकानां विकसितसिन्धुवार-(२) कुसुममञ्जरीचामराणां लम्बितस्थूलमल्लिकामुकुलहाराणामाबद्धलवङ्ग-(३) पल्लव-चन्दन-मालिकानां दोलायमान-कुमुद-दाममध्वजानां

(फ) जलेति। जलदेवतानां समूहमिव, क्लिन्नदेहत्वादिति भावः, एवमन्यत्रापि। जात्युत्प्रेक्षा। वरुणस्य याः श्रियः सम्पदस्तासां समागमं सम्मेलनमिव वरुणस्य जलदेवतात्वात्तच्छ्रियमपि जलक्लिन्नदेहत्व-सम्भव इत्याशयः। सम्मिलितवरुणश्रीसमूहमिवेति विवक्षणादत्रापि जात्युत्प्रेक्षैव। शरदामृतूनां समाजं समूहमिव। जात्युत्प्रेक्षा। सरसीनां सरोवराणां गोष्ठीबन्धं सभानिर्माणमिव। अत्रापि सभास्थसरसीनां समूहमिवेति तात्पर्य्याज्जात्युत्प्रेक्षैव।

(ब) शिशिरेति। शिशिरोपचारे शीतलक्रियायां निपुणस्तम्। शरीरप्रायं देहतुल्यं प्रियमित्यर्थः।

(भ) तेनेति। तेन परिजनेन, पादनखानां चन्द्रापीड़चरणनखराणां पतनभयादिव कोमलत्वात् स्वशिरोघर्षणेन स्खलनभयादिव त्वरितमपसृतेन कथञ्चिद्दूरं गतेन सता प्रणम्यमानो दीयमानमार्गश्च चन्द्रापीड़ः कदलीतोरणानां तलेन प्रविश्य सर्वतो निसृष्टदृष्टिर्वर्त्त्यमानं सर्वं दृष्टवान् अन्यांश्चैवम्प्रकारान् वीक्षमाणः सन् हिमगृहकस्य मध्यभागमाससादेत्यन्वयः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) कदलीतोरणानि विशेषयन्नाह चन्दनेति। चन्दनस्य पङ्केन गाढद्रवेण कृता लिप्तीकृता वेदिका मूलबद्धभूमयी येषां तेषां। पुण्डरीककलिकाभिः श्वेतपद्मकोरकैः घटिता निर्म्मिता घण्टिकाः क्षुद्रघण्टा येषां तेषां। विकसितानां सिन्धुवारकुसुमानां मञ्जर्य्य एव चामराणि येषां तेषां। लम्बिताः स्थूलमल्लिकामुकुलानां

নীলোৎপল, কেহ পল্লব, কেহ কদলীপত্র, কেহ পদ্মপত্র এবং কেহ পুষ্পগুচ্ছ মস্তকের উপর রাখিয়া রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল ; সেই পদ্ম প্রভৃতির নাল ও দণ্ড উপরে ছিল। (ফ) আর তাহাদিগকে জলদেবতা সমূহের ন্যায়, সম্মিলিত বরুণ-সম্পদের ন্যায়, শরৎকাল সমূহের ন্যায়, এবং একত্র সমবেত সরোবর সমূহের ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ব) এবং তাহারা শীতল কার্য্য করিতে দক্ষ ও নিজের শরীরের ন্যায় কাদম্বরীর প্রিয় ছিল।

(ভ) তাহার পর সেই পরিচারিকারা, চন্দ্রাপীড়ের চরণের নখ পড়িয়া যাইবার ভয়েই যেন তাড়াতাড়ি দূরে সরিয়া প্রণাম করিয়া পথ ছাড়িয়া দিলে, চন্দ্রাপীড় যে সকল কদলীতোরণের নীচ দিয়া প্রবেশ করিলেন, তাহার মূলের বেদীর উপরটা গাঢ় চন্দন দ্বারা লেপন করা হইয়াছিল, শ্বেতপদ্মের কলিকাদ্বারা তাহার ক্ষুদ্র ঘণ্টা নির্ম্মাণ করিয়াছিল, প্রস্ফুটিত নিসিন্দা ফুলের মালা

(१) पादतलपतन..., पादनखतलपतनादभयादिव। (२)...सिन्दुवार...। (३) लवङ्ग...।

মৃণালবেত্রহস্তাভির্গৃহীতরুচিরকুসুমাভরণাভির্মধু-লক্ষ্মীপ্রতিকৃতিভিরিব (১) দ্বারপালিকাভিরধিষ্ঠিতানাং কদলীতোরণানাং তলেন প্রবিশ্য সর্বতো নিসৃষ্টদৃষ্টির্দৃষ্টবান্—(য) ক্বচিদুভয়-তট-নিখাত-(২) তমালপল্লব-কৃত-বন-লেখাঃ কুমুদ-(৩) ধূলি-বালুকা-পুলিন-মালিনীশ্চন্দনরসেন-প্রবর্ত্যমানা গৃহনদিকাঃ,—(র) ক্বচিন্নিচুল-মঞ্জরী-রচিত-রক্ত-চামরাণাং জলার্দ্রবিতানকানাং তলেষু সসিন্দূরকুট্টিমেষু আস্তীর্য্যমাণানি রক্তপঙ্কজশয়নানি, (ল) ক্বচিদেলারসেন সিচ্যমানানি

দ্বারা যেষু তেষাম্। আবদ্ধাঃ সংযোজিতাঃ লবঙ্গানাং চন্দনানাঞ্চ কুসুমানাং মালিকা যেষু তেষাম্। দোলায়মানাঃ কুমুদদামান্যেব ধ্বজাঃ পতাকা যেষু তেষাম্। মৃণালমেব বেত্রং হস্তে যাসাং তাভিঃ, গৃহীতানি রুচিরাণি কুসুমাভরণানি যাভিস্তাভিঃ, তথা মধুলক্ষ্ম্যাঃ বসন্তশ্রিয়ঃ প্রতিকৃতিভিঃ প্রতিমূর্ত্তিভিরিব। নিসৃষ্টদৃষ্টিঃ দত্তদৃষ্টিঃ। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(য) কিং কিং দৃষ্টবানিত্যাহ ক্বচিদিতি। উভয়তটয়োর্গৃহনদিকানামিব উভয়তীরয়োঃ নিখাতৈঃ প্রোথিতৈস্তমালপল্লবৈঃ কৃতা বনলেখা বনশ্রেণয়ো যাসাং তাঃ, তথা কুমুদানাং ধূলয়ো রেণব এব বালুকা যাসাং পুলিনমালাঃ সৈকতশ্রেণয় আসাং সন্তীতি তাঃ, চন্দনস্য রসেন জলেন করণেন, প্রবর্ত্যমানা নির্ম্মীয়মাণাঃ, গৃহনদিকা ভবনীয়-ক্ষুদ্রনদীঃ, দৃষ্টবানিত্যন্বয়ঃ, এবমন্যত্রাপ্যন্বয়ো বোধ্যঃ।

(র) ক্বচিদিতি। নিচুলমঞ্জরীভি র্হিজ্জলপুষ্পবল্লরীভিঃ রচিতানি নির্ম্মিতানি রক্তানি লোহিতবর্ণানি চামরাণি যেষাং তেষাম্, জলেনার্দ্রাণি যানি বিতানকানি ক্ষুদ্রক্ষুদ্রচন্দ্রাতপা স্তেষাম্, তলেষু অধোদেশেষু, সসিন্দূরাণি সিন্দূররঞ্জিতানি যানি কুট্টিমানি বদ্ধভূময় স্তেষু, আস্তীর্য্যমাণানি প্রসার্য্যমাণানি, রক্তপঙ্কজশয়নানি রক্তবর্ণপদ্মময়শয্যাঃ। "নিচুলো হিজ্জলোঽম্বুজঃ" ইত্যমরঃ।

দ্বারা চামর করিয়াছিল, বড় বড় মল্লিকাফুলের হার ঝুলাইয়া রাখিয়াছিল, লবঙ্গ ও চন্দনফুলের মালা বাঁধিয়া দিয়াছিল, উপরে শ্বেতোৎপল-মালার পতাকা দুলিতেছিল এবং মৃণাল-যষ্টিহস্তা ও সুন্দর পুষ্পালঙ্কার-ধারিণী কতকগুলি দ্বারপালিকা, বসন্তলক্ষ্মীর প্রতিমূর্ত্তি সমূহের ন্যায় সেই কদলীতোরণগুলির নিকট অবস্থান করিতেছিল। তাহার পর চন্দ্রাপীড় সকল দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেন—(য) কোন স্থানে চন্দন জলদ্বারা কতকগুলি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নদী নির্ম্মাণ করিয়াছে, সে গুলির দুই পারেই তমালের পল্লব পুতিয়া বন তৈয়ারি করিয়া দিয়াছে এবং ভিতরে শ্বেতোৎপলের রেণুরূপ বালুকার পুলিনশ্রেণী (বহুতর চড়া) রহিয়াছে ; (র) কোন স্থানে উপরে কতকগুলি আর্দ্র চন্দ্রাতপ খাটান আছে, তাহাতে হিজলফুলের মঞ্জরী দিয়া রক্তবর্ণ চামর করিয়া দিয়াছে, তাহারই নীচে (মেঝের) সিন্দুর ছড়ান আছে, তাহার উপরে রক্তপদ্মের শয্যা পাতিয়া রাখিয়াছে ; (ল) কোন স্থানে কতকগুলি স্ফটিকময় গৃহ রহিয়াছে, তাহার

(১)···প্রকৃতিভিরিব। (২)...অবনিখাত···। (৩) কুমুদবন···।

স্পর্শানুমেয়রম্যভিত্তীনি (১) স্ফটিকভবনানি, (২) (ল) ক্বচিচ্ছিরীষপক্ষ্ম-কৃতশাদ্বলানাং মৃণালধারাগৃহাণাং শিখরমারোপ্যমাণানাং ধারা-কদম্ব-ধূলি-ধূসরিতানাং (৩) যন্ত্রময়ূরকাণাং কদম্বকানি, (ব) ক্বচিৎ সহকার-রস-সিক্তৈঃ (৪) জম্বূপল্লবৈরাচ্ছাদ্যমানাভ্যন্তরাঃ পর্ণশালাঃ, (শ) ক্বচিৎ ক্রীড়িত-কৃত্রিম-করি-কলভ-যূথকাকুলীক্রিয়মাণাঃ কাঞ্চনকমলিনিকাঃ, (৫) (ষ) ক্বচিদ্-গন্ধোদককূপেষু বদ্ধ-কাঞ্চন-সুধা-পঙ্ক-কাম-পীঠেষু স্থূল-বিসলতা-দণ্ড-

(ল) ক্বচিদিতি। দর্শনাযোগ্যত্বাৎ স্পর্শেন অনুমেয়া জ্ঞেয়া অতএব রম্যা ভিত্তয়ো যেষাং তানি।

(ব) ক্বচিদিতি। শিরীষাণাং কুসুমানাং পক্ষ্মভিঃ কেসরৈঃ কৃতাঃ শাদ্বলাঃ সতৃণদেশা যেষাং তেষাং, মৃণালধারাগৃহাণাং মৃণালপূর্ণজলোদ্গারগৃহাণাং শিখরং উপরিদেশং আরোপ্যমাণানাং পরিচারিকাভির্নীয়মানানাং, ধারাকদম্বস্য জলধারাসমূহস্য ধূলিভিঃ কণৈঃ ধূসরিতা ধূম্রবর্ণীকৃতাস্তেষাম্, যন্ত্রময়ূরকাণাং যন্ত্রাত্মকক্ষুদ্রশিখিনাং কদম্বানি সমূহান্। "পক্ষ্ম সূত্রাদিসূক্ষ্মাংশে কিঞ্জল্কে নেত্রলোমনি।" ইতি মেদিনী। "শাদ্বলঃ শাদহরিতে" ইত্যমরঃ।

(শ) ক্বচিদিতি। সহকাররসেন আম্রনির্য্যাসেন সিক্তা আর্দ্রীকৃতাস্তৈঃ, জম্বূপল্লবৈঃ আচ্ছাদ্যমানানি অভ্যন্তরাণি যাসাং তাঃ, পর্ণশালা উটজানি।

(ষ) ক্বচিদিতি। ক্রীড়িতেন নির্ম্মাণকৌশলাৎ খেলাপ্রবৃত্তেন কৃত্রিমেণ করিকলভানাং হস্তিশাবকানাং যূথকেন সমূহেন আকুলীক্রিয়মাণাঃ সঞ্চাল্যমানাঃ কাঞ্চনকমলিনিকাঃ স্বর্ণপদ্মিনীঃ।

(স) ক্বচিদিতি। বদ্ধানি নির্ম্মিতানি, কাঞ্চনং সুবর্ণমেব সুধাপঙ্কঃ শুভ্রতাসাধকলেপনদ্রব্যং যেষু তানি কাঞ্চনসুধাপঙ্কানি কামপীঠানি পূজায়াং প্রয়োজনীয়ানি মদনাসনানি যেষু তেষু, গন্ধোদকানাং চন্দনসংসৃষ্টজলানাং

দেওয়ালগুলি সুন্দর এবং স্পর্শ দ্বারাই তাহা বুঝা যায়, আবার সে গুলিকে এলাচির রসে সিক্ত করিয়া রাখিয়াছে; (ব) কোন স্থানে কতকগুলি জল-যন্ত্রের গৃহ রহিয়াছে, তাহার নিম্নদেশ শিরীষপুষ্পের কেসর দ্বারা তৃণময় করিয়াছে, সেই ঘরগুলির উপরে কতকগুলি কৃত্রিম ময়ূর তুলিয়া দিয়াছে, জলধারাসমূহের কণাতে আবার সেই কৃত্রিম ময়ূরগুলিকে ধূসরবর্ণ করিয়াছে; (শ) কোন স্থানে কতকগুলি পর্ণশালা নির্ম্মাণ করা রহিয়াছে, তাহার অভ্যন্তরদেশ, আমের রসে সংসিক্ত জামের পল্লবে আচ্ছাদিত করিয়াছে; (ষ) কোন স্থানে অনেকগুলি স্বর্ণপদ্ম নির্ম্মিত রহিয়াছে, কৃত্রিম হস্তিশাবকগণ খেলায় প্রবৃত্ত হইয়া সেই স্বর্ণপদ্মগুলিকে সঞ্চালন করিতেছে; (স) কোন স্থানে চন্দনজলে পরিপূর্ণ কতকগুলি কূপ রহিয়াছে, তাহার তীরে আবার কামপীঠ নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছে, সেগুলিকে আবার সোণা গলাইয়া চূর্ণদ্রবের ন্যায় করিয়া, তাহা দ্বারা লেপিয়া দিয়াছে; সেই কূপগুলির তীরে অনেকগুলি পত্রপুটকের (পাতার

(১) স্পর্শানুমেয়ভিত্তীনি। (২) অভ্রভবনানি।
(৩)…ধূসরিতানি,…ধূসরাণাং। (৪) সহকারলেহসক্তৈঃ। (৫)…কমলিনীকাঃ।

घटितारकाणि (१) कृतक-(२) केतकदल-जल-द्रोणिकानि (३) कुवलयावली-रज्जुभि-र्ग्रथ्यमानानि पत्र-(४) पुट-घटी-यन्त्रकाणि, (ङ) क्वचित् स्फटिकबलाकावली-वान्त-वारिधारा-लिखितेन्द्रायुधाः सञ्चार्य्यमाणा मायामेघमालाः, (च) क्वचिदुपान्त-प्ररूढ़-(५) पाण्डु-यवाङ्कुरासु तरुण-मालती-कुड्मल-दन्तुरित-तरङ्गासु हरिचन्दन-द्रव-वापिकासु शिशिरीक्रियमाणा हारयष्टीः, (छ) क्वचिन्मुक्ताफल-क्षोद-रचितालवालकान् अनवरतस्थूल-(६) जलविन्दु-दुर्द्दिनमुत्सृजतो यन्त्रवृक्ष-

---

कूपेषु, स्थूलैः विसलतादण्डैः मृणालदण्डैः घटितानि निर्म्मितानि अराणि चक्रान्तर्गतसरलकाष्ठानि येषां तानि, कृतकानि कृत्रिमाणि केतकदलानि केतकीपत्राण्येव जलद्रोणिका जलपात्रविशेषा येषु तानि, कुवलयावल्या नीलोत्पलसमूहस्य रज्जुभि र्नालसूत्रैः ग्रथ्यमानानि परस्परं बध्यमानानि, पत्रपुटान्येव घट्यः क्षुद्रघटा स्ता एव च यन्त्रकाणि तानि। "अरं शीघ्रे च चक्राङ्गे शीघ्रगे पुनरन्यवत्।" इति विश्वः।

(ङ) क्वचिदिति। स्फटिकबलाकावलीषु स्फटिकनिर्म्मितबकश्रेणीषु वान्ता उद्गीर्णा वारिधारा याभिस्ताः, लिखितानि चित्रितानि इन्द्रायुधानि शक्रधनूंषि यासु ताः, तथा सञ्चार्य्यमाणा निर्म्माणकौशलेनैव परिचाल्यमानाः, मायामेघमालाः कृत्रिममेघश्रेणीः।

(च) क्वचिदिति। उपान्तेषु प्रान्तसमीपेषु प्ररूढा उत्पन्ना पाण्डवः पाण्डुरवर्णाः यवाङ्कुरा यासां तासु, तरुणैर्नूतनैः मालतीनां कुसुमानां कुड्मलैर्मुकुलैः दन्तुरिता विषमीकृतास्तरङ्गा यासां तासु, हरिचन्दनद्रववापिकासु श्वेतचन्दनरसपूर्णदीर्घिकासु, शिशिरीक्रियमाणाः प्रक्षालनेन शीतलीक्रियमाणाः, हारयष्टीर्मुक्तामालाः।

(छ) क्वचिदिति। मुक्ताफलक्षोदैर्मौक्तिकचूर्णैः रचितानि निर्म्मितानि आलवालानि जलरक्षणाय वृक्षमूल-वेष्टनानि येषां तान्, तथा अनवरतं स्थूलजलविन्दूनां दुर्द्दिनं वृष्टिं उत्सृजतस्त्यजतः, यन्त्रवृक्षकान् यन्त्रमयान् क्षुद्रवृक्षान्। "घनान्धकारि वृष्टौ च दुर्द्दिनं कवयो विदुः।" इति साक्षः।

ঠোঙার) ঘটীযন্ত্র (জলনিঃসারণের যন্ত্র) আছে, সে গুলিকে সাপলার সূতা দিয়া বাঁধিয়া রাখিয়াছে, তাহাতে আবার কেতকীফুলের পাতার কতকগুলি কৃত্রিম জলের ডোঙা ঝুলান আছে, মোটা মোটা মৃণাল দিয়া সেই ডোঙাগুলির আড়া তৈয়ার করিয়া দিয়াছে; (ঙ) কোন স্থানে নির্ম্মাণের কৌশলে কতকগুলি কৃত্রিম মেঘ চলিতেছে, তাহার উপরে ইন্দ্রধনু চিত্রিত রহিয়াছে, সেই মেঘের নীচে আবার স্ফটিক দ্বারা অনেকগুলি বকপক্ষী নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছে, তাহাদের গায়ের উপরে আবার মেঘে বৃষ্টি করিতেছে; (চ) কোন স্থানে শ্বেত-চন্দন জলে পরিপূর্ণ কতকগুলি দিঘী রহিয়াছে, তাহার তীরের নিকটে পাণ্ডুবর্ণ যবাঙ্কুর জন্মিয়াছে, নূতন মালতীফুলের কলিকা পড়িয়া সেই দীঘী গুলির তরঙ্গ গুলিকে উঁচু নীচু করিতেছে; পরিচারিকারা সেই দীঘীগুলিতে মুক্তার হার ধুইয়া ঠাণ্ডা করিতেছে; (ছ) কোন স্থানে কতকগুলি যন্ত্রবৃক্ষ (কলের গাছ) রহিয়াছে, সে গুলি অবিশ্রান্ত বড় বড় জলবিন্দু বর্ষণ

---

(१)...दन्तारकाणि। (२) कनककेतक..., कृतकेतक...। (३) दलद्रोणिकानि।
(४) कमलपत्र...। (५)...रूढ...। (६) अनवरतेवन्दनस्थूल...।

কান্, (ক) ক্বচিদ্বিধুত-পক্ষ-নিক্ষিপ্ত-শীকরানীত-নীহারা ভ্রমন্তীর্যন্ত্রময়ীঃ পত্র-শকুনিশ্রেণীঃ, (খ) ক্বচিন্মধুকর-কিঙ্কিণী-পঙ্‌ক্তি-পটুতর-রবা বধ্যমানাঃ (১) কুসুমদামদোলাঃ, (গ) ক্বচিদুদরারূঢ়-নির্গতোন্নাল-(২) নলিনী-চ্ছদ-চ্ছাদিত-মুখান্ প্রবেশ্যমানান্ শাতকুম্ভকুম্ভান্, (ঘ) ক্বচিদ্‌ঘটিত-কদলী-গর্ভস্তম্ভ-দণ্ডানি বধ্যমানানি (৩) চারুবংশাকৃতীনি কুসুমস্তবকাতপত্রাণি, (ঙ) ক্বচিৎ কর-মৃদিত-কর্পূর-পল্লব-রসেনাধিবাস্যমানানি বিসতন্তুময়ান্যংশুকানি,(চ)

(খ) ক্বচিদিতি। বিধুতৈঃ কম্পিতৈঃ পক্ষৈঃ পত্রৈর্নিক্ষিপ্তা যে শীকরা জলবিন্দবস্তৈরানীতা উপস্থাপিতা উৎপাদিতা নীহারাস্তুষারা যাভিস্তাঃ, ভ্রমন্তীর্ঘূর্ণমানাঃ, যন্ত্রময়ীর্যন্ত্রাত্মিকাঃ, পত্রশকুনিশ্রেণীঃ পর্ণনির্ম্মিত পক্ষিপঙ্‌ক্তীঃ।

(গ) ক্বচিদিতি। মধুকরা ভ্রমরা এব কিঙ্কিণ্যঃ ক্ষুদ্রঘণ্টিকাস্তাসাং পঙ্‌ক্তেঃ শ্রেণ্যাঃ পটুতরঃ অত্যুচ্চৈ রবো যাসু তাঃ, বধ্যমানাঃ পরিচারিকাভির্নির্ম্মীয়মাণাঃ। অত্র নিরঙ্গং কেবলরূপকমলঙ্কারঃ।

(ঘ) ক্বচিদিতি। উদরেষু অভ্যন্তরেষু আরূঢা উৎপন্নাঃ অথ চ নির্গতা মুখেভ্যো বহির্গতা উন্নালা উদ্‌গতদণ্ডাশ্চ যা নলিন্যঃ পদ্মিন্যস্তাসাং ছদৈঃ পত্রৈশ্ছাদিতানি মুখানি যেষাং তান্, প্রবেশ্যমানান্ শাতকুম্ভকুম্ভান্ সুবর্ণকলসান্। অত্র ছেকানুপ্রাসোঽলঙ্কারঃ।

(ঙ) ক্বচিদিতি। ঘটিতা নির্ম্মিতাঃ কদলীনাং রম্ভাবৃক্ষাণাং গর্ভস্তম্ভা এব দণ্ডা যেষাং তানি, বধ্যমানানি পরিচারিকাভির্নির্ম্মীয়মাণানি, চারুবংশানাং সুন্দরবেণূনাং আকৃতিরিবাকৃতির্যেষাং তানি, কুসুমস্তবকাতপত্রাণি পুষ্পগুচ্ছচ্ছত্রাণি। অত্র লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

(চ) ক্বচিদিতি। করেণ মৃদিতা বিদলিতা যে কর্পূরপল্লবাস্তেষাং রসেন নির্য্যাসেন অধিবাস্যমানানি সুরভীক্রিয়মাণানি, বিসতন্তুময়ানি মৃণালসূত্রনির্ম্মিতানি, অংশুকানি বসনানি।

করিতেছে এবং সেগুলির মূলে মুক্তাচূর্ণদ্বারা আলবাল নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছে ; (খ) কোন স্থানে কতকগুলি পত্রনির্ম্মিত কলের পক্ষী রহিয়াছে, সেগুলি ঘুরিতেছে, আর পাখা কাঁপাইয়া জলবিন্দু নিক্ষেপ করিয়া নীহার সৃষ্টি করিতেছে ; (গ) কোন স্থানে ফুলের মালা দিয়া দোলা তৈয়ার করিতেছে, তাহাতে ভ্রমররূপ কিঙ্কিণীর উচ্চরব হইতেছে ; (ঘ) কোন স্থানে সুবর্ণ-কলস প্রবেশ করাইতেছে, সেগুলির ভিতরে পদ্মলতা জন্মিয়াছে, তাহার নাল উপরে উঠিয়াছে এবং তাহার পাতায় সেই কলসগুলির মুখ আচ্ছাদন করিয়াছে ; (ঙ) কোন স্থানে পুষ্পগুচ্ছ-দ্বারা সুন্দর বংশের (বাঁশের) আকৃতি ছত্র নির্ম্মাণ করিতেছে, কলার থোড় দিয়া তাহার দণ্ড করিয়াছে ; (চ) কোন স্থানে কতকগুলি মৃণালসূত্র-নির্ম্মিত বস্ত্র রহিয়াছে, সেগুলিকে হস্ত-মর্দ্দিত কর্পূর-পল্লবের রসে সুগন্ধ করিতেছে ; (ছ) কোন স্থানে কতকগুলি মল্লিকা-পুষ্প-

---

(১)...পটুতররবোদ্ধ্যমানাঃ, পটুতরাবধ্যমানাঃ।

(২)...নির্গতোন্নাল···। (৩)...দণ্ড নিবধ্যমান চারু···।

क्वचिल्लवलीफलद्रवेणार्द्रीक्रियमाणान् तृणशून्य-(१) मञ्जरीकर्णपूरान्, (छ) क्वचिदम्भोजिनी-दल-व्यजनैर्वीज्यमानान् उपलभाजनभाजः (२) शीतौषधि-रसान्, (ज) अन्यांश्चैवंप्रकारान् शिशिरोपचारोपकरणकल्पनाव्यापारान् (३) परिजनेन कृतान् क्रियमाणांश्च वीक्षमाणः (झ) हिमगृहकस्य मध्यभागं हृदयमिव हिमवतः, जलक्रीडागृहमिव प्रचेतसः, जन्मभूमिमिव सर्वचन्द्रकला-नाम्, कुलगृहमिव सर्वचन्दनवनदेवतानाम् प्रभवमिव सर्वचन्द्रमणीनाम्, निवासमिव सर्वमाघमासयामिनीनाम्, सङ्केतसदनमिव सर्वप्रावृषाम्, ग्रीष्मो-ष्मापनोदनोद्देशमिव (४) सर्वनिम्नगानाम्, वडवानलसन्तापापनोदननिवास-

(छ) क्वचिदिति। तृणशून्यानां मल्लिकाकुसुमानां मञ्जरीकर्णपूरान् वल्लरीमयकर्णाभरणानि। "तृणशून्यं मल्लिकायां" इति विश्वः।

(ज) क्वचिदिति। अम्भोजिनीदलानि पद्मिनीपत्राण्येव व्यजनानि तैः। उपलभाजनानि पाषाण-पात्राणि भजन्त इति तान्, शीताः शीतला ये ओषधीनां फलपाकान्तलतानां रसास्तान्।

(झ) अन्यानिति। शिशिरोपचाराः शीतलप्रक्रियास्तेषामुपकरणकल्पनाः सामग्रीनिर्म्माणानि तद्रूपा व्यापारास्तान् वीक्षमाणश्चन्द्रापीडः हिमगृहकस्य मध्यभागमाससादेत्यन्वयस्तु क्त एव।

(ञ) हिमगृहकस्य मध्यभागं विशेषयन्नाह हिमेति। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि मध्यभागमित्यस्य विशेषणानि। हिमवतो हिमाचलस्य। प्रचेतसो वरुणस्य। कुलगृहं वंशपरम्परागतसदनमिव। प्रभवन्त्य-स्मादिति प्रभव उत्पत्तिस्थानं तमिव। अपादाने अल्। निवसन्त्यस्मिन्निति निवासो वासस्थानं तमिव। सर्वप्रावृषां सकलवर्षाऋतूनां सङ्केतसदनमिव सम्मेलनाय सङ्केतितं गृहमिव। सर्वनिम्नगानां समस्तनदीनां ग्रीष्मे ग्रीष्मकाले य उष्मा सन्तापस्तस्य अपनोदनं दूरीकरणं तस्य उद्देशं स्थानमिव। वडवानलेन यः सन्ताप-स्तस्य यदपनोदनं तस्य निवाससमाश्रयमिव। विद्युत इत्यादि। वैद्युती यो दहनो वह्निस्तेन यो दाहस्तस्य

মঞ্জরীর কর্ণালঙ্কার রহিয়াছে, সেগুলিকে নোয়াড়ি (লোয়াইল) ফলের রস দ্বারা আর্দ্র করিতেছে ; (জ) কোন স্থানে পাষাণময় পাত্রে শীতল লতার কতকগুলি রস রহিয়াছে, তাহাতে আবার পরিচারিকারা পদ্মপাতার পাখা দিয়া বাতাস করিতেছে ; (ঝ) পরিজনগণ শীতলতা সম্পাদন করিবার জন্য এই প্রকার অন্যান্য সামগ্রী সকল সংগ্রহ করিতেছিল ও করিয়াছিল ; চন্দ্রাপীড় তাহা দেখিতে দেখিতে যাইয়া সেই হিমগৃহের মধ্যস্থানে উপস্থিত হইলেন। (ঞ) সেই হিমগৃহের মধ্যস্থানটিকে হিমালয়ের যেন হৃদয়, বরুণের যেন জলকেলির গৃহ, সমস্ত চন্দ্রকলারই যেন জন্মভূমি, সকল চন্দন-বন দেবতাদেরই যেন পৈতৃক বাসস্থান, সমস্ত চন্দ্রকান্ত-মণিরই যেন উৎপত্তি-স্থান, মাঘমাসের সকল রাত্রিরই যেন আবাসভূমি, সকল বর্ষাকালেরই যেন সম্মিলিত হইবার সঙ্কেত-গৃহ, সমস্ত নদীগণেরই যেন গ্রীষ্ম-সন্তাপ-নিবৃত্তির জন্য নির্দ্দিষ্ট স্থান, সকল সমুদ্রগণেরই যেন বাড়বানল-সন্তাপ দূর করার জন্য বাসগৃহ, সকল

(१) तृणयूथ...। (२)...भाजान्। (३)...परिकल्पनाव्यापारान्। (४)...अपनोदोद्देशमिव।

মিব সর্ব্বসাগরাণাম্, বৈদ্যুত-দহন-দাহ-প্রতীকার-স্থানমিব সর্ব্বজলধরাণাম্, ইন্দু-বিরহ-দুঃসহ-দিবসাতিবাহন-স্থানমিব কুমুদিনীনাম্, হরহুতাশননির্ব্বাপণক্ষেত্রমিব মকরধ্বজস্য, (ঞ) দিনকর-করৈরপি সর্ব্বতো জলযন্ত্র-ধারা-সহস্র-সমুৎসারিতৈরতিশীতস্পর্শভয়নিবৃত্তৈরিব পরিহৃতম্, (ট) অনিলৈরপি কদম্ব-কেসরোৎকর-বাহিভিঃ কণ্টকিতৈরিবানুগতম্, (ঠ) কদলীবনৈরপি পবনচলিতদলৈর্জাড্যজনিতবেপথুভিরিব পরিবারিতম্ (ড) অলিভিরপি কুসুমামোদমদমুখরৈরাবদ্ধদন্তবীণৈরিব বাচালিতম্, (ঢ) লতাভিরপি নিরন্তর-মধুকর-পটল-জটিলাভির্গৃহীতনীল-প্রাবরণকাভিরিব বিরাজিতমাসসাদ। (ণ)

প্রতীকারস্থানমিব। ইন্দোশ্চন্দ্রস্য বিরহেণ দুঃসহো যো দিবসস্তস্য অতিবাহনস্থানমিব। তথা মকরধ্বজস্য মদনস্য, হরস্য যো হুতাশনস্তৃতীয়নেত্রজাতো বহ্নিস্তস্য নির্ব্বাপণক্ষেত্রমিব। সর্ব্বত্রৈবাত্যন্তশীতলত্বাদিতি ভাবঃ, আত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারশ্চ।

(ট) দিনেতি। দিনকরস্য সূর্য্যস্য করৈঃ কিরণৈরপি, সর্ব্বতো জলযন্ত্রাণাং ধারাসহস্রেণ সমুৎসারিতৈর্দূরীকৃতৈঃ, অতএব অতিশীতস্পর্শভয়েন নিবৃত্তৈরিব সদ্ভিঃ, পরিহৃতং পরিত্যক্তম্। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ঠ) অনিলৈরিতি। অনিলৈর্বায়ুভিরপি, কদম্বানাং কুসুমানাং কেসরোৎকরং কিঞ্জল্কসমূহং বহন্তীতি তৈঃ, অতএব কণ্টকিতৈ রোমাঞ্চিতৈরিব সদ্ভিঃ, কদম্বকেসরাণাং রোমাঞ্চসাম্যাদিতি ভাবঃ, অনুগতং সমন্বিতম্। অত্রাপি রোমাঞ্চজননস্যোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ড) কদলীতি। কদলীবনৈরপি পবনেন বায়ুনা চলিতানি কম্পিতানি দলানি পত্রাণি যেষাং তৈঃ, অতএব জাড্যেন শৈত্যেন জনিতো বেপথুঃ কম্পো যেষাং তৈরিব সদ্ভিঃ পরিবারিতং পরিবেষ্টিতম্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ঢ) অলিভিরিতি। অলিভির্ভ্রমরৈরপি কুসুমামোদেন পুষ্পসৌরভেণ যো মদো হর্ষস্তেন মুখরৈর্ধ্বনদ্ভিঃ, অতএব আবদ্ধা বিহিতা দন্তবীণা শীতাতিশয়েন দন্তঘর্ষণজনিতঃ শব্দো যৈস্তৈরিব সদ্ভিঃ, বাচালিতং মুখরীকৃতম্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ণ) লতাভিরিতি। লতাভিরপি নিরন্তরেণ ঘনেন মধুকরপটলেন জটিলাভিরাবৃতাভিঃ, অতএব

মেঘগণেরই যেন বিদ্যুৎ-সম্ভূত-অগ্নি-কর্ত্তৃক দাহের প্রতীকার স্থান, কুমুদিনীগণের যেন চন্দ্র-বিরহে দুঃসহ দিন অতিবাহিত করিবার স্থান এবং কামদেবের যেন হর-নয়নাগ্নি-নির্ব্বাপণের ক্ষেত্র বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ট) সকল দিকের জলযন্ত্রের ধারা সমূহ, সূর্য্যের কিরণগুলিকে অপসারিত করিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সেই সূর্য্যের কিরণগুলি, অত্যন্ত শীতস্পর্শ-ভয়ে নিবৃত্তি পাইয়াই যেন সেই হিমগৃহ পরিত্যাগ করিয়াছে। (ঠ) বায়ুও, কদম্বকুসুমের কেসরসমূহ বহন করিতেছিল বলিয়া রোমাঞ্চিত হইয়াই যেন সেই গৃহমধ্যে বিচরণ করিতেছিল। (ড) বায়ুবেগে পাতাগুলি কাঁপিতেছিল বলিয়া কদলীবনগুলিও যেন শীতে কাঁপিতে থাকিয়া সেই ঘরখানিকে বেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (ঢ) ভ্রমরগণও, পুষ্পের সৌরভে আনন্দ বশতঃ রব করিতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, তাহারা অত্যন্ত শীতবশতঃ দন্তঘর্ষণের রব করিতে আরম্ভ করিয়া ঘরখানিকে মুখর করিয়াছে। (ণ) লতাসমূহও ঘন ভ্রমরসমূহে আবৃত

ক্রমেণ চ তত্রান্তর্বহিশ্চাতিবহলেন পিণ্ডহার্য্যেণেবোপলিপ্যমানোঽতিশীতলেন স্পর্শেনামন্যতাত্মনো মনশ্চন্দ্রময়ং, কুমুদময়ানীন্দ্রিয়াণি, জ্যোৎস্নাময়ান্যঙ্গানি, মৃণালিকাময়ীং ধিয়ম্ (ত)। অগণয়চ্চ হারময়ান্ (১) অর্ককিরণান্, চন্দনময়মাতপম্, কর্পূরময়ং পবনম্, উদকময়ং কালম্, তুষারময়ং ত্রিভুবনম্। (থ)

এবংবিধস্য চ তস্যৈকদেশে সখীকদম্বপরিবৃতাম্, অশেষসরিৎপরিবারামিব ভগবতীং গঙ্গাং হিমবতো গুহাতলগতাম্, (দ) কুল্যাভ্রমি-ভ্রমিতেন কর্পূর-

---

গৃহীতানি শীতনিবারণার্থং ধৃতানি নীলানি প্রাবরণানি আচ্ছাদনবস্ত্রাণি যাভিস্তাভিরিব সতীভিঃ, বিরাজিতম্ পরিশোভিতম্। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ত) ক্রমেণেতি। কিঞ্চ। অত্র হিমগৃহে, অন্তর্বহিশ্চ অতিবহলেন নিতান্তপ্রচুরেণ, পিণ্ডবৎ মৃদাদিপিণ্ডবৎ হার্য্যেণ হর্ত্তুং যোগ্যেন হস্তধারণযোগ্যেনেত্যর্থঃ, অতএব তেনোপলেপনসম্ভব ইতি ভাবঃ, অতিশীতলেন স্পর্শেন, উপলিপ্যমান ইব চন্দ্রাপীড়ঃ, আত্মনো মনশ্চন্দ্রময়ং চন্দ্রনিষ্পন্নমমন্যত। ইত্যমন্যতাপ্যন্বয়ঃ। অত্র প্রথমাপি বাচ্যা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা, অমন্যতেতি ক্রিয়ায়া অপ্যুৎপ্রেক্ষাবাচকত্বাদপরা অপি বাচ্যা এব চতস্রঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষাস্তাসাঞ্চ মিথো নিরপেক্ষতয়া সংসৃষ্টিঃ।

(থ) অগণয়দিতি। কিঞ্চ। অর্ককিরণান্ হারময়ান্ মুক্তাপ্রালম্বনিষ্পন্নান্, অগণয়দমন্যত শীতলত্বসাম্যাদিতি ভাবঃ। অন্যত্রাপ্যেবমেবার্থো ভাবশ্চ বোধ্যঃ। অত্রাপি অগণয়দিতি ক্রিয়ায়া উৎপ্রেক্ষাবাচকত্বাৎ নিষ্পাদার্থে চ ময়ট্প্রত্যয়াৎ পঞ্চৈব বাচ্যাঃ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষাস্তাসাঞ্চ পূর্ব্ববৎ সংসৃষ্টিঃ।

(দ) এবমিতি। কিঞ্চ। এবংবিধস্য তস্য হিমগৃহস্যৈকদেশে চন্দ্রাপীড়ঃ কাদম্বরীং ব্যলোকয়দিতি দূরবর্ত্তিন্যা ক্রিয়য়ান্বয়ঃ। অত্র স্ত্রিয়াং দ্বিতীয়ৈকবচনান্তপদানি কাদম্বরীমিতি বক্ষ্যমাণস্য বিশেষণানি। সখীকদম্বেন বয়স্যাসমূহেন পরিবৃতাং, অতএব অশেষাঃ সরিতঃ পরিবারা যস্যাস্তাং, হিমবতো গিরের্গুহাতলগতাং ভগবতীং গঙ্গামিব স্থিতাম্। লুপ্তোপমালঙ্কারঃ।

ছিল বলিয়া অত্যন্ত শীতবশতঃ গাত্রে নীলবর্ণ বস্ত্র ধারণ করিয়াই যেন সেই ঘরখানির শোভা করিয়াছিল।

(ত) ক্রমে সেই গৃহমধ্যে অত্যন্তপ্রচুর ও মৃৎপিণ্ডপ্রভৃতির ন্যায় হস্ত-ধারণ-যোগ্য অত্যন্ত শীতল স্পর্শে অন্তরে ও বাহিরে উপলিপ্ত হইয়াই যেন চন্দ্রাপীড়, নিজের মনকে চন্দ্রময়, ইন্দ্রিয়গুলিকে কুমুদময়, অঙ্গসমূহকে জ্যোৎস্নাময় এবং বুদ্ধিকে মৃণালময় ভাবিতে লাগিলেন। (থ) আর সূর্য্যের কিরণগুলিকে মুক্তামালাময়, রৌদ্রকে চন্দনময়, বায়ুকে কর্পূরময়, সেই সময়টিকে জলময় এবং ত্রিজগৎকে শিশিরময় মনে করিতে লাগিলেন।

(দ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় দেখিলেন—হিমালয়ের গুহার ভিতরে অবস্থিত ও সমস্ত নদীগণে পরিবেষ্টিত ভগবতী গঙ্গাদেবীর ন্যায় কাদম্বরী, এইরূপ সেই হিমগৃহের এক দিকে

---

(১) নীহারময়ান্।

रस-स्रोतसा कृतपरिवेशाया मृणालदण्डमण्डपिकायास्तले कुसुमशयनमधिशयानाम्, (ध) हाराङ्गद-वलय-रशना-नूपुरैर्मृणालमयैर्निगडैरिव संयतामीर्ष्यया (१) मन्मथेन, (न) चन्दनधवले स्पृष्टामिव ललाटे शशलाञ्छनेन, (प) वाष्पवारिवाहिनि चुम्बितामिव चक्षुषि वरुणेन, (फ) वर्द्धितनिश्वास-(२) मरुति दष्टामिव मुखे मातरिश्वना,(ब) सन्तापप्रतप्तेष्वध्यासितामिवाङ्गेषु पतङ्गेन,(३)(भ)

(ध) कुल्येति । कुल्या तन्मण्डपिकाया एव समन्तादवस्थिता कृत्रिमा अल्पा सरित् तस्या या भ्रमिः स्वत एव भ्रमणं तया भ्रमितेन घूर्णितेन, कर्पूररसस्रोतसा कृतः परिवेशः परिवेष्टनं यस्यास्तस्याः, मृणालान्येव दण्डाः स्तम्भा यस्याः सा चासौ मण्डपिका चेति तस्याः, तस्या अधोदेशे, कुसुमशयनं पुष्पशय्यां अधिशयानामधितिष्ठन्तीम् ।

(न) हारैरिति । मन्मथेन ईर्ष्यया, निगडैः शृङ्खलास्वरूपैः, मृणालमयैर्मृणालनिर्मितैः, हाराङ्गदवलयरशनानूपुरैः संयतां बद्धामिव । अत्र निरङ्गकेवलरूपकक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः ।

(प) चन्दनेति । शशलाञ्छनेन चन्द्रेण, चन्दनेन चन्दनलेपनेन धवले ललाटे स्पृष्टामिव, लिप्तचन्दनत्वादिति भावः । अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन श्लोकरूपापह्नुतिर्व्यज्यते । ललाट इति गवि बद्धा गौरित्यादिवदधिकरण एव सप्तमी । उत्तरत्राप्येवम् ।

(फ) वाष्पेति । वरुणेन वाष्पवारिवाहिनि चक्षुषि चुम्बितामिव, तद्बाष्पवारिच्छलाद्वरुणस्य च जलमयत्वादिति भावः । पूर्ववदुत्प्रेक्षयापह्नुतिर्व्यज्यते ।

(ब) वर्द्धितेति । मातरिश्वना वायुना, वर्द्धितो मदनेन दीर्घीकृतो निश्वासमरुद्यस्मिन् तस्मिन् मुखे अधर इत्यर्थः दष्टां कृतदन्तघातामिव, तन्निश्वासच्छलादिति भावः । पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च ।

(भ) सन्तापेति । पतङ्गेन सूर्य्येण, सन्तापप्रतप्तेषु मदनोत्तापतप्तेषु अङ्गेषु अध्यासितामधिष्ठितामिव, अङ्गेषु तथैवोत्तापानुभवादिति भावः । क्रियोत्प्रेक्षा । "पतङ्गौ पक्षिसूर्य्यौ च" इत्यमरः ।

সখীগণে পরিবেষ্টিত হইয়া অবস্থান করিতেছেন। (ধ) একখানি ক্ষুদ্র মণ্ডপের নীচে পুষ্পময় শয্যার উপরে তিনি শয়ন করিয়াছেন; সেই মণ্ডপখানির স্তম্ভগুলি মৃণালময় ছিল এবং চারিদিকে কৃত্রিম একটি ক্ষুদ্র নদী নিজেই ঘুরিতেছিল, তাহাতে তাহার কর্পূরময় জলস্রোতও ঘুরিতে থাকিয়া সেই মণ্ডপখানিকে পরিবেষ্টন করিতেছিল। (ন) কামদেব ঈর্ষাবশতঃ, শৃঙ্খলস্বরূপ ও মৃণালনির্ম্মিত হার, কেযূর, বলয়, কাঞ্চীদাম ও নূপুর দ্বারা কাদম্বরীকে যেন বন্ধন করিয়া রাখিয়াছিলেন। (প) কাদম্বরীর ললাটে চন্দন লেপন করায় তাহা শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, সুতরাং চন্দ্র যেন সেই স্থানে স্পর্শ করিয়াছিলেন। (ফ) নয়ন, অশ্রুজল বহন করিতেছিল; সুতরাং বরুণ যেন তাহাতে চুম্বন করিয়াছিলেন। (ব) ওষ্ঠের নিকট দিয়া দীর্ঘনিশ্বাস নির্গত হইতেছিল; অতএব বায়ু যেন তাহাতে দংশন করিয়াছিলেন। (ভ) মদন-সন্তাপে সন্তপ্ত

---

(१) इवेर्ष्यया । (२) निःश्वास... । (३) अनङ्गेन ।

कन्दर्पदाहदीपिते गृहीतामिव हृदये हुतभुजा, (म) स्वेदिनि परिष्वक्तामिव वपुषि जलेन, (य) दैवतैरपि विलुप्यमानसौभाग्यामिव सर्वशः, (र) हृदयेन सह प्रियतमसमीपमिवोपगतैरङ्गैरुपजनितदौर्बल्याम्, (ल) आम्लान-चन्दन-पाण्डुरञ्च रोमाञ्चमनवरतहारस्पर्शलग्नं मुक्ताफलकिरणपुञ्जं (१) इवोद्वहन्तीम्, (व) स्वेदशीकरिणौ च कपोलपालौ पक्षपवनेन वीजयद्भिरनुकम्प्यमाना-

(म) कन्दर्पेति। हुतभुजा वह्निना, कन्दर्पदाहदीपिते मदनोत्तापतप्ते हृदये गृहीतामिव, मदनज्वलनादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षयापह्नुतिर्व्यज्यते।

(य) स्वेदिनीति। जलेन जलसामान्येन स्वेदिनि घर्मवति, वपुषि देहे परिष्वक्तामालिङ्गितामिव, स्वेदजलादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारो ध्वनिश्च।

(र) दैवतैरिति। दैवतैरपि पूर्वोक्तैर्मन्मथशशलाञ्छनादिभिर्देवैरपि सर्वशो विलुप्यमानं पृथक् पृथक् सम्भोगेन विनाश्यमानं सौभाग्यं भर्तृप्रियत्वं यस्यास्तामिव, परपुरुषसम्भोगे नारीणां भर्तृप्रियत्वलोपस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः। अत्र सौभाग्यलोपोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा, तथा च निरतिशयसौन्दर्यमस्या ध्वनितम्।

(ल) हृदयेनेति। हृदयेन सह, प्रियतमस्य चन्द्रापीडस्य समीपमुपगतैरिवाङ्गैः उपजनितं दौर्बल्यं दुर्बलता यस्यास्ताम्. गमनपरिश्रमेण दौर्बल्यं भवत्येवेति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(व) आम्लानेति। किञ्च, आम्लानेन अल्पशुष्केण चन्दनेन पाण्डुरं शुभ्रं रोमाञ्चं, अनवरतहारस्पर्शेन लग्नं मुक्ताफलानां हारान्तर्गतानां मौक्तिकानां किरणपुञ्जमिव उद्वहन्तीं देहे दधानाम्। तादृशरोमाञ्च-मुक्ताकिरणपुञ्जयोः शुभ्रतासाम्यादिति भावः। जात्युत्प्रेक्षा।

(श) स्वेदेति। किञ्च, पक्षपवनेन, स्वेदशीकरिणौ घर्मबिन्दुमतौ कपोलपालौ कादम्बर्याः गण्डयुगलं वीजयद्भिः. अवतंसकुसुमेषु ये मधुकरास्तैरनुकम्प्यमानां दयापात्रीक्रियमाणामिव, स्वेदशीकरलोपायैव वीजनादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

সমস্ত অঙ্গেই যেন সূর্য্য অধিষ্ঠান করিতেছিলেন। (ম) মদনদাহে প্রজ্বলিত হৃদয়ে অগ্নি যেন ধারণ করিয়াছিলেন। (য) কাদম্বরীর দেহ হইতে ঘর্ম্ম নির্গত হইতেছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল—যেন জল তাঁহাকে আলিঙ্গন করিয়াছে। (র) এই ভাবে দেবগণও যেন সকল প্রকারে কাদম্বরীর সৌভাগ্য নষ্ট করিতেছিলেন। (ল) হৃদয়ের সহিত কাদম্বরীর সমস্ত অঙ্গই যেন প্রিয়তম চন্দ্রাপীড়ের নিকট গিয়াছিল, তাই তাহারাই তাঁহার দুর্ব্বলতা জন্মাইয়াছিল। (ব) ঈষৎ শুষ্ক চন্দনে কাদম্বরীর রোমাঞ্চগুলি শুভ্রবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, অনবরত হার সংস্পর্শে দেহে সংলগ্ন মুক্তার কিরণপুঞ্জই যেন সে, ধারণ করিতেছে। (শ) কাদম্বরীর গণ্ডযুগল হইতে ঘর্ম্মবিন্দু নির্গত হইতেছিল; এ দিকে ভ্রমরগণ, মস্তকভূষণ পুষ্পরাশির উপর

(१)…निकरपुञ्जं।

মিবাবতংসকুসুমমধুকরৈঃ, (শ) অবতংস-কুসুম-মধুকর-(১) রব-দহন-দগ্ধমিব (২) শ্রোত্রমপাঙ্গনির্গতেনাশ্রুস্রোতসা সিঞ্চন্তীম্, (ষ) অতিপ্রবৃত্তস্য চাশ্রুণো নির্বাহপ্রণালিকামিব কর্পূরকেতককলিকাং কর্ণে কলয়ন্তীম্, (স) আয়তশ্বাস-বিধুতি-তরলিতেন চ সন্তাপ-ভয়-পলায়মানেন দেহপ্রভাবিতানেনেবাংশুকেন বিমুচ্যমানকুচকলসাম্, (হ) আপতৎ-প্রচল-চামর-প্রতিবিম্বস্য (৩) কুচকলসযুগলং প্রিয়ান্তিকগমনৌৎসুক্যজাতপক্ষামিব করতলেন নিরুন্ধতীম্, (৪) (ক্ষ)

(ষ) অবেতি। অবতংসকুসুমমধুকরাণাং রব এব দহন উদ্দীপকতয়া বহ্নিত্বেন দগ্ধমিব শ্রোত্রং কর্ণং, অপাঙ্গান্নেত্রপ্রান্তান্নির্গতেন অশ্রুস্রোতসা সিঞ্চন্তীম্, দাহনিবৃত্ত্যর্থমিতি ভাবঃ। অন্যোঽপি দগ্ধং বস্তু জলেন সিঞ্চতি। অত্র নিরঙ্গকেবলরূপকক্রিয়োৎপ্রেক্ষয়োরঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ।

(স) অতীতি। কিঞ্চ, অতিপ্রবৃত্তস্য আধিক্যেন নির্গতস্য অশ্রুণঃ, নির্বাহপ্রণালিকামিব নির্গমনমার্গমিব কর্পূরবৎ যা কৈতক্যাঃ পুষ্পস্য কলিকা শুভ্রেত্যর্থস্তাং কর্ণে কলয়ন্তীং বিভ্রতীম্, জলনির্গমনালবৎ কৈতকীকলিকায়া অপি শূন্যমানত্বাদিতি ভাবঃ। জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(হ) আয়তেতি। কিঞ্চ, আয়তো দীর্ঘো যঃ শ্বাসস্তেন যা বিধুতিঃ কম্পনং তয়া তরলিতেন চঞ্চলীকৃতেন, সন্তাপভয়পলায়মানেন দেহপ্রভায়া বিতানেন বাহুল্যেনেব অংশুকেন উত্তরীয়বসনেন বিমুচ্যমানৌ পরিত্যজ্যমানৌ কুচকলসৌ যস্যাস্তাম্। জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ক্ষ) আপতদিতি। আপতন্তৌ নিপতন্তৌ প্রচলয়োরুভয়পার্শ্বান্দোলনাচ্চলিতয়োশ্চামরয়োঃ প্রতিবিম্বে প্রতিচ্ছায়াদ্বয়ং যস্মিন্ তৎ, অতএব প্রিয়স্য চন্দ্রাপীড়স্য অন্তিকে গমনায় যদৌৎসুক্যমুৎকণ্ঠা তেন জাতৌ পক্ষৌ পত্রযুগলং যস্য তদিব কুচকলসযুগলং করতলেন নিরুন্ধতী অবরুন্ধতীম্, অন্যথা যদি গচ্ছেদেবেতি ভাবঃ। অত্র পক্ষকরণানুবন্ধাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। চামরপ্রতিবিম্বযুগলং স্তনযুগলস্য পক্ষস্থানীয়ং, চামরয়োশ্চলনাত্তৎপ্রতিবিম্বয়োরপি চলনং, তচ্চলনাচ্চ একৈকস্যাপি ছিন্নপ্রতীতিঃ, অতএব চ গমনসম্ভাবনেতি বোধ্যম্।

থাকিয়া পক্ষসঞ্চালন পূর্ব্বক সেই গণ্ডযুগলে বাতাস করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন তাহারা কাদম্বরীর প্রতি দয়া প্রকাশ করিতেছে। (ষ) শিরোভূষণ-পুষ্পস্থিত ভ্রমরগণের রবস্বরূপ অগ্নিতে কর্ণযুগল যেন দগ্ধ করিয়াছিল; তাই কাদম্বরী, নয়ন-প্রান্ত-নির্গত অশ্রুজলে সেই কর্ণযুগলকে সিক্ত করিতেছিলেন। (স) অধিক পরিমাণে নির্গত অশ্রুজলের নিঃসরণ-পথের ন্যায় কর্পূরতুল্য শুভ্রবর্ণ কেতকী-পুষ্পের কলিকা কর্ণে ধারণ করিতেছিলেন। (হ) উত্তরীয় বসন দীর্ঘ নিশ্বাসবেগে কম্পিত হইয়া, স্তনযুগলকে পরিত্যাগ করিয়া পড়িয়া গিয়াছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, দেহের কান্তিপ্রবাহ যেন সন্তাপের ভয়ে পলাইয়া যাইতেছে। (ক্ষ) (দুই জন পরিচারিকা দুই দিকে থাকিয়া দুইটি চামর আন্দোলন করিতেছিল) সুতরাং কাদম্বরীর স্তনযুগলে সেই চঞ্চল চামরযুগলের প্রতিবিম্ব পড়িতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, প্রিয়তম

---

(১) অবতংসমধুকর...। (২)...রব-দব-দহন...।

(৩) আপতৎ প্রচলচামর..., ক্বচিৎ অকারো নাস্তি। (৪) নিরুন্ধতীম্।

मुहुर्मुहुर्भुजलतया तुषारशिलाशालभञ्जिकामालिङ्गन्तीम्, (क) मुहुः कपोलफलकेन कर्पूरपुत्रिकामाश्लिष्यन्तीम्, (ख) मुहुश्चरणारविन्देन चन्दनपङ्कप्रतियातनामामृशन्तीम्, (१) (ग) स्तनसंक्रान्तेनात्ममुखेनापि कुतूहलिनेव परिवृत्य विलोक्यमानाम्, (घ) कर्णपूरपल्लवेनापि स्वप्रतिबिम्बपल्लवशायिना (२) सोत्कण्ठेनेव चुम्ब्यमानकपोलफलकाम् (ङ) हारैरपि मुक्तात्मभिर्मदनपरवशैरिव प्रसारितकरैरालिङ्ग्यमानाम्, (च) मणिदर्पणमुरसि निहितं 'मोहेनास्य-

(क) मुहुरिति। भुजलतया तुषारशिलाशालभञ्जिका शीतलप्रस्तरनिर्म्मितपुत्तलिका मुहुर्मुहुरालिङ्गन्तीम्, सन्तापशान्त्यर्थमिति भावः।

(ख) मुहुरिति। कपोलफलकेन कर्पूरस्य पुत्रिका पुत्तलिका मुहुराश्लिष्यन्तीम्, पूर्ववद्भावः।

(ग) मुहुरिति। चरणारविन्देन चन्दनपङ्कस्य गाढचन्दनद्रवस्य प्रतियातना प्रतिमूर्त्तिं मुहुरामृशन्तीं आमर्शं कुर्वतीम्, पूर्व्ववद्भावः। एतेन तापातिशयो व्यज्यते।

(घ) स्तनेति। स्तनयोः संक्रान्तेन प्रतिबिम्बितेन आत्ममुखेनापि, कुतूहलिनेव 'अस्याः कीदृशी दशा जाता' इति कौतुकवतेव सता, परिवृत्य विवृत्य, प्रतिबिम्बस्य बिम्बाभिमुख्यादिति भावः, विलोक्यमानाम्। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) कर्णेति। कर्णपूरपल्लवेनापि कर्णाभरणीभूतकिसलयेनापि, स्वस्य प्रतिबिम्बे अर्थात् कपोलपतिते प्रतिबिम्बभूते पल्लवे शेते तिष्ठतीति तेन, एतेनास्यापि तापवत्त्वं सूचितं, सोत्कण्ठेनेव सता, चुम्ब्यमानं कपोलफलकं यस्यास्ताम्। गुणोत्प्रेक्षा।

(च) हारैरिति। मुक्त आत्मा येषां तैर्जीवन्मुक्तैरपि मदनपरवशैरिवेति विरोधः, मुक्ता मौक्तिकानि आत्मानः स्वरूपाणि येषां तैर्मुक्तामयैरिति समाधानं, तादृशैर्हारैरपि प्रसारिताः कराः किरणा हस्ताश्च यैस्तादृशैः सद्भिः आलिङ्ग्यमानाम्। अत्र विरोधाभासगुणोत्प्रेक्षयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः, तेन चास्याः सौन्दर्यातिशयो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

চন্দ্রাপীড়ের নিকটে যাইবার জন্য উৎকণ্ঠাই যেন স্তনযুগলের দুই দুইখানা পাখা করিয়া দিয়াছে; তাই কাদম্বরী করতল দ্বারা সেই স্তনযুগলকে অবরুদ্ধ করিতেছিলেন। (ক) কাদম্বরী বাহুলতা দ্বারা, শীতল-প্রস্তর-নির্ম্মিত একটি পুত্তলিকাকে বারংবার আলিঙ্গন করিতেছিলেন। (খ) কপোলদ্বারা কর্পূরের একটি পুত্তলিকাকেও বারংবার স্পর্শ করিতেছিলেন। (গ) পাদপদ্ম দ্বারা গাঢ় চন্দনের একটি প্রতিমূর্ত্তিকে বারংবার আমর্শন করিতেছিলেন। (ঘ) নিজের মুখখানাও স্তনের উপরে প্রতিবিম্বিত হইয়া কৌতুকবশতই যেন ফিরিয়া দেখিতেছিল। (ঙ) কর্ণের অলঙ্কার পল্লবটিও গণ্ডদেশে নিজের প্রতিবিম্ব-পল্লবে সংলগ্ন হইয়া উৎকণ্ঠার সহিতই যেন কাদম্বরীর গণ্ডে চুম্বন করিতেছিল। (চ) মুক্তাময় মালাগুলিও কামার্ত্ত হইয়া যেন কর প্রসারণ করিয়া কাদম্বরীকে আলিঙ্গন করিতেছিল। (ছ) কাদম্বরী, বক্ষঃস্থলে

(१) आमृशन्तीम्। (२) स्वप्रतिबिम्बशायिना।

मद्य त्वया' (१) इति जीवितस्पर्शमयं शपथं शशिनमिव कारयन्तीम्, (छ) करिणीमिव सम्मुखागतप्रमदवनगन्धवारणप्रसारितकराम्, (ज) प्रस्थिता-मिवानभीष्टदक्षिणवातमृगागमनाम्, (झ) मदनाभिषेकवेदिकामिव कमला-वृतचन्दनधवलपयोधरकलसावष्टब्धपार्श्वाम्, (ञ) आकाशकमलिनीमिव

(छ) मद्येति । उरसि निहितं शैत्यसम्पादनाय वक्षसि स्थापितं, मणिदर्पणमेव शशिनं शीतलत्वस्य तत्व-वर्त्तुलत्वसाम्यात् मणिमयदर्पणरूपं चन्द्रं, 'त्वया चन्द्रेण अद्य न उदेतव्यं न उदयभाजा भवितव्यम्, मम तापाति-शयसम्भवादिति भाव:,' इति एतत्प्रार्थनानन्तरमित्यर्थ:, जीवितस्पर्शमयं स्वजीवनस्पर्शनपूर्वकं शपथं 'अद्य नाहमुदेष्यामि' इत्यं शपथं कारयन्तीमिव, मणिदर्पणरूपचन्द्रस्य तदानीं हृदयस्पर्शित्वादिति भाव: । अन्योऽपि जीवनस्थानहृदयस्पर्शपूर्वकं दृढं शपथं करोति । अत्र "मुखं तव कुरङ्गाक्षि ! सरोजमिति नान्यथा ।" इति दर्पणोदाहृतवत् समासाभावेऽपि निरङ्गं केवलरूपकं क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर: ।

(ज) करिणीमिति । करिणीं हस्तिनीमिव, सम्मुखे आगतो य: प्रमदवनस्य प्रमदनामकान्त:पुरोद्यानस्य गन्ध: सौरभं तस्य वारणाय प्रसारितौ करौ हस्तौ यया ताम्, विरहिण्या: सौरभस्य उद्दीपकतया कष्ट-जनकत्वादिति भाव: । अन्यत्र तु सम्मुखागते प्रमदे प्रकृष्टमदे वनगन्धवारणे वन्यगन्धहस्तिनि तं प्रतीत्यर्थ: प्रसारित: कर: शुण्डा यया ताम् । अत्र पूर्णोपमालङ्कार: ।

(झ) प्रस्थितामिति । प्रस्थितां देशान्तरे चलितां स्त्रियमिव, अनभीष्टं दक्षिणवातस्य मलयवायो: मृगस्य मृगमदसौरभस्य च आगमनं यस्यास्ताम्, विरहिण्या दक्षिणपवनकस्तूरीसौरभादीनामतीवोद्दीपकत्वादिति भाव: । अन्यत्र तु अनभीष्टं दक्षिणे पार्श्वे वातमृगस्य वातप्रमीनामकहरिणस्य आगमनं यस्यास्ताम्, स्त्रीणां प्रयाणे दक्षिणभागे हरिणस्य अशुभसूचकतया वसन्तराजीयादौ प्रसिद्धत्वादिति भाव: । पूर्णोपमा ।

(ञ) मदनेति । मदनस्य कन्दर्पस्य अभिषेक: स्नानं तस्य वेदिका परिष्कृता भूमिस्तामिव, कमलै: कमलदलै: आवृतौ शैत्यार्थमाच्छादितौ चन्दनेन चन्दनलेपनेन धवलौ, यौ पयोधरकलसौ कुचकुम्भौ ताभ्या-मवष्टब्धौ आक्रान्तौ पार्श्वौ यस्यास्ताम् । अन्यत्र तु कमलावृतौ जलस्य शीतलतारक्षणाय पद्मपत्राच्छादितमुखौ, तथा चन्दनधवलानि चन्दनमिश्रणेन शुभ्रवर्णानि पयांसि जलानि धरतो धारयत इति तौ यौ कलसौ स्नान-

---

স্থাপিত মণিময় দর্পণরূপ চন্দ্রকে 'আজ তুমি উদিত হইও না' এইরূপ প্রার্থনার পর নিজের জীবন স্পর্শ করাইয়া 'আজ আমি উদিত হইব না' এইরূপ শপথই যেন করাইতেছিলেন । (জ) হস্তিনী যেমন সম্মুখে উপস্থিত মদমত্ত বন্য গন্ধহস্তীর প্রতি শুণ্ডপ্রসারণ করে; কাদম্বরীও তেমন নিকটে আগত প্রমদোদ্যানের সৌরভকে নিবারণ করিবার জন্য হস্ত প্রসারণ করিয়াছিলেন । (ঝ) দেশান্তরে প্রস্থিত স্ত্রীলোকের যেমন দক্ষিণভাগে বাতপ্রমী হরিণের আগমন অভীষ্ট নহে; কাদম্বরীরও তেমন দক্ষিণ বায়ু ও কস্তুরী-সৌরভের আগমন অভীষ্ট ছিল না । (ঞ) কামদেবের স্নান-স্থানের উভয় পার্শ্ব যেমন চন্দন-মিশ্রণে শুভ্রবর্ণ জলে পরিপূর্ণ ও পদ্মপত্রাচ্ছাদিত কুম্ভযুগলে অধিষ্ঠিত থাকে; কাদম্বরীর পার্শ্বদ্বয়ও তেমন কমলদলে আবৃত ও

---

(१) विनोदितव्यमितम् ।

स्वच्छाम्बरतलदृश्यमानमृणालकोमलोरुमूलाम्, (ट) कुसुमचापलेखामिव (१) मदनारोपित-गुणकोटिकान्ततराम्, (ठ) मधुमासदेवतामिव शिशिरहारिणीम्, (ड) मधुकरीमिव कुसुममार्गणाकुलाम्, (ढ) चन्दनविलेपनामनङ्गरागिणीञ्च, बालां मन्मथजननीञ्च, मृणालिनीमभ्यर्थिततुषारस्पर्शाञ्च, कादम्बरीं व्यलोकयत्। (ण)

कुम्भौ ताभ्यां अवष्टब्धौ आश्रितौ पार्श्वौ यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा, तथा धनिनो व्यक्त्यन्तरस्यापि स्नानस्थानि तथाविधकलससम्भवेऽपि मदनमात्रोपादानादविशेषे विशेषाख्यदोषः, स च 'राजाभिषेकवेदिकामिव' इति पाठेन समाधेयः।

(ट) आकाशेति। आकाशकमलिनीमिव आकाशगङ्गापद्मिनीमिव, स्वच्छस्य अतीवनिर्मलस्य अम्बरस्य परिहितवसनस्य तले दृश्यमानं मृणालवत् कोमलं तदानीमपि निर्लोमत्वात् सुन्दरं ऊरुमूलं सक्थिमूलदेशो यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु स्वच्छे निर्मले अम्बरतले आकाशे दृश्यमानं मृणालं कोमलं उरुमूलं वृहन्मूलदेशश्च यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा। पूर्वकादम्बरीवर्णनायामपीदं विशेषणमभिहितम्।

(ठ) कुसुमेति। कुसुमचापलेखा पुष्पमयधनुर्यष्टिस्तामिव, मदनेन मदनावेशेन आरोपिता या गुणकोटयो विशेषसौन्दर्य्यादयो गुणग्रामास्ताभिः कान्ततरा मनोहरतरा ताम्। अन्यत्र तु मदनेन कामदेवेन आरोपितो गुणो मौर्वी ययोस्ताभ्यां कोटिभ्यां अग्रदेशाभ्यां कान्ततरां मनोहरतराम्। पूर्णोपमा।

(ड) मध्विति। मधुमासस्य वसन्तकालस्य देवतामिव, शिशिरः शीतलः हारो मुक्तामाला अस्या अस्तीति सा ताम्। अन्यत्र तु शीतर्त्तुं निवारिणीम्। पूर्णोपमा।

(ढ) मध्विति। मधुकरीं भ्रमरीमिव, कुसुममार्गणेन पुष्पवाणेन कामेन आकुला विह्वला ताम्। अन्यत्र तु कुसुममार्गणे मधुपानाय पुष्पान्वेषणे आकुला व्यग्रा ताम्। पूर्णोपमा।

(ण) चन्दनेति। चन्दनस्य विलेपनमङ्गरागो यस्यास्ताम्, अथ च अङ्गरागोऽस्या अस्तीति अङ्गरागिणी न अङ्गरागिणीत्यनङ्गरागिणी अङ्गरागरहिता तामिति विरोधः, अनङ्गरागः कामानुरागोऽस्या अस्तीति तामिति समाधानम्। बाला कन्या अथ च मन्मथजननीं मदनस्य मातरमिति विरोधः, मदनोद्दीपनया जनयित्री-

---

চন্দনলেপনে শুভ্রবর্ণ স্তনকুম্ভদ্বয়ে আক্রান্ত ছিল। (ট) বিমল আকাশে যেমন আকাশ-গঙ্গাজাত পদ্মিনীর কোমল ও বৃহৎ মূলদেশ এবং মৃণাল দেখা যায়; সেইরূপ কাদম্বরীরও নির্ম্মল বসনের নীচ দিয়া মৃণালের ন্যায় কোমল উরুযুগলের মূলদেশ দেখা যাইতেছিল। (ঠ) কামদেব গুণারোপণ করিলে সেই অগ্রদেশ দ্বারা পুষ্পময় ধনু যেমন অত্যন্ত সুন্দর হয়; কাদম্বরীও তেমন কামাবেশজনিত গুণসমূহে অত্যন্ত সুন্দর হইয়াছিলেন। (ড) বসন্তকালের দেবতা যেমন শীতকাল নিবারণ করেন, কাদম্বরীও তেমন শীতল হার ধারণ করিতেছিলেন। (ঢ) ভ্রমরী যেমন পুষ্পান্বেষণে ব্যস্ত থাকে, কাদম্বরীও তেমন কামাবেশে বিহ্বল ছিলেন। (ণ) আর কাদম্বরী চন্দনের অঙ্গরাগ ধারণ করিতেছিলেন, অথচ অঙ্গরাগবিহীন (কামানুরাগিণী) ছিলেন;

---

(१) कुसुमचापचापलेखामिव।

अथ सा यथादर्शनमागत्यागत्य चन्द्रापीड़ागमनमावेदयन्तं परिजनमुत्तरलतारकेण चक्षुषा विलोक्य (१) "कथय, किं सत्यमागतो दृष्टस्त्वया, कियत्यध्वनि क्वासौ" इति प्रतिमुखं निक्षिप्तनामाक्षरं (२) पप्रच्छ (त)। प्रवर्द्धमान-(३) धवलिम्ना चक्षुषा दृष्ट्वा च सम्मुखमापतन्तं तं दूरादेव वरारोहा (थ) नवग्रहा करिणीवोरुस्तम्भविधृता विचेष्टमानाङ्गी (द) कुसुमशयनपरिमलोपगतैः

मिति तत्परिहारः। मृणालिनी पद्मिनी, अथ च अभ्यर्थित. प्रार्थितः तुषारस्पर्शो हिमसंसर्गो यया तामिति पद्मिन्या हिमसंसर्गे विनाशावश्यम्भावेऽपि तत्प्रार्थनया विरोधः, मृणालिनी सन्तापशान्तये मृणालवती तापातिशयाच्च प्रार्थितशीतस्पर्शामिति समाधानम्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव विरोधाभासोऽलङ्कारः।

अहो ! इयं खलु कामार्तकादम्बरीवर्णनामाधुरी सर्वथैव सहृदयहृदयविनोदविधायिनी।

(त) अथेति। सा कादम्बरी, उत्तरला आवेगादतीवचञ्चला तारका यस्य तेन तादृशेन चक्षुषा विलोक्य, आगत्यागत्य दर्शनमनतिक्रम्येति यथादर्शनं येन येन भावेन दृष्टस्तेन तेन भावेनेत्यर्थः, चन्द्रापीड़स्य आगमनमावेदयन्तं परिजनं। इति एतत् प्रतिमुखं प्रत्येकमुखे निक्षिप्तानि प्रत्येकेनैवोच्चारणादर्पितानि नामाक्षराणि चन्द्रापीड़ेतिनामवर्णा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा पप्रच्छ। प्रच्छिर्द्विकर्म्मकः। एतेन चन्द्रापीड़दर्शनावेगातिशयो व्यज्यते।

(थ) प्रवर्द्धेति। किञ्च। वरौ विशालौ आरोहौ नितम्बौ यस्याः सा वरारोहा, कादम्बरी, प्रवर्द्धमानः प्रीत्या बाहुल्येनोपचीयमानो धवलिमा शुभ्रता यस्य तेन चक्षुषा, सम्मुखमापतन्तमागच्छन्तं तं चन्द्रापीड़ं दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनादुत्तस्थावित्यन्वयः।

(द) तदानीन्तनावस्थां कादम्बरीं विशेषयन्नाह नवेति। नवो ग्रहो ग्रहणं यस्याः सा नूतनधृतेत्यर्थः करिणीव, ऊर्वोः स्तम्भेन सात्त्विकभावोदयजातया स्तब्धतया विधृता व्याहतगमना, अन्यत्र तु ऊरुस्तम्भे विशाल-

কুমারী অথচ মদনজননী (কামোদ্দীপনাকারিণী) ছিলেন এবং পদ্মিনী অথচ তুষারপাতের প্রার্থনা করিতেছিলেন (মৃণাল ধারণ করিতেছিলেন এবং অন্যান্য শীতল স্পর্শ প্রার্থনা করিতেছিলেন)।

(ত) তাহার পর, পরিজনগণ যে যে ভাবে চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়াছিল, আসিয়া আসিয়া সেই সেই ভাবে কাদম্বরীর নিকট চন্দ্রাপীড়ের আগমন জানাইতেছিল ; তখন কাদম্বরী চঞ্চলনয়নে তাহাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া জিজ্ঞাসা করিতেছিলেন "বল, – সত্যই কি তিনি আসিয়াছেন, তুমি দেখিয়াছ ? তাহা হইলে কত দূরে আছেন এবং কোথায় আছেন ?" ইহার পর প্রত্যেকেই চন্দ্রাপীড়ের নাম উচ্চারণ করিতেছিল। (থ) তদনন্তর বিশালনিতম্বা কাদম্বরী, চন্দ্রাপীড়কে সম্মুখে আসিতে দেখিয়া দূর হইতেই পুষ্পশয্যা হইতে গাত্রোত্থান করিলেন ; তখন তাঁহার নয়নযুগল আরও ধবলবর্ণ হইল। (দ) নূতনধৃত হস্তিনী যেমন বিশাল বন্ধনস্তম্ভে আবদ্ধ থাকিয়া দেহ সঞ্চালন করে ; কাদম্বরীও তেমন উরুস্তম্ভবশতঃ

(१) क्वचित् विलोक्येति नास्ति। (२) निक्षिप्तनामाक्षरं। (३) वर्द्धमान...।

परवशा मुखरैर्मधुकरकुलैरिवोत्थाप्यमाना, (१) (ध) सम्भ्रम-च्युतोत्तरीया (२) हारकिरणानुरसि कर्त्तुमिच्छन्ती, (न) मणिकुट्टिमनिहितेन वामकरतलेन हस्तावलम्बनं निजप्रतिमामिव याचमाना, (प) स्रस्तकेशकलाप-संयमन-श्रमितेन गलत्स्वेदसलिलेन दक्षिणकरेणाभ्युक्ष्येव (३) आत्मानमर्पयन्ती, (फ)

बन्धनस्तम्भे विधृता आबद्धा, अतएव विचेष्टमानाङ्गी निश्चेष्टदेहा विशेषेण कम्पमानदेहा च। अत्र पूर्णोपमा-लङ्कारः।

(ध) कुसुमेति। परवशा पराधीना शरीरजडतया स्वयमुत्थातुमसमर्थेत्यर्थः, अतएव कुसुमशयनस्य पुष्पशय्यायाः परिमलेन सौरभलोभेनेति तात्पर्य्यं उपगतैरुपस्थितैः, मुखरैः शब्दायमानैः, मधुकरकुलैर्भ्रमरगणैः उत्थाप्यमाना उत्तोल्यमानेव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) सम्भ्रमेति। सम्भ्रमेण उत्थानत्वरया च्युतं पतितं उत्तरीयं वसनं यस्याः सा, अतएव उरसि वक्षसि हारकिरणान् कर्त्तुमर्पयितुमिच्छन्तीव, स्तनयोरावरणायेति भावः। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(प) मणीति। मणिकुट्टिमे मणिमयबद्धभूमौ निहितेन स्थापितेन वामकरतलेन, निजप्रतिमां कुट्टिम-संक्रान्तं स्वप्रतिबिम्बं हस्तावलम्बनं याचमानेव, तदर्थमेव तत्र वामकरस्थापनादिति भावः। एतेनोत्थाना-सामर्थ्यं सूचितम्। क्रियोत्प्रेक्षा। याचिर्द्विकर्म्मकः।

(फ) स्रस्तेति। स्रस्तस्य स्खलितस्य केशकलापस्य संयमनेन बन्धनेन श्रमितस्तद्व्यापारणादायासितस्तेन, अतएव गलन्ति स्वेदसलिलानि यस्मात्तेन दक्षिणकरेण, अभ्युक्ष्य आत्मानं अर्पयन्तीव चन्द्रापीडाय ददतीव, स्वेदसलिलानामेवाभ्युक्षणसलिलरूपत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा। अन्योऽपि दीयमानं पदार्थमभ्युक्ष्य ददाति।

চলিতে না পারিয়া অঙ্গগুলিকে নিশ্চেষ্ট রাখিয়াছিলেন। (ধ) শরীরের অসারতাবশতঃ কাদম্বরী উঠিতে পারিতেছিলেন না; সুতরাং পুষ্পশয্যার সৌরভ-লোভে উপস্থিত শব্দায়মান ভ্রমরগণই যেন তাঁহাকে উঠাইতেছিল। (ন) ত্বরাবশতঃ উত্তরীয় বসন পড়িয়া গিয়াছিল; তাই কাদম্বরী হারের কিরণগুলিকেই যেন বক্ষঃস্থলের আবরণ করিতে ইচ্ছা করিতেছিলেন। (প) মণিময় ভূমিতে স্থাপিত বাম হস্ত দ্বারা নিজের প্রতিবিম্বের নিকটই যেন হস্তধারণ প্রার্থনা করিতেছিলেন। (ফ) স্খলিত কেশকলাপ বন্ধন করায় দক্ষিণ হস্ত পরিশ্রান্ত হইয়াছিল, তাই তাহা হইতে ঘর্ম্মজল নির্গত হইতেছিল; সুতরাং কাদম্বরী যেন সেই দক্ষিণ হস্ত দ্বারা অভ্যুক্ষণ করিয়া চন্দ্রাপীড়কে আত্মসমর্পণ করিতেছিলেন। (ব) কাদম্বরীর পূর্ব্বের

---

(१) आच्छाद्यमाना। (२)...उत्तरीयका, उत्तरीयांशुका। (३) समभ्युक्ष्येव।

चलित-(१) त्रिक-ताम्यत्त्रिवली-(२) तरङ्गित-रोमराजितया निष्पीड्यमानेव सर्वरसानङ्गेन, (ब) अन्तःप्रविष्टललाटिका-चन्दनरससमिश्रमिव (३) चक्षुषा क्षरन्ती शिशिरमानन्दजलम् (भ) आनन्द-(४) वारिविन्दु-वेणिकया चलिता-वतंस-(५) धूलि-धूसरं प्रियप्रतिमा-प्रवेशलोभेनेव कपोलफलकं प्रक्षालयन्ती, (म) ललाटिकाचन्दनभरेणेव किञ्चिदधोमुखी तत्क्षणमपाङ्ग-भाग-पुञ्जित-(६) तारकया तन्मुखलग्नयेव दीर्घया दृष्ट्याकृष्यमाणा कुसुमशयनादुत्तस्थौ। (य)

(ब) चलितेति। चलितं उत्थानवेगात् कम्पितं यत् त्रिकं पृष्ठवंशाधरास्थि तेन ताम्यन्ती क्लिश्यमाना या त्रिवली तया तरङ्गिता कम्पिता रोमराजिर्यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, अनङ्गेन सर्वरसान् निष्पीड्य-मानेव निःसारयितुं मर्द्यमानेव, चलितत्रिकस्य निष्पीडनयन्त्रतुल्यत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(भ) अन्तरिति। अन्तःप्रविष्टो ललाटान्तःप्रवृत्तो यो ललाटिकाचन्दनरसस्तन्मिश्रमिव, अतएव शिशिरं शीतलं आनन्दजलं आनन्दाश्रु चक्षुषा क्षरन्ती निःसारयन्ती। गुणोत्प्रेक्षा।

(म) आनन्देति। आनन्दवारिविन्दूनां आनन्दाश्रुकणानां वेणिकया प्रवाहेण, चलितानां अवतंसानां शिरोभूषणभूतपुष्पाणां धूलिभिः परागैर्धूसरं स्वं कपोलफलकं, प्रियप्रतिमायाश्चन्द्रापीडप्रतिविम्बस्य प्रवेशलोभेनेव तत्कपोले प्रवेशेच्छयेव प्रक्षालयन्ती, प्रक्षालनाभावे धूलिधूसरत्वे च प्रतिविम्बप्रवेशासम्भव इति भावः। गुणोत्प्रेक्षा।

(य) ललाटिकेति। ललाटिकाचन्दनस्य भरेण भारेणेव किञ्चिदधोमुखी, अपाङ्गभागे नयनप्रान्तदेशे पुञ्जिता सञ्जातपुञ्जभावा तारका यस्यास्तया, तन्मुखलग्नया चन्द्रापीडवदनसंसक्तया, अतएव दीर्घया दृष्ट्या चक्षुषा आकृष्यमाणेव। दृशस्तन्मुखलग्नत्वात् ततश्चाकर्षणाद्दृष्टेर्दीर्घीभूता रज्जुवदिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

অস্থি চলিতেছিল, তাই উদরের থর তিনটিও কাঁপিতেছিল, তাহাতে রোমরাজিও কম্পিত হইতেছিল; সুতরাং কামদেব যেন কাদম্বরীকে নিষ্পীড়ন করিয়া সমস্ত রস নিঃসারণ করিতেছিলেন। (ভ) কাদম্বরী নয়নদ্বারা যে আনন্দাশ্রু নিঃসারণ করিতেছিলেন, তাহা, ললাটের ভিতরে প্রবিষ্ট চন্দন-তিলকের রস-মিশ্রণেই যেন শীতল হইয়াছিল। (ম) মস্তকভূষণ পুষ্পের রেণুতে গণ্ডদেশ ধূসরবর্ণ হইয়াছিল সুতরাং তাহাতে প্রিয়তম চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব প্রবেশ করাইবার লোভেই যেন আনন্দাশ্রুবিন্দুপ্রবাহ দ্বারা সেই গণ্ডদেশ প্রক্ষালন করিতেছিলেন। (য) ললাট-তিলকের চন্দনের ভারেই যেন কাদম্বরী কিঞ্চিৎ অধোমুখী হইলেন, নয়নের তারাটি তাহার প্রান্তভাগে যাইয়া পুঞ্জীভূত হইল এবং নয়নযুগল চন্দ্রাপীড়ের মুখমণ্ডলে সংলগ্ন হইয়া আরও দীর্ঘ হইল সেই নয়নকর্তৃক আকৃষ্যমাণ হইয়াই যেন কাদম্বরী পুষ্পশয্যা হইতে উঠিয়াছিলেন।

(१) वलित…। (२) ताम्यत्त्रिवली…। (३)…चन्दनरसानिव। (४) नन्द…। (५) चलितावतंस…। (६)…पुञ्जित…।

চন্দ্রাপীড়স্তু সমুপসৃত্য পূর্ববদেব তাং মহাশ্বেতাপ্রণামপুরঃসরং দর্শিতবিনয়ঃ প্রণনাম। কৃতপ্রতিপ্রণামায়াঞ্চ তস্যাং পুনস্তস্মিন্নেব কুসুমশয়নে সমুপবিষ্টায়াং (১) প্রতীহার্য্যা সমুপনীতাং (২) জাম্বূনদময়ীমাসন্দিকাং রোচিষ্ণুরত্নপ্রত্যুপ্ত-পাদাং পাদেনৈবোৎসার্য্য ক্ষিতাবেবোপাবিশৎ (র)। অথ কেয়ূরকঃ "দেবি! দেবস্য চন্দ্রাপীড়স্য প্রসাদভূমিরেষা পত্রলেখা নাম তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী" ইত্যভিধায় পত্রলেখামদর্শয়ৎ। অথ কাদম্বরী দৃষ্ট্বা তাং 'অহো! মানুষীষু পক্ষপাতঃ প্রজাপতেঃ' ইতি চিন্তয়াম্বভূব। কৃতপ্রণামাঞ্চ তাং সাদরং "এহ্যেহি" ইত্যভিধায়াত্মনঃ সমীপে সকুতূহলপরিজনদৃশ্যমানাং পৃষ্ঠতঃ সমুপাবেশয়ৎ। দর্শনাদেবোপারূঢ়প্রীত্যতিশয়া চ মুহুর্মুহুরেনাং সোপগ্রহং করকিসলয়েন পস্পর্শ। (ল)

(র) চন্দ্রেতি। মহাশ্বেতায়াঃ প্রণামঃ পুরঃসরঃ অগ্রবর্ত্তী যস্মিন্ কর্ম্মণি তদ্‌যথা তথা। তাং কাদম্বরীম্। জাম্বূনদময়ীং স্বর্ণনির্ম্মিতাং, রোচিষ্ণুভির্দীপ্তিশীলৈঃ রত্নৈঃ প্রত্যুপ্তাঃ খচিতাঃ পাদা যস্যাস্তাম্, আসন্দিকামাসনবিশেষম্, উৎসার্য্য অপসার্য্য, ক্ষিতাবেবোপাবিশৎ, বিনয়প্রদর্শনস্যাবশ্যকত্বাদিতি ভাবঃ।

(ল) অথেতি। প্রসাদভূমিরনুগ্রহপাত্রম্। প্রজাপতেঃ পক্ষপাতঃ প্রাচ্যস্তরস্ত্রীষ্যঃ সৌন্দর্য্যাতিশয়নির্ম্মাণাদিতি ভাবঃ। তাং পত্রলেখাম্। সকুতূহলৈরাত্মনঃ পরিজনৈর্দৃশ্যমানা তাম্। পৃষ্ঠত আত্মনঃ সমীপ ইত্যন্বয়ঃ। উপারূঢ় উৎপন্নঃ প্রীত্যতিশয়ো যস্যাঃ সা কাদম্বরী। এনাং পত্রলেখাং। সোপগ্রহং সস্নেহম্।

(র) চন্দ্রাপীড় নিকটবর্ত্তী হইয়া পূর্ব্বের ন্যায়ই বিনয়প্রদর্শনপূর্ব্বক মহাশ্বেতাকে প্রণাম করিয়া কাদম্বরীকে প্রণাম করিলেন; কাদম্বরীও প্রতিপ্রণাম করিয়া পুনরায় সেই পুষ্পশয্যাতেই উপবেশন করিলেন; তাহার পর প্রতীহারী স্বর্ণময় একখানি কেদেরা আনিয়া উপস্থিত করিল, তাহার পায়াগুলি দীপ্তিশীল রত্নে খচিত ছিল; চন্দ্রাপীড় চরণদ্বারাই সেখানিকে সরাইয়া রাখিয়া ভূতলেই উপবেশন করিলেন। (ল) তাহার পর কেয়ূরক বলিল—"দেবি! এই কন্যাটি, রাজকুমার চন্দ্রাপীড়ের তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী ও অনুগ্রহের পাত্র; ইহার নাম পত্রলেখা" এই কথা বলিয়া পত্রলেখাকে দেখাইল। তদনন্তর কাদম্বরী পত্রলেখাকে দেখিয়া চিন্তা করিলেন 'মনুষ্য-রমণীর প্রতি বিধাতার পক্ষপাত আশ্চর্য্য'। তাহার পর পত্রলেখা কাদম্বরীকে প্রণাম করিলে কাদম্বরী তাহাকে "এস এস" এই কথা বলিয়া নিজের নিকটে পিঠের দিকে বসাইলেন; তখন পরিজনবর্গ কৌতুকের সহিত পত্রলেখাকে দেখিতে লাগিল এবং দর্শনের পরই পত্রলেখার প্রতি কাদম্বরীর অত্যন্ত প্রীতি জন্মিল; তাই তিনি পাণিপল্লব দ্বারা স্নেহের সহিত বারংবার পত্রলেখাকে স্পর্শ করিতে লাগিলেন।

---

(১) উপবিষ্টায়াং। (২) উপনীতাং।

चन्द्रापीड़स्तु सपदि कृतसकलागमनोचितोपचारस्तदवस्थां चित्ररथतनया-मालोक्याचिन्तयत्—'अतिदुर्विदग्धं हि मे हृदयमद्यापि न श्रद्दधाति। भवतु, पृच्छामि तावदेनाम् निपुणालापेनेति' (व)। प्रकाशमब्रवीत्—"देवि! जानामि कामरतिं निमित्तीकृत्य प्रवृत्तोऽयमविरलसन्तापतीव्रो व्याधिः (१) (श)। सुतनु! सत्यं न तथा त्वामेष व्यथयति यथास्मान् (ष)। इच्छामि देहदाने-नापि स्वस्थामत्रभवतीं कर्त्तुम् (स)। उत्कम्पिनीमनुकम्पमानस्य कुसुमेषु-

(व) चन्द्रेति। सपदि तदैव, कृतः सकलानां मदलेखादिजनानाम् आगमनोचितोपचारः स्वस्य नवा-गमनयोग्याभिनन्दनादिव्यवहारो येन सः। सैवावस्था कामार्त्तदशा यस्यास्तां चित्ररथतनयां कादम्बरीम्। अतिदुर्विदग्धं अत्यन्तदुःशिक्षितं प्रकृतनिर्णयानर्हमिति यावत्, यस्मादद्यापि न श्रद्दधाति ममोद्देशेनैवेयं कामार्त्तेति न विश्वसिति, प्रकृतनिर्णयार्हत्वे त्ववश्यमेवैतत् श्रद्दधीतेति भावः। निपुणालापेन वाक्पटुजनोचिता-लापेन व्यङ्ग्यार्थपूर्णवाक्येनेत्यर्थः।

(श) प्रकाशमिति। जानामि वक्ष्यमाणमहं मन्ये। कां कामपि अनिर्वचनीयां अरतिं विरागं निमित्तीकृत्य, अविरलेन निरन्तरेण सन्तापेन तीव्रो महान् अयं व्याधिः प्रवृत्तस्त्वय्युत्पन्नः। व्यङ्ग्यार्थस्तु कामरतिं, मदनानुरागं। अविरलेन सन्तापेन शरीरोत्तापेन तीव्र इति।

(ष) सुतन्विति। हे सुतनु! एष त्वदाश्रित एव व्याधिः, यथा अस्मान् व्यथयति, सत्यमेव तथा न त्वामित्यन्वयः, पीड़ा हि स्वाश्रितजनादपि स्निग्धं जनमधिकं पीड़यतीति लोकवादस्य सत्यत्वादिति भावः। एष काम इति व्यङ्ग्योऽर्थः। अत्रानुरूपो भावो यथा शाकुन्तले—"तपति तनुगात्रि! मदनस्त्वामनिशं मां पुन-र्दहत्येव।"

(स) अतएवाह इच्छामीति। देहदानेनापि शरीरपातेनापि अत्रभवतीं माननीयां त्वां स्वस्थां सुस्थां कर्त्तुमिच्छामि, स्वदेहतोऽपि तवाधिकप्रियत्वादिति भावः। व्यङ्ग्यार्थस्तु देहदानेनापि रतिबन्धभावेन तुभ्यं देहार्पणेनापीति।

(ব) চন্দ্রাপীড় তখনই মদলেখা প্রভৃতি সকলেরই অভিনবাগমনোচিত সম্ভাষণাদি করিয়া কাদম্বরীর সেই অবস্থা দেখিয়া চিন্তা করিলেন—'আমার চিত্ত, অত্যন্ত কুশিক্ষায় শিক্ষিত; যেহেতু,—এখনও ইহার প্রকৃত অবস্থা বিশ্বাস করিতেছে না। যাহা হউক, ভঙ্গীপূর্ণবাক্যে ইহাকে জিজ্ঞাসা করি' (শ) এইরূপ চিন্তা করিয়া প্রকাশ্যে বলিলেন—'দেবি! আমি মনে করি,—কোন অনির্ব্বচনীয় বৈরাগ্যনিবন্ধন আপনার এই রোগ জন্মিয়াছে; এবং নিরন্তর সন্তাপিত করায় ভয়ঙ্কর হইয়া দাঁড়াইয়াছে। (ষ) হে সুন্দরি! এই রোগ আমাকে যেরূপ ব্যথিত করিতেছে, সত্যই আপনাকে সেরূপ করিতেছে না। (স) অতএব আমি দেহপাত করিয়াও আপনাকে সুস্থ করিতে ইচ্ছা করি। (হ) রোগের প্রভাবে আপনি কাঁপিতেছেন,

(१) अविरलसन्तापतन्त्री व्याधिः।

पीड़या पतितामवेक्षमाणस्य पततीव मे हृदयम् (ङ)। अनङ्गदे तनुभूते (१) ते भुजलते गाढ़सन्तापया (२) च दृष्ट्या वहसि स्थलकमलिनीमिव (३) रक्ततामरसाम् (च)। दुःखितायाञ्च त्वयि परिजनेऽपि चानवरतक्षताश्रुबिन्दुपातेन वर्त्तते मुक्ताभरणता। गृहाण स्वयंवरार्हाणि मङ्गलप्रसाधनानि। सकुसुमशिलीमुखा हि शोभते नवा लता" इति (४)। (छ)

(ङ) उत्केति। उत्कम्पिनीं व्याधिप्रभावादत्यन्तकम्पवतीं त्वां अनु लक्ष्यीकृत्य कम्पमानस्य, तथा पीड़या व्याधियातनया कुसुमेषु पतितां पुष्पेषु शयितां त्वां अवेक्षमाणस्य पश्यतो मे मम हृदयं पततीव बहिर्गच्छतीव, त्वत्कष्टदर्शनेन दारुणकष्टोदयादिति भावः। व्यङ्ग्यार्थस्तु उत्कम्पिनीं प्रबलकामोदयात् कम्पाख्यसात्त्विकभाववतीं त्वां अनुकम्पमानस्य रमणेन· दयाविषयीकर्त्तुमिच्छतः, तथा कुसुमेषोः पुष्पबाणस्य कामस्य पीड़या, पतितां स्रस्ताङ्गीं त्वामवेक्षमाणस्य मे मम हृदयं पततीव त्वां रमयितुं धावतीव।

(च) अनेति। तनुभूते व्याधिप्रभावात् कृशीभूते ते तव भुजलते बाहुलताद्वयं अनङ्गदे अङ्गदाभ्यां केयूराभ्यां रहिते जाते इति शेषः, पूर्व्वतः कृशत्वेनेदानीं श्लथीभावसम्भवादिति भावः। तथा गाढ़ः सन्तापो यस्यां तया दृष्ट्या च, रक्तं लोहितवर्णं तामरसं पद्मं यत्र तां स्थलकमलिनीं वहसीव, एतदुभयमपि महादुःखकरमिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। व्यङ्ग्यार्थस्तु अनङ्गं कामं कामोद्दीपनां ददातीत्यनङ्गदा तस्याः सम्बोधनं। ते तव भुजलते तनुभूते कामपीड़या कृशीभूते। तथा गाढ़सन्तापया तीव्रमदनसन्तापसूचिकया दृष्ट्या, दृष्टिपातेन च, स्थले पद्मिन्यादिनायिकास्थले कमलिनी पद्मिनीरूपा तां चतुर्विधयोषिदन्तर्गतपद्मिनीरूपमात्मानमित्यर्थः, अरसां शृङ्गाररहितां रमणरूपशृङ्गारफलवर्जितां, रक्ततां केवलमनुरक्ततां वहसीव, प्रापयसीव, तीव्रमदनतापसूचकेन दृष्टिपातेन पद्मिनीभूतस्यात्मनो मदनानुरागं सूचयसीवेति सरलार्थः। वहतेर्द्विकर्म्मकत्वात् स्थलकमलिनीमित्यस्यापि कर्म्मत्वम्।

(छ) दुःखीति। किञ्च, त्वयि दुःखितायां व्याधिवशात् सञ्जातदुःखायां सत्यां, परिजनेऽपि च अनवरतं क्षतो योऽश्रुबिन्दुपातस्तेन सह मुक्ताभरणता त्यक्तालङ्कारता वर्त्तते, अतीवानुरक्ततया त्वद्दुःखोदयादिति भावः। अतएव स्वयं त्वं, वराणि उत्कृष्टानि च तानि अर्हाणि स्वयोग्यानि चेति तानि वरार्हाणि, मङ्गलप्रसाधनानि माङ्गलिकालङ्कारान् गृहाण, तथा सति परिजनेनापि लब्धाश्वासेन सता पुनरप्याभरणं गृह्येतेति भावः। तथा च नवा

সুতরাং আপনাকে দেখিয়া আমিও কম্পিত হইতেছি; আপনি রোগের যাতনায় পুষ্পশয্যার উপরে পড়িয়া রহিয়াছেন, ইহা দেখিয়া আমার প্রাণ যেন বাহির হইতেছে। (ঙ) রোগের প্রভাবে আপনার বাহুলতা দুইটি কৃশ হইয়া গিয়াছে, সুতরাং তাহাতে কেয়ূর নাই; তীব্র সন্তাপে সন্তপ্ত নয়নযুগল যেন রক্ত-পদ্ম-সমন্বিত স্থলপদ্মিনীকে ধারণ করিতেছে। (চ) বিশেষতঃ আপনি দুঃখিত রহিলে পরিজনবর্গও অবিশ্রান্ত অশ্রু বর্ষণ করিয়া অলঙ্কার

---

(१) अनङ्गदेव तनुभूते। (२) गाढ़सन्तापतया। (३) स्थलकमलिनीव।

(४) अपि च अनवरत..., परिजनोऽपि चानवरतक्षताश्रुबिन्दुपातेन वर्त्तते। मुक्ताभरणतां गृहाण।... कुसुमशिलीमुखालङ्कृता शोभते यथा लता इति।

अथ कादम्बरी बालतया स्वभावमुग्धापि कन्दर्पेणोपदिष्टेव प्रज्ञया तमशेषमस्याव्यक्तव्याहारसूचितं (१) अर्थं मनसा जग्राह, मनोरथानान्तु तावतीं भूमिमसम्भावयन्ती आलीनताञ्चावलम्बमाना तूष्णीमेवासीत्। केवलमुत्पादितान्यव्यपदेशा तत्क्षणं तमाननामोदमधुकरपटलान्धकारितं (२) द्रष्टुमिव स्मितालोकमकरोत् (ख)। ततो मदलेखा प्रत्यवादीत्—"कुमार! किं कथयामि,

नूतना लता, कुसुमैः पुष्पैः शिलीमुखैर्भ्रमरैश्च सह वर्त्तत इति सकुसुमशिलीमुखा सत्येव शोभते न पुनरकुसुमशिलीमुखेत्यर्थः। अतस्त्वमपि सप्रसाधनैव शोभसे न पुनरप्रसाधनेति त्वया प्रसाधनमवश्यमेव ग्रहणीयमिति भावः। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः। व्यङ्ग्यार्थस्तु त्वयि दुःखितायां मदनवेदनया सञ्जातदुःखायां सत्यां परिजनेऽपि च अनवरतक्षलाश्रुबिन्दुपातेन सह मुक्ताभरणता त्यक्तालङ्कारता वर्त्तते, त्वद्दुःखेनैव दुःखोदयादिति पूर्वं एव भावः। अतएव स्वयंवरार्हाणि स्वयंवरयोग्यानि, मङ्गलप्रसाधनानि कुसुमसूत्रादीनि माङ्गलिकाभरणानि, गृहाण धारय। अस्यामप्यवस्थायां त्वं शोभितैवासीति पृथगेवाह सकुसुमेति। न विद्यते बालता शैशवं यस्याः सा नबालता युवतिः, कुसुममिव शिलीमुखो बाणो यस्य स कुसुमशिलीमुखः कामः, तेन सह वर्त्तत इति सा तथाविधैव शोभते, न पुनरकामेति भावः। "गमिकर्म्मीकृतनैकनीवृता" इत्यादिवत् नबालतैत्यत्र "नभ्राजादीनां नञप्रकृत्ये"ति नलोपाभावः, तथा "यमकादौ भवेदैक्यं डलोर्ब्बवोरलोस्तथा" इति नियमादोष्ठ्यबकारान्तस्थवकारयोरभेदः। एतदनुरूपो भावो यथा मालतीमाधवे—"महाभाग! सुश्लिष्टगुणतया" इत्यादि प्रथमाङ्के।

(ख) अथेति। अस्य व्याहारसूचितं अस्पष्टवाक्यप्रतिपादितं। जग्राह बुबुधे। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तावतीं भूमिं सङ्गमरूपमत्युच्चविषयं। आलीनता लज्जाशीलता। उत्पादितान्यव्यपदेशा प्रकटितान्यच्छला। आननामोदेन मुखसौरभेणागतमित्यर्थः यन्मधुकरपटलं भ्रमरसमूहस्तेन अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं तं चन्द्रापीड़ं द्रष्टुमिव स्मितालोकमकरोत्, अन्धकारावृतं घटादिकमालोकयितुं दीपालोकवदिति भावः। अत्र तथागतमधुकरपटलेन अन्धकारितत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिः; क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ग) तत इति। प्रत्यवादीत् प्रत्युत्तरमकार्षीत्। अकथनीयः कथयितुमशक्यं, निरतिशयतीव्रतया

পরিত্যাগ করিয়া থাকে; অতএব আপনি নিজে, নিজের উপযুক্ত উৎকৃষ্ট মাঙ্গলিক অলঙ্কার ধারণ করুন; কারণ—নবীন লতা, পুষ্প ও ভ্রমর-সমন্বিত হইয়াই শোভা পায়।

(খ) তদনন্তর কাদম্বরী বালকতানিবন্ধন স্বভাবতই সরল হইলেও, কামদেবকর্ত্তৃক উপদিষ্ট হইয়াই যেন, চন্দ্রাপীড়ের সেই অস্পষ্ট-বাক্য-সূচিত সমস্ত অর্থই মনে মনে বুঝিলেন; কিন্তু ততদূর আশার বিষয় সম্ভাবনা করিতে না পারিয়া, লজ্জা অবলম্বন করিয়া নীরব হইয়া রহিলেন এবং তখন অন্য কোন ছল প্রকাশ করিয়া, মুখ-সৌরভে উপস্থিত ভ্রমরগণের অন্ধকারে আবৃত চন্দ্রাপীড়কে দেখিবার জন্যই যেন ঈষৎ হাস্যের প্রভা প্রকাশ করিলেন। (গ) তাহার পর মদলেখা প্রত্যুত্তর করিল,—"রাজকুমার! বলিব কি, ইহার এই ভয়ঙ্কর সন্তাপ বর্ণনীয়

(१) अस्य वचनसूचितं। (२)…अन्धकारितं मुखं।

দারুণোঽয়মকথনীয়ঃ খলু সন্তাপঃ। অপি চ কুমারভাবোপেতায়াঃ (১) কিমি-, বাস্যা যন্ন সন্তাপায় (গ)। তথাহি মৃণালিন্যাঃ শিশিরকিসলয়মপি হুতাশনায়তে, জ্যোৎস্নাপ্যাতপায়তে, (ঘ) ননু কিসলয়তালবৃন্তবাতৈর্মনসি জায়মানং কিং ন পশ্যসি (২) খেদম্? ধীরত্বমেব প্রাণসন্ধারণহেতুরস্যাঃ” ইতি (ঙ)। কাদম্বরী তু হৃদয়েন তমেব মদলেখালাপমস্য প্রত্যুত্তরীচকার (চ)। চন্দ্রাপীড়োঽপ্যুভয়থা ঘটমানার্থতয়া সন্দেহদোলারূঢ়েনৈব চেতসা মহাশ্বেতয়া

বাগ্বিষয়াতীতত্বাৎ, মদনজনিততয়া লজ্জাকরত্বাচ্চেতি ভাবঃ। কুমারভাবোপেতায়াঃ কৌমার্য্যমাপন্নায়াঃ সুতরামেবাত্যন্তকোমলায়া ইতি ভাবঃ, অস্যাঃ কাদম্বর্য্যাঃ সম্বন্ধে কিমিব বস্তু অস্তি যন্ন সন্তাপায় সম্পদ্যতে। ব্যঙ্গ্যার্থস্তু—কুৎসিতো মারো মদনো যস্মাত্তস্মিন্ কুমারে পরমসুন্দরে ত্বয়ি ভাবোপেতায়া অনুরাগমাপন্নায়াঃ অথবা কুৎসিতো যো মারঃ কন্দর্পস্তস্য ভাবোপেতায়া আবেশক্রিয়াং প্রাপ্তায়াঃ।

(ঘ) সন্তাপবিরোধিনামপি তজ্জনকত্বপ্রতিপাদনেন সর্ব্ববস্তূনামেব সন্তাপকত্বং প্রতিপাদয়িতুমাহ তথাহীতি। মৃণালিন্যাঃ পদ্মিন্যাঃ শিশিরকিসলয়মপি শীতলপল্লবমপি হুতাশনায়তে হুতাশনবদাচরতি। আতপায়তে সূর্য্যালোকবদাচরতি। উভয়মেবাপি সন্তাপয়তীত্যর্থঃ। অনয়োঃ প্রত্যেকং ক্যঙ্গতোপমালঙ্কারঃ, তেন চ শীতলপদার্থাৎ সন্তাপোৎপত্তের্বিষমালঙ্কারো ব্যজ্যত ইত্যলঙ্কারেণালঙ্কারধ্বনিঃ।

(ঙ) নন্বিতি। আমন্ত্রণে ননুশব্দঃ। কিসলয়ং পল্লবমেব তালবৃন্তং ব্যজনং তস্য বাতৈঃ। তালবৃন্ত-শব্দস্য অবয়বার্থানুসন্ধানেন রূঢ়িবশাৎ সমুদায়েনৈব ব্যজনপ্রতীতিরিতি নানুপপত্তিঃ। তথা চ শাকুন্তলেঽপি—“সন্বাহয়ামি নলিনীদলতালবৃন্তম্।” খেদং ক্লান্তিম্। অথ তাদৃশসন্তাপে কথং প্রাণধারণমিত্যাহ ধীরত্ব-মিতি।

(চ) কাদেতি। অস্য চন্দ্রাপীড়স্য বাক্যস্য, প্রত্যুত্তরীচকার, আত্মনোঽপি তথৈব বক্তব্যত্বাদিতি ভাবঃ।

(ছ) চন্দ্রেতি। উভয়থা ঘটমানার্থতয়া কুমারভাবশব্দস্য কৌমার্য্যং ত্বয্যনুরাগশ্চেতি দ্বিপ্রকারেণ সঙ্গচ্ছমানার্থকতয়া হেতুনা, সন্দেহঃ মদনুরাগার্থ এব কুমারভাবশব্দঃ প্রযুক্তো ন বেতি সংশয় এব দোলা তামারূঢ়ে-

---

নহে?” আর, কুমারভাবাপন্ন কাদম্বরীর পক্ষে এমন কোন্ বস্তু আছে, যাহা সন্তাপ জন্মায় না। (ঘ) দেখুন—পদ্মলতার শীতল পল্লবও অগ্নির ন্যায় ব্যবহার করে এবং জ্যোৎস্নাও রৌদ্রের ন্যায় আচরণ করে। (ঙ) আর দেখিতেছেন না কি? যে, পল্লবময় ব্যজনের বায়ুতে ইহার চিত্তে কষ্ট জন্মিতেছে, তবে ধৈর্য্যই ইহার প্রাণ-ধারণের কারণ?” (চ) কাদম্বরী কিন্তু মনে মনে সেই মদলেখার কথাগুলিকেই চন্দ্রাপীড়-বাক্যের প্রত্যুত্তরস্থানপাতী করিলেন। (ছ) ‘কুমারভাব’ শব্দটির অর্থ, দুই প্রকারেই সঙ্গত হয় বলিয়া, ‘আমার প্রতি অনুরাগার্থে ‘কুমারভাব’ শব্দটি প্রয়োগ, করিয়াছে কি না’—এই জাতীয় সংশয়রূপ-দোলারূঢ় চিত্তে চন্দ্রাপীড়, মহাশ্বেতার সহিত প্রণয়বৃদ্ধিনিবন্ধন মনোহর আলাপে বহু সময় অবস্থান করিয়া, সেই

---

(১) সুকুমার...। (২) পশ্যসি।

सह प्रीत्युपचयचतुराभिः कथाभिः (१) महान्तं कालं (२) स्थित्वा तथैव महता यत्नेन मोचयित्वात्मानं स्कन्धावारगमनाय कादम्बरीभवनान्निर्ययौ। (छ)

निर्गतञ्च तं तुरङ्गममारुरुक्षन्तं पश्चादागत्य केयूरकोऽभिहितवान्—"देव! मदलेखा विज्ञापयति—'देवी कादम्बरी (३) प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखां निवर्त्त्यमानामिच्छति, पश्चाद्‌यास्यति' इति श्रुत्वा देवः प्रमाणम्।" इत्याकर्ण्य चन्द्रापीड़ः "केयूरक! धन्या स्पृहणीया च पत्रलेखा, यामेवमनुबध्नाति दुर्लभो देवीप्रसादः, प्रवेश्यताम्" इत्यभिधाय पुनः स्कन्धावारमेवाजगाम (ज)। प्रविशन्नेव पितुः समीपादागतमभिज्ञाततरं (४) प्रालेख-हारकमद्राक्षीत्। धृत-तुरङ्गमश्च प्रीतिविस्फारितेन चक्षुषा दूरादेवापृच्छत्—"अङ्ग! कच्चित् कुशली

नेव। प्रीत्युपचयेन प्रणयवृद्ध्या चतुरा निपुणास्ताभिः कथाभिरालापैः। महान्तं कालं बहुक्षणं। तथैव तादृशीभिश्चतुराभिः कथाभिरेव। आत्मानं मोचयित्वा ताभ्यो निष्क्राम्य अनुमतिं कारयित्वेत्यर्थः।

(ज) निर्गतमिति। तुरङ्गममश्वं आरुरुक्षन्तं आरोढुमिच्छन्तं तं चन्द्रापीड़म्। पत्रलेखायाः प्रथम-दर्शनेनैव जनिता प्रीतिर्यस्याः सा। निवर्त्त्यमानां भवता अत्रैव स्थाप्यमानाम्। पश्चाद्‌यास्यति पत्रलेखेति शेषः। देवो भवान्, प्रमाणं कर्त्तव्यनिर्द्धारयिता। देव्याः प्रसादः कादम्बर्य्या अनुग्रहः। अनुबध्नाति अनुसरति विषयीकरोतीत्यर्थः। प्रवेश्यतां पत्रलेखेति शेषः।

(झ) प्रविशन्निति। प्रविशन्नेव स्कन्धावार इति शेषः। अभिज्ञाततरं अत्यन्तपरिचितं, अतएव

ভাবেই গুরুতর যত্নে আপনাকে মুক্ত করাইয়া কেল্লায় যাইবার নিমিত্ত কাদম্বরীর গৃহ হইতে নির্গত হইলেন।

(জ) চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর গৃহ হইতে নির্গত হইয়া অশ্বে আরোহণ করিতে ইচ্ছা করিতেছিলেন, এমন সময়ে পিছনের দিক্ হইতে আসিয়া কেয়ূরক বলিল—"রাজকুমার! মদলেখা জানাইতেছেন যে, 'পত্রলেখা প্রথম দর্শনেই কাদম্বরীদেবীর সন্তোষ জন্মাইয়াছেন; সুতরাং কাদম্বরী দেবী ইচ্ছা করিতেছেন যে, আপনি পত্রলেখাকে এখানে রাখিয়া যান; পত্রলেখা পরে যাইবেন' এই কথা শুনিয়া এখন আপনি যাহা স্থির করেন।" চন্দ্রাপীড় ইহা শুনিয়া বলিলেন—"কেয়ূরক! পত্রলেখা ধন্য ও সকলেরই বাঞ্ছনীয়; কারণ, যাহার উপরে দুর্লভ কাদম্বরীদেবীর অনুগ্রহ পড়িয়াছে; অতএব তুমি ইহাকে ভিতরে প্রবেশ করাও" এই কথা বলিয়া পুনরায় কেল্লাতে আসিলেন। (ঝ) কেল্লার ভিতরে প্রবেশ করিতে করিতেই দেখিতে পাইলেন যে, অত্যন্ত পরিচিত এক জন পত্রবাহক পিতার নিকট হইতে আসিয়াছে;

(१) मधुरालापगर्भाभिः कथाभिः। (२) कालञ्च।
(३) सत्नु प्रथम…। (४) अभिज्ञाततरं।

तातः सह सर्वेण परिजनेन, अम्बा च सर्वान्तःपुरैः" इति (झ)। अथासावुपसृत्य प्रणामानन्तरं—"देव ! यथाज्ञापयसि" इत्यभिधाय लेखद्वितयमर्पयाम्बभूव। युवराजस्तु शिरसि कृत्वा स्वयमेव च तदुन्मुच्य क्रमशः पपाठ। (ञ)

'स्वस्ति, उज्जयिनीतः सकल-राजन्य-शिखण्ड-शेखरीकृत-चरणारविन्दः परम-माहेश्वरो महाराजाधिराजो देवस्तारापीडः सर्वसम्पदामायतनं चन्द्रापीड-मुदच्छचारु-चूडामणि-मरीचि-चक्र-चुम्बिन्युत्तमाङ्गे चुम्बन्नन्दयति (ट)। कुशलिन्यः प्रजाः, किन्तु (१) कियानपि कालो भवतोऽदृष्टस्य (२) गतः, (३) बलवदुत्कण्ठितं

विपक्षप्रेरिततया न सन्देह इति भावः। आलेखहारकं पत्रवाहकं। अङ्गेति सम्बोधनसूचकमव्ययम्। कच्चिदिति अवगमार्थे। सर्वान्तःपुरैः सर्वाभिरन्तःपुरस्थस्त्रीभिः सह। इति कच्चित् अवगन्तुमिच्छामीत्यर्थः।

(ञ) अथेति। असौ आलेखहारकः। यथा आज्ञापयसि पृच्छसि तथा ते सर्व एव कुशलिन इत्यर्थः। लेखद्वितयं पत्रद्वयं। तत् लेखद्वितयं उन्मुच्य आवरकात् प्रच्याव्य।

(ट) स्वस्तीति। स्वस्ति तवाशीरस्त्वित्यर्थः। "स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादा"वित्यमरः। "आशीर्वचन-संयुक्तं पुत्रपत्रे पदक्रमम्।" इति पत्रकौमुद्यां वररुचिवचनात् प्रथममेव स्वस्तिपदप्रयोग इति बोध्यम्। सकलैः राजन्यैः सामन्तैः शिखण्डेषु मौलिषु शेखरीकृतं भूषणीकृतं चरणारविन्दं यस्य सः, परममाहेश्वरो महाशैवः। उज्जयिनीतः सकाशात्। उदच्छदुद्गच्छत् चारु मनोहरं यत् चूडामणिमरीचीनां चक्रं समूह-स्तत् चुम्बति स्पृशतीति तस्मिन्, उत्तमाङ्गे मस्तके चुम्बन् सन्, सर्वसम्पदामायतनं भाजनं चन्द्रापीडं नन्दयति अभिनन्द्य लिखतीत्यर्थः। अयमंशो लेखकेन प्रचलितरीत्यैव लिखित इति बोध्यम्।

(ठ) कुशेति। प्रजाः कुशलिन्यः सन्ति, किन्तु अदृष्टस्य अस्माभिरनवलोकितस्य भवतः, कियानपि बहुतर इत्यर्थः कालो गतः। अतएव नोऽस्माकं हृदयं बलवदुत्कण्ठितम्। देवी तव माता विलासवती च,

---

তখন তিনি অশ্ব ধারণ করিয়া প্রীতিপ্রফুল্ল নেত্রে দূর হইতেই জিজ্ঞাসা করিলেন—"ভদ্র ! সকল পরিজনবর্গের সহিত পিতৃদেব ও সকল অন্তঃপুরস্থ রমণীগণের সহিত মাতৃদেবী কুশলে আছেন ত ? ।" (ঞ) তাহার পর সেই পত্রবাহক নিকটে আসিয়া প্রণাম করিয়া বলিল—"আপনি যাহা জিজ্ঞাসা করিয়াছেন, তাঁহারা সেইরূপই কুশলে আছেন" এই কথা বলিয়া দুইখানি পত্র সমর্পণ করিল। তখন যুবরাজ পত্র দুইখানি মস্তকে স্পর্শ করাইয়া নিজেই তাহা খুলিয়া ক্রমে পাঠ করিলেন।

(ট) 'তোমার মঙ্গল হউক ; সমস্ত সামন্তগণ যাঁহার পাদপদ্মকে মস্তকের অলঙ্কার করিয়াছেন, পরমশৈব ও দেবতার তুল্য প্রভাবশালী সেই মহারাজাধিরাজ তারাপীড়, চূড়ার মণি হইতে উত্থিত-মনোহর-কিরণরাশি-সংস্পর্শী মস্তকে চুম্বন করিয়া, সকল-সম্পদ্‌ভাজন চন্দ্রাপীড়কে অভিনন্দিত করিয়া লিখিতেছেন। (ঠ) প্রজারা ভাল আছে, কিন্তু তোমার

---

(१) किमु। (२) दृष्टस्य। (३) क्वचित् गत इति नास्ति।

नो हृदयम्, देवी च सहान्तःपुरैर्ग्लानिमुपनीता, अतो लेखवाचन-(१) विरतिरेव प्रयाणकालता (२) नेतव्येति' (ठ)। शुकनासप्रेषिते द्वितीयेऽप्यमुमेवार्थं लिखितमवाचयत्। अस्मिन्नेवावसरे समुपसृत्य वैशम्पायनोऽपि लेखद्वितयम-परमात्मीयमस्मादभिन्नार्थमेवादर्शयत्। (ड)

अथ "यथाज्ञापयति तातः" इत्युक्त्वा तथैव (३) तुरगाधिरूढः प्रयाणपटहम-वादयत् (४)। समीपे स्थितश्च महताश्वीयेन (५) परिवृतं महाबलाधिकृतं बलाहकपुत्रं मेघनादनामानमादिदेश—(ढ) "भवता पत्रलेखया सहागन्तव्यम्, नियतश्च केयूरकस्तामादायैतावतीं भूमिमागमिष्यति, (६) तन्मुखेन

अन्तःपुरैस्तत्स्त्रीभिः सह ग्लानिं मनःकष्टं उपनीता त्वयैव प्रापिता। अतो लेखवाचनविरतिरेव पत्रपाठसमाप्तिकाल एव प्रयाणकालतां उज्जयिनीं प्रति यात्राकालताम्। इदमेकं पत्रम्।

(ड) शुकेति। अस्मादुक्तचन्द्रापीडपत्रात्। आत्मीयं स्वकीयं, अपरं लेखद्वितयं पत्रद्वयं पितुः शुकनासस्यैकं राज्ञश्चैकमित्यर्थः, अदर्शयत् चन्द्रापीडायेति शेषः।

(ढ) अथेति। तथैव पूर्ववदेव। प्रयाणपटहं यात्राढक्काम्। महता विशालेन, अश्वीयेन अश्वसैन्य-समूहेन। महद्बलं सैन्यं तत्र अधिकृतं तदध्यक्षतायां नियुक्तं, बलाहकस्य प्रधानसेनापतेः पुत्रम्।

(ण) भवतेति। नियतश्च निश्चितश्च। आगमिष्यति अवश्यमेवात भवदवस्थानवार्ताप्राप्तिसम्भवात् तत्र च भवतो गमनासम्भवादिति भावः। तस्य केयूरकस्य मुखेन। अवधारणे ननुशब्दः। इयं सा जगत्-

---

সহিত দেখা নাই—এই অবস্থায় বহুকাল অতীত হইয়া গিয়াছে; অতএব আমার মন বড়ই উৎকণ্ঠিত হইয়াছে এবং অন্তঃপুরস্থ সমস্ত রমণীগণের সহিত মহারাণীও মনের কষ্টে কাতর হইয়া পড়িয়াছেন; অতএব তুমি পত্রপাঠের সমাপ্তিকালকেই যাত্রার কাল করিবে।'

(ড) শুকনাসের প্রেরিত দ্বিতীয় পত্রও পড়িয়া দেখিলেন যে, এই বিষয়ই লিখিত আছে। এই সময়েই বৈশম্পায়নও আসিয়া, এই পত্র হইতে অভিন্ন-অর্থ-সম্পন্ন নিজের আর দুইখানি পত্র চন্দ্রাপীড়কে দেখাইলেন।

(ঢ) তাহার পর 'পিতৃদেব যেরূপ আদেশ করিয়াছেন (তাহাই করিব)" এই কথা বলিয়া চন্দ্রাপীড়, সেই ভাবেই অশ্বে আরোহণ করিয়া যাত্রার ঢাক বাজাইলেন এবং নিকটবর্ত্তী, বিশাল অশ্বসৈন্যে পরিবেষ্টিত ও বিপুল সৈন্যের অধ্যক্ষ মেঘনাদ নামে বলাহকের (প্রধান সেনাপতির) পুত্রকে আদেশ করিলেন,—(ণ) "আপনি পত্রলেখার সহিত আসিবেন; নিশ্চয়ই তাহাকে নিয়া কেয়ূরক এই পর্য্যন্ত আসিবে; তখন কেয়ূরকের মুখে প্রণাম জানাইয়া

---

(१) लेखवाचना...। (२) प्रयाणकालता, प्रयाणकारणता।

(३) तथैव च। (४) अवादयत्। (५) महता स्वीताश्वीयेन। (६) इति।

विज्ञाप्या प्रणम्य देवी कादम्बरी।—नन्वियं सा त्रिभुवननिन्दनीया निरनुरोधा निष्परिचया च (१) दुर्ग्रहा प्रकृतिर्मर्त्यानाम्, येषामकाण्डविसंवादिन्यः प्रीतयो न गणयन्ति निष्कारणवत्सलताम्। एवं गच्छता मयात्मनो नीतः स्नेहः कपट-कूट-जालिकताम्, प्रापिता भक्तिरलीक-काकु-करण-कुशलताम्, पातितमुपचार-मात्रमधुरं (२) धूर्त्ततायामात्मार्पणम्, प्रकटितं वाङ्मनसयोर्भिन्नार्थत्वम् (ण)। आस्तां तावदात्मा, अस्थानाहितप्रसादा दिव्ययोग्या देव्यपि वक्तव्यतां नीता। जनयन्ति हि पश्चाद्वैलक्ष्यमभूमिपातिताः (३) व्यर्थाः प्रसादामृतवृष्टयो

.प्रसिद्धा। निरनुरोधा कस्याप्यनुरोधेन न परिवर्त्तनीयेत्यर्थः, निष्परिचया परिचयेनापि नान्यथा करणीयेति तात्पर्य्यम्, दुर्ग्रहा ईदृक्तया दुर्बोधा, मर्त्यानां मनुष्याणां प्रकृतिः स्वभावः। येषां मर्त्यानां, अकाण्डे अनवसरे विसंवादिन्यो व्यभिचारिण्यः प्रीतयः प्रेमाणः, निष्कारणवत्सलतां कस्याप्यकारणस्नेहं, न गणयन्ति नानुसरन्ति। उक्तमेवार्थं समर्थयितुमाह एवमिति। एवमनेन प्रकारेण गच्छतैवेत्यर्थः। आत्मनः स्वस्य स्नेहः प्रीतिः, कपटी धूर्त्तो यः कूटजालिक ऐन्द्रजालिकस्तस्य भावस्तां धूर्त्तेन्द्रजालिकव्यवहारत्वमित्यर्थः, नीतः प्रापितः। भक्तिरनुरक्तिः, अलीककाकुकरणे मिथ्यावक्रोक्तिरचनायां कुशलतां नैपुण्यं प्रापिता। उपचारमात्रेण केवलेन वाग्व्यवहारेण मधुरं, न तु वस्तुतो मधुरमिति भावः, आत्मार्पणं आत्मप्रदानं, धूर्त्ततायां पातितं स्थापितं पर्य्यवसायितमित्यर्थः। तथा वाङ्मनसयोर्भिन्नार्थत्वं विसंवादित्वं प्रकटितम्, 'इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थामवभवतीं कर्त्तुम्' इत्याद्यभिधाय सहसैव प्रस्थानादिति भावः। तथा च प्राक् प्रीतिं प्रदर्श्य सहसैव महाश्वेताकादम्बरीप्रभृतीनां तादृशीमकारणवत्सलतामगणयित्वा स्वदेशप्रस्थानान्मनुष्याणां प्रकृतिर्दुर्ग्रहैवेति समुदायाशयः। अत्र नन्वियमित्यादिसामान्यस्य एवमित्यादिविशेषेण समर्थनादर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः, स्नेहे कपटकूटजालिकतारोपस्य प्रकृतोपयोगितया परिणामः, तथा प्रकृतेर्दुर्ग्रहत्वप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बहुतरकारणोपन्यासात् समुच्चयश्च, इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) आस्तामिति। आत्मा अस्मत्सम्बन्धिनी कथेत्यर्थः आस्तां तावत् दूरे तिष्ठतु। अस्थाने अपात्रे आहितो न्यस्तः प्रसादः अनुग्रहो यया सा, तथा दिव्ययोग्या स्वर्गीयजनोचिता देव्यपि कादम्बर्य्यपि वक्तव्यतां

কাদম্বরীদেবীকে জানাইবেন যে—'এই সেই ত্রিভুবনের নিন্দনীয়, অনুরোধানপেক্ষী, পরিচয়-বিহীন ও দুর্ব্বোধ্য মনুষ্যদিগের স্বভাব; যে মনুষ্যদিগের প্রণয়, অসময়ে বিপরীত হইয়া যায় ও অকারণ বাৎসল্যকে গণনা করে না।' দেখুন—আমি এই ভাবে প্রস্থান করিয়া নিজের স্নেহকে ধূর্ত্ত ঐন্দ্রজালিকের ব্যবহারে উপনীত করিয়াছি, অনুরাগকে মিথ্যা বক্রোক্তি-রচনায় নিপুণ করিয়াছি, কেবল বাক্যব্যবহারে সুমধুর আত্ম-সমর্পণকে ধূর্ত্ততায় পর্য্যবসিত করিয়াছি এবং বাক্য ও মনের বিভিন্ন ভাব প্রকাশ করিয়াছি। (ত) নিজের কথা দূরে থা'ক, যিনি অপাত্রে অনুগ্রহ বর্ষণ করিয়াছেন এবং যিনি স্বর্গীয় লোকেরই যোগ্য; সেই কাদম্বরীদেবীকেও

— (१) क्वचित् चकारो नास्ति। (२) उपचारमधुरं। (३) अभूमिपाताः।

मङ्गताम् (त)। न खलु देवीं प्रति प्रबललज्जातिभारमन्थरं मे हृदयं यथा महाश्वेतां प्रति। नियतमेनामलीकाध्यारोपणवर्णितास्मद्गुणसम्भारामस्थान-पक्षपातिनीमसकृदुपालप्स्यते देवी (थ)। तत् किं करोमि, गरीयसी गुरोराज्ञा प्रभवति (१) देहमात्रकस्य, हृदयेन तु हेमकूटनिवासव्यसनिना लिखितं जन्मान्तरसहस्रस्य दास्यपत्रं (२) देव्याः (द)। न दत्तमस्याटविकस्य गौल्मिके-

निन्दनीयतां नीता मया प्रापिता, विदेशादागतेनाज्ञातकुलशीलेन चन्द्रापीडेन सह कथं मैत्री कृतेति निन्दां प्रापितेत्यर्थः। हि यस्मात्, अभूमौ अपात्रे पातिता न्यस्ताः, अतएव व्यर्था निष्फलाः, महतां प्रसाद एवामृतं तत्पूर्णा दृष्टय इति प्रसादामृतदृष्टयः सुस्निग्धा दृष्टिपाता इत्यर्थः, पश्चात् वैलक्ष्यं लज्जां जनयन्ति, आत्मनिन्दा-बधादिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(थ) नेति। देवीं कादम्बरीं। प्रबला अतिगुर्वी या लज्जा तस्या अतिभारेण मन्थरं जडम्। ननु कथं तव हृदयं महाश्वेतां प्रत्येवातिरिक्तं प्रबललज्जातिभारमन्थरमित्याह नियतमिति। देवी कादम्बरी, अलीकाध्यारोपणेन मिथ्यारोपेण वर्णितः अस्मद्गुणानां सम्भारः समूहो यया तां, तथा अस्थाने अपात्रे पक्ष-पातिनीं ताम्, एनां महाश्वेतां नियतं निश्चितं असकृत् उपालप्स्यते तिरस्करिष्यति, तद्विश्वासेन आत्मनोऽपि पक्षपातस्य निष्फलत्वादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(द) तत् किं देवीप्रसादमेव विस्मरिष्यसीत्याह तदिति। गुरोः पितुः। देह एव देहमात्रं ततः कुत्सायां कप्रत्ययः, तस्य प्रभवति देहमात्र एवाधिपत्यं कर्तुं शक्नोति, सुतरां देहमात्रमेवोज्जयिनीं यास्यतीति भावः। तु किन्तु हेमकूटनिवासे व्यसनि आसक्तिमत् तेन हृदयेन, देव्याः कादम्बर्याः समीपे जन्मान्तरसहस्रस्य दास्यपत्रं लिखितं विलिख्य दत्तं, सुतरां हृदयं तत्समीप एव चिरं स्थास्यतीति देवीप्रसादं न विस्मरिष्यामीति भावः।

(ध) इतश्च विस्मरणासम्भव इत्याह न दत्तमिति। गौल्मिकेन गुल्माधिकृतेन सैन्याध्यक्षेण, आटविकस्य

আমি নিন্দার ভাজন করিয়াছি। কারণ, অনুগ্রহামৃতে পরিপূর্ণ মহৎ লোকের দৃষ্টিপাত, অপাত্রে বিন্যস্ত হইয়া নিষ্ফল হইলে, সে, পরিশেষে নিজেরই লজ্জা জন্মাইয়া থাকে। (থ) কাদম্বরীদেবীর প্রতি আমার হৃদয়, সেরূপ গুরুতর লজ্জাভারে অলস নহে; যেরূপ মহাশ্বেতার প্রতি। কারণ,—মহাশ্বেতা, মিথ্যা আরোপ করিয়া আমার গুণগ্রাম বর্ণনা করিয়াছেন এবং অপাত্রে পক্ষপাত করিয়াছেন; সুতরাং কাদম্বরীদেবী নিশ্চয়ই তাঁহাকে বারংবার তিরস্কার করিবেন। (দ) তবে করিব কি, গুরুতর পিতার আদেশ কেবল দেহের উপরেই আধিপত্য করিতে পারে; (তাই দেহই উজ্জয়িনীতে যাইতেছে) কিন্তু হেমকূটে বাস করিবার জন্য অনুরাগী হৃদয়, কাদম্বরীদেবীর নিকটে সহস্র জন্মান্তরের জন্য দাস্যপত্র লিখিয়া দিয়াছে। (ধ) সৈন্যাধ্যক্ষ যেমন দুষ্ট ব্যাধকে যাইতে দেন না, সেইরূপ দেবীর অনুগ্রহ

---

(१) प्रभवति हि। (२) दासपत्रं।

नैव (१) देवीप्रसादेन गन्तुम्, सर्वथा गतोऽस्मि पितुरादेशादुज्जयिनीम् (ध)। प्रसङ्गतोऽसज्जनकथा-(२) कौर्त्तनेषु स्मर्त्तव्यः खलु चन्द्रापीड़चण्डालः (न)। मा चैवं मंस्थाः, यथा जीवन् पुनर्देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दमननुभूय (३) स्थास्यति चन्द्रापीड़ इति (प)। महाश्वेतायाश्च सप्रदक्षिणं शिरसा पादौ वन्दनीयौ। मदलेखायाश्च कथनीयः प्रणाम-पूर्वमश्लिथिलः कण्ठग्रहः। गाढ़मालिङ्गनीया च तमालिका। अस्मद्वचनादशेषः प्रष्टव्यः कुशलं कादम्बरीपरिजनः, रचिताञ्जलिना च भगवानामन्त्रणीयो हेमकूटः" इति। (फ)

दुष्टवनचरस्येव, देव्याः कादम्बर्य्याः प्रसादेन अनुग्रहेण, अस्य मल्लक्षणस्य जनस्य गन्तुं न दत्तं, यथा समीपस्थः सैन्याध्यक्षो दुष्टं वनेचरं बलादाबध्नाति देवीप्रसादोऽपि मां तथैवेत्यर्थः। तर्हि कथं प्रस्थातुमर्हसीत्याह सर्वथेति। गतोऽस्मि प्रस्थितोऽस्मि। पितुरादेशात् शरीरमात्रमेव गच्छति न पुनर्मनस्तस्य देवीप्रसादेनाबद्धत्वादिति सर्वथा प्रस्थातुं नार्हत्येवेति भावः। लुप्तोपमालङ्कारः "गुल्मा रुक्सम्बसेनाश्च" इत्यमरः।

(न) प्रसङ्गत इति। चन्द्रापीड़ एव चण्डालश्चन्द्रापीड़चण्डालः, अनुग्रहीतुरपि दुःखदत्वादिति भावः।

(प) मा चैवमिति। एतेनावश्यमेव पुनरप्यागमनं सूचितम्। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः। यद्यपि कादम्बर्य्या निर्णीयमानभाविभार्य्यात्वेन सर्वोऽपि व्यवहारः सङ्गच्छते, तथापि भक्तिभावप्रकाशो विनयसूचनया परमप्रेमजननाय।

(फ) महेति। महाश्वेताया महाहितैषितया तपस्वितया च केवलं सम्यक् भक्तिरेव प्रदर्शिता। अश्लिथिलो गाढ़ः, कण्ठग्रह आलिङ्गनम्। मदलेखायास्तु कादम्बर्य्याः सखित्वेन समानस्थानपातितया प्रणामनिवेदनम्, तदाश्रितत्वेन किञ्चिन्न्यूनतया च गाढ़ालिङ्गनविज्ञापनसाहसम्। आत्मनस्तु कादम्बर्य्याः परिजनत्वनिवेदनात् समानस्थानपातितया प्रेमास्पदतया च परिजनीभूतायास्तमालिकायाः केवलगाढ़ालिङ्गनविज्ञापनम्। परिजनेषु कुशलप्रश्ननिवेदनन्तु तेभ्यः परिचर्य्यालाभेन प्रणयोदयात् कादम्बर्य्याः प्रेमाकर्षणाय तेष्वप्यात्मीयताप्रकाशस्यावश्यकत्वाच्च। आमन्त्रणीयः सम्भाषणीयः। हेमकूटामन्त्रणनिवेदनमपि च कादम्बर्य्या एव प्रेमाकर्षणाय तत्प्रेमाधीनतत्प्रेमप्रकाशपरत्वात्।

আমাকে যাইতে দিতেছে না ; তথাপি পিতার আদেশেই উজ্জয়িনীতে যাইতেছি। (ন) তবে প্রসঙ্গক্রমে দুর্জনের কথা বলিবার সময়ে চণ্ডালচরিত্র চন্দ্রাপীড়কে যেন স্মরণ করেন। (প) আর এরূপ যেন মনে না করেন যে,—চন্দ্রাপীড় জীবিত থাকিয়া পুনরায় কাদম্বরীদেবীর পাদপদ্ম-সেবার আনন্দ অনুভব না করিয়া থাকিবে। (ফ) এবং প্রদক্ষিণ করার সহিত মস্তকদ্বারা মহাশ্বেতাদেবীর চরণে নমস্কার জানাইবেন ; নমস্কারপূর্ব্বক গাঢ় আলিঙ্গনের কথা মদলেখাকে বলিবেন ; তমালিকাকে গাঢ় আলিঙ্গন জানাইবেন ; আর আমার কথানুসারে কাদম্বরীদেবীর

---

(१) आटविकगोष्ठिकेनेव, देव्या इतो न दत्तमस्याः। दविकगोष्ठिकेनेव।

(२) प्रसङ्गतो जनकथा...। (३)...चरणारविन्दमननुभूय।

एवमादिश्य तं, "सुहृदादि साधनमक्लेशयता शनैः शनैर्गन्तव्यम्" इत्युक्त्वा वैशम्पायनं स्कन्धावारभारे (१) न्ययुङ्क्त (ब) स्वयमपि च तथारूढ़ एव गमन-हेला-हर्ष-हेषारव-कम्पित-कैलासेन खुर-ताण्डव-खण्डितभुवा कान्त-कुन्त-लता-वन-वाहिना तरुण-तुरगप्रायेण (२) अश्वसैन्येनानुगम्यमानस्तमेव लेखहारकं पर्य्याणलग्नमभिनवकादम्बरी-वियोगशून्येनापि हृदयेनोज्जयिनीवार्त्तां (३) पृच्छन् प्रतस्थे। (भ)

क्रमेण चातिप्रवृद्धप्रकाण्ड-पादप-प्रायया, (म) मालिनीलतामण्डपैः (४)

(ब) एवमिति। तं मेघनादम्। सुहृदादि मित्रनृपतिवर्गप्रभृतिकं, साध्यते युद्धमनेनेति साधनं सैन्यं, अक्लेशयता यथासमयं भोजनशयनादिसम्पादनेन क्लिष्टमकुर्व्वता त्वयेति शेषः।

(भ) स्वयमिति। तथा पूर्व्वप्रकारेण आरूढ एव इन्द्रायुधमिति शेषः। गमनमेव हेला विलासस्तया यो हर्ष आनन्दस्तस्माद् यो हेषारवस्तेन कम्पितः कैलासो गिरिर्येन तेन। खुराणां ताण्डवेन उद्धतनृत्येन दृढाघातेनेत्यर्थः खण्डिता विदारिता भूर्येन तेन। तथा कान्ताः सुन्दराः कुन्ताः शस्त्रविशेषा लम्बमानत्वाल्लता इव तासां वनं समूहं वहतीति तेन। अत्र लुप्तोपमा। तरुणास्तुरगाः प्राया बहुला यत्र तेन। पर्य्याणे पल्ययने लग्नः अश्वान्तरारोहणेन संसक्तदेहस्तं, लेखहारकं पत्रवाहकं।

(म) क्रमेणेति। चन्द्रापीडः क्रमेण च शून्यया अटव्या दिवसं गत्वा परिणते रविबिम्बे दूरत एव चिर-प्ररूढ़स्य रक्तचन्दनतरोरुपरि बद्ध महान्तं रक्तध्वजं ददर्शेत्यन्वयः। इतः स्त्रिया तृतीयैकवचनान्तपदानि अटव्येति

সমস্ত পরিজনবর্গকে মঙ্গল জিজ্ঞাসা করা জানাইবেন এবং কৃতাঞ্জলি হইয়া মাহাত্ম্যশালী হেমকূট পর্ব্বতকে সম্ভাষণ করিবেন।

(ব) এই ভাবে মেঘনাদকে আদেশ করিয়া বলিলেন—"বৈশম্পায়ন! তুমি মিত্র-রাজন্যবর্গ-প্রভৃতি সৈন্যগণকে কষ্ট না দিয়া ধীরে ধীরে যাইবে" এই কথা বলিয়া সৈন্যরক্ষার ভারে বৈশম্পায়নকে নিযুক্ত করিলেন। (ভ) নিজেও, সেইভাবেই অশ্বে আরোহণ করিয়া নূতন কাদম্বরীবিয়োগে শূন্যমনা হইলেও, পালানে সংলগ্নদেহ ও অন্য অশ্বে আরূঢ় সেই পত্রবাহকের নিকট উজ্জয়িনীর বৃত্তান্ত জিজ্ঞাসা করিতে করিতে প্রস্থান করিলেন; তখন অশ্বারোহী সৈন্যগণ তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল; সেই অশ্বারোহী সৈন্যের মধ্যে বহুসংখ্যকই তরুণবয়স্ক অশ্ব ছিল; অশ্বগণ হেলার সহিত গমনের সময় আনন্দবশতঃ হেষারবে কৈলাস-পর্ব্বতকে কম্পিত করিতেছিল, নৃত্যপ্রায়, খুরের আঘাতে ভূতল বিদীর্ণ করিতেছিল এবং সেই সৈন্যগণ লতাসমূহের ন্যায় দীর্ঘ দীর্ঘ কুন্তনামক অস্ত্রসমূহ ধারণ করিতেছিল।

(ম) চন্দ্রাপীড় ক্রমশঃ, শূন্য বনের মধ্য দিয়া যাইতে যাইতে দিন অতিবাহিত করিয়া সূর্য্যমণ্ডল প্রায় অস্তমিত হইলে ও দিনের আলোকগুলি বিম্বফলের ন্যায় অরুণবর্ণ দেখা যাইতে

(१)…भरे। (२) खुरपातनताण्डव-खण्डित-भूमण्डलेन तुरगप्रायेण। (३) उज्जयिनीमार्गे।
(४)…मण्डलैः।

मण्डलिततरुषण्डया, (य) गजपति-(१) पातित-पादप-परिहार-वक्रीकृत-मार्गया, (र) जन-(२) जनित-तृण-पर्ण-काष्ठ-कोटि-कूट-प्रकटित-वीर-पुरुष-(३) घात-स्थानया, (ल) महापादप-मूलोत्कीर्ण-कान्तार-दुर्गया, (व) तृषित-पथिक-खण्डित-दलोज्झितामलकीफल-निकरया, (श) विकसित-करञ्ज-मञ्जरी-रजोविच्छुरित-तटैस्तट-तरु-बद्ध-(४) पटच्चर-कर्पट-ध्वज-चिह्नैरिष्टकाचित-(५)

वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अतिप्रवृद्धा अतीववृद्धिं गताः प्रकाण्डाः स्कन्धदेशा येषां ते तादृशाः पादपाः प्राया बहुला यस्यां तया।

(य) मालिनीति। मालिनीनामकलतानां मण्डपैर्मण्डलितं वेष्टितं तरुषण्डं वृक्षसमूहो यस्यां तया।

(र) गजेति। गजपतिभिः पातितानां पादपानां परिहारेण परित्यागेन वक्रीकृतो मार्गः पन्था यस्यां तया।

(ल) जनेति। जनैः पथिकलोकैः जनितं आत्मरक्षणाय संगृहीतं यत् तृणपर्णकाष्ठानां कोटेः कोटिसंख्यायाः कूटं राशिः तेन प्रकटितं सूचितं वीरपुरुषाणामपि घातस्थानं हिंस्रजन्तुभिर्वधस्थानं यस्यां तया। पथिका हि तादृशवनमध्ये हिंस्रजन्तुभ्य आत्मरक्षणाय तृणादिकूटमध्ये प्रविश्य रात्रौ निवसन्तीति प्रसिद्धिः। अत्र च्छेकानुप्रासवृत्त्यनुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) महेति। महापादपानां मूलेषु उत्कीर्णा नितक्ष्य निर्म्मिताः कान्तारदुर्गा वनदुर्गामूर्त्तयो यस्यां तया।

(श) तृषितेति। तृषितैः पिपासातुरैः पथिकैः खण्डितानि चर्वितानि दलानि कियन्ति खण्डानि येषां तानि उज्झितानि चर्वणानन्तरं परित्यक्तानि च एवम्भूतानि यानि आमलकीफलानि तेषां निकरः समूहो यस्यां तया। "दलं शस्त्रीच्छदोत्सेधावद्रव्ये खण्डपर्णयोः।" इति विश्वः।

(ष) विकसितेति। विकसितानां करञ्जमञ्जरीणां रजोभिः परागैः विच्छुरितानि व्याप्तानि तटानि तीराणि येषां तैः। तटतरुषु बद्धा ये पटच्चराणां चौराणां कर्पटा वस्त्रखण्डा त एव ध्वजचिह्नानि येषां तैः।

লাগিলে, দূর হইতেই পুরাতন এক রক্তচন্দনবৃক্ষের উপরে বদ্ধ বিশাল এক রক্তবর্ণ ধ্বজ দেখিতে পাইলেন। সেই শূন্য বনের মধ্যে বহুসংখ্যক বৃক্ষেরই স্কন্ধদেশ (গুড়ি) খুব বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (য) মালিনীলতার মণ্ডপে বৃক্ষসমূহ পরিবেষ্টিত ছিল। (র) বৃহৎ হস্তিগণ যে সকল বৃক্ষ উন্মূলন করিয়াছিল, পথিকগণ তাহা পরিত্যাগ করিয়া সরিয়া যাওয়ায় পথগুলি বক্র হইয়াছিল। (ল) হিংস্র জন্তু হইতে আত্মরক্ষা করিবার নিমিত্ত পথিকগণ কোটি কোটি তৃণ, পর্ণ ও কাষ্ঠের রাশি সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছিল; তাহাতে সে স্থানে বলবান্ পুরুষেরও হত্যা হইত, ইহা প্রকাশ পাইয়াছিল। (ব) পথিকগণ প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বৃক্ষের মূলে বনদুর্গার মূর্ত্তি খোদিত করিয়া রাখিয়াছিল। (শ) পিপাসার্ত্ত পথিকগণ এক এক দিক্ চর্ব্বণ করিয়া আমলকী-ফলসমূহকে ফেলিয়া দিয়াছিল। (ষ) এবং সেই বনমধ্যে কতকগুলি পুরাতন কূপ ছিল; প্রস্ফুটিত করমচা-মঞ্জরীর রেণুতে সেই কূপগুলির তীরদেশ ব্যাপ্ত হইয়াছিল;

---

(१) वनगजपति…। (२) जजन…। (३)…पुरुषवधस्थ…। (४) तटबद्ध… (५) इष्टकाचित…।

शुष्क-पल्लव-विष्टरानुमित-पथिक-विश्रामैर्विश्रान्त-कार्पटिक-प्रस्फोटित-(१) चरण-धूलि-(२) धूसर-किसलय-लाञ्छितोपकण्ठैः पत्र-सङ्करासुरभीकृताशिशिर-पङ्किल-विवर्णास्वादुजलैर्व्रतति-ग्रन्थि-ग्रथित-पर्णपुट-तृण-पूली-(३) चिह्नानुमेयैर्जरत्कान्तार-कूपैरसुलभ-सलिलतया अनभिलषितोद्देशया, (ख) मधु बिन्दु-स्यन्दि-सिन्दुवार-(४) वनराजि-रजोधूसरित-तीराभिश्च कुञ्जक-(५) लताजालकैर्जटिलीकृत-सैकताभिः अध्वगोत्खात-बालुका-कूपिकोपलभ्यमान-(६) कलुष-स्वल्प-सलि-

इष्टकासु स्थिता ये शुष्कपल्लवानां विष्टरा उपवेशनार्थास्तरणानि तैरनुमिताः पथिकानां विश्रामा येषु तैः। विश्रान्ता ये कार्पटिकास्तीर्थयात्रिकास्तैः प्रस्फोटिताः पल्लवद्वारा ताड़नेनैव विकीर्णा याश्चरणधूलयस्ताभिर्धूसराणि यानि किसलयानि प्रल्लवानि तैर्लाञ्छितः उपकण्ठः समीपदेशो येषां तैः। पत्राणां नानाविधवृक्षपर्णानां सङ्करेण मिश्रणेन असुरभीकृतानि दुर्गन्धीकृतानि अशिशिराणि उष्णानि, पङ्किलानि आविलानि, विवर्णानि अस्वादूनि च जलानि येषां तैः। व्रततिग्रन्थिभिर्लताग्रन्थिभिर्ग्रथिता याः पर्णपुटयुक्तास्तृणपूल्यस्तृणनिर्म्मितपत्रपुटाधारविशेषास्ता एव चिह्नानि तैरनुमेयैर्दूरादद्दृश्यमानत्वेनानुमातुं योग्यैः। पथिका हि रज्जोः पात्रस्य चाभावे तृणैः पूलीं निर्म्माय तत्र च पत्रपुटं निधाय लतया बद्ध्वा तेन कूपाज्जलमुत्तोलयन्तीति प्रसिद्धिः। जरन्तः पुरातना ये कान्तारस्य महावनस्य कूपास्तैर्हेतुभिः, असुलभानि दुष्प्रापाणि सलिलानि येषु उद्देशेषु ते तथा तेषां भावस्तया हेतुना, अनभिलषिता गन्तुमनिष्टा उद्देशाः स्थानानि यस्यास्तया। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः।

(ख) मध्विति। किञ्च, मधुबिन्दुस्यन्दिन्यो मकरन्दकणवर्षिण्यो याः सिन्दुवारवनराजयस्तासां रजोभिः परागैः धूसरितानि धूसरवर्णीकृतानि तीराणि यासां ताभिः। कुञ्जकानि क्षुद्रक्षुद्रनिकुञ्जानि तेषां लताजालकैर्लतासमूहैः, जटिलीकृतानि व्याप्तानि सैकतानि पुलिनानि यासां ताभिः। तथा अध्वगैः पथिकैः उत्खाता बालुकामपसार्य्य निर्म्मिता या बालुकासु कूपिकाः क्षुद्रक्षुद्रकूपास्तासु उपलभ्यमानानि कलुषाणि आविलानि

তীরজাত বৃক্ষে চৌরগণের বস্ত্রখণ্ড সকল বদ্ধ ছিল এবং সেই বস্ত্রখণ্ডগুলিই সেই কূপগুলির ধ্বজচিহ্ন হইয়াছিল ; ইটের উপরে শুষ্ক পল্লবের আস্তরণ পাতা ছিল, তাহাতে পথিকগণের বিশ্রাম করার অনুমান হইতেছিল ; তীর্থযাত্রিগণ বিশ্রাম করিবার সময়ে যে সকল পল্লবদ্বারা চরণের ধূলি ঝাড়িয়া ফেলিয়াছিল, সেই ধূলিতে ধূসরবর্ণ সেই সকল পল্লবে কূপগুলির প্রান্তভাগ চিহ্নিত ছিল ; নানাবিধ বৃক্ষের পত্র মিশ্রিত হওয়ায় কূপগুলির জল,—দুর্গন্ধ, উষ্ণ, কর্দ্দমাক্ত, অস্বর্ণ ও কটুরস ছিল এবং তৃণগুলিতে (খড়ের জোতে) সংস্থাপিত ও লতাবদ্ধ পত্রপুটরূপ চিহ্ন দেখিয়া দূর হইতেই সেই কূপগুলির অনুমান হইত ; এই জাতীয় কূপমাত্র থাকায় জল সুলভ ছিল না বলিয়া লোকে সেই বনভূমিতে যাইতে ইচ্ছা করিত না। (খ) এবং কতকগুলি শুষ্ক পার্ব্বত্য নদীতে সেই বনের মধ্যস্থান উঁচু নীচু করিয়াছিল, মধুবিন্দুবর্ষী সিন্দুবার বৃক্ষের (নিসিন্দা গাছের) বনশ্রেণী হইতে রেণু পতিত হইয়া সেই নদীগুলির তীরদেশ ধূসরবর্ণ

(१)...प्रस्फुटित, स्फोटित...। (२) धूलि...।
(३) तृणोलुपपुत्राका...। (४)...सिन्धुवार...। (५) कुञ्जक...। (६)...कूपकोपलभ्यमान...।

लाभिः शुष्क-गिरिनदिकाभिर्विषमीकृतान्तरालया, (ह) कुक्कुट-(१) कौलेयक-रटितानुमीयमान-गुल्म-गहन-ग्रामटिकया शून्यया दिवसमटव्या गत्वा, (च) परिणते रविबिम्बे, (२) बिम्बारुणातपविसरे वासरे, (क) निःशाखीकृत-कदम्ब-शाल्मली-पलाश-बहुलैः शिखर-शेषैक-पल्लव-विडम्बितातपत्रैः पादपैः, ऊर्द्ध्व-स्थित-(३) प्ररोह-स्थूल-स्थाणु-मूल-ग्रन्थि-(४) जटिलैश्च हरिताल-कपिल-पक्व-वेणु-

स्वल्पानि च सलिलानि यासु ताभिः। शुष्का या गिरिनदिकाः पर्वतीयाः क्षुद्रनद्यस्ताभिः विषमीकृतानि उच्चावचीकृतानि अन्तरालानि मध्यभागा यस्यास्तया। अत्र वृत्त्यनुप्रासोऽलङ्कारः।

(ह) कुक्कुटेति। कुक्कुटानां चरणायुधपक्षिणां कौलेयकानां कुक्कुराणाञ्च रटितैः शब्दैः अनुमीयमाना-स्तेषां ग्राम्यत्वादिति भावः, गुल्मगहनेषु तरुलतानिविडस्थानेषु ग्रामटिकाः क्षुद्रक्षुद्रग्रामा यस्यां तया। तथा शून्यया निर्जनया, अटव्या वनेन वन्यपथेनेत्यर्थः, दिवसं गत्वा दिनमतिवाह्येत्यर्थः। अन्वयस्तूक्तः। स्वल्पार्थे ङीप्रत्ययस्तमादित्वात् ततः स्वार्थे कः।

(च) परीति। रविबिम्बे सूर्य्यमण्डले, परिणते चरमावस्थापन्ने अस्तोन्मुखे सतीत्यर्थः, तथा वासरे दिवसे, बिम्बवत् बिम्बफलवत् अरुणो रक्तवर्णः आतपविसरः सूर्य्यालोकसमूहो यस्मिन् तादृशे सति। अत्र लुप्तोपमाच्छेकानुप्रासयोः संसृष्टिः।

(क) निःशाखीति। निःशाखीकृता अरण्यवासिभिः शाखाशून्यीकृताः कदम्बशाल्मलीपलाशाः स्वनाम-प्रसिद्धा वृक्षा एव बहुलाः प्रचुरा येषु तैः, तथा शिखरेषु उपरिभागेषु शेषा अवशिष्टा एके एकैके ये पल्लवास्तै-र्विडम्बितानि अनुकृतानि आतपत्राणि छत्राणि यैस्तैः, पादपैरसंख्यैर्वृक्षैः। विरलीकृत इति वक्ष्यमाणस्य कर्त्तृपदमेकमेतत्। अत्रार्थोपमालङ्कारः। किञ्च ऊर्द्ध्वस्थिता दण्डायमानीभूताः प्ररोहा नवाङ्कुरा येषां ते तथाभूता ये स्थूलाः स्थाणवः निःशाखास्तरुस्तम्भास्तेषां मूलग्रन्थिभिर्मूलदेशैर्जटिलानि व्याप्तानि तैः। हरितालं धातुविशेषस्तद्वत् कपिलैः पिङ्गलवर्णैः पक्ववेणुविटपपटलैः परिणतवंशशाखासमूहैः रचिता विहिता वृतिर्वेष्टनं येषां तैः। मृगेभ्यः पशुभ्यः पशुकर्त्तृकप्रियङ्गुभक्षणादित्यर्थः भयेन कृतास्तृण-पुरुषास्तृणनिर्म्मितपुरुषाकृतिपदार्था

করিয়াছিল; পুঞ্জীভূত লতাসমূহে পুলিনভাগ ব্যাপ্ত করিয়াছিল আর সেই সকল নদীতে বালির ভিতরে পথিকগণ, ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র কূপ খনন করিয়াছিল, তাহাতে কর্দ্দমাক্ত অল্প অল্প জল পাওয়া যাইত এবং সেই বনের ভিতরে নিবিড়-তরুলতাময় স্থানে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গ্রাম ছিল; (হ) বন-কুকুড়া ও কুকুরের শব্দে সেই গ্রামগুলিকে অনুমান করা হইতেছিল। (ক্ষ) (ম চিহ্নিত স্তম্ভের প্রথমে, এই অংশের অনুবাদ দ্রষ্টব্য)। (ক) সেই বনের বহুতর ক্ষেত্রে অসংখ্য বৃক্ষ ছিল; তাহার মধ্যে শাখাবিহীন কদম্ব, শাল্মলী ও পলাশবৃক্ষই বহুসংখ্যক ছিল, উপরিভাগে এক একটি পল্লবমাত্র থাকায় সেই বৃক্ষগুলি ছত্রের অনুকরণ করিতেছিল; বৃহৎ বৃহৎ স্থাণুর (মুড়ো গাছের) মূলে সেই ক্ষেত্রগুলি ব্যাপ্ত ছিল এবং সেই স্থাণুগুলির উপরে নূতন নূতন অঙ্কুর উঠিয়াছিল; হরিতালের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ পাকা বাঁশের কঞ্চী দিয়া সেই ক্ষেত্রগুলির বেড়া

(१) कुक्कुटकुल...। (२) परिणतरविबिम्बे। (३) अर्द्धाङ्कित...। (४)...प्ररोहस्थल...।

विटपप-टल-रचित-(१) वृतिभिर्मृग-भय-कृत-तृण-पुरुषकैर्विपाकपाण्डुभिः फलितैः (२) प्रियङ्गु-प्रायैरटवीक्षेत्रैर्विरलीकृते वनप्रदेशे (३) चिरप्ररूढस्य रक्तचन्दनतरोरुपरि बद्धम्, (क) सरस-पिशित-पिण्ड-निभैरलक्तकैः, अभिनव-शोणितारुणेन रक्तचन्दनरसेन चार्द्रम्, (४) (ख) जिह्वा-(५) लता-लोहिनीभी रक्तपताकाभिः, केशकलापकान्तिना च कृष्णचामरावचूलेन प्रत्यग्रविशसितानां जीवानामिवावयवैरुपरचित-दण्ड-मण्डनम्, (ग) परिणद्ध-(६) वराटक-घटित-

---

येषु तैः। पशवो हि तादृशान् पुरुषान् विलोक्य भयान्नोपसर्पन्तीति प्रसिद्धम्। विपाकेन विशेषेण पक्वतया पाण्डुभिः पाण्डुवर्णैः। तथा फलितैः सञ्जातफलैः। प्रियङ्गवः श्यामाः प्रायेण बाहुल्येन येषु तैः। अटवीक्षेत्रैः वनस्थशस्यक्षेत्रैः, विरलीकृते सङ्कोचं नीते, वनप्रदेशे वनस्यैकदेशे, चिरप्ररूढस्य बहुपूर्वमुत्पन्नस्य अतीवप्राचीनस्य, रक्तचन्दनतरोरुपरि बद्धं रज्जुभिः संयतम्। रक्तध्वजमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्। एवमन्यदपि द्वितीयान्तपदं ज्ञेयम्।

(ख) सरसेति। सरसानि आर्द्राणि रक्तानि यानि पिशितपिण्डानि मांसखण्डानि तन्निभैस्तत्तुल्यैरलक्तकैः, अभिनवं सद्योनिःसृतं यत् शोणितं रक्तं तद्वदरुणेन, रक्तचन्दनेन च आर्द्रं क्लिन्नम्। अत्रार्थोपमालुप्तोपमयोर्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ग) जिह्वेति। जिह्वा रसना लता इव लम्बमानत्वात्तद्वत् लोहिनीभिः रक्तवर्णाभिः, रक्तपताकाभिः लोहितवैजयन्तीभिः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः, तथा जिह्वालतालोहिनीभिः पताकाभिरित्यनेनैव वक्तव्यार्थनिर्वाहे रक्तपदमधिकमित्यधिकपदत्वदोषः, स च रक्तपदपरित्यागेनैव परिहरणीयः। केशकलापवत् कान्तिर्यस्य तेन, कृष्णचामरमेव अवचूलं अधोमुखी चूडा तेन च। अतएव प्रत्यग्रविशसितानां सद्योनिहतानां जीवानां अवयवैरङ्गैः उपरचितं कृतं दण्डे दण्डाग्रे मण्डनं भूषणं यस्य तमिव। पताकानां जिह्वातुल्यत्वात् कृष्णचामरस्य च केशसमानत्वादिति भावः। अत्र मण्डनरचनोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

দিয়াছিল; পশুগণ শস্য ভক্ষণ করিবে—এই ভয়ে তৃণদ্বারা বহুতর কৃত্রিম পুরুষ নির্ম্মাণ করিয়া রাখিয়াছিল এবং পক্বতানিবন্ধন পাণ্ডুবর্ণ ও ফলসমন্বিত প্রিয়ঙ্গুলতাই সেই ক্ষেত্রগুলিতে বহুতর ছিল; চতুর্দ্দিকে এই জাতীয় ক্ষেত্রসমূহ থাকায় সেই বনের কোন একটি স্থান সঙ্কুচিত ছিল, সেই স্থানে অতি পুরাতন এক রক্তচন্দন গাছের উপরে সেই ধ্বজটা বাঁধা ছিল। (খ) রক্তাক্ত মাংসখণ্ডের ন্যায় গাঢ় আলতার রসে ও সদ্যোনিঃসৃত রক্তের ন্যায় অরুণবর্ণ রক্তচন্দনে সেই ধ্বজটা আর্দ্র ছিল। (গ) সেই ধ্বজটার উপরে লতার তুল্য লম্বমান জিহ্বার ন্যায় রক্তবর্ণ কতকগুলি রক্তপতাকা এবং কেশকলাপের ন্যায় সৌন্দর্য্যসম্পন্ন ও অধোমুখ কৃষ্ণবর্ণ কতকগুলি চামর বদ্ধ ছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সদ্যোনিহত প্রাণিগণের অঙ্গ দ্বারাই যেন সেই ধ্বজটার অলঙ্কার করা হইয়াছিল।

---

(१)…विटपिपटलरचित, विटपरचित…। (२) फलिनैः। (३) विरलीकृतवनप्रदेशे।
(४) अभिनवशोणितारुणेन आर्द्रम्। (५) रसेन आर्द्रं जिह्वा…। (६) परिणत…।

बुद्बुदार्द्धचन्द्र-खण्ड-खचितं, सुत-महिष-रक्षणावतीर्ण-दिनकरावतारित-शशिनेव विराजितशिखरम्, (घ) दोलायित-शृङ्ग-सङ्गि-लौह-शृङ्खलावलम्बमान-घर्घरव-घोर-घण्टया च घटित-केसरि-सटा-रुचिर-चामरया काञ्चनत्रिशूलिकया लिखित-नभस्तलम्, (१) (ङ) इतस्ततः पथिक-पुरुषोपहार-मार्गमिवावलोकयन्तम् (२) महान्तं रक्तध्वजं दूरत एव ददर्श। (च)

तदभिमुखश्च कञ्चिदध्वानं (३) गत्वा, (छ) केतकी-सूचि-खण्ड-पाण्डुरेण

(घ) बुद्बुदेति। परितः सर्वतो दक्षिणवदिशि समन्तादबद्धा ये वराटकाः कपर्द्दकास्तैर्घटितं निर्म्मितं यत् बुद्बुदवदर्द्धचन्द्रखण्डं बुद्बुदसमानपीनमध्यकमर्द्धचन्द्राकारभूषणमित्यर्थः तेन खचितं उपरिचिह्नितम्, अतएव सुतस्य निजपुत्त्रस्य यमस्य यो महिषस्तस्य रक्षणाय अवतीर्णो यो दिनकरः सूर्य्यस्तेन अवतारित आकाशादवरोहितो यः शशी चन्द्रस्तेनेव विराजितं शोभितं शिखरमुपरिभागो यस्य तम्। वराटकघटितार्द्धचन्द्राकाराभरणस्य प्रकृतचन्द्रवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तादृशार्द्धचन्द्रे प्रकृतचन्द्रत्वोत्प्रेक्षणात् द्रव्योत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। अत्र हि चण्डिकायतने प्रत्यहमेव बहुशः प्राणिवलयः सम्पद्यन्ते, तेन च महिषवाहनो यम समागत एव, तत्र च प्राणिना प्राणहरणाय यमस्य व्यग्रतया तदीयमहिषरक्षणाय पुत्त्रस्नेहात् सूर्य्योऽप्यवतीर्णः, अवतरता च तेन बन्धुभूतश्चन्द्रोऽप्यवतारित इति कवेराशयः।

(ङ) दोलायितेति। किञ्च, दोलायितं घण्टान्दोलनात् दोलावच्चलितं यत् त्रिशूलिकाया एव शृङ्गं तत्सङ्गिनी या लौहशृङ्खला तत्र अवलम्बमाना बद्धतया स्थिता घर्घररवा घोरा च घण्टा यस्यां तया, तथा घटितं संयोजितं केसरिसटावत् सिंहजटावत् चामरं यत्र तया, काञ्चनत्रिशूलिकया स्वर्णनिर्म्मितविशालत्रिशूलेन, लिखितं संस्पृष्टं नभस्तलं येन तम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(च) इत इति। पथिकपुरुषा एवोपहारा बलयस्तेषां मार्गमागमनपथमवलोकयन्तमिव स्थितम्, अत्युच्चत्वादर्द्धचन्द्राकारकपर्द्दकाभरणस्योन्मीलितनयनरूपत्वाच्चेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) तदिति। किञ्च। चन्द्रापीडः तस्य रक्तध्वजस्य अभिमुखः सन्, किञ्चित् कियन्तं अध्वानं

(ঘ) বুদ্বুদের ন্যায় স্থূলমধ্য ও অর্দ্ধচন্দ্রের ন্যায় বক্রভাবে সকল দিকে কপর্দ্দক বন্ধন করিয়া সেই ধ্বজটার উপরিভাগ চিহ্নিত করিয়াছিল; সুতরাং বোধ হইতেছিল যে,—সূর্য্য, নিজপুত্র যমের মহিষ রক্ষা করিবার জন্য অবতীর্ণ হইয়া, চন্দ্রকেও অবতীর্ণ করিয়াছিলেন; সেই চন্দ্র দ্বারাই যেন ধ্বজটার উপরিভাগ শোভা পাইতেছিল। (ঙ) ধ্বজের উপরিভাগে স্বর্ণ-নির্ম্মিত বৃহৎ একটা ত্রিশূল,—তাহারই চঞ্চল শৃঙ্গে এক ছড়া লৌহশৃঙ্খল সংলগ্ন, তাহাতে গম্ভীরধ্বনিকারী ও ভয়ঙ্কর একটা ঘণ্টা ঝুলান ছিল এবং সেই ত্রিশূলটায় সিংহের জটার ন্যায় সুন্দর একটা চামর বাঁধা ছিল; সেই ধ্বজটা এইরূপ ত্রিশূলদ্বারা আকাশ স্পর্শ করিয়াছিল (চ) এবং সেই ধ্বজটা যেন বলির উপযুক্ত পথিকগণের আগমনের পথ দেখিতেছিল।

(ছ) চন্দ্রাপীড় সেই ধ্বজের অভিমুখ হইয়া কিছু পথ অতিক্রম করিয়া একখানি চণ্ডীর

---

(१)··नभःस्थलम्। (२) आलोकयन्तं। (३) किञ्चिदध्वानं।

वन-द्विरद-दन्त-कपाटेन (१) परिवृताम्, (ज) लोहतोरणेन च रक्त-(२) चामरपरिकरां कालायस-दर्पण-मण्डल-मालां शबर-मुख-मालामिव कपिल-केशभीषणां बिभ्राणेन सनाथीकृतद्वारदेशाम्, (झ) अभिमुखप्रतिष्ठितेन च विनिहितरक्तचन्दनहस्तकतया रुधिरारुण-यम-करतलास्फालितेनेव शोणित-लव-(३) लोभ-लोल-शिवा-लिह्यमान-लोहित-लोचनेन लोह-महिषेणाध्यासिताञ्जनशिला-

पन्थानं गत्वा चण्डिकामपश्यदिति बहुदूरवर्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र स्त्रियां द्वितीयैकवचनान्तपदानि चण्डिकामिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ज) केतकीति। केतक्याः पुष्पस्य सूचिपत्त्रवत् अग्रसमूहवत् पाण्डुरेण शुभ्रेण, वनद्विरददन्तस्य वन्यहस्तिनो दन्तस्य कपाटेन, परिवृतामावृताम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(झ) लोहेति। किञ्च, कपिलैः पिङ्गलवर्णैः केशैर्भीषणा तां, शबराणां व्याधानां मुखमालां वदनश्रेणीमिव, रक्ता लोहितवर्णा चामरावलिः परिकरः परिच्छदो यस्यास्तां, कालं कृष्णं अयो लोहमिति कालायसं "अनम् अश्मन् अयस् सरम् जातिसंज्ञयो"रिति राजादित्वादत्, तस्य यानि दर्पणमण्डलानि, दर्पणाकारवर्त्तुलखण्डानि तेषां मालां श्रेणीं बिभ्राणेन धारयता, लोहतोरणेन लौहनिर्म्मितबहिर्द्वारेण, सनाथीकृतः सहितो द्वारदेशो यस्यास्तामिति चण्डिकामित्यस्य विशेषणम्। अत्र शबरमुखानि कृष्णवर्णानि तत्केशाश्च पिङ्गलवर्णाः, सुतरां शबरमुखमालया सह कालायसदर्पणमण्डलमालायाः तदीयकपिलकेशकलापेन सह रक्तचामरावलेः सादृश्यमित्युपमालङ्कारः। तथा मालाशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च शबरमुखश्रेणीमिवेति पाठेन समाधेयः।

(ञ) अभीति। किञ्च, विनिहितास्तत्रत्यजनैरर्पिताः रक्तचन्दनहस्ता रक्तचन्दनाक्तहस्तचिह्नानि यस्मिन् स तथा तस्य भावस्तया तथोक्तया हेतुना, रुधिरेण अरुणं यद्यमस्य करतलं तेन आस्फालितस्ताडनमाप्त सन्ताडितस्तेनेव, रक्तचन्दनाक्तहस्तचिह्नानां ताड़नकाललग्न-रुधिराक्त-यमहस्तचिह्नवद्दृश्यमानत्वादिति भाव.। तथा शोणितलवानां रक्तबिन्दूनां लोभेन रक्तचन्दनचिह्नेषु शोणितलवभ्रमात् तत्पानलोभेनेत्यर्थः, लोलाश्चपलाः याः शिवाः शृगाल्यस्ताभिर्लिह्यमाने रसनया आस्वाद्यमाने लोहिते रक्तवर्णे लोचने चक्षुषी यस्य तेन। अभिमुखप्रतिष्ठितेन देव्याः सम्मुखस्थापितेन, लोहमहिषेण, अध्यासिता अधिष्ठिता अञ्जनशिलावेदिका कज्जलवत्कृष्णवर्णपाषाणनिर्म्मितवेदिका यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारो वृत्त्यनुप्रासश्चानयोः संसृष्टिः। तथा रक्तचन्दनचिह्नेषु शोणितलवभ्रमप्रतीतेर्भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते।

মূর্ত্তি দেখিতে পাইলেন। (জ) কেতকীপুষ্পের অগ্রভাগের ন্যায় শুভ্রবর্ণ ও বন্য হস্তীর দন্তে নির্ম্মিত কপাটদ্বারা সেই চণ্ডীর মন্দির আবদ্ধ ছিল। (ঝ) দ্বারদেশে লৌহময় তোরণ ছিল, তাহাতে ব্যাধগণের পিঙ্গলবর্ণ কেশকলাপে ভয়ঙ্কর মুখশ্রেণীর ন্যায়, রক্তবর্ণ চামরশ্রেণীতে পরিবেষ্টিত ও দর্পণের ন্যায় বর্ত্তুলাকার কতকগুলি কৃষ্ণবর্ণ লৌহখণ্ড সংযোজিত ছিল। (ঞ) দেবীর সম্মুখে কজ্জলতুল্য-কৃষ্ণবর্ণ-প্রস্তর-নির্ম্মিত একটা বেদি ছিল, তাহার উপরে লৌহনির্ম্মিত একটা মহিষ ছিল; তাহার গাত্রে হস্তাকৃতি রক্তচন্দনের চিহ্ন সকল দেওয়া ছিল;

(১) কবাটেন। (২) নবারক্ত...। (৩)...লব...।

वेदिकाम्, (ञ) क्वचिद्रक्तोत्पलैः शवरनिपातितानां वनमहिषाणामिव लोचनैः क्वचिदगस्तिकुसुमकुड्मलैः (१) केसरिणामिव करजैः क्वचित् किंशुककुसुमकुड्मलैः शार्दूलानामिव सरुधिरैर्नखरैः कृतपुण्यपुष्पप्रकराम्, (२) (ट) अन्यत्राङ्कुरितामिव कुटिल-हरिण-विषाण-कोटि-कूटैः पल्लवितामिव सरस-जिह्वाच्छेदशतैः कुसुमितामिव रक्तनयनसहस्रैः फलितामिव मुण्डमण्डलैरुपहारहिंसां

(ञ) क्वचिदिति। क्वचित् शवरनिपातितानां व्याधव्यापादितानां वनमहिषाणां लोचनैरिव रक्तोत्पलैः, रक्तोत्पलानां महिषलोचनसमानाकृतेरिति भावः, क्वचित् केसरिणां सिंहानां करजैर्नखैरिव अगस्तिकुसुमकुड्मलैः, बकपुष्पमुकुलैः बकपुष्पमुकुलानां सिंहनखतुल्याकृतिमत्त्वादिति भावः, क्वचिच्च शार्दूलानां व्याघ्राणां सरुधिरैर्नखरैरिव किंशुककुसुमकुड्मलैः पलाशपुष्पमुकुलैः, किंशुककुसुमकुड्मलानामपि व्याघ्रनखतुल्याकृतेरिति भावः, तत्कुड्मलानां रक्तत्वात् साम्यप्रतिपादनाय सरुधिरैरिति विशेषणम्, कृतः पुण्यः पवित्रः पुष्पप्रकरः कुसुमोपहारो यस्यास्ताम्। अत्र तिसृणामेव श्रौतोपमानां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा कुसुमकुड्मलैरित्यस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स चैकत्र पुष्पमुकुलैरिति पाठेन समाधेयः। हिंसाप्रधानायतनत्वात् हिंसासूचकोपमानोपादानमिति बोध्यम्।

(ट) अन्यत्रेति। अन्यत्र अन्यस्मिन्नंशे, कुटिलानि वक्राणि यानि हरिणानां विषाणानि शृङ्गाणि तेषां कोटयः अग्रदेशास्तेषां कूटैः राशिभिः हरिणहत्यापूर्वकस्थापितैरित्यर्थः, अङ्कुरितां सञ्जाताङ्कुरामिव, तद्विषाणकोटिकूटानामङ्कुरवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। सरसा आर्द्रा रक्ताक्ता ये जिह्वाच्छेदा रसनाखण्डानि तेषां शतैः समूहैः पल्लवितां सञ्जातपल्लवामिव, जिह्वाखण्डानां पल्लवतुल्यत्वादित्याशयः। रक्तनयनसहस्रैः रक्तवर्णलोचनसमूहैः कुसुमितां सञ्जातपुष्पामिव, रक्तलोचनानामपि कुसुमसमानत्वादित्यभिप्रायः। मुण्डमण्डलैर्मस्तकनिकरैः फलितां सञ्जातफलामिव, तेषां फलतुल्याकृतेरिति भावः। उपहाराणां उपायनीभूतानां प्राणिनां हिंसां दर्शयन्तीं प्रकटयन्तीम्; हिंसापूर्वकं विषाणकोटिकूटादीनां विकीर्णत्वादिति भावः। अत्राङ्कुरादीनां जननोत्प्रेक्षणात् चतस्र एव क्रियोत्प्रेक्षास्तासाञ्चाङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा सर्वा एवाभेदे तृतीयास्तथा च विषाणकोटिकूटादिरूपाङ्कुरादिप्रतीतेरुपहारहिंसाया लतारूपत्वप्रतीतेश्च साङ्गरूपकालङ्कारो व्यज्यते।

তাহাতে বোধ হইতেছিল যে,—যম যেন তাহাকে চালাইবার জন্য রক্তাক্ত হস্তে তাড়ন করিয়াছিলেন; আর রক্তবিন্দুর লোভে চঞ্চল শৃগালগণ, তাহার নয়নযুগল লেহন করিতেছিল। (ঞ) কোন স্থানে ব্যাধ-নিহত বন্য-মহিষের ন্যায় রক্তোৎপল, কোন স্থানে সিংহনখের ন্যায় বকপুষ্পের কলিকা এবং কোন স্থানে রক্তাক্ত ব্যাঘ্র-নখের ন্যায় পলাশপুষ্পের কলিকা বিক্ষেপ করিয়া পবিত্র পুষ্পবিক্ষেপের কার্য্য সম্পাদন করিয়াছিল। (ট) অন্য কোন স্থানে দেবী, উপহারভাবে প্রদত্ত পশুদিগের হিংসা দেখাইতেছিলেন; হরিণগণের বক্র শৃঙ্গাগ্ররাশিতে সেই হিংসার যেন অঙ্কুর জন্মিয়াছিল, রক্তাক্ত জিহ্বাখণ্ডসমূহে তাহার যেন পল্লব হইয়াছিল, রক্তবর্ণ নয়নপুঞ্জে যেন পুষ্প উৎপন্ন

(१) अगस्तिकुड्मलैः। (२)...प्रकरोपहारां।

दर्शयन्तीम्, (ठ) शाखान्तराल-निरन्तर-निलीन-(१) रक्त-कुक्कुट-कुलैः श्वभयात् (२) अकाल-दर्शित कुसुम स्तबकैरिव रक्ताशोकविटपैर्विभूषिताङ्गनाम्, (ड) बलि-रुधिर-पान-तृष्णया समागतैश्च वेतालैरिव तालैर्दीयमान-फलमुण्डोपहाराम्, (ढ) शङ्काज्वर-कम्पितैरिव कदलिकावनैर्भयोत्कण्ठितैरिव श्रीफलतरुषण्डैस्त्रासोर्द्ध्वकेशैरिव खर्जूरवनैः समन्ताद् गहनीकृताम्, (ण) विदलित-वन-करि-कुम्भ-विगलित-मुक्ताफलानि रुधिरारुणानि बलि-सिक्थ-(३)

(ड) शाखेति। श्वभयात् कुक्कुरभयात् शाखान्तरालेषु निरन्तरं निलीनानि घनं निभृतभावेनावस्थितानि रक्तकुक्कुटकुलानि येषु तैः, अतएव अकाले दर्शिताः कुसुमस्तबका यैस्तैरिव स्थितैः, रक्तकुक्कुटकुलानामेव कुसुमस्तबकतुल्यत्वादिति भावः, रक्ताशोकानां विटपैः शालशाखाभिः विभूषितं अङ्गनं चत्वरं यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) बलीति। किञ्च, बलीनामुपहारीभूतप्राणिनां रुधिरपानतृष्णया समागतैर्वेतालैर्भूतविशेषैरिव तालैस्तालवृक्षैः, दीयमानाः फलान्येव मुण्डानि तेषामुपहारा यस्यै ताम्, तालफलानां मुण्डसमानाकृतेरिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षानिरङ्गकेवलरूपकयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) शङ्केति। शङ्काज्वरेण पशुवधदर्शनात् स्वस्वातङ्कतापेन कम्पितैरिव, वायुना कम्पनादिति भावः, कदलिकावनैः रम्भाकाननैः। भयोत्कण्ठितैरिव भयोत्कण्ठाजनितरोमाञ्चतुल्यकण्टकराशिदर्शनादित्याशयः, श्रीफलतरुषण्डैर्बिल्ववृक्षसमूहैः। तथा त्रासोर्द्ध्वकेशैरिव, ऊर्द्ध्वपत्रनिकराणां भयेनोर्द्ध्वीभूतकेशवद्दृश्यमानत्वादित्यभिप्रायः, खर्जूरवनैः, समन्ताद्गहनीकृतां सर्वतो निविडीकृताम्। अत्र प्रथमा द्वितीया च क्रियोत्प्रेक्षा तृतीया तु गुणोत्प्रेक्षा, आसाञ्च मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(त) विदलितेति। बलिसिक्थेषु पूजोपहारीभूतान्नेषु रक्तान्नेष्वित्यर्थः लुब्धा लोभवन्तः, मुग्धा मुक्ताफलेषु बलिसिक्थभ्रमान्मूढा ये कृकवाकवः कुक्कुटास्तैरादौ ग्रस्तानि बलिसिक्थभ्रमादेव कवलितानि अन-

---

হইয়াছিল এবং মুণ্ড সমূহে যেন ফল জন্মিয়াছিল। (ড) কতকগুলি রক্তবর্ণ অশোকবৃক্ষ দেবীর প্রাঙ্গণভূমি অলঙ্কৃত করিয়া রহিয়াছিল; কুকুরের ভয়ে বহুতর রক্তবর্ণ বনকুকুড়া সেই অশোকবৃক্ষের ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র শাখার ভিতরে ঘনভাবে লুকাইয়াছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যে—সেই অশোকবৃক্ষের বৃহৎ বৃহৎ শাখাগুলি যেন অকালে পুষ্পস্তবক সকল প্রকাশ করিয়াছে। (ঢ) বলির রক্ত পান করিবার ইচ্ছায় সমাগত বেতালগণের ন্যায় তালবৃক্ষসমূহ, ফলস্বরূপ মুণ্ড সকল উপহার দিতেছিল। (ণ) কদলীবন যেন আতঙ্কে কম্পিত হইতেছিল, বিল্ববৃক্ষগুলি যেন ভয়ে উৎকণ্ঠিত হইয়াছিল, আর ভয়বশতঃ খর্জ্জুরবনের কেশগুলি যেন উঁচু হইয়াছিল—এই অবস্থায় সেই বনসমূহ, দেবীর প্রাঙ্গণভূমিকে ব্যাপ্ত করিয়া রহিয়াছিল। (ত) সিংহবিদারিত বন্য হস্তীর কুম্ভ হইতে রক্তাক্ত মুক্তাসমূহ নির্গত হইয়া পড়িয়া রহিয়াছিল, সেগুলিকে পূজার অন্ন মনে করিয়া লোভী বনকুকুড়াগুলি, প্রথমে গ্রাস করিয়া পরে ছাড়িয়া

---

(१) शाखान्तरालनिलीन…। (२)…कुक्कुटकुलस्य भयात्…।

(३) वनकरिकुम्भविदलितमुक्ताफलानि, विदलितवनकरिकुम्भविगलितरक्तमुक्ताफलानि नवरुधिरारुणबलि…।

लुब्ध-मुग्ध-चक्रवाक-ग्रस्तमुक्तानि विकिरद्भिरम्बिकापरिग्रहदुर्ललितैः क्रीडद्भिः केशरि-किशोरकैरशून्योद्देशाम्, (त) प्रभूत-रुधिर-दर्शनोद्भूत-मूर्च्छा-पतितेनेव प्रतिबिम्बितेनास्तताम्रेण सविता ताम्रतरीकृतैः (१) क्षतज-जल-प्रवाहैः (२) पिच्छिलीकृताजिराम्, (थ) अवलम्बमान-दीप-धूप-(३) रक्तांशुकेन ग्रथित-शिखि-गल-वलयावलिना पिष्ट-पिण्ड-पाण्डुरित-(४)-घन-घण्टा-मालभारिणा (५) त्रापुष-सिंह-मुख-मध्य-स्थित-स्थूल-लोह-कण्टकं दत्त-(६) दन्त-दण्डार्गलं लसत्-

---

स्वरं मुक्तानि काठिन्यप्रतीतेः परित्यक्तानि, रुधिरारुणानि रक्ताक्ततया अरुणवर्णानि, विदलितेभ्यो विदारितेभ्यः करिकुम्भेभ्यः विगलितानि यानि मुक्ताफलानि मौक्तिकानि तानि, विकिरद्भिः शोणिताक्ततया लोभादुद्गृहीत्वा मांसाभावात् पुनर्विक्षिपद्भिरित्यर्थः, अम्बिकायाश्चण्डिकायाः परिग्रहेण वाहनसजातीयतया ग्रहणेन दुर्ललितैः हिंसनाभावाद्दुर्दान्तीभूतैः, क्रीडद्भिः खेलद्भिः, केशरिकिशोरकैः सिंहशावकैः अशून्यः अविरहित उद्देशः स्थानं यस्यास्ताम्। अत्र चक्रवाकूनां मुक्ताफलेषु बलिसिक्थभ्रमाद्भ्रान्तिमानलङ्कारः केशरिकिशोरकैरिति छेकानुप्रासेन संसृज्यते।

(थ) प्रभूतेति। प्रभूतरुधिरदर्शनेन उद्भूता उत्पन्ना या मूर्च्छा तया पतितेनेव, प्रतिबिम्बितेन क्षतजजलप्रवाहेष्वेव संक्रान्तमूर्त्तिना, अस्ते अस्तसमये ताम्रस्ताम्रवर्णस्तेन, सविता सूर्य्येण, ताम्रतरीकृतैः विशेषेण ताम्रवर्णीकृतैः, क्षतजानि रुधिराण्येव जलानि क्षतजानि जलानीवेति वा तेषां प्रवाहैः, पिच्छिलीकृतं क्लिन्नीकृतं अजिरं चत्वरं यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा क्षतजजलेति रूपकोपमयोः सन्देहसङ्करः, तयोश्च परस्परनैरपेक्ष्यात् संसृष्टिः। तथाच रुधिरस्य जलत्वेन रूपणे जलेनौपम्ये वा न कश्चिद्विशेष इत्यपुष्टार्थतादोषः, स च जलपदपरित्यागेनैव समाधेयः।

(द) अवेति। अवलम्बमानानि अवतिष्ठमानानि दीपधूपरक्तांशुकानि यस्मिन् तेन, ग्रथिता गुम्फिता शिखिगलवलयानां मयूरकण्ठमण्डलानां आवलिर्माला यत्र तेन, पिष्टपिण्डेन तण्डुलचूर्णपिण्डेन पाण्डुरिताः शुभ्रवर्णीकृताः घना निरन्तराः या घण्टास्तासां मालां बिभर्त्तीति तेन, "याकारौ स्त्रीकृतौ ह्रस्वौ" इति ह्रस्वः।

দিয়াছিল, এদিকে দেবীর পক্ষভুক্ত বলিয়া হিংসা না করায় দুর্দ্দান্ত সিংহশাবকগণ সেই মুক্তাগুলিকে নিক্ষেপ করিয়া খেলা করতঃ দেবীর প্রাঙ্গণে বিচরণ করিতেছিল। (থ) জলের ন্যায় রক্তের প্রবাহ দেবীর প্রাঙ্গণকে পিছল করিয়াছিল; অস্তকালীন তাম্রবর্ণ সূর্য্য সেই রক্তের প্রবাহে প্রতিবিম্বিত হইয়া তাহাকে আরও তাম্রবর্ণ করিয়াছিলেন, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, প্রচুর রক্ত দর্শনে মূর্চ্ছা উপস্থিত হওয়ায়ই যেন সূর্য্য পড়িয়া গিয়াছিলেন। (দ) অভ্যন্তরস্থ গৃহের দ্বারদেশ দ্বারা দেবী শোভা পাইতেছিলেন, সেই দ্বারদেশে দুই পাট কপাট ছিল; তাহাতে ধূপ, দীপ ও রক্তবস্ত্র ঝুলান ছিল, ময়ূরের কণ্ঠমালা গাঁথা ছিল, তণ্ডুলচূর্ণে শুভ্রবর্ণ ঘন ঘন ঘণ্টার মালা দুলিতেছিল, সীসার একটা সিংহ

---

(१) अन्तरीकृतैः। (२) क्षतजलप्रवाहैः। (३)···दीपधूम...। (४) पिष्टपाण्डुरित...।
(५)...मालाभारिणा। (६)...कण्टकदत्त...।

पीत-(१) नील-लोहित-दर्पण-स्फुरित-बुद्बुदमालं कपाट पट्टद्वयं (२) दधानेन गर्भगृहद्वारदेशेन दीप्यमानाम्, (द) अन्तःपिण्डिकापीठपातिभिश्च सर्वपशु-जीवितैरिव शरणमुपागतैरलक्तक-रस-रक्त-पटैरविरहित-चरण-मूलाम्, (ध) पतित-कृष्णचामरप्रतिविम्बानाञ्च शिरश्छेदलग्न-केशजालकानामिव परशुपट्टिशप्रभृतीनां जीवविशसनशस्त्राणां प्रभाभिर्बहुलान्धकारतया पातालगृहवासिनीं (३)

त्रपुषः सीसकस्यायमिति त्रापुष सीसकनिर्मितो यः सिंहस्तस्य मुखमध्ये स्थितं स्थूलं लोहकण्टकं यस्मिन् तत्, दत्तं दन्तदण्डो हस्तिदन्तदण्ड एव अर्गलं यस्मिन् तत्, तथा लसतसु सम्मुखे दीप्यमानेषु पीतेषु नीलेषु लोहितेषु च दर्पणेषु स्फुरिता प्रतिविम्बिता बुद्बुदमाला बुद्बुदतुल्यवर्त्तुललौहशङ्कुश्रेणी यस्मिन् तत् तादृशं कपाटपट्टद्वयं कपाटफलकयुगलं दधानेन, गर्भगृहस्य अन्तर्गृहस्य द्वारदेशेन, दीप्यमानां शोभमानाम्।

(ध) अन्तरिति। किञ्च, अन्तर्मध्ये या पिण्डिका वेदिः तत्र यत्पीठं तत्र पतन्तीति तैः, शरण-मुपागतैः सर्वेषां पशूनां जीवितैरिव, तेषामपि रक्तसम्बन्धेन रक्तत्वसम्भवादिति भावः, अलक्तकरसेन रक्ता ये पटास्तैः, अविरहितं चरणयोर्मूलं समीपं यस्यास्ताम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(न) पतितेति। किञ्च, पतितानि कृष्णचामराणां प्रतिविम्बानि येषु तेषां, अतएव शिरश्छेदे सति लग्नं केशजालं येषु तेषामिव दृश्यमानानां, कृष्णचामरप्रतिविम्बानामेव केशजालवद्दृश्यमानत्वादिति भावः, परशुः प्रसिद्धः, पट्टिशस्तु "पट्टिशो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः क्षुरोपमः।" इति वैजयन्त्युक्तः, तत्प्रभृतीनां जीवविशसनशस्त्राणां प्राणिहिंसाशस्त्राणां, प्रभाभिर्बहुल उत्पादितः, बहुलः प्रचुरः अन्धकारो यत्र गृहे तस्य भावस्तया हेतुना, पातालगृहवासिनीमिवोपलक्ष्यमाणाम्। अत्र केशजाललग्नक्रियोत्प्रेक्षणात् प्रथमा पातालगृहवासोत्प्रेक्षणाद्द्वितीया च क्रियोत्प्रेक्षैव, तयोश्च परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

ছিল, তাহার মুখের ভিতর মোটা একটা লোহার পেরেক ছিল, হস্তিদন্তের অর্গল দেওয়া ছিল, এবং সেই কপাটে বুদ্বুদের ন্যায় বর্ত্তুলাকার কতকগুলি পেরেক মারা ছিল, সম্মুখবর্ত্তী পীতবর্ণ, নীলবর্ণ ও রক্তবর্ণ দর্পণে সেই পেরেকগুলির প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল। (ধ) ঘরের ভিতরে দেবীর চরণের নিকটে একটা বেদি, তাহার উপরে একখানা পীড়ি, তাহার উপরে আবার আলতার রসে রঞ্জিত একখানা কাপড় পাতা ছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, সমস্ত পশু-দিগের জীবন আসিয়া যেন শরণাগত হইয়া রহিয়াছে। (ন) ঘরের ভিতরে পরশু ও পট্টিশ প্রভৃতি কতকগুলি জীবিহত্যা করিবার অস্ত্র ছিল, তাহার উপরে কৃষ্ণবর্ণ চামরের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, শিরশ্ছেদ হইয়া গেলে তাহার কেশকলাপই যেন সেই অস্ত্রগুলিতে লাগিয়া রহিয়াছে; এই জাতীয় অস্ত্রের প্রভায় ঘরের ভিতরে প্রচুর অন্ধকার হইয়াছিল বলিয়া দেবীকে পাতালগৃহবাসিনীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (প) দেবীর গলদেশে

(१) गलत्पीत...। (२) कपाटपटद्वयं। (३) पातालनिवासिनीं।

দ্বীপলক্ষ্যমাণাম্ (ন) রক্তচন্দন-খচিত-স্ফুরৎ-ফল-পল্লব-কলিতৈশ্চ বিল্ব-পত্রদামভিঃ (১) বালকমুণ্ডপ্রালম্বৈরিব কৃতমণ্ডনাম্ (প) শোণিত-তাম্র-(২) কদম্ব-স্তবক-কৃতার্চ্চনৈশ্চ পশূপহার-পটহ-পটু-রটিত-রভসোল্লাসিত-রোমাঞ্চৈরি-বাঙ্গৈঃ (৩) ক্রূরতামুদ্বহন্তীম্, (ফ) চারু-চামীকর-পট্ট-(৪) প্রাবৃতেন চ ললাটেন শবর-সুন্দরী-রচিত-সিন্দূর-তিলক-বিন্দুনা দাড়িম-(৫) কুসুম-কর্ণপূর-প্রভা-সিক্ত-লোহিতায়মান কপোলভিত্তিনা রুধির-তাম্বূলারুণিতাধরপুটেন ভ্রুকুটি-কুটিল-

(প) রক্তেতি। কিঞ্চ, রক্তচন্দনেন খচিতা রঞ্জিতা অতএব স্ফুরন্তো দীপ্যমানা যে বিল্বস্যৈব ফল-পল্লবাস্তৈঃ কলিতাঃ সংযোজিতাস্তৈঃ, অতএব বালকমুণ্ডানাং প্রালম্বৈঃ সরললম্বিনীভির্মালাভিরিব স্থিতৈঃ, বিল্বপত্রাণাং দামভির্মালাভিঃ কৃতমণ্ডনাং বিহিতভূষণাম্। অত্র জাত্যুৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ। বালকমুণ্ডগত-রক্তসাম্যপ্রতিপাদনার্থং রক্তচন্দনখচিতপদম্। বালকপদন্তু তন্মুণ্ডানামাপেক্ষিকক্ষুদ্রতয়া বিল্বফলসাম্যদ্যোতনায়।

(ফ) শোণিতেতি। কিঞ্চ, শোণিতেন রক্তসংস্রবেণ তাম্রা যে কদম্বস্তবকাঃ কদম্বপুষ্পগুচ্ছাস্তৈঃ কৃতং অর্চ্চনং যেষাং তৈঃ সংলগ্নকদম্বকুসুমরেণুভিরিত্যর্থঃ, অতএব পশূপহারে পশুবলিদানসময়ে পটহস্য ঢক্কায়া যৎ পটুরটিতং উচ্চশব্দস্তস্য রভসেন শ্রবণোৎসাহেন উল্লসন্তি উদ্গচ্ছন্তীতি তে তথোক্তা। রোমাঞ্চা যেষু তৈরিব, অঙ্গৈঃ, ক্রূরতাং রৌদ্রতাং উদ্বহন্তীং ধারয়ন্তীম্। অত্র রোমাঞ্চোদ্গমোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা রূপ্যরূপ-প্রাসস্থানয়োরৈক্যাধ্যাসপ্রবেশরূপঃ সঙ্করঃ।

(ব) চার্বিতি। কিঞ্চ, চারুঃ সুন্দরো যশ্চামীকরপট্টঃ স্বর্ণফলকং তেন প্রাবৃতমাচ্ছাদিতং তেন, তথা শবরসুন্দরীভিঃ রচিতঃ কৃতঃ সিন্দূরতিলকবিন্দুর্যস্য তেন তাদৃশেন ললাটেন। দাড়িমকুসুমে এব কর্ণপূরৌ তয়োঃ প্রভায়াঃ সেকেন সংসর্গেণ লোহিতায়মানে কপোলভিত্তী গণ্ডযুগলং যস্য তেন, রুধিরতাম্বূলাভ্যাং অরুণিতং রক্ত-বর্ণীকৃতং অধরপুটং যস্য তেন, তথা ভ্রুকুট্যা ভ্রূভঙ্গেন কুটিলে বক্রে বভ্রুণী পিঙ্গলবর্ণে নয়নে চক্ষুষী যস্য তেন

কতকগুলি বিল্বপত্রের মালা দিয়া অলঙ্কার করা হইয়াছিল, তাহাতে রক্তচন্দন-রঞ্জিত সুন্দর বহুতর বিল্বফল ও বিল্বপল্লব সংযোজিত ছিল ; সুতরাং সেই মালাগুলিকে বালকের মুণ্ডমালার ন্যায় বোধ হইতেছিল। (ফ) রক্তে রক্তবর্ণ কদম্বপুষ্পের রেণুদ্বারা দেবীর অঙ্গে পূজা করিয়াছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যে,—পশু বলিদান করিবার সময়ে ঢকার উচ্চ শব্দ শ্রবণে উৎসাহবশতঃ দেবীর সমস্ত অঙ্গে যেন রোমাঞ্চ উদ্গত হইয়াছে ; সুতরাং সেই অঙ্গসমূহ দ্বারা দেবী ভয়ঙ্করতা ধারণ করিতেছিলেন। (ব) দেবীর ললাটদেশ, সুন্দর একখানি স্বর্ণফলকে আবৃত ছিল এবং শবররমণীগণ তাহাতে ক্ষুদ্র একটি সিন্দূরের তিলক দিয়াছিল ; কর্ণযুগলে দাড়িম্বপুষ্পের দুইটি কর্ণপূর ছিল, তাহার প্রভায় কপোলযুগল রক্তবর্ণ হইয়াছিল ; রক্তসংস্রবে ও তাম্বূলের রসে ওষ্ঠযুগলকে অরুণবর্ণ করিয়াছিল, স্বভাবতই পিঙ্গলবর্ণ নয়নযুগল

(১) বিল্বদামভিঃ। (২) শোণিতাতাম্র...। (৩)...চাঙ্গৈঃ। (৪)...পট...।
(৫) দাড়িমী...।

রক্ত-নয়নেন (১) মুখেন কুসুম্ভ-পাটলিত-দুকূল-কলিতয়া চ দেহলতয়া মহা-কালাভিসারিকাবেশ-বিভ্রমং বিভ্রতীম্, (ব) সম্পিণ্ডিত-নীল-গুগ্গুলু-(২) ধূপ-ধূমারুণী-কৃতাভিশ্চ প্রচলন্তীভির্গর্ভগৃহদীপিকালতাভিরঙ্গুলীভিরিব মহিষা-সুর-শোণিত-লবালোহিনীভিঃ স্কন্ধপীঠ-কণ্ডূয়ন-চলিত-ত্রিশূলদণ্ড-কৃতাপরাধং বনমহিষমিব তর্জয়ন্তীম্, (ভ) প্রলম্ব-(৩) কূর্চধরৈশ্ছাগৈরপি ধৃতব্রতৈরিব, স্ফুরদধরপুটৈরাখুভিরপি জপপরৈরিব, কৃষ্ণাজিনপ্রাবৃতাঙ্গৈঃ কুরঙ্গৈরপি প্রতি-

তাদৃশেন মুখেন। তথা কুসুম্ভেন রঞ্জনদ্রব্যবিশেষেণ পাটলিতং শ্বেতরক্তীকৃতং যৎ দুকূলং বস্ত্রং তেন কলিতয়া আবৃতয়া দেহলতয়া চ করণেন, মহাকালস্য অভিসারিকাবেশবিভ্রমং বিভ্রতীং ধারয়ন্তীমিব স্থিতাম। অত্র প্রতীয়মানা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ভ) সম্পিণ্ডিতেতি। কিঞ্চ, সম্পিণ্ডিতঃ পুঞ্জীভূতো যো নীলগুগ্গুলুধূপয়োর্ধূমস্তেন অরুণীকৃতাভিঃ, প্রচলন্তীভির্বায়ুভরাৎ কম্পমানাভিঃ, গর্ভগৃহস্য অন্তর্গৃহস্য দীপিকালতাভিঃ বায়ুবশাৎ প্রচলনেনৈব লতাবল্লম্ব-মানৈর্ভূরৈর্দীপৈঃ, মহিষাসুরস্য শোণিতলবৈ রক্তবিন্দুভিঃ আলোহিন্য আরক্তাস্তাভিরঙ্গুলীভিরিব স্থিতাভিঃ সতীভিঃ, স্কন্ধপীঠস্য স্কন্ধদেশস্য কণ্ডূয়নেন চলিতো যস্ত্রিশূলদণ্ডস্তেন কৃতঃ অপরাধো যেন তং বনমহিষং তর্জয়ন্তীমিব স্থিতাম্। চূর্ণহরিদ্রাভ্যাং রঞ্জনেনারুণবর্ণবৎ নীলেনাপি গুগ্গুলুধূপয়োর্ধূমেনারুণবর্ণো জায়তে সংযুক্তদ্রব্যস্বভাববৈচিত্র্যাদিতি বোধ্যম্। অতএবাত্র কারণবিরুদ্ধকার্য্যোৎপত্তির্বিষমালঙ্কারঃ, তথা প্রথমা জাত্যুৎপ্রেক্ষা দ্বিতীয়া চ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা, ইত্যেষামঙ্গাঙ্গিভাবেন সঙ্করঃ। দেবীমন্দিরস্যারণ্যান্তর্গততয়া বনমহিষ-প্রবেশসম্ভব ইতি জ্ঞেয়ম্।

(ম) প্রলম্বেতি। অন্যেষু কা কথা, প্রলম্বকূর্চধরৈর্দীর্ঘশ্মশ্রুধরৈশ্ছাগৈরপি ধৃতব্রতৈর্গৃহীততপোনিয়মৈঃ সদ্ভিরারাধ্যমানামিব, প্রলম্বকূর্চধরত্বাদিতি ভাবঃ। স্ফুরন্তি স্পন্দমানানি অধরপুটানি যেষাং তৈঃ, আখুভির-ন্দুরুভিরপি জপপরৈর্মন্ত্রজপপ্রবৃত্তৈঃ সদ্ভিরারাধ্যমানামিব, জপপ্রবৃত্তবৎ স্ফুরদধরপুটত্বাদিত্যাশয়ঃ। অধরপুট-

ভ্রূকুটি করায় বক্র হইয়াছিল; আর কুসুমফুলের রসে রঞ্জিত বস্ত্রদ্বারা দেহলতা আবৃত ছিল — এই সকল কারণে দেবী যেন মহাকালের প্রতি অভিসারিকার বেশবিলাস ধারণ করিতেছিলেন। (ভ) ঘরের ভিতরে কতকগুলি প্রদীপ ছিল, গুগ্গুলু ও ধূপের নীলবর্ণ ধূমপুঞ্জে সেই প্রদীপগুলিকে অরুণবর্ণ করিয়াছিল এবং সেই প্রদীপগুলি বায়ুভরে চলিতে থাকিয়া লতার ন্যায় লম্বমান হইতেছিল, তাহাতে সেই প্রদীপগুলিকে মহিষাসুরের রক্তবিন্দুতে লোহিতবর্ণ অঙ্গুলীর ন্যায় দেখা যাইতেছিল; এদিকে একটা বন্য মহিষ স্কন্ধ কণ্ডূয়ন করায় ত্রিশূলটা কাঁপিতেছিল বলিয়া সে, অপরাধ করিয়াছিল; তাই দেবী যেন অঙ্গুলীর ন্যায় সেই প্রদীপগুলি দ্বারা মহিষটাকে তর্জ্জন করিতেছিলেন। (ম) দীর্ঘশ্মশ্রুধারী ছাগগণও যেন ব্রতাবলম্বন করিয়া দেবীর আরাধনা করিতেছিল; ওষ্ঠযুগল অবিশ্রান্ত স্পন্দিত হওয়ায় মূষিকগণও যেন জপে প্রবৃত্ত হইয়া

(১) ভ্রুকুটিকুটিলভ্রুণা রক্তনয়নেন, ভ্রূকুটিকুটিলরভ্রুণা রক্তনয়নেন, ভ্রুকুটি...।
(২)...গুগ্গুল...। (৩) প্রবল...।

शयितैरिव (१) ज्वलित-लोहित-मूर्द्ध-रत्न-रश्मिभिः कृष्णसर्पैरपि शिरोधृत-मणिदीपकैरिवाराध्यमानाम्, (म) सर्वतः कठोरवायसगणेन च रटता (२) स्तुतिपरेणेव स्तूयमानाम्, (य) स्थूलस्थूलैः शिराजालकैर्गोधा-गोधिका-(३) कृकलासकुलैरिव दग्धस्थाणुशङ्कया समारूढैर्गवाक्षितेन (र) अलक्ष्मी-समुत्खात-लक्षण स्थानैरिव विस्फोटव्रणविन्दुभिः कल्माषित-

स्फुरणं मूषिकाणां स्वभावः। कृष्णाजिनं कृष्णवर्णं स्वकीयं चर्म्म कृष्णसारचर्म्म च तेन प्रावृतमङ्गं येषां तैः कुरङ्गैर्हरिणैरपि प्रतिशयितैः कृतप्रतिशयनैः सद्भिराराध्यमानामिव, तद्वत् कृष्णाजिनप्रावृताङ्गत्वादित्यभिप्रायः। विपत्प्रतीकाराय अभीष्टलाभाय वा दिनमासादिनियतं भोजनादिपरित्यागपूर्वकं देवतायै शयनं प्रतिशयनम्। तथा ज्वलिता दीप्ताः, लोहिता रक्तवर्णाः, मूर्द्धरत्नस्य शिरोमणे रश्मयः किरणा येषां तैः, कृष्णसर्पैर्विजातीयविषधरैरपि शिरःसु धृता मणय एव दीपा मणिवद्दीपाश्च यैस्तैः सद्भिराराध्यमानामिव, शिरःसु दीपधारणादिति भावः। अन्योऽपि शिरसि दीपधारणपूर्वकं देवतामाराध्नोतीति। अत्र प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा आराध्यमानामित्येकया क्रियया बह्वनां कर्त्तृतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगिता चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तेन च महोपासकत्वावगमरूपं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(य) सर्वत इति। किञ्च, सर्वतः समन्तात् रटता रुवता, कठोरः कर्कशस्वरो यो वायसगणः काकसमूहस्तेन, स्तुतिपरेण स्तवप्रवृत्तेन सता स्तूयमानामिव, स्तुतिप्रवृत्तत्वन् सर्वतोरवणात्। स्तुतिप्रवृत्तश्च प्रादक्षिण्येन भ्रमन्नुच्चैः स्तवरवं करोति। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(र) स्थूलेति। दग्धा यः स्थाणुः शाखापत्रविहीनो वृक्षस्तस्य आशङ्कया भ्रमेण समारूढैर्गात्रारूढैः, गोधागोधिकाकृकलासकुलैरिव, स्थूलस्थूलैरपरापरापेक्षया अतीवस्थूलैः शिराजालकैर्धमनीसमूहैः, गवाक्षमस्य सञ्जातमिति गवाक्षितस्तेन जालकमयीभूतेन जरद्द्रविड़धार्म्मिकेणाधिष्ठितामिति बहुदूरवर्त्तिन्या क्रिययान्वयः। अत्र भ्रान्तिमान् जात्युत्प्रेक्षा चालङ्कारस्तयोश्चाङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। इतः पुंसि तृतीयैकवचनान्तपदानि जरद्द्रविड़धार्म्मिकेणेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि।

(ल) अलक्ष्मीति। अलक्ष्म्या देव्या समुत्खातानि समूलमुत्पाटितानि यानि लक्षणानि शुभचिह्नानि तेषां स्थानैरिव विस्फोटव्रणविन्दुभिः कल्माषितं विचित्रीकृतं सकलं शरीरं यस्य तेन। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

দেবীর উপাসনা করিতেছিল ; কৃষ্ণাজিনে সমস্ত অঙ্গ আবৃত করিয়া হরিণগণও যেন প্রতিশয়ন করিয়া (হত্যা দিতে আরম্ভ করিয়া) দেবীর আরাধনা করিতেছিল এবং মস্তকমণির রক্তবর্ণ কিরণজাল জ্বলিতে থাকায় কৃষ্ণসর্পগণও যেন মস্তকে মণিপ্রদীপ ধারণ করিয়া দেবীর উপাসনা করিতেছিল। (য) সকল দিকে রব করতঃ কর্কশস্বর কাকগণও যেন স্তবে প্রবৃত্ত হইয়া আরাধনা করিতেছিল। (র) দ্রবিড়দেশীয় বৃদ্ধ একটা উপাসক দেবীর আয়তনে অধিষ্ঠান করিতেছিল ; দগ্ধ স্থাণু মনে করিয়া গাত্রে আরূঢ় গুইল, গোসাপ ও কাঁকলাস সমূহের ন্যায় অত্যন্ত স্থূল শিরাসমূহ থাকায় তাহার গাত্রে গবাক্ষজাল জন্মিয়াছিল। (ল) অলক্ষ্মীদেবী শুভলক্ষণসমূহ উন্মূলন করিয়া ফেলিয়াছিলেন, তাহার স্থানের ন্যায় বিস্ফোটব্রণবিন্দুতে তাহার

(१) प्रतिशयनैरिव। (२) रुवता। (३) गोधार…, गोधागोधिका…।

সকল-শরীরেণ, (ল) কর্ণাবতংসসংস্থাপিতয়া চ চূড়য়া রুদ্রাক্ষমালিকামিব (১) দধানেন, (ব) অম্বিকা-পাদ-পতন-শ্যাম-ললাট বর্দ্ধমানার্ব্বুদেন, (২) (শ) কুবাদি-(৩) দত্ত-সিদ্ধাঞ্জনদানস্ফুটিতৈক-(৪) লোচনতয়া ত্রিকালমিতরলোচনাঞ্জনদানাদর-শ্লক্ষ্ণীকৃত-দারুশলাকেন, (ষ) প্রত্যহং কটুকালাবু-স্বেদ-প্রারব্ধ-দন্তুরতা-প্রতীকারেণ, (স) কথঞ্চিদস্থান-দত্তেষ্টকা-প্রহারতয়া শুষ্কৈক ভুজোপ-

(ব) কর্ণেতি। কিঞ্চ, কর্ণাবতংসে কর্ণভূষণস্থানে সংস্থাপিতয়া চূড়য়া হেতুনা, রুদ্রাক্ষমালিকাং দধানেনেব, শিখিপুচ্ছনির্ম্মিতায়াস্তস্যাশ্চূড়ায়াঃ কণ্ঠপর্য্যন্তপাতিত্বেন রুদ্রাক্ষমালাবৎ প্রতীতেরিতি ভাবঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(শ) অম্বিকেতি। অম্বিকায়াঃ পাদপতনেন শ্যামে শ্যামীভূতে ললাটে বর্দ্ধমানঃ অর্ব্বুদো রোগো যস্য তেন, সততভূতলঘর্ষণাদিতি ভাবঃ।

(ষ) কুবাদীতি। কুবাদিনা কৌতুকায় মিথ্যাবাদিনা অনেন দত্তস্য সিদ্ধাঞ্জনস্য নেত্রৌষধস্য দানেন অর্পণেন স্ফুটিতং নষ্টং একং লোচনং যস্য তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা, ত্রিকালং প্রাতর্মধ্যাহ্নসায়াহ্নেষু, ইতরলোচনে অঞ্জনদানে সাধারণকজ্জলার্পণে ন তু কুবাদিদত্তসিদ্ধাঞ্জনদানে ইত্যর্থঃ আদরেণ যত্নেন শ্লক্ষ্ণীকৃতা দারুশলাকা দারুনির্ম্মিতা কজ্জলদানশলাকা যেন তেন, কুবাদিদত্তসিদ্ধাঞ্জনদোষেণ বা অশ্লক্ষ্ণমুখশলাকাদোষেণ বা লোচনমিকং স্ফুটিতমিত্যুভয়থাপ্যাশঙ্কাবশাদিতি ভাবঃ।

(স) প্রত্যহমিতি। কটুকালাবুঃ কটুতুম্বী তস্যাঃ স্বেদেন প্রারব্ধো দন্তুরতায়া উন্নতদন্ততায়াঃ প্রতীকারশ্চিকিৎসা যেন তেন। তাদৃশস্বেদেন দন্তপাতাবশ্যম্ভাবাৎ বর্ব্বরতাপত্তীতি।

(হ) কথঞ্চিদিতি। কথঞ্চিৎ কেনাপি প্রকারেণ অস্থানে অবিহিতস্থানে দত্ত ইষ্টকাপ্রহারো যস্য তস্য ভাবস্তয়া হেতুনা, শুষ্কে শুষ্কীভূতে একস্মিন্ ভুজে উপশান্তং প্রয়োজনাভাবশ্চানাদ্বিরতং মর্দ্দনব্যসনং বাতবিনাশকতৈলমর্দ্দনাগ্রহো যস্য তেন। আমবাতজড়ীকৃতদেহস্য তদ্বাতবিনাশায় তৈলবিশেষমর্দ্দনানন্তরং স্থানবিশেষে কারস্থাপিতমিষ্টকানাং প্রহারশ্চিকিৎসাশাস্ত্রনির্দ্দিষ্টঃ, তস্মিংশ্চাস্থানে কৃতে কশ্চিদ্ভুজঃ শুষ্কতামাপদ্যতে সা চ শুষ্কতাস্য জাতা তথা চাসৌ তস্মিন্ ভুজে বাতো বিনষ্ট ইতি মত্বা তৈলমর্দ্দনাগ্রহং পরিহৃতবানিতি সরলার্থঃ।

দেহ বিচিত্র করিয়াছিল। (ব) কর্ণাভরণের স্থানে একটি চূড়া পরিধান করিয়াছিল, তাহা বক্ষঃস্থল পর্য্যন্ত পতিত হওয়ায় সে, যেন রুদ্রাক্ষের মালা ধারণ করিতেছিল। (শ) চণ্ডীর চরণে পতিত হওয়ায় ললাটদেশ শ্যামবর্ণ হইয়াছিল এবং তাহাতেই ললাটের অর্ব্বুদরোগটা বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (ষ) কোন মিথ্যাবাদি-প্রদত্ত সিদ্ধকজ্জল প্রয়োগ করায় একটি চক্ষু বিনষ্ট হইয়াছিল বলিয়া তিন বেলা অন্য চক্ষুতে সাধারণ কজ্জল দান করিবার সময়ে যত্নপূর্ব্বক দারু-শলাকাটিকে পালিশ করিয়াছিল। (স) প্রতিদিন তিতলাউর স্বেদ দিয়া উঁচু দাঁতগুলির চিকিৎসা আরম্ভ করিয়াছিল। (হ) কোন প্রকারে অস্থানে ইষ্টক প্রহার করায় একখানা হাত শুকাইয়া গিয়াছিল, সুতরাং তাহাতে তাহার তৈল মর্দ্দন করিবার আগ্রহ নিবৃত্তি

(১) ক্বচিৎ ইবশব্দো নাস্তি। (২)…বর্দ্ধবুদেন। (৩) কুবাদিক…, কুবাদী…।
(৪)…স্ফোটিতৈক…, …সিদ্ধাঞ্জনস্ফুটিতৈক…।

ग्रान्त-मर्द्दन-व्यसनेन, (क्ष) उपर्य्युपर्य्यविश्रान्त-(१) कटुकवर्त्ति-प्रयोग-वर्द्धित-तिमिरेण, (क) अश्मभिद्-संगृहीत-वराह-दंष्ट्रेण, (ख) इङ्गुदीकोष-कृतौषधाञ्जनसंग्रहेण, (ग) सूची-स्यूत-शिरा-सङ्कोचित-वाम-कराङ्गुलिना, (घ) कौशेयक-कोषावरण-(२) क्षति-व्रणित-चरणाङ्गुष्ठकेन, (ङ) असम्यक्कृत-रसायनानीताकाल-ज्वरेण, (च) जरां गतेनापि दक्षिणापथाधिराज्य-वर-प्रार्थना-कदर्थित-दुर्गेण, (छ) दुःशिक्षित-श्रमणादिष्ट-(३) तिलकावह-विभव-

(क्ष) उपरीति। उपर्य्युपरि अधिकाधिकं अविश्रान्तञ्च यथा स्यात्तथा यः कटुकवर्त्तिप्रयोगः कटुपदार्थनिर्म्मितनेत्ररोगनाशकवर्त्तिकादानं तेन वर्द्धितं तिमिरं नेत्ररोगविशेषो यस्य तेन।

(क) अश्मेति। अश्मभेदाय पाषाणभङ्गाय संगृहीता वराहदंष्ट्रा येन तेन।

(ख) इङ्गुदीति। इङ्गुदीकोषे इङ्गुदीफलकोषे कृत औषधाञ्जनस्य नेत्ररोगौषधीभूतकज्जलस्य संग्रहो येन तेन।

(ग) सूचीति। सूच्या स्यूताभिरौन्नत्यनिवृत्त्यर्थं सूत्रेण ग्रथिताभिः शिराभिः सङ्कोचिता दृढाकर्षणेन खर्व्वीकृता वामकराङ्गुलयो यस्य तेन।

(घ) कौशेयकेति। कौशेयककोषेण कृमिसूत्रकोषेण यदावरणं तेन या क्षतिः संघर्षणेन व्रणितः क्षतश्चरणाङ्गुष्ठं यस्य तेन। कुशादिभिर्घर्षवारणाय कौशेयककोषेणाङ्गुष्ठावरणम्।

(ङ) असम्यगिति। असम्यक् कृतेन अयथाविधि विहितेन रसायनेन जराव्याधिविध्वंसिभेषजसेवनेन आनीतः अकालज्वरो येन तेन। "यज्जराव्याधिविध्वंसि भेषजं तद्रसायन"मिति चरकः।

(च) जरामिति। जरां गतेनापि, नितान्तवृद्धेनापि सता, दक्षिणापथस्य दाक्षिणात्यदेशस्य यदधिराज्यं तस्य वरप्रार्थनया कदर्थिता विरक्तीकृता दुर्गा चण्डिका येन तेन।

(छ) दुरिति। दुःशिक्षितेन कुशिक्षाप्राप्तेन श्रमणेन केनचित् सन्न्यासिविशेषेण आदिष्टे तिलके आवद्धा कृता विभवप्रत्याशा धनसम्पदाकाङ्क्षा येन तेन।

পাইয়াছিল। (ক্ষ) সর্ব্বদা বেশি বেশি করিয়া কটু বর্ত্তি প্রয়োগ করায় নেত্ররোগ বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (ক) পাথর ভাঙ্গিবার জন্য শূয়রের দাঁত সংগ্রহ করিয়াছিল। (খ) ইঙ্গুদীফলের কোষে নেত্ররোগের ঔষধ কজ্জল সংগ্রহ করিয়াছিল। (গ) সূচ দিয়া শিরাগুলিকে সেলাই করায় বাম হাতের আঙ্গুলগুলি সঙ্কুচিত হইয়াছিল। (ঘ) কৃমির চাক দিয়া আবরণ করায় তাহার ঘসাতে পায়ের বুড়ো আঙ্গুল ক্ষত-বিক্ষত হইয়াছিল। (ঙ) অসঙ্গতভাবে রসায়ন সেবন করায় অকালে জ্বর আনয়ন করিয়াছিল। (চ) প্রাচীন হইলেও দাক্ষিণাত্য-দেশের রাজত্বের বর প্রার্থনা করায় দুর্গাদেবীকে বিরক্ত করিতেছিল। (ছ) কুশিক্ষায় শিক্ষিত কোন সন্ন্যাসীর আদেশে তিলক ধারণ করিয়া, তাহাতেই ধনসম্পত্তির প্রত্যাশা

(१) उपर्य्यविश्रान्त...। (२) कौशेयकावरण...। (३)...श्रवणादिष्ट...।

प्रत्याशेन, (छ) हरित-पत्र-रसाङ्गार-मसी-(१) मलिन-शम्बूकवाहिना, (ज) पट्टिका-लिखित-दुर्गास्तोत्रेण, (झ) धूम-रक्तालक्तकाक्षर-ताल-पत्र-कुहक-तन्त्र-मन्त्र-पुस्तिका-संग्राहिणा, (ञ) जीर्ण-पाशुपतोपदेश-(२) लिखित महा-काल-मतेन, (ट) आविर्भूत-निधि-वाद-व्याधिना, (ठ) सञ्जात-धातु-वाद-वायुना, (ड) लग्नासुर-विवर-प्रवेश-पिशाचेन, (ढ) प्रवृत्त-यक्ष-कन्यका-कामित्व-मनोरथ-व्यामोहेन, (ण) वर्द्धितान्तर्धान-मन्त्रसाधनसंग्रहेण, (३) (त)

(ज) हरितेति। हरितपत्ररसेन हरिद्वर्णपर्णनिर्य्यासेन युक्ता या अङ्गारमसी तया मलिनं शम्बूकं वहतीति तेन शम्बूकमयमसीपात्रधारिणेत्यर्थः।

(झ) पट्टिकेति। पट्टिकायां काष्ठफलके लिखितं दुर्गास्तोत्रं येन तेन।

(ञ) धूमेति। धूमेन रक्तानि रञ्जितानि अलक्तकाक्षराणि अलक्तकलिखितवर्णा येषु तैस्तादृशैस्तालपत्रैर्या कुहकाय इन्द्रजालाय तन्त्रमन्त्राणां पुस्तिका तां संगृह्णातीति तेन।

(ट) जीर्णेति। जीर्णो वृद्धो यः पाशुपतः शैवस्तस्य उपदेशेन-लिखितं महाकालमतं येन तेन।

(ठ) आविरिति। आविर्भूतो निधिवादः 'अनेनानुष्ठानेन निधिर्लभ्येत' इति धनप्राप्तिवाद एव व्याधिर्यस्य तेन।

(ड) सञ्जातेति। सञ्जातो धातुवादः 'अनेनानुष्ठानेन लौहं स्वर्णं भवति' इति धातुविषयकप्रवाद एव वायुर्वायुरोगो यस्य तेन।

(ढ) लग्नेति। लग्नः असुरविवरे प्रवेशः प्रवेशाग्रह एव पिशाचो यस्मिन् तेन।

(ण) प्रवृत्तेति। प्रवृत्तो जातो यक्षकन्यासु कामित्वमनोरथेन सम्भोगाभिलाषेण व्यामोहो विभ्रमेण मतिभ्रमो यस्य तेन।

(त) वर्द्धितेति। वर्द्धितो वृद्धिं प्रापितः अन्तर्धानमन्त्रसाधनाय संग्रह आग्रहो येन तेन।

করিতেছিল। (জ) হরিদ্বর্ণ পাতার রস ও আঙ্গারের কালী এই উভয়ে মলিনবর্ণ একটা ঝিনুক লইয়া চলিত। (ঝ) একখানা কাষ্ঠফলকে দুর্গার স্তব লিখিয়া রাখিয়াছিল। (ঞ) ইন্দ্রজালের জন্য একখানা তান্ত্রিক মন্ত্রের পুস্তক সংগ্রহ করিয়াছিল, তাহার তাল-পাতাগুলিতে আলতার রস দিয়া অক্ষর লেখা ছিল, তাহা আবার ধূমে রঞ্জিত করিয়াছিল। (ট) কোন প্রাচীন শৈবের উপদেশে মহাকালের মত লিখিয়া রাখিয়াছিল। (ঠ) 'এই অনুষ্ঠান করিলে নিধি (ধনের মাঠী) লাভ করা যায়' এই জাতীয় প্রবাদরূপ ব্যাধি তাহার হৃদয়ে আবির্ভূত হইয়াছিল। (ড) 'এই কার্য্য করিলে লোহা সোণা হয়, এই প্রবাদমূলক তাহার বায়ুরোগ জন্মিয়াছিল। (ঢ) অসুরের হ্রদে প্রবেশ করিবার আগ্রহরূপ পিশাচ তাহার পিছনে লাগিয়াছিল। (ণ) যক্ষকন্যাগণের সহিত সম্ভোগ করিবার অভিলাষ হওয়ায় তাহার মতিভ্রম জন্মিয়াছিল। (ত) অন্তর্ধান করিবার উপযোগী মন্ত্র সাধন করিবার জন্য

---

(१)...मसी...। (२) जीर्णजरत्पाशुपतोपदेश। (३)... अन्तर्धानमन्त्रसंग्रहेण।

श्रीपर्वताश्चर्य्यवार्त्तासहस्राभिज्ञेन, (थ) असकृदभिमन्त्रित-सिद्धार्थक-प्रहति-प्रधावितैः (१) पिशाचगृहीतकैः करतल-ताड़न-चिपिटीकृत-(२) श्रवणपुटेन, (द) अविमुक्त-(३) शैवाभिमानेन, (ध) दुर्गृहीतालावुवीणा-वादनोद्वेजित-पथिक-परिहृतेन, (न) दिवसमेव मशककणितानुकारि किमपि कम्पितोत्तमाङ्गं गायता, (प) स्वदेशभाषा-निबद्ध-भागीरथी-भक्ति-स्तोत्र-नर्त्तकेन, (फ) गृहीत-तुरग-ब्रह्मचर्य्यतया अन्यदेशागतोषितासु जरत्प्रव्रजितासु बहुकृत्वः सम्प्रयुक्त-

(थ) श्रीति। श्रीपर्वते यदाश्चर्य्यवार्त्तासहस्रं अद्भुतांकं वदन्तीसमूहस्तस्याभिज्ञेन। पुरा किल कस्मिंश्चित् पर्वते सरस्वत्या अपि सौभाग्यमभिलषन्ती लक्ष्मीर्भृशं तपस्यन्ती स्वकीयस्तनं छित्वा अग्नौ जुहाव, ततः प्रभृति पर्वतोऽसौ श्रीपर्वत इति प्रथितोऽभूदिति पौराणिकप्रवादः।

(द) असकृदिति। असकृदभिमन्त्रितानां सिद्धार्थकानां सर्षपाणां प्रहत्या भूतापसारणार्थं तद्गात्रेषु वारंवारं प्रक्षेपेण प्रधावितैः क्रोधाद्द्रुतमागतैः पिशाचगृहीतकैर्भूताविष्टैर्जनैः करतलताड़नेन चिपिटीकृतं चिपीटकवत् प्रसारितीकृतं श्रवणपुटं कर्णपुटं यस्य तेन।

(ध) अवीति। अविमुक्तः अपरित्यक्तः शैवाभिमानः शैवोऽहमित्यहङ्कारो येन तेन।

(न) दुर्गृहीतेति। दुर्गृहीता अयथाविधि धृता या अलावुवीणा तुम्बीनिर्म्मितवीणायन्त्रं तस्य वादनेन उद्वेजितैर्विरक्तीकृतैः पथिकैः परिहृतः परित्यक्तस्तेन।

(प) दिवसमिति। दिवसमेव यन्मशकस्य कणितं शिञ्जितं तदनुकर्त्तुं शीलं यस्य तद्यथा तथा, कम्पितं उत्तमाङ्गं मस्तकं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा च किमपि अनिर्वचनीयं गायता। दिवसमिति "तत्प्रत्ययेऽसंज्ञं कालादि क्लीव्यस्ये"ति कर्म्मत्वम्।

(फ) स्वदेशेति। स्वदेशभाषा द्राविड़ी, तया निबद्धं यद्भागीरथ्या भक्तिस्तोत्रं तेन नृत्यतीति तेन।

(ब) गृहीतेति। गृहीतं तुरगस्य अश्वस्येव ब्रह्मचर्य्यं येन स तथोक्तस्तस्य भावस्तया हेतुना, यथा तुरगाः सततबन्धनप्रतिबन्धादेव ब्रह्मचर्य्यमवलम्बन्ते न पुनर्धर्म्मलाभलोभात् तथा अयमपि स्त्रीलाभाभावादेव ब्रह्मचर्य्यमव-लम्बितवान् न पुनर्धर्म्मार्ज्जनप्रत्याशयेति भावः। अन्यदेशादागताः सत्य उषितास्तत्रावस्थितास्तासु, जरत्प्रव्र-जितासु जराजीर्णसन्न्यासिनीषु बहुकृत्वो बहून् वारान् सम्प्रयुक्तं निक्षिप्तं स्त्रीवशीकरणचूर्णं येन तेन।

তাহার আগ্রহ বৃদ্ধি পাইয়াছিল। (থ) সে, শ্রীপর্ব্বতের আশ্চর্য্য বৃত্তান্তসমূহ জানিত। (দ) মন্ত্রপাঠ করিয়া বারংবার গাত্রে সর্ষপ নিক্ষেপ করায় ভূতাবিষ্ট লোকগুলি দ্রুত আসিয়া হস্ত তাড়ন করিয়া তাহার কাণ দুইখানা চেপ্টা করিয়া দিয়াছিল। (ধ) সে, নিজের শৈবাভিমান ত্যাগ করিয়াছিল না। (ন) বিপরীতভাবে ধরিয়া অলাবুর বীণা বাদন করায় পথিকগণ বিরক্ত হইয়া তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া যাইত। (প) সে, মস্তক কম্পিত করিয়া দিনের বেলায়ই মশক-শব্দের ন্যায় অনির্ব্বচনীয় গান করিতেছিল। (ফ) স্বদেশীয় ভাষায় গঙ্গার ভক্তি-স্তোত্র রচনা করিয়া তাহা পাঠ করতঃ নৃত্য করিতেছিল। (ব) অশ্বের ন্যায় ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন করায়, অন্যদেশ হইতে আসিয়া সেই স্থানে অবস্থিত বৃদ্ধ সন্ন্যাসিনীগণের

(१)...प्राहतिधावितैः। (२)...चिपिटीकृत...। (३) अनवमुक्त..., अवमुक्त...।

स्त्रीवशीकरणचूर्णेन, (ब) अतिरोषणतया कदाचिद्दुर्न्यस्ताष्ट-पुष्पिका-पातोत्-पादित-क्रोधेन चण्डिकामपि मुखभङ्गिविकारैर्भृशमुपहसता, (भ) कदाचिन्नि-वार्य्यमाणावास-रुषिताध्वगारब्ध-बहु-बाहुयुद्ध-पात-भग्न-पृष्ठकेन, (म) कदाचित् कृतापराध-बालक-पलायनामर्ष-पश्चात्-प्रधावित-स्खलिताधोमुख- पात-स्फुटित-शिरः-कपाल-भुग्न-ग्रीवेण, (य) कदाचिज्जानपद-जन-(१) नवागतापर-धार्म्मिकादर-मत्सरोद्बद्धात्मना, (२) (र) निःसंस्कारतया यत्किञ्चन-कारिणा, (ल)

(भ) अतीति। अष्टानां पुष्पाणां समाहार इत्यष्टपुष्पी अज्ञाता अष्टपुष्पीत्यष्टपुष्पिका अज्ञाते कप्रत्ययः यानि कानिचिदष्टौ पुष्पाणीत्यर्थः। तथा च अतिरोषणतया नितान्तक्रोधशीलतया, कदाचित् दुर्न्यस्ताया अयथाभावेन स्थापितायाः अष्टपुष्पिकायाः, पातेन कौतुकाद्वा केनचिज्जनेन चण्डिकापीठात् पातनेन उत्पादितः क्रोधो यस्य तेन, अतएव मुखभङ्गिविकारैश्चण्डिकामपि भृशमुपहसता, तानि पुष्पाणि रक्षितुमशक्त-त्वादिति भावः।

(म) कदाचिदिति। निवार्य्यमाणेन 'अत्र न वासः कर्त्तव्य' इति निषिध्यमानेन आवासेन वास-स्थानेन हेतुना, रुषितैः क्रुद्धैः अध्वगैः पथिकैरारब्धेषु बहुषु बाहुयुद्धेषु पातेन भग्नं पृष्ठं यस्य तेन।

(य) कदाचिदिति। कृतो धूलिपतननिक्षेपादिना विहितः अपराधो येन तस्य तादृशस्य बालकस्य पलायनेन योऽमर्षः क्रोधस्तेन यत् पश्चात् प्रधावितं प्रधावनं तेन यत् स्खलितं प्रच्युतिस्तस्मादधोमुखपातेन स्फुटितं क्षतं शिरः कपालं भुग्ना वक्रीभूता च ग्रीवा यस्य तेन।

(र) कदाचिदिति। जानपदैर्देशवासिभिर्जनैः कृतो यो नवागतस्य अपरधार्म्मिकस्य आदरस्तस्मिन् मत्सरेण विद्वेषेण उद्बद्ध आत्महत्यार्थं उद्बन्धनाश्रयीकृतः आत्मा देहो येन तेन।

(ल) निरिति। निःसंस्कारतया शिक्षाजनितव्युत्पत्तिहीनतया, यत्किञ्चनकारिणा तुच्छकार्य्यकारिणा।

গাত্রে স্ত্রীবশীকরণের চূর্ণ নিক্ষেপ করিয়াছিল। (ভ) একে সে অত্যন্ত কোপনস্বভাব ছিল, তাহাতে আবার চণ্ডীর নিকটে যে আটটি ফুল পাতাইয়া রাখিয়াছিল, তাহা কেহ ফেলাইয়া দেওয়ায় নূতন ক্রোধ জন্মিয়াছিল; সুতরাং সেই ফুল রক্ষা করিতে না পারায়, নানাবিধ মুখভঙ্গী করিয়া চণ্ডীদেবীকেও অত্যন্ত উপহাস করিতেছিল। (ম) পথিকগণ আসিয়া থাকিবার ইচ্ছা করিলে সে বাধা দিত, তাহাতে পথিকগণ ক্রুদ্ধ হইয়া গেলে তাহাদের সহিত তাহার অনেক বাহুযুদ্ধ আরম্ভ হইয়া যাইত কোন সময় তাহাতে পড়িয়া যাওয়ায় তাহার পিঠ ভাঙ্গিয়া গিয়াছিল। (য) কোন সময় কোন বালক অপরাধ করিয়া পলায়ন করিলে সে, ক্রোধবশতঃ তাহার পশ্চাৎ ধাবন করিবার সময়ে পদস্খলন হওয়ায় অধোমুখ হইয়া পড়িয়া গিয়াছিল, তাই তাহার মাথার খুলি ফুটিয়াছিল ও গলা বাঁকা হইয়াছিল। (র) দেশবাসী সমস্ত লোক, নবাগত অন্য কোন ধার্ম্মিকের আদর করিয়াছিল, সুতরাং তাহাতে বিদ্বেষ হওয়ায় সে, আত্মহত্যা করিবার নিমিত্ত গলায় দড়ি দিয়াছিল। (ল) শিক্ষাজনিত কোন জ্ঞান ছিল না

---

(१)...जनपदजन...। (२)...उद्बद्धात्मना।

खञ्जतया मन्दमन्द-सञ्चारिणा, (१) (व) बधिरतया संज्ञाव्यवहारिणा, (श) रात्र्यन्धतया दिवाविहारिणा, (ष) लम्बोदरतया प्रभूताहारिणा, (स) अनेकशः फल-पातन-कुपित-वानर-नखोल्लेख-च्छिद्रितनासापुटेन, (ह) बहुशः कुसुमावचय-चलित-भ्रमर-सहस्र-दंश-शीर्णीकृत-शरीरेण, (क्ष) सहस्रशः शयनीकृतासंस्कृत-शून्य-देवकुल-कालसर्प-दष्टेन, (क) शतशः श्रीफलतरु-शिखर-च्युति-चूर्णितोत्तमाङ्गेन, (ख) असकृदुत्सन्न-देवमातृ-गृह-वास्तव्य-भल्लूक-नख-(२) जर्जरित-कपोलेन, (ग) सर्वदा वसन्तक्रीडिना जनेनोत्क्षिप्त-खण्ड-खट्वा-

(व) खञ्जेति। खञ्जतया मन्दं मन्दं सञ्चरितुं शीलं यस्य तेन।

(श) बधिरेति। बधिरतया, संज्ञया अङ्गुल्यादिसङ्केतेन व्यवहर्त्तुं शीलं यस्य तेन।

(ष) रात्र्यन्धेति। रात्र्यन्धतया दिवाविहारिणा दिवससञ्चारिणा।

(स) लम्बोदरेति। लम्बोदरतया प्रभूताहारिणा प्रचुरभोजिना।

(ह) अनेकश इति। फलपातनेन कुपितानां वानराणां नखैरुल्लेखेन अनेकशश्छिद्रितं सञ्जातच्छिद्रं नासापुटं यस्य तेन।

(क्ष) बहुश इति। बहुशः कुसुमावचये पुष्पचयनसमये चलितस्य धावितस्य भ्रमरसहस्रस्य दंशेन दशनेन शीर्णीकृतं शरीरं यस्य तेन।

(क) सहस्रश इति। सहस्रशः शयनीकृतेषु शयनस्थानीकृतेषु असंस्कृतेषु अपरिष्कृतेषु शून्येषु मानवरहितेषु देवकुलेषु देवतागृहेषु कालसर्पदष्टेन।

(ख) शतश इति। शतशः श्रीफलतरोः शिखरादुपरिदेशात् च्युत्वा पतनेन चूर्णितं उत्तमाङ्गं मस्तकं यस्य तेन।

(ग) असकृदिति। असकृत् उत्सन्नदेवमातृगृहेषु भग्नब्राह्मीप्रभृतिगृहेषु वसन्तीति तच्छीला ये ऋक्षा भल्लूकास्तेषां नखैर्नखाघातैः जर्जरितः शतविक्षतीकृतः कपोलो गण्डो यस्य तेन।

বলিয়া সে, অতিতুচ্ছ কার্য্য করিত। (ব) খোঁড়া বলিয়া ধীরে ধীরে চলিত। (শ) বধিরতা-নিবন্ধন সঙ্কেতদ্বারা অন্যের সহিত ব্যবহার করিত। (ষ) রাত্র্যন্ধ বলিয়া দিনে বিচরণ করিত। (স) লম্বোদর বলিয়া প্রচুর আহার করিত। (হ) ফল পাড়িবার সময়ে বানরগণ ক্রুদ্ধ হইয়া নখের আঘাতে অনেকবার তাহার নাসিকায় ছিদ্র করিয়া দিয়াছিল। (ক্ষ) পুষ্প চয়ন করিবার সময়ে ধাবিত ভ্রমরগণ দংশন করিয়া বহুবার তাহার শরীর জীর্ণ-শীর্ণ করিয়াছিল। (ক) অপরিষ্কৃত শূন্য দেবগৃহে শয়ন করায় কালসর্পে সহস্রবার তাহাকে দংশন করিয়াছিল। (খ) শ্রীফল-বৃক্ষের উপর হইতে পতিত হওয়ায় শতবার তাহার মস্তক চূর্ণ হইয়াছিল। (গ) ব্রাহ্মী-প্রভৃতি দেবমাতৃগণের ভগ্ন-গৃহ-স্থিত ভল্লুকগণ নখের আঘাতে বারংবার তাহার গণ্ডদেশ জর্জ্জরিত করিয়াছিল। (ঘ) বসন্তোৎসবে মত্ত নাগরিকগণ একখানা ভগ্ন খট্বা উত্তোলন

(१) मन्दं मन्दं सञ्चारिणा। (२)...वासि ऋक्षनख...।

রোপিত-বৃদ্ধদাসী-বিবাহ-প্রাপ্ত-বিড়ম্বনেন, (ঘ) অনেকায়তন-প্রতিশয়িত-নিষ্ফলো-ত্থানেন, (ঙ) দৌঃস্থিত্যমপি (১) বিবিধ-ব্যাধি-পরিবৃতং স্বকুটুম্বমিবোদ্বহতা, (চ) মূর্খতামপি বহুব্যসনানুগতাং প্রসূতানেকাপত্যামিব দর্শয়তা, (ছ) ক্রোধমপ্যনেকদণ্ডাঘাত-(২) নির্ম্মিত-বহুগাত্রগণ্ডকং (৩) ফলিতমিব প্রকা-শয়তা, (জ) ক্লেশমপি সর্বাবয়বজ্বলিত-দীপিকা-দাহ-ব্রণ-বিভাবিতং বহু-

(ঘ) সর্বদেতি। সর্বদা বসন্তক্রীড়িনা বসন্তোৎসবকারিণা জনেন উৎক্ষিপ্তায়াং উত্তোলিতায়াং স্বচ্ছায়াং ভগ্নায়াং খট্বায়াং আরোপিতা যা বৃদ্ধদাসী তয়া বিবাহেন প্রাপ্তং বিড়ম্বনং কদর্থনা যেন তেন।

(ঙ) অনেকেতি। অনেকেষু আয়তনেষু দেবতাস্থানেষু যানি প্রতিশয়িতানি প্রাগুক্তলক্ষণানি প্রতি-শয়নানি তেভ্যো নিষ্ফলমুত্থানং যস্য তেন।

(চ) দৌঃস্থিত্যমিতি। বিবিধব্যাধিভিঃ পরিবৃতং, দুঃস্থিতস্য ভাবো দৌঃস্থিত্যং তদপি দুর্গতিমপি স্বকুটুম্বমিব নিজপরিজনমিব উদ্বহতা দধতা। অত্র ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ, তেন চ দৌঃস্থিত্যব্যাধীনাং সাতত্যং ব্যজ্যতে ইত্যলঙ্কারেণ বস্তুধ্বনিঃ।

(ছ) মূর্খতামিতি। বহুভির্ব্যসনৈর্মদ্যপানাদ্যাসক্তিভিরনুগতা অনুসৃতা তাং, মূর্খতামপি, প্রসূতানি অনেকানি অপত্যানি যয়া তামিব, দর্শয়তা আচারেণ প্রকটয়তা, ব্যসনানামেবাপত্যরূপত্বাদিতি ভাবঃ। অত্রা-নেকাপত্যপ্রসবোৎপ্রেক্ষণাৎ ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(জ) ক্রোধমিতি। অনেকৈর্দণ্ডাঘাতৈরপক্রান্তজনকর্তৃকলগুড়প্রহারৈর্নির্ম্মিতা বহবো গাত্রগণ্ডকাঃ শরীর-ব্রণগ্রন্থয়ো যস্মিন্ তং, ক্রোধমপি ফলিতমিব সঞ্জাতফলমিব, প্রকাশয়তা, গাত্রগণ্ডকানামেব ক্রোধফলরূপত্বাদিতি ভাবঃ। ক্রিয়োৎপ্রেক্ষা।

(ঝ) ক্লেশমিতি। সর্বেষু অবয়বেষু অঙ্গেষু জ্বলিতাস্তদুৎপীড়িতজনৈঃ প্রজ্বালিতা যা দীপিকাঃ প্রদীপা-স্তাসাং দাহেন যে ব্রণাঃ ক্ষতানি তৈর্বিভাবিতং পরিচায়িতং ক্লেশমপি বহুসুখমিব প্রকটয়তা সহাস্যবদনেন জনসমাজে নিবেদয়তা। অত্র গুণোৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

করিয়া, তাহাতে একটা বৃদ্ধ দাসীকে বসাইয়া, তাহার সহিত বিবাহ দেওয়ায় সে, সর্ব্বদা বিড়ম্বনা পাইত। (ঙ) সে, অনেক দেবতার দুয়ারে হত্যা দিয়া, আবার নিষ্ফলভাবেই উঠিয়াছিল। (চ) নানাবিধ রোগে পরিবেষ্টিত দুর্গতিকেও সে, নিজ পরিজনের ন্যায় বহন করিতেছিল। (ছ) সে, যে মূর্খতা প্রকাশ করিতেছিল, তাহার পিছনে পিছনে মদ্যপান-প্রভৃতির আসক্তি চলিতে থাকায়, সেই মূর্খতা যেন অনেক সন্তান প্রসব করিয়াছিল। (জ) অনেক লাঠির আঘাতে তাহার গায়ে মাড়ুয়া পড়াইয়াছিল, সুতরাং নিজের ক্রোধটাকেও যেন সে, ফলবানের ন্যায় লোকসমাজে ব্যক্ত করিতেছিল। (ঝ) তাহার ব্যবহারে উৎপীড়িত লোকেরা প্রদীপ জ্বালিয়া তাহার সমস্ত অঙ্গ পোড়াইয়া দেওয়ায় সেই ঘায়ের চিহ্ন সকল তাহার কষ্টের পরিচয় দিত ; কিন্তু সেই কষ্টকেও সে, সহাস্যমুখে বহুতর সুখের ন্যায় প্রকাশ করিত।

(১) দৌস্থিত্যমপি। (২)...অভিঘাত...। (৩)...গন্ডুকং।

সুখমিব প্রকটয়তা, (ঝ) পরিভবমপি নিষ্কারণাক্রুষ্ট-(১) জনপদ-দত্ত-পদাকৃষ্টি-শত-সম্প্রবাহমিব (২) দধানেন, (ঞ) শুষ্ক-বনলতা-বিনির্ম্মিত-বৃহৎ-কুসুমকরণ্ডকেন, (ট) বেণুলতা-রচিত-পুষ্প-পাতনাঙ্কুশিকেন, (ঠ) ক্ষণ-মপ্যমুক্ত-কাল-কম্বল-খণ্ড-খোলেন, (৩) জরদ্দ্রবিড়ধার্ম্মিকেণাধিষ্ঠিতাং চণ্ডিকা-মপশ্যৎ (ড)। তস্যামেব চ বাসমরোচয়ৎ (৪)। (ঢ)

অথাবতীর্য্য তুরগাৎ প্রবিশ্য ভক্তিপ্রবণেন চেতসা তাং প্রণনাম। কৃতপ্রদক্ষিণশ্চ পুনঃ প্রণম্য প্রশান্তোদ্দেশদর্শনকুতূহলেন পরিভ্রমন্নেবারটন্তমাক্রোশন্তঞ্চ কুপিতং-

(ঞ) পরীতি। পরিভবমপমানমপি, নিষ্কারণং আক্রুষ্টাস্তিরস্কৃতা যে জনপদা জনপদবাসিনো জনাস্তৈর্দত্তস্য পদাকৃষ্টিশতস্য পাদপ্রহারসমূহস্য সম্প্রবাহং বিশালস্রোত ইব দধানেন। জাত্যুৎপ্রেক্ষা।

(ট) শুষ্কেতি। শুষ্কাভির্বনলতাভির্বিনির্ম্মিতং বৃহৎ কুসুমকরণ্ডকং পুষ্পপাত্রং যেন তেন।

(ঠ) বেণ্বিতি। বেণুলতয়া বংশকঞ্চিকয়া রচিতা বিহিতা পুষ্পপাতনায় অঙ্কুশিকা যেন তেন।

(ড) ক্ষণমিতি। ক্ষণমপি অমুক্তঃ অপরিত্যক্তঃ কালকম্বলখণ্ডস্য খোলঃ শিরস্ত্রাণং যেন তেন। "খোলকঃ পাকবল্মীকপূগকোষশিরস্ত্রকে।" ইতি বিশ্বঃ। জরন্ বৃদ্ধো যো দ্রবিড়ধার্ম্মিকো দ্রবিড়দেশীয়োপাসকস্তেন, অধিষ্ঠিতামাশ্রিতাম্। অত্র জরদ্দ্রবিড়ধার্ম্মিকবর্ণনসমুদায়ে বিবিধবিশেষণপরিপুষ্ট এক এব স্বভাবোক্তিরলঙ্কারঃ প্রধানঃ।

অহো। এষা কিল কবিকল্পনা সুপ্রসূতিরিব মহাকৌতুকপ্রসবিনী স্বভাবেনৈবাকর্ষতি কাব্যরসিকান্, ইতরাংশ্চ বিরক্তীকরোতি বাহুল্যাৎ।

(ঢ) তস্যামিতি। তস্যামেব চণ্ডিকায়াং চণ্ডিকায়তন ইত্যর্থঃ বাসমরোচয়ৎ রাত্রৌ নিবাসং কর্ত্তুমৈচ্ছৎ, চন্দ্রাপীড় ইতি সম্বন্ধঃ।

(ণ) অথেতি। ভক্ত্যা প্রবণেন প্রণতেন। প্রশান্তাঃ শমগুণোদ্দীপকা যে উদ্দেশাঃ স্থানানি তেষাং দর্শনকুতূহলেন। আরটন্তং শব্দায়মানং, আক্রোশন্তং সৈনিকানধিক্ষিপন্তম্।

(ঞ) বিনা কারণে গালি দেওয়ায় দেশীয় লোকেরা তাহাকে যে সকল পদাঘাত করিয়াছিল, তাহার প্রবাহের ন্যায় সে, অপমানও বহন করিতেছিল। (ট) শুষ্ক বনলতাদ্বারা বৃহৎ একটা পুষ্পপাত্র নির্ম্মাণ করিয়াছিল। (ঠ) ফুল পাড়িবার জন্য বাঁশের কঞ্চী দিয়া একটা কোটা তৈয়ার করিয়াছিল। (ড) এবং কৃষ্ণবর্ণ একখণ্ড কম্বল দ্বারা মাথার একটা টুপি করিয়াছিল, তাহা ক্ষণকালের জন্যও পরিত্যাগ করিত না। (ঢ) চন্দ্রাপীড় রাত্রিতে সেই স্থানেই বাস করিতে ইচ্ছা করিলেন।

(ণ) তদনন্তর চন্দ্রাপীড় অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া, চণ্ডীর গৃহে প্রবেশপূর্ব্বক ভক্তিযুক্তচিত্তে তাঁহাকে প্রণাম করিলেন এবং প্রদক্ষিণ করিয়া পুনরায় প্রণামপূর্ব্বক শান্তিকর স্থান-

(১)...আক্রুষ্টঃ...। (২)...শতং প্রবাহমিব,...শতং সম্প্রবাহমিব।

(৩) ক্ষণমপ্যামুক্তকালকম্বলখণ্ডখোলেন। (৪) অরোচয়ৎ।

द्रविड़धार्म्मिकमेकदेशे ददर्श (ण)। दृष्ट्वा च कादम्बरीविरहोत्कण्ठोद्वेगदूयमानोऽपि सुचिरं जहास। न्यवारयच्च तेन सार्द्धं प्रारब्धकलहान् (१) उपहसतः स्वसैनिकान्। उपशान्तनैव कथमपि प्रियालापशतानुनयैः प्रथममुपनीय क्रमेण जन्मभूमिं जातिं विद्याञ्च कलत्रमपत्यानि विभवं वयःप्रमाणं प्रव्रज्यायाश्च कारणं स्वयमेव पप्रच्छ (त)। पृष्टश्चासाववर्णयदात्मानम्, अतीत-स्वशौर्य्य-रूप-विभव-वर्णन-वाचालेन तेन सुतरामरज्यत राजपुत्त्रः। विरहातुरहृदयस्य विनोदनतामिवागात्। उपजात-परिचयश्चास्मै ताम्बूलमदापयत् (थ) अस्तमुपगते च भगवति सप्तसप्तौ, आवासितेषु यथासम्पन्न-पादपतलेषु राजसूनुषु, शाखावसक्तापनीतपर्य्याणेषु (२) क्षितितल-लुण्ठन-(३) पांशुल-सटावधूननानुमितोत्-

(त) दृष्टेति। कादम्बर्य्या विरहेण या उत्कण्ठा तया य उद्वेगश्चित्तस्यास्थिरता तेन दूयमानोऽपि सन्तप्यमानोऽपि। प्रियालापानां शतानि च अनुनयाश्च तैः। कथमपि कष्टेन प्रथमं शान्तभावं उपनीय प्रापय्य। विभवं धनसम्पदं। वयःप्रमाणं वयसः परिमाणं। प्रव्रज्यायाः परिव्राजकतायाः।

(थ) पृष्ट इति। असौ द्रविड़धार्म्मिकः। अतीतानां स्वशौर्य्यरूपविभवानां वर्णनेषु वाचालो मुखरस्तेन, तेन द्रविड़धार्म्मिकेण करणेन। सुतरामत्यन्तं। विरहातुरहृदयस्य राजपुत्त्रस्य विनोदनतां विरहजनिताशान्तिनिवृत्त्युपायतामगादिव, द्रविड़धार्म्मिक इति शेषः। किञ्चोपजातपरिचयश्चन्द्रापीड़ः, अस्मै द्रविड़धार्म्मिकाय।

(द) अस्तमिति। सप्त सप्तयः अश्वा यस्य तस्मिन् सप्तसप्तौ सूर्य्ये। राजसूनुषु राजपुत्त्रेषु, यथासम्पन्ना यथाप्राप्ता ये पादपास्तेषां तलेषु आवासितेषु भृत्यैर्वासं प्रापितेषु सत्सु। शाखासु अवसक्तानि संलग्नानि अपनीतपर्य्याणानि गात्रव्याप्तपल्ययनानि येषां तेषु, क्षितितले लुण्ठनेन पांशुला धूलिव्याप्ता याः सटा जटा-

সমূহ দর্শন করিবার কৌতুকে পরিভ্রমণ করতঃ এক দিকে ক্রুদ্ধ দ্রবিড়ধার্ম্মিককে উচ্চৈঃস্বরে চীৎকার করিতে ও সৈন্যগণকে তিরস্কার করিতে দেখিলেন। (ত) দেখিয়া, কাদম্বরীর বিরহে উৎকণ্ঠা ও উদ্বেগবশতঃ সন্তপ্ত হইয়াও বহু সময় হাস্য করিলেন এবং নিজের সৈন্যগণ তাহার সহিত কলহ আরম্ভ করিয়া উপহাস করিতেছিল, তাহাদিগকে নিবারণ করিলেন। তাহার পর সান্ত্বনা, বহুতর প্রিয়বাক্য ও অনুনয় দ্বারা কোন প্রকারে তাহাকে শান্ত করিয়া, ক্রমশঃ জন্মভূমি, জাতি, বিদ্যা, স্ত্রী, সন্তান, ধনসম্পত্তি, বয়সের পরিমাণ ও প্রব্রজ্যার কারণ নিজেই জিজ্ঞাসা করিলেন। (থ) চন্দ্রাপীড় জিজ্ঞাসা করিলে সে, আপনাকে বর্ণনা করিতে লাগিল; সে নিজের অতীত শৌর্য্য, সৌন্দর্য্য ও ধনসম্পত্তি বর্ণনায় একেবারে মুখর হইয়া উঠিলে, রাজপুত্র তাহা দ্বারা অত্যন্ত আনন্দিত হইলেন; সুতরাং সে যেন বিরহাতুরহৃদয় চন্দ্রাপীড়ের অশান্তি-নিবৃত্তির উপায় হইয়া উঠিল এবং পরিচয় জন্মিলে চন্দ্রাপীড় তাহাকে তাম্বূল দান করাইলেন। (দ) তাহার পর ভগবান্ সূর্য্যদেব অস্তমিত হইলেন, রাজপুত্রগণ যথাপ্রাপ্ত বৃক্ষের তলে সংস্থাপিত হইলেন, ঘোড়াগুলির পালান খুলিয়া গাছের ডালে ঝুলাইয়া

(१) संरब्धकलहान्। (२) शाखावसक्तनपनीयपर्य्याणेषु। (३)···लुठन···।

সাহেষু গৃহীত-কতিপয়-শষ্প-কবলেষু পীতোদকেষু স্নানার্দ্রপৃষ্ঠতয়া বিগতশ্রমেষু পুরোনিখাতকুন্তযষ্টিষু সংযতেষু বাজিষু, বাজি-সমীপ-বিরচিত-পর্ণসংস্তরে (১) চ দিবস-গমন-খিন্ন-পরিবর্ত্তিতযামিকে (২) সুষুপ্সতি সৈনিকজনে, কৃত-বহু-পাবক-প্রভা-পীত-তমসি দিবস ইব বিরাজমানে সেনানিবেশে চন্দ্রাপীড়ঃ পরিজনৈকদেশে সংযতস্যেন্দ্রায়ুধস্য পুরঃ পরিকল্পিতং প্রতীহার-(৩) নিবেদিতং শয়নীয়মগাৎ (ঘ)। নিষণ্ণস্য চাস্য তৎক্ষণমেব পস্পর্শ দুঃখাসিকা হৃদয়ম্, অরতিগৃহীতশ্চ বিসর্জয়াম্বভূব রাজলোকম্, অতিবল্লভানপি নাললাপ পার্শ্বস্থান্,

তাসাং অবধূননেন কম্পনেন অনুমিত উৎসাহঃ পুনর্গমনীয়মো যেষাং তেষু, গৃহীতাঃ কতিপয়াঃ শষ্পকবলা ঘাসগ্রাসা যৈস্তেষু, পীতানি উদকানি জলানি যৈস্তেষু, স্নানেন আর্দ্রাণি পৃষ্ঠানি যেষাং তেষাং ভাবস্তয়া তথোক্তয়া হেতুনা বিগতশ্রমেষু, বাজিষু অশ্বেষু পুরঃ অগ্রতঃ নিখাতাঃ প্রোথিতা যাঃ কুন্তযষ্টয়স্তাসু, সংযতেষু বদ্ধেষু সৎসু। বাজিনামশ্বানাং সমীপেষু বিরচিতাঃ শয়নায় নির্ম্মিতাঃ পর্ণসংস্তরাঃ পত্রময়াস্তরণানি যেন তস্মিন্, দিবসং যাবদ্গমনেন খিন্নাঃ কেচিৎ পরিশ্রান্তা অতএবান্যে পরিবর্ত্তিতা যামিকা প্রহরিণো যেন তস্মিন্, সুষুপ্সতি স্বপ্তুমিচ্ছতি সতি। তথা কৃতানাং উৎপাদিতানাং বহূনাং পাবকানামগ্নীনাং প্রভাভিঃ পীতানি গ্রস্তানি নাশিতানি তমাংসি অন্ধকারা যস্য তস্মিন্ তথোক্তে সেনানিবেশে, রাত্রাবপি দিবস ইব বিরাজমানে সতি। প্রতীহারেণ দৌবারিকেণ নিবেদিতং, শয়নীয়ং শয্যাম্।

(ঘ) নিষণ্ণস্যেতি। কিঞ্চ, দুঃখস্য আসনং আসিকা প্রাপ্তিরিতি দুঃখাসিকা। "ভাবমাত্রে চ দৃশ্যতে" ইতি বৃত্তিস্থিতেঃ "পর্য্যায়াহর্ণেষু চ" ইতি আস্ধাতোর্ভাবে বুঞ্। নিষণ্ণস্য শয্যায়াং স্থিতস্য, অস্য চন্দ্রাপীড়স্য। কিঞ্চ, অরতিগৃহীতঃ সর্ব্বেষ্বেব বিষয়েষ্বরুচিসম্পন্নঃ। নিমীলিতলোচনো মুদ্রিতনয়নঃ।

রাখিল, তখন ভূতলে লুণ্ঠন করায় তাহাদের জটাগুলি ধূলিতে পরিপূর্ণ হইয়া গেল, আবার সেই জটাগুলি কম্পিত করায় তাহাদের পুনরায় গমনোৎসাহ অনুমিত হইতে লাগিল, কয়েকটি ঘাসের গ্রাস গ্রহণ করিল, জল পান করিল এবং স্নান করায় পৃষ্ঠদেশ আর্দ্র হইয়াছিল বলিয়া পরিশ্রম দূরীভূত হইল ; তাহার পর সম্মুখে কুন্ত (শস্ত্রবিশেষ) প্রোথিত করিয়া তাহাতে অশ্বদিগকে বন্ধন করিয়া রাখিল ; আর সমস্ত দিন গমন করায় পরিশ্রান্ত প্রহরীদিগকে পরিবর্ত্তিত করিয়া সৈন্যগণ শয়নের নিমিত্ত অশ্বের নিকটে পর্ণময় শয্যানির্ম্মাণপূর্ব্বক শয়ন করিতে ইচ্ছা করিল ; বহুতর অগ্নি প্রজ্বালন করায় তাহার আলোকে অন্ধকার বিনষ্ট করিলে সেনানিবেশটি দিনের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল ; এমন সময় কোন ভৃত্য, ইন্দ্রায়ুধকে বন্ধন করিয়া তাহার সম্মুখে শয্যা নির্ম্মাণ করিল, কোন দৌবারিক যাইয়া সে সংবাদ জানাইল, তখন চন্দ্রাপীড় সেই শয্যায় শয়ন করিতে গেলেন। (ঘ) এবং তিনি সেই শয্যায় অবস্থান করিলে, তখনই দুঃখ আসিয়া তাঁহার হৃদয় স্পর্শ করিল এবং সকল বিষয়েই অরুচি হওয়ায় রাজগণকে বিদায় দিলেন ; অত্যন্তপ্রীতিভাজন পার্শ্বচরদিগের সহিতও আলাপ করিলেন না, মুদ্রিতনয়নে

(১)···প্রস্তরে। (২)...পরিকল্পিতযামিকে। (৩)...প্রতিহার...।

निमीलितलोचनो मुहुर्मुहुर्मनसा जगाम किम्पुरुषविषयम्, अनन्यचेताः सस्मार हेमकूटस्य, (१) निष्कारण-बान्धवतामचिन्तयन्महाश्वेतापादानाम्, जीवितफलमभिललाष पुनः पुनः कादम्बरीदर्शनम्, अपगताभिमानपेशलाय नितरामस्पृहयन्मदलेखापरिचयाय, तमालिकां द्रष्टुमाचकाङ्क्ष, केयूरकागमनमुत्प्रैक्षत, हिमगृहकमपश्यत्, उष्णमायतं (२) पुनरुक्तं निशश्वास, ववन्ध चाधिकां (३) प्रीतिं शेषहारे, पश्चात् स्थितां पुण्यभागिनीममन्यत पत्रलेखाम्.—एवञ्चानुपजातनिद्र एव तामनयन्निशाम् (ध)। उषसि चोत्थाय तस्य जरद्द्रविड़धार्म्मिकस्येच्छया निसृष्टैर्धनविसरैः पूरयित्वा मनोरथम्, अभिमतमभिरमणीयेषु (४) प्रदेशेषु निवसन्नल्पैरेवाहोभिरुज्जयिनीमाजगाम । (न)

किम्पुरुषविषयं किन्नरदेशं मनसा जगाम चिन्तितवानित्यर्थः । हेमकूटस्येति "अधीगर्थदयेशां कर्म्मणीति" कर्म्मणि षष्ठी । महाश्वेतापादानां महाश्वेताया इत्यर्थः, तपस्वितया गुरुत्वात् पादशब्दप्रयोगो बहुवचनञ्च सङ्गच्छते । जीवितफलं जीवनप्रयोजनस्वरूपं कादम्बरीदर्शनं । अपगतेन अभिमानेन हेतुना पेशलो मनोहरस्तस्मै । उत्प्रैक्षत सम्भावितवान् आत्मतुलनया कादम्बर्य्या अप्युत्कण्ठितत्वेन तयैव प्रेषणसम्भवादिति भावः । अपश्यन्मनसेति शेषः, चिन्तितवानित्यर्थः । आयतं दीर्घं, पुनरुक्तं वारंवारम् । शेषहारे शेषाख्यायां मुक्तामालायां । ववन्ध चकार । पुण्यभागिनीममन्यत कादम्बरीदर्शनप्राप्तेरिति भावः । एवञ्च अनेनैव प्रकारेण । एषु प्रायेणैव कादम्बर्य्या उत्कण्ठावशादिति भावः ।

(न) उषसीति । इच्छया निसृष्टैस्तदभिलाषानुसारेणैव दत्तैः, धनानां विसरैः समूहैः । अभिरमणीयेषु सर्व्वत एव मनोहरेषु प्रदेशेषु अभिमतं यथा स्यात्तथा निवसन्नित्यन्वयः ।

বারংবার কিন্নরদেশ ভাবিতে লাগিলেন, অনন্যমনে হেমকুটপর্ব্বত স্মরণ করিলেন, মহাশ্বেতার অকারণ বন্ধুতা চিন্তা করিলেন, বারংবার কাদম্বরীর দর্শন করাই জীবনের ফল মনে করিয়া তাহাই ইচ্ছা করিতে লাগিলেন, মদলেখার সহিত আলাপ-ব্যবহারে তাহার কোন অহঙ্কার ছিল না বলিয়া সে আলাপ-ব্যবহার বড়ই মনোহর ছিল, তাই পুনরায় সেই আলাপ-ব্যবহার করিতে ইচ্ছা করিলেন ; তমালিকাকে দেখিতে আকাঙ্ক্ষা করিলেন, কেয়ূরকের আগমন সম্ভব বলিয়া মনে করিলেন এবং তাঁহার সেই হিমগৃহের কথা মনে পড়িল ; তাহার পর তিনি বারংবার উষ্ণ ও দীর্ঘ নিশ্বাস ত্যাগ করিতে লাগিলেন, শেষনামক হারছড়াকে খুব ভালবাসিতে লাগিলেন এবং পশ্চাৎ-বর্ত্তিনী পত্রলেখাকে পুণ্যবতী বলিয়া মনে করিলেন—এই ভাবে সে রাত্রিতে তাঁহার নিদ্রা জন্মিল না ; তাই জাগরিত অবস্থাতেই সে রাত্রি অতিবাহিত করিলেন। (ন) এবং প্রভাতকালে গাত্রোত্থান করিয়া সেই বৃদ্ধ দ্রবিড়-ধার্ম্মিকের ইচ্ছানুসারে বহুতর ধন দানপূর্ব্বক তাহার অভিলাষ পূর্ণ করিয়া, পথে সুন্দর সুন্দর স্থানে ইচ্ছানুসারে বাস করতঃ অল্পদিনেই উজ্জয়িনীতে আসিলেন।

---

(१) हेमकूटस्य स्मरता । (२) उष्णमुष्णमायतं । (३) ववन्ध बान्धवेष्वप्यधिकां । (४) अभिमतेष्वभिरमणीयेषु ।

आकस्मिकागमनप्रहृष्टसम्भ्रान्तानां पौराणामर्घकमलानीव नमस्काराञ्जलि-सहस्राणि प्रतीच्छन्नतर्कित एव विवेश (१) नगरीम् (प)। अहमहमिकया च प्रधावितादतिहर्षरसविह्वलात् परिजनात् (२) "देव ! द्वारि चन्द्रापीडो वर्त्तते" इत्युपलभ्यास्य पिता निर्भरानन्दमन्दगमनो मन्दर इव क्षीरोदजलमुत्तरीयांशुकम-मलमागलितमाकर्षन्, प्रहर्षनेत्रजलविन्दुवर्षी मुक्तमुक्ताफलासार इव (३) कल्प-पादपः, प्रत्यासन्नवर्त्तिभिर्जरापाण्डुमौलिभिश्चन्दनविलेपनैरनुपहतक्षौमधारिभिः केयूरिभिरुष्णीषिभिः किरीटिभिः शेखरिभिर्बहुकैलासामिव बहुक्षीरोदामिव क्षितिं दर्शयद्भिः प्रतिपन्नासि-वेत्र-च्छत्र-केतु-चामरैरनुगम्यमानो राजसहस्रैश्चरणा-

---

(प) आकस्मिकेति। आकस्मिकेन असम्भावितेन आगमनेन प्रहृष्टाश्च ते सम्भ्रान्ताः सत्वराश्चेति ते तथोक्तास्तेषां। अर्घकमलानीव पूजार्थपद्मानीव। प्रतीच्छन् गृह्णन्। अत्रोपमालङ्कारः।

(फ) अहमिति। किञ्च। उपलभ्य ज्ञात्वा। अस्य चन्द्रापीडस्य, पिता तारापीडः। निर्भरेण अतिमात्रेण आनन्देन मन्दं मन्थरं गमनं यस्य सः। मन्दरः समुद्रमन्थनसमये मन्दराचलः क्षीरोदस्य सागरस्य जलमिव, आगलितं स्कन्धदेशाद्विच्युतं अमलं उत्तरीयांशुकं आकर्षन्। अत्रोपमावृत्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः। प्रहर्षनेत्रजलविन्दून् आनन्दाश्रुकणान् वर्षतीति सः, अतएव मुक्तस्त्यक्तः मुक्ताफलानां आसारो धारा येन स तादृशः कल्पपादप इव विद्यमानः। अत्रोपमालङ्कारः। प्रत्यासन्नवर्त्तिभिः सर्वदा सहचारिभिरित्यर्थः। जरया वार्द्धकेन पाण्डवः शुभ्राः मौलयो मस्तकानि येषां तैः। अनुपहतानि अच्छिन्नानि क्षौमाणि पट्टवसनानि धारयन्तीति तैः। बहवः कैलासाः पर्वता यस्यां तामिव, तथा बहवः क्षीरोदाः समुद्रा यस्यां तामिव, क्षितिं भुवं दर्शयद्भिः प्रकटयद्भिः, समानशुभ्रत्वादात्मनामेव कैलासक्षीरोदयोस्तुल्यत्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षयो-र्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा प्रतिपन्नानि विनयप्रदर्शनाय धृतानि असि-वेत्र-च्छत्र-केतु-चामराणि यैस्तैः, राजसहस्रैः सामन्तसमूहैरनुगम्यमानः सन्।

(प) চন্দ্রাপীড়ের আকস্মিক আগমনে পুরবাসিগণ আনন্দে ব্যস্ত হইয়া পড়িল, তখন পূজার পদ্মের ন্যায় নমস্কার করিবার সময়ে তাহাদের অঞ্জলিসমূহ গ্রহণ করতঃ চন্দ্রাপীড়, সকলের অতর্কিতভাবেই রাজধানীতে প্রবেশ করিলেন। (ফ) তাহার পর রাজ-পরিজনবর্গ আনন্দে বিহ্বল হইয়া, 'আমি আগে আমি আগে' এইরূপে ধাবিত হইয়া রাজার নিকট যাইয়া বলিল— "মহারাজ! চন্দ্রাপীড় দ্বারে উপস্থিত হইয়াছেন।" চন্দ্রাপীড়ের পিতা তারাপীড় পরিজনবর্গের নিকট এই সংবাদ জানিয়া, অত্যন্ত আনন্দবশতঃ মন্থর গতিতে চরণ দ্বারাই চন্দ্রাপীড়ের প্রত্যুদ্গমন করিলেন; তখন মন্দর পর্ব্বত যেমন ক্ষীরোদসাগরের জল আকর্ষণ করিয়াছিল, সেইরূপ তিনি বিগলিত নির্ম্মল উত্তরীয় বসন আকর্ষণ করিতেছিলেন এবং আনন্দাশ্রু বর্ষণ করায় তিনি মুক্তাবর্ষী কল্পবৃক্ষের ন্যায় বিরাজ করিতেছিলেন; আর সর্ব্বদা সহচর, বার্দ্ধক্যনিবন্ধন শুভ্রমস্তক, চন্দনাঙ্গরাগশালী ও অচ্ছিন্ন পট্টবসনধারী এবং কেয়ূর, উষ্ণীষ, কিরীট ও শিরো-

---

(१) आविवेश। (२) प्रधावितानतिहर्षरसविह्वलान् परिजनान्। (३) क्वचिन् मुक्तपदं नास्ति।

ভ্যামিব প্রত্যুজ্জগাম (ফ)। চন্দ্রাপীড়োঽপি দৃষ্ট্বা (১) পিতরং দূরাদেবাবতীর্য্য বাজিনশ্চূড়ামণিমরীচিমালিনা মৌলিনা মহীমগচ্ছৎ (ব)। অথ প্রসারিতভুজেন "এহ্যেহি" ইত্যাহূয় পিত্রা গাঢ়মুপগূঢ়ঃ সুচিরং পরিষ্বজ্য তৎ-কালসন্নিহিতানাঞ্চ মাননীয়ানাং কৃতনমস্কারঃ করে গৃহীত্বা বিলাসবতীভবন-মনীয়ত রাজ্ঞা (ভ)। তয়াপি তথৈব সর্বান্তঃপুরপরিবারয়া প্রত্যুদ্গম্যাভি-নন্দিতাগমনঃ (২) কৃতাগমনমঙ্গলাচারো দিগ্বিজয়সম্বদ্ধাভিরেব কথাভিঃ কঞ্চিৎ কালং স্থিত্বা শুকনাসং দ্রষ্টুমাযযৌ (ম)। তত্রাপ্যমুনৈব ক্রমেণ সুচিরং স্থিত্বা নিবেদ্য বৈশম্পায়নং স্কন্ধাবারবর্ত্তিনং কুশলিনং, আলোক্য চ মনোরমাং, আগত্য বিলাসবতীভবন এব সর্বাঃ স্নানাদিকাঃ পরবশ ইব ক্রিয়া নিরবর্ত্তয়ৎ। অপরাহ্ণে

(ব) চন্দ্রেতি। বাজিনো ঘোটকাৎ। চূড়ামণের্মরীচিমালা অস্যাস্তীতি তেন, মৌলিনা মস্তকেন, মহীং ভূমিং, অগচ্ছৎ প্রাপ্নোৎ অস্পৃশদিত্যর্থঃ, নমস্কারার্থমিতি ভাবঃ। অত্র ছেকানুপ্রাসোঽলঙ্কারঃ।

(ভ) অথেতি। উপগূঢ় আলিঙ্গিতঃ সন্ সুচিরং পরিষ্বজ্য পিতরং প্রত্যালিঙ্গ্যেত্যর্থঃ। মাননীয়ানাং জনানামিতি সম্বন্ধবিবক্ষয়া ষষ্ঠী। কৃতো নমস্কারো যেন স তথোক্তশ্চন্দ্রাপীড়ঃ।

(ম) তয়েতি। সর্বাণি অন্তঃপুরাণি অন্তঃপুরস্থজনাঃ পরিবারা যস্যাস্তয়া, তয়াপি বিলাসবত্যাপি। অভিনন্দিতং আগমনং যস্য সঃ, তথা কৃত আগমনস্য মঙ্গলাচারো যস্য স চন্দ্রাপীড়ঃ।

(য) তত্রেতি। পরবশ ইব পরাধীন ইব, কাদম্বর্য্যুৎকণ্ঠয়া শূন্যহৃদয়ত্বাদিতি ভাবঃ। নিরবর্ত্তয়ৎ নিষ্পাদিতবান্।

মাল্য-সমন্বিত সামন্তরাজগণ, পৃথিবীকে বহুতর কৈলাসপর্ব্বত এবং বহুতর ক্ষীরোদসাগর-সম্পন্নের ন্যায় দেখাইতে দেখাইতে, তরবারি, বেত্র, ছত্র, ধ্বজ ও চামর ধারণ করিয়া মহারাজ-তারাপীড়ের অনুগমন করিলেন। (ব) চন্দ্রাপীড়ও পিতাকে দেখিয়া দূর হইতেই অশ্ব হইতে অবতরণ করিয়া চূড়ারত্নের কিরণজালব্যাপ্ত মস্তক দ্বারা ভূতল স্পর্শ করিলেন। (ভ) তদনন্তর পিতা তারাপীড় "এস এস" এই ভাবে আহ্বান করিয়া বাহুযুগল প্রসারণ-পূর্ব্বক গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন; চন্দ্রাপীড়ও বহুকাল যাবৎ পিতাকে প্রত্যালিঙ্গন করিয়া, সেই সময়ে নিকটবর্ত্তী মাননীয় ব্যক্তিদিগকে নমস্কার করিলেন; তাহার পর রাজা হস্ত ধারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়কে বিলাসবতীর গৃহে নিয়া গেলেন। (ম) বিলাসবতীও সেই ভাবেই অন্তঃপুরস্থ সকল রমণীগণে পরিবৃত হইয়া প্রত্যুদ্গমনপূর্ব্বক, চন্দ্রাপীড়ের আগমনের অভি-নন্দন করিয়া মঙ্গলাচরণ সম্পাদন করিলেন; তাহার পর চন্দ্রাপীড় দিগ্বিজয়সংক্রান্ত নানাবিধ কথোপকথনে সেখানে কিছুকাল থাকিয়া শুকনাসকে দেখিতে গেলেন। (য) সেখানেও সেই ভাবেই অনেক সময় থাকিয়া 'বৈশম্পায়ন সৈন্যগণের ভিতরে রহিয়াছেন এবং ভাল আছেন' এই কথা জানাইয়া, মনোরমার সহিত সাক্ষাৎ করিয়া, ফিরিয়া আসিয়া, বিলাসবতীর গৃহেই স্নানাদি সমস্ত কার্য্য পরাধীনের ন্যায় হইয়া সম্পাদন করিলেন এবং অপরাহ্নে নিজের

(১) ক্বচিৎ চন্দ্রাপীড়োঽপীতি ন দৃশ্যতে। দৃষ্ট্বা চ। (২) প্রত্যুদ্গমাভিনন্দিতাগমনঃ।

निजमेव भवनं (१) आयासीत् (य)। अत्र च रणरणक-खिद्यमान-मानसः कादम्बर्य्या विना न केवलमात्मानं स्वभवनमवन्तीनगरं वा सकलमेव महीमण्डलं शून्यममन्यत (र) ततो गन्धर्वराजपुत्रीवार्त्ताश्रवणोत्सुकश्च महोत्सवमिव ईप्सितवरप्राप्तिकालमिव अमृतोत्पत्तिसमयमिव पत्रलेखागमनं प्रत्यपालयत्। (ल)

ततः कतिपयदिवसापगमे मेघनादः पत्रलेखामादायागच्छत्, उपानयच्चैनाम्। कृतनमस्काराञ्च दूरादेव स्मितेन प्रकाशितप्रीतिश्चन्द्रापीडः प्रकृतिवल्लभामपि कादम्बरीसकाशात् प्रसादलब्धापरसौभाग्यामिव वल्लभतरतामुपागतामुत्थायातिशयदर्शितादरमालिलिङ्ग पत्रलेखाम्, मेघनादञ्च प्रणतं पृष्ठे करकिशलयेन पस्पर्श (व)। समुपविष्टश्च (२) अब्रवीत्—"पत्रलेखे! कथय, तत्रभवत्या महाश्वेतायाः मदलेखाया देव्याः कादम्बर्य्याश्च कुशलम्? कुशली वा सकलः (३) तमालिका-केयूरकादिपरिजनः?" इति। साब्रवीत्—"देव! यथाज्ञापयसि भद्रम्। त्वामर्च्चयति शेखरीकृताञ्जलिना ससखीजना सपरिजना देवी कादम्बरी"

(र) तत्रेति। रणरणकेण कादम्बर्य्या उत्कण्ठोद्वेगेन खिद्यमानं पीड्यमानं मानसं यस्य सः।

(ल) तत इति। प्रत्यपालयत् प्रतीक्षितवान्। अत्रोपमात्रयस्य मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(व) तत इति। एनां पत्रलेखां, उपानयत् चन्द्रापीडसमीपे उपास्थापयत्। प्रकृत्या स्वभावेनैव वल्लभा दयिता तामपि, प्रसादेन अनुग्रहेण लब्धमपरं सौभाग्यं यया तामिव, अतएव वल्लभतरतां अतिशयेन वाल्लभ्यं, उपागतां प्राप्तां पत्रलेखाम्। अतिशयेन दर्शित आदरो यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा आलिलिङ्ग। अत्र क्रियोत्प्रेक्षापदार्थहेतुककाव्यलिङ्गयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) समुपेति। मदलेखया सहेति समदलेखा तस्याः। शेखरीकृतः शिरोभूषणीकृतो योऽञ्जलिस्तेन।

বাড়ীতেই গেলেন। (র) সেখানে উৎকণ্ঠাবশতঃ মন অস্থির হইয়া পড়িল এবং কাদম্বরীর বিরহে কেবল আপনাকে, নিজের বাটীকে এবং উজ্জয়িনী নগরীকে নহে—সমস্ত ভূমণ্ডলকেই শূন্য বলিয়া মনে করিতে লাগিলেন (ল) তাহার পর গন্ধর্ব্বরাজনন্দিনী কাদম্বরীর বৃত্তান্ত শুনিবার জন্য উৎসুক হইয়া, মহোৎসবের ন্যায়, অভীষ্ট বর লাভ-সময়ের ন্যায় এবং অমৃতের উৎপত্তিকালের ন্যায় পত্রলেখার আগমনের প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন।

(ব) তাহার পর কয়েক দিন অতীত হইলে মেঘনাদ পত্রলেখাকে নিয়া আসিল এবং তাহাকে চন্দ্রাপীড়ের নিকটে উপস্থিত করিল; তখন পত্রলেখা নমস্কার করিলে চন্দ্রাপীড় দূর হইতেই ঈষৎ হাস্য করিয়া তাহার প্রতি প্রণয় প্রকাশ করিলেন এবং সে, স্বভাবতই প্রীতিভাজন হইলেও কাদম্বরীর নিকট হইতে অনুগ্রহে অন্য সৌভাগ্য লাভ করিয়াছিল বলিয়াই যেন আরও বেশী প্রীতিভাজন হইয়াছিল; তাই চন্দ্রাপীড় উঠিয়া অত্যন্ত আদর দেখাইয়া তাহাকে আলিঙ্গন করিলেন এবং মেঘনাদ নমস্কার করিলে করপল্লব দ্বারা তাহার পৃষ্ঠে স্পর্শ করিলেন। (শ) তাহার পর উপবেশন করিয়া বলিলেন—"পত্রলেখে! বল,—মাননীয়া মহাশ্বেতাদেবী ও

(१) कुमारभवनं। (२) समुपविष्टश्च। (३) बाह्यः सकलः।

इति (श)। एवमुक्तवतीं पत्रलेखामादाय मन्दिराभ्यन्तरं विसर्जितराजलोको विवेश। तत्र चोत्ताम्यता मनसा धारयितुमपारयन् कुतूहलम्, अतिप्रीत्या दूरसमुत्सारित-परिजनः प्रविश्यागार-प्ररूढ़ायाः स्थलकमलिन्याः पृथुभिरुन्नालैः पलाशैरुपरचितातपत्रकृत्यायाः (१) मध्यास्य मध्यभागमन्यतरस्य मरकतपताकायमानस्य पत्रमण्डपस्य तले चरणारविन्देन समुत्सार्य्य सुखप्रसुप्तं हंसमिथुनमुपविश्याप्राक्षीत् (ष) "पत्रलेखे! कथय, आगते मयि (२) कथमसि स्थिता? कियन्ति वा दिनानि? कीदृशो वा देवीप्रसादः? का वा गोष्ठ्यः समभवन्? कीदृश्यो वा कथाः समजायन्त? को वातिशयेनास्मान् स्मरति? कस्य वा गरीयसी प्रीतिः" इति (स)। एवं पृष्टा च व्यजिज्ञपत्—"देव! दत्तावधानेन श्रूयताम्, यथा स्थितास्मि, यावन्ति वा दिनानि, यादृशो वा देवीप्रसादः

(ष) एवमिति। विसर्जितः परित्यक्तो राजलोकः सामन्तवर्गो येन स तथोक्तश्चन्द्रापीड़ः। उत्ताम्यता कादम्बरीविरहेण अस्थिरतां गच्छता। धारयितुं सम्वरीतुं। अगारप्ररूढ़ाया गृहाभ्यन्तरजातायाः, पृथुभिर्विशालैः, तथा उन्नतानि उत्थितानि नालानि येषां तैः, पलाशैः पत्रैः, उपरचितं कृतं आतपत्रकृत्यं छत्रकार्य्यं यया तस्याः स्थलकमलिन्याः, मध्यभागं अध्यास्य अधिष्ठाय। मरकतपताकायमानस्य मरकतमणिनिर्म्मितपताकावदाचरतः।

(स) पत्रेति। कियन्ति वा दिनानि स्थितासीति शेषः। देव्याः कादम्बर्य्याः प्रसादोऽनुग्रहः। गोष्ठ्यः परस्परालापाः। "गोष्ठी सभायां संलापे" इति विश्वः। प्रीतिर्मयीति शेषः।

মদলেখার সহিত কাদম্বরী দেবীর মঙ্গল ত? এবং তমালিকা ও কেয়ূরক প্রভৃতি সমস্ত পরিজনবর্গ ভাল আছে ত?।" পত্রলেখা বলিল—"রাজপুত্র! আপনি যেরূপ বলিতেছেন; তাহাদের সকলেরই মঙ্গল। সখীজন ও পরিজনগণের সহিত কাদম্বরী দেবী মস্তকে অঞ্জলিপুট স্থাপন করিয়া আপনাকে নমস্কার করিয়াছেন।" (ষ) পত্রলেখা এইরূপ বলিলে তাহাকে লইয়া এবং রাজগণকে বিদায় দিয়া গৃহমধ্যে প্রবেশ করিলেন; সেখানেও উতলা মনে কৌতুক সংবরণ করিতে না পারিয়া, অত্যন্ত প্রীতিবশতঃ পরিজনদিগকে দূরে সরাইয়া ভিতরে প্রবেশ করিলেন; সেই গৃহের অভ্যন্তরদেশেই একটি স্থলপদ্মিনী জন্মিয়াছিল, সে, বিস্তৃত ও উন্নাল পত্র সমূহ দ্বারা ছত্রের কার্য্য করিতেছিল; তাহার মধ্যে এবং মরকতমণি-নির্ম্মিত পতাকার ন্যায় অপর একটি পত্রমণ্ডপের তলে উপবেশন করিয়া চন্দ্রাপীড় চরণারবিন্দদ্বারা সুখসুপ্ত দুইটি হংসকে সরাইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন। (স) "পত্রলেখে! বল, আমি আসিলে পর তুমি কি ভাবে ছিলে? কয় দিনই বা ছিলে? কাদম্বরীদেবীর অনুগ্রহই বা তোমার উপর কিরূপ হইয়াছিল? পরস্পর আলাপই বা কি হইয়াছিল? প্রস্তাবই বা কিরূপ হইত? কেই বা আমাকে অধিক স্মরণ করিত? এবং আমার প্রতি কাহারই বা অধিক প্রীতি জানিয়াছ?।"

(१) अगारमध्यप्ररूढ़ायाः। (२) क्वचित् आगते मयीति पाठो नास्ति।

यथा वा गोष्ठ्यः समभवन्, याश्चास्याश्च कथाः समजायन्त, यो वातिशयेन त्वां स्मरति, यस्य वा त्वयि गरीयसी प्रीतिरस्तीति। (ङ)

"ततः त्वय्यागते देवि केयूरकेण सह प्रतिनिवृत्याहं तथैव कुसुम-शयनीय-समीपे समुपाविशम्, अतिष्ठञ्च सुखं नवनवाननुभवन्ती देवीप्रसादान् (च)। किं बहुना, प्रायेण मम चक्षुषि चक्षुः, वपुषि वपुः, करे करपल्लवः, (१) नामाक्षरेषु वाणी, प्रीतौ हृदयं देव्याः सकलमेव तं दिवसमभवत् (छ)। अपराह्णे च मामेवावलम्ब्य निष्क्रम्य हिमगृहकात् सञ्चरन्ती यदृच्छया निषिद्धपरिजना वल्लभबालोद्यानं जगाम। तत्र सुधाधवलां कालिन्दीजलतरङ्गमय्येव मरकत-

(ङ) एवमिति। किञ्च, एवं पृष्टा पत्रलेखेति शेषः। दत्तं यदवधानमेकाग्रता तेन।

(च) तत इति। तथैव पूर्व्ववदेव, कुसुमशयनीयसमीपे कादम्बर्य्याः पुष्पशय्यानिकटे।

(छ) किमिति। मम चक्षुषि चक्षुरित्यनेन मद्दर्शनातिरेकः वपुषि वपुरित्यनेन सम्मेलनाधिक्यं, करे करपल्लव इत्यनेन मयि प्रेमातिशयः, मम नामाक्षरेषु वाणी वाक्यं एतेन वारं वारं मम नामोच्चारणं, मम प्रीतौ च हृदयमित्यनेन च मम प्रीतिजनने चित्तैकाग्रता व्यज्यते। अत्र अभवदित्येकया क्रियया बहूनां कर्त्तॄणामभि-सम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः। दिवसमिति "अभिविधौ कालाध्वभावा"दिति द्वितीया।

(ज) अपेति। यदृच्छया स्वेच्छया। वल्लभं प्रियं यद्बालोद्यानं नूतनोपवनं तत्। कालिन्द्या यमुनाया जलतरङ्गै र्निर्म्मितेति कालिन्दीजलतरङ्गमयी तयेव, नीलत्वसाम्यादिति भावः, मरकतसोपानमालया करणेन, सुधया चूर्णलेपेन धवलां तां, प्रमदवनस्य वेदिकां परिष्कृतोच्चभूमिस्थलाम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ঙ) এইরূপ জিজ্ঞাসা করিলে পত্রলেখা জানাইল—"রাজকুমার! মনোযোগ দিয়া শুনুন, আমি যে ভাবে ছিলাম, যতদিন ছিলাম, কাদম্বরীর যেরূপ অনুগ্রহ হইয়াছিল, পরস্পর যে সকল আলাপ হইত, যেরূপ প্রস্তাব চলিত, যে আপনাকে অধিক স্মরণ করিত এবং আপনার প্রতি যাহার অধিক প্রণয় জানিয়াছি।"

(চ) "আপনি সেখান হইতে আসিলে আমি কেয়ূরকের সহিত ফিরিয়া যাইয়া, পূর্ব্বের ন্যায় কাদম্বরীদেবীর পুষ্পশয্যার নিকটে উপবেশন করিলাম এবং তাঁহার নূতন নূতন অনুগ্রহ অনুভব করতঃ সুখে অবস্থান করিতে লাগিলাম। (ছ) অধিক আর কি বলিব, সেই সমস্ত দিনটার মধ্যে প্রায়ই আমার চোখে চোখ, আমার শরীরে শরীর, আমার হস্তে হস্তপল্লব, আমার নাম-বর্ণে বাক্য এবং আমার সন্তোষ-সাধনেই দেবীর মন ছিল। (জ) তাহার পর অপরাহ্ণকালে আমাকে লইয়াই হিমগৃহ হইতে বাহির হইয়া ইচ্ছানুসারে বিচরণ করতঃ, পরিজনদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, প্রীতিকর নূতন উপবনে গমন করিলেন; সেখানে যমুনার জলতরঙ্গ দ্বারা নির্ম্মিতের ন্যায় মরকতমণির সোপানশ্রেণী দ্বারা প্রমদবনের শুভ্রবর্ণ বেদিকার উপরে আরোহণ করিলেন। (ঝ) সেই বেদিকার উপরে একটি মণিময়স্তম্ভ অবলম্বন

(१) करपल्लवं।

সোপানমালয়া প্রমদবনবেদিকামধ্যারোহত্ (খ)। তস্যাঞ্চ মণিস্তম্ভাবষ্টম্ভ-স্থিতা স্থিত্বা চ মুহূর্ত্তমিব হৃদয়েন সহ দীর্ঘকালমবধার্য্য কিমপি ব্যাহর্ত্তু-মিচ্ছন্তী নিশ্চলধৃততারকেণ নিষ্পন্দপক্ষ্মণা চক্ষুষা মুখং মে সুচিরং ব্যলো-কয়ত্ (গ)। বিলোকয়ন্ত্যেব চ কৃতসঙ্কল্পা মদনাগ্নিং প্রবেষ্টুমিচ্ছন্তী সস্নাবিব স্বেদাম্ভসঃ স্রোতসি, (১) স্রোতসেব তরলীকৃতা সমকম্পত, কম্পিতাঙ্গী চ পতনভিয়েবাগৃহ্যত বিষাদেন। (ঘ)

অথ ময়া বিদিতাভিপ্রায়য়া তন্মুখ-বিনিবেশিত-নিষ্কম্প-নয়ন-দত্তাবধানয়া 'আজ্ঞাপয়' ইতি বিজ্ঞাপিতে নিজাবয়বৈরপি বেপথুমদ্ভির্নিবার্য্যমাণেব, রহস্য-শ্রবণ-লজ্জয়া আত্মপ্রতিমামপি লিখিত-মণিকুট্টিমেন চরণাঙ্গুষ্ঠেনাপক্রমায়েবা-

---

(গ) তস্যামিতি। কিঞ্চ। মণিস্তম্ভস্য অবষ্টম্ভেন আশ্রয়েন অবলম্বনেন স্থিতা হৃদয়েন সহ দীর্ঘ-কালমবধার্য্য মনসা সহ বহুকালং সম্মন্ত্রণেন নিশ্চিত্য। ব্যাহর্ত্তুং বক্তুং। নিশ্চলং যথা স্যাত্তথা ধৃতা তারকা যস্য তেন, নিষ্পন্দানি পক্ষ্মাণি লোমানি যস্য তেন।

(ঘ) বিলোকেতি। কৃতসঙ্কল্পা বক্তুং মর্ত্তুঞ্চেতি শেষঃ। সস্নাবিব স্নানং কৃতবতীব। অন্যোঽপি মর্ত্তুকামোঽগ্নিং প্রবেষ্টুমিচ্ছন্ পূর্ব্বং স্নাতি। স্রোতসা ঘর্ম্মপ্রবাহেণ তরলীকৃতেব চালিতেব সতী সমকম্পত। অন্যোঽপি স্রোতসা তরলীকৃতঃ সন্ কম্পতে। বিষাদেন বিরহদুঃখেন, কম্পিতাঙ্গী কাদম্বরী, পতনভিয়েব তস্যা এব পতনভয়েনেব অগৃহ্যত অবালম্ব্যত। অন্যমপি মূর্চ্ছাগমাদিনা কম্পিতাঙ্গং পতনভয়েনাপরো গৃহ্ণাতি। অত্র প্রথমে দ্বে ক্রিয়োৎপ্রেক্ষে, তৃতীয়া চ গুণোৎপ্রেক্ষা।

(ঙ) অথেতি। বিদিতঃ অভিপ্রায়ঃ কাদম্বর্য্যা মনোভাবপ্রকাশাশয়ো যয়া তয়া, তস্যাঃ কাদম্বর্য্যা মুখে বিনিবেশিতে স্থাপিতে নিষ্কম্পে নয়নে যয়া সা চাসৌ দত্তমবধানং যয়া সা চেতি তয়া। বিজ্ঞাপিতে বিজ্ঞাপনে কৃতে। বেপথুমদ্ভিঃ কম্পবদ্ভিঃ। অন্যোঽপি বেপথুমান্ সন্ বন্ধুমনিষ্টান্নিবারয়তি। অত্র ক্রিয়োৎ-

---

পূর্ব্বক কিছুকাল থাকিয়া, মনের সহিত বহুকাল যাবৎ স্থির করিয়া, কোন বিষয় বলিতে ইচ্ছা করতঃ বহুকাল যাবৎ আমার মুখের দিকে চাহিয়া রহিলেন; তখন তিনি নয়নযুগলের তারা দুইটি আমার মুখের উপরে নিশ্চলভাবে রাখিয়াছিলেন এবং নয়নের লোমগুলি নিস্পন্দ হইয়া-ছিল। (ঘ) এই ভাবে দৃষ্টিপাত করতঃ কৃতসঙ্কল্প হইয়া মদনানলে প্রবেশ করিতে ইচ্ছা করিয়া ঘর্ম্মজলের স্রোতেই যেন স্নান করিলেন, সেই স্রোতে সঞ্চালিত হইয়াই যেন কাঁপিতে লাগিলেন এবং তখন তাঁহার পড়িয়া যাইবার ভয়েই যেন বিষাদ আসিয়া কম্পিতাঙ্গ অবস্থায় তাঁহাকে ধারণ করিল।

(ঙ) তাহার পর আমি অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া, তাঁহার মুখমণ্ডলে নিশ্চলভাবে নয়নযুগল সংস্থাপন করিয়া, মনোযোগপূর্ব্বক বলিলাম—'দেবি! আপনার মনের ভাব ব্যক্ত করুন' এইরূপ জানাইলে তাঁহার নিজের অঙ্গগুলিও কম্পিত হইয়া যেন তাঁহাকে বারণ

---

(১) স্বেদাম্ভঃস্রোতসি।

स्पृशन्ती, भवनकलहंसान् कुट्टिमोल्लेखमुखर-नूपुरेण चरणारविन्देन विसर्जयन्ती, कर्णोत्पलमधुकरानपि स्विद्यद्वदन-व्यजनीकृतेन (१) अंशुकपल्लवेनोत्सारयन्ती, ताम्बूलवीटिका-शकलमुत्कोचमिव दन्तखण्डितं शिखण्डिने ददती, वनदेवता-श्रवणशङ्कितेव मुहुर्मुहुरितस्ततो विलोकयन्ती, वक्तुकामापि न शक्नोति स्म किञ्चिदपि लज्जाकलितगद्‌गदा गदितुम्, (ङ)। प्रयत्नतोऽपि चास्या निःशेषं ज्वलता मदनानलेनेव दग्धा, प्रवहता नयनोदकेनेवोढ़ा, प्रविशद्भिर्दुःखैरिवाक्रान्ता, पतद्भिः कुसुमचापशरैरिव शकलीकृता, निष्पतद्भिर्निश्वसितैरिव (२) निर्वासिता,

त्प्रेक्षालङ्कारः। रहस्यस्य गुप्तविषयस्य श्रवणलज्जया। अयन्तु उत्तरवाक्येष्वपि हेतुरिति बोध्यम्। लिखितं संघृष्टं मणिकुट्टिमं येन तेन चरणाङ्गुष्ठेन, अपक्रमायेव अपसरणायेव, आत्मप्रतिमामपि स्वप्रतिबिम्बमपि आमृशन्ती स्पृशन्ती। क्रियोत्प्रेक्षा। कुट्टिमस्य उल्लेखेन घर्षणेन मुखरं शब्दायमानं नूपुरं यस्य तेन। चरणारविन्देन, भवनकलहंसान् विसर्जयन्ती अपसारयन्तीव। अत्र प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा। स्विद्यतो घर्म्मार्द्रीभवतो वदनस्य व्यजनीकृतेन अंशुकपल्लवेन चेलाञ्चलेन, कर्णोत्पलमधुकरानपि उत्सारयन्तीव। प्रतीयमाना क्रियोत्प्रेक्षा। शिखण्डिने भवनमयूराय, दन्तैः खण्डितं चर्वितं, ताम्बूलवीटिकायाः शकलं खण्डं उत्कोचमिव अपसरणस्येति भावः, ददती। अन्योऽप्यपसर्त्तुं कस्मैचिदुत्कोचं ददाति। आत्युत्प्रेक्षा। तथा वनदेवतानां श्रवणात् शङ्कितेव सती। क्रियोत्प्रेक्षा। लज्जया कलितौ विहितौ गद्गदः अस्पष्टस्वरो यस्याः सा। गदितुं वक्तुम्।

(च) प्रयत्नत इति। अस्याः कादम्बर्य्या वाणी, निःशेषं सम्पूर्णावयवं यथा स्यात्तथा ज्वलता मदनानलेन दग्धेव सती, प्रवहता नयनोदकेनाम्बुना ऊढ़ा स्थानान्तरं नीतेव सती, प्रविशद्भिर्मुखविवरद्वारेण हृदयं गच्छद्भिर्दुःखैराक्रान्तेव सती, पतद्भिः कुसुमचापस्य मदनस्य शरैः शकलीकृता खण्डीकृता छिन्नेव सती,

করিতে লাগিল ; গুপ্ত বিষয় শুনিবার লজ্জায় চরণের অঙ্গুষ্ঠদ্বারা মণিময় ভূতল কর্ষণ করিয়া সরিয়া যাইবার নিমিত্তই যেন নিজের প্রতিবিম্বকেও স্পর্শ করিতে লাগিলেন ; মণিময়ভূতল কর্ষণ করায় শব্দায়মান-নূপুর-সংযুক্ত চরণপদ্মদ্বারা গৃহপালিত হংসদিগকে যেন সরাইয়া দিতে লাগিলেন ; ঘর্ম্মাক্ত মুখমণ্ডলে বাতাস করিবার জন্য সঞ্চালিত বসনাঞ্চলদ্বারা কর্ণোৎপলস্থিত ভ্রমরদিগকেও যেন তাড়াইয়া দিতেছিলেন ; গৃহপালিত ময়ূরটিকে উৎকোচের ন্যায় দন্তচর্বিত তাম্বূলখণ্ড দান করিতে লাগিলেন এবং বনদেবতারা শুনিবেন, এই আশঙ্কায় যেন বারংবার ইতস্ততঃ দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন ; এদিকে লজ্জা আসিয়া কণ্ঠস্বর অস্পষ্ট করিয়া ফেলিল ; তাই তিনি বলিতে ইচ্ছা করিলেও কিছুই বলিতে পারিলেন না। (চ) পূর্ণমাত্রায় প্রজ্বলিত মদনানলে যেন তাঁহার বাক্য দগ্ধ করিয়া ফেলিয়াছিল, নয়নজলপ্রবাহে যেন ভাসাইয়া নিয়াছিল, দুঃখসকল হৃদয়ে প্রবেশ করিতে থাকিয়াই যেন আক্রমণ করিয়াছিল, মদনের বাণ পতিত হইতে থাকিয়াই যেন খণ্ড খণ্ড করিয়া ফেলিয়াছিল, নিশ্বাস নির্গত

(१) स्विद्यद्वदनव्यजनचिह्नेन। (२) निःश्वसितैरिव, श्वसितैरिव।

हृदयवर्त्तिभिश्चिन्तागतैरिव विधृता, निश्वासपायिभिः (१) मधुकरकुलैरिव निपीता, न प्रावर्त्तत वाणी (च)। केवलं दुःखसहस्रगणनाय मुक्ताक्षमालिकामिव कल्पयन्ती गलद्भिरस्पृष्टकपोलस्थलैः शुचिभिरधोमुखी नयनजलबिन्दुभिर्दुर्दिनमदर्शयत्। (छ)

तदा च तस्याः सकाशादभ्यस्तेव लज्जापि लज्जालोलताम्, विनयोऽपि विनयातिशयम्, मुग्धतापि मुग्धताम्, वैदग्ध्यमपि वैदग्ध्यम्, भयमपि भीरुताम्, विभ्रमोऽपि विभ्रमिताम्, विषादोऽपि विषादिताम्, विलासोऽपि विलासम्। (ज)

निष्पतद्भिर्गच्छद्भिर्निःश्वसितैर्निःश्वासवायुभिः निर्वासितेव बहिष्कृतेव सती, हृदयवर्त्तिभिश्चिन्तागतैः विधृता आकृष्टेव सती, निश्वासपायिभिः सौरभातिशयादिति भावः मधुकरकुलैर्भ्रमरगणैः निपीतेव सती च, प्रयतमानाऽपि न प्रावर्त्तत मुखान्न निरगच्छत्। अत्र प्रत्येकविशेषण एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(छ) केवलमिति। कादम्बरी अधोमुखी सती दुःखसहस्रगणनाय मुक्ताक्षमालिकां मुक्तामयजपमालां कल्पयन्तीव सृजन्तीव, अधोमुखत्वादेवास्पृष्टकपोलस्थलैः सद्भिर्गलद्भिः शुचिभिः शुभ्रवर्णैर्नयनजलबिन्दुभिः केवलं दुर्दिनं वृष्टिं अदर्शयत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। "घनान्धकारे वृष्टौ च दुर्दिनं कवयो विदु"रिति साधः।

(ज) तदेति। किञ्च, लज्जापि तदा तस्याः कादम्बर्याः सकाशात् लज्जालोलां लज्जाकार्यं सङ्कुचितभावं अभ्यस्तेव। तथा च इयन्तं कालं यावत् स्थितापि लज्जा स्वकार्यं सङ्कुचितभावं न प्रकटितवती, किन्तु तदानीं तस्याः सकाशाच्छिक्षमाणा सती सर्वथैव तं प्रकटितवतीति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च तस्या लज्जातिशयेन सङ्कुचितभावो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। अन्यत्रापीदृश एव भावोऽलङ्कारो ध्वनिश्चोन्नेयः। विभ्रमोऽपि अधीरतापि, विभ्रमितामधीरताम्।

হইতে থাকিয়া যেন নির্ব্বাসন করিয়াছিল, হৃদয়স্থিত চিন্তাসমূহে যেন আকর্ষণ করিয়া রাখিয়াছিল এবং নিশ্বাসপায়ী ভ্রমরগণ যেন পান করিয়া ফেলিয়াছিল; তাই তিনি বিশেষ যত্ন করিলেও তাঁহার মুখ হইতে বাক্য নির্গত হইতেছিল না। (ছ) অধোমুখ হইয়া সহস্র দুঃখ গণনা করিবার জন্যই যেন মুক্তাময় জপের মালা নির্ম্মাণ করিতে থাকিয়া, গণ্ডযুগল স্পর্শ না করিয়া বিগলিত শুভ্রবর্ণ অশ্রুবিন্দুদ্বারা কেবল বৃষ্টিপ্রদর্শন করিতেছিলেন।

(জ) এবং তখন লজ্জাও যেন তাঁহার নিকট হইতে লজ্জার কার্য্য শিক্ষা করিয়াছিল, বিনয়ও যেন অত্যন্ত বিনয় অভ্যাস করিয়াছিল, মুগ্ধতাও (অনভিজ্ঞতাও) যেন মুগ্ধতা শিখিয়াছিল, সৌন্দর্য্যও যেন সৌন্দর্য্য অভ্যাস করিয়াছিল, ভয়ও যেন ভীরুতা শিক্ষা করিয়াছিল, অধৈর্য্যও যেন অধীরতা শিখিয়াছিল, বিষাদও যেন বিষাদ অভ্যাস করিয়াছিল এবং বিলাসও যেন বিলাস শিখিয়াছিল।

---

(१) निःश्वासपातिभिः, निःश्वासपायिभिः।

तथाभूता च 'देवि! किमिदम्' इति विज्ञापिता मया प्रमृज्य लोहितायमानोदरे लोचने दुःखप्रकर्षेणात्मनः समुद्बन्धनायेव मृणालकोमलया बाहुलतया वेदिका-कुसुम-पालिका-ग्रथित-कुसुममालामवलम्ब्य समुन्नतैकभ्रूलता मृत्युमार्गं (१) इवावलोकयन्ती दीर्घमुष्णञ्च निश्वसितवती (झ)। तद्दुःखमुत्प्रेक्षमाणया च (२) कथनाय पुनः पुनरनुबध्यमाना मया व्रीड़या नख-मुख-विलिखित-केतकीदला (३) लिखित्वेव वक्तव्यमर्पयन्ती विवक्षास्फुरिताधरा निश्वासमधुकरानिवोपांशु सन्दिशन्ती क्षितितल-निहित-निश्चल-नयना सुचिरमतिष्ठत्। (ञ)

क्रमेण च भूयो मन्मुखे निधाय दृष्टिं पुनः पुनरप्यापूर्य्यमाणलोचनच्युतैर्मदनानलधूमधूसरां वाचमिव प्रक्षालयन्ती वाष्पजलविन्दुभिः, वाष्पजलविन्दुव्याजेन च

(झ) तथेति। लोहितायमाने अविरतरोदनादारक्तवर्णे उदरे अभ्यन्तरद्वयं ययोस्तादृशे लोचने प्रमृज्य। दुःखप्रकर्षेण कष्टातिरेकेण। वेदिकाकुसुमानां या पालिका रक्षिका दासी तया ग्रथिता या कुसुममाला तां। समुन्नता एका भ्रूलता यस्याः सा, अतएव मृत्युमार्गमवलोकयन्तीव सती। अत्र प्रथमा फलोत्प्रेक्षा द्वितीया क्रियोत्प्रेक्षा तयोश्च परस्परमिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ञ) तदिति। किञ्च, तस्याः कादम्बर्य्या दुःखं उत्प्रेक्षमाणया सम्भावयन्त्या मया। अनुबध्यमाना अनुरुध्यमाना। व्रीड़या लज्जया। नखमुखेन नखाग्रेण विलिखितं संघृष्टं केतकीदलं यया सा, अतएव वक्तव्यं विषयं लिखित्वा अर्पयन्तीव। विवक्षया स्फुरितः अधरो यस्याः सा, अतएव निश्वासमधुकरान् निश्वासपानार्थागतभ्रमरान् उपांशु निभृतं सन्दिशन्तीव, क्षितितले निहिते स्थापिते निश्चले नयने यया सा तथोक्ता सती। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षयोः पूर्व्ववत् संसृष्टिः।

(ट) क्रमेणेति। भूयः पुनरपि। आपूर्य्यमाणाभ्यां लोचनाभ्यां च्युतैर्गलितैः वाष्पजलविन्दुभिः,

(ঝ) তিনি সেইরূপ হইলে আমি জিজ্ঞাসা করিলাম—"দেবি! এ ব্যাপারটা কি?" তখন তিনি আরক্তমধ্য নয়নযুগল মার্জ্জনা করিয়া, অত্যন্তদুঃখবশতঃ নিজের উদ্বন্ধনের নিমিত্তই যেন মৃণালতুল্য কোমল বাহুলতা দ্বারা বেদিকা-পুষ্প-রক্ষিণী দাসীকর্ত্তৃক গ্রথিত পুষ্পমালা ধারণ করিয়া এবং একটি ভ্রূ উন্নমিত করিয়া মৃত্যুর পথই যেন দেখিতে লাগিয়া, দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশ্বাস ত্যাগ করিলেন। (ঞ) আমি তাঁহার মনের দুঃখ সম্ভাবনা করিয়া বলিবার জন্য বারংবার অনুরোধ করিতে লাগিলাম; তখন তিনি লজ্জাবশতঃ নখাগ্রদ্বারা কেতকীপুষ্পের, একটি দলের উপরে রেখাপাত করিতে থাকায় বক্তব্য বিষয় লিখিয়াই যেন সমর্পণ করিতে লাগিলেন এবং বলিবার ইচ্ছা করায় অধর স্পন্দিত হইয়া উঠিল; তাই তিনি নিশ্বাসপানার্থ আগত ভ্রমরদিগের নিকটেই যেন গোপনে বলিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় নয়নযুগল ভূতলে নিশ্চলভাবে রাখিয়া অনেক কাল রহিলেন।

(ট) ক্রমে পুনরায় আমার মুখের উপরে দৃষ্টি রাখিয়া, পরিপূর্ণ নয়ন হইতে বিগলিত

(१) मृत्युपाशं। (२) तद्दुःखकारणं। (३)…विलिखितैककेतकीदला।

বিলক্ষ-স্মিত-স্ফুরিতৈর্দশনাংশুভিঃ সাধ্বস-বিস্মৃতান্ পূর্ব্বান্ (১) অভিধেয়-বর্ণানিব গ্রথ্নতী কথমপি ব্যাহারাভিমুখমাত্মানমকরোৎ (ট)। অব্রবীচ্চ মাম্—"পত্রলেখে! বল্লভতয়া তস্মিন্ স্থানে ন তাতো নাম্বা ন মহাশ্বেতা ন মদলেখা ন জীবিতম্, যত্র মে ভবতী দর্শনাৎপ্রভৃতি প্রিয়াসি। ন জানে কেনাপি কারণেনাপহস্তিত-(২) সকলসখীজনং ত্বয়ি বিশ্বসিতি (৩) মে হৃদয়ম্ (ঠ)। কমপরমুপালভে, কস্য বান্যস্য কথয়ামি পরিভবম্, কেন বান্যেন সাধারণীকরোমি দুঃখম্ (ড)। দুঃখভারমিমমসহ্যমদ্য (৪) নিবেদ্য ভবত্যাস্ত্যক্ষ্যামি

মদনানলস্য ধূমেন ধূসরাং বাচং স্বয়মুচ্চার্য্যমাণং বাক্যং প্রক্ষালয়ন্তীব সতী। কিঞ্চ, বিলক্ষস্মিতং লজ্জাযুক্তং মন্দহাস্যং তেন স্ফুরিতৈর্দশনাংশুভির্দন্তকিরণৈঃ, সাধ্বসেন ভয়েন বিস্মৃতান্, পূর্ব্বান্ পূর্ব্বাবধারিতান্ বাষ্পজল-বিন্দুব্যাজেন স্থিতানিতি শেষঃ, অভিধেয়বর্ণান্ বক্তব্যার্থবোধকাক্ষরাণি গ্রথ্নতীব সতী। অত্র বাষ্পজলবিন্দূনাং বর্ত্তুলতাদিরূপত্বেন বর্ণসাম্যং দন্তকিরণানাঞ্চ বিততত্বেন সূত্রসাম্যং, সুতরাঞ্চ তৈস্তেষাং গ্রথনমুপপদ্যত ইতি বোধ্যম্। আত্মানং ব্যাহারাভিমুখং কথনায়োদ্যতমকরোৎ। অত্র সাপহ্নবা ক্রিয়োৎপ্রেক্ষালঙ্কারঃ।

(ঠ) অব্রবীদিতি। স্থানে বিষয়ে। ভবতী ত্বম্। অপক্রান্তো হস্তাদিত্যপহস্তঃ স কৃত ইত্যপহস্তিতঃ, করোত্যর্থে নন্তাদপহস্তশব্দাৎ কর্ম্মণি ক্তঃ। অপহস্তিতা নিষ্কাসিতাঃ সকলাঃ সখীজনা যেন তৎ, মে মম হৃদয়ং কর্ত্তৃ, কেনাপ্যনির্দ্দেশ্যেন কারণেন ত্বয়ি বিশ্বসিতি, ইতি ন জানে ইত্যন্বয়ঃ।

(ড) কমিতি। উপালভে নিন্দামি। পরিভবং মদনকৃতমত্যাচারম্। সাধারণীকরোমি বিভজ্য দদামীত্যর্থঃ।

(ঢ) দুঃখেতি। ভবত্যাস্তব সমীপে। দুঃখস্য ভারোঽতিরেকস্তম্। জীবিতং জীবনম্।

বাষ্পবিন্দু দ্বারা, কামাগ্নির ধূমে ধূসরবর্ণ বাক্যকে বারংবার যেন প্রক্ষালন করিতে লাগিলেন এবং লজ্জার সহিত ঈষৎ হাস্য করায় দন্তের কিরণগুলি প্রকাশিত হইতে লাগিল ; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে—ভয়বশতঃ পূর্ব্বনির্দ্দিষ্ট বক্তব্য বিষয়ের বর্ণগুলি ভুলিয়া গিয়াছিলেন, বাষ্পবিন্দুচ্ছলে অবস্থিত সেই বর্ণগুলিকেই যেন দন্তরশ্মি দ্বারা গাঁথিতেছিলেন—এই অবস্থায় কোন প্রকারে আপনাকে আপনি বলিতে উদ্যত করিলেন। (ঠ) তাহার পর আমাকে বলিলেন—"পত্রলেখে! দর্শনাবধি যে বিষয়ে তুমি আমার প্রিয় হইয়াছ ; সে বিষয়ে পিতা নহেন, মাতা নহেন, মহাশ্বেতা নহে, মদলেখা নহে, এমন কি, জীবনও প্রিয় নহে। আমি জানি না,—কেন যে আমার হৃদয়, সমস্ত সখীগণকেও দূরে রাখিয়া তোমার উপরেই বিশ্বাস করিতেছে। (ড) আমি অন্য আর কাহাকে নিন্দা করিব? অন্য কাহার নিকটেই বা এই অত্যাচারের কথা বলিব? এবং অন্য কাহাকেই বা এই দুঃখ ভাগ করিয়া দিব?। (ঢ) তাই আজ তোমার নিকটে এই অসহ্য দারুণ দুঃখ জানাইয়া জীবন ত্যাগ করিব।

---

(১) অপূর্ব্বান্। (২) অপহস্তিত...। (৩) নিঃশ্বসিতি। (৪) ক্বচিৎ অদ্যেতি পাঠো নাস্তি।

जीवितम् (ढ)। जीवितेनैव शपामि ते, स्वहृदयेनापि विदितवृत्तान्तेनामुना जिह्रेमि, किमुतान्यहृदयेन (ण)। कथमिव मादृशी रजनिकर-किरणावदातं कौलीनेन कलङ्कयिष्यति कुलम्, कुलक्रमागताञ्च लज्जां परित्यक्ष्यति, अकन्यकोचिते वा चापले चेतः प्रवर्त्तयिष्यति (त)। साहं न सङ्कल्पिता पित्रा, न दत्ता मात्रा, नानुमोदिता गुरुभिः, न किञ्चित् सन्दिशामि, न किञ्चित् प्रेषयामि, नाकारं दर्शयामि, कातरेव (१) अनाथेव नीचेव बलादवलिप्तेन गुरुगर्हणीयतां नीता कुमारेण चन्द्रापीडेन (थ)। कथय, महतां किमयमाचारः, किं परि-

(ण) ननु "शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्य्यते।" इति न्यायात् सखीभ्यो निवेद्य दुःखभारोऽयं लघूक्रियतामित्याह जीवितेनैवेति। जीवितेनैव स्वजीवनेनैव, ते तव समीपे। विदितो वृत्तान्तो येन तेन, अमुना स्वहृदयेनापि जिह्रेमि लज्जे, सुतरां अन्यहृदयेन किमुत वक्तव्यमित्यर्थः। अतएव न मया वयस्याभ्यो निवेदनमिति भावः।

(त) कथमिति। मादृशी शैशवापगमादुत्पन्नविवेचनशक्तिरिति भावः। कौलीनेन, आकस्मिकात्मसमर्पणाल्लोकापवादेन, रजनिकरस्य चन्द्रस्य किरणवत् अवदातं निर्म्मलं कुलं कथमिव कलङ्कयिष्यति कलङ्कवत् कलङ्कान्वितं करिष्यति। अकन्यकेति अप्राशस्त्ये नञ्, तथा च अकन्यकोचिते अप्रशस्तकन्यायोग्ये, चापले कामचाञ्चल्ये स्वयमात्मार्पणे।

(थ) साहमिति। सङ्कल्पिता दातुमभिमता। गुरुभिरन्यैर्मातुलादिभिः। किञ्चित् कामोपहारादिकं न प्रेषयामि। आकारं आकृतिविकारं शृङ्गारचेष्टामित्यर्थः। अत्र तथापीति पूरणीयं। कातरा दुर्बला, अनाथा रक्षकहीना। अवलिप्तेन स्वयं प्रलेपगर्वितेन। गुरुगर्हणीयतां महानिन्दनीयतां नीता प्रापिता, स्वरूपदर्शनेनैव कामाकुलीकृतत्वादिति भावः। अत्र कारणाभावेऽपि गुरुगर्हणीयताप्रापणाद्विभावनालङ्कारः।

(द) कथयेति। अभिनवं यद्विसकिसलयं मृणालपल्लवं तस्य तन्तुवत् सुकुमारं कोमलं। परि-

(ণ) আমি তোমার নিকটে নিজের জীবনের শপথ করিয়া বলিতেছি যে,—নিজের এই হৃদয়ও এই বৃত্তান্ত জানিয়াছে বলিয়া আমি লজ্জিত হইতেছি ; তাহাতে অন্যের হৃদয়ের কথা আর কি বলিব। (ত) আমার ন্যায় কন্যা, চন্দ্র-কিরণের ন্যায় নির্ম্মল কুলকে কি করিয়া লোকাপবাদ দ্বারা কলঙ্কিত করিবে ? কি করিয়াই বা কুলক্রমাগত লজ্জা পরিত্যাগ করিবে ? এবং কি করিয়াই বা নিন্দনীয় কন্যার উপযুক্ত চঞ্চলতায় চিত্ত প্রবর্ত্তিত করিবে ?। (থ) পিতা আমাকে দান করিবার মত করেন নাই, মাতাও দান করেন নাই এবং অপর গুরুজনেরাও অনুমোদন করেন নাই ; আবার আমি কোন খবর পাঠাই নাই, সেরূপ কোন উপহারও পাঠাই নাই এবং আকৃতির কোন বিকারও দেখাই নাই ; তথাপি গর্ব্বিতস্বভাব কুমার চন্দ্রাপীড়, আমাকে কাতরার ন্যায়, অনাথার ন্যায় এবং নীচজাতীয়ার ন্যায় বলপূর্ব্বক অত্যন্ত নিন্দাভাজন করিয়াছেন। (দ) বল দেখি, প্রধান লোকের কি এই ব্যবহার ?

(१) कातरा च।

चयस्येदं फलम्, यदेवमभिनव-विस-किसलय-तन्तु-सुकुमारं मे मनः परिभूयते। अपरिभवनीयो हि कुमारिकाजनो यूनाम् (द)। प्रायेण प्रथमं मदनानलो लज्जां दहति, ततो हृदयम्। आदौ विनयादिकं कुसुमेषुशराः खण्डयन्ति, पश्चान्मर्म्माणि (ध)। तदामन्त्रये भवतीं पुनर्जन्मान्तरसमागमाय, नहि मे त्वत्तोऽन्या प्रियतरा। प्राणपरित्यागप्रायश्चित्तेन प्रक्षालयाम्यात्मनः कलङ्कम्।" इत्यभिधाय तूष्णीमभूत्। (न)

अहन्तु यत्सत्यमविदितवृत्तान्ततया ह्रीतेव भीतेव विलक्षेव विसंज्ञेव सविषादं विज्ञापितवती—'देवि! श्रोतुमिच्छामि, आज्ञापय किं कृतं देवेन चन्द्रापीडेन, को वाऽपराधः समजनि, केन वा स्खलविनयेन खेदितमखेदनीयं देव्याः कुमुदकोमलं मनः?। श्रुत्वा प्रथममुत्सृष्टजीवितायां मयि पश्चात्

भूयते आक्रम्यायत्तीक्रियते। ननु तेन को दोष इत्याह अपरीति। हि यस्मात्, यूनां युवभिः, कुमारिकाजनः अपरिभवनीयः न परिभवितुं योग्यः, पापप्रसक्तेरिति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनाद्वैधर्म्म्यपुरस्कृतोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः, तथा अपरिभवनीय इति प्रधानस्य नञर्थस्य समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स तु न परिभवनीय इति पाठेनैव समाधेयः।

(ध) प्रायेणेति। दहति भस्मीकरोति विनाशयतीत्यर्थः। कुसुमेषुशराः कामवाणाः खण्डयन्ति छिन्दन्ति।

(न) मर्म्मच्छेदे मृत्योरवश्यम्भावादाह तदिति। तत्तस्मात्, आमन्त्रये अभ्यर्थयामि। भवतीं त्वाम्। ननु कथं मामेवामन्त्रयसीत्याह नहीति। प्राणपरित्याग एव प्रायश्चित्तं तेन। कलङ्कमपवादम्।

(प) अहमिति। ह्रीतेव लज्जितेव। विलक्षेव अप्रतिभेव। विसंज्ञेव विगतचेतनेव सती। अत्र चेतनाविगमोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, अन्येषान्तु लज्जादीनां वास्तविकत्वेन सम्भावनाभावान्नोत्प्रेक्षा। स्खलविनयेन अशिष्टव्यवहारेण। देव्या भवत्याः कादम्बर्याः। कुमुदवत् कोमलं मनः, खेदितं दैन्ययुक्तीकृतम्।

পরিচয়ের কি এই ফল ? যে, নূতন-মৃণাল-সূত্রের ন্যায় আমার কোমল মনকে আকুল করিয়া তুলিয়াছেন ; কারণ, যুবকদিগের পক্ষে কন্যাজনকে আকুল করা উচিত নহে। (ধ) প্রায়শই কামানল প্রথমে লজ্জাকে, তাহার পর হৃদয়কে দগ্ধ করে এবং কামের বাণ প্রথমে বিনয় প্রভৃতিকে, তদনন্তর মর্ম্মদেশ ছিন্ন করে। (ন) অতএব জন্মান্তরে আবার সম্মিলনের জন্য আমি তোমার নিকট প্রার্থনা করি ; কারণ, তোমা হইতে অধিক প্রিয় ব্যক্তি আমার অন্য কেহই নাই। এখন প্রাণত্যাগরূপ প্রায়শ্চিত্ত দ্বারা নিজের কলঙ্ক প্রক্ষালন করিব।" এই কথা বলিয়া নীরব হইলেন।

(প) আমি কিন্তু বৃত্তান্ত জানি না বলিয়া নিশ্চয়ই লজ্জিতের ন্যায়, ভীতের ন্যায়, অপ্রতিভের ন্যায় এবং অচেতনের ন্যায় হইয়া বিষাদের সহিত জানাইলাম—'দেবি! আমি শুনিতে ইচ্ছা করি, আপনি বলুন,—কুমার চন্দ্রাপীড় কি করিয়াছেন, তাঁহার

समुत्स्रक्ष्यति देवी जीवितम्' (१) इति (प)। एवमभिहिता च पुनरवदत्—"आवेदयामि ते, अवहिता शृणु। स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् (२) आगत्यागत्य मे रहस्यसन्देशेषु निपुणधूर्त्तः (३) पञ्जरशुकसारिका दूतीः करोति (फ)। सुप्तायाः श्रवणदन्तपत्त्रोदरेषु व्यर्थमनोरथमोहितमानसः सङ्केतस्थानानि लिखति (ब)। खेदप्रक्षालिताक्षरानपि निपतित-साञ्जनाम्बुबिन्दु-पङ्क्ति-कथितात्मावस्थान् (४) मनोहरान् सम्मोहाशानुवर्त्तिनो मदनलेखान् प्रेषयति (भ)। निजानुरागेणेव

त्वमुत्सृष्टं परित्यक्तं जीवितं यया तस्यां सत्यां। अत्रोत्सर्गस्य विधेयत्वात्तस्य च समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्श-दोषः स च जीवितमुत्स्रक्ष्यामीति पाठेन समाधेयः।

(फ) एवमिति। निपुणश्चासौ धूर्त्तश्चेति निपुणधूर्त्तः धूर्त्तकार्य्येषु निपुण इत्यर्थः। रहस्यसन्देशेषु गोपनीयवाचिकेषु मे पञ्जरशुकसारिका दूतीः करोति पञ्जरवर्त्तिशुकसारिकामुखेन ममान्तिके गोपनीयवाचिकानि प्रेरयतीत्यर्थः। प्रतिदिनमीदृशमहं स्वप्नं पश्यामीति तात्पर्य्यार्थः। एवमुत्तरत्रापि बोध्यम्।

(ब) सुप्ताया इति। व्यर्थः सर्व्वथैवासम्भवाद्विफलो यो मनोरथस्तेन मोहितं मानसं चित्तं यस्य स चन्द्रापीडः, सुप्ताया निद्रिताया मम, श्रवणयोः कर्णयोः ये दन्तपत्त्रे गजदन्तनिर्म्मितपत्त्राकारालङ्कारौ तयोरुदरेषु मध्यदेशेषु, सङ्केतस्थानानि लिखति।

(भ) खेदेति। खेदेन घर्म्मेण प्रक्षालितानि अक्षराणि येषां तानपि निपतिता रोदनेन नयनाद्गलिता साञ्जना नयनकज्जलमिश्रिता या अम्बुबिन्दूनां पङ्क्तिः श्रेणी तया कथिताः सूचिता आत्मनोऽवस्थाः कामार्त्त-दशा येषु तान् मनोहरान्, सम्मोहेन चित्तभ्रमेण या आशा मत्समागमाकाङ्क्षा तामनुवर्त्तन्ते अनुसरन्तीति तान् मदनलेखान् कामसूचकानि पत्राणि प्रेषयति।

কোন্ অপরাধই বা হইয়াছে! এবং খিন্ন করিবার অযোগ্য ও কুমুদের ন্যায় কোমল আপনার মনকে কোন্ অন্যায় আচরণে খিন্ন করিয়াছেন?—এই সকল শুনিয়া আমি প্রথম জীবন ত্যাগ করিলে, পরে আপনি জীবন ত্যাগ করিবেন।' (ফ) আমি এইরূপ কহিলে পুনরায় কাদম্বরী কহিলেন—"আমি তোমার নিকট বলিতেছি, মনোযোগ দিয়া শুন। ধূর্ত্তকার্য্যে নিপুণ চন্দ্রাপীড়, প্রতিদিন আমার স্বপ্নের ভিতরে আসিয়া আসিয়া গোপনীয় সংবাদ বলিবার জন্য পঞ্জরবর্ত্তী শুক ও সারিকাদিগকে দূত করিয়া থাকেন। (ব) নিষ্ফল অভিলাষে চন্দ্রাপীড়ের চিত্ত মোহিত হইয়াছে, তাই তিনি নিদ্রিত অবস্থায় আমার কর্ণের হস্তিদন্ত-নির্ম্মিত অলঙ্কারের উপরে সঙ্কেতস্থান লিখিয়া যা'ন। (ভ) সুন্দর সুন্দর যে সকল কামলিপি প্রেরণ করেন, তাহার অক্ষরগুলি ঘর্ম্মজলে প্রক্ষালিত হইলেও, নয়ন হইতে বিগলিত কজ্জলাক্ত অশ্রুবিন্দুসমূহে নিজের অবস্থা ব্যক্ত করে এবং মনের ভ্রমনিবন্ধন যে সকল আশা হইয়া থাকে, সেই কামলিপিগুলি তাহার অনুরূপ। (ম) নিজের অনুরাগের ন্যায় আলতার রসে আমার

(१) समुत्स्रक्ष्यसि जीवितं, समुत्स्रक्ष्यति जीवितं। (२) प्रतिदिनं। (३) निपुणो धूर्त्तः।
(४)...अवस्थानान्।

बलाद्रञ्जयत्यलक्तकरसेन चरणौ (१) (म)। अविनयनिश्चेतनो नखप्रतिबिम्बितमात्मानं बहु मन्यते (य)। उपवनेष्वेकाकिन्या ग्रहणभयपलायमानायाः पल्लव-लग्नांशुक-दशा-प्रतिहत-गमनाया गृहीतेव लतासखीभिः (२) अर्पितायाः मिथ्याप्रगल्भः पराङ्मुखायाः परिष्वङ्गं (३) आचरति (र)। स्तनस्थले मे लिखन् पत्रलतां (४) कुटिलतामिवानृजुप्रकृतिः प्रकृतिमुग्धं मनः शिक्षयति (ल)। हृदयोत्कलिकातरङ्गवातैरिव शीतलैर्मुखमरुद्भिः श्रमजल-शीकर-तारकितावलोक-

(म) निजेति। निजानुरागेणेव अलक्तकरसेन "रक्तौ च क्रोधरागौ" इति कविसमयात् साम्यप्रतीतिः, मम चरणौ बलात् रञ्जयति। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अविनयेति। अविनयेन अशिष्टव्यवहारेण निश्चेतनश्चैतन्यहीनप्रायश्चन्द्रापीडः, नखेषु मम चरणनखरेषु प्रतिबिम्बितं आत्मानं बहु मन्यते। एतेन मानभञ्जनाय पादपतनं ध्वन्यते।

(र) उपेति। ग्रहणभयेन तत्कर्तृकधारणत्रासेन पलायमाना तस्याः, पल्लवेषु लग्नाभिः संसक्ताभिः अंशुकदशाभिर्वस्त्राञ्चलैः प्रतिहतं निवारितं गमनं पलायनं यस्यास्तस्याः, अतएव लता एव सख्यस्ताभिः गृहीत्वा धृत्वा अर्पितायास्तस्मै दत्ताया इव सत्याः। अन्या अपि सख्यो वल्लभसंसर्गभयात् पलायमानां सखीं प्रति एवमेवाचरन्ति। पराङ्मुखाया लज्जया विवृत्तवदनाया मम, मिथ्याप्रगल्भः अलीकधृष्टश्चन्द्रापीडः, परिष्वङ्गं पृष्ठत आलिङ्गनं आचरति कुरुते। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ल) स्तनेति। अनृज्वी असरला प्रकृतिः स्वभावो यस्य स चन्द्रापीडः, मे मम स्तनस्थले पत्रलतां कुटिलं पत्राकारं लताकारञ्च चिह्नं लिखन् चित्रयन्, प्रकृतिमुग्धं स्वभावसरलं, कथमन्यथा मम स्तनस्थलं स्पृशेदिति भावः, मम मनः कुटिलतां शिक्षयतीव, कुटिलपत्रलताचित्रणादेवेति भावः। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा प्रकृतिशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च स्वभावमुग्धमिति पाठेन समाधेयः।

(व) हृदयेति। अलीकचाटुकारी मिथ्याप्रियंवदश्चन्द्रापीडः, हृदये निजचित्ते या उत्कलिका उत्-

চরণযুগলকে বলপূর্ব্বক রঞ্জিত করিয়া থাকেন। (য) অশিষ্ট ব্যবহারে তিনি প্রায় চৈতন্যহীন হইয়া পড়েন; সুতরাং আপনাকে আমার পায়ের নখে প্রতিবিম্বিত দেখিয়া তাহার খুব আদর করেন। (র) উদ্যানের ভিতরে আমি একাকিনী বিচরণ কার, তখন আবার তিনি ধরিবেন, এই আশঙ্কায় পলায়ন করিতে থাকি, তখন লতার পল্লবে বস্ত্রাঞ্চল সংলগ্ন হওয়ায় পলায়নের বিঘ্ন ঘটে, তাহাতে বোধ হয় যেন, লতাসখীরা আমাকে ধরিয়া তাঁহার নিকট সমর্পণ করে, তখন আমি মুখ ফিরাইয়া থাকি, এমন অবস্থায় সেই অলীকপ্রগল্ভস্বভাব চন্দ্রাপীড় আমাকে আলিঙ্গন করেন। (ল) কুটিলস্বভাব চন্দ্রাপীড় আমার স্তনমণ্ডলে পত্রলতা চিত্র করিয়া, আমার স্বভাবমুগ্ধ মনকে যেন কুটিলতা শিখাইয়া দেন। (ব) মিথ্যা-চাটুকারী চন্দ্রাপীড় হৃদয়ের উৎকণ্ঠারূপ তরঙ্গের বায়ুর ন্যায় শীতল মুখবায়ু দ্বারা আমার

(१) निजानुरागेण...रञ्जेनेव। (२) सखीभिः। (३) पराङ्मुखपरिष्वङ्गं। (४) पत्रलेखां।

चाटुकारः कपोलौ वीजयति (व)। स्वेदसलिल-शिथिलित-ग्रहण-गलितोत्पल-शून्येनापि करेण यवाङ्कुरानिव नखकिरणान् शुद्धान् दुर्विदग्धः कर्णपूरीकरोति (श)। वल्लभतरबाल-बकुल-सेक-काल-कवलीकृतान् सुरागण्डूषान् सकचग्रहमसकृद्धृष्टो मां पाययति (ष)। भवनाशोकतरुताड़नोद्यतान् पाद-प्रहारान् दुर्बुद्धिविडम्बितः शिरसा प्रतीच्छति (स)। मन्मथ-मूढ़-मानसस्य कथय हे पत्रलेखे! केन प्रकारेण निश्चेतनो निषिध्यते। प्रत्याख्यानमपीर्ष्यां

कण्ठालग्ना एव तरङ्गास्तेषां वातैर्वायुभिरिव शीतलैस्तु श्वसद्भिर्वदननिर्गतवायुभिः, श्रमजलशीकरैर्घर्मजलबिन्दुभिः तारकितौ सञ्जाततारकाकारचिह्नौ कपोलौ मम गण्डौ वीजयति, श्रमजलनिवारणार्थमिति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकमुत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) स्वेदेति। दुर्विदग्धो मिथ्यावैदग्ध्यगर्वितचन्द्रापीड़ः, स्वेदसलिलेन घर्मजलेन शिथिलितं श्लथीकृतं ग्रहणं धारणं तेन गलितं पतितं यदुत्पलं कैरवं तेन शून्यो विरहितः करो हस्तस्तेन, यवाङ्कुरानिव शुद्धान् केवलान् नखकिरणेन कर्णपूरीकरोति मम कर्णाभरणीकरोति, गौरवभ्रमादिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः, तथा भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यत इति वस्तुनालङ्कारध्वनिः।

(ष) वल्लभेति। धृष्टः प्रगल्भस्वभावश्चन्द्रापीड़ः, वल्लभतराणां ममातीवप्रियाणां बालबकुलानां सेक-काले तत्पुष्पविकासनाय मत्कर्तृकमुखमद्यसेचनसमये कवलीकृतान् स्वयमेव मुखे धृतान् सुरागण्डूषान्, कचग्रहेण मम केशपाशधारणेन सहेति सकचग्रहं असकृत् वारं वारं मां पाययति, तेषु बालबकुलेषु सेचनार्थमिति भावः।

(स) भवनेति। दुर्बुद्धिविडम्बितः कुबुद्धिप्रतारितश्चन्द्रापीड़ः, भवनाशोकतरूणां ताड़नाय पुष्प-विकासार्थमिति भावः, उद्यतान् विधातुमुद्यतान् मम पादप्रहारान् शिरसा प्रतीच्छति गृह्णाति, आदराति-शयद्योतनार्थमिति भावः।

(ह) अहो यद्येतान्यनिष्टान्येव मन्यन्ते तर्हि कथं न निषेधादयः क्रियन्त इत्याह मन्मथेति। किञ्च, हे पत्रलेखे। त्वं कथय, मन्मथेन कामाविर्भावेन मूढ़ं सदसद्विवेकहीनं मानसं मनो यस्य सः,

---

ঘর্ম্মবিন্দুব্যাপ্ত গণ্ডযুগলে ব্যজন করেন। (শ) ঘর্ম্মজলে ধারণ করাটা শিথিল হইয়া যায়, তাহাতে উৎপলটি পড়িয়া যায়, তখন সেই শূন্য হস্ত দ্বারাও, মিথ্যানৈপুণ্যগর্ব্বিত চন্দ্রাপীড় যবাঙ্কুরের ন্যায় কেবল নখের কিরণগুলিকেই আমার কর্ণের আভরণ করিয়া থাকেন। (ষ) পুষ্প-বিকাসের নিমিত্ত অত্যন্তপ্রীতিভাজন নূতন বকুলবৃক্ষে মুখমদ্য সেচন করিবার সময়ে চপলস্বভাব চন্দ্রাপীড়, নিজের মুখে মদ্য লইয়া, পিছনের দিকে আমার কেশপাশ ধারণ করিয়া, সেই মদ্যগুলি বারংবার আমাকে পান করাইয়া দেন। (স) আমি যখন গৃহস্থিত অশোকবৃক্ষকে তাড়ন করিবার জন্য পাদপ্রহার করি, তখন চন্দ্রাপীড় দুর্বুদ্ধিপ্রতারিত হইয়া সেই পাদপ্রহার-গুলি মস্তকে ধারণ করেন। (হ) কন্দর্প চন্দ্রাপীড়ের চিত্তকে সদসদ্বিবেচনাহীন করিয়া ফেলিয়াছেন, তাহাতে তিনি চৈতন্যহীনপ্রায় হইয়া পড়িয়াছেন; অতএব বল দেখি পত্রলেখে! কি করিয়া আমি তাঁহাকে নিষেধ করি? আমি প্রত্যাখ্যান করিলেও তিনি তাহা ঈর্ষ্যা বলিয়া

सम्भावयति, आक्रोशमपि परिहासमाकलयति, असम्भाषणमपि मानं मन्यते, दोषसङ्कीर्त्तनमपि स्मरणोपायमवगच्छति, अवज्ञानमप्यनियन्त्रणं प्रणयमुत्प्रेक्षते, (१) लोकापवादमपि यशो गणयति" इति । (ख)

तामेवंवादिनीमाकर्ण्य प्रहर्षरसनिर्भरा मनस्यकरवम्—'अहो ! चन्द्रापीडमुद्दिश्य सुदूरमाकृष्टा खल्वियं मकरकेतुना । यदि च सत्यमेव कादम्बरीव्याजेन साक्षान्मनोभवचित्तवृत्तिः प्रसन्ना (२) देवस्य चन्द्रापीडस्य, ततः सहजैः सादरं संवर्द्धितैः प्रत्युपकृतमस्य गुणैः, यशसा धवलिताः ककुभः, यौवनेन रतिरससागर-

अतएव निश्चेतनमचेतनमचेतनप्रायश्चन्द्रापीडः केन प्रकारेण निषिध्यते । क्रियमाणेऽपि निषेधे मन्मथमूढमानसत्वेन निश्चेतनत्वेन च निषेधफलस्य निवृत्तेरसम्भवादिति भावः । अत्र कथय किं पत्रलेखे ! इति वाक्यस्य वाक्यान्तरे प्रवेशेऽपि आवेगातिशयसूचनेन चमत्कारातिशयान्न गर्भितत्वदोषः प्रत्युत गुण एव "गर्भितत्वं गुणः क्वापि" इति दर्पणोक्तेः । प्रत्याख्यानमपि तादृशाचरणवेलायां मया क्रियमाणं निराकरणमपि ईर्ष्यामसूयां सम्भावयति चन्द्रापीड इति शेषः, मां प्रति प्रियतमाज्ञानादिति भावः । एवमन्यत्रापि तात्पर्यं बोध्यम् । आक्रोशं तिरस्कारं । आकलयति मन्यते । मानं प्रणयकोपं अवज्ञानमवहेलां । अनियन्त्रणं अनिर्बाधं । अदत्तां प्रत्येव तथाचरणाल्लोकापवाद, इति भावः । अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः ।

(ख) तामिति । तामेवंवादिनीमाकर्ण्य तस्या एवंविधं वचनमाकर्ण्येत्यर्थः, प्रहर्षरसेन आनन्दरसेन निर्भरा परिपूर्णा अहम् । योग्यसमागमोपक्रमादिति भावः । मकरकेतुना कन्दर्पेण । देवस्य चन्द्रापीडस्योपरि कादम्बरीव्याजेन कादम्बरीं व्याजीकृत्य उद्दिश्येत्यर्थः, साक्षान्मनोभवस्य चित्तवृत्तिर्यदि च सत्यमेव प्रसन्ना करुणापन्ना जाता, ततस्तदा, सहजैः स्वाभाविकैः सादरं संवर्द्धितैः इयन्त कालं यावत् सयत्नं वृद्धिं प्रापितैः, अनेन गुणान् प्रति चन्द्रापीडस्योपकारकत्वं सूचितं अस्य चन्द्रापीडस्य गुणैः सौन्दर्य्यविनयादिभिः प्रत्युपकृतं प्रत्युपकारः कृतः, सर्वथा योग्याया एव समाकर्षणादिति भावः । तथा यशसा ककुभो दिशो धवलिताः शुभ्रीकृताः, पृथिव्यां कन्यारत्नभूताया एवाकर्षणादिति भावः । तथा यौवनेन रतिरसः शृङ्गाररस एव सागर-

মনে করেন, তিরস্কার করিলেও তাহা পরিহাস বলিয়া ধারণা করেন, সম্ভাষণ না করিলেও তাহা মান বলিয়া বিবেচনা করেন, দোষকীর্ত্তন করিলেও তাহা স্মরণের উপায় বলিয়া মনে করেন, অবহেলা করিলেও তাহা অবাধ প্রণয় বলিয়া ধারণা করেন এবং লোকনিন্দাকে তিনি যশ বলিয়া গণনা করেন।

(খ) কাদম্বরীর এইরূপ বাক্য শুনিয়া, আমি আনন্দে পরিপূর্ণ হইয়া মনে করিলাম—'কি আশ্চর্য্য ! চন্দ্রাপীড়ের উদ্দেশে কামদেব ইঁহাকে বহু দূরে নিয়া গিয়াছেন। যদি সত্যই কাদম্বরীকে উদ্দেশ করিয়া সাক্ষাৎ কামদেবের চিত্তবৃত্তি, রাজকুমার চন্দ্রাপীড়ের উপর প্রসন্ন হইয়া থাকে ; তাহা হইলে, স্বাভাবিক এবং সাদরে সংবর্দ্ধিত রূপপ্রভৃতি গুণগ্রাম চন্দ্রাপীড়ের প্রত্যুপকার করিয়াছে, যশ সকল দিক্ ধবলবর্ণ করিয়াছে ; যৌবন শৃঙ্গারসাগরের তরঙ্গ দ্বারা

(१) अवज्ञामपि निर्यन्त्रणप्रणयं... । (२)...मनोभवे चित्तवृत्तिः प्रसन्ना ।

तरङ्गैः पातिता रत्नवृष्टिः, यौवनविलासैर्लिखितं नाम शशिनि, सौभाग्येन प्रकाशिता निजश्रीः, लावण्येनेन्दोरिवाभिरिव वृष्टममृतं कलाभिः (ख)। तथा च चिराल्लब्धः कालो मलयानिलेन, समासादितोऽवसरश्चन्द्रोदयेन प्राप्तमनुरूपं फलं मधुमासकुसुमसम्पदा, गतो मदिरामददोषः (१) गुणताम्, दर्शितं मुखं मन्मथयुगावतारेणेति। (क)

तथाहं प्रकाशं विहस्याब्रवम् (२)—'देवि! यद्येवम्, उत्सृज कोपम्, प्रसीद, नार्हसि कामापराधेन देवं दूषयितुम्। एतानि खलु कुसुमचापस्य (३) चापलानि

रत्नस्य तरङ्गैः रत्नवृष्टिः पातिता। अत्र वस्तुसम्बन्धोऽसम्भवन् कादम्बरीमुद्दिश्य चन्द्रापीडोपरि मनोभवस्य चित्तवृत्तेः प्रसन्नत्वं यौवनकर्तृकरतिरससागरतरङ्गकरणकरत्नवृष्टिपातनमिवेति सादृश्यमाक्षिपतीति निदर्शनालङ्कारो निरङ्गकेवलरूपकेण सङ्कीर्यते। तथा रतिरसेति स्थायिभावरसयोरेकत्वात् समस्तोक्तिदोषः, स च भावसागरतरङ्गैरिति पाठेन समाधेयः। चन्द्रापीडस्य यौवनविलासैः शशिनि नाम शशकलङ्क इत्यभिधानं लिखितं। तथा च कलङ्कवत्तया चन्द्रेण कादम्बर्या अनाकर्षणात्, निष्कलङ्कतया च चन्द्रापीडेनाकर्षणात् शशितश्चन्द्रापीड एव श्रेयानिति भावः। अत्र लिखनासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारस्तेन चोक्तरूपो व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः। सौभाग्येन प्रियनाल्लभ्येन निजश्रीरात्मसौन्दर्यं प्रकाशिता प्रकटिता, कादम्बर्या वाल्लभ्यादिति भावः। इन्दोरिमा इत्यैन्दव्यस्ताभिश्चन्द्रसम्बन्धिनीभिः कलाभिरिव चन्द्रापीडस्य लावण्येन, अमृतं पीयूषं आनन्दश्च वृष्टमुत्सृष्टम्, कादम्बर्या आकर्षणेनानन्दवर्षणादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(क) तथेति। तथा च अपि चेत्यर्थः। मलयानिलेन चिरात् परं कालः समयो लब्धः, परस्परयोग्ययोरेव कादम्बरीचन्द्रापीडयोरिदानीं यथाशक्त्युद्दीपनसम्भवादिति भावः। एवमन्ययोरपि भावो बोध्यः। मधुमासकुसुमसम्पदा चैत्रमासपुष्पसम्पदा। मदिरामदस्य मद्यपानजनितमत्ततायाः दोषः अयोग्ये अनुरागजननात्मको दोषः, इदानीं गुणतां गतः योग्ययोरेव परस्परानुरागजननादिति भावः। तथा मन्मथयुगस्य कामकालस्य अवतारेण आविर्भावेन मुखं दर्शितं, केवलमनयोश्चित्तविकारजननारम्भादिति भावः।

(ख) अर्हेति। कामस्य मदनस्य अपराधेन देवं चन्द्रापीडं दूषयितुं नार्हसि, परापराधेन परस्य

রত্নবৃষ্টি করিয়াছে; তাঁহার যৌবনের বিলাসিতা চন্দ্রের উপরে 'শশকলঙ্ক' এই নাম লিখিয়া দিয়াছে; সৌভাগ্য নিজের সৌন্দর্য্য প্রকাশ করিয়াছে এবং চন্দ্রের কলার ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের লাবণ্য অমৃত বর্ষণ করিয়াছে। (ক) আর, বহুকালের পর মলয়-সমীরণ সময় পাইয়াছে; চন্দ্রোদয় অবসর লাভ করিয়াছে; চৈত্রমাসের পুষ্প সকল অনুরূপ ফল পাইয়াছে; মদ্যের মত্ততাদোষ গুণতা লাভ করিয়াছে এবং কন্দর্পযুগের আবির্ভাব মুখ দেখাইয়াছে।

(খ) তাহার পর আমি হাস্য করিয়া প্রকাশ্যভাবে বলিলাম—'দেবি! যদি এইরূপই হইয়া থাকে, তবে ক্রোধ পরিত্যাগ করুন, প্রসন্ন হউন, কন্দর্পের অপরাধে রাজপুত্রকে দোষ

(१) मदिरारसदोषः। (२) अब्रुवं। (३) खलु खलस्य कुसुमचापस्य।

शठस्य, न देवस्य (ख)। इत्येवमुक्तवतीं मां पुनः सकुतूहला सा प्रत्यभाषत— "योऽयं कामो वा कोऽपि वा (१) कथय कानि कान्यस्य रूपाणी"ति (ग)। तामहं व्यजिज्ञपम्—'देवि! कुतोऽस्य रूपम्, अतनुरेष हुताशनः (घ)। तथाहि अप्रकाशयन् ज्वालावलीः सन्तापं जनयति, अप्रकटयन् धूमपटलमस्रु पातयति, अदर्शयन् भस्मरजोनिकरं पाण्डुतामाविर्भावयति (ङ)। न च तद्भूतमेतावति त्रिभुवने, अस्य शरशरव्यतां (२) यन्न यातं याति यास्यति वा (च)। को वाऽस्मान्न त्रस्यति, (३) गृहीत-कुसुमकार्मुकः स बाणैर्बलवन्तमपि विध्यति (छ)।

दूषणानौचित्यादिति भावः। शठस्य धूर्त्तस्य, कुसुमबाणस्य मदनस्य चपलानि विकारजनकव्यापाराः, किन्तु देवस्य चन्द्रापीडस्य न अन्यायाचरणादिति भावः।

(ग) इतीति। सा कादम्बरी। कोऽपि अन्यो वेत्यर्थः।

(घ) तामिति। रूपमाकृतिः। एष कामः, अतनुः हुताशनः मूर्त्तिहीनो वह्निः, तद्दाहकत्वात् शरीरदर्शनाच्च, अतएवास्य नास्ति रूपमिति भावः। अत्राधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः।

(ङ) अस्य हुताशनसादृश्यं प्रतिपादयितुमाह तथाहीति। ज्वालावलीः शिखाश्रेणीः भस्मनां रजोनिकरं कणसमूहम्। अत्र ज्वालाप्रकाशादीनां कारणानामभावेऽपि तत्कार्य्यसन्तापाद्युत्पत्तेः प्रत्येकत्रायम् एव विभावनालङ्कारः।

(च) नेति। किञ्चेति चार्थः। तावति अतिविशाले इति तात्पर्य्यम्, त्रिभुवने, तत्तादृशं भूतं प्राणी न अस्तीति शेषः, यद्भूतं कर्त्तृ अस्य कन्दर्पस्य शरशरव्यतां बाणलक्ष्यतां न यातमित्यतीतनिर्देशः, न यातीति वर्त्तमानकालोक्तिः, न यास्यतीति भविष्यत्कालप्रदर्शनम्, अतएवायं त्रिष्वपि कालेषु त्रिभुवन एवाव्याहतप्रभावशालीति भावः। अत्र "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिवत् यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठात् उद्देश्यविधेयाविमर्शदोषः, स च तस्य प्राक्पाठेन समाधेयः।

(छ) क इति। अस्मात् कन्दर्पात् को वा जनो न त्रस्यति बिभेति। अत्र हेतुमाह गृहीतेत्यादि। सुतरामेवास्मात् सर्वेषामेव त्रासजनन इति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

দিতে পারেন না; ধূর্ত্তপ্রকৃতি কন্দর্পেরই এই সকল চঞ্চলতা, কিন্তু রাজপুত্রের নহে।' (গ) আমি এইরূপ কহিলে তিনি পুনরায় কৌতুকের সহিত কহিলেন — 'এই যে পদার্থটা— সে কামই হউক, বা অন্য কেহই হউক, ইহার কি কি রূপ আছে তাহা বল।" (ঘ) তখন আমি তাঁহাকে জানাইলাম 'দেবি! উহার রূপ কোথায়? উনি মূর্ত্তিহীন অগ্নি। (ঙ) দেখুন—উনি শিখা প্রকাশ না করিয়া সন্তাপ জন্মাইয়া থাকেন, ধূমরাশি বাহির না করিয়া লোকদিগকে অশ্রুপাত করাইয়া থাকেন এবং ভস্মের কণাসমূহ প্রকাশ না করিয়া দেহে পাণ্ডুতা প্রকাশ করেন। (চ) এই বিশাল ত্রিভুবনের মধ্যে সেরূপ কোন প্রাণী নাই; যে, কন্দর্পের বাণের লক্ষ্য হয় নাই, বা হইতেছে না, বা হইবে না। (ছ) কোন্ ব্যক্তিই বা

---

(१) कामः कोऽपि वा। (२) शरव्यतां। (३) को वाऽस्य भयमेति।

अपि चानेनाधिष्ठितानां कामिनीनां पश्यन्तीनां चिन्तया प्रियमुखचन्द्रसहस्राणि सङ्कटमम्बरतलम्, (१) लिखन्तीनां दयिताकारानविस्तीर्णं महीमण्डलम्, गणयन्तीनां वल्लभगुणानल्पीयसी संख्या, (२) शृण्वतीनां (३) प्रियतमकथाम-बहुभाषिणी सरस्वती, (४) ध्यायन्तीनां प्राणसमसमागमसुखानि ह्रसीयान् कालो हृदयस्यापतति' इति। (ज)

एतदाकर्ण्य च क्षणं विचिन्त्य प्रत्यवादीत्—"पत्रलेखे! यथा कथयसि तथा

(ज) अपीति। अनेन कन्दर्पेण अधिष्ठितानामाविष्टानां, चिन्तया प्रियस्य वल्लभजनस्य, मुखचन्द्र-सहस्राणि पश्यन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके अम्बरतलं गगनं सङ्कटं तन्मुखचन्द्रव्याप्तं सत् आपतति उपस्थितं भवति, सर्वत्रैव तन्मुखचन्द्रदर्शनादिति भावः। एतेन कामिन्यश्चिन्तावशात् प्रियमुखचन्द्रमयमेव जगत् पश्यन्तीति व्यज्यते। दयिताकारान् वल्लभस्य प्रतिमूर्त्तीः लिखन्तीनां चित्रयन्तीनां कामिनीनां हृदयस्या-न्तिके महीमण्डलं अविस्तीर्णमविशालं आपतति, येन हि तत्र चित्र्यमाणा दयिताकारा न मान्तीति भावः। अनेनानवरतमेव कामिन्यो दयितानां प्रतिकृतीश्चित्रयन्तीति द्योत्यते। वल्लभस्य गुणान् गणयन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके संख्या परार्द्धान्तापीत्यर्थः, अल्पीयसी अत्यल्पा सत्यापतति, तद्गुणगणनवेलायां परार्द्धान्ताया अपि संख्यायाः परिसमाप्तत्वादिति भावः। एतेन कामिन्यो निर्गुणानपि वल्लभाननन्तगुणसम्पन्नान् मन्यन्त इति ध्वन्यते। प्रियतमस्य कथां शृण्वतीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके सरस्वती वाणी अबहुभाषिणी सत्यापतति, आशानुरूपं भाषितुमशक्तत्वादिति भावः। अनेन अनन्तयापि प्रियतमकथया कामिनीनामाशा न परिपूर्य्यत इति व्यज्यते। तथा प्राणसमस्य वल्लभस्य समागमसुखानि ध्यायन्तीनां कामिनीनां हृदयस्यान्तिके कालो ह्रसीयानति-ह्रस्वः सन्नापतति, सहसैवावसितत्वादिति भावः। एतेन कामिन्यः सर्वदैव दयितसङ्गमसुखानि ध्यायन्तीति द्योत्यते। अत्रापततीत्येकया क्रियया अम्बरतलादीनां कर्त्तृतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(झ) एतदिति। अयं मल्लक्षणो जनः। कुमारे चन्द्रापीडे। पञ्चेषुणा मदनेन। अस्य मदनस्य,

এই কন্দর্প হইতে ভীত না হয়; কারণ- ইনি পুষ্পময় ধনুক ধারণ করিয়া বাণ দ্বারা বলবান্ ব্যক্তিকেও বিদ্ধ করিয়া থাকেন। (জ) আর, রমণীগণ কামাবিষ্ট হইয়া চিন্তা দ্বারা যখন প্রিয়তমের সহস্র সহস্র মুখচন্দ্র দেখিতে থাকে, তখন তাহাদের হৃদয়ের নিকট সমস্ত আকাশমণ্ডলই প্রিয়তমের মুখচন্দ্র ব্যাপ্ত হইয়া উপস্থিত হয়, প্রিয়তমের আকৃতি চিত্র করিতে লাগিলে সমগ্র ভূমণ্ডল ক্ষুদ্র বলিয়া বোধ হয়; বল্লভজনের গুণ গণনা করিতে আরম্ভ করিলে পরার্দ্ধপর্য্যন্ত সংখ্যাও অত্যন্ত অল্প বলিয়া ধারণা হয়; প্রিয়তমের কথা শুনিতে লাগিলে তাহাকে অল্প-ভাষিণী বলিয়া মনে হয় এবং প্রাণতুল্য প্রিয়তমের সঙ্গমসুখ ধ্যান করিতে লাগিলে সময়টাকে বড়ই অল্প বলিয়া বোধ হয়।

(ঝ) এই কথা শুনিয়া কাদম্বরী, ক্ষণকাল চিন্তা করিয়া প্রত্যুত্তর করিলেন—

(१) चिन्ताप्रियमुखसहस्रसङ्कटं, चिन्ताप्रियमुखचन्द्रसहस्राणि। (२) वल्लभगुणानसंख्यान्। (३) शृण्वन्तीनां। (४) अबहुभाषिणीं सरस्वतीम्।

जनोऽयं कारितः कुमारे पक्षपातं पञ्चेषुणा । यान्यस्यैतानि रूपाणि समधिकानि वा तानि मयि वर्त्तन्ते (झ)। हृदयादव्यतिरिक्तासि, इदानीं भवतीमेव पृच्छामि । उपदिश त्वम्, (१) यदत्र मे साम्प्रतम् । एवंविधानां वृत्तान्तानामनभिज्ञास्मि । अपि च मे (२) गुरुजनवक्तव्यतां नीताया नितरां लज्जिताया जीविताम्मरणमेव श्रेयः पश्यति हृदयम्" (३) इति । (ञ)

एवंवादिनीं भूयस्तामहमेवमवोचम्—'अलमलमिदानीं देवि ! किमनेनाकारणमरणानुबन्धेन, (४) अनाराधितप्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरो दत्तः (ट) का चात्र गुरुजनवक्तव्यता, यदा खलु कन्यकां गुरुरिव पञ्चशरः सङ्कल्पयति, मातेवानुमोदते, भ्रातेव ददाति, सखीवोत्कण्ठां जनयति, धात्रीव तरुणतायां

यान्येतानि रूपाणि सन्तापजनकत्वादीनि त्वया कथितानीति शेषः, तेभ्यः समधिकानि वा सन्तीति शेषः, तानि सर्वाण्येव मयि वर्त्तन्त इत्यर्थः, सन्तापाश्रुपातपाण्डुतादर्शनात् ततसमधिकाधीरतादिदर्शनाच्चेति भावः ।

(ञ) हृदयादिति । अव्यतिरिक्तासि अभिन्नासि । साम्प्रतं युक्तम् । "युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने" इत्यमरः । गुरुजनैः पित्रादिभिः वक्तव्यतां निन्दनीयतां नीतायाः कन्दर्पेण प्रापितायाः ।

(ट) एवमिति । अलमलमिदं ब्रूहीति शेषः । अकारणं यन्मरणं तस्य अनुबन्धेन आग्रहेण । अनाराधितोऽपि प्रसन्नेन । वरो दत्तः, योग्यं प्रत्येव ते अनुरागजननादिति भावः ।

(ठ) केति । तरुणतायां यौवने । गुरुः पितेव । सङ्कल्पयति दातुमिति शेषः । रतौ सुरतविषये उपचारं तदुपयोगिविलासादिकं । सुतरामस्याः पञ्चशरक्रियाया अनिवार्य्यत्वान्नास्ति गुरुजनवक्तव्यतेति भावः । अत्र प्रत्येकवाक्य एव श्रौतोपमालङ्कारः ।

"পত্রলেখে ! তুমি যেরূপ বলিতেছ, কন্দর্প সেইরূপই আমাকে কুমারের প্রতি পক্ষপাতী করিয়াছেন এবং তুমি কন্দর্পের যে সকল রূপের কথা বলিয়াছ কিংবা তদধিক যে সকল রূপ আছে, সে সমস্তই এখন আমার উপরে বর্ত্তমান রহিয়াছে। (ঞ) তুমি আমার হৃদয় হইতে অভিন্ন ; সুতরাং এখন তোমাকেই আমি জিজ্ঞাসা করি। এখন আমার পক্ষে যাহা উচিত, তুমি তাহার উপদেশ দাও, কারণ, আমি এইরূপ ঘটনায় সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ। আরও দেখ, কন্দর্প আমাকে গুরুজনের নিন্দার ভাজন করিয়াছেন, সুতরাং আমি অত্যন্ত লজ্জিত হইয়াছি ; অতএব মন বুঝিতেছে যে, জীবন অপেক্ষা আমার মরণই শ্রেয়ঃ।"

(ট) কাদম্বরী এইরূপ বলিলে পুনরায় আমি তাঁহাকে এইরূপ বলিলাম—"আপনি এখন ইহা বলিবেন না, বলিবেন না। দেবি ! অকারণ মরণের জন্য আপনার এই আগ্রহ কেন ? ভগবান্ কামদেবকে আরাধনা না করিয়া থাকিলেও, তিনি নিজেই আপনার উপরে প্রসন্ন হইয়া বর দিয়াছেন। (ঠ) এ বিষয়ে একটা গুরুজনের নিন্দা কি ? যখন স্বয়ং কামদেব

(१) कथित् त्वमिति नास्ति । (२) अपि च गुरुः... । (३)...मे हृदयं ।
(४) वरीव । अनाराधित... ।

त्युपचारं शिक्षयन्ति (ठ)। कति वा (१) कथयामि ते, याः स्वयं वृतवत्यः पतीन् (ड)। यदि च नैवम्, अनर्थक एव तर्हि धर्मशास्त्रोपदिष्टः स्वयंवरविधिः (ढ)। तत् प्रसीद, देवि! अलममुना मरणानुबन्धेन, (२) शपे (३) ते पादपङ्कजस्पर्शेन, सन्दिश, प्रेषय माम्, यामि, आनयामि देवि! ते हृदयदयितम् (४)। (ण)

इत्येवमुक्ता मया प्रीतिद्रवार्द्रया दृष्ट्या पिबन्तीव मां निरुध्यमानैरपि मकरकेतु-शर-शत-जर्जरितां भित्त्वेव लज्जां लब्धान्तरैर्निपतद्भिः (५) अनुरागविभ्रमैराकुलीक्रियमाणा, प्रियवचनश्रवणप्रीत्या च स्वेदाश्लिष्टं (६) उत्क्षिप्य रोमाञ्चजाल-

(ड) कतीति। कति कन्यका इति शेषः। अतएवापि बहूनां व्यवहारान्नास्ति दोष इति भावः।

(ढ) यदीति। किञ्च, एवं यदि न स्यादित्यर्थः। अनर्थक एव, अननुष्ठानलक्षणाप्रामाण्यादिति भावः। तथा च याज्ञवल्क्यः 'गान्धर्वः समयान्मिथः।" मनुरपि—"इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च। गान्धर्वः स तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसम्भवः।" गान्धर्वविधिरेव स्वयम्वरविधिरिति बोध्यम्।

(ण) तदिति। शपे शपथं करोमि। हृदयदयितानयनं प्रत्येव शपथोऽयमिति ज्ञेयम्।

(त) इतीति। मया इत्येवमुक्ते सति, कादम्बरी प्रीतिद्रवेण आनन्दरसेन आर्द्रा तया दृष्ट्या, मां पिबन्तीव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। निरुध्यमानैरपि संह्रियमाणैरपि, मकरकेतोर्मदनस्य शरशतेन जर्जरितां, अतएव भेदनं सुकरमिति भावः, लज्जां भित्त्वेव लब्धान्तरैः प्राप्तावकाशैः, निपतद्भिराविर्भवद्भिरित्यर्थः, अनुरागविभ्रमैः स्मितायनुरागमूलकविलासैः, आकुलीक्रियमाणा अस्थिरीक्रियमाणेति तात्पर्य्यम्। क्रियोत्प्रेक्षा। किञ्च, प्रियस्य वल्लभस्य चन्द्रापीडस्य सम्बन्धे यद्वचनं तस्य श्रवणेन या प্রीतिरानन्दस्तया, यै स्वेदा

যৌবনকালে কন্যাকে দান করিবার নিমিত্ত পিতার ন্যায় সঙ্কল্প করেন, মাতার ন্যায় তাহা অনুমোদন করেন, ভ্রাতার ন্যায় দান করেন, সখীর ন্যায় উৎকণ্ঠা জন্মান এবং ধাত্রীর ন্যায় অনুরাগের উপযোগী বিলাস প্রভৃতি শিখাইয়া দেন। (ড) আপনার নিকট কয়টি কন্যার কথা বলিব, যাঁহারা আপনা আপনিই পতিকে বরণ করিয়াছিলেন। (ঢ) যদি এইরূপই না হইবে, তবে ধর্ম্মশাস্ত্রোপদিষ্ট স্বয়ংবরবিধান অনর্থক হইত। (ণ) অতএব দেবি! আপনি প্রসন্ন হউন; এই মরণের আগ্রহ পরিত্যাগ করুন; আমি আপনার পাদপদ্ম স্পর্শ করিয়া শপথ করিতেছি, আপনি খবর দিন, আমাকে পাঠান, আমি যাই যাইয়া আপনার প্রাণবল্লভকে আনয়ন করি।'

(ত) আমি এই কথা বলিলে কাদম্বরী, আনন্দবশতঃ স্নিগ্ধদৃষ্টিতে আমাকে যেন পান করিতে লাগিলেন; মদনের বাণসমূহে জর্জ্জরিত করিয়াছিল বলিয়াই যেন লজ্জাকে ভেদ

(१) किमिव। (२) अलं मरणानु...। (३) शपामि।

(४) सन्दिश मां, याम्यानयामि तं देवं चन्द्रापीडं ते हृदयदयितम्।

(५) निपतद्भिः। (६) स्वेदक्लिष्टं।

केन दधतीवोत्तरीयांशुकम्, प्रेङ्खत्-कुण्डल-माणिक्य-पत्रमकर-कोटि-लग्नञ्च शशि-किरणमयं मरणपाशमिव मकरकेतुना निक्षिप्तं कण्ठे हारमुन्मोचयन्ती, प्रहर्षविह्वलान्तःकरणापि कन्यकाजनसहजां लज्जामिवावलम्ब्य शनैः शनैरवदत् (१) (त) "जानामि ते गरीयसीं प्रीतिम्, केवलमकठोर-शिरीष-पुष्प-मृदु-प्रकृतेः कुतः प्रागल्भ्यमेतावन्नारीजनस्य, विशेषतो बालभावभाजः कुमारीलोकस्य (थ)। साहसकारिण्यस्ताः, याः स्वयं सन्दिशन्ति समुपसर्पन्ति वा (द)। स्वयं साहसं

घर्म्मासारश्लिष्टं गात्रसंसक्तं उत्तरीयांशुकं, रोमाञ्चानां जालकेन पुञ्जेन उत्क्षिप्य दधतीव। क्रियोत्प्रेक्षा। किञ्च प्रेङ्खत्चलतः कुण्डलस्य यो माणिक्यपत्रमकरः रत्ननिर्म्मितपत्रात्मकमकराकारालङ्कारस्तस्य कोटौ अग्रदेशे लग्नं, शशिकिरणमयं तद्वत् शुभ्रमित्यर्थः, मकरकेतुना मदनेन कण्ठे निक्षिप्तं स्थापितं मरणपाशमिव स्थितं हारं उन्मोचयन्ती प्रच्यावयन्ती। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। प्रहर्षेण आनन्दातिशयेन विह्वलमन्तःकरणं यस्याः सा तथाविधापि, कन्यकाजनस्य सहजां स्वाभाविकीं तां, लज्जामवलम्ब्येव शनैःशनैरवदत्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) जानामीति। प्रीतिं स्नेहं मयीति शेषः, अतएवैवं ब्रवीषीति भावः। तर्हि सत्वरमेव स्वयं वरीतुं कथं नोद्युज्यसे इत्याह केवलमिति। केवलं किन्तु, अकठोरं नवं यत् शिरीष-पुष्पं तद्वत् मृदुः प्रकृतिः स्वभावो यस्य तस्य नारीजनस्य, एतावत् स्वयंवरणात्मकं गुरुतरं प्रागल्भ्यं धार्ष्ट्यं कुतः, अपि तु कुतोऽपि न सम्भवतीत्यर्थः। बालभावभाजो बालिकावस्थस्य कुमारीलोकस्य कन्याजनस्य। अत्र लुप्तोपमार्थापत्त्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(द) तर्हि कथं रुक्मिण्यादयस्तादृशप्रागल्भ्ये प्रवृत्ता इत्याह साहसीति। याः स्वयं सन्दिशन्ति,

করিয়া, ঈষৎ হাস্য প্রভৃতি অনুরাগসূচক বিভ্রমগুলি স্থান পাইয়াছিল এবং সংবরণ করিতে লাগিলেও সেগুলি আবির্ভূত হইয়া, কাদম্বরীকে একেবারে আকুল করিয়া তুলিয়াছিল; প্রাণেশ্বরের সম্বন্ধীয় বাক্য শ্রবণে আনন্দবশতঃ ঘর্ম্ম উৎপন্ন হইয়া উত্তরীয় বস্ত্রখানাকে গাত্রের সহিত সংলগ্ন করিয়াছিল; এদিকে রোমাঞ্চসমূহও উৎপন্ন হইয়াছিল; সুতরাং কাদম্বরী যেন সেই রোমাঞ্চসমূহ দ্বারা সেই উত্তরীয় বস্ত্রখানাকে উত্তোলন করিয়া ধরিয়াছিলেন। আর দোদুল্যমান কর্ণকুণ্ডলের রত্ননির্ম্মিত মকরাকারভাগের অগ্রে, চন্দ্রকিরণের ন্যায় শুভ্রবর্ণ হারছড়া সংলগ্ন হইয়াছিল; সুতরাং সেই হারছড়াকে মদন কর্ত্তৃক কণ্ঠে সমর্পিত মৃত্যুপাশের ন্যায় বোধ হইতেছিল; কাদম্বরী সেই হারছড়া উন্মুক্ত করিতেছিলেন—এই অবস্থায় তিনি অত্যন্ত আনন্দবশতঃ অন্তঃকরণ বিহ্বল হইলেও, কন্যাজনের স্বাভাবিক লজ্জা অবলম্বন করিয়াই যেন ধীরে ধীরে বলিলেন—(থ) "পত্রলেখে! আমার উপর যে তোমার অত্যন্ত প্রণয় আছে, তাহা আমি জানি; কিন্তু নূতন শিরীষ-কুসুমের ন্যায় কোমল-প্রকৃতি রমণীজনের এতদূর প্রগল্ভতা হইবে কিরূপে? বিশেষতঃ বালিকাকন্যার। (দ) যাহারা

(१) शनैरवदत्।

सन्दिशन्ती (१) बाला जिह्रेमि (ध)। किं वा सन्दिशामि। अतिप्रियोऽसीति पौनरुक्त्यम्, (न) तवाहं प्रियास्मीति जड़प्रश्नः, (प) त्वयि गरीयाननुराग इति वेश्यालापः, (फ) त्वया विना न जीवामीत्यनुभवविरोधः, (ब) परिभवति मामनङ्ग इत्यात्मदोषोपालम्भः, (भ) मनोभवेनाहं भवते दत्तेत्युपसर्पणोपायः, (म)

इत्यम्भूताश्च रुक्मिण्यादयः, रुक्मिण्या हि श्रीकृष्णान्तिके विप्रमुखेन सन्देशप्रेषणात्। स्वयमुपसर्पन्ति, इन्दुमतीदमयन्तीप्रभृतयः, वरणार्थं ताभिः सभायां स्वयमुपसर्पणात्।

(ध) मम तु तादृक्साहसाङ्गीकारेऽपि लज्जैव बाधिकेत्याह स्वयमिति। जिह्रेमि लज्जे।

(न) लज्जाकृतबाधां निराकृत्यापि सन्देशप्रकारमेव न पश्यामीत्याह किंवेति। त्वं ममातिप्रियोऽसीति सन्देशे पौनरुक्त्यं, अतिप्रियत्वस्य तेनाप्यनुभूतत्वेन पुनःसन्देशे ज्ञातार्थज्ञापनात् पुनरुक्ततादोषप्रसङ्गेन नायं सन्देशो रोचत इति भावः।

(प) तवेति। तवाहं प्रियात्मा प्रियास्वरूपा किमिति सन्देशस्तु जड़प्रश्नो निर्बोधजनजिज्ञासा, चेष्टयैव प्रियत्वनिर्णयेऽपि पुनःप्रश्नकरणात् जड़ानान्तु तथैव व्यवहारात्, सुतरामयमपि न समञ्जस इति भावः।

(फ) त्वयीति। त्वयि गरीयान् ममानुराग इति सन्देशस्तु वेश्याया आलापः, तद्वत् स्पष्टाभिधानात्, कुलजानान्तु इङ्गितैरेवानुरागसूचनौचित्यादयमपि पन्था न युक्त इति भावः।

(ब) त्वयेति। त्वया विना न जीवामीति सन्देशे तु अनुभवविरोधः। जीवनाभावे मरणमेव स्यात् तथात्वे च सन्देशप्रेरणासम्भवात्, सुतरामयमपि सन्देशो न सङ्गच्छत इति भावः।

(भ) परीति। अनङ्गो मां परिभवति परिभूय पीड़यतीति सन्देशे तु आत्मनो दोषस्य कामुकतारूपस्य उपालम्भो निन्दैव करणीयो न तु तन्निष्ठतये सन्देशप्रेरणं, कुलजानां कामविकारस्य नियमनीयत्वेन तत्प्रकाशनानौचित्यादयमपि पन्था न युज्यत इति भावः।

(म) मन इति। मनोभवेनाहं भवते दत्तेति सन्देशस्तु उपसर्पणस्य तदन्तिकगमनस्योपायः, दानेन निष्पन्नस्वत्वस्य वस्तुनः सम्प्रदानान्तिक एवावस्थानौचित्यात्, आनुपूर्व्यीभावनपूर्वकत्वादयमपि न सङ्गच्छत इति भावः।

নিজে খবর দেন, কিংবা নিজেরাই প্রিয়তমের নিকটে উপস্থিত হ'ন, তাঁহারা সাহসের কার্য্য করেন। (ধ) আমি বালিকা; তাই নিজেই খবর দিতে লজ্জিত হইতেছি। (ন) কি খবরই বা পাঠাইব; 'আপনি আমার অত্যন্ত প্রিয়' ইহা পুনরুক্তি মাত্র; (প) 'আমি কি আপনার প্রিয়?' ইহা নির্ব্বোধের প্রশ্ন; (ফ) 'আপনার প্রতি আমার গুরুতর অনুরাগ জন্মিয়াছে' এটা বেশ্যার আলাপ; (ব) 'আপনাকে ভিন্ন আমি জীবনধারণ করিতে পারিতেছি না' এ কথা অনুভবের বিরুদ্ধ; (ভ) 'কন্দর্প আমাকে যাতনা দিতেছেন' এই খবরে সেই নিজদোষের নিন্দা করাই উচিত; (ম) 'কামদেব আমাকে আপনার হস্তে দান করিয়াছেন' এটা

---

(१) सन्दिशन्ति, दिशन्ती।

বলাদ্ধৃতোঽসি ময়েতি বন্ধকীধাষ্ট্র্যম্, (য) অবশ্যমাগন্তব্যমিতি সৌভাগ্যগর্বঃ, (র) স্বয়মাগচ্ছামীতি স্ত্রীচাপলম্, (ল) অনন্যরক্তোঽয়ং পরিজন ইতি স্বভক্তিনিবেদনলাঘবম্, (ব) প্রত্যাখ্যানশঙ্কয়া ন সন্দিশামীত্যপ্রবুদ্ধবোধনম্, (শ) অনপেক্ষিতানুজীবিত-(১) দুঃখদারুণা স্থামিত্যতিপ্রণয়িতা, (ষ) জ্ঞাস্যসি মরণে প্রীতিমিত্যসম্ভাব্যমেব (২)।" (স)

ইতি শ্রীবাণভট্টবিরচিতঃ কাদম্বরীপূর্বভাগঃ।

(য) বলাদিতি। ময়া ত্বং বলাদ্ধৃতোঽসীতি সন্দেশে তু বন্ধকীধাষ্ট্র্যং কুলটায়া ধৃষ্টতাপ্রতীতিঃ। কুলজায়াস্তু তদনৌচিত্যাদেষোঽপি পন্থা ন রোচত ইতি ভাবঃ।

(র) ত্বাবশ্যমিতি। ত্বয়া অবশ্যমাগন্তব্যমিতি সন্দেশে তু সৌভাগ্যস্য প্রিয়বাল্লভ্যস্য গর্বোঽহঙ্কারঃ প্রকাশ্যতে। তস্য ত্বভাবাদেষোঽপি ন যুজ্যত ইতি ভাবঃ।

(ল) স্বয়মিতি। স্বয়মাগচ্ছামীতি সন্দেশে তু স্ত্রীচাপলং স্ত্রীণাং স্বভাবসুলভং চাঞ্চল্যমাত্রং প্রকাশ্যতে, বাস্তবিকগমনাসম্ভবাৎ, সুতরাময়মপ্যুপেক্ষণীয় ইতি ভাবঃ।

(ব) অনন্যেতি। অনন্যরক্তস্ত্বদেকমাত্রানুরক্তঃ অয়ং মৎস্বরূপঃ পরিজন ইতি সন্দেশেঽপি স্বভক্তেঃ স্বয়মেব নিবেদনেন লাঘবং, সুতরামেষোঽপি পরিহরণীয় ইতি ভাবঃ।

(শ) প্রত্যাখ্যানেতি। প্রত্যাখ্যানশঙ্কয়া সন্দেষ্টব্যবিষয়নিরাকরণাতঙ্কেন ন সন্দিশামীতি সন্দেশেঽপি অপ্রবুদ্ধস্য অজ্ঞাতপ্রত্যাখ্যানস্য বোধনং তজ্জ্ঞাপনং, সুপ্রসন্নত্বাদনবদতো নৈষোঽপি রোচত ইতি ভাবঃ।

(ষ) অনেতি। ন অপেক্ষিতং রমণীয়তয়া কয়াপি ন সমীহিতং অনুজীবিতং বল্লভবিয়োগানন্তরকালবর্ত্তি জীবনং যেন তাদৃশেন দুঃখেন সতততাদৃশদুঃখসহনেন দারুণা কঠিনপ্রকৃতিঃ স্থাং সখীনাং পুর ইতি শেষঃ, ইতি সন্দেশে অতিপ্রণয়িতা প্রতীয়েত। বস্তুতস্তু অদ্যাপি তাদৃশপ্রণয়িতায়া অভাবাদিদমপি ন সন্দেশ্যমিতি ভাবঃ।

(স) জ্ঞাস্যসীতি। মরণে ত্বদ্বিয়োগযাতনয়ৈব মম মৃত্যৌ সতি প্রীতিং জ্ঞাস্যসি ত্বয়ি কিয়তী মে

তাঁহার নিকট যাইবার উপায়; (য) 'আমি আপনাকে বলপূর্ব্বক ধরিয়াছি' এটা কুলটার ধৃষ্টতা; (র) 'আপনি অবশ্য আসিবেন' এটা সৌভাগ্যের অহঙ্কার; (ল) 'আমি নিজেই আসিতেছি' ইহা স্ত্রীলোকের স্বাভাবিক চঞ্চলতা; (ব) 'এই ব্যক্তি কেবল আপনারই অনুরক্ত পরিজন' এইরূপ খবর দিলে নিজের ভক্তি নিজেই প্রকাশ করায় লঘুতা প্রকাশ পায়; (শ) 'আপনি প্রত্যাখ্যান করিবেন এই আশঙ্কায় খবর দিতেছি না' ইহাতেও, যিনি প্রত্যাখ্যান জানেন না, তাঁহাকে তাহা জানান হয়; (ষ) 'প্রিয়তমের সহিত বিচ্ছেদের পর যে দুঃখনিবন্ধন কেহই জীবনের অপেক্ষা করে না, আমি সেই দুঃখই সহ্য করিতে থাকায় সখীগণের নিকট কঠিন হৃদয় বলিয়া পরিচিত হইতেছি' ইহাতে অত্যন্ত প্রণয় প্রকাশ পায় (স) এবং 'আমার মৃত্যু হইলে, আপনার প্রতি কতদূর প্রণয় ছিল, তাহা জানিতে পারিবেন' ইহা নিতান্তই অসম্ভাবনীয়।"

---

(১)...অনুজীবি...। (২) জ্ঞাস্যসি মরণেন প্রীতিমিত্যসম্ভাব্যমিতি।

प्रीतिरासीदित्यवगमिष्यति इति प्रीतिं ज्ञापनमसम्भाव्यमेव, नितान्तमन्दभाग्यतया मे मरणस्यैवासन्नत्वात्, सुतरामयमपि सन्देशो न प्रेषणीय इति भावः ।

हन्त ! अस्यां किलालौकिकमधुरिमाट्टालिकायां सञ्चरणमहानन्दमनुभवन्त एवावसरे काव्यस्य कवेश्चावसानमवगच्छन्तः शोकसागर एव सन्तरन्ति श्रोतारः ।

जानकीविक्रमं नाम नाटकं वीररौद्रवत् ।
नाटिकामुज्ज्वलरसां श्रीविराजसरोजिनीम् ॥
वियोगवैभवाख्यानं खण्डकाव्यमनन्तरम् ।
नानाबन्धं महाकाव्यं रुक्मिणीहरणाभिधम् ॥
स्मृतिचिन्तामणिं नाम संक्षिप्तस्मृतिसंग्रहम् ।
उत्तररामचरित-टीका सर्वार्थबोधिनीम् ॥
मालविकाग्निमित्रस्य मालतीमाधवस्य च ।
टीकां कृत्वा, गद्यकाव्यं कुर्वाणः सरलाभिधम् ॥
कोटालिपाड़ोनशियानिवासी नकीपुरेशस्य सभाप्रवासी ।
सत्काव्यपोऽध्यापनमुख्यकर्म्मा व्यधादिमां श्रीहरिदासशर्म्मा ॥
गजाग्निवस्विन्दुमिते शकाब्दे त्रिंशेऽह्नि शुक्रे मिथुनस्थसूर्य्ये ।
प्रकल्पिता कल्पलता मयेयं ईशप्रसादेन समाप्तिमाप्ता ॥
सर्वाण्यभीप्सितफलानि सदा ददाना नात्यन्तपल्लववती सरला समूलाम् ।
छायासमाहृतसमस्तगुणज्ञलोकामेनां समाश्रयतु कल्पलतामपूर्वाम् ॥

इति श्रीगङ्गाधरविद्यालङ्कारभट्टाचार्य्यात्मज-श्रीहरिदाससिद्धान्तवागीशभट्टाचार्य्यविरचितायां कल्पलताभिधानायां कादम्बरीटीकायां पूर्वभागः समाप्तः ॥ ० ॥

समाप्तः ।